Jahannam Mein Le Jaane Wale Aa'mal-Jild:2 (Hindi)

कबीरा गुनाहों की मा'रिफ़त पर मुश्तमिल 2244 ह़वाला जात से मुज़य्यन मुन्फ़रिद और मा'रि-कतुल आरा तालीफ़

# اَلزَّوَاجِرُ عَنِ اقْتِرَافِ الْکَبَائِر

जिल्द दुवुम

तरजमा बनाम

# जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल

मुअल्लिफ़ : शैखुल इस्लाम शहाबुद्दीन इमाम अहमद बिन हजर मक्की शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي

अल मु-तवफ़्फ़ा 974 हि.



المدینۃ العلمیۃ

(دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

## किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

**दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

**तरजमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (اَلْمُستطرَف ج١ص٤٠دارالفکر بیروت)

**नोट :** अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

### क़ियामत के रोज़ ह़सरत

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) ।

(تاریخ دمشق لابن عَساکِرج ٥١ص١٣٨دارالفکربیروت)

### किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये ।



www.dawateislami.net

## मजलिसे तराजिम ( दा'वते इस्लामी )

येह किताब ''اَلزَّوَاجِرعَنِ اقْتِرَافِ الْکَبَائِر''

**इमाम अह़मद बिन ह़जर मक्की शाफेई** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی ने अ़-रबी ज़बान में तह़रीर फ़रमाई है। मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने इस का **उर्दू** तरजमा और तख़्रीज कर के **''जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल** (जिल्द दुवुम)'' के नाम से पेश किया है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ़-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है **:**

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) ह़ुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस ह़ुरूफ़ के नीचे डॉट ( . ) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये **''ह़ुरूफ़ की पहचान''** नामी चार्ट मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़्फ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (-) और साकिन ह़र्फ़ के नीचे खोड़ा ( ् ) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा ( ' ) इस्ति'माल किया गया है। म-सलन دَعْوت، اِستعمال (दा'वत, इस्ति'माल) वग़ैरा।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

### ह़ुरूफ़ की पहचान

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| फ = پھ | प = پ | भ = بھ | ब = ب | अ = ا |
| स = ث | ठ = ٹھ | ट = ٹ | थ = تھ | त = ت |
| ह़ = ح | छ = چھ | च = چ | झ = جھ | ज = ج |
| ढ = ڈھ | ड = ڈ | ध = دھ | द = د | ख़ = خ |
| ज़ = ز | ढ़ = ڑھ | ड़ = ڑ | र = ر | ज़ = ذ |
| ज़ = ض | स = ص | श = ش | स = س | ज़ = ژ |
| फ़ = ف | ग़ = غ | अ़ = ع | ज़ = ظ | त़ = ط |
| घ = گھ | ग = گ | ख = کھ | क = ک | क़ = ق |
| ह = ہ | व = و | न = ن | म = م | ल = ل |
| ई = اِی / ی | इ = اِ | ऐ = اے | ए = ے | य = ی |

**राबित़ा : मजलिसे तराजिम** (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 ´ E-mail :translationmaktabhind@dawateislami.net



www.dawateislami.net

**कबीरा गुनाहों की मा'रिफ़त पर मुश्तमिल 2244 ह़वाला जात से मुज़य्यन मुन्फ़रिद और मा'रि-कतुल आरा तालीफ़**

# الزواجر عن اقتراف الكبائر (جلد2)

**तरजमा बनाम**

( जिल्द 2 )

# जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल

**मुअल्लिफ़**

**शैख़ुल इस्लाम शिहाबुद्दीन इमाम अह़मद बिन ह़जर मक्की शाफ़ेई** عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡكَافِى

**अल मु-तवफ़्फ़ा 974 हि.**

**पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या ( दा'वते इस्लामी )**

**शो'बए तराजिमे कुतुब**

**नाशिर**

**मक-त-बतुल मदीना देहली**



www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللہ


नाम किताब : الزواجر عن اقتراف الكبائر ( जिल्द : 2 )

तरजमा बनाम : जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल

मुसन्निफ़ : शैख़ुल इस्लाम शिहाबुद्दीन इमाम अह़मद बिन ह़जर हैसमी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى

मुतर्जिमीन : म-दनी उ़-लमा (शो'बए तराजिमे कुतुब)

सिने त़बाअ़त : एप्रिल 2017 सि.ई.


## तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 8 रबीउ़ल अव्वल 1432 हि. ह़वाला नम्बर : 171

الحمد لله رب العٰلمين والصلوٰة والسلام علٰى سيد المرسلين وعلى اٰله واصحا به اجمعين

तस्दीक़ की जाती है कि किताब ''اَلزَّوَاجِرعَنِ اقْتِرَافِ الْكَبَائِر'' के तरजमा

**''जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल ( जिल्द : 2 )''**

(मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़्रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे मत़ालिबो मफ़ाहीम के ए'तिबार से मक़्दूर भर मुला-ह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़-लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

**मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल ( दा'वते इस्लामी )**
**12-02-2011**

**E.mail.ilmia@dawateislami.net**

**म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।**



www.dawateislami.net

# याद दाश्त

दौराने मुत़ा–लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

| उ़न्वान | सफ़ह़ा | उ़न्वान | सफ़ह़ा |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |



www.dawateislami.net

| उ़न्वान | सफ़ह़ा | उ़न्वान | सफ़ह़ा |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |



www.dawateislami.net

| उ़न्वान | सफ़्हा | उ़न्वान | सफ़्हा |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |



www.dawateislami.net

| उ़न्वान | सफ़ह़ा | उ़न्वान | सफ़ह़ा |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |



www.dawateislami.net

| उ़न्वान | सफ़हा | उ़न्वान | सफ़हा |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |



www.dawateislami.net

# इज्माली फ़ेहरिस्त


| नम्बर | मज़ामीन | सफ़हा |
|---|---|---|
| 1 | كِتَابُ النِّكَاح | 23 |
| 2 | कबीरा नम्बर **241** : शादी न करना | 23 |
| 3 | कबीरा नम्बर **242** : अज्नबी औ़रत को शह्वत से देखना | 24 |
| 4 | कबीरा नम्बर **243** : अज्नबी औ़रत को शह्वत से छूना | 24 |
| 5 | कबीरा नम्बर **244** : अज्नबी औ़रत के साथ तन्हाई इख़्तियार करना | 24 |
| 6 | कबीरा नम्बर **245** : अम्रद को देखना (जब कि शह्वत और फ़ितने का ख़ौफ़ हो) | 29 |
| 7 | कबीरा नम्बर **246** : अम्रद को छूना (जब कि शह्वत और फ़ितने का ख़ौफ़ हो) | 29 |
| 8 | कबीरा नम्बर **247** : अम्रद के साथ तन्हाई इख़्तियार करना | 29 |
| 9 | कबीरा नम्बर **248** : ग़ीबत करना | 34 |
| 10 | कबीरा नम्बर **249** : इस पर ख़ामोश और रिज़ा मन्द रहना | 34 |
| 11 | कबीरा नम्बर **250** : बुरे नामों से पुकारना | 89 |
| 12 | कबीरा नम्बर **251** : मुसल्मान का मज़ाक़ उड़ाना | 90 |
| 13 | कबीरा नम्बर **252** : चुग़ल ख़ोरी करना | 91 |
| 14 | कबीरा नम्बर **253** : दो रुख़ा होना | 104 |
| 15 | कबीरा नम्बर **254** : बोहतान तराशी करना | 108 |
| 16 | कबीरा नम्बर **255** : वली का जबरन निकाह़ से रोकना | 109 |
| 17 | कबीरा नम्बर **256** : पैग़ामे निकाह़ पर निकाह़ का पैग़ाम देना | 110 |
| 18 | कबीरा नम्बर **257** : बीवी को शोहर के ख़िलाफ़ भड़काना | 110 |
| 19 | कबीरा नम्बर **258** : शोहर को बीवी के ख़िलाफ़ भड़काना | 110 |
| 20 | कबीरा नम्बर **259** : मह़रम से निकाह़ करना | 112 |




www.dawateislami.net

| | | |
|---|---|---|
| 21 | कबीरा नम्बर **260 :** तलाक़ देने वाले का हलाला पर रिज़ा मन्द होना | 112 |
| 22 | कबीरा नम्बर **261 :** तलाक़ याफ़्ता औ़रत का इस पर रिज़ा मन्द होना | 112 |
| 23 | कबीरा नम्बर **262 :** ह़लाला कराने वाले का रिज़ा मन्द होना | 112 |
| 24 | कबीरा नम्बर **263 :** बीवी की छुपी बातों को ज़ाहिर करना | 116 |
| 25 | कबीरा नम्बर **264 :** शोहर की पोशीदा बातों को ज़ाहिर करना | 116 |
| 26 | कबीरा नम्बर **265 :** बीवी या लौंडी के पिछले मक़ाम में वत़ी करना | 118 |
| 27 | कबीरा नम्बर **266 :** अज्नबी (मर्द या औ़रत) के सामने बीवी से वत़ी करना | 121 |
| 28 | **باب الصداق** | 122 |
| 29 | कबीरा नम्बर **267 :** मह्र अदा न करने की निय्यत से निकाह़ करना | 112 |
| 30 | **باب الوليمة** | 124 |
| 31 | कबीरा नम्बर **268 :** ज़ी रूह़ की तस्वीर बनाना | 124 |
| 32 | कबीरा नम्बर **269 :** तुफ़ैली बनना | 134 |
| 33 | कबीरा नम्बर **270 :** मेहमान का मेज़बान की रिज़ा जाने बिग़ैर बिस्यार ख़ोरी करना | 134 |
| 34 | कबीरा नम्बर **271 :** इन्सान का अपने माल में से कसरत से खाना जब कि वोह जानता हो कि येह उसे वाज़ेह़ नुक़्सान देगा | 134 |
| 35 | कबीरा नम्बर **272 :** तकब्बुर व दिखावा करते हुए खाने पीने में वुस्अ़त करना | 134 |
| 36 | **باب عشرة النساء** | 149 |
| 37 | कबीरा नम्बर **273 :** ज़ुल्मन एक बीवी पर दूसरी को तरजीह़ देना | 149 |
| 38 | कबीरा नम्बर **274 :** बीवी के हुक़ूक़ अदा न करना जैसे मह्र, न-फ़क़ा वग़ैरा | 150 |
| 39 | कबीरा नम्बर **275 :** हुक़ूक़े शोहर अदा न करना म-सलन बिला उ़ज़्रे शर-ई जिमाअ़ से रोकना | 150 |
| 40 | कबीरा नम्बर **276 :** क़त़्ए तअ़ल्लुक़ी करना | 164 |
| 41 | कबीरा नम्बर **277 :** रू गर्दानी करना | 164 |




www.dawateislami.net

| | | |
|---|---|---|
| 42 | कबीरा नम्बर **278 :** एक दूसरे से बुग़्ज़ रखना | 164 |
| 43 | कबीरा नम्बर **279 :** औ़रत का ख़ुश्बू लगा कर घर से निकलना | 174 |
| 44 | कबीरा नम्बर **280 :** औ़रत का ना फ़रमान होना | 175 |
| 45 | **باب الطلاق** | 194 |
| 46 | कबीरा नम्बर **281 :** बिला उ़ज़्रे शर-ई शोहर से त़लाक़ मांगना | 194 |
| 47 | कबीरा नम्बर **282 :** औ़रतों और मर्दों की दलाली करना | 195 |
| 48 | कबीरा नम्बर **283 :** मर्दों और अम्रदों की दलाली करना | 195 |
| 49 | **باب الرجعة** | 199 |
| 50 | कबीरा नम्बर **284 :** रुजूअ़ से क़ब्ल ह़राम जानते हुए त़लाक़े रज्ई वाली औ़रत से जिमाअ़ करना | 199 |
| 51 | **باب الا يلاء** | 200 |
| 52 | कबीरा नम्बर **285 :** बीवी से ईला करना | 200 |
| 53 | **باب الظهار** | 201 |
| 54 | कबीरा नम्बर **286 :** ज़िहार का बयान | 201 |
| 55 | **باب اللعان** | 203 |
| 56 | कबीरा नम्बर **287 :** पाक दामन (मर्द या औ़रत) पर ज़िना या लिवात़त की तोहमत लगाना | 203 |
| 57 | कबीरा नम्बर **288 :** तोहमत सुन कर उस पर ख़ामोश रहना | 203 |
| 58 | कबीरा नम्बर **289 :** मुसल्मान को गाली देना और उस की बे इ़ज़्ज़ती करना | 218 |
| 59 | कबीरा नम्बर **290 :** वालिदैन को बुरा भला कहना अगर्चे गालियां न दे | 218 |
| 60 | कबीरा नम्बर **291 :** किसी को मुसल्मान होने की वज्ह से ला'न त़ा'न करना | 218 |
| 61 | कबीरा नम्बर **292 :** इन्सान का अपने नसब या अपने वालिद से दस्त बरदार होना | 235 |
| 62 | कबीरा नम्बर **293 :** अपना झूटा होना मा'लूम होने के बा वुजूद ख़ुद को बाप के इ़लावा की त़रफ़ मन्सूब करना | 235 |




www.dawateislami.net

| | | |
|---|---|---|
| 63 | कबीरा नम्बर **294 :** शर-ई तौ़र पर साबित नसब में ता'न करना | 238 |
| 64 | कबीरा नम्बर **295 :** औ़रत का ज़िना या शुबा की वती़ के साथ बच्चे को ऐसी क़ौम में दाखि़ल करना जिस में से वोह न हो | 238 |
| 65 | **كتاب العدد** | 239 |
| 66 | कबीरा नम्बर **296 :** इ़द्दत पूरी करने में खि़यानत करना | 239 |
| 67 | कबीरा नम्बर **297 :** इ़द्दत वाली का बिला उ़ज़्रे शर-ई उस घर से बाहर निकलना जिस में इ़द्दत ख़त्म होने तक उस का ठहरना लाज़िम हो | 239 |
| 68 | कबीरा नम्बर **298 :** शोहर फ़ौत होने पर सोग न करना | 239 |
| 69 | कबीरा नम्बर **299 :** इस्तिब्रा से पहले लौंडी से जिमाअ़ करना | 240 |
| 70 | **كتاب النفقات على الزوجات والأقارب والمماليك من الرقيق والدواب وما يتعلق بذلك** | 241 |
| 71 | कबीरा नम्बर **300 :** बिला उ़ज़्रे शर-ई बीवी का ख़र्च रोकना | 241 |
| 72 | कबीरा नम्बर **301 :** अहलो इ़याल म-सलन ना बालिग़ बच्चों को ज़ाएअ़ करना | 241 |
| 73 | कबीरा नम्बर **302 :** वालिदैन या उन में से एक की ना फ़रमानी करना ख़्वाह वोह वालिदैन के वालिदैन हों अगर्चे उन का इस से क़रीबी भी मौजूद हो | 249 |
| 74 | कबीरा नम्बर **303 :** क़त्ए़ रेहू़मी करना | 288 |
| 75 | कबीरा नम्बर **304 :** ख़ुद को आक़ा के इ़लावा की त़रफ़ मन्सूब करना | 308 |
| 76 | कबीरा नम्बर **305 :** ग़ुलाम को आक़ा के खि़लाफ़ भड़काना | 308 |
| 77 | कबीरा नम्बर **306 :** ग़ुलाम का भाग जाना | 309 |
| 78 | कबीरा नम्बर **307 :** आज़ाद इन्सान को ग़ुलाम बना कर खि़दमत लेना | 311 |
| 79 | कबीरा नम्बर **308 :** ग़ुलाम का आक़ा की लाज़िम खि़दमत न करना | 312 |
| 80 | कबीरा नम्बर **309 :** आक़ा का ग़ुलाम की ज़रूरिय्यात पूरी न करना और त़ाक़त से ज़ियादा काम लेना | 312 |




www.dawateislami.net

| | | |
|---|---|---|
| 81 | कबीरा नम्बर 310 : उसे हमेशा ज़दो कोब करना | 312 |
| 82 | कबीरा नम्बर 311 : उसे ख़सी कर के तक्लीफ़ देना ख़्वाह वोह ना बालिग़ हो, नीज़ बिला सबबे शर-ई ग़ुलाम या चौपाए को कोई और अ़ज़ाब देना | 312 |
| 83 | कबीरा नम्बर 312 : जानवरों को आपस में लड़ाना | 312 |
| 84 | **كتاب الجنايات** | 327 |
| 85 | कबीरा नम्बर 313 : अ़मद या शि-बहे अ़मद से मुसल्मान या ज़िम्मी को क़त्ल करना | 327 |
| 86 | कबीरा नम्बर 314 : ख़ुदकुशी करना | 351 |
| 87 | कबीरा नम्बर 315 : क़त्ले ह़राम या उस के मुक़द्दमात पर मदद करना | 358 |
| 88 | कबीरा नम्बर 316 : मौजूद होते हुए बा वुजूदे क़ुदरत क़त्ल से न रोकना | 358 |
| 89 | कबीरा नम्बर 317 : बिला वज्हे शर-ई किसी मुसल्मान या ज़िम्मी को मारना | 360 |
| 90 | कबीरा नम्बर 318 : मुसल्मान को डराना | 363 |
| 91 | कबीरा नम्बर 319 : इस की त़रफ़ अस्लह़ा वग़ैरा के साथ इशारा करना | 363 |
| 92 | कबीरा नम्बर 320 : ऐसा जादू करना जिस में कुफ़्र न हो | 365 |
| 93 | कबीरा नम्बर 321 : जादू सीखना | 365 |
| 94 | कबीरा नम्बर 322 : जादू सिखाना | 365 |
| 95 | कबीरा नम्बर 323 : जादू पर अ़मल करना | 365 |
| 96 | कबीरा नम्बर 324 : काहिन बनना | 399 |
| 97 | कबीरा नम्बर 325 : सितारा शनास बनना | 399 |
| 98 | कबीरा नम्बर 326 : फ़ाल निकालना | 399 |
| 99 | कबीरा नम्बर 327 : परिन्दों को उड़ा कर शुगून लेना | 399 |
| 100 | कबीरा नम्बर 328 : इ़ल्मे नुजूम सीखना | 399 |
| 101 | कबीरा नम्बर 329 : ख़त़ खींच कर शुगून लेना | 399 |
| 102 | कबीरा नम्बर 330 : काहिन के पास जाना | 399 |




www.dawateislami.net

| | | |
|---|---|---|
| 103 | कबीरा नम्बर 331 : सितारा शनास के पास जाना | 399 |
| 104 | कबीरा नम्बर 332 : पेशिन गोई करने वाले के पास जाना | 399 |
| 105 | कबीरा नम्बर 333 : नुजूमी के पास जाना | 399 |
| 106 | कबीरा नम्बर 334 : फ़ाल निकलवाने के लिये फ़ाल निकालने वाले के पास जाना | 399 |
| 107 | कबीरा नम्बर 335 : ख़त् खिंचवाने के लिये ख़त् खींचने वाले के पास जाना | 399 |
| 108 | بَابُ الْبُغَاة | 405 |
| 109 | कबीरा नम्बर 336 : बग़ावत करना | 405 |
| 110 | कबीरा नम्बर 337 : दुन्यवी मक़्सद पूरा न होने पर इमाम की बैअ़त तोड़ देना | 408 |
| 111 | باب الإمَامَةِ الْعُظْمٰى | 410 |
| 112 | कबीरा नम्बर 338 : अपनी ख़ियानत जानने के बा वुजूद इमाम या ह़ाकिम बनना | 410 |
| 113 | कबीरा नम्बर 339 : इस का पुख़्ता इरादा करना और इस का मुत़ा-लबा करना | 410 |
| 114 | कबीरा नम्बर 340 : मज़्कूरा इल्म और अ़ज़्म के साथ साथ इस के लिये मालो दौलत ख़र्च करना | 410 |
| 115 | कबीरा नम्बर 341 : ज़ालिम या फ़ासिक़ को मुसल्मानों के मुआ़-मलात का वाली बनाना | 416 |
| 116 | कबीरा नम्बर 342 : अह्ल को मा'ज़ूल कर के ना अह्ल को अमीर बनाना | 417 |
| 117 | कबीरा नम्बर 343 : ह़ाकिम या उस के नाइब का लोगों पर ज़ुल्म करना | 418 |
| 118 | कबीरा नम्बर 344 : अमीर या उस के नाइब का रआ़या के साथ धोका करना | 418 |
| 119 | कबीरा नम्बर 345 : ह़ाकिम या नाइब का अ़वाम की ज़रूरिय्यात पूरी न करना | 418 |
| 120 | कबीरा नम्बर 346 : बादशाह, क़ाज़ी वग़ैरा का मुसल्मान या ज़िम्मी पर ज़ुल्म करना म-सलन उन का माल खाना, उन्हें मारना या गाली देना वग़ैरा | 429 |
| 121 | कबीरा नम्बर 347 : मज़्लूम को ज़लील करना | 429 |
| 122 | कबीरा नम्बर 348 : ज़ालिमों के पास जाना | 429 |




www.dawateislami.net

| | | |
|---|---|---|
| 123 | कबीरा नम्बर **349 :** जुल्म पर उन की मदद करना | 429 |
| 124 | कबीरा नम्बर **350 :** बादशाह वग़ैरा को ना जाइज़ शिकायत करना | 429 |
| 125 | कबीरा नम्बर **351 :** बिद्अ़तियों को पनाह देना | 460 |
| 126 | **كِتَابُ الرِّدَّة** | 461 |
| 127 | कबीरा नम्बर **352 :** किसी मुसल्मान को कहना : ऐ काफ़िर ! | 461 |
| 128 | कबीरा नम्बर **353 :** किसी मुसल्मान को कहना : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन ! | 461 |
| 129 | **كتَابُ الحُدود** | 462 |
| 130 | कबीरा नम्बर **354 :** किसी ह़द में सिफ़ारिश करना | 462 |
| 131 | कबीरा नम्बर **355 :** मुसल्मान की बे इ़ज़्ज़ती करना, उस की ख़ामियां ढूंडना, उसे रुस्वा करना और लोगों में ज़लील करना | 464 |
| 132 | कबीरा नम्बर **356 :** लोगों के सामने नेक बनना और तन्हाई में ना जाइज़ काम करना ख़्वाह सग़ाइर के ज़रीए़ | 469 |
| 133 | कबीरा नम्बर **357 :** ह़ुदूद क़ाइम करने में सुस्ती करना | 472 |
| 134 | कबीरा नम्बर **358 :** ज़िना | 474 |
| 135 | कबीरा नम्बर **359 :** लिवात़त | 510 |
| 136 | कबीरा नम्बर **360 :** चौपाए से बदकारी करना | 510 |
| 137 | कबीरा नम्बर **361 :** औ़रत की दुबुर में वत़ी करना | 510 |
| 138 | कबीरा नम्बर **362 :** औ़रतों का आपस में बद फ़े'ली करना | 525 |
| 139 | कबीरा नम्बर **363 :** मुश–त–रका लौंडी से शरीक का वत़ी करना | 526 |
| 140 | कबीरा नम्बर **364 :** मुर्दा बीवी से सोह़बत करना | 526 |
| 141 | कबीरा नम्बर **365 :** वली और गवाहों के बिग़ैर होने वाले निकाह़ में वत़ी करना | 526 |
| 142 | कबीरा नम्बर **366 :** निकाहे़ मुत्आ़ में जिमाअ़ करना | 526 |
| 143 | कबीरा नम्बर **367 :** उजरत पर ले कर वत़ी करना | 526 |




www.dawateislami.net

| | | |
|---|---|---|
| 144 | कबीरा नम्बर **368** : किसी औरत को रोकना ताकि ज़ानी उस से ज़िना करे | 526 |
| 145 | कबीरा नम्बर **369** : चोरी करना | 528 |
| 146 | कबीरा नम्बर **370** : चोरी के इरादे से रास्ता रोकना | 532 |
| 147 | कबीरा नम्बर **371** : शराब पीना | 539 |
| 148 | कबीरा नम्बर **372** : दीगर नशा आवर अश्या पीना अगर्चे शाफ़ेई एक क़तरा पिये | 539 |
| 149 | कबीरा नम्बर **373** : शराब या नशा आवर चीज़ में से किसी एक को बनाना और आने वाली क़ैद के साथ उसे बनवाना | 539 |
| 150 | कबीरा नम्बर **374** : शराब उठाना | 539 |
| 151 | कबीरा नम्बर **375** : शराब पीने के लिये उठवाना | 539 |
| 152 | कबीरा नम्बर **376** : शराब पिलाना | 539 |
| 153 | कबीरा नम्बर **377** : शराब पिलाने का कहना | 539 |
| 154 | कबीरा नम्बर **378** : शराब बेचना | 539 |
| 155 | कबीरा नम्बर **379** : शराब ख़रीदना | 539 |
| 156 | कबीरा नम्बर **380** : शराब बेचने या ख़रीदने का कहना | 539 |
| 157 | कबीरा नम्बर **381** : इस की क़ीमत खाना | 539 |
| 158 | कबीरा नम्बर **382** : आने वाली क़ैद के साथ शराब या इस की क़ीमत का अपने पास रोकना | 539 |
| 159 | **بَابُ الصِّیَال** | 589 |
| 160 | कबीरा नम्बर **383** : क़त्ल के इरादे से बे क़ुसूर आदमी पर ह़म्ला करना | 589 |
| 161 | कबीरा नम्बर **384** : माल छीनने के लिये ह़म्ला करना | 589 |
| 162 | कबीरा नम्बर **385** : बे इ़ज़्ज़ती के इरादे से ह़म्ला करना | 589 |
| 163 | कबीरा नम्बर **386** : डराने, धम्काने के लिये ह़म्ला करना | 589 |




www.dawateislami.net

| | | |
|---|---|---|
| 164 | कबीरा नम्बर 387 : दूसरों के घरों में तांक झांक करना | 593 |
| 165 | कबीरा नम्बर 388 : चोरी छुपे लोगों की बातें सुनना जिन पर वोह किसी के आगाह होने को ना पसन्द करते हों | 596 |
| 166 | कबीरा नम्बर 389 : बुलूग़त के बा'द मर्द या औ़रत का ख़तना न करना | 598 |
| 167 | كتاب الجهاد | 599 |
| 168 | कबीरा नम्बर 390 : फ़र्ज़े ऐ़न जिहाद न करना | 599 |
| 169 | कबीरा नम्बर 391 : बिल्कुल जिहाद छोड़ देना | 599 |
| 170 | कबीरा नम्बर 392 : सरह़दों को तक़्वियत न देना | 599 |
| 171 | कबीरा नम्बर 393 : क़ुदरत के बा वुजूद اَمْرٌبِالْمَعْرُوْف तर्क कर देना | 605 |
| 172 | कबीरा नम्बर 394 : क़ुदरत के बा वुजूद نَهْیٌ عَنِ الْمُنْکَر तर्क कर देना | 605 |
| 173 | कबीरा नम्बर 395 : क़ौल का फ़े'ल के मुख़ालिफ़ होना | 605 |
| 174 | कबीरा नम्बर 396 : सलाम का जवाब न देना | 628 |
| 175 | कबीरा नम्बर 397 : इन्सान का अपनी ता'ज़ीम के लिये खड़ा होना पसन्द करना | 628 |
| 176 | कबीरा नम्बर 398 : जंग से फ़िरार होना | 630 |
| 177 | कबीरा नम्बर 399 : त़ाऊ़न से भागना | 634 |
| 178 | कबीरा नम्बर 400 : माले ग़नीमत में धोका देना | 648 |
| 179 | कबीरा नम्बर 401 : माले ग़नीमत छुपाना | 648 |
| 180 | باب الامان | 655 |
| 181 | कबीरा नम्बर 402 : अमान, ज़िम्मा या अ़ह्द वाले को क़त्ल करना | 655 |
| 182 | कबीरा नम्बर 403 : उसे धोका देना | 655 |
| 183 | कबीरा नम्बर 404 : उस पर ज़ुल्म करना | 655 |
| 184 | कबीरा नम्बर 405 : मुसल्मानों का राज़ फ़ाश करना | 659 |




www.dawateislami.net

| | | |
|---|---|---|
| 185 | باب المسابقة والمناضلة | 660 |
| 186 | कबीरा नम्बर **406 :** बतौरे तकब्बुर, मुक़ाबला बाज़ी या जूआ खेलने के लिये घोड़े वग़ैरा रखना | 660 |
| 187 | कबीरा नम्बर **407 :** बाज़ी या जूए के लिये तीर अन्दाज़ी का मुक़ाबला करना | 660 |
| 188 | कबीरा नम्बर **408 :** सीखने के बा'द बे रग़बती से तीर अन्दाज़ी छोड़ देना | 660 |
| 189 | كِتَابُ الاَيْمَان | 665 |
| 190 | कबीरा नम्बर **409 :** यमीने ग़मूस | 665 |
| 191 | कबीरा नम्बर **410 :** यमीने काज़िबा अगर्चे ग़मूस न हो | 665 |
| 192 | कबीरा नम्बर **411 :** क़समों की कसरत अगर्चे वोह सच्चा हो | 665 |
| 193 | कबीरा नम्बर **412 :** अमानत की क़सम उठाना | 676 |
| 194 | कबीरा नम्बर **413 :** बुत की क़सम उठाना | 676 |
| 195 | कबीरा नम्बर **414 :** क़सम को कुफ़्र से मशरूत़ करना | 676 |
| 196 | कबीरा नम्बर **415 :** इस्लाम के इलावा किसी मज़्हब की झूटी क़सम खाना | 681 |
| 197 | باب النذر | 681 |
| 198 | कबीरा नम्बर **416 :** नज़्र पूरी न करना | 681 |
| 199 | باب القضا | 682 |
| 200 | कबीरा नम्बर **417 :** क़ाज़ी बनाना | 682 |
| 201 | कबीरा नम्बर **418 :** क़ाज़ी बनना | 682 |
| 202 | कबीरा नम्बर **419 :** अपनी ख़ियानत व ज़ुल्म को जानते हुए ओह्दए क़ज़ा का सुवाल करना | 682 |
| 203 | कबीरा नम्बर **420 :** जाहिल को क़ाज़ी बनाना | 682 |
| 204 | कबीरा नम्बर **421 :** ज़ालिम को क़ाज़ी बनाना | 682 |
| 205 | कबीरा नम्बर **422 :** ह़क़ को बात़िल करने वाले की मदद करना | 691 |




www.dawateislami.net

| | | |
|---|---|---|
| 206 | कबीरा नम्बर **423 : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी मोल ले कर क़ाज़ी वग़ैरा का लोगों को राज़ी करना | 693 |
| 207 | कबीरा नम्बर **424 :** रिश्वत लेना ख़्वाह देने वाला हक़ पर हो | 695 |
| 208 | कबीरा नम्बर **425 :** बातिल के लिये रिश्वत देना | 695 |
| 209 | कबीरा नम्बर **426 :** रिश्वत देने और लेने वाले के दरमियान वासित़ा बनना | 695 |
| 210 | कबीरा नम्बर **427 :** ओ़हदए क़ज़ा देने पर रिश्वत लेना | 695 |
| 211 | कबीरा नम्बर **428 :** ओ़हदए क़ज़ा के लिये रिश्वत देना जब कि उस पर लाज़िम न हुवा हो और न ही उस पर माल ख़र्च करना लाज़िम हो | 695 |
| 212 | कबीरा नम्बर **429 :** सिफ़ारिश के सबब तहाइफ़ क़बूल करना | 703 |
| 213 | कबीरा नम्बर **430 :** नाहक़ झगड़ा करना या ला इ़ल्मी में झगड़ा करना म-सलन क़ाज़ी के वु-कला का आपस में झगड़ना | 704 |
| 214 | कबीरा नम्बर **431 :** त़-लबे हक़ के लिये झगड़ना जब कि मद्दे मुक़ाबिल को तक्लीफ़ देने और उस पर ग़-लबा पाने के लिये इन्तिहाई दुश्मनी और झूट से काम लिया जाए | 704 |
| 215 | कबीरा नम्बर **432 :** महज़ दुश्मनी की वज्ह से मुख़ालिफ़ पर सख़्ती के इरादे से झगड़ा करना | 704 |
| 216 | कबीरा नम्बर **433 :** बिला वज्ह झगड़ा करना | 704 |
| 217 | कबीरा नम्बर **434 :** मज़्मूम झगड़ा करना | 704 |
| 218 | **باب القسمة** | 710 |
| 219 | कबीरा नम्बर **435 :** तक़्सीम करने में ज़ुल्म करना | 710 |
| 220 | कबीरा नम्बर **436 :** क़ीमत लगाने में ज़ुल्म करना | 710 |
| 221 | **كِتَابُ الشَّهَادَات** | 711 |
| 222 | कबीरा नम्बर **437 :** झूटी गवाही देना | 711 |
| 223 | कबीरा नम्बर **438 :** झूटी गवाही क़बूल करना | 711 |




www.dawateislami.net

| | | |
|---|---|---|
| 224 | कबीरा नम्बर **439 :** बिला उ़ज़्र गवाही छुपाना | 715 |
| 225 | कबीरा नम्बर **440 :** ऐसा झूट जिस में ह़द या ज़रर हो | 716 |
| 226 | कबीरा नम्बर **441 :** शराबियों और दीगर फ़ासिक़ों का दिल बहलाने के लिये उन के साथ बैठना | 728 |
| 227 | कबीरा नम्बर **442 :** फ़ासिक़ क़ुर्रा और फ़ासिक़ अहले इ़ल्म के साथ बैठना | 728 |
| 228 | कबीरा नम्बर **443 :** जूआ खेलना | 730 |
| 229 | कबीरा नम्बर **444 :** चौसर खेलना | 732 |
| 230 | कबीरा नम्बर **445 :** शत़रंज खेलना | 739 |
| 231 | कबीरा नम्बर **446 :** गाने बजाने के आलात बजाना | 748 |
| 232 | कबीरा नम्बर **447 :** गाने बजाने के आलात सुनना | 748 |
| 233 | कबीरा नम्बर **448 :** बांसरी बजाना | 748 |
| 234 | कबीरा नम्बर **449 :** बांसरी सुनना | 748 |
| 235 | कबीरा नम्बर **450 :** त़बला या डुगडुगी बजाना | 748 |
| 236 | कबीरा नम्बर **451 :** त़बला या डुगडुगी सुनना | 748 |
| 237 | कबीरा नम्बर **452 :** ग़ैर मुअ़य्यन लड़के के मु-तअ़ल्लिक़ इ़श्क़िया अश्आ़र कहना और उस से इज़्हारे इ़श्क़ करना | 767 |
| 238 | कबीरा नम्बर **453 :** अज्नबी मख़्सूस औ़रत के मु-तअ़ल्लिक़ इ़श्क़िया अश्आ़र कहना अगर्चे बुरे अन्दाज़ में न कहे | 767 |
| 239 | कबीरा नम्बर **454 :** ग़ैर मुअ़य्यन औ़रत के मु-तअ़ल्लिक़ फ़ोह़्श अन्दाज़ में इ़श्क़िया अश्आ़र कहना | 767 |
| 240 | कबीरा नम्बर **455 :** मज़्कूरा इ़श्क़िया अश्आ़र को तरन्नुम से पढ़ना | 767 |
| 241 | कबीरा नम्बर **456 :** मुसल्मान की हज्व वाले अश्आ़र पढ़ना अगर्चे सच हो | 781 |
| 242 | कबीरा नम्बर **457 :** फ़ोह़्श कलाम पर मुश्तमिल अश्आ़र पढ़ना | 781 |




www.dawateislami.net

| | | |
|---|---|---|
| 243 | कबीरा नम्बर **458 :** वाज़ेह झूट पर मुश्तमिल अश्आर पढ़ना | 781 |
| 244 | कबीरा नम्बर **459 :** हज्विया अश्आर तर्ज़ से पढ़ना और उन की तश्हीर करना | 781 |
| 245 | कबीरा नम्बर **460 :** शे'रगोई में आदत से ज़ियादा मुबा-लग़ा आमेज़ ता'रीफ़ करना | 789 |
| 246 | कबीरा नम्बर **461 :** शे'रगोई के ज़रीए दौलत कमाना | 789 |
| 247 | कबीरा नम्बर **462 :** सग़ीरा गुनाहों पर इसरार करना | 793 |
| 248 | कबीरा नम्बर **463 :** कबीरा गुनाह से तौबा न करना | 798 |
| 249 | कबीरा नम्बर **464 :** अन्सार से बुग़्ज़ रखना | 843 |
| 250 | कबीरा नम्बर **465 :** सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को गाली देना | 843 |
| 251 | **كتاب الدعاوى** | 861 |
| 252 | कबीरा नम्बर **466 :** दूसरे की चीज़ पर नाहक़ दा'वा करना | 861 |
| 253 | **كتاب العتق** | 861 |
| 254 | कबीरा नम्बर **467 :** बिला जवाज़े शर-ई आज़ाद शुदा ग़ुलाम से ख़िदमत लेना | 861 |
| 255 | **ख़ातिमा** | 862 |
| 256 | ﴾1﴿...... **तौबा का बयान** | 862 |
| 257 | **ततिम्मह** | 877 |
| 258 | ﴾2﴿...... **हश्र, हिसाब, शफ़ाअत, पुल सिरात और उस के मु-तअ़ल्लिक़ात** | 883 |
| 259 | ﴾3﴿...... **जहन्नम और उस के मु-तअ़ल्लिक़ात** | 923 |
| 260 | ﴾4﴿...... **जन्नत और उस की ने'मतें** | 940 |
| 261 | **इख़्तिताम** | 974 |
| 262 | तफ़्सीली फ़ेहरिस्त | 975 |
| 263 | मआख़िज़ो मराजेअ़ | 997 |
| 264 | अल मदीनतुल इल्मिय्या की कुतुब का तआ़रुफ़ | 1001 |




www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

# ''गुनाहों से हर दम बचा या इलाही'' के 21 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की ''21 निय्यतें''

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : **نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ** या'नी मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (المعجم الكبير للطبرانی،الحدیث:۵۹۴۲،ج ۶،ص۱۸۵)

**दो म-दनी फूल :**

《1》 बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

《2》 जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा उतना सवाब भी ज़ियादा।

《1》 हर बार ह़म्द व 《2》 सलात और 《3》 तअ़व्वुज़ व 《4》 तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) 《5》 रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ा-लआ़ करूंगा। 《6》 ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और 《7》 क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा। 《8》 क़ुरआनी आयात और 《9》 अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा। 《10》 जहां जहां ''**अल्लाह**'' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और 《11》 जहां जहां ''सरकार'' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। 《12》 इस किताब का मुत़ा-लआ़ शुरूअ़ करने से पहले इस के मुअल्लिफ़ को ईसाले सवाब करूंगा। 《13》 (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात अन्डर लाइन करूंगा। 《14》 (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) ''याद दाश्त'' वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। 《15》 दूसरों को **येह किताब** पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। 《16,17》 इस ह़दीसे पाक ''**تَهَادَوْا تَحَابُّوْا**'' एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالک ، الحدیث:۱۷۳۱، ج۲،ص۴۰۷) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा। 《18》 इस किताब के मुत़ा-लए़ का सवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगा। 《19》 अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर किया करूंगा और इस्लामी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवा दिया करूंगा। 《20》 आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र किया करूंगा। 《21》 किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगा (नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़्लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)।



www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

# अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़् : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللهُ السَّلَام पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ[6] शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
(2) शो'बए तराजिमे कुतुब
(3) शो'बए दर्सी कुतुब
(4) शो'बए इस्लाह़ी कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
(6) शो'बए तख़्रीज

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल**



www.dawateislami.net

**इल्मिय्या''** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

## ......म-दनी इन्क़िलाब......

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !**

**अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी के हुसूल और बा किरदार मुसल्मान बनने के लिये **''दा'वते इस्लामी''** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** से **''म-दनी इन्आमात''** नामी रिसाला हासिल कर के उस के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश कीजिये और अपने अपने शहरों में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की बहारें लूटिये। **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के लिये बे शुमार **म-दनी क़ाफ़िले** शह्र ब शह्र, गाउं ब गाउं सफ़र करते रहते हैं, आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा करें। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप अपनी ज़िन्दगी में हैरत अंगेज़ तौर पर **''म-दनी इन्क़िलाब''** बरपा होता देखेंगे।

*अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो !*



www.dawateislami.net

## पहले इसे पढ़ लीजिये !

**ख़ैर** की बुन्याद ख़ल्वत व जल्वत में तक़्वा व परहेज़ गारी पर है। जो इस ख़स्लत को इख़्तियार कर लेता है दुन्या व आख़िरत की भलाइयां उस में जम्अ़ हो जाती हैं। तक़्वा के दीनी व दुन्यवी फ़वाइद व फ़ज़ाइल बे इन्तिहा हैं...... मुत्तक़ी को तंगदस्ती से नजात दी जाती है और वहां से रिज़्क़ अ़ता किया जाता है जहां उस का गुमान न हो(1)...... क़ुरआने ह़कीम से हिदायत पाता है(2)...... उसे इ़ल्म से नवाज़ा जाता है(3)...... उसे ह़क़्क़ो बात़िल के दरमियान फ़र्क़ करने की क़ुव्वत अ़ता की जाती है, उस की ख़त़ाएं मिटा दी जाती और गुनाह बख़्श दिये जाते हैं(4)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी विलायत अ़ता फ़रमाता है(5)...... उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब नसीब होता है(6)...... उस के लिये जहन्नम से नजात है(7)...... और उस के लिये जन्नत का वा'दा है।(8)

क़ुरआने करीम में जा बजा तक़्वा का दर्स दिया गया है। **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) फ़रमाते हैं : ''क़ुरआने मजीद में तक़्वा का इत़्लाक़ तीन मआ़नी पर किया गया है : (1)...... डर और ख़ौफ़ (2)...... इत़ाअ़त व इ़बादत (3)...... दिल को गुनाहों से पाक रखना और येही ह़क़ीक़ी तक़्वा है।''(9)

तक़्वा ही वोह शै है जो बन्दे को अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे आ़ली का मुकर्रम व मुअ़ज़्ज़ज़ बनाती है। इर्शादे बारी तआ़ला है : ''اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ(پ۲۶،الحجرات:۱۳)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़ गार है।''

अल ग़रज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह़कामात की बजा आ-वरी और मम्नूआ़त से इज्तिनाब

---

(1)......پ۲۸،الطلاق: ۲،۳۔ (2)......پ ۱ ، البقرة:۲۔ (3)......پ۳، البقرة:۲۸۲۔ (4)......پ۹،الانفال:۲۹۔

(5)......پ۲۵،الجاثية:۱۹۔ (6)...... پ۲،البقرة: ۱۹۴۔ (7)......پ۱۶ ،مريم:۷۲۔ (8)......پ۲۶،محمد:۱۵۔

(9)......منهاج العابدين للغزالى،العائق الرابع النفس،ص۵۹ملخصا۔



www.dawateislami.net

कर के उस की नाराज़ी व अज़ाब से बचने का नाम तक़्वा है और तक़्वा की आसान ता'बीर येह है कि ''اَنْ لَّا یَرَاكَ اللّٰهُ حَیْثُ نَهَاكَ وَلَا یَفْقِدُكَ حَیْثُ اَمَرَكَ'' या'नी तेरा परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तुझे वहां न देखे जहां जाने से उस ने तुझे रोका है और उस मक़ाम से ग़ैर ह़ाज़िर न पाए जहां ह़ाज़िर होने का उस ने तुझे हुक्म दिया है।'' **याद रखिये !** रब तआ़ला की ना फ़रमानी दुन्या व आख़िरत में तबाही व बरबादी और ज़िल्लतो रुस्वाई का सबब है। इस के मु-तअ़ल्लिक़ चन्द आयाते मुबा-रका, अह़ादीसे त़य्यिबा और अक़्वाले करीमा मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

﴿1﴾...... हमारा पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَ مَنْ یَّعْصِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِیْنًا ﴿۳۶﴾ (پ۲۲، الاحزاب:۳۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो हुक्म न माने **अल्लाह** और उस के रसूल का वोह बेशक सरीह़ गुमराही बहका।

﴿2﴾...... और एक मक़ाम पर फ़रमाया :

اِنَّهٗ مَنْ یَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَؕ لَا یَمُوْتُ فِیْهَا وَ لَا یَحْیٰی ﴿۷۴﴾ (پ۱۶، طٰهٰ:۷۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक जो अपने रब के हुज़ूर मुजरिम हो कर आए तो ज़रूर उस के लिये जहन्नम है जिस में न मरे न जिये।

﴿3﴾...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब कोई इन्सान गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक़्त़ा लग जाता है फिर अगर वोह तौबा कर ले तो दिल साफ़ हो जाता है लेकिन अगर वोह गुनाह करता रहे तो वोह नुक़्त़ा फैलता रहता है यहां तक कि सारा दिल सियाह हो जाता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान से येही मुराद है : ''كَلَّا بَلْ سکتة رَانَ عَلٰی قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿۱۴﴾ (پ۳۰، المطففین:۱۴)'' **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** कोई नहीं बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों ने।''(1)

﴿4﴾...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''गुनाहों की कसरत से दिल सख़्त हो जाता है।''(2)

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی معالجة......الخ، فصل فی الطبع علی القلب الحدیث: ۷۲۰۷، ج۵، ص۴۴۱۔

2 ......فردوس الاخبار بمأثور الخطاب، الحدیث: ۲۳۵۹، ج۴، ص۱۱۵، مفهوماً۔



www.dawateislami.net

﴾5﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "गुनाहों की वज्ह से बन्दा मिलने वाले रिज़्क़ से महरूम कर दिया जाता है।"(1)

﴾6﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तरफ़ वह्य फ़रमाई : "ऐ मूसा ! मेरी मख़्लूक़ में सब से पहले मरने वाला (या'नी बरबाद होने वाला) इब्लीस है क्यूं कि सब से पहले उसी ने मेरी ना फ़रमानी की और जो मेरी ना फ़रमानी करता है मैं उसे मुर्दा लिख देता हूं।"(2)

﴾7﴿...... हज़रते सय्यिदुना वहीब बिन वरद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से पूछा गया : "क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ना फ़रमान इबादत की लज़्ज़त पा सकता है ?" इर्शाद फ़रमाया : "नहीं ! बल्कि जो गुनाह का पुख़्ता इरादा करता है वोह भी इबादत की लज़्ज़त से महरूम रहता है।"(3)

﴾8﴿...... हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़-लवी हद्दाद शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नज़रे रहमत से महरूम होने और उस के नाराज़ होने की अ़लामत येह है कि बन्दा गुनाहों में मुब्तला हो जाता है। गुनाहों पर इसरार करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी मोल लेता है, वोह शैतान का यार होता है और अहले ईमान उस से बेज़ार होते हैं।"(4)

**प्यारे इस्लामी भाइयो !** अगर गुनाहों पर इताब, इक़ाब और अ़ज़ाब न भी हो तो क्या येह कम है कि बन्दा गुनाहों की वज्ह से साबिक़ीन को मिलने वाले बुलन्द मरातिब और नेकों को अ़ता किये जाने वाले सवाब से महरूम रहता है और क्यूं न हो कि गुनाहों में रुस्वाई, दोज़ख़ का अ़ज़ाब, जब्बार व क़ह्हार عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी और उस का ऐसा ग़ज़ब है जिस के आगे तमाम ज़मीन व आस्मान वाले ठहर न सकें। लिहाज़ा बन्दे को चाहिये कि हर छोटे बड़े गुनाह से

---

(1)......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث ثوبان، الحديث : ۲۲۵۰۱، ج۸، ص۳۳۵۔

(2)......الزواجر عن اقتراف الكبائر، مقدمة المؤلف، خاتمه، ج۱، ص۲۷، مفهوماً۔

(3)......صفة الصفوة، وهيب بن الورد، ج۱، الجزء الثانی، ص۱۴۹۔

(4)......رسالة المذاكرة مع الاخوان المحبين من اهل الخير والدين (مترجم)، ص۴۳۔



www.dawateislami.net

ख़ुद को बचाए ताकि दुन्या व आख़िरत में रुस्वाई से बच जाए और दोनों जहां में काम्याबी व सुर्ख़-रूई इस का मुक़द्दर क़रार पाए।

पेशे नज़र किताब **"जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल ( जिल्द 2 )"** अ़ल्लामा अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन मुह़म्मद बिन अ़ली बिन ह़जर अल मक्की अल हैतमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 974 हि.) की तालीफ़ "**اَلزَّوَاجِر عَنِ اقْتِرَافِ الْكَبَائِر**(الجزء الثانى) ﴿مطبوعه: دارالمعرفة بيروت لبنان١٤١٩ھ﴾" का उर्दू तरजमा है। इस से क़ब्ल जिल्द अव्वल **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **"मक-त-बतुल मदीना"** से त़ब्अ़ हो कर अ़वाम व ख़वास में मक़्बूल हो चुकी है। पहली जिल्द के तरजमे को क़िब्ला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه, पाक व हिन्द के कसीर मुफ़्तियाने इज़ाम और उ़-लमा व मशाइख़ كَثَّرَهُمُ اللهُ تَعَالٰى, दीनी मदारिस के तु़-लबा, निगरान व अराकीने शूरा (दा'वते इस्लामी) और मुबल्लिग़ीन इस्लामी भाइयों ने ख़ूब सराहा और बारहा इस किताब को पढ़ने और ख़रीद कर दूसरे इस्लामी भाइयों तक पहुंचाने की तरग़ीब दिलाई। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इब्ने ह़जर मक्की عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى ने इस किताब में गुनाहों की अक़्साम बित्तफ़्सील बयान फ़रमाई हैं। पहली जिल्द में **240** गुनाहों का तज़्किरा है जिन में से **67** बात़िनी और **173** ज़ाहिरी गुनाह हैं और दूसरी जिल्द में **227** ज़ाहिरी गुनाहों का तज़्किरा है।

**"अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश"** के अ़ज़ीमुश्शान जज़्बे के तह़त **दा'वते इस्लामी** की ख़ालिस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मजलिस **"मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** के **शो'बए तराजिमे कुतुब** (अ़-रबी से उर्दू) के म-दनी उ़-लमा كَثَّرَهُمُ اللهُ تَعَالٰى ने दूसरी जिल्द के तरजमे की सआ़दत ह़ासिल की। जिन्हों ने इस तरजमे को आप तक पहुंचाने के लिये मुसल्सल काविश और अनथक कोशिश की है। किताब में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन **रब्बे रह़ीम** عَزَّوَجَلَّ और उस के **मह़बूबे करीम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, **औलियाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की इनायतों और शैख़े त़रीक़त व शरीअ़त, अमीरे अहले



www.dawateislami.net

सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और जो ख़ामियां हैं उन में हमारी ग़ैर इरादी कोताही का दख़्ल है।

## अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या और الزواجرعن اقتراف الكبائر

**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** से किसी भी अ़-रबी किताब का तरजमा कमो बेश 16 मराह़िल से गुज़र कर आप के हाथों में पहुंचता है। जिन में तख़्रीज, तरजमा, आयाते मुबा-रका और उन के तरजमे का तक़ाबुल, फ़ॉर्मेटिंग, प्रूफ़ रीडिंग, तफ़्तीशे तख़्रीज, मुफ़ीद व ना गुज़ीर ह़वाशी, शर-ई तफ़्तीश और मुश्किल अल्फ़ाज़ की तस्हील और उन पर ए'राब, फ़ाइनल प्रूफ़ रीडिंग वग़ैरा ऐसे कठिन मराह़िल शामिल हैं। ज़ेरे नज़र तरजमा बनाम **"जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द 2)"** पर मज़्कूरा मराह़िल के साथ साथ दर्जे ज़ैल उमूर का भी इल्तिज़ाम किया गया है :

**﴿1﴾**...... कोशिश की गई है कि पढ़ने वालों तक वोही कैफ़िय्यत पहुंचे जो अस्ल किताब में जल्वे लुटा रही है।

**﴿2﴾**...... अ़-रबी उ़न्वानात को सामने रखते हुए मुस्तक़िल उर्दू उ़न्वानात क़ाइम किये गए हैं।

**﴿3﴾**...... रिवायत के मज़्मून व मफ़्हूम के पेशे नज़र ज़ैली उ़न्वानात का इज़ाफ़ा भी किया गया है।

**﴿4﴾**...... आयाते मुबा-रका का तरजमा इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के तर-ज-मए क़ुरआन **"कन्ज़ुल ईमान"** से दर्ज किया गया है।

**﴿5﴾**...... अह़ादीसे करीमा की तख़्रीज अस्ल माख़ज़ से करने की कोशिश की गई है और बाक़ी ह़वाला जात में जो कुतुब दस्त-याब हो सकीं उन से तख़्रीज की गई है।

**﴿6﴾**...... किताब कमो बेश 2244 ह़वाला जात से मुज़य्यन व आरास्ता है।

**﴿7﴾**...... अ़लामाते तरक़ीम (रुमूज़े अवक़ाफ़) का भी ख़याल रखा गया है।



www.dawateislami.net

﴾8﴿...... तरजमे में ह़त्तल इम्कान आसान और आ़म फ़हम अल्फ़ाज़ इस्ति'माल किये गए हैं ताकि ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी भाई इस किताब से फ़ाएदा उठा सकें।

﴾9﴿...... अगर कहीं मुश्किल और ग़ैर मा'रूफ़ अल्फ़ाज़ ज़रूरी थे तो उन पर ए'राब लगा कर हिलालैन में मआ़नी व मत़ालिब लिख दिये हैं।

﴾10﴿...... अह़ादीसे मुबा-रका का तरजमा करते वक़्त अकाबिर मुतर्जिमीने अहले सुन्नत के उर्दू तराजिम से भी रहनुमाई ली गई है।

﴾11﴿...... बत़ौरे वज़ाह़त या अह़नाफ़ का मौक़िफ़ बयान करने के लिये ह़वाशी भी तह़रीर किये गए हैं।

﴾12﴿...... मआख़िज़ व मराजेअ़ की फेह़रिस्त किताब के आख़िर में दी गई है।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ है कि हमें इस किताब को पढ़ने, इस पर अ़मल करने और दूसरे इस्लामी भाइयों बिल ख़ुसूस उ़-लमाए किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام को तोह़फ़े में पेश करने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाए। नीज़ हमें **''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश''** करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلّم

**शो'बए तराजिमे कुतुब**

**( मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या )**



www.dawateislami.net

# كِتَابُ النِّكَاح

**कबीरा नम्बर 241 :** **शादी न करना**

इस गुनाह के कबीरा होने के मु-तअ़ल्लिक़ बा'ज़ मु-तअख़्ख़िरीन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने वाज़ेह़ तौ़र पर कलाम फ़रमाया क्यूं कि उन्हों ने बयान फ़रमाया कि ला'नत भी कबीरा गुनाहों की अ़लामात में से है और इमामुल ह़-रमैन ने निकाह़ के बाब में ज़िक्र किया है कि,

﴿1﴾...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गु़यूब, मुनज़्ज़ह़ुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने निकाह़ न करने वाले पर अपने इस फ़रमान से ला'नत फ़रमाई : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शादी न करने वाले उन मर्दों पर ला'नत फ़रमाई जो कहते हैं कि "हम शादी नहीं करेंगे।" और उन औ़रतों पर भी ला'नत फ़रमाई जो इस त़रह़ कहती हैं।(1)

लेकिन येह हमारे उसूलों के मुत़ाबिक़ नहीं क्यूं कि हमारे नज़्दीक सह़ीह़ येह है कि निकाह़ नज़्र के साथ ही वाजिब होता है और जिन्हों ने बा'ज़ ह़ालात में निकाह़ को वाजिब क़रार दिया म-सलन अगर निकाह़ न करे तो ज़िना वग़ैरा में पड़ने का अन्देशा हो तो निकाह़ न करने को कबीरा गुनाहों में शुमार करना बई़द नहीं, बशर्ते़ कि वोह मह्र और शादी के अख़्राजात पर क़ादिर हो और शादी न करने की वज्ह से उसे ज़िना वग़ैरा में पड़ने का ख़ौफ़ या गुमान हो तो इस सूरत में निकाह़ न करने में बहुत ख़राबियां हैं लिहाज़ा इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया जाएगा।

❁❁❁❁❁❁❁

1......فردوس الاخبار للدیلمی ،باب اللام ،الحدیث : ۵۴۸۸،ج۲، ص۲۳۱۔
المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند ابی ہریرة،الحدیث : ۷۸۹۲،ج۳،ص۱۳۹۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 242 : अज्नबी औ़रत को शह्वत से देखना ( जब कि गुनाह में मुब्तला होने का ख़ौफ़ हो )

## कबीरा नम्बर 243 : अज्नबी औ़रत को शह्वत से छूना ( जब कि गुनाह में मुब्तला होने का ख़ौफ़ हो )

## कबीरा नम्बर 244 : अज्नबी औ़रत के साथ तन्हाई इख़्तियार करना ( जब कि इन दोनों के साथ कोई ऐसा मह़रम न हो जिस से वोह शर्मो ह़या करें अगर्चे औ़रत ही हो और न ही अज्नबी औ़रत का शोहर हो )

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : ''इब्ने आदम पर ज़िना का जो हि़स्सा लिख दिया गया है वोह उसे ज़रूर पाएगा, आंखों का ज़िना (ग़ैर मह़रम को) देखना है, कानों का ज़िना (ह़राम) सुनना है, ज़बान का ज़िना बोलना (या'नी फ़ोह़्श कलामी करना) है, हाथों का ज़िना (ह़राम को) पकड़ना है, पाउं का ज़िना (ह़राम की त़रफ़) चलना है और दिल ज़िना की ख़्वाहिश और तमन्ना करता है और शर्मगाह इस की तस्दीक़ या तक्ज़ीब करती है।''(1)

﴾2﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''बेशक हाथ ज़िना करते हैं और इन का ज़िना (ह़राम को) पकड़ना है, पाउं ज़िना करते हैं और इन का ज़िना (ह़राम की त़रफ़) चलना है और मुंह भी ज़िना करता है और इस का ज़िना बोसा देना है।''(2)

﴾3﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ निशान है : ''आंखें ज़िना करती हैं, पाउं ज़िना करते हैं और शर्मगाह भी ज़िना करती है।''(3)

﴾4﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''तुम में से किसी के सर में लोहे की सूई घोंप दी जाए तो येह इस से बेहतर है कि वोह ऐसी औ़रत को छूए जो उस के लिये ह़लाल नहीं।''(4)

---

(1) ......صحیح مسلم، کتاب القدر، باب قدر علی ابن آدم ــ الخ، الحدیث: ۲۷۵۴، ص۱۱۴۱ـ

(2) ......سنن ابی داوٗد، کتاب النکاح، باب فی ما یؤمر بہ ــ الخ، الحدیث: ۲۱۵۳، ص۱۳۸۱ـ

(3) ......المسند للامام احمد حنبل، مسند عبد اللہ بن مسعود، الحدیث: ۳۹۱۲، ج۲، ص۸۴ـ

(4) ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۴۸۷، ج۲۰، ص۲۱۲ـ



www.dawateislami.net

﴾5﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "औरतों के साथ तन्हाई इख़्तियार करने से बचो ! उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! जो शख़्स किसी औरत के साथ तन्हाई इख़्तियार करता है तो उन के दरमियान शैतान होता है और किसी शख़्स को मिट्टी और सियाह बदबूदार कीचड़ में लतपत ख़िन्ज़ीर रौंदे तो येह उस के लिये इस से बेहतर है कि उस के कन्धे ऐसी औरत के कन्धों के साथ हों जो उस के लिये ह़लाल नहीं।"(1)

﴾6﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम या तो अपनी निगाहें नीची रखोगे और अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करोगे या फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी शक्लें बिगाड़ देगा।"(2)

﴾7﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अ़ली ! बेशक जन्नत में तेरे लिये ख़ज़ाना है और तू उस की दो क़रनों वाला है(3) एक बार नज़र पड़ जाए तो दूसरी बार न देख क्यूं कि तुझे पहली नज़र मुआ़फ़ है दूसरी मुआ़फ़ नहीं।"(4)

﴾8﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "नज़र इब्लीस के तीरों में से एक ज़ह्र आलूद तीर है, जिस ने मेरे ख़ौफ़ से इसे तर्क किया मैं उसे इस के बदले ऐसा ईमान अ़त़ा करूंगा जिस की मिठास वोह अपने दिल में पाएगा।"(5)

﴾9﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस मुसल्मान की किसी औरत के हुस्न पर नज़र पड़े फिर वोह अपनी निगाहें झुका ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसी इबादत की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाएगा जिस की मिठास वोह अपने

---

1...... المعجم الكبير ،الحديث: ٧٨٣٠، ج٨، ص ٢٠٥۔

2...... المعجم الكبير، الحديث: ٧٨٤٠، ج٨، ص ٢٠٨۔

3...... या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुल क़रनैन से तश्बीह देते हुए फ़रमाया कि उस की दो त़रफ़ों के मालिक और उस के तमाम अत़राफ़ में चलने वाले हैं क्यूं कि इन के बारे में मन्क़ूल है कि ज़मीन में सफ़र करने और इन की हुकूमत मशरिक़ व मग़रिब के कनारों तक पहुंचने की वज्ह से इन्हें येह नाम दिया गया। अज़ मुसन्निफ़

4...... المصنف لابن أبی شيبة ، كتاب الفضائل ، باب فضائل علی بن ابی طالب ، الحديث: ٢٠، ج٧، ص ٤٩٨۔

5...... المعجم الكبير ،الحديث: ١٠٣٦٢، ج١٠، ص ١٧٣۔



www.dawateislami.net

दिल में पाएगा।''(1)

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हुसैन बैहक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی (मु–तवफ़्फ़ा 458 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं : ''अगर येह ह़दीस सह़ीह़ हो तो इस से मुराद येह है कि उस की नज़र बिला क़स्द ग़ैर महरम पर पड़े पस वोह एह़तियात़ करते हुए अपनी निगाह फेर ले।''(2)

﴾10﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''बरोज़े क़ियामत हर आंख रो रही होगी सिवाए उस आंख के...... जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ों (को देखने) से बन्द रही...... जिस ने राहे ख़ुदा में जाग कर रात गुज़ारी और...... जिस आंख से ख़ौफ़े ख़ुदा से मख्खी के सर के बराबर आंसू निकला।''(3)

﴾11﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''तीन शख़्स ऐसे हैं जिन की आंखें जहन्नम को नहीं देखेंगी : (1)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में पहरा देने वाली आंख (2)...... ख़ौफ़े ख़ुदा से रोने वाली आंख और (3)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ों से बाज़ रहने वाली आंख।''(4)

﴾12﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''तुम मुझे अपनी छ[6] चीज़ों की ज़मानत दो तो मैं तुम्हें जन्नत की ज़मानत देता हूं : (1)...... जब बात करो तो सच बोलो (2)...... जब वा'दा करो तो पूरा करो (3)...... जब तुम्हारे पास अमानत रखी जाए तो अदा करो (4)...... अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करो (5)...... अपनी निगाहें नीची रखो और (6)...... अपने हाथों को (ह़राम से) रोको।''(5)

﴾13﴿...... हज़रते सय्यिदुना जरीर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अचानक पड़ने वाली नज़र के बारे में दरयाफ़्त किया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अपनी निगाह फेर लो।''(6)

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل ، حديث أبي أمامة الباهلي، الحديث: ۲۲۳۴۱، ج۸، ص۲۹۹۔
شعب الايمان للبيهقي ، باب في تحريم الفروج ،الحديث: ۵۴۳۱، ج۴، ص۳۶۶۔

2 ......شعب الايمان للبيهقي،باب في تحريم الفروج،تحت الحديث: ۵۴۳۱، ج۴، ص۳۶۶۔

3 ......حلية الاولياء،الرقم: ۲۳۱صفوان بن سليم ،الحديث : ۳۶۶۳، ج۳، ص۱۹۰۔

4 ......المعجم الكبير ، الحديث: ۱۰۰۳، ج۱۹، ص۴۱۶، "كفت"بدله"غضت"۔

5 ......المسند للامام احمد بن حنبل ،حديث عبادة بن الصامت ،الحديث: ۲۲۸۲۱، ج۸، ص۴۱۲۔

6 ......المسند للامام احمد بن حنبل ،حديث جرير بن عبد الله ،الحديث: ۱۹۲۱۸، ج۷، ص۶۳۔



www.dawateislami.net

﴾14﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : हर सुब्ह़ दो फ़िरिश्ते निदा करते हैं : ''अफ़्सोस ! मर्दों के लिये औ़रतों के सबब और औ़रतों के लिये मर्दों के सबब बरबादी है।''(1)

﴾15﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और यौमे आख़िरत पर ईमान रखता है वोह हरगिज़ किसी ग़ैर मह़रम औ़रत के साथ ख़ल्वत इख़्तियार न करे।''(2)

﴾16﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''औ़रतों के पास जाने से बचो।'' तो एक अन्सारी ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **ह़म्व** के मु-तअ़ल्लिक़ आप क्या फ़रमाते हैं ?''(3) तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**ह़म्व**(4) तो मौत है।''(5)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के ज़िम्न में फ़रमाते हैं : ''या'नी बन्दे के लिये इस फ़े'ल से मर जाना बेहतर है। जब शोहर के बाप के मु-तअ़ल्लिक़ इतनी सख़्त वईद है ह़ालां कि वोह मह़रम है तो अज्नबी का मुआ़-मला कितना सख़्त होगा।''(6)

---

1 ......سنن ابن ماجه،ابواب الفتن ،باب فتنة النساء ،الحديث: ۳۹۹۹،ص ۲۷۱۷۔

2 ......العجم الكبير ،الحديث: ۱۱۴۶۲،ج ۱۱،ص ۱۵۳۔

3 ...... ह़म्व शोहर या बीवी के बाप को या मुत़्लक़न रिश्तेदार को कहते हैं और एक क़ौल के मुत़ाबिक़ सिर्फ़ शोहर के बाप को कहते हैं और यहां येही मुराद है और एक क़ौल के मुत़ाबिक़ सिर्फ़ बीवी के बाप को कहते हैं। अज़ मुसन्निफ़

4 ...... मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان (मु-तवफ़्फ़ा 1391 हि.) मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 5, सफ़ह़ा 14 पर इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : ''भावज का देवर (से) बे पर्दा होना मौत की त़रह़ बाइसे हलाकत है यहां (साह़िबे) मिरक़ात ने फ़रमाया कि ह़म्व से मुराद सिर्फ़ देवर या'नी ख़ावन्द का भाई ही नहीं बल्कि ख़ावन्द के तमाम वोह क़राबत दार मुराद हैं जिन से निकाह़ दुरुस्त है जैसे ख़ावन्द का चचा, मामूं, फूफा वग़ैरा। इसी त़रह़ बीवी की बहन या'नी साली और उस की भतीजी, भान्जी वग़ैरा सब का भी येह ही हुक्म है। ख़याल रहे कि देवर को मौत इस लिये फ़रमाया कि आ़दतन भावज देवर से पर्दा नहीं करतीं बल्कि उस से दिल-लगी, मज़ाक़ भी करती हैं और ज़ाहिर है कि अज्नबी ग़ैर मह़रम से मज़ाक़ दिल-लगी किस क़दर फ़ितने का बाइस है, अब भी ज़ियादा फ़ितना देवर, भावज और साली बहनोई में देखे जाते हैं।''

5 ......صحيح البخاری ،كتاب النكاح ،باب لا يخلون رجل بامرأة......الخ ،الحديث: ۵۲۳۲،ص ۴۵۲۔

6 ......شعب الايمان للبيهقی، باب فی تحريم الفروج ،تحت الحديث: ۵۴۳۷،ج ۴،ص ۳۶۸۔



www.dawateislami.net

## तम्बीह :

मज़्कूरा तीनों गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और येह अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का मौक़िफ़ है गोया उन्हों ने पहली और दूसरी ह़दीसे मुबा-रका से इस्तिद्लाल किया है, लेकिन शैख़ैन (या'नी इमाम न-ववी व इमाम राफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا) वग़ैरा ने फ़रमाया है कि ज़िना की त़रफ़ ले जाने वाले उमूर कबीरा गुनाह नहीं और इन दोनों में तत़्बीक़ यूं मुम्किन है कि शैख़ैन के क़ौल को इस सूरत पर मह़मूल किया जाए कि जब शह्वत और फ़ितने का ख़ौफ़ न हो । और दीगर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के क़ौल को इस पर मह़मूल किया जाए कि जब येह दोनों चीजे़ं पाई जाएं । इसी वज्ह से मैं ने पहले मौक़िफ़ को इन दोनों (या'नी शह्वत और फ़ितने के ख़ौफ़) के साथ मुक़य्यद किया । यहां तक कि इन्हें कबीरा गुनाह क़रार न देने की कोई वाज़ेह़ दलील पाई जाए और इन दोनों के न पाए जाने के बा वुजूद इसे कबीरा गुनाह क़रार देना इन्तिहाई बईद अज़ क़ियास है ।

❀❀❀❀❀❀❀

### ......म-दनी इन्क़िलाब......

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयों !**

**अल्लाह** व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ख़ुशनूदी के ह़ुसूल और बा किरदार मुसल्मान बनने के लिये **''दा'वते इस्लामी''** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** से **''म-दनी इन्आ़मात''** नामी रिसाला ह़ासिल कर के इस के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश कीजिये और अपने अपने शहरों में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की बहारें लूटिये । **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के लिये बे शुमार **म-दनी क़ाफ़िले** शह्र ब शह्र, गाउं ब गाउं सफ़र करते रहते हैं, आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा करें । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप अपनी ज़िन्दगी में ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर **''म-दनी इन्क़िलाब''** बरपा होता देखेंगे ।

***अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में — ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो !***



www.dawateislami.net

**कबीरा नम्बर 245 : अम्रद को देखना ( जब कि शह्वत और फ़ितने का ख़ौफ़ हो )**
**कबीरा नम्बर 246 : अम्रद को छूना ( जब कि शह्वत और फ़ितने का ख़ौफ़ हो )**
**कबीरा नम्बर 247 : अम्रद के साथ तन्हाई इख़्तियार करना ( जब कि शह्वत और फ़ितने का ख़ौफ़ हो )**

इन तीन को भी साबिक़ा तीनों गुनाहों के त़रीक़े पर मब्नी होने की वज्ह से कबीरा गुनाहों में शुमार करना ज़ाहिर है क्यूं कि अम्रद गुनाह में मुब्तला होने का बड़ा सबब है। ज़िना, लिवात़त और इसी त़रह़ इन के मुक़द्दमात को अ़ला-ह़दा अ़ला-ह़दा कबीरा गुनाहों में शुमार करना भी इस की ताईद करता है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शिहाबुद्दीन अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं : "ह़ज़राते शैख़ैन (या'नी इमाम न-ववी व इमाम राफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا) ने साह़िबुल उ़द्दह के क़ौल को बर क़रार रखा जिस में उन्हों ने कुछ गुनाहों को सग़ीरा क़रार दिया। उन में से एक येह है कि अज्नबिय्या और अम्रद की त़रफ़ देखना जाइज़ नहीं और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़सन अ़ली बिन मुह़म्मद मावरदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 450 हि.) वग़ैरा ने मुत़्लक़ फ़रमाया है कि "बिग़ैर ह़ाजत के शह्वत के साथ क़स्दन देखना फ़िस्क़ है और देखने वाले की गवाही मरदूद है। इसी त़रह़ अगर बिग़ैर शह्वत के फ़ुज़ूल नज़र डाले तो इस का भी येही हुक्म है।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "इस मौक़िफ़ को इख़्तियार किया गया है कि जब उस की नेकियां ज़ियादा हों तो सिर्फ़ इस अ़मल से फ़ासिक़ न होगा जैसा कि हम साबित कर चुके हैं। पस येह कबीरा गुनाह नहीं जो बन्दे का आ़दिल होना ख़त्म कर दे। हां ! अगर फ़ितने का ख़ौफ़ हो फिर नज़र डाले तो इस सूरत में इस का कबीरा होना वाज़ेह़ है।"

येह आख़िरी क़ौल मेरे मौक़िफ़ के मुत़ाबिक़ है और मैं ने यहां दोनों अक़्वाल, जिन में से एक में इसे कबीरा और दूसरे में ग़ैर कबीरा क़रार दिया गया था, में तत़्बीक़ दी है। पस इस में ग़ौर करो क्यूं कि येह इन्तिहाई अहम बात है। मैं ने इन गुनाहों को और गुज़श्ता गुनाहों को शह्वत और फ़ितने के ख़ौफ़ के साथ मुक़य्यद किया ताकि येह छ^6 गुनाह, कबीरा गुनाहों के क़रीब हो जाएं, येह क़ैद लगाने की वज्ह येह नहीं कि हुरमत इस के साथ मुक़य्यद है और असह़्ह़ क़ौल येह है कि ह़त्तल इम्कान फ़साद को जड़ से ख़त्म करने के लिये औ़रत और अम्रद के साथ येह अफ़्आ़ल करना बिग़ैर शह्वत के भी ह़राम है अगर्चे फ़ितने से अम्न में हो। क्यूं कि फ़ितने का अन्देशा न होने के बा वुजूद अगर देखना जाइज़ हो तब भी येह बुराई और फ़साद की त़रफ़


www.dawateislami.net

ले जाता है। पस शरीअ़त की ख़ूबियों के लाइक़ येही है कि इन तमाम अह़वाल से ए'राज़ किया जाए और फ़ितने के दरवाज़े को और उस की त़रफ़ ले जाने वाली चीज़ों को मुत़्लक़न बन्द कर दिया जाए। इसी वज्ह से हमारे अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने औ़रत के नाख़ुनों के तराशों ख़्वाह हाथ से जुदा हों या हाथ के साथ, की त़रफ़ देखना ह़राम क़रार दिया है[1] इस पर बिना करते हुए कि असह़ह़ क़ौल के मुत़ाबिक़ औ़रत के हाथों और चेहरे को देखना ह़राम है क्यूं कि येह औ़रत का सित्र है ख़्वाह लौंडी ही हो अगर्चे येह दोनों (या'नी हाथ और चेहरा) नमाज़ में आज़ाद औ़रत का सित्र नहीं। इसी त़रह़ औ़रत से जुदा होने वाली बाक़ी चीज़ों को देखना भी ह़राम है क्यूं कि कभी बा'ज़ का देखना कुल के देखने की त़रफ़ ले जाता है, पस देखना मुत़्लक़न ह़राम होना ही बेहतर है। जिस त़रह़ मर्द पर औ़रत की बयान कर्दा चीज़ों को देखना ह़राम है इसी त़रह़ औ़रत पर भी ह़राम है कि वोह मर्द की इन चीज़ों को देखे अगर्चे शह्वत और फ़ितने का ख़ौफ़ न हो। अगर मर्द और औ़रत दोनों नसब, रिज़ाअ़त या मुसा-हरत की वज्ह से एक दूसरे के मह़रम हों तो नाफ़ से ले कर घुटने तक के इ़लावा की त़रफ़ देखना और आपस में तन्हाई इख़्तियार करना जाइज़ है क्यूं कि यहां फ़साद का गुमान नहीं।[2]

इसी त़रह़ वोह मर्द भी औ़रत को देख सकता है जिस का आलए तनासुल ढीला पड़ जाए कि उस में कुछ त़ाक़त बाक़ी न रहे और न ही शह्वत और औ़रतों की त़रफ़ मैलान बाक़ी रहे। इसी त़रह़ अगर मर्द किसी औ़रत का ग़ुलाम हो और येह दोनों क़ाबिले ए'तिमाद और आ़दिल हों तो वोह भी उसे देख सकता है। लेकिन दोनों का सिर्फ़ ज़िना से पाक दामन होना काफ़ी नहीं बल्कि दोनों में अ़दालत की सिफ़त का होना ज़रूरी है।

इन्तिहाई बूढ़ा, मरीज़, इ़न्नीन (या'नी जो जिमाअ़ पर क़ादिर न हो) ख़सी (या'नी जिस के ख़ुस्ये कूट या निकाल दिये जाएं) और मजबूब (या'नी जिस का आलए तनासुल काट दिया जाए) इस त़रह़ नहीं बल्कि इन में से हर एक पर औ़रत की त़रफ़ देखना और औ़रत पर इन की त़रफ़ देखना सह़ीह़ सालिम मर्द व औ़रत की त़रह़ ह़राम है।

---

❶...... अह़नाफ़ के नज़्दीक : "औ़रत के पाउं के नाख़ुन कि इन को भी अज्नबी शख़्स नहीं देख सकता और हाथ के नाख़ुन को देख सकता है।" (बहारे शरीअ़त, जि. 3, हिस्सा : 16, स. 449)

❷...... अह़नाफ़ के नज़्दीक : "जो औ़रत इस के महा़रिम में हो उस के सर, सीना, पिंडली, बाज़ू, कलाई, गरदन, क़दम की त़रफ़ नज़र कर सकता है जब कि दोनों में से किसी की शह्वत का अन्देशा न हो मह़ारिम के पेट, पीठ और रान की त़रफ़ नज़र करना ना जाइज़ है। इसी त़रह़ करवट और घुटने की त़रफ़ नज़र करना भी ना जाइज़ है।" (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 87)



www.dawateislami.net

## मुराहिक़, ज़िम्मिया और ज़ानिया फ़ासिक़ा से पर्दे का हुक्म :

मुराहिक़ (या'नी क़रीबुल बुलूग़) लड़के या लड़की का वली उन्हें हर उस काम से रोके जिस से बालिग़ या बालिग़ा को रोका जाता है और औ़रतों पर क़रीबुल बुलूग़ लड़के से पर्दा करना ज़रूरी है जैसा कि मुसल्मान औ़रत पर वाजिब है कि ज़िम्मी औ़रत से पर्दा करे ताकि वोह किसी फ़ासिक़ या काफ़िर को उस के औसाफ़ बयान न करे जिस की वज्ह से वोह किसी फ़ितने में पड़ जाए। और ज़ानिया फ़ासिक़ा भी ज़िम्मी औ़रत के हुक्म में है, लिहाज़ा पाक दामन औ़रत का उस से बचना ज़रूरी है ताकि वोह इसे अपनी बुरी आ़दात की त़रफ़ न ले जाए।

अलबत्ता ! इ़लाज मुआ़-लजा, गवाही, ता'लीम, बैअ़ या इस त़रह़ की किसी चीज़ की औ़रत को ह़ाजत हो तो ब क़दरे ज़रूरत उस को देखना जाइज़ है। कुतुबे फ़िक़ह में इस की तफ़्सील मौजूद है।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शिहाबुद्दीन अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) के ह़वाले से गुज़र चुका है कि उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़सन अ़ली बिन मुह़म्मद मावरदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 450 हि.) से जो कलाम नक़्ल किया है वोह ज़िक्र कर्दा 6 कबीरा

---

(1)...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 397 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब : "**पर्दे के बारे में सुवाल जवाब**" सफ़ह़ा 36 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه नक़्ल फ़रमाते हैं : अगर त़बीबा (लेडी डॉक्टर) मुयस्सर न हो तो मजबूरी की ह़ालत में इजाज़त है। इस बारे में सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "**अज्नबी औ़रत** की त़रफ़ नज़र करने में ज़रूरत की एक सूरत येह भी है कि औ़रत बीमार है, उस के इ़लाज में बा'ज़ आ'ज़ा की त़रफ़ नज़र करने की ज़रूरत पड़ती है बल्कि उस के जिस्म को छूना पड़ता है म-सलन नब्ज़ देखने में हाथ छूना होता है या पेट में वरम का ख़याल हो तो टटोल कर देखना होता है या किसी जगह **फोड़ा** हो तो उसे देखना होता है बल्कि बा'ज़ मर्तबा टटोलना भी पड़ता है इस सूरत में मौज़ए मरज़ (या'नी मरज़ की जगह) की त़रफ़ नज़र करना या इस ज़रूरत में ब क़दरे ज़रूरत उस जगह को छूना जाइज़ है। येह इस सूरत में है (कि) कोई औ़रत इ़लाज करने वाली न हो। वरना चाहिये येह कि औ़रतों को भी इ़लाज करना सिखाया जाए ताकि ऐसे मवाक़ेअ़ पर वोह काम करें कि उन के देखने वग़ैरा में इतनी ख़राबी नहीं जो मर्द के देखने वग़ैरा में है। अक्सर जगह दाइयां होती हैं जो पेट के वरम को देख सकती हैं। जहां दाइयां दस्त-याब हों मर्द को देखने की ज़रूरत बाक़ी नहीं रहती। इ़लाज की ज़रूरत से नज़र करने में भी येह एह़तियात़ ज़रूरी है कि सिर्फ़ उतना ही ह़िस्सए बदन खोला जाए जिस के देखने की ज़रूरत है बाक़ी ह़िस्सए बदन को अच्छी त़रह़ छुपा दिया जाए कि उस पर नज़र न पड़े। अगर देखने से काम चल सकता है तो छूने की शरअ़न इजाज़त नहीं। याद रहे ! छूना देखने से ज़ियादा सख़्त है।"



www.dawateislami.net

गुनाहों की तसरीह़ करता है। पस उन्हों ने फ़रमाया : ''ह़ज़राते शैख़ैन (या'नी इमाम न-ववी व इमाम राफ़ेई رَحْمَةُاللهِ تعالى عَلَيْهِما) ने साहि़बुल उ़द्दह के क़ौल को बर क़रार रखा जिस में उन्हों ने कुछ गुनाहों को सग़ीरा क़रार दिया मगर उन की येह बात मह़ल्ले नज़र है। उन में से एक येह है कि अज्नबिय्या और अम्रद की त़रफ़ देखना जाइज़ नहीं। और इस में भी ग़ौरो फ़िक्र की ज़रूरत है पस ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन अ़ली बिन मुह़म्मद मावरदी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 450 हि.) वग़ैरा ने मुत़्लक़ फ़रमाया है कि ''बिग़ैर ह़ाजत के शह्वत के साथ क़स्दन देखना फ़िस्क़ है और देखने वाले की गवाही मरदूद है। इसी त़रह़ अगर बिग़ैर शह्वत के फ़ुज़ूल नज़र डाले तो इस का भी येही हुक्म है।'' इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) मज़ीद फ़रमाते हैं : ''उ़-लमा ने इस मौक़िफ़ को इख़्तियार किया है कि जब उस की नेकियां ज़ियादा हों तो सिर्फ़ इस अ़मल से फ़ासिक़ न होगा जैसा कि हम साबित कर चुके हैं। येह उस द-रजे का कबीरा गुनाह नहीं जो अ़दालत[1] से निकाल देता है। हां ! अगर फ़ितने का ख़ौफ़ हो फिर नज़र डाले तो इस सूरत में इस का कबीरा होना वाज़ेह़ है।''

मैं ने बा'ज़ मु-तअख़्ख़िरीन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام को देखा कि उन्हों ने मेरे ज़िक्र कर्दा मौक़िफ़ की त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया : ''औ़रत और अम्रद की त़रफ़ शह्वत से देखना ज़िना है क्यूं कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सह़ीह़ सनद के साथ मरवी है कि,

﴾1﴿...... ''आंखों का ज़िना देखना, ज़बान का ज़िना बोलना, हाथ का ज़िना पकड़ना, पाउं का ज़िना चलना है और नफ़्स (ज़िना की) तमन्ना और ख़्वाहिश करता है।''[2]

इसी लिये सालिह़ीन ने अम्रदों (या'नी जिन्हें देख कर शह्वत आए उन) को देखने, उन से ख़ल्त़ मल्त़ होने और उन के साथ बैठने से बचने के मु-तअ़ल्लिक़ मुबा-लग़ा फ़रमाया। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन ज़क्वान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : ''अमीरों की औलाद के साथ न बैठो क्यूं कि उन की सूरतें कुंवारी औ़रतों की सूरतों जैसी होती हैं और वोह औ़रतों से बढ़ कर फ़ितने में डालने वाले हैं।''

एक ताबेई फ़रमाते हैं : ''मैं नौ जवान सालिक (या'नी आ़बिदो ज़ाहिद नौ जवान) के

---

1...... अ़दालत का लुग़वी मा'ना इस्तिक़ामत है और शर-ई मा'ना राहे ह़क़ पर इस्तिक़ामत और मम्नूअ़ बातों से बचना है। (التعريفات ١٠٥)

2......صحيح مسلم ، كتاب القدر ، باب قدر على ابن ادم......الخ، الحديث :٦٧٥٣، ٦٧٥٤، ص١١٤٠ ، ١١٤١ ـ



www.dawateislami.net

साथ बे रीश लड़के के बैठने को सात दरिन्दों से ज़ियादा ख़तरनाक समझता हूं।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "कोई शख़्स एक मकान में किसी अम्रद के साथ तन्हा रात न गुज़ारे।"

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने औ़रत पर क़ियास करते हुए घर, दुकान या ह़म्माम में अम्रद के साथ ख़ल्वत को ह़राम क़रार दिया क्यूं कि,

﴾2﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : "जो शख़्स किसी औ़रत के साथ तन्हा होता है तो वहां तीसरा शैत़ान होता है।"(1)

जो अम्रद औ़रतों से ज़ियाद ख़ूब सूरत होता है उस में फ़ितना भी ज़ियादा होता है, इस लिये कि उस से औ़रतों की निस्बत ज़ियादा बुराई का इम्कान होता है और इस के ह़क़ में औ़रतों की निस्बत शक और शर के ऐसे त़रीक़े आसान हैं जो औ़रत के ह़क़ में आसान नहीं लिहाज़ा इस के साथ तन्हाई इख़्तियार करना ब द-र-जए औला ह़राम होना चाहिये। इन से बचने और नफ़रत करने के बारे में अस्लाफ़ के बे शुमार अक़्वाल हैं और वोह इन्हें अनतान (या'नी बदबूदार) कहते थे क्यूं कि इन से शर-ई त़ौर पर नफ़रत की गई है। जो हम ने ज़िक्र कि है उन सब में येही हुक्म है ख़्वाह अच्छी निय्यत से ही देखा जाए।

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 161 हि.) एक ह़म्माम में दाख़िल हुए। आप के पास एक ख़ूब सूरत लड़का आया तो इर्शाद फ़रमाया : "इसे मुझ से दूर कर दो क्यूं कि मैं हर औ़रत के साथ एक शैत़ान जब कि हर अम्रद के साथ 17 शयात़ीन देखता हूं।"

एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل (मु-तवफ़्फ़ा 241 हि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा। उस के साथ एक ख़ूब सूरत लड़का था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम्हारे साथ येह कौन है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "येह मेरा भान्जा है।" आप ने फ़रमाया : "आयिन्दा इसे ले कर मेरे पास न आना और इसे साथ ले कर रास्ते में न चला कर ताकि इसे और तुम्हें न जानने वाले बद गुमानी न करें।"

﴾3﴿...... जब क़बीलए अ़ब्दुल क़ैस का वफ़्द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो उन के साथ एक ख़ूब

---

1 ......المعجم الكبير،الحديث : ۷۸۳۰،ج۸،ص۲۰۵۔

جامع الترمذی، ابواب الفتن،باب ماجاء فی لزوم الجماعة،الحديث : ۲۱۶۵،ص۱۸۶۹۔



www.dawateislami.net

सूरत लड़का भी था। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे अपनी पुश्ते मुबारक के पीछे बिठा दिया और इर्शाद फ़रमाया : ''ह़ज़रते दावूद عَلَیْهِ السَّلَام की आज़्माइश भी नज़र से हुई।''(1)

कहते हैं : ''नज़र ज़िना की डाक है।'' और साबिक़ा ह़दीसे पाक भी इस की ताईद करती है कि ''नज़र इब्लीस के तीरों में से एक ज़हरीला तीर है।''(2)

۞۞۞۞۞۞۞

## कबीरा नम्बर 248 : ग़ीबत करना
## कबीरा नम्बर 249 : इस पर ख़ामोश और रिज़ा मन्द रहना

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَ لَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّۚ وَ لَا تَلْمِزُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ لَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِۚ وَ مَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ۝۱۱ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ٘ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّ لَا تَجَسَّسُوْا وَ لَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًاؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَؕ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ۝۱۲

(پ۲۶، الحجرات:۱۱،۱۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! न मर्द मर्दों से हंसें, अ़जब नहीं कि वोह इन हंसने वालों से बेहतर हों और न औ़रतें औ़रतों से, दूर नहीं कि वोह इन हंसने वालियों से बेहतर हों और आपस में त़ा'ना न करो और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो। क्या ही बुरा नाम है मुसल्मान हो कर फ़ासिक़ कहलाना और जो तौबा न करें तो वोह ही ज़ालिम हैं। ऐ ईमान वालो ! बहुत गुमानों से बचो, बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है और ऐ़ब न ढूंढो और एक दूसरे की ग़ीबत न करो, क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए तो येह तुम्हें गवारा न होगा और **अल्लाह** से डरो, बेशक **अल्लाह** तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है।

### आयाते मुक़द्दसा की मुख़्तसर वज़ाह़त

لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ

''सुख़्रिय्यह'' से मुराद येह है कि जिस से मिज़ाह़ किया जाए उस की त़रफ़ ह़क़ारत की

---

1 ......كتاب الكبائر للذهبى،الكبيرة الحادية عشرة،ص ۶۴۔

2 ......المعجم الكبير ،الحديث :۱۰۳۶۲ ،ج ۱۰،ص۱۷۳۔



www.dawateislami.net

निगाह से देखना। इस हुक्मे ख़ुदा वन्दी का मक़्सद येह है कि किसी को ह़क़ीर न समझो, हो सकता है वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक तुम से बेहतर, अफ़्ज़ल और ज़ियादा मुक़र्रब हो। चुनान्चे,

﴾1﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''कितने ही परेशान ह़ाल, परागन्दा बालों और फटे पुराने कपड़ों वाले ऐसे हैं कि जिन की परवाह नहीं की जाती। अगर वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर किसी बात की क़सम खा लें तो वोह ज़रूर उसे पूरा फ़रमा दे।''(1)

इब्लीसे लईन ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ह़क़ीर जाना तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे हमेशा के ख़सारे में मुब्तला कर दिया और ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हमेशा की इ़ज़्ज़त के साथ काम्याब हो गए। इन दोनों में बड़ा फ़र्क़ है और इस में एह़तिमाल है कि **عَسٰی**, **يَصِيْرُ** के मा'ना में हो या'नी किसी दूसरे को ह़क़ीर न जान क्यूं कि जब कभी वोह इ़ज़्ज़त वाला हो जाएगा और तू ज़लील हो जाएगा तो फिर वोह तुझ से इन्तिक़ाम लेगा।

لَاتُهِيْنَ الْفَقِيْرَ عَلَّكَ اَنْ    تَرْكَعَ يَوْمًا وَالدَّهْرُ قَدْ رَفَعَهٗ

**तरजमा :**...... फ़क़ीर की तौहीन न कर शायद तू किसी दिन फ़क़ीर हो जाए और ज़माने का मालिक उसे अमीर कर दे।

**وَلَا تَلْمِزُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ**

या'नी तुम एक दूसरे पर ऐ़ब न लगाओ और लम्ज़ (या'नी इशारा) क़ौल के साथ भी होता है और इस के इ़लावा किसी दूसरे त़रीक़े से भी, जब कि हम्ज़ सिर्फ़ क़ौल के साथ होता है। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन जुरैज رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मु-तवफ़्फ़ा 150 हि.) फ़रमाते हैं : ''हम्ज़ आंख, मुंह और हाथ से होता है जब कि लम्ज़ सिर्फ़ ज़बान से होता है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना लैस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मन्क़ूल है कि ''लु-मज़ह से मुराद वोह है जो तेरी मौजू-दगी में तुझ पर ऐ़ब लगाए और हु-मज़ह से मुराद वोह है कि जो तेरी अ़दम मौजू-दगी में तुझ पर ऐ़ब लगाए।'' ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد (मु-तवफ़्फ़ा 104 हि.) का इस आयते मुबा-रका ''**وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ** ﴿۱﴾ (پ۳۰، الھمزۃ:۱) तर-ज-मए

(1)......جامع الترمذی، ابواب المناقب، باب مناقب البراء بن مالک، الحدیث: ۳۸۵۴، ص ۲۰۴۷، بتغیرٍ۔



www.dawateislami.net

**कन्ज़ुल ईमान :** ख़राबी है उस के लिये जो लोगों के मुंह पर ऐब करे, पीठ पीछे बदी करे।" के तह़त फ़रमाते हैं कि "हु-मज़ह से मुराद लोगों में ऐब लगाने वाला है और लु-मज़ह से मुराद वोह है जो लोगों का गोश्त खाता (या'नी ग़ीबत करता) है।"

नब्ज़ से मुराद फेंकना है और लक़ब से मुराद वोह नाम है जो मुसम्मा की बुलन्दी या पस्ती का शुऊ़र दिलाए या'नी एक दूसरे के बुरे नाम न रखो या'नी इस त़रह़ नाम न रखो कि इन्सान को उस के अस्ल नाम के इ़लावा नाम से पुकारा जाए या जैसे ऐ मुनाफ़िक़, ऐ फ़ासिक़ कहना ह़ालां कि वोह अपने फ़िस्क़ से तौबा कर चुका हो।

मज़्कूरा आयते मुबा-रका में सुख़्रिय्यह को लम्ज़ और नब्ज़ से इस लिये मुक़द्दम किया गया कि येह इन दोनों से ज़ियादा अज़िय्यत नाक है क्यूं कि इस में किसी शख़्स की उस की मौजू-दगी में ह़क़ारत और तौहीन करना मक़्सूद होता है। और लम्ज़ से मुराद इन्सान के अन्दर मौजूद ऐब का इज़्हार करना है और येह पहले से कम है। इस के बा'द नब्ज़ बुरे लक़ब से पुकारना। येह इन दोनों के मुक़ाबले में कम है क्यूं कि इस के मा'ना का लक़ब के मुत़ाबिक़ होना ज़रूरी नहीं कि कभी अच्छे को बुरा और बुरे को अच्छा नाम दे दिया जाता है। गोया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमा रहा है : "तकब्बुर न करो कि अपने भाइयों को इस क़दर ह़क़ीर समझने लगो कि उन की त़रफ़ बिल्कुल तवज्जोह ही न दो और इसी त़रह़ उन के मर्तबे को कम करने के लिये उन्हें ऐब मत लगाओ और उन को ऐसे नामों से न पुकारो जिन्हें वोह ना पसन्द करते हों।"

"**اَنْفُسَكُم**" से एक दक़ीक़ नुक्ते पर ख़बरदार फ़रमाया गया है जिस को समझना चाहिये और वोह येह है कि "तमाम मुअमिनीन एक बदन के क़ाइम मक़ाम हैं कि जब इस के बा'ज़ हि़स्से को तक्लीफ़ होती है तो तमाम जिस्म तक्लीफ़ मह़सूस करता है।"

﴾शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा है :

*अख़ुव्वत इस को कहते हैं चुभे कांटा जो काबुल में तो हिन्दुस्तां का हर पीरो जवां बेताब हो जाए﴿*

पस इस ए'तिबार से जिस ने किसी दूसरे को ऐब लगाया तो ह़क़ीक़त में उस ने अपने आप को ऐब लगाया। नीज़ जब येह किसी को ऐब लगाएगा तो वोह भी इसे ऐब लगा सकता है। गोया येह ऐसा शख़्स है जो ख़ुद अपने आप को ऐब लगाता है और दर्जे ज़ैल ह़दीसे पाक की वई़द के तह़त आ जाता है कि,

﴾2﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने



www.dawateislami.net

आ़लीशान है : ''तुम में से कोई अपने बाप को हरगिज़ गाली न दे।'' सहा़बए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! कोई शख़्स अपने बाप को कैसे गाली दे सकता है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''येह किसी शख़्स के बाप को गाली देगा तो वोह इस के बाप को गाली देगा।''(1)

नीज़ इस फ़रमाने बारी तआ़ला की वई़द के तह़्त आ जाता है :

وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ (پ۵،النسآء:۲۹) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और अपनी जानें क़त्ल न करो।

تَلْمِزُوْٓا और تَنَابَزُوْا के दोनों सीग़े एक दूसरे के बर अ़क्स हैं क्यूं कि बा'ज़ अवक़ात मल्मूज़ (या'नी जिस पर ऐ़ब लगाया जाता है) उसी वक़्त इस बात पर क़ादिर नहीं होता कि ऐ़ब लगाने वाले को ऐ़ब लगाए, लिहाज़ा इसे ऐ़ब लगाने वाले के अह़्वाल की जुस्त-जू की ज़रूरत होती है यहां तक कि वोह इस के बा'ज़ उ़यूब पर आगाह हो जाए, मगर नब्ज़ का मुआ़-मला इस के बर अ़क्स है, क्यूं कि जिस को ना पसन्दीदा लक़ब दिया जाए वोह दूसरे को भी उसी वक़्त ऐसा लक़ब देने पर क़ादिर होता है, पस दोनों त़रफ़ से येह फ़े'ल वाक़ेअ़ हो सकता है।

''بِئْسَ الِاسْمُ'' का मा'ना येह है कि जिस ने इन तीनों में से किसी एक का इरतिकाब किया वोह फ़िस्क़ के नाम का मुस्तह़िक़ हो गया और येह इन्तिहाई ख़ामी है ह़ालां कि पहले वोह कामिलुल ईमान था और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस के साथ सख़्त वई़द मिला दी और फ़रमाया : ''وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۱۱﴾''

येह शदीद वई़द इन तीनों में से हर एक गुनाह के बड़े होने की त़रफ़ इशारा करती है। इस के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने गुमानों से बचने का हु़क्म दिया और इस की वज्ह बयान फ़रमाई कि बा'ज़ गुमान गुनाह होते हैं।

## बद गुमानी की ता'रीफ़ :(2)

बद गुमानी येह है कि ''किसी के बारे में यक़ीनी ख़बर के बिग़ैर उस के किसी बुराई में मुब्तला होने का तुझे गुमान हो और तेरा दिल इस पर पुख़्ता हो या बिग़ैर शर-ई दलील के तू ज़बान से उसे बयान कर दे।''

---

1 ......صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب الكبائر وأكبرها، الحديث: ٢٦٣، ص٦٩٣، بتغيرٍ قليلٍ۔

2 ...... बद गुमानी के मु-तअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मा'लूमात और शर-ई अह़काम के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 57 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''**बद गुमानी**'' का मुत़ा-लआ़ फ़रमा लीजिये।



www.dawateislami.net

﴾3﴿...... इसी वज्ह से सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बद गुमानी से बचो ! क्यूं कि बद गुमानी सब से झूटी बात है।"(1)

अपने मुआ़-मले का यक़ीनी इ़ल्म रखने वाला अ़क़्लमन्द दूसरे में मौजूद यक़ीनी ऐब जानने के बा वुजूद बहुत कम ही बद गुमानी करता है क्यूं कि कोई शै कभी ज़ाहिरन तो सह़ीह़ होती है मगर बात़िनन सह़ीह़ नहीं होती और कभी मुआ़-मला इस के बर अ़क्स होता है, पस वोह उस वक़्त गुमान पर भरोसा करना मुनासिब नहीं समझता।

## ज़न की अक़्साम :

(1)...... हर गुमान गुनाह नहीं बल्कि बा'ज़ तो वाजिब होते हैं जैसे दलाइले शरइय्या पर मुरत्तब होने वाले फ़रोई (या'नी दलील से साबित जुज़्वी) मसाइल में मुज्तहिदीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के गुमान, लिहाज़ा इन पर अ़मल करना ज़रूरी है।

(2)...... बा'ज़ मुस्तह़ब होते हैं जैसा कि,

﴾4﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मोमिन के बारे में अच्छा गुमान रखो।"(2)

(3)...... बा'ज़ मुबाह़ होते हैं।

(4)...... और बा'ज़ गुमान ह़ज़्म कहलाते हैं (या'नी एह़तियात़ और होशियारी से काम लेना और अ़क़्लमन्द लोगों के मश्वरे पर अ़मल करना) और इसी से मु-तअ़ल्लिक़ ह़दीसे पाक है। चुनान्चे,

﴾5﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "बेशक बद गुमानी ह़ज़्म से है।"(3)

या'नी वह्म करने वाला ह़क़ीक़त में किसी काम पर क़ादिर भी होता है जैसे वोह एह़तियात़न किसी ऐसे शख़्स के मुआ़-मले को तूल दे जिस के ह़ाल से वोह बे ख़बर हो यहां तक कि वोह इस सबब से दूसरे से तक्लीफ़ या धोके में मुब्तला होने से मह़फ़ूज़ हो जाए, पस इस गुमान का नतीजा किसी के बारे में बद गुमानी करना नहीं बल्कि बुराई पहुंचने से अपनी जान को बचाने में मुबा-लग़ा करना है।

---

(1)......صحیح البخاری، کتاب الادب، باب ماینھی عن التحاسد والتدابر، الحدیث: ۶۰۶۴، ص۵۱۲۔

(2)......المعجم الکبیر، الحدیث: ۲۳۹، ج۲۳، ص۱۵۶۔

(3)......موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، کتاب مُداراۃالناس، باب الحذرمن الناس......الخ، الحدیث: ۱۱۴، ج۷، ص۵۳۹۔



www.dawateislami.net

**तजस्सुस** का मा'ना है छानबीन करना और **जासूस** इसी से निकला है और इस से मुराद लोगों के ऐब तलाश करना है, जब कि तह़स्सुस से मुराद एह़सास और इदराक है और इसी से ज़ाहिरी और बातिनी ह़वास हैं।

कुरआने करीम की एक शाज़ क़िराअत में **تَجَسُّس** की बजाए **تَحَسُّس** है, इन के मा'ना व मफ़्हूम के मु-तअ़ल्लिक़ चन्द अक़्वाल मरवी हैं :

(1)...... येह दोनों एक ही चीज़ हैं और इन दोनों का मा'ना ख़बरों की मा'रिफ़त ह़ासिल करना है।

(2)...... दोनों मुख़्तलिफ़ हैं, पहले से मुराद ज़ाहिर की छानबीन और दूसरे से मुराद बातिन की छानबीन करना है।

(3)...... पहले से बुराई और दूसरे से भलाई मुराद है। ह़ालां कि येह क़ौल मह़ल्ले नज़र है और अगर इसे सह़ीह़ मान भी लिया जाए तब भी यहां येह मुराद नहीं।

(4)...... पहले से मुराद एक शख़्स से किसी दूसरे के मु-तअ़ल्लिक़ पूछना और दूसरे से मुराद किसी से उस के अपने मु-तअ़ल्लिक़ पूछना है।

इस का मा'ना जो भी हो बहर ह़ाल आयते करीमा में लोगों के पोशीदा उमूर की टोह में पड़ने और इन के मु-तअ़ल्लिक़ बह़स करने से मन्अ़ किया गया है।

﴾6﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : "न जासूसी करो, न ह़िर्स करो, न एक दूसरे से ह़सद करो, न एक दूसरे से बुग़्ज़ रखो और न ही एक दूसरे से रू गर्दानी करो और ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! भाई भाई बन जाओ जैसा कि उस ने तुम्हें हुक्म दिया है।"(1)

﴾7﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ऐ वोह लोगो जो ज़बान से तो ईमान लाए हो मगर तुम्हारे दिलों में अभी तक ईमान दाख़िल नहीं हुवा ! न तो मुसल्मानों की ग़ीबत करो और न ही उन के पोशीदा ऐब तलाश करो क्यूं कि जो मुसल्मानों के पोशीदा ऐब तलाश करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के ऐब ज़ाहिर फ़रमा देगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के ऐब ज़ाहिर फ़रमा दे तो वोह उसे ज़लीलो रुस्वा कर देगा अगर्चे वोह अपने घर में ही बैठा हुवा हो।"(2)

---

1 ......صحیح مسلم ،کتاب البر والصلة والادب ،باب تحریم الظن......الخ ،الحدیث : ۲۵۳۶، ۲۵۳۹،ص ۱۱۲۷ـ

2 ......سنن ابی داود ،کتاب الادب ،باب فی الغیبة ، الحدیث : ۴۸۸۰، ص ۱۵۸۱ـ

جامع الترمذی ،ابواب البر والصلة ،باب ما جاء فی تعظیم المؤمن ،الحدیث : ۲۰۳۲،ص ۱۸۵۵ـ



www.dawateislami.net

﴾8﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की गई : ''वलीद बिन उ़क़्बा के बारे में आप क्या कहते हैं जब कि उस की दाढ़ी से शराब के क़त़रे बह रहे होते हैं ?'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''हमें जासूसी करने से मन्अ़ किया गया है, अगर हम पर कोई चीज़ ज़ाहिर होगी तो उस के मुत़ाबिक़ अ़मल करेंगे ।''(1)

## ग़ीबत का बयान :

''وَلَا یَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا'' या'नी तुम में से कोई किसी की ग़ैर मौजू-दगी में उस का ऐसा ऐ़ब बयान न करे जिसे वोह ना पसन्द करता हो, गुज़श्ता आयते मुबा-रका की वज़ाह़त से येह मा'लूम हो चुका है कि किसी के मुंह पर उस का ऐ़ब बयान करना ग़ीबत से बढ़ कर अज़िय्यत नाक होता है ।

﴾9﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''क्या तुम जानते हो कि ग़ीबत क्या है ?'' सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : ''اَللّٰہُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं ।'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''(ग़ीबत येह है कि) तू अपने भाई का इस त़रह़ ज़िक्र करे जिसे वोह ना पसन्द करता हो ।'' अ़र्ज़ की गई : ''जो मैं कहता हूं अगर वोह मेरे भाई में मौजूद हो तो इस बारे में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या फ़रमाते हैं ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''अगर जो तुम कहते हो वोह उस में मौजूद है तो तुम ने ग़ीबत की और अगर तुम ने ऐसी बात कही जो उस में मौजूद ही नहीं तो तुम ने उस पर बोहतान लगाया ।''(2)

## ग़ीबत ह़राम होने की ह़िक्मत :

किसी की बुराई बयान करने में ख़्वाह कोई सच्चा ही क्यूं न हो फिर भी उस की ग़ीबत को ह़राम क़रार देने में ह़िक्मत येह है कि मोमिन की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त में मुबा-लग़ा करना है और इस में इस बात की त़रफ़ इशारा है कि इन्सान की ह़ुरमत और इस के ह़ुक़ूक़ की बहुत ज़ियादा ताकीद है, नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस की इ़ज़्ज़त को गोश्त और ख़ून के साथ तश्बीह दे कर मज़ीद पुख़्ता व मुअक्कद कर दिया और इस के साथ ही मुबा-लग़ा करते

---

(1)......المستدرک، کتاب الحدود ،باب النھی عن التجسس، الحدیث: ۸۱۹۷،ج۵،ص ۵۳۸۔

(2)......صحیح مسلم ،کتاب البر والصلۃ والادب ،باب تحریم الغیبۃ ،الحدیث :۲۵۹۳،ص۱۱۳۰۔



www.dawateislami.net

हुए इसे मुर्दा भाई का गोश्त खाने के मु-तरादिफ़ क़रार दिया और इर्शाद फ़रमाया : ''اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ''(1) इ़ज़्ज़त को गोश्त से तश्बीह देने की वज्ह येह है कि इन्सान की बे इ़ज़्ज़ती करने से वोह ऐसी ही तक्लीफ़ मह़सूस करता है जैसा कि उस का गोश्त काट कर खाने से उस का बदन दर्द मह़सूस करता है बल्कि इस से भी ज़ियादा। क्यूं कि अ़क्ल मन्द के नज़्दीक इस की इ़ज़्ज़त इस के ख़ून और गोश्त से ज़ियादा क़ीमती है। अ़क्ल मन्द इन्सान जिस त़रह़ लोगों का गोश्त खाना अच्छा नहीं समझता इसी त़रह़ उन की इ़ज़्ज़त पामाल करना ब द-र-जए औला अच्छा तसव्वुर नहीं करता क्यूं कि येह एक तक्लीफ़ देह अम्र है और फिर अपने भाई का गोश्त खाने की ताकीद लगाने की वज्ह येह है कि किसी के लिये अपने भाई का गोश्त खाना तो दूर की बात है चबाना भी मुम्किन नहीं होता लेकिन दुश्मन का मुआ़-मला इस के बर अ़क्स है क्यूं कि बा'ज़ अवक़ात इन्सान अपने सख़्त दुश्मन का गोश्त बिग़ैर किसी तवक़्क़ुफ़ के खा जाता है।

**ए'तिराज़ :** किसी के सामने उस के ऐ़ब बयान करना ह़राम है क्यूं कि इस से उसी वक़्त तक्लीफ़ होती है जब कि अ़दम मौजू-दगी में ग़ीबत करने से उसे इस की इत्तिलाअ़ नहीं होती जिस की ग़ीबत की गई है।

**जवाब :** इस का एक जवाब येह है कि مَيْتًا की क़ैद से येह ए'तिराज़ ख़ुद ब ख़ुद ख़त्म हो जाता है और इस की वज्ह येह है कि अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाने से उस को कोई तक्लीफ़ नहीं होती, अगर्चे येह इन्तिहाई पस्त और बुरा फ़े'ल है। लेकिन बिलफ़र्ज़ अगर वोह मुर्दा जान ले तो उसे ज़रूर तक्लीफ़ हो क्यूं कि मय्यित को अगर अपना गोश्त खाने का एह़सास हो जाए तो उसे भी ज़रूर तक्लीफ़ होगी। इसी त़रह़ किसी की ग़ैर मौजू-दगी में उस के ऐ़ब बयान करना भी ह़राम है क्यूं कि जिस की ग़ीबत की गई अगर उसे इत्तिलाअ़ हो जाए तो उसे भी तक्लीफ़ होगी।

दूसरा जवाब येह है कि इ़ज़्ज़त जिस त़रह़ बन्दे का अपना ह़क़ है इस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का भी ताकीदी ह़क़ है। अब अगर बिलफ़र्ज़ जिस की ग़ीबत की जाए उसे इत्तिलाअ़ होना मुम्किन नहीं तो फिर भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़क़ की रिआ़यत करने और लोगों की इ़ज़्ज़तों पर हाथ डालने से रोकने और ग़म की वुजूहात में से किसी वज्ह में पड़ने से बचने के लिये येह ह़राम

---

1...... **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए तो येह तुम्हें गवारा न होगा।



www.dawateislami.net

ही है। सिवाए चन्द अस्बाब के, क्यूं कि वहां ज़रूरत का मक़ाम है। पस ज़रूरत की वज्ह से उस वक़्त ग़ीबत मुबाह़ होगी। जैसा कि आयते करीमा ने ''مَیْتًا'' का ज़िक्र करते हुए इस की त़रफ़ इशारा किया है क्यूं कि मुर्दार का गोश्त खाना (जब कि जान जाने का ख़त़रा हो तो) ज़रूरतन जाइज़ है यहां तक कि अगर मजबूर शख़्स (जिस की जान जाने का ख़त़रा हो) मुर्दार आदमी के साथ मुर्दार जानवर पाए तो उस के लिये मुर्दार आदमी खाना जाइज़ नहीं मगर जब सिर्फ़ मुर्दार आदमी ही पाए तो उसे खा सकता है।

और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़रमाने आ़लीशान ''فَکَرِھْتُمُوْہُ'' का तक़्दीर कलाम येह है कि तुम इस खाने या गोश्त को ना पसन्द करते हो, लिहाज़ा ऐसा काम न करो जो इस के मुशाबेह हो और ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد (मु–तवफ़्फ़ा 104 हि.) का येह क़ौल इसी त़रफ़ इशारा करता है कि जब लोगों से कहा जाए : ''اَیُحِبُّ اَحَدُکُمْ اَنْ یَّاْکُلَ لَحْمَ اَخِیْہِ مَیْتًا'' या'नी क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए ?'' तो वोह कहेंगे : ''नहीं।'' तो फिर उन से कहा जाए : ''فَکَرِھْتُمُوْہُ'' या'नी तो तुम्हें येह गवारा न होगा।'' या'नी जैसे तुम येह ना पसन्द करते हो (कि अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाओ तो) इसी त़रह़ उस का बुराई के साथ ज़िक्र करना भी छोड़ दो।

और اَیُحِبُّ में हम्ज़ा इन्कारी हो तो इस से मुराद येह है कि ''तुम में से कोई भी अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना पसन्द नहीं करता। पस जब तुम इस को ना पसन्द करते हो तो फिर उस की बुराई बयान करने को भी ना पसन्द करो।''

एक क़ौल येह भी मरवी है कि ''فَکَرِھْتُمُوْہُ'' का मा'तूफ़ अ़लैह मह़्ज़ूफ़ है या'नी अस्ल इबारत यूं थी कि ''عُـرِضَ عَلَیْکُمْ ذٰلِکَ فَکَرِھْتُمُوْہُ'' या'नी तुम्हें पेश किया जाए तो तुम इसे ना पसन्द करोगे।''

इस आयते करीमा में ''فَکَرِھْتُمُوْہُ'' की (ہٗ) ज़मीर मन्सूब मुत्तसिल का मरजअ़ मय्यित हो तो येह भी दुरुस्त है तो इस सूरत में गोया कि येह उस की सिफ़त वाक़ेअ़ होगी और इस डरावे में मुबा–लग़े का फ़ाएदा देगी या'नी मत़लब येह होगा कि ''मुर्दार अगर्चे इन्तिहाई मजबूरी की ह़ालत में शाज़ो नादिर ही खाया जाता है लेकिन वोह भी जब बदबूदार हो जाए तो फिर तो हर कोई उस से नफ़रत करता है और उस जगह से भी दूर भागता है और उस के क़रीब तक फटक्ने की कोशिश नहीं करता तो उसे खाने के लिये भला कैसे उस के क़रीब जाएगा ? ग़ीबत का भी



www.dawateislami.net

येही ह़ाल है कि इस से इसी त़रह़ दूर रहना वाजिब है जिस त़रह़ बदबूदार मुर्दार से दूर रहा जाता है।"

मज़्कूरा दोनों आयाते मुबा-रका से ह़ासिल होने वाले नताइज व फ़वाइद में ग़ौरो फ़िक्र करेंगे और इन में अपनी फ़िक्र के इह़ात़े को वुस्अ़त देंगे तो इस बुराई से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मह़फ़ूज़ रहेंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी किताब के ह़क़ाइक़ को बेहतर जानता है।

इसी त़रह़ मज़ीद ग़ौरो फ़िक्र करो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दों पर रह़मत और मेह्रबानी फ़रमाते हुए इन दोनों आयतों में से हर एक को तौबा के साथ ख़त्म किया। अलबत्ता ! पहली आयते मुबा-रका नह्य के सीग़े से शुरूअ़ की गई और दोनों के क़रीब होने की वज्ह से नफ़ी "**وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ**" पर ख़त्म की गई और दूसरी आयते मुबा-रका "**اِجْتَنِبُوْا**" अम्र के सीग़े के साथ इस्बात से शुरूअ़ की गई और "**اِنَّ اللّٰہ**" पर ख़त्म की गई और सिर्फ़ पहली आयते मुबा-रका में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़रमान "**وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ**" के साथ सख़्त तम्बीह करने में ह़िक्मत येह है कि जो पहली आयते त़य्यिबा में मज़्कूर हुवा उस में ज़ियादा बुराई है। क्यूं कि यहां मौज़ू-दगी में मिज़ाह़ या इशारों वग़ैरा से ईज़ा पहुंचाना मुराद है ब ख़िलाफ़ दूसरी आयते मुबा-रका के। क्यूं कि येह एक मख़्फ़ी अम्र है। गुमान, तजस्सुस और ग़ीबत में से हर एक पोशी-दगी और अ़-दमे इल्म का तक़ाज़ा करता है।

मुन्दरिजए बाला आयते मुक़द्दसा जिन आदाब, अह़काम, ह़िक्मतों और वईदों पर मुश्तमिल हैं, इन में से चन्द का ज़िक्र यहां ख़त्म हुवा क्यूं कि इन को नाज़िल फ़रमाने वाले परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के इलावा मुकम्मल त़ौर पर कोई शुमार नहीं कर सकता। अब ग़ीबत और इस के मु-तअ़ल्लिक़ात के बारे में चन्द अह़ादीसे मुबा-रका ज़िक्र की जाएंगी।

## अह़ादीसे मुबा-रका में ग़ीबत की मज़म्मत :

﴾10﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज्जतुल वदाअ़ के ख़ुत़्बे में इर्शाद फ़रमाया : "बेशक तुम्हारे ख़ून, तुम्हारे अम्वाल और तुम्हारी इ़ज़्ज़तें तुम पर इसी त़रह़ ह़राम हैं जिस त़रह़ तुम पर येह दिन इस महीने और इस शह्र में ह़राम है।" (फिर इस्तिफ़्सार फ़रमाया :) "क्या मैं ने तुम्हें (ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का) पैग़ाम पहुंचा दिया ?" (तो सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "जी हां।")(1)

(1)......صحیح البخاری ،کتاب الأضاحی، باب من قال:الأضحی یوم النحر ،الحدیث : ۵۵۵۰، ص ۴۷۷۔



www.dawateislami.net

《11》...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''हर मुसल्मान पर उस के मुसल्मान भाई का ख़ून, इ़ज़्ज़त और माल ह़राम है।''(1)

《12》...... बज़्ज़ार शरीफ़ में है कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''सूद से बढ़ कर गुनाह येह है कि आदमी अपने भाई की बे इ़ज़्ज़ती करे।''(2)

《13》...... अबू दावूद शरीफ़ के एक नुस्ख़े में है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बेशक किसी मुसल्मान की नाह़क़ बे इ़ज़्ज़ती करना कबीरा गुनाहों में से है।''(3)

《14》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''सूद **70** गुनाहों का मज्मूआ़ है और उन में सब से कम येह है कि कोई शख़्स अपनी मां से बदकारी करे और सूद से बढ़ कर गुनाह मुसल्मान की बे इ़ज़्ज़ती करना है।''(4)

《15》...... ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से दरयाफ़्त फ़रमाया : ''क्या तुम जानते हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सूद से बड़ा गुनाह कौन सा है ?'' सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज़ की : ''اَللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم'' या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं।'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सूद से बढ़ कर गुनाह मुसल्मान की इ़ज़्ज़त को ह़लाल समझना है।'' फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई :

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿۵۸﴾
(پ۲۲، الاحزاب:۵۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो ईमान वाले मर्दों और औ़रतों को बे किये सताते हैं उन्हों ने बोहतान और खुला गुनाह अपने सर लिया।(5)

《16》...... अबू दावूद शरीफ़ में है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

---

1 ......صحيح مسلم ،كتاب البر والصلة والادب ،باب تحريم ظلم المسلم......الخ ،الحديث : ۶۵۴۱،ص ۱۱۲۷۔

2 ......البحر الزخار المعروف بمسند البزار ،مسند سعيد بن زيد ،الحديث : ۱۲۶۴ ،ج ۴، ص۹۳۔

3 ...... سنن ابی داود ،كتاب الأدب ،باب فی الغيبة ،الحديث : ۴۸۷۷،ص ۱۵۸۱ ،"الرجل"بدله"المرء"۔

4 ...... موسوعة الامام ابن ابی الدنيا،كتاب الصمت ــ الخ ،باب الغيبة وذمها ،الحديث : ۱۷۳ ،ج ۷، ص۱۲۵ ۔

5 ......شعب الايمان للبيهقی ،باب فی تحريم أعراض الناس ،الحديث : ۶۷۱۱ ،ج۵،ص۲۹۸ ،بتغيرقليلٍ۔



www.dawateislami.net

ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक सूद से बढ़ कर गुनाह मुसल्मान की नाहक़ बे इ़ज़्ज़ती करना है।''(1)

﴾17﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाते हुए सूद की क़बाह़त का ज़िक्र किया और इर्शाद फ़रमाया : ''आदमी को मिलने वाला सूद का एक दिरहम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक 36 बार ज़िना करने से ज़ियादा बुरा है और बेशक सूद से बढ़ कर गुनाह किसी मुसल्मान की बे इ़ज़्ज़ती करना है।''(2)

﴾18﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''सूद 72 गुनाहों का मज्मूआ़ है और इन में से अदना तरीन अपनी मां से ज़िना करने की त़रह़ है और बेशक सूद से बढ़ कर गुनाह किसी मुसल्मान की बे इ़ज़्ज़ती करना है।''(3)

﴾19﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''सूद के 70 से ज़ाइद दरवाज़े हैं, इन में सब से कम येह है कि कोई मुसल्मान अपनी मां से ज़िना करे और सूद का एक दिरहम 35 बार ज़िना करने से ज़ियादा बुरा है और सूद से बढ़ कर गुनाह और ख़बासत मुसल्मान की इ़ज़्ज़त व हुरमत को ख़त्म करना है।''(4)

﴾20﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا इर्शाद फ़रमाती हैं कि मैं ने दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : ''आप के लिये ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की फ़ुलां फ़ुलां ख़ूबियां ही काफ़ी हैं।'' बा'ज़ रावियों ने कहा : ''या'नी उन का पस्त क़द होना।'' तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम ने ऐसी बात कही है कि अगर इसे समुन्दर में घोला जाए तो उसे भी बदबूदार कर दे।'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : ''मैं ने तो एक इन्सान की ह़िकायत ही बयान की है।'' तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मैं किसी इन्सान की ह़िकायत को पसन्द नहीं करता ख़्वाह मुझे इतना इतना माल भी मिले।''(5)

﴾21﴿...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना सुमय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि ''उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना सफ़िय्या बिन्ते ह़ुयय्य رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का ऊंट बीमार हो गया जब कि उम्मुल

---

1 ......سنن ابی داود ،کتاب الأدب ،باب فی الغیبة ،الحدیث : ۴۸۷۶، ص۱۵۸۱ ـ

2 ......موسوعةالامام ابن ابی الدنیا،کتاب الغیبة و النمیمة ،باب الغیبة وذمها ،الحدیث:۳۶،ج۴،ص۳۴۵ـ

3 ......المعجم الاوسط ،الحدیث : ۷۱۵۱،ج۵،ص۲۲۷ـ

4 ......الدر المنثور،پ ۲۶ ،الحجرات،تحت الایة ۱۲،ج ۷، ص۵۷۴ـ

5 ......سنن ابی داود ،کتاب الادب ،باب فی الغیبة ،الحدیث : ۴۸۷۵،ص۱۵۸۱ ـ



www.dawateislami.net

मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास एक ऊंट ज़ाइद था तो सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इर्शाद फ़रमाया : ''एक ऊंट इन्हें दे दो।'' उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जवाब दिया : ''मैं इस बिन्ते यहूदी को दे दूं।'' तो सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन की इस बात पर नाराज़ हो गए जिस के बाइस ज़ुल ह़िज्जा, मुह़र्रम और सफ़र के कुछ दिनों तक उन से कलाम न किया।''(1)

﴾22﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا इर्शाद फ़रमाती हैं कि ''एक मर्तबा मैं शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास बैठी थी, मैं ने एक औ़रत के बारे में कहा : ''येह लम्बे दामन वाली है।'' तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''اِلْفَظِیْ اِلْفَظِیْ या'नी जो कुछ तेरे मुंह में है निकाल फेंक।'' तो मैं ने मुंह से गोश्त का टुकड़ा निकाल कर फेंका।''(2)

﴾23﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन लोगों को रोज़ा रखने का हुक्म दिया और इर्शाद फ़रमाया : ''जब तक मैं इजाज़त न दूं तुम में से कोई शख़्स इफ़्त़ार न करे।'' लिहाज़ा लोगों ने रोज़ा रखा यहां तक कि जब शाम हुई तो हर आदमी आता और अ़र्ज़ करता : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं पूरा दिन रोज़े से रहा हूं, लिहाज़ा मुझे इफ़्त़ार करने की इजाज़त दीजिये।'' तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे इजाज़त अ़त़ा फ़रमा देते यहां तक कि एक शख़्स आया और अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे घर वालों में से दो नौ जवान लड़कियां भी हैं जिन्हों ने रोज़ा रखा है और वोह आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर होने से शरमाती हैं, आप उन्हें इफ़्त़ार करने की इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दीजिये।'' हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से चेह्‌रए अक़्दस फेर लिया। वोह दोबारा आया मगर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चेह्‌रए अन्वर फेर लिया। वोह फिर आया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से रुख़े अन्वर फेरते हुए इर्शाद फ़रमाया : ''उन दोनों ने रोज़ा रखा ही नहीं और उस का रोज़ा कैसे हो सकता है जो आज पूरा दिन लोगों का गोश्त खाता (या'नी ग़ीबत

1......سنن ابی داود، کتاب السنة، باب ترک السلام علی أهل الأهواء، الحدیث: ۴۶۰۲، ص۱۵۶۱۔

2......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الصمت۔۔۔الخ، باب تفسیر الغیبة، الحدیث: ۲۱۶، ج۷، ص۱۴۵۔



www.dawateislami.net

करता) रहा हो ? जाओ और उन्हें हुक्म दो कि अगर वाक़ेई उन्हों ने रोज़ा रखा है तो क़ै करें।'' वोह आदमी वापस चला गया और जा कर उन्हें हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हुक्म सुनाया। जब उन्हों ने क़ै की तो दोनों की क़ै में ख़ून का लोथड़ा निकला। वोही शख़्स दोबारा बारगाहे मुस्तफ़ा में हाज़िर हुवा और सूरते हाल बताई तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (बि इज़्ने परवर दगार ग़ैब की ख़बर देते हुए) इर्शाद फ़रमाया : ''उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर येह दोनों अपने पेटों में उस को बाक़ी रखतीं तो उन दोनों को जहन्नम की आग खा जाती।''(1)

﴾24﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आज़ाद कर्दा किसी ग़ुलाम से इन अल्फ़ाज़ में मरवी है : ''हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन दोनों में से एक से इर्शाद फ़रमाया : ''क़ै करो।'' तो उस ने ख़ून, पीप और ताज़ा गोश्त की क़ै की यहां तक कि निस्फ़ पियाला भर गया। फिर दूसरी से इर्शाद फ़रमाया : ''तुम भी क़ै करो।'' तो उस ने भी ख़ून, पीप और ताज़े गोश्त की क़ै की यहां तक कि पियाला भर गया। इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक इन्हों ने हलाल चीज़ों से रोज़ा रखा लेकिन हराम चीज़ों से इफ़्तार कर दिया। एक दूसरी के पास जा बैठी और फिर दोनों लोगों का गोश्त खाने (या'नी ग़ीबत करने) लगीं।''(2)

﴾25﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हम ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर थे कि एक आदमी खड़ा हुवा तो लोगों ने अर्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कितना आजिज़ या कितना कमज़ोर है।'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम ने अपने रफ़ीक़ की ग़ीबत की और उस का गोश्त खाया।''(3)

﴾26﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक आदमी खड़ा हुवा। लोगों ने उस के खड़े होने से उस की कमज़ोरी को मुला-हज़ा किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अर्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कितना आजिज़ है !'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम ने अपने भाई का गोश्त खाया और उस की ग़ीबत की।''(4)

---

1 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الغیبة والنمیمة، باب الغیبة وذمها، الحدیث:۳۱، ج۴، ص۳۴۰۔

2 ......المسند للامام احمدبن حنبل، حدیث عبید مولی النبی، الحدیث:۲۳۷۱۴، ج۹، ص۱۶۵۔

3 ......مسند ابی یعلی الموصلی، مسند ابی ھریرة، الحدیث: ۶۱۲۵، ج۵، ص۳۶۲۔

4 ......المعجم الاوسط، الحدیث:۴۵۸، ج۱، ص۱۴۲۔



www.dawateislami.net

﴾27﴿...... लोगों ने सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में एक आदमी का ज़िक्र करते हुए अ़र्ज़ की : ''फ़ुलां शख़्स ख़ुद नहीं खा सकता यहां तक कि कोई उसे खिलाए और न ही चल सकता है यहां तक कि कोई उसे चलाए।'' तो आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम ने उस की ग़ीबत की है।'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम ने तो वोह बात बयान की है जो उस में मौजूद है।'' इर्शाद फ़रमाया : ''जब तुम ने अपने भाई का ऐब बयान किया तो तुम्हारे लिये वोह ग़ीबत के तौर पर काफ़ी है।''(1)

﴾28﴿...... हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हम रह़मते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर थे कि एक आदमी खड़ा हुवा। उस के जाने के बा'द एक शख़्स ने उस की ग़ीबत की तो आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया : ''ख़िलाल करो।'' उस ने अ़र्ज़ की : ''मैं किस वज्ह से ख़िलाल करूं ह़ालां कि मैं ने गोश्त तो नहीं खाया ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक तूने अपने भाई का गोश्त खाया है।''(2)

﴾29﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''4 आदमी ऐसे हैं कि वोह जहन्नमियों की तक्लीफ़ और ज़ियादा कर देंगे (या'नी उन की अज़िय्यत में इज़ाफ़े का सबब बनेंगे) वोह खौलते पानी और आग के दरमियान दौड़ते हुए हलाकत व तबाही मांगते होंगे, बा'ज़ जहन्नमी एक दूसरे से कहेंगे : ''इन लोगों का क्या मुआ़-मला है जिन्हों ने हमारी तक्लीफ़ को और ज़ियादा कर दिया ?'' उन में से......एक को अंगारों के सन्दूक़ का तौक़ डाला गया होगा......दूसरा अपनी आंतें खींच रहा होगा......तीसरे के मुंह से पीप और ख़ून बह रहा होगा और......चौथा अपना गोश्त खा रहा होगा। सन्दूक़ वाले से कहा जाएगा : ''इस बद बख़्त को क्या हुवा ? इस ने तो हमारी तक्लीफ़ को और ज़ियादा कर दिया।'' वोह कहेगा : ''मैं इस ह़ाल में मरा कि मेरी गरदन पर लोगों के अम्वाल का बोझ (या'नी क़र्ज़) था।'' फिर अपनी अंतड़ियां खींचने वाले से कहा जाएगा : ''इस बद बख़्त शख़्स का मुआ़-मला कैसा है जिस ने हमारी तक्लीफ़ को और ज़ियादा कर दिया ?'' तो वोह जवाब देगा : ''मैं कपड़ों को पेशाब से बचाने की परवाह नहीं करता था।'' फिर जिस के मुंह से ख़ून और पीप बह रही होगी, उस से कहा जाएगा : ''इस बद नसीब का

---

1 ......حلية الأولياء،الرقم ٣٩٩ عبد الله بن المبارك،الحديث: ١١٨٨٣،ج٨،ص٢٠٤۔

2 ......المعجم الكبير،الحديث: ١٠٠٩٢،ج١٠،ص١٠٢۔



www.dawateislami.net

मुआ़-मला कैसा है जिस ने हमारी तक्लीफ़ को और ज़ियादा कर दिया ?'' वोह कहेगा : ''मैं बद नसीब ख़बीस बुरी बात की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो कर इस त़रह़ लज़्ज़त उठाता था जैसा कि जिमाअ़ की बातों से।'' फिर जो शख़्स अपना गोश्त खा रहा होगा उस से पूछा जाएगा : ''इस मरदूद को क्या हुवा जिस ने हमारी तक्लीफ़ में मज़ीद इज़ाफ़ा कर दिया ?'' तो वोह जवाब देगा : ''मैं बद बख़्त ग़ीबत कर के लोगों का गोश्त खाता और चुग़ली करता था।''(1)

﴾30﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो दुन्या में अपने भाई का गोश्त खाएगा वोह क़ियामत के दिन उस के क़रीब लाया जाएगा और उसे कहा जाएगा : ''इसे मुर्दा ह़ालत में खा जिस त़रह़ इसे ज़िन्दा खाता था।'' पस वोह उसे खाएगा और तेवरी चढ़ाएगा और (सख़्त तक्लीफ़ की वज्ह से) शोरो गुल मचाएगा।''(2)

﴾31﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه एक मुर्दा ख़च्चर के क़रीब से गुज़रे तो बा'ज़ अह़बाब से इर्शाद फ़रमाया : ''आदमी का इसे पेट भर कर खाना मुसल्मान आदमी का गोश्त खाने (या'नी ग़ीबत करने) से बेहतर है।''(3)

﴾32﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि क़बीलए बनू अस्लम के एक शख़्स ने हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर चार मर्तबा अपने ख़िलाफ़ ज़िना की गवाही दी और अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : ''मैं ने एक औ़रत से फ़े'ले ह़राम का इरतिकाब किया है।'' लेकिन हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर बार उस से ए'राज़ फ़रमाते। रावी ने आगे पूरी ह़दीस बयान की, यहां तक कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''तेरा इस बात से क्या इरादा है ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''मुझे पाक कर दीजिये।'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे संगसार करने का हुक्म इर्शाद फ़रमाया। लिहाज़ा उसे संगसार कर दिया गया। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अन्सार के दो आदमियों को सुना कि एक दूसरे से कह रहा था : ''उस की त़रफ़ तो देखो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की पर्दा पोशी फ़रमाई लेकिन उस का दिल मुत़्मइन न हुवा यहां तक कि कुत्ते की त़रह़ संगसार कर दिया

---

(1)......الزهد لابن مبارک ماروواه نعیم بن حماد فی نسخه،باب صفة النار، الحدیث:۳۲۸،ص۹۴۔
موسوعة الامام ابن ابی الدنیا،کتاب الصمت، باب الغیبة وذمها،الحدیث:۱۸۷،ج۷،ص۱۳۲۔

(2)......المعجم الاوسط ،الحدیث:۱۶۵۶،۵۸۵۳،ج۱،۴،ص۴۵۰،۲۴۱۔

(3)......التوبیخ والتنبیه لأبی الشیخ الأصبهانی ،باب کفارة الغیبة ،الحدیث: ۲۱۲،ص۹۴۔



www.dawateislami.net

गया ।'' आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे । फिर कुछ देर चलने के बा'द एक मुर्दा गधे के पास से गुज़रे जिस के पाउं फैले हुए थे तो इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''फ़ुलां फ़ुलां कहां हैं ?'' उन्हों ने हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम हाज़िर हैं ।'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन दोनों से इर्शाद फ़रमाया : ''इस मुर्दा गधे को खाओ ।'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप के सदक़े हमें मुआ़फ़ फ़रमाए, इसे कौन खा सकता है ?'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''उस आदमी की इ़ज़्ज़त पामाल करने से तुम्हें जो गुनाह मिला है वोह इस मुर्दार को खाने से ज़ियादा सख़्त है, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! वोह तो इस वक़्त जन्नत की नहरों में ग़ोते लगा रहा है ।''(1)

﴿33﴾...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि मे'राज की रात हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जहन्नम में एक ऐसी क़ौम को देखा जो मुर्दार खा रहे थे तो इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''ऐ जिब्राईल ! येह कौन लोग हैं ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''येह वोह लोग हैं जो लोगों का गोश्त खाते (या'नी ग़ीबत करते) थे ।'' और इन्तिहाई सुर्ख़ और नीले रंग का आदमी देखा तो पूछा : ''ऐ जिब्राईल ! येह कौन है ?'' अ़र्ज़ की : ''येह ऊंटनी की कोंचें (या'नी टांगें) काटने वाला है (येह तमाम समूदियों में परले द-रजे का शरीर और ख़बीसुन्नफ़्स **''क़दार बिन सालिफ़''** था) ।''(2)

﴿34﴾...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब मुझे मे'राज हुई तो मैं एक ऐसी क़ौम के पास से गुज़रा जिन के नाख़ुन तांबे के थे, उन से वोह अपने चेहरों और सीनों को नोच रहे थे, मैं ने पूछा : ''ऐ जिब्राईल ! येह कौन हैं ?'' तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''येह वोह हैं जो लोगों का गोश्त खाते और उन की इ़ज़्ज़तें पामाल करते थे ।''(3)

﴿35﴾...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब मुझे मे'राज हुई तो मैं ऐसे लोगों के पास से गुज़रा जिन के जिस्मों को आग की क़ैंचियों से काटा जा रहा था । मैं ने पूछा : ''ऐ जिब्राईल ! येह कौन हैं ?'' तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''येह वोह लोग हैं जो ज़ीनत के लिये बनाव सिंघार करते थे ।'' मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : ''फिर मैं एक बदबूदार गढ़े

---

(1)......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان ، کتاب الحدود، الحدیث:۴۳۸۳،ج۶،ص۲۹۰۔

سنن ابی داود ، کتاب الحدود ،باب رجم ماعز بن مالک ،الحدیث:۴۴۲۸،ص۱۵۴۶۔

(2)......المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند عبد اللّٰہ بن عباس ،الحدیث:۲۳۲۴،ج۱،ص۵۵۳، بتیغرٍ قلیل۔

(3)......سنن ابی داود ، کتاب الادب ،باب فی الغیبۃ ،الحدیث:۴۸۷۸،ص۱۵۸۱۔



www.dawateislami.net

के पास से गुज़रा तो उस में सख़्त आवाज़ें सुनीं। मैं ने पूछा : "ऐ जिब्राईल ! येह कौन हैं ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "येह आप की (उम्मत की) वोह औ़रतें हैं जो ज़ीनत के लिये बनाव सिंघार करती हैं और ऐसे काम करती हैं जो इन के लिये जाइज़ नहीं।" फिर मैं ऐसी औ़रतों और मर्दों के पास से गुज़रा जो अपनी छातियों (या'नी सीनों) के साथ लटक रहे थे, तो मैं ने पूछा : "ऐ जिब्राईल ! येह कौन लोग हैं ?" अ़र्ज़ की : "येह मुंह पर ऐ़ब लगाने वाले और पीठ पीछे बुराई करने वाले हैं और इन के मु-तअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَیۡلٌ لِّکُلِّ ہُمَزَۃٍ لُّمَزَۃِۣ ۙ﴿۱﴾ (پ۳۰، الھمزۃ:۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ख़राबी है उस के लिये जो लोगों के मुंह पर ऐ़ब करे, पीठ पीछे बदी करे।(1)

﴾36﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इर्शाद फ़रमाते हैं कि हम शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे कि एक बदबू उठी, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जानते हो कि येह **बदबू** क्या है, येह उन की बदबू है जो मुसल्मानों की ग़ीबत करते हैं।"(2)

﴾37﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ग़ीबत ज़िना से भी सख़्त है।" अ़र्ज़ की गई : "वोह कैसे ?" तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "एक बन्दा ज़िना करता है फिर तौबा कर लेता है, पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है लेकिन ग़ीबत करने वाले को उस वक़्त तक मुआ़फ़ नहीं किया जाता जब तक कि वोह मुआ़फ़ न करे जिस की इस ने ग़ीबत की।"(3)

## दो क़ब्रों में होने वाले अ़ज़ाब के अस्बाब :

﴾38﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बकरह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ चल रहा था और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा हाथ थामा हुवा था। एक आदमी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बाईं तरफ़ था। दरीं अस्ना हम ने अपने सामने दो क़ब्रें पाईं तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इन दोनों को अ़ज़ाब हो रहा है और किसी बड़े अम्र की वज्ह से नहीं हो रहा।" येह फ़रमा कर रो दिये, फिर फ़रमाया : "तुम में से कौन है जो मुझे एक टहनी ला दे।" हम ने एक दूसरे से आगे बढ़ने की

1......شعب الایمان للبیہقی ،باب فی تحریم أعراض الناس ،الحدیث:۶۷۵۰،ج۵،ص۳۰۹،بتغیرٍقلیلٍ۔
2......المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند جابر بن عبد اللہ ،الحدیث:۱۴۷۹۰،ج۵،ص۱۲۴۔
3......المعجم الاوسط ،الحدیث:۶۵۹۰،ج۵،ص۶۴۔


www.dawateislami.net

कोशिश की मैं तो सब्क़त ले गया और एक टहनी ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के दो टुकड़े कर के दोनों क़ब्रों पर एक एक रख दिया फिर इर्शाद फ़रमाया : ''येह जब तक तर रहेंगे इन पर अ़ज़ाब में कमी रहेगी और इन दोनों को ग़ीबत और पेशाब की वज्ह से अ़ज़ाब हो रहा है[1]।''[2]

﴾39﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक क़ब्र के पास तशरीफ़ लाए जिस में मय्यित को अ़ज़ाब हो रहा था तो इर्शाद फ़रमाया : ''येह लोगों का गोश्त खाता (या'नी ग़ीबत करता) था।'' फिर एक तर टहनी मंगवाई और उसे क़ब्र पर रख कर इर्शाद फ़रमाया : ''उम्मीद है कि जब तक येह तर रहेगी इस के अ़ज़ाब में कमी रहेगी।''[3]

﴾40﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बक़ीए़ ग़रक़द तशरीफ़ लाए तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दो क़ब्रों के पास खड़े हो कर इर्शाद फ़रमाया : ''क्या तुम ने फ़ुलां और फ़ुलाना को, या फ़रमाया : फ़ुलां फ़ुलां को दफ़्न कर दिया ?'' सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज़ की : ''जी हां, **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !'' इर्शाद फ़रमाया : ''अभी फ़ुलां को (क़ब्र में) बिठा कर (गुर्ज़) मारा गया है।'' फिर इर्शाद फ़रमाया : ''उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! उसे इतना मारा गया है कि उस का हर उ़ज़्व जुदा हो चुका है और उस की क़ब्र में आग भर दी गई है और उस ने ऐसी चीख़ मारी है जिसे सिवाए जिन्नो इन्स के तमाम मख़्लूक़ ने सुन लिया है और अगर तुम्हारे दिलों में फ़साद न होता और तुम ज़ियादा बातें न करते तो तुम भी वोह सुनते जो मैं सुनता हूं।'' फिर इर्शाद फ़रमाया : ''अब दूसरे को भी मारा जा रहा है।'' फिर इर्शाद फ़रमाया : ''उस ज़ात की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है ! उसे भी इस क़दर त़ाक़त से मारा गया है कि उस की भी हर हड्डी जुदा हो गई है और उस की क़ब्र में भी आग भड़का दी गई है, उस ने एक ऐसी चीख़ मारी है जिसे जिन्नो इन्स के इलावा तमाम मख़्लूक़ ने सुन लिया है और अगर तुम्हारे दिलों में फ़साद न होता और तुम ज़ियादा कलाम न करते तो तुम भी वोह सुनते जो मैं सुनता हूं।'' तो सह़ाबए

---

1...... **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! ग़ीबतों और पेशाब के छींटों से न बचना क़ब्र के अ़ज़ाब के अस्बाब में से है। आह ! हमारा नाज़ुक बदन जो कि मा'मूली कांटे की चुभन, दो पहर की धूप की तपिश व जलन और बुख़ार की मा'मूली सी अगन बरदाश्त नहीं कर सकता वोह क़ब्र का होलनाक अ़ज़ाब कैसे सह सकेगा। (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 71)

2......المسند للامام احمد بن حنبل ،حديث أبي بكرة، الحديث:٢٠٣٩٥،ج٧،ص٣٠٤،"بكى" بدله" بلى"۔

3......المعجم الاوسط ،الحديث:٢٤١٣،ج٢،ص٣٥۔



www.dawateislami.net

किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! उन दोनों का गुनाह क्या है ?" इर्शाद फ़रमाया : "पहला पेशाब से नहीं बचता था और दूसरा लोगों का गोश्त खाता (या'नी ग़ीबत करता) था ।"(1)

﴾41﴿...... मज़्कूरा ह़दीसे पाक इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللهِ الۡاَوَّل (मु-तवफ़्फ़ा 241 हि.) से दूसरे अल्फ़ाज़ में मरवी है जो चुग़ली के बाब में बयान की जाएगी और उस में येह इज़ाफ़ा है कि "सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! उन दोनों को कब तक अ़ज़ाब होता रहेगा ?" तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह ग़ैब की बात है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही जानता है (मुस्नदे अह़मद में इस के बा'द येह अल्फ़ाज़ भी हैं : और अगर तुम्हारे दिल मुन्तशिर न होते और तुम ज़ियादा कलाम न करते तो तुम भी वोह सुनते जो मैं सुनता हूं ) ।(2)

येह ह़दीसे पाक सिह़ाह़ सित्ता और दीगर कई कुतुबे ह़दीस में सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن की एक जमाअ़त से मरवी है । "किताबुत्तहारह" की इब्तिदा में भी इस का ज़िक्र हो चुका है । इन तमाम रिवायात में ग़ौरो फ़िक्र करने से पता चलता है कि येह मु-तअ़द्दद रिवायात हैं और अगर येह मान लिया जाए तो फिर इन के ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ से जिस तआ़रुज़ का वह्म पैदा होता है वोह भी ख़ुद बख़ुद ख़त्म हो जाएगा । मैं ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़किय्युद्दीन अ़ब्दुल अ़ज़ीम मुन्ज़िरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللهِ الۡقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 656 हि.) ने भी इसी त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया : "अक्सर रिवायात में येह है कि उन दोनों क़ब्र वालों को चुग़ली और पेशाब की वज्ह से अ़ज़ाब हो रहा था । ज़ाहिर येह है कि दोनों रिवायात में येह बात पाई जाती है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ब्रिस्तान से गुज़रे । पहली बार दो क़ब्रों के क़रीब से गुज़रे तो एक क़ब्र वाले को चुग़ली और दूसरे को पेशाब की वज्ह से अ़ज़ाब हो रहा था और दूसरी मर्तबा गुज़रे तो एक क़ब्र वाले को ग़ीबत और दूसरे को पेशाब की वज्ह से अ़ज़ाब हो रहा था ।"(3)

﴾42﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ग़ीबत और चुग़ली ईमान को इसी त़रह़ काट देती हैं जिस त़रह़ चरवाहा दरख़्त को काट देता है ।"(4)

---

(1) ......الخصائص الكبرى، باب فيما اطلع عليه......الخ، ج ٢ ص ٨٩، مختصراً۔

(2) ......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث أبى أمامة الباهلى، الحديث: ٢٢٣٥٥، ج٨، ص٣٠۴۔

(3) ......الترغيب والترهيب، كتاب الادب، الترهيب من الغيبة......الخ، تحت الحديث: ۴٣٦١، ج٣، ص۴٠٥۔

(4) ......الترغيب والترهيب، كتاب الادب، الحديث: ۴٣٦٢، ج٣، ص۴٠٥۔



www.dawateislami.net

## मुफ़्लिस कौन ?

﴾43﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''क्या तुम जानते हो मुफ़्लिस कौन है ?'' सहाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : ''हम में मुफ़्लिस वोह है जिस के पास न दिरहम हों और न ही कोई माल ।'' तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरी उम्मत में मुफ़्लिस वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा और ज़कात ले कर आएगा लेकिन उस ने फ़ुलां को गाली दी होगी, फ़ुलां पर तोहमत लगाई होगी, फ़ुलां का माल खाया होगा, फ़ुलां का ख़ून बहाया होगा और फ़ुलां को मारा होगा । पस उस की नेकियों में से उन सब को उन का ह़िस्सा दे दिया जाएगा । अगर उस के ज़िम्मे हुक़ूक़ के पूरा होने से पहले उस की नेकियां ख़त्म हो गईं तो लोगों के गुनाह उस पर डाल दिये जाएंगे, फिर उसे जहन्नम में फेंक दिया जाएगा ।''(1)

﴾44﴿...... हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जब बन्दे के पास उस का खुला हुवा नामए आ'माल लाया जाएगा तो वोह अ़र्ज़ करेगा : ''ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने जो फ़ुलां फ़ुलां नेकियां की थीं, वोह कहां गईं ?'' मेरे सह़ीफ़े में तो नहीं ।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : ''तूने जो ग़ीबतें की थीं इस वज्ह से मिटा दी गई हैं ।''(2)

﴾45﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जिस ने किसी आदमी को ऐ़ब लगाने के लिये उस के मु-तअ़ल्लिक़ ऐसी बात कही जो उस में न थी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम की आग में क़ैद कर देगा यहां तक कि वोह उस के बारे में अपनी कही हुई बात की तौजीह पेश करे ।''(3)

﴾46﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो शख़्स दुन्या में किसी मुसल्मान को ऐ़ब लगाने के लिये उस के मु-तअ़ल्लिक़ ऐसी बात कहे जिस से वोह बरी हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उसे बरोज़े क़ियामत जहन्नम में पिघलाए यहां तक कि वोह अपनी कही हुई बात की तौजीह पेश करे ।''(4)

---

1 ......صحیح مسلم ،کتاب البر والصلۃ والادب ،باب تحریم الظلم ،الحدیث:۲۵۷۹،ص۱۱۲۹۔

2 ......الترغیب والترھیب ،کتاب الادب ،الترھیب من الغیبۃ......الخ ،الحدیث:۴۳۶۴،ج۳،ص۴۰۶۔

3 ......المعجم الاوسط ،الحدیث:۸۹۳۶،ج۶،ص۳۲۷۔

4 ......الترغیب والترھیب ،کتاب القضاء، باب الترھیب من اعانۃ المبطل......الخ ،الحدیث:۳۴۳۹،ج۳،ص۱۵۱۔



www.dawateislami.net

﴾47﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो किसी मुसल्मान की बुराई बयान करे जो उस में नहीं पाई जाती तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस वक़्त तक रद-ग़तुल ख़बाल (या'नी दोज़ख़ियों के ख़ून और पीप) में रखेगा जब तक कि वोह अपनी कही हुई बात से निकल न आए[1] ।''[2]

त़-बरानी शरीफ़ की रिवायत में येह भी है : ''और वोह उस (जहन्नमियों के ख़ून और पीप) से न निकल सकेगा ।''[3]

﴾48﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''पांच गुनाह ऐसे हैं जिन का कोई कफ़्फ़ारा नहीं : (1)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना (2)...... किसी को नाहक़ क़त्ल करना (3)...... किसी मुसल्मान पर तोहमत लगाना (4)...... जंग से भागना और (5)...... ऐसी क़सम खाना जिस के ज़रीए किसी का माल नाहक़ छीना जाए ।''[4]

﴾49﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : ''जिस ने अपने मुसल्मान भाई की इज़्ज़त को ग़ीबत से बचाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि उसे जहन्नम से आज़ाद फ़रमा दे ।''[5]

﴾50﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : ''जिस ने अपने भाई की इ़ज़्ज़त को बचाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस के चेहरे को जहन्नम की आग से बचाएगा ।''[6]

﴾51﴿...... रहमते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''जिस ने अपने मुसल्मान भाई की इ़ज़्ज़त की हिफ़ाज़त की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस से जहन्नम

---

1...... हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 1052 हि.) ह़दीसे पाक के इस जुम्ले ''जब तक कि वोह अपनी कही हुई बात से निकल न आए'' का मा'ना येह बयान फ़रमाते हैं : ''वोह दोज़ख़ियों की सी ह़ालत में रहेगा जब तक तौबा कर के उस गुनाह से न निकल आए या जिस अ़ज़ाब का वोह मुस्तह़िक़ हो चुका है उसे भुगतने के बा'द पाक हो जाए।'' (اشعّۃ اللمعات، باب الشفاعۃ فی الحدود، الفصل الثالث،ج۳،ص۲۹۰)

2......سنن ابی داود ،کتاب القضاء ،باب فی الرجل یعین علی خصومۃ......الخ، الحدیث:۳۵۹۷، ص۱۴۹۰۔

3......المعجم الکبیر ،الحدیث:۱۳۴۳۵،ج۱۲،ص۲۹۷۔

4......المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند ابی ھریرۃ ،الحدیث:۸۷۴۵،ج۳،ص۲۸۶"وَبَھْتٍ"بدلہ"اَوْنَھْبٌ"۔

5......موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الصمت،باب ذب المسلم عن عرض أخیہ،الحدیث:۲۴۱،ج۷،ص۱۲۰۔

6......جامع الترمذی ،ابواب البر والصلۃ ،باب ما جاء فی الذب عن عرض المسلم ،الحدیث:۱۹۳۱،ص۱۸۴۶۔



www.dawateislami.net

का अ़ज़ाब दूर फ़रमा देगा।'' इस के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۴۷﴾

(پ ۲۱، الروم: ۴۷)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और हमारे ज़िम्मए करम पर है मुसल्मानों की मदद फ़रमाना।(1)

﴿52﴾...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने दुन्या में अपने भाई की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन एक फ़िरिश्ता भेजेगा जो जहन्नम से उस की ह़िफ़ाज़त फ़रमाएगा।''(2)

﴿53﴾...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस के सामने उस के मुसल्मान भाई की ग़ीबत की गई और वोह उस की मदद करने (या'नी ग़ीबत से रोकने) की इस्तित़ाअ़त रखता था और उस की मदद की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में उस की मदद फ़रमाएगा, लेकिन अगर उस ने उस की मदद न की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे दुन्या व आख़िरत में ज़लील करेगा।''(3)

﴿54﴾...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो किसी मुसल्मान को ऐसी जगह ज़लीलो रुस्वा करेगा जहां उस की इ़ज़्ज़त की जाती हो ताकि उस की इ़ज़्ज़त ख़त्म हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसी जगह ज़लीलो रुस्वा करेगा जहां वोह उस की मदद चाहता होगा और जो किसी मुसल्मान की ऐसी जगह मदद करे जहां उस की इ़ज़्ज़त घटाई जा रही हो और उस की हुरमत का ख़याल न रखा जा रहा हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की ऐसी जगह पर मदद फ़रमाएगा जहां उसे मददे इलाही दरकार होगी।''(4)

## ग़ीबत की मज़म्मत में बुज़ुर्गाने दीन के फ़रामीन

ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : ''हमें बताया गया है कि अ़ज़ाबे क़ब्र को 3 ह़िस्सों में तक़्सीम किया गया है : (1)...... एक तिहाई अ़ज़ाब ग़ीबत की वज्ह से (2)...... एक तिहाई पेशाब (के छींटों से ख़ुद को न बचाने) की वज्ह से और (3)...... एक तिहाई चुग़ली

1 ......الترغیب والترھیب، کتاب الادب وغیرہ، باب الترھیب من الغیبۃ......الخ، الحدیث: ۴۳۴۱، ج۳، ص۴۰۸۔

2 ......موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الغیبۃ، باب ذب المسلم عن عرض أخیہ، الحدیث: ۱۰۵، ج۴، ص۳۸۵۔

3 ......الکامل فی ضعفاء الرجال، الرقم ۲۰۳ ابان بن ابی عیاش، ج۲، ص۶۴ "أذلہ" بدلہ "أدرکہ"۔

4 ......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب الرجل یذب عن عرض اخیہ، الحدیث: ۴۸۸۴، ص۱۵۸۱۔



www.dawateislami.net

की वज्ह से होता है।''(1)

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 110 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं : ''ग़ीबत बन्दए मोमिन के ईमान में इस से भी जल्दी फ़साद पैदा करती है जितनी जल्दी आकला (या'नी आ'ज़ा को खा जाने वाली) बीमारी उस के जिस्म को ख़राब करती है।'' मज़ीद फ़रमाते हैं : ''ऐ इब्ने आदम ! तुम उस वक़्त तक ईमान की हक़ीक़त को नहीं पा सकते जब तक कि लोगों के उन उ़यूब को तलाश करना तर्क न कर दो जो ख़ुद तुम्हारे अन्दर पाए जाते हैं, यहां तक कि तुम अपने उ़यूब की इस्लाह़ शुरूअ़ कर दो और अपने आप से उन ऐ़बों को दूर कर लो। पस जब तुम ऐसा कर लोगे तो येह चीज़ तुम्हें अपनी ही ज़ात में मश्ग़ूल कर देगी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक ऐसा बन्दा सब से ज़ियादा पसन्दीदा है।''(2)

एक बुज़ुर्ग رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''हम ने अस्लाफ़ (या'नी गुज़श्ता बुज़ुर्गों) को देखा कि वोह ह़ज़रात लोगों की बे इ़ज़्ज़ती करने से बचने को नमाज़ रोज़े से बढ़ कर इ़बादत तसव्वुर किया करते थे।''(3)

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का फ़रमान है : ''जब तू किसी के उ़यूब बयान करने का इरादा करे तो अपने उ़यूब याद कर लिया कर।''(4)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ''तुम अपने भाई की आंख का तिन्का तो देखते हो मगर अपनी आंख का शहतीर नहीं देखते।''(5)

हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने किसी शख़्स को ग़ीबत करते हुए सुना तो फ़रमाया : ''ग़ीबत से बचो, क्यूं कि येह इन्सानी कुत्तों का सालन है।''(6)

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : ''तुम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र लाज़िम है क्यूं कि येह शिफ़ा है और लोगों का (बुराई के साथ) ज़िक्र करने से बचो क्यूं कि येह बीमारी है।''(7)

***......ऐबों को ढूंडती है ऐ़ब जू की नज़र        जो ख़ुश नज़र हैं हु-नरो कमाल देखते हैं......***

---

1 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الغیبة والنمیمة ،باب الغیبة وذمها ،الحدیث:۵۲،ج۴،ص۳۵۵۔

2 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الغیبة والنمیمة ،باب الغیبة وذمها ،الحدیث:۵۴،۶۰،ج۴،ص۳۵۶،۳۵۹۔

3 ......المرجع السابق،الحدیث:۵۵،ص۳۵۷۔

4 ......المرجع السابق،الحدیث:۵۶،ص۳۵۷۔

5 ......احیاء علوم الدین ،کتاب آفات اللسان ،الآفة الخامسة عشرة الغیبة ،ج۳،ص۱۷۷۔

6 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الغیبة والنمیمة ،باب کفارة الاغتیاب ،الحدیث:۱۶۱،ج۴،ص۴۲۰۔

7 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الغیبة والنمیمة ،باب الغیبة وذمها ،الحدیث:۶۷،ج۴،ص۳۶۲۔



www.dawateislami.net

# तम्बीहात

## तम्बीह 1 :

**अक्सर** उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने ग़ीबत को कबीरा गुनाहों में शुमार किया है। नीज़ इस से लाज़िम आता है कि ग़ीबत पर रिज़ा मन्दी के साथ ख़ामोश रहना भी कबीरा गुनाह है। इस बिना पर कि क़ुदरत के बा वुजूद बुराई से मन्अ़ न करना कबीरा गुनाहों में से है और ग़ीबत तो बहुत बड़ी बुराइयों में से एक है जिस का इस्बात गुज़श्ता बह़स से हो चुका है। फिर मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शिहाबुद्दीन अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) को देखा कि वोह फ़रमाते हैं : "ग़ीबत से रोकने पर क़ुदरत के बा वुजूद ख़ामोश रहने का भी वोही हुक्म होना चाहिये जो ग़ीबत का है, हां ! अगर उसे रोकने की त़ाक़त न हो तो जिस क़दर मुम्किन हो उस से दूर हट जाए।"

इमाम बदरुद्दीन मुह़म्मद बिन बहादुर बिन **अ़ब्दुल्लाह** ज़र-कशी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (मु-तवफ़्फ़ा 794 हि.) ने भी इन की इत्तिबाअ़ करते हुए फ़रमाया : "रोकने पर क़ुदरत के बा वुजूद ग़ीबत से मन्अ़ न करना कबीरा गुनाह है।"

ह़ज़राते शैख़ैन (या'नी इमाम न-ववी और इमाम राफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا) ने साह़िबुल उ़द्दह के इस क़ौल "ग़ीबत और इस पर ख़ामोश रहना सग़ीरा गुनाह है।" को बर क़रार रखा मगर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इस पर कई ए'तिराज़ात वारिद किये। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं कि "ग़ीबत के मुत़्लक़ सग़ीरा होने का क़ौल ज़ईफ़ या बात़िल है।" और मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अबू अ़ब्दुल्लाह** मुह़म्मद बिन अह़मद क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 671 हि.) वग़ैरा ने इस के कबीरा गुनाह होने पर इज्माअ़ नक़्ल किया है और हमारे अस्ह़ाब (या'नी शवाफ़ेअ़) के एक गुरौह का कलाम भी इसी के मुवाफ़िक़ है जैसा कि कबीरा की ता'रीफ़ में गुज़र चुका है। नीज़ क़ुरआनो सुन्नत में भी इस पर सख़्त हुक्म मौजूद है और जो ग़ीबत की मज़म्मत पर मरवी अह़ादीसे मुबा-रका में ग़ौरो फ़िक्र करे वोह अज़ ख़ुद इस का कबीरा होना जान लेगा। **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) और साह़िबुल उ़द्दह के इलावा मैं ने किसी को इसे सग़ीरा



www.dawateislami.net

कहते हुए नहीं पाया।[1] अ़जीब बात येह है कि उन्हों ने बुराई से मन्अ़ न करने को मुत़्लक़न कबीरा गुनाह क़रार दिया है और येह इत़्लाक़ इस बात का तक़ाज़ा करता है कि ग़ीबत से मन्अ़ न करना भी कबीरा गुनाह होना चाहिये क्यूं कि येह एक बहुत बड़ी बुराई है, ख़ुसूसन औलियाए किराम और अहले करामात رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی की ग़ीबत करना और इस का कमतर द-रजा येह है कि अगर इज्माअ़ साबित न होता तो दो मुख़्तलिफ़ ग़ीबतों के माबैन फ़र्क़ किया जाता क्यूं कि इस के द-रजात, मफ़ासिद और इस से पहुंचने वाली तक्लीफ़ में कमी बेशी और ईज़ा रसानी के ए'तिबार से बहुत ज़ियादा इख़्तिलाफ़ है।

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ''ग़ीबत येह है कि इन्सान के किसी ऐसे ऐ़ब का ज़िक्र करना जो उस में मौजूद हो ख़्वाह उस के दीन, दुन्या, ज़ात, अख़्लाक़, माल, औलाद, बीवी, ख़ादिम, ग़ुलाम, इ़मामा, कपड़ों, ह़-रकातो स-कनात, मुस्कुराहट, दीवानगी, तुर्श-रूई और ख़ुश होने वग़ैरा के मु-तअ़ल्लिक़ हो।''

**बदन में ग़ीबत की मिसालें :** म-सलन अन्धा, लंगड़ा, नाबीना, गन्जा, छोटा, लम्बा, काला और ज़र्द वग़ैरा कहना।

**दीन में ग़ीबत की मिसालें :** मिसाल के त़ौर पर फ़ासिक़, चोर, ख़ाइन, ज़ालिम, नमाज़ में सुस्ती करने वाला, गन्दगी में पड़ने वाला और वालिदैन का ना फ़रमान वग़ैरा कहना और इस में कोई शक नहीं कि इन उमूर में ग़ीबत के मुख़्तलिफ़ होने की वज्ह से ईज़ा और तक्लीफ़ भी मुख़्तलिफ़ होती है।

---

1...... यहां ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی ने फ़रमाया है कि ''इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی ने ग़ीबत को सग़ीरा क़रार दिया।'' मगर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی की कुतुब का मुत़ा-लआ़ करने से पता चलता है कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ग़ीबत पर बड़ी तफ़्सीली गुफ़्त-गू फ़रमाई और इसे सरीह़ त़ौर पर ह़राम क़रार दिया। नीज़ आयाते क़ुरआनिया और अह़ादीसे मुबा-रका से इस की ह़ुरमत को वाज़ेह़ किया। चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ''एह़याउल उ़लूम'' में फ़रमाते हैं : ''ज़बान से ग़ीबत करना ह़राम है क्यूं कि इस में दूसरे लोगों को अपने भाई के ऐ़ब से आगाह करना और ना पसन्दीदा वस्फ़ से उस की शनाख़्त कराना पाया जाता है। इस मुआ़-मले में इशारतन कलाम, सरीह़ कलाम की त़रह़ है और फ़े'ल क़ौल की मिस्ल है, इशारों किनायों से किसी का ऐ़ब बयान करना, लिखना और ह़-र-कत करना वग़ैरा ऐसे तमाम त़रीक़े जिन से मक़्सूद समझ आता हो, ग़ीबत में दाख़िल हैं और ह़राम हैं।'' (احياء علوم الدين، كتاب آفات اللسان، الآفة الخامسة عشرة: الغيبة، ج٣، ص١٧٩) इस से ब ज़ाहिर मा'लूम होता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی के नज़्दीक भी ग़ीबत कबीरा गुनाह है। अलबत्ता येह मुम्किन है कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने किसी ख़ास सूरत को सग़ीरा क़रार दिया हो जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی ने इसी मक़ाम पर इ़मामा सुवारी वग़ैरा के उ़यूब बयान करने को सग़ीरा फ़रमाया।



www.dawateislami.net

अलबत्ता ! येह कहा जा सकता है कि लंगड़ा, नाबीना, ज़र्द और काला कहना या इमामा, लिबास और सुवारी का ऐब बयान करना सग़ीरा गुनाह है क्यूं कि इन सिफ़ात से तक्लीफ़ कम होती है मगर फ़िस्क़ो फ़ुजूर, ज़ुल्म, वालिदैन की ना फ़रमानी, नमाज़ में सुस्ती और इस के इलावा बड़े बड़े गुनाहों का मुआ-मला इस के बर अक्स है जो कि कबीरा गुनाहों में से है।

बेहतर येही है कि हमेशा के लिये ग़ीबत का दरवाज़ा बन्द करने के लिये मुख़्तलिफ़ ग़ीबतों के माबैन फ़र्क़ न किया जाए जैसा कि शराब का मुआ-मला है। क्यूं कि कहते हैं कि ''ग़ीबत में खजूर की सी मिठास और शराब जैसी ज़रावत (तेज़ी) है (या'नी ग़ीबत का छोड़ना आदी शराबी के शराब छोड़ने की त़रह़ मुश्किल है)। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इस ला'नत से मह़फ़ूज़ फ़रमाए और हमारी त़रफ़ से ग़ीबत वालों के हुक़ूक़ ख़ुद ही अदा फ़रमाए क्यूं कि उस के इलावा इन्हें कोई शुमार नहीं कर सकता और इस में कोई ख़िफ़ा (पोशी-दगी) नहीं कि यहां ''**ग़ीबत करने**'' को जाइज़ या वाजिब करने का कोई सबब नहीं बल्कि जिस की ग़ीबत की जा रही हो उस से तफ़रीह़ करना या उसे तक्लीफ़ पहुंचाना है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) का कलाम ख़त्म हुवा।

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के शागिर्द ने ''**अल ख़ादिम**'' में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की इत्तिबाअ़ की और कहा : ''सह़ीह़ येह है कि ग़ीबत कबीरा गुनाह है और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) ने इस पर दलील क़ाइम फ़रमाई और इस ह़दीसे पाक से इस्तिद्लाल किया कि,

﴾55﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक तुम्हारे ख़ून, तुम्हारे अम्वाल और तुम्हारी इ़ज़्ज़तें तुम पर उसी त़रह़ ह़राम हैं जिस त़रह़ तुम पर येह दिन इस महीने और इस शह्‌र (या'नी मक्कए मुकर्रमा) में ह़राम है।''(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना उस्ताज़ अबू इस्ह़ाक़ अस्फ़राइनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى (मु-तवफ़्फ़ा 418 हि.) ने अपनी किताब ''**अल अ़क़ीदा**'' में **कबाइर** के बयान में, ह़ज़रते सय्यिदुना जबली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मु-तवफ़्फ़ा 629 हि.) ने **शर्हुत्तम्बीह** में और ह़ज़रते सय्यिदुना कवाशी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 680 हि.) ने अपनी तफ़्सीर में ग़ीबत को कबीरा गुनाहों में शुमार किया है। जब कि बा'ज़ उ़-लमा ने इस को सग़ीरा गुनाहों में शुमार किया है। हो सकता है वोह इस नस्स पर आगाह न हुए हों और उस पर ह़ैरत है जो मुर्दार खाने को तो कबीरा गुनाहों में शुमार

(1)......صحیح البخاری، کتاب الحج، باب الخطبة ایام منی، الحدیث:۱۷۳۹، ص۱۳۶۔



www.dawateislami.net

करे मगर ग़ीबत को कबीरा गुनाह न जाने हालां कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे मुर्दा इन्सान का गोश्त खाने की त़रह़ क़रार दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम अ़ब्दुल करीम बिन मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल करीम राफ़ेई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) ने इस से क़ब्ल इस बात पर जज़्म किया है कि ''अहले इल्म और ह़ामिलीने क़ुरआन के मु-तअ़ल्लिक़ वक़ीअ़ह को कबीरा गुनाह क़रार दिया गया है और वक़ीअ़ह से मुराद ग़ीबत है।'' और क़ुरआनो ह़दीस के मुत़ाबिक़ ग़ीबत मुत़्लक़न कबीरा गुनाह है। चुनान्चे, सह़ीह़ ह़दीसे पाक में है कि,

﴾56﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''मुसल्मान को गाली देना फ़िस्क़ है।''(1)

﴾57﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''बेशक आदमी का किसी मुसल्मान की नाह़क़ बे इज़्ज़ती करना सब से बढ़ कर कबीरा गुनाह है।''(2)

﴾58﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज्जतुल वदाअ़ के साल इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक तुम्हारे ख़ून, तुम्हारे अम्वाल और तुम्हारी इज़्ज़तें तुम पर इसी त़रह़ ह़राम हैं जिस त़रह़ तुम पर येह दिन इस महीने और इस शह्र में ह़राम है।''(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन इब्राहीम बिन मुन्ज़िर नैशापूरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 319 हि.) अपनी किताब ''**अ-दबुल इबाद**'' में फ़रमाते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने इस हुक्म से अपनी उम्मत पर ग़ीबत को ह़राम क़रार दिया और इस की हुरमत को ख़ून और अम्वाल की हुरमत के साथ मिला दिया। फिर ताकीदन येह बता कर इस की हुरमत में मज़ीद इज़ाफ़ा कर दिया कि ग़ीबत इसी त़रह़ ह़राम है जिस त़रह़ इस हुरमत वाले महीने में इस शहरे ह़राम (या'नी मक्कए मुकर्रमा) की हुरमत है।''

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अबू अ़ब्दुल्लाह** मुह़म्मद बिन अह़मद क़ुरत़ुबी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 671 हि.) ने अपनी तफ़्सीर में इस बात पर इज्माअ़ नक़्ल किया है कि ग़ीबत कबीरा गुनाह है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ग़ीबत से तौबा करना वाजिब है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) और

---

1 ......صحیح مسلم ، کتاب الایمان ، باب بیان قول النبی سباب المسلم......الخ، الحدیث : ۲۲۱ ، ص ۶۹۱ ۔

2 ......سنن ابی داود ، کتاب الادب ، باب فی الغیبة ، الحدیث : ۴۸۷۷ ، ص ۱۵۸۱ "الرجل" بدلہ "المرء" ۔

3 ......صحیح البخاری ، کتاب الحج ، باب الخطبة ایام منی ، الحدیث : ۱۷۳۹ ، ص ۱۳۶ ۔



www.dawateislami.net

साहिबुल उ़द्दह के इलावा मैं ने किसी को ग़ीबत को सग़ीरा कहते हुए नहीं पाया। हज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) पर तो ह़द द-रजा तअ़ज्जुब है कि वोह भी यहां ख़ामोश हैं ह़ालां कि इस से क़ब्ल ख़ुद ही नक़्ल कर चुके हैं कि "अहले इ़ल्म की ग़ीबत करना कबाइर में से है।" और इसी त़रह़ हज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) का येह क़ौल कि "ग़ीबत के वक़्त ख़ामोश रहना सग़ीरा गुनाह है।" भी लाइक़े तअ़ज्जुब है क्यूं कि इस से क़ब्ल वोह नक़्ल कर चुके हैं कि "बुराई होते देख कर ख़ामोश रहना कबीरा गुनाह है।"

हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी عَلَيۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی भी इस त़रफ़ माइल हुए कि "ग़ीबत सग़ीरा गुनाह है।" उन्हों ने हज़रते सय्यिदुना इमाम शिहाबुद्दीन अज़्रई عَلَيۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) का क़ौल और उन का जवाब ज़िक्र करने के बा'द जिस इबारत से इस्तिद्लाल किया है उस का ह़ासिल येह है कि "अहले इ़ल्म और ह़ामिलीने क़ुरआन की ग़ीबत के मु-तअ़ल्लिक़ बा'ज़ उ़-लमा फ़रमाते हैं कि येह इस बात पर मब्नी है कि "ग़ीबत सग़ीरा गुनाह है।" या'नी जब हम ने ग़ीबत को कबीरा गुनाह क़रार दिया तो इस में कोई ख़ुसूसिय्यत नहीं जब कि साहिबुल उ़द्दह इसे सग़ीरा गुनाहों में शुमार करते हैं। हज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं कि "ग़ीबत के मुत़्लक़ सग़ीरा होने का क़ौल ज़ईफ़ या बात़िल है।" और मुफ़स्सिरे क़ुरआन हज़रते सय्यिदुना इमाम **अबू अ़ब्दुल्लाह** मुह़म्मद बिन अह़मद क़ुरत़ुबी عَلَيۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 671 हि.) वग़ैरा ने इस के कबीरा गुनाह होने पर इज्माअ़ नक़्ल किया है और हमारे अस्ह़ाब (या'नी शवाफ़ेअ़) के एक गुरौह का कलाम भी इसी के मुवाफ़िक़ है। नीज़ क़ुरआनो सुन्नत में भी इस पर सख़्त हुक्म मौजूद है और जो ग़ीबत की मज़म्मत पर मरवी अह़ादीसे मुबा-रका में ग़ौरो फ़िक्र करे वोह अज़ ख़ुद इस का कबीरा होना जान लेगा। हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَالِی (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) और साहिबुल उ़द्दह के इलावा मैं ने किसी को इसे सग़ीरा कहते हुए नहीं देखा और अ़जीब बात येह है कि उन्हों ने बुराई से मन्अ़ न करने को मुत़्लक़न कबीरा गुनाह क़रार दिया है और येह इत़्लाक़ इस बात का तक़ाज़ा करता है कि ग़ीबत से मन्अ़ न करना भी कबीरा गुनाह होना चाहिये क्यूं कि येह एक बहुत बड़ी बुराई है।

हज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) के मुख़ालिफ़ क़ौल से ज़ाहिर होता है कि अहले इ़ल्म और ह़ामिलीने क़ुरआन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی का वक़ीअ़ह (या'नी नक़्स निकालना) ग़ीबत नहीं बल्कि येह मुसल्मान को गाली देने और उस की बे इ़ज़्ज़ती



www.dawateislami.net

करने में दाख़िल है और इस की दलील गुज़र चुकी है और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी ह़दीसे पाक से भी इस पर इस्तिद्लाल किया जाता है कि,

﴾59﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : ''जिस ने मेरे किसी वली को अज़िय्यत दी मैं उस के साथ ए'लाने जंग करता हूं।''(1)

ग़ीबत येह है कि किसी का ऐसा ऐब बयान करना जिसे सुनना वोह पसन्द नहीं करता ख़्वाह वोह ऐब उस में मौजूद हो। येह हम ने इस लिये कहा है क्यूं कि वक़ीअ़ह में ज़रूरी है कि नक़्स पाया जाए और वक़ीअ़ह मुसल्मान को गाली देने में दाख़िल है। जैसा कि इमाम मुस्लिम बिन ह़ज्जाज नैशापूरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 261 हि.) ने रिवायत किया है कि,

﴾60﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से दरयाफ़्त फ़रमाया : ''क्या तुम जानते हो, ग़ीबत क्या है ?'' सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही बेहतर जानते हैं।'' इर्शाद फ़रमाया : ''(ग़ीबत येह है कि) तेरा अपने भाई का ऐसा ज़िक्र करना जिसे वोह ना पसन्द करता हो।''(2)

ग़ीबत को कबीरा गुनाहों में शुमार करना मह़ल्ले नज़र है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे मुर्दार का गोश्त खाने की कराहियत से तश्बीह दी और इर्शाद फ़रमाया :

اَیُحِبُّ اَحَدُکُمْ اَنْ یَّاْکُلَ لَحْمَ اَخِیْہِ مَیْتًا
(پ۲۶، الحجرات:۱۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए।

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام इर्शाद फ़रमाते हैं कि ''इस का मा'ना येह है कि (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस इस्तिफ़्सार पर) इन के लिये यूं जवाब देना ज़रूरी था कि कोई भी येह पसन्द नहीं करता। पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें फ़रमाया ''**فَکَرِھْتُمُوْہُ**'' और मैं (या'नी अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی) ने अह़ादीसे मुबा-रका में ग़ीबत और इस पर अ़ज़ाब की वई़द नहीं देखी, अलबत्ता ! ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से येह रिवायत मरवी है कि,

﴾61﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब मुझे मे'राज हुई तो मैं एक ऐसी क़ौम के पास से गुज़रा जिन के नाख़ुन तांबे के थे और वोह उन से अपने

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، الحدیث: ۶۵۰۲، ص۵۴۵ "آذی" بدلہ "عادی"۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ والادب، باب تحریم الغیبۃ، الحدیث: ۶۵۹۳، ص۱۱۳۰۔



www.dawateislami.net

चेहरों और सीनों को नोच रहे थे, मैं ने पूछा : "ऐ जिब्रईल ! येह कौन हैं ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "येह वोह लोग हैं जो लोगों का गोश्त खाते (या'नी ग़ीबत करते) और उन की इ़ज़्ज़तों पर ह़म्ला (या'नी बे इ़ज़्ज़ती) करते थे।"(1)

येह ह़दीसे पाक ग़ीबत के कबीरा होने पर दलालत नहीं करती बल्कि येह तो सिर्फ़ इस की हुरमत, इस से नफ़रत दिलाने और इस से झिड़क्ने पर दलालत करती है।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْغَنِی का कलाम ख़त्म हो गया।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْغَنِی का मौक़िफ़ का जवाब येह है कि "अगर वक़ीअ़ह मुसल्मान को गाली देने में दाख़िल है तो मुसल्मान को गाली देने के ज़िक्र के साथ इस का अ़ला–ह़दा ज़िक्र क्यूं किया गया और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی (मु–तवफ़्फ़ा 783 हि.) ने फ़रमाया कि "जिस ने इसे ग़ीबत से जुदा किया तो उस ने इसे कबीरा बना दिया और ग़ीबत को सग़ीरा बना दिया।" क्यूं कि वक़ीअ़ह से जब गाली मुराद ली जाए तो येह कबीरा गुनाह होता है अगर्चे उ़–लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام के इ़लावा के बारे में हो तो फिर इस के साथ तख़्सीस कैसे हो सकती है, लिहाज़ा ह़क़ येह है कि सिर्फ़ वक़ीअ़ह को मुत़्लक़न कबीरा गुनाह क़रार देना मुश्किल है और जो कहते हैं कि ग़ीबत सग़ीरा गुनाह है और वक़ीअ़ह से मुराद ग़ीबत है तो येह वाज़ेह़ है मगर अहले इ़ल्म और ह़ामिलीने क़ुरआन की अ़–ज़मत व बुज़ुर्गी इन के मुआ़–मले में सख़्ती का तक़ाज़ा करती है ताकि लोग इन की ख़ामियां निकालने से बाज़ रहें और जो कहते हैं कि ग़ीबत कबीरा गुनाह है या वक़ीअ़ह से मुराद गाली लेते हैं तो वक़ीअ़ह को अ़ला–ह़दा ज़िक्र करने का कोई फ़ाएदा नहीं सिवाए इस के कि इस की शिद्दत में ताकीद पैदा की जाए। और अ़ल्लामा ज़र–कशी رَحمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भी वक़ीअ़ह से ग़ीबत मुराद ली है। पस इस से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْغَنِی का वाज़ेह़ रद हो जाता है।

ग़ीबत के कबीरा गुनाह होने के मु–तअ़ल्लिक़ क़ुरआनी मिसाल से मज़्कूरा मुफ़ीद मा'ना रद हो जाता है इस लिये कि ग़ीबत के मुआ़–मले में झिड़क और सख़्ती पाई जाती है क्यूं कि मुर्दार का गोश्त खाना कबीरा गुनाह है, इसी त़रह़ जो चीज़ इस के मुशाबेह हो बल्कि ग़ीबत इस से भी ज़ियादा फ़साद वाली है। इसी वज्ह से अ़ल्लामा ज़र–कशी عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی ने इर्शाद फ़रमाया : "उन पर तअ़ज्जुब है जो मुर्दार खाने को कबीरा गुनाहों में शुमार करते हैं और ग़ीबत

---

(1)......سنن ابی داود ،کتاب الادب ،باب فی الغیبۃ،الحدیث :۴۸۷۸،ص۱۵۸۱۔



www.dawateislami.net

को कबीरा गुनाहों में शुमार नहीं करते ह़ालां कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे मुर्दार आदमी का गोश्त खाने की त़रह क़रार दिया है।"

## सय्यिदुना अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحمَةُاللهِ الغَنِی के ए'तिराज़ात और उन के जवाबात

### ए'तिराज़ात :

**(1)**...... ग़ीबत पर अ़ज़ाब की कोई वईद अह़ादीसे मुबा-रका में नहीं आई। **(2)**...... मज़्कूरा ह़दीसे पाक इस के कबीरा होने पर दलालत नहीं करती बल्कि इस की ह़ुरमत और इस से झिड़क्ने पर दलालत करती है।

### जवाबात :

दूसरे ए'तिराज़ का जवाब तो बिल्कुल वाज़ेह़ है क्यूं कि येह बात किसी पर मख़्फ़ी नहीं कि मज़्कूरा ह़दीसे पाक में बयान कर्दा अ़ज़ाब इन्तिहाई शदीद अ़ज़ाब है और कबीरा तो होता ही वोह गुनाह है जिस में शदीद वईद पाई जाए और येह भी एक शदीद वईद ही है।

पहले ए'तिराज़ का जवाब भी वाज़ेह़ है क्यूं कि जिस ने भी मेरी ज़िक्र कर्दा अह़ादीसे मुबा-रका में ग़ौरो फ़िक्र किया वोह जान लेगा कि ग़ीबत में शदीद तरीन और बहुत बड़ा अ़ज़ाब पाया जाता है। जैसा कि सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका में है कि [(1)...... ग़ीबत सूद से बढ़ कर है (2)...... अगर इसे सुमन्दर के पानी में डाल दिया जाए तो उसे भी बदबूदार कर दे (3)...... जहन्नमी जहन्नम में मुर्दार खा रहे थे (4)...... उन की फ़ज़ा बदबूदार थी और (5)...... उन्हें क़ब्रों में अ़ज़ाब दिया जा रहा था।], इन में से बा'ज़ अह़ादीस ही इस के कबीरा होने के लिये काफ़ी हैं। पस जब येह सारी जम्अ़ हो जाएं तो फिर ग़ीबत करना क्यूंकर कबीरा गुनाह न कहलाएगा ? येह तो सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका में है और इस के इ़लावा ग़ैर सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका में इस से भी अशद वईदें हैं, लिहाज़ा ग़ीबत के कबीरा होने पर कसीर सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका दलालत करती हैं लेकिन इस के मुफ़्सिदात में इख़्तिलाफ़ के ए'तिबार से इस के कम या ज़ियादा होने में इख़्तिलाफ़ है। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُاللهِ القَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) का क़ौल गुज़र चुका है, इस से येह भी ज़ाहिर हुवा कि "ग़ीबत एक ला इ़लाज बीमारी और ऐसा ज़ह्र है जो ज़बानों पर ठन्डे साफ़ शफ़्फ़ाफ़ पानी से भी ज़ियादा मीठा होता है।"

﴾62﴿...... साह़िबे जवामिउ़ल कलिम[1] (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा

---

1...... जवामिउ़ल कलिम से मुराद ऐसे कलिमात हैं जो इ़बारत के लिह़ाज़ से मुख़्तसर और मआ़नी व मत़ालिब के लिह़ाज़ से जामेअ़ हों। (کوثر الخیرات، ص۵۵)



www.dawateislami.net

(صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने अपने इस फ़रमाने आ़लीशान से इसे माल ग़स्ब करने और क़त्ल करने के बराबर क़रार दिया : "हर मुसल्मान पर दूसरे मुसल्मान का ख़ून, माल और इ़ज़्ज़त ह़राम है।"(1)

ग़स्ब और क़त्ल इज्माअ़न कबीरा गुनाह हैं, मुसल्मान भाई की इ़ज़्ज़त पामाल करने का भी येही हुक्म है। चुनान्चे,

﴾63﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सूद से बढ़ कर गुनाह मुसल्मान की इ़ज़्ज़त ह़लाल जानना है।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿۵۸﴾
(پ۲۲، الاحزاب: ۵۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो ईमान वाले मर्दों और औरतों को बे किये सताते हैं उन्हों ने बोहतान और खुला गुनाह अपने सर लिया।(2)

﴾64﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ग़ीबत ज़िना से बदतर है।"(3)

## ग़ैर मुकल्लफ़ की ग़ीबत का हुक्म :

**सुवाल :** "**अल ख़ादिम**" में है कि क्या बच्चे और मजनून की ग़ीबत का वोही हुक्म है जो मुकल्लफ़ की ग़ीबत का है ?

**जवाब :** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू नस्र अ़ब्दुर्रह़ीम बिन अ़ब्दुल करीम कुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 514 हि.) ने "**अल मुर्शिद**" में इस का जवाब येह दिया है कि "जिस की ग़ीबत की उस से मा'ज़िरत करना वाजिब है और येह मा'ज़िरत करना तब वाजिब होगा जब कि वोह इसाअत का मह़ल भी हो (या'नी जिस की ग़ीबत की जा रही हो उस के मु-तअ़ल्लिक़ मा'लूम हो कि उस की दिल आज़ारी होगी)। लिहाज़ा बच्चे और मजनून से मा'ज़िरत करना वाजिब नहीं और इस में ग़ौरो फ़िक्र की ज़रूरत है और येह भी कहा जा सकता है कि मुकल्लफ़ का ह़क़ और क़ियामत के दिन मुता-लबे का ह़क़ बाक़ी रहे अगर्चे नदामत साबित होने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ साक़ित़ हो जाएगा।" "**अल ख़ादिम**" का कलाम ख़त्म हुवा।

---

1 ......صحيح مسلم، كتاب البر والصلة والادب، باب تحريم ظلم المسلم......الخ، الحديث: ۲۵۶۴، ص ۱۱۲۷۔

2 ......شعب الايمان للبيهقى، باب فى تحريم أعراض الناس، الحديث: ۶۷۱۱، ج۵، ص ۲۹۸، دون قوله "امرئ"۔

3 ......المعجم الاوسط، الحديث: ۶۵۹۰، ج۵، ص ۶۳۔



www.dawateislami.net

यहां उन्हों ने इशारा किया है कि मा'ज़िरत के वाजिब न होने से येह लाज़िम नहीं आता कि मजनून और बच्चे की ग़ीबत करना जाइज़ है और इस के लाज़िम होने की कोई वज्ह नहीं और ग़ैर मुकल्लफ़ की ग़ीबत से तौबा आयिन्दा बयान होने वाले चन्द अरकान पर मौक़ूफ़ है यहां तक कि मा'ज़िरत भी इन अरकान में शामिल है। लेकिन अगर वोह मर गया और तौबा की बाक़ी शराइत़ पाई गईं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ साक़ित़ हो जाएगा लेकिन बन्दे का ह़क़ बाक़ी रहेगा।

## तम्बीह 2 : ग़ीबत की जाइज़ सूरतें

ग़ीबत में चूंकि अस्ल वोह ह़ुरमत है जो कभी वाजिब होती है या फिर किसी ऐसी सह़ीह़ शर-ई ग़रज़ की वज्ह से कभी मुबाह़ होती है कि जिस का ह़ुसूल इस के बिग़ैर नहीं हो सकता। पस ग़ीबत के जवाज़ की छ[6] सूरतें हैं :

**पहली :** मज़्लूम या'नी जिस पर ज़ुल्म किया गया हो वोह ऐसे शख़्स को शिकायत करे जिस के मु-तअ़ल्लिक़ इसे यक़ीन हो कि वोह ज़ुल्म को ख़त्म या कम कर सकता है।

**दूसरी :** किसी शख़्स को बुरे काम से रोकने के लिये मदद त़लब करते हुए ऐसे शख़्स से तज़्किरा करना जिस के मु-तअ़ल्लिक़ बुराई मिटाने की क़ुदरत का यक़ीन हो म-सलन इस्लाह़ की निय्यत से बताना कि फ़ुलां इस बुराई में मुलव्वस है, आप उसे समझाइये। जब कि वोह ए'लानिया गुनाह करता हो वगर्ना ऐसा करना ग़ीबत है जो कि ह़राम है।

**तीसरी :** मुफ़्ती से येह कह कर फ़तवा त़लब करना कि फ़ुलां ने मुझ पर इस त़रह़ ज़ुल्म किया, क्या उस के लिये ऐसा करना जाइज़ है ? और उस से छुटकारा पाने या अपना ह़क़ ह़ासिल करने के लिये मैं कौन सा त़रीक़ा इख़्तियार करूं ? हां ! अफ़्ज़ल येह है कि वोह उस का नाम मुब्हम रखे और इस त़रह़ कहे : "आप उस मर्द या औ़रत के फ़ुलां मुआ़-मले के बारे में क्या कहते हैं ?" क्यूं कि मक़्सद तो इस से भी ह़ासिल हो जाता है। अलबत्ता ! सरा-ह़तन उस का नाम लेना भी जाइज़ है, क्यूं कि मुफ़्ती कभी उस की ता'यीन से वोह मा'ना ह़ासिल कर लेता है जो इब्हाम से ह़ासिल नहीं कर सकता। लिहाज़ा नाम ज़िक्र करने में मस्लह़त पाई जाती है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बीवी हिन्द की रिवायत में आया है।

**चौथी :** मुसल्मानों को शर से बचाना और उन्हें नसीह़त करना। जैसे रावियों, गवाहों, मुसन्निफ़ीन और इफ़्ता या इदारों के ना अह्ल, फ़ासिक़ या बिद्अ़ती मु-तसद्दीन (या'नी फ़तवा देने वालों) की जर्ह़ करना जब कि वोह अपनी बिद्अ़त की त़रफ़ बुलाते भी हों अगर्चे ख़ुफ़्या त़ौर पर ही ऐसा करते हों तो इस सूरत में बिल इत्तिफ़ाक़ उन की ग़ीबत न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि


www.dawateislami.net

वाजिब है। म-सलन कोई शख़्स किसी से मश्वरा करे अगर्चे शादी के इरादे से मश्वरा न करे या दीनी या दुन्यवी मुआ़-मले में किसी ग़ैर से मिल बैठने का मश्वरा न करे बशर्ते कि उस दूसरे के क़बीह़ होने का सिर्फ़ इसे ही इ़ल्म हो जैसे फ़िस्क़, बिद्अ़त, लालच वग़ैरा म-सलन शादी के मुआ़-मले में तंगदस्ती जैसे मुआ़-मलात (का सिर्फ़ उसे ही इ़ल्म हो जिस से मश्वरा लिया गया हो) जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से निकाह़ करने से मन्अ़ करने के मु-तअ़ल्लिक़ ह़दीसे पाक आगे आ रही है। फिर अगर इस्लाह़ ऐ़ब ज़िक्र करने पर मौक़ूफ़ हो तो ऐ़ब ज़िक्र करे लेकिन इस पर ज़ियादती करना जाइज़ नहीं या फिर ऐ़ब दो हों तो उन्हें ही बयान करे क्यूं कि येह मजबूर के लिये मुर्दार खाने की त़रह़ है जिस के लिये उस से ब क़दरे ज़रूरत ही कुछ लेना जाइज़ होता है। हां ! इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये नसीह़त का इरादा हो न कि किसी और फ़ाएदे का। लेकिन अक्सर अवक़ात इन्सान इस से ग़ाफ़िल हो जाता है और शैत़ान उस पर मुसल्लत़ हो जाता है और उसे उस वक़्त इस काम पर उभारता है जब कि उस का नसीह़त करने का इरादा नहीं होता और उसे मुत़्मइन करता है कि येह नसीह़त ही है। इस से मा'लूम हुवा कि किसी ओ़हदे पर फ़ाइज़ शख़्स अगर किसी ना शाइस्ता ह़-र-कत का शिकार हो जाए। जैसे फ़िस्क़ या ग़फ़्लत वग़ैरा तो ऐसे शख़्स से इस बात का ज़िक्र करना वाजिब है जो उस को मा'ज़ूल करने, किसी दूसरे को वाली बनाने या उसे नसीह़त करने और इस्तिक़ामत पर उभारने पर क़ादिर हो।

**पांचवीं :** जो ए'लानिया फ़िस्क़ या बिद्अ़त का इरतिकाब करे जैसे भत्ता लेने वाले, ए'लानिया शराब के आ़दी और बात़िल विलायत वाले पस इन के ए'लानिया गुनाह का ज़िक्र करना जाइज़ है लेकिन किसी दूसरे ऐ़ब का ज़िक्र करना जाइज़ नहीं मगर येह कि इस का कोई और सबब हो।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं : "**अज़्कारुन्न-ववी**" में है कि उस की ग़ीबत करना जाइज़ है जो अपने फ़िस्क़ या बिद्अ़त का ए'लानिया इरतिकाब करता हो जैसे ए'लानिया शराब पीने वाला, भत्ता और ज़ुल्मन माल लेने वाला। पस जिस चीज़ का वोह ए'लानिया इरतिकाब करे उस का ज़िक्र जाइज़ है और इस के इ़लावा उ़यूब को बयान करना जाइज़ नहीं।[1]

**छटी :** ऐ़ब ज़िक्र करने से किसी की बुराई मक़्सूद न हो बल्कि उस की मा'रिफ़त व शनाख़्त मक़्सूद हो तो ऐ़ब ज़िक्र करना जाइज़ है म-सलन किसी का ऐसा लक़ब ज़िक्र करना

(1)......الاذكار للنووی، كتاب حفظ اللسان، باب بيان ما يباح من الغيبة، ص٢٧٢۔



www.dawateislami.net

जैसे अन्धा, नाबीना, बहरा और गन्जा वग़ैरा कहना अगर्चे उस की पहचान उस के बिग़ैर भी हो सकती हो। पस पहचान कराने के लिये वोह लक़ब बयान कर सकता है मगर ख़ामी बयान करने के लिये नहीं और अगर लक़ब के बिग़ैर पहचान हो सकती हो तो बेहतर येह है कि लक़ब बयान न करे।

इन 6 अस्बाब में से अक्सर पर इत्तिफ़ाक़ है और इन पर सहीह़ और मश्हूर अह़ादीसे मुबा-रका दलालत करती हैं। चुनान्चे,

﴾65﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से किसी के लिये इज़्ने ह़ाज़िरी त़लब किया गया तो इर्शाद फ़रमाया : "उसे इजाज़त दे दो, वोह क़बीले का बुरा शख़्स है।"[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی (मु-तवफ़्फ़ा 256 हि.) ने मुन्दरिजए बाला ह़दीसे पाक से फ़सादी लोगों की ग़ीबत के जवाज़ पर इस्तिद्लाल किया है।

﴾66﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरा ख़याल है कि फ़ुलां फ़ुलां हमारे दीन में से कुछ भी नहीं जानते।" ह़ज़रते सय्यिदुना लैस बिन सा'द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मु-तवफ़्फ़ा 175 हि.) फ़रमाते हैं : "वोह दोनों मख़्रमा बिन नौफ़िल बिन अ़ब्दे मनाफ़ क़-रशी और उ़यैना बिन ह़सन फ़ज़ारी मुनाफ़िक़ थे।"[2]

﴾67﴿...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ात़िमा बिन्ते क़ैस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا इर्शाद फ़रमाती हैं कि मैं सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे नाज़ में ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ह़ज़रते अबू जहम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه और ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने मुझे निकाह़ का पैग़ाम दिया है।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुआ़विया ग़रीब आदमी है, उस के पास कुछ माल नहीं और अबू जहम अपनी गरदन से अ़सा (या'नी छड़ी) नहीं उतारता।"[3]

﴾68﴿...... मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अबू जहम औ़रतों को बहुत ज़ियादा मारने वाला है।"[4]

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الادب، باب ما یجوز من اغتیاب أهل الفساد والریب، الحدیث:۶۰۵۴، ص۵۱۱۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الادب، باب ما یجوزمن الظن، الحدیث:۶۰۶۷، ص۵۱۲۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الطلاق، باب المطلقة البائن لانفقة لها، الحدیث:۳۶۹۷، ص۹۳۱۔

4 ......صحیح مسلم، کتاب الطلاق، باب المطلقة البائن لانفقة لها، الحدیث:۳۷۱۲، ص۹۳۲۔



www.dawateislami.net

﴾69﴿...... जब **अ़ब्दुल्लाह** बिन उबय्य मुनाफ़िक़ लईन ने उस सफ़र में कहा जिस में लोगों को तक्लीफ़ पहुंची थी कि,

لَا تُنۡفِقُوۡا عَلٰی مَنۡ عِنۡدَ رَسُوۡلِ اللّٰہِ حَتّٰی یَنۡفَضُّوۡا ؕ (پ۲۸، المنافقون:۷)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** उन पर ख़र्च न करो जो **रसूलुल्लाह** के पास हैं यहां तक कि परेशान हो जाएं।

और कहा :

لَئِنۡ رَّجَعۡنَاۤ اِلَی الۡمَدِیۡنَۃِ لَیُخۡرِجَنَّ الۡاَعَزُّ مِنۡہَا الۡاَذَلَّ ؕ (پ۲۸، المنافقون:۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** हम मदीना फिर कर गए तो ज़रूर जो बड़ी इ़ज़्ज़त वाला है वोह उस में से निकाल देगा उसे जो निहायत ज़िल्लत वाला है।

तो ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हो कर इस की ख़बर दी तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इब्ने उबय्य को बुलवाया तो वोह क़सम खा कर कहने लगा कि इस ने ऐसा नहीं कहा। तो मुनाफ़िक़ीन ने कहा : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़ैद ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से झूट बोला है।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इन्तिहाई जलाल आ गया यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तस्दीक़ में सूरए मुनाफ़िक़ून की येह आयाते मुबा-रका नाज़िल हुईं फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुनाफ़िक़ीन को बुलाया ताकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के लिये इस्तिग़्फ़ार करें तो उन्हों ने अपने मुंह फेर लिये।(1)

﴾70﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बीवी हिन्द बिन्ते उ़त्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने बारगाहे न-बवी में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ माल को रोक कर रखने वाले हैं, मुझे इतना माल नहीं देते जो मुझे और मेरी औलाद को काफ़ी हो। अलबत्ता! मैं उन के माल से उन की ला इ़ल्मी में कुछ ले लेती हूं (तो क्या मेरे लिये ऐसा करना जाइज़ है?)। इर्शाद फ़रमाया : "दस्तूर के मुत़ाबिक़ इतना माल ले लिया कर जो तुझे और तेरी औलाद को काफ़ी हो।"(2)

## तम्बीह 3 : ग़ीबत की मिसालें

हमारे अइम्मए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने तसरीह़ फ़रमाई है कि ग़ीबत येह है कि तू ज़िन्दा

1......صحیح البخاری، کتاب التفسیر، سورۃ المنافقین، باب وَاِذَا رَاَیْتَہُمْ ......الخ، الحدیث:۴۹۰۳، ص۴۲۰۔

2......صحیح البخاری، کتاب النفقات، باب اذا لم ینفق الرجل......الخ، الحدیث:۵۳۶۴، ص۴۶۳۔



www.dawateislami.net

या मुर्दा किसी मुअ़य्यन मुसल्मान या ज़िम्मी का कोई ऐसा ऐ़ब बयान करे जो उस में मौजूद हो और उसे उस का बयान करना ना पसन्द हो ख़्वाह उस की मौजू-दगी या अ़दम मौजू-दगी में उस ऐ़ब का ज़िक्र किया जाए। आयते मुबा-रका की त़रह़ ह़दीसे पाक में भाई के साथ ता'बीर करना शफ़्क़त के लिये और येह याद दिलाने के लिये है कि मुसल्मान के ह़क़ में ग़ीबत से बाज़ रहने की ज़ियादा ताकीद की गई है क्यूं कि येह इ़ज़्ज़तो ह़ुरमत के ए'तिबार से अशरफ़ो आ'ज़म है। फिर येह कि जिस ऐ़ब को वोह ना पसन्द करता है ख़्वाह (1)...... वोह उस के बदन में हो जैसे भेंगा, छोटे क़द वाला, इन्तिहाई काला या इस के बर अ़क्स हो (2)...... या उस के नसब में हो जैसे उस का बाप हिन्दी या मोची वग़ैरा हो (3)...... या उस के अख़्लाक़ के बारे में हो जैसे बुरे अख़्लाक़ वाला और आ़जिज़ व ज़ईफ़ हो (4)...... या उस के ऐसे फ़े'ल का ज़िक्र हो जिन का दीन से तअ़ल्लुक़ हो जैसे झूटा हो, नमाज़ में सुस्ती करने वाला, अच्छी त़रह़ अदा नहीं करता, वालिदैन का ना फ़रमान, ज़कात न देने वाला या मुस्तह़िक़्क़ीन को अदा न करने वाला हो (5)...... या उस के दुन्यवी फ़े'ल के मु-तअ़ल्लिक़ हो जैसे ज़ियादा बा अदब न हो, अपनी ज़ात पर किसी का कोई ह़क़ न समझने वाला या ज़ियादा खाने या ज़ियादा सोने वाला हो (6)...... या उस के कपड़ों के बारे में हो जैसे लम्बे या छोटे दामन या मैले कपड़ों वाला हो (7)...... या उस के घर के बारे में हो जैसे उस के घर में अश्याए ज़रूरत कम हों (8)...... या उस की सुवारी के बारे में हो जैसे सरकश हो (9)...... या उस के बच्चे के बारे में हो जैसे कम तरबियत वाला हो (10)...... या उस की बीवी के बारे में हो जैसे बहुत ज़ियादा घर से बाहर निकलने वाली हो या बूढ़ी हो या फिर उस पर ह़ुक्म चलाने वाली या मैली रहने वाली हो (11)...... या किसी के मुलाज़िम के बारे में हो जैसे भागने वाला हो या इस के इ़लावा हर वोह ऐ़ब जिस के बारे में इ़ल्म हो कि अगर उसे मा'लूम हो जाए तो वोह ना पसन्द करेगा।

कुछ लोगों का मौक़िफ़ है कि "दीनी ख़ामी बयान करने में कोई ग़ीबत नहीं क्यूं कि वोह बुराई है जिस की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी मज़म्मत फ़रमाई। चुनान्चे, (1)...... आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक औ़रत की कस्रते इ़बादत का ज़िक्र किया गया और येह कि वोह पड़ोसियों को तक्लीफ़ देती है तो इर्शाद फ़रमाया : "वोह जहन्नम में है।"[1] और (2)...... एक औ़रत के बारे में बताया गया कि वोह बख़ील है तो इर्शाद फ़रमाया : "तब तो उस में कोई भलाई नहीं।"[2]

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی هريرة، الحديث: ۹۶۸۱، ج۳، ص۴۴۲۔

2 ......الزهد لابن المبارك، باب اصلاح ذات البين، الحديث: ۷۴۳، ص۲۵۷۔



www.dawateislami.net

**हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) "**एह़्याउल उ़लूम**" में फ़रमाते हैं "येह इस्तिद्लाल फ़ासिद है क्यूं कि सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ऐसी सिफ़ात इस वज्ह से बयान करते थे कि उन्हें सुवालात के ज़रीए़ शर-ई अह़काम जानने की ज़रूरत होती थी नीज़ उन का मक़्सद ख़ामी निकालना नहीं होता था और सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह के इ़लावा उन्हें इस क़िस्म की बातों की ज़रूरत भी नहीं पड़ती थी और इस पर दलील येह है कि उम्मत का इस पर इज्माअ़ है कि जिस ने किसी के मु-तअ़ल्लिक़ ऐसी बात कही जिसे वोह ना पसन्द करता हो तो वोह ग़ीबत करने वाला है क्यूं कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ीबत की जो ता'रीफ़ की है येह इस में दाख़िल है। गुज़श्ता अह़ादीसे मुबा-रका में ज़िक्र हो चुका है कि बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : "फ़ुलां औ़रत पस्त क़द वाली है। और "फ़ुलां मर्द कितना आ़जिज़ है।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह ग़ीबत है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "दूसरे का ज़िक्र करना या तो ग़ीबत होगा या बोहतान या फिर इफ़्क (या'नी बिग़ैर तह़क़ीक़ के इल्ज़ाम तराशी करना) और इन सब का हुक्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब में मौजूद है। पस **ग़ीबत** येह है कि तू ऐसी बात कहे जो उस में मौजूद हो और **बोहतान** येह है कि ऐसी बात जो उस में मौजूद न हो और **इफ़्क** येह है कि तू ऐसी बात कहे जो तुझे पहुंचे।"(1)

## तम्बीह 4 :

येह बात साबित हो चुकी है कि ग़ीबत में कोई फ़र्क़ नहीं ख़्वाह जिस की ग़ीबत की जा रही है वोह ह़ाज़िर हो या ग़ाइब और येही क़ाबिले ए'तिमाद बात है। जब कि "**अल ख़ादिम**" में है कि ग़ीबत का ज़ाबित़ा येह है कि जिस की ग़ीबत की जा रही है, क्या उस की अ़दम मौजू-दगी में ही ग़ीबत होगी जैसा कि इस का नाम (या'नी ग़ीबत) तक़ाज़ा करता है या फिर उस की मौजू-दगी या अ़दम मौजू-दगी में कोई फ़र्क़ नहीं। येही सुवाल कई लोगों के दरमियान गर्दिश करता रहा बिल आख़िर मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अबू फ़ौरक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को देखा कि उन्हों ने "**मुश्किलुल क़ुरआन**" में सूरए हुजुरात की तफ़्सीर में बेहतरीन क़ाइ़दा बयान फ़रमाया कि "किसी की अ़दम मौजू-दगी में उस का (बुराई के साथ) ज़िक्र करना (ग़ीबत) है।" इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना सलीम राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 447 हि.) ने ग़ीबत की ता'रीफ़ करते हुए फ़रमाया : "ग़ीबत येह है कि तू अपने मुसल्मान भाई की पीठ

1 ......احیاء علوم الدین، کتاب آفات اللسان، الآفة الخامسة عشرة الغيبة، بیان معنی الغيبة وحدودها، ج۳، ص۱۷۸۔



www.dawateislami.net

पीछे बुराई बयान करे अगर्चे वोह बुराई उस में मौजूद हो।"

"**अल मोहूकम**" में है कि "ग़ीबत मुसलमान की अ़दम मौजू-दगी में ही होती है।" और मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम तक़िय्युद्दीन बिन दक़ीकुल ईद رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मु-तवफ़्फ़ा 702 हि.) के मख़्तूते में येह बात पाई कि उन्हों ने अपनी सनद के साथ हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़दीसे पाक बयान फ़रमाई कि,

﴾71﴿...... आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐसी बात जिसे तू अपने मुसल्मान भाई के सामने बयान करना ना पसन्द करे वोह ग़ीबत है।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र मुहम्मद बिन अ़ली बिन इस्माईल शाशी अल मा'रूफ़ अ़ल्लामा क़फ़्फ़ाल رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मु-तवफ़्फ़ा 365 हि.) ने अपने फ़तावा में ग़ीबत को शरअ़न ग़ैर मज़्मूम सिफ़ात के साथ ख़ास किया ब ख़िलाफ़ ज़िना वग़ैरा के। पस इन के नज़्दीक ज़ानी का ज़िक्र करना जाइज़ ठहरा। इन की दलील येह ह़दीसे पाक है :

﴾72﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "फ़ासिक़ का ज़िक्र उन मज़्मूम सिफ़ात के साथ करो जो उस में हैं ताकि लोग उस से बचें।"(2)

लेकिन अगर कोई मक़्सद न हो तो पर्दा पोशी मुस्तह़ब है वरना उसे ज़लीलो रुस्वा करने या उस के फ़िस्क़ में मुब्तला होने की इत्तिलाअ़ देने के लिये उस के फ़िस्क़ को बयान करना ज़रूरी है।

किसी शर-ई ज़रूरत के बिग़ैर (ग़ीबत के) जवाज़ का मज़्कूरा क़ौल ज़ई़फ़ है जिस पर इत्तिफ़ाक़ नहीं किया जाएगा और मज़्कूरा ह़दीसे पाक भी ज़ई़फ़ है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَوَّل (मु-तवफ़्फ़ा 241 हि.) ने इर्शाद फ़रमाया है कि "येह ह़दीस मुन्कर है।"

और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 458 हि.) ने इर्शाद फ़रमाया : "इस की कोई अस्ल नहीं और अगर येह सह़ीह़ ह़दीस भी हो तो इसे ए'लानिया गुनाह करने वाले या गवाह बनने वाले फ़ाजिर शख़्स पर मह़मूल किया जाएगा या उस पर ए'तिमाद किया जा रहा हो तो इस सूरत में फ़ाजिर के ह़ाल को बयान करने की ज़रूरत होगी ताकि उस पर ए'तिमाद न किया जाए।"(3)

---

(1)......تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر،الرقم۵۸۸۶ محمدبن احمد، الحدیث:۱۰۷۲۱،ج۵۱،ص۲۸۔

(2)......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا،کتاب الغیبه، باب الغیبة الّتی......الخ،الحدیث:۸۴،ج۴، ص۳۷۴۔

(3)......شعب الایمان للبیهقی ،باب فی الستر علی اصحاب القروف ،تحت الحدیث:۹۶۶۶،ج۷،ص۱۰۹۔



www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु–तवफ़्फ़ा 458 हि.) ने जिस बात पर मज़्कूरा ह़दीस को महमूल किया येह मु–तअ़य्यन है और उन्हों ने अपने उस्ताज़ ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू अ़ब्दुल्लाह** मुहम्मद बिन **अ़ब्दुल्लाह** ह़ाकिम नैशापूरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु–तवफ़्फ़ा 405 हि.) से नक़्ल किया कि येह ह़दीस सह़ीह़ नहीं और इसे इन अल्फ़ाज़ से लाए हैं कि,

﴿73﴾...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "फ़ासिक़ की कोई ग़ीबत नहीं।"(1)

मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीसे पाक का आ़म हुक्म उस ह़दीस के ख़िलाफ़ है जिस में ग़ीबत की ता'रीफ़ येह बयान की गई है कि "तेरा अपने भाई के मु–तअ़ल्लिक़ ऐसी बात करना जिसे वोह ना पसन्द करे।"(2) और "**एह्याउल उ़लूम**" में ग़ीबत की ता'रीफ़ जिस पर उम्मत का इज्माअ़ है वोह येह है कि "अपने भाई के मु–तअ़ल्लिक़ ऐसी बात करना जिसे वोह ना पसन्द करे।"(3) और ह़दीसे पाक में भी येही ता'रीफ़ है और येह तमाम अ़ल्लामा क़फ़्फ़ाल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَلَال (मु–तवफ़्फ़ा 365 हि.) के मौक़िफ़ को रद करता है।

जिन लोगों की ग़ीबत करना जाइज़ है, उन में से एक वोह है जो ए'लानिया फ़िस्क़ का इरतिकाब करे इस ए'तिबार से कि उस का ज़िक्र करने में कोई आ़र न हो जैसे हीजड़ा, भत्ता लेने वाले और लोगों का माल छीनने वाला। फ़ासिक़ जिस गुनाह का ए'लानिया इरतिकाब करे उस के बयान करने में कोई गुनाह नहीं, क्यूं कि ज़ईफ़ सनद के साथ एक ह़दीसे पाक मौजूद है कि,

﴿74﴾...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "जिस ने ह़या की चादर उतार दी उस की कोई ग़ीबत नहीं।"(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन इब्राहीम बिन मुन्ज़िर नैशापूरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु–तवफ़्फ़ा 319 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं : "किसी इन्सान की तन्क़ीस करते हुए उस के किसी ऐ़ब की त़रफ़ इशारा करना ज़बान से कहने के क़ाइम मक़ाम है।" फिर आप ने ह़ज़रते

1 ......شعب الایمان للبیهقی ،باب فی الستر علی اصحاب القروف ،تحت الحدیث: ۹۶۶۵ ،ج۷،ص۱۰۹ ـ

2 ......صحیح مسلم ،کتاب البر والصلة والادب ، باب تحریم الغیبة ، الحدیث: ۲۵۹۳ ،ص۱۱۳۰ ـ

3 ......احیاء علوم الدین، کتاب آفات اللسان،الآفة الخامسة عشرة الغیبة، بیان معنی الغیبة وحدودها، ج۳،ص۱۷۸ ـ

4 ......مکارم الاخلاق لابن ابی الدنیا ،باب ذکر الحیاء وما جاء فیه ،الحدیث: ۱۰۲ ،ص۸۷ـ



www.dawateislami.net

सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी ह़दीसे पाक ज़िक्र की, कि
﴾75﴿...... जब उन्हों ने एक औ़रत की त़रफ़ इशारा किया कि वोह पस्त क़द है तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक तूने ग़ीबत की है, उठ और इस का कफ़्फ़ारा अदा कर।''(1)

**यहां पर ''अल ख़ादिम'' के कलाम का ख़ुलासा ख़त्म हो गया।**

और साहि़बे ख़ादिम ने अपने शैख़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शिहाबुद्दीन अज़्रई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) के ह़वाले से अ़ल्लामा क़फ़्फ़ाल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْجَلَال (मु-तवफ़्फ़ा 365 हि.) का जो क़ौल नक़्ल किया है उस पर अ़मल किया जाएगा और किसी शर-ई मक़्सद के बिग़ैर अ़ल्लामा क़फ़्फ़ाल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْجَلَال (मु-तवफ़्फ़ा 365 हि.) का ग़ीबत के जवाज़ का क़ौल ज़ई़फ़ है और उन की ज़िक्र कर्दा ह़दीसे पाक ग़ैर मा'रूफ़ है और अगर सह़ीह़ भी हो तो भी उसे ज़रूरत की सूरत पर मह़मूल करना मु-तअ़य्यन है और ''**अत्तवस्सुत़**'' में है कि ''अ़ल्लामा क़फ़्फ़ाल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْجَلَال (मु-तवफ़्फ़ा 365 हि.) के कलाम में जो ह़दीसे पाक ज़िक्र की गई है उस की कोई अस्ल नहीं कि उस की त़रफ़ रुजूअ़ किया जाए।''

## ज़िम्मी काफ़िर की ग़ीबत का हुक्म :

**हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) से काफ़िर की ग़ीबत के बारे में सुवाल किया गया तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : ''मुसल्मान की ग़ीबत 3 वुजूहात की बिना पर ह़राम है : (1) ईज़ा देना (2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तख़्लीक़ में ख़ामी निकालना क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही बन्दों के अफ़्आ़ल का ख़ालिक़ है और (3) बे मक़्सद काम में वक़्त ज़ाएअ़ करना।'' मज़ीद इर्शाद फ़रमाया कि ''पहली वज्ह ह़राम होने, दूसरी मक्रूह होने और तीसरी ख़िलाफ़े औला होने का तक़ाज़ा करती है। बा'ज़ अह़काम में ज़िम्मी भी मुसल्मान की त़रह़ ही होता है कि इसे भी ईज़ा देने से मन्अ़ किया गया है और बेशक शरीअ़त ने इस की इ़ज़्ज़त, ख़ून और माल की हि़फ़ाज़त का ज़िम्मा लिया है।'' और ''**अल ख़ादिम**'' में इर्शाद फ़रमाया कि ''इसी क़ौल का सह़ीह़ होना औला है।'' और ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़बान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان (मु-तवफ़्फ़ा 354 हि.) ने ''**सह़ीह़ इब्ने ह़बान**'' में रिवायत किया है कि,
﴾76﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है :

---

(1)......الكامل فى ضعفاء الرجال، الرقم ٣٢٥ الحسن بن عمارة، ج٣،ص١١٣۔



www.dawateislami.net

"जिस ने किसी यहूदी या नसरानी को तक्लीफ़ देह बात कही उस का ठिकाना जहन्नम है।"(1)

**"सम्उन"** का मा'ना येह है कि किसी को ऐसी बात कहना जो उसे अज़िय्यत दे और ग़ीबत की हुरमत पर इस की वाज़ेह दलालत के बा'द मज़ीद किसी कलाम की गुन्जाइश नहीं।

**हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی (मु–तवफ़्फ़ा 505 हि.) ने मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : "और बाक़ी रहा हर्बी तो पहली वज्ह की बिना पर इस की ग़ीबत करना हराम नहीं और दूसरी और तीसरी वज्ह की बिना पर मक्रूह है। लेकिन बिद्अ़ती अगर कुफ़्र बके तो वोह हर्बी की तरह है वरना मुसल्मान की तरह। मगर उस की बिद्अ़त का ज़िक्र करना मक्रूह नहीं।" और हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन इब्राहीम बिन मुन्ज़िर नैशापूरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی (मु–तवफ़्फ़ा 319 हि.) ने इस हदीसे पाक "तेरा अपने भाई के बारे में ऐसी बात कहना जिसे वोह ना पसन्द करे।" के तहत फ़रमाया : "इस में दलील है कि यहूदो नसारा और तमाम बातिल मज़ाहिब वाले जो तेरे भाई नहीं और वोह जिसे उस की बिद्अ़त ने दीने इस्लाम से ख़ारिज कर दिया हो, उन की कोई ग़ीबत नहीं।" **"अल ख़ादिम"** में है कि "येह क़ौल उ़–लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام के उस क़ौल से टकराता है जो उन्हों ने अपने भाई के सौदे पर सौदा करने के बारे में कहा और तआ़रुज़ (या'नी इख़्तिलाफ़) वाज़ेह है। पस सहीह येही है कि ज़िम्मी की ग़ीबत भी हराम है जैसा कि पहले साबित हो चुका है।"

## तम्बीह 5 : ग़ीबत की अक़्साम

ग़ीबत की साबिक़ा ता'रीफ़ से येह वह्म किया जाता है कि येह ज़बान के साथ ख़ास है हालां कि ऐसा नहीं है क्यूं कि इस के हराम होने की इ़ल्लत येह है कि जिस की ग़ीबत की जा रही हो उस की ख़ामी दूसरे को बता कर उसे ईज़ा देना और येह इ़ल्लत इस सूरत में भी मौजूद है जब आप किसी दूसरे को मुब्हम अन्दाज़ में किसी फ़े'ल से या हाथ, आंख से इशारा कर के या लिख कर उस की ऐसी ख़ामी बताएं जिस का ज़िक्र करना वोह ना पसन्द करता हो।

हज़रते सय्यिदुना इमाम यहूया बिन शरफ़ न–ववी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی (मु–तवफ़्फ़ा 676 हि.) फ़रमाते हैं : "मज़्कूरा क़िस्म के ग़ीबत होने में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं। इसी तरह वोह सारे तरीक़े जो मक़्सूद को समझने की तरफ़ ले जाते हैं जैसे किसी की नक़्ल उतारते हुए चलना पस येह भी ग़ीबत है बल्कि ग़ीबत से भी बढ़ कर है। जैसा कि हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली

(1)......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب السیر، باب الذمی والجزیۃ، الحدیث:۴۸۶۰، ج۷، ص۱۹۳۔



www.dawateislami.net

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मु–तवफ़्फ़ा 505 हि.) ने फ़रमाया : इस त़रह़ करने से उस शख़्स की तस्वीर सामने आ जाती है और येह समझाने में ज़ियादा वाज़ेह़ और दिल के लिये ज़ियादा तक्लीफ़ देह है। और किताब लिखने वाले का मुअ़य्यन शख़्स का ज़िक्र कर के उस के कलाम को रद करना भी ग़ीबत है। मगर येह कि ग़ीबत को मुबाह़ करने वाले मज़्कूरा छ⁶ अस्बाब में से कोई सबब पाया जाए और इसी त़रह़ आप का येह कहना भी ग़ीबत है कि ''आज जो लोग हमारे पास से गुज़रे उन में से एक ने इस त़रह़ किया जब कि मुख़ात़ब इस से मुअ़य्यन शख़्स को समझ रहा हो अगर्चे किसी ख़ुफ़्या क़रीने से हो वरना आप का येह कहना ह़राम न होगा जैसा कि **एह़याउल उ़लूम** वग़ैरा में है।''(1)

**ए'तिराज़ :** उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का येह क़ौल कि ग़ीबत बिल क़ल्ब या'नी दिल से ग़ीबत करना ह़राम है, मज़्कूरा मौक़िफ़ की नफ़ी करता है लिहाज़ा मुख़ात़ब के समझने का कोई ए'तिबार नहीं।

**जवाब :** दिल की ग़ीबत से मुराद येह है कि आप के दिल में किसी के बारे में बद गुमानी पैदा हो और बिग़ैर किसी शर–ई जवाज़ के आप उस पर दिल को पुख़्ता कर लें। पस दिल की ग़ीबत से उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की येही मुराद मु–तअ़य्यन होती है और मुख़ात़ब को ग़ैर मुअ़य्यन शख़्स की बात बताना जो आप के नज़्दीक मुअ़य्यन हो लेकिन इस के लिये बद गुमानी का ए'तिक़ाद और दिल का पुख़्ता इरादा न हो तो इस ए'तिबार से येह दो अलग सूरतें बन जाएंगी। फिर मैं ने ''**एह़याओ उ़लूमिद्दीन**'' में बद गुमानी के बारे में देखा तो वहां भी मेरे ज़िक्र कर्दा कलाम के मुत़ाबिक़ तसरीह़ है और इस पर उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के कलाम को मह़मूल करना भी मु–तअ़य्यन हो जाता है।

ग़ीबत की ख़बीस तरीन क़िस्म येह है कि कोई शख़्स सालिह़ीन का त़रीक़ए कार और अपना मक़्सूद समझाते हुए ग़ीबत से बचने का इज़्हार करे ह़ालां कि अपनी जहालत की बिना पर वोह येह नहीं जानता कि इस ने रियाकारी और ग़ीबत दो फ़ोह़्श बातों को जम्अ़ कर लिया है म–सलन बा'ज़ रियाकारों के सामने जब किसी इन्सान का ज़िक्र किया जाता है तो कहते हैं : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने हमें ह़या की कमी या बादशाहों के पास जाने की मुसीबत में गिरिफ़्तार न किया।'' ह़ालां कि उन का इरादा दुआ़ करना नहीं बल्कि सुनने वाले को दूसरे का ऐ़ब समझाना होता है।

1 ......احياء علوم الدين، كتاب آفات اللسان،الآفة الخامسة عشرة الغيبة ،بيان ان الغيبة لا تقتصر......الخ، ج٣،ص١٧٩۔



www.dawateislami.net

कभी तो इस की ख़बासत में मज़ीद इज़ाफ़ा हो जाता है। लिहाज़ा पहले वोह किसी की ता'रीफ़ करता है फिर उस ता'रीफ़ में ग़ीबत की आमैज़िश ज़ाहिर हो जाती है। पस वोह कहता है कि फ़ुलां इ़बादत या इ़ल्म में बहुत ज़ियादा कोशिश करने वाला है लेकिन वोह भी इसी मुसीबत में मुब्तला है जिस में हम सब मुब्तला हैं या'नी उस में सब्र की कमी है। पस वोह बात अपनी करता है लेकिन उस का मक़्सूद दूसरे की मज़म्मत करना होता है। नीज़ अपनी मज़म्मत करने में सालिहीन के साथ तश्बीह दे कर ख़ुद अपनी ता'रीफ़ करना उस का मक़्सूद होता है। लिहाज़ा वोह तीन फ़ोह़्श आ़दतों को जम्अ़ कर लेता है : ग़ीबत, रियाकारी और अपनी ता'रीफ़ करना बल्कि चार को क्यूं कि येह काम करने के बा वुजूद वोह अपनी जहालत की वज्ह से येह गुमान करता है कि वोह ग़ीबत से बचने वाले नेकूकारों में से है और इस का सबब जहालत ही है क्यूं कि जो जहालत की ह़ालत में इ़बादत करता है शैत़ान उस के साथ खेलता है और उस पर हंसता और उस का मज़ाक़ उड़ाता है। और तमाम इ़बादातो रियाज़ात बरबाद कर के उसे हलाकत और गुमराही के गढ़ों में फेंक देता है।

इस की एक सूरत येह भी है कि वोह यूं कहता है कि ''मेरे दोस्त के साथ जो वाक़िआ़ पेश आया वोह मेरे लिये तक्लीफ़ देह है लिहाज़ा हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करते हैं कि वोह उसे साबित क़दम रखे।'' ह़ालां कि वोह झूटा होता है और वोह जाहिल इतना भी नहीं समझता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस के बात़िन की ख़बासत से अच्छी त़रह़ आगाह है और वोह इस की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी मोल लेता है और येह इस से ज़ियादा सख़्त है जिस का इरतिकाब जाहिल लोग सरे आ़म करते हैं।

ग़ीबत की एक सूरत येह भी है कि तअ़ज्जुब के त़ौर पर किसी की ग़ीबत को तवज्जोह से सुनना ताकि ग़ीबत करने में ग़ीबत करने वाले का लुत़्फ़ दोबाला हो। ह़ालां कि वोह जाहिल येह नहीं जानता कि ग़ीबत की तस्दीक़ करने वाला बल्कि इस पर ख़ामोश रहने वाला भी ग़ीबत करने वाले के साथ शरीक होता है जैसा कि ह़दीसे पाक में है :

﴾77﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''सुनने वाला भी ग़ीबत करने वालों में से एक है।''(1)

पस वोह शरीक होने से नहीं बच सकता जब तक कि ज़बान से इन्कार न करे। अगर हो सके तो किसी और बात में मश्ग़ूल हो जाए अगर ऐसा न कर सके तो कम अज़ कम दिल

---

(1)......احياء علوم الدين، كتاب آفات اللسان،الآفة الخامسة عشرة الغيبة ،بيان ان الغيبة لا تقتصر......الخ، ج٣،ص١٨٠ ـ



www.dawateislami.net

में बुरा जाने और इस पर लाज़िम है कि उस मजलिस से चला जाए जब कि कोई मजबूरी न हो वरना मा'ज़ूर है और इस में सिर्फ़ ज़बान से इस का येह कहना फ़ाएदा न देगा कि ''ख़ामोश हो जा।'' जब कि दिल उस को पसन्द कर रहा हो और न ही हाथ वग़ैरा से इशारा नफ़्अ़ मन्द हो सकता है। अलबत्ता ! ज़बान से इन्कार शिद्दत इख़्तियार कर जाए तो यक़ीनन फ़ाएदा ह़ासिल होगा। चुनान्चे, ह़दीसे पाक में है :

﴾78﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''बेशक जिस के सामने उस के मुसल्मान भाई की ग़ीबत की गई और वोह उस की मदद करने पर क़ादिर था पस इस ने उस की मदद की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में उस की मदद फ़रमाएगा और अगर इस ने मदद न की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इसे दुन्या व आख़िरत में ज़लील करेगा।''(1)

﴾79﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''जिस ने अपने मुसल्मान भाई की इ़ज़्ज़त को ग़ीबत से बचाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि उसे जहन्नम से आज़ाद फ़रमा दे।''(2)

## तम्बीह 6 : ग़ीबत के अस्बाब

ग़ीबत पर उभारने वाले उमूर बहुत ज़ियादा हैं। उन में से चन्द येह हैं :

(1)...... जिस ने आप को ग़ुस्सा दिलाया कभी तो उस की बुराइयां बयान कर के ग़ुस्सा ठन्डा हो जाता है लेकिन कभी ग़ीबत से भी ग़ुस्सा कम नहीं होता। लिहाज़ा वोह दिल में जम्अ़ होता रहता है और पुख़्ता कीना बन कर बुराइयां बयान करने का दाइमी सबब बन जाता है। ग़ुस्सा और कीना ग़ीबत पर उभारने वाले बहुत बड़े अस्बाब हैं।

(2)...... भाइयों की मुवा-फ़क़त और उन के साथ उन के मुआ़-मलात में नरमी का बरताव करते हुए हुस्ने सुलूक से पेश आना या फिर उन्ही जैसे मुआ़-मलात अपना लेना इस डर से कि अगर वोह ख़ामोश रहा या इन्कार किया तो वोह इस को बोझ समझेंगे और इस से अलग हो जाएंगे और अपनी जहालत की वज्ह से येह गुमान करता है कि येह यारी, दोस्ती की ज़रूरिय्यात में से है, बल्कि कभी तो ख़ुशी व ग़मी में दोस्तों से तआ़वुन का इज़्हार करते हुए उन के किसी से नाराज़ होने के सबब ख़ुद भी उस से नाराज़ हो जाता है। लिहाज़ा वोह उस शख़्स का बुरा तज़्किरा करने और उ़यूब बयान करने में उन के साथ इस क़दर मुन्हमिक हो जाता है कि आख़िरे कार हलाक हो जाता है।

---

(1)......الكامل فى ضعفاء الرجال، الرقم٢٠٣ابان بن ابى عياش، ج٢، ص٦٤ ''أذله''بدله''أدركه''۔

(2)......موسوعة الامام ابن ابى الدنيا،كتاب الصمت،باب ذب المسلم عن عرض أخيه،الحديث:٢٤١،ج٧،ص١٦٠۔



www.dawateislami.net

(3)...... किसी के बारे में येह समझना कि वोह इस की ख़ामियां निकालना चाहता है या फिर किसी बुज़ुर्ग के सामने इस के ख़िलाफ़ कोई गवाही देने का इरादा रखता है, लिहाज़ा उस बुज़ुर्ग के सामने पहले ही उस की बुराई बयान कर दे ताकि उसे उस बुज़ुर्ग नज़रों से गिरा दे। इस सिल्सिले में अक्सर अवक़ात उसे झूट से काम लेना पड़ता है वोह इस त़रह़ कि पहले वोह उस के सच्चे ऐ़ब बयान करता है फिर आहिस्ता आहिस्ता दीगर उ़यूब भी बयान करता है ताकि वोह इस मुआ़-मले में अपने सच्चे होने पर दलील क़ाइम कर सके कि वोह तमाम बातों में सच्चा है।

(4)...... किसी क़बीह़ चीज़ की त़रफ़ उस की निस्बत की जाए तो उस से अपने बरी होने का इज़्हार इस त़रह़ करे कि उस बुरे फ़े'ल का इरतिकाब तो फ़ुलां ने भी किया है, ह़ालां कि ह़क़ तो येह था कि उस फ़े'ल से अपनी बराअत का इज़्हार किसी दूसरे के मुर-तकिब होने का तज़्किरा किये बिग़ैर किया जाता और कभी अपने उ़ज़्र की तम्हीद यूं बांधता है कि फ़ुलां भी इस के साथ इस काम में शरीक है और वोह भी बुरा है।

(5)...... बनावट करना और अपनी शान बुलन्द करना और दूसरे का मक़ाम गिराना। जैसे येह कहना कि फ़ुलां जाहिल है या उस का फ़ह्मो इदराक कमज़ोर है। इस त़रह़ इन उ़यूब से अपने आप को मह़फ़ूज़ साबित करने के साथ अपनी बुज़ुर्गी का इज़्हार करना।

(6)...... किसी से लोगों के मह़ब्बत करने और उस की ता'रीफ़ करने की वज्ह से ह़सद करना और ह़ासिद येह चाहता है कि वोह उस के ऐ़ब बयान कर के लोगों को उस की ता'रीफ़ करने से रोके ताकि उस से लोगों के ता'रीफ़ करने और मह़ब्बत करने की ने'मत छिन जाए।

(7)...... या फिर ग़ीबत का सबब मह़ज़ खेल और मज़ाक़ करना होता है या'नी किसी के बारे में वोह ऐसी बातें करे जिन के ज़रीए वोह लोगों को हंसाए। ह़ालां कि किसी की अ़दम मौजू-दगी में उस का मज़ाक़ उड़ाना ऐसा ही है जैसे उस की मौजू-दगी में उस का मज़ाक़ उड़ाना क्यूं कि इस से उस की तह़क़ीर होती है।

येह ग़ीबत के आ़म अस्बाब हैं और ख़ास़ अस्बाब अभी बाक़ी हैं जो इन से भी ज़ियादा बुरे और ख़बीस हैं :

(1)...... दीनदार आदमी का किसी बुराई से ह़ैरान हो कर येह कहना कि ''कितनी अ़जीब बात है जो मैं ने फ़ुलां में देखी '' अगर्चे वोह उस बुराई से अपने तअ़ज्जुब में सच्चा भी हो लेकिन फिर भी ह़क़ येह था कि फ़ुलां का नाम ज़िक्र न करता क्यूं कि इस त़रह़ वोह ग़ीबत करने वाला गुनाहगार हो जाएगा और उसे इस का शुऊ़र तक न होगा।



www.dawateislami.net

(2)...... या फिर किसी का येह कहना कि ''फ़ुलां आदमी पर मुझे ह़ैरत होती है कि वोह कैसे अपनी कनीज़ को पसन्द करता है ह़ालां कि वोह तो बद सूरत है।''

(3)...... या फिर किसी का येह कहना कि ''वोह कैसे फ़ुलां आदमी के सामने पढ़ता है ह़ालां कि वोह जाहिल है।''

(4)...... ग़ीबत का एक सबब रह़म खाना भी है। वोह यूं कि कोई शख़्स किसी मुसीबत में मुब्तला हो तो उस पर इज़्हारे ग़म करना और येह कहना कि ''फ़ुलां की मुसीबत ने मुझे ग़मगीन कर दिया।'' अगर्चे वोह अपनी बात में सच्चा हो लेकिन वोह उस का नाम लेने से नहीं बच सका इस लिये ग़ीबत का मुर–तकिब हुवा। उस का ग़म व रह़मत तो बेहतर है लेकिन शैत़ान उसे ऐसे शर की त़रफ़ ले जाता है जिस का उसे इ़ल्म नहीं होता। उस पर रह़म खाना और इज़्हारे ग़म करना नाम लिये बिग़ैर भी हो सकता है मगर शैत़ान उसे नाम लेने पर बर अंगेख़्ता करता है ताकि उस के इज़्हारे ग़म और रह़म खाने का सवाब बात़िल हो जाए।

(5)...... किसी के बुराई में मुब्तला होने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये ग़ज़ब नाक होना। फिर वोह अपने ग़ुस्से का इज़्हार करते हुए उस का नाम लेता है ह़ालां कि लाज़िम तो येह है कि नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने के ज़रीए़ उस पर अपने ग़ुस्से का इज़्हार करे और किसी दूसरे पर ज़ाहिर न करे या फिर उस का नाम छुपाए और बुराई के साथ उस का ज़िक्र न करे।

येह तीनों (या'नी तअ़ज्जुब, रह़मत और ग़ुस्सा) ऐसे अस्बाब हैं कि अ़वाम तो दूर की बात है इन का समझना उ़–लमाए किराम के लिये भी मुश्किल है। क्यूं कि वोह गुमान करते हैं कि तअ़ज्जुब, रह़मत और ग़ुस्सा जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये हो तो (मग़्ज़ूब का) नाम लेने में कोई ह़रज नहीं। ह़ालां कि येह ग़लत़ है, बल्कि ग़ीबत की रुख़्सत के अस्बाब सिर्फ़ वोही हैं जो गुज़श्ता सफ़्ह़ात पर बयान हो चुके हैं और यहां उन में से कोई चीज़ नहीं पाई जाती।

**तम्बीह 7 : ग़ीबत का इ़लाज**

ग़ीबत का इ़लाज जानना आप पर लाज़िम है। इस का इ़लाज इज्माली और तफ़्सीली दोनों त़रीक़ों से हो सकता है :

## इज्माली इ़लाज :

(1)...... इस का इज्माली त़रीक़ा तो येह है कि आप येह जान लें कि ग़ीबत के ज़रीए़ आप ने खुद को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी और उस की सज़ा का मुस्तह़िक़ बना लिया है जैसा कि इस पर गुज़श्ता आयात व अह़ादीसे मुबा–रका दलालत करती हैं। नीज़ इसी त़रह़ येह भी जान लें



www.dawateislami.net

कि येह आप की नेकियों को भी ख़त्म कर देगी क्यूं कि मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीसे पाक गुज़र चुकी है कि मुफ़्लिस वोह है कि जिस की नेकियां ली जाती रहेंगी यहां तक कि वोह ख़त्म हो जाएंगी। अगर फिर भी इस पर कुछ हुक़ूक़ रह गए तो इस पर दूसरों (या'नी हुक़ूक़ वालों) के गुनाह डाल दिये जाएंगे और येह बात भी सब को मा'लूम है कि जिस की नेकियां ज़ियादा होंगी वोह जन्नती होगा या जिस के गुनाह ज़ियादा होंगे वोह जहन्नमी होगा और अगर नेकियां और गुनाह बराबर हुए तो आ'राफ़ (या'नी जन्नत और जहन्नम के दरमियान एक मक़ाम) वालों में से होगा जैसा कि ह़दीसे पाक में है। पस ग़ीबत से बचो क्यूं कि येह आप की नेकियों के ख़ातिमे और गुनाहों के ज़ियादा होने का सबब बन जाएगी और आप जहन्नमियों में से हो जाएंगे चुनान्चे,

﴾80﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ग़ैब निशान है : "बेशक ग़ीबत और चुग़ली ईमान को ख़त्म कर देते हैं जैसा कि चरवाहा दरख़्त को काट देता है।"(1)

एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से कहा : "मुझे पता चला है कि आप मेरी ग़ीबत करते हैं।" तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरे नज़्दीक तुम्हारी इतनी ज़ियादा क़द्र नहीं कि मैं तुम्हें अपनी नेकियों में फ़ैसला करने वाला बना दूं।"(2)

पस मज़्कूरा अह़ादीसे मुबा-रका पर ईमान रखने वाला इन में बयान कर्दा ग़ीबत के अ़ज़ाब से डरते हुए अपने आप को इस से मुकम्मल तौ़र पर बचा लेगा।

(2)...... येह इलाज भी आप के लिये नफ़्अ़ मन्द है कि आप अपने उ़यूब में ग़ौरो फ़िक्र करें और उन से पाक होने की कोशिश करें ताकि आप इस फ़रमाने न-बवी के तह़्त दाख़िल हो जाएं कि,

﴾81﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के दिन पर ईमान रखे और इस बात की गवाही दे कि मैं (या'नी मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं तो उसे चाहिये कि उस का घर उस के लिये काफ़ी हो (या'नी बिला ज़रूरत घर से बाहर न जाए) और अपनी ख़त़ाओं पर रोए और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और यौमे आख़िरत पर ईमान रखे उसे चाहिये कि अच्छी बात कहे ताकि फ़ाएदा पाए या बुरी बात से रुका रहे ताकि मह़फ़ूज़ रहे।"(3)

1 ......الترغيب والترهيب، كتاب الادب، الترهيب من الغيبة......الخ، الحديث: ٤٣٦٢، ج٣، ص٤٠٥۔

2 ......احياء علوم الدين، كتاب آفات اللسان، الآفة الخامسة عشرة الغيبة، بيان العلاج الذى......الخ، ج٣، ص١٨٣۔

3 ......المعجم الكبير، الحديث: ٧٧٠٦، ج٨، ص١٦٨۔



www.dawateislami.net

और तुझे इस बात पर ह़या आए कि तू किसी दूसरे को उस की ऐसी बुराई पर मलामत करे जिस में या उस जैसी किसी बुराई में तू ख़ुद मुब्तला हो। फिर अगर वोह चीज़ (जिस पर तू उस की मज़म्मत कर रहा है) पैदाइशी हो तो उस की मज़म्मत दर अस्ल उस के पैदा करने वाले की मज़म्मत है क्यूं कि जिस ने किसी सन्अ़त (या'नी बनी हुई चीज़) की मज़म्मत की उस ने बनाने वाले की मज़म्मत की।

एक शख़्स ने किसी दानिश मन्द से कहा : "ऐ बुरी सूरत वाले" तो उस अ़क़्ल मन्द इन्सान ने जवाब दिया : "मैं ने अपना चेहरा ख़ुद नहीं बनाया कि मैं इसे ख़ूब सूरत बनाता।" और अगर तुम ख़ुद में कोई ऐ़ब नहीं पाते ह़ालां कि येह बात बईद अज़ अ़क़्ल है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करो कि उस ने तुम्हें ड़यूब से पाक पैदा फ़रमा कर एह़सान फ़रमाया, लिहाज़ा अपने नफ़्स को बड़ा न समझो।

(3)...... इसी त़रह़ येह इ़लाज भी फ़ाएदा मन्द है कि आप येह बात ज़ेह्न नशीन कर लें कि दूसरे को भी ग़ीबत से इसी त़रह़ तक्लीफ़ होती है जिस त़रह़ आप को होती है लिहाज़ा किस त़रह़ दूसरे के लिये उस बात पर राज़ी हो जाते हैं जिस से ख़ुद आप को तक्लीफ़ होती है।

## तफ़्सीली इ़लाज :

तफ़्सीली इ़लाज येह है कि आप ग़ीबत पर उभारने वाले अस्बाब पर ग़ौर करें फिर उन्हें जड़ से काट दें क्यूं कि बीमारी का इ़लाज उस के सबब को ख़त्म करने से ही हो सकता है, लिहाज़ा जब आप ग़ीबत पर उभारने वाले अस्बाब को जान लेंगे तो उन को ख़त्म करना आप के लिये आसान हो जाएगा जिस त़रह़ ग़ुस्से की ह़ालत में आप इस बात को जान लेते हैं कि अगर आप ने ग़ीबत कर के अपने ग़ुस्से को ठन्डा किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर ग़ज़ब नाक होगा क्यूं कि आप ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मन्अ़ कर्दा फ़े'ल को हलका समझा और उस की वई़द के बा वुजूद उस फ़े'ल का इरतिकाब किया। चुनान्चे,

﴾82﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जहन्नम का एक दरवाज़ा है जिस में वोही लोग दाख़िल होंगे जिन का ग़ुस्सा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी के बा'द ही ठन्डा होता है।"(1)

किसी से ह़ुस्ने सुलूक से पेश आते वक़्त येह बात ज़ेह्न में रखें कि जब आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी मोल ले कर मख़्लूक़ को राज़ी करेंगे तो वोह बहुत जल्द आप को इस की सज़ा

1 ......جمع الجوامع، قسم الاقوال،حرف الهمزة، الحديث:۲۰۴۶، ج۲،ص۳۲۵۔



www.dawateislami.net

देगा क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ज़ियादा ग़ैरत वाला कोई नहीं।

हसद के वक़्त इस बात में भी ग़ौरो फ़िक्र कर लें कि आप ने इस की वज्ह से दुन्या व आख़िरत के ख़सारे को जम्अ़ कर लिया है। दुन्या का ख़सारा तो येह है कि आप का किसी की ने'मत पर उस से ह़सद करना और फिर उस ह़सद की वज्ह से अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ बन जाना। जब कि आख़िरत का ख़सारा येह है कि आप आख़िरत में उसे नेकियां देने या उस के गुनाह लेने के ज़रीए़ उस की मदद करेंगे। लिहाज़ा आप उस के तो दोस्त हैं लेकिन अपने दुश्मन हैं। पस आप ने अपने ह़सद की ख़बासत के साथ अपनी ह़माक़त की जहालत को जम्अ़ कर लिया है और बसा अवक़ात येही चीज़ आप की त़रफ़ से उस की फ़ज़ीलत फैलने का सबब बन जाती है जैसे शाइ़र का क़ौल है :

وَاِذَا اَرَادَ اللّٰـــهُ نَشْــرَ فَـضِـيْــلَـةٍ    طُـوِيَــتْ اَتَــاحَ لَهَــا لِسَــانَ حَسُــوْدٍ

**तरजमा :** और जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी छुपी हुई फ़ज़ीलत को फैलाने का इरादा फ़रमाता है तो उस के लिये ह़ासिदीन की ज़बानों को दराज़ कर देता है।

फ़ख़्र व ख़ुद पसन्दी और अपनी फ़ज़ीलत के इज़्हार के वक़्त येह बात याद रखें कि जब आप ने किसी का बुरा तज़्किरा किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपना मक़ामो मर्तबा ख़ुद ही ख़त्म कर दिया और लोग आप के क़ाबिले ए'तिमाद होने का जो ए'तिक़ाद रखते थे आप इस पर भी पूरे न उतरे। बल्कि जब वोह आप को पहचान लेंगे कि येह लोगों की इ़ज़्ज़तों को दाग़दार करने वाला और बुरे मक़ासिद रखने वाला है तो वोह आप से नफ़रत करने लगेंगे। लिहाज़ा आप ने वोह मक़ामो मर्तबा जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां यक़ीनी था उसे उस ग़ैर यक़ीनी चीज़ के बदले में बेच दिया जो बेबस मख़्लूक़ के पास है।

किसी का मज़ाक़ उड़ाते वक़्त येह बात पेशे नज़र रखें कि "जब आप ने किसी दूसरे को लोगों के सामने रुस्वा किया तो यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने आप को रुस्वा कर दिया।" और ख़ुद पसन्दी और इस्तिहज़ा में बड़ा फ़र्क़ है।

ग़ीबत पर उभारने वाले बक़िय्या उमूर का इ़लाज मज़्कूरा बह़स से ज़ाहिर हो जाएगा लिहाज़ा उन के बयान की ह़ाजत नहीं ताकि बह़स त़वील न हो जाए।

## तम्बीह 8 :

येह बात पहले बयान हो चुकी है कि ग़ीबत बिल क़ल्ब (या'नी दिल से ग़ीबत करना, बद गुमानी) ह़राम है और इस का मा'ना भी बयान हो चुका है और "**एह़याउल उ़लूम**" का वोह क़ौल भी इस की ताईद करता है जिस में दिल से ग़ीबत करने की ह़ुरमत का बयान है।



www.dawateislami.net

# बद गुमानी

याद रहे कि बद गुमानी भी बदगोई की त़रह़ ह़राम है। बद गुमानी से मेरी मुराद वोह गुमान है जो दिल में पुख़्ता हो और किसी पर बुराई का हुक्म लगाए अलबत्ता दिल में बुरे ख़यालात मुआ़फ़ हैं बल्कि शक भी मुआ़फ़ है मगर बुरा गुमान मम्नूअ़ है। बुरा गुमान येह है कि इन्सान का नफ़्स उस की त़रफ़ झुक जाए और दिल उस की त़रफ़ माइल हो जाए। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِیْرًا مِّنَ الظَّنِّ٘ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ (پ۲۶، الحجرات:۱۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! बहुत गुमानों से बचो, बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है।

## बद गुमानी की हुरमत का सबब :

इस के ह़राम होने का सबब येह है कि दिल के मुआ़-मलात को सिवाए अ़ल्लामुल ग़ुयूब रब عَزَّوَجَلَّ के कोई नहीं जानता। लिहाज़ा आप के लिये येह जाइज़ नहीं कि आप किसी के बारे में बुरा गुमान रखें जब तक आप के सामने कोई ऐसी वाज़ेह़ दलील ज़ाहिर न हो जाए कि जिस में तावील की कोई गुन्जाइश न हो। लिहाज़ा इस वक़्त जो बात आप को मा'लूम है या जिस का मुशा-हदा किया उस का ए'तिक़ाद रखे बिग़ैर कोई चारा नहीं और जिस चीज़ का आप ने न तो आंखों से मुशा-हदा किया और न ही कानों से इस के मु-तअ़ल्लिक़ कुछ सुना लेकिन फिर भी वोह आप के दिल में खटके तो जान लें कि आप के दिल में खटक्ने वाली बात शैत़ानी वस्वसा है। पस आप पर लाज़िम है कि उसे झुटला दें क्यूं कि शैत़ान सब से बड़ा फ़ासिक़ है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस सूरत के शुरूअ़ में फ़रमाया :

اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَیَّنُوْۤا (پ۲۶، الحجرات:۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तह़क़ीक़ कर लो।

या'नी किसी बुरे ख़याल की वज्ह से धोका न खाना जब कि वोह ख़याल अपने ख़िलाफ़ का एह़तिमाल रखता हो क्यूं कि येह तो मुम्किन है कि फ़ासिक़ की ख़बर सच्ची हो लेकिन आप के लिये उस की तस्दीक़ करना किसी सूरत में जाइज़ न हो। इसी वज्ह से हमारे शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने किसी से शराब की बू आने पर ह़द का हुक्म नहीं दिया क्यूं कि मुम्किन है कि वोह किसी और चीज़ की बू हो।(1) चुनान्चे,

---

1...... सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی बहारे शरीअ़त में नक़्ल फ़रमाते हैं : ''शराब पीने का सुबूत फ़क़त़ मुंह में शराब की सी बदबू आने बल्कि क़ै में शराब निकलने से भी न होगा या'नी फ़क़त़ इतनी बात से कि बू पाई गई या शराब की क़ै की ह़द......



www.dawateislami.net

﴾83﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुसल्मान का ख़ून और माल ह़राम क़रार दिया है और येह (भी ह़राम ठहराया है) कि किसी मुसल्मान के बारे में बुरा गुमान किया जाए।"(1)

इस से मा'लूम हुवा कि आप के लिये किसी मुसल्मान के मु-तअ़ल्लिक़ बद गुमानी जाइज़ नहीं मगर यक़ीनी मुशा-हदा या किसी आ़दिल की गवाही से जैसा कि ऐसी सूरत में माल लेना जाइज़ है। वरना ख़ैरो शर के एह़तिमाल की वज्ह से ह़त्तल इम्कान किसी मुसल्मान के मु-तअ़ल्लिक़ अपनी उस बद गुमानी को दूर करने की पूरी कोशिश करें।

## ह़क़ीक़ी बद गुमानी की अ़लामत :

ह़क़ीक़ी बद गुमानी की अ़लामत येह है कि किसी के बारे में आप का दिल तब्दील हो जाए या'नी मह़ब्बत नफ़रत में बदल जाए, आप उसे बोझ समझें और उस की सहूलियात में कमी कर दें। चुनान्चे,

﴾84﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मोमिन में तीन बुराइयां ऐसी हैं जिन से वोह छुटकारा ह़ासिल कर सकता है और बद गुमानी से निकलने का त़रीक़ा येह है कि उस पर अपना दिल पुख़्ता न करे।"(2)

या'नी बद गुमानी जिस बात का तक़ाज़ा कर रही है वोह उस पर दिल को न जमाए क्यूं कि येह चीज़ उस के दिल को मह़ब्बत से नफ़रत व ना पसन्दी-दगी की त़रफ़ फैर देगी और न ही आ'ज़ा के किसी फे़'ल से बद गुमानी का मूजिब अ़मल करे। शैत़ान कभी कभार अपने किसी अदना से फ़रेब के ज़रीए दिल में लोगों की बुराई रासिख़ कर देता है और येह वस्वसा पैदा करता रहता है कि येह तो आप की इन्तिहाई ज़िहानत व फ़त़ानत और बेदार मग़्ज़ी के बाइ़स है और मोमिन तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नूर से देखता है। ह़क़ीक़त में वोह शैत़ान के धोके और तारीकी से देखने वाला होता है। जब आप को कोई आ़दिल शख़्स किसी क़िस्म की कोई ख़बर दे और आप उस की तस्दीक़ या तक्ज़ीब की त़रफ़ माइल हो जाएं तो आप मुख़्बर अ़न्ह (या'नी

---

...... क़ाइम न करेंगे कि हो सकता है ह़ालते इज़्तिरार या इक्राह में पी हो मगर बू या नशे की सूरत में ता'ज़ीर करेंगे जब कि सुबूत न हो। और इस का सुबूत दो मर्दों की गवाही से होगा और एक मर्द और दो औ़रतों ने शहादत दी तो ह़द क़ाइम करने के लिये येह सुबूत न हुवा।" (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, जि. 2, स. 391)

1 ......شعب الایمان للبیھقی ،باب فی تحریم أعراض الناس، الحدیث:۶۷۰۶،ج۵،ص۲۹۷،بتغیرٍقلیلٍ۔

2 ......احیاء علوم الدین،کتاب آفات اللسان ،الآفۃ الخامسۃ عشرۃ الغیبۃ ،بیان تحریم الغیبۃ،ج۳،ص۱۸۶۔
المعجم الکبیر، الحدیث:۳۲۲۷،ج۳،ص۲۲۸،مفھوماً۔



www.dawateislami.net

जिस के मु-तअ़ल्लिक़ ख़बर दी गई) के बारे में बुरा ए'तिक़ाद रखने की वज्ह से या मुख़्बिर (या'नी ख़बर देने वाले) के बारे में झूट का ए'तिक़ाद रखने की वज्ह से इन दोनों बातों में से एक (या'नी तस्दीक़ या तक्ज़ीब करने) पर गुनहगार ठहरेंगे। लिहाज़ा आप पर लाज़िम है कि ख़बर देने वाले के बारे में तफ़्तीश कर लें कि आया इन दोनों के दरमियान किसी क़िस्म की अ़दावत की वज्ह से येह तोहमत तो नहीं है, अगर उन में अ़दावत पाएं तो तवक़्क़ुफ़ फ़रमाएं और जिस के बारे में ख़बर दी जा रही है उस का जो मर्तबा इस बद गुमानी से क़ब्ल आप के दिल में था उसे इसी ह़ाल पर बाक़ी रखें और जिसे लोगों के मु-तअ़ल्लिक़ ऐसी बातें करने की आ़दत हो उस की त़रफ़ तवज्जोह न दें।

चाहिये तो येह कि जब भी आप के दिल में किसी मुसल्मान भाई के बारे में बुरा ख़याल आए तो उस के लिये भलाई की दुआ़ करें ताकि शैत़ान को गुस्सा आए और वोह उस दुआ़ की वज्ह से आप के दिल में बुरा ख़याल डालने से बाज़ आ जाए और जब आप को किसी मुसल्मान की लग्ज़िश का पता चले तो उसे गुनाह से बचाने के लिये तन्हाई में नसीह़त करें और वोह जिस मुसीबत का शिकार हुवा उस पर इसी त़रह़ ग़म का इज़्हार करें कि अगर वोही मुसीबत आप को पहुंचती तो आप ग़मगीन हो जाते ताकि आप नसीह़त, ग़म के अज्र और उस के दीन पर उस की मदद करने का सवाब इकठ्ठा कर सकें।

### तजस्सुस :

बद गुमानी के नताइज में से एक "टोह में पड़ना" भी है क्यूं कि दिल गुमान को ही काफ़ी नहीं समझता बल्कि यक़ीन चाहता है लिहाज़ा वोह टोह में पड़ जाता है। तजस्सुस की मुमा-न-अ़त पीछे गुज़र चुकी है और तजस्सुस येह है कि वोह मख़्लूक़ को उस के राज़ में न रहने दे लिहाज़ा वोह उस मक़ाम तक पहुंच जाता है कि आप को ऐसी बात की ख़बर दे कि अगर वोह आप से पोशीदा रहती तो आप के दिल और दीन के लिये ज़ियादा सलामती थी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक ही आयत में ग़ीबत के साथ बद गुमानी को भी जम्अ़ कर दिया है क्यूं कि येह आ़म त़ौर पर एक दूसरे को लाज़िमो मल्ज़ूम हैं।

### तम्बीह 9 :

ग़ीबत करने वाले के लिये ज़रूरी है कि वोह जल्दी तमाम शराइत़ के साथ तौबा करे, इसे क़त़ई त़ौर पर तर्क कर दे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से नदामत का इज़्हार करे ताकि उस के ह़क़ से बरी हो जाए। फिर भी ग़ीबत करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते हुए उस से मुआ़फ़ी



www.dawateislami.net

मांगता रहे ताकि वोह इसे मुआफ़ फ़रमा दे और वोह ग़ीबत की नहूसत से निकल जाए।

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى का इर्शादे हक़ीक़त बुन्याद है : "ग़ीबत से बरी होने के लिये इस्तिग़फ़ार काफ़ी है।" और उन्हों ने इस रिवायत से इस्तिद्लाल किया कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस की तूने ग़ीबत की उस का कफ़्फ़ारा येह है कि तू उस के लिये इस्तिग़फ़ार करे।"(1)

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "इस का कफ़्फ़ारा येह है कि आप उस की ता'रीफ़ करें और उस के लिये भलाई की दुआ करें।"(2)

सहीह येह है कि "ग़ीबत करने वाले का अपनी ग़ीबत से बरी होना ज़रूरी है।"

**ए'तिराज़ :** बा'ज़ लोगों का ख़याल है कि चूंकि इ़ज़्ज़त का कोई इवज़ नहीं लिहाज़ा जिस की ग़ीबत की उस से मुआफ़ी मांगना वाजिब नहीं ब ख़िलाफ़ माल के क्यूं कि इस का इवज़ होता है इस लिये साहिबे माल से मुआफ़ी मांगी जाती है।

**जवाब :** उन का येह गुमान मरदूद है क्यूं कि इ़ज़्ज़त के मुआ-मले में ह़द्दे क़ज़्फ़ वाजिब है लिहाज़ा इ़ज़्ज़त पामाल करने की सूरत में भी उस से मुआफ़ी मांगी जाएगी बल्कि अहादीसे सहीहा में ज़ुल्म से अपनी बराअत हासिल करने का हुक्म है उस दिन से पहले कि जिस दिन कोई दिरहम होगा न दीनार। बल्कि ज़ालिम की नेकियां होंगी जो मज़्लूम को दी जाएंगी और मज़्लूम के गुनाह ज़ालिम पर डाल दिये जाएंगे। पस इस तरह मुआफ़ी तलब करना मु-तअय्यन हो गया।

अलबत्ता! मय्यित और ग़ाइब के लिये कसरत से दुआ व इस्तिग़फ़ार करनी चाहिये और जिस से मुआफ़ी मांगी जाए उस पर मुआफ़ करना मुस्तहब है लाज़िम नहीं, क्यूं कि येह उस की तरफ़ से नेकी और एहसान है। अस्लाफ़ का एक गुरौह अपना हक़ मुबाह करने से मन्अ़ करता था। बहर हाल दर्जे ज़ैल हदीसे पाक पहले मौक़िफ़ की ताईद करती है कि,

﴾85﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम में से कोई अबू ज़मज़म की तरह नहीं हो सकता कि जब वोह अपने घर से निकलते तो कहते : "बेशक मैं ने अपनी इ़ज़्ज़त लोगों पर स-दक़ा कर दी।"(3)

हदीसे पाक का मतलब येह है कि न तो मैं उस से ज़ुल्म का बदला लूंगा और न ही

---

1 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الغیبة والنمیمة، باب کفارة الاغتیاب، الحدیث:۱۵۵، ج۴، ص۴۱۷۔

2 ......احیاء علوم الدین، کتاب آفات اللسان، الآفة الخامسة عشرة الغیبة، بیان کفارة الغیبة، ج۳، ص۱۹۰، قول مجاهد۔

3 ......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب ماجاء فی الرجل یحل......الخ، الحدیث:۴۸۸۶، ص۱۵۸۱۔



www.dawateislami.net

क़ियामत के दिन उस से झगड़ा करूंगा। मगर इस का मा'ना येह नहीं कि उस की ग़ीबत जाइज़ हो जाएगी क्यूं कि इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ है और किसी चीज़ के पाए जाने से पहले उस का मुबाह़ करना है। इसी बिना पर दुन्या में ह़क़ साक़ित़ न होगा। फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने वज़ाह़त से बयान फ़रमाया है कि ''जिस शख़्स ने अपने ह़क़ में गाली को मुबाह़ कर दिया ह़द्दे क़ज़फ़ से उस का ह़क़ साक़ित़ न होगा न दुन्या में और न ही आख़िरत में।'' **किताबुश्शहादात**, तौबा की बह़स में इस के मु-तअ़ल्लिक़ तफ़्सीली कलाम किया जाएगा।

## कबीरा नम्बर 250 : बुरे नामों से पुकारना

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद में इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِیْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ یَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۱۱﴾ (پ۲۶، الحجرات: ۱۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो क्या ही बुरा नाम है मुसलमान हो कर फ़ासिक़ कहलाना और जो तौबा न करें तो वोही ज़ालिम हैं।

### तम्बीह :

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इसे ग़ीबत से अलग क़िस्म शुमार किया है मगर उन की येह बात मह़ल्ले नज़र है क्यूं कि येह भी ग़ीबत की एक क़िस्म है जैसा कि गुज़श्ता बह़स से मा'लूम हो चुका है। गोया उन्हों ने आयते मुबा-रका के उस्लूब की पैरवी की है क्यूं कि इस में बुरे नामों से पुकारने और ग़ीबत में से हर एक को अलग अलग ज़िक्र किया गया है, लिहाज़ा येह आयते मुक़द्दसा इस बात पर दलालत करती है कि इन दोनों (या'नी ग़ीबत और बुरे नामों से पुकारने) के दरमियान फ़र्क़ है। हां! अगर येह जवाब दिया जाए कि बुरे नामों से पुकारना मज़्कूरा ग़ीबत से ही है मगर इस को अ़ला-ह़दा ज़िक्र करना इस वज्ह से है कि येह इस की सब से बुरी क़िस्मों में से है और इस को अ़ला-ह़दा ज़िक्र करने से मक़्सूद इस की क़बाह़त बयान करना और इस से रोकने में मुबा-लग़ा करना है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़्युद्दीन अबू ज़-करिय्या यह़्या बिन शरफ़ न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 676 हि.) की किताब **''अल अज़्कार''** में है : ''उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि किसी इन्सान को ऐसा लक़ब देना ह़राम है जिसे वोह ना पसन्द करता हो ख़्वाह वोह (बुरा लक़ब) उस की सिफ़त हो या उस के मां बाप की या किसी और की।''[1]

1 ......الأذكار للنووی، كتاب الأسماء، باب النهی عن الألقاب التی يكرهها صاحبها، ص۲۳۳۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 251 : मुसल्मान का मज़ाक़ उड़ाना

इस के ह़राम होने पर इज्माअ़ है। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا یَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ یَّكُوْنُوْا خَیْرًا مِّنْهُمْ وَ لَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰۤى اَنْ یَّكُنَّ خَیْرًا مِّنْهُنَّۚ (پ۲۶، الحجرات:۱۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! न मर्द मर्दों से हंसें अ़जब नहीं कि वोह इन हंसने वालों से बेहतर हों और न औ़रतें औ़रतों से, दूर नहीं कि वोह इन हंसने वालियों से बेहतर हों।

सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "लोगों का मज़ाक़ उड़ाने वाले के लिये आख़िरत में जन्नत का एक दरवाज़ा खोला जाएगा और उसे कहा जाएगा : "चले आओ ! चले आओ !" वोह दुख दर्द में मुब्तला आएगा। जब वोह दरवाज़े के पास पहुंचेगा तो वोह बन्द कर दिया जाएगा। फिर उस के लिये दूसरा दरवाज़ा खोला जाएगा और कहा जाएगा : "आ जाओ ! आ जाओ !" वोह तक्लीफ़ और ग़म की ह़ालत में आएगा। जब वोह उस के पास आएगा तो उस पर दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा। इसी त़रह़ होता रहेगा यहां तक कि उस के लिये जन्नत का एक दरवाज़ा खोला जाएगा और कहा जाएगा : "आओ !" लेकिन वोह मायूसी की वज्ह से नहीं आएगा।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इस फ़रमाने इलाही : "وَ یَقُوْلُوْنَ یٰوَیْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا یُغَادِرُ صَغِیْرَةً وَّ لَا كَبِیْرَةً اِلَّاۤ اَحْصٰىهَا (پ۱۵، الکھف:۴۹) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** कहेंगे हाए ख़राबी हमारी ! इस नविश्ते को क्या हुवा न इस ने कोई छोटा गुनाह छोड़ा न बड़ा जिसे घेर न लिया हो।" की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "सग़ीरा से मुराद मोमिन का मज़ाक़ उड़ाते हुए हंसना और कबीरा से मुराद उस का मज़ाक़ उड़ाते हुए क़ह्क़हा लगाना है।"(2)

मुफ़स्सिरे कुरआन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू **अ़ब्दुल्लाह** मुह़म्मद बिन अह़मद कुरतुबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 671 हि.) इस फ़रमाने बारी तआ़ला : "بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِیْمَانِ (پ۲۶، الحجرات:۱۱) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** क्या ही बुरा नाम है मुसल्मान हो कर फ़ासिक़ कहलाना।" की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "जिस ने अपने मुसल्मान भाई

---

1 ......الترغيب والترهيب، كتاب الادب، باب الترهيب من احتقار المسلم، الحديث: ۴۵۴۹، ج۳، ص۴۶۲۔
شعب الايمان للبيهقى ، باب فى تحريم أعراض الناس، الحديث: ۶۷۵۷، ج۵، ص۳۱۰۔

2 ......موسوعة الامام ابن ابى الدنيا، كتاب الغيبة والنميمة، باب ما نهى عنه العباد......الخ، الحديث: ۱۵۴، ج۴، ص۴۱۶، بتغيرقليلٍ۔



www.dawateislami.net

का कोई नाम रखा और फिर उस के ज़रीए उस का मज़ाक़ उड़ाया तो वोह फ़ासिक़ है।"(1)

और **सुख़्रिय्यह** से मुराद किसी को ह़क़ीर जानना और उस की तौहीन करना है नीज़ उस के ऐबों और ख़ामियों को इस त़रह ज़ाहिर करना है कि उस पर हंसी आए। कभी क़ौल, फ़े'ल या इशारे से नक़्ल उतार कर मज़ाक़ उड़ाया जाता है या कभी उस के बे तरतीब कलाम या बे तुके अ़मल पर हंसा जाता है या उस की बनी हुई किसी चीज़ पर या उस की बद सूरती पर मज़ाक़ उड़ाया जाता है।

**तम्बीह :**

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इसे ग़ीबत के तह़त ज़िक्र करने के बा वुजूद अ़ला-ह़दा भी ज़िक्र किया है मगर उन की येह बात महल्ले नज़र है क्यूं कि येह भी ग़ीबत की एक क़िस्म है जैसा कि गुज़श्ता बह़स से मा'लूम हो चुका है। गोया उन्हों ने कुरआने ह़कीम के उस्लूब की पैरवी करते हुए और झिड़क्ने में मुबा-लग़ा करते हुए इसे ज़िक्र किया क्यूं कि आयते मुबा-रका में इस के बा'द ग़ीबत का बयान है।

## कबीरा नम्बर 252 : चुग़ल ख़ोरी करना

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

﴿1﴾ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيۡمٍ ﴿۱۱﴾ (پ۲۹، القلم:۱۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बहुत त़ा'ने देने वाला बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला।

﴿2﴾ عُتُلٍّۭ بَعۡدَ ذٰلِكَ زَنِيۡمٍ ﴿۱۳﴾ (پ۲۹، القلم:۱۳)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** दुरुश्त ख़ू इस सब पर तुर्रा येह कि उस की अस्ल में ख़त़ा।

या'नी जो अपने बाप का न हो और ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुबारक رَحۡمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡه ने इस से इस्तिद्लाल किया कि "व-लदुज़्ज़िना बात नहीं छुपाता।" तो उस का बात न छुपाना चुग़ली खाने को लाज़िम है और चुग़ली खाना व-लदुज़्ज़िना होने पर दलील है :

﴿3﴾ وَيۡلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۙ﴿۱﴾ (پ۳۰، الهمزة:۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ख़राबी है उस के लिये जो लोगों के मुंह पर ऐब करे पीठ पीछे बदी करे।

एक क़ौल येह है कि لُمَزَة से मुराद चुग़ल ख़ोर है।

---

(1)......الجامع لاحكام القرآن للقرطبى، پ۲۶، الحجرات، تحت الآية ۱۱، الجزء السادس عشر، ج۸، ص۲۳۶۔



www.dawateislami.net

﴾4﴿ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ﴿٤﴾ (پ٣٠، اللهب:٤) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** लकड़ियों का गठ्ठा सर पर उठाती।

एक क़ौल के मुताबिक़ अबू लहब की बीवी (उम्मे जमील बिन्ते ह़रब) चुग़ल ख़ोर थी, लोगों के दरमियान फ़साद डालने के लिये यहां की बातें वहां बताती थी और आयते मुबा-रका में चुग़ली को लकड़ी इस लिये कहा गया क्यूं कि चुग़ली भी लोगों के दरमियान इसी त़रह़ अ़दावत फैलाती है जिस त़रह़ लकड़ी आग फैलाती है।

﴾5﴿ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا (پ٢٨، التحريم:١٠) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** फिर उन्हों ने इन से दग़ा की तो वोह **अल्लाह** के सामने उन्हें कुछ काम न आए।

क्यूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बीवी (वाहिला) आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मजनून कहती थी और ह़ज़रते सय्यिदुना लूत़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बीवी (वाइला) ने आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम को आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मेहमानों के बारे में बता दिया था ताकि वोह उन से अपने ईजाद कर्दा गन्दे फ़े'ल का इरादा करें ह़त्ता कि उन्हें इ़ब्रत नाक अ़ज़ाब के साथ हलाक कर दिया गया।

﴾1﴿...... हु़ज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "चुग़ल ख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा।"(1)

एक रिवायत में **नम्माम** के बजाए **क़त्तात** है और क़त्तात भी चुग़ल ख़ोर को कहते हैं।(2)

एक क़ौल के मुताबिक़, "**नम्माम** वोह है जो ऐसे लोगों के साथ बैठे जो बातें कर रहे हों फिर लोगों के सामने उन की चुग़ली करे और **क़त्तात** वोह है जो लोगों की बातें उन की ला इ़ल्मी में सुन कर आगे फैलाए।"

﴾2﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक दफ़्अ़ा ऐसी दो क़ब्रों के पास से गुज़रे जिन में अ़ज़ाब हो रहा था तो इर्शाद फ़रमाया : "इन दोनों को अ़ज़ाब हो रहा है और किसी बड़े अम्र की वज्ह से नहीं हो रहा (या'नी अगर येह अ़मल करते तो येह इन के लिये मुश्किल न था) हां, येह कबीरा गुनाहों में से है, इन में से एक चुग़ली खाता था जब कि दूसरा पेशाब के छींटों से नहीं बचता था।"(3)

---

1 ......صحیح مسلم ،کتاب الایمان ،باب بیان غلظ تحریم النمیمة ،الحدیث:٢٩٠،ص٦٩٥۔

2 ......المرجع السابق،الحدیث:٢٩١، ص٦٩٦۔

3 ......صحیح مسلم ،کتاب الطھارة ،باب الدلیل علی نجاسة البول، الحدیث:٦٧٧،٦٧٨،ص٧٢٧۔



www.dawateislami.net

इस ह़दीसे पाक की कई अस्नाद पहले कई जगहों पर बयान हो चुकी हैं ।

(ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :) ''एक तिहाई अ़ज़ाबे क़ब्र ग़ीबत की वज्ह से, एक तिहाई चुग़ल ख़ोरी की वज्ह से और एक तिहाई पेशाब (के छींटों से ख़ुद को न बचाने) की वज्ह से होता है ।''[1]

## सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़ज़ाबे क़ब्र मुला-ह़ज़ा फ़रमा लिया :

﴾3﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक शदीद गर्म दिन बक़ीए़ ग़रक़द की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए । लोग भी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे चल रहे थे । जब आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जूतों की आवाज़ सुनी तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दिल में कुछ आया तो बैठ गए यहां तक कि लोगों को अपने आगे जाने दिया । आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह अ़मल इस लिये किया ताकि दिल में फ़ख़्र पैदा न हो । जब आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बक़ीए़ ग़रक़द से गुज़र रहे थे तो इसी दौरान दो क़ब्रें देखीं जिन में दो आदमी दफ़्न किये गए थे । आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के पास ठहर गए और दरयाफ़्त फ़रमाया : ''आज तुम ने यहां किस किस को दफ़्न किया है ?'' सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : ''फ़ुलां फ़ुलां को ।'' फिर अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इन का क्या मुआ़-मला है ?'' तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (बि इज़्ने परवर दगार ग़ैब की ख़बर देते हुए) इर्शाद फ़रमाया : ''इन में से एक पेशाब से नहीं बचता था और दूसरा चुग़ल ख़ोर था ।'' फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक सर सब्ज़ शाख़ ले कर उस के दो टुकड़े किये और उसे दोनों क़ब्रों पर रख दिया । सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप के ऐसा करने की वज्ह क्या है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''ताकि इन के अ़ज़ाब में कमी हो जाए ।'' सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इन्हें कब तक अ़ज़ाब होता रहेगा ?'' आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह ग़ैब है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही जानता है और अगर तुम्हारे दिल आलूदा व परागन्दा न होते और तुम ज़ियादा बातें न करते तो वोह सुनते जो मैं सुनता हूं ।''[2]

---

1 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الغیبة والنمیمة، باب الغیبة وذمها، الحدیث: ۵۲، ج۴، ص۳۵۵۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی امامة الباہلی، الحدیث: ۲۲۳۵۵، ج۸، ص۳۰۴ بتغیرٍ قلیلٍ۔



www.dawateislami.net

﴾4﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "चुग़ल ख़ोरी, गाली गलोच और ह़मिय्यत (या'नी पासदारी) जहन्नम में (ले जाने वाली) हैं।"(1)

﴾5﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "चुग़ल ख़ोरी और कीना जहन्नम में हैं, येह दोनों किसी मुसल्मान के दिल में जम्अ़ नहीं हो सकते।"(2)

﴾6﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "ख़बरदार ! बेशक झूट चेहरे को सियाह कर देता है और चुग़ली अ़ज़ाबे क़ब्र का सबब है।"(3)

﴾7﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि "हम मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ जा रहे थे कि हमारा गुज़र दो क़ब्रों के पास से हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ठहर गए, हम भी रुक गए। अचानक आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का रंग मुबारक मु-तग़य्यर होने लगा यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़मीस की आस्तीन लरज़ने लगी। हम ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या माजरा है ?" इर्शाद फ़रमाया : "जो मैं सुनता हूं वोह तुम सुनते हो ?" हम ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह क्या है ?" इर्शाद फ़रमाया : "इन दो बन्दों को इन की क़ब्रों में एक हलके से गुनाह की वज्ह से दर्दनाक अ़ज़ाब दिया जा रहा है।" (या'नी जो उन के गुमान में हलका गुनाह था जब कि ह़क़ीक़त में इस के बड़ा गुनाह होने पर इत्तिफ़ाक़ है) हम ने अ़र्ज़ की : "वोह गुनाह कौन सा है ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इन दोनों में से एक पेशाब (के छींटों) से नहीं बचता था जब कि दूसरा लोगों को अपनी ज़बान से तक्लीफ़ पहुंचाता था या'नी उन की चुग़्लियां खाता था।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खजूर की बिग़ैर पत्तों वाली दो शाख़ें मंगवाईं और उन में से हर एक की क़ब्र पर एक एक शाख़ रख दी। हम ने अ़र्ज़ की : "क्या येह चीज़ इन्हें फ़ाएदा देगी ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हां, जब तक येह दोनों शाख़ें तरो ताज़ा रहेंगी इन के अ़ज़ाब में कमी कर दी जाएगी।"(4)

---

1 ......المعجم الکبیر ،الحدیث : ۱۳۶۱۵، ج۱۲، ص۳۴۱۔

2 ......المعجم الاوسط،الحدیث : ۴۶۵۳، ج۳، ص۳۰۱۔

3 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان ، کتاب الحظر والاباحۃ ،باب الکذب ،الحدیث:۵۷۰۵، ج۷، ص۴۹۴۔

4 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان ، کتاب الرقائق ،باب الاذکار ،الحدیث : ۸۲۱، ج۲، ص۹۶۔



www.dawateislami.net

﴿8﴾...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हासिद, चुग़ल ख़ोर और काहिन मुझ से नहीं, न मैं इन से हूं।" फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आ़लीशान तिलावत फ़रमाया :

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿۵۸﴾ (پ۲۲، الاحزاب:۵۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो ईमान वाले मर्दों और औ़रतों को बे किये सताते हैं उन्हों ने बोहतान और खुला गुनाह अपने सर लिया।(1)

﴿9﴾...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बेहतरीन बन्दे वोह हैं कि जब उन को देखा जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ याद आ जाए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बद तरीन बन्दे चुग़ली खाने वाले, दोस्तों में जुदाई डालने वाले और बे ऐ़ब लोगों की ख़ामियां निकालने वाले हैं।"(2)

﴿10﴾...... एक रिवायत में है कि "दोस्तों के दरमियान फ़साद डालने वाले (बद तरीन बन्दे हैं)।"

﴿11﴾...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुंह पर बुरा भला कहने वालों, पीठ पीछे ऐ़बजूई करने वालों, चुग़ली खाने वालों और बे ऐ़ब लोगों में ऐ़ब तलाश करने वालों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (बरोज़े क़ियामत) कुत्तों की शक्ल में जम्अ़ फ़रमाएगा।"(4)

﴿12﴾...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरे नज़्दीक बरोज़े क़ियामत तुम में सब से ज़ियादा महबूब और मजलिस के ए'तिबार से ज़ियादा क़रीब वोह होगा जिस के अख़्लाक़ सब से अच्छे होंगे।"(5)

﴿13﴾...... एक रिवायत में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरे नज़्दीक तुम में सब से ज़ियादा महबूब ऐसे हुस्ने अख़्लाक़ वाले हैं जो लोगों के लिये अपने बाज़ू बिछाते हैं, वोह लोगों से महब्बत करते हैं और लोग उन से महब्बत करते हैं, जब कि तुम

---

1 ......مجمع الزوائد، كتاب الأدب، باب ماجاء في الغيبة والنميمة، الحديث: ۱۳۱۲۶، ج۸، ص۱۷۲۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث عبد الرحمن بن غنم الاشعرى، الحديث: ۱۸۰۲۰، ج۶، ص۲۹۱۔

3 ......موسوعة الامام ابن ابى الدنيا، كتاب الصمت وآداب اللسان، باب ذم النميمة، الحديث: ۲۵۷، ج۷، ص۱۲۹۔

4 ......التوبيخ والتنبيه لابى الشيخ، باب البهتان وماجاء فيه، الحديث: ۲۲۰، ص۹۷۔

5 ......جامع الترمذى، ابواب البر والصلة، باب ما جاء فى معالى الاخلاق، الحديث: ۲۰۱۸، ص۱۸۵۳۔



www.dawateislami.net

में से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बुरे बन्दे चुग़ली खाने वाले, दोस्तों के दरमियान जुदाई डालने वाले और बे ऐब लोगों के ऐब तलाश करने वाले हैं।''(1)

﴾14﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या मैं तुम्हें सब से बुरे बन्दे के बारे में न बताऊं ?'' सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अर्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मरज़ी हो तो ज़रूर बताएं।'' इर्शाद फ़रमाया : ''तुम में से बदतर वोह है जो तन्हा पड़ाव डालता, अपने गुलाम को मारता और अपनी अ़ता व बख़्शिश को रोकता है, क्या मैं तुम्हें इस से भी ज़ियादा बुरे शख़्स के बारे में न बताऊं ?'' सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चाहें तो ज़रूर बताएं।'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो लोगों से बुग़्ज़ रखता और लोग उस से बुग़्ज़ रखते हैं।'' फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या मैं तुम्हें इस से भी ज़ियादा बुरे आदमी के बारे में न बताऊं ?'' सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पसन्द फ़रमाएं तो ज़रूर बताएं।'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो न तो किसी लग़्ज़िश को मुआफ़ करे, न मा'ज़िरत क़बूल करे और न ही ख़ताओं को छुपाए।'' फिर फ़रमाया : ''क्या मैं तुम्हें इस से भी ज़ियादा बुरे शख़्स के बारे में न बताऊं ?'' सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''क्यूं नहीं ! **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस से भलाई की उम्मीद न की जाए और उस की बुराई से कोई महफ़ूज़ न हो।''(2)

﴾15﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या मैं तुम्हें एक ऐसा अ़मल न बताऊं जो द-रजे में नमाज़, रोज़े और स-दक़े से भी अफ़्ज़ल है ?'' सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''क्यूं नहीं ! (**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताएं)'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''आपस में सुल्ह़ करवा देना क्यूं कि बाहमी तअ़ल्लुक़ात का बिगाड़ मूंडने वाला है।'' आप

---

1 ......العجم الاوسط، الحديث : ٧٢٩٧،ج٥،ص٣٨٧،"العيب" بدله"العنت"۔

2 ......المعجم الكبير،الحديث : ١٠٧٧٥،ج١٠،ص٣١٨"لا يقيلون عثرة"بدله"لا يقبلون عثرة"۔



www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह **हालिक़ह** (या'नी मूंडने वाला) है, मैं नहीं कहता कि येह बालों को मूंडता है बल्कि येह तो दीन को मूंडता है।''(1)

﴾16﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जिस शख़्स ने किसी मुसल्मान के मु-तअ़ल्लिक़ ऐसी बात मश्हूर की जिस से वोह बरी था ताकि दुन्या में उसे बदनाम करे, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को हक़ है कि क़ियामत के दिन उसे जहन्नम में पिघला दे यहां तक कि जो कुछ उस ने कहा उसे साबित करे।''(2)

﴾17﴿...... हज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि ''बनी इसराईल क़ह्त़ का शिकार हुए तो हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने कई बार बारिश के लिये दुआ़ की लेकिन क़बूल न हुई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह्य फ़रमाई : ''मैं न तुम्हारी दुआ़ क़बूल करूंगा और न ही उन की जो तुम्हारे साथ हैं। जब तक कि तुम में एक ऐसा चुग़ल ख़ोर मौजूद है जो बार बार चुग़ली खाता है।'' तो हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : ''ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! वोह कौन है ताकि हम उसे अपने दरमियान से निकाल दें ?'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ मूसा ! मैं जिस चीज़ से तुम बन्दों को मन्अ़ करता हूं क्या ख़ुद उसे करूं।'' पस उन सब ने इज्तिमाई तौबा की तो बारिश हुई।''(3)

एक नेक बुज़ुर्ग से उन के भाई ने मुलाक़ात की और उन के दोस्त की चुग़ली खाई तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ मेरे भाई ! तुम ने ग़ीबत की और मेरे पास तीन गुनाह ले कर आए : (1)...... मुझे अपने मुसल्मान भाई से नाराज़ किया (2)...... इस वज्ह से मेरे दिल को मश्ग़ूल किया और (3)...... अपने अमीन नफ़्स पर तोहमत लगाई।''(4)

मन्क़ूल है कि ''जो आप को येह ख़बर दे कि फ़ुलां ने आप को गाली दी है तो वोह आप को भी गाली देगा।''

एक शख़्स हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के पास आया और किसी की चुग़ली खाई तो आप ने उस से इर्शाद फ़रमाया : ''मुझे उस शख़्स के पास ले जाओ।'' पस

---

1 ......جامع الترمذی ،ابواب صفة القیامة ،باب فی فضل صلاح ذات البین ،الحدیث: ۲۵۰۹،ص۱۹۰۴۔

2 ......الترغیب والترهیب، کتاب القضاء وغیره،باب الترهیب من اعانة المبطل...الخ،الحدیث:۳۴۳۹،ج۳،ص۱۵۱۔

3 ......احیاء علوم الدین، کتاب آفات اللسان،الآفة السادسة عشرة النمیمة، ج۳،ص۱۹۲۔

4 ......المرجع السابق ، بیان حد النمیمة ومایجب فی ردھا، ص۱۹۳۔



www.dawateislami.net

आप उस के साथ चल दिये और वोह शख़्स देख रहा था कि आप अपने नफ़्स को ज़ुल्म से बचाने की कोशिश कर रहे हैं। जब आप उस के पास पहुंचे (जिस की चुग़ली खाई गई थी) तो फ़रमाया : "ऐ मेरे भाई ! जो कुछ तुम ने मेरे मु–तअ़ल्लिक़ कहा अगर सच है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी बख़्शिश फ़रमाए और अगर तुम ने मेरे बारे में झूटी बात कही तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी बख़्शिश फ़रमाए।"

मन्क़ूल है कि "चुग़ल ख़ोर का अ़मल शैतान से ज़ियादा नुक़्सान देह है क्यूं कि शैतान का अ़मल तो दिल में वस्वसे के ज़रीए होता है जब कि चुग़ल ख़ोर का अ़मल आमने सामने होता है।"

## चुग़ल ख़ोर ग़ुलाम :

एक ग़ुलाम को बेचते हुए ए'लान किया गया कि "इस में सिवाए चुग़ली के कोई ऐ़ब नहीं।" एक शख़्स ने इस ऐ़ब को हलका जाना और उसे ख़रीद लिया। वोह ग़ुलाम उस मालिक के पास चन्द दिन तक चुग़ली से रुका रहा फिर एक दिन उस ने अपने मालिक की बीवी से चुग़ली खाई कि "उस का शोहर किसी औ़रत को पसन्द करता है या उस से शादी करना चाहता है।" और उसे मश्वरा दिया कि "उस्तरा ले कर अपने शोहर की गुद्दी के चन्द बाल मूंड दे ताकि मैं उन बालों पर जादू का अ़मल कर सकूं।" उस औ़रत ने उस की बात को सच समझा और ऐसा ही करने का पुख़्ता इरादा कर लिया, फिर वोह ग़ुलाम अपने मालिक के पास आया और उस की बीवी के बारे में चुग़ली खाई कि "उस का एक ख़ुफ़्या यार है जिस से वोह महब्बत करती है और आज रात तुम्हें ज़ब्ह करना चाहती है लिहाज़ा तुम झूट में सो जाना ताकि ख़ुद ही देख लो।" उस मालिक ने भी उस की बात को सच जाना, पस वोह झूट में सो गया। जब उस की बीवी उस के बाल मूंडने के लिये आई तो उस ने ख़ुद से कहा : "ग़ुलाम ने सच ही कहा था।" लिहाज़ा जब उस की बीवी उस के ह़ल्क़ के बाल मूंडने के लिये झुकी तो उस ने वोही उस्तरा ले कर उसे ज़ब्ह कर दिया। जब उस औ़रत के ख़ानदान के लोग आए और उसे मुर्दा पाया तो उन्हों ने शोहर को क़त्ल कर दिया। उस चुग़ल ख़ोर की बुरी आ़दत से दोनों ख़ानदानों के दरमियान लड़ाई शुरूअ़ हो गई।[1]

---

1 ......احياء علوم الدين، كتاب آفات اللسان،الآفة السادسة عشرة النميمة، ج٣،ص١٩٥ ـ



www.dawateislami.net

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चुग़ल ख़ोर की बात की तस्दीक़ करने की क़बाहत और इस पर मुरत्तब होने वाले बड़े शर की त़रफ़ अपने इस फ़रमाने आ़लीशान से इशारा फ़रमाया :

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَیَّنُوْۤا اَنْ تُصِیْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِیْنَ ۞ (پ۲۶،الحجرات:۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तह़क़ीक़ कर लो कि कहीं किसी क़ौम को बे जाने ईज़ा न दे बैठो फिर अपने किये पर पचताते रह जाओ ।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्लो करम से हमें इस ला'नत से मह़फ़ूज़ फ़रमाए । (आमीन)

## तम्बीहात

### तम्बीह 1 :

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का इत्तिफ़ाक़ है कि चुग़ली खाना कबीरा गुनाह है और इस की तसरीह़ गुज़श्ता सह़ीह़ ह़दीसे पाक में यूं की गई है : "हां ! येह कबीरा गुनाह है।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़किय्युद्दीन अ़ब्दुल अ़ज़ीम मुन्ज़िरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 656 हि.) फ़रमाते हैं : "उम्मत का इस पर इज्माअ़ है कि चुग़ल ख़ोरी ह़राम है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां बहुत बड़ा गुनाह है।"(1)

**ए'तिराज़ :** जब ह़दीसे पाक में है कि "مَا يُعَذَّبَانِ فِيْ كَبِيْرٍ या'नी इन्हें किसी बड़े गुनाह की वज्ह से अ़ज़ाब नहीं हो रहा।" तो आप चुग़ली को कैसे कबीरा गुनाह कहते हैं ?

**जवाब :** उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इस के कई जवाबात दिये हैं। जिन में से चन्द येह हैं : (1)...... इस का छोड़ना और इस से बचना कोई बड़ी बात नहीं (2)...... येह तुम्हारे ए'तिक़ाद में बड़ा नहीं। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इर्शाद फ़रमाता है :

وَتَحْسَبُوْنَهٗ هَیِّنًا ۖۗ وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِیْمٌ ۞ (پ۱۸، النور:۱۵)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और उसे सह्ल समझते थे और वोह **अल्लाह** के नज़्दीक बड़ी बात है।

(3)...... या इस से मुराद येह है कि येह सब से बड़ा गुनाह नहीं। इस पर बुख़ारी शरीफ़ की साबिक़ा ह़दीसे पाक भी दलालत करती है कि "हां ! येह कबीरा गुनाह है।"

---

(1)......الترغيب والترهيب، كتاب الادب، باب الترهيب من النميمة، تحت الحديث: ۴۳۳۰، ج۳، ص۳۹۴۔



www.dawateislami.net

## तम्बीह 2 : चुग़ली की ता'रीफ़ :

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने चुग़ली की ता'रीफ़ येह की है कि "लोगों के दरमियान फ़साद डालने के लिये उन की बातें एक दूसरे को बताना।" और "**एह़्याउल उ़लूम**" में है कि "अक्सर ने येही कहा है लेकिन येह सिर्फ़ इसी के साथ मुख़्तस नहीं है बल्कि इस से मुराद हर ऐसी बात ज़ाहिर करना है कि जिस का ज़ाहिर करना ना पसन्द हो ख़्वाह जिस से इस ने बात सुनी वोह ना पसन्द करता हो या जिसे सुनाई या कोई तीसरा शख़्स उस को ना पसन्द करता हो, ख़्वाह इस का इज़्हार क़ौल से हो या लिख कर या फिर आंखों या हाथों के इशारों से, ख़्वाह जो बात बताई जा रही है वोह क़ौली हो या फ़े'ली या जिस शख़्स की बात की जा रही है वोह उस में या किसी और में पाया जाने वाला ऐ़ब या नक़्स हो। पस चुग़ली की ह़क़ीक़त राज़ को फ़ाश करना और जिस बात के ज़ाहिर होने को कोई ना पसन्द करता हो उस से पर्दा उठाना है। लिहाज़ा लोगों के जिन अह़्वाल को भी देखा जाए तो मुनासिब येही है कि उन्हें बयान करने से ख़ामोश रहा जाए सिवाए उस चीज़ के कि जिसे बयान करने से मुसल्मानों को नफ़्अ़ हो या फिर कोई नुक़्सान दूर हो। म-सलन अगर किसी को देखे कि वोह किसी दूसरे का माल हड़प कर रहा है तो उस पर लाज़िम है कि उस के बारे में बताए ब ख़िलाफ़ उस के कि अगर किसी को देखा कि वोह अपना ही माल छुपा रहा है तो अब अगर उस ने किसी से उस का तज़्किरा किया तो येह ग़ीबत और राज़ फ़ाश करना कहलाएगा और जिस की चुग़ली खाई जाए अगर वोह ख़ामी या ऐ़ब वाक़िअ़तन उस शख़्स में मौजूद भी हो तो येह ग़ीबत भी होगी और चुग़ली भी।"

अगर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) के मज़्कूरा कलाम से मक़्सूद चुग़ल ख़ोरी हो तो येह उन तमाम सूरतों में कबीरा गुनाह होगा जिन का किसी भी फ़क़ीह ने मुत़्लक़न ज़िक्र किया है। क्यूं कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने चुग़ली के मु-तअ़ल्लिक़ जो वज़ाह़त की है वोह किसी पर पोशीदा नहीं और इस के कबीरा होने की वज्ह येह है कि इस में फ़साद पाया जाता है जिस की वज्ह से ऐसे नुक़्सानात और ख़राबियां पैदा होती हैं जो किसी पर पोशीदा नहीं। हर वोह चीज़ जो इस त़रह़ हो (या'नी नुक़्सान और ख़राबियों का बाइ़स बने तो) उस का हुक्म येह है कि वोह वाज़ेह़ त़ौर पर गुनाहे कबीरा है। लेकिन इस से येह मुराद नहीं कि किसी के बारे में मह़्ज़ ऐसी ख़बर दें कि जिस का इज़्हार वोह ना पसन्द करता हो लेकिन वोह ख़बर न तो उसे कोई नुक़्सान दे और न



www.dawateislami.net

ही वोह उस का कोई ऐब या नक़्स हो।

अगर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) का इस को चुग़ली का नाम देना तस्लीम भी कर लिया जाए तो भी जो इस मुन्दरिजए बाला बात की त़रफ़ तवज्जोह देगा वोह जान लेगा कि येह कबीरा गुनाह नहीं। इस की ताईद इस से भी होती है कि उन्हों ने ख़ुद किसी चीज़ के ग़ीबत होने में येह शर्त़ रखी कि जिस की ग़ीबत की जा रही है वोह ख़ामी या नक़्स उस में मौजूद भी हो। चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जिस की चुग़ली खाई जाए अगर वोह ख़ामी या ऐब ह़क़ीक़तन उस शख़्स में मौजूद भी हो तो येह ग़ीबत भी होगी और चुग़ली भी।" लिहाज़ा ग़ीबत तो तभी होगी जब कि वोह ख़ामी उस में पाई भी जाती हो। पस चुग़ली ग़ीबत से भी ज़ियादा बुरी हुई (क्यूं कि इस से मुराद येह हुवा कि ख़्वाह वोह बयान कर्दा ख़ामी उस में हो या न हो) लिहाज़ा मुनासिब येही है कि चुग़ली को उस सूरत में कबीरा कहा जाए जब कि उस के सबब कोई ऐसा फ़साद या बिगाड़ पैदा हो जिस की उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने वज़ाह़त की है। इस पर ग़ौरो फ़िक्र करो क्यूं कि मैं ने किसी को इस बात पर आगाह नहीं पाया। उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) का कलाम नक़्ल तो करते हैं लेकिन जिस बात पर मैं ने मु-तनब्बेह किया है इस की त़रफ़ तवज्जोह नहीं देते। अलबत्ता ! जिस ने मुत़लक़न ग़ीबत को कबीरा गुनाह क़रार दिया उसे चाहिये था कि चुग़ली के कबीरा होने के लिये येह शर्त़ लगाता कि इस में ग़ीबत के मफ़ासिद की त़रह़ मफ़ासिद पाए जाएं अगर्चे वोह लोगों के दरमियान फ़साद बरपा करने वाले अस्बाब तक न पहुंचें।

## तम्बीह 3 : चुग़ली पर बर अंगेख़्ता करने वाली चीज़ें

चुग़ली पर उभारने वाली बातें दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... जिस की चुग़ली खाई जा रही है उस के बारे में बुरा इरादा होना (2)...... जिस से चुग़ली खाई जा रही है उस से मह़ब्बत होना या (3)...... फ़ुज़ूल बातों में पड़ने से ख़ुश होना।

इस का इ़लाज भी ग़ीबत की त़रह़ है। जिस से चुग़ली खाई जाए जैसे "फ़ुलां ने तेरे बारे में येह कहा या तेरे ह़क़ में ऐसा किया।" उसे छ़[6] बातों का ख़याल रखना चाहिये : (1)...... वोह उस की बात को सच न जाने क्यूं कि चुग़ल ख़ोर के फ़ासिक़ होने पर इज्माअ़ है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का भी फ़रमाने आ़लीशान है : "اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا (پ۲۶، الحجرات:۶)
**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तह़क़ीक़ कर



www.dawateislami.net

लो।'' (2)...... उसे आयिन्दा के लिये दीनी और दुन्यवी ए'तिबार से इस बुरी आ़दत से मन्अ़ करे (3)...... अगर वोह ए'लानिया तौबा न करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये उस से नाराज़ हो जाए (4)...... जिस की ग़ीबत की गई है उस के मु-तअ़ल्लिक़ बद गुमानी न करे क्यूं कि जो उस के बारे में बताया गया उस का सुबूत नहीं कि उस ने ऐसा ही किया और (5)...... जो कुछ उसे बताया गया उस की टोह और तलाश में न पड़े यहां तक कि ख़ुद ही साबित हो जाए। क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا (پ۲۶، الحجرات:۱۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बहुत गुमानों से बचो बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है और ऐ़ब न ढूंढो।

(6)...... जिस बात से चुग़ल ख़ोर को मन्अ़ कर रहा है वोह बात अपने लिये पसन्द न करे या'नी उस की चुग़ली आगे बयान न करे कि वोह येह कहने लगे कि ''फ़ुलां ने मुझे येह बात बताई।'' क्यूं कि इस त़रह़ येह भी चुग़ल ख़ोर, ग़ीबत करने वाला और जिस चीज़ से मन्अ़ कर रहा था ख़ुद उस का करने वाला बन जाएगा।

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز की ख़िदमत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और उस ने किसी के बारे में कोई मन्फ़ी (NEGATIVE) बात की। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने चुग़ली खाने वाले से इर्शाद फ़रमाया : ''अगर तुम चाहते हो तो हम तुम्हारे मुआ़-मले की तह़क़ीक़ करें ! अगर तुम झूटे निकले तो इस आयते मुबा-रका के मिस्दाक़ क़रार पाओगे : ''اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا(پ۲۶، الحجرات:۶) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तह़क़ीक़ कर लो।'' और अगर तुम सच्चे हुए तो येह आयते मुक़द्दसा तुम पर सादिक़ आएगी : ''مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيْمٍ ﴿۱۱﴾(پ۲۹، القلم:۱۱) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला।'' और अगर तुम चाहो तो हम तुम्हें मुआ़फ़ कर दें।'' उस ने अ़र्ज़ की : ''या अमीरल मुअमिनीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن ! मुआ़फ़ कर दीजिये ! आयिन्दा कभी ऐसा (या'नी ग़ीबत और चुग़ल ख़ोरी) नहीं करूंगा।''[1]

ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक (मु-तवफ़्फ़ा 99 हि.) ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى (मु-तवफ़्फ़ा 124 हि.) की मौजू-दगी में उस शख़्स पर इज़्हारे नाराज़ी किया जिस की इस से चुग़ली खाई गई थी तो उस शख़्स ने उस बात का इन्कार कर दिया। ख़लीफ़ा ने कहा : ''जिस ने मुझे बताया है, वोह सच्चा आदमी है।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम

1 ......احياء علوم الدين، كتاب آفات اللسان، بيان حد النميمة وما يجب فى ردها، ج۳، ص۱۹۳ ـ



www.dawateislami.net

ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى (मु-तवफ़्फ़ा 124 हि.) ने इर्शाद फ़रमाया : "चुग़ल ख़ोर कभी सच्चा नहीं हो सकता।" तो सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक ने कहा : "आप ने सच कहा, ऐ शख़्स ! सलामती के साथ चला जा।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 110 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं : "जो शख़्स आप के सामने किसी की चुग़ली खाता है तो वोह आप की भी चुग़ली खाएगा।" येह इस बात की त़रफ़ इशारा है कि चुग़ल ख़ोर को ना पसन्द किया जाए, उस पर ए'तिमाद न किया जाए, उस की सदाक़त पर यक़ीन न किया जाए और उस को ना पसन्द क्यूंकर न किया जाए ह़ालां कि वोह आप को झूट, ग़ीबत, तोहमत, ख़ियानत, चोरी, ह़सद, लोगों के दरमियान फ़साद और धोका से कोई फ़ाएदा नहीं दे सकता बल्कि वोह तो उन लोगों में से है कि जिन रिश्तों के जोड़ने का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दिया है उन्हें तोड़ने की कोशिश करते और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَ يَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۴۲﴾ (پ۲۵،الشوریٰ:۴۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** मुआ-ख़ज़ा तो उन्हीं पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाह़क़ सरकशी फैलाते हैं उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

चुग़ल ख़ोर भी उन्ही लोगों में से है।(2)

## ......ता'रीफ़ और सआ़दत......

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर बैज़ावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 685 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं कि "जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी करता है दुन्या में उस की ता'रीफ़ें होती हैं और आख़िरत में सआ़दत मन्दी से सरफ़राज़ होगा।"

(تفسیرالبیضاوی، پ۲۲،الاحزاب ، تحت الآیۃ: ۷۱،ج۴، ص۳۸۸)

1 ......احیاء علوم الدین،کتاب آفات اللسان،بیان حد النمیمۃومایجب فی ردھا،ج۳،ص۱۹۳۔

2 ......احیاء علوم الدین،کتاب آفات اللسان،بیان حد النمیمۃومایجب فی ردھا،ج۳،ص۱۹۳۔



www.dawateislami.net

**कबीरा नम्बर 253 : दो रुख़ा होना**

## दो रुख़े पन की मज़म्मत पर अह़ादीसे मुबा-रका :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम मुख़्तलिफ़ क़िस्म के लोगों को पाओगे। उन में से जो ज़मानए जाहिलिय्यत में बेहतर थे जब उन्हों ने इस्लाम को समझ लिया तो इस्लाम में भी बेहतर हो गए। तुम लोगों में से बेहतरीन उन लोगों को पाओगे जो इस ह़ालत में (या'नी इस्लाम लाने के बा'द) उस चीज़ (या'नी मुना-फ़क़त) को सख़्त ना पसन्द करते हैं और तुम लोगों में बद तरीन दो चेहरों वाले को पाओगे जो एक चेहरे के साथ इस के पास आता है और दूसरे चेहरे के साथ उस के पास जाता है।''(1)

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, कुछ लोगों ने मेरे दादा ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : ''हम अपने बादशाहों के पास जा कर उन बातों के बर अ़क्स कहते हैं जो हम उन से जुदा हो कर कहते हैं।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इर्शाद फ़रमाया : ''हम इस (अ़मल) को ज़मानए रिसालत मआब में मुना-फ़क़त शुमार करते थे।''(2)

﴾3﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं ने शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : ''दो चेहरों वाला (या'नी मुनाफ़िक़) क़ियामत के दिन इस ह़ाल में आएगा कि उस के आग के (बने हुए) दो चेहरे होंगे।''(3)

﴾4﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जिस के दुन्या में दो चेहरे होंगे क़ियामत के दिन उस की आग की दो ज़बानें होंगी।''(4)

---

1 ......صحیح البخاری ،کتاب المناقب ،باب المناقب ،الحدیث: ۳۴۹۳،۳۴۹۴،ص ۲۸۵۔

2 ......صحیح البخاری ،کتاب الاحکام ،باب ما یکرہ من ثناء السلطان۔۔الخ،الحدیث:۷۱۷۸،ص ۵۹۸۔
مسند ابی داود الطیالسی ، الحدیث: ۱۹۵۵ ،ص ۲۶۴۔

3 ......المعجم الاوسط،الحدیث: ۶۲۷۸ ،ج۴،ص ۳۷۰۔

4 ......سنن ابی داود، کتاب الادب،باب فی ذی الوجھین،الحدیث : ۴۸۷۳،ص ۱۵۸۰ ۔



www.dawateislami.net

﴾5﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जिस की दो ज़बानें होंगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उस की आग की दो ज़बानें बना देगा।''(1)

## तम्बीह :

पहली दो सहीह़ ह़दीसों की बिना पर दो रुख़े पन को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है। उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इस लिये इसे अ़ला-ह़दा ज़िक्र नहीं किया क्यूं कि उन्हों ने इसे चुग़ली में दाख़िल समझा मगर इसे मुत़्लक़न कबीरा क़रार देना मह़ल्ले नज़र है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं : ''दो ज़बानों वाला वोह शख़्स है जो ऐसे दो आदमियों के दरमियान जाता है जो बाहम दुश्मन हैं और वोह (मुनाफ़िक़) हर एक से उस के मुवाफ़िक़ बात करता है और ऐसा बहुत कम होता है कि येह दो बाहम अ़दावत रखने वालों के पास जाए और ऐसा न करे। वोह इस सिफ़त से मुत्तसिफ़ होता है और येह ह़क़ीक़ी निफ़ाक़ है।''

﴾6﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम क़ियामत के दिन लोगों में सब से बुरा उस शख़्स को पाओगे जो इस के पास येह बात कहता है और उस के पास वोह बात कहता है।''(2)

﴾7﴿...... एक रिवायत के अल्फ़ाज़ कुछ यूं हैं : ''इस के पास इस चेहरे से और उस के पास उस चेहरे से आता है।''(3)

﴾8﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इर्शाद फ़रमाते हैं : ''दो चेहरों वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक अमीन नहीं हो सकता।''(4)

﴾9﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इर्शाद फ़रमाते हैं कि ''तुम में से कोई **इम्मअ़ह** न हो।'' लोगों ने अ़र्ज़ की : ''**इम्मअ़ह** से क्या मुराद है ?'' तो आप

---

(1)......المعجم الاوسط،الحديث:٨٨٨٥،ج٦،ص٣١٣۔

(2)......المسندللامام احمدبن حنبل،مسندابی هريرة،الحديث : ١٠٤٣٢،ج٣،ص٥٥٦،بتغيرٍقليلٍ۔

(3)......صحيح البخاری،كتاب الادب،باب ما قيل فی ذی الوجهين، الحديث:٦٠٥٨،ص٥١٢۔

(4)......الكامل فی ضعفاء الرجال،الرقم ١٦٠٣ كثيربن زيد،ج٧،ص٢٠٥۔



www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो हर हवा के साथ चल पड़ता है (या'नी बिग़ैर सोचे समझे हर किसी की बात पर अ़मल करने लग जाता है) ।''

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं : ''उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि दो आदमियों से दो रुख़ी हो कर मिलना निफ़ाक़ है । निफ़ाक़ की कई अ़लामतें हैं और येह भी उन में से एक है ।''

**ए'तिराज़ :** आदमी कैसे दो ज़बानों वाला हो सकता है ? और इस की ता'रीफ़ क्या है ?

**जवाब :** जब कोई शख़्स दो ऐसे अफ़राद के पास जाए जो एक दूसरे के दुश्मन हों और दोनों में से हर एक के साथ ह़ुस्ने सुलूक से पेश आए और वोह उस में सच्चा हो तो वोह मुनाफ़िक़ है न दो ज़बानों वाला । क्यूं कि एक शख़्स कभी बाहम दो दुश्मनों का दोस्त भी होता है लेकिन उस की येह दोस्ती कमज़ोर और ज़ईफ़ होती है जो अख़ुव्वत व भाईचारे की ह़द तक नहीं पहुंच पाती । क्यूं कि अगर उस की येह दोस्ती पुख़्ता होती तो इस बात का तक़ाज़ा करती कि दोस्त का दुश्मन इस का भी दुश्मन है । हां ! अगर उस ने दोनों में से हर एक की बात दूसरे तक पहुंचाई तो वोह दो ज़बानों वाला शुमार होगा । और येह फे़'ल चुग़ली से ज़ियादा बुरा है क्यूं कि वोह दोनों में से किसी एक को कुछ बताने से ही चुग़ल ख़ोर बन जाएगा और जब दूसरे को भी कुछ बताया तो उस ने चुग़ली पर भी ज़ियादती की और अगर उस ने इन में से किसी को कोई बात तो न बताई अलबत्ता ! उन दोनों की एक दूसरे के साथ दुश्मनी को अच्छा समझा तो तब भी दो ज़बानों वाला कहलाएगा और इसी त़रह़ अगर उस ने दोनों में हर एक के साथ वा'दा किया कि वोह उस की मदद करेगा या उस ने मुवा-ज़ना करते हुए हर एक की ता'रीफ़ की या फिर एक की मौजू-दगी में तो उस की ता'रीफ़ की लेकिन जब उस से अ़ला-ह़दा हुवा तो उस की मज़म्मत की तो इन तमाम सूरतों में वोह दो ज़बानों वाला कहलाएगा ।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के ह़वाले से गुज़र चुका है कि बादशाह की मौजू-दगी में उस की ता'रीफ़ करना और उस की अ़दम मौजू-दगी में मज़म्मत करना निफ़ाक़ है । इस की सूरत येह बनेगी कि अगर उसे बादशाह के पास जाने और उस की ता'रीफ़ करने की ज़रूरत न हो और न ही उस से माल व इ़ज़्ज़त मिलने की तवक़्क़ोअ़ हो और फिर जब माल व जाह में से किसी एक ज़रूरत की वज्ह से बादशाह के पास जाए और उस की ता'रीफ़ करे तो वोह मुनाफ़िक़ है और ह़दीसे पाक का येही मा'ना है । चुनान्चे,

---

1 ......احیاء علوم الدین، کتاب آفات اللسان، الآفة السابعة عشرة کلام ذی اللسانین......الخ، ج۳، ص۱۹۶۔



www.dawateislami.net

﴾10﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : ''माल व जाह की मह़ब्बत दिल में इसी त़रह़ निफ़ाक़ पैदा करती है जिस त़रह़ पानी सब्ज़ियां पैदा करता है।''(1)

या'नी बा'ज़ अवक़ात इन्सान को उ-मरा के पास जाना पड़ता और उन की मुराआ़त और दिखलावे का ख़याल रखना पड़ता है। अगर उन के पास मजबूरन जाना पड़े म-सलन किसी कमज़ोर के छुटकारे के लिये, उन के पास जाए बिग़ैर उस की गुलू ख़लासी की उम्मीद न हो और ता'रीफ़ न करने की वज्ह से उन का ख़ौफ़ हो तो वोह मा'ज़ूर है क्यूं कि शर (या'नी बुराई) से बचना जाइज़ है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ''हम लोगों के सामने तो उन का शुक्रिय्या अदा करते हैं या'नी उन से मुस्कुरा कर मिलते हैं लेकिन हमारे दिल उन पर ला'नत भेज रहे होते हैं।''(2) और ह़दीसे पाक गुज़र चुकी है कि,

﴾11﴿...... ह़ाज़िरी का इज़्न त़लब करने वाले एक शख़्स के मु-तअ़ल्लिक़ सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इसे इजाज़त दे दो, येह बुरे मुआ़-मले वाला है।'' (उस के जाने के बा'द) उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इस्तिफ़्सार किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक लोगों में सब से बुरा वोह है जिस के शर से बचने के लिये उस की इ़ज़्ज़त की जाती है।''(3)

येह ह़दीसे पाक ख़न्दा पेशानी और मुस्कुरा कर मिलने के बाब से तअ़ल्लुक़ रखती है, बहर ह़ाल किसी के शर से बचने के लिये उस की ता'रीफ़ करना एक खुला झूट है जो किसी ह़ाजत के वक़्त या बिल ख़ुसूस किसी के इन्तिहाई मजबूर करने पर ही जाइज़ है। मुना-फ़क़त की एक अ़लामत येह है कि कोई नाह़क़ बात सुने तो उस की तस्दीक़ या ताईद करे म-सलन सर को ह़-र-कत दे। उस पर लाज़िम है कि अपने से झटक दे और (इस की त़ाक़त न हो तो) ज़बान से रोके और (इस की भी त़ाक़त न हो तो) दिल में बुरा जाने।(4)

❁❁❁❁❁❁❁

1 ......احیاء علوم الدین ، کتاب آفات اللسان ،الآفة السابعة عشرة کلام ذی اللسانین......الخ ، ج ۳،ص ۱۹۷ ۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الادب ،تحت باب المداراة مع الناس،ص ۵۱۷ ۔

3 ......صحیح البخاری ، کتاب الادب ،باب المداراة مع الناس ،الحدیث: ۶۱۳۱،ص ۵۱۷ ۔

سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی حسن العشرة، الحدیث : ۴۷۹۳،ص ۱۵۷۶ ۔

4 ......احیاء علوم الدین ، کتاب آفات اللسان ،الآفة السابعة عشرة کلام ذی اللسانین......الخ ، ج ۳،ص ۱۹۷ مفهوماً ۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 254 : बोहतान तराशी करना

ग़ीबत के बाब में येह सह़ीह़ ह़दीसे पाक बयान हो चुकी है कि ''अगर वोह बात उस में नहीं तो तूने उस पर बोहतान (या'नी झूटा इल्ज़ाम) लगाया।''(1)

बोहतान तराशी ग़ीबत से ज़ियादा तक्लीफ़ देह है क्यूं कि येह झूट है लिहाज़ा येह हर एक पर गिरां गुज़रता है जब कि ग़ीबत का मुआ़-मला इस के बर अ़क्स है क्यूं कि येह बा'ज़ अ़क्ल मन्दों पर गिरां नहीं गुज़रती इस लिये कि वोह ख़ुद इस बुरी आ़दत में मुब्तला होते हैं।

﴾2﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''पांच चीज़ों का कोई कफ़्फ़ारा नहीं : (1)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना (2)...... नाह़क़ क़त्ल करना (3)...... मोमिन पर तोहमत लगाना (4)...... मैदाने जंग से भाग जाना और (5)...... ऐसी जब्री क़सम जिस के ज़रीए़ किसी का माल नाह़क़ ले लिया जाए।''(2)

﴾3﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने किसी की कोई ऐसी बात ज़िक्र की जो उस में नहीं ताकि इस के ज़रीए़ उस को ऐ़ब ज़दा करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम में क़ैद कर देगा यहां तक कि वोह अपनी कही हुई बात साबित करे।''(3)

### तम्बीह :

बोहतान तराशी को बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने झूट में शुमार करने के साथ साथ अ़ला-ह़दा त़ौर पर भी कबीरा गुनाह शुमार किया है। इस की वज्ह येह है कि येह ऐसा झूट है जिस के बारे में ख़ास त़ौर पर मज़्कूरा शदीद वई़द आई है, लिहाज़ा इसे अ़ला-ह़दा ज़िक्र किया।

---

(1)......صحيح مسلم، كتاب البر والصلة والادب، باب تحريم الغيبة، الحديث: ٢٥٩٣، ص١١٣٠۔

(2)......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی هريرة، الحديث: ٨٧٤٥، ج٣، ص٢٨٦ "وَبَهْتُ" بدله "اَوْنَهْبُ"۔

(3)......المعجم الاوسط، الحديث: ٨٩٣٦، ج٦، ص٣٢٧۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 255 : वली का जब्रन निकाह़ से रोकना

इस की सूरत येह है कि आ़क़िला व बालिग़ा औ़रत अपने वली को अपने कुफ़ू[1] में (या'नी ह़सब व नसब वग़ैरा में हम-पल्ला शख़्स से) शादी करने के लिये कहे लेकिन वोह इन्कार कर दे । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़्युद्दीन अबू ज़-करिय्या बिन शरफ़ न-ववी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 676 हि.) ने अपने फ़तावा जात में इस के कबीरा गुनाह होने की सराह़त की है और इर्शाद फ़रमाया : ''मुसल्मानों का इस पर इज्माअ़ है कि औ़रत को निकाह़ से जब्रन रोकना कबीरा गुनाह है ।'' लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 676 हि.) और दीगर अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने अपनी किताबों में इस का सग़ीरा होना साबित किया जब कि कबीरा होने को ज़ईफ़ क़रार दिया है । बल्कि ह़ज़रते सय्यिदुना **इमामुल ह़-रमैन** رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने **अन्निहायह** में इर्शाद फ़रमाया : ''जब वहां ह़ाकिमे इस्लाम मौजूद हो तो निकाह़ से जब्रन रोकना ह़राम नहीं ।'' जब कि इन के इ़लावा किसी का फ़रमान येह है कि ''जब हम ह़ाकिम के वली होने को जाइज़ क़रार देते हैं तो निकाह़ से जब्रन रोकना मुत़्लक़न ह़राम नहीं होना चाहिये ।'' या'नी इस वक़्त मुआ़-मला सिर्फ़ वली पर मुन्ह़सिर नहीं होता । जब हम इसे सग़ीरा गुनाह कहें तो बार बार करने से कबीरा बन जाएगा । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 676 हि.) और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई़ عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡكَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) के कलाम का ज़ाहिरी मा'ना भी येही है कि ''औ़रत को जब्रन शादी से रोकना सग़ीरा से कबीरा गुनाह बन जाता है ।'' या'नी इन्हों ने फ़रमाया : ''निकाह़ से रोकने के मुआ़-मले में मजबूर करना अगर्चे कबीरा गुनाहों में से नहीं, लेकिन बार बार इस का इरतिकाब करने वाला फ़ासिक़ बन जाता है और बा'ज़ के नज़्दीक इस की कम अज़ कम ता'दाद तीन बार है ।'' ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 676 हि.) और ह़ज़रते

---

1...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1182 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''बहारे शरीअ़त'' जिल्द दुवुम सफ़ह़ा 53 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : कुफ़ू के येह मा'ना हैं कि मर्द औ़रत से नसब वग़ैरा में इतना कम न हो कि उस से निकाह़ औ़रत के औलिया के लिये बाइ़से नंगो आ़र (बे इ़ज़्ज़ती व रुस्वाई का सबब) हो, किफ़ाअत (ह़सब व नसब में हम-पल्ला होना) सिर्फ़ मर्द की जानिब से मो'तबर है औ़रत अगर्चे कम द-रजे की हो इस का ए'तिबार नहीं । (الدرالمختار"و"ردالمحتار"،كتاب النكاح،باب الكفاءة،ج۴،ص۱۹۴)



www.dawateislami.net

सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) के इस क़ौल की तरदीद इन्ही के इस फ़रमान से हो जाती है जो इन्हों ने **किताबुश्शहादात** में ज़िक्र फ़रमाया कि इस बात पर वाज़ेह़ हुक्म और जम्हूर उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام का क़ौल मौजूद है कि ''जब नेकियां ग़ालिब हों तो किसी एक क़िस्म के सग़ीरा गुनाह पर हमेशगी इख़्तियार करना नुक़्सान नहीं देता।'' और एक ज़ईफ़ तौजीह येह बयान की गई है कि ''सग़ीरा पर हमेशगी इख़्तियार करना फ़िस्क़ है अगर्चे नेकियां ग़ालिब हों।''

## कबीरा नम्बर 256 : पैग़ामे निकाह़ पर निकाह़ का पैग़ाम देना

या'नी किसी शख़्स के सरीह़ जाइज़ पैग़ामे निकाह़ पर निकाह़ का पैग़ाम देना जब कि वोह सरा-ह़तन क़बूल भी कर चुका हो और उस का क़बूल करना मो'तबर भी हो। नीज़ न उस ने और न लड़की वालों ने इजाज़त दी हो या उस पैग़ाम से ए'राज़ किया हो। इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है। बैअ़ के बाब में दूसरे के सौदे पर सौदा करने के मु-तअ़ल्लिक़ जो वज़ाह़त हो चुकी है येह उसी की मिस्ल है। लिहाज़ा वोही बह़स यहां सादिक़ आएगी।

## कबीरा नम्बर 257 : बीवी को शोहर के ख़िलाफ़ भड़काना
## कबीरा नम्बर 258 : शोहर को बीवी के ख़िलाफ़ भड़काना

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना बरीदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जो अमानत की क़सम खाए वोह हम में से नहीं और जो किसी मर्द के ख़िलाफ़ उस की बीवी को या उस के ग़ुलाम को भड़काए वोह हम में से नहीं।''(1)

﴾2﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : ''जिस ने किसी औ़रत को उस के ख़ावन्द या ग़ुलाम को आक़ा के ख़िलाफ़ भड़काया वोह हम में से नहीं।''(2)

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل ،حدیث بریدة الاسلمی ،الحدیث:۲۳۰۴۱،ج۹،ص۱۶۔

2 ......سنن ابی داود ،کتاب الطلاق ،باب فیمن خبب امرأة علی زوجها ،الحدیث:۲۱۷۵،ص۱۳۸۳۔



www.dawateislami.net

﴾3﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : ''जिस ने किसी ग़ुलाम को उस के घर वालों के ख़िलाफ़ भड़काया वोह हम में से नहीं और जिस ने किसी औ़रत को उस के शोहर के ख़िलाफ़ भड़काया वोह भी हम में से नहीं।''(1)

﴾4﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक शैत़ान मरदूद पानी पर अपना तख़्त बिछाता है फिर अपने शैत़ानी लश्करों को फ़ितना व फ़साद फैलाने के लिये भेजता है। सब से ज़ियादा फ़ितना बरपा करने वाला उस के नज़्दीक ज़ियादा मुक़र्रब होता है। जब उन में से कोई आ कर कहता है कि ''मैं ने फ़ुलां फ़ुलां फ़ितना फैलाया।'' तो शैत़ान मरदूद कहता है : ''तूने कुछ नहीं किया।'' फिर एक और आ कर कहता है : ''मैं ने फ़ुलां शख़्स और उस की बीवी के दरमियान जुदाई डाल दी।'' तो इब्लीस मरदूद उस चेले को अपने क़रीब कर लेता है और कहता है : ''तूने बहुत अच्छा काम किया।'' फिर उसे गले लगा लेता है।(2)

## तम्बीह :

पहले गुनाह को कबीरा गुनाहों में शुमार करने पर तमाम उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इत्तिफ़ाक़ है। नीज़ उन्हों ने इस मौज़ूअ़ पर रिवायत नक़्ल फ़रमाई कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऐसा करने वाले पर ला'नत फ़रमाई और मेरी बयान कर्दा अह़ादीसे मुबा-रका से भी इस मौक़िफ़ की ताईद होती है। दूसरा गुनाह भी पहले की मिस्ल है जैसा कि ज़ाहिर है अगर्चे इन दोनों में फ़र्क़ करना मुम्किन है वोह यूं कि मर्द तो फ़साद डालने वाले और अपनी बीवी दोनों से गुज़ारा कर सकता है मगर बीवी ऐसा नहीं कर सकती क्यूं कि बीवी को शोहर के ख़िलाफ़ भड़काना या शोहर के ख़िलाफ़ करना आ़म है ख़्वाह भड़काना मर्द की त़रफ़ से हो या औ़रत की त़रफ़ से, औ़रत या मर्द से शादी करने या कराने का इरादा हो या इस त़रह़ का कोई इरादा न हो।

۞۞۞۞۞۞۞

---

1 ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب الحظر والاباحة، الحديث: ۵۵۳۴، ج۷، ص۴۳۴۔

2 ......صحيح مسلم، كتاب صفات المنافقين، باب تحريش الشيطان......الخ، الحديث: ۷۱۰۶، ص۱۱۶۸۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 259 : मह़रम से निकाह़ करना

या'नी किसी शख़्स का ऐसी अ़ौरत से निकाह़ करना जो उस पर नसब, रज़ाअ़त या मुसा-हरत की वज्ह से ह़राम हो अगर्चे उस के साथ हम-बिस्तरी न करे फिर भी येह कबीरा गुनाह है।

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है। येही बात बा'ज़ मु-तअख़्ख़िरीन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के कलाम में भी मौजूद है लेकिन उन्हों ने इस की उ़मूमी ह़ुरमत और अ़-दमे मुजा-म-अ़त का ज़िक्र नहीं किया और यक़ीनन उन की इस से मुराद येही थी। इस को अ़ला-ह़दा क़िस्म ज़िक्र करने की वज्ह येह है कि किसी का अपने ह़राम रिश्ते से निकाह़ करना श-जरे शरीअ़त को जड़ से उखेड़ने के मु-तरादिफ़ है और बिला शुबा इस के नज़्दीक ह़ुदूदे शरइय्या की पासदारी की कोई अहम्मिय्यत नहीं ख़ुसूसन ऐसा फ़े'ल जिस की क़बाह़त पर अहले ख़िरद व दानिश का इत्तिफ़ाक़ है। ऐसे फ़े'ल का इरतिकाब उस शख़्स से कभी नहीं हो सकता जिस में थोड़ी सी भी मुरव्वत हो चे जाए कि जो दीन को कुछ समझता हो।

## कबीरा नम्बर 260 : त़लाक़ देने वाले का ह़लाला पर रिज़ा मन्द होना
## कबीरा नम्बर 261 : त़लाक़ याफ़्ता अ़ौरत का इस पर रिज़ा मन्द होना
## कबीरा नम्बर 262 : ह़लाला कराने वाले का रिज़ा मन्द होना

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि "शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़लाला करने वाले और जिस के लिये ह़लाला किया जाए, दोनों पर ला'नत फ़रमाई।(1)

﴾2﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : "मैं तुम्हें उधार लिये हुए सांड के बारे में न बताऊं ?" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज़ की : "क्यूं नहीं ! **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! (ज़रूर बताएं)" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह ह़लाला करने वाला है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़लाला करने वाले और जिस के लिये किया जाए, दोनों पर ला'नत फ़रमाई।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ईसा मुह़म्मद बिन ईसा तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی

---

1 ......سنن النسائی، کتاب الطلاق،باب احلال المطلقة ثلاثا وما فيه من التغليظ،الحديث: ۳۴۴۵،ص۲۳۱۱۔

2 ......سنن ابن ماجه،ابواب النكاح ،باب المحلل والمحلل له ،الحديث: ۱۹۳۶ ،ص۲۵۹۲۔



www.dawateislami.net

(मु-तवफ़्फ़ा 279 हि.) इस ह़दीसे पाक के ज़िम्न में फ़रमाते हैं : "जिन अहले इ़ल्म का इस पर अ़मल है, उन में अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म, इन के साहि़ब ज़ादे और अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم शामिल हैं। येही ताबिईन में से फु-क़हा का क़ौल है।"(1)

﴾3﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ह़लाला करने वाले के बारे में पूछा गया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "(येह जाइज़) नहीं, बल्कि निकाह़ तो रग़्बत से होता है न कि मक्रो फ़रेब से और न ही **किताबुल्लाह** (के अह़काम) का मज़ाक़ उड़ाते हुए कि फिर तुम ज़ाएक़ा चखने लगो।"(2)

﴾4﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरे पास जो ह़लाला करने वाला और कराने वाला लाया गया मैं उस को रज्म करूंगा।"(3)

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के साहि़ब ज़ादे से इस की वज़ाह़त दरयाफ़्त की गई तो इर्शाद फ़रमाया : "वोह दोनों ज़ानी हैं।"

﴾5﴿...... एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से येह मस्अला दरयाफ़्त किया : "आप इस के मु-तअ़ल्लिक़ क्या फ़रमाते हैं कि मैं ने एक औ़रत से इस लिये निकाह़ किया ताकि उसे उस के साबिक़ा शोहर के लिये ह़लाल कर दूं ह़ालां कि उस के शोहर ने न तो मुझे इस का हु़क्म दिया और न ही उसे इस का इ़ल्म है।" तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "(ऐसा करना सह़ीह़) नहीं, बल्कि निकाह़ तो रग़्बत से होता है फिर अगर वोह औ़रत तुझे पसन्द आए तो उसे अपने पास रोक ले और अगर ना पसन्द हो तो छोड़ दे और सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दौर में हम इसे (या'नी ह़लाला के अ़मल को) जहालत शुमार करते थे।"(4)

﴾6﴿...... आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से अपने शोहरे अव्वल के लिये (ह़लाल होने के लिये) औ़रत के

---

(1)......جامع الترمذی، ابواب النکاح، باب ما جاء فی المحلل والمحلل له، تحت الحدیث:۱۱۲۰، ص۱۷۲۰۔

(2)......المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۱۵۶۷، ج۱۱، ص۱۸۰، بتغیرٍ قلیلٍ۔

(3)......المصنف لعبد الرزاق، کتاب النکاح، باب التحلیل، الحدیث: ۱۰۸۱۹، ۱۰۸۲۰، ج۶، ص۲۱۱۔

(4)......المعجم الاوسط، الحدیث: ۶۲۴۶، ج۴، ص۳۶۱، بتغیرٍ قلیلٍ۔



www.dawateislami.net

ह़लाला कराने के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह जहालत है ।''(1)

﴾7﴿...... आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से एक शख़्स के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा गया जिस ने अपनी चचाज़ाद बहन को त़लाक़ दे दी फिर शर्मसार हो कर उस की त़रफ़ राग़िब हुवा और इरादा किया कि कोई शख़्स इस की चचाज़ाद से निकाह़ कर के इस के लिये उसे ह़लाल कर दे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''वोह दोनों ज़ानी हैं, अगर्चे 20 साल तक या जितना अ़र्सा इस ह़ालत में रहें बशर्ते़ कि वोह (या'नी ह़लाला करने वाला) जानता हो कि उस का ह़लाला कराने का इरादा था ।''(2)

﴾8﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से पूछा गया कि एक शख़्स ने अपनी औ़रत को तीन त़लाक़ें दे दीं फिर इस पर नादिम हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे शर्मसार किया और शैत़ान की पैरवी की तो अपने लिये छुटकारे की कोई राह न पाएगा ।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा गया : ''आप ह़लाला करने वाले शख़्स के बारे में क्या फ़रमाते हैं ?'' फ़रमाया : ''जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को धोका देने की कोशिश करता है वोह ख़ुद धोके में रहता है ।''(3)

## तम्बीह :

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करना पहली दो अह़ादीसे मुबा-रका में ला'नत की वज्ह से वाज़ेह़ है और येह दोनों अह़ादीसे मुबा-रका ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) के नज़्दीक इस सूरत पर मह़मूल हैं कि जब येह शर्त़ लगाई जाए कि ह़लाला करने वाला हम-बिस्तरी (या'नी वत़ी करने) के फ़ौरन बा'द त़लाक़ दे देगा या निकाह़ को फ़ासिद करने वाली कोई शर्त़ आ़इद की जाए तो उस वक़्त ह़लाला करना गुनाहे कबीरा कहलाएगा । लिहाज़ा त़लाक़ देने वाला, ह़लाला करने वाला और वोह औ़रत तीनों इस घटिया फ़े'ल के इरतिकाब की वज्ह से फ़ासिक़ हो जाएंगे । इसी वज्ह से कई शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام का इसे मुत़्लक़न कबीरा क़रार देना इसी सूरत पर मह़मूल है क्यूं कि फ़ासिद शर्त़ के बिग़ैर येह फ़े'ल मक्रूह है, न कि ह़राम, चे जाए कि कबीरा गुनाह हो और उन के पोशीदा इरादों और निकाह़ से पहले वाली शराइत़ का कोई ए'तिबार नहीं ।(4)

---

1 ......المصنف لعبد الرزاق ، كتاب النكاح ، باب التحليل ، الحديث : ۱۰۸۱۸ ، ج ۶ ، ص ۲۱۰ ـ

2 ......المرجع السابق ، الحديث : ۱۰۸۲۰ ـ 3 ......المرجع السابق ، الحديث : ۱۰۸۲۱ ـ

4 ...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1182 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''बहारे शरीअ़त'' जिल्द दुवुम सफ़ह़ा......



www.dawateislami.net

अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام के एक गुरौह ने दोनों अहादीसे मुबा-रका को मुत्लक़ रखते हुए ह़लाला को ह़राम क़रार दिया है। उन में से चन्द सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن और ताबिईने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام का हम ने ज़िक्र किया है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 110 हि.) फ़रमाते हैं : ''जब तीनों की निय्यत ह़लाला की हो तो निकाह़ ही फ़ासिद है।'' जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नख़ई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''जब पहले या दूसरे शोहर या औ़रत तीनों में से किसी एक की ह़लाला की निय्यत हो तो दूसरे शोहर का निकाह़ बात़िल होगा और औ़रत पहले शोहर के लिये ह़लाल न होगी।''

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुसय्यब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''जिस ने किसी औ़रत से इस लिये निकाह़ किया ताकि वोह उसे पहले शोहर के लिये ह़लाल करे तो वोह पहले के लिये ह़लाल न होगी।'' सय्यिदुना इमाम मालिक, सय्यिदुना लैस, सय्यिदुना इमाम सुफ़्यान सौरी और सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने भी इस क़ौल में इन की पैरवी की है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَوَّل (मु-तवफ़्फ़ा 241 हि.) से पूछा गया : ''एक शख़्स ने किसी औ़रत से इस निय्यत से निकाह़ किया कि वोह उसे पहले शोहर के लिये ह़लाल कर दे और औ़रत को इस बात का इ़ल्म नहीं।'' तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : ''वोह ह़लाला करने वाला है और जब उस निकाह़ से तह़्लील (या'नी औ़रत को पहले शोहर के लिये ह़लाल करने) का इरादा करे तो मल्ऊ़न है।''(1)

❁❁❁❁❁❁❁

......180 पर ह़लाला के बारे में अह़्नाफ़ का मौक़िफ़ येह है कि ''निकाह़ बि शर्त़ित्तह़्लील (या'नी ह़लाला की शर्त़ के साथ निकाह़ करना) जिस के बारे में ह़दीस में ला'नत आई, वोह येह है कि अ़क़्दे निकाह़ या'नी ईजाब व क़बूल में ह़लाला की शर्त़ लगाई जाए और येह निकाह़ मक्रूहे तह़रीमी है, ज़ौजे अव्वल व सानी (या'नी पहला शोहर जिस ने त़लाक़ दी और दूसरा जिस से निकाह़ किया) और औ़रत तीनों गुनहगार होंगे मगर औ़रत इस निकाह़ से भी ब शराइत़े ह़लाला शोहरे अव्वल के लिये ह़लाल हो जाएगी और शर्त़ बात़िल है और शोहरे सानी त़लाक़ देने पर मजबूर नहीं और अगर अ़क़्द में शर्त़ न हो अगर्चे निय्यत में हो तो कराहत अस्लन नहीं बल्कि अगर निय्यते ख़ैर हो तो मुस्तह़िक़े अज्र है।'' (الدرالمختار، کتاب الطلاق، باب الرجعة، ج۵، ص۵۱، وغیرہ)

(1)......کتاب الکبائر للذھبی، الکبیرۃ الخامسة والثلاثون، ص ۱۵۸۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 263 : बीवी की छुपी बातों को ज़ाहिर करना

## कबीरा नम्बर 264 : शोहर की पोशीदा बातों को ज़ाहिर करना

### ( या'नी दोनों का जिमाअ़ की तफ़्सीलात और इस त़रह़ की मख़्फ़ी बातें दूसरों के सामने बयान करना )

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक ख़बीस तरीन वोह मियां बीवी होंगे जो एक दूसरे के साथ ख़ल्वत इख़्तियार करें फिर उन दोनों में से हर एक दूसरे की राज़ की बातें लोगों में ज़ाहिर करे।''(1)

﴾2﴿...... एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं : ''बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बड़ी अमानत येह होगी कि मियां बीवी एक दूसरे के साथ ख़ल्वत इख़्तियार करें फिर शोहर अपनी बीवी की राज़ की बातें फैलाए।''(2)

﴾3﴿...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर थी। मर्द और औ़रतें आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास बैठे हुए थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''कोई मर्द ऐसा भी है जो अपनी बीवी से सोह़बत करने को बयान करे और कोई औ़रत ऐसी भी है जो अपने ख़ावन्द के साथ हम-बिस्तरी करने की बातों को ज़ाहिर करे।'' येह सुन कर लोगों पर ख़ामोशी छा गई। (आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं :) मैं ने अ़र्ज़ की : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मर्द औ़रतें तो ऐसा करते हैं।'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐसा मत किया करो, ऐसा करने वाला शैत़ान की मिस्ल है जो अपनी मादा से मिले और उस से बदकारी करे जब कि लोग देख रहे हों।''(3)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب النکاح، باب تحریم افشاء سرالمرأة، الحدیث : ۳۵۴۲، ص۹۱۹ "ینشر......الخ" بدلہ "ینشرسرھا"۔

2 ......المرجع السابق، الحدیث : ۳۵۴۳۔

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث اسماء ابنة یزید، الحدیث : ۲۷۶۵۴، ج۱۰، ص۴۳۹۔

المعجم الکبیر، الحدیث : ۴۱۴، ج۲۴، ص۱۶۲۔



www.dawateislami.net

﴾4﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''हो सकता है तुम में से कोई अपनी बीवी के साथ ख़ल्वत इख़्तियार करे और दरवाज़ा बन्द कर ले फिर पर्दा कर के उस से अपनी ह़ाजत पूरी करे। फिर जब बाहर निकले तो उस का तज़्किरा अपने दोस्तों से करे और हो सकता है तुम में से कोई औ़रत दरवाज़ा बन्द कर के पर्दे में अपने शोहर से ह़ाजत पूरी करे फिर उस (या'नी हम–बिस्तरी की बातों) का तज़्किरा अपनी सहेलियों से करे।'' एक सुर्ख़ी माइल सियाह चेहरे वाली औ़रत ने अ़र्ज़ की : ''ब ख़ुदा ! **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! बिला शुबा औ़रतें ऐसा करती हैं और यक़ीनन मर्द भी ऐसा करते हैं।'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐसा मत करो, इस की मिसाल शैत़ान की है जो रास्ते के दरमियान अपनी मादा से मिले उस से अपनी ह़ाजत पूरी करे फिर उसे वहीं छोड़ कर चला जाए।''[1]

﴾5﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''कस्रते जिमाअ़ पर फ़ख़्र करना ह़राम है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने लहीआ़ इस की वज़ाह़त करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : ''या'नी ऐसी बात जिस के ज़रीए जिमाअ़ पर फ़ख़्र किया जाए।[2] या'नी मुत़्लक़ फ़ख़्र करना ह़राम नहीं बल्कि ऐसा फ़ख़्र करना ह़राम है जिस की वज्ह से इ़ज़्ज़त का दामन तार तार हो जाए।''

﴾6﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़–लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : ''तीन के इ़लावा सब मजालिस अमानत हैं : (1)...... ह़राम ख़ून बहाने की मजलिस (2)...... ह़राम–कारी की मजलिस और (3)...... नाह़क़ माल लेने की मजलिस।''[3]

## तम्बीह :

इन दोनों को भी कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है जो कि सह़ीह़ अह़ादीस से वाज़ेह़ है और येही ज़ाहिर है क्यूं कि इस में जिस के बारे में बात की जा रही है उस की ईज़ा रसानी और ग़ीबत पाई जा रही है और उस इ़ज़्ज़त को पामाल करना पाया जा रहा है जिस के सीग़ए राज़ में रखने पर और फैलाने की क़बाह़त पर उ़–क़ला का इत्तिफ़ाक़ है। अ़न्क़रीब **किताबुश्शहादात**

---

1 ......مجمع الزوائد، كتاب النكاح، باب كتمان ما يكون بين الرجل واهله، الحديث: ۷۵۶۳، ج۴، ص۵۴۰ ـ

2 ......شعب الايمان للبيهقى، باب فى حفظ اللسان، الحديث: ۵۲۳۲، ج۴، ص۳۱۴ ـ

3 ......سنن ابى داود، كتاب الادب، باب فى نقل الحديث: الحديث: ۴۸۶۹، ص۱۵۸۰ ـ



www.dawateislami.net

में इस के मु-तअ़ल्लिक़ वज़ाह़त आएगी।

इस की कराहत और हु़रमत के बारे में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़्युद्दीन अबू ज़-करिय्या यह़्या बिन शरफ़ न-ववी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 676 हि.) का कलाम मुख़्तलिफ़ है क्यूं कि उन्हों ने **किताबुन्निकाह़** में ज़िक्र फ़रमाया कि येह मक्रूह है और शर्ह़े मुस्लिम में मुस्लिम शरीफ़ की मज़्कूरा ह़दीस से इस्तिद्लाल करते हुए इसे ह़राम क़रार दिया। बहर ह़ाल इन दोनों अक़्वाल में इस त़रह़ तत़्बीक़ दी जा सकती है कि ह़राम उस वक़्त होगा जब वोह अपनी बीवी के ऐसे पोशीदा अह़्वाल का तज़्किरा करे कि जो उन दोनों के दरमियान जिमाअ़ और ख़ल्वत के वक़्त पेश आते हैं और मक्रूह उस वक़्त होगा जब वोह ऐसी बात ज़िक्र करे जिसे मुरव्वतन नहीं छुपाया जाता। लिहाज़ा बिग़ैर मक़्सद सिर्फ़ जिमाअ़ का तज़्किरा करना मक्रूह होगा। फिर मैं ने बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का कलाम देखा कि उन्हों ने भी मेरे ज़िक्र कर्दा उ़न्वान के मुत़ाबिक़ बयान फ़रमाया।

۞۞۞۞۞۞۞

## कबीरा नम्बर 265 : बीवी या लौंडी के पिछले मक़ाम में वत़ी करना

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाता जो किसी मर्द से बद फ़े'ली करे या बीवी की दुबुर में वत़ी करे।"(1)

﴾2﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने औ़रत की दुबुर में वत़ी की तह़क़ीक़ उस ने (हु़क्मे शरीअ़त का) इन्कार किया।"(2)

﴾3﴿...... हु़स्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाता जो अपनी बीवी की दुबुर में वत़ी करे।"(3)

---

1 ......جامع الترمذی،ابواب الرضاع،باب ماجاء فی کراهیة إتیان النساء فی أدبارهن، الحدیث:۱۱۶۵،ص۱۷۶۶۔

2 ......المعجم الاوسط،الحدیث: ۹۱۷۹،ج۶،ص۳۹۳۔

3 ......سنن ابن ماجه،ابواب النکاح ،باب النهی عن إتیان النساء فی أدبارهن ،الحدیث:۱۹۲۳،ص۲۵۹۲۔



www.dawateislami.net

﴾4﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने अपनी बीवी से उस के पिछले मक़ाम में वत़ी की वोह मल्ऊ़न है।''(1)

﴾5﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''जिस ने ह़ाएज़ा से या बीवी की दुबुर में वत़ी की या किसी काहिन के पास आया और उस की तस्दीक़ की तो उस ने उस चीज़ का इन्कार किया जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर नाज़िल फ़रमाई।''(2)

﴾6﴿...... एक रिवायत में है, ''वोह उस से बरी हो गया जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर नाज़िल फ़रमाया।''(3)

﴾7﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह लिवात़ते सुग़रा है।'' या'नी आदमी का अपनी बीवी की दुबुर में वत़ी करना।(4)

﴾8﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''शर्मो ह़या इख़्तियार करो, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़क़ बयान करने से ह़या नहीं फ़रमाता। औ़रतों के पिछले मक़ाम में जिमाअ़ न करो।''(5)

﴾9﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुज़ैमा बिन साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन बार इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़क़ बयान करने से ह़या नहीं फ़रमाता (फिर इर्शाद फ़रमाया) औ़रतों से उन के पिछले मक़ाम में जिमाअ़ न करो।''(6)

﴾10﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले अकरम, शाहे बनी

---

1 ......سنن ابی داود ،کتاب النکاح ،باب فی جامع النکاح ،الحدیث:۲۱۶۲،ص۱۳۸۲۔

2 ......سنن ابن ماجہ،ابواب الطھارۃ ،باب النھی عن إتیان الحائض ،الحدیث:۶۳۹،ص۲۵۱۴۔

3 ......سنن ابی داود، کتاب الکھانۃ والطیر ،باب فی الکھان ،الحدیث : ۳۹۰۴،ص۱۵۱۰۔

4 ......المسند للامام احمد بن حنبل،مسند عبد اللہ بن عمرو بن العاص،الحدیث : ۶۷۱۸،ج۲،ص۶۰۲۔

5 ......المعجم الکبیر ،الحدیث : ۳۷۳۳،ج۴،ص۸۸۔

6 ......سنن ابن ماجہ،ابواب النکاح ،باب النھی عن إتیان النساء فی أدبارھن ،الحدیث : ۱۹۲۴،ص۲۵۹۲۔



www.dawateislami.net

आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने औरतों के पिछले मक़ाम में जिमाअ़ करने से मन्अ़ फ़रमाया।(1)

﴾11﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या करो, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़क़ बयान करने से ह़या नहीं फ़रमाता, औ़रतों से उन की दुबुर में जिमाअ़ करना ह़लाल नहीं।"(2)

﴾12﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन लोगों पर ला'नत फ़रमाई है जो औ़रतों से उन के पिछले मक़ाम में जिमाअ़ करते हैं।"(3)

﴾13﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "औ़रतों से उन के पिछले मक़ाम में जिमाअ़ न किया करो, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़क़ बयान करने से ह़या नहीं फ़रमाता।"(4)

## तम्बीह :

इसे कई उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام की तसरीह़ के मुत़ाबिक़ कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है। आप को सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका से मा'लूम हो चुका है कि इस फ़े'ल के इरतिकाब से येह चीज़ें लाज़िम आती हैं : (1)...... अह़कामे शरीअ़त का इन्कार करना (2)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का उस की त़रफ़ नज़रे रह़मत न फ़रमाना और (3)...... इस फ़े'ल का लिवात़ते सुग़रा (या'नी छोटी लिवात़त) कहलाना और येह सब से बुरी और सख़्त वई़द है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलाल बुल्क़ीनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَنِی का इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करने का क़ौल मह़ल्ले नज़र है और शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा सलाहुद्दीन अ़लाई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मु-तवफ़्फ़ा 761 हि.) ने भी इस बात की वज़ाह़त की है कि "इसे लिवात़त के साथ मुल्ह़िक़ करना चाहिये क्यूं कि ह़दीसे पाक में ऐसा करने वाले पर ला'नत साबित है।"

❁❁❁❁❁❁❁

---

1......المعجم الاوسط ،الحدیث: ۷۷۲۲،ج۵،ص۳۹۳۔

2......سنن الدار قطنی، کتاب النکاح،باب المهر، الحدیث : ۳۷۰۸،ج۳،ص۳۴۱، دون قوله:من اللّٰه۔

3......المعجم الاسط ،الحدیث : ۱۹۳۱ ،ج ۱ ،ص۵۲۴۔

4......شعب الإیمان للبیهقی،باب فی تحریم الفروج،الحدیث:۵۳۷۵،ج۴،ص۳۵۵۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 266 : अजनबी (मर्द या औ़रत) के सामने बीवी से वत़ी करना

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करना तो बड़ा वाज़ेह़ है क्यूं कि इस का मुर-तकिब ह़क़ीक़त में दीन और दीनदारी की बहुत कम परवाह करता है। कबीरा होने की दूसरी वज्ह येह है कि येह चीज़ ग़ालिबन बल्कि क़त़ई त़ौर पर इसे अजनबी औ़रत के साथ मुलव्वस होने या अजनबी मर्द के अपनी बीवी के साथ मुलव्वस होने की त़रफ़ ले जाती है। जिस ने अजनबी औ़रत की त़रफ़ नज़र करने को कबीरा क़रार दिया उसे ब द-र-जए औला इस को भी कबीरा गुनाह शुमार करना चाहिये क्यूं कि येह फ़साद के ए'तिबार से इस से ज़ियादा बुरा और क़बीह़ फ़े'ल है।

### ......फ़ज़ाइले कुरआने करीम......

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

"येह कुरआने मजीद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ज़ियाफ़त है तो तुम अपनी इस्तित़ाअ़त के मुत़ाबिक़ इस की ज़ियाफ़त क़बूल करो। बेशक येह कुरआने मजीद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मज़बूत़ रस्सी, नूरे मुबीन, नफ़्अ़ बख़्श शिफ़ा, जो इसे इख़्तियार करता है उस के लिये ढाल और जो इस पर अ़मल करे उस के लिये नजात है। येह ह़क़ से नहीं फिरता कि इस के इज़ाले के लिये थकना पड़े और येह टेढ़ी राह नहीं कि इसे सीधा करना पड़े। इस के फ़वाइद ख़त्म नहीं होते और कस्रते तिलावत से पुराना नहीं होता (या'नी अपनी ह़ालत पर क़ाइम रहता है)। तो तुम इस की तिलावत किया करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हर ह़र्फ़ की तिलावत पर दस नेकियां अ़त़ा फ़रमाएगा। मैं नहीं कहता कि "**الٓمّٓ**" एक ह़र्फ़ है बल्कि "**الف**" एक ह़र्फ़ "**لام**" एक ह़र्फ़ और "**ميم**" एक ह़र्फ़ है।"

(المستدرک، الحدیث:۲۰۸۷، ج۲، ص۲۵۶)



www.dawateislami.net

# ۱۔ باب الصداق

## कबीरा नम्बर 267 : मह्र अदा न करने की निय्यत से निकाह़ करना

### ( या'नी किसी औ़रत से इस इरादे से निकाह़ करना कि अगर उस ने मह्र का मुत़ा-लबा किया तो अदा नहीं करेगा )

﴾1﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जिस शख़्स ने किसी औ़रत से कम या ज़ियादा मह्र पर निकाह़ किया जब कि इस का इरादा येह था कि उसे मह्र अदा न करेगा तो इस ने उसे धोका दिया। अब अगर उस औ़रत को उस का ह़क़ मह्र अदा किये बिग़ैर मर गया तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि वोह ज़ानी (की मिस्ल गुनाहगार) होगा और जिस शख़्स ने किसी से क़र्ज़ लिया जब कि क़र्ज़ ख़्वाह को वापस करने का इरादा न था तो इस ने उसे धोका दिया यहां तक कि उस का माल हड़प कर गया तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि वोह चोर (शुमार) होगा।''(1)

﴾2﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''जिस ने किसी औ़रत का मह्र पूरा पूरा मुक़र्रर किया जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जानता है कि इस का अदा करने का इरादा नहीं तो उस ने औ़रत को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम पर धोका दिया और बात़िल त़रीक़े से उस की शर्मगाह को ह़लाल करना चाहा। वोह क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि वोह ज़ानी (की मिस्ल गुनाहगार) होगा।''(2)

﴾3﴿...... ह़ुज़ूर सय्यिदे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बड़ा गुनाह येह है कि कोई शख़्स किसी औ़रत से निकाह़ करे, फिर अपनी ह़ाजत पूरी कर के उसे त़लाक़ दे दे और उस का मह्र भी ले जाए। कोई शख़्स मज़्दूर से काम तो ले लेकिन उस की उजरत अदा न करे और जो किसी जानवर को बे फ़ाएदा मार डाले।''(3)

﴾4﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

---

1 ......المعجم الصغير للطبرانى، الحديث: ١١١، الجزء الاول، ص٤٣۔

2 ......السنن الكبرىٰ للبيهقى، كتاب الصداق، باب ما جاء فى حبس الصداق۔۔الخ، الحديث: ١٤٣٩٧، ج٧، ص٣٩٥۔

3 ......المستدرك، كتاب النكاح، باب أعظم الذنوب عند الله، الحديث: ٢٧٩٧، ج٢، ص٥٣٨۔



www.dawateislami.net

''जिस शख़्स ने किसी ओ़रत से इस निय्यत से निकाह़ किया कि वोह उस का मह्‌र अदा न करेगा और (अदा किये बिग़ैर) मर गया तो मौत के दिन ज़ानी (की मिस्ल गुनाहगार) होगा।''[1]

## तम्बीह :

इसे भी कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है, येह पहली सह़ीह़ ह़दीस और बा'द वाली अह़ादीसे मुबा-रका से वाज़ेह़ है और इसी पर बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने ए'तिमाद किया है लेकिन उन्हों ने उ़न्वान येह दिया है कि वोह किसी ओ़रत से निकाह़ करे और उस के दिल में येह ख़याल न हो कि वोह मह्‌र अदा करेगा। मगर मैं ने इस से मुख़्तलिफ़ उ़न्वान दिया है और वोह बड़ा वाज़ेह़ है। या'नी जिस के दिल में न तो मह्‌र अदा करने का ख़याल हो और न मन्अ़ करने का तो उस पर हु़रमत का इत़्लाक़ नहीं होगा चे जाए कि कबीरा क़रार दिया जाए। मैं ने इस इ़बारत से येही समझा है। अलबत्ता ! जिस का येह क़ौल है उस ने पहली ह़दीस के ज़ाहिर से धोका खाया है और उस के आख़िरी हिस्से की त़रफ़ नहीं देखा और न ही इस की माबा'द रिवायत की त़रफ़ देखा जिस में येह है कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जानता है कि इस का मह्‌र अदा करने का इरादा नहीं।'' अगर वोह इस को देखता तो वोही उ़न्वान देता जो मैं ने दिया है।

**सुवाल :** इस को कबीरा गुनाह कहने की क्या वज्ह है ?

**जवाब :** इस गुनाह के कबीरा होने की वज्ह येह है कि इस में तीन कबीरा गुनाह पाए जाते हैं : (1) धोका (2) ज़ुल्म और (3) आज़ाद के मुनाफ़ेअ़ किसी चीज़ के बदले ह़ासिल करना फिर इ़वज़ की अदाएगी से इन्कार कर देना।

मैं ने उ़न्वान में ओ़रत के मुत़ा-लबे की क़ैद इस लिये लगाई ताकि वोह इस से निकल जाए जिस का पुख़्ता इरादा हो कि वोह मह्‌र अदा न करेगा (और ओ़रत भी मुत़ा-लबा न करे) क्यूं कि आ़म त़ौर पर ओ़रतें या तो मह्‌र मुआ़फ़ कर देती हैं या फिर सारी ज़िन्दगी इस का मुत़ा-लबा ही नहीं करतीं। लिहाज़ा इस सूरत में मह्‌र अदा न करने की वज्ह से वोह गुनाहगार नहीं होगा, चे जाए कि उसे फ़ासिक़ कहा जाए।

۞۞۞۞۞۞۞

---

1 ......المعجم الكبير،الحديث: ٧٣٠٢،ج٨،ص٣٥۔



www.dawateislami.net

# ٢۔باب الولیمۃ

## कबीरा नम्बर 268 : ज़ी रूह़ की तस्वीर बनाना

**या'नी किसी क़ाबिले ता'ज़ीम चीज़ पर या फिर मिट्टी वग़ैरा जैसी किसी ह़क़ीर चीज़ पर किसी जानदार की तस्वीर बनाना अगर्चे उस की कोई ह़क़ीक़त भी न हो म-सलन परों वाले घोड़े की तस्वीर बनाना**

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِیْنًا ﴿۵۷﴾

(پ٢٢، الاحزاب:٥٧)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक जो ईज़ा देते हैं **अल्लाह** और उस के रसूल को उन पर **अल्लाह** की ला'नत है दुन्या और आख़िरत में और **अल्लाह** ने उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इक्रिमा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इर्शाद फ़रमाते हैं : "इस से मुराद वोह लोग हैं जो (जानदारों की) तस्वीरें बनाते हैं।"[(1)]

﴾1﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जो लोग येह (जानदारों की) तस्वीरें बनाते हैं, क़ियामत के दिन उन्हें अ़ज़ाब दिया जाएगा, उन से कहा जाएगा : जिन तसावीर को तुम ने बनाया उन में जान डालो।" (और वोह ऐसा न कर सकेंगे)[(2)]

﴾2﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक सफ़र (या'नी ग़ज़्वए तबूक) से वापस तशरीफ़ लाए जब कि मैं ने रोशन-दान पर पर्दा लटका रखा था। जिस में तस्वीरें थीं। जब मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे देखा तो चेहरए अन्वर का रंग मु-तग़य्यर हो गया और इर्शाद फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां क़ियामत के दिन वोह लोग सब से सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तला होंगे जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तख़्लीक़ की मुशा-बहत करते हैं।" उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा

---

(1)......تفسیر الطبری،پ٢٢،الأحزاب،تحت الآیۃ٥٧،الحدیث : ٢٨٦٣٩،ج١٠،ص٣٣٠،مفهوماً۔

(2)......صحیح البخاری،کتاب اللباس ،باب عذاب المصورین یوم القیامۃ ،الحدیث : ٥٩٥١،ص٥٠٤۔



www.dawateislami.net

सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : "हम ने उसे काट कर एक या दो तक्ये बना लिये।"(1)

﴾3﴿...... सहीहैन (या'नी बुख़ारी व मुस्लिम) की एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं : (उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं :) नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ लाए तो मेरे घर में तस्वीरों वाला एक पर्दा (लटका हुवा) था, (उसे देख कर) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर का रंग मु-तग़य्यर हो गया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे पकड़ कर फाड़ दिया और इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन वोह लोग सख़्त तरीन अ़ज़ाब में मुब्तला होंगे जो येह (जानदारों की) तस्वीरें बनाते हैं।"(2)

﴾4﴿...... एक और रिवायत में है कि "उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने एक तक्या ख़रीदा जिस में तसावीर थीं। जब सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे देखा तो दरवाज़े पर ही ठहर गए और अन्दर तशरीफ़ न लाए। (उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं :) मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर पर ना पसन्दी-दगी के आसार मह़सूस किये तो अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में तौबा करती हूं, मुझ से क्या ख़ता सरज़द हुई है ?" तो शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह तक्या कैसा है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं ने इसे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बैठने और टेक लगाने के लिये ख़रीदा है।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इन तस्वीरों के बनाने वालों को क़ियामत के दिन अ़ज़ाब दिया जाएगा और उन से कहा जाएगा जिन तसावीर को तुम ने बनाया उन में जान डालो।" फिर मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : "जिस घर में तसावीर होती हैं उस में (रह़मत) के फ़रिश्ते दाख़िल नहीं होते।"(3)

﴾5﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا की ख़िदमत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "मैं येह तस्वीरें बनाता हूं, मुझे इस के बारे में फ़तवा दीजिये।"

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب ما وطیٔ من التصاویر، الحدیث: ۵۹۵۴، ص۵۰۵۔
صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب تحریم تصویر......الخ، الحدیث: ۵۵۲۸، ص۱۰۵۵۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الادب، باب ما یجوز من الغضب والشدۃ لأمر اللّٰہ تعالی، الحدیث: ۶۱۰۹، ص۵۱۵۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب البیوع، باب التجارۃ فیما یکرہ لبسہ للرجال والنساء، الحدیث: ۲۱۰۵، ص۱۶۴۔



www.dawateislami.net

तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरे क़रीब आओ।'' वोह आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़रीब हुवा, फिर फ़रमाया : ''मेरे क़रीब आओ।'' चुनान्चे वोह और क़रीब हो गया यहां तक कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना हाथ उस के सर पर रख दिया और इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें उस बात से आगाह न करूं जो मैं ने दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह्रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी है ? आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''हर मुसव्विर जहन्नमी है, उस की बनाई हुई हर तस्वीर के बदले एक जिस्म बनाया जाएगा जो उसे जहन्नम में अ़ज़ाब देगा।'' इस के बा'द आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''अगर तुझे तस्वीरें बनानी ही हैं तो दरख़्तों और बे जान चीज़ों की बनाया करो।''(1)

﴾6﴿...... एक रिवायत में है कि ''उस ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : ''मेरा ज़रीअ़ए मआ़श अपने हाथ की कारीगरी है और मैं (जानदारों की) तस्वीरें बनाता हूं (इस के मु-तअ़ल्लिक़ आप क्या फ़रमाते हैं ?)।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इर्शाद फ़रमाया : ''मैं तुम्हें वोही बात बताऊंगा जो मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुनी है कि ''जिस ने कोई तस्वीर बनाई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस वक़्त तक अ़ज़ाब देता रहेगा जब तक कि वोह उस में रूह़ न फूंक दे और वोह उस में कभी भी रूह़ न फूंक सकेगा।'' इस पर वोह शख़्स (ग़ुस्से या तकब्बुर की वज्ह से) सख़्त नाराज़ हो गया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''अफ़्सोस है तुझ पर, अगर तुझे येह काम करना ही है तो दरख़्त या ग़ैर ज़ी रूह़ की तसावीर बनाया कर।''(2)

﴾7﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मैं ने शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : ''क़ियामत के दिन सब से सख़्त अ़ज़ाब तस्वीरें बनाने वालों को होगा।''(3)

﴾8﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना कि : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''उस शख़्स से बढ़ कर कौन ज़ालिम है जो मेरी तख़्लीक़ की त़रह़ पैदा करना चाहता है, तो ऐसे लोगों को चाहिये कि वोह एक ज़र्रा पैदा कर के दिखाएं या एक दाना बना दें या एक जव ही

---

(1)......صحیح مسلم، کتاب اللباس ،باب تحریم تصویر صورۃ الحیوان......الخ ،الحدیث : ۵۵۴۰،ص۱۰۵۶۔

(2)......صحیح البخاری، کتاب البیوع، باب بیع التصاویر التی لیس فیھا روح، الحدیث : ۲۲۲۵،ص۱۷۲۔

(3)......صحیح مسلم ،کتاب اللباس ،باب تحریم تصویر صورۃ الحیوان ......الخ ،الحدیث : ۵۵۳۷،ص۱۰۵۶۔



www.dawateislami.net

पैदा कर के दिखा दें ।''(1) (यक़ीनन वोह ऐसा नहीं कर सकते)

﴿9﴾...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क़ियामत के दिन जहन्नम से एक गरदन ज़ाहिर होगी जिस की दो आंखें होंगी जिन से वोह देखेगी, दो कान होंगे जिन से वोह सुनेगी और एक ज़बान होगी जिस से वोह बोलेगी और कहेगी : ''मैं तीन आदमियों पर मुसल्लत की गई हूं : (1)...... जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ कोई शरीक ठहराया (2)...... हर सरकश ज़ालिम और (3)...... तस्वीरें बनाने वाले ।''(2)

﴿10﴾...... हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : ''ख़बरदार ! मैं तुझे ऐसे काम के लिये भेजूंगा जिस के लिये ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे भेजा था कि हर तस्वीर मिटा दो और हर ऊंची क़ब्र को बराबर कर दो ।(3)''(4)

﴿11﴾...... अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم से मरवी है कि ''सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक जनाज़े में शरीक थे कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम में से कौन है जो मदीना जाए और हर बुत तोड़ दे, हर क़ब्र बराबर कर दे और हर तस्वीर मिटा दे ।'' तो एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं (जाता हूं) ।'' रावी फ़रमाते हैं कि उस ने अहले मदीना को हैबत ज़दा कर दिया । वोह शख़्स गया और वापस आ कर अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने तमाम बुत तोड़ दिये, हर क़ब्र को बराबर कर दिया और हर तस्वीर को मिटा दिया है ।'' इस के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''आयिन्दा जिस ने इन में से कोई काम किया उस ने मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर नाज़िल कर्दा (शरीअ़त) का इन्कार किया ।''(5)

---

(1)......صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب تحریم تصویر صورة الحیوان ......الخ، الحدیث : ۵۵۴۳، ص۱۰۵۶ ـ

(2)......جامع الترمذی، ابواب صفة جهنم، باب ماجاء فی صفة النار، الحدیث : ۲۵۸۳، ص۱۹۱۱، "جعل "بدله"دعا"ـ

(3)...... मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ''ख़याल रहे कि यहां क़ब्रों से यहूदो नसारा की क़ब्रें मुराद हैं न कि मुसल्मानों की ।'' मज़ीद तफ़्सील के लिये मुता-लआ़ कीजिये ! (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 488, मत्बूआ : ज़ियाउल क़ुरआन)

(4)......صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب الأمر بتسویة القبر، الحدیث : ۲۲۴۳، ۲۲۴۴، ص۸۳۰، عن ابی الهَیَّاج۔

(5)......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند علی بن ابی طالب، الحدیث : ۶۵۷، ج۱، ص۱۸۸ ـ



www.dawateislami.net

﴾12﴿...... सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "फ़रिश्ते उस घर में दाखि़ल नहीं होते जिस में कोई कुत्ता या तस्वीर हो।"(1)

एक रिवायत में وَلَا صُوْرَةٌ की जगह وَلَا تَمَاثِيْلُ (या'नी मुजस्समे) है।(2)

﴾13﴿...... मरवी है कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर होने का वा'दा किया लेकिन ताख़ीर हो गई यहां तक कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर येह बात शाक़ गुज़री। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (घर से) बाहर तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام से मुलाक़ात हुई तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस्तिफ़्सार फ़रमाने पर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "हम (या'नी फ़रिश्ते) ऐसे घर में दाखि़ल नहीं होते जहां कुत्ता या तस्वीर हो।" (उस दिन कुत्ते का एक पिल्ला आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तख़्त मुबारक के नीचे आ कर बैठ गया था। مسلم) (3)

﴾14﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "फ़रिश्ते उस घर में दाखि़ल नहीं होते जिस में तस्वीर, जुनुबी (या'नी जिस पर गु़स्ल फ़र्ज़ हो) या कुत्ता हो।"(4)

﴾15﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "एक मर्तबा मेरे पास ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام आए और अ़र्ज़ की : "मैं आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास गुज़श्ता रात ह़ाज़िर हुवा था लेकिन दरवाज़े पर तस्वीरों की वज्ह से दाखि़ल न हुवा। घर में नक़्शो निगार वाला पर्दा और एक कुत्ता भी था लिहाज़ा आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم घर में मौजूद तसावीर के सर को काटने का हुक्म दीजिये ताकि वोह दरख़्त की त़रह़ हो जाएं, फिर पर्दे के बारे में येह हुक्म इर्शाद फ़रमाइये कि इसे काट कर दो तक्ये बना लिये जाएं जो रौंदे जाते रहें और कुत्ते को (घर से) निकालने का हुक्म फ़रमाइये।"(5)

1 ......صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب تحریم تصویر صورة الحیوان......الخ، الحدیث : ۵۵۱۴، ص۱۰۵۴۔

2 ......المرجع السابق، الحدیث : ۵۵۱۹، ص۱۰۵۵۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب لاتدخل الملائکة ......الخ، الحدیث : ۵۹۶۰، ص۵۰۵۔
صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب تحریم تصویر ...... الخ، الحدیث : ۵۵۱۱، ص۱۰۵۴۔

4 ......سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب الجنب یؤخر الغسل، الحدیث : ۲۲۷، ص۱۲۳۸۔

5 ......سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب فی الصور، الحدیث : ۴۱۵۸، ص۱۵۲۶۔



www.dawateislami.net

﴾16﴿...... एक रिवायत में है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "(एक दफ़्आ़) मेरे पास ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام आए और अ़र्ज़ की : "मैं रात को भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िर हुवा था लेकिन घर के दरवाज़े पर किसी इन्सान की तसावीर की वज्ह से मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास न आया और घर में एक नक़्शो निगार वाला रंगीन कपड़ा और एक कुत्ता भी था। लिहाज़ा दरवाज़े पर जो तस्वीरें हैं उन के सरों को काटने का हुक्म फ़रमाइये ताकि वोह दरख़्त की त़रह़ हो जाएं और पर्दे के मु-तअ़ल्लिक़ हुक्म फ़रमाइये कि इसे काट कर दो गद्दे बना लिये जाएं ताकि वोह (तस्वीरें) पैरों से रौंदी जाएं और कुत्ते को भी बाहर निकालने का हुक्म दीजिये।" पस हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऐसा ही किया। वोह पिल्ला (या'नी कुत्ते का बच्चा) ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन या सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का था जो आप के तख़्त के नीचे (बैठ गया) था। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म पर उसे निकाल दिया गया।(1)

﴾17﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि "मैं हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा जब कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर रन्जो ग़म के आसार नुमूदार थे। मैं ने वज्ह दरयाफ़्त की तो इर्शाद फ़रमाया : "3 दिन से मेरे पास ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام नहीं आए।" अचानक आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुत्ते का बच्चा अपने सामने बैठे देखा तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म पर उसे मार दिया गया। ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते आ़लीशान में ह़ाज़िर हुए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तबस्सुम फ़रमाया और दरयाफ़्त फ़रमाया : "आप मेरे पास क्यूं नहीं आए ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "हम (या'नी रह़मत के फ़रिश्ते) उस घर में दाख़िल नहीं होते जिस में कुत्ता या तस्वीरें हों।"(2)

﴾18﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا इर्शाद फ़रमाती हैं कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने एक मख़्सूस वक़्त ह़ाज़िर होने का वा'दा किया। जब वोह लम्ह़ा आया तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ह़ाज़िर न हुए। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا इर्शाद फ़रमाती हैं "दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हाथ में एक अ़सा मुबारक था। आप

1 ......جامع الترمذی، ابواب الأدب، باب ماجاء أن الملائکة لاتدخل بیتا.الخ، الحدیث : ۲۸۰۶، ص۱۹۳۳ ـ

2 ......المسند للامام احمدبن حنبل، حدیث اسامة بن زید ، الحدیث: ۲۱۸۳۱، ج۸، ص۱۸۰، بتغیرٍ ـ



www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह इर्शाद फ़रमाते हुए उसे फेंक दिया कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं करते।'' फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मु-तवज्जेह हुए तो एक कुत्ते का पिल्ला चारपाई के नीचे देख कर दरयाफ़्त फ़रमाया : ''येह कुत्ता कब से आया है ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे नहीं मा'लूम।'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया तो मैं ने उसे बाहर निकाल दिया। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ह़ाज़िर हुए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से दरयाफ़्त फ़रमाया : ''आप ने मुझ से वा'दा किया, मैं आप के लिये बैठा रहा लेकिन आप नहीं आए।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ''मैं घर में मौजूद कुत्ते की वज्ह से ह़ाज़िर न हुवा, हम उस घर में दाख़िल नहीं होते जिस में कुत्ता या तस्वीर हो।''(1)

## तम्बीह :

मज़्कूरा गुनाह को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और येह ज़िक्र कर्दा सह़ीह़ अह़ादीस से वाज़ेह़ है। इसी वज्ह से उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام के एक गुरौह ने इसी मौक़िफ़ को इख़्तियार किया और येही ज़ाहिर है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़्यिुद्दीन अबू ज़-करिय्या यह़्या बिन शरफ़ न-ववी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 676 हि.) की शर्ह़े मुस्लिम में भी इसी त़रह़ है। मैं ने उ़न्वान में इस की हुरमत को आ़म ज़िक्र किया बल्कि येह उन अक़्साम की वज्ह से कबीरा है जिन की त़रफ़ मैं ने ज़ाहिरी त़ौर पर इशारा किया। क्यूं कि मज़्कूरा तमाम सूरतों में एक ही चीज़ को मुला-ह़ज़ा किया जा रहा है। नीज़ फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام का क़ौल भी इस की नफ़ी नहीं करता और जो तस्वीर ज़मीन या चटाई या दस्त-कारी के किसी नुमूने पर हो वोह जाइज़ है क्यूं कि इस से मुराद येह है कि इस को बाक़ी रखना जाइज़ है और ज़ाएअ़ करना वाजिब नहीं। जब किसी वलीमे की जगह में इस त़रह़ की तसावीर हों तो येह वहां ह़ाज़िरी के वुजूब से मानेअ़ नहीं। रहा जानदार की तस्वीर बनाना तो वोह मुत़्लक़न ह़राम है अगर्चे तस्वीर में बा'ज़ ऐसे ज़ाहिरी या बात़िनी आ'ज़ा पोशीदा हों जिन के बिग़ैर भी ज़िन्दगी पाई जा सकती है। फिर मैं ने **शर्ह़े मुस्लिम** में देखा कि उन्हों ने भी मेरे ज़िक्र कर्दा मौक़िफ़ की वज़ाह़त की। उन के कलाम का ख़ुलासा येह है :

''ह़ैवान की तस्वीर बनाना ह़राम है और इसे अह़ादीसे मुबा-रका में वारिद शदीद वई़द की बिना पर कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है ख़्वाह उस तस्वीर को क़ाबिले क़द्र जगह या

(1) ......صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب تحریم تصویر......الخ، الحدیث: ۵۵۱۱، ص۱۰۵۴، بتغیرٍ۔



www.dawateislami.net

ज़िल्लत व बे क़दरी की जगह पर रखने के लिये बनाया गया हो क्यूं कि इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वस्फ़े तख़्लीक़ से मुशा-बहत पाई जाती है। ख़्वाह वोह चटाई, कपड़े, दिरहम, दीनार, सिक्के, बरतन, दीवार, गद्दे या इस त़रह़ की किसी चीज़ पर हो। अलबत्ता ! दरख़्त और इस त़रह़ की बे जान चीज़ों की तस्वीर बनाना ह़राम नहीं। बाक़ी रहा येह मस्अला कि जिस चीज़ पर ह़ैवान की तस्वीर हो (उस का क्या हुक्म है ?) तो अगर वोह तस्वीर दीवार के साथ लटकी हुई हो या पहने हुए कपड़े या इमामे पर हो या फिर किसी ऐसी चीज़ पर हो जिस की ता'ज़ीम की जाती है तो ह़राम है। लेकिन अगर किसी ऐसी चीज़ में हो जिस की ता'ज़ीम नहीं की जाती जैसे चटाई, गद्दा और तक्या वग़ैरा तो ह़राम नहीं।''

**सुवाल :** क्या फ़िरिश्तगाने रह़मत उस घर में दाख़िल नहीं होते जिस में (चटाई वग़ैरा पर) तस्वीरें हों ?

**जवाब :** मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने आ़लीशान ''फ़रिश्ते उस घर में दाख़िल नहीं होते जिस में कुत्ता या तस्वीर हो।'' मुत़लक़ है, लिहाज़ा ज़ाहिर येही है कि येह हुक्म हर सूरत में आ़म है। और इस में कोई फ़र्क़ नहीं कि तस्वीर मुजस्सम हो या ग़ैर मुजस्सम, बहर ह़ाल ह़राम है। येह जुम्हूर सह़ाबा व ताबिईन उ़-लमा رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के मज़हब का ख़ुलासा है और बा'द वाले उ़-लमा जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सौरी, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن वग़ैरा का मज़हब भी येही है। बहर ह़ाल सब उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام का इस बात पर इज्माअ़ है कि ''मुजस्समे तस्वीर की हैअत तब्दील करना वाजिब है।''

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी इयाज़ मालिकी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی (मु-तवफ़्फ़ा 544 हि.) फ़रमाते हैं : ''छोटी बच्चियों की गुड़ियों के बारे में रुख़्सत है।'' लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق (मु-तवफ़्फ़ा 179 हि.) के नज़्दीक ''किसी शख़्स का अपनी बेटी के लिये गुड़ियां ख़रीदना भी मक्रूह है।'' और कई उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ''इन अह़ादीसे मुबा-रका से बच्चियों के गुड़ियों के साथ खेलने की इजाज़त भी मन्सूख़ हो गई।''(1)

## ह़दीस में मज़्कूर अल्फ़ाज़ की वज़ाह़त

1. **اَلْمَلَائِکَۃ :** ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा ख़त़्त़ाबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی (मु-तवफ़्फ़ा 388 हि.)

(1)......شرح صحیح مسلم للنووی، کتاب اللباس، باب تحریم تصویر صورۃ الحیوان، ج ۱۴، ص ۸۱، ۸۲ ۔



www.dawateislami.net

वग़ैरा फ़रमाते हैं : ''गुज़श्ता ह़दीसे पाक ''لَاتَدْخُلُ الْمَلَائِكَةُ بَيْتًا فِيْهِ كَلْبٌ وَلَا صُوْرَةٌ وَلَا جُنُبٌ'' में मलाएका से मुराद ब-र-कत या रह़मत के फ़रिश्ते हैं न कि किरामन कातिबीन (या'नी आ'माल लिखने वाले फ़रिश्ते) । क्यूं कि इन चीज़ों की वज्ह से किरामन कातिबीन का दाख़िला मन्अ़ नहीं ।''

**2. जुनुब :** एक क़ौल येह है कि जुनुबी से मुराद वोह शख़्स नहीं जो नमाज़ के वक़्त तक ग़ुस्ल में ताख़ीर कर के ग़ुस्ल करे । बल्कि इस से मुराद वोह शख़्स है जो ग़ुस्ल में सुस्ती करता और इस की आ़दत बना लेता है क्यूं कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ के पास एक ही ग़ुस्ल में तशरीफ़ ले जाते जब कि इस में ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने के अव्वल वक़्त से ताख़ीर पाई जा रही है । चुनान्चे,

《19》...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है कि ''शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जनाबत की ह़ालत में सो जाते और पानी को न छूते (या'नी ग़ुस्ल न फ़रमाते) ।''[1]

**3. صُوْرَة :** इस से मुराद हर ज़ी रूह़ की तस्वीर है ख़्वाह वोह मुजस्सम ढांचे की शक्ल में हों या सिर्फ़ नक़्शो निगारी के फ़नपारे हों, छत में हों या दीवार में, कपड़ों में कढ़ी हुई हों या किसी दूसरी चीज़ में ।

**4. كَلْب :** या'नी इस से शिकार और पहरा देने वाले कुत्ते मुराद नहीं बल्कि ऐसे कुत्ते मुराद हैं जिन की वज्ह से फ़रिश्ते घर में दाख़िल नहीं होते और कुत्ते पालने वाले का इस अ़मल के सबब रोज़ाना दो क़ीरात़ अज्र कम हो जाता है जैसा कि सह़ीह़ अह़ादीस में है, क्यूं कि उन के मज़ामीन से येही वाज़ेह़ होता है । चुनान्चे,

《20》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने शिकार या जानवरों की ह़िफ़ाज़त करने वाले कुत्ते के इ़लावा कोई कुत्ता पाला उस के अज्र में यौमिय्या दो क़ीरात़ की कमी होती है [2] .''[3]

...... और एक रिवायत में ''مِنْ أَجْرِهٖ'' की जगह ''مِنْ عَمَلِهٖ'' है ।[4]

---

1 ......جامع الترمذی، ابواب الطهارة،باب ماجاء فی الجنب ينام قبل أن يغتسل، الحديث : ١١٨، ص١٦٤٤ ـ

2 ......صحيح البخاری ،كتاب الذبائح والصيد ،باب من اقتنى كلباليس......الخ،الحديث :٥٤٨١، ص٤٧٢ ـ

3 ...... मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان (मु-तवफ़्फ़ा 1391 हि.) मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 5, सफ़ह़ा 656 पर इस ह़दीस के तह़्त फ़रमाते हैं : ''क़ीरात़ एक ख़ास वज़्न का नाम है यहां क़ीरात़ फ़रमाना समझाने के लिये है वरना सवाबे आ'माल यहां के बाटों से नहीं तोला जाता ।''

4 ......صحيح البخاری، كتاب الذبائح والصيد،باب من اقتنى كلبا ليس......الخ، الحديث : ٥٤٨٠، ص٤٧٢ ـ



www.dawateislami.net

﴾21﴿...... और एक रिवायत में है, हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "पहरा देने वाले या जानवरों की हिफ़ाज़त करने वाले कुत्ते के इलावा कुत्ता रखने वाले के अज्र में रोज़ाना एक क़ीरात् कम हो जाता है।"(1)

﴾22﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने शिकार करने वाले या जानवरों या ज़मीन की हिफ़ाज़त करने वाले कुत्ते के इलावा कुत्ता पाला उस के सवाब में रोज़ाना दो क़ीरात् कम हो जाते हैं।"(2)

﴾23﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर कुत्ते भी दीगर मख़्लूक़ात की त़रह एक मख़्लूक़ न होते तो मैं इन सब को मारने का हुक्म देता। पस इन में से हर ख़ालिस सियाह कुत्ते को क़त्ल कर दो और जो लोग घरों में कुत्ता पालते हैं उन के अमल में हर रोज़ एक क़ीरात् कम हो जाता है सिवाए शिकार करने वाले या चोकीदारी करने वाले या बकरियों की हिफ़ाज़त करने वाले कुत्ते के।"(3)

۞۞۞۞۞۞۞

## ﴾......जन्नत में ले जाने वाले आ'माल......﴿

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स हलाल खाए, सुन्नत पर अमल करे और लोग उस के शर से महफ़ूज़ रहें वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ऐसे लोग तो इस वक़्त बहुत हैं।" इर्शाद फ़रमाया : "अन्क़रीब मेरे बा'द भी ऐसे लोग होंगे।"

(المستدرک، الحدیث:۷۱۵۵، ج۵، ص۱۴۲)

1 ......صحیح مسلم، کتاب المساقاۃ، باب الأمر بقتل الکلاب......الخ، الحدیث: ۴۰۳۲، ص۹۵۱۔

2 ......المرجع السابق، الحدیث: ۴۰۳۰۔

3 ......جامع الترمذی، ابواب الصید، باب ماجاء فی من أمسک کلبا ما ینقص من أجرہ، الحدیث: ۱۴۸۹، ص۱۸۰۴۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 269 : तुफ़ैली बनना

( या'नी इजाज़त या रिज़ा मन्दी के बिग़ैर किसी के साथ खाने में शरीक हो जाना )

## कबीरा नम्बर 270 : मेहमान का मेज़बान की रिज़ा जाने बिग़ैर बिस्यार ख़ोरी करना

## कबीरा नम्बर 271 : इन्सान का अपने माल में से कसरत से खाना जब कि वोह जानता हो कि येह उसे वाज़ेह़ नुक़्सान देगा

## कबीरा नम्बर 272 : तकब्बुर व दिखावा करते हुए खाने पीने में वुस्अ़त करना

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुमैद साइदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "किसी मुसल्मान के लिये जाइज़ नहीं कि अपने मुसल्मान भाई का अ़सा उस की रिज़ा मन्दी के बिग़ैर ले ले।" (रावी फ़रमाते हैं) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह इस लिये इर्शाद फ़रमाया क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुसल्मान पर उस के मुसल्मान भाई का माल ह़राम ठहराने में बड़ी सख़्ती फ़रमाई है।[1]

﴾2﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर ख़ुत़्बा देते हुए इर्शाद फ़रमाया : "बेशक तुम्हारे ख़ून, माल और इ़ज़्ज़तें तुम पर इसी त़रह़ ह़राम हैं जिस त़रह़ आज का येह दिन, येह महीना, येह शह्‌र तुम पर ह़राम है, क्या मैं ने (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का) पैग़ाम नहीं पहुंचाया ?"[2]

﴾3﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिसे दा'वत दी गई मगर उस ने क़बूल न की तो बेशक उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी की और जो बिग़ैर दा'वत के दाख़िल हुवा वोह चोर की शक्ल में दाख़िल हुवा और डाकू बन कर निकला।"[3]

﴾4﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्‌मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने

---

1 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان ،کتاب الجنایات ،الحدیث : ۵۹۴۲،ج۷،ص۵۸۷،" لمسلم "بدله"لامرئ"۔

2 ......صحیح البخاری ،کتاب الفتن ، باب قول النبی لاترجعوا بعدی کفارا......الخ ،الحدیث : ۷۰۷۸،ص۵۹۰۔

3 ......سنن ابی داود ،کتاب الأطعمة ،باب ماجاء فی إجابة الدعوة ،الحدیث: ۳۷۴۱،ص۱۴۹۹۔



www.dawateislami.net

आलीशान है : ''मुसल्मान एक आंत से खाता है जब कि काफ़िर सात आंतों से खाता है।''(1)

﴾5﴿...... शफ़ीउ़ल मुज्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक काफ़िर मेहमान की मेज़बानी की और उस के लिये बकरी का दूध दोहने का हुक्म दिया पस दूध दोहा गया और वोह उस का दूध पी गया, फिर दूसरी बकरी का दूध दोहा गया वोह उस का दूध भी पी गया, फिर तीसरी बकरी का दूध दोहा गया वोह उस का दूध भी पी गया यहां तक कि वोह सात बकरियों का दूध पी गया। फिर सुब्ह़ के वक़्त वोह मुसल्मान हो गया। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के लिये एक बकरी का दूध दोहने का हुक्म दिया, दूध दोहा गया और वोह उस का दूध पी गया फिर दूसरी बकरी का दोहा गया लेकिन वोह मुकम्मल न पी सका। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मुसल्मान एक आंत से पीता है जब कि काफ़िर सात आंतों से पीता है।''(2)

﴾6﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''इब्ने आदम ने अपने पेट से बुरा बरतन नहीं भरा, अगर खाना ही हो तो इस के लिये चन्द लुक़्मे काफ़ी हैं जो इस की कमर को सीधा रखें।''(3)

﴾7﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर आदमी पर उस का नफ़्स ग़ालिब आ जाए तो (पेट के तीन ह़िस्से कर ले) एक तिहाई ह़िस्सा खाने के लिये, दूसरा तिहाई पानी के लिये और तीसरा तिहाई ह़िस्सा सांस के लिये छोड़े।''(4)

﴾8﴿...... हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''दुन्या में सब से ज़ियादा पेट भरने वाला क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा भूका होगा।'' (रावी फ़रमाते हैं :) आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जुहैफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से येह उस वक़्त इर्शाद फ़रमाया था जब उन्हों ने ख़ूब पेट भर कर खाना खा कर डकार ली। इस के बा'द आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने कभी पेट भर कर न खाया यहां तक कि दुन्या से रुख़्सत हो गए। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जब सुब्ह़ के वक़्त कुछ खा लेते तो शाम को न खाते और जब शाम के वक़्त खा लेते तो सुब्ह़ न खाते।(5)

---

1 ......صحيح البخارى ،كتاب الإطعمة ،باب المؤمن يأكل فى معًى واحدٍ،الحديث:۵۳۹۳،ص۴۶۶ـ

2 ......صحيح مسلم ،كتاب الأشربة ،باب المؤمن يأكل فى معًى واحدٍ......الخ ،الحديث:۵۳۷۹،ص۱۰۴۶ بتغيرٍقليلٍ۔

3 ......جامع الترمذى،ابواب الزهد،باب ماجاء فى كراهية الكثرة الأكل،الحديث:۲۳۸۰،ص۱۸۹۰ـ

4 ......سنن ابن ماجه،ابواب الأطعمة ،باب الإقتصاد فى الأكل وكراهة الشبع ،الحديث:۳۳۴۹،ص۲۶۷۹ـ

5 ......المعجم الاوسط، الحديث:۸۹۲۹،ج۲،ص۳۲۵،"أكثرهم جوعا"بدله"أطولهم جوعا"ـ



www.dawateislami.net

﴿9﴾...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''दुन्या में पेट भरने वाले कल आख़िरत में भूके होंगे।''(1)

﴿10﴾...... बैहक़ी शरीफ़ की रिवायत में येह इज़ाफ़ा है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''दुन्या मोमिन का क़ैदख़ाना और काफ़िर की जन्नत है।''(2)

﴿11﴾...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बड़ी तोंद (या'नी पेट) वाला शख़्स देखा तो अपनी उंगली से इशारा करते हुए इर्शाद फ़रमाया : ''अगर येह यहां न होता (या'नी तेरा पेट बढ़ा हुवा न होता) तो तेरे लिये बेहतर था।''(3)

﴿12﴾...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : बेशक क़ियामत के दिन बहुत ज़ियादा खाने पीने वाले लाए जाएंगे जिन का वज़्न **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मच्छर के पर के बराबर भी न होगा, अगर चाहो तो येह आयते मुबा–रका पढ़ो :

فَلَا نُقِیْمُ لَهُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وَزْنًا ﴿۱۰۵﴾ (پ۱۶، الکهف۱۰۵)

**तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान :** तो हम उन के लिये क़ियामत के दिन कोई तोल न क़ाइम करेंगे।(4)

﴿13﴾...... एक दिन रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भूक मह़सूस फ़रमाई तो एक पथ्थर ले कर अपने पेट पर बांध लिया फिर इर्शाद फ़रमाया : ''याद रखो ! दुन्या में पेट भर कर खाने वाले और ख़ुशह़ाल ज़िन्दगी गुज़ारने वाले कितने ही लोग हैं जो क़ियामत के दिन भूके और नंगे होंगे। सुन लो ! कितने ही लोग अपने नफ़्स की तक्रीम करने वाले हैं जब कि वोही नुफ़ूस उन्हें बरोज़े क़ियामत ज़लील करेंगे। याद रखो ! कितने ही लोग अपने नफ़्स को ज़लील करने वाले हैं जब कि वोही नुफ़ूस बरोज़े क़ियामत उन की ता'ज़ीम करेंगे।''(5)

﴿14﴾...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान

---

(1)......المعجم الکبیر، الحدیث:۱۱۶۹۳، ج۱۱، ص۲۱۳۔

(2)......شعب الایمان للبیهقی، باب فی المطاعم والمشارب، فصل فی ذم کثرۃ الأکل، الحدیث:۵۶۴۵، ج۵، ص۲۷۔

(3)......المعجم الکبیر، الحدیث:۲۱۸۵، ج۲، ص۲۸۴۔

(4)......شعب الإیمان للبیهقی، باب فی الطاعم والمشارب، فصل فی ذم کثرۃ الأکل، الحدیث:۵۶۷۰، ج۵، ص۳۴۔

(5)......الطبقات الکبری لابن سعد، الرقم۳۷۵۹ابو البجیر، ج۷، ص۲۹۶۔



www.dawateislami.net

है : ''येह भी इसराफ़ है कि तुझे जिस चीज़ की ख़्वाहिश पैदा हो उसे खा डाले ।''(1)

﴾15﴿...... उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا इर्शाद फ़रमाती हैं : हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे दिन में दो मर्तबा खाते देखा तो इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ आइशा ! क्या तुम पसन्द करती हो कि पेट भरना तुम्हारा मश्ग़ला हो, दिन में दो मर्तबा खाना इसराफ़ है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इसराफ़ करने वालों को पसन्द नहीं फ़रमाता ।''(2)

﴾16﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''खाओ, पियो और स-दक़ा करो मगर इस में इसराफ़ और तकब्बुर न हो ।''(3)

﴾17﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''बेशक मेरी उम्मत में सब से शरीर वोह लोग हैं जिन्हों ने ने'मतें पाईं और उन के जिस्म मोटे ताज़े हो गए ।''(4)

﴾18﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''मेरी उम्मत में से कुछ लोग होंगे जो क़िस्म क़िस्म के खाने खाएंगे, त़रह़ त़रह़ के पानी पियेंगे, रंग बिरंगे लिबास पहनेंगे और बाछें खोल कर बातें करेंगे । येही मेरी उम्मत के सब से बुरे लोग हैं ।''(5)

﴾19﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह्हाक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से दरयाफ़्त फ़रमाया : ''ऐ ज़ह्हाक ! तुम क्या खाते हो ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! गोश्त और दूध ।'' फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ''इस के बा'द वोह कहां जाता है ?'' अ़र्ज़ की : ''आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तो मा'लूम ही है (कि गन्दगी में चला जाता है) ।'' तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या को इस गन्दगी से तश्बीह दी है जो इब्ने आदम के पेट से ख़ारिज होती है ।''(6)

---

1 ......سنن ابن ماجه،ابواب الأطعمة ،باب من الإسراف أن تأكل كل ما اشتهيت ،الحديث:٣٣٥٢،ص٢٦٧٩ـ

2 ......شعب الإيمان للبيهقى ،باب المطاعم والمشارب،فصل فى ذم كثرة الأكل ،الحديث:٥٦٤٠،ج٥،ص٢٦ـ

3 ......المصنف لابن ابى شيبة،كتاب الباس،باب من قال البس ماشئت......الخ،الحديث:١،ج٦،ص٣٦ـ

4 ......الترغيب والترهيب ،كتاب الطعام ،باب الترهيب من الإمعان فى الشبع......الخ ،الحديث:٣٢٩٣،ج٣،ص١٠٦ـ

5 ......المعجم الكبير،الحديث : ٧٥١٢،ج٨،ص١٠٧ـ

6 ......المسند للامام احمد بن حنبل ،حديث الضحاك بن سفيان ،الحديث : ١٥٧٤٧،ج٥،ص٣٤١ـ



www.dawateislami.net

## तम्बीह :

पहले तीन गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार करना तो वाज़ेह़ है। इस वज्ह से कि पहले दो में बातिल त़रीक़े से माल खाना पाया जा रहा है। नीज़ इस बाब की इब्तिदा में अबू दावूद शरीफ़ की बयान कर्दा येह रिवायत पहले गुनाह के कबीरा होने पर वाज़ेह़ है कि "वोह चोर की शक्ल में दाखि़ल हुवा और डाकू बन कर निकला।" इसे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू दावूद सुलैमान बिन अश्अ़स सजिस्तानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی (मु-तवफ़्फ़ा 275 हि.) ने ज़ईफ़ क़रार नहीं दिया। इस से मा'लूम हुवा कि उन के नज़्दीक इस से इस्तिद्लाल करना सह़ीह़ है। अलबत्ता ! उन के इ़लावा दीगर कई मुह़द्दिसीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : इस में एक रावी मज्हूल है जिस के क़ाबिले ए'तिमाद होने में इख़्तिलाफ़ है और जुम्हूर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के नज़्दीक भी येह ज़ईफ़ है। रहा तीसरा गुनाह तो चूंकि इस में अपनी जान का नुक़्सान है और येह इसी त़रह़ कबीरा गुनाह है जैसा कि किसी दूसरे को नुक़्सान पहुंचाना। इसी त़रह़ लिबास के मु-तअ़ल्लिक़ गुज़श्ता रिवायात म-सलन तकब्बुर की बिना पर तहबन्द वग़ैरा लटकाने, पर क़ियास करते हुए उ़न्वान में मज़्कूर चौथे गुनाह को भी कबीरा शुमार किया गया है। क्यूं कि इन दोनों में एक क़दरे मुश्तरक है या'नी ख़ुद पसन्दी और तकब्बुर करना। इस बिना पर इन अह़ादीसे मुबा-रका में वारिद वईद नुक़्सान की ह़द तक बिस्यार ख़ोरी या ग़ैर के माल से शिकम परवरी पर मह़मूल होगी।

ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू अ़ब्दुल्लाह** हुसैन बिन ह़सन बिन मुह़म्मद ह़लीमी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 403 हि.) का क़ौल इस की ताईद करता है। चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान : "اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِیْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ (پ٢٦، الاحقاف:٢٠) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** उन से फ़रमाया जाएगा तुम अपने हि़स्से की पाक चीज़ें अपनी दुन्या ही की ज़िन्दगी में फ़ना कर चुके और उन्हें बरत चुके तो आज तुम्हें ज़िल्लत का अ़ज़ाब बदला दिया जाएगा।" की वज़ाह़त करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : "येह वईद अगर्चे कुफ़्फ़ार के लिये है जो पाक मम्नूअ़ चीज़ों की त़रफ़ बढ़ते थे इस लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ" मगर जो लोग पाक मुबाह़ चीज़ों में ज़ियादा मश्ग़ूल रहते हैं उन पर भी इस त़रह़ के अ़ज़ाब का डर है क्यूं कि जो इन चीज़ों की त़रफ़ माइल होता है तो उस का दिल दुन्या की त़रफ़ माइल हो जाता है। लिहाज़ा वोह ख़्वाहिशात व लज़्ज़ात में फंसने से नहीं बच सकता। जब भी वोह अपने नफ़्स की किसी ख़्वाहिश को पूरा करता है तो वोह उसे दूसरी ख़्वाहिश की तक्मील पर उभारने लग जाता है। पस उस के लिये येह मुम्किन



www.dawateislami.net

नहीं रहता कि वोह अपने नफ़्स को किसी ख़्वाहिश से रोक सके और इस त़रह़ उस पर इ़बादत का दरवाज़ा बन्द हो जाता है। फिर जब मुआ़–मला यहां तक पहुंच जाए तो कोई बई़द नहीं कि उसे येह कहा जाए : "اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ" पस येह किसी त़रह़ मुनासिब नहीं कि आप अपने नफ़्स को उस के लालची पन की त़रफ़ माइल होने दें, वरना इस का तदारुक मुश्किल हो जाएगा। अलबत्ता ! इब्तिदा ही में इस का सद्दे बाब करना मुम्किन है क्यूं कि येह इस से आसान है कि आप पहले इसे फ़साद का आ़दी बनाएं और फिर इसे इस्लाह़ की त़रफ़ लौटाने की कोशिश करें।"

मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शिहाबुद्दीन अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु–तवफ़्फ़ा 783 हि.) और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़रकशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى के कलाम को मुला–ह़ज़ा किया तो पाया कि पहले गुनाह के मु–तअ़ल्लिक़ उन्हों ने भी मेरे ज़िक्र कर्दा मौक़िफ़ की ताईद की है। "**अल उम्म**" में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु–तवफ़्फ़ा 204 हि.) से मन्क़ूल है कि "जो बिला ह़ाजत, बिन बुलाए किसी दा'वत पर जाए, उसे साह़िबे ख़ाना की इजाज़त न हो फिर भी शरीके दा'वत हो जाए तो वोह मरदूदुश्शहादत हो जाएगा (या'नी उस की गवाही क़बूल न की जाएगी) क्यूं कि वोह ह़राम खाता है बशर्ते़ कि वोह दा'वत उस जैसे आ़म शख़्स की त़रफ़ से हो। लेकिन अगर खाना किसी बादशाह या बादशाह जैसे मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स की त़रफ़ से हो और वोह लोगों को दा'वत दे तो येह खाना सब के लिये आ़म है और उस के खाने में कोई ह़रज नहीं।"[1]

"**रौ–ज़तुत्ता़लिबीन व उ़म्दतुल मुफ़्तीन**" में "**अश्शामिल**" के ह़वाले से है, "(गवाही मरदूद होने के लिये) बार बार आना शर्त़ है क्यूं कि कभी इसे शुबा होता है यहां तक कि साह़िबे ख़ाना मन्अ़ कर देता है। लिहाज़ा जब वोह बार बार आएगा तो येह मुरव्वत की कमी और कमीनगी कहलाएगी।"[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सब्बाग़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मु–तवफ़्फ़ा 477 हि.) से मन्क़ूल है कि "ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु–तवफ़्फ़ा 204 हि.) ने (गवाही मरदूद होने के लिये) दा'वत में बार बार आना शर्त़ क़रार दिया है क्यूं कि बार बार आना घटिया पन और मुरव्वत की कमी का बाइ़स है।" येह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु–तवफ़्फ़ा 204 हि.) के इस क़ौल के बर अ़क्स है जो इस बात का तक़ाज़ा करता है कि "गवाही मरदूद

---

1 ......الأم للامام الشافعى، كتاب الأقضية، شهادة القاذف، ج٣، الجزء السادس، ص ٢٢٧ـ

2 ......روضة الطالبين وعمدة المفتين للنووى، كتاب الشهادات، فرع الخمر العينية......الخ، ج ١١، ص٢٣٢ـ



www.dawateislami.net

होने की वज्ह येह है कि वोह ह़राम खाता है।" जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सब्बाग़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه (मु-तवफ़्फ़ा 477 हि.) का क़ौल इस बात का तक़ाज़ा करता है कि यहां मुरव्वत को तर्क करने की वज्ह से गवाही मरदूद न होगी क्यूं कि मुरव्वत तर्क करना ह़राम नहीं बल्कि गवाही मरदूद होने की वज्ह सग़ीरा गुनाह पर इसरार करना है इस लिये कि येही इसरार बा'द में कबीरा बन जाता है। इस में कोई शक नहीं कि येह दो अलग और मुख़्तलिफ़ मुआ-मले हैं जो सिर्फ़ खाने से मु-तअ़ल्लिक़ हैं। लिहाज़ा येह कहा जा सकता है कि अगर कोई शख़्स उ़म्दा और लज़ीज़ खाने पर झपट पड़े या इस त़रह़ अपनी प्लेट में खाना उठा कर उसे भर ले जैसा कि उ़मूमन घटिया लोग करते हैं और ऐसा घटिया फ़े'ल ह़ाज़िरीन पर गिरां गुज़रता है और वोह ह़या से अपनी आंखें झुका लेते हैं पस येह अ़मल मुरव्वत व ह़या के दामन को चाक करने वाला है। लिहाज़ा गवाही मरदूद होने के लिये किसी का ऐसी दा'वत में बिन बुलाए एक ही बार जाना काफ़ी है और बार बार जाने का भी कोई ए'तिबार नहीं।

ज़ाहिर येह है कि उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सब्बाग़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه (मु-तवफ़्फ़ा 477 हि.) का कलाम ज़िक्र करने के बा'द येह क़ौल अपने उस्ताज़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) से लिया है और इन के इलावा ने इसे सग़ीरा क़रार दिया है जो तकरार से कबीरा बन जाता है और येह बात गुज़र चुकी है कि दीनार का चौथाई ह़िस्सा भी ग़स्ब करना कबीरा गुनाह है और एक या दो बार का खाना ग़ालिबन इस ह़द तक तो नहीं पहुंचता। अलबत्ता! येह ख़िलाफ़े मुरव्वत है। हां जैसा कि बा'ज़ घटिया तुफ़ैलिये करते हैं कि जब किसी ख़ास दा'वत में जाते हैं तो उ़म्दा व लज़ीज़ खाने पर झपट कर काफ़ी मिक़्दार में उठा लेते हैं जो कि साह़िबे ख़ाना पर बहुत गिरां गुज़रता है लेकिन वोह लोगों से शरमाते हुए और मुरव्वत से ख़ामोश रहता है। पस येह मुरव्वत को दाग़दार करने और दस्तारे ह़या को तार तार करने वाली आ़दत है। लिहाज़ा एक बार ऐसा करने से ही गवाही मरदूद हो जाएगी।

"**अल मूक़फ़ लिल जैली**" में है कि "इस तुफ़ैली की गवाही मक़्बूल नहीं जो बिन बुलाए लोगों की दा'वत में शरीक हो जाता है।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) ने भी येही कहा है और हम किसी को नहीं जानते जो इस के मुख़ालिफ़ हो क्यूं कि मरफ़ूअ़ ह़दीसे पाक है कि "जो बिन बुलाए खाने के लिये आया वोह चोर बन कर आया और डाकू बन कर निकला।" क्यूं कि वोह ह़राम खाता है और ऐसा काम करता है जिस में सफ़ाहत, कमीनगी और मुरव्वत का ख़त्म होना पाया जाता है। अगर वोह बार बार ऐसा न करे तो उस की गवाही मरदूद नहीं क्यूं कि येह सग़ीरा गुनाह है।[1]

---

1 ......المغنی لابن قدامة، كتاب الشهادات ، مسألة ١٨٩٠، فصل ولا تقبل شهادة الطفيلی، ج١٢، ص١٦٩ ـ



www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) के नज़्दीक येह हुक्म सिर्फ़ खाने के बारे में है न कि उस पर झपट पड़ने के बारे में। जैसा कि हम बयान कर चुके हैं।

## ख़ातिमा

﴾20﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है : ''बद तरीन खाना उस वलीमे का है जिस में मालदारों को तो दा'वत दी जाती है मगर मसाकीन को नहीं बुलाया जाता। जो (बिला उ़ज़्रे शर-ई) दा'वत पर न आया उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी की।''(1)

﴾21﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''सब से बुरा खाना उस वलीमे का है जिस में आने वालों को रोक दिया जाए और इन्कार करने वाले को दा'वत दी जाए और जिस ने दा'वत क़बूल न की उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी की।''(2)

﴾22﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब तुम में से किसी को वलीमे में बुलाया जाए तो ज़रूर आए।''(3)

﴾23﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जब तुम में से किसी को उस का भाई शादी या किसी और मौक़अ़ पर दा'वत दे तो उसे चाहिये कि क़बूल करे।''(4)

﴾24﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''अगर तुम्हें कुराअ़ मक़ाम की भी दा'वत दी जाए तो क़बूल करो।''(5) (''कुराअ़'' ख़लीस मक़ाम के क़रीब एक जगह है। अज़ मुसन्निफ़)

﴾25﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जब तुम में से किसी को खाने की दा'वत दी जाए तो उसे ज़रूर क़बूल करे, फिर चाहे खाए, चाहे न खाए।''(6)

---

(1)......صحيح مسلم ،كتاب النكاح ،باب الأمر بإجابة الداعى إلى دعوة، الحديث:٣٥٢١،٣٥٢٣،ص٩١٨ـ

(2)......المرجع السابق ،الحديث:٣٥٢٥ـ

(3)......المرجع السابق ،الحديث:٣٥٠٩،ص٩١٧ـ

(4)......المرجع السابق ،الحديث:٣٥١٣ـ

(5)......المرجع السابق ،الحديث:٣٥١٧،ص٩١٨ـ

(6)......المرجع السابق ،الحديث:٣٥١٨ـ



www.dawateislami.net

﴾26﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक दूसरे के मुक़ाबले में खाने पर फ़ख़्र करने वालो के हां खाना खाने से मन्अ़ फ़रमाया है।(1)

शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के नज़्दीक इस का ख़ुलासा येह है कि ''वलीमे की दा'वत चन्द शराइत़ के साथ क़बूल करना वाजिब है और इस के इ़लावा दीगर तमाम दा'वतें क़बूल करना मुस्तह़ब है।''

﴾27﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उंग्लियां चाटने और बरतन साफ़ करने का हुक्म दिया और इर्शाद फ़रमाया : ''तुम नहीं जानते कि तुम्हारे खाने के किस ह़िस्से में ब-र-कत है।''(2)

﴾28﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुबारक है : ''जब तुम में से किसी का लुक़्मा गिर जाए तो उसे चाहिये कि उठा ले और उस से तक्लीफ़ देह चीज़ (या'नी मिट्टी वग़ैरा) साफ़ कर के खा ले और शैत़ान के लिये न छोड़े, अपने हाथ रुमाल से उस वक़्त तक साफ़ न करे जब तक उंग्लियों को चाट न ले क्यूं कि वोह नहीं जानता कि उस के खाने के किस ह़िस्से में ब-र-कत है।''(3)

﴾29﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : ''बेशक शैत़ान तुम में से किसी के पास हर काम के वक़्त अपनी ह़ैसिय्यत के मुत़ाबिक़ आ जाता है यहां तक कि वोह खाने के वक़्त भी आ जाता है। लिहाज़ा जब तुम में से किसी का लुक़्मा गिर जाए तो उठा ले और उस से अज़िय्यत वाली शै (या'नी मिट्टी वग़ैरा) साफ़ कर के खा ले और उसे शैत़ान के लिये न छोड़े। फिर जब फ़ारिग़ हो जाए तो उंग्लियां चाट ले क्यूं कि वोह नहीं जानता कि उस के खाने के किस ह़िस्से में ब-र-कत है।''(4)

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ब-र-कत खाने के आख़िर में है।''(5)

---

1......سنن ابی داود ،کتاب الأطعمة ،باب فی طعام المتباريين ،الحديث:٣٧٥٤،ص١٥٠٠۔

2......صحيح مسلم ،کتاب الأشربة ،باب استحباب لعق الأصابع و القصعة......الخ ،الحديث :٥٣٠٦،ص١٠٤١۔

3......المرجع السابق ،الحديث : ٥٣٠١،ص١٠٤٠۔ 4......المرجع السابق ،الحديث : ٥٣٠٣،ص١٠٤١۔

5......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان ،کتاب الأطعمة،باب آداب الأكل،الحديث:٥٢٢٩،ج٧،ص٣٣٥۔



www.dawateislami.net

﴾30﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : ''जब तुम में से कोई खाना खाए तो अपनी उंगलियां चाट ले क्यूं कि वोह नहीं जानता कि उस के खाने के किस हिस्से में ब-र-कत है।''(1)

﴾31﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिक्मत निशान है : ''जब तुम में से कोई खाना खाए तो अपनी उंगलियों को न पोंछे या अपनी उंगलियों को साफ़ न करे जब तक उन्हें चाट न ले या चाट न लिया जाए।''(2)

﴾32﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि जब कभी हम सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ खाना खाने लगते तो हम में से कोई भी शुरूअ़ न करता जब तक आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शुरूअ़ न फ़रमा लेते। एक बार हम खाने पर हाज़िर थे कि एक आ'राबी (या'नी बद्दू) तेज़ी से आया गोया उसे धकेला जा रहा है। उस ने आते ही खाने की त़रफ़ हाथ बढ़ाया तो महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस का हाथ पकड़ लिया। फिर एक लौंडी आई गोया उसे भी धकेला जा रहा था। वोह भी आते ही खाने पर लपकी और हाथ आगे बढ़ाया। सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस का हाथ भी पकड़ लिया और इर्शाद फ़रमाया : ''जिस खाने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम न लिया जाए वोह शैत़ान के लिये हलाल हो जाता है। शैत़ान इस आ'राबी को ले कर आया ताकि इस के साथ खाना खाए। मैं ने इस का हाथ पकड़ लिया फिर इस लौंडी को ले कर आया ताकि खाना खा ले लेकिन मैं ने इस का हाथ भी पकड़ लिया। उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है! बेशक इन दोनों के हाथ से शैत़ान का हाथ भी मेरे हाथ में है।''(3)

## शैत़ान को क़ै आ गई :

﴾33﴿...... सहाबिये रसूल, हज़रते सय्यिदुना उमय्या बिन मख़्शी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि एक शख़्स खाना खा रहा था और रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे

---

(1) ......صحیح مسلم ،کتاب الأشربة ،باب استحباب لعق الأصابع والقصعة......الخ ،الحدیث: ۵۳۰۷، ص ۱۰۴۱ ـ

(2) ......صحیح مسلم ،کتاب الأشربة ،باب استحباب لعق الأصابع والقصعة......الخ ،الحدیث: ۵۲۹۴،ص ۱۰۴۰ ـ
کتاب الجامع لمعمرمع المصنف لعبد الرزاق،کتاب الجامع،باب لعق الأصابع،الحدیث: ۱۹۷۲۴ ، ج۱۰ ،ص۳۴ـ

(3) ......سنن ابی داود ،کتاب الأطعمة ،باب التسمية على الطعام ،الحدیث: ۳۷۶۶،ص ۱۵۰۱ ـ



www.dawateislami.net

मुला-ह़ज़ा फ़रमा रहे थे। उस ने **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ नहीं पढ़ी थी आख़िर में याद आने पर उस ने कहा : ''بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ'' या'नी **अल्लाह** के नाम से इस खाने की इब्तिदा और इन्तिहा करता हूं।'' सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''शैत़ान इस शख़्स के साथ खाना खा रहा था जब इस ने **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ पढ़ी तो शैत़ान ने जो कुछ खाया था क़ै कर दिया।''(1)

﴾34﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिसे येह पसन्द हो कि शैत़ान इस के क़ैलूला (या'नी दिन में आराम) करने और रात गुज़ारने की जगह और खाने में ख़लल अन्दाज़ी न करे तो उसे चाहिये कि घर में दाख़िल होते वक़्त सलाम करे और खाने से क़ब्ल **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ पढ़े।''(2)

## गुनाह मुआ़फ़ कराने का नुस्ख़ए कीमिया :

﴾35﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : ''जिस ने खाना खाने के बा'द येह दुआ़ पढ़ी उस के अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنِیْ هٰذَا الطَّعَامَ وَرَزَقَنِیْهِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّةٍ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने मुझे येह खाना खिलाया और मुझे मेरी त़ाक़त और कुव्वत के बिग़ैर येह रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाया।''(3)

## खाने से पहले और बा'द वुज़ू करना :

﴾36﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने तौरात में पढ़ा कि खाने के बा'द वुज़ू करना ब-र-कत का ज़रीआ़ है। मैं ने येह बात हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़िक्र की और तौरात में जो कुछ पढ़ा था उस के मु-तअ़ल्लिक़ बताया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''खाने में ब-र-कत का ज़रीआ़ इस से पहले वुज़ू करना (या'नी दोनों हाथ गिट्टों तक धोना) है।''(4)

﴾37﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل،حديث امية بن مخشى، الحديث:١٨٩٨٥،ج٧، ص١٠ـ

2 ......المعجم الكبير، الحديث: ٦١٠٢،ج٦، ص٢٤٠، بدون قوله"ولا مبيتاً"ـ

3 ......سنن ابى داود ،كتاب اللباس ،باب مايقول اذا لبس ثوبا جديدا ،الحديث:٤٠٢٣،ص١٥١٧ـ

4 ......جامع الترمذى،ابواب الأطعمة،باب ماجاء فى الوضوء قبل الطعام وبعده،الحديث:١٨٤٦،ص١٨٣٩ـ



www.dawateislami.net

निशान है : ''जिसे येह पसन्द हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के घर में ख़ैरो ब-र-कत ज़ियादा करे उसे चाहिये कि जब खाना सामने आए तो वुज़ू करे और जब खाना खा ले तो भी वुज़ू करे (या'नी हाथ धोए) ।''(1)

खाने से पहले हाथ धोने को ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सुफ़्यान सौरी (मु-तवफ़्फ़ा 161 हि.) और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ تعَالٰى عَلَيْهِمَا (मु-तवफ़्फ़ा 179 हि.) ने ना पसन्द फ़रमाया और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी عَلَيْهِ رَحمَةُاللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 458 हि.) फ़रमाते हैं : ''इसी त़रह़ हमारे इमाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) ने मुस्लिम शरीफ़ की इस रिवायत की वज्ह से हाथ न धोना मुस्तह़ब क़रार दिया है । चुनान्चे,

﴾38﴿...... (एक दफ़्आ़) सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (क़ज़ाए ह़ाजत से फ़ारिग़ हो कर तशरीफ़ लाए, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ख़िदमत में खाना पेश किया गया और अ़र्ज़ की गई : ''क्या आप वुज़ू नहीं फ़रमाएंगे ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''मैं नमाज़ नहीं पढ़ रहा कि वुज़ू करूं(2) ।''(3)

﴾39﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''बेशक मुझे वुज़ू का हुक्म दिया गया है जब कि मैं नमाज़ के लिये खड़ा होउं ।''(4)

﴾40﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस के हाथ पर गोश्त की चिक्नाहट लगी हो और वोह हाथ धोए बिग़ैर सो जाए और उसे कोई

---

1 ......سنن ابن ماجه،ابواب الأطعمة ،باب الوضوء عند الطعام ،الحديث : ۳۲۶۰،ص۲۶۷۴۔

2 ...... येह ह़दीस बयाने जवाज़ के लिये है वरना सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दते मुबा-रका येही थी कि खाने से क़ब्ल खाने का वुज़ू फ़रमाते और कभी ऐसा अ़मल भी फ़रमाते जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक आ़दत के ख़िलाफ़ होता ताकि उम्मत को मस्अला मा'लूम हो जाए । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने क़ौल व फ़े'ल से बताया कि खाना खाने से पहले वुज़ू करना वाजिब नहीं और गुज़श्ता अह़ादीसे मुबा-रका से साबित है कि खाने से क़ब्ल हाथ धोना सुन्नते मुबा-रका है । चुनान्चे, ''बहारे शरीअ़त'' में मन्क़ूल है : ''सुन्नत येह है कि क़ब्ले त़आ़म और बा'दे त़आ़म दोनों हाथ गिट्टों तक धोए जाएं । बा'ज़ लोग सिर्फ़ एक हाथ या फ़क़त़ उंग्लियां धो लेते हैं बल्कि सिर्फ़ चुटकी धोने पर किफ़ायत करते हैं इस से सुन्नत अदा नहीं होती ।''

(बहारे शरीअ़त, खाने का बयान, हिस़्सा : 16, स. 19)

3 ......صحيح مسلم ،كتاب الحيض،باب جواز أكل المحدث الطعام......الخ ،الحديث :۸۲۸،ص۷۳۷۔

4 ......سنن ابى داود ،كتاب الأطعمة ،باب فى غسل اليدين عند الطعام ،الحديث :۳۷۶۰،ص۱۵۰۱۔



www.dawateislami.net

चीज़ (या'नी कोई मूज़ी जानवर) नुक़्सान पहुंचाए तो वोह अपने आप को ही मलामत करे।''(1)

﴾41﴿...... एक रिवायत में है कि ''उसे बरस की बीमारी लग जाए तो अपने आप को ही मलामत करे।''(2)

﴾42﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : ''खाने के दरमियान में ब-र-कत नाज़िल होती है पस किनारों से खाओ और दरमियान से न खाओ।''(3)

﴾43﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''जब तुम में से कोई खाना खाए तो दरमियान से न खाए बल्कि एक किनारे से खाए।''(4)

﴾44﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बेहतरीन सालन सिर्का है।''(5)

﴾45﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : ''ज़ैतून का तेल खाओ और इस से (अपने बदन पर) मालिश करो क्यूं कि येह इन्तिहाई बा ब-र-कत दरख़्त से (ह़ासिल किया जाता) है।''(6)

﴾46﴿...... एक रिवायत में है कि ''बेशक येह त़य्यिब और ब-र-कत वाला है।''(7)

﴾47﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''गोश्त दांतों से नोच कर खाओ कि इस त़रह़ येह ज़ियादा लज़ीज़ और जल्दी हज़्म होने वाला है।''(8)

﴾48﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक

---

1 ......سنن ابی داود ،كتاب الأطعمة ،باب فی غسل اليد من الطعام ،الحديث:۳۸۵۲،ص۱۵۰۶۔

2 ......المعجم الكبير ، الحديث: ۵۴۳۵،ج۶،ص۳۵۔

3 ......جامع الترمذی ،ابواب الأطعمة ،باب ماجاء فی كراهية الأكل من وسط الطعام،الحديث:۱۸۰۵،ص۱۸۳۵۔

4 ......سنن ابی داود،كتاب الأطعمة،باب فی الأكل من اعلی الصحفة، الحديث :۳۷۷۲، ص۱۵۰۱۔

5 ......صحيح مسلم ،كتاب الأشربة ،باب فضيلة الخل والتادم به ،الحديث :۵۳۵۰،ص۱۰۴۴۔

6 ......جامع الترمذی ،ابواب الأطعمة ،باب ماجاء فی أكل الزيت ،الحديث :۱۸۵۱،ص۱۸۳۹۔

7 ......المستدرک،كتاب التفسير،تفسير سورة النور،باب كلوا الزيت وادهنوا به، الحديث: ۳۵۵۷،ج۳،ص۱۲۲۔

8 ......جامع الترمذی، ابواب الأطعمة ،باب ماجاء أنه قال:انهشوا اللحم نهشا ،الحديث:۱۸۳۵، ص۱۸۳۸۔



www.dawateislami.net

बकरी के शाने का गोश्त काट कर खाया फिर नमाज़ अदा फ़रमाई ।[1]

﴾49﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मा'शर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''गोश्त को छुरी से न काटो कि येह अ़-जमिय्यों का त़रीक़ा है, इस को दांतों से नोच कर खाओ कि येह ज़ियादा मज़ेदार और जल्दी हज़्म होने वाला है ।''[2]

﴾50﴿...... हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से पसन्दीदा खाना वोह है जिस पर ज़ियादा हाथ पड़ें (या'नी जिस में ज़ियादा लोग शामिल हों) ।''[3]

﴾51﴿...... एक दफ़्आ़ सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम खाते हैं लेकिन सैर नहीं होते ।'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''तुम मिल कर खाना खाते हो या अ़ला-ह़िदा अ़ला-ह़िदा ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''अ़ला-ह़िदा अ़ला-ह़िदा ।'' इर्शाद फ़रमाया : ''मिल कर खाना खाया करो और उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम भी लिया करो तो तुम्हारे लिये उस में ब-र-कत डाल दी जाएगी ।''[4]

﴾52﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : ''तुम में से हर एक को दाएं हाथ से खाना पीना और लेना देना चाहिये क्यूं कि शैत़ान बाएं हाथ से खाता पीता और बाएं हाथ से ही लेता देता है ।''[5]

﴾53﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पीने की चीज़ में फूंकने से मन्अ़ फ़रमाया, एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : ''अगर मैं बरतन में तिन्के देखूं (तो क्या करूं) ?'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''उसे (ऊपर से थोड़ा सा) उंडेल दो ।'' उस ने अ़र्ज़ की : ''मैं एक सांस से सैराब भी नहीं होता ।'' तो इर्शाद फ़रमाया : ''बरतन मुंह से हटा (कर सांस) लो ।''[6]

---

1 ......صحيح مسلم ،كتاب الحيض ،باب نسخ الوضوء مما مست النار ،الحديث :٧٩٢،ص٣٥ـ

2 ......سنن ابى داود ،كتاب الأطعمة ،باب فى أكل اللحم ،الحديث:٣٧٧٨،ص١٥٠٢ ،"وانهشوه": بدله: "وانهسوه"ـ

3 ......مسند ابى يعلى الموصلى،مسند جابر بن عبد الله، الحديث:٢٠٤١،ج٢،ص٢٨٨ـ

4 ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان ،كتاب الأطعمة ،باب آداب الأكل ،الحديث :٥٢٠١،ج٧،ص٣٢٧ـ

5 ......سنن ابن ماجه،كتاب الأطعمة ،باب الأكل باليمين ،الحديث :٣٢٦٦،ص٢٦٧٥ـ

6 ......جامع الترمذى ، ابواب الأشربة ،باب ماجاء فى كراهية النفخ فى الشراب ،الحديث :١٨٨٧،ص١٨٤٢ـ



www.dawateislami.net

﴾54﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बरतन के सूराख़ से पीने और मशरूब (या'नी हर पीने की चीज़) में फूंक मारने से मन्अ़ फ़रमाया ।(1)

﴾55﴿...... ख़ा–तमुल मुर–सलीन, रहमतुल्लिल आ–लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बरतन में सांस लेने या उस में फूंक मारने से मन्अ़ फ़रमाया ।(2)

﴾56﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमाया कि कोई शख़्स मश्कीज़े से पिये और उस में सांस ले ।(3)

﴾57﴿...... सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (पानी पीने में) तीन मर्तबा सांस लेते थे ।(4)

﴾58﴿...... एक रिवायत में है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बरतन से (पानी पीते वक़्त) तीन मर्तबा सांस लेते और इर्शाद फ़रमाते : ''येह लज़ीज़ और ज़ियादा सैराब करने वाला है ।''(5)

**वज़ाहत :** मज़्कूरा हदीसे पाक का मफ़्हूम येह है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने मुंह से बरतन जुदा करते, फिर सांस लेते क्यूं कि अभी एक रिवायत गुज़री है जिस में ख़ुद हुक्म फ़रमाया : ''बरतन मुंह से हटा (कर सांस) लो ।''

﴾59﴿...... हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मश्कीज़ों के मुंह मोड़ कर पानी पीने से मन्अ़ फ़रमाया ।(6)

﴾60﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है : ''रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मश्कीज़े से मुंह लगा कर पीने से मन्अ़ फ़रमाया ।'' (हज़रते सय्यिदुना अय्यूब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं) मुझे बताया गया है कि ''एक शख़्स ने मश्कीज़े से मुंह लगा कर पिया तो उस से सांप निकल आया ।''(7)

---

1 ......سنن ابی داود ،كتاب الأشربة ،باب فی الشرب مِنْ ثُلْمَةِ الْقَدَحِ ،الحديث:۳۷۲۲،ص۱۴۹۸۔

2 ......سنن ابی داود ،كتاب الأشربة ،باب فی النفخ فی الشراب والتنفس فيه ،الحديث :۳۷۲۸،ص۱۴۹۹۔

3 ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان،كتاب الأشربة،باب آداب الشرب،الحديث :۵۲۹۲،ج۷،ص۳۵۸۔

4 ......صحيح البخاری ،كتاب الأشربة، باب الشرب بنفسين أو ثلاثةٍ ،الحديث :۵۶۳۱،ص۴۸۲۔

5 ......جامع الترمذی ،ابواب الأشربة ،باب ماجاء فی التنفس فی الإناء ،الحديث:۱۸۸۴،ص۱۸۴۲۔

6 ......صحيح البخاری ،كتاب الأشربة ،باب اختناث الأسقية ،الحديث : ۵۶۲۵،ص۴۸۲۔

7 ......المسند للامام احمد بن حنبل،مسند ابی هريرة،الحديث:۷۱۵۶،ج۳،ص۹ ۔



www.dawateislami.net

# ३- باب عشرة النساء

## कबीरा नम्बर 273 : ज़ुल्मन एक बीवी पर दूसरी को तरजीह़ देना

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जिस की दो बीवियां हों और उस ने दोनों के दरमियान अ़द्ल न किया तो वोह बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में आएगा कि उस का एक पहलू मफ़्लूज होगा।''(1)

﴾2﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस की दो बीवियां हों और वोह उन में से एक की त़रफ़ माइल हो तो बरोज़े क़ियामत यूं आएगा कि उस का एक पहलू मफ़्लूज होगा।''(2)

﴾3﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस की दो बीवियां हों और वोह एक की निस्बत दूसरी की त़रफ़ ज़ियादा माइल हो तो क़ियामत के दिन इस ह़ालत में आएगा कि उस का एक पहलू मफ़्लूज होगा।''(3)

﴾4﴿...... सह़ीह़ इब्ने माजह और सह़ीह़ इब्ने ह़ब्बान की रिवायत में है : ''उस के दोनों पहलूओं में से एक फ़ालिज ज़दा होगा।''(4)

**वज़ाह़त :** ह़दीसे पाक में मज़्कूर लफ़्ज़े ''مَالَ'' और ''یَمِیْلُ'' से मुराद येह है कि दोनों में से एक को उन ज़ाहिरी उमूर में तरजीह़ दे जिन में हु़ज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तरजीह़ देना ह़राम क़रार दिया न कि दिल का माइल होना। क्यूं कि अस्ह़ाबे सु-नने अर्बआ़ (या'नी सु-नने तिरमिज़ी, सु-नने अबी दावूद, सु-नने इब्ने माजह और सु-नने नसाई) और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ह़ब्बान رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने अपनी सह़ीह़ में रिवायत नक़्ल फ़रमाई है कि,

﴾5﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا इर्शाद फ़रमाती हैं : हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बारी में अ़द्ल फ़रमाते और रब عَزَّوَجَلَّ की

---

(1) ......جامع الترمذی،ابواب النکاح،باب ماجاء فی التسویة بین الضرائر،الحدیث:۱۱۴۱،ص۱۷۶۳۔
الترغیب والترھیب،کتاب النکاح،باب الترھیب من ترجیح احدی......الخ،الحدیث:۳۰۲۹،ج۳،ص۲۸۔
(2) ......سنن ابی داود،کتاب النکاح، باب فی القسم بین النساء، الحدیث :۲۱۳۳،ص۱۳۸۰۔
(3) ......سنن النسائی ،کتاب عشرة النساء،باب میل الرجل الی بعض نسائه دون بعض ،الحدیث:۳۳۹۴،ص۲۳۰۷۔
(4) ......سنن ابن ماجه، ابواب النکاح ،باب القسم بین النساء ،الحدیث :۱۹۶۹،ص۲۵۹۴۔



www.dawateislami.net

बारगाह में अ़र्ज़ करते : ''या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! येह मेरी तक़्सीम है जिस का मालिक मैं हूं पस जिस का तू मालिक है और मैं नहीं, उस में मुझे मलामत न फ़रमा।''(1)

﴾6﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बेशक अ़द्ल करने वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दाईं जानिब नूर के मिम्बरों पर होंगे और उस की दोनों जानिबें दाईं हैं। येह वोह लोग हैं जो अपने अहलो इ़याल और अपनी रआ़या में अ़द्ल के साथ फ़ैसले करते हैं।''(2)

**तम्बीह :** मज़्कूरा वई़द की बिना पर इस का कबीरा होना वाज़ेह़ है क्यूं कि इस में ना क़ाबिले बरदाश्त तक्लीफ़ है अगर्चे उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने ज़िक्र नहीं किया।

## कबीरा नम्बर 274 : बीवी के हुक़ूक़ अदा न करना जैसे महर, न-फ़क़ा वग़ैरा

## कबीरा नम्बर 275 : हुक़ूक़े शोहर अदा न करना म-सलन बिला उ़ज़्रे शर-ई़ जिमाअ़ से रोकना

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

﴾1﴿ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْۤا اِصْلَاحًا (پ۲، البقرة۲۲۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और उन के शोहरों को इस मुद्दत के अन्दर उन के फैर लेने का ह़क़ पहुंचता है अगर मिलाप चाहें।

इस के बा'द इर्शाद फ़रमाया :

﴾2﴿ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ وَ لِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ (پ۲،البقرة:۲۲۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और औ़रतों का भी ह़क़ ऐसा ही है जैसा इन पर है शर-अ़ के मुवाफ़िक़ और मर्दों को इन पर फ़ज़ीलत है।

जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह वज़ाह़त फ़रमाई कि मर्द के त़लाक़ दे कर रुजूअ़ कर लेने से मक़्सूद औ़रत की इस्लाह़ करना है और इसे तक्लीफ़ पहुंचाना मुराद नहीं, तो इस के बा'द येह वज़ाह़त भी फ़रमा दी कि ''मियां बीवी में से हर एक का दूसरे पर कुछ ह़क़ है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا इर्शाद फ़रमाते हैं : ''इस आयते मुबा-रका की वज्ह

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب النکاح، باب فی القسم بین النساء، الحدیث: ۲۱۳۴، ص۱۳۸۰ ـ

2 ......صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضیلۃ الامیر......الخ، الحدیث: ۴۷۲۱، ص۱۰۰۶ ـ



www.dawateislami.net

से मैं अपनी बीवी की ख़ातिर इसी त़रह़ संवरता हूं जिस त़रह़ वोह मेरे लिये संवरती है।"[1]

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "मर्द पर लाज़िम है कि औ़रत के हुक़ूक़ और ज़रूरिय्यात पूरी करे और औ़रत पर भी उस की फ़रमां बरदारी और ताबेअ़ दारी करना वाजिब है।" जब कि बा'ज़ का क़ौल येह है कि "औ़रतों का अपने शोहरों पर ह़क़ येह है कि जब वोह त़लाक़ दे कर रुजूअ़ करें तो उन की ग़-लती की इस्लाह़ भी करें, जब कि मर्दों का उन पर येह ह़क़ है कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन के रेह़्मों में जो पैदा किया है उसे न छुपाएं।" ज़ियादा बेहतर और मुनासिब तो येह है कि आयते मुबा-रका को उस के आ़म हुक्म पर बाक़ी रखा जाए अगर्चे इस का इब्तिदाई ह़िस्सा इस क़ौल की ताईद करता है।

बहर ह़ाल मर्द का मर्तबा औ़रत से बुलन्द तर है क्यूं कि वोह फ़ज़्ल, अ़क़्ल, दियत, मीरास और ग़नीमत के ए'तिबार से इस से ज़ियादा कामिल है और इमामत, फ़ैसला करने और गवाही देने की सलाह़िय्यत रखता है, एक बीवी की मौजू-दगी में दूसरी से शादी कर सकता है और किसी को अपनी लौंडी बना सकता है, त़लाक़ देने और फिर रुजूअ़ करने का इख़्तियार रखता है अगर्चे औ़रत इन्कार भी करे मगर औ़रत त़लाक़ देने का इख़्तियार नहीं रखती।

इस के इ़लावा रह़मत व शफ़्क़त और बाहमी मुआ़-मलात को ख़ुश उस्लूबी से त़ै करने की ज़िम्मादारी मर्द पर ज़ियादा है जैसे मह्र देना, नफ़्क़ा देना, औ़रत को ज़रर रसां अश्या से बचाना, उस की ज़रूरिय्यात पूरी करना और उसे आफ़ातो बलिय्यात की जगहों पर जाने से रोकना। लिहाज़ा इन्ही ज़ाइद हुक़ूक़ की वज्ह से औ़रत को मर्द की ख़िदमत सर अन्जाम देने की ज़ियादा ताकीद की गई है।

जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَّبِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ

(پ۵، النسآء:۳۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** मर्द अफ़्सर हैं औ़रतों पर इस लिये कि **अल्लाह** ने इन में एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी और इस लिये कि मर्दों ने इन पर अपने माल ख़र्च किये।

## मर्द की अफ़्ज़लिय्यत की वुजूहात :

येही वज्ह है कि इस आयते मुक़द्दसा की तफ़्सीर करते हुए मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : "बहुत सी ह़क़ीक़ी और शर-ई वुजूहात की बिना पर मर्दों को औ़रतों पर फ़ज़ीलत दी गई है।

1 ......الجامع لاحكام القرآن للقرطبى، البقرة، تحت الآية ۲۲۸، ج۲، الجزء الثالث، ص۹۶۔



www.dawateislami.net

## पहली वज्ह :

मर्द इल्म व अ़क्ल में औ़रतों से ज़ाइद होते हैं, इन के दिल मशक़्क़त त़लब कामों को बरदाश्त करने की सकत रखते हैं और इसी त़रह़ वोह कुव्वत व त़ाक़त, उ़मूमन मुआ़-ह-दए किताबत (या'नी ग़ुलाम का अपने मालिक से येह तै कर लेना कि वोह इतनी रक़म उसे कमा दे तो आज़ाद हो जाएगा), घुड़ सुवारी और तीर अन्दाज़ी में भी बरतर होते हैं, उ़-लमाए किराम, इमामते कुब्रा और सुग़रा भी इन्ही में पाई जाती है। मुजाहिद, मुअज़्ज़िन और ख़त़ीब मर्द ही होते हैं, मसाजिद में जुमुआ़ और ए'तिकाफ़ का इन्इक़ाद भी मर्द ही करते हैं, हुदूद व क़िसास और निकाह़ वग़ैरा में भी मर्दों की गवाही ली जाती है, मीरास की ज़ियादती, औ़रतों को मीरास में अ़-सबा बनाना और दियत का ज़ामिन होना भी मर्दों से ही मु-तअ़ल्लिक़ है, निकाह़, त़लाक़, रज्अ़त और कई बीवियों की विलायत का ह़क़ भी मर्द ही को ह़ासिल है, नीज़ नसब की निस्बत भी इन्ही की त़रफ़ होती है।

## दूसरी वज्ह :

महर और नान व नफ़क़ा वग़ैरा देना भी मर्दों का काम है। चुनान्चे,

﴾1﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर मैं किसी को सज्दा करने का हुक्म देता तो औ़रतों को हुक्म देता कि वोह अपने शोहरों को सज्दा करें इस लिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से इन पर शोहरों के हुक़ूक़ हैं।"(1)

जब औ़रत का नान व नफ़क़ा मर्द के ज़िम्मे हैं तो वोह इस के हाथ में एक आ़जिज़ क़ैदी की त़रह़ है। चुनान्चे,

﴾2﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने औ़रतों के साथ भलाई करने की नसीह़त करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "औ़रतों के साथ भलाई करो क्यूं कि वोह तुम्हारे हां क़ैदी हैं।"(2)

﴾3﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "कमज़ोर ग़ुलामों और औ़रतों के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो।"(3)

इसी के मु-तअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी इर्शाद फ़रमाता है :

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب النکاح، باب فی حق الزوج علی المراۃ، الحدیث: ۲۱۴۰، ص۱۳۸۰۔

2 ......جامع الترمذی، ابواب الرضاع، باب ما جاء فی حق المراۃ علی زوجھا، الحدیث: ۱۱۶۳، ص۱۷۶۶۔

3 ......الجامع الصغیر للسیوطی، الحدیث: ۱۲۶، ص۱۵۔



www.dawateislami.net

وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ (پ۴، النساء:۱۹) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और इन से अच्छा बरताव करो।

इब्राहीम बिन सरी बिन सह्ल, अल मा'रूफ़ इमाम ज़ुजाज (मु-तवफ़्फ़ा 311 हि.) लिखते हैं : ''इस से मुराद ख़र्चा, घर में इन्साफ़ और गुफ़्त-गू में नरमी है।'' येह भी मन्क़ूल है कि ''मर्द भी औरत के लिये इसी त़रह़ संवरे जैसे वोह इस के लिये संवरती है।''

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अबू अ़ब्दुल्लाह** मुह़म्मद बिन अह़मद क़ुरतुबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 671 हि.) ने उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام से नक़्ल फ़रमाया है कि ''उन्हों ने इस आयते मुबा-रका से इस्तिद्लाल किया है कि अगर बीवी को एक ख़ादिम काफ़ी न हो तो ज़ियादा ख़ुद्दाम रखना वाजिब है।'' और इमाम क़ुरतुबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 671 हि.) ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا (मु-तवफ़्फ़ा 150 हि.) के इस क़ौल को ग़लत़ क़रार दिया है कि ''मर्द पर बीवी के लिये एक ही ख़ादिम रखना वाजिब है।'' क्यूं कि दुन्या में कई औ़रतें ऐसी हैं जिन्हें एक ख़ादिम किफ़ायत नहीं करता जैसा कि बादशाहों की लड़कियां जिन की शान बहुत बुलन्द होती है, खाना पकाने और कपड़े धोने के लिये इन्हें एक ख़ादिम काफ़ी नहीं होता।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 671 हि.) के इस मौक़िफ़ को रद करते हुए कहा गया कि सिर्फ़ इस न-ज़रिय्ये की बिना पर अइम्मए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام को ग़लत़ क़रार देना बिल्कुल फ़साद है, क्यूं कि गुफ़्त-गू तो उन के ह़ुक़ूक़ के मु-तअ़ल्लिक़ हो रही है जो ख़ावन्द पर ज़ौजिय्यत के ए'तिबार से वाजिब हैं और इस ए'तिबार से येह बात भी मा'लूम है कि मर्द पर वोही अश्या मुहय्या करना वाजिब है जिन की ज़ाती त़ौर पर औ़रत मोह़ताज होती है और जो उस की ज़ात से मु-तअ़ल्लिक़ होती हैं और इस में कोई शक नहीं कि बीवी के लिये इन सब के ह़ुसूल के लिये सिर्फ़ एक ख़ादिम काफ़ी है। अगर इसे एक से ज़ियादा ख़ुद्दाम की ज़रूरत हो तो इस की दो सूरतें हैं : (1)...... अगर औ़रत को ख़ादिम की ज़रूरत उन उमूर की वज्ह से हो जो ज़ौजिय्यत से ख़ारिज हों और उन का तअ़ल्लुक़ उस की अपनी ज़ात से हो तो इस की ज़िम्मादारी उसी पर है और (2)...... अगर वोह उमूर मर्द से मु-तअ़ल्लिक़ा हों तो उस की ज़िम्मादारी मर्द पर है मगर ज़ौजिय्यत के ए'तिबार से नहीं।

पस दोनों इमाम साहिबान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا के फ़रमान का सह़ीह़ होना ज़ाहिर हो गया



www.dawateislami.net

और जिस ने इन्हें ग़लत़ क़रार दिया उस का इन्हें ग़लत़ क़रार देने में सख़्त कलामी से पेश आना भी अच्छी त़रह़ वाज़ेह़ हो गया। **अइम्मए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام **का अदब करने में भलाई ही भलाई है।**

《4》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जिस शख़्स ने किसी औ़रत से कम या ज़ियादा महर पर निकाह़ किया और उस के दिल में उसे अदा करने का इरादा नहीं तो उस ने उसे धोका दिया और उस का ह़क़ अदा किये बिग़ैर मर गया तो वोह बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि वोह ज़ानी (शुमार) होगा।''(1)

《5》...... हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : ''तुम में से हर एक निगरान है और हर एक से उस के मा तह़्तों के बारे में पूछा जाएगा, मुसल्मानों का इमाम (या'नी हुक्मरान) निगरान है उस से उस के मा तह़्तों (या'नी अ़वाम) के बारे में पूछा जाएगा, औ़रत अपने शोहर के घर में निगरान है उस से उस की रआ़या (या'नी बच्चों) के बारे में सुवाल होगा, मर्द अपने घर में निगरान है और उस से उस के मा तह़्तों (या'नी बीवी बच्चों) के बारे में पूछा जाएगा और ख़ादिम अपने आक़ा के माल का निगरान है उस से उस के बारे में सुवाल होगा, (अल ग़रज़) तुम में से हर एक निगरान है और हर एक से उस के मा तह़्तों के बारे में सुवाल होगा।''(2)

《6》...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''लोगों में कामिल ईमान वाला वोह है जिस के अख़्लाक़ सब से अच्छे हैं और तुम में सब से बेहतर वोह है जो अपनी बीवी के ह़क़ में बेहतर हो।''(3)

《7》...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''बेशक लोगों में से कामिल ईमान वाला वोह है जिस के अख़्लाक़ सब से अच्छे हों और वोह अपने घर वालों पर नरमी करने वाला हो।''(4)

《8》...... दूसरी रिवायत में है : ''तुम में सब से अच्छा वोह है जो अपने घर वालों के लिये अच्छा है।''(5)

《9》...... एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं : ''और मैं अपने घर वालों के लिये तुम सब से बेहतर हूं।''(6)

---

(1)......المعجم الصغير للطبرانی، الحديث: ۱۱۱، الجزء الاول، ص۴۳۔

(2)......صحيح البخاری، كتاب الجمعة، باب الجمعة فی القری والمدن، الحديث: ۸۹۳، ص۷۰۔

(3)......جامع الترمذی، كتاب الرضاع، باب ماجاء فی حق المراة علی زوجها، الحديث: ۱۱۶۲، ص۱۷۶۵۔

(4)......جامع الترمذی، ابواب الايمان، باب فی استكمال الايمان والزيادة والنقصان، الحديث: ۲۶۱۲، ص۱۹۱۵۔

(5)......جامع الترمذی، ابواب المناقب، باب فضل ازواج النبی، الحديث: ۳۸۹۵، ص۲۰۵۰۔

(6)......جامع الترمذی، ابواب المناقب، باب فضل ازواج النبی، الحديث: ۳۸۹۵، ص۲۰۵۰۔



www.dawateislami.net

﴾10﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त बयान है : ''बेशक औ़रत टेढ़ी पसली से पैदा की गई है अगर तुम इसे सीधा करोगे तो तोड़ दोगे, लिहाज़ा इस से नरमी का बरताव करते हुए ज़िन्दगी बसर करो।''[1]

﴾11﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मैं तुम्हें वसिय्यत करता हूं कि औ़रतों के साथ ह़ुस्ने सुलूक से पेश आओ क्यूं कि औ़रत पसली से पैदा की गई है और पस्लियों में सब से टेढ़ी ऊपर वाली होती है अगर तुम इसे सीधा करना चाहोगे तो तोड़ दोगे और अगर इसे छोड़ दोगे तो टेढ़ी ही रहेगी, पस औ़रतों के साथ ह़ुस्ने सुलूक से पेश आओ।''[2]

﴾12﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''औ़रत पसली से पैदा की गई है वोह तेरे लिये कभी सीधी नहीं हो सकती अगर तू उस से गुज़ारा करना चाहे तो इसी ह़ालत में कर सकता है और सीधा करना चाहेगा तो तोड़ देगा और तोड़ना त़लाक़ देना है।''[3]

﴾13﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : ''कोई मोमिन मर्द (या'नी शोहर) किसी मोमिना औ़रत (या'नी बीवी) से बुग़्ज़ नहीं रखता। (अलबत्ता !) अगर उस की एक आ़दत बुरी लगे तो दूसरी आ़दत से वोह ख़ुश हो जाएगा।'' रावी फ़रमाते हैं : या इस के इ़लावा कुछ और फ़रमाया।[4]

﴾14﴿...... एक सह़ाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम में से किसी पर उस की बीवी का क्या ह़क़ है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''जब तुम ख़ुद खाओ तो उसे भी खिलाओ और जब ख़ुद पहनो तो उसे भी पहनाओ और चेहरे पर मत मारो और उसे बुरे अल्फ़ाज़ न कहो (जैसे **अल्लाह** तेरा बुरा करे !) और उस से (वक़्ती) क़त़्ए तअ़ल्लुक़ करना हो तो घर में करो।''[5]

1 ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب النكاح، باب معاشرة الزوجين، الحديث: ۴۱۷۶، ج۶، ص۱۸۹۔
2 ......صحيح البخارى، كتاب احاديث الانبياء، باب خَلْقِ آدَمَ وَذُرِّيَّتِهِ، الحديث: ۳۳۳۱، ص۲۶۹۔
3 ......صحيح مسلم، كتاب الرضاع، باب الوصية بالنساء، الحديث: ۳۶۴۳، ص۹۲۶۔
4 ......صحيح مسلم، كتاب الرضاع، باب الوصية بالنساء، الحديث: ۳۶۴۵، ص۹۲۶۔
5 ......سنن ابى داود، كتاب النكاح، باب فى حق المراة على زوجها، الحديث: ۲۱۴۲، ص۱۳۸۰۔


www.dawateislami.net

﴾15﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना और वा'ज़ो नसीह़त करने के बा'द इर्शाद फ़रमाया : ''सुन लो ! औ़रतों के साथ ह़ुस्ने सुलूक से पेश आओ, क्यूं कि वोह तुम्हारे पास क़ैदियों की मानिन्द हैं, तुम उन की किसी चीज़ के मालिक नहीं । हां ! अगर वोह वाज़ेह़ ग़-लती करें तो उन्हें बिस्तरों से अलग कर दो और ऐसी मार मारो कि न हड्डी टूटे और न ही निशान पड़े, अगर वोह तुम्हारा कहना मानें तो उन पर ज़ुल्म मत करो । ख़बरदार ! तुम्हारी औ़रतों पर तुम्हारे ह़ुक़ूक़ हैं और तुम पर तुम्हारी औ़रतों के ह़ुक़ूक़ हैं । उन पर तुम्हारा ह़क़ येह है कि वोह तुम्हारे बिस्तरों को उन से पामाल न कराएं जिन्हें तुम ना पसन्द करते हो और न ही तुम्हारी इजाज़त के बिग़ैर घर में किसी ऐसे शख़्स को दाख़िल होने दें जो तुम्हें ना पसन्द हो जब कि तुम पर उन का ह़क़ येह है कि तुम उन के खाने पीने और पहनने के मुआ़-मलात में अच्छा बरताव करो ।''(1)

## शोहर के ह़ुक़ूक़ के मु-तअ़ल्लिक़ अह़ादीसे मुबा-रका :

﴾16﴿...... ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : ''जो औ़रत इस ह़ाल में मरी कि उस का शोहर उस से राज़ी था तो वोह जन्नत में दाख़िल होगी ।''(2)

﴾17﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब औ़रत पांच वक़्त नमाज़ पढ़े, अपनी शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त करे और अपने शोहर की फ़रमां बरदारी करे तो वोह जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहेगी दाख़िल हो जाएगी ।''(3)

﴾18﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''जब औ़रत पांचों नमाज़ें पढ़े, र-मज़ान के रोज़े रखे, अपनी शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त करे और अपने शोहर की फ़रमां बरदारी करे तो उसे कहा जाएगा : ''जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जा ।''(4)

﴾19﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शादी शुदा औ़रत (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुसैन बिन मोह़सिन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की फूफी) से दरयाफ़्त फ़रमाया : ''तेरा

---

1 ......جامع الترمذی، کتاب الرضاع، باب ما جاء فی حق المرأة علی زوجھا، الحدیث: ۱۱۶۳، ص۱۷۶۶۔

2 ......جامع الترمذی، کتاب الرضاع، باب ماجاء فی حق الزوج علی المراة، الحدیث: ۱۱۶۱، ص۱۷۶۵۔

3 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب النکاح، باب معاشرة الزوجین، الحدیث: ۴۱۵۱، ج۶، ص۱۸۴۔

4 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث عبد الرحمٰن بن عوف الزھری، الحدیث: ۱۶۶۱، ج۱، ص۴۰۶۔



www.dawateislami.net

अपने शोहर से कैसा बरताव है ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''मैं ने उस की ख़िदमत में कोई कमी नहीं की लेकिन अब मैं उस से आ़जिज़ आ गई हूं।'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम कैसे उस से आ़जिज आ गई हो वोह तो तेरी जन्नत और दोज़ख़ है।''(1)

﴾20﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं ने रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : ''औ़रत पर सब से ज़ियादा ह़क़ किस का है ?'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''शोहर का।'' फिर मैं ने अ़र्ज़ की : ''मर्द पर सब से ज़ियादा ह़क़ किस का है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''उस की मां का।''(2)

﴾21﴿...... एक औ़रत ने हु़ज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं औ़रतों की त़रफ़ से क़ासिद बन कर ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुई हूं।'' फिर उस ने मर्दों के लिये जिहाद के अज्र और माले ग़नीमत का तज़्किरा किया फिर बोली : ''हमारे लिये इस के बदले में क्या है ?'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुझे जो भी औ़रत मिले उसे मेरी त़रफ़ से येह बात पहुंचा दे कि बेशक ख़ावन्द की इत़ाअ़त और उस के ह़क़ को जानना इस (या'नी जिहाद और माले ग़नीमत) के बराबर है और तुम में से बहुत कम औ़रतें ऐसा करती हैं।''(3)

﴾22﴿...... एक शख़्स अपनी बेटी को ले कर रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : ''मेरी येह बेटी शादी से इन्कार करती है।'' आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से इर्शाद फ़रमाया : ''अपने बाप की बात मान लो।'' उस ने अ़र्ज़ की : ''उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नबिय्ये बरह़क़ बना कर भेजा ! मैं उस वक़्त तक शादी नहीं करूंगी जब तक आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे येह न बता दें कि बीवी पर शोहर का ह़क़ क्या है।'' आप

(1)......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث عمة حصين، الحديث: ۲۷۴۲۱، ج۱۰، ص۳۸۳۔
المعجم الكبير، الحديث: ۴۴۹، ج۲۵، ص۱۸۳۔

(2)......السنن الكبرىٰ للنسائی، كتاب عشرة النساء، باب حق الرجل على المرأة، الحديث: ۹۱۴۸، ج۵، ص۳۶۳۔

(3)......كتاب المجروحين من المحدثين لابن حبان، الرقم ۳۵۰ رشدين بن كريب، ج۱، ص۳۷۸، بتغيرٍ قليلٍ۔



www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बीवी पर शोहर का ह़क़ येह है कि वोह शोहर के पीप भरे ज़ख़्म को अपनी ज़बान से चाट ले या उस के नथने पीप और ख़ून से भर जाएं और वोह निगल ले तब भी शोहर का ह़क़ अदा न होगा।" उस ने अ़र्ज़ की : "उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ भेजा ! अब तो मैं कभी शादी नहीं करूंगी।" फिर हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "औ़रतों का निकाह़ उन की इजाज़त के बिग़ैर न करो।"(1)

﴾23﴿...... एक औ़रत ने हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : "मैं फ़ुलां बिन्ते फ़ुलां हूं।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं जानता हूं, बताओ ! क्या काम है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "मैं अपने आ़बिदो ज़ाहिद चचाज़ाद भाई के मु-तअ़ल्लिक़ पूछना चाहती हूं।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं उसे जानता हूं।" उस ने अ़र्ज़ की : "उस ने मुझे निकाह़ का पैग़ाम दिया है, मुझे बताइये कि बीवी पर शोहर के क्या हु़क़ूक़ हैं ? अगर वोह हु़क़ूक़ ऐसे हों कि जिन की अदाएगी मेरे बस में हो तो उस से निकाह़ करूं।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "शोहर के ह़क़ में से है कि अगर उस के नथनों से ख़ून या पीप जारी हो और बीवी अपनी ज़बान से चाट ले तो भी उस का ह़क़ अदा न किया। अगर किसी इन्सान को सज्दा करना जाइज़ होता तो मैं औ़रतों को हु़क्म देता कि वोह अपने शोहरों को सज्दा करें जब वोह इन के पास आएं, क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शोहर को बीवी पर फ़ज़ीलत दी है।" उस ने अ़र्ज़ की : "उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ भेजा ! मैं ज़िन्दगी भर शादी नहीं करूंगी।"(2)

## सरकश ऊंट कैसे मुत़ीअ़ हुवा ?

﴾24﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि अन्सार के एक घराने के पास ऊंट था जिस पर वोह (कूंएं से) पानी लाते। उस पर क़ाबू पाना मुश्किल हो गया कि अपनी पीठ पर किसी को सुवार नहीं होने देता था। अन्सार हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : "हमारे पास एक ऊंट है जिस

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب النکاح، باب ما حق الزوج علی امرأته؟، الحدیث: ١، ج٣، ص٣٩٦، بتغیرٍ قلیلٍ۔

2 ......المستدرک، کتاب النکاح، باب حق الزوج علی زوجته، الحدیث: ٢٨٢٢، ج٢، ص٥٤٧۔



www.dawateislami.net

पर हम पानी लाते हैं, अब उस पर क़ाबू पाना दुश्वार है कि वोह किसी को अपनी पीठ पर बैठने नहीं देता और हमारी खेतियां और दरख़्त प्यासे हैं।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को हुक्म फ़रमाया : "खड़े हो जाओ।" पस वोह उठ खड़े हुए और बाग़ में दाख़िल हो गए, ऊंट बाग़ की एक जानिब था, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस त़रफ़ चल दिये तो अन्सार ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह कुत्ते की त़रह़ हो गया है और हमें डर है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ह़म्ला न कर दे।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुझे उस से कोई ख़त़रा नहीं।"

जब ऊंट ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ देखा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आ गया यहां तक कि आप के सामने सज्दा रेज़ हो कर गिर पड़ा। **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे पेशानी से पकड़ लिया, वोह इतना ज़लीलो ह़क़ीर लग रहा था कि इस क़दर पहले कभी न था यहां तक कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे काम में लगा दिया। सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह चौपाया है जो अ़क़्ल नहीं रखता फिर भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सज्दा कर रहा है और हम अ़क़्ल रखते हैं लिहाज़ा हमारा ज़ियादा ह़क़ बनता है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सज्दा करें।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "किसी इन्सान के लिये जाइज़ नहीं कि किसी इन्सान को सज्दा करे और अगर किसी इन्सान को सज्दा करना जाइज़ होता तो मैं शोहर के औ़रत पर अ़ज़ीम ह़क़ की बिना पर औ़रत को हुक्म देता कि वोह उसे सज्दा करे, अगर मर्द के क़दमों से ले कर सर की चोटी तक ज़ख़्म हों जिन से पीप और ख़ून जारी हो और औ़रत अपनी ज़बान से चाट ले तो भी उस ने शोहर का ह़क़ अदा नहीं किया।"[1]

﴾25﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : "अगर मैं किसी को सज्दा करने का हुक्म देता तो औ़रतों को हुक्म देता कि वोह अपने शोहरों को सज्दा करें इस लिये कि औ़रतों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से शोहरों के हुक़ूक़ हैं।" हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह बात उस वक़्त फ़रमाई जब ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन सा'द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अहले ह़ीरा को अपने बादशाह को सज्दा करते हुए देखा और अ़र्ज़ की : "आप

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند انس بن مالک بن النضر، الحدیث:۱۲۶۱۴، ج۴، ص۳۱۷۔



www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस के ज़ियादा मुस्तहिक़ हैं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सज्दा किया जाए।''(1)

﴾26﴿...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी औफ़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि ''जब हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه शाम से वापस आए तो मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सज्दा किया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''येह क्या (त़रीक़ा) है ?'' आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं शाम गया तो उन्हें देखा कि अपने सरदारों और पादरियों को सज्दा करते हैं, पस मैं ने भी इरादा कर लिया कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सज्दा करूं।'' तो इर्शाद फ़रमाया : ''ऐसा न करो क्यूं कि अगर मैं किसी को सज्दा करने का हुक्म देता तो औ़रत को हुक्म देता कि अपने शोहर को सज्दा करे, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! औ़रत उस वक़्त तक अपने रब عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ अदा नहीं कर सकती जब तक कि अपने शोहर का ह़क़ अदा न करे।''(2)

﴾27﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त बयान है : ''अगर मैं किसी को सज्दा करने का हुक्म देता तो औ़रत को हुक्म देता कि वोह अपने शोहर को उस के अ़ज़ीम ह़क़ की वज्ह से सज्दा करे, कोई औ़रत उस वक़्त तक ईमान की ह़लावत नहीं पा सकती जब तक कि वोह अपने शोहर का ह़क़ अदा न करे। अगर मर्द उसे अपनी ह़ाजत पूरी करने के लिये बुलाए इस ह़ाल में कि वोह ऊंट की पुश्त पर हो (तब भी उसे अपने आप से न रोके)।''(3)

﴾28﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या मैं तुम्हें इस बात की ख़बर न दूं कि जन्नती औ़रतें कौन सी हैं ?'' सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''जी हां ! **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !'' इर्शाद फ़रमाया : ''अपने शोहर से बहुत ज़ियादा मह़ब्बत करने वाली और बहुत ज़ियादा बच्चे जनने वाली और जब उस का शोहर ग़ुस्से में हो या उसे तक्लीफ़ दी जाए या उस का शोहर उस से नाराज़ हो जाए तो वोह कहे : ''येह मेरा हाथ तेरे हाथ में है मैं उस वक़्त तक नहीं सोऊंगी जब तक तू राज़ी न हो जाए।''(4)

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب النکاح، باب فی حق الزوج علی المراۃ، الحدیث: ۲۱۴۰، ص۱۳۸۰۔

2 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب النکاح، باب معاشرۃ الزوجین، الحدیث: ۴۱۵۹، ج۶، ص۱۸۶۔

3 ......المستدرک، کتاب البر والصلۃ، باب حق الزوج علی الزوجۃ، الحدیث: ۷۴۰۵، ج۵، ص۲۴۰۔

4 ......المعجم الصغیر للطبرانی، الحدیث: ۱۱۸، ج۱، الجزء الاول، ص۴۶۔



www.dawateislami.net

﴾29﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुरनूर है : "जो औ़रत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान रखती है उस के लिये जाइज़ नहीं कि (1)...... अपने शोहर के घर में किसी ऐसे शख़्स को आने की इजाज़त दे जिसे वोह ना पसन्द करता हो (2)...... उस के घर से इस ह़ाल में न निकले कि वोह ना पसन्द करता हो (3)...... उस के ख़िलाफ़ किसी की बात न माने (4)...... उस के बिस्तर से अ़ला-ह़-दगी इख़्तियार न करे (5)...... उसे नुक़्सान न पहुंचाए (6)...... अगर वोह उस पर ज़ुल्म करे तो भी उस की ख़िदमत में ह़ाज़िर रहे यहां तक कि वोह इस से राज़ी हो जाए, अगर वोह इसे क़बूल कर ले तो कितनी अच्छी बात है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी इस का उ़ज़्र क़बूल फ़रमाएगा और इस की हुज्जत को क़वी फ़रमाएगा और इस पर कोई गुनाह न होगा और अगर वोह राज़ी न हो तो येह बारगाहे ख़ुदा वन्दी में अपना उ़ज़्र पहुंचा चुकी है।"(1)

﴾30﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शरीअ़त बयान है : "शोहर का बीवी पर येह ह़क़ है कि अगर वोह इस को अपनी ह़ाजत पूरी करने के लिये बुलाए और येह ऊंट की पुश्त पर हो तो भी उसे ख़ुद से न रोके, और शोहर का बीवी पर येह भी ह़क़ है कि उस की इजाज़त के बिग़ैर नफ़्ली रोज़ा न रखे, अगर इस ने ऐसा किया तो भूकी और प्यासी रही और इस का रोज़ा भी क़बूल नहीं होगा और उस की इजाज़त के बिग़ैर घर से न निकले, अगर इस ने ऐसा किया तो वापस लौटने तक इस पर ज़मीन व आस्मान और रह़मत व अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते ला'नत भेजते रहेंगे।"(2)

﴾31﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ बयान है : "औ़रत उस वक़्त तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ अदा नहीं कर सकती जब तक कि अपने शोहर का तमाम ह़क़ अदा न कर दे, अगर वोह औ़रत से ह़ाजत पूरी करने का मुत़ा-लबा करे जब कि वोह ऊंट की पुश्त पर हो तब भी उसे अपने आप से न रोके।"(3)

﴾32﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसी औ़रत की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाएगा जो अपने शोहर का शुक्रिय्या अदा नहीं करती ह़ालां कि वोह उस से बे परवाह नहीं हो सकती।"(4)

---

1 ......المستدرک، کتاب النکاح، حق الزوج علی زوجتہ، الحدیث: ۲۸۲۴، ج۲، ص۵۴۸۔

2 ......الترغیب والترھیب، کتاب النکاح، باب ترغیب الزوج فی الوفاء......الخ، الحدیث: ۳۰۲۰، ج۳، ص۲۵۔

3 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۵۰۸۴، ج۵، ص۲۰۰۔

4 ......البحر الزخار المعروف بمسند البزار، مسند عبد اللّٰہ بن عمرو بن العاص، الحدیث: ۲۳۴۹، ج۶، ص۳۴۰۔



www.dawateislami.net

﴾33﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "दुन्या में जो भी औ़रत अपने शोहर को तक्लीफ़ देती है तो जन्नती हूरों में से उस की बीवी कहती है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे हलाक करे ! इसे तक्लीफ़ न दे, बेशक अभी येह तेरे पास मेहमान है, अ़न्क़रीब तुझ से जुदा हो कर हमारे पास आ जाएगा।"(1)

﴾34﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश गवार है : "जब मर्द अपनी बीवी को ख़्वाहिश पूरी करने के लिये बुलाए तो वोह ज़रूर उस के पास चली जाए अगर्चे तन्नूर पर हो।"(2) (म-सलन रोटी वग़ैरा पका रही हो)

﴾35﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जब शोहर बीवी को अपने बिस्तर पर बुलाए और वोह न आए, पस वोह इस से नाराज़ी में रात गुज़ार दे तो फ़रिश्ते सुब्ह़ तक उस पर ला'नत भेजते रहते हैं।"(3)

﴾36﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! जो शख़्स अपनी बीवी को बिस्तर पर बुलाए मगर वोह इन्कार कर दे तो आस्मान का मालिक उस पर नाराज़ रहता है यहां तक कि उस का शोहर उस से राज़ी हो जाए।"(4)

﴾37﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जब औ़रत अपने शोहर के बिस्तर से अ़ला-ह़दा हो कर रात गुज़ारती है तो सुब्ह़ तक फ़रिश्ते उस पर ला'नत भेजते रहते हैं।"(5)

﴾38﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तीन अश्ख़ास ऐसे हैं जिन की नमाज़ उन के सरों से एक बालिश्त भी ऊपर नहीं जाती। इन में उस औ़रत को भी शुमार किया गया है जो इस ह़ाल में रात गुज़ारे कि उस का शोहर उस से नाराज़ हो।"(6)

﴾39﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद

---

(1)......جامع الترمذی ،ابواب الرضاع ،باب الوعید للمراۃ علی ایذاء المراۃ زوجھا ،الحدیث : ۱۱۷۴ ،ص۱۷۶۷۔

(2)......جامع الترمذی ،ابواب الرضاع ،باب ماجاء فی حق الزوج علی المراۃ ،الحدیث : ۱۱۶۰ ،ص۱۷۶۵۔

(3)......صحیح مسلم ،کتاب النکاح ،باب تحریم امتناعھا من فراش زوجھا ،الحدیث: ۳۵۴۱ ،ص۹۱۹۔

(4)......المرجع السابق،الحدیث : ۳۵۴۰۔ (5)......المرجع السابق ،الحدیث : ۳۵۳۸۔

(6)......سنن ابن ماجه،ابواب اقامة الصلوات، باب من اَمَّ قوماوھم له کارھون، الحدیث: ۹۷۱ ،ص۲۵۳۴۔



www.dawateislami.net

फ़रमाया : "तीन आदमी ऐसे हैं जिन की न नमाज़ क़बूल की जाती है और न ही उन की कोई नेकी आस्मान तक बुलन्द होती है। और इन में उस औ़रत को भी शुमार किया जिस से उस का शोहर नाराज़ हो यहां तक कि वोह राज़ी हो जाए।"(1)

﴾40﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "जब औ़रत अपने घर से निकले और उस का शोहर इस बात को ना पसन्द करे तो उस के वापस आने तक आस्मान में मौजूद हर फ़िरिश्ता और जिन्नो इन्स के इ़लावा हर वोह चीज़ जिस के पास से गुज़रे वोह उस पर ला'नत भेजती है।"(2)

## तम्बीह :

इन दोनों गुनाहों को भी कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और येह पहली और आख़िरी ह़दीसे मुबा–रका से बिल्कुल वाज़ेह़ है क्यूं कि पहली ह़दीसे पाक में है कि "वोह शख़्स क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ज़ानी मिलेगा।" और येह इन्तिहाई सख़्त वई़द है और आख़िरी ह़दीसे पाक में है कि "शोहर की ना फ़रमान पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस के फ़रिश्तों और जिन्नो इन्स के इ़लावा तमाम मख़्लूक़ की ला'नत होती है।" और येह भी इसी त़रह़ इन्तिहाई शदीद वई़द है, पस इस से इन दोनों का कबीरा होना वाज़ेह़ हो गया, अगर्चे उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इस की इस त़रह़ वज़ाह़त नहीं की जिस त़रह़ मैं ने उ़न्वान में इस का ज़िक्र किया है।

۞۞۞۞۞۞۞

### ﴾......इ़ल्म सीखने से आता है......﴿

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा :** "इ़ल्म सीखने से ही आता है और फ़िक़्ह ग़ौरो फ़िक्र से ह़ासिल होती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन में समझ बूझ अ़त़ा फ़रमाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं।"

(المعجم الكبير، ج ١٩، ص ٥١١، الحديث: ٧٣١٢)

---

1 ......صحيح ابن خزيمة، كتاب الصلاة، باب نفى قبول صلاة المرأة......الخ، الحديث: ٩٤٠، ج ٢، ص ٦٩ـ

شعب الايمان للبيهقى، باب فى حق السادة على المماليک، الحديث: ٨٧٠٠، ج ٦، ص ٣٨٣ـ

2 ......المعجم الاوسط، الحديث: ٥١٣، ج ١، ص ١٥٨ـ



www.dawateislami.net

**कबीरा नम्बर 276 : क़त्ए तअ़ल्लुक़ी करना**

**( या'नी अपने मुसल्मान भाई को बिला उ़ज़्रे शर-ई तीन दिन से ज़ियादा छोड़ना )**

**कबीरा नम्बर 277 : रू गर्दानी करना**

**( या'नी मुसल्मान भाई से ए'राज़ करना कि वोह इस से मिले तो येह उस से चेहरा फैर ले )**

**कबीरा नम्बर 278 : एक दूसरे से बुग़्ज़ रखना**

**( या'नी जो दिल को इन दोनों में से एक की त़रफ़ फैर दे )**

## क़त्ए तअ़ल्लुक़ी की मज़म्मत पर अह़ादीसे मुबा-रका :

﴾1﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : ''किसी मुसल्मान के लिये तीन दिन से ज़ियादा दूसरे मुसल्मान से क़त्ए त़अल्लुक़ी जाइज़ नहीं। जब तक कि वोह एक दूसरे से नाराज़ रहते हैं ह़क़ से दूर रहते हैं और उन में से जो पहले नाराज़ी ख़त्म करता है तो उस का क़त्ए तअ़ल्लुक़ी ख़त्म करने में पहल करना उस के (गुनाहों) का कफ़्फ़ारा बन जाता है, अगर वोह उसे सलाम करे और दूसरा क़बूल न करे और उस के सलाम का जवाब न दे तो फ़रिश्ते उस के सलाम का जवाब देते हैं और दूसरे को शैत़ान जवाब देता है। अगर वोह इसी नाराज़ी पर फ़ौत हो जाएं तो वोह दोनों जन्नत में दाख़िल न होंगे।''(1)

﴾2﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''वोह (या'नी आपस में क़त्ए तअ़ल्लुक़ी करने वाले) दोनों जन्नत में दाख़िल न होंगे और न ही जन्नत में इकठ्ठे होंगे।''(2)

﴾3﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : ''किसी बन्दे के लिये दूसरे से तीन दिन से ज़ियादा क़त्ए तअ़ल्लुक़ रखना जाइज़ नहीं, अगर वोह तीन दिन से ज़ियादा क़त्ए तअ़ल्लुक़ करें तो जन्नत में कभी भी जम्अ़ न होंगे, जो अपने दोस्त से

---

(1)......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث هشام بن عامر، الحديث : ۱۶۲۵۸، ج۵، ص۴۸۷۔
المعجم الكبير، الحديث : ۴۵۴، ج۲۲، ص۱۷۵۔

(2)......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب الحظر والاباحة، باب ماجاء فى التباغض......الخ، الحديث:۵۶۳۵، ج۷، ص۴۷۰۔



www.dawateislami.net

(कलाम में) पहल करेगा तो येह उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा होगा, अगर वोह दूसरे को सलाम करे लेकिन वोह उस का जवाब न दे और सलाम क़बूल न करे तो पहले के सलाम का जवाब फ़रिश्ता देता है और दूसरे का जवाब शैत़ान देता है।''(1)

﴾4﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''तीन दिन से ज़ियादा क़त़ए तअ़ल्लुक़ी जाइज़ नहीं, अगर इन (या'नी क़त़ए तअ़ल्लुक़ी करने वालों) की आपस में मुलाक़ात हो और उन में से एक दूसरे को सलाम करे और दूसरा उस के सलाम का जवाब दे तो येह दोनों अज्र में शरीक हैं, लेकिन अगर वोह सलाम का जवाब न दे तो येह (या'नी सलाम करने वाला) क़त़ए तअ़ल्लुक़ी के गुनाह से बच गया और दूसरा उस गुनाह का मुर-तकिब हुवा।'' (रावी फ़रमाते हैं) मेरा ख़याल है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह इर्शाद फ़रमाया : ''अगर वोह दोनों क़त़ए तअ़ल्लुक़ी में ही मर गए तो जन्नत में इकठ्ठे न होंगे।''(2)

﴾5﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : ''न एक दूसरे से पीठ फैरो और न ही क़त़ए तअ़ल्लुक़ी करो और ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! भाई भाई बन जाओ। ईमान वालों की आपस में क़त़ए तअ़ल्लुक़ी सिर्फ़ तीन दिन तक है, (इस के बा'द भी) अगर वोह कलाम नहीं करते तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन से ए'राज़ फ़रमा लेता है यहां तक कि वोह एक दूसरे से गुफ़्त-गू करने लगें।''(3)

﴾6﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो शख़्स अपने भाई से तीन दिन से ज़ियादा तअ़ल्लुक़ तोड़े रखे वोह जहन्नम में जाएगा मगर येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी रह़मत से मुआ़फ़ फ़रमा दे।''(4)

﴾7﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

---

1 ......الترغیب الترھیب، کتاب الادب، باب الترھیب من التھاجر والتشاحن والتدابر، الحدیث: ۴۲۳۵،ج۳،ص۳۶۹۔

2 ......المستدرک، کتاب البروالصلۃ،باب لاتحل الھجرۃ......الخ، الحدیث :۷۳۷۳،ج۵، ص۲۲۶، بتغیرٍ قلیلٍ۔

3 ......المعجم الکبیر، الحدیث : ۳۹۵۷،ج۴،ص۱۴۵ ۔

4 ......المعجم الکبیر، الحدیث : ۸۱۵،ج۱۸،ص۳۱۵،"برحمتہ"بدلہ"بکرمتہ"۔



www.dawateislami.net

"जिस ने अपने भाई से साल भर क़त्ए तअ़ल्लुक़ किये रखा तो येह उस का ख़ून बहाने की त़रह है।"(1)

﴾8﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म–दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "शैत़ान इस बात से मायूस हो गया कि लोग जज़ीरए अ़रब में इस की इ़बादत करेंगे लेकिन मुसल्मानों को एक दूसरे के ख़िलाफ़ भड़काने और क़त्ए तअ़ल्लुक़ी कराने से (मायूस नहीं हुवा)।"(2)

﴾9﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है : "जब दो मुसल्मान आपस में क़त्ए तअ़ल्लुक़ी करते हैं तो उन में (तअ़ल्लुक़ तोड़ने वाला) इस्लाम से निकल जाता है यहां तक कि वोह दोबारा इस्लाम की त़रफ़ लौट आए और उस का लौटना येह है कि वोह अपने (नाराज़ दोस्त) के पास आए और उसे सलाम करे।"(3)

﴾10﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर दो शख़्स इस्लाम में दाख़िल हों फिर दोनों एक दूसरे से अलग हो जाएं तो उन दोनों में से एक इस्लाम से निकल जाता है यहां तक कि वोह दोबारा इस्लाम की त़रफ़ लौट आए।"(4) (या'नी उन दोनों में से जो ज़ालिम हो वोह इस्लाम से निकल जाता है)

﴾11﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "आपस में एक दूसरे से क़त्ए तअ़ल्लुक़ी न करो, पीठ न फैरो, बुग़्ज़ न रखो, ह़सद न करो और ऐ बन्दगाने ख़ुदा ! आपस में भाई भाई बन जाओ, किसी मुसल्मान के लिये जाइज़ नहीं कि वोह अपने भाई से तीन दिन से ज़ियादा क़त्ए तअ़ल्लुक़ रखे।"(5)

﴾12﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम त़–बरानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی (मु–तवफ़्फ़ा 360 हि.) की रिवायत में येह अल्फ़ाज़ ज़ाइद हैं : "वोह दोनों मिलते हैं तो एक, एक त़रफ़ मुंह कर लेता है और दूसरा, दूसरी त़रफ़ और जो सलाम करने में पहल करता है वोह जन्नत की त़रफ़ पहले जाएगा।"(6)

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الأدب، باب فی ھجرۃ الرجل اخاہ، الحدیث : ۴۹۱۵، ص۱۵۸۳۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب صفات المنافقین و احکامھم، باب تحریش الشیطان ......الخ، الحدیث: ۷۱۰۳، ص۱۱۶۸۔

3 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۸۹۰۴، ج۹، ص۱۸۳، دون قولہ: الی ماخرج منہ۔

4 ......البحرالزخارالمعروف بمسند البزار، مسند عبد اللّٰہ بن مسعود، الحدیث : ۱۷۷۳، ج۵، ص۱۷۶۔

5 ......جامع الترمذی، ابواب البر و الصلۃ، باب ماجاء فی الحسد، الحدیث: ۱۹۳۵، ص۱۸۴۷۔

6 ......المعجم الاوسط، الحدیث : ۷۸۷۴، ج۶، ص۲۷۔



www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق (मु-तवफ़्फ़ा 179 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं : "मैं समझता हूं, **तदाबुर** से मुराद येह है कि मुसल्मान भाई से रू गर्दानी करना और उस से अपना चेहरा फैर लेना।"(1)

﴾13﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "किसी मुसल्मान के लिये जाइज़ नहीं कि अपने भाई से तीन रातों से ज़ियादा क़त्ए तअ़ल्लुक़ी रखे कि दोनों मिलें तो एक, एक त़रफ़ मुंह फैर ले और दूसरा, दूसरी त़रफ़ और उन दोनों में से बेहतर वोह है जो सलाम में पहल करे।"(2)

इस से उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इस्तिद्लाल किया है कि "सलाम क़त्ए तअ़ल्लुक़ी का गुनाह ख़त्म कर देता है।"

﴾14﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ बयान है : "किसी मुसल्मान के लिये अपने भाई से तीन दिन से ज़ियादा क़त्ए तअ़ल्लुक़ी जाइज़ नहीं, जिस ने तीन दिन से ज़ियादा तअ़ल्लुक़ तोड़े रखा और मर गया तो जहन्नम में दाख़िल होगा।"(3)

﴾15﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "किसी मोमिन के लिये जाइज़ नहीं कि वोह किसी मोमिन से तीन दिन से ज़ियादा क़त्ए तअ़ल्लुक़ी करे, फिर अगर तीन दिन ऐसे ही गुज़र जाएं तो वोह ज़रूर उसे मिले और सलाम करे अगर उस ने जवाब दे दिया तो दोनों सवाब में शरीक हो गए और अगर जवाब न दिया तो वोह गुनाहगार होगा और सलाम करने वाला क़त्ए तअ़ल्लुक़ी (के गुनाह) से बच जाएगा।"(4)

﴾16﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "हर पीर और जुमा'रात को (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में) आ'माल पेश किये जाते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस दिन मुश्रिक के इलावा हर शख़्स को मुआफ़ फ़रमा देता है मगर उसे नहीं बख़्शता जिस की अपने (मुसल्मान) भाई से दुश्मनी होती है फ़रमाता है : "इन दोनों को आपस में सुल्ह करने तक छोड़ दो।"(5)

---

1 ......الموطأللامام مالک،کتاب حسن الخلق، باب ماجاء فی المهاجرة، مسئلة١، ج٢،ص٤٠٦۔

2 ......صحیح مسلم،کتاب البر والصلة والأدب،باب تحریم الهجر......الخ، الحدیث: ٢٥٣٢،ص١١٢٦۔

3 ......سنن ابی داود،کتاب الادب ،باب فی هجرة الرجل اخاه ،الحدیث: ٤٩١٤،ص١٥٨٣۔

4 ......سنن ابی داود،کتاب الادب ،باب فی هجرة الرجل اخاه ،الحدیث: ٤٩١٢،ص١٥٨٣۔

5 ......صحیح مسلم،کتاب البر والصلة والأدب، باب النهی عن الشحناء، الحدیث: ٦٥٤٦،٦٥٤٧،ص١١٢٧۔



www.dawateislami.net

﴾17﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''हर पीर और जुमा'रात के दिन जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुश्रिक के इ़लावा हर शख़्स की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है मगर उसे नहीं बख़्शता जिस की अपने (मुसल्मान) भाई से दुश्मनी हो, पस (फ़िरिश्तों को) कहा जाता है : इन दोनों को छोड़ दो यहां तक कि येह सुल्ह़ कर लें, इन दोनों को छोड़ दो यहां तक कि येह सुल्ह़ कर लें, इन दोनों को छोड़ दो यहां तक कि येह सुल्ह़ कर लें।''(1)

﴾18﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''हर पीर और जुमा'रात के दिन ज़मीन वालों के रजिस्टर आस्मान वालों के रजिस्टरों में मुन्तक़िल कर दिये जाते हैं, पस मुश्रिक के इ़लावा हर मुसल्मान को बख़्श दिया जाता है सिवाए उस शख़्स के जिस की अपने (मुसल्मान) भाई से दुश्मनी हो।''(2)

﴾19﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''हर पीर और जुमा'रात के दिन (बन्दों के) आ'माल (बारगाहे इलाही में) पेश किये जाते हैं, पस जो गुनाह से मुआ़फ़ी त़लब करता है उसे मुआ़फ़ कर दिया जाता है और जो तौबा करता है उस की तौबा क़बूल कर ली जाती है और कीना रखने वालों को उन के कीने पर छोड़ दिया जाता है यहां तक कि वोह तौबा कर लें।''(3)

﴾20﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पन्दरह शा'बान की रात रह़मत की तजल्ली फ़रमाता है और मुश्रिक और कीना परवर के इलावा अपनी तमाम मख़्लूक़ को बख़्श देता है।''(4)

## उम्मते मुह़म्मदी पर रह़मते ख़ुदा वन्दी :

﴾21﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا इर्शाद फ़रमाती हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ लाए, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (आराम की ख़ात़िर) अपना लिबासे मुबारक उतारा, अभी आप

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب البر والصلة والأدب، باب النهی عن الشحناء، الحدیث:۶۵۴۴،ص۱۲۷۱۔

2 ......المعجم الاوسط، الحدیث : ۹۲۷۸،ج۶،ص۳۲۴۔

3 ......المعجم الاوسط ،الحدیث: ۷۴۱۹،ج۵،ص۳۰۵۔

4 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الحظر والاباحة،،الحدیث :۵۶۳۶، ج۷،ص۴۷۰۔



www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ठीक त़रह़ से बैठने भी न पाए थे कि उठ खड़े हुए और लिबासे मुबारक ज़ैबे तन कर लिया (और तशरीफ़ ले गए) । मुझे शदीद ग़ैरत आई और मैं ने गुमान किया कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी दूसरी ज़ौजए मोह़-त-रमा के पास तशरीफ़ ले जा रहे हैं, मैं भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे निकल पड़ी और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बक़ीए ग़रक़द में पाया कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मोमिन मर्दों, औरतों और शु-हदा के लिये बख़्शिश त़लब कर रहे हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : "मेरे मां बाप आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने रब के काम में मसरूफ़ हैं जब कि मैं दुन्या की ह़ाजत में हूं ।" मैं वापस पलट कर (जल्दी जल्दी) अपने हुजरे में आ गई और (इसी वज्ह से) मेरा सांस फूल रहा था ।

मेरे पीछे हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी तशरीफ़ ले आए और मुझ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! सांस क्यूं फूला हुवा है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "मेरे मां बाप आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ लाए, फिर लिबासे मुबारक उतार कर बैठे भी नहीं कि दोबारा ज़ैबे तन फ़रमा कर चल दिये मुझे सख़्त ग़ैरत आई मैं ने गुमान किया कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी किसी साथ वाली (या'नी किसी दूसरी ज़ौजए मोह़-त-रमा) के पास तशरीफ़ ले गए हैं यहां तक कि मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बक़ीए ग़रक़द में दुआ़ व इस्तिग़फ़ार करते हुए देखा ।"

फिर ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! क्या तुम इस बात से डरती हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम से ना इन्साफ़ी करेंगे ? मेरे पास ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام आए और अ़र्ज़ की : "येह शा'बान की पन्दरहवीं रात है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस में क़बीलए बनी कल्ब की बकरियों के बालों की ता'दाद के बराबर लोगों को जहन्नम से आज़ाद किया जाता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस रात में मुशरिक, बाहम दुश्मनी रखने वाले, क़त़ए तअ़ल्लुक़ी करने वाले, तकब्बुर से तहबन्द को लटकाने वाले, वालिदैन के ना फ़रमान और आ़दी शराबी की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाता ।"

आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا इर्शाद फ़रमाती हैं : फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना लिबासे मुबारक उतारा और मुझ से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! क्या मुझे इस रात क़ियाम (या'नी इ़बादतो रियाज़त) की इजाज़त देती हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! मेरे मां बाप आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान !" पस आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़ियाम किया और


www.dawateislami.net

फिर एक त़वील सज्दा किया यहां तक कि मैं ने गुमान किया कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم विसाल फ़रमा चुके हैं लिहाज़ा मैं ने उठ कर अपना हाथ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तल्वों पर रखा, तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़-र-कत की और मैं ख़ुश हो गई, मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सज्दों में येह फ़रमाते हुए सुना : '' اَعُوْذُ بِعَفْوِكَ مِنْ عِقَابِكَ، وَاَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْكَ، جَلَّ وَجْهُكَ لَا اُحْصِیْ ثَنَآءً عَلَيْكَ اَنْتَ كَمَا اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ या'नी मैं तेरे अ़ज़ाब से तेरे अ़फ़्व की, तेरी नाराज़ी से तेरी रिज़ा की और तेरी अ़ज़्मत के सामने तेरी ही पनाह मांगता हूं, तेरी ज़ात बुजु़र्ग है, मैं तेरी पूरी ता'रीफ़ नहीं कर सकता तेरी शान ऐसी ही है जैसे तूने ख़ुद अपनी सना फ़रमाई।'' जब सुब्ह़ हुई तो मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इन कलिमात का तज़्किरा किया, तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ आ़इशा ! इन कलिमात को ख़ुद भी अच्छी त़रह़ सीख लो और दूसरों को भी सिखाओ क्यूं कि मुझे येह कलिमात ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने बताए हैं और मुझे सज्दों में बार बार इन के पढ़ने का कहा है।''(1)

﴾22﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शा'बान की पन्दरहवीं रात अपनी तमाम मख़्लूक़ पर रह़मत की तजल्ली फ़रमाता है, पस सिवाए दो (बद क़िस्मत) अफ़राद के अपने तमाम बन्दों को बख़्श देता है : (1)...... कीना परवर और (2)...... क़ातिल।''(2)

﴾23﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शा'बान की पन्दरहवीं रात तमाम अहले ज़मीन को बख़्श देता है लेकिन मुशरिक और कीना परवर को नहीं बख़्शता।''(3)

﴾24﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सा'लबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शा'बान की पन्दरहवीं रात अपनी तमाम मख़्लूक़ पर रह़मत की तजल्ली फ़रमाता है, पस मुअमिनीन को बख़्श देता है, कुफ़्फ़ार को मोहलत देता है और कीना परवर लोगों को इसी त़रह़ छोड़ देता है यहां तक कि वोह कीना तर्क कर दें।''(4)

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی،باب فی الصیام، ماجاء فی لیلة النصف من شعبان، الحدیث : ٣٨٣٧،ج٣،ص٣٨٤۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد الله بن عمرو بن العاص، الحدیث : ٦٦٥٣،ج٢،ص٥٨٩۔

3 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی الصیام، ماجاء فی لیلة النصف من شعبان، الحدیث : ٣٨٣١،ج٣،ص٣٨١۔

4 ......المعجم الکبیر،الحدیث : ٥٩٠،ج٢٢،ص٢٢٣



www.dawateislami.net

﴾25﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : ''3 बातें ऐसी हैं जिस शख़्स में इन में से एक भी न हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा : (1)...... वोह इस ह़ाल में मरा कि उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक न ठहराया (2)...... न जादू का अ़मल किया और (3)...... न ही अपने मुसल्मान भाई से कीना रखा।''(1)

﴾26﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक रात क़ियाम फ़रमाया और नमाज़ पढ़ी, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस क़दर त़वील सज्दा किया कि मुझे गुमान हुवा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم विसाल फ़रमा चुके हैं। जब मैं ने येह देखा तो उठ कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अंगूठे को ह़-र-कत दी, जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़-र-कत की तो मैं (वापस अपनी जगह) लौट आई, जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सज्दे से सर उठाया और नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''ऐ आ़इशा ! या येह इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ हु़मैरा ! क्या तेरा येह ख़याल है कि **अल्लाह** का रसूल तेरे साथ ना इन्साफ़ी करेगा ?'' (या'नी तेरा ह़क़ पूरा नहीं करेंगे) तो मैं ने अ़र्ज़ की : ''नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! बल्कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के त़वील सज्दे की वज्ह से मैं ने गुमान किया कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रूह़ क़ब्ज़ हो चुकी है।'' फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''क्या तुम जानती हो कि येह कौन सी रात है ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही बेहतर जानते हैं।'' तो इर्शाद फ़रमाया : ''येह शा'बान की पन्दरहवीं रात है, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पन्दरह शा'बान की रात अपने बन्दों पर रह़मत की तजल्ली फ़रमाता है, पस इस्तिग़्फ़ार करने वालों को मुआ़फ़ फ़रमा देता है, रह़्म त़लब करने वालों पर रह़्म फ़रमाता है और कीना परवरों को उन की ह़ालत पर छोड़ देता है।''(2)

﴾27﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तीन शख़्स ऐसे हैं जिन की नमाज़ उन के सरों से एक बालिश्त भी ऊपर नहीं जाती : (1)......

---

1 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۳۰۰۴، ج۱۲، ص۱۸۸۔

2 ......شعب الایمان للبیہقی،باب فی الصیام، ماجاء فی لیلة النصف من شعبان، الحدیث: ۳۸۳۵، ج۳، ص۳۸۲۔



www.dawateislami.net

वोह शख़्स जो ऐसी क़ौम की इमामत कराए जो उसे ना पसन्द करती हो (2)...... वोह औ़रत जो इस हा़ल में रात गुज़ारे कि उस का शोहर उस पर नाराज़ हो और (3)...... वोह दो भाई जो आपस में नाराज़ हों।''[1]

﴿28﴾...... एक रिवायत इन अल्फ़ाज़ में है : ''तीन शख़्स ऐसे हैं जिन की नमाज़ क़बूल नहीं होती।'' फिर मज़्कूरा रिवायत की मिस्ल ज़िक्र की।[2]

﴿29﴾...... इब्तिदाए किताब में ह़सद के बयान में एक अन्सारी सहा़बी की रिवायत गुज़र चुकी है जिन्हें हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रही़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जन्नती होने की ख़बर दी। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने उस के पास रात गुज़ारी ताकि उस का अ़मल देखें। लेकिन आप ने उस का कोई बड़ा अ़मल न देखा तो पूछा : ''आप का कौन सा ऐसा अ़मल है कि जिस ने आप को इस मक़ाम तक पहुंचा दिया कि हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप के मु-तअ़ल्लिक़ येह इर्शाद फ़रमाया ?'' उस ने जवाब दिया : ''मेरा इस के सिवा कोई अ़मल नहीं कि मैं किसी मुसल्मान के मु-तअ़ल्लिक़ अपने दिल में खोट नहीं पाता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी को जो ने'मत अ़ता फ़रमाई उस पर ह़सद नहीं करता।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने इर्शाद फ़रमाया : ''येही वोह चीज़ है जिस ने तुझे इस मक़ाम तक पहुंचाया और येह ऐसी चीज़ है जो हर किसी के बस में नहीं।''[3]

**तम्बीह :** इन तीन गुनाहों को भी कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और सही़ह़ अहा़दीसे मुबा-रका में मौजूद शदीद वई़दों की बिना पर इस का कबीरा होना वाज़ेह़ है मिसाल के तौ़र पर (1)...... वोह दोनों कभी जन्नत में दाख़िल न होंगे।[4] (2)...... वोह जहन्नम में है।[5] (3)...... वोह ख़ून बहाने की त़रह़ है।[6] (4)...... उन दोनों में से एक इस्लाम से निकल जाता

---

1 ......سنن ابن ماجه،ابواب اقامة الصلوات، باب من اَمَّ قوماوهم له کارهون، الحديث: ۹۷۱،ص۲۵۳۴۔

2 ......المصنف لابن ابی شيبة،کتاب الصلاة، باب فی الامام يؤم القوم وهم له کارهون، الحديث: ۶،ج۱،ص۴۴۵۔

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالک بن النضر، الحديث: ۱۲۶۹۷،ج۴،ص۳۳۲۔

4 ......المسند للامام احمد بن حنبل ،حديث هشام بن عامر، الحديث : ۱۶۲۵۸،ج۵،ص۴۸۷۔

5 ......المعجم الکبير، الحديث: ۸۱۵،ج۱۸،ص۳۱۵۔

6 ......سنن ابی داود ،کتاب الأدب ،باب فی هجرة الرجل اخاه، الحديث : ۴۹۱۵،ص۱۵۸۳۔



www.dawateislami.net

है यहां तक कि वापस लौट आए।[1] (5)...... वोह मर गया तो जहन्नम में दाख़िल होगा।[2] वग़ैरा वग़ैरा।

**साहिबुल उद्दह** का येह क़ौल कि "तीन दिन से ज़ियादा किसी मुसल्मान से क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ी करना सग़ीरा गुनाह है।" येह बहुत बईद है अगर्चे शैख़ैन (या'नी इमाम राफ़ेई व इमाम न-ववी رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْهِمَا) ने इस पर ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई, फिर मैं ने बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام को देखा कि उन्हों ने यक़ीनी तौ़र पर मज़्कूरा तर्के तअ़ल्लुक़ को कबीरा गुनाह क़रार दिया और **साहिबुल उद्दह** और इमाम ज़र-कशी رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْهِمَا की बात पर तवज्जोह न दी बल्कि इर्शाद फ़रमाया कि "मुसल्मान से तीन दिन से ज़ियादा क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ी को सग़ीरा गुनाह क़रार देना महल्ले नज़र है और ज़ियादा बेहतर येही है कि येह कबीरा गुनाह है क्यूं कि इस में क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ी, तक्लीफ़ और फ़साद पाया जाता है। हां येह कहा जाए कि बार बार करने से येह कबीरा हो जाएगा।"

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का मज़्कूरा क़ौल कि "हां येह कहा जाए कि बार बार करने से येह कबीरा हो जाएगा।" महल्ले नज़र है और अगर हम इसे तस्लीम भी कर लें तो फिर भी येह हमारे मौक़िफ़ की नफ़ी नहीं करता क्यूं कि मक़्सूद येह है कि क्या इस के कबीरा होने का मा'ना वोह है जो मज़्कूर हुवा या तीन दिन की मुद्दत में इस पर इसरार करना है। बहर ह़ाल पहली तौजीह ही ज़ियादा बेहतर है क्यूं कि अस्ल हुरमत के लिये तीन दिन की क़ैद लगाई गई है क्यूं कि तीन दिन गुज़रने के बा'द बिगाड़ पैदा करना और तअ़ल्लुक़ात तोड़ना साबित हो जाता है ब ख़िलाफ़ पहली सूरत [इस में क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ी, तक्लीफ़ और फ़साद पाया जाता है] के, पस यहां इसरार का ए'तिबार नहीं।

क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ी की हुरमत से कुछ मसाइल ख़ारिज किये गए हैं जिन का अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने ज़िक्र किया है जैसा कि मैं ने उ़न्वान में इस की त़रफ़ इशारा किया है। इस का ख़ुलासा येह है कि "अगर तअ़ल्लुक़ात तोड़ना हाजिर (या'नी क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ी करने वाला) और महजूर (या'नी जिस से क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ी की जाए) की दीनी इस्लाह़ का सबब हो तो जाइज़ है वरना नहीं।"

۞۞۞۞۞۞۞

1 ......البحرالزخارالمعروف بمسند البزار،مسند عبد الله بن مسعود، الحديث : ۱۷۷۳، ج۵،ص۱۷۶ ـ

2 ......سنن ابی داود ، كتاب الأدب ،باب فی هجرة الرجل اخاه ،الحديث : ۴۹۱۴،ص۱۵۸۳ ـ



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 279 : औ़रत का ख़ुश्बू लगा कर घर से निकलना
### ( अगर्चे शोहर की इजाज़त से हो )

﴾1﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "(ग़ैर महरम को देखने वाली) हर आंख ज़ानिया (या'नी ज़िना करने वाली) है और औ़रत जब इ़त्र लगा कर किसी मजलिस से गुज़रती है तो वोह ऐसी ऐसी है।" या'नी ज़ानिया है।(1)

﴾2﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो औ़रत ख़ुश्बू लगाए और किसी क़ौम के पास से गुज़रे ताकि वोह इस की ख़ुश्बू सूंघें तो वोह ज़ानिया है और (ग़ैर महरम को देखने वाली) हर आंख ज़ानिया है।"(2)

﴾3﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के पास से एक औ़रत गुज़री, उस से ख़ुश्बू आ रही थी, आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "ऐ अ-मतुल जब्बार ! कहां का इरादा है ?" वोह बोली : "मस्जिद का।" इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "इस लिये ख़ुश्बू लगाई है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "जी हां।" इर्शाद फ़रमाया : वापस जा और इसे धो डाल (क्यूं कि) मैं ने हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना है कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस औ़रत की नमाज़ क़बूल नहीं फ़रमाता जो नमाज़ के लिये ख़ुश्बू लगा कर मस्जिद जाए जब तक कि वोह वापस जा कर उसे धो न दे।"(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने ख़ुज़ैमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (मु-तवफ़्फ़ा 311 हि.) ने इस रिवायत से इस्तिदलाल किया है बशर्ते़ कि येह रिवायत सह़ीह़ हो और आप जानते हैं कि येह ह़दीसे पाक इस पर सह़ीह़ दलील है कि उस औ़रत पर ख़ुश्बू को धो कर साफ़ करना वाजिब है और अगर उस ने ख़ुश्बू धोए बिग़ैर नमाज़ पढ़ ली तो उस की नमाज़ क़बूल न होगी। नीज़ यहां पर ख़ास त़ौर पर धोना मुराद नहीं बल्कि उस की ख़ुश्बू को दूर करना मुराद है।

﴾4﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे कि इसी दौरान क़बीलए मुज़ैना की एक औ़रत आरास्ता पैरास्ता इतराती हुई मस्जिद में दाख़िल हुई। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! अपनी औ़रतों को भड़कीले और ख़ुश्बूदार लिबास पहन कर मस्जिद जाने से रोको कि बनी इसराईल की औ़रतों ने ख़ूब

---

1 ......جامع الترمذی،ابواب الأدب،باب ماجاء فی کراهية خروج المراة متعطرة ،الحديث:۲۷۸۶،ص۱۹۳۲۔

2 ......صحيح ابن خزيمة،کتاب الامامة فی الصلاة، باب التغليظ فی تعطرالمراة......الخ، الحديث:۱۶۸۱،ج۳،ص۹۱۔

3 ......المرجع السابق، باب ايجاب الغسل علی المتطيبة......الخ، الحديث:۱۶۸۲،ج۳،ص۹۲۔



www.dawateislami.net

सूरत लिबास पहना और मस्जिद में ख़ुशबू लगा कर ह़ाज़िर हुईं तो बनी इसराईल धुत्कार दिये गए।''(1)

**तम्बीह :**

बयान कर्दा अह़ादीसे मुबा-रका से इस का कबीरा होना वाज़ेह़ है लेकिन हमारे उसूलों के मुत़ाबिक़ इसे तब कबीरा क़रार दिया जाए जब फ़ितना साबित हो जाए और अगर फ़ितने का सिर्फ़ ख़ौफ़ हो तो येह मक्रूह है और अगर गुमान हो तो ह़राम है मगर कबीरा गुनाह नहीं जैसा कि ज़ाहिर है।

## कबीरा नम्बर 280 : औ़रत का ना फ़रमान होना

**या'नी औ़रत का शोहर की इजाज़त और रिज़ा मन्दी के बिग़ैर घर से निकलना जब कि कोई शर-ई ज़रूरत न हो जैसे कोई ऐसा फ़तवा लेना हो जो मर्द न ले सकता हो या किसी फ़ासिक़ो फ़ाजिर की दस्त दराज़ी का अन्देशा न हो और न ही घर के गिरने का ख़त़रा हो।**

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَّ بِمَاۤ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْؕ فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَیْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُؕ وَ الّٰتِیْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ وَ اهْجُرُوْهُنَّ فِی الْمَضَاجِعِ وَ اضْرِبُوْهُنَّۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا عَلَیْهِنَّ سَبِیْلًاؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِیًّا كَبِیْرًا ﴿۳۴﴾ (پ۵،النسآء:۳۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** मर्द अफ़्सर हैं औ़रतों पर इस लिये कि **अल्लाह** ने इन में एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी और इस लिये कि मर्दों ने इन पर अपने माल ख़र्च किये तो नेक बख़्त औ़रतें अदब वालियां हैं ख़ावन्द के पीछे हि़फ़ाज़त रखती हैं जिस त़रह़ **अल्लाह** ने हि़फ़ाज़त का हुक्म दिया और जिन औ़रतों की ना फ़रमानी का तुम्हें अन्देशा हो तो उन्हें समझाओ और उन से अलग सोव और उन्हें मारो फिर अगर वोह तुम्हारे हुक्म में आ जाएं तो उन पर ज़ियादती की कोई राह न चाहो, बेशक **अल्लाह** बुलन्द बड़ा है।

## आयते मुबा-रका की वज़ाह़त

जब औ़रतों ने मीरास वग़ैरा में मर्दों को फ़ज़ीलत देने पर ए'तिराज़ किया तो उन्हें इस फ़रमाने बारी तआ़ला से जवाब दिया गया :

---

(1)......سنن ابن ماجه، ابواب الفتن، باب فتنة النساء، الحديث: ۴۰۰۱، ص۲۷۱۷۔



www.dawateislami.net

وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ (پ۵، النسآء:۳۲) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और उस की आरज़ू न करो जिस से **अल्लाह** ने तुम में एक दूसरे पर बड़ाई दी।

## मर्दों की अफ़्ज़लिय्यत का सबब :

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस आयते करीमा में वाज़ेह़ फ़रमाया है कि उस ने मीरास में मर्दों को औ़रतों पर इस वज्ह से फ़ज़ीलत दी है क्यूं कि वोह इन पर अफ़्सर हैं, अगर्चे जिन्सी लज़्ज़त ह़ासिल करने में दोनों शरीक हैं लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मर्दों को हुक्म दिया कि वोह औ़रतों की इस्लाह़ करें, इन्हें अदब सिखाएं, इन की ह़िफ़ाज़त का एहतिमाम करें और इन्हें ह़क़ महर अदा करें क्यूं कि **قَوَّام** का सीग़ा **قَيِّم** से ज़ियादा बलीग़ है और **قَوَّام** से मुराद ऐसा मुन्तज़िम व कार परदाज़ है जो मसालेह़, तदबीर व तादीब, ह़िफ़ाज़त का एहतिमाम करने और आफ़ात से बचाने की मुकम्मल सलाह़िय्यत रखता हो।

## पहली आयते मुबा-रका का शाने नुज़ूल :

﴾1﴿...... येह आयते करीमा ह़ज़रते सय्यिदुना अस्अ़द बिन रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मु-तअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जो अन्सार के नक़ीबों में से एक थे, इन की बीवी ने इन की ना फ़रमानी की तो इन्हों ने उसे थप्पड़ रसीद कर दिया, उस का बाप उसे ले कर ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हो गया और अ़र्ज़ की : ''मेरी बेटी उस के निकाह़ में गई और उस ने इसे थप्पड़ रसीद कर दिया जिस का निशान इस के चेहरे पर मौजूद है।'' तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''उस से बदला ले लो।'' फिर फ़रमाया : ''(थोड़ी देर) सब्र करो यहां तक कि मैं भी इन्तिज़ार करता हूं।'' फिर येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई तो आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हम ने एक काम का इरादा किया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने भी एक काम का इरादा फ़रमाया लेकिन जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरादा फ़रमाया वोही बेहतर है।''(1)

पस मा'लूम हुवा कि इस आयते मुबा-रका में दलील है कि आदमी अपनी बीवी को अदब सिखा सकता है लेकिन उसे बीवी के साथ बुरा सुलूक नहीं करना चाहिये जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़रमाने आ़लीशान ''اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ'' से येह बात समझी जा सकती है। और इस फ़रमाने ख़ुदा वन्दी ''وَبِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ'' में इस बात पर दलील है कि मर्द

---

1 ......تفسير البغوى، النساء، تحت الآية ۳۴، ج ۱، ص ۳۳۵۔



www.dawateislami.net

ने तंगदस्त होने की वज्ह से बीवी को नफ़क़ा न दिया तो इस पर उस की फ़ज़ीलत और कार परदाज़ी ख़त्म हो गई । लिहाज़ा जब बीवी पर इस की मुन्तज़िम व मुदब्बिर होने की हैसिय्यत ख़त्म हो गई तो अब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद इदरीस शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) वग़ैरा के नज़्दीक बीवी को ह़क़ ह़ासिल है कि वोह निकाह़ को फ़स्ख़ कर सकती है क्यूं कि निकाह़ का शर-ई मक़्सूद ही नहीं पाया जा रहा जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मु-तवफ़्फ़ा 150 हि.) का क़ौल इस के बर अ़क्स है ।[1]

और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आ़लीशान (پ٣،البقرۃ:٢٨٠) ''فَنَظِرَۃٌ اِلٰی مَیْسَرَۃٍ'' तंगदस्त क़र्ज़दार के मु-तअ़ल्लिक़ आ़म है जिसे मज़्कूरा आयत और दीगर आयात के साथ ख़ास किया गया है । ''قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ'' लफ़्ज़े قَـنُـوْت से मुराद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और शोहरों की इत़ाअ़त है । या'नी वोह औ़रतें अपने शोहरों की मौजू-दगी में इन की इत़ाअ़त और अ़दम मौजू-दगी में इन के माल और घर की ह़िफ़ाज़त करें नीज़ अपने आप को ज़िना से रोक कर इन की (इ़ज़्ज़त की) ह़िफ़ाज़त करें ताकि इन्हें न तो किसी क़िस्म की कोई शरमिन्दगी उठाना पड़े और न ही किसी की औलाद का बोझ उठाना पड़े । चुनान्चे,

﴾2﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने के बा'द एक मोमिन को जो चीज़ फ़ाएदा देती है वोह उस की नेक बीवी है, अगर येह उसे कोई हुक्म दे तो वोह इस की इत़ाअ़त करे, अगर उस की त़रफ़ देखे तो वोह इस की ख़ुशी का बाइ़स बने, अगर उस पर (भरोसा करते हुए) कोई क़सम उठा ले तो वोह इस की क़सम को पूरा कर दे और अगर येह मौजूद न हो तो वोह अपने नफ़्स और इस के माल के मुआ़-मले में इस की ख़ैर ख़्वाही करे ।'' (रावी फ़रमाते हैं :) फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मज़्कूरा आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई ।[2]

जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नेक औ़रतों का तज़्किरा करते हुए इन के दो ऐसे औसाफ़ या'नी قٰنِتٰتٌ और حٰفِظٰتٌ ज़िक्र किये जो इन की और इन के शोहरों की निस्बत से दीन व दुन्या से

---

1...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1182 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**बहारे शरीअ़त**'' जिल्द दुवुम सफ़ह़ा 269 पर है : ''शोहर अगर नादारी के सबब नफ़क़ा देने से आ़जिज़ है तो इस की वज्ह से तफ़्रीक़ न की जाए, यूंही अगर मालदार है मगर माल यहां मौजूद नहीं जब भी तफ़्रीक़ न करें बल्कि अगर नफ़क़ा मुक़र्रर हो चुका है तो क़ाज़ी हुक्म दे कि क़र्ज़ ले कर या कुछ काम कर के सर्फ़ करे और वोह सब शोहर के ज़िम्मे है कि उसे देना होगा ।'' (الدر المختار، کتاب الطلاق،باب النفقۃ، ج ٥ ، ص٣٠٩ تا ٣١١)

2......سنن ابن ماجه، ابواب النكاح، باب افضل النساء، الحديث: ١٨٥٧،ص٢٥٨٨۔



www.dawateislami.net

मु-तअ़ल्लिक़ हर कमाल को शामिल हैं तो अपने इस फ़रमाने आ़लीशान ''وَالّٰتِیۡ تَخَافُوۡنَ نُشُوۡزَهُنَّ'' से ग़ैर सालेह़ औ़रतों का भी ज़िक्र फ़रमाया और **ख़ौफ़** से मुराद वोह ह़ालत है जो मुस्तक़्बिल में पेश आने वाले किसी ना पसन्दीदा अ़मल की वज्ह से दिल में पैदा होती है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) ने इर्शाद फ़रमाया : ''**نُشُوۡز** की दलालत कभी क़ौल से होती है जैसे जब ख़ावन्द उसे बुलाता तो वोह ह़ाज़िर हो जाती और उस से बात करता तो बड़ी आ़जिज़ी व इन्किसारी से बात करती लेकिन इस के बा'द उस की ह़ालत तब्दील हो गई (या'नी अब वोह बुलाए तो न आए और बात करे तो नर्म लहजे में न करे)। और कभी **نُشُوۡز** की दलालत फ़े'ल के साथ होती है जैसे पहले जब वोह इस के पास आता तो वोह खड़ी हो जाती और उस के हुक्म की ता'मील में जल्दी करती। जब वोह इस से मुजा-म-अ़त का इरादा करता तो हंसी ख़ुशी उस के लिये बिस्तर बिछाती लेकिन फिर इस की ह़ालत तब्दील हो गई (या'नी न तो इस की आमद पर खड़ी हो और न ही ब रिज़ा व रग़्बत इस की जिन्सी ख़्वाहिश पूरी करे) पस येह इब्तिदाई बातें हैं जो ना फ़रमानी के ख़ौफ़ को साबित करती हैं। **نُشُوۡز** ह़क़ीक़त में ना फ़रमानी और मुख़ा-लफ़त का नाम है, जब ना फ़रमानी ज़ियादा हो जाए तो कहा जा सकता है, गोया वोह शोहर पर ग़ालिब आ गई।''

फिर फ़रमाया : ''فَعِظُوۡهُنَّ وَاهۡجُرُوۡهُنَّ فِی الۡمَضَاجِعِ وَاضۡرِبُوۡهُنَّ'' ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ता رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : **نُشُوۡز** येह है कि मर्द के लिये मुअ़त्तर न हो और अपने नफ़्स से उस को रोके और अपनी इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी से फिर जाए और **वा'ज़** से मुराद येह है कि शोहर उसे अन्जाम के ख़ौफ़ की नसीह़त करे या'नी उस से कहे कि ''तुझ पर मेरे लाज़िम हुक़ूक़ के मुआ़-मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर और उस के सख़्त इन्तिक़ाम से ख़ौफ़ कर।'' और ''وَاهۡجُرُوۡهُنَّ فِی الۡمَضَاجِعِ'' ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : ''इस से मुराद येह है कि बिस्तर में उस की त़रफ़ पीठ कर ले और उस से गुफ़्त-गू न करे।'' जब कि दीगर मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ''उस से अ़ला-ह़दा किसी दूसरे बिस्तर पर सो जाए।'' बहर ह़ाल दोनों क़ौल सह़ीह़ हैं। अलबत्ता ! औ़रत को डांटने के ए'तिबार से दूसरा क़ौल ज़ियादा बलीग़ है, क्यूं कि अगर वोह इस से मह़ब्बत करती होगी तो इस की अ़ला-ह़-दगी उस पर गिरां गुज़रेगी और वोह ना फ़रमानी से बाज़ आ जाएगी या अगर उस से नफ़रत करती होगी तो येह अ़मल उस की ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ होगा, पस उस वक़्त उस का ना फ़रमान होना ज़ाहिर हो जाएगा।

एक क़ौल येह है कि **اُهۡجُرُوۡهُنَّ**, **هَجَرَ** से मुश्तक़ है और येह ज़बानी झिड़क्ने से ज़ियादा



www.dawateislami.net

बुरा है या'नी ना फ़रमान औरतों से गुफ़्त-गू में सख़्ती से पेश आओ और उन्हें जिमाअ़ वग़ैरा के लिये बे क़रार कर दो।

एक क़ौल येह भी है कि "इस से मुराद येह है कि उन्हें घरों में ऊंट की रस्सी से सख़्त बांध दो।" मगर येह क़ौल बईद अज़ अ़क़्ल और शाज़ है अगर्चे इसे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू जा'फ़र मुह़म्मद बिन त़-बरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 694 हि.) ने इख़्तियार किया है। इसी वज्ह से ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू बक्र इब्ने अ़-रबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 543 हि.) ने इर्शाद फ़रमाया : किताबो सुन्नत को जानने वाले आ़लिम की येह कितनी बड़ी ग़-लती है। लेकिन उसे इस तावील पर उभारने वाली एक ग़रीब रिवायत है जो ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की ज़ौजए मोह़-त-रमा ह़ज़रते सय्यि-दतुना अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अबू अ़ब्दुल्लाह** मुह़म्मद बिन अह़मद अन्सारी क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 671 हि.) फ़रमाते हैं : "उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के नज़्दीक इस अ़ला-ह़-दगी की मुद्दत एक महीना है जैसा कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अ़मल है। जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना ह़फ़्सा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا को अपनी उम्मे वलद ह़ज़रते सय्यि-दतुना मारिया क़िब्त़िया को अपने ऊपर ह़राम करने का राज़ बताया लेकिन उन्हों ने येह राज़ उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا को बता दिया इस पर येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई : "يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ (پ۲۸، التحریم:۱) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी)! तुम अपने ऊपर क्यूं ह़राम किये लेते हो वोह चीज़ जो **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये ह़लाल की।"(1)

गोया "**अल उ़-लमा**" से ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अबू अ़ब्दुल्लाह** मुह़म्मद बिन अह़मद क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 671 हि.) की मुराद उन के हम-मज़्हब उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام हैं। अलबत्ता! शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के नज़्दीक बीवी को बिस्तर से अ़ला-ह़दा करने की इन्तिहाई मुद्दत कुछ नहीं क्यूं कि येह फ़े'ल तो औ़रत की इस्लाह़ के लिये है, पस अगर वोह इस्लाह़ याफ़्ता न हो तो उसे छोड़े रखे अगर्चे कई साल गुज़र जाएं और अगर वोह इस्लाह़ पा जाए तो उसे छोड़े रखने की कोई वज्ह नहीं जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस के बा'द इर्शाद फ़रमाया : "فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا"

"فِى الْمَضَاجِعِ" में فِى या तो ज़रफ़िय्यत का है जो اهْجُرُوْهُنَّ के मु-तअ़ल्लिक़ है या'नी उन

(1)......الجامع لاحكام القرآن للقرطبی، النساء، تحت الآیة ۳۴، ج۳، الجزء الخامس، ص۱۲۰۔



www.dawateislami.net

के साथ सोना तर्क कर दो या فِیْ स-बबिय्यत का है या'नी उन की ना फ़रमानी की वज्ह से उन्हें अपने बिस्तर से जुदा कर दो। एक क़ौल में येह भी है कि येही बा'द वाला मा'ना तै शुदा है क्यूं कि فِی الْمَضَاجِعِ, هَجَرَ के लिये ज़र्फ़ नहीं बल्कि इस का सबब है। ह़ालां कि मुआ़-मला ऐसा नहीं बल्कि यहां فِیْ ज़रफ़िय्यत का ही सह़ीह़ है और هَجَرَ इस में वाक़ेअ़ है और एक क़ौल येह है कि येह نُشُوْزَهُنَّ के मु-तअ़ल्लिक़ है लेकिन येह मा'नवी ए'तिबार से सह़ीह़ नहीं क्यूं कि مَضْجَع में ना फ़रमानी पर نُشُوْز को मक्सूर करने का वह्म पाया जा रहा है ह़ालां कि ऐसा नहीं जैसा कि गुज़र चुका है और न ही येह नई बात है क्यूं कि इस में मस्दर और इस के मा'मूल के दरमियान अजनबी चीज़ का फ़ासिला है, जब कि एक क़ौल येह है कि نُشُوْزَهُنَّ के बा'द फ़े'ल मह़ज़ूफ़ है या'नी وَالّٰتِیْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ وَنَشَزْنَ। बेशक इस से वोही शख़्स राहे फ़िरार इख़्तियार करता है जो मह़ज़ समझाने बुझाने और डराने धम्काने जैसे इक़्दामात पर तवक़्क़ुफ़ नहीं करता जब कि हमारा मज़्हब इस के ख़िलाफ़ है इस लिये कि ख़ौफ़ यहां पर यक़ीन के मा'ना में है और ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से भी इसी त़रह़ मन्क़ूल है और एक क़ौल येह भी है कि इस मुआ़-मले में ग़-ल-बए ज़न ही काफ़ी है और اِضْرِبُوْهُنَّ से मुराद ऐसी मारपीट है जो अज़िय्यत नाक न हो और न ही इस से जिस्म पर निशानात पड़ें। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "जैसे घूंसा (या'नी मुक्का)।" और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "मिस्वाक से मारा जाए।"

और ह़दीसे पाक में चेहरे पर मारने से मन्अ़ फ़रमाया गया है और फ़रमाया कि उसे न छोड़ो मगर घर में।(1)

## औ़रत को कितनी ज़र्बें लगाई जाएं :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) फ़रमाते हैं : "40 से कम मर्तबा मारा जाएगा क्यूं कि येह एक आज़ाद इन्सान की कम अज़ कम ह़द है।" और दूसरे उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "20 से कम मर्तबा मारा जाएगा क्यूं कि येह एक ग़ुलाम की पूरी ह़द है।" बहर ह़ाल उसे बदन पर मुख़्तलिफ़ जगहों पर मारा जाएगा और लगातार एक ही जगह न मारा जाए ताकि उसे ज़ियादा तक्लीफ़ न हो और उस के चेहरे पर न मारे नीज़ इतना न मारे कि वोह मर जाए। बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام इर्शाद फ़रमाते हैं : "लपेटे हुए रुमाल या अपने हाथ से मारे कोड़े और डन्डे से

(1)......سنن ابی داود، کتاب النکاح، باب فی حق المراۃ علی زوجھا، الحدیث:۲۱۴۲، ص۱۳۸۰۔



www.dawateislami.net

न मारे।" गोया क़ाइल ने येह क़ौल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से अख़्ज़ किया है।

**मुख़्तसर** येह कि मारने में नरमी के पहलू को मद्दे नज़र रखा जाए। इसी वज्ह से ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) ने इर्शाद फ़रमाया : "बिल्कुल न मारना अफ़्ज़ल है।"

**सुवाल :** क्या तीनों अफ़्आ़ल (या'नी नसीह़त करना, बिस्तर से जुदा करना और मारना) बित्तरतीब हैं या नहीं ?

**जवाब :** इस में उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इख़्तिलाफ़ है, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : "पहले ना फ़रमान औ़रत को ज़बान से नसीह़त करे, अगर न माने तो उसे बिस्तर से जुदा कर दे और अगर फिर भी न माने तो मारपीट से काम ले और अगर मारने से भी नसीह़त ह़ासिल न करे तो कोई सालिस भेजे।"

जब कि दीगर अइम्मए किराम और फ़ु-क़हाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का कहना है कि "ना फ़रमानी के ख़ौफ़ के वक़्त इस तरतीब का लिह़ाज़ रखा जाएगा और जब ना फ़रमानी साबित हो जाए तो तमाम को जम्अ़ करने में कोई ह़रज नहीं।"

لَا تَبْغُوْا से मुराद येह है कि "उन पर ज़बर दस्ती की कोई राह तलाश न करो, या'नी उन्हें अपनी मह़ब्बत का पाबन्द न करो क्यूं कि दिल उन के हाथों में नहीं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़यैना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "ज़ियादा मौज़ूं और मुनासिब येही है कि इस की तफ़्सीर आ़म हो या'नी उन से ऐसे काम का मुत़ा-लबा न करो जो उन पर शर-ई त़ौर पर लाज़िम नहीं बल्कि उन्हें उन की अपनी मरज़ी पर छोड़ दो क्यूं कि उन्हों ने बत़ौरे एह़सान त़ब्ई त़ौर पर अपने आप को बहुत से ऐसे ह़ुक़ूक़ और ख़िदमत का पाबन्द किया हुवा है जो उन पर लाज़िम नहीं।"

मज़्कूरा आयते मुबा-रका का इख़्तिताम इन दो अस्माए मुबा-रका "عَلِيًّا كَبِيْرًا" पर हो रहा है जो कि मौज़ूअ़ के इन्तिहाई मुनासिब हैं क्यूं कि इन दोनों का मा'ना येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी बर-तरी और किब्रियाई के बा वुजूद अपने बन्दों को ऐसे काम का पाबन्द नहीं करता जिस की वोह त़ाक़त नहीं रखते और वोह ना फ़रमान का मुआ-ख़ज़ा नहीं करता जब कि वोह तौबा कर ले पस तुम भी इस बात के ज़ियादा ह़क़दार हो कि जिस की वोह त़ाक़त नहीं रखतीं उन्हें उस काम का पाबन्द न करो और उन की ना फ़रमानी पर उन की मुआ़फ़ी क़बूल कर लो।

येह भी कहा गया है कि अगर वोह तुम्हारे ज़ुल्म को रोकने से आ़जिज़ हों तो (जान लो


www.dawateislami.net

कि) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तो बुलन्द शान वाला, कबीर और क़ादिर है जो उन की त़रफ़ से तुम से बदला ले सकता है और सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका में ना फ़रमानी की बा'ज़ सूरतों पर शदीद वईद गुज़र चुकी है तो ना फ़रमानी की बाक़ी सूरतों को इन्ही पर क़ियास किया जाएगा। चुनान्चे, उन्हीं अह़ादीसे मुबा-रका में से सह़ीह़ैन की ह़दीस है कि,

﴾3﴿...... रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिल के चैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जब मर्द अपनी बीवी को अपने बिस्तर पर बुलाए और वोह न आए और मर्द उस से नाराज़ी में रात गुज़ार दे तो सुब्ह़ तक फ़रिश्ते उस पर ला'नत भेजते रहते हैं।''(1)

﴾4﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जब औ़रत अपने शोहर के बिस्तर से जुदा हो कर रात गुज़ारे तो सुब्ह़ तक फ़रिश्ते उस पर ला'नत भेजते रहते हैं।''(2)

﴾5﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो शख़्स अपनी बीवी को बिस्तर पर बुलाए और वोह इन्कार कर दे तो आस्मान वाला (या'नी जिस का हुक्म और बादशाहत आस्मान में भी है) उस पर नाराज़ रहता है यहां तक उस का शोहर उस से राज़ी हो जाए।''(3)

इस बारे में अह़ादीसे मुबा-रका गुज़र चुकी हैं कि ''जिस औ़रत पर उस का शोहर नाराज़ हो उस की नमाज़ क़बूल नहीं होती यहां तक कि शोहर उस से राज़ी हो जाए।''(4)

﴾6﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 110 हि.) से मरवी है कि मुझे उस सह़ाबिये रसूल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने बताया जिस ने सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना कि ''क़ियामत के दिन औ़रत से सब से पहले उस की नमाज़ और शोहर के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल किया जाएगा।''(5)

﴾7﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : ''औ़रत के लिये अपने शोहर की मौजू-दगी में उस की इजाज़त के बिग़ैर रोज़ा रखना जाइज़ नहीं और न ही उस की इजाज़त के बिग़ैर उस के घर में (किसी को) आने की इजाज़त देना जाइज़ है।''(6)

---

1 ......صحیح مسلم ، کتاب النکاح ،باب تحریم امتناعها من فراش زوجها ،الحدیث:۳۵۴۱،ص۹۱۹۔

2 ......المرجع السابق ،الحدیث:۳۵۳۸۔ 3 ......المرجع السابق ،الحدیث:۳۵۴۰۔

4 ......صحیح ابن خزیمة،کتاب الصلاة، باب نفی قبول صلاة المراة الغاضبة......الخ،الحدیث:۹۴۰،ج۲،ص۶۹۔

5 ......فردوس الاخبارللدیلمی، الحدیث:۱۹،ج۱،ص۳۱، عن انس بن مالک۔

6 ......صحیح البخاری، کتاب النکاح،باب لا تاذن المراة فی بیت زوجها لاحد الاّ باذنه،الحدیث:۵۱۹۵،ص۴۴۹۔



www.dawateislami.net

यहां रोजे़ से मुराद नफ़्ली रोज़ा या ऐसा वाजिब रोज़ा है कि जिस के रखने में वक़्त की वुस्अ़त हो तो वोह ऐसा कोई रोज़ा न रखे जब कि उस का शोहर शह्र में मौजूद हो, ख़्वाह उस की कोई सोकन हो और उस रोज़ शोहर उस की सोकन के पास हो तब भी रोज़ा न रखे, जैसा कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का कहना है क्यूं कि हो सकता है कि उस की सोकन शोहर को उस के साथ मुजा-म-अ़त की इजाज़त दे दे। अलबत्ता ! अगर शोहर खु़द उसे रोज़ा रखने की इजाज़त दे दे या वोह रोज़ा रखने पर अपने शोहर की रिज़ा मन्दी जान ले तो रोज़ा रख सकती है। क्यूं कि मुम्किन है कि वोह इस से जिमाअ़ करना चाहता हो लेकिन इस के रोजे़ की वज्ह से रुक जाए। इस बात से क़त्ए़ नज़र कि शोहर के लिये उस से अपनी नफ़्सानी ह़ाजत पूरी करना और उस के रोजे़ को फ़ासिद करना जाइज़ है क्यूं कि उ़मूमन इन्सान इ़बादत को फ़ासिद करने से डरता है और मज़्कूरा अह़ादीसे मुबा-रका में शोहर की इत़ाअ़त के वाजिब होने के मु-तअ़ल्लिक़ गुज़रा है कि "अगर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी को हुक्म देते कि वोह किसी को सज्दा करे तो औ़रत को हुक्म देते कि वोह अपने शोहर को सज्दा करे क्यूं कि उस का ह़क़ इस पर बहुत ज़ियादा है।"(1)

﴾8﴿...... एक औ़रत ने शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अपने शोहर का ज़िक्र किया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तेरी उस से क्या निस्बत है ? बेशक वोही तेरी जन्नत व दोज़ख़ है।"(2)

﴾9﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस औ़रत की त़रफ़ नज़रे (रह़मत) नहीं फ़रमाता जो अपने शोहर का शुक्रिय्या अदा नहीं करती ह़ालां कि वोह उस से बे परवाह नहीं।"(3)

﴾10﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि "ख़स्अ़म क़बीले की एक औ़रत हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे नाज़ में ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे आगाह फ़रमाइये कि शोहर का बीवी पर क्या ह़क़ है ? क्यूं कि मैं बेवा औ़रत हूं, अगर मुझे त़ाक़त हुई (तो निकाह़ करूंगी) वरना बेवा ही बैठी रहूंगी।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

1 ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب النكاح، باب معاشرة الزوجين، الحديث: ٤١٥٠، ج٦، ص١٨٣۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث عمة حصين بن محصن، الحديث: ٢٧٤٢١، ج١٠، ص٣٨٣۔

3 ......السنن الكبرٰى للنسائى، كتاب عشرة النساء، باب شكر المرأة لزوجها، الحديث: ٩١٣٥، ج٥، ص٣٥٤۔



www.dawateislami.net

इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक बीवी पर शोहर का ह़क़ येह है कि अगर वोह उस से अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश की तक्मील चाहता हो और येह ऊंट पर सुवार हो तो फिर भी उस से अपने आप को न रोके और बीवी पर शोहर का येह भी ह़क़ है कि उस की इजाज़त के बिग़ैर नफ़्ली रोज़ा न रखे लेकिन अगर उस ने ऐसा किया तो मह्ज़ भूकी प्यासी रही और उस का रोज़ा भी क़बूल नहीं और उस की इजाज़त के बिग़ैर अपने घर से भी न निकले, अगर उस ने ऐसा किया तो वापस आने तक उस पर ज़मीन व आस्मान और रह़मत व अ़ज़ाब के फ़रिश्ते ला'नत भेजते रहेंगे।''(1)

मा'लूम हुवा कि औ़रत पर फ़र्ज़ है कि अपने शोहर को राज़ी रखने की कोशिश करे और जहां तक मुम्किन हो उस की नाराज़ी से बचे। म-सलन उसे उस ह़ालत में जिमाअ़ से न रोके जिस में उस के लिये जिमाअ़ करना मुबाह़ हो। अलबत्ता ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) के नज़्दीक है जो निफ़ास की ह़ालत में ग़ुस्ल से पहले उसे जिमाअ़ से रोक सकती है अगर्चे ख़ून भी रुक चुका हो।(2)

औ़रत को चाहिये कि अपने आप को शोहर की मिल्किय्यत समझे लिहाज़ा उस की इजाज़त के बिग़ैर उस के माल में से किसी चीज़ में तसर्रुफ़ न करे। बल्कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के एक गुरौह ने कहा है कि ''उस की इजाज़त के बिग़ैर उस के माल में तसर्रुफ़ न करे क्यूं कि वोह शोहर के हां उस औ़रत की त़रह़ है जिस को तसर्रुफ़ात से रोक दिया गया हो।'' बल्कि इस पर लाज़िम है कि शोहर के ह़ुक़ूक़ को अपने क़रीबी रिश्तेदारों के ह़ुक़ूक़ पर मुक़द्दम रखे बल्कि बा'ज़ सूरतों में अपने ह़ुक़ूक़ पर भी मुक़द्दम रखे, जिस क़दर हो सके साफ़

1......الترغيب الترهيب، كتاب النكاح، باب ترغيب الزوج فى الوفاء......الخ، الحديث: ٣٠٢٠، ج٣، ص٢٥۔

مسند ابى يعلى الموصلى، مسند ابن عباس، الحديث: ٢٤٤٩، ج٢، ص٤٣٨۔

2...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**बहारे शरीअ़त**'' जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 383 पर है : ''**मस्अला :** (ह़ैज़ का ख़ून) पूरे दस दिन पर ख़त्म हुवा तो पाक होते ही उस से जिमाअ़ जाइज़ है अगर्चे अब तक ग़ुस्ल न किया हो, मगर मुस्तह़ब येह है कि नहाने के बा'द जिमाअ़ करे। **मस्अला :** दस दिन में कम से पाक हुई ता वक़्ते कि (या'नी जब तक कि) ग़ुस्ल न कर ले या वोह वक़्ते नमाज़ जिस में पाक हुई गुज़र न जाए जिमाअ़ जाइज़ नहीं और अगर वक़्त इतना नहीं था कि उस में नहा कर कपड़े पहन कर **अल्लाहु अक्बर** कह सके तो इस के बा'द का वक़्त गुज़र जाए या ग़ुस्ल कर ले तो जाइज़ है वरना नहीं। **मस्अला :** आ़दत के दिन पूरे होने से पहले ही ख़त्म हो गया तो अगर्चे ग़ुस्ल कर ले जिमाअ़ ना जाइज़ है ता वक़्ते कि आ़दत के दिन पूरे न हो लें। जैसे किसी की आ़दत छ[6] दिन की थी और इस मर्तबा पांच ही रोज़ आया तो उसे ह़ुक्म है कि नहा कर नमाज़ शुरूअ़ कर दे मगर जिमाअ़ के लिये एक दिन और इन्तिज़ार करना वाजिब है।''



www.dawateislami.net

सुथरी रह कर हर लम्हा अपने आप को तय्यार रखे कि शोहर उस से जिमाअ़ कर सके और अपनी ख़ूब सूरती की वज्ह से उस पर फ़ख़्र न करे और न ही उस की किसी बुरी आ़दत की वज्ह से उस की ऐ़बजूई करे।

हज़रते सय्यिदुना इमाम अस्मई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मैं एक गाउं में गया, वहां मैं ने एक ह़सीनो जमील औ़रत देखी जिस का शोहर बद सूरत था, मैं ने उस से पूछा : ''तुम अपने लिये इस (बद सूरत शख़्स) के मा तह़्त रहना कैसे पसन्द करती हो ?'' तो उस ने जवाब दिया : ''ऐ शख़्स सुन ! हो सकता है कि इस का अपने ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ के साथ तअ़ल्लुक़ अच्छा हो, लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे इस का सवाब बना दिया हो और शायद ! मैं ने कोई गुनाह किया हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस को मेरे उस गुनाह की सज़ा बना दिया हो।''

﴾11﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ औ़रतो ! अगर तुम अपने ऊपर अपने शोहरों के हुक़ूक़ जानतीं तो तुम में से हर एक शोहर के क़दमों का ग़ुबार अपने रुख़्सार से साफ़ करती।''(1)

﴾12﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या मैं तुम्हें तुम्हारी जन्नती बीवियों के बारे में न बताऊं ?'' सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''क्यूं नहीं (ज़रूर बताइये), **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : हर मह़ब्बत करने वाली और ज़ियादा बच्चे जनने वाली औ़रत, जब वोह शोहर को नाराज़ कर दे या उसे तक्लीफ़ दी जाए या उस का शोहर उस पर ग़ुस्सा करे तो वोह कहे : ''मेरा येह हाथ आप के हाथ में है, मैं उस वक़्त तक नहीं सोऊंगी जब तक कि आप राज़ी न हो जाएं।''(2)

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام इर्शाद फ़रमाते हैं : ''औ़रत पर वाजिब है कि (1)...... हमेशा अपने शोहर से ह़या करे (2)...... उस के सामने निगाहें नीची रखे (3)...... उस के हुक्म की इत़ाअ़त करे (4)...... उस की गुफ़्त-गू के वक़्त ख़ामोश रहे (5)...... उस की आमद और रवानगी पर खड़ी हो जाए (6)...... सोते वक़्त अपना आप उसे पेश कर दे (7)...... उस की अ़दम मौजू-दगी में उस की इ़ज़्ज़त और माल के मुआ़-मले में उस से ख़ियानत न करे

---

(1) ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب النکاح ،باب ما حق الزوج علی المراة ،الحدیث : ۸،ج۳،ص۳۹۸۔

(2) ......المعجم الاوسط، الحدیث : ۱۷۴۳ ،ج ۱ ،ص ۴۷۲۔

المعجم الصغیر للطبرانی، الحدیث : ۱۱۸ ،ج ۱ ،الجزء الاول،ص ۴۶ ۔



www.dawateislami.net

(8)...... उस को पसन्द आने वाली ख़ुश्बू लगाए (9)...... मिस्वाक और ख़ुश्बू से अपने मुंह को साफ़ रखे (10)...... उस की मौजू-दगी में हमेशा सजी संवरी रहे और उस की अ़दम मौजू-दगी में बनाव सिंघार न करे (11)...... उस के घर वालों और रिश्तेदारों की इ़ज़्ज़त करे और (12)...... उस की त़रफ़ से कम भी ज़ियादा समझे।"

मज़ीद फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाली औ़रत को चाहिये कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और अपने शोहर की इत़ाअ़त की कोशिश करे और पूरी कोशिश कर के शोहर की रिज़ा ह़ासिल करे क्यूं कि वोही उस की जन्नत और दोज़ख़ है।" चुनान्चे,

﴾13﴿...... शफ़ीए़ रोज़े शुमार, बि इज़्ने परवर दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो औ़रत इस ह़ाल में मरी कि उस का शोहर उस से राज़ी था तो वोह जन्नत में जाएगी।"(1)

﴾14﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब औ़रत नमाज़े पन्जगाना पढ़े, र-मज़ान के रोज़े रखे, अपनी शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त करे और अपने शोहर की फ़रमां बरदारी करे तो उस से कहा जाएगा कि जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहो, दाख़िल हो जाओ।"(2)

﴾15﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "(1)...... अपने शोहर की इत़ाअ़त करने वाली औ़रत के लिये हवा में परिन्दे, पानी में मछलियां, आस्मान में फ़रिश्ते और चांद सूरज उस वक़्त तक इस्तिग़्फ़ार करते रहते हैं जब तक कि वोह अपने शोहर की इत़ाअ़त में रहती है (2)...... जो औ़रत अपने शोहर की ना फ़रमानी करती है उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, फ़रिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत होती है (3)...... जो औ़रत अपने शोहर के चेहरे पर तेवरी चढ़ाने का बाइ़स बनती है तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी में रहती है यहां तक कि उसे हंसा कर राज़ी कर ले और (4)...... जो औ़रत अपने शोहर की इजाज़त के बिग़ैर अपने घर से निकलती है उस के वापस पलटने तक फ़रिश्ते उस पर ला'नत भेजते रहते हैं।"

﴾16﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "चार (क़िस्म की) औ़रतें जन्नती हैं और चार (क़िस्म की) जहन्नमी।" फिर जन्नत में जाने वाली चार औ़रतों का ज़िक्र किया : (1)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और अपने शोहर की फ़रमां बरदार पाक दामन

---

1 ......سنن ابن ماجه،ابواب النكاح،باب حق الزوج على المراة، الحديث:۱۸۵۴،ص۲۵۸۸۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل ،حديث عبد الرحمٰن بن عوف الزهرى ،الحديث: ۱۶۶۱ ،ج۱،ص۴۰۶۔



www.dawateislami.net

औ़रत (2)...... ज़ियादा बच्चे जनने वाली, सब्र करने वाली और अपने शोहर के साथ कम पर क़नाअ़त करने वाली (3)...... ह़यादार और शोहर की अ़दम मौजू–दगी में अपने नफ़्स और उस के माल की ह़िफ़ाज़त करने वाली नीज़ उस की मौजू–दगी में अपनी ज़बान क़ाबू में रखने वाली और (4)...... जिस का शोहर फ़ौत हो जाए और उस के छोटे छोटे बच्चे हों, लेकिन वोह अपनी औलाद के लिये अपने नफ़्स को रोके रखे और उन की तरबियत करे, उन की अच्छी देखभाल करे और इस ख़ौफ़ से शादी न करे कि कहीं वोह बरबाद न हो जाएं। और जहन्नम में जाने वाली चार औ़रतें येह हैं : (1)...... अपने शोहर से बद कलामी करने वाली, अगर वोह ग़ाइब हो तो अपने नफ़्स की ह़िफ़ाज़त न करे और अगर मौजूद हो तो उसे अपनी ज़बान से तक्लीफ़ दे (2)...... अपने शोहर को त़ाक़त से ज़ियादा काम पर मजबूर करे (3)...... जो अपने आप को लोगों से न छुपाए और अपने घर से बन संवर कर निकले और (4)...... जिस का खाने पीने और सोने के इलावा कोई मक़्सद न हो और उसे नमाज़ से कोई दिलचस्पी न हो और न ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और अपने शोहर की इत़ाअ़त में कोई रग़्बत हो।

पस जिस औ़रत में येह सिफ़ात पाई जाएं, अगर वोह तौबा न करे तो मल्ऊ़ना और जहन्नमियों में से है। इसी लिये,

﴾17﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मैं ने जहन्नम में झांका तो देखा कि वहां ज़ियादा औ़रतें हैं।''(1)

इस की वज्ह येह है कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और अपने शोहरों की इत़ाअ़त बहुत कम करती हैं, और बनाव सिंघार बहुत ज़ियादा करती हैं। और ''تَبَـرُّج'' से मुराद येह है कि जब औ़रत अपने घर से निकलने का इरादा करे तो फ़ख़्रिया लिबास पहने, बनाव सिंघार करे और अपनी ज़ात से लोगों को फ़ितने में मुब्तला करती हुई जाए अगर्चे वोह ख़ुद फ़ितने से मह़फ़ूज़ भी हो मगर लोग उस के फ़ितने से मह़फ़ूज़ न होंगे। चुनान्चे,

﴾18﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : ''औ़रत छुपाने की चीज़ है, जब वोह अपने घर से निकलती है तो शैत़ान उसे झांकता है और औ़रत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़ियादा क़रीब उस वक़्त होती है जब वोह अपने घर में होती है।''(2)

﴾19﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الرقاق،باب فضل الفقر، الحدیث:٦٤٤٩،ص٥٤٢۔

2 ......صحیح ابن خزیمة،کتاب الامامة فی الصلاة،باب اختیار صلاة۔۔الخ ،الحدیث: ١٦٨٥،ج٣،ص٩٣،بتغیرٍقلیلٍ۔



www.dawateislami.net

है : औ़रत छुपाने की चीज़ है लिहाज़ा औ़रतों को घरों में बन्द रखो क्यूं कि जब औ़रत किसी रास्ते पर निकलती है और घर वाले उस से पूछते हैं : ''कहां का इरादा है ?'' तो वोह कहती है : ''मैं मरीज़ की इयादत करूंगी और जनाज़े में शिर्कत करूंगी।'' वोह एक बालिश्त भी निकलती है तो शैत़ान उस के साथ हो लेता है, ह़ालां कि औ़रत इस की मिस्ल रिज़ाए इलाही कहीं न पाएगी कि वोह अपने घर में रहे, रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करे और शोहर की इत़ाअ़त करे।(1)

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَهُ الْکَرِیْم ने अपनी ज़ौजए मोह़-त-रमा ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''औ़रत के लिये सब से बेहतर क्या है ?'' तो उन्हों ने जवाब दिया : ''वोह मर्दों को न देखे और मर्द उसे न देखें।''(2)

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَهُ الْکَرِیْم फ़रमाया करते थे : ''क्या तुम्हें शर्मो ह़या नहीं आती ? या तुम में ग़ैरत नहीं ? कि तुम में से कोई अपनी बीवी को लोगों के दरमियान निकलने की इजाज़त दे देता है कि वोह लोगों को देखे और लोग उसे देखें।''(3)

﴾20﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा और उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में बैठी थीं कि एक नाबीने सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोनों अज़्वाजे मुत़ह्हरात को उन से पर्दा करने का हुक्म फ़रमाया। दोनों ने अ़र्ज़ की : ''येह तो नाबीना हैं, न तो हमें देख सकते हैं और न ही पहचानते हैं।'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या तुम दोनों भी नाबीना हो ? क्या तुम दोनों भी नहीं देखतीं ?''(4)

जिस त़रह़ मर्द पर लाज़िम है कि वोह अपनी निगाहें पस्त रखे इसी त़रह़ औ़रत पर भी लाज़िम है कि मर्दों को देखने से अपनी नज़रें बचाए। जब औ़रत अपने बाप से मिलने या ह़म्माम

---

1 ......المعجم الكبير ،الحديث : ۸۹۱۴،ج۹،ص۱۸۵،مفهوماً۔

2 ......حلية الاولياء،الرقم۱۳۳فاطمة بنت رسول الله، الحديث : ۱۴۴۵،ج۲،ص۵۱۔

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند على بن ابى طالب ،الحديث : ۱۱۱۸،ج۱،ص۲۸۲،مختصراً۔

4 ......سنن ابى داود، كتاب اللباس، الحديث : ۴۱۱۲،ص۱۵۲۳،"عائشة وحفصة"بدلهما" ام سلمة وميمونة"۔



www.dawateislami.net

में जाने के लिये घर से निकलने पर मजबूर हो तो बनाव सिंघार के बिग़ैर मोटे कपड़े में लिपट कर अपने शोहर की इजाज़त से निकले, चलते हुए निगाहें नीची रखे और दाएं बाएं न देखे वरना गुनहगार होगी। ऐसी ही एक औ़रत बनाव सिंघार किये हुए मर गई। घर वालों ने उसे ख़्वाब में देखा कि वोह बारीक कपड़ों में मल्बूस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश की गई। अचानक हवा चलने लगी जिस से उस का सत्र खुल गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस से ए'राज़ फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया : "इसे बाईं त़रफ़ वालों में जहन्नम की त़रफ़ ले जाओ क्यूं कि येह दुन्या में बनाव सिंघार करती थी।"

﴾21﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैं और ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हुए, हम ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बहुत ज़ियादा गिर्या व ज़ारी करते हुए पाया। मैं ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! किस चीज़ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को रुला दिया ?" इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अ़ली ! रात के वक़्त मुझे आस्मान पर ले जाया गया तो मैं ने अपनी उम्मत की औ़रतों को देखा कि उन्हें मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अ़ज़ाब दिये जा रहे हैं। पस उन के अ़ज़ाब की शिद्दत देख कर मैं रो पड़ा (फिर जहन्नमी औ़रतों के अ़ज़ाब की तफ़्सील बयान करते हुए फ़रमाया) मैं ने (1)...... एक औ़रत देखी जो अपने बालों से लटकी हुई थी और उस का दिमाग़ खौल रहा था। (2)...... एक अपनी ज़बान के साथ लटकी हुई थी और खौलता हुवा पानी उस के ह़ल्क़ में उंडेला जा रहा था। (3)...... एक के पाउं को उस की छातियों से और हाथों को उस की पेशानी से बांधा गया था और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस पर सांप और बिच्छू मुसल्लत़ कर दिये थे। (4)...... एक छातियों से लटकी हुई थी। (5)...... एक का सर ख़िन्ज़ीर के सर जैसा और बदन गधे के बदन की त़रह़ था जिस पर एक लाख त़रह़ के अ़ज़ाब थे। (6)...... कुत्ते की शक्ल की एक औ़रत के मुंह से आग दाख़िल होती और उस की शर्मगाह से निकल जाती थी और फ़रिश्ते आग के हथोड़ों से उस के सर पर मार रहे थे।" ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ाति-मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا खड़ी हुईं और अ़र्ज़ गुज़ार हुईं : "ऐ मेरे ह़बीब और मेरी आंखों की ठन्डक ! उन के आ'माल कैसे थे कि वोह इस अ़ज़ाब से दो चार हुईं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ मेरी लख़्ते जिगर ! (1)...... जो बालों से लटकी हुई थी वोह अपने बाल मर्दों से नहीं बचाती थी। (2)...... जो अपनी ज़बान से लटकी हुई थी वोह अपने शोहर को ईज़ा देती थी। (3)...... जो अपनी छातियों के



www.dawateislami.net

साथ लटकी हुई थी वोह शोहर के बिस्तर को ईज़ा देती (या'नी ज़िना करती) थी। (4)...... जिस के पाउं उस की छातियों से और हाथ पेशानी से बंधे हुए थे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस पर सांप और बिच्छू मुसल्लत् कर दिये थे वोह जनाबत और हैज़ के बा'द गुस्ल नहीं करती थी और नमाज़ के लिये तय्यार नहीं होती थी। (5)...... जिस का सर ख़िन्ज़ीर के सर की मिस्ल और बदन गधे के बदन की त़रह़ था वोह चुग़ल ख़ोर और झूट बोलने वाली थी। (6)...... और वोह जो कुत्ते की शक्ल की थी और उस के मुंह से आग दाख़िल होती और शर्मगाह से निकलती थी वोह एह़सान जतलाने वाली और ह़सद करने वाली थी और ऐ मेरी लख़्ते जिगर ! उस औ़रत के लिये हलाकत है जो अपने शोहर की ना फ़रमानी करती है।''

जब औ़रत को अपने शोहर की मुकम्मल त़ौर पर इत़ाअ़त करने और उस को राज़ी रखने का हुक्म दिया गया है तो इसी त़रह़ शोहर को भी येह हुक्म दिया गया है कि उस के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आए, उस के हुक़ूक़ पूरे करे या'नी उसे नफ़क़ा दे, उस की ह़िफ़ाज़त करे और रिज़ा मन्दी और दिल की ख़ुशी से कपड़े पहनाए, नरमी से बात करे, उस के बुरे अख़्लाक़ पर सब्र करे और ह़दीसे पाक में औ़रतों के बारे में वसिय्यत करने का हुक्म गुज़र चुका है और येह कि वोह **अ़वान** हैं जिन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अमानत को पकड़ रखा है और **अ़वान, आ़नियह** की जम्अ़ है जिस का मा'ना है क़ैदी। मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने औ़रत को मर्द के हुक्म और इस के क़ह्रो ग़ज़ब के तह़्त दाख़िल होने की बिना पर क़ैदी से तश्बीह दी और ह़दीसे पाक गुज़र चुकी है कि ''तुम में से बेहतर वोह है जो अपने घर वालों के लिये बेहतर है।''[1] और एक रिवायत में है कि ''मैं अपने घर वालों के लिये तुम सब से ज़ियादा मेह्रबान हूं।''[2] और वाक़ेई आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अज़्वाजे मुत़ह्हरात के साथ बहुत ज़ियादा मेह्रबानी फ़रमाते थे।

﴾22﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस शख़्स ने अपनी बीवी की बद अख़्लाक़ी पर सब्र किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसा अज्र अ़त़ा फ़रमाएगा जो ह़ज़रते अय्यूब عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को उन की आज़्माइश पर अ़त़ा फ़रमाया और जिस औ़रत ने अपने शोहर के बुरे अख़्लाक़ पर सब्र किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसा अज्र अ़त़ा फ़रमाएगा

---

1 ......جامع الترمذی، ابواب المناقب، باب فضل ازواج النبی، الحدیث: ۳۸۹۵، ص۲۰۵۰۔

2 ......تاریخ بغداد،الرقم ۳۶۹۰ جعفر بن حم، ج۷، ص۲۲۱۔



www.dawateislami.net

जो फ़िरऔन की बीवी ह़ज़रते आसिया बिन्ते मुज़ाह़िम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अ़त़ा फ़रमाया।''(1)

## ख़लीफ़ए सानी का बेहतरीन जवाब :

﴾23﴿...... मरवी है कि एक शख़्स अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा ताकि अपनी बीवी के बुरे अख़्लाक़ की शिकायत करे। वोह आप के दरवाज़े पर खड़ा हो कर इन्तिज़ार करने लगा, अचानक उस ने सुना कि आप की बीवी आप के साथ तेज़ तेज़ बातें कर रही थी जब कि आप ख़ामोश थे और उसे जवाब नहीं दे रहे थे, तो वोह येह कहता हुवा लौट गया कि ''जब अमीरुल मुअमिनीन का येह ह़ाल है तो मेरा क्या होगा ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बाहर निकले और उसे वापस पलटते हुए देखा तो उसे पुकारा : ''तेरी क्या ह़ाजत है ?'' उस ने कहा : ''ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ! मैं अपनी बीवी की बद ख़ुल्क़ी और ज़बान दराज़ी की शिकायत ले कर आप के पास आया था लेकिन मैं ने आप की बीवी को भी इस त़रह़ बातें करते पाया तो येह कहते हुए वापस लौट रहा था कि जब अमीरुल मुअमिनीन का अपनी बीवी के साथ येह ह़ाल है तो मेरा क्या ह़ाल होगा ?'' तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ मेरे भाई ! वोह मेरा खाना तय्यार करने वाली, रोटी पकाने वाली, कपड़े धोने वाली और मेरे बच्चों को दूध पिलाने वाली है ह़ालां कि येह काम उस पर लाज़िम नहीं, नीज़ उस की वज्ह से मेरा दिल ह़राम काम से रुकता है, येही वज्ह है कि मैं उसे बरदाश्त करता हूं।'' तो उस शख़्स ने अ़र्ज़ की : ''ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ! मेरी बीवी भी इसी त़रह़ है।'' तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ मेरे भाई ! बेशक येह कुछ लम्ह़ों के लिये ऐसी होती हैं।

## बीवी की बद सुलूकी बरदाश्त करने पर इन्आ़म :

एक नेक शख़्स का भाई हर साल एक मर्तबा उस से मुलाक़ात किया करता था। एक दिन वोह उस की मुलाक़ात के लिये आया और दरवाज़ा खट-खटाया तो उस की बीवी ने पूछा : ''कौन है ?'' उस ने जवाब दिया : ''तुम्हारे शोहर का भाई, जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये उसे मिलने आया है।'' औ़रत ने उसे बताया कि ''तुम्हारा भाई लकड़ियां इकठ्ठी करने गया है, (फिर बद-दुआ़ देने लगी कि) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे वापस न लौटाए।'' और उसे बहुत ज़ियादा गालियां देने लगी। इसी दौरान उस शख़्स ने देखा कि उस का भाई एक शेर पर लकड़ियों का

1......احیاء العلوم، کتاب آداب النکاح، الباب الثالث فی آداب المعاشرة ......الخ، ج۲ص۵۵ ۔



www.dawateislami.net

गठ्ठा उठाए आ रहा है। जब वोह क़रीब पहुंचा तो उस ने अपनी मुलाक़ात के लिये आने वाले भाई को सलाम किया और ख़ुश आ-मदीद कहा, फिर शेर की पीठ से लकड़ियों का गठ्ठा उतार कर उसे कहा : ''जाओ ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम में ब-र-कत दे।'' इस के बा'द वोह अपने भाई को घर ले गया, उस की बीवी अभी भी उसे बुरा भला कह रही थी लेकिन उस ने कोई जवाब न दिया। बहर ह़ाल उस ने अपने भाई को खाना खिला कर रुख़्सत कर दिया, वोह शख़्स बीवी की बद सुलूकी पर अपने भाई के सब्र करने से बहुत मु-तअ़ज्जिब हो कर वापस लौटा।

आयिन्दा साल वोह शख़्स दोबारा आया और दरवाज़ा खट-खटाया तो अन्दर से एक औ़रत ने पूछा : ''कौन है ?'' उस ने बताया ''तेरे शोहर का भाई उस की मुलाक़ात के लिये आया है।'' उस औ़रत ने उसे ख़ुश आ-मदीद कहा और दोनों भाइयों की बहुत ज़ियादा ता'रीफ़ की और उसे कहा : ''अपने भाई का इन्तिज़ार करो। जब उस का भाई आया तो उस ने देखा कि लकड़ियां उस की पीठ पर थीं, उस ने घर के अन्दर ले जा कर उसे खाना खिलाया जब कि उस की बीवी दोनों की बहुत ज़ियादा ता'रीफ़ कर रही थी। जब उस शख़्स ने अपने भाई से जुदा होने का इरादा किया तो उस से साबिक़ा बीवी और इस बीवी के दरमियान फ़र्क़ के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा और येह भी पूछा कि ''एह़सान फ़रामोश और बद ज़बान बीवी के ज़माने में शेर उस की लकड़ियां उठाता था जब कि इस ईमानदार, ता'रीफ़ करने वाली नर्म ख़ू बीवी के दौर में वोह अपनी पीठ पर लकड़ियां उठा रहा है, आख़िर इस का क्या सबब है ?'' तो उस ने बताया : ''ऐ मेरे भाई ! वोह बुरे अख़्लाक़ वाली बीवी फ़ौत हो गई, मैं उस की ना फ़रमानी और तकालीफ़ पर सब्र किया करता था लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे लिये शेर को मुसख़्ख़र कर दिया जो तुम ने देखा कि मेरी लकड़ियां उठाता था। फिर मैं ने इस नेक औ़रत से शादी की, अब मैं इस के साथ सुकून में हूं लेकिन मुझ से शेर जुदा हो गया है। लिहाज़ा इस नेक औ़रत के साथ राह़त ह़ासिल करने की वज्ह से मैं अपनी पीठ पर लकड़ियां उठाने पर मजबूर हो गया हूं।''

## तम्बीह :

शोहर की ना फ़रमानी को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है जिस की उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के एक गुरौह ने तसरीह़ की है। अलबत्ता ! शैख़ैन (इमाम न-ववी व इमाम राफ़ेई) رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا ने सिर्फ़ येह नहीं फ़रमाया कि ''बिग़ैर किसी सबब के औ़रत का ख़ुद से शोहर को रोकना ख़ुसूसी त़ौर पर कबीरा गुनाह है।'' बल्कि उन्हों ने ना फ़रमानी की तमाम



www.dawateislami.net

सूरतों पर तम्बीह की है। मेरी गुज़श्ता बह्स भी इस को शामिल है लेकिन मैं ने तफ़्सील बयान करने के लिये इसे अ़ला-ह़दा त़ौर पर ज़िक्र किया और येह बात गुज़र चुकी है कि **نُشُوْز** में शदीद वईद है जैसे फ़रिश्तों का औ़रत पर ला'नत भेजना जब वोह बिला उ़ज़्रे शर-ई शोहर को खु़द से रोके। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحمَةُاللّٰهِ الْغَنِی इर्शाद फ़रमाते हैं : मेरे वालिदे माजिद शैखु़ल इस्लाम (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना सिराज बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحمَةُاللّٰهِ الْغَنِی) फ़रिश्तों के ला'नत भेजने वाली ह़दीसे पाक से इस्तिद्लाल करते हैं कि ''किसी मुअ़य्यन गुनाहगार पर ला'नत करना जाइज़ है।'' और मैं ने उन के साथ मिल कर इस बारे में ग़ौरो फ़िक्र किया इस एह़तिमाल के सबब कि फ़रिश्तों का औ़रत को ला'नत करना ख़ास न हो बल्कि आ़म हो। या'नी यूं कहा जा सकता है कि ''हर उस औ़रत पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत है जो अपने शोहर के बिस्तर को छोड़ कर रात गुज़ारे।''

❁❁❁❁❁❁❁

## ......ह़दीसे क़ुदसी......

**दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **54** सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''नसीह़तों के म-दनी फूल ब वसीलए अह़ादीसे रसूल''** सफ़्ह़ा **51** ता **52** पर है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

**ऐ इब्ने आदम !** जिस ने हंस हंस कर गुनाह किये मैं उसे रुला रुला कर जहन्नम में डालूंगा और जो मेरे ख़ौफ़ से रोता रहा मैं उसे खु़श कर के जन्नत में दाखि़ल करूंगा।

**ऐ इब्ने आदम !** कितने ग़नी ऐसे हैं जो रोज़े ह़िसाब मोह़्ताजी व मुफ़्लिसी की तमन्ना करेंगे।

❁...... कितने बे रह़्म ऐसे हैं जिन्हें मौत ज़लीलो रुस्वा कर देगी।

❁...... कितनी शीरीं चीज़ें ऐसी हैं जिन्हें मौत तल्ख़ कर देगी।

❁...... ने'मतों पर कितनी खु़शियां ऐसी हैं कि जिन्हें मौत गदला कर देगी।

❁...... कितनी खु़शियां ऐसी हैं जो अपने बा'द त़वील ग़म लाएंगी।

(مجموعة رسائل الامام الغزالی،المواعظ فی الاحادیث القدسیة،ص۵۷۷)



www.dawateislami.net

# ۴- باب الطلاق

## कबीरा नम्बर 281 : बिला उ़ज़्रे शर-ई़ शोहर से त़लाक़ मांगना

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस औ़रत ने बिग़ैर किसी शर-ई़ वज्ह के अपने शोहर से त़लाक़ का मुत़ा-लबा किया उस पर जन्नत की ख़ुश्बू ह़राम है।"(1)

﴾2﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : बेशक त़लाक़ का मुत़ा-लबा करने वालियां मुनाफ़िक़ हैं और कोई औ़रत ऐसी नहीं जो अपने शोहर से बिग़ैर शर-ई़ उ़ज़्र के त़लाक़ का मुत़ा-लबा करे फिर जन्नत की हवा पाए। या फ़रमाया : जन्नत की ख़ुश्बू पाए।

### तम्बीह :

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है जो इस सह़ीह़ ह़दीसे पाक से वाज़ेह़ है क्यूं कि इस में सख़्त वई़द पाई जाती है। लेकिन येह हमारे शाफ़ेई़ मज़्हब के उसूलों की बिना पर मुश्किल है, इस की ताईद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान से भी होती है :

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا افْتَدَتْ بِهٖ (پ۲، البقرۃ:۲۲۹)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो उन पर कुछ गुनाह नहीं इस में जो बदला दे कर औ़रत छुट्टी ले।

इस से क़ब्ल जो शर्त़ बयान की गई है वोह त़लाक़ के जवाज़ के लिये नहीं बल्कि त़लाक़ को क़ाबिले नफ़रत समझने की नफ़ी के लिये है और इस फ़रमाने न-बवी से भी हमारे मज़्हब की ताईद होती है। चुनान्चे,

﴾3﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बाग़ ले लो और उसे एक त़लाक़ दे दो।"(3)

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الطلاق، باب فی الخلع، الحدیث:۲۲۲۶،ص۱۳۸۷۔

جامع الترمذی، ابواب الطلاق واللعان، باب ما جاء فی المختلعات، الحدیث :۱۱۸۷،ص۱۷۶۹۔

2 ......شعب الایمان للبیھقی ، باب فی قبض الید عن الأموال المحرمۃ ،الحدیث :۵۵۰۳،ج۴،ص۳۹۰۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب الطلاق، باب الخلع و کیف الطلاق فیہ، الحدیث :۵۲۷۳،ص۴۵۶،"خذ"بدلہ"أقبل"۔



www.dawateislami.net

इस के कबीरा होने पर दलालत करने वाली ह़दीसे पाक इस पर मह़मूल हो सकती है कि जब औ़रत मर्द को त़लाक़ देने पर मजबूर करे या'नी वोह उस के साथ ऐसा सुलूक अपनाए जो आ़म त़ौर पर त़लाक़ देने के लिये उभारता हो। गोया येह जानने के बा वुजूद कि इस से मर्द को शदीद तक्लीफ़ पहुंचेगी फिर भी त़लाक़ के मुत़ा–लबे में इसरार करे। नीज़ औ़रत के पास त़लाक़ का मुत़ा–लबा करने का कोई शर–ई उ़ज़्र भी न हो तो इस सूरत में येह कबीरा गुनाह होगा।

۞۞۞۞۞۞۞

## कबीरा नम्बर 282 : औ़रतों और मर्दों की दलाली करना

## कबीरा नम्बर 283 : मर्दों और अम्रदों की दलाली करना

﴾1﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''तीन शख़्स जन्नत में दाख़िल न होंगे : (1)...... वालिदैन का ना फ़रमान (2)...... दय्यूस और (3)...... मर्दानी औ़रतें (या'नी मर्दों की मुशा–बहत इख़्तियार करने वालियां)।''(1)

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तीन (क़िस्म के) लोगों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत ह़राम कर दी है : (1)...... शराब का आ़दी (2)...... वालिदैन का ना फ़रमान और (3)...... दय्यूस, जो अपने घर वालों में बुराई को बर क़रार रखता है।''(2)

﴾3﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तीन (क़िस्म के) लोग ऐसे हैं जिन पर क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नज़र (रह़मत) न फ़रमाएगा : (1)...... वालिदैन का ना फ़रमान (2)...... शराब का आ़दी और (3)...... एह़सान कर के जतलाने वाला।''(3)

﴾4﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान

---

(1)......المستدرک، کتاب الایمان، باب ثلاثۃ لایدخلون الجنۃ......الخ، الحدیث: ۲۵۲، ج۱، ص۲۵۳۔

(2)......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللہ بن عمر، الحدیث: ۵۳۷۲، ج۲، ص۳۵۱، دون قولہ "لوالدیہ"۔

(3)......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب اخبارہ، باب اخبارہ......الخ، الحدیث: ۷۲۹۶، ج۹، ص۲۱۸۔



www.dawateislami.net

है : ''तीन (क़िस्म के) लोग जन्नत में दाख़िल न होंगे : (1)...... वालिदैन का ना फ़रमान (2)...... दय्यूस और (3)...... मर्दानी औ़रतें।''(1)

﴾5﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तीन (क़िस्म के) लोगों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत ह़राम कर दी है : (1)...... शराब नोशी का आ़दी (2)...... वालिदैन का ना फ़रमान और (3)...... दय्यूस, जो अपने घर वालों में ख़बासत क़ाइम रखता है।''(2)

﴾6﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तीन शख़्स ऐसे हैं जो जन्नत में दाख़िल न होंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उन की त़रफ़ (ब नज़रे रह़मत) न देखेगा : (1)...... वालिदैन का ना फ़रमान (2)...... मर्दों से मुशा-बहत इख़्तियार करने वाली औ़रत और (3)...... दय्यूस। और तीन शख़्स ऐसे हैं जिन की त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन (ब नज़रे रह़मत) न देखेगा : (1)...... अपने वालिदैन का ना फ़रमान (2)...... शराब का आ़दी और (3)...... दे कर एह़सान जतलाने वाला।''(3)

﴾7﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तीन शख़्स ऐसे हैं जो जन्नत में दाख़िल न होंगे : (1)...... दय्यूस (2)...... मर्दानी औ़रतें और (3)...... शराब का आ़दी।'' सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आ़दी शराबी को तो हम ने जान लिया लेकिन दय्यूस से क्या मुराद है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''जो इस बात की परवाह नहीं करता कि उस के घर वालों के पास कौन आता है।'' अ़र्ज़ की गई : ''मर्दानी औ़रतें कौन सी हैं ?'' तो सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो मर्दों से मुशा-बहत इख़्तियार करती हैं।''(4)

## तम्बीह :

शैख़ैन (या'नी इमाम न-ववी व इमाम राफ़ेई) رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا वग़ैरा के अक़्वाल के मुत़ाबिक़ इन दोनों गुनाहों को कबीरा शुमार किया गया है। उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام इर्शाद

---

1 ......المستدرک، کتاب الایمان، باب ثلاثۃ لایدخلون الجنۃ......الخ، الحدیث: ۲۵۲، ج۱، ص۲۵۳۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللہ بن عمر، الحدیث: ۵۳۷۲، ج۲، ص۳۵۱۔

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللہ بن عمر بن الخطاب، الحدیث: ۶۱۸۸، ج۲، ص۴۹۶۔

4 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی الغیرة والمذاء، الحدیث: ۱۰۸۰۰، ج۷، ص۴۱۲۔



www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं : "**दय्यूस** वोह है जो अपने घर वालों पर कोई ग़ैरत न खाए।"

**जवाहिर** में है कि "**दियासत** से मुराद येह है कि लोगों के दरमियान जम्अ़ होना और ना पसन्दीदा और बातिल बातों को तवज्जोह से सुनना।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं : "जब कोई शख़्स ऐसा हो जो ख़ुद तो गाना न गा सकता हो लेकिन उस के साथ कोई ऐसा आदमी हो जो गाना गाता हो, फिर वोह उसे ले कर लोगों के पास आए तो वोह फ़ासिक़ है और येह **दियासत** है।" यहां **जवाहिर** का कलाम ख़त्म हो गया।

**दियासत** की मज़्कूरा ता'रीफ़ ग़ैर मा'रूफ़ है और मा'रूफ़ वोही है जो मज़्कूरा सह़ीह़ ह़दीसे पाक के बिल्कुल मुत़ाबिक़ है और उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के ह़वाले से बयान हो चुकी है। अलबत्ता ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) का कलाम इस पर मह़मूल है कि मज़्कूरा ह़ालत का तअ़ल्लुक़ भी **दियासत** से है।

**लिसानुल अ़रब** में है कि "**दय्यूस** से मुराद वोह शख़्स है जो अपनी बीवी का दलाल हो और अपने घर वालों पर ग़ैरत न खाए। जब कि **तदसीस** से मुराद **क़ियादत** है।" **मोह़कम** में है कि "**दय्यूस** वोह होता है जिस के सामने लोग उस की मह़रम औ़रतों के पास आते हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना सा'लब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जिस के घर वाले बदकारी में मुब्तला हों और उसे इस का इ़ल्म भी हो (लेकिन फिर भी ख़ामोश रहे)। येह अस्ल में सुरयानी ज़बान का लफ़्ज़ है और अब अ़-रबी ज़बान में इस्ति'माल होता है।"(1)

अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन मुकर्रम इब्ने मन्ज़ूर अफ़्रीक़ी मिस्री (मु-तवफ़्फ़ा 711 हि.) ने **लिसानुल अ़रब** में दूसरा मफ़्हूम येह बयान किया कि **दियासह**, **क़ियादह** को शामिल है और **क़ियादह** से मुराद येह है कि "मर्दों और औ़रतों की दलाली करना।" जब कि पहले मफ़्हूम के ए'तिबार से सिर्फ़ बीवी की दलाली मुराद है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) वग़ैरा ने इन दोनों के दरमियान फ़र्क़ बयान किया है और मैं ने भी उ़न्वान में इन की इत्तिबाअ़ की है। **अरौज़ह** की **ततिम्मा** के उ़न्वान से इबारत येह है कि "**क़व्वाद** से मुराद वोह शख़्स है जो लोगों को अपने

(1)......لسان العرب، ج۱، ص۱۳۵۰۔



www.dawateislami.net

घर वालों के पास आने के लिये उभारता है और फिर उन को और अपने घर वालों को (बदकारी के लिये) तन्हाई मुहय्या करता है।" फिर साहिबे रौज़ा ने फ़रमाया : "ज़ियादा मुनासिब येह है कि येह सिर्फ़ अहले ख़ाना के साथ ख़ास न हो बल्कि इस से मुराद हर वोह शख़्स हो जो मर्दों और औ़रतों को ह़राम काम में जम्अ़ करता है।" फिर ख़ातिमा के उ़न्वान से बयान किया : "**दय्यूस** वोह होता है जो लोगों को अपनी बीवी के पास आने से नहीं रोकता।" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम इ़बादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى से मन्क़ूल है कि "इस से मुराद वोह शख़्स है जो इस लिये लौंडी ख़रीदता है ताकि वोह लोगों के लिये गाना गाए।" इस का तक़ाज़ा येह है कि इन दोनों के दरमियान इसी त़रह़ फ़र्क़ किया जाए जैसे आ़म और ख़ास में किया जाता है और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र-कशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى (मु-तवफ़्फ़ा 794 हि.) फ़रमाते हैं : "**दियासत** से मुराद येह है कि आदमी का अपनी बीवी के हर (जाइज़ व ना जाइज़) मुआ़-मले को अच्छा समझना और **क़ियादत** से मुराद येह है कि आदमी का अजनबी औ़रत के हर मुआ़-मले को अच्छा समझना।"

**ह़ासिले कलाम** येह है कि अगर इस्म इन दोनों (या'नी दियासत और क़ियादत) को शामिल हो तो इन के मु-तरादिफ़ होने की वज्ह से साबिक़ा अह़ादीसे मुबा-रका इन दोनों की ह़ुरमत पर दलील हैं और अगर इस्म दोनों को शामिल न हो तो क़ियादत मुरव्वत को ख़त्म करने वाली है क्यूं कि इस का आ़दी मुरव्वत की बिना पर इस का ख़याल बहुत कम रखता है और इस लिये कि नसब को मह़फ़ूज़ रखना शरअ़न मत़लूब है और ब-शरी त़बीअ़तें भी इस का तक़ाज़ा करती हैं। पस ऐसा करने वाला शरीअ़त व त़बीअ़त का मुख़ालिफ़ है, नीज़ इस में ह़राम कारी पर मदद भी पाई जाती है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى येही बातें ज़िक्र करने के बा'द फ़रमाते हैं : "येह बिग़ैर किसी इख़्तिलाफ़ के कबीरा गुनाह है और इस के नुक़्सानात बहुत ज़ियादा हैं।" बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "मर्दों और औ़रतों की क़ैद लगाने की कोई ह़ाजत नहीं बल्कि येह मर्दों, औ़रतों और अम्रदों (या'नी जिन्हें देख कर शह्वत आए उन) के दरमियान भी इन्तिहाई बुरा है।"



www.dawateislami.net

# ٥۔ باب الرجعة

## कबीरा नम्बर 284 : रुजूअ़ से क़ब्ल ह़राम जानते हुए तलाक़े रज्ई वाली औ़रत से जिमाअ़ करना

इसे कबीरा गुनाह शुमार करना बई़द नहीं जब कि येह ऐसे शख़्स से सादिर हो जो इस की हुरमत का ए'तिक़ाद रखता हो, अगर्चे इस में ह़द वाजिब नहीं क्यूं कि ह़द का वाजिब न होना शुबा की वज्ह से है, और येह इस लिये कि हुदूद किसी फ़साद का इज़ाला करने के लिये होती हैं और जहां तक मुम्किन हो ह़द साक़ित़ हो जाती है और ह़द का साक़ित़ होना ह़राम होने के हुक्म में कमी का तक़ाज़ा भी नहीं करता, क्या आप देखते नहीं कि मुश-त-रका लौंडी से जिमाअ़ करना कबीरा गुनाह है जैसा कि ज़ाहिर है। कबीरा गुनाह क़रार देने में मालिक के शुबे की त़रफ़ न देखा जाएगा जिस में उस के लिये ह़द का साक़ित़ होना पाया जाता है।

**ए'तिराज़ :** अगर आप कहें कि रज्ई त़लाक़ वाली औ़रत से जिमाअ़ के जाइज़ होने में उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इख़्तिलाफ़ है, तो इस के बा वुजूद येह कबीरा गुनाह क्यूं है ?

**जवाब :** येह अनोखी बात नहीं क्यूं कि जिस नबीज़[1] से नशा नहीं आता उस की हुरमत में उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इख़्तिलाफ़ है। इस के बा वुजूद हमारे (या'नी शवाफ़ेअ़ के) नज़्दीक इस का पीना कबीरा गुनाह है।

۞۞۞۞۞۞۞

---

1...... वोह मश्रूब जिस में खजूरें डाली जाएं जिस से पानी मीठा हो जाए मगर आ'ज़ा को सुस्त करने वाला और नशा आवर न हो। वगर्ना इस का पीना ह़राम है। (الفتاوى الخانية، ج١، ص٩)



www.dawateislami.net

# 6. باب الایلاء ( ईला का बयान )[1]

## कबीरा नम्बर 285 : बीवी से ईला करना

**( या'नी शोहर का चार माह से ज़ियादा अपनी बीवी से जिमाअ़ न करने की क़सम उठाना )**

मेरा इसे कबीरा गुनाह शुमार करना बईद नहीं अगर्चे मैं ने किसी को इस का ज़िक्र करते हुए नहीं देखा जैसा कि इस से पहले वाला गुनाह है इस के कबीरा होने की वज्ह येह है कि इस में बीवी के लिये बहुत बड़ा नुक़्सान है इस लिये कि औ़रत का शोहर से चार माह तक दूर रहने के बा'द सब्र ख़त्म हो जाता है। जैसा कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपने अ़ज़ीम बाप अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में येह बात अ़र्ज़ की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुक्म फ़रमाया : ''कोई शख़्स अपनी बीवी से चार माह से ज़ियादा अ़र्से के लिये ग़ाइब न हो।''[2]

---

1...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1182 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त**, जिल्द दुवुम सफ़ह़ा 183 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : ''ईला दो क़िस्म है एक मुअक़्क़त या'नी चार महीने का, दूसरा मुअब्बद या'नी चार महीने की क़ैद उस में न हो बहर ह़ाल अगर औ़रत से चार महीने के अन्दर जिमाअ़ किया तो क़सम टूट गई अगर्चे मजनून हो और कफ़्फ़ारा लाज़िम, जब कि **अल्लाह** तआ़ला या उस की उन सिफ़ात की क़सम खाई और जिमाअ़ से पहले कफ़्फ़ारा दे चुका है तो उस का ए'तिबार नहीं बल्कि फिर कफ़्फ़ारा दे। और अगर ता'लीक़ थी तो जिस बात पर थी वोह हो जाएगी म-सलन येह कहा कि ''अगर इस से सोह़बत करूं तो ग़ुलाम आज़ाद है।'' और चार महीने के अन्दर जिमाअ़ किया तो ग़ुलाम आज़ाद हो गया और क़ुरबत न की यहां तक कि चार महीने गुज़र गए तो त़लाक़े बाइन हो गई। फिर अगर ईलाए मुअक़्क़त था या'नी चार माह का तो यमीन (क़सम) साक़ित़ हो गई या'नी अगर उस औ़रत से फिर निकाह़ किया तो उस का कुछ असर नहीं। और अगर मुअब्बद था या'नी हमेशा की उस में क़ैद थी म-सलन ख़ुदा की क़सम ! तुझ से कभी क़ुरबत न करूंगा या उस में कुछ क़ैद न थी म-सलन ख़ुदा की क़सम ! तुझ से क़ुरबत न करूंगा तो इन सूरतों में एक बाइन त़लाक़ पड़ गई, फिर भी क़सम ब दस्तूर बाक़ी है या'नी अगर उस औ़रत से फिर निकाह़ किया तो फिर ईला ब दस्तूर आ गया, अगर वक़्ते निकाह़ से चार माह के अन्दर जिमाअ़ कर लिया तो क़सम का कफ़्फ़ारा दे और ता'लीक़ भी तो जज़ा वाक़ेअ़ हो जाएगी। और अगर चार महीने गुज़र लिये और क़ुरबत न की तो एक त़लाक़े बाइन वाक़ेअ़ हो गई, मगर यमीन ब दस्तूर बाक़ी है। सेहबारा (या'नी तीसरी मर्तबा) निकाह़ किया तो फिर ईला आ गया, अब भी जिमाअ़ न करे तो चार माह गुज़रने पर तीसरी त़लाक़ पड़ जाएगी और अब बे ह़लाला निकाह़ नहीं कर सकता, अगर ह़लाला के बा'द फिर निकाह़ किया तो अब ईला नहीं, या'नी चार महीने बिग़ैर क़ुरबत गुज़रने पर त़लाक़ न होगी मगर क़सम बाक़ी है, अगर जिमाअ़ करेगा कफ़्फ़ारा वाजिब होगा। और अगर पहली या दूसरी त़लाक़ के बा'द औ़रत ने किसी और से निकाह़ किया उस के बा'द फिर उस से निकाह़ किया तो मुस्तक़िल त़ौर पर अब से तीन त़लाक़ का मालिक होगा मगर ईला रहेगा, या'नी क़ुरबत न करने पर त़लाक़ हो जाएगी। फिर निकाह़ किया फिर वोही हुक्म है फिर एक या दो त़लाक़ के बा'द किसी से निकाह़ किया फिर उस से निकाह़ किया फिर वोही हुक्म है या'नी जब तक तीन त़लाक़ के बा'द दूसरे शोहर से निकाह़ न करे ईला ब दस्तूर बाक़ी रहेगा।''

2......السنن الکبری للبیھقی، کتاب السیر ،باب الامام لا یجمر بالغزّی ،الحدیث:۱۷۸۵۰،ج۹،ص۵۱۔



www.dawateislami.net

इस अ़ज़ीम नुक़्सान की वज्ह से शारेअ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने क़ाज़ी को इजाज़त दी है कि "जब चार माह के बा'द भी मर्द औ़रत से जिमाअ़ न करे तो उस पर एक त़लाक़ वाक़ेअ़ कर दे।" और हमारे (शाफ़ेई) अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का येह क़ौल इस के मुनाफ़ी नहीं कि "मर्द पर अपनी बीवी से एक दफ़्आ़ भी जिमाअ़ करना वाजिब नहीं।"(1) इस में उन्हों ने त़बीअ़त चाहने का ए'तिबार किया है। क्यूं कि जब तक क़सम न उठाई गई हो तो औ़रत हमेशा शोहर की क़ुरबत की उम्मीद रखती है लेकिन जब इस के बर अ़क्स उस से क़ुरबत न करने की क़सम खा कर उसे ना उम्मीद कर दिया जाए तो येह बात उस के लिये बहुत ज़ियादा नुक़्सान देह होती है। लिहाज़ा अगर औ़रत की ऐसी कोई ह़ालत साबित हो जाए तो शारेअ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उसे तोड़ने और अ़ज़ीम नुक़्सान को दूर करने के लिये क़ाज़ी को त़लाक़ देने का इख़्तियार दिया है।

۞۞۞۞۞۞۞

## ٧-باب الظہار

## कबीरा नम्बर 286 : ज़िहार का बयान(2)

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे आ़ली है :

اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآىٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ؕ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓـِٔیْ وَلَدْنَهُمْ ؕ وَ اِنَّهُمْ

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो तुम में अपनी बीबियों को अपनी मां की जगह कह बैठते हैं वोह उन की माएं नहीं, उन की माएं तो वोही हैं जिन से वोह पैदा

---

1...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1182 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द दुवुम सफ़ह़ा 95 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : एक मर्तबा जिमाअ़ क़ज़ाअन वाजिब है और दिया-नतन येह हुक्म है कि गाहे गाहे (या'नी कभी कभी) करता रहे और इस के लिये कोई ह़द मुक़र्रर नहीं मगर इतना तो हो कि औ़रत की नज़र औरों की त़रफ़ न उठे और इतनी कसरत भी जाइज़ नहीं कि औ़रत को ज़रर (या'नी नुक़्सान) पहुंचे। और येह इस के जुस्सा (या'नी जिस्म) और क़ुव्वत के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ है।

2...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1182 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द दुवुम सफ़ह़ा 205 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : "ज़िहार के येह मा'ने हैं कि अपनी ज़ौजा या उस के किसी जुज़्वे शाएअ़ या ऐसे जुज़ को जो कुल से ता'बीर किया जाता हो ऐसी औ़रत से तश्बीह देना जो इस पर हमेशा के लिये ह़राम हो या उस के किसी ऐसे उ़ज़्व से तश्बीह देना जिस की त़रफ़ देखना ह़राम हो म-सलन कहा : तू मुझ पर मेरी मां की मिस्ल है या तेरा सर या तेरी गरदन या तेरा निस्फ़ मेरी मां की पीठ की मिस्ल है।"



www.dawateislami.net

لَيَقُوۡلُوۡنَ مُنۡكَرًا مِّنَ الۡقَوۡلِ وَزُوۡرًا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوۡرٌ ۝۲ (پ۲۸، المجادلة:۲) हैं और वोह बेशक बुरी और निरी झूट बात कहते हैं और बेशक **अल्लाह** ज़रूर मुआफ़ करने वाला और बख़्शने वाला है।

## आयते मुबा-रका की मुख़्तसर वज़ाहत

"اَلَّذِيۡنَ يُظٰهِرُوۡنَ مِنۡكُمۡ مِّنۡ نِّسَآئِهِمۡ" में مِنۡكُمۡ फ़रमाने में ह़िक्मत येह है कि अ़-रबों को **ज़िहार** को अहम न समझने की आ़दत बना लेने पर डांटा जाए। क्यूं कि **ज़िहार** ज़मानए जाहिलिय्यत की ऐसी क़िस्म है जो दुन्या की दीगर किसी क़ौम में नहीं पाई जाती थी। और फ़रमाया : "مَا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمۡ" या'नी उन की बीवियां उन की माएं नहीं होतीं इस के बा वुजूद वोह उन्हें उन के साथ तश्बीह देते हैं। क्यूं कि ज़िहार की ह़क़ीक़त येह है कि आदमी अपनी बीवी से कहे : "तू मुझ पर मेरी मां की पुश्त की त़रह़ है।" या इस त़रह़ का कोई कलिमा कहे। "اِنۡ اُمَّهٰتُهُمۡ اِلَّا الّٰٓـِٔىۡ وَلَدۡنَهُمۡ ؕ" या'नी उन की माएं तो वोह हैं जिन्हों ने उन्हें जना या जो उन के हुक्म में हैं जैसे दूध पिलाने वाली। "وَاِنَّهُمۡ لَيَقُوۡلُوۡنَ مُنۡكَرًا مِّنَ الۡقَوۡلِ وَزُوۡرًا" इस से मुराद येह है कि बुरा और झूटा क़ौल कहते हैं या'नी बोहतान और झूट बकते हैं। क्यूं कि **मुन्कर** वोह होता है जो शर-अ़ में मा'रूफ़ न हो और **ज़ूर** से मुराद झूट है। "وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوۡرٌ" या'नी बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़रूर मुआफ़ करने वाला और बख़्शने वाला है।" क्यूं कि उस ने कफ़्फ़ारे को इस बुरे क़ौल और झूट से नजात का ज़रीआ़ बनाया है।

**ए'तिराज़ :** **ज़िहार** करने वाले ने अपनी बीवी को अपनी मां की मिस्ल कहा तो इस में कौन सी बुराई और झूट है ?

**जवाब :** किसी का अपनी बीवी को येह कहना दो त़रह़ हो सकता है या तो येह जुम्ला ख़बरिया होगा या इन्शाइया। बहर ह़ाल दोनों सूरतों में हुक्म एक है या'नी इस का झूटा होना वाज़ेह़ है और इस की वज्ह येह है कि उस ने अपनी इस बात को दर ह़क़ीक़त हु़रमत का सबब ख़ुद बनाया है ह़ालां कि शरीअ़त ने ऐसा कोई हुक्म नहीं दिया। येह मुख़ा-लफ़त और क़बाह़त की इन्तिहा है। इस से नतीजा निकलता है कि **ज़िहार** कबीरा गुनाह है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे झूट क़रार दिया है और झूट कबीरा गुनाह है। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا का फ़रमान भी इस की मुवा-फ़क़त करता है कि "ज़िहार कबीरा गुनाहों में से है।"



www.dawateislami.net

# ٨۔ باب اللعان

## कबीरा नम्बर 287 : पाक दामन (मर्द या औ़रत) पर ज़िना या लिवात़त की तोहमत लगाना

## कबीरा नम्बर 288 : तोहमत सुन कर इस पर ख़ामोश रहना

## क़ुरआने पाक में लिआ़न की मज़म्मत :

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۴﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۵﴾ (پ۱۸، النور:۴،۵) ﴾1﴿

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो पारसा औ़रतों को ऐ़ब लगाएं फिर चार गवाह मुआ़यना के न लाएं तो उन्हें अस्सी कोड़े लगाओ और उन की कोई गवाही कभी न मानो और वोही फ़ासिक़ हैं मगर जो इस के बा'द तौबा कर लें और संवर जाएं तो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला, मेह्रबान है।

## आयाते मुबा-रका की मुख़्तसर वज़ाह़त

''وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ'' उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इस पर इज्माअ़ है कि आयते मुबा-रका में رَمْیٌ से मुराद ज़िना की तोहमत लगाना है और येह लिवात़त की तोहमत को भी शामिल है। जैसे किसी औ़रत को येह कहे : ''ऐ ज़ानिया ! ऐ बे ह़या ! ऐ छिनाल ! (या'नी रन्डी और इस से मुराद वोह औ़रत है जो ज़मानए जाहिलिय्यत में अपने त़लब गारों को खांस कर अपनी त़रफ़ मु-तवज्जेह करती थी)।'' या फिर किसी के शोहर को कहे : ''ऐ फ़ाह़िशा के शोहर !'' या उस के बेटे से कहे : ''ऐ रन्डी के बच्चे !'' या उस की बेटी से कहे : ''ऐ बदकार औ़रत की बेटी !'' पस येह बात उस की मां के लिये तोहमत है। या किसी शख़्स से कहे : ''ऐ ज़ानी !'' या येह कहे : ''ऐ वोह शख़्स जिस से बद फे़'ली की गई !'' बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : या किसी से कहे : ''ऐ लोथड़े !''

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के एक गुरौह का कहना है कि किसी पर तोहमत लगाने में इन अल्फ़ाज़ के ज़ियादा इस्ति'माल की वज्ह से इन को बयान किया गया है और जो चीज़ मश्हूर हो वोह सराह़त पर दलालत करती है। लेकिन इस के बर अ़क्स बात क़ाबिले ए'तिमाद है। इस से नतीजा निकलता है कि येह अल्फ़ाज़ किनाया हैं।



www.dawateislami.net

**सुवाल :** आयते मुबा-रका में सिर्फ़ पाक दामन अ़ौरतों पर तोहमत लगाने का बयान है तो मर्द इस हुक्म के तहूत कैसे दाख़िल हो गए ?

**जवाब :** (1)...... इस का एक जवाब येह है कि اَلْمُحْصَنٰتِ से मुराद पाक दामन नुफ़ूस हैं। लिहाज़ा येह लफ़्ज़ मर्दों और अ़ौरतों दोनों को शामिल है और (2)...... दूसरा जवाब येह है कि यहां लफ़्ज़े اَلْمُحْصِنِيْنَ मह्ज़ूफ़ है क्यूं कि मर्द व अ़ौरत दोनों तोहमत लगाए जाने के हुक्म में बराबर हैं और इस बात पर इज्माअ़ है।

## मोह़सिन होने की शर्त़ :

यहां اِحْصَان से मुराद आज़ाद होना, मुसल्मान होना, आ़क़िल बालिग़ होना, ह़द के मूजिब ज़िना नीज़ अपनी बीवी या लौंडी से उस की दुबुर में वत़ी करने से पाक होना मुराद है। लिहाज़ा जो ज़िना का मुर-तकिब हो या अपनी बीवी के पिछले मक़ाम में वत़ी करे तो उस पर ज़िना की तोहमत लगाने वाले पर ह़द्दे क़ज़्फ़ वाजिब नहीं, अगर्चे वोह तौबा कर ले और उस का ह़ाल अच्छा हो जाए क्यूं कि जब इ़ज़्ज़त की चादर एक दफ़्आ़ तार तार हो जाए तो फिर उस के रेशे दोबारा कभी नहीं मिलते। अलबत्ता ! उस पर ज़िना वग़ैरा तोहमत लगाना कबीरा गुनाह है जैसा कि ज़ाहिर है। इस की तफ़्सील नसब के बाब में आएगी।

और फ़रमाया : ''ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ......الاية'' इस फ़रमाने बारी तआ़ला से मा'लूम हुवा कि यहां पर ह़द का सबब तोहमत लगाने वाले के किज़्बो इफ़्तिरा को ज़ाहिर करना है। लिहाज़ा जिस की सच्चाई चार आ़दिल गवाहों से साबित हो जाए उस पर कोई ह़द नहीं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मु-तवफ़्फ़ा 150 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं : ''जिस पर ज़िना की तोहमत लगाई गई उस के सुबूत के लिये फ़ासिक़ गवाह भी काफ़ी हैं और अगर ख़ुद इक़रार कर ले तो दो मर्द भी काफ़ी हैं। या फिर किसी ने दा'वा किया कि फ़ुलां ने ज़िना किया है। तो उस से क़सम ली जाएगी कि उस ने ज़िना नहीं किया। फिर तोहमत लगाने वाले से भी क़सम ली जाएगी उस ने क़सम उठा ली तो उस पर ह़द्दे क़ज़्फ़ नहीं।''

## ह़द्दे क़ज़्फ़ की शराइत़ :

ह़द इस सूरत में वाजिब होगी कि तोहमत लगाने वाला आ़क़िल बालिग़ हो, बार बार तोहमत लगाने पर बार बार ह़द नहीं लगाई जाएगी अगर्चे इस की सूरत मुख़्तलिफ़ हो जैसे कोई



www.dawateislami.net

किसी से कहे : "तू ने फुलां औ़रत से ज़िना किया।" फिर कहे : "तू ने दूसरी औ़रत से ज़िना किया और इसी त़रह़ की कोई दूसरी बात कहे।" हां ! अगर ह़द लगाई गई लेकिन इस के बा'द उस ने दोबारा तोहमत लगाई तो अब क़ाज़ी की मरज़ी के मुत़ाबिक़ उसे सज़ा दी जाएगी और एक क़ौल येह भी है कि "बार बार तोहमत लगाने से बार बार ह़द लगाई जाएगी।" क्यूं कि येह आदमी का ह़क़ है पस येह क़र्ज़ की त़रह़ एक दूसरे में दाख़िल न होगा। जब اِحْصَان की साबिक़ा शराइत़ में से कोई शर्त़ न पाई जाए तो ता'ज़ीर वाजिब होगी लेकिन उस का कबीरा गुनाह होना बाक़ी रहेगा जैसा कि इस की गुज़श्ता मिसालें गुज़र चुकी हैं।

## ज़िना की गवाही में शर्त़ :

(1)...... ज़िना के गवाहों में येह शर्त़ है कि वोह ज़ानी और मुज़्निय्या (या'नी जिस से ज़िना किया गया हो उन्हें) ह़ालते ज़िना में देखें क्यूं कि कभी कोई मां बेटे को इकठ्ठा देख कर ज़िना समझ लेता है। नीज़ यूं गवाही देना मुस्तह़ब है कि गवाह इस त़रह़ कहे : "मैं ने इस त़रह़ देखा कि मर्द का आलए तनासुल औ़रत की शर्मगाह में था।" जब कि एक गुरौहे उ़-लमा कहता है : येह कहना वाजिब है कि "हम ने मर्द के आलए तनासुल को औ़रत की शर्मगाह में इस त़रह़ दाख़िल होते देखा जिस त़रह़ सुरमा दानी में सलाई दाख़िल होती है।" गवाहों का सिर्फ़ इतना कहना काफ़ी नहीं कि इस ने ज़िना किया है। लेकिन अगर तोहमत लगाने वाले का मुआ़-मला इस के बर अ़क्स है या'नी अगर वोह किसी को कहे कि "तू ने ज़िना किया है।" तो सिर्फ़ इतना कहने पर ही उसे ह़द्दे क़ज़फ़ लगा दी जाएगी और मुआ़-मले की ह़क़ीक़त जानने के लिये छानबीन नहीं की जाएगी। लेकिन अगर किसी ने ख़ुद ज़िना का इक़रार कर लिया तो एक क़ौल येह है कि "गवाहों से जिस त़रह़ तफ़्सील पूछी जाती है इसी त़रह़ उस से भी पूछना वाजिब है।" और एक क़ौल येह है कि "तफ़्सील पूछना वाजिब नहीं जैसा कि तोहमत में होता है।" अलबत्ता ! पहला क़ौल हमारे नज़्दीक ज़ियादा सह़ीह़ है और दोनों में एह़तियात़ पर अ़मल करते हुए क़ज़फ़, ज़िना से जुदा हो गया। ह़द्दे क़ज़फ़ चूंकि इन्सानी ह़क़ है लिहाज़ा झूटी तोहमत से डराने में मुबा-लग़ा करते हुए ह़द्दे क़ज़फ़ को तफ़्सील पूछने पर मौक़ूफ़ नहीं किया जाएगा। जब कि इक़रारे ज़िना में ह़द्दे ज़िना तफ़्सील पूछने पर मौक़ूफ़ है ताकि उस बुराई की पर्दा पोशी में मुबा-लग़ा किया जाए जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ है।

(2)...... हमारे (या'नी शवाफ़ेअ़) के नज़्दीक इकठ्ठे और जुदा जुदा गवाही देने में कोई फ़र्क़ नहीं और अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के नज़्दीक येही हुक्म है। जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना


www.dawateislami.net

इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मु-तवफ़्फ़ा 150 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं : "अगर गवाह अ़ला-ह़दा अ़ला-ह़दा हों तो उन की गवाही लग़्व होगी और उन्हें ह़द लगाई जाएगी।"

हमारी (या'नी शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام की) दलील येह है कि (1)...... गवाहों को एक दूसरे से जुदा करने से तोहमत ख़त्म हो सकती है और ह़क़ीक़त का इज़्हार भी वाज़ेह़ त़ौर पर हो सकता है क्यूं कि इस त़रह़ येह एह़तिमाल नहीं रहता कि गवाह एक दूसरे से सुन कर गवाही दे देंगे। (2)...... येही वज्ह है कि जब क़ाज़ी को गवाहों में शक हो जाए तो वोह उन को जुदा जुदा कर सकता है। (3)...... उस वक़्त भी उन को एक दूसरे से अलग करना इन्तिहाई ज़रूरी है कि जब वोह सब इकट्ठे क़ाज़ी या उस के नाइब के पास आएं तो एक एक कर के उन के पास अपनी गवाही क़लम बन्द करवाएं क्यूं कि सब का इकठ्ठा गवाही देना मुश्किल है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم (मु-तवफ़्फ़ा 150 हि.) की दलील येह है कि (1)...... पहले एक शख़्स ने गवाही दी फिर दूसरे ने आ कर गवाही दी तो उन में से हर एक पर येह बात सादिक़ आती है कि वोह तोहमत का मुर-तकिब हो रहा है और गवाही का निसाब या'नी चार गवाहों का होना नहीं पाया जा रहा। लिहाज़ा आयते करीमा के हुक्म की बिना पर उन सब पर ह़द लगाई जाएगी और उन के शहादत के लफ़्ज़ को अदा करने का भी कोई फ़ाएदा न होगा। क्यूं कि अगर ऐसा न किया जाए तो येह मुसल्मानों को तोहमत लगाने का एक ज़रीआ़ बन जाएगा।

﴿1﴾...... एक शख़्स के ख़िलाफ़ अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने 4 अफ़राद या'नी अबू बक्रह, शिब्ल बिन मा'बद, नाफ़ेअ़ और नुफ़ैअ़ ने ज़िना की गवाही दी। लेकिन उन में से चौथे शख़्स ने इस त़रह़ गवाही दी कि "मैं ने इसे देखा कि येह उक्डूं बैठा हुवा है और औ़रत के पाउं इस के कन्धों पर ऐसे हैं जैसे गधे के कान। इस के इ़लावा मुझे नहीं मा'लूम कि इस के पीछे क्या था।" तो अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तीनों को ह़द लगाई और येह न पूछा कि क्या तुम्हारे साथ कोई चौथा गवाह भी है?[1] अगर इस के बा'द किसी दूसरे की गवाही क़बूल की जाती तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उन पर ह़द लगाने में तवक़्क़ुफ़ करते।

इस वाक़िए़ में उन लोगों का जवाब मौजूद है जो कहते हैं कि "गवाहों पर कोई ह़द नहीं

1 ......المغنی لابن قدامة، کتاب الحدود، مسألة ١٥٦١، فصل واذالم تکمل شھود الزنی، ج١٢، ص٣٦٧۔



www.dawateislami.net

अगर्चे निसाब पूरा न हो।'' क्यूं कि वोह तो गवाही देने के लिये आए थे और इस लिये भी कि अगर उन्हें ह़द लगाई जाए तो ज़िना पर गवाही देने का दरवाज़ा बन्द हो जाएगा क्यूं कि हर एक अपने साथी की त़रह़ गवाही नहीं दे सकता लिहाज़ा ह़द लाज़िम आएगी और बयान कर्दा इस इल्लत कि ''जिस ह़द तक मुम्किन हो इस बुराई को छुपाना मक़्सूद है।'' का जवाब भी मौजूद है। लिहाज़ा ज़िना में चार गवाहों की शर्त़ इसे बक़िय्या तमाम अफ़्आ़ल व अक़्वाल से जुदा कर देती है।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान ''فَاجۡلِدُوۡهُمۡ'' में जिसे कोड़े मारने का हुक्म दिया जा रहा है, इस से मुराद इमाम या उस का नाइब है। इसी त़रह़ आक़ा अपने ग़ुलाम को ह़द लगा सकता है।(1) बा'ज़ मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ''जब इमाम न हो तो कोई भी नेक शख़्स क़ाज़िफ़ को ह़द लगा सकता है।'' लेकिन हमारा मज़्हब इस के मुवाफ़िक़ नहीं।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह हुक्म ''ثَمٰنِيۡنَ جَلۡدَةً وَّلَا تَقۡبَلُوۡا لَهُمۡ شَهَادَةً اَبَدًا'' कामिल आज़ादी वाले इन्सान के मु-तअ़ल्लिक़ है जब कि ग़ुलाम को **40** कोड़े लगाए जाएंगे। और वालिद के इ़लावा अगर्चे दादा, परदादा ही क्यूं न हो तो उसे अपने फ़ुरूअ़ (या'नी बेटों, पोतों वग़ैरा) पर तोहमत लगाने पर ह़द नहीं लगाई जाएगी जैसा कि उसे क़त्ल नहीं किया जाएगा बल्कि ता'ज़ीर की जाएगी। आक़ा अपने ग़ुलाम पर तोहमत लगाए तो भी येही हुक्म है।

हुदूद में सब से शदीद ह़द्दे ज़िना फिर ह़द्दे क़ज़्फ़ और इस के बा'द शराब की ह़द है। यहां उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने कुफ़्र की ह़द को बयान नहीं फ़रमाया क्यूं कि कलाम मुसल्मानों की हुदूद के मु-तअ़ल्लिक़ है। नीज़ डाकू पर ह़द नहीं बल्कि क़िसास है। अगर्चे इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ लाज़िम है।(2)

---

❶...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1182 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**बहारे शरीअ़त**'' जिल्द दुवुम सफ़ह़ा 370 पर है : ''ह़द क़ाइम करना बादशाहे इस्लाम या उस के नाइब का काम है या'नी बाप अपने बेटे पर या आक़ा अपने ग़ुलाम पर नहीं क़ाइम कर सकता।''

❷...... **बहारे शरीअ़त,** जिल्द दुवुम सफ़ह़ा 422 पर डाकू की सज़ा के मु-तअ़ल्लिक़ कुछ वज़ाह़त येह है : ''राहज़न (या'नी डाकू) जिस के लिये शरीअ़त की जानिब से सज़ा मुक़र्रर है। इस में चन्द शर्तें हैं : (1) उन में इतनी त़ाक़त हो कि राहगीर उन का मुक़ाबला न कर सकें, अब चाहे हथियार के साथ डाका डाला या लाठी ले कर या पथ्थर वग़ैरा से (2) बैरूने शह्‌र राहज़नी की हो (या'नी शह्‌र से बाहर डकैती की हो) या शह्‌र में रात के वक़्त हथियार से डाका डाला (3) दारुल इस्लाम में हो (4) चोरी के सब शराइत़ पाए जाएं (5) तौबा करने और माल वापस करने से पहले बादशाहे इस्लाम ने उन को गिरिफ़्तार कर लिया हो।'' तफ़्सीली मा'लूमात के लिये बहारे शरीअ़त के इसी मक़ाम का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये। (इ़ल्मिय्या)



www.dawateislami.net

ज़िना कि ह़द इस लिये शदीद है कि येह न-सबों पर ज़ुल्म है जो इन्सानी जान को ऐबदार कर देता है फिर ह़द्दे क़ज़्फ़ इस लिये शदीद है कि इस में उन अ़ज़ीम इ़ज़्ज़तों पर ज़ुल्म पाया जाता है जिन का ख़ालिस ह़क़्क़ुल अ़ब्द होने की बिना पर साह़िबे मुरव्वत लोग लिह़ाज़ रखते हैं।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान "وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ" में तोहमत लगाने वालों के लिये इन्तिहाई सख़्त सज़ा, डांट डपट और बहुत बड़ी नाराज़ी का इज़्हार है। फिर फ़रमाया : "اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا"

## क्या तोहमते ज़िना लगाने वाले की गवाही मक़्बूल है ?

इस में इख़्तिलाफ़ है कि जब कोई क़ाज़िफ़ ह़द्दे क़ज़्फ़ के बा'द तौबा कर ले तो क्या उस की गवाही क़बूल की जाएगी या नहीं ? ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मु-तवफ़्फ़ा 150 हि.) और दीगर कई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام इर्शाद फ़रमाते हैं : "इस्तिस्ना का तअ़ल्लुक़ आख़िरी जुम्ले के साथ ख़ास है और वोह येह है कि तोहमत लगाने वालों पर फ़िस्क़ का हुक्म है। पस क़ाज़िफ़ फ़ासिक़ है मगर येह कि वोह तौबा कर ले और इस की वज्ह येह है कि गवाही क़बूल न होने का तअ़ल्लुक़ फ़िस्क़ से नहीं बल्कि उस पर लगाई जाने वाली ह़द से है। लिहाज़ा जब उसे ह़द्दे क़ज़्फ़ लगा दी गई तो इस के बा'द उस की गवाही कभी क़बूल न की जाएगी।" (हां ! इ़बादात में क़बूल कर लेंगे। बहारे शरीअ़त, ह़द्दे क़ज़्फ़ का बयान, जि. 2, स. 401)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) अक्सर सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن और ताबिई़ने उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام इर्शाद फ़रमाते हैं कि "इस्तिस्ना का तअ़ल्लुक़ सब के साथ है पस जब क़ाज़िफ़ सह़ीह़ तौबा कर ले तो उस का फ़िस्क़ ज़ाइल हो जाएगा और उस की गवाही क़बूल की जाएगी।" अलबत्ता ! اَبَدًا से मुराद येह है कि जब तक वोह क़ाज़िफ़ रहेगा या'नी अपनी तोहमत पर डटा रहेगा। और तौबा से चूंकि तोहमत का असर ख़त्म हो जाएगा लिहाज़ा इस पर मुरत्तब हुक्म या'नी **मरदूदुश्शहादह** होना भी ख़त्म हो जाएगा।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़य्यान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : "आयते मुबा-रका का ज़ाहिर या'नी तौबा से श-रफ़े क़बूलिय्यत पाना इस बात का तक़ाज़ा नहीं करता कि इस से तीनों अफ़राद (या'नी क़ाज़िफ़, जिस पर ह़द्दे क़ज़्फ़ लग चुकी हो और आ़म फ़ासिक़) मुराद हों बल्कि इस का ज़ाहिरी मफ़्हूम वोह है जिस की ताईद अहले अ़रब के कलाम से भी होती है कि जब चन्द चीज़ों के ज़िक्र के बा'द किसी चीज़ को उन के हुक्म से मुस्तस्ना क़रार दिया जाए तो इस से


www.dawateislami.net

सिर्फ़ आख़िरी चीज़ मुराद लेना सहीह़ नहीं बल्कि अ़-रबों का एक क़ाइदा है जिसे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) वग़ैरा ने "**बाबुल वक़्फ़**" में ज़िक्र फ़रमाया है या'नी इस्तिस्ना, वस्फ़ और इस त़रह़ के दीगर मु-तअ़ल्लिक़ात का तअ़ल्लुक़ न सिर्फ़ मा क़ब्ल मज़्कूर तमाम अश्या से होता है बल्कि इन से मुराद बा'द में ज़िक्र होने वाली अश्या भी होती हैं।" कुछ उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام येह भी फ़रमाते हैं कि "अगर येह दरमियाने कलाम में वाक़ेअ़ हों तो इन का तअ़ल्लुक़ सब से होता है क्यूं कि मा क़ब्ल की त़रफ़ निस्बत के ए'तिबार से येह मुअख़्ख़र होंगे और मा बा'द की त़रफ़ निस्बत के ए'तिबार से मुक़द्दम।" पस क़ियास तो येह है कि आयते मुबा-रका में तौबा करने वालों से मुराद मा क़ब्ल तीनों क़िस्म के अफ़राद हों लेकिन इस से क़ाज़िफ़ मुराद लेना मुश्किल है क्यूं कि जब ज़िना साबित न करने की वज्ह से उस के बारे में येह हुक्म पाया गया कि उसे कोड़े लगाओ तो अब तौबा के साथ ह़द साक़ित़ नहीं हो सकती। लिहाज़ा तौबा का तअ़ल्लुक़ बक़िय्या दोनों क़िस्म के अफ़राद से होगा या'नी ह़द्दे क़ज़फ़ की वज्ह से **मरदूदुश्शहादह** ठहराया जाने वाला और फ़ासिक़।"

इसी वज्ह से अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मु-तअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शो'बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के गुज़श्ता वाक़िए में इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने अपने आप को झूटा क़रार दिया उस की गवाही क़बूल की जाएगी।" चूंकि शिब्ल और नाफ़ेअ़ ने अपने आप को झूटा क़रार दे दिया था लिहाज़ा आप उन की गवाही क़बूल फ़रमाया करते थे।

इसी बिना पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र आ़मिर बिन शराह़ील शा'बी ह़िमैरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 103 हि.) फ़रमाते हैं : "तौबा का तअ़ल्लुक़ क़ाज़िफ़ से भी है पस जब वोह तौबा कर ले तो उस से ह़द साक़ित़ हो जाएगी।"

## तम्बीह :

जिस ने ह़ाकिम के सामने किसी पर तोहमत लगाई तो ह़ाकिम पर लाज़िम है कि वोह मक़्ज़ूफ़ (या'नी जिस पर तोहमत लगाई गई उस) को इस बारे में आगाह करे ताकि अगर वोह चाहे तो ह़द का मुत़ा-लबा कर सके। जैसा कि ह़ाकिम को इस बात का सुबूत मिल जाए कि फ़ुलां का फ़ुलां पर क़र्ज़ है लेकिन वोह जानता नहीं तो ह़ाकिम पर लाज़िम है कि उसे इस बात से आगाह करे। अलबत्ता ! जब किसी शख़्स पर ज़िना की तोहमत लगाई जाए तो इमाम और उस के नाइब के लिये ज़रूरी नहीं कि वोह ह़क़ीक़त जानने के लिये उस शख़्स को बुलाएं।

**अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त इर्शाद फ़रमाता है :



www.dawateislami.net

إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَٰتِ الْغَٰفِلَٰتِ ﴿2﴾ الْمُؤْمِنَٰتِ لُعِنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾ يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾ يَوْمَئِذٍ يُوَفِّيهِمُ اللَّهُ دِينَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ﴿٢٥﴾ (پ۱۸، النور:۲۳تا۲۵)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक वोह जो ऐब लगाते हैं अनजान पारसा ईमान वालियों को उन पर ला'नत है दुन्या और आख़िरत में और उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब है जिस दिन उन पर गवाही देंगी उन की ज़बानें और उन के हाथ और उन के पाउं जो कुछ करते थे उस दिन **अल्लाह** उन्हें उन की सच्ची सज़ा पूरी देगा और जान लेंगे कि **अल्लाह** ही सरीह़ ह़क़ है।

## आयाते मुबा-रका की मुख़्तसर वज़ाह़त

"الْغٰفِلٰتِ" से मुराद ऐसी औ़रतें हैं जिन से कोई फ़ोह़्श काम सरज़द नहीं होता। पस येह लफ़्ज़ उन औ़रतों की इ़फ़्फ़त व त़हारत की ज़ियादती बयान करने के लिये बत़ौरे किनाया ज़िक्र किया गया है। अगर्चे येह आयते मुबा-रका ख़ास त़ौर पर उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की शान में नाज़िल हुई लेकिन इन का हुक्म आ़म है।

﴿2﴾...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا इर्शाद फ़रमाती हैं : मुझ पर तोहमत लगाई गई ह़ालां कि मैं बे ख़बर थी और मुझे येह बात बा'द में मा'लूम हुई। एक दिन ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ फ़रमा थे कि आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर वह़्य नाज़िल हुई तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हें ख़ुश ख़बरी हो।" और येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई।[1]

एक क़ौल येह है कि "येह हुक्म आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के साथ ख़ास है।" जब कि एक क़ौल येह है कि "येह तमाम उम्महातुल मुअमिनीन رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِنَّ اَجْمَعِين के साथ ख़ास है।" क्यूं कि तोहमत लगाने वाले की तौबा का ज़िक्र पहली आयते मुक़द्दसा में हुवा है, न कि इस आयते मुबा-रका में। लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान "لُعِنُوْا فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ" की वज्ह से इस में कोई तौबा नहीं और येह हुक्म न सिर्फ़ मुनाफ़िक़ीन के लिये है बल्कि काफ़िरों के लिये भी है। क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

مَّلْعُونِينَ ۖ أَيْنَمَا ثُقِفُوا (پ۲۲، الاحزاب:۶۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** फिटकारे हुए जहां कहीं मिलें।

---

(1)......المسند للامام احمد حنبل، مسند السيدة عائشة رضی اللّٰہ تعالی عنہا، الحدیث: ۲۴۷۷۴، ج۹، ص۴۰۲۔



www.dawateislami.net

इसी त़रह़ ज़बान और दीगर आ'ज़ा की गवाही भी मुनाफ़िक़ीन और कुफ़्फ़ार के लिये है। क्यूं कि, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَآءُ اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٩﴾ حَتّٰۤى اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٠﴾ (پ٢٤،حم السجدة:١٩، ٢٠)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जिस दिन **अल्लाह** के दुश्मन आग की त़रफ़ हांके जाएंगे तो उन के अगलों को रोकेंगे यहां तक कि पिछले आ मिलें यहां तक कि जब वहां पहुंचेंगे उन के कान और उन की आंखें और उन के चमड़े सब उन पर उन के किये की गवाही देंगे।

जो कहते हैं कि मज़्कूरा आयते मुबा-रका का हुक्म आ़म है, वोह इस का जवाब येह देते हैं कि मुम्किन है कि येह तमाम सज़ा उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا, दीगर उम्महातुल मुअमिनीन رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ और दूसरी औ़रतों को तोहमत लगाने वाले के लिये हो मगर येह सज़ा अ़-दमे तौबा के साथ मशरूत़ है क्यूं कि पुख़्ता उसूलों से येह बात मा'लूम है कि गुनाह चाहे कुफ़्र हो या फ़िस्क़, तौबा से मुआ़फ़ हो जाता है।[1]

''يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ'' येह उन के मूंहों पर मोहर लगाने से पहले होगा जो कि **सूरए यासीन** में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान में मज़्कूर है कि,

اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰۤى اَفْوَاهِهِمْ (پ٢٣، يٰس:٦٥)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** आज हम इन के मूंहों पर मोह्र कर देंगे।

मरवी है कि ''इन के मूंहों पर मोह्र लगा दी जाएगी तो इन के हाथ और पाउं उस की गवाही देंगे जो कुछ उन्हों ने दुन्या में किया।'' और एक क़ौल येह है कि ''बा'ज़ की ज़बानें बा'ज़ के ख़िलाफ़ गवाही देंगी।''[2]

''دِيْنَهُمُ الْحَقَّ'' का मा'ना येह है कि उन की वाजिब जज़ा और एक क़ौल येह है कि उन का बराबर हि़साब। ''وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ'' से मुराद येह है कि वोह ऐसा वाजिबुल वुजूद है जो ज़वाल व इन्तिक़ाल क़बूल करता है न इब्तिदा व इन्तिहा। नीज़ उस के इ़लावा किसी और की इ़बादत जाइज़ नहीं। ''الْمُبِيْنُ'' से मुराद येह है कि जो उन की दुन्या में ह़ालत थी और अब

---

1 ...... मुफ़स्सिरे शहीर, सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی (मु-तवफ़्फ़ा 1367 हि.) फ़रमाते हैं : ''और ऐसे लोग जो ज़िना की तोहमत में सज़ायाब हों और उन पर ह़द जारी हो चुकी हो, मरदूदुश्शहादह हो जाते हैं, कभी उन की गवाही मक़्बूल नहीं होती।'' (ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, सू-रतुन्नूर, तह़्तल आयह : 4) और **बहारे शरीअ़त,** जिल्द दुवुम सफ़ह़ा 104 पर है : ''जिस शख़्स पर ह़द्दे क़ज़्फ़ क़ाइम की गई उस की गवाही किसी मुआ़-मले में मक़्बूल नहीं। हां ! इ़बादात में क़बूल कर लेंगे।''

2 ......تفسير البغوى، النور، تحت الآية ٢٤، ج٣، ص٢٨٤ـ



www.dawateislami.net

क़ियामत के दिन जो इस पर सवाब व अ़ज़ाब मुरत्तब होगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस को वाज़ेह़ करने वाला और इस ह़ालत को ज़ाहिर फ़रमाने वाला है। आयिन्दा बयान होने वाले कबीरा गुनाह के ज़िम्न में जो अह़ादीसे मुबा-रका आएंगी वोह इस कबीरा गुनाह को भी शामिल हैं।

## अह़ादीसे मुबा-रका में तोहमत लगाने की मज़म्मत :

﴾3﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने अपने गु़लाम पर ज़िना की तोहमत लगाई क़ियामत के दिन उसे ह़द लगाई जाएगी मगर येह कि वोह ऐसा ही हो जैसा उस ने कहा।"(1)

﴾4﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिस मर्द या औ़रत ने अपनी लौंडी को "ऐ ज़ानिया !" कहा जब कि उस के ज़िना से आगाह न हो तो क़ियामत के दिन वोह लौंडी उन्हें कोड़े लगाएगी, क्यूं कि दुन्या में इन के लिये कोई ह़द नहीं।"(2)

﴾5﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिस ने अपने गु़लाम पर ज़िना की तोहमत लगाई क़ियामत के दिन उसे ह़द लगाई जाएगी मगर येह कि वोह ऐसा ही हो जैसा उस ने कहा।"(3)

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام इर्शाद फ़रमाते हैं : अपने गु़लामों को "ऐ मुख़न्नस ! या ऐ ज़ानी !" कहना और छोटों को "ऐ ज़ानी के बेटे ! या ऐ ज़िना की औलाद !" कहना लोगों में आ़म हो चुका है और येह तमाम कबीरा गुनाह हैं और दुन्या व आख़िरत में सज़ा का मूजिब हैं।

﴾6﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अह़मद बिन मूसा बिन मरदूया رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه (मु-तवफ़्फ़ा 410 हि.) ने अपनी तफ़्सीर में ज़ईफ़ सनद के साथ और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने ह़ब्बान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان (मु-तवफ़्फ़ा 354 हि.) ने अपनी सह़ीह़ में येह रिवायत बयान फ़रमाई कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन ह़ज़्म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को एक मक्तूब दे कर अहले यमन की त़रफ़ भेजा जिस में फ़राइज़ और दियतों के अह़काम थे। उस में येह भी लिखा था : "बेशक बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बड़े गुनाह येह होंगे : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना (2) मोमिन को

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الأیمان، باب التغلیظ علی من قذف مملوکه بالزنی، الحدیث: ۴۳۱۱، ج۹۲۹۔

2 ......المستدرک، کتاب الحدود، باب ذکر حد القذف، الحدیث: ۸۱۷۱، ج۵، ص۵۲۹۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الأیمان، باب التغلیظ علی من قذف مملوکه بالزنی، الحدیث: ۴۳۱۱، ص۹۲۹۔



www.dawateislami.net

नाहक़ क़त्ल करना (3) जंग के दिन मैदाने जिहाद से भाग जाना (4) वालिदैन की ना फ़रमानी करना (5) पाक दामन औ़रत पर तोहमत लगाना (6) जादू सीखना (7) सूद खाना और (8) यतीम का माल खाना।''(1)

हज़रते सय्यिदुना इमाम त़-बरानी (मु-तवफ़्फ़ा 360 हि.), हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम ब-ग़वी (मु-तवफ़्फ़ा 317 हि.) और हज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ (मु-तवफ़्फ़ा 211 हि.) رَحمَۃُاللہِ تَعالٰی عَلَیہِمْ اَجمَعِین ने ऐसी रिवायात ज़िक्र की हैं जिन में तसरीह़ है कि किसी पाक दामन औ़रत पर तोहमत लगाना कबीरा गुनाह है। चुनान्चे, त़-बरानी शरीफ़ में है : ''सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के एक गुरौह ने दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मौजू-दगी में पाक दामन औ़रत पर तोहमत लगाने को कबीरा गुनाहों में शुमार किया और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की बात को साबित रखा।''

﴿7﴾...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''कबीरा गुनाह येह हैं : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना (2) किसी जान को नाहक़ क़त्ल करना (3) सूद खाना (4) यतीम का माल खाना (5) जंग के दिन भाग जाना (6) पाक दामन औ़रतों पर तोहमत लगाना और (7) हिजरत के बा'द दीहाती बनना।''(2)

﴿8﴾...... हज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर लैसी رَحمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने बाप से रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! कबीरा गुनाह कितने हैं ?'' तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''9 हैं और इन में सब से बड़े गुनाह येह हैं : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना (2) किसी मोमिन को नाहक़ क़त्ल करना (3) जंग से भाग जाना (4) पाक दामन औ़रत पर तोहमत लगाना (5) जादू करना (6) यतीम का माल खाना और (7) सूद खाना।''(3)

﴿9﴾...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : 7 हलाक करने वाली चीज़ों से बचो। अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह चीज़ें कौन सी हैं ? तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना (2) जादू

---

1 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب التاریخ، باب کتب النبی صلی اللہ علیہ وسلم ،الحدیث: ۶۵۲۵، ج۸، ص۱۸۱۔

2 ......مجمع الزوائد، کتاب الایمان، باب الکبائر، الحدیث: ۳۸۲، ج۱، ص۲۹۱۔

3 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۰۱، ج۱۷، ص۴۸۔



www.dawateislami.net

करना (3) किसी को नाहक़ क़त्ल करना जिस के क़त्ल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हराम ठहराया हो (4) सूद खाना (5) यतीम का माल खाना (6) जंग के दिन पीठ फैर लेना और (7) पाक दामन सीधी सादी मोमिन औरतों पर तोहमत लगाना।(1)

﴾10﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बेशक क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बड़े गुनाह येह होंगे : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना (2) किसी मोमिन को नाहक़ क़त्ल करना (3) जंग के दिन मैदाने जिहाद से भाग जाना (4) वालिदैन की ना फ़रमानी करना (5) पाक दामन औरत पर तोहमत लगाना और (6) जादू सीखना।"(2)

## तम्बीह :

क़ज़फ़ को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है, इस पर उ-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام का इत्तिफ़ाक़ है जैसा कि आप गुज़श्ता आयाते मुक़द्दसा की वज़ाहत में जान चुके हैं कि पहला गुनाह तो सरा-हतन कबीरा है क्यूं कि इस के बारे में नस्स है कि येह फ़िस्क़ है। जब कि दूसरा गुनाह ज़िम्नन कबीरा क़रार दिया गया है क्यूं कि इस पर नस्स वारिद है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसा करने वाले पर दुन्या व आख़िरत में ला'नत फ़रमाएगा और येह सब से बुरी और शदीद वईद है।

तोहमत सुन कर इस पर ख़ामोश रहने को भी कबीरा शुमार किया गया है जैसा कि बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام ने इस का ज़िक्र भी किया है और इस बात पर इसे क़ियास किया है कि जिस तरह ग़ीबत सुन कर इस पर ख़ामोश रहना कबीरा गुनाह है इसी तरह तोहमत सुन कर उस की तरदीद करने के बजाए ख़ामोश रहना ब द-र-जए औला कबीरा गुनाह है। इस के बारे में मुफ़स्सल बह्स गुज़र चुकी है।

मैं ने उन्वान में तोहमत को ज़िना और लिवातत से मुक़य्यद किया है और हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़रआ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इसे अपनी शर्ह **जम्उल जवामेअ** में ज़िक्र किया है। लेकिन ज़ाहिर येही है कि कबीरा होने के लिये येह शर्त नहीं बल्कि येह क़ैद सिर्फ़ इस के मज़ीद क़बीह और फ़ोहूश होने पर दलालत करती है। इसी वज्ह से हमारे अस्हाब (या'नी शाफ़ेई उ-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام) में से हज़रते सय्यिदुना अल्लामा शुरैह रूयानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی इर्शाद फ़रमाते हैं : "झूटी तोहमत लगाना कबीरा गुनाह है।" और उन्हों ने इसे ज़िना या लिवातत

---

1 ......صحیح مسلم ،کتاب الایمان ،باب الکبائر واکبرھا،الحدیث :۲۶۲،ص۶۹۳۔

2 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان ،کتاب التاریخ ،باب کتب النبی،الحدیث:۶۵۲۵،ج۸،ص۱۸۱۔



www.dawateislami.net

के साथ ख़ास नहीं किया बल्कि वोह और दूसरे कई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام इर्शाद फ़रमाते हैं : "पाक दामन औ़रतों पर तोहमत लगाना कबीरा है।" जब कि बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "पाक दामन मर्द पर तोहमत लगाना कबीरा है।" और तमाम अक़्वाल सह़ीह़ हैं जैसा कि गुज़र चुका है कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इस बात पर इज्माअ़ है कि "इस में मर्द या औ़रत होने में कोई फ़र्क़ नहीं।"

"**क़वाइदे इब्ने अ़ब्दुस्सलाम**" में है कि "ज़ाहिरे मज़्हब येह है कि जिस ने किसी पाक दामन पर तन्हाई में तोहमत लगाई कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और मुह़ाफ़िज़ फ़रिश्तों के इ़लावा किसी ने न सुना तो फ़साद का सबब न होने की वज्ह से येह ऐसा कबीरा नहीं कि ह़द का मूजिब हो और उसे आख़िरत में मक़्ज़ूफ़ के सामने या लोगों के झुरमट में किसी तोहमत लगाने वाले की त़रह़ सज़ा नहीं दी जाएगी। बल्कि उस का अन्जाम उन झूटों के साथ होगा जिन्हों ने किसी पर बोहतान न बांधा होगा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शिहाबुद्दीन अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्दिस्सलाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْاَنَام के मज़्कूरा फ़रमान का एह़तिमाल उस वक़्त है जब कि वोह अपनी तोहमत में सच्चा हो लेकिन अगर वोह झूटा हो तो येह बात मह़ल्ले नज़र है क्यूं कि उस ने फ़िस्क़ो फ़ुजूर कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की है।" मज़ीद फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्दिस्सलाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْاَنَام के कलाम से येह बात भी समझ आती है कि अगर वोह ख़ल्वत में लगाई हुई अपनी तोहमत में सच्चा हो तो उस की उस सच्चाई की वज्ह से उसे कोई सज़ा नहीं होगी, उन की येह बात बई़द अज़ अ़क़्ल है। इस के बा'द ख़ुद ही ए'तिराज़ किया कि "अगर मक़्ज़ूफ़ को ख़ुद पर लोगों के सामने लगाई गई तोहमत मा'लूम न हो तो फिर भी अज़िय्यत के मफ़ासिद न पाए जाने के बा वुजूद क़ाज़िफ़ पर ह़द नाफ़िज़ होती है ?" फिर ख़ुद ही जवाब दिया : "अगर लोगों के सामने लगाई गई तोहमत के बारे में मक़्ज़ूफ़ जान ले तो वोह उस के लिये ख़ल्वत में लगाई गई तोहमत से ज़ियादा अज़िय्यत नाक होगी।" फिर इर्शाद फ़रमाया : "वोह तोहमत जो किसी पर ख़ल्वत में लगाई गई हो वोह दिल में ही रहे या फिर ज़बान पर आ जाए, इस में कोई फ़र्क़ नहीं।" जिस को क़ाबिले मुआ़फ़ी शुमार किया गया है वोह दिल में पैदा होने वाला गुमान है, न कि ज़बान से कही हुई बात। मैं ने आयते मुबा-रका की वज़ाह़त करते हुए इस बात का तज़्किरा किया था कि ना बालिग़ बच्चे या ग़ुलाम पर तोहमत लगाना कबीरा गुनाह है। फिर मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़लीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى (मु-तवफ़्फ़ा 403 हि.) का कलाम देखा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं



www.dawateislami.net

कि ''पाक दामन औ़रत पर तोहमत लगाना कबीरा गुनाह है, अगर मां, बेटी या बाप की किसी दूसरी बीवी पर तोहमत लगाए तो ज़ियादा फ़ोह़्श है। अलबत्ता ! किसी ना बालिग़ बच्ची, लौंडी और बे ह़या आज़ाद औ़रत पर तोहमत लगाना सग़ीरा गुनाह है।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الغَنِى फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते सय्यिदुना ह़लीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الوَلِى (मु-तवफ़्फ़ा 403 हि.) के इस क़ौल पर ए'तिराज़ येह है कि ना बालिग़ बच्ची पर तोहमत लगाना उस वक़्त सग़ीरा है जब कि तोहमत लगाने वाले को क़त़्ई त़ौर पर झुटलाना मुम्किन हो या'नी वोह इस क़दर कमसिन हो कि उस से जिमाअ़ न हो सकता हो। जब कि लौंडी पर तोहमत लगाने को मुत़्लक़न सग़ीरा क़रार देने में उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने तवक़्क़ुफ़ फ़रमाया है। ख़ुसूसन वोह लौंडियां जो उम्मे वलद हों क्यूं कि इस में उन की, उन के आक़ाओं, औलाद और उन के बक़िय्या ख़ानदान वालों की अज़िय्यत पाई जाती है। ख़ास त़ौर पर उस सूरत में कि जब लौंडी का मालिक उस (लौंडी के बच्चे) के उसूल में से हो।''

दर ह़क़ीक़त ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الغَنِى को शुबे में डाला जब उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़लीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الوَلِى (मु-तवफ़्फ़ा 403 हि.) के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि ''उन का सिर्फ़ पाक दामन औ़रतों पर तोहमत लगाने को कबीरा कहना तस्लीम नहीं किया जाएगा क्यूं कि मर्दों पर तोहमत लगाना भी कबीरा गुनाह है। अगर्चे ह़दीसे पाक में सिर्फ़ पाक दामन औ़रतों का ज़िक्र है लेकिन आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दीगर औ़रतों पर भी तोहमत लगाने से मन्अ़ फ़रमाया क्यूं कि इस तफ़रीक़ का क़ाइल कोई भी नहीं। येह इसी त़रह़ है जैसे लौंडियों के बयान में ग़ुलामों का भी ज़िक्र किया जाता है।'' चुनान्चे, ह़दीसे पाक गुज़र चुकी है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने अपने ग़ुलाम पर ज़िना की तोहमत लगाई क़ियामत के दिन उसे ह़द लगाई जाएगी मगर येह कि वोह ऐसा ही हो जैसा उस ने कहा।''(1)

बहुत से जाहिल ऐसी बुरी गुफ़्त-गू में मुब्तला हैं जो दुन्या व आख़िरत में सज़ा का मूजिब बन सकती है। चुनान्चे,

## ज़बान की ह़िफ़ाज़त का हुक्म :

﴾11﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''बेशक बन्दा एक बात कहता है जिस में ग़ौरो फ़िक्र नहीं करता तो इस की वज्ह

(1)......صحيح مسلم ،كتاب الأيمان ،باب التغليظ على من قذف مملوكه بالزنى،الحديث:١٦٣١،ص٩٢٩۔



www.dawateislami.net

से जहन्नम में मशरिक़ो मग़रिब के दरमियान फ़ासिले से ज़ियादा दूर जा गिरता है।"(1)

﴾12﴿...... हज़रते सय्यिदुना मुआज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या गुफ़्त-गू की वज्ह से भी हमारा मुवा-ख़ज़ा होगा ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तेरी मां तुझ पर रोए ! (येह बात बत़ौरे शफ़्क़त फ़रमाई) लोगों को उन की बे फ़ाएदा फ़ुज़ूल गुफ़्त-गू ही चेहरों या नाक के बल जहन्नम में गिराएगी।"(2)

﴾13﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें सब से आसान और बदन पर हलकी इ़बादत के बारे में न बताऊं ? (सुन लो !) वोह ख़ामोशी और हुस्ने अख़्लाक़ है।"(3)

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे गिरामी है :

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ﴿١٨﴾
(پ٢٦، ق:١٨)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** कोई बात वोह ज़बान से नहीं निकालता कि उस के पास एक मुहाफ़िज़ तय्यार न बैठा हो।

﴾14﴿...... हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे नबुव्वत में अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! नजात क्या है ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुझे चाहिये कि अपनी ज़बान को रोके रख, तुझे तेरा घर काफ़ी हो और अपनी ख़ता पर आंसू बहा।"(4)

﴾15﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र के इ़लावा ज़ियादा गुफ़्त-गू न किया करो क्यूं कि ज़िक्रे इलाही के इ़लावा ज़ियादा कलाम करना दिल की सख़्ती का बाइ़स है और बिला शुबा सख़्त दिल इन्सान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से सब से ज़ियादा दूर है।"(5)

---

(1) ......صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب حفظ اللسان، الحدیث: ٦٤٧٧، ص٥٤٤۔
صحیح مسلم، کتاب الزھد، باب حفظ اللسان، الحدیث: ٧٤٨٢، ص١١٩٥۔
(2) ......جامع الترمذی، ابواب الایمان، باب ماجاء فی حرمۃ الصلاۃ، الحدیث: ٢٦١٦، ص١٩١٥۔
(3) ......موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الصمت، باب حفظ اللسان وفضل الصمت، الحدیث: ٢٧، ج٧، ص٤٧۔
(4) ......جامع الترمذی، ابواب الزھد، باب ماجاء فی حفظ اللسان، الحدیث: ٢٤٠٦، ص١٨٩٣، "امسک" بدلہ "املک"۔
(5) ......جامع الترمذی، ابواب الزھد، باب منہ النھی عن کثرۃ الکلام الا بذکر اللہ، الحدیث: ٢٤١١، ص١٨٩٤۔



www.dawateislami.net

﴾16﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : क़ियामत के दिन किसी मोमिन के मीज़ान में अच्छे अख़्लाक़ से ज़ियादा वज़्नी कोई चीज़ न होगी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़ोहूश और घटिया बातें करने वाले को पसन्द नहीं फ़रमाता।(1)

۞۞۞۞۞۞۞

## कबीरा नम्बर 289 : मुसल्मान को गाली देना और उस की बे इ़ज़्ज़ती करना

## कबीरा नम्बर 290 : वालिदैन को बुरा भला कहना अगर्चे गालियां न दे

## कबीरा नम्बर 291 : किसी को मुसल्मान होने की वज्ह से ला'न ता़'न करना

मुसल्मानों को ईज़ा पहुंचाने वालों की मज़म्मत करते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّ اِثْمًا مُّبِيْنًا ۟

(پ۲۲،الاحزاب:۵۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो ईमान वाले मर्दों और औ़रतों को बे किये सताते हैं उन्हों ने बोहतान और खुला गुनाह अपने सर लिया।

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "मुसल्मान को गाली देना फ़िस्क़ और इसे क़त्ल करना कुफ़्र है।"(2)

﴾2﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "आपस में गालम गलोच करने वाले दो आदमी जो कुछ कहें तो वोह (या'नी इस का वबाल) इब्तिदा करने वाले पर है जब तक कि मज़्लूम ह़द से न बढ़े।"(3)

﴾3﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मुसल्मान को गाली देना खु़द को हलाकत में डालने की त़रह़ है।"(4)

---

(1)......جامع الترمذی ،ابواب البر والصلة ،باب ماجاء فی حسن الخلق،الحديث :۲۰۰۲،ص۱۸۵۲۔

(2)......صحيح البخاری، كتاب الايمان،باب خَوْفِ الْمُؤْمِنِ مِنْ اَنْ يَّحْبِطَ عَمَلُهٗ وَهُوَ لَا يَشْعُرُ،الحديث :۴۸،ص۶۔

(3)......صحيح مسلم ،كتاب البر والصلة والادب ،باب النهی عن السباب ،الحديث :۶۵۹۱،ص۱۱۳۰۔

(4)......الترغيب والترهيب ،كتاب الأدب ،باب الترهيب من السباب......الخ ،الحديث :۴۳۶۳،ج۳،ص۳۷۷۔



www.dawateislami.net

﴾4﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं : ''मैं ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! एक शख़्स मुझे गालियां देता है ह़ालां कि वोह मुझ से कम त़ाक़त वाला है तो क्या उस से बदला लेने में मुझ से मुवा-ख़ज़ा होगा ?'' तो हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''आपस में गाली गलोच करने वाले दोनों शैत़ान हैं, दोनों एक दूसरे पर इल्ज़ाम तराशी करते और एक दूसरे को झुटलाते हैं।''(1)

﴾5﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने एक ऐसी हस्ती देखी जिन की राय पर लोग अ़मल करते, वोह जो कहते वोही करते। मैं ने दरयाफ़्त किया : ''येह कौन हैं ?'' सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने बताया : ''येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं।'' तो मैं ने अ़र्ज़ की : ''عَلَيْكَ السَّلَامُ, **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم !'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''عَلَيْكَ السَّلَامُ न कहो क्यूं कि येह मुर्दों या मय्यित का सलाम है बल्कि اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ कहो।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, मैं ने पूछा : ''आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं ?'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मैं उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं कि जब तुम किसी मुसीबत से दो चार हो कर उस से दुआ़ करो तो वोह तुम से मुसीबत टाल दे, जब क़ह़त़-साली का शिकार हो कर उसे पुकारो तो वोह तुम्हारे लिये सब्ज़ा उगा दे, जब बे आबो गियाह जंगल (या'नी बन्जर और चटियल ज़मीन) में अपनी सुवारी के गुम हो जाने पर उस की बारगाह में इल्तिजा करो तो वोह उसे तुम्हारे पास वापस लौटा दे।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, फिर मैं ने अ़र्ज़ की : ''मुझ से अ़ह्द लें।'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''(1)...... किसी को गाली मत दो।''

(रावी फ़रमाते हैं कि) इस के बा'द मैं ने न कभी किसी आज़ाद इन्सान को, न ग़ुलाम को, न ऊंट और बकरी को गाली दी, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : ''(2)...... किसी नेकी को ह़क़ीर न समझो। (3)...... अपने भाई से इस अन्दाज़ में गुफ़्त-गू करो कि तुम्हारा चेहरा खिला हुवा हो, बेशक येह भी नेकी है (4) अपना तहबन्द निस्फ़ पिंडली तक ऊंचा रखो और अगर इतना न करो तो (कम अज़ कम) टख़्नों तक ऊंचा कर लो और तहबन्द लटकाने से बचो क्यूं कि येह तकब्बुर (या'नी ख़ुद को बड़ा और दूसरों को ह़क़ीर समझने) की अ़लामत है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तकब्बुर को पसन्द नहीं फ़रमाता और (5)...... जो तुम्हें गाली दे या किसी ऐसे ऐ़ब पर आ़र (या'नी

---

1 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الحظر والاباحۃ،باب مایکرہ من الکلام۔۔الخ،الحدیث:۵۶۹۷،ج۷،ص۴۹۲۔



www.dawateislami.net

शरमिन्दगी) दिलाए जिस के बारे में वोह जानता हो कि तुम में पाया जाता है तो तुम उसे उस ख़ामी पर शर्मसार न करो जिस के मु-तअ़ल्लिक़ तुम जानते हो कि उस में है, और उसे छोड़ दो, बेशक इस का वबाल उसी पर है।''(1)

﴾6﴿...... एक रिवायत में है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह इर्शाद फ़रमाया : ''जो तुम्हें उस ऐब पर आ़र दिलाए जिस के तुम्हारे अन्दर पाए जाने को वोह जानता हो तो तुम उसे उस ख़ामी पर शरमिन्दा न करो जो तुम उस में जानते हो बल्कि उसे छोड़ दो क्यूं कि इस का वबाल उस पर और अज्र तुम्हारे लिये है, पस हरगिज़ किसी को गाली न दो।'' आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : ''इस के बा'द मैं ने किसी जानवर या इन्सान को गाली न दी।''(2)

﴾7﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''सब से बड़ा गुनाह येह है कि आदमी अपने वालिदैन पर ला'नत करे।'' अ़र्ज़ की गई : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आदमी अपने वालिदैन पर कैसे ला'नत कर सकता है ?'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह किसी के बाप को गाली दे तो वोह इस के बाप को गाली दे और येह किसी की मां को गाली दे तो वोह इस की मां को गाली दे।''(3)

﴾8﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बिन ज़ह़ाक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने इस्लाम के इलावा किसी मज़्हब की जान बूझ कर झूटी क़सम उठाई तो वोह ऐसा ही है जैसा उस ने कहा, और जिस ने किसी चीज़ से ख़ुदकुशी की क़ियामत के दिन उसे उसी चीज़ से अ़ज़ाब दिया जाएगा, इन्सान पर उस चीज़ की नज़्र नहीं जिस का वोह मालिक नहीं और मोमिन पर ला'नत करना उसे क़त्ल करने की मिस्ल है।''(4)

﴾9﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना स-लमा बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इर्शाद फ़रमाते हैं : ''जब हम किसी शख़्स को अपने भाई पर ला'नत भेजते हुए देखते तो ख़याल करते कि येह कबीरा गुनाहों के दरवाज़े पर आ गया है।''(5)

---

1 ......سنن ابی داود ، کتاب اللباس ، باب ماجاء فی اسبال الازار ، الحدیث: ۴۰۸۴، ص ۱۵۲۱ ـ

2 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان ، کتاب البر والاحسان ، باب الجار ، الحدیث: ۵۱۱، ج ۱، ص ۳۶۴ ـ

3 ......صحیح البخاری، کتاب الأدب ، باب لایسب الرجل والدیه، الحدیث: ۵۹۷۳، ص ۵۰۶ ـ

4 ......صحیح مسلم ، کتاب الایمان ، باب بیان غلظ تحریم...... الخ، الحدیث: ۳۰۲، ۳۰۳، ۳۰۴، ص ۶۹۶ ـ

5 ......المعجم الاوسط، الحدیث: ۶۶۷۳، ج ۵، ص ۸۸ ـ



www.dawateislami.net

﴾10﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बेशक बन्दा जब किसी चीज़ पर ला'न ता'न करता है तो वोह ला'नत आस्मान की त़रफ़ बुलन्द हो जाती है लेकिन आस्मान के दरवाज़े उस पर बन्द कर दिये जाते हैं। फिर ज़मीन की त़रफ़ उतरती है तो उस के दरवाज़े भी बन्द कर दिये जाते हैं। इस के बा'द दाएं बाएं जाती है, अगर कोई जगह न पाए तो उस शख़्स की त़रफ़ लौटती है जिस पर भेजी गई हो, अगर वोह उस का अह्ल हो (तो ठीक) वरना भेजने वाले की त़रफ़ लौट जाती है।"(1)

﴾11﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : "बेशक जिस की त़रफ़ ला'नत भेजी जाए अगर वोह इस पर वाक़ेअ़ होने का कोई रास्ता या जगह पाए तो उस पर पड़ती है वरना कहती है : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे फ़ुलां की त़रफ़ भेजा गया लेकिन मैं ने वहां उतरने का कोई रास्ता न पाया। तो उसे कहा जाता है : जहां से आई है वहीं लौट जा।"(2)

﴾12﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "किसी पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस के ग़ज़ब और जहन्नम की ला'नत न भेजो।"(3)

﴾13﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "ला'न त़ा'न करने वाले बरोज़े क़ियामत शफ़ीअ़ और गवाह न बनेंगे।"(4)

﴾14﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मोमिन ला'नत भेजने वाला नहीं होता।"(5)

﴾15﴿...... एक रिवायत में है कि "मोमिन ला'न त़ा'न करने वाला और फ़ोह़्श व घटिया कलाम करने वाला नहीं होता।"(6)

﴾16﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الأدب، باب فی اللعن، الحدیث: ۴۹۰۵، ص۱۵۸۳۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللّٰہ بن مسعود، الحدیث: ۳۸۷۶، ۴۰۳۶، ج۲، ص۷۷، ۱۱۱۔

3 ......جامع الترمذی، ابواب البر والصلة، باب ماجاء فی اللعنة، الحدیث: ۱۹۷۶، ص۱۸۵۰۔

4 ......صحیح مسلم، کتاب البر والصلة والأدب، باب النهی عن لعن الدواب وغیرها، الحدیث: ۶۶۱۰، ص۱۱۳۱۔

5 ......جامع الترمذی، ابواب البر والصلة، باب ماجاء فی اللعن والطعن، الحدیث: ۲۰۱۹، ص۱۸۵۴۔

6 ......جامع الترمذی، ابواب البر والصلة، باب ماجاء فی اللعنة، الحدیث: ۱۹۷۷، ص۱۸۵۰۔



www.dawateislami.net

कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़रीब से गुज़रे जब कि वोह अपने किसी गुलाम को बुरा भला कह रहे थे। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो कर इर्शाद फ़रमाया : ''ला'नत करने वाला भी हो और सिद्दीक़ भी, रब्बे का'बा की क़सम ! ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता।'' पस अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसी दिन अपने गुलाम को आज़ाद कर दिया। इस के बा'द हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : ''दोबारा ऐसा नहीं करूंगा।''(1)

﴾17﴿...... मुस्लिम शरीफ़ में है कि ''सिद्दीक़ को ला'न त़ा'न नहीं करनी चाहिये।''(2)

﴾18﴿...... ह़ाकिम की रिवायत में यूं है : ''दो बातें जम्अ़ नहीं हो सकतीं कि तुम ला'नत करने वाले भी हों और सिद्दीक़ भी।''(3)

﴾19﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी सफ़र में थे। एक अन्सारी औ़रत भी अपनी ऊंटनी पर सुवार थी कि (अचानक) ऊंटनी मुज़्त़रिब हो गई तो उस ने उसे बुरा भला कहा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह सुन कर इर्शाद फ़रमाया : ''इस पर से सामान उतार लो और इसे छोड़ दो क्यूं कि येह मल्ऊ़ना (या'नी ला'नत वाली) है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ''गोया मैं उस ऊंटनी को लोगों के दरमियान चलता हुवा देख रहा हूं लेकिन कोई उस पर सामान नहीं रखता।''(4)

﴾20﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हम सफ़र था। उस ने अपने ऊंट को ला'न त़ा'न की तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हमारे पीछे न चल।'' या फ़रमाया : ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! हमारे साथ मल्ऊ़न ऊंट पर न चल।''(5)

---

(1)......شعب الایمان للبیهقی،باب فی حفظ اللسان،فصل فی حفظ اللسان عن الفخر بالآباء، الحدیث : ۵۱۵۴،ج۴،ص۲۹۴۔

(2)......صحیح مسلم ،کتاب البر والصلة والأدب ،باب النهی عن لعن الدواب وغیرها،الحدیث : ۲۶۰۸،ص۱۱۳۱۔

(3)......المستدرک للحاکم،کتاب الایمان،باب لایجتمع ان تکونو لعانین صدیقین، الحدیث : ۱۵۴،ج۱،ص۲۱۵۔

(4)......صحیح مسلم ،کتاب البر والصلة والأدب ،باب النهی عن لعن الدواب وغیرها ،الحدیث : ۲۶۰۴،ص۱۱۳۱۔

(5)......مسند ابی یعلی الموصلی ،مسند انس بن مالک ،الحدیث : ۳۶۱۰،ج۳،ص۲۷۷، دون قوله"لا تتبعنا"۔



www.dawateislami.net

﴾21﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मौजू-दगी में दौराने सफ़र एक शख़्स ने अपनी ऊंटनी को ला'नत की। तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "इस का मालिक कहां है ?" उस शख़्स ने अ़र्ज़ की : "मैं हूं।" तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इसे छोड़ दे, क्यूं कि तेरी ला'नत वाक़ेअ़ हो चुकी है।"(1)

## मुर्ग़ को गाली देना मन्अ़ है :

﴾22﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़िक्मत बयान है : "मुर्ग़ को गाली न दो क्यूं कि येह नमाज़ के लिये बुलाता है।"(2)

﴾23﴿...... एक रिवायत में है : "मुर्ग़ को गाली न दो क्यूं कि येह नमाज़ के लिये बेदार करता है।"(3)

﴾24﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने एक मुर्ग़ ने अज़ान दी। एक शख़्स ने उसे गाली दी तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुर्ग़ को गाली देने से मन्अ़ फ़रमाया।(4)

﴾25﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुर्ग़ को न तो ला'न त़ा'न करो और न ही गाली दो क्यूं कि येह नमाज़ के लिये बुलाता है।"(5)

﴾26﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब एक मुर्ग़ ने अज़ान दी तो एक शख़्स ने कहा : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस पर ला'नत भेज।" तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐसा हरगिज़ न कहो, येह तो नमाज़ के लिये बुलाता है।"(6)

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی ھریرۃ،الحدیث: ۹۵۲۷،ج۳،ص۴۱۷۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث زید بن خالد الجھنی، الحدیث: ۲۱۷۳۷،ج۸،ص۱۵۹۔

3 ......سنن ابی داود،کتاب الأدب،باب فی الدیک والبھائم،الحدیث:۵۱۰۱،ص۱۵۹۶۔

4 ......البحرالزخارالمعروف بمسند البزار،مسند عبداللّٰہ بن مسعود،الحدیث: ۱۷۶۳،ج۵،ص۱۶۸۔

5 ......المعجم الکبیر،الحدیث: ۹۷۹۶،ج۱۰،ص۱۶۔

6 ......الترغیب والترھیب،کتاب الادب،باب الترھیب من السباب......الخ،الحدیث: ۴۲۸۳،ج۳،ص۳۸۱۔



www.dawateislami.net

## पिस्सू ने नमाज़ के लिये जगाया :

﴿27﴾...... एक शख़्स को पिस्सू (ख़ून चूसने वाला ज़हरीला कीड़ा) ने काटा। उस ने उस पर ला'नत की तो हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इसे ला'नत न करो क्यूं कि इस ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में से एक नबी عَلَيْهِ السَّلَام को नमाज़ के लिये बेदार किया था।"(1)

﴿28﴾...... एक रिवायत में है कि "इसे गाली न दो क्यूं कि इस ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में से एक नबी عَلَيْهِ السَّلَام को सुब्ह़ की नमाज़ के लिये बेदार किया था।"(2)

## सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم और पिस्सू :

﴿29﴾...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : हम ने एक मक़ाम पर पड़ाव किया तो हमें पिस्सूओं ने बहुत तक्लीफ़ दी। हम उन्हें बुरा भला कहने लगे तो हुज़ूर नबिय्ये अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इन्हें बुरा भला न कहो, येह जानवर कितने अच्छे हैं कि तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र के लिये बेदार करते हैं।"(3)

## हवा को ला'नत करने की मुमा-न-अ़त :

﴿30﴾...... सह़ीह़ रिवायत में है : एक शख़्स ने हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास हवा को बुरा भला कहा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : हवा को बुरा भला न कहो क्यूं कि येह तो हुक्म की पाबन्द है, जिस ने किसी ऐसी चीज़ को ला'नत की जिस की वोह अह्ल न थी तो वोह ला'नत उसी पर लौट आएगी।(4)

## तम्बीह :

इन तीनों गुनाहों को मज़्कूरा सह़ीह़ और सरीह़ अह़ादीसे मुबा-रका की बिना पर कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है क्यूं कि इन अह़ादीसे मुबा-रका में दर्जे ज़ैल अह़काम मज़्कूर हैं :
(1)...... मुसल्मान को गाली देना फ़िस्क़ है जो हलाकत की त़रफ़ ले जाता है और ऐसा करने

---

1 ......مسند ابی یعلی الموصلی،مسند انس بن مالک،الحدیث : ۲۹۵۰،ج۳،ص۹۵۔

2 ......شعب الایمان للبیهقی،باب فی حفظ اللسان،الحدیث : ۵۱۸۰،۵۱۷۹،ج۴،ص۳۰۰،۳۰۱۔

3 ......المعجم الاوسط،الحدیث : ۹۳۱۸،ج۶،ص۴۳۶۔

4 ......جامع الترمذی،ابواب البر والصلة،باب ماجاء فی اللعنة،الحدیث:۱۹۷۸،ص۱۸۵۰۔



www.dawateislami.net

वाला शैतान है (2)...... वालिदैन पर ला'नत भेजना सब से बड़ा गुनाह है। इसी लिये मैं ने इस का अ़ला-ह़दा ज़िक्र किया अगर्चे येह मुसल्मान को गाली देने या ला'नत करने में दाख़िल है (3)...... मोमिन पर ला'नत भेजना उसे क़त्ल करने की मिस्ल है (4)...... जिस ने अपने भाई पर ला'नत भेजी वोह कबीरा गुनाहों के दरवाज़े पर आ गया (5)...... नाह़क़ ला'नत, भेजने वाले की त़रफ़ लौट आती है और (6)...... दूसरों को ला'न त़ा'न करने वाला बरोज़े क़ियामत शफ़ीअ़ होगा, न गवाह और न ही सिद्दीक़। बयान कर्दा तमाम अह़काम इन्तिहाई शदीद वईदें हैं। इस से ज़ाहिर हुवा कि येह तीनों कबीरा गुनाह हैं। पहले गुनाह के कबीरा होने के बारे में हमारे (शाफ़ेई) अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के एक गुरौह ने तसरीह़ की है लेकिन अक्सर के नज़्दीक क़ाबिले ए'तिमाद बात इस का कबीरा न होना है और उन्हों ने इस ह़दीसे पाक कि "मुसल्मान को गाली देना फ़िस्क़ है।"[1] को इस पर मह़मूल किया है कि "जब येह फ़े'ल उस से बार बार सादिर हो इस ए'तिबार से कि उस की नेकियों पर ग़ालिब आ जाए।"

शर्ह़े मुस्लिम के क़ौल से येही ज़ाहिर होता है : मुसल्मान को ला'नत करना क़त्ल की मिस्ल गुनाह है।[2] जानवरों को ला'नत करने की मज़म्मत पर मज़्कूर अह़ादीसे मुबा-रका से मा'लूम हुवा कि जानवरों को ला'नत करना ह़राम है और हमारे (शाफ़ेई) अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने येही वज़ाह़त की। लेकिन ज़ाहिर येह है कि "येह सग़ीरा गुनाह है क्यूं कि इस में बहुत बड़ा फ़साद नहीं पाया जाता। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऊंटनी को ला'न त़ा'न करने वाले को सज़ा के त़ौर पर ऊंटनी छोड़ने का हुक्म दिया और येह इस बात पर दलालत नहीं करता कि येह कबीरा गुनाह है। ख़ास त़ौर पर दूसरी ह़दीस में ऊंटनी छोड़ने के हुक्म की इल्लत बयान की गई कि "तेरी अपनी सुवारी पर ला'नत की दुआ़ क़बूल हो गई।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़-करिय्या यह़्या बिन शरफ़ न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने अपनी किताब "**रियाज़ुस्सालिह़ीन**" में येह 2 अह़ादीसे मुबा-रका नक़्ल फ़रमाईं : "(1)...... इस से सामान उतार लो और इसे छोड़ दो क्यूं कि येह मल्ऊ़ना है और (2)...... हमारे साथ ऐसी ऊंटनी पर सफ़र न करो जिस पर ला'नत की गई है।" और इस के बा'द इर्शाद फ़रमाया : "इस के मा'ना में इश्काल समझा गया है ह़ालां कि इस में कोई इश्काल नहीं बल्कि इस से मुराद तो सिर्फ़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ उस ऊंटनी पर सफ़र करने से मन्अ़ करना है और

1 ......صحيح البخارى، كتاب الايمان، باب خَوْفِ الْمُؤْمِنِ مِنْ اَنْ يَّحْبِطَ عَمَلُهٗ وَهُوَ لَا يَشْعُرُ، الحديث: ٤٨، ص٦ ـ

2 ......شرح صحيح مسلم للنووى، كتاب البر والصلة والآداب، باب النهى عن لعن الدواب وغيرها، ج١٦، ص١٤٩ ـ



www.dawateislami.net

उसे बेचने, ज़ब्ह़ करने और सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मिल्किय्यत के इलावा उस पर सुवार होने में कोई मुमा–न–अ़त नहीं, बल्कि येह और इस त़रह़ के दीगर तमाम तसर्रुफ़ात जाइज़ हैं और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मिल्किय्यत में उस पर सुवार होने के इलावा किसी में मुमा–न–अ़त नहीं क्यूं कि येह तमाम तसर्रुफ़ात जाइज़ हैं, जिन में से चन्द एक से मन्अ़ कर दिया गया और बक़िय्या में जवाज़ का हुक्म पहले की त़रह़ बाक़ी है।''(1)

## ख़ास जानवर और मुअ़य्यन ज़िम्मी को ला'नत करने का हुक्म :

मैं ने बा'ज़ उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام को इस बात की सराह़त करते देखा कि किसी ख़ास जानवर और मुअ़य्यन ज़िम्मी को ला'न त़ा'न करना कबीरा गुनाह है और उन्हों ने येह क़ैद लगाई कि मुसल्मान को बुरा भला कहना इस सूरत में ह़राम है जब कि कोई शर–ई उ़ज़्र न पाया जाए। ह़ालां कि जिस बात का ज़िक्र उन्हों ने किया और जो क़ैद लगाई, दोनों बातें मह़ल्ले नज़र हैं। पहली बात तो इस वज्ह से मह़ल्ले नज़र है क्यूं कि मेरी गुज़श्ता सारी बह़्स से येह नतीजा निकलता है कि जानवर को ला'नत करना सग़ीरा गुनाह है। अलबत्ता ! किसी ख़ास ज़िम्मी को ला'नत करने में कबीरा होने का एह़तिमाल है क्यूं कि ईज़ा की ह़ुरमत में ज़िम्मी भी मुसल्मान की मिस्ल है और मुसल्मान पर ला'नत के कबीरा होने को उ़ज़्रे शर–ई न पाए जाने के साथ मुक़य्यद करना इस वज्ह से सह़ीह़ नहीं क्यूं कि हमारे पास कोई ऐसा शर–ई उ़ज़्र नहीं जो मुसल्मान की ला'नत को बिल्कुल जाइज़ क़रार दे दे। नीज़ ला'नत की ह़ुरमत का मह़ल अगर कोई ख़ास फ़र्द हो तो उसे भी ला'नत करना जाइज़ नहीं अगर्चे वोह यज़ीद बिन मुआ़विया की त़रह़ फ़ासिक़ या ज़िम्मी हो, ख़्वाह ज़िन्दा हो या मुर्दा। नीज़ कुफ़्र पर उस के ख़ातिमे का यक़ीनी इ़ल्म न हो क्यूं कि हो सकता है कि वोह कुफ़्र पर मरा हो या उसे इस्लाम पर मौत आई हो। मगर जिन के कुफ़्र पर ख़ातिमे का यक़ीनी इ़ल्म हो जैसे फ़िरऔ़न, अबू जह्ल और अबू लहब वग़ैरा तो उन पर ला'नत भेजने में कोई ह़रज नहीं।

## यज़ीद पर ला'नत का हुक्म :

बा'ज़ लोगों ने यज़ीद पर ला'नत की है तो इस के मुसल्मान होने के क़ौल की बिना पर उन की ना आ़क़िबत अन्देशी है। और एक गुरोह ने इस के काफ़िर होने का दा'वा किया है मगर इस पर दलालत करने वाला कोई सुबूत नहीं बल्कि इस का ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम हुसैन

---

(1)......رياض الصالحين للنووى، كتاب الامور والمنهى عنها، باب تحريم لعن انسان بعينه أو دابة، تحت الحديث: ١٥٥٧، ١٥٥٨، ص ٤١٤۔



www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़त्ल का हुक्म देना भी साबित नहीं। इसी वज्ह से **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) ने इस पर ला'नत के ह़राम होने का फ़तवा दिया अगर्चे वोह फ़ासिक़, बहुत नशा करने वाला और कबीरा गुनाहों बल्कि फ़वाह़िश में ह़द द-रजा मुब्तला था।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ुल इस्लाम सिराज बुल्क़ीनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ने सह़ीह़ैन की इन अह़ादीसे मुबा-रका से मुअ़य्यन ना फ़रमान पर ला'नत के जवाज़ की दलील दी है कि,

﴾31﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जब शोहर अपनी बीवी को बिस्तर पर बुलाए लेकिन वोह न आए और मर्द उस से नाराज़ी में रात गुज़ारे तो फ़रिश्ते सुब्ह़ तक उस औ़रत पर ला'नत भेजते रहते हैं।"(2)

﴾32﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जब औ़रत अपने शोहर के बिस्तर को छोड़ कर रात गुज़ारती है तो सुब्ह़ तक फ़रिश्ते उस पर ला'नत भेजते रहते हैं।"(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ुल इस्लाम सिराजुद्दीन बुल्क़ीनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی का इन अह़ादीसे मुबा-रका से दलील पकड़ना मह़ल्ले नज़र है। इसी वज्ह से इन के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ुल इस्लाम जलालुद्दीन बुल्क़ीनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : मैं ने इस बारे में उन से बह़स की क्यूं कि हो सकता है कि फ़रिश्तों की ला'नत सिर्फ़ उसी औ़रत के साथ ख़ास न हो बल्कि आ़म हो जैसे वोह येह कहते हों : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस औ़रत पर ला'नत भेजे जो अपने शोहर के बिस्तर को छोड़ कर रात गुज़ारती है।"

(मुसन्निफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :) मैं कहता हूं कि अगर इस के लिये इस ह़दीसे पाक से इस्तिद्लाल किया जाए कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक गधे के पास से गुज़रे जिस

---

1...... यज़ीद बद बख़्त عَلَیْہِ مَا یَسْتَحِقُّہٗ पर ला'नत करने और उसे काफ़िर कहने में इख़्तिलाफ़ है। आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "यज़ीदे पलीद के बारे में अइम्मए अहले सुन्नत के तीन क़ौल हैं : (1)...... इमाम अह़मद वग़ैरा अकाबिर इसे काफ़िर जानते हैं तो (इस क़ौल के मुताबिक़) हरगिज़ बख़्शिश न होगी और (2)...... इमाम ग़ज़ाली (عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی) वग़ैरा मुसल्मान, तो (इस के मुताबिक़) इस पर कितना ही अ़ज़ाब हो बिल आख़िर बख़्शिश ज़रूर होगी (3)...... हमारे इमाम (या'नी इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) सुकूत फ़रमाते हैं कि न हम मुसल्मान कहें न काफ़िर। लिहाज़ा हम भी सुकूत करेंगे।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 14, स. 682)

2......صحیح مسلم، کتاب النکاح، باب تحریم امتناعها من فراش زوجها، الحدیث: ۳۵۴۱، ص۹۱۹۔

3......صحیح مسلم، کتاب النکاح، باب تحریم امتناعها من فراش زوجها، الحدیث: ۳۵۳۸، ص۹۱۹۔



www.dawateislami.net

के चेहरे को दाग़ा गया था तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने ऐसा किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर ला'नत करे।''(1) तो येह ज़ियादा ज़ाहिर है क्यूं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ौल هٰذَا से ख़ास शख़्स को ला'नत करने की त़रफ़ वाज़ेह़ इशारा है। मगर येह कि यहां येह तावील की जाए कि इस से मुराद ऐसा करने वाला हर फ़र्द है, न कि येह मुअ़य्यन शख़्स और इस में बहुत कलाम है। किसी शख़्स को ख़ास किये बिग़ैर ला'नत करना या कोई ख़ास वस्फ़ ज़िक्र कर के ला'नत करना इज्माअ़न जाइज़ है, जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का झूटे पर ला'नत फ़रमाना। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे गिरामी है :

﴾1﴿ اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۸﴾ (پ۱۲، ھود:۱۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** अरे ज़ालिमों पर ख़ुदा की ला'नत।

﴾2﴿ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِیْنَ ﴿۶۱﴾ (پ۳، آل عمران:۶۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** फिर मुबा-हला करें तो झूटों पर **अल्लाह** की ला'नत डालें।

मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़वाले से ऐसी कसीर मिसालें बयान की जाएंगी।

**फ़ाएदा :** शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुछ लोगों को बिग़ैर ता'यीन किये वस्फ़ के साथ और कुछ को ता'यीन के साथ ला'नत फ़रमाई। पहली क़िस्म के लोगों की मिसालें ब कसरत हैं और हमारे कई (शाफ़ेई) अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इन में से अक्सर बिग़ैर सनद के ज़िक्र की हैं, लिहाज़ा इन के फ़वाइद के पेशे नज़र इन्हें ज़िक्र करने में कोई ह़रज नहीं।

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुन्द-र-जए ज़ैल तमाम अफ़राद का मल्ऊ़न होना ज़ाहिर फ़रमाया लेकिन इन का नाम न लिया :

(1)...... सूद खाने वाला (2)...... सूद खिलाने वाला (3)...... सूद के गवाह (4)...... सूद लिखने वाला (5)...... तस्वीरें बनाने वाला (6)...... जिस ने ज़मीन की ह़ुदूद को तब्दील किया जैसे वोह शख़्स जो गली या मस्जिद का टुकड़ा ले कर अपने घर में शामिल कर लेता है या वक़्फ़ शुदा मकान को अपनी मिल्किय्यत बना लेता है (7)...... जिस ने नाबीना को रास्ते से भटकाया या'नी दूसरे रास्ते पर डाल दिया और आंखों वाले ना वाक़िफ़ को भटकाने वाला भी ऐसा ही है (8)...... जिस ने जानवर से बद फ़े'ली की (9)...... जिस ने क़ौमे लूत़ का सा अ़मल किया

---

1 ......المصنّف لعبد الرزاق، کتاب المناسک، باب الوسم، الحدیث: ۸۴۸۲، ج۴، ص۳۵۱۔



www.dawateislami.net

(10)...... जो काहिन के पास गया (11)...... जिस ने ऒ़रत के पिछले मक़ाम में जिमाअ़ किया (12)...... जिस ने हैज़ वाली ऒ़रत से जिमाअ़ किया (13)...... नौह़ा करने वाली और उस के इर्द गिर्द बैठने वालियां (14)...... जिस ने ऐसे लोगों की इमामत कराई जो उसे ना पसन्द करते हों (15)...... जिस ऒ़रत ने इस ह़ाल में रात गुज़ारी कि उस का शोहर उस पर नाराज़ हो या वोह अपने शोहर के बिस्तर को छोड़ने वाली हो (16)...... जिस ने ग़ैरुल्लाह के नाम पर किसी जानवर को ज़ब्ह़ किया (17)...... चोर (18)...... जिस ने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को बुरा भला कहा (19)...... हीजड़ा बनने वाला मर्द (20)...... मर्दानी ऒ़रत (21)...... ऒ़रतों की मुशा-बहत इख़्तियार करने वाला मर्द और मर्दों की मुशा-बहत इख़्तियार करने वाली ऒ़रत (22)...... जो ऒ़रत मर्दों का लिबास पहने और जो मर्द ऒ़रतों जैसा लिबास पहने (23)...... जिस ने रास्ते पर पाख़ाना किया (24)...... जो ऒ़रत अपने हाथों पर मेहंदी न लगाए और जो सुरमा न डाले (25)...... जिस ने ऒ़रत को शोहर के ख़िलाफ़ या ग़ुलाम को उस के आक़ा के ख़िलाफ़ भड़काया (26)...... जिस ने अपने भाई की त़रफ़ लोहे के आले से इशारा किया (27)...... ज़कात न अदा करने वाला (28)...... जो ख़ुद को अपने बाप के इ़लावा की त़रफ़ मन्सूब करे (29)...... जो ग़ुलाम अपने आक़ा के इ़लावा किसी दूसरे की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो (30)...... जिस ने चेहरे को दाग़ा (31)...... जब मुआ़-मला ह़ाकिम तक पहुंच जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़ुदूद के मुआ़-मले में सिफ़ारिश करने और करवाने वाला (32)...... जब ऒ़रत अपने शोहर की इजाज़त के बिग़ैर घर से निकले (33)...... जिस ने मुम्किन होने के बा वुजूद اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف और نَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر को तर्क कर दिया (34)...... शराब पीने वाला (35)...... शराब पिलाने वाला (36)...... शराब बेचने वाला (37)...... शराब ख़रीदने वाला (38)...... जिस के लिये शराब ख़रीदी गई (39)...... शराब का बनाने वाला (40)...... जिस के लिये शराब बनाई गई (41)...... शराब उठाने वाला (42)...... जिस की त़रफ़ उठा कर शराब ले जाई गई (43)...... शराब की क़ीमत खाने वाला (44)...... शराब पर रहनुमाई करने वाला (45)...... अपने पड़ोसी की बीवी से ज़िना करने वाला (46)...... मुश्त ज़नी (या'नी अपने हाथ से माद्दए मन्विया ख़ारिज) करने वाला (47)...... मां और बेटी को निकाह़ में जम्अ़ करने वाला (48)...... फ़ैसले में रिश्वत देने और लेने वाला (49)...... रिश्वत लेने देने में वासित़ा बनने वाला (50)...... इ़ल्म छुपाने वाला (51)...... ग़ल्ला रोकने वाला (52)...... जिस ने मुसल्मान को ह़क़ीर जाना या'नी उसे ज़लील समझा और उस की मदद न की (53)...... बे रह़्म ह़ुक्मरान (54)...... निकाह़ न करने वाले मर्द और ऒ़रतें



www.dawateislami.net

(55)...... चटियल मैदान में तन्हा सफ़र करने वाला (56)...... जिस ने किसी जानदार को निशाना बाज़ी के लिये हदफ़ बनाया (57)...... जिस ने दीन में कोई (ख़िलाफ़े शर-अ़) नई बात निकाली (58)...... जिस ने बिद्अ़ती को पनाह दी (59)...... जिस ने क़ब्रों पर चराग़ जलाया[1] (60)...... जिस ने क़ब्र पर मस्जिद बनाई[2] और (61)...... क़ब्रों की ज़ियारत करने

---

❶...... मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان (मु-तवफ़्फ़ा 1391 हि.) मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 2, सफ़ह़ा 492 पर ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी ह़दीसे पाक के इस हिस्से ''اَنَّ النَّبِيَّ دَخَلَ قَبْرًا لَيْلًا فَاُسْرِجَ لَهٗ بِسِرَاجٍ'' या'नी नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रात के वक़्त क़ब्र में तशरीफ़ ले गए तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये चराग़ जलाया गया'' की शर्ह़ करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : ''या'नी रात में मय्यित को दफ़्न किया तो मय्यित के लिये या हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये चराग़ की रोशनी की गई। इस से दो मस्अले मा'लूम हुए : एक येह कि क़ब्र पर आग ले जाना मन्अ़ है मगर चराग़ ले जाना जाइज़ क्यूं कि येह रोशनी के लिये है न कि मुश्रिकीन से मुशा-बहत के लिये, मुश्रिकीन मय्यित के साथ आग ले जाते हैं आग की पूजा करने या मय्यित को जलाने के लिये लिहाज़ा बुज़ुर्गों के मज़ार के पास लोबान या अगरबत्ती जलाना जाइज़ है ताकि मय्यित को फ़रह़त हो और ज़ाइरीन को राह़त, इसी लिये मय्यित के कफ़न को धूनी देना सुन्नत है जिसे फ़ु-क़हा इस्तिज्मार कहते हैं, दूसरे येह कि ज़रूरत के वक़्त क़ब्र पर चराग़ जलाना जाइज़ है लिहाज़ा जिन बुज़ुर्गों के मज़ारों पर दिन रात ज़ाइरीन का हुजूम और तिलावते क़ुरआन का दौर (या'नी सिल्सिला) रहता है वहां ज़रूर रात को रोशनी की जाए इस का माख़ज़ येह ह़दीस है, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर पर हमेशा से और अब ''नज्दियों'' के ज़माने में और ज़ियादा आ'ला द-रजे की रोशनी होती है ख़ास गुम्बद शरीफ़ पर बीसियों क़ुमक़ुमे नस्ब हैं जिन अह़ादीस में क़ब्र पर चराग़ जलाने से मुमा-न-अ़त है वहां बिला ज़रूरत चराग़ रख आना मुराद है कि इस में इसराफ़ है। ख़याल रहे कि बुज़ुर्गों का एह़तिराम ज़ाहिर करने के लिये भी रोशनी कर सकते हैं जैसे का'बए मुअ़ज़्ज़मा के एह़तिराम के लिये इस पर ग़िलाफ़ रहता है और दरवाज़ए का'बा पर बड़ी क़ीमती शम्अ़ काफ़ूरी जलाई जाती है, र-मज़ान में मस्जिदों का चराग़ां भी यहीं से लिया गया।''

❷...... मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 1, सफ़ह़ा 440 पर है कि ''ख़याल रहे कि बुज़ुर्गों के आस्तानों के बराबर मस्जिद बनाना और ब-र-कत के लिये वहां नमाज़ें पढ़ना क़ुरआन शरीफ़ और बहुत अह़ादीस से साबित है सूरए कहफ़ में है لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا या'नी मुसल्मानों ने कहा कि हम अस्ह़ाबे कहफ़ के ग़ार पर मस्जिद बनाएंगे। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर और अक्सर सह़ाबा के मज़ारात के पास मस्जिदें हैं येह ख़ुद सह़ाबा या सालिह़ीन ने बनाईं, अब मज़ाराते **औलियाउल्लाह** के पास आ़म्मतुल मुस्लिमीन मस्जिदें बनाते हैं, मक़्बूलों के क़ुर्ब में नमाज़ ज़ियादा क़बूल होती है। मस्जिदे न-बवी में एक नमाज़ का सवाब पचास हज़ार है हुज़ूरे अन्वर के क़ुर्ब की वज्ह से। रब तआ़ला ने गुनहगार इसराईलियों से फ़रमाया था ''اُدْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّ قُوْلُوْا حِطَّةٌ'' या'नी बैतुल मुक़द्दस के दरवाज़े में सज्दा करते घुसो और वहां जा कर तौबा करो क़ुबूरे अम्बिया की ब-र-कत से तौबा क़बूल होगी। ज़-करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام का वाक़िआ़ बयान फ़रमाता है ''هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ'' वहां बीबी मरयम के पास खड़े हो कर ज़-करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام ने बेटे की दुआ़ मांगी, इन आयत से मा'लूम हुवा कि बुज़ुर्गों के क़ुर्ब में तौबा और दुआ़ बहुत क़बूल होती......



www.dawateislami.net

वाली (62)...... बुलन्द आवाज़ से चीख़ो पुकार करने वाली (63)...... अपने बाल मुंडवाने वाली (64)...... मुसीबत के वक़्त अपने कपड़े फाड़ने वाली और (65)...... अश्आ़र की त़रह़ मुक़फ़्फ़ा व मुसज्जअ़ कलाम करने वाले (66)...... ज़मीन और शहरों में फ़साद डालने वाले (67)...... जिस ने अपने बाप से अपनी नफ़ी की या ग़ैर की त़रफ़ अपने आप को मन्सूब किया (68)...... जिस ने पाक दामन औ़रत पर ज़िना की तोहमत लगाई (69)...... जिस ने अपने दोस्तों पर ला'नत की (70)...... जिस ने क़त़्ए रेह़्मी की (71)...... जिस ने क़ुरआन (का इ़ल्म) छुपाया (72)...... जिस ने अपने वालिदैन या उन में से एक पर ला'नत की (73)...... जिस ने किसी मुसल्मान से धोका किया उसे नुक़्सान पहुंचाया (74)...... जिस की ख़ात़िर गाना गाया जाए (75)...... बूढ़ा ज़ानी (76)...... जिस ने मां और उस के बेटे के दरमियान जुदाई डाली (77)...... भाइयों के दरमियान जुदाई डालने वाला (78)...... ह़ल्क़े के दरमियान बैठने वाला (79)...... जो حیّ علی الصلوٰۃ की आवाज़ सुने लेकिन जवाब न दे (या'नी नमाज़ के लिये ह़ाज़िर न हो) और (80)...... बेरी का दरख़्त काटने वाला।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : ''येह ला'नत बेरी के उस दरख़्त के बारे में है जो आ़म गुज़र गाहों और दीहातों में होता है जिस से गुज़रने वाले साया ह़ासिल करते हैं।''[1]

﴾33﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तरहीब निशान है : ''बेशक सात आस्मान, सात ज़मीनें और पहाड़ बूढ़े ज़ानी पर ला'नत भेजते हैं।''[2]

﴾34﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शत़रन्ज खेलने वाले पर ला'नत फ़रमाई।''[3]

﴾35﴿...... हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जो बिग़ैर तहबन्द के बारीक क़मीस पहन कर शर्मगाह को ज़ाहिर करता हुवा चले फ़रिश्ते उस पर ला'नत

......है। येह भी ख़याल रहे कि क़ब्र पर खड़े हो कर नमाज़ पढ़ना मन्अ़ है लेकिन अगर क़ब्र पर डाट लगा कर ऊपर फ़र्श बनाया जाए तो वहां बिला कराहत जाइज़ है। चुनान्चे **का'बतुल्लाह** के मत़ाफ़ में 70 नबियों के मज़ारात हैं जिन पर त़वाफ़ व नमाज़ होते हैं नीज़ का'बे के परनाले के नीचे ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام का मज़ार शरीफ़ है जहां दिन रात नमाज़ें पढ़ी जाती हैं वहां येही वज्ह है। (**مرقاۃ و اشعہ**)

1 ......سنن ابی داود، کتاب الأدب، باب فی قطع السدر، الحدیث: ۵۲۳۹،۵۲۴۱، ص۱۶۰۶۔

2 ......البحرالزخارالمعروف بمسند البزار، مسند بریدۃ بن الحصیب، الحدیث: ۴۴۳۱، ج۱۰، ص۳۱۰۔

3 ......فردوس الاخبارللدیلمی، الحدیث: ۶۷۲۴، ج۲، ص۳۴۱، "لعن اللہ" بدلہ "ملعون"۔



www.dawateislami.net

भेजते हैं यहां तक कि वोह अपने घर लौट आए या तौबा कर ले।''

﴾36﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब (ख़िलाफ़े शर-अ़) बिद्अ़तें ज़ाहिर हों और मेरे सह़ाबए किराम को बुरा भला कहा जाए तो आ़लिमे रब्बानी पर लाज़िम है कि अपना इ़ल्म ज़ाहिर करे अगर उस ने ऐसा न किया तो उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, फ़रिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत हो।''(1)

﴾37﴿...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ बयान है : ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे मुन्तख़ब फ़रमाया और मेरे लिये सह़ाबए किराम को मुन्तख़ब फ़रमाया, फिर इन में से कुछ को मेरा वज़ीर मुक़र्रर फ़रमाया, तो कुछ को ह़िमायत व नुसरत करने वाला बनाया और कुछ को सुसराली क़राबत दार होने का ए'ज़ाज़ बख़्शा। लिहाज़ा जिस ने इन्हें बुरा भला कहा उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, फ़रिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत हो। बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न तो उस के नफ़्ल क़बूल फ़रमाएगा और न ही फ़र्ज़।''(2)

﴾38﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''7 अश्ख़ास ऐसे हैं जिन की त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन न तो नज़रे रह़मत फ़रमाएगा और न ही उन्हें पाक फ़रमाएगा बल्कि उन से इर्शाद फ़रमाएगा : जहन्नम में दाख़िल होने वालों के साथ दाख़िल हो जाओ (और वोह येह हैं :) (1)...... लिवात़त करने और (2)...... लिवात़त करवाने वाला (3)...... मुश्त ज़नी (या'नी अपने हाथ से माद्दा ख़ारिज) करने वाला (4)...... चौपाए से वत़ी करने वाला (5)...... औरत की दुबुर (या'नी पिछले मक़ाम) में वत़ी करने वाला (6)...... मां और बेटी को एक निकाह़ में जम्अ़ करने वाला (7)...... पड़ोसी की बीवी से ज़िना करने वाला और (8)...... पड़ोसी को ईज़ा देने वाला।''(3)

﴾39﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिसे मेरी उम्मत के किसी मुआ़-मले का अमीर बनाया गया और उस ने उन पर रह़्म न किया तो उस पर **बह्लतुल्लाह** हो।'' सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **बह्लतुल्लाह** से क्या मुराद है ?'' इर्शाद

---

1 ......السنة للخلال، ذكرالروافض،الحديث : ٧٨٧،ج٣،ص٤٩٥۔

2 ......المستدرک،كتاب معرفة الصحابة،باب ذكرعويم بن ساعدة،الحديث : ٦٧١٥،ج٤،ص٨٣٣۔

3 ......تفسيرالقرآن العظيم لابن كثير،البقرة،تحت الاية ٢٢٣،ج١،ص٢٢٦۔



www.dawateislami.net

फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ला'नत ।''(1)

﴾40﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने मदीनए मुनव्वरह में कोई (ख़िलाफ़े शर-अ़) बिद्अ़त ईजाद की या किसी बिद्अ़ती को पनाह दी उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस के नफ़्ल क़बूल फ़रमाएगा न फ़र्ज़ ।''(2)

﴾41﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जिस ग़ुलाम ने ख़ुद को अपने मालिक के इलावा की त़रफ़ मन्सूब किया उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ, फ़रिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत है।(3) और अपने शोहर के बिस्तर को छोड़ने वाली पर फ़रिश्ते सुब्ह़ तक ला'नत भेजते रहते हैं।''(4)

﴾42﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक बीवी पर उस के शोहर का ह़क़ येह है कि अगर वोह उस से अपनी ह़ाजत पूरी करने का मुत़ा-लबा करे इस ह़ाल में कि वोह ऊंट की पीठ पर हो फिर भी ख़ुद को उस से न रोके और बीवी पर शोहर के ह़ुक़ूक़ में से है कि वोह उस की इजाज़त के बिग़ैर नफ़्ली रोज़ा न रखे। अगर उस ने ऐसा किया तो भूकी प्यासी रही और उस का रोज़ा भी क़बूल न होगा और उस की इजाज़त के बिग़ैर घर से बाहर न निकले। अगर उस ने ऐसा किया तो वापस लौटने तक रह़मत और अ़ज़ाब के फ़रिश्ते उस पर ला'नत भेजते रहते हैं।''(5)

﴾43﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने अपने भाई की त़रफ़ लोहे के आले से इशारा किया वोह ला'नती है अगर्चे वोह बाप या मां की त़रफ़ से उस का भाई हो।''(6)

﴾44﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बालों में जोड़ लगाने वाली और जोड़ लगवाने वाली गोदने वाली और गुदवाने वाली (या'नी सूई वग़ैरा से जिस्म में छेद लगा कर उस में रंग या सुरमा भर देने को गोदना कहते

---

1 ......الكامل فی ضعفاء الرجال،الرقم ١٩٠٠ مبشر بن عبيد، ج ٨،ص ١٦٧،بتغيرٍقليلٍ۔

2 ......صحيح مسلم ،كتاب العتق ،باب تحريم تولى العتيق غير مواليه،الحديث : ٣٧٩٢،ص٩٣٨۔

3 ......المصنف لابن ابی شيبة،كتاب الأدب، باب مايكره الرجل۔۔الخ،الحديث :٣،ج٦،ص١٨٦۔

4 ......المسندللامام احمد بن حنبل ،مسند ابی هريرة،الحديث : ١٠٧٣٦ ،ج٣،ص٢٠٥۔

5 ......الترغيب والترهيب ،كتاب النكاح،باب ترغيب الزوج فی الوفاء......الخ،الحديث : ٣٠٢٠،ج٣،ص٢٥۔

6 ......صحيح مسلم ،كتاب البر والصلة والادب ،باب النهی عن الاشارة بالسلاح الی مسلم،الحديث: ٢٦٦٢،ص١١٣٤۔



www.dawateislami.net

हैं) और (चेहरे के बाल) उखेड़ने वाली और उखड़वाने वाली पर ला'नत फ़रमाई है।''(1)

﴾45﴿...... सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''6 क़िस्म के लोगों पर मैं ला'नत भेजता हूं। जब कि एक रिवायत में है कि और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उन पर ला'नत फ़रमाता है और हर नबी की दुआ मक़्बूल है : (1)...... **किताबुल्लाह** में तब्दीली करने वाला। जब कि एक रिवायत के मुताबिक़ ज़ियादती करने वाला (2)...... तक़्दीरे इलाही को झुटलाने वाला (3)...... लोगों पर ज़बर दस्ती मुसल्लत होने वाला ताकि जिस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इज़्ज़त दी उसे ज़लील करे और जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़लील किया उसे इज़्ज़त दे (4)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ों को ह़लाल ठहराने वाला (5)...... मेरे अहले बैत की ईज़ा रसानी करने वाला (या'नी इन को सताने वाला) और (6)...... सुन्नत को छोड़ने वाला।''(2)

अब वोह अह़ादीसे मुबा-रका ज़िक्र की जाती हैं कि जिन में रह़मते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी ख़ास फ़र्द का नाम ले कर उस पर ला'नत फ़रमाई। चुनान्चे,

﴾46﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! रेअ्ल, ज़क्वान और उ़सय्या पर ला'नत फ़रमा। इन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी की।''(3)

येह तीनों अ़रब क़बाइल थे और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इन के कुफ़्र पर मरने का इ़ल्म था पस जिन के कुफ़्र पर ख़ातिमे का इ़ल्म था उन पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ला'नत फ़रमाई। किसी इन्सान को बद-दुआ देना भी ला'नत के क़रीब है यहां तक कि ज़ालिम को बद-दुआ देने का भी येही हुक्म है म-सलन यूं कहना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के जिस्म को सह़ीह़ न करे और उस की ह़िफ़ाज़त न करे वग़ैरा वग़ैरा इसी त़रह़ हर मज़्मूम दुआ करना जाइज़ नहीं। तमाम हैवानात और बे जान चीज़ों पर ला'नत भेजना भी मज़्मूम है। बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जिस ने किसी ऐसे फ़र्द पर ला'नत की जो ला'नत का मुस्तह़िक़ न हो तो फ़ौरन येह कहे : ''मेरी ला'नत उस पर नहीं जो इस का मुस्तह़िक़ नहीं।''

अलबत्ता ! اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْىٌ عَنِ الْمُنْكَر करने वाले और हर अदब सिखाने वाले के लिये

(1)......صحيح مسلم، كتاب اللباس، باب تحريم فعل الواصلة ......الخ، الحديث: ۵۵۶۵، ۵۵۷۳، ص۱۰۵۷، ۱۰۵۸۔

(2)......جامع الترمذي، ابواب القدر، باب إعظام أمر الإيمان بالقدر، الحديث: ۲۱۵۴، ص۱۸۶۸۔

المعجم الكبير، الحديث: ۸۹، ج۱۷، ص۴۳، دون قوله "الدعوة المحرف لكتاب الله"۔

(3)......صحيح مسلم، كتاب المساجد و مواضع الصلاة، باب استحباب القنوت......الخ، الحديث: ۱۵۵۷، ص۷۸۴۔



www.dawateislami.net

येह जाइज़ है कि वोह अपने मुख़ात़ब को डांट डपट करने के लिये ऐसे अल्फ़ाज़ बोले : (1)...... तेरा बुरा हो (2)...... ऐ कमज़ोर ह़ालत वाले (3)...... ऐ अपने नफ़्स की त़रफ़ कम तवज्जोह देने वाले (4)...... ऐ अपनी जान पर ज़ुल्म करने वाले और इस त़रह़ की दूसरी ऐसी बातें जिन में सरा-ह़तन या किना-यतन या इशा-रतन झूट न हो और न ही तोहमत हो अगर्चे वोह उस में सच्चा हो।

۞۞۞۞۞۞۞

## कबीरा नम्बर 292 : इन्सान का अपने नसब या अपने वालिद से दस्त बरदार होना

## कबीरा नम्बर 293 : अपना झूटा होना मा'लूम होने के बा वुजूद ख़ुद को बाप के इ़लावा की त़रफ़ मन्सूब करना

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने ख़ुद को बाप के इ़लावा की त़रफ़ मन्सूब किया ह़ालां कि वोह जानता है कि वोह उस का बाप नहीं तो उस पर जन्नत ह़राम है।''(1)

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब लिआ़न के मु-तअ़ल्लिक़ आयते मुबा-रका नाज़िल हुई तो हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस औ़रत ने बच्चे को ऐसी क़ौम में दाख़िल किया जिस में से वोह न हो तो उस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कोई वासित़ा न रहा और वोह उसे जन्नत में दाख़िल न फ़रमाएगा और जिस मर्द ने जान बूझ कर अपने बच्चे का इन्कार किया इस ह़ाल में कि वोह उस की त़रफ़ देख रहा हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपना दीदार न कराएगा और उसे अव्वलीनो आख़िरीन (या'नी अगलों पिछलों) के सामने ज़लीलो रुस्वा करेगा।''(2)

﴾3﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जिस ने जानने के बा वुजूद अपने बाप के ग़ैर का बेटा होने का दा'वा किया उस ने कुफ़्र किया। जिस ने (अपने आप को) और की त़रफ़ मन्सूब किया ह़ालां कि वोह उस का नहीं तो वोह हम में से

1 ......صحیح البخاری، کتاب الفرائض، باب من ادعی الی غیر أبیه، الحدیث : ۶۷۶۶، ص ۵۶۵۔

2 ......سنن أبی داود، کتاب الطلاق، باب التغلیظ فی الانتفاء، الحدیث : ۲۲۶۳، ص ۱۳۹۰، بدون: الخلائق۔



www.dawateislami.net

नहीं और उसे चाहिये कि अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले और जिस ने किसी को काफ़िर या दुश्मने खुदा कहा जब कि वोह ऐसा नहीं तो उस का क़ौल उसी की त़रफ़ पलट आएगा।''(1)

﴾4﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने अपने आप को बाप के इ़लावा या अपने आक़ा के इ़लावा की त़रफ़ मन्सूब किया तो उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, फ़रिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस के नफ़्ल क़बूल फ़रमाएगा न फ़र्ज़।''(2)

﴾5﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''अपने बापों से मुंह न फेरो जिस ने अपने बाप से मुंह फेरा उस ने कुफ़्र किया(3)।''(4)

﴾6﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शुऐ़ब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने दादा से रिवायत करते हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने बराअत का इज़्हार किया उस ने इन्कार किया या जिस ने अपने नसब या ग़ुलामी से बे तअ़ल्लुक़ी ज़ाहिर की या ऐसे नसब का दा'वा किया जिस से वोह मा'रूफ़ नहीं उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इन्कार किया।''(5)

﴾7﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने किसी ग़ैर मा'रूफ़ नसब का दा'वा किया उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इन्कार किया या जो अपने नसब से अलग हुवा अगर्चे थोड़ी ही देर के लिये तो उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ कुफ़्र किया।''(6)

---

(1)......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان حال ایمان من قال لأخیه المسلم: یا کافر!، الحدیث: ۲۱۷، ص۶۹۱۔

(2)......صحیح مسلم، کتاب العتق، باب تحریم تولی العتیق غیر موالیه، الحدیث: ۳۷۹۴، ص۹۳۸۔

(3)...... मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان (मु-तवफ़्फ़ा 1391 हि.) मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 5, सफ़ह़ा 139 पर इस ह़दीस के तह़त फ़रमाते हैं कि ''अगर वोह ग़रीब या ग़ैर इ़ज़्ज़त वाले हों तो अपने को उन की औलाद कहने से शर्म व ग़ैरत न करो। जो शख़्स अपना नसब बदलने को ह़लाल जाने वोह काफ़िर है और इज्माए़ उम्मत का मुख़ालिफ़ है और जो ह़राम जान कर येह ह़-र-कत करे वोह काफ़िर का सा काम करता है या अपने ख़ानदान का ना शुक्रा है या रब तआ़ला का ना शुक्रा बहर ह़ाल येह फ़े'ल या कुफ़्र है या ह़राम।'' (مرقات)

(4)......صحیح البخاری، کتاب الفرائض، باب من ادعی الی غیر أبیه، الحدیث: ۶۷۶۸، ص۵۶۵۔

(5)......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللّٰہ بن عمرو بن العاص، الحدیث: ۷۰۳۹، ج۲، ص۶۷۳۔
سنن الدارمی، کتاب الفرائض، باب من ادعی الی غیر أبیه، الحدیث: ۲۸۶۱، ج۲، ص۴۴۲۔

(6)......المعجم الاوسط، الحدیث: ۸۵۷۵، ج۶، ص۲۲۱۔



www.dawateislami.net

﴿8﴾...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जिस ने अपने आप को बाप के इलावा किसी और की त़रफ़ मन्सूब किया वोह जन्नत की ख़ुश्बू नहीं सूंघ सकेगा ह़ालां कि इस की ख़ुश्बू तो 70 साल की मिक्दार या 70 साल की मसाफ़त से पाई जाएगी ।''(1)

﴿9﴾...... इब्ने माजह शरीफ़ की एक रिवायत में है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जान लो ! बेशक जन्नत की ख़ुश्बू 500 बरस की मसाफ़त से आती होगी ।''(2)

**ज़रूरी वज़ाह़त :** गोया वोह मसाफ़त ख़ुश्बू सूंघने वालों के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ होगी, कुछ लोग इसे 500 साल की मसाफ़त से सूंघ लेंगे जब कि कुछ लोग 70 साल की मसाफ़त से सूंघ लेंगे ।

﴿10﴾...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जिस ने ग़ैर बाप की त़रफ़ अपने आप को मन्सूब किया या ग़ैरे आक़ा की त़रफ़ अपने आप को मन्सूब किया उस पर क़ियामत के दिन तक लगातार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत होती रहेगी ।''(3)

## तम्बीह :

मज़्कूरा सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका की सराह़त से इन दो को भी कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और येह बिल्कुल वाज़ेह़ है अगर्चे मैं ने किसी को नहीं देखा जिस ने इस की तसरीह़ की हो और इन अह़ादीसे मुबा-रका में कुफ़्र का मफ़्हूम येह है कि येह कुफ़्र की त़रफ़ ले जाता है या अगर वोह इसे ह़लाल समझे या ने'मत की ना शुक्री करे तो इस बिना पर काफ़िर होगा ।

۞۞۞۞۞۞۞

(1)......المسند للامام احمد بن حنبل،مسند عبد الله بن عمرو بن العاص، الحديث : ٦٢٠٣،ج٢،ص٥٧٨ـ

(2)......سنن ابن ماجه،ابواب الحدود ،باب من ادعى الى غير أبيه أو تولى غير مواليه ،الحديث : ٢٦١١،ص٢٦٣٣ـ

(3)......سنن ابى داود،كتاب الأدب،باب فى الرجل ينتمى الى غير مواليه، الحديث :٥١١٥،ص١٥٩٨ـ



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 294 : शर-ई तौर पर साबित नसब में ता'न करना

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّ اِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿۵۸﴾
(پ۲۲، الاحزاب:۵۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो ईमान वाले मर्दों और औ़रतों को बे किये सताते हैं उन्हों ने बोहतान और खुला गुनाह अपने सर लिया।

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "लोगों में दो ख़स्लतें ऐसी हैं जिन की वज्ह से वोह कुफ़्र में मुब्तला हैं : (1)...... न-सबों में ता'न करना और (2)...... मय्यित पर रोना।"[1]

**तम्बीह :** इस ह़दीसे पाक के ज़ाहिरी मफ़्हूम की बिना पर इसे कबीरा गुनाह शुमार किया गया है अगर्चे मैं ने किसी को इस का ज़िक्र करते नहीं देखा।

## कबीरा नम्बर 295 : औ़रत का ज़िना या शुबा की वत़ी के साथ बच्चे को ऐसी क़ौम में दाख़िल करना जिस में से वोह न हो

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब लिआ़न वाली आयते मुबा-रका नाज़िल हुई तो सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस औ़रत ने बच्चे को ऐसी क़ौम में दाख़िल किया जिस में से वोह न हो तो उस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कोई वासित़ा न रहा और वोह उसे जन्नत में दाख़िल न फ़रमाएगा और जिस मर्द ने जान बूझ कर अपने बच्चे का इन्कार किया इस ह़ाल में कि वोह उस की त़रफ़ देख रहा हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपना दीदार न कराएगा और उसे अव्वलीनो आख़िरीन (या'नी अगलों पिछलों) के सामने ज़लीलो रुस्वा करेगा।"[2]

❁❁❁❁❁❁❁

1 ......صحیح مسلم ،کتاب الایمان ،باب اطلاق اسم الکفر علی الطعن......الخ،الحدیث : ۲۲۷،ص۶۹۱۔

2 ......سنن أبی داود،کتاب الطلاق ،باب التغلیظ فی الانتفاء، الحدیث : ۲۲۶۳،ص۱۳۹۰،بدون:الخلائق۔



www.dawateislami.net

# كتاب العدد

## ( या'नी इद्दत पूरी करने का बयान )

### कबीरा नम्बर 296 : इद्दत पूरी करने में ख़ियानत करना

इसे कबीरा गुनाहों में ज़िक्र करना बईद नहीं क्यूं कि इस में नाहक़ औरत पर किसी अजनबी को मुसल्लत़ करना पाया जाता है और इस में इस क़दर बड़ा नुक़्सान और फ़साद है जिस का शुमार नहीं किया जा सकता।

۞۞۞۞۞۞۞

### कबीरा नम्बर 297 : इद्दत वाली का बिला उ़ज़्रे शर-ई उस घर से बाहर निकलना जिस में इद्दत ख़त्म होने तक उस का ठहरना लाज़िम हो

शोहर की इजाज़त के बिग़ैर उस के घर से निकलने पर क़ियास करते हुए इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करना बईद नहीं बल्कि जिस का शोहर फ़ौत हो गया है उस के लिये ज़ियादा ज़रूरी है क्यूं कि इस के घर ठहरना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से पुख़्ता किया गया ह़क़ है ताकि नसब वग़ैरा मह़फ़ूज़ रहे।

۞۞۞۞۞۞۞

### कबीरा नम्बर 298 : शोहर फ़ौत होने पर सोग न करना

इसे भी कबीरा गुनाहों में ज़िक्र करना बईद अज़ अ़क़्ल नहीं क्यूं कि इस के सबब बहुत सी ख़राबियां पैदा होती हैं।

۞۞۞۞۞۞۞



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 299 : इस्तिब्रा से पहले लौंडी से जिमाअ़ करना

### ( या'नी रेह़्म ख़ाली होने की मुद्दत पूरी होने से पहले लौंडी से जिमाअ़ करना )

इसे भी कबीरा गुनाहों में ज़िक्र करना बईद नहीं क्यूं कि इस में नुत़्फ़ों के ख़ल्त़ मल्त़ होने और न-सबों के ज़ाएअ़ होने जैसे मफ़ासिद पाए जाते हैं। फिर मैं ने मुस्लिम शरीफ़ की एक सरीह़ ह़दीसे पाक देखी जिस में मुमा-न-अ़त के लिये ह़ामिला होने की शर्त़ है। चुनान्चे,

﴾1﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी ख़ैमे के पास खड़ी एक ह़ामिला औ़रत के पास से गुज़रे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के मु-तअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाया। सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "येह फ़ुलां की लौंडी है।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या वोह इस से बदकारी करवाता है ?" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "जी हां !" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने अ़ज़्म किया है कि उस शख़्स पर ऐसी ला'नत भेजूं जो क़ब्र में भी उस के साथ जाए, वोह कैसे उस बच्चे का वारिस होगा ह़ालां कि वोह उस के लिये ह़लाल नहीं ? और वोह उस को कैसे ग़ुलाम बनाएगा ह़ालां कि वोह उस के लिये ह़लाल नहीं।"(1)

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह इस लिये फ़रमाया क्यूं कि बच्चे का मुआ़-मला मुश्किल है। हो सकता है वोह उसी का हो या किसी दूसरे का, अगर वोह उसी का हुवा तो फिर भी उस के लिये उस का इन्कार करना, उसे ग़ुलाम बनाना और उस से ख़िदमत लेना जाइज़ नहीं और अगर किसी दूसरे का हुवा तो भी उस के लिये उसे अपने ख़ानदान में मिलाना और वारिस बनाना जाइज़ नहीं।

۞۞۞۞۞۞۞

---

1 ......صحيح مسلم، كتاب النكاح ،باب تحريم وطئ الحامل المسبية ،الحديث :٣٥٦٢،ص٩٢٠ـ

شرح السنة، كتاب العدة،باب استبراء الأمة المسبية، الحديث : ٢٣٨٨،ج٥،ص٢٣١ـ



www.dawateislami.net

# كتاب النفقات على الزوجات والاقارب والمماليک من الرقيق والدواب وما يتعلق بذلک

## कबीरा नम्बर 300 : बिला उ़ज़्रे शर-ई बीवी का ख़र्च रोकना

इसे कबीरा गुनाहों में ज़िक्र करना वाज़ेह़ है इस की नज़ीर ज़ुल्म के बयान में आएगी क्यूं कि येह भी बड़ा ज़ुल्म है और आने वाला कबीरा भी इसी से तअ़ल्लुक़ रखता है।

۞۞۞۞۞۞۞

## कबीरा नम्बर 301 : अहलो इ़याल म-सलन ना बालिग़ बच्चों को ज़ाएअ़ करना

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आदमी के लिये इतना गुनाह काफ़ी है कि वोह उन्हें ज़ाएअ़ कर दे जिन को ख़ूराक मुहय्या करता है।"(1)

﴾2﴿...... इमाम ह़ाकिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं : "जिन की वोह परवरिश करता है।"(2)

﴾3﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर निगरान से उस के मा तह़्त के बारे में पूछेगा कि क्या इस ने उन की ह़िफ़ाज़त की या उन्हें ज़ाएअ़ कर दिया यहां तक कि बन्दे से उस के घर वालों के मु-तअ़ल्लिक़ पूछेगा।"(3)

﴾4﴿...... हु़स्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तुम में से हर एक निगरान है और उस से उस के मा तह़्तों के बारे में पूछा

(1)......سنن ابی داود، کتاب الزکاۃ، باب فی صلۃ الرحم، الحدیث : ۱۶۹۲، ص۱۳۴۹۔

(2)......المستدرک، کتاب الفتن والملاحم، باب کفی بالمرء أن یضیع من یعول، الحدیث: ۸۵۷۳، ج۵، ص۷۰۱۔

(3)......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب السیر، الحدیث : ۴۴۷۶، ج۷، ص۱۲۔



www.dawateislami.net

जाएगा। इमाम (या'नी हुक्मरान) निगरान है और उस से उस के मा तह्तों (या'नी अ़वाम) के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा, मर्द अपने घर का निगह्बान है उस से उस के मा तह्तों के बारे में पूछा जाएगा, औ़रत अपने शोहर के घर की निगह्बान है और उस से उस के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा, ख़ादिम अपने आक़ा के माल का निगह्बान है और उस से उस के बारे में बाज़पुर्स होगी (अल ग़रज़ !) तुम में से हर एक निगह्बान है और उस से उस के मा तह्तों के बारे में पूछा जाएगा।''(1)

**तम्बीह :** गुज़श्ता गुनाहों की त़रह़ इसे भी कबीरा गुनाहों में शुमार करना बिल्कुल वाज़ेह़ है क्यूं कि येह भी ज़ुल्म और बुराई की क़बीह़ क़िस्म है।

## फ़ाएदा : अहलो इ़याल पर ख़र्च करने की फ़ज़ीलत :

यहां अहलो इ़याल ख़ुसूसन बच्चियों के साथ हुस्ने सुलूक पर उभारने वाली चन्द अहा़दीसे मुबा-रका ज़िक्र की जाती हैं :

﴾5﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''एक दीनार वोह है जो आप ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च किया, एक दीनार वोह है जो आप ने किसी ग़ुलाम पर ख़र्च किया, एक दीनार वोह है जो आप ने किसी मिस्कीन पर ख़र्च किया और एक दीनार वोह है जो आप ने अपने घर वालों पर ख़र्च किया, मगर इन में सब से ज़ियादा अज्र उस दीनार का है जो आप ने अपने घर वालों पर ख़र्च किया।''(2)

﴾6﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''सब से अफ़्ज़ल दीनार वोह है जो कोई आदमी अपने बच्चों पर ख़र्च करता है, फिर वोह है जो वोह राहे ख़ुदा में अपनी सुवारी पर ख़र्च करता है और फिर वोह दीनार है जो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में अपने दोस्तों पर ख़र्च करता है।''(3)

﴾7﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : ''इ़याल (या'नी औलाद) से इब्तिदा करो और उस शख़्स से ज़ियादा अज्र वाला कौन है जो अपने ना बालिग़ बच्चों पर ख़र्च करता है ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें सुवाल से बचाए या उस से उन्हें नफ़अ़ दे और उन्हें ग़नी कर दे (या'नी मोह़ताज न रहने दे)।''(4)

---

(1)......صحیح البخاری، کتاب الجمعة، باب الجمعة فی القری والمدن، الحدیث: ۸۹۳، ص۷۰۔

(2)......صحیح مسلم، کتاب الزکاة، باب فضل النفقة علی العیال ......الخ، الحدیث: ۲۳۱۱، ص۸۳۵۔

(3)......المرجع السابق، الحدیث: ۲۳۱۰۔ (4)......المرجع السابق۔



www.dawateislami.net

﴾8﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "मुझे जन्नत और जहन्नम में सब से पहले दाख़िल होने वाले 3 अफ़राद दिखाए गए। जन्नत में पहले दाख़िल होने वाले पहले 3 अश्ख़ास येह हैं : (1)...... शहीद (2)...... अच्छी त़रह़ अपने रब की इबादत करने वाला और अपने आक़ा का ख़ैर ख़्वाह ग़ुलाम (3)...... सुवाल से बचने वाला साह़िबे औलाद पाक दामन। जहन्नम में दाख़िल होने वाले पहले 3 अफ़राद येह हैं : (1)...... मुसल्लत़ (या'नी ग़रीबों पर अपनी बाला दस्ती क़ाइम रखने वाला) अमीर (2)...... साह़िबे सरवत जो अपने माल से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ अदा नहीं करता और (3)...... मु-तकब्बिर फ़क़ीर।"(1)

﴾9﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी एक त़वील ह़दीसे पाक में है : "बेशक तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये जो कुछ ख़र्च करते हो यहां तक कि जो लुक़्मा तुम अपनी बीवी के मुंह में डालते हो उस पर भी तुम्हें सवाब दिया जाता है।"(2)

﴾10﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "तुम जो कुछ अपने आप को खिलाते हो वोह तुम्हारे लिये स-दक़ा है। जो अपने बच्चे को खिलाते हो वोह भी स-दक़ा है। जो बीवी को खिलाते हो वोह भी स-दक़ा है और जो अपने ख़ादिम को खिलाते हो वोह भी स-दक़ा है(3)।"(4)

﴾11﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने ख़ुद पर इस लिये ख़र्च किया ताकि ख़ुद को सुवाल से बचाए तो येह स-दक़ा है और जिस ने अपने बीवी बच्चों और घर वालों पर ख़र्च किया तो येह भी स-दक़ा है।"(5)

---

1 ......صحیح ابن خزیمۃ، کتاب الزکاۃ، باب ذکرادخال مانع......الخ، الحدیث: ۲۲۴۹، ج۴، ص۸، "ثلاثۃ": بدلہ "ثلۃ"۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب رثاء النبی صلی اللہ علیہ وسلم سعد بن خولۃ، الحدیث: ۱۲۹۵، ص۱۰۱۔

3 ...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی इस ह़दीस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : "येह तमाम अफ़्आ़ल उस वक़्त स-दक़ा हैं जब कि उन में स-दक़े की निय्यत हो। क्यूं कि ह़दीसे सह़ीह़ में وَهُوَ يَحْتَسِبُهَا या'नी सवाब की उम्मीद करते हुए। की क़ैद आई है।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरत़ुबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "इन अल्फ़ाज़ (وَهُوَ يَحْتَسِبُهَا) से मा'लूम हुवा कि ख़र्च करने का सवाब उसी वक़्त मिलेगा जब क़ुरबत (या'नी सवाब) की निय्यत हो ख़्वाह ख़र्च करना वाजिब हो या मुबाह़ और इस के मफ़्हूम से येह बात भी मा'लूम हुई कि जिस ने क़ुरबत की निय्यत से ख़र्च नहीं किया वोह अज्र नहीं पाएगा लेकिन जो ख़र्चा उस पर वाजिब था उस ख़र्च करने से वोह अदा हो जाएगा।" (فیض القدیر للمناوی، تحت الحدیث: ۷۸۲۴، ج۵، ص۵۴۰، ملخصًا)

4 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث المقدام بن معدیکرب، الحدیث: ۱۷۱۷۹، ج۶، ص۹۲۔

5 ......المعجم الاوسط، الحدیث: ۷۸۹۷، ج۳، ص۷۲۔



www.dawateislami.net

﴾12﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : ''ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से अफ़्ज़ल है और मां बाप और बहन भाइयों में से उन लोगों से इब्तिदा करो जो तुम्हारी परवरिश में हैं और जो क़राबत दारी में ज़ियादा क़रीब है वोह नफ़क़ा में भी ज़ियादा क़रीब है।''(1)

﴾13﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक दिन सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से इर्शाद फ़रमाया : ''स-दक़ा किया करो।'' एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर मेरे पास एक दीनार है।'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''उसे अपनी ज़ात पर ख़र्च करो।'' उस ने अ़र्ज़ की : ''अगर मेरे पास एक और भी हो तो ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''उसे अपनी बीवी पर ख़र्च करो।'' अ़र्ज़ की : ''अगर एक और भी हो तो।'' इर्शाद फ़रमाया : ''उसे अपनी औलाद पर ख़र्च करो।'' अ़र्ज़ की : ''एक और भी हो तो।'' इर्शाद फ़रमाया : ''उसे अपने ख़ादिम पर ख़र्च करो।'' फिर अ़र्ज़ की : ''एक और भी हो तो।'' सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अब तुम ख़ुद देख लो (कि इस के बा'द ख़र्च के लिये कौन सी जगह बेहतर है)।''(2)

## हुसूले रिज़्क़ के लिये निकलने वाला मुजाहिद है :

﴾14﴿...... एक शख़्स हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के पास से गुज़रा, सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने उस का चाको चौबन्द होना देखा तो अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! काश ! येह शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में होता।'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर येह अपने ना बालिग़ बच्चों के लिये कमाई करने निकला है तो मुजाहिद है और अगर उ़म्र रसीदा बूढ़े वालिदैन के लिये रोज़ी की तलाश में है तो भी मुजाहिद है और अगर ख़ुद को सुवाल से बचाने के लिये निकला है तब भी मुजाहिद है, लेकिन अगर रियाकारी और फ़ख़्र के लिये कमाई करने निकला है तो शैत़ान की राह में है।''(3)

﴾15﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत

---

(1)......المعجم الكبير،الحديث : ١٠٤٠٥،ج١٠،ص١٨٦۔

(2)......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان،كتاب الزكاة، باب صدقة التطوع، الحديث : ٣٣٢٦،ج٥،ص١٤١۔

(3)......المعجم الكبير،الحديث : ٢٨٢،ج١٩،ص١٢٩،بتغيرٍقليلٍ۔



www.dawateislami.net

निशान है : ''हर नेकी स-दक़ा है और इन्सान अपने घर वालों पर जो कुछ ख़र्च करता है वोह उस के लिये बतौरे स-दक़ा लिख दिया जाता है, जिस माल के ज़रीए आदमी अपनी इ़ज़्ज़त बचाए वोह भी उस के लिये बतौरे स-दक़ा लिख दिया जाता है और मोमिन जो कुछ ख़र्च करता है अगर वोह उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के भरोसे पर छोड़ जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का ज़ामिन है सिवाए उस माल के जो उस ने किसी इमारत की ता'मीर या ना फ़रमानी के कामों में ख़र्च किया।''

''**वक़ा-यतुल इ़र्द**'' से मुराद येह है कि कोई बा इ़ज़्ज़त शख़्स इ़ज़्ज़त बचाने के लिये किसी शाइ़र या ज़बान दराज़ को माल दे।(1)

﴾16﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मदद मुसीबत के मुत़ाबिक़ आती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से सब्र आज़्माइश के बराबर अ़त़ा होता है।''(2)

﴾17﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''सब से पहले मीज़ान में बन्दे का अपने घर वालों पर ख़र्च करना रखा जाएगा।''(3)

﴾18﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़रह़त निशान है : ''तुम अपने घर वालों पर जो भी ख़र्च करते हो वोह स-दक़ा है।''(4)

## कौन सी चीज़ जहन्नम से आड़ है ?

﴾19﴿...... एक औ़रत उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की बारगाह में कुछ मांगने के लिये ह़ाज़िर हुई। उस के साथ उस की दो बेटियां भी थीं। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास सिर्फ़ एक खजूर थी, आप ने वोही उसे दे दी। उस ने वोह खजूर अपनी दोनों बेटियों में तक़्सीम कर दी और ख़ुद न खाई। उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस का तज़्किरा किया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिसे बच्चियों के

---

1......المستدرک، کتاب البیوع، باب کل معروف صدقة، الحدیث: ۲۳۵۸، ج۲، ص۳۵۸۔

2......الکامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی، الرقم ۹۶۱ طارق بن عمار، ج۵، ص۱۸۳، ۱۸۴۔

3......المعجم الاوسط، الحدیث: ۶۱۳۵، ج۴، ص۳۲۹۔

4......السنن الکبریٰ للنسائی، کتاب عشرة النساء، باب الفضل فی ذلک، الحدیث: ۹۱۸۴، ج۵، ص۳۷۶۔



www.dawateislami.net

ज़रीए किसी मुआ-मले में आज़्माया गया और उस ने उन का अच्छी त़रह़ ख़याल रखा तो येह उस के लिये जहन्नम से रोक या पर्दा बन जाएंगी।"[1]

﴾20﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا की ख़िदमत में एक मिस्कीन औ़रत अपनी दो बेटियों को ले कर आई। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने उसे तीन खजूरें इनायत फ़रमाईं। उस ने दोनों को एक एक खजूर दी और तीसरी खजूर खाने के लिये अपने मुंह की त़रफ़ बुलन्द की ही थी कि दोनों बेटियों ने मांग ली पस उस ने वोह खजूर भी तोड़ कर उन को खिला दी। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا इस बात से बहुत मु-तअस्सिर हुईं और सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस का ज़िक्र किया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस के सिले में उस के लिये जन्नत वाजिब कर दी या उसे जहन्नम से आज़ाद कर दिया।"[2]

﴾21﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : "जिस ने दो बच्चियों की बालिग़ होने तक परवरिश की क़ियामत के दिन मैं और वोह इस त़रह़ होंगे।" (रावी फ़रमाते हैं) फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी मुबारक उंग्लियों को मिला दिया।[3]

﴾22﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने दो बच्चियों की परवरिश की मैं और वोह जन्नत में यूं दाख़िल होंगे।" (रावी फ़रमाते हैं) फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी दो मुबारक उंग्लियों के साथ इशारा फ़रमाया।[4]

﴾23﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने दो या तीन बेटियों या दो या तीन बहनों की परवरिश की यहां तक कि वोह जवान हो गईं या परवरिश करते हुए उसे मौत आ गई तो मैं और वोह जन्नत में इन दो उंग्लियों की त़रह़ होंगे।" (रावी फ़रमाते हैं) फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी शहादत वाली

---

1 ......صحیح مسلم ،کتاب البر والصلة،باب فضل الاحسان الی البنات ،الحدیث : ۲۶۹۳،ص۱۱۳۶ ـ
جامع الترمذی ، ابواب البر والصلة ،باب ما جاء فی النفقة......الخ،الحدیث :۱۹۱۵،۱۹۱۳،ص۱۸۴۵ ـ

2 ......صحیح مسلم ،کتاب البر والصلة،باب فضل الاحسان الی البنات،الحدیث:۲۶۹۵،ص۱۱۳۶ ـ

3 ......صحیح مسلم،کتاب البر والصلة والادب ،باب فضل الاحسان الی البنات ،الحدیث :۲۶۹۴،ص۱۱۳۶ ـ

4 ......جامع الترمذی ،ابواب البر والصلة ،باب ما جاء فی النفقة......الخ،الحدیث :۱۹۱۴،ص۱۸۴۵ ـ



www.dawateislami.net

और उस के साथ वाली उंगली के साथ इशारा फ़रमाया ।(1)

﴾24﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस मुसल्मान की दो बेटियां हों और वोह उन के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आए तो जितना अ़र्सा वोह दोनों उस के साथ रही हों या वोह उन दोनों के साथ रहा हो बहर ह़ाल वोह उसे जन्नत में दाख़िल करा देंगी ।"(2)

﴾25﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस मुसल्मान की तीन बेटियां हों और वोह उन पर ख़र्च करे यहां तक कि वोह जवान या फ़ौत हो जाएं तो वोह उस के लिये जहन्नम से आड़ होंगी ।" एक औ़रत ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : "अगर दो बेटियां हों तो ?" इर्शाद फ़रमाया : "दो बेटियां हों फिर भी येही अज्र है ।"(3)

﴾26﴿...... दूसरी रिवायत में है कि "उस ने उन की ख़ूब निगह दाश्त की और उन के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता रहा तो उस के लिये जन्नत है ।"(4)

﴾27﴿...... और एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ भी हैं : "उन्हें अदब सिखाया और अच्छे अन्दाज़ से परवरिश की और उन का निकाह़ कर दिया तो उस के लिये जन्नत है ।"(5)

﴾28﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस की कोई बेटी हो और उस ने न तो उसे (ज़मानए जाहिलिय्यत की आ़दत पर ज़िन्दा) दफ़्न किया, न रुलाया और न ही बेटे को उस पर तरजीह़ दी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा ।"(6)

﴾29﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म

---

1 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان ، کتاب البر والاحسان ،باب صلة الرحم وقطعها ،الحدیث : ۴۴۸،ج ا ،ص۳۳۶۔

2 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الجنائز،باب ماجاء فی الصبر......الخ،الحدیث :۲۹۳۴،ج۴،ص۲۱۱۔

3 ......المعجم الکبیر،الحدیث : ۱۰۲ ،ج۱۸ ،ص۵۶،بتغیرٍقلیلٍ۔

4 ......جامع الترمذی،ابواب البر والصلة ،باب ما جاء فی النفقة علی البنات والاخوات ،الحدیث :۱۹۱۶ ،ص۱۸۴۵۔

5 ......سنن ابی داود، کتاب الأدب ،باب فی فضل من عال یتا می ،الحدیث : ۵۱۴۷،ص۱۵۹۹۔

6 ......المرجع السابق،الحدیث : ۵۱۴۶۔



www.dawateislami.net

है : ''जिस ने दो बेटियों या दो बहनों या दो क़रीबी रिश्तेदार बच्चियों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सवाब की उम्मीद पर ख़र्च किया यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से उन्हें ग़नी (या'नी मालदार) कर दिया या उन की किफ़ायत कर दी तो वोह दोनों उस के लिये जहन्नम से आड़ बन जाएंगी।''(1)

﴿30﴾...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस की तीन बेटियां हों वोह उन्हें रिहाइश मुहय्या करे, उन पर रह़्म करे और उन की कफ़ालत करे तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई।'' अ़र्ज़ की गई : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर दो हों तो ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''अगर्चे दो ही हों।'' रावी फ़रमाते हैं : बा'ज़ सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن का ख़याल है कि अगर कोई कहता : ''अगर एक हो।'' तो फिर भी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते : ''अगर्चे एक ही हो।''(2)

﴿31﴾...... बज़्ज़ार और त़-बरानी की रिवायत में इतना ज़ाइद है : ''और उन की शादी कर दी।''(3)

﴿32﴾...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस की तीन बेटियां हों वोह उन की मुफ़्लिसी, बदह़ाली और ख़ुशह़ाली पर हिम्मत न हारे तो उन पर रह़्म करने के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा।'' एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर दो बेटियां हों तो ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''दो बेटियां हों (तो भी येही हुक्म है)।'' एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर एक हो तो ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''एक हो (तो भी येही हुक्म है)।''(4)

---

(1)......المسند للامام احمدحنبل ،حدیث ام سلمة زوج النبی،الحدیث : ۲۶۵۷۸،ج۱۰،ص۱۷۹،بتغیرٍقلیلٍ۔

(2)......المسندللامام احمد بن حنبل،مسند جابرعن عبداللّٰہ،الحدیث : ۱۴۲۵۱،ج۵،ص۲۸۔

(3)......المعجم الاوسط،الحدیث : ۴۷۶۰،ج۳،ص۳۳۲۔

(4)......المستدرک،کتاب البروالصلة،باب من کن له ثلاث بنات......الخ ،الحدیث :۷۴۲۶،ج۵،ص۲۴۷۔

المصنف لابن ابی شیبة،کتاب الأدب،باب فی العطف علی البنات،الحدیث : ۷،ج۶،ص۱۰۴۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 302 : वालिदैन या इन में से एक की ना फ़रमानी करना ख़्वाह वोह वालिदैन के वालिदैन हों अगर्चे उन का इस से क़रीबी भी मौजूद हो

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे गिरामी क़द्र है :

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَیْــٴًـا وَّ بِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًا (پ۵، النساء:۳۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** की बन्दगी करो और उस का शरीक किसी को न ठहराओ और मां बाप से भलाई करो।

इस आयए मुबा-रका की तफ़्सीर में ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इर्शाद फ़रमाते हैं : ''وَبِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًا से मुराद येह है कि इन के साथ भलाई करे और ख़ुश अख़्लाक़ी से पेश आए और जवाब देने में इन के साथ सख़्त कलामी न करे, न इन्हें घूर कर देखे और न ही इन से अपनी आवाज़ बुलन्द करे बल्कि इन के सामने अपने आप को यूं ह़क़ीर तसव्वुर करे जैसे आक़ा के सामने गुलाम होता है।'' और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक और मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया :

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِیَّاهُ وَ بِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًاؕ اِمَّا یَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَاۤ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَاۤ اُفٍّ وَّ لَا تَنْهَرْهُمَا وَ قُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِیْمًا(۲۳) وَ اخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَ قُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّیٰنِیْ صَغِیْرًاؕ(۲۴) (پ۱۵، بنی اسرائیل:۲۳،۲۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि उस के सिवा किसी को न पूजो और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो अगर तेरे सामने उन में एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उन से हूं न कहना और उन्हें न झिड़क्ना और उन से ता'ज़ीम की बात कहना और उन के लिये आ़जिज़ी का बाज़ू बिछा नर्म दिली से और अ़र्ज़ कर कि ऐ मेरे रब तू इन दोनों पर रह़्म कर जैसा कि इन दोनों ने मुझे छुटपन (बचपन) में पाला।

### बा'ज़ अल्फ़ाज़े क़ुरआनी की तौज़ीह़

''وَبِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًا'' या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वालिदैन के साथ एह़सान करने का हुक्म फ़रमाया और इस से मुराद नेकी, शफ़्क़त, नरमी, मह़ब्बत और इन की रिज़ा की कोशिश करना है।

''فَلَا تَقُلْ لَّهُمَاۤ اُفٍّ'' या'नी इन्हें उफ़ तक कहने से भी मन्अ़ फ़रमाया क्यूं कि येह भी एक क़िस्म की ईज़ा है यहां तक कि तक्लीफ़ की कम अज़ कम सूरत से भी मन्अ़ फ़रमा दिया। चुनान्चे,



www.dawateislami.net

﴾1﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर लफ़्ज़े "**اُفٍّ**" से कम तक्लीफ़ वाला कोई कलिमा होता तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से भी मन्अ़ फ़रमा देता, पस ना फ़रमान जो भी अ़मल करे जन्नत में दाख़िल न होगा और फ़रमां बरदार जो चाहे करे जहन्नम में दाख़िल न होगा।"(1) (2)

"**قُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا**" इस का मा'ना येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दिया कि उन से नर्म लहजे में बात की जाए या'नी नर्म बात जो मेह्रबानी और नरमी पर मुश्तमिल हो और जहां तक मुम्किन हो उन की मरज़ी, रुज्हान और ख़्वाहिश की मुवा-फ़क़त का ख़याल रखे ख़ुसूसन उन के बुढ़ापे में क्यूं कि बूढ़ा शख़्स बच्चे की त़रह़ हो जाता है, इस लिये कि उस पर कम अ़क़्ली और ख़यालात की ख़राबी ग़ालिब आ जाती है, पस वोह बुरी चीज़ को अच्छा और अच्छी चीज़ को बुरा समझने लग जाता है। जब बुढ़ापे की ह़ालत में भी तुम से उन की निगह दाश्त और इन्तिहाई मेह्रबानी का मुत़ा-लबा किया गया है और येह कि अ़क़्ल के मुवाफ़िक़ ज़राएअ़ से उन की ख़ुशनूदी ह़ासिल करने की कोशिश करता रहे यहां तक कि वोह राज़ी हो जाएं तो इस ह़ालत के इ़लावा में उन की निगह दाश्त करना ब द-र-जए औला ज़रूरी होगा।

"**وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ**" नर्म गुफ़्त-गू का हुक्म देने के बा'द इर्शाद फ़रमाया कि उन से बात करने में सरापा आ़जिज़ी बन जा या'नी अपने आप को ज़लील समझ कर, ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ और आ़जिज़ी व इन्किसारी करते हुए उन के साथ कलाम करे और जो कलाम उन से सादिर हो (या'नी अगर वोह बुरा भला कहें तो) उसे बरदाश्त करे और उन पर येह ज़ाहिर करे कि वोह उन से नेकी करने और उन के हुक़ूक़ की अदाएगी में इन्तिहाई कोताही से काम ले रहा है जिस के सबब वोह इन्तिहाई ज़लील व ह़क़ीर है और वोह इसी ह़ालत पर रहे यहां तक

---

1......فردوس الاخبارللديلمی، الحديث: ۵۱۰۱، ج۲،ص۱۹۶،"لَنَهی عنه"بدله"لَحَرَّمَه"۔

2...... **वस्वसा :** क्या वालिदैन का ना फ़रमान नेक अ़मल करने के सबब भी जन्नत में न जाएगा ?
**जवाब :** जी हां वाक़ेई जन्नत में दाख़िल न होगा बल्कि मक़ामे आ'राफ़ पर रहेगा। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से पूछा गया कि अस्ह़ाबे आ'राफ़ कौन लोग हैं और आ'राफ़ क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : "आ'राफ़ जन्नत और जहन्नम के दरमियान एक पहाड़ है जिसे आ'राफ़ कहते हैं क्यूं कि वोह जन्नत व दोज़ख़ से बुलन्द है और उस पर दरख़्त फल नहरें और चश्मे हैं इस पर वोह लोग होंगे जिन्हों ने वालिदैन की रिज़ा के बिग़ैर जिहाद किया और शहीद हुए तो शहादत उन को जहन्नम में जाने से रोके हुए है और वालिदैन की ना फ़रमानी उन्हें जन्नत में जाने से रोके हुए है पस येह आ'राफ़ पर ही रहेंगे यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन का फ़ैसला फ़रमा दे।"
(الکبائر للذھبی،الکبيرة الثامنة:عقوق الوالدين،ص۴۲)


www.dawateislami.net

कि उन का दिल मुत्मइन हो जाए और वोह इस से दिली तौर पर राज़ी हो जाएं और इसे अपनी रिज़ा मन्दी और दुआओं से नवाज़ें।

इसी वज्ह से इस के बा'द उसे हुक्म दिया गया : ''وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا'' या'नी उन के लिये दुआ करे क्यूं कि उन की साबिक़ा ख़िदमत इस बात का तक़ाज़ा करती है कि वोह उन के लिये दुआ करें, लिहाज़ा अगर वालिदैन और औलाद में बराबरी भी फ़र्ज़ कर ली जाए तब भी औलाद उन के हक़ में दुआ मांग कर उन्हें बदला दे वरना दोनों (या'नी वालिदैन और औलाद) के मरातिब में बहुत फ़र्क़ है। और बराबरी भी कैसे तसव्वुर की जा सकती है ? हालां कि वोह तुम्हारी तक्लीफ़ और कमज़ोरी का बोझ बरदाश्त करते रहे, तुम्हारी तरबियत में अज़ीम मशक़्क़त उठाई, तुम्हारी ज़िन्दगी और सआदत की उम्मीद रखते हुए तुम पर हद द-रजा एहसान करते रहे लेकिन अगर तुम्हें इन तकालीफ़ का बोझ उठाना पड़ा तो उन की मौत की आरज़ू करने लगो और उन के साथ ज़िन्दगी बसर करने से उक्ता जाओ और मां तो इस से भी ज़ियादा तक्लीफ़ बरदाश्त करती और ज़ियादा सब्र करती है मज़ीद येह कि उस की इनायत और शफ़क़त ज़ियादा होती है क्यूं कि हम्ल, वज़्ए हम्ल, विलादत, दूध पिलाने और रातों को जागने की तक्लीफ़ उठाती है नीज़ गन्दगी और नजासत से आलूदा होती है। अपने बच्चे को साफ़ जगह पर लिटाती और आसाइश मुहय्या करती है। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मां के साथ नेकी करने पर 3 बार और बाप के साथ नेकी करने पर एक बार उभारा। चुनान्चे,

## मां की शान :

﴾2﴿...... एक शख़्स रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हो कर अर्ज़ गुज़ार हुवा : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे हुस्ने अख़्लाक़ का ज़ियादा हक़दार कौन है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''तुम्हारी मां।'' उस ने दोबारा अर्ज़ की : ''इस के बा'द कौन ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''तुम्हारी मां।'' तीसरी बार अर्ज़ की : ''इस के बा'द कौन ?'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस मर्तबा भी येही इर्शाद फ़रमाया : ''तुम्हारी मां।'' उस ने फिर अर्ज़ की : ''इस के बा'द कौन ?'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तेरा बाप, फिर क़रीबी का ज़ियादा हक़ है फिर जो उस के बा'द क़रीबी हो।''[1]

---

1 ......صحيح البخاری، كتاب الأدب، باب من احق الناس بحسن الصحبة، الحديث : ۵۹۷۱، ص۵۰۶۔

سنن ابی داود، كتاب الأدب، باب فی برالوالدين، الحديث : ۵۱۳۹، ص۱۵۹۹۔



www.dawateislami.net

﴾3﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने एक शख़्स को देखा कि वोह अपनी मां को अपनी गरदन पर उठाए का'बा शरीफ़ का त़वाफ़ कर रहा था, उस ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : ''ऐ **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ! आप क्या फ़रमाते हैं कि क्या मैं ने अपनी मां का ह़क़ अदा कर दिया है ?'' तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इर्शाद फ़रमाया : ''नहीं, येह तो पैदाइश के वक़्त के एक झटके का बदला भी नहीं, अलबत्ता ! तुम ने अच्छा अ़मल किया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें कम अ़मल पर ज़ियादा अज्र अ़त़ा फ़रमाएगा।''(1)

﴾4﴿...... एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : ''ऐ अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ! मेरी एक बीवी है और मेरी मां उसे त़लाक़ देने का हुक्म देती है (अब मैं क्या करूं ?)'' तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''मैं ने हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : ''मां जन्नत का दरमियानी दरवाज़ा है, पस अगर तुम चाहो तो उस दरवाज़े को ज़ाएअ़ कर दो या उस की ह़िफ़ाज़त करो।''(2)

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

اَنِ اشْكُرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیْكَؕ (پ۲۱، لقمٰن:۱۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** येह कि ह़क़ मान मेरा और अपने मां बाप का।

ऐ भाई ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे और तुम्हें इस हुक्मे क़ुरआनी पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। (आमीन) देख ! उस ने कैसे इन दोनों के शुक्र को अपने शुक्र के साथ मिला दिया।

﴾5﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इर्शाद फ़रमाया : 3 आयाते मुक़द्दसा 3 ऐसी चीज़ों के बारे में नाज़िल हुईं जो 3 अश्या के साथ जुड़ी हुई हैं, इन में से कोई भी चीज़ दूसरी के बिग़ैर क़बूल न होगी। (1)...... ''اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ (پ۵، النساء:۵۹)'' **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** हुक्म मानो **अल्लाह** का और हुक्म मानो रसूल का'' पस जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त की लेकिन रसूल की इत़ाअ़त न की तो वोह भी उस से क़बूल न की जाएगी (2)...... ''وَ اَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ (پ۱،البقرۃ:۴۳)'' **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो'' पस जिस ने नमाज़ पढ़ी लेकिन ज़कात न दी तो वोह भी उस से क़बूल न की जाएगी और (3)...... ''اَنِ اشْكُرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیْكَؕ (پ۲۱، لقمٰن:۱۴)'' **तर-ज-मए कन्ज़ुल**

---

1 ......اخبارمكة للفاكهى، ذكرطواف النساء الغرباء بالبيت......الخ،الحديث : ۶۴۳،ج۱،الجزء الاول،ص۳۱۲۔

2 ......جامع الترمذى ،ابواب البر والصلة ،باب ماجاء فى الفضل فى رضا الوالدين ،الحديث : ۱۹۰۰، ص۱۸۴۴۔



www.dawateislami.net

**ईमान :** येह कि ह़क़ मान मेरा और अपने मां बाप का।'' पस जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शुक्र अदा किया लेकिन अपने वालिदैन का शुक्र अदा न किया तो वोह भी उस से क़बूल न किया जाएगा।

﴾6﴿...... इसी वज्ह से रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा वालिदैन की रिज़ा में और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी वालिदैन की नाराज़ी में है।''(1)

## वालिदैन की ख़िदमत भी जिहाद है :

﴾7﴿...... एक शख़्स हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त में जिहाद करने की इजाज़त लेने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अ़-ज़मत में ह़ाज़िर हुवा। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''क्या तेरे वालिदैन ज़िन्दा हैं ?'' अ़र्ज़ की : ''जी हां।'' तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''उन की ख़िदमत कर, येही तेरा जिहाद है।''(2)

देखिये ! हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वालिदैन की ख़िदमत और इन के साथ भलाई करने को अपनी मइय्यत में जिहाद करने से भी अफ़्ज़ल क़रार दिया और सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीसे पाक में है (सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया :) ''क्या मैं तुम्हें सब से बड़े गुनाह के मु-तअ़ल्लिक़ न बताऊं ? (फिर ख़ुद ही फ़रमाया) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना और वालिदैन की ना फ़रमानी करना।''(3)

पस ग़ौर कीजिये कि हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वालिदैन के साथ बुराई करने और इन के साथ नेकी और एह़सान न करने को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराने के साथ बयान फ़रमाया। नीज़ इस हु़क्म को येह बात मज़ीद पुख़्ता करती है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वालिदैन के साथ दुन्या में भलाई का हु़क्म फ़रमाया अगर्चे वोह बेटे को शिर्क करने पर उक्साएं। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया :

وَ اِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰۤى اَنْ تُشْرِكَ بِیْ مَا لَیْسَ لَكَ بِهٖ

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर वोह दोनों तुझ से कोशिश करें कि मेरा शरीक ठहराए ऐसी

---

1 ......شعب الایمان للبیہقی ،باب فی بر الوالدین، الحدیث : ۷۸۳۰، ج۶، ص۱۷۷ ۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الجہاد، باب الجہاد باذن الابوین، الحدیث : ۳۰۰۴، ص۲۴۱ ۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب الأدب، باب عقوق الوالدین من الکبائر، الحدیث : ۵۹۷۶، ص۵۰۶ ۔



www.dawateislami.net

عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا وَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ (پ۲۱، لقمٰن۱۵) चीज़ को जिस का तुझे इल्म नहीं तो उन का कहना न मान और दुन्या में अच्छी त़रह़ उन का साथ दे और उस की राह चल जो मेरी त़रफ़ रुजूअ़ लाया।

जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ऐसे वालिदैन से भी भलाई का हुक्म इर्शाद फ़रमाया है जो अपने बेटे को शिर्क जैसी क़बाह़त में मुब्तला होने का हुक्म देते हैं तो फिर मुसल्मान वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक के मु-तअ़ल्लिक़ तुम्हारा क्या गुमान होगा ख़ुसूसन जब वोह नेक व सालेह़ हों।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम! वालिदैन के हुक़ूक़ तो सब से ज़ियादा सख़्त हैं और इन की सब से ज़ियादा ताकीद की गई है, नीज़ इन के हुक़ूक़ से सबुक दोश होना सब से मुश्किल और इन्तिहाई कठिन काम है, लिहाज़ा तौफ़ीक़ वाला वोही है जिसे इन हुक़ूक़ की अदाएगी की तौफ़ीक़ अ़त़ा की गई और जिसे इन की अदाएगी से मह़रूम कर दिया गया वोह मुकम्मल त़ौर पर मह़रूम है। ह़दीस शरीफ़ में इस की इतनी ज़ियादा ताकीद है जिस की कसरत व इन्तिहा को शुमार नहीं किया जा सकता। चुनान्चे,

﴾8﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने 3 बार इस्तिफ़सार फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें सब से बड़े गुनाहों के बारे में न बताऊं?" हम ने अ़र्ज़ की : "जी हां! **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم! (ज़रूर बताइये)।" इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करना और **वालिदैन की ना फ़रमानी करना।**" आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم टेक लगाए हुए थे फिर बैठ गए और इर्शाद फ़रमाया : "ख़बरदार! और झूटी बात और झूटी गवाही (भी सब से बड़े गुनाह हैं)।" आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बार बार येह फ़रमाते रहे यहां तक कि हम कहने लगे : "काश! आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश हो जाएं।"(1)

﴾9﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, **वालिदैन की ना फ़रमानी करना**, किसी जान को क़त्ल करना और झूटी क़सम खाना कबीरा गुनाह हैं।"(2)

﴾10﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कबीरा गुनाह ज़िक्र करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الشھادات، باب ما قیل فی شھادۃ الزور، الحدیث: ۲۶۵۴، ۵۹۷۶، ۶۹۱۹، ص۲۰۶، ۵۰۶، ۵۷۷۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الایمان والنذور، باب الیمین الغموس......الخ، الحدیث: ۶۶۷۵، ص۵۵۸۔



www.dawateislami.net

के साथ शरीक ठहराना और वालिदैन की ना फ़रमानी करना (कबीरा गुनाह हैं) ।''(1)

﴾11﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन ह़ज़्म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अहले यमन की त़रफ़ जो ख़त़ दे कर भेजा था, उस में ज़िक्र फ़रमाया : ''बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बड़े गुनाह येह होंगे : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, नाह़क़ किसी मोमिन को क़त्ल करना, जंग के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह (में जिहाद करने) से भागना, **वालिदैन की ना फ़रमानी करना**, पाक दामन औ़रत पर ज़िना की तोहमत लगाना, जादू सिखाना, सूद खाना और यतीम का माल खाना ।''(2)

﴾12﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक येह सब से बड़ा गुनाह है कि इन्सान अपने वालिदैन पर ला'नत भेजे ।'' अ़र्ज़ की गई : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! कोई शख़्स अपने वालिदैन पर किस त़रह़ ला'नत भेज सकता है ?'' तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह किसी के बाप को गाली दे तो वोह इस के बाप को गाली दे ।''(3)

﴾13﴿...... एक रिवायत में है : ''किसी आदमी का **अपने वालिदैन को गालियां देना** कबीरा गुनाहों में से है ।'' सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या कोई आदमी अपने वालिदैन को भी गालियां दे सकता है ?'' तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हां ! येह किसी के बाप को गाली दे तो वोह इस के बाप को गाली दे और येह किसी की मां को बुरा भला कहे तो वोह इस की मां को बुरा भला कहे ।''(4)

﴾14﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम पर **माओं की ना फ़रमानी**, बच्चियों को ज़िन्दा दरगोर करना, मुस्तहि़क़्क़ीन से उन का ह़क़ रोकना और ख़ुद नाह़क़ वुसूल करना ह़राम क़रार दिया है और क़ीलो क़ाल (या'नी फ़ुज़ूल गुफ़्त-गू) , कस्रते सुवाल और माल का ज़ियाअ़ (या'नी इसराफ़) मकरूह क़रार

(1)......صحیح البخاری، کتاب الادب، باب عقوق الوالدین من الکبائر، الحدیث : ۵۹۷۷، ص۵۰۶۔

(2)......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان ، کتاب التاریخ ، باب کتب النبی، الحدیث : ۶۵۲۵، ج۸، ص۱۸۰۔

(3)......صحیح البخاری ، کتاب الادب ، باب لایسب الرجل والدیه، الحدیث : ۵۹۷۳، ص۵۰۶۔

(4)......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الکبائر واکبرها، الحدیث : ۲۶۳، ص۶۹۳۔



www.dawateislami.net

दिया है।''(1)

﴾15﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ 3 (क़िस्म के) लोगों पर नज़रे रह़मत न फ़रमाएगा : (1)..... वालिदैन का ना फ़रमान (2)...... शराब का आ़दी और (3)...... अपनी अ़ता पर एह़सान जतलाने वाला।'' और 3 (क़िस्म के) लोग जन्नत में दाख़िल न होंगे : (1)...... वालिदैन का ना फ़रमान (2)...... दय्यूस(2) और (3)...... मर्दों की मुशा-बहत इख़्तियार करने वाली औ़रत।''(3)

﴾16﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''3 (क़िस्म के) लोगों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत ह़राम फ़रमा दी है : (1)...... शराब का आ़दी (2)...... वालिदैन का ना फ़रमान और (3)...... दय्यूस जो अपने अहले ख़ाना में ख़बासत क़ाइम रखता है (या'नी इ़ल्म होने के बा वुजूद उन्हें बदकारी व फ़ह़्ह़ाशी से नहीं रोकता)।''(4)

﴾17﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जन्नत की ख़ुश्बू 500 साल की मसाफ़त से सूंघी जाएगी लेकिन एह़सान जतलाने वाला, वालिदैन का ना फ़रमान और आ़दी शराबी इस की ख़ुश्बू न पाएगा।''(5)

﴾18﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ 3 (क़िस्म के) लोगों के नफ़्ल क़बूल करेगा न फ़र्ज़ : (1) वालिदैन का ना फ़रमान

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الاستقراض والدیون، باب ماینھی عن اضاعۃ المال، الحدیث: ۲۴۰۸، ص۱۸۸۔

2 ...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 397 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**पर्दे के बारे में सुवाल जवाब**'' सफ़ह़ा 65 और 66 पर शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ इर्शाद फ़रमाते हैं : जो लोग बा वुजूदे क़ुदरत अपनी औ़रतों और महारिम को बे पर्दगी से मन्अ़ न करें वोह ''दय्यूस'' हैं दय्यूस के बारे में ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन ह़स्कफ़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''**दय्यूस** वोह शख़्स होता है जो अपनी बीवी या किसी मह़रम पर ग़ैरत न खाए।'' (درمختار، ج۶، ص۱۱۳) **मा'लूम हुवा कि बा वुजूदे क़ुदरत अपनी ज़ौजा, मां बहनों और जवान बेटियों वग़ैरा को गलियों बाज़ारों, शोपिंग सेन्टरों और मख़्लूत़ तफ़्रीह़ गाहों में बे पर्दा घूमने फिरने, अजनबी पड़ोसियों, ना मह़रम रिश्तेदारों, ग़ैर मह़रम मुलाज़िमों, चोकीदारों और ड्राइवरों से बे तकल्लुफ़ी और बे पर्दगी से मन्अ़ न करने वाले दय्यूस जन्नत से मह़रूम और जहन्नम के ह़क़दार हैं।**

3 ......المستدرک، کتاب الاشربۃ، باب ذکر ثلاثۃ لایدخلون الجنۃ، الحدیث: ۷۳۱۷، ۲۵۲، ج۵، ۱، ص۲۰۳، ۲۵۳۔

4 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللہ بن عمر بن الخطاب، الحدیث: ۶۱۲۱، ج۲، ص۴۸۲۔

5 ......المعجم الصغیر للطبرانی، الحدیث: ۴۰۹، الجزء الاول، ص۱۴۵۔



www.dawateislami.net

(2) एह्सान जतलाने वाला और (3) तक्दीर को झुटलाने वाला।''[1]

﴿19﴾...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि 4 (क़िस्म के) लोगों को जन्नत में दाख़िल न करे और न ही उन्हें इस की ने'मतें चखाए : (1)...... शराब का आ़दी (2)...... सूद खाने वाला (3)...... नाह़क़ यतीम का माल खाने वाला और (4)...... वालिदैन का ना फ़रमान।''[2]

﴿20﴾...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''3 गुनाह ऐसे हैं कि जिन के होते हुए कोई अ़मल नफ़्अ़ नहीं देता : (1)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना (2)...... वालिदैन की ना फ़रमानी करना और (3)...... जंग से भागना।''[3]

﴿21﴾...... एक शख़्स बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं, मैं पांचों नमाज़ें पढ़ता हूं, अपने माल की ज़कात अदा करता हूं और र-मज़ान के रोज़े भी रखता हूं।'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो इस ह़ालत पर मरा जब कि अपने वालिदैन की ना फ़रमानी न करे तो बरोज़े क़ियामत वोह अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शु-हदा और सालिह़ीन के साथ इस त़रह़ होगा।'' और साथ ही अपनी दो मुबारक उंगलियों से इशारा फ़रमाया।[4]

﴿22﴾...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे 10 कलिमात की वसिय्यत की (उन में से चन्द येह हैं) : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक न ठहराओ अगर्चे तुझे क़त्ल कर दिया जाए और जला दिया जाए और अपने वालिदैन की ना फ़रमानी न करो अगर्चे वोह तुझे हुक्म दें कि अपने अहलो माल को छोड़ दे।''[5]

﴿23﴾...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं : हम (चन्द सहा़बा) एक जगह जम्अ़ थे ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन

---

1 ......السنة للامام ابن ابی عاصم ،باب ما ذکرعن النبی علیه السلام فی المکذبین......الخ، الحدیث:۳۳۲، ص۷۳۔

2 ......المستدرک ،کتاب البیوع،باب ان اربی الربا عرض الرجل المسلم ،الحدیث:۲۳۰۷،ج۲،ص۳۳۸۔

3 ......المعجم الکبیر،الحدیث :۱۴۲۰،ص۲،ص۹۵۔

4 ......الترغیب والترهیب،کتاب البر والصلة ،باب الترهیب من عقوق الوالدین ،الحدیث :۳۸۲۸،ج۳، ص۲۶۴۔

5 ......المسند للامام احمد بن حنبل ،حدیث معاذ بن جبل ،الحدیث :۲۲۱۳۶،ج۸،ص۲۴۹۔



www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ मुसल्मानों के गुरौह ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और सिलए रेहमी करो क्यूं कि सिलए रेहमी से जल्द किसी चीज़ का सवाब नहीं मिलता, बग़ावत व सरकशी से बचो क्यूं कि इस से जल्द किसी चीज़ की सज़ा नहीं मिलती और **वालिदैन की ना फ़रमानी से बचो** बेशक जन्नत की ख़ुश्बू हज़ार (1000) साल की मसाफ़त से आएगी मगर वालिदैन का ना फ़रमान, क़त्ए रेहमी करने वाला, बूढ़ा ज़ानी और तकब्बुर से अपना तहबन्द लटकाने वाला इस की ख़ुश्बू न सूंघ सकेगा। बेशक किब्रियाई **अल्लाहु रब्बुल आ-लमीन** ही के लिये है, झूट सरासर गुनाह है, अलबत्ता ! वोह ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ बात गुनाह नहीं जिस के ज़रीए तू किसी मोमिन को नफ़्अ़ दे या दीन से ए'तिराज़ दूर करे और बेशक जन्नत में एक बाज़ार है जिस में ख़रीदो फ़रोख़्त न होगी उस में सिर्फ़ सूरतें होंगी। पस जन्नती मर्द या औ़रत को जो सूरत पसन्द आएगी वोह उसी में दाख़िल हो जाएगा।''(1)

﴿24﴾...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर हक़ है कि 4 (क़िस्म के) लोगों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाए न उस की ने'मतें चखाए : (1)...... शराब का आ़दी (2)...... सूद खाने वाला (3)...... नाहक़ यतीम का माल खाने वाला और (4)...... वालिदैन का ना फ़रमान।''(2)

﴿25﴾...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''शराब का आ़दी, **वालिदैन का ना फ़रमान** और दे कर एहसान जतलाने वाला **ह़ज़ी-रतुल क़ुद्स** (या'नी जन्नत) में दाख़िल न होगा।''(3)

﴿26﴾...... बज़्ज़ार की रिवायत में **ह़ज़ी-रतुल क़ुद्स** की बजाए **जिनानुल फ़िरदौस** के अल्फ़ाज़ हैं।(4)

﴿27﴾...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''शराब का आ़दी, **वालिदैन का ना फ़रमान** और कुछ दे कर एहसान जतलाने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा।'' ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا इर्शाद फ़रमाते हैं : ''येह फ़रमान मुझे ब ज़ाहिर सख़्त मा'लूम हुवा क्यूं

1 ......المعجم الاوسط،الحديث: ۵۶۶۴،ج۴،ص۱۸۷۔

2 ......المستدرک،کتاب البیوع ،باب ان اربی الربا عرض الرجل المسلم ،الحدیث:۲۳۰۷،ج۲، ص۳۳۸۔

3 ......المعجم الاوسط، الحديث : ۸۵۹۲،ج ۶،ص۲۲۵۔

4 ......الترغيب والترهيب ،كتاب الحدود،باب الترهيب من شرب الخمر......الخ،الحديث :۳۶۰۲،ج۳،ص۲۰۲۔



www.dawateislami.net

कि मुअमिनीन से गुनाह सरज़द हो जाते हैं ह़त्ता कि मैं ने कुरआने पाक में वालिदैन के ना फ़रमान के बारे में येह हुक्म पाया : ''فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَ تُقَطِّعُوْۤا اَرْحَامَكُمْ﴿۲۲﴾ (پ۲۶، محمد:۲۲) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो क्या तुम्हारे येह लच्छन (अन्दाज़) नज़र आते हैं कि अगर तुम्हें हुकूमत मिले तो ज़मीन में फ़साद फैलाओ और अपने रिश्ते काट दो।'' **एह़सान** जतलाने वाले के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाया : ''لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَ الْاَذٰى ۙ (پ۳، البقرۃ:۲۶۴) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** अपने स-दक़े बात़िल न कर दो एह़सान रख कर और ईज़ा दे कर।'' और **शराब** के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाया : ''اِنَّمَا الْخَمْرُ وَ الْمَيْسِرُ وَ الْاَنْصَابُ وَ الْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ (پ ۷، المائدۃ:۹۰) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** शराब और जूआ और बुत और पांसे नापाक ही हैं शैत़ानी काम।''[1]

﴾28﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने 7 बन्दों पर 7 आस्मानों के ऊपर से ला'नत फ़रमाई और उन में से एक पर 3 बार ला'नत भेजी और हर एक पर ऐसी ला'नत फ़रमाई कि (बत़ौरे सज़ा) उस के लिये येही काफ़ी है। फिर इर्शाद फ़रमाया : (1)...... जिस ने क़ौमे लूत़ का सा अ़मल किया वोह मल्ऊ़न है। जिस ने क़ौमे लूत़ का सा अ़मल किया वोह मल्ऊ़न है। जिस ने क़ौमे लूत़ का सा अ़मल किया वोह मल्ऊ़न है (2)...... जिस ने ग़ैरुल्लाह के नाम पर जानवर ज़ब्ह़ किया वोह भी मल्ऊ़न है और (3)...... जिस ने अपने वालिदैन की ना फ़रमानी की वोह भी मल्ऊ़न है।''[2]

﴾29﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने ग़ैरुल्लाह के नाम पर जानवर ज़ब्ह़ किया उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत हो, जिस ने ज़मीन की ह़दों और निशानियों को तब्दील किया उस पर भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत हो और जिस ने अपने वालिदैन को गाली दी उस पर भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत हो।''[3]

﴾30﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''**वालिदैन की ना फ़रमानी** के इ़लावा गुनाहों में से जिस गुनाह की सज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुअख़्ख़र करना चाहता है तो क़ियामत तक मुअख़्ख़र फ़रमा देता है मगर वालिदैन के ना फ़रमान को मरने से पहले दुन्या ही में सज़ा देता है।''[4]

---

1 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۱۱۷۰، ج۱۱، ص۸۲۔ 2 ......المعجم الاوسط، الحدیث: ۸۴۹۷، ج۶، ص۱۹۹۔

3 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الحدود، باب الزنا وحدہ، الحدیث: ۴۴۰۰، ج۶، ص۲۹۹۔

4 ......المستدرک، کتاب البر والصلۃ، باب کل الذنوب یوخر اللّٰہ......الخ، الحدیث: ۷۳۴۵، ج۵، ص۲۱۷۔



www.dawateislami.net

﴾31﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि "एक शख़्स बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे बाप ने मेरा माल ले लिया है।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जाओ और अपने बाप को ले कर आओ।" इतने में ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सलाम भेजा है और इर्शाद फ़रमाया है कि "जब वोह बूढ़ा शख़्स आए तो उस बात के मु-तअ़ल्लिक़ उस से दरयाफ़्त फ़रमाएं जो उस ने अपने दिल में कही और जिसे उस के कानों ने भी न सुना।"

जब बूढ़ा शख़्स ह़ाज़िर हुवा तो हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "आप के बेटे का क्या मुआ-मला है ? वोह शिकायत कर रहा है कि आप उस का माल लेना चाहते हैं ?" उस ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! उस से पूछिये कि क्या मैं ने वोह माल उस की फूफियों, ख़ालाओं और अपने आप पर ख़र्च नहीं किया ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ठीक है (लेकिन) मुझे वोह बताओ जो तुम ने अपने दिल में कहा और तुम्हारे कानों ने भी न सुना।" बूढ़े ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ यक़ीनन हमें आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ब-र-कत का वाफ़िर ह़िस्सा अ़त़ा फ़रमाएगा, मैं ने अपने दिल में एक ऐसी बात कही जो मेरे कानों ने भी न सुनी।" इर्शाद फ़रमाया : "अब तुम बोलो और मैं सुनता हूं।" अ़र्ज़ की : "मैं ने (अश्आ़र में) येह कहा था :

غَذَوْتُكَ مَوْلُوْدًا وَمُنْتُكَ يَافِعًا ❊ تُعَلُّ بِمَا اَجْنِيْ عَلَيْكَ وَتَنْهَلُ
اِذَا لَيْلَةٌ ضَاقَتْكَ بِالسَّقَمِ لَمْ اَبِتُّ ❊ لِسَقَمِكَ اِلَّا سَاهِرًا اَتَمَلْمَلُ
كَاَنِّيْ اَنَا الْمَطْرُوْقُ دُوْنَكَ بِالَّذِيْ ❊ طُرِقْتَ بِهٖ دُوْنِيْ فَعَيْنَيَّ تَهْمِلُ
تَخَافُ الرَّدٰى نَفْسِيْ عَلَيْكَ وَاِنَّهَا ❊ لَتَعْلَمُ اَنَّ الْمَوْتَ وَقْتٌ مُؤَجَّلُ
فَلَمَّا بَلَغْتَ السِّنَّ وَالْغَايَةَ الَّتِيْ ❊ اِلَيْهَا مَدٰى مَا فِيْكَ كُنْتُ اُؤَمِّلُ
جَعَلْتَ جَزَآئِيْ غِلْظَةً وَفَظَاظَةً ❊ كَاَنَّكَ اَنْتَ الْمُنْعِمُ الْمُتَفَضِّلُ
فَلَيْتَكَ اِذْ لَمْ تَرْعَ حَقَّ اُبُوَّتِيْ ❊ فَعَلْتَ كَمَا الْجَارُ الْمُجَاوِرُ يَفْعَلُ
تَرَاهُ مُعِدًّا لِلْخِلَافِ كَاَنَّهٗ ❊ بِرَدٍّ عَلٰى اَهْلِ الصَّوَابِ مُوَكَّلُ



www.dawateislami.net

**तरजमा :** (1)...... मैं ने बचपन में तेरी परवरिश की और जवानी तक तुझ पर एह्सान किया, जो तेरी ख़ातिर कमाता तू उसी के खाने पीने में लगातार मश्ग़ूल रहा।

(2)...... जब रात ने बीमारी में तुझे कमज़ोर कर दिया तो मैं तेरी बीमारी की वज्ह से रात भर बे क़रारी की ह़ालत में बेदार रहा।

(3)...... गोया तेरी जगह मैं उस मरज़ का शिकार था जिस ने तुझे अपनी लपेट में ले लिया था जिस के सबब मेरी आंखें थमने का नाम न लेती थीं।

(4)...... मेरा दिल तेरी हलाकत से डर रहा था ह़ालां कि इसे मा'लूम था कि मौत का एक वक़्त मुक़र्रर है।

(5)...... जब तू भरपूर जवानी की उ़म्र को पहुंचा जिस की मैं अ़र्सए दराज़ से तमन्ना कर रहा था।

(6)...... तो तू ने मेरे एह्सान का बदला इन्तिहाई सख़्ती की सूरत में दिया गोया फिर भी तू ही एह्सान और मेह्रबानी करने वाला है।

(7)...... और तू ने मेरे बाप होने का लिह़ाज़ तक न किया बल्कि ऐसा सुलूक किया जैसे पड़ोसी पड़ोसी के साथ करता है।

(8)...... आप इसे (या'नी मेरे बेटे को) हर वक़्त मेरी मुख़ा-लफ़त पर तय्यार पाएंगे गोया इसे अहले ह़क़ का इन्कार करने पर ही मुक़र्रर किया गया हो।

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : पस उसी वक़्त सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के बेटे का गिरेबान पकड़ कर खींचा और इर्शाद फ़रमाया : "तू और तेरा माल तेरे बाप का है।"(1)

﴾32﴿...... तफ़्सीरे कश्शाफ़ में **सूरए बनी इसराईल** के तह़त येही रिवायत इस त़रह़ है कि "मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में एक शख़्स ने अपने बाप की शिकायत की, कि वोह इस का माल ले लेता है, तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे बुलाया और देखा तो वोह एक बूढ़ा शख़्स था जो लाठी का सहारा लिये हुए ह़ाज़िर हुवा। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से ह़क़ीक़ते ह़ाल दरयाफ़्त फ़रमाई तो उस ने अ़र्ज़ की : "जब येह कमज़ोर था और मैं त़ाक़त वर था, येह फ़क़ीर था और मैं अमीर था तो उस वक़्त मैं ने अपने माल में से कोई चीज़ इस पर न रोकी और अब मैं ज़ईफ़ व कमज़ोर हूं और येह क़ुव्वत वाला है और मैं फ़क़ीर हूं और येह मालदार है लेकिन अपने माल के मुआ-मले में मुझ पर बुख़्ल करता है।" तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आबदीदा हो गए और इर्शाद फ़रमाया : "कोई जंगल और बस्ती वाली (या ख़ुश्को तर) चीज़ ऐसी नहीं जो येह सुन

---

(1)......المعجم الصغیر للطبرانی،الحدیث : ۹۴۷،الجزء الثانی،ص۶۲۔



www.dawateislami.net

कर रोई न हो।" फिर उस के बेटे से इर्शाद फ़रमाया : "तू और तेरा माल तेरे बाप का है।"(1)

﴾33﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे नाज़ में एक शख़्स अपने बाप के ख़िलाफ़ शिकायत ले कर ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "उस ने मुझ से मेरा माल ले लिया है।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या तू नहीं जानता कि तू और तेरा माल तेरे बाप की कमाई से है।"(2)

﴾34﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा रह़मत में एक शख़्स ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "मेरा बाप मेरा माल तलफ़ (या'नी बे जा इस्ति'माल) करना चाहता है।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तू और तेरा माल तेरे बाप का है, क्यूं कि तुम्हारी औलाद तुम्हारी बेहतरीन कमाई है पस अपने अम्वाल में से खाओ।"(3)

﴾35﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हम सब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर थे कि एक शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "एक नौ जवान जां कनी की ह़ालत में है, उसे कहा गया لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ पढ़ो तो वोह न पढ़ सका।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या वोह नमाज़ पढ़ता था ?" अ़र्ज़ की : "जी हां।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उठ कर चल दिये तो हम भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ चल पड़े, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नौ जवान के पास पहुंचे और उसे फ़रमाया : "لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ पढ़ो।" उस ने अ़र्ज़ की : "मैं नहीं पढ़ सकता।" दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्यूं नहीं पढ़ सकते ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बताया गया : "येह अपनी मां की ना फ़रमानी करता था।"

हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या इस की वालिदा ज़िन्दा है ?" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "जी हां।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उसे बुला लाओ।" तो सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने उस की वालिदए मोह़्-त-रमा को बुलाया तो वोह ह़ाज़िरे ख़िदमत

---

1 ......الکشاف،بنی اسرائیل،تحت الآیۃ۲۴،ج۲،ص۶۵۹۔

2 ......المعجم الکبیر،الحدیث : ۱۳۳۴۵،ج۱۲،ص۲۷۷۔

3 ......سنن ابن ماجہ،ابواب التجارات ،باب ما للرجل من مال ولدہ ،الحدیث: ۲۲۹۲،ص۲۶۱۴۔



www.dawateislami.net

हो गई, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : "क्या येह आप का बेटा है ?" उस ने जवाब दिया : "जी हां ।" इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हारा क्या ख़याल है कि अगर मैं ज़बर दस्त आग भड़काऊं और तुम्हें कहा जाए कि अगर इस की सिफ़ारिश करोगी तो हम इसे छोड़ देंगे वरना आग में जला देंगे तो क्या इस की सिफ़ारिश करोगी ?" उस ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! तब तो मैं सिफ़ारिश करती हूं ।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को और मुझे इस बात का गवाह बनाओ कि तुम इस से राज़ी हो गई हो ।" उस ने अ़र्ज़ की : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझे और तेरे रसूल को गवाह बनाती हूं कि मैं अपने बेटे से राज़ी हो गई हूं ।" इस के बा'द **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस लड़के से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लड़के ! पढ़ो "لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ" जब उस ने पढ़ा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने इसे जहन्नम से नजात अ़ता फ़रमाई ।"(1)

﴿36﴾...... येह वाक़िआ़ मज़ीद तफ़्सील के साथ भी मरवी है । और वोह येह है कि "उस नौ जवान का नाम अ़ल्क़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ था, वोह नमाज़, रोज़ा और स-दक़ा जैसी इबादत की अदाएगी में ह़द द-रजा कोशिश करता, वोह बीमार हो गया और उस का मरज़ तूल पकड़ गया, उस ने अपनी बीवी को सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अ़-ज़मत में येह पैग़ाम दे कर भेजा : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरा शोहर अ़ल्क़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ालते नज़्अ़ में है, मैं ने चाहा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उस की ह़ालत से आगाह करूं ।"

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार, ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल और ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब रूमी رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को भेजा और इर्शाद फ़रमाया : "उन के पास जाएं और उन्हें कलिमए शहादत की तल्क़ीन करें ।" लिहाज़ा वोह सब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आए और उन्हें ह़ालते नज़्अ़ में पा कर لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ की तल्क़ीन करना शुरूअ़ कर दी लेकिन उन की ज़बान इसे अदा नहीं कर पा रही थी, उन्हों ने सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास सूरते ह़ाल अ़र्ज़ की, तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या उस के वालिदैन में से कोई ज़िन्दा है ?" अ़र्ज़ की गई : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इन की बूढ़ी मां है ।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(1)......الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلة، باب الترھیب من عقوق الوالدین، الحدیث: ۳۸۳۲، ج۳، ص۲۶۶۔


www.dawateislami.net

ने एक क़ासिद को येह पैग़ाम दे कर उन के पास भेजा : "अगर आप मेरे पास आ सकती हैं तो आ जाएं वरना घर में ही मेरा इन्तिज़ार करें यहां तक कि मैं आ जाऊं।"

जब क़ासिद ने जा कर उन्हें येह बताया तो वोह कहने लगीं : "मेरी जान आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कुरबान ! मेरा ज़ियादा ह़क़ बनता है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िरी दूं।" वोह लाठी के सहारे खड़ी हो गईं और दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ किया, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी उसे सलाम का जवाब मर्ह़मत फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अ़ल्क़मा की मां ! तुम सच बोलो या झूट, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से वह़्य आ चुकी है, आप के बेटे अ़ल्क़मा का क्या ह़ाल था ?" उस ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह बहुत ज़ियादा नमाज़ पढ़ने वाला, रोज़े रखने वाला और स-दक़ा देने वाला था।" फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम्हारा क्या ह़ाल है ?" अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं तो इस पर नाराज़ हूं।" पूछा : "किस वज्ह से ?" अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह अपनी बीवी को मुझ पर तरजीह़ देता और मेरी ना फ़रमानी किया करता था।"

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अ़ल्क़मा की मां की नाराज़ी ने इस की ज़बान को कलिमए शहादत पढ़ने से रोक दिया है।" फिर इर्शाद फ़रमाया : "ऐ बिलाल ! जाओ और बहुत सारी लकड़ियां इकठ्ठी करो।" उस औ़रत ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! उन्हें क्या करेंगे ?" इर्शाद फ़रमाया : "अ़ल्क़मा को आग में जलाऊंगा।" उस ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरा दिल बरदाश्त नहीं कर सकता कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे बेटे को मेरे सामने आग में जलाएं।" इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अ़ल्क़मा की मां ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब तो इस से भी सख़्त और हमेशा रहने वाला है, अगर तुझे येह पसन्द है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस की मग़्फ़िरत फ़रमा दे तो इस से राज़ी हो जा, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! जब तक तुम अपने बेटे से नाराज़ रहोगी उस वक़्त तक इस की नमाज़, रोज़ा और स-दक़ा इसे नफ़्अ़ न देगा।" उस ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस के फ़रिश्तों और यहां मौजूद मुसल्मानों को गवाह बनाती हूं कि मैं अपने बेटे अ़ल्क़मा से राज़ी हो चुकी हूं।"



www.dawateislami.net

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ बिलाल ! उस के पास जाओ और देखो कि क्या वोह (कलिमए तृय्यिबा) لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ पढ़ने की इस्तिताअ़त रखता है या नहीं ? हो सकता है कि अ़ल्क़मा की मां ने मुझ से ह़या करते हुए वोह बात कह दी हो जो उस के दिल में न हो।'' ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه तशरीफ़ ले गए और ह़ज़रते अ़ल्क़मा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को घर के अन्दर لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ पढ़ते हुए सुना तो इन्हों ने अन्दर आ कर फ़रमाया : ''ऐ लोगो ! बेशक अ़ल्क़मा की ज़बान को इस की मां की नाराज़ी ने कलिमए शहादत पढ़ने से रोक दिया था और उस की रिज़ा मन्दी ने अब इस की ज़बान को आज़ाद कर दिया है।'' फिर उसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه विसाल फ़रमा गए।

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और उन्हें ग़ुस्ल देने और कफ़न पहनाने का हुक्म इर्शाद फ़रमाया, फिर उन पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और उन की तदफ़ीन के वक़्त तक मौजूद रहे, फिर उन की क़ब्र के कनारे खड़े हो कर इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ मुहाजिरीन व अन्सार ! जिस ने अपनी बीवी को अपनी मां पर फ़ज़ीलत दी उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, फ़रिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के न नफ़्ल क़बूल फ़रमाएगा न ही फ़र्ज़ मगर येह कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करे और अपनी मां से हुस्ने सुलूक करे और उस की रिज़ा चाहे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा मां की रिज़ा मन्दी में है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी मां की नाराज़ी में है।''

## मां के ना फ़रमान शराबी का अन्जाम :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अस्बहानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى वग़ैरा से मन्क़ूल है और येही वाक़िआ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अ़ब्बास असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने हुफ़्फ़ाज़े ह़दीस के एक इज्तिमाअ़ में बयान किया तो उन में से किसी ने इस का इन्कार न किया। वाक़िआ़ यूं है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़व्वाम बिन हौशब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक मर्तबा मैं एक मह़ल्ले में क़ियाम पज़ीर हुवा, उस की एक त़रफ़ क़ब्रिस्तान था, अ़स्र के बा'द उस क़ब्रिस्तान में एक क़ब्र शक़ हुई और एक शख़्स बाहर निकला जिस का सर गधे जैसा और जिस्म इन्सान जैसा था, उस ने 3 मर्तबा गधे की आवाज़ निकाली, फिर उस पर क़ब्र बन्द हो गई, नीज़ मैं ने येह भी देखा कि एक बूढ़ी ख़ातून वहां बाल या सूत कात रही थी, एक औ़रत ने मुझ से कहा : ''आप ने उस बूढ़ी ख़ातून को देखा ?'' मैं ने कहा : ''उसे क्या है ?'' तो उस ने बताया : ''येह ख़ातून उस क़ब्र वाले की मां है।'' मैं ने उस से दरयाफ़्त किया : ''इस शख़्स का क्या माजरा है ?'' तो उस



www.dawateislami.net

ने बताया : "येह शराब पीता था, जब एक रात (नशे में धुत) घर आया तो उसे मां ने कहा : "ऐ मेरे बेटे ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर, इस शराब को कब तक पीता रहेगा ?" तो वोह बोला : "तू तो बस गधे की त़रह़ रेंकती ही रहती है।" फिर उस औ़रत ने बताया : "वोह शख़्स अ़स्र के बा'द फ़ौत हो गया और अब हर रोज़ अ़स्र के बा'द उस की क़ब्र शक़ होती है, वोह 3 मर्तबा गधे की त़रह़ आवाज़ निकालता है फिर उस पर क़ब्र बन्द हो जाती है।"(1)

﴾37﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तीन दुआ़ओं की क़बूलिय्यत में कोई शक नहीं : (1) मज़्लूम की दुआ़ (2) मुसाफ़िर की दुआ़ और (3) बाप की अपने बेटे के ह़क़ में बद-दुआ़।"(2)

﴾38﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "मे'राज की रात मैं ने जहन्नम में कुछ लोग देखे जो आग की शाख़ों से लटके हुए थे, मैं ने दरयाफ़्त किया : "ऐ जिब्रील ! येह कौन हैं ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "येह वोह लोग हैं जो दुन्या में अपने मां बाप को गालियां देते थे।"(3)

﴾39﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जिस ने अपने वालिदैन को गाली दी तो उस की क़ब्र में आस्मान से ज़मीन पर बरसने वाले तमाम क़त़रों के बराबर में आग के अंगारे उतरेंगे।"(4)

﴾40﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुकर्रम है : "जब वालिदैन के ना फ़रमान को दफ़्न किया जाता है तो क़ब्र उसे दबाती है यहां तक कि उस की पस्लियां एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं।"(5)

﴾41﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "जब बन्दा अपने वालिदैन का ना फ़रमान हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे हलाक करने में जल्दी करता है ताकि वोह उसे जल्दी अ़ज़ाब दे और जब वोह अपने वालिदैन के साथ नेकी करने वाला हो तो **अल्लाह**

---

1 ......شرح اصول اعتقاداهل السنةوالجماعة،باب الشفاعة لاهل الكبائر، الحديث: ۲۱۵۷، ج۲، ص۹۷۵۔

2 ......جامع الترمذی،ابواب البر والصلة ،با ب ماجاء فی دعوة الوالدين ،الحديث: ۱۹۰۵،ص۱۸۴۴۔

3 ......الكبائرللذهبی،الكبيرة الثامنة ،عقوق الوالدين،ص۴۸۔

4 ......الكبائرللذهبی،الكبيرة الثامنة ،عقوق الوالدين،ص۴۸۔

5 ......الكبائرللذهبی،الكبيرة الثامنة ،عقوق الوالدين،ص۴۸۔



www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ उस की उ़म्र में इज़ाफ़ा फ़रमा देता है ताकि उस की नेकी और भलाई में इज़ाफ़ा करे।''(1)

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही से पूछा गया : ''वालिदैन की ना फ़रमानी से क्या मुराद है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''जब उस का बाप या मां उस पर भरोसा करते हुए क़सम खा लें तो वोह उसे पूरा न करे, जब उसे किसी काम का हुक्म दें तो इत़ाअ़त न करे और जब उस के पास अमानत रखी जाए तो ख़ियानत करे।''(2)

﴾42﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह्य फ़रमाई : ''ऐ मूसा ! अपने वालिदैन की ख़ूब इ़ज़्ज़त करो क्यूं कि जो अपने वालिदैन की इ़ज़्ज़त करेगा मैं उस की उ़म्र में इज़ाफ़ा कर दूंगा और उसे ऐसा बेटा अ़त़ा करूंगा जो उस के साथ नेकी करेगा और जो अपने वालिदैन की ना फ़रमानी करेगा मैं उस की उ़म्र में कमी कर दूंगा और उसे ऐसा बेटा दूंगा जो उस की ना फ़रमानी करेगा।''(3)

﴾43﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अबी मरयम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''मैं ने तौरात में पढ़ा कि जो अपने बाप को मारे उसे क़त्ल कर दिया जाए।''(4)

﴾44﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : ''तौरात में है कि जो अपने वालिदैन को त़मांचा मारे उसे रज्म किया जाए।''

﴾45﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्रे ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं : ''जो शख़्स अपनी मां की बात सुनने के लिये उस के क़रीब होता है तो येह उस से अफ़्ज़ल है जो अपनी तलवार से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करता है, नीज़ मां की त़रफ़ (मह़ब्बत भरी नज़र से) से देखना भी हर चीज़ से अफ़्ज़ल है।''(5)

﴾46﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में एक मर्द और औ़रत ह़ाज़िर हुए, वोह अपने बच्चे के बारे में झगड़

1......حلية الاولياء،الرقم ۳۲۵ كعب الاحبار،الحديث : ۷۵۶۲،ج۵، ص۴۱۴۔

2......جامع لمعمربن راشدمع المصنف لعبد الرزاق،كتاب الجامع، باب عقوق الوالدين،الحديث:۲۰۳۰۰،ج۱۰،ص۱۶۲۔

3......كتاب الكبائرللذهبى،الكبيرة الثامنة،عقوق الوالدين،ص۴۸۔

4......الكامل فى ضعفاء الرجال،الرقم۲۷۷ ابو بكر بن عبد الله ،ج۲،ص۲۱۰۔

5......شعب الايمان للبيهقى،باب فى برالوالدين ،الحديث :۷۸۵۸،ج۶،ص۱۸۶۔



www.dawateislami.net

रहे थे। मर्द ने कहा : ''मेरा बेटा मेरी पुश्त से है।'' औरत कहने लगी : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इस ने (अपनी सुल्ब में) इसे आसानी से उठाए रखा और जब बाहर निकाला तो वोह भी शह्वत से, जब कि मैं ने इसे (अपने रेह़म में) तक्लीफ़ से उठाया, वज़्ए ह़म्ल में भी तक्लीफ़ का सामना किया और दो साल तक इसे दूध भी पिलाया।'' हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मां के ह़क़ में उस बच्चे का फ़ैसला फ़रमा दिया।

नेकी पर उभारते हुए और ना फ़रमानी और इस के वबाल से डराते हुए किसी ने कितना ख़ूब सूरत कलाम फ़रमाया और इस बात पर आगाह किया कि वालिदैन की ना फ़रमानी इन्सान को मर्तबए कमाल से नीचे गिरा देती है और ज़िल्लत की अथाह गहराइयों में पहुंचा देती है :

ऐ इन्तिहाई अहम हुक़ूक़ को ज़ाएअ़ करने वाले ! ऐ नेकी को ना फ़रमानी से बदलने वाले ! ऐ अपने फ़राइज़ को भूल जाने वाले ! ऐ अपने सामने मौजूद चीज़ों से ग़ाफ़िल ! वालिदैन के साथ नेकी करना तुम पर क़र्ज़ है और इस का अदा करना तुम पर लाज़िम है जब कि तुम इन्तिहाई ना ज़ैबा अन्दाज़ में इस से छुटकारे की कोशिशों में मश्ग़ूल हो, अपने गुमान में जन्नत तलाश कर रहे हो ह़ालां कि वोह तो तुम्हारी उस मां के क़दमों तले है जिस ने तुम्हें नव महीने अपने पेट में उठाया जो नव साल की त़रह़ थे और तुम्हारी पैदाइश के वक़्त रूह़ों तक को पिघला देने वाली तक्लीफ़ बरदाश्त की, तुम्हें दूध पिलाया और तुम्हारी ख़ात़िर अपनी नींद तर्क कर दी, अपने हाथ से तुम से नजासत दूर की, ख़ूराक के मुआ़–मले में तुम्हें अपनी ज़ात पर तरजीह़ दी और अपनी गोद को तुम्हारे लिये बिछोना बनाए रखा, तुम्हें सहारा मुहय्या किया, अगर तुम्हें कोई बीमारी या शिकायत लाह़िक़ हुई तो उसे ह़द द–रजा अफ़्सोस हुवा, ग़मो अन्दोह त़वालत इख़्तियार कर गया, त़बीब (या'नी डॉक्टर) की ख़िदमात ह़ासिल करने के लिये अपना माल ख़र्च किया और अगर उसे तुम्हारी ज़िन्दगी और उस की अपनी मौत के दरमियान इख़्तियार दिया जाए तो वोह तुम्हारी ज़िन्दगी को तरजीह़ देगी। कितनी ही मर्तबा तुम ने उस से बुरा सुलूक किया फिर भी उस ने तुम्हारे लिये ज़ाहिरी व पोशीदा त़ौर पर तौफ़ीक़ की ही दुआ़ की। अब जब बुढ़ापे में वोह तुम्हारी मोह़ताज हो गई तो तुम ने उसे एक ह़क़ीर चीज़ समझ लिया, तुम ने ख़ुद तो पेट भर कर खा पी लिया जब कि वोह भूकी प्यासी ही रही, तुम ने एह़सान करने में उस पर अपने अहलो इ़याल को मुक़द्दम किया और उस के एह़सानात को भूल गए, तुम्हें उस की ख़िदमत मुश्किल मा'लूम होती है ह़ालां कि वोह आसान है, तुम्हें उस की उ़म्र लम्बी मा'लूम होती है जब कि वोह मुख़्तसर है और तुम ने उसे छोड़ दिया है जब कि उस का तुम्हारे सिवा कोई मददगार नहीं।



www.dawateislami.net

तुम्हारी येह हालत है हालां कि तुम्हारे मालिक عَزَّوَجَلَّ ने तो उस के सामने **उफ़** कहने से भी मन्अ फ़रमाया है और उस के हुक़ूक़ के बारे में तुम्हें डांटा है, अन्क़रीब दुन्या में तुम्हें तुम्हारे बेटों की ना फ़रमानी के साथ सज़ा दी जाएगी और आख़िरत में बारगाहे रबूबिय्यत के करम से दूर फ़रमा कर सज़ा दी जाएगी और वोह तुम्हें ज़ज्रो तौबीख़ करते हुए इर्शाद फ़रमाएगा :

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَ اَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿۱۸۲﴾ (پ ۴، اٰل عمران:۱۸۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** येह बदला है उस का जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा और **अल्लाह** बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता।

لِاُمِّكَ حَقٌّ لَوْ عَلِمْتَ كَثِيْرُ ... كَثِيْرُكَ يَا هٰذَا لَدَيْهِ يَسِيْرُ

فَكَمْ لَيْلَةٍ بَاتَتْ بِثِقْلِكَ تَشْتَكِيْ ... لَهَا مِنْ جَوَاهَا اَنَّةٌ وَّزَفِيْرُ

وَفِي الْوَضْعِ لَوْ تَدْرِيْ عَلَيْهَا مُشَقَّةٌ ... فَمِنْ غُصَصٍ مِّنْهَا الْفُؤَادُ يَطِيْرُ

وَكَمْ غَسَلَتْ عَنْكَ الْاَذٰى بِيَمِيْنِهَا ... وَمَا حِجْرُهَا اِلَّا لَدَيْكَ سَرِيْرُ

وَتَفْدِيْكَ مِمَّا تَشْتَكِيْهِ بِنَفْسِهَا ... وَمِنْ ثَدْيِهَا شُرْبٌ لَّدَيْكَ نَمِيْرُ

وَكَمْ مَرَّةٍ جَاعَتْ وَاَعْطَتْكَ قُوْتَهَا ... حُنُوًّا وَاِشْفَاقًا وَاَنْتَ صَغِيْرُ

فَاٰهًا لِذِيْ عَقْلٍ وَيَتْبَعُ الْهَوٰى ... وَاٰهًا لِاَعْمَى الْقَلْبِ وَهُوَ بَصِيْرُ

فَدُوْنَكَ فَارْغَبْ فِيْ عَمِيْمِ دُعَائِهَا ... فَاَنْتَ لِمَا تَدْعُوْ اِلَيْهِ فَقِيْرُ

**तरजमा :** (1)...... काश ! तू जान लेता कि तुझ पर अपनी मां का कितना ज़ियादा हक़ है, तेरा बहुत से हुक़ूक़ को अदा करना उस के एक हक़ के मुक़ाबिल कम है।

(2)...... कितनी ही रातें ऐसी हैं जो इस ने तेरी बीमारी की वज्ह से जाग कर गुज़ारीं कि दर्दो अलम भी इस के सोज़िशे ग़म की शिकायत करने लगे।

(3)...... काश ! तू जान लेता कि तेरी पैदाइश में इस ने कितनी मशक़्क़त बरदाश्त की, जिस के एक ही झटके से दिल उड़ जाते हैं।

(4)...... कितनी ही बार इस ने अपने हाथ से तुझ से नजासत व ग़लाज़त दूर की और इस की गोद तेरे लिये बिस्तर थी।

(5)...... किसी चीज़ की तू इस से शिकायत करता तो वोह तुझ पर अपनी जान तक क़ुरबान कर देती और इस की छातियां तेरे लिये साफ़ो शफ़्फ़ाफ़ मश्रूब थीं।

(6)...... तेरी सिग़र सिनी में कितनी ही बार वोह ख़ुद भूकी रही और महब्बत व शफ़्क़त से



www.dawateislami.net

अपना खाना भी तुझे अ़त़ा कर दिया।

(7)...... अफ़्सोस है उस पर जो अ़क़्ल रखने के बा वुजूद ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया की पैरवी करता है और अफ़्सोस है उस पर भी जो सर की आंखें तो रखता है लेकिन निगाहे बसीरत (या'नी दिल की आंखों) से मह़रूम है।

(8)...... ख़बरदार ! इस की ख़ुलूस से भरपूर दुआ़ओं में रग़बत रख, क्यूं कि तू इस की दुआ़ओं का मोह़ताज है।[1]

## तम्बीह :

वालिदैन की ना फ़रमानी को कबीरा गुनाहों में शुमार करने पर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इत्तिफ़ाक़ है, हमारे (शाफ़ेई) अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का ज़ाहिर बल्कि सरीह़ कलाम येह है कि ''(हुस्ने सुलूक के सिल्सिले में) काफ़िर और मुसल्मान वालिदैन के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं।'' इस पर येह ए'तिराज़ नहीं किया जा सकता कि ह़दीसे पाक में तो येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कबीरा गुनाहों के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा गया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''कबीरा गुनाह 9 हैं, इन में सब से बड़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, नाह़क़ किसी मोमिन को क़त्ल करना, जंग से भागना, पाक दामन औ़रत पर ज़िना की तोहमत लगाना, जादू करना, यतीम का माल खाना, सूद खाना, मुसल्मान वालिदैन की ना फ़रमानी करना है (और **बैतुल्लाह** की हु़रमत को पामाल करना)।''[2]

हम कहते हैं कि इस ह़दीसे पाक में वालिदैन के मुसल्मान होने की क़ैद लगाने की 2 वज्हें हैं : (1)...... मुसल्मान वालिदैन की ना फ़रमानी काफ़िर वालिदैन की ना फ़रमानी से ज़ियादा बुरी है और यहां पर कलाम उन गुनाहों के मु-तअ़ल्लिक़ है जो ज़ियादा बड़े हैं जैसे क़त्ले मोमिन और इस के मा बा'द मज़्कूर गुनाह (2)...... या इस की वज्ह येह है कि ग़ालिब का ए'तिबार करते हुए मुसल्मान वालिदैन का ज़िक्र किया गया जैसा कि दूसरी मिसालों में ज़िक्र किया गया।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़लीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی ने यहां पर एक कमज़ोर राय पर मब्नी तफ़्सील ज़िक्र की है जो इब्तिदा में गुज़र चुकी है या'नी ''वालिदैन की ना फ़रमानी कबीरा गुनाह है लेकिन अगर इस के साथ गाली गलोच भी हो तो बहुत ही बुरा है और अगर इस त़रह़ ना

1 ......كتاب الكبائر للذهبی،الكبيرة الثامنة،عقوق الوالدين،ص۴۹، ۵۰۔

2 ......المعجم الكبير،الحديث:۱۰۱،ج۱۷،ص۴۸۔



www.dawateislami.net

फ़रमानी करे कि उन के हुक्म और मन्अ़ करने को बोझ समझे, उन दोनों के सामने तुर्श-रूई इख़्तियार करे, उन की इत़ाअ़त करने और ख़ामोशी से हुक्म मानने के बा वुजूद उन से उक्ता जाए तो येह सग़ीरा गुनाह होगा और अगर उन की हुक्म उ़दूली करे और वोह मजबूर हो कर तंगदिल हो जाएं और इसे अच्छी बातों का हुक्म देने और बुरी बातों से मन्अ़ करना छोड़ दें और इस के सबब उन्हें कोई तक्लीफ़ पहुंचे तो येह कबीरा गुनाह हो जाएगा।

जिस तौजीह पर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का कलाम दलालत करता है कि येह कबीरा है जैसा कि ना फ़रमानी के क़ाइदे से मा'लूम होता है कि वालिदैन की ना फ़रमानी करना कबीरा गुनाह है और वोह ज़ाबित़ा येह है कि इस से दोनों को या किसी एक को ऐसी तक्लीफ़ का सामना करना पड़े जो उ़र्फ़न आसान न हो और हो सकता है कि इस के कबीरा होने में अज़िय्यत का ए'तिबार हो, लेकिन अगर बाप बहुत ज़ियादा अह़मक़ या बे अ़क़्ल हो और अपने बेटे को कोई ऐसा काम करने का कहे या किसी ऐसे काम से मन्अ़ करे जिस की मुख़ा-लफ़त उ़र्फ़ में ना फ़रमानी शुमार नहीं की जाती तो उ़ज़्र की वज्ह से इस सूरत में मुख़ा-लफ़त करने से बेटा फ़ासिक़ नहीं होगा और अगर इस ने किसी ऐसी ख़ातून से शादी की जिस से इसे मह़ब्बत थी फिर बाप ने उसे त़लाक़ देने का हुक्म दे दिया अगर्चे उस ने येह हुक्म औ़रत के पाक दामन न होने की वज्ह से दिया हो मगर बेटे ने बाप का हुक्म न माना तो इस पर कोई गुनाह नहीं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से इस की वज़ाह़त मरवी है लेकिन इस में भी इशारा है कि बाप का हुक्म मानते हुए त़लाक़ देना अफ़्ज़ल है और दर्जे ज़ैल ह़दीस को भी इसी मा'ना पर मह़मूल किया जाएगा कि,

﴾47﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने बेटे को बीवी को त़लाक़ देने का हुक्म दिया तो उन्हों ने इन्कार कर दिया, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस बात का तज़्किरा किया तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे त़लाक़ देने का हुक्म फ़रमा दिया।[1]

इसी त़रह़ बाप के बक़िय्या वोह तमाम अह़काम जिन का सबब उस की अ़क़्ल की कमी या राय की कमज़ोरी हो कि अगर ऐसे अह़काम साह़िबे अ़क़्ल लोगों के सामने पेश किये जाएं तो वोह उन्हें ऐसे उमूर में शुमार करें जिन में सुस्ती हो सकती है और वोह येही ख़याल करें कि उन की मुख़ा-लफ़त करने से अज़िय्यत नहीं होती। इस ता'रीफ़ की वज़ाह़त से येही नतीजा अख़्ज़ हुवा। फिर मैं ने **शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना सिराज बुल्क़ीनी** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِی

1 ......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی بر الوالدین، الحدیث: ۵۱۳۸، ص۱۵۹۹، مفهومًا۔



www.dawateislami.net

को देखा कि उन्हों ने अपने फ़तावा जात में इस मक़ाम पर त़वील गुफ़्त-गू फ़रमाई है जिस का कुछ हि़स्सा मेरी बयान कर्दा बह़्स की मुख़ा-लफ़त करता है और उन की इ़बारत येह है कि "वोह मस्अला कि जिस में अ़वामुन्नास मुब्तला हैं और इस की ज़रूरत है कि उस पर मुफ़स्सल बह़्स की जाए, नीज़ उस की जुज़इयात भी ज़िक्र की जाएं ताकि उस के ज़िम्न में अस्ल मक़्सूद ह़ासिल हो सके और वोह ना फ़रमानी की ता'रीफ़ के उस ज़ाबित़े के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल है जिस से वालिदैन की ना फ़रमानी मा'लूम होती है और मिसाल के बिग़ैर किसी चीज़ को उ़र्फ़ पर मह़मूल करने से मक़्सूद ह़ासिल नहीं होता क्यूं कि आ़म तौ़र पर लोगों की अग़राज़ उन्हें ऐसे कामों पर उभारती हैं जो उ़र्फ़ में होते ही नहीं, ख़ुसूसन जब इन का मक़्सद किसी शख़्स की ख़ामी निकालना या उसे तक्लीफ़ देना हो, तो वहां ऐसी मिसाल देने की ज़रूरत होती है जो उसी त़रीक़ए कार पर हो । मिसाल के तौ़र पर अगर किसी का अपने बाप पर कोई शर-ई ह़क़ हो और वोह उसे ह़ाकिम के सामने पेश करे ताकि उस से अपना ह़क़ ह़ासिल कर सके, अब अगर बाप को क़ैद कर दिया गया तो क्या येह ना फ़रमानी कहलाएगी या नहीं ?"

इस के जवाब में उन्हों ने फ़रमाया : "इस मक़ाम पर बा'ज़ अकाबिर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया है कि "येह ऐसा मस्अला है जिस का फ़ैसला करना इन्तिहाई मुश्किल है ।"

## ना फ़रमानी के मु-तअ़ल्लिक़ क़ाइ़दए कुल्लिय्या :

(ह़ज़रते सय्यिदुना सिराज बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الغَنِى फ़रमाते हैं :) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक ऐसे क़ाइ़दए कुल्लिय्या की त़रफ़ रहनुमाई फ़रमाई उस के फ़ज़्ल से मुझे उम्मीदे वासिक़ है कि येह बेहतरीन क़ाइ़दए कुल्लिय्या है और वोह येह है "**वालिदैन में से किसी की ना फ़रमानी** से मुराद येह है कि,

(1)...... बेटा अपने वालिदैन में से किसी को ऐसी तक्लीफ़ दे कि अगर वोह इन के इ़लावा किसी और को येही तक्लीफ़ देता तो उस का ऐसा करना ह़राम तो होता मगर सग़ीरा गुनाह होता, लेकिन जब येही तक्लीफ़ (जो दूसरों के ह़क़ में सग़ीरा है) वोह वालिदैन में से किसी को देगा तो कबीरा गुनाह बन जाएगा ।

(2)...... बेटा इन के किसी ऐसे हुक्म को मानने से इन्कार कर दे या किसी ऐसे काम से मन्अ़ करने पर इन की मुख़ा-लफ़त करे जिस में उस की अपनी जान जाने या किसी उ़ज़्व के ज़ाएअ़ होने का ख़दशा हो बशर्ते कि ऐसा हुक्म देने में बाप पर इल्ज़ाम आ़इद न किया जा सकता हो ।

(3)...... बेटा किसी ऐसे सफ़र पर जाने में बाप की मुख़ा-लफ़त करे जो बाप पर शाक़ हो और बेटे पर भी फ़र्ज़ न हो ।



www.dawateislami.net

(4)...... इतना लम्बा अ़र्सा ग़ाइब रहने में बाप के हुक्म की मुख़ा-लफ़त करे जिस में नफ़्अ़ बख़्श इ़ल्म या कमाई न हो।

(5)...... या उस सफ़र में उस की इ़ज़्ज़त को नुक़्सान पहुंच सकता हो।

## मुन्द-र-जए बाला 5 निकात की वज़ाह़त :

## पहले नुक्ते की वज़ाह़त :

(1)...... हमारा क़ौल येह है कि "अगर बेटे ने अपने वालिदैन में से किसी को ऐसी तक्लीफ़ दी कि अगर वोह इन के इ़लावा किसी और को येही तक्लीफ़ देता तो उस का ऐसा करना ह़राम होता।" इस की मिसाल येह है कि अगर किसी शख़्स ने अपने वालिदैन के इ़लावा किसी को इतना बुरा भला कहा या मारा कि येह कबीरा की ह़द तक न पहुंचा मगर जब मज़्कूरा ह़राम काम अपने वालिदैन में से किसी के साथ किया तो कबीरा हो जाएगा।

(2)...... हमारे बयान कर्दा उसूल से येह सूरत ख़ारिज है कि अगर उस ने अपने वालिदैन के माल में से एक दिरहम या कोई मा'मूली सी चीज़ ली तो येह कबीरा गुनाह न होगा अगर्चे वालिदैन के इ़लावा किसी के माल से ना जाइज़ त़रीक़े से येही अश्या लीं तो ह़राम होगा क्यूं कि वालिदैन के दिल में शफ़्क़त और मह़ब्बत होती है लिहाज़ा उन्हें ऐसे फ़े'ल से तक्लीफ़ नहीं होती। लेकिन अगर उस ने बहुत सा माल लिया और जिस का माल लिया वोह वालिदैन के इ़लावा कोई दूसरा शख़्स था और उस का माले कसीर लेना उस के लिये तक्लीफ़ का बाइ़स है तो जिस त़रह़ हर अजनबी के ह़क़ में उस का माले कसीर लेना कबीरा गुनाह है इसी त़रह़ वालिदैन के ह़क़ में भी कबीरा होगा। क्यूं कि क़ाइदा तो येह है कि जो काम वालिदैन के इ़लावा के ह़क़ में सग़ीरा और ह़राम हो वोह वालिदैन के ह़क़ में कबीरा होगा तो जो दूसरों के ह़क़ में कबीरा है वोह वालिदैन के ह़क़ में भी लाज़िमन कबीरा होगा।

(3)...... हमारे बयान कर्दा उसूल से येह सूरत भी ख़ारिज है कि अगर बेटे ने अपने बाप से क़र्ज़ का मुत़ा-लबा किया जो बाप पर उस का ह़क़ था, लिहाज़ा जब उस ने मुत़ा-लबा किया या (अ़दम वुसूली की सूरत में) अपना ह़क़ लेने के लिये इस मुआ़-मले को ह़ाकिम के सामने पेश किया तो येह ना फ़रमानी शुमार न होगी क्यूं कि अगर वोह येही सुलूक किसी अजनबी से करता तो ह़राम न होता, बल्कि ना फ़रमानी तो इस सूरत में होगी कि वालिदैन में से किसी को ऐसी तक्लीफ़ दे कि अगर वोह अपने वालिदैन के इ़लावा किसी और को देता तो वोह तक्लीफ़ ह़राम होती और यहां येह चीज़ मौजूद ही नहीं। पस इस को समझ। बिला शुबा येह एक नफ़ीस बह़्स है।

(4)...... बाक़ी रहा क़ैद का मुआ़-मला तो अगर ह़ाकिम ने बाप को क़ैद कर दिया तो क्या येह



www.dawateislami.net

ना फ़रमानी कहलाएगी या नहीं ? तो इस में उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के दो गुरौह हैं, कुछ तो बाप के क़ैद करने को जाइज़ क़रार देते हैं जब कि कुछ अ़-दमे जवाज़ के क़ाइल हैं। अब जब येह सूरत ह़ाकिम के सामने आई और उस का न-ज़रिय्या बेटे के मुत़ा-लबे की वज्ह से बाप को क़ैद न करने का था तो वोह बेटे की बात न सुनेगा और मुत़ा-लबा करने वाला बेटा अगर (ह़क़ के मुत़ा-लबे की वज्ह से बाप को क़ैद करने के) जवाज़ का ए'तिक़ाद रखता है तो वोह भी ना फ़रमान न कहलाएगा। लेकिन अगर इस के बर अ़क्स हो या'नी बेटे का न-ज़रिय्या तो अ़-दमे जवाज़ का हो और इस के बा वुजूद वोह ह़ाकिम के पास मुक़द्दमा दाइर कर दे (और ह़ाकिम उस के बाप को जवाज़े क़ैद का न-ज़रिय्या रखने की वज्ह से क़ैद कर दे तो) येह ऐसे ही ना जाइज़ होगा जैसे ह़ाकिम से किसी ऐसे दूसरे शख़्स को क़ैद करने का मुत़ा-लबा करना ना जाइज़ है जो कि तंगदस्ती वग़ैरा में मुब्तला हो। पस जब बेटे का न-ज़रिय्या अ़-दमे जवाज़ का हो तो उस का बाप को क़ैद करवा देना ना फ़रमानी कहलाएगी क्यूं कि अगर वोह येही मुआ़-मला ना जाइज़ त़ौर पर किसी दूसरे फ़र्द के साथ करता तो ह़राम होता।

(5)...... अलबत्ता ! सिर्फ़ जाइज़ शिक्वा करना और जाइज़ मुत़ा-लबा करना ना फ़रमानी नहीं, बल्कि कई सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के साहिब ज़ादों ने उन की मौजू-दगी में ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में येह शिकायत की, कि उन का बाप उन का माल बे जा इस्ति'माल करता है, लेकिन आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस को ना फ़रमानी क़रार न दिया और न ही मज़्कूरा शिक्वे की वज्ह से बेटे को मलामत की।

﴾6﴿...... जब बेटे ने अपने वालिदैन में से किसी को झिड़का तो उस का उन के साथ ऐसा सुलूक करना ह़राम और कबीरा गुनाह होगा बशर्ते कि अगर वोह येही बरताव उन के इ़लावा किसी दूसरे से करता तो ह़राम होता, लेकिन अगर किसी दूसरे से येह बरताव ह़राम न हो म-सलन किसी को उफ़ कहना वग़ैरा तो येह वालिदैन के ह़क़ में सग़ीरा होगा और इस से वोह मुमा-न-अ़त लाज़िम नहीं आती जो क़ुरआने करीम में वालिदैन से ऐसा बरताव करने के मु-तअ़ल्लिक़ आई है, बल्कि इन दोनों सूरतों का कबीरा होना उसी वक़्त लाज़िम आएगा जब मज़्कूरा ह़ालत पाई जाएगी।

## दूसरे नुक्ते की वज़ाह़त :

हमारा क़ौल येह है कि ''बेटा उन के किसी ऐसे हुक्म को मानने से इन्कार कर दे या किसी ऐसे काम से मन्अ़ करने पर उन की मुख़ा-लफ़त करे जिस में उस की अपनी जान जाने



www.dawateislami.net

का ख़दशा हो......اِلخ ।" इस से हमारी मुराद येह है कि वोह जिहाद वग़ैरा के लिये कोई ख़त़रनाक सफ़र करे जिस में उस की जान जाने या किसी उ़ज़्व के ज़ाएअ़ होने का ख़ौफ़ हो क्यूं कि इस पर वालिदैन या दोनों में से एक को बहुत ज़ियादा दुख होता है । चुनान्चे,

﴾48﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि एक शख़्स बारगाहे अक़्दस में जिहाद की इजाज़त लेने के लिये ह़ाज़िर हुवा तो सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तेरे वालिदैन ज़िन्दा हैं ?" उस ने अ़र्ज़ की : "जी हां ।" इर्शाद फ़रमाया : "उन की ख़िदमत करो, येही तुम्हारा जिहाद है ।"(1)

﴾49﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं हिजरत और जिहाद पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बैअ़त करता हूं ताकि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से अज्र पाऊं ।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तेरे वालिदैन में से कोई ज़िन्दा है ?" अ़र्ज़ की : "जी हां ! बल्कि दोनों ज़िन्दा हैं ।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से अज्र चाहता है ?" अ़र्ज़ की : "जी हां ।" इर्शाद फ़रमाया : "अपने वालिदैन की त़रफ़ लौट जा और उन का अच्छी त़रह़ ख़याल रख ।"(2)

﴾50﴿...... एक रिवायत में है : "मैं हिजरत पर रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बैअ़त करने आया हूं जब कि अपने वालिदैन को रोता छोड़ आया हूं ।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "पस उन के पास वापस चला जा और उन्हें इसी त़रह़ हंसा जिस त़रह़ रुलाया है ।"(3)

﴾51﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि यमन का एक शख़्स हिजरत कर के ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अ़-ज़मत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने हिजरत कर ली है ।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या यमन में तुम्हारा कोई है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "मेरे मां बाप हैं ।" फिर दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तूने उन

---

(1)......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان ،باب ما جاء فی الطاعات وثوابھا، الحدیث : ۴۱۸، ج۱، ص۲۶۸۔

(2)......صحیح مسلم، کتاب البر والصلة والادب، باب بر الوالدین وایھما احق بہ، الحدیث : ۶۵۰۷، ص۱۱۲۴۔

(3)......سنن النسائی، کتاب البیعة، باب البیعة علی الھجرة، الحدیث : ۴۱۶۸، ص۲۳۶۰۔



www.dawateislami.net

से इजाज़त ली है ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''नहीं ।'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जाओ और जा कर उन से इजाज़त लो, अगर वोह इजाज़त दें तो जिहाद करो वरना उन के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आओ ।''[1]

हमारा क़ौल येह है कि ''बशर्ते कि ऐसा हुक्म देने में बाप पर इल्ज़ाम आ़इद न किया जा सकता हो ।'' इस से येह सूरत भी ख़ारिज हो गई कि अगर बाप काफ़िर हो तो बेटे को जिहाद वग़ैरा पर जाने के लिये बाप की इजाज़त की ज़रूरत नहीं, नीज़ हम ने जो बाप की इजाज़त का ए'तिबार किया इस में उस के आज़ाद या ग़ुलाम होने में कोई फ़र्क़ नहीं ।

## तीसरे नुक्ते की वज़ाहत :

हमारा क़ौल येह है कि ''वोह किसी ऐसे सफ़र पर जाने में बाप की मुख़ा-लफ़त करे जो बाप पर शाक़ हो ।'' तो उस से हमारी मुराद नफ़्ली ह़ज के लिये सफ़र करना है, इस ए'तिबार से कि इस में मशक़्क़त होती है, फ़र्ज़ ह़ज इस से ख़ारिज है । जब इस सफ़र में सलामती के ग़-लबे का लिहाज़ रखते हुए समुन्दरी सफ़र भी शामिल हो तो ज़ाहिर इस बात का तक़ाज़ा करता है कि उसे इजाज़त लेना ज़रूरी नहीं और अगर इजाज़त ज़रूरी क़रार दी जाए तो भी समझ से बईद नहीं क्यूं कि बेटे के बह़री सफ़र से बाप को ख़ौफ़ हो सकता है अगर्चे सलामती ग़ालिब हो ।

## चौथे नुक्ते की वज़ाहत :

रहा बेटे का फ़र्ज़े ऐन या फ़र्ज़े किफ़ाया उ़लूम की ख़ातिर सफ़र करना तो इस से बाप नहीं रोक सकता अगर्चे उसी शह्‌र में इल्म सीखना मुम्किन हो ब ख़िलाफ़ उस के जिस ने अपने शह्‌र में इल्म का हुसूल मुश्किल होने की शर्त़ लगाई । इस लिये कि कभी कभार सफ़र में (दीगर परेशानियों से) दिल की फ़राग़त या उस्ताज़ के इर्शाद वग़ैरा की तवक़्क़ोअ़ होती है, अगर उन में से किसी चीज़ की तवक़्क़ोअ़ न हो तो इजाज़त लेने का मोह़ताज होगा और जब बेटे पर बाप का नफ़क़ा वाजिब हो और सफ़र की वज्ह से वाजिब के ज़ाएअ़ होने का ख़ौफ़ हो तो बाप बेटे को सफ़र से मन्अ़ कर सकता है जैसा कि वोह मदयून (या'नी मक़रूज़) जिस पर **दैने ह़ाल्ली** (या'नी फ़िलफ़ौर अदाएगी वाला क़र्ज़) लाज़िम हो तो क़र्ज़-ख़्वाह उस को सफ़र और हर उस मुआ़-मले से रोक सकता है जिस में मदयून पर लाज़िम ह़क़ के ज़ाएअ़ होने का अन्देशा हो मगर **दैने मुअज्जल** (या'नी जिस की अदाएगी फ़िलफ़ौर लाज़िम न हो इस) में मज़्कूरा हुक्म नहीं ।

---

[1] ......سنن ابی داود، کتاب الجھاد،باب فی الرجل یغزووابواہ کارھان، الحدیث:۲۵۳۰،ص۱۴۱۱۔
الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان ،کتاب البر و الاحسان،باب حق الوالدین، الحدیث :۴۲۳،ج۱،ص۳۲۵۔



www.dawateislami.net

## पांचवें नुक्ते की वज़ाहत :

**(1)**...... अगर सफ़र में बेटे की इज़्ज़त ज़ाएअ़ होने का ख़तरा हो म-सलन वोह अम्रद हो और उस के सफ़र से तोहमत का अन्देशा हो तो वोह उसे इस से मन्अ़ कर सकता है और औ़रतों को रोकना ब द-र-जए औला जाइज़ है।

**(2)**...... बेटे का बाप की किसी ऐसी बात को न मानना कि जिस में उस को बिल्कुल नुक़्सान न हो तो येह बेटे के लिये महूज़ नसीहत होगी, अगर उस ने ख़िलाफ़ वर्ज़ी की तो ना फ़रमान नहीं कहलाएगा और इस में ब द-र-जए औला बाप के हुक्म की मुख़ा-लफ़त न होगी। (यहां पर फ़तावा बुल्क़ीनी की इबारत ख़त्म हुई)

(मुसन्निफ़ رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :) शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना सिराज बुल्क़ीनी عَلَیْہِ رَحْمَةُاللّٰہِ الْغَنِی के, वालिदैन की ना फ़रमानी को वालिदैन के इलावा के गुनाहे सग़ीरा और फ़े'ले ह़राम के साथ ख़ास करने में तवक़्क़ुफ़ है। बल्कि इस उसूल पर इन्ह़िसार होना चाहिये जो मैं ने गुज़श्ता ज़िक्र किया कि "अगर इस ने बाप के साथ ऐसा सुलूक किया जिस से उसे ऐसी अज़िय्यत पहुंची जो उ़र्फ़न आसान न हो तो येह कबीरा गुनाह होगा अगर्चे वोह किसी दूसरे के साथ करना ह़राम न भी हो।" म-सलन बाप बेटे से मिलने आए तो इस के माथे पर शि-कनें आ जाएं। या वोह चन्द लोगों के गुरौह में बेटे के पास आए और वोह उस के एह़तिराम में न तो खड़ा हो और न ही उसे कोई अहम्मिय्यत दे और इसी त़रह़ का सुलूक करना कि जिस को साहिबे अ़क़्ल और साहिबे मुरव्वत लोग बहुत बड़ी ईज़ा का बाइ़स समझते हों।

अ़न्क़रीब क़त़ए रेह़्मी के बाब में ऐसी रिवायात और अब्ह़ास मज़्कूर होंगी जो इस की ताईद करती हैं।

**फ़ाएदा :** अब वालिदैन के साथ नेकी और सिलए रेह़्मी करने, इन की इत़ाअ़त करने और इन के साथ एह़सान करने नीज़ इन के बा'द इन के दोस्तों से नेक सुलूक करने के बारे में दूसरी अह़ादीसे मुबा-रका ज़िक्र की जाती हैं :

﴾52﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया : "कौन सा अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक ज़ियादा पसन्दीदा है ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वक़्त पर नमाज़ अदा करना।" मैं ने दोबारा अ़र्ज़ की : "फिर कौन सा ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वालिदैन के साथ नेक सुलूक करना।" मैं ने फिर अ़र्ज़



www.dawateislami.net

की : ''इस के बा'द कौन सा ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करना।''(1)

﴾53﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेटा अपने बाप को बदला नहीं दे सकता मगर येह कि वोह इसे ग़ुलाम पाए तो ख़रीद कर आज़ाद कर दे।''(2)

﴾54﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : ''मैं हिजरत और जिहाद पर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बैअ़त करता हूं ताकि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से अज्र पाऊं।'' आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ''क्या तुम्हारे वालिदैन में से कोई ज़िन्दा है ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''जी हां ! बल्कि दोनों ज़िन्दा हैं।'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से अज्र चाहते हो ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''जी हां।'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अपने वालिदैन के पास वापस जाओ और उन के साथ अच्छा सुलूक करो।''(3)

﴾55﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक आदमी ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : ''मैं जिहाद का शौक़ रखता हूं लेकिन इस पर क़ुदरत नहीं रखता।'' आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ''क्या तुम्हारे वालिदैन में से कोई ज़िन्दा है ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''मेरी मां है।'' इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मां की ख़ैर मांगा करो, जब तुम ऐसा करोगे तो ह़ज व उ़म्रह करने वाले शुमार होगे।''(4)

﴾56﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा रह़मत में एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करना चाहता हूं।'' आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ''तुम्हारी मां ज़िन्दा है ?'' अ़र्ज़ की : ''जी हां।'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मां के पाउं मज़्बूत़ी से थाम ले (तेरी) जन्नत वहीं है।''(5)

---

(1)......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان کون الایمان باللّٰہ تعالی افضل الاعمال، الحدیث: ۲۵۲، ۲۵۴، ص ۶۹۳۔

(2)......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی بر الوالدین، الحدیث: ۵۱۳۷، ص ۱۵۹۹۔

(3)......صحیح مسلم، کتاب البر والصلة والادب، باب بر الوالدین وایهما احق به، الحدیث: ۶۵۰۷، ص ۱۱۲۴۔

(4)......مسند ابی یعلی الموصلی، مسند انس من مالک، الحدیث: ۲۷۵۲، ج۳، ص۶، "فاسال اللّٰہ" بدلہ "قابل اللّٰہ"۔

(5)......المعجم الکبیر، الحدیث: ۸۱۶۲، ج۸، ص ۳۱۱۔



www.dawateislami.net

﴾57﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वालिदैन का अपनी औलाद पर क्या ह़क़ है ?" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह दोनों तेरी जन्नत व दोज़ख़ हैं ।"(1)

﴾58﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं राहे ख़ुदा में जिहाद करना चाहता हूं और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मश्वरा लेने ह़ाज़िर हुवा हूं ।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तेरी मां है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "जी हां ।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उस की ख़िदमत कर क्यूं कि जन्नत मां के क़दमों के नीचे है ।"(2)

﴾59﴿...... एक रिवायत में है, (हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा :) "क्या तेरे वालिदैन हैं ?" उस ने अ़र्ज़ की : "जी हां ।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उन की ख़िदमत कर क्यूं कि जन्नत उन के क़दमों के नीचे है ।"(3)

﴾60﴿...... मरवी है कि एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "मेरी एक बीवी है, मेरी मां कहती है कि उसे त़लाक़ दे दे ।" तो आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते सुना : "बाप जन्नत का दरमियाना दरवाज़ा है, अगर तू चाहे तो उस दरवाज़े को ज़ाएअ़ कर दे या उस की ह़िफ़ाज़त कर ।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 279 हि.) फ़रमाते हैं : "(इस रिवायत के रावी) ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه कभी तो येह फ़रमाते कि मेरी मां मुझे हुक्म देती है और कभी फ़रमाते कि मेरा बाप मुझे हुक्म देता है ।"(4)

---

1 ......سنن ابن ماجه،ابواب الادب ،باب بر الوالدين ،الحديث :٣٦٦٢،ص٢٦٩٦ـ

2 ......سنن النسائى، كتا ب الجهاد ،باب الرخصة فى التخلف لمن له والدة،الحديث : ٣١٠٦،ص٢٢٨٦ـ

3 ......المعجم الكبير،الحديث : ٢٢٠٢، ج٢، ص٢٨٩ـ

4 ......جامع الترمذى،ابواب البر والصلة،باب ماجاء من الفضل فى رضا الوالدين ،الحديث :١٩٠٠ ،ص١٨٤٤ـ



www.dawateislami.net

﴾61﴿...... इब्ने ह़ब्बान में येह रिवायत यूं है : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "मेरे वालिद मुसलसल मुझे कहते रहे (कि निकाह़ कर ले) यहां तक कि उन्हों ने मेरा निकाह़ कर दिया और अब मुझे बीवी को त़लाक़ देने का हुक्म देते हैं (अब मैं क्या करूं) ।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं तुम्हें न तो येह कहूंगा कि वालिदैन की ना फ़रमानी करो और न ही येह कहूंगा कि अपनी बीवी को त़लाक़ दे दो, अलबत्ता ! अगर चाहो तो मैं तुम्हें वोह ह़दीसे पाक सुनाता हूं जो मैं ने सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी : "बाप जन्नत का दरमियाना दरवाज़ा है, अगर तुम चाहो तो उस दरवाज़े को ज़ाएअ़ कर दो या (चाहो तो) उस की ह़िफ़ाज़त करो ।"(रावी कहते हैं :) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि "फिर उस शख़्स ने अपनी बीवी को त़लाक़ दे दी ।"(1)

﴾62﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "मेरी एक बीवी थी जिसे मैं पसन्द करता था जब कि मेरे वालिदे मोह़तरम अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उसे ना पसन्द फ़रमाते थे, लिहाज़ा उन्हों ने मुझ से फ़रमाया : "इसे त़लाक़ दे दो ।" मैं ने इन्कार कर दिया तो वालिदे मोह़तरम ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर इस बात का तज़्किरा किया तो ताजदारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया कि "उसे त़लाक़ दे दो ।"(2)

## उ़म्र में इज़ाफ़े का नुस्ख़ए कीमिया :

﴾63﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिसे येह पसन्द हो कि उस की उ़म्र लम्बी हो और उस के रिज़्क़ में इज़ाफ़ा हो तो उसे चाहिये कि अपने वालिदैन के साथ नेकी और सिलए रेह़्मी करे ।"(3)

﴾64﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो अपने वालिदैन से नेक सुलूक करे उस के लिये ख़ुश ख़बरी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की उ़म्र में इज़ाफ़ा फ़रमा देगा ।"(4)

---

1 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان ،باب حق الوالدین ،الحدیث:۴۲۶،ج ا ،ص۳۲۶۔

2 ......جامع الترمذی، ابواب الطلاق واللعان، باب ماجاء فی الرجل یسالہ ابوہ الخ، الحدیث :۱۱۸۹، ص۱۷۶۹۔

3 ......المسند للامام احمدبن حنبل، مسند انس بن مالک بن النضر، الحدیث :۱۳۸۱۲، ج۴، ص۵۳۰۔

4 ......الادب المفرد للبخاری، باب من بروالدیہ زادالله فی عمرہ، الحدیث :۲۲، ص۱۶۔



www.dawateislami.net

﴾65﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आदमी अपने गुनाह की वज्ह से रिज़्क़ से मह़रूम होता है, दुआ़ तक़्दीर को टाल देती है और नेकी उ़म्र में इज़ाफ़ा करती है।"(1)

﴾66﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "दुआ़ तक़्दीर को टाल देती है और नेकी उ़म्र में इज़ाफ़ा कर देती है।"(2)

﴾67﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "लोगों की औ़रतों से दर गुज़र करो तुम्हारी औ़रतों से दर गुज़र किया जाएगा, अपने वालिदैन से नेक सुलूक करो तुम्हारे बेटे तुम्हारे साथ अच्छा सुलूक करेंगे और जिस के पास उस का (मुसल्मान) भाई कोई उ़ज़्र ले कर आए तो वोह उस का उ़ज़्र क़बूल कर ले ख़्वाह वोह सच्चा हो या झूटा, अगर उस ने ऐसा न किया तो ह़ौज़े कौसर पर नहीं आएगा।"(3)

﴾68﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अपने वालिदैन से नेक सुलूक करो तुम्हारे बेटे तुम्हारे साथ अच्छा सुलूक करेंगे, (लोगों की औ़रतों से) दर गुज़र करो तुम्हारी औ़रतों से दर गुज़र किया जाएगा।"(4)

﴾69﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो, उस की नाक ख़ाक आलूद हो, उस की नाक ख़ाक आलूद हो।" अ़र्ज़ की गई : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह शख़्स कौन है ?" इर्शाद फ़रमाया : "वोह जिस ने अपने वालिदैन या उन में से किसी एक को बुढ़ापे की ह़ालत में पाया, फिर भी जन्नत में दाख़िल न हुवा या उन दोनों ने उसे जन्नत में दाख़िल न किया।"(5)

﴾70﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दफ़्आ़ मिम्बर शरीफ़ पर चढ़ते हुए इर्शाद फ़रमाया : "आमीन ! आमीन ! आमीन !" फिर इर्शाद फ़रमाया : "मेरे पास जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام आए और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह**

---

1 ......سنن ابن ماجه،ابواب الفتن،باب العقوبات، الحديث : ۴۰۲۲،ص۲۷۱۹،بتقدمٍ وتاخرٍ۔

2 ......جامع الترمذی،ابواب القدر،باب ماجاء لايردالقدرالا الدعاء، الحديث : ۲۱۳۹،ص۱۸۲۶۔

3 ......المستدرک،کتاب البروالصلة،باب بروااباء کم تبرکم ابناؤکم، الحديث : ۷۳۴۰،ج۵،ص۲۱۳۔

4 ......المعجم الاوسط،الحديث : ۱۰۰۲،ج۱،ص۲۸۵۔

5 ......صحيح مسلم،کتاب البر الصلة،باب رغم من ادرک ابويه......الخ، الحديث : ۲۵۱۱، ص۱۱۲۵۔



www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जिस ने अपने वालिदैन में से किसी को पाया फिर उन दोनों के साथ हुस्ने सुलूक से पेश न आया और मर कर जहन्नम में दाख़िल हो गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी रह़मत से दूर फ़रमाए, आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ''आमीन'' फ़रमाइये। तो मैं ने कहा : आमीन। फिर कहा : ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जिस ने र–मज़ान का महीना पाया और मर गया और उस की मग़्फ़िरत न हुई और उसे जहन्नम में दाख़िल कर दिया गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे भी अपनी रह़मत से दूर फ़रमाए, आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ''आमीन'' फ़रमाइये। तो मैं ने कहा : आमीन। फिर कहा : ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जिस के पास आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र हुवा और उस ने आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक न पढ़ा और मर कर जहन्नम में दाख़िल हो गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे भी अपनी रह़मत से दूर फ़रमाए, आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ''आमीन'' फ़रमाइये। पस मैं ने कहा : आमीन।''(1)

﴿71﴾...... मज़्कूरा रिवायत इन अल्फ़ाज़ में भी मरवी है कि ''जिस ने अपने वालिदैन या दोनों में से किसी एक को पाया लेकिन उन के साथ अच्छा सुलूक न किया और मर कर जहन्नम में दाख़िल हुवा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी रह़मत से दूर फ़रमाए, आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ''आमीन'' फ़रमाइये। तो मैं ने कहा : आमीन।''(2)

﴿72﴾...... मुस्तद्रक में इस रिवायत के आख़िरी अल्फ़ाज़ येह हैं, सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब मैं तीसरी सीढ़ी पर चढ़ा तो जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : जिस ने अपने वालिदैन या उन में से एक को बुढ़ापे में पाया लेकिन उन दोनों ने उसे जन्नत में दाख़िल न कराया वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से दूर हो। तो मैं ने कहा : आमीन।''(3)

﴿73﴾...... एक रिवायत में है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''(जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने दुआ़ की :) जिस ने अपने वालिदैन या दोनों में से किसी एक को पाया लेकिन उन के साथ अच्छा सुलूक न किया और जहन्नम में दाख़िल हो गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी रह़मत से दूर करे। तो मैं ने कहा : आमीन।''(4)

---

1 ......المعجم الکبیر،الحدیث : ۲۰۲۲،ج۲،ص۲۴۳،دون قولہ"ثم لم یبرھما"۔

2 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان،کتاب الرقاق ،باب الادعیۃ، الحدیث : ۹۰۴، ج۲، ص۱۳۱۔

3 ......المستدرک،کتاب البر والصلۃ ،باب لعن اللّٰہ العاق لوالدیہ......الخ ،الحدیث : ۷۳۳۸،ج۵،ص۲۱۳۔

4 ......المعجم الکبیر،الحدیث :۱۲۵۵۱،ج۱۲،ص۶۶۔



www.dawateislami.net

﴾74﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने कोई मुसल्मान ग़ुलाम आज़ाद किया तो वोह उस के लिये आग से फ़िदया होगा और जिस ने अपने वालिदैन में से किसी को पाया फिर भी उस की मग़्फ़िरत न हुई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी रह़मत से दूर करे।"(1)

﴾75﴿...... (ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि एक शख़्स ने बारगाहे नबुव्वत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की :) "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे अच्छे सुलूक का सब से ज़ियादा ह़क़दार कौन है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तेरी मां।" उस ने दोबारा अ़र्ज़ की : "फिर कौन ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तेरी मां।" तीसरी बार अ़र्ज़ की : "फिर कौन ?" इर्शाद फ़रमाया : "तेरी मां।" चौथी बार अ़र्ज़ की : "फिर कौन ?" इर्शाद फ़रमाया : "तेरा बाप।"(2)

## मुश्रिक वालिदैन से सिलए रेह़्मी का हुक्म :

﴾76﴿...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना अस्मा बिन्ते अबी बक्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में मेरे पास मेरी वालिदा आई जब कि वोह मुश्रिका थी, मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : "मेरी मां मेरे पास आई है ह़ालां कि वोह मुसल्मान नहीं तो क्या फिर भी मैं उस से सिलए रेह़्मी करूं ?" इर्शाद फ़रमाया : "अपनी मां से सिलए रेह़्मी करो।"(3)

## रिज़ाए इलाही वालिदैन की रिज़ा में है :

﴾77﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा बाप की रिज़ा में, या फ़रमाया : वालिदैन की रिज़ा में है और **अल्लाह**

---

(1)......المسند للامام احمد بن حنبل ،حديث مالک بن عمرو القشيری ،الحديث : ۱۹۰۵۲ ،ج۷،ص۲۸۔

(2)......صحيح البخاری، کتاب الادب،باب من احق الناس بحسن الصحبة،الحديث: ۵۹۷۱،ص۵۰۶۔

(3)......صحيح البخاری، کتاب الهبة ،باب الهدية للمشرکين، الحديث : ۲۶۲۰،ص۲۰۶۔
صحيح مسلم، کتاب الزکاة ،باب فضل النفقة والصدقة......الخ، الحديث : ۲۳۲۵،ص۸۳۶۔



www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी बाप की नाराज़ी में, या फ़रमाया : वालिदैन की नाराज़ी में है।''(1)

﴾78﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त बाप की इत़ाअ़त में, या फ़रमाया : वालिदैन की इत़ाअ़त में है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी बाप की ना फ़रमानी में है।''(2)

﴾79﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा वालिदैन की रिज़ा में और उस की नाराज़ी वालिदैन की नाराज़ी में है।''(3)

## ख़ाला से हुस्ने सुलूक का हुक्म :

﴾80﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने बहुत बड़ा गुनाह किया है, क्या मेरे लिये तौबा की गुन्जाइश है ?'' आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ''क्या तुम्हारी मां है ?'' अ़र्ज़ की : ''नहीं।'' आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दोबारा दरयाफ़्त फ़रमाया : ''क्या तुम्हारी ख़ाला है ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''जी हां।'' इर्शाद फ़रमाया : ''उस के साथ अच्छा सुलूक करो।''(4)

## बा'दे विसाल वालिदैन से हुस्ने सुलूक का त़रीक़ा :

﴾81﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में बनी स-लमा का एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक में से कोई ऐसी नेकी बाक़ी है जो उन की मौत के बा'द भी मैं उन के साथ कर सकता हूं ?'' आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हां ! उन के लिये दुआ़ व इस्तिग़फ़ार करना, उन के मरने के बा'द उन के (किये हुए) वा'दे पूरे करना, उन लोगों के साथ सिलए रेहूमी करना जिन से उन (या'नी वालिदैन) की वज्ह से रिश्ते

---

(1)......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب حق الوالدین، الحدیث: ۴۳۰، ج۱، ص۳۲۸۔
شعب الایمان للبیھقی، باب فی برالوالدین، الحدیث: ۷۸۳۰، ج۶، ص۱۷۷۔

(2)......المعجم الاوسط، الحدیث: ۲۲۵۵، ج۱، ص۶۱۴، دون قولہ: الوالدین۔

(3)......البحرالزخار المعروف بمسند البزار، مسند عبد اللہ بن عمرو بن العاص، الحدیث: ۲۳۹۴، ج۶، ص۳۷۶، بتغیرٍ۔

(4)......جامع الترمذی، ابواب البر والصلة، باب فی برالخالة، الحدیث: ۱۹۰۴، ص۱۸۴۴۔



www.dawateislami.net

क़ाइम हुए और उन के दोस्तों की इ़ज़्ज़त करना।''(1)

﴾82﴿...... सह़ीह़ इब्ने ह़ब्बान में येह अल्फ़ाज़ ज़ाइद हैं : ''उस शख़्स ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह सब कितना ज़ियादा और कितना उ़म्दा है ?'' तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इसी पर अ़मल करो।''(2)

## बाप के रिश्तेदारों से सिलए रेह़्मी का हुक्म :

﴾83﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को एक दीहाती शख़्स मक्का के रास्ते में मिला। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे सलाम किया और अपने गधे पर सुवार कर लिया नीज़ उसे अपना वोह इमामा शरीफ़ भी इनायत फ़रमाया जो आप के सर पर था। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : हम ने अ़र्ज़ की : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर भलाई फ़रमाए, येह दीहाती लोग तो थोड़ी सी चीज़ पर भी राज़ी हो जाते हैं।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इर्शाद फ़रमाया : इस का बाप (मेरे वालिदे मोह़तरम) अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से बहुत मह़ब्बत करता था और मैं ने हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते सुना कि ''सब से बड़ी नेकी येह है कि बेटा अपने बाप से मह़ब्बत करने वालों के साथ सिलए रेह़्मी करे।''(3)

﴾84﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बुर्दा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ''जब मैं मदीने शरीफ़ आया तो ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا मेरे पास तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : ''क्या आप जानते हैं कि मैं आप के पास क्यूं आया हूं ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''नहीं।'' तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते सुना कि ''जो पसन्द करता है कि वोह अपने बाप से क़ब्र में सिलए रेह़्मी करे तो उसे चाहिये कि बाप के बा'द उस के भाइयों से सिलए रेह़्मी करे।'' और मेरे और तुम्हारे वालिद के दरमियान भाईचारा और मह़ब्बत थी, लिहाज़ा मैं ने पसन्द किया कि इसे क़ाइम रखूं।(4)

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی بر الوالدین، الحدیث : ۵۱۴۲، ص۱۵۹۹۔

2 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب حق الوالدین، الحدیث : ۴۱۹، ج۱، ص۳۲۴۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب البر والصلة، باب فضل صلة اصدقاء الاب والام، الحدیث : ۶۵۱۳، ص۱۱۲۵۔

4 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب حق الوالدین، الحدیث : ۴۳۳، ج۱، ص۳۲۹۔



www.dawateislami.net

## नेक आ'माल दुआ की क़बूलिय्यत का ज़रीआ हैं :

﴾85﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "साबिक़ा किसी उम्मत के 3 फ़र्द अपने अहले ख़ाना के लिये रिज़्क़ की तलाश में कहीं जा रहे थे कि बारिश ने उन्हें आ लिया यहां तक कि उन्हों ने एक पहाड़ के ग़ार में पनाह ली, अचानक ग़ार के दहाने पर एक चट्टान ने गिर कर रास्ता बन्द कर दिया, तो वोह कहने लगे : इस चट्टान से नजात उसी सूरत में मिल सकती है कि हम अपने अच्छे आ'माल के वसीले से दुआ करें ।"(1)

﴾86﴿...... एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं : वोह एक दूसरे से कहने लगे : "उन नेक आ'माल को याद करो जो ख़ालिस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये किये थे और फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उन के वसीले से दुआ करो हो सकता है वोह इस मुसीबत को टाल दे ।"(2)

﴾87﴿...... एक रिवायत में यूं भी है कि उन्हों ने एक दूसरे से कहा : बाहर निकलने के आसार ख़त्म हो गए, ग़ार के मुंह पर पथ्थर गिर गया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा तुम्हारा ठिकाना कोई नहीं जानता, लिहाज़ा उसी की बारगाह में अपने ख़ालिस आ'माल के वसीले से दुआ करो, पस उन में से एक बोला : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे वालिदैन उ़म्र रसीदा और बूढ़े थे, मैं शाम को उन से पहले अपने बाल बच्चों को दूध नहीं पिलाता था । एक दिन सब्ज़े की तलाश ने मुझे दूर पहुंचा दिया और मेरी वापसी तक वोह सो चुके थे, मैं ने दूध दोहा और वालिदैन को सोता पा कर मुनासिब न समझा कि उन से पहले अपने घर वालों या माल (या'नी जानवरों) को कुछ पिलाऊं, लिहाज़ा मैं पियाला हाथ में लिये सुब्ह तक उन के बेदार होने का इन्तिज़ार करता रहा (सुब्ह जब वोह बेदार हुए) तो उन्हों ने उठ कर दूध पिया, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर मैं ने येह तेरी रिज़ा के लिये किया था तो हमें इस मुसीबत से नजात अ़ता फ़रमा जिस में हम मुब्तला हैं ।" पस वोह चट्टान थोड़ी सी सरक गई लेकिन वोह बाहर नहीं निकल सकते थे ।"(3)

---

(1)......المسند للامام احمد بن حنبل،مسند انس بن مالک بن النضر، الحديث:١٢٤٥٧، ج٤،ص٢٨٦۔
صحیح مسلم،کتاب الرقاق،بابقصةاصحاب الغار،الحديث : ٦٩٤٩،٦٩٥٠،ص١١٥٣۔
صحیح البخاری،کتاب الاجارة ،باب من استاجر اجیرا فترک اجره......الخ، الحديث : ٢٢٧٢، ص١٧٦۔

(2)......صحیح البخاری،کتاب الادب ،باب اجابة دعا ء من بر و الديه،الحديث :٥٩٧٤،ص٥٠٦۔

(3)......صحیح البخاری،کتاب الاجارة، باب من استاجراجیرا فترک اجره......الخ، الحديث:٢٢٧٢، ص٧٦۔
المسند للامام احمدبن حنبل،مسند انس بن مالک بن النضر،الحديث :١٢٤٥٧،ج٤،ص٢٨٦۔



www.dawateislami.net

﴾88﴿...... एक रिवायत में इस त़रह़ है कि ''मेरे छोटे छोटे बच्चे थे, मैं बकरियां चराया करता था। जब वापस आता तो दूध दोहता और अपने बच्चों से पहले वालिदैन को पिलाता, एक रोज़ जंगल में दूर जा निकला शाम को देर से वापस लौटा वोह उस वक़्त तक सो चुके थे। मैं ने ह़स्बे मा'मूल दूध दोहा और बरतन में ले कर उन के सिरहाने खड़ा हो गया लेकिन मुझे येह भी ना पसन्द था कि इन्हें नींद से बेदार करूं और येह भी पसन्द न था कि इन से पहले बच्चों को पिलाऊं जब कि बच्चे मेरे क़दमों में चीख़ रहे थे। तुलूए़ फ़ज्र तक मेरा और मेरे वालिदैन का येही मुआ़-मला रहा। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू जानता है अगर मैं ने येह अ़मल मह़ज़ तेरी रिज़ा के लिये किया तो हमारे लिये कुछ कुशा-दगी फ़रमा दे ताकि हम इस ग़ार से आस्मान देख सकें।'' चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के लिये ग़ार का दहाना कुशादा कर दिया यहां तक कि उन्हों ने उस से आस्मान देख लिया और दूसरे शख़्स ने अपने चचा की बेटी से ज़िना से बचने का ज़िक्र किया जब कि तीसरे ने अपने मज़दूर के माल की परवरिश का तज़्किरा किया, लिहाज़ा वोह चट्टान मुकम्मल त़ौर पर उन के सामने से हट गई और वोह बाहर निकल कर चल दिये।''(1)

❁❁❁❁❁❁❁

### ﴾......म-दनी क़ाफ़िलों और फ़िक्रे मदीना की ब-र-कतें......﴿

''**दा'वते इस्लामी**'' के सुन्नतों की तरबियत के ''**म-दनी क़ाफ़िलों**'' में सफ़र और रोज़ाना ''**फ़िक्रे मदीना**'' के ज़रीए़ ''**म-दनी इन्आ़मात**'' का रिसाला पुर कर के हर म-दनी (इस्लामी) माह की पहली तारीख़ अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से ''**पाबन्दे सुन्नत**'' बनने, ''**गुनाहों से नफ़रत**'' करने और ''**ईमान की ह़िफ़ाज़त**'' के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

(1) ......صحیح البخاری، کتاب الادب، باب اجابة دعاء من بر والدیه، الحدیث: ۵۹۷۴، ص۵۰۶، مفهومًا۔



www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 303 :

# क़त्ए़ रेह़्मी करना
## ( या'नी रिश्तों नातों से तअ़ल्लुक़ तोड़ना )

## क़त्ए़ रेह़्मी की मज़म्मत में आयाते क़ुरआनिया :

क़त्ए़ रेह़्मी की मज़म्मत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

﴾1﴿ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَیْكُمْ رَقِیْبًا ① (پ۴،النساء:۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** से डरो जिस के नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिहाज़ रखो बेशक **अल्लाह** हर वक़्त तुम्हें देख रहा है।

या'नी रिश्तों को तोड़ने से बचो और इर्शाद फ़रमाता है :

﴾2﴿ فَهَلْ عَسَیْتُمْ اِنْ تَوَلَّیْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ وَ تُقَطِّعُوْۤا اَرْحَامَكُمْ ㉒ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَ اَعْمٰۤى اَبْصَارَهُمْ ㉓ (پ۲۶،محمد:۲۲،۲۳)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो क्या तुम्हारे येह लच्छन (अन्दाज़) नज़र आते हैं कि अगर तुम्हें हुकूमत मिले तो ज़मीन में फ़साद फैलाओ और अपने रिश्ते काट दो येह हैं वोह लोग जिन पर **अल्लाह** ने ला'नत की और उन्हें ह़क़ से बहरा कर दिया और उन की आंखें फोड़ दीं।

﴾3﴿ الَّذِیْنَ یَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِیْثَاقِهٖ ۪ وَ یَقْطَعُوْنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ یُّوْصَلَ وَ یُفْسِدُوْنَ فِی الْاَرْضِ ؕ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ㉗ (پ۱، البقرة:۲۷)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो **अल्लाह** के अ़ह्द को तोड़ देते हैं पक्का होने के बा'द और काटते हैं उस चीज़ को जिस के जोड़ने का ख़ुदा ने हुक्म दिया और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं वोही नुक़्सान में हैं।

﴾4﴿ وَ الَّذِیْنَ یَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِیْثَاقِهٖ وَ یَقْطَعُوْنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ یُّوْصَلَ وَ یُفْسِدُوْنَ فِی الْاَرْضِ ۙ اُولٰٓىٕكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَ لَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ㉕ (پ۱۳، الرعد:۲۵)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जो **अल्लाह** का अ़ह्द उस के पक्के होने के बा'द तोड़ते और जिस के जोड़ने को **अल्लाह** ने फ़रमाया उसे क़त्अ़ करते और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं उन का ह़िस्सा ला'नत ही है और उन का नसीबा बुरा घर।

## क़त्ए़ रेह़्मी की मज़म्मत में अह़ादीसे मुबा-रका :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब मख़्लूक़ को पैदा



www.dawateislami.net

फ़रमा चुका तो रेहूम (या'नी रिश्तेदारी) ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : ''(ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !) येह (मेरा) खड़ा होना तुझ से क़त्ए रेहूमी से पनाह मांगने का सबब है।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या तू इस से राज़ी नहीं कि जो तुझ से तअ़ल्लुक़ जोड़ेगा मैं उस से जोड़ूंगा और जो तुझ से तोड़ेगा मैं उस से तोड़ूंगा ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''हां ! क्यूं नहीं, मैं राज़ी हूं।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह तेरे लिये है।'' फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अगर तुम चाहो तो येह आयते मुक़द्दसा पढ़ लो :

فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْۤا اَرْحَامَكُمْ ﴿۲۲﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰۤى اَبْصَارَهُمْ ﴿۲۳﴾ (پ۲۶،محمد:۲۲،۲۳)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो क्या तुम्हारे येह लच्छन (अन्दाज़) नज़र आते हैं कि अगर तुम्हें हुकूमत मिले तो ज़मीन में फ़साद फैलाओ और अपने रिश्ते काट दो येह हैं वोह लोग जिन पर **अल्लाह** ने ला'नत की और उन्हें ह़क़ से बहरा कर दिया और उन की आंखें फोड़ दीं।(1)

﴾2﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''सरकशी और क़त्ए रेहूमी से बढ़ कर कोई गुनाह ऐसा नहीं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या में फ़ौरन उस गुनाह के करने वाले को सज़ा दे और उस के साथ साथ आख़िरत में भी सज़ा दे।''(2)

﴾3﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''क़त्ए रेहूमी करने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा।'' ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 161 हि.) फ़रमाते हैं : ''इस से मुराद रिश्तों को तोड़ने वाला है।''(3)

﴾4﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''हर जुम्अ़रात और जुमुआ़ की रात बनी आदम के आ'माल पेश किये जाते हैं, पस क़त्ए रेहूमी करने वाले का अ़मल क़बूल नहीं किया जाता।''(4)

﴾5﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरे पास जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام आए और अ़र्ज़ की : ''येह शा'बान की पन्दरहवीं रात है और

(1)......صحیح مسلم ،کتاب البر والصلة ،باب صلة الرحم وتحریم قطیعتها ،الحدیث : ۲۵۱۸،ص۱۱۲۶ ـ

(2)......جامع الترمذی،ابواب صفة القیامة،باب فی عظم الوعید علی البغی وقطیعة الرحم،الحدیث:۲۵۱۱،ص۱۹۰۴ـ

(3)......صحیح مسلم ،کتاب البر والصلة ،باب صلة الرحم وتحریم قطیعتها ،الحدیث : ۲۵۲۰،ص۱۱۲۶ ـ

(4)......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی ہریرة، الحدیث : ۱۰۲۷۶،ج۳،ص۵۳۲ـ



www.dawateislami.net

इस रात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बनी कल्ब की बकरियों के बालों से ज़ियादा लोगों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है, इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न मुश्रिक की त़रफ़ नज़रे रह़मत फ़रमाता है, न दुश्मनी रखने वाले की त़रफ़, न क़त़्ए रेह़मी करने वाले की त़रफ़, न तकब्बुर से अपना तहबन्द लटकाने वाले की त़रफ़, न वालिदैन के ना फ़रमान की त़रफ़ और न ही शराब के आ़दी की त़रफ़।''(1)

﴾6﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''3 शख़्स जन्नत में दाख़िल न होंगे शराब का आ़दी, क़त़्ए रेह़मी करने वाला और जादू की तस्दीक़ करने वाला।''(2)

﴾7﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''इस उम्मत का एक गुरौह खाने पीने और लह्वो लअ़ब में रात गुज़ारेगा लेकिन सुब्ह़ वोह लोग उठेंगे तो बन्दर और ख़िन्ज़ीर बन चुके होंगे, उन्हें ज़मीन में धंसने और आस्मान से पथ्थर बरसने के वाक़िआ़त पेश आएंगे यहां तक कि लोग सुब्ह़ उठेंगे तो कहेंगे : आज रात फ़ुलां क़बीला धंसा दिया गया और आज रात फ़ुलां शख़्स का घर धंसा दिया गया, उन पर ज़रूर आस्मान से पथ्थर बरसाए जाएंगे जैसा कि क़ौमे लूत़ के क़बीलों और घरों पर बरसाए गए, उन पर ज़रूर तबाह करने वाली ऐसी आंधी भेजी जाएगी जिस ने क़ौमे आ़द को उन के क़बीलों और घरों में हलाक कर दिया था और ऐसा उन के शराब पीने, रेशम पहनने, गाने वाली लौंडियां रखने, सूद खाने और क़त़्ए रेह़मी करने की वज्ह से होगा।'' (ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू दावूद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मु-तवफ़्फ़ा 275 हि.) फ़रमाते हैं :) एक और बुरी ख़स्लत भी थी जिसे (रावी) ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भूल गए।(3)

﴾8﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हम (या'नी सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) इकठ्ठे बैठे हुए थे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ मुसल्मानों के गुरौह ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और सिलए रेह़मी करो क्यूं कि किसी नेकी का सवाब सिलए रेह़मी से जल्द नहीं मिलता और सरकशी से बचो क्यूं कि किसी गुनाह की सज़ा सरकशी की

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی،باب فی الصیام،ما جاء فی لیلة النصف من شعبان ،الحدیث:۳۸۳۷،ج۳،ص۳۸۴۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل،حدیث ابی موسیٰ الاشعری، الحدیث :۱۹۵۸۶ ،ج۷،ص۱۳۹ ۔

3 ......شعب الایمان للبیهقی،باب فی المطاعم والمشارب، الحدیث :۵۶۱۴،ج۵،ص۱۶ ۔

مسند ابی داوٗد الطیالسی،احادیث ابی امامة الباهلی، الحدیث :۱۱۳۷ ،ص۱۵۵ ۔



www.dawateislami.net

सज़ा से जल्द नहीं मिली और वालिदैन की ना फ़रमानी से बचो क्यूं कि जन्नत की ख़ुश्बू हज़ार (1000) साल की मसाफ़त से आएगी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वालिदैन का ना फ़रमान, क़त्ए रेहूमी करने वाला, बूढ़ा ज़ानी और तकब्बुर से अपने तहबन्द को लटकाने वाला उस की ख़ुश्बू न पा सकेगा, बेशक किब्रियाई **अल्लाहु रब्बुल आ़-लमीन** ही के लिये है।''[1]

﴾9﴿...... एक रिवायत में यूं है, रावी फ़रमाते हैं : हम हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में बैठे हुए थे कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''आज हमारे साथ क़त्ए रेहूमी करने वाला न बैठे।'' चुनान्चे, एक नौ जवान महफ़िल से उठ कर अपनी ख़ाला के पास आया, उन के दरमियान कोई रन्जिश थी, उस नौ जवान ने अपनी ख़ाला से मुआफ़ी मांगी और ख़ाला ने भी उसे मुआफ़ कर दिया। फिर वोह दोबारा मजलिस में वापस आया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''उस क़ौम पर रहमत नाज़िल नहीं होती जिस में क़त्ए रेहूमी करने वाला हो।''[2]

﴾10﴿...... एक बार हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इर्शादात बयान करते हुए फ़रमाया : ''हर क़त्ए रेहूमी करने वाला हमारे पास से चला जाए।'' एक नौ जवान अपनी फूफी के पास चला गया जिस से उस ने कई साल से सलाम व कलाम तर्क किया हुवा था और उस से सुल्ह कर ली। फूफी ने सबब पूछा तो उस ने सारी बात बता दी। फूफी बोली : ''वापस जाओ और जा कर पूछो कि उन्हों ने ऐसा क्यूं फ़रमाया ?'' नौ जवान ने वापस आ कर सबब पूछा तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं ने सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते सुना है कि ''उस क़ौम पर रहमत नाज़िल नहीं होती जिस में क़त्ए रेहूमी करने वाला हो।''[3]

﴾11﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''(रहमत के) फ़िरिश्ते उस क़ौम पर नहीं आते जिस में क़त्ए रेहूमी करने वाला हो।''[4]

---

1 ......المعجم الاوسط، الحدیث : ۵۶۶۴، ج۴، ص۱۸۷ ـ

2 ......الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلة ،باب الترغیب فی صلة الرحم......الخ، الحدیث : ۳۸۷۳، ج۳، ص۲۷۸ ـ

3 ......الادب المفردللبخاری،باب لا تنزل الرحمة علی قوم فیھم قاطع رحم،الحدیث : ۶۳،۲۰، ص۲۶ ـ

4 ......الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلة،باب الترغیب فی صلة الرحم......الخ،الحدیث : ۳۸۷۴، ج۳، ص۲۷۸ ـ



www.dawateislami.net

﴾12﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना आ'मश رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सुब्ह़ (की नमाज़) के बा'द एक मह़फ़िल में तशरीफ़ फ़रमा थे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ करने वाले को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम देता हूं कि वोह हमारे दरमियान से उठ जाए क्यूं कि हम अपने रब عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करने वाले हैं, यक़ीनन आस्मान के दरवाज़े क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ी करने वाले पर बन्द कर दिये जाते हैं।"(1)

﴾13﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "रिश्तेदारी अ़र्श से मुअ़ल्लक़ हो कर (या'नी लटक कर) कहती है : "जिस ने मुझे जोड़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जोड़ेगा और जिस ने मुझे तोड़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे तोड़ेगा।"(2)

﴾14﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : मैं ने रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "मैं **अल्लाह** हूं और मैं रह़मान हूं, मैं ने रेह़्म (या'नी रिश्तेदारी) को पैदा किया और उस का नाम अपने नाम पर रखा, पस जिस ने इसे जोड़ा मैं उसे जोड़ूंगा और जिस ने इसे तोड़ा मैं उसे तोड़ूंगा।"(3)

﴾15﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "सूद से बढ़ कर गुनाह किसी मुसल्मान की नाह़क़ बे इ़ज़्ज़ती करना है और रिश्तेदारी एक शाख़ है जिस का तअ़ल्लुक़ **रह़मान** عَزَّوَجَلَّ से है, पस जिस ने इसे तोड़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर जन्नत ह़राम फ़रमा देगा।"(4)

﴾16﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "रिश्तेदारी **रह़मान** عَزَّوَجَلَّ से मु-तअ़ल्लिक़ एक शाख़ है, जो कहती है : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मुझे तोड़ दिया गया, ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! मुझ से बुरा सुलूक किया गया, ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! मुझ पर ज़ुल्म किया गया, (वोह पुकारती रहती है) ऐ मेरे परवर दगार ! ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ !" पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जवाब इर्शाद फ़रमाता है : "क्या तू इस बात पर राज़ी नहीं कि जो तुझ से तअ़ल्लुक़ जोड़े मैं उस से

---

1 ......جامع لمعمربن راشدمع المصنف لعبد الرزاق، کتاب الجامع،باب صلة الرحم،الحدیث:۲۰۴۱۰،ج۱۰،ص۱۸۶۔

2 ......صحیح مسلم ،کتاب البر والصلہ،باب صلة الرحم وتحریم قطیعتھا ،الحدیث :۲۵۱۹،ص۱۱۲۶۔

3 ......جامع الترمذی،ابواب البروالصلة،باب ماجاء فی قطیعة الرحم،الحدیث:۱۹۰۷،ص۱۸۴۴۔

4 ......المسند للامام احمد بن حنبل،مسند سعید بن زید بن عمرو بن نفیل، الحدیث :۱۶۵۱، ج۱، ص۴۰۲۔



www.dawateislami.net

जोडूंगा और जो तुझ से तअ़ल्लुक़ तोड़े मैं भी उस से तोड़ लूंगा।''(1)

﴾17﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''रिश्तेदारी चरखे़ के तक्ले की त़रह़ है, अ़र्श को मज़्बूती से पकड़े हुए ब ज़बाने फ़सीह़ कहती है : ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जो मुझ से तअ़ल्लुक़ जोड़े तू भी उस से जोड़ ले और जो मुझ से तोड़े तू भी उस से तोड़ ले।'' पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''मैं रह़मान और रह़ीम हूं, मैं ने रेह़्म (रिश्तेदारी) को अपने नाम से मिला दिया है, पस जिस ने इसे जोड़ा मैं उसे जोडूंगा और जिस ने इसे तोड़ा मैं भी उस से तअ़ल्लुक़ तोड़ लूंगा।''(2)

﴾18﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''3 चीजें अ़र्श से मुअ़ल्लक़ (या'नी लटकी हुई) हैं : (1)...... रिश्तेदारी, येह कहती है : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरा तअ़ल्लुक़ तुझ से है, लिहाज़ा मुझे तोड़ा न जाए। (2)...... अमानत, येह कहती है : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरा तअ़ल्लुक़ तुझ से है, लिहाज़ा मुझ से ख़ियानत न की जाए और (3)...... ने'मत, येह कहती है : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरा तअ़ल्लुक़ तुझ से है, लिहाज़ा मेरी ना शुक्री न की जाए।''(3)

﴾19﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''अ़र्श के पाए से एक मोहर् लटकी हुई है, जब रेह़्म (या'नी रिश्तेदारी अपनी बे ह़ुरमती की) शिकायत करती है, गुनाह सरज़द होने लगते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी पर जुर्अत की जाती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस मोहर् को भेजता है जो उस के दिल पर लग जाती है, पस इस के बा'द उसे कोई चीज़ समझ नहीं आती।''(4)

## तम्बीह :

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करना कसीर सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका से वाज़ेह़ है बल्कि इन में से अक्सर के सह़ीह़ होने पर इत्तिफ़ाक़ है और इस से ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) के तवक़्क़ुफ़ का भी रद हो गया जो उन्हों ने **''साह़िबे शामिल''** के इस क़ौल पर किया कि ''क़त्ए़ रेह़्मी कबीरा गुनाह है।'' और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़-करिय्या यह़्या बिन शरफ़ न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 676 हि.) के इन

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل،مسند ابی هريرة،الحديث : ۸۹۸۵،ج۳،ص۳۲۸۔

2 ......الترغيب والترهيب،كتاب البر والصلة،باب الترغيب فى صلة الرحم......الخ،الحديث:۳۸۵۳،ج۳،ص۲۷۲۔

3 ......البحرالزخارالمعروف بمسندالبزار، مسند ثوبان، الحديث :۴۱۸۱، ج۱۰، ص۱۱۷۔

4 ......شعب الايمان للبيهقى، باب فى معالجة كل ذنب بالتوبة ،الحديث : ۷۲۱۳،۱۴،ج۵،ص۴۴۳،بتغيرٍقليلٍ۔



www.dawateislami.net

के इस तवक्कुफ़ को बर क़रार रखने की भी तरदीद हो गई । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 676 हि.) ने दीगर मक़ामात पर इन के तवक्कुफ़ पर ए'तिराज़ किया लेकिन इस तवक्कुफ़ पर कोई ए'तिराज़ नहीं किया ह़ालां कि इस की तरदीद ज़ियादा ज़रूरी थी । क़त्ए रेह़मी करने वाले की मज़म्मत में मज़्कूरा सरीह़ अह़ादीसे मुबा-रका और दूसरी आयते त़य्यिबा के बा वुजूद इस में कैसे तवक्कुफ़ किया जा सकता है ? नीज़ हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मज़्कूरा अह़ादीसे मुबा-रका में से पहली ह़दीसे पाक में ही क़त्ए रेह़मी करने वाले को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तअ़ल्लुक़ तोड़ने वाला क़रार दिया है और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान कि ''क़त्ए तअ़ल्लुक़ी करने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा।'' और क़त्ए रेह़मी से जल्दी किसी गुनाह की सज़ा नहीं मिलती और येह कि इस (या'नी क़त्ए रेह़मी करने वाले) का कोई अ़मल क़बूल नहीं होता वग़ैरा । लिहाज़ा इस में तवक्कुफ़ करने की कोई गुन्जाइश नहीं । फिर मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى का मौक़िफ़ देखा, उन्हों ने फ़रमाया : ''क़त्ए रेह़मी के कबीरा गुनाह होने में तवक्कुफ़ नहीं करना चाहिये क्यूं कि ऐसा (या'नी क़त्ए तअ़ल्लुक़ी) करने वाले के ला'नती होने पर क़ुरआने करीम में वाज़ेह़ नस्स मौजूद है ।''

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बाक़िर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَافِر फ़रमाते हैं : मेरे वालिदे गिरामी ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने इर्शाद फ़रमाया : ''क़त्ए रेह़मी करने वाले के साथ दोस्ती न करो क्यूं कि मैं ने क़ुरआने पाक में इसे 3 जगहों पर मल्ऊ़न पाया ।'' और फिर उन्हों ने साबिक़ा 3 आयात पढ़ीं या'नी क़िताल वाली आयते करीमा में सरीह़ ला'नत है, सूरए रा'द की आयते मुबा-रका में उ़मूमी त़ौर पर ला'नत है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जिन चीज़ों के जोड़ने का हुक्म दिया उस में रेह़म (या'नी रिश्तेदारी) वग़ैरा भी शामिल हैं । और सूरए ब-क़रह की आयते मुक़द्दसा में लाज़िमी त़ौर पर ला'नत साबित है क्यूं कि येह उन चीज़ों में से है जो ख़सारे को लाज़िम हैं । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अबू अ़ब्दुल्लाह** मुह़म्मद बिन अह़मद क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 671 हि.) ने अपनी तफ़्सीर में सिलए रेह़मी के वाजिब और क़त्ए रेह़मी के ह़राम होने पर उम्मत का इज्माअ़ नक़्ल फ़रमाया है ।

**सुवाल :** क़त्ए रेह़मी से क्या मुराद है ?

**जवाब :** इस में इख़्तिलाफ़ है । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़रआ़ वली बिन इ़राक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَاقِى फ़रमाते हैं : ''बेहतर येह है कि इसे इसाअत (या'नी बुराई) के साथ ख़ास किया जाए ।'' जब कि बा'ज़ दीगर कहते हैं कि ''इसे बुराई के साथ ख़ास करना मुनासिब नहीं बल्कि



www.dawateislami.net

इस से एह्सान का तर्क करना मुराद लेना चाहिये क्यूं कि अहादीसे मुबा–रका सिलए रेहमी का हुक्म देने और क़त्ए रेहमी से मन्अ़ करने वाली हैं और इन दोनों के दरमियान कोई वासित़ा नहीं, जब कि सिला से मुराद किसी क़िस्म का एह्सान करना और क़त्ए रेहमी इस की ज़िद है या'नी एह्सान न करना।"

अलबत्ता ! आप को इख़्तियार है कि इन दोनों ता'रीफ़ों में से हर एक पर ए'तिराज़ कर सकते हैं।

**रही पहली ता'रीफ़** तो अगर इसाअत से मुराद ऐसा फ़े'ल हो जो मक्रूह और ह़राम को शामिल हो या जो ह़राम के साथ ख़ास हो अगर्चे सग़ीरा ही क्यूं न हो तो येह इमाम बुल्क़ीनी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَنِی के ना फ़रमानी के मु–तअ़ल्लिक़ बयान किये गए इस क़ाइदे की नफ़ी करता है कि "अगर उस ने अपने वालिदैन में से किसी के साथ ऐसा सुलूक किया कि अगर वोह अजनबी के साथ करता तो येह गुनाहे सग़ीरा और ह़राम होता जब कि वालिदैन में से किसी के साथ ऐसा सुलूक करना कबीरा गुनाह हो जाएगा।" जब ना फ़रमानी का क़ाइदा येह है और येह भी मा'लूम है कि वालिदैन का ह़क़ बाक़ी क़रीबी रिश्तेदारों से ज़ियादा होता है, नीज़ ना फ़रमानी क़त्ए रेहमी के इलावा होती है जैसा कि उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का कलाम वज़ाह़त करता है और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡكَافِی (मु–तवफ़्फ़ा 623 हि.) का क़त्ए रेहमी को कबीरा क़रार देने में तवक़्क़ुफ़ करना भी मा'लूम हो चुका है तो अब ज़रूरी है कि क़त्ए रेहमी पर ऐसे कबीरा गुनाह होने का हुक्म लगाया जाए जो ना फ़रमानी से भी ज़ियादा ईज़ा का बाइ़स हो ताकि वालिदैन के मक़ाम व मर्तबे की बुलन्दी ज़ाहिर हो और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़रआ़ رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه के क़ौल के ए'तिबार से दोनों का एक जैसा होना लाज़िम आता है बल्कि क़त्ए रेहमी में ना फ़रमानी से कम ईज़ा पाई जाती है इस पर बिना करते हुए कि उन के कलाम में इसाअत उस के फ़े'ल को शामिल है पस इस लिहाज़ से दीगर रिश्तेदार वालिदैन से जुदा हो जाएंगे इस ए'तिबार से कि मुत्लक़ ईज़ा उन के ह़क़ में कबीरा गुनाह है जब कि वालिदैन के ह़क़ में कबीरा नहीं। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़रआ़ رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه का मज़्कूरा कलाम उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के वाज़ेह़ मौक़िफ़ के ख़िलाफ़ है लिहाज़ा इस की तरदीद वाजिब है ताकि मज़्कूरा बात लाज़िम न आए।

और जब येह मा'लूम हो गया कि ना फ़रमानी के मु–तअ़ल्लिक़ उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का कलाम मज़्कूरा मौक़िफ़ की नफ़ी करता है तो दीगर का येह मौक़िफ़ कि क़त्ए रेहमी से मुराद एह्सान न करना है। तो येह भी पहले मौक़िफ़ से रद कर दिया गया और अब



www.dawateislami.net

इन के कलाम और ना फ़रमानी और क़त्ए रेह्मी के दरमियान फ़र्क़ में मुवा-फ़क़त के लिये येह नतीजा निकलता है कि पहले से मुराद वोह है जो मैं ने ज़िक्र किया है न कि वोह जो अ़ल्लामा बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى के ह़वाले से गुज़रा। क्यूं कि उस से दोनों का एक जैसा होना लाज़िम आता है और दूसरे से मुराद बिग़ैर उ़ज़्रे शर-ई के एह़सान और तअ़ल्लुक़ ख़त्म करना क्यूं कि इस का तोड़ना दिलों की दूरी, नफ़रत और इस की अज़िय्यत की त़रफ़ ले जाता है तो इस सूरत में तस्दीक़ की जाएगी कि येह क़त्ए रेह्मी है और अगर फ़र्ज़ कर लिया जाए कि क़त्ए रेह्मी करने वाले की त़रफ़ से क़रीबी रिश्तेदार को एह़सान और बुराई नहीं पहुंचती तो वोह इस से फ़ासिक़ नहीं होगा क्यूं कि वालिदैन के ह़क़ में अगर येह फ़र्ज़ कर लिया जाए कि वोह उन से ऐसा सुलूक न करे जो ईज़ा का मु-तक़ाज़ी हो तो कबीरा नहीं होगा तो दीगर क़रीबी रिश्तेदारों के ह़क़ में ब द-र-जए औला कबीरा न होगा और अगर येह फ़र्ज़ कर लिया जाए कि वोह अपने क़रीबी रिश्तेदार से एह़सान नहीं रोकता लेकिन इस के साथ सग़ीरा गुनाह और फ़े'ले ह़राम का इरतिकाब करता है या उस के सामने तेवरी चढ़ाता है या मज्मअ़ में उस के लिये खड़ा नहीं होता और उस को अहम्मिय्यत नहीं देता तो येह फ़िस्क़ नहीं कहलाएगा ब ख़िलाफ़ इस के कि अपने वालिदैन में से किसी के साथ ऐसा करे। क्यूं कि इन का ज़ियादा ह़क़ तक़ाज़ा करता है कि इन्हें बाक़ी क़रीबी रिश्तेदारों पर ऐसी तरजीह़ दी जाए जिस की मिसाल उन में न पाई जाए और दूसरे क़ाइदे की बिना पर जो मैं ने ज़िक्र किया इस में कोई फ़र्क़ नहीं कि क़रीबी रिश्तेदार से माल, ख़ुतो किताबत और मुलाक़ात वग़ैरा के ज़रीए एह़सान किया जाए पस ऐसा करने के बा'द बिला उ़ज़्रे शर-ई इन को रोक लेना कबीरा गुनाह है।

**सुवाल :** माल, मुलाक़ात या ख़ुतो किताबत वग़ैरा में उ़ज़्र से क्या मुराद है ?

**जवाब : माल में उ़ज़्र** से मुराद येह हो सकता है कि पहले वोह सिलए रेह्मी किया करता था फिर उस की अपनी ज़रूरिय्यात बढ़ गईं या शारेअ़ ने किसी अजनबी के ज़ियादा मोह़ताज या नेक होने की वज्ह से इस को क़रीबी रिश्तेदार पर मुक़द्दम करने का हुक्म दिया तो इस सूरत में उस का एह़सान न करना या उ़ज़्र की वज्ह से किसी अजनबी को मुक़द्दम करना उस से फ़िस्क़ ख़त्म कर देगा अगर्चे वोह इस वज्ह से क़रीबी रिश्तेदार की दिलजोई ही ख़त्म कर दे क्यूं कि उस ने क़रीबी पर अजनबी को मुक़द्दम करने में शारेअ़ के हुक्म की रिआ़यत की है और येह तो वाज़ेह़ बात है कि अगर वोह क़रीबी रिश्तेदार को साल में मुअ़य्यन मिक़्दार देता था फिर उस में कमी कर दी तो वोह फ़ासिक़ नहीं होगा लेकिन अगर बिला उ़ज़्रे शर-ई बिल्कुल इमदाद ही रोक दी तो फ़ासिक़ होगा।



www.dawateislami.net

**सुवाल :** इस से तो येह लाज़िम आता है कि क़रीबी पर इस ख़ौफ़ से एह्सान न किया जाए कि अगर उस पर एह्सान किया तो हमेशा एह्सान करना पड़ेगा और अगर एह्सान करना बन्द कर दिया तो फ़ासिक़ हो जाएगा हा़लां कि येह क़रीबी रिश्तेदार पर एह्सान करने पर उभारने में शारेअ़ की मुराद के ख़िलाफ़ है ?

**जवाब :** येह ख़दशा लाज़िम नहीं आता क्यूं कि येह साबित हो चुका कि उस पर लाज़िम येह है कि किसी पर अपनी इस्तिता़अ़त के मुता़बिक़ एह्सान करे, नीज़ एह्सान करना बिल्कुल ही तर्क न कर दे। अक्सर लोगों को क़राबत की शफ़्क़त और रिश्तेदारों की रिआ़यत उन से सिलए रेह्मी करने पर उभारती है, पस जिन से महब्बत हो उन पर हमेशा एह्सान करने का मुआ़-मला नफ़रत पैदा नहीं करता बल्कि मज़ीद एह्सान करने पर उभारता है, अलबत्ता ! येह ख़दशा उस वक़्त लाज़िम आता जब हम यूं कहते कि "जब वोह उसे कोई ख़ास चीज़ दे तो उस पर उस मख़्सूस चीज़ का हमेशा देना लाज़िम है अगर्चे कोई उ़ज़्रे शर-ई भी मौजूद हो।" हा़लां कि हम ने इस त़रह़ नहीं कहा कि जिस से येह ख़दशा पैदा होता।

**(1)...... मुलाक़ात में उ़ज़्र** का क़ाइदा येह हो सकता है कि जुमुआ़ के उ़ज़्र की वज्ह से वोह मुलाक़ात न कर सका क्यूं कि येह फ़र्ज़े ऐ़न है और इस का छोड़ना कबीरा गुनाह है।

**(2)...... ख़त़ो किताबत तर्क करने में उ़ज़्र** का ज़ाबिता़ येह हो सकता है कि वोह कोई ऐसा क़ाबिले ए'तिमाद शख़्स नहीं पा रहा कि जिसे ख़त़ दे कर भेज सके और येह बात ज़ाहिर है कि अगर उस ने किसी (शर-ई) उ़ज़्र की वज्ह से मख़्सूस वक़्त में अपने किसी क़रीबी अ़ज़ीज़ से मुलाक़ात न की तो उस पर किसी दूसरे वक़्त में उस मुलाक़ात की क़ज़ा लाज़िम नहीं।

पस जो मैं ने ज़िक्र किया उस में ग़ौरो फ़िक्र करें और उस से फ़ाएदा हा़सिल करें क्यूं कि मैं ने किसी को इन निकात पर आगाह नहीं पाया हा़लां कि इस में **उ़मूमे बल्वा** है और इस का लिहा़ज़ रखना बहुत ज़रूरी है।

औलाद, चचा और ख़ाला ज़विल अरहा़म में से हैं, अब इन के बारे में गुफ़्त-गू होगी और इन से क़त़ए तअ़ल्लुक़ी और वालिदैन की ना फ़रमानी के दरमियान फ़र्क़ के मु-तअ़ल्लिक़ वज़ाहत होगी।

﴾20﴿...... हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ख़ाला मां के क़ाइम मक़ाम है।"(1)

---

(1)......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب عمرة القضاء، الحدیث : ۴۲۵۱، ص۳۴۸۔



www.dawateislami.net

﴾21﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''आदमी का चचा उस के बाप की मिस्ल है।''(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा ज़र-कशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं : ''ख़ाला और चचा दोनों मां और बाप की मिस्ल हैं यहां तक कि ना फ़रमानी में भी एक जैसा हुक्म है।'' मगर इन का येह क़ौल मह़ल्ले नज़र है और इन अह़ादीस से येह मुराद नहीं क्यूं कि इन दोनों अह़ादीस में उ़मूम नहीं, न ही येह फ़रमाने अक़्दस ख़ास ना फ़रमानी के मु-तअ़ल्लिक़ हुवा। मिस्ल होने के लिये तो चन्द उमूर में मुशा-बहत काफ़ी है। म-सलन बच्चे की परवरिश का ह़क़ और मह़रूमियत वग़ैरा ख़ाला के लिये भी इसी त़रह़ साबित हैं जिस त़रह़ मां के लिये साबित हैं और चचा की इ़ज़्ज़त करना इसी त़रह़ ज़रूरी है जिस त़रह़ बाप की इ़ज़्ज़त करना ज़रूरी है। मगर ना फ़रमानी के मुआ़-मले में ख़ाला और चचा को वालिदैन के मिस्ल क़रार देने की कोई तसरीह़ नहीं, नीज़ येह हमारे (शाफ़ेई) अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के कलाम के भी मुनाफ़ी है, लिहाज़ा इस की कोई तावील नहीं की जा सकती, बल्कि आयाते त़य्यिबा और अह़ादीसे मुबा-रका तो इस बात पर दलालत करती हैं कि वालिदैन को जिस रिआ़यत, एह़तिराम और हुस्ने सुलूक के अ़ज़ीम मुआ़-मले से ख़ास किया गया है उस तक बक़िय्या अक़ारिब नहीं पहुंच सकते और इस से लाज़िम आता है कि इन की ना फ़रमानी तो फ़िस्क़ का मूजिब है लेकिन दूसरों की ना फ़रमानी फ़िस्क़ का मूजिब नहीं। जब कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : **''क़त़्ए़ रेह़मी करने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा।''**(2)

**सुवाल :** येह है कि बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का क़ौल ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़रआ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के कलाम के मुक़ाबिल साबिक़ा वज़ाह़त, की ताईद करता है। चुनान्चे, गुज़श्ता ह़दीसे पाक के तह़त बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ''जिस ने अपने कमज़ोर व ज़ईफ़ क़राबत दारों से क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ी की और उन्हें छोड़ा और उन पर तकब्बुर किया और नेकी और एह़सान के ज़रीए़ उन के साथ सिलए रेह़मी न की ह़ालां कि येह अमीर हो और वोह फ़क़ीर तो वोह इस वईद में दाख़िल है या'नी दुख़ूले जन्नत से मह़रूम है। हां ! अगर वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तौबा कर ले और अपने क़राबत दारों के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आए तो इस वईद से बरी हो सकता है। चुनान्चे,

---

1 ......صحیح مسلم ،کتاب الزکاۃ،باب فی تقدیم الزکاہ ومنعھا،الحدیث:۲۲۷۷،ص۸۳۲۔

2 ......صحیح البخاری ،کتاب الادب ،باب اثم القاطع، الحدیث:۵۹۸۴، ص۵۰۷۔



www.dawateislami.net

﴾22﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जिस के क़राबत दार कमज़ोर (या'नी ग़रीब) हों और वोह उन पर एह्सान न करे और अपना स-दक़ा ग़ैरों को दे दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न तो उस का स-दक़ा क़बूल फ़रमाएगा और न ही बरोज़े क़ियामत उस की त़रफ़ नज़रे रह्मत फ़रमाएगा।''(1)

अगर फ़क़ीर हो तो अपने क़राबत दारों से मुलाक़ात कर के नीज़ उन के अह्वाल पूछ कर तअ़ल्लुक़ात दुरुस्त रखे। चुनान्चे,

﴾23﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''अपने क़रीबी रिश्तेदारों से सिलए रेह्मी करो अगर्चे सलाम करने के साथ ही हो।''(2)

**जवाब :** क़ाइल का अपने कमज़ोर रिश्तेदारों से क़त्ए तअ़ल्लुक़ी करने और उन्हें छोड़ने या उन पर तकब्बुर करने वाले को जन्नत से मह्रूम क़रार देना वाज़ेह है मगर नेकी और एह्सान के ज़रीए उन के साथ सिलए रेह्मी न करने वाले पर जहन्नमी होने का मुत्लक़ हुक्म लगाना मम्नूअ़ है और इस के जवाब में हमारे (शाफ़ेई) अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की येह वज़ाहत काफ़ी है कि ''मां, बाप, दादा, दादी और ऊपर तक तमाम आबाओ अज्दाद पर ख़र्च करना वाजिब है और बेटा बेटी, पोता पोती और नीचे तक की तमाम औलाद पर भी ख़र्च करना वाजिब है, लेकिन दूसरे क़राबत दारों पर ख़र्च करना वाजिब नहीं।'' और येह भी तसरीह़ है कि ''क़राबत दारों और ज़विल अरहाम पर स-दक़ा करना सुन्नत है न कि वाजिब।''

अगर उन पर माल के साथ एह्सान न करने को कबीरा क़रार दिया जाए तो अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के मुत्लक़ क़रार देने का कोई फ़ाएदा न होगा, पस उन के क़त्ए रेह्मी क़रार देने से ज़ाहिर येह होता है कि वोह कोई चीज़ देता था फिर रोक ली और क़त्ए रेह्मी के मु-तअ़ल्लिक़ मेरा ज़िक्र कर्दा मौक़िफ़ भी उसी की ताईद करता है जो हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़रआ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه और इन के मुख़ालिफ़ मौक़िफ़ रखने वाले की वज़ाह़त के ख़िलाफ़ है, नीज़ उन का मुन-द-र-जए बाला अहादीसे मुबा-रका से इस्तिद्लाल का सह़ीह़ होना उन की सनद के सह़ीह़ होने पर मौक़ूफ़ है। हां ! जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तौफ़ीक़ दी हो उसे चाहिये कि इस क़ौल पर अ़मल करे और अपनी क़ुदरत के मुताबिक़ क़राबत दारों पर ख़ूब एह्सान करे। अन्क़रीब क़रीबी रिश्तेदारों पर एह्सान करने की ताकीद और इस की फ़ज़ीलत व मर्तबे के बारे में कसीर अहादीसे मुबा-रका बयान की जाएंगी।

---

1 ......المعجم الاوسط، الحديث : ٨٨٢٨، ج٦، ص٢٩٦، مفهوماً۔

2 ......الكامل فى ضعفاء الرجال، الرقم١٦٤٩ محمد من عبد الملک الانصاری، ج٧، ص٣٤٨۔



www.dawateislami.net

## बरहूत नामी कूंआं जहन्नम के मुंह पर है :

**मन्क़ूल** है कि एक अमीर शख़्स ने ह़ज का इरादा किया तो एक और अमीर शख़्स के पास अ़रफ़ा से लौटने तक बत़ौरे अमानत हज़ार (1000) दीनार रखे। जब वापस आया तो उसे मरा हुवा पाया, उस ने अपने माल के मु-तअ़ल्लिक़ उस की औलाद से दरयाफ़्त किया लेकिन उन्हें इस की कोई ख़बर न थी, लिहाज़ा उस ने मक्कए मुकर्रमा के उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से इस मस्अले का ह़ल दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : जब आधी रात हो तो आबे ज़मज़म के कूंएं के पास आ कर उस में देखना और फिर उस मरने वाले शख़्स का नाम ले कर आवाज़ देना, अगर वोह अहले ख़ैर में से हुवा तो पहली ही बार पुकारने पर तुम्हें जवाब देगा। चुनान्चे, वोह गया और उस में आवाज़ दी लेकिन किसी ने इसे जवाब न दिया, उस ने उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام को वापस आ कर बताया तो उन्हों ने اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ पढ़ा और फ़रमाया : "हमें ख़ौफ़ है कि तुम्हारा दोस्त जहन्नमियों में से है, अब तुम यमन जाओ, वहां एक **बरहूत** नामी कूंआं है, मन्क़ूल है कि वोह जहन्नम के मुंह पर है, वहां रात के वक़्त जा कर देखना और पुकारना : ऐ फ़ुलां ! वोह तुम्हारी आवाज़ का जवाब देगा।"

**चुनान्चे**, वोह यमन गया और जा कर उस कूंएं के बारे में लोगों से दरयाफ़्त किया तो उस की रहनुमाई वहां तक कर दी गई, लिहाज़ा रात के वक़्त उस ने वहां जा कर आवाज़ दी : ऐ फ़ुलां ! पस इस के उस दोस्त ने इस की आवाज़ का जवाब दिया तो इस ने पूछा : "मेरे दीनार कहां हैं ?" उस ने जवाब दिया : मैं ने अपने घर की फ़ुलां जगह उसे दफ़्न कर दिया और अपने बच्चों को भी नहीं बताया, उन के पास जाओ और वहां गढ़ा खोदोगे तो अपना माल पा लोगे। फिर इस ने पूछा : किस चीज़ ने तुम्हें यहां पहुंचाया ह़ालां कि मैं तुम्हारे बारे में अच्छा गुमान करता था ? उस ने जवाब दिया : "मेरी एक ग़रीब बहन थी, मैं ने उसे छोड़ दिया और उस पर मेह्रबानी नहीं करता था, इस सबब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे सज़ा दी और मुझे इस मक़ाम पर पहुंचा दिया।"

साबिक़ा सह़ीह़ ह़दीस इस की तस्दीक़ करती है। चुनान्चे, रसूले पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "क़त़ए रेह़्मी करने वाला जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।"(1)

**फ़ाएदा :** अब वोह अह़ादीसे मुबा-रका ज़िक्र की जाएंगी जिन में सिलए रेह़्मी की सख़्त

---

(1) ......صحیح مسلم، کتاب البر والصلة، باب صلة الرحم وتحریم قطیعتها، الحدیث: ۲۵۲۰، ص۱۱۲۶۔



www.dawateislami.net

ताकीद की गई और इस पर उभारा गया है। चुनान्चे,

﴾24﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अपने मेहमान की इ़ज़्ज़त करे और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के दिन पर यक़ीन रखता है उसे चाहिये कि सिलए रेह़मी करे और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अच्छी बात करे या ख़ामोश रहे।''(1)

﴾25﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिसे येह पसन्द हो कि उस का रिज़्क़ कुशादा और उ़म्र दराज़ कर दी जाए तो उसे चाहिये कि सिलए रेह़मी करे।''(2)

﴾26﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते सुना : ''जिसे येह पसन्द हो कि उस का रिज़्क़ कुशादा और उ़म्र दराज़ कर दी जाए तो उसे चाहिये कि सिलए रेह़मी करे।''(3)

﴾27﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''अपने नसब की ता'लीम ह़ासिल करो जिस के ज़रीए़ तुम अपने रिश्ते जोड़ो क्यूं कि रिश्ते जोड़ना (या'नी सिलए रेह़मी करना) घर वालों में मह़ब्बत, माल में ब-र-कत और दराज़िये उ़म्र का सबब है।''(4)

﴾28﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ता़ने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिसे येह पसन्द हो कि उस की उ़म्र में इज़ाफ़ा हो, उस का रिज़्क़ फ़राख़ कर दिया जाए और उस से बुरी मौत दूर कर दी जाए तो उसे चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरे और सिलए रेह़मी करे।''(5)

﴾29﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**तौरात** शरीफ़ में लिखा है कि जिसे येह पसन्द हो कि उस की उ़म्र और रिज़्क़ में

---

(1)......صحیح البخاری، کتاب الادب، باب اکرام الضیف......الخ ،الحدیث : ۶۱۳۸،ص۵۱۷۔

(2)......صحیح البخاری، کتاب الادب،باب من بسط له فی الرزق لصلة الرحم ،الحدیث :۵۹۸۶،ص۵۰۷۔

(3)......صحیح البخاری، کتاب الادب،باب من بسط له فی الرزق لصلة الرحم ،الحدیث :۵۹۸۵،ص۵۰۷۔

(4)......جامع الترمذی ،ابواب البروالصلة ،باب ماجاء فی تعلیم النسب، الحدیث :۱۹۷۹، ص۱۸۵۰۔

(5)......المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند علی بن ابی طالب ،الحدیث : ۱۲۱۲،ج۱،ص۳۰۲۔



www.dawateislami.net

इज़ाफ़ा हो तो उसे चाहिये कि सिलए रेहमी करे।"(1)

﴾30﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ स-दक़ा और सिलए रेहमी की वज्ह से उ़म्र में इज़ाफ़ा फ़रमाता है, नीज़ बुरी मौत और हर ना पसन्दीदा और क़ाबिले एह़तिराज़ शै दूर फ़रमा देता है।"(2)

## सब से ज़ियादा पसन्दीदा और ना पसन्दीदा आ'माल :

﴾31﴿...... क़बीलए ख़स्अ़म के एक शख़्स का बयान है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के झुरमट में जल्वा अफ़रोज़ थे, मैं ने बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "आप ही हैं जो अपने आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रसूल कहते हैं ?" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हां ! मैं ही हूं।" मैं ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा अ़मल कौन सा है ?" इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाना।" मैं ने फिर अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इस के बा'द कौन सा ?" इर्शाद फ़रमाया : "सिलए रेहमी करना।" (मैं ने फिर अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इस के बा'द कौन सा ?" इर्शाद फ़रमाया : "नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना।") मैं ने फिर अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सब से ज़ियादा कौन सा अ़मल ना पसन्द है ?" इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना।" मैं ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! फिर कौन सा ?" इर्शाद फ़रमाया : "क़त़्ए रेहमी करना।" मैं ने फिर अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस के बा'द कौन सा ?" इर्शाद फ़रमाया : "बुराई का हुक्म देना और नेकी से मन्अ़ करना।"(3)

﴾32﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक सफ़र में थे कि एक आ'राबी आया और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ऊंटनी की महार पकड़ कर अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! या कहा : या मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !

---

1 ......المستدرک، کتاب البر والصلۃ، باب ارحموا اھل الارض ۔۔ الخ، الحدیث: ۷۳۶۱، ج۵، ص۲۲۲، بتغیرٍ قلیلٍ۔

2 ......مسند ابی یعلی الموصلی، مسند انس بن مالک، الحدیث: ۴۰۹۰، ج۳، ص۳۹۸۔

3 ......مسند ابی یعلی الموصلی، حدیث رجل من خثعم لم یسم، الحدیث: ۶۸۰۴، ج۶، ص۵۵۔
الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ وغیرھما، الترغیب فی صلۃ الرحم۔۔۔الخ، حدیث: ۳۸۴۰



www.dawateislami.net

मुझे कोई ऐसा अ़मल बताइये जो मुझे जन्नत के क़रीब और जहन्नम से दूर कर दे।'' तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रुक गए फिर सहाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की त़रफ़ देख कर इर्शाद फ़रमाया : ''इस शख़्स को नेकी की तौफ़ीक़ दी गई या फ़रमाया : इसे हिदायत दी गई।'' इस के बा'द उस की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो कर इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''तुम ने क्या कहा था ?'' उस ने अपना सुवाल दोहराया तो हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करो और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराओ, नमाज़ क़ाइम करो, ज़कात अदा करो और सिलए रेह़मी करो, (फिर फ़रमाया) अब ऊंटनी को छोड़ दो।''(1)

﴾33﴿...... एक रिवायत में है कि ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अपने ज़ी रेह़म से सिलए रेह़मी करो।'' जब वोह चला गया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मैं ने उसे जिन बातों का हुक्म दिया है अगर उस ने इन को मज़्बूत़ी से थामे रखा तो जन्नत में दाख़िल हो जाएगा।''(2)

﴾34﴿...... हु़ज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक क़ौम के ज़रीए शहरों को आबाद करता है और उन के मालों को बढ़ा देता है लेकिन जब से उन्हें पैदा किया ना पसन्द करते हुए उन की त़रफ़ नज़र (रह़मत) नहीं फ़रमाई।'' अ़र्ज़ की गई : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! उन पर येह (इन्आ़मो इक्राम) किस वज्ह से है ?'' तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''उन के सिलए रेह़मी करने की वज्ह से।''(3)

﴾35﴿...... सय्यिदे आ़लम, शाहे बनी आदम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिसे नरमी अ़त़ा की गई उसे दुन्या व आख़िरत की भलाई से ह़िस्सा अ़त़ा कर दिया गया और सिलए रेह़मी, अच्छा पड़ोस और अच्छे अख़्लाक़ मुल्कों को आबाद करते और उ़म्रों में इज़ाफ़ा करते हैं।''(4)

﴾36﴿...... एक सह़ाबिय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا बयान करती हैं कि मैं ने बारगाहे रिसालत मआब में अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! लोगों में सब से अच्छा कौन है ?'' तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''उन में सब से ज़ियादा अपने रब عَزَّوَجَلَّ से डरने

---

1 ......صحیح مسلم ،کتاب الایمان،باب بیان الایمان الذی یدخل به الجنة ......الخ ،الحدیث :۱۰۴،ص۶۸۲ـ

2 ......المرجع السابق، الحدیث :۱۰۶،ص۶۸۳ـ

3 ......المعجم الکبیر،الحدیث :۱۲۵۵۶،ج۱۲،ص۶۷،"ینمی لهم الاموال"بدله"ویثمرالاموال"ـ

4 ......المسند للامام احمد بن حنبل،مسند السیدة عائشة،الحدیث :۲۵۳۱۴،ج۹،ص۵۰۴ـ



www.dawateislami.net

वाला, सब से ज़ियादा सिलए रेहूमी करने वाला, सब से ज़ियादा नेकी का हुक्म देने वाला और सब से ज़ियादा बुराई से मन्अ़ करने वाला।''(1)

﴾37﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ''मेरे ख़लील صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे अच्छी आ़दात की वसिय्यत फ़रमाई, मुझे हुक्म फ़रमाया कि (1) (दुन्यावी ए'तिबार से) अपने से आ'ला की त़रफ़ न देखूं बल्कि अपने से अदना की त़रफ़ देखूं (2) मिस्कीनों से मह़ब्बत और उन से कुरबत रखूं (3) सिलए रेहूमी करूं अगर्चे दूर का रिश्तेदार ही हो (4) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरूं (5) ह़क़ बात कहूं अगर्चे कड़वी हो और (6) ''لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہ'' की कसरत करूं क्यूं कि येह जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है।''(2)

﴾38﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि ''उन्हों ने एक लौंडी आज़ाद की लेकिन रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इजाज़त न ली। जब वोह दिन आया जिस में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के पास आते थे तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मा'लूम है कि मैं ने अपनी लौंडी आज़ाद कर दी ?'' इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''क्या वाक़ेई तुम ने ऐसा ही किया ?'' अ़र्ज़ की : ''जी हां।'' इर्शाद फ़रमाया : ''अगर तुम अपने मामूओं को दे देती तो ज़ियादा अज्र मिलता।''(3)

﴾39﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : ''मैं ने एक बहुत बड़ा गुनाह किया है, क्या मेरे लिये तौबा है ?'' सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''क्या तुम्हारी मां है ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''नहीं।'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोबारा पूछा : ''क्या तुम्हारी ख़ाला है ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''जी हां।'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''उस के साथ अच्छा सुलूक किया करो।''(4)

﴾40﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

---

(1)......شعب الایمان للبیھقی،باب فی صلۃ الارحام،الحدیث:۷۹۵۰،ج۶،ص۲۲۰۔

(2)......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان،کتاب البر والاحسان ،باب صلۃ الرحم ،الحدیث :۴۵۰،ج۱،ص۳۳۷۔

(3)......صحیح البخاری،کتاب الھبۃ،باب ھبۃ المراۃ لغیر زوجھا......الخ، الحدیث :۲۵۹۲،ص۲۰۴۔

(4)......جامع الترمذی،ابواب البروالصلۃ،باب فی برالخالۃ،الحدیث :۱۹۰۴،ص۱۸۴۴،"اذنبت"بدلہ"اصبت"۔



www.dawateislami.net

''सिलए रेहूमी करने वाला वोह नहीं जो दूसरे की सिलए रेहूमी का बदला दे बल्कि सिलए रेहूमी करने वाला तो वोह है कि जब उस से क़त्ए रेहूमी की जाए तब भी वोह सिलए रेहूमी करे।''(1)

﴾41﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तुम हर एक की राय पर न चलो या'नी यूं न कहो कि अगर लोग अच्छा सुलूक करेंगे तो हम भी करेंगे और अगर वोह ज़ुल्म करेंगे तो हम भी करेंगे। बल्कि अपने आप पर ए'तिमाद व भरोसा करो, अगर लोग तुम से भलाई करें तो भलाई करो और अगर ज़ुल्म करें तो ज़ुल्म न करो।''(2)

﴾42﴿...... (ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक शख़्स ने बारगाहे न-बवी में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की :) ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे (बा'ज़) रिश्तेदार ऐसे हैं कि मैं तो उन से तअ़ल्लुक़ जोड़ता हूं जब कि वोह मुझ से तअ़ल्लुक़ तोड़ते हैं और मैं उन से भलाई करता हूं जब कि वोह मुझ से बुराई करते हैं और मैं उन से बुर्द-बारी से पेश आता हूं जब कि वोह मुझ से जहालत आमेज़ रवय्या इख़्तियार करते हैं।'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर तुम दर ह़क़ीक़त ऐसा ही करते हो जैसा तुम ने कहा है तो गोया तुम उन्हें गर्म राख खिला रहे हो और जब तक तुम इस रविश पर रहोगे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उन के मुक़ाबले में तुम्हारा एक मददगार रहेगा।''(3)

﴾43﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''सब से अफ़्ज़ल स-दक़ा अपने बद बात़िन (या'नी दिल में दुश्मनी छुपाने वाले) ज़ी रेहूम पर स-दक़ा करना है।''(4)

﴾44﴿...... गुज़श्ता फ़रमाने न-बवी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस ह़दीसे पाक के हम-मा'ना है : ''जो तुम से तअ़ल्लुक़ तोड़े उस से तअ़ल्लुक़ जोड़ो।''(5)

﴾45﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''जिस में 3 ख़ूबियां मौजूद हों **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का उस का ह़िसाब आसान फ़रमा देगा और उसे अपनी रह़मत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।'' सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़

1 ......صحيح البخاری، کتاب الادب، باب ليس الواصل بالمكافئ ، الحديث: ۵۹۹۱، ص۵۰۷۔
2 ......جامع الترمذی، ابواب البر والصلة، باب ماجاء فی الاحسان والعفو، الحديث: ۲۰۰۷، ص۱۸۵۲۔
3 ......صحيح مسلم، کتاب البر والصلة، باب صلة الرحم وتحريم قطيعتها ، الحديث: ۲۵۲۵، ص۱۱۲۶۔
4 ......صحيح ابن خزيمة ، کتاب الزكاة، باب فضل الصدقة......الخ، الحديث: ۲۳۸۶، ج۴، ص۷۸۔
5 ......البحر الزخار المعروف بمسند البزار، مسند عبادة بن الصامت ، الحديث: ۲۷۲۷، ج۷، ص۱۲۲۔



www.dawateislami.net

की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन सी हैं ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''(1) जो तुम्हें महरूम करे उसे अ़ता करो (2) जो तुम से तअ़ल्लुक़ तोड़े उस से जोड़ो और (3) जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ कर दो। जब तुम ने ऐसा किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा।''(1)

﴾46﴿...... हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मेरी मुलाक़ात हुई तो मैं ने दस्ते अक़्दस थाम कर अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे फ़ज़ीलत वाले आ'माल बताएं।'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ उ़क़्बा ! जो तुझ से तअ़ल्लुक़ तोड़े उस से जोड़, जो तुझे महरूम करे उसे अ़ता कर और जो तुझ पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ कर दे।''(2)

﴾47﴿...... एक रिवायत में इतना ज़ाइद है : ''सुनो ! जो चाहता है कि उस की उ़म्र में इज़ाफ़ा और रिज़्क़ कुशादा हो तो उसे चाहिये कि सिलए रेहमी करे।''(3)

﴾48﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''क्या मैं तुम्हें दुन्या व आख़िरत के सब से अच्छे अख़्लाक़ न बताऊं ? (फिर ख़ुद ही फ़रमाया :) जो तुम से तअ़ल्लुक़ तोड़े उस से जोड़ो, जो तुम्हें महरूम करे उसे अ़ता करो और जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ कर दो।''(4)

﴾49﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''सब से ज़ियादा फ़ज़ीलत वाला अ़मल येह है कि जो तुझ से तअ़ल्लुक़ तोड़े उस से जोड़, जो तुझे महरूम करे उसे अ़ता कर और जो तुझे गाली दे उसे मुआ़फ़ कर दे।''(5)

﴾50﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''क्या मैं तुम्हें ऐसा अ़मल न बताऊं कि जिस की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ द-रजात बुलन्द फ़रमाता है ?''(6)

---

(1) ......المعجم الاوسط،الحديث : ۵۰۶۴،ج۴،ص۱۹۔

(2) ......المسند للامام احمدبن حنبل ،حديث عقبة بن عامر الجهنی،الحديث : ۱۷۳۳۶،ج۶،ص۱۲۷۔

(3) ......المستدرک،کتاب البر والصلة، باب من اراد ان يمد فی رزقه فليصل ذارحمه، الحديث : ۷۳۶۷،ج۵،ص۲۲۴۔

(4) ......المعجم الاوسط،الحديث : ۵۵۶۷،ج۴،ص۱۲۰۔ (5) ......المعجم الکبير،الحديث : ۳۱۳،ج۲۰،ص۱۸۸۔

(6) ......الترغيب والترهيب ،کتاب البر والصلة ،باب الترغيب فی صلة الرحم......الخ ،الحديث : ۳۸۶۳،ج۳،ص۲۷۵۔



www.dawateislami.net

﴾51﴿...... एक रिवायत में है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें ऐसा अ़मल न बताऊं कि जिस की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इ़ज़्ज़त और बुलन्द द-रजात अ़त़ा फ़रमाता है ?" (रावी कहते हैं :) सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !" इर्शाद फ़रमाया : "जो तुम से जहालत का बरताव करे तुम उस से बुर्द-बारी से पेश आओ, जो तुम पर ज़ुल्म करे तुम उसे मुआ़फ़ कर दो, जो तुम्हें मह़रूम करे तुम उसे अ़त़ा करो और जो तुम से तअ़ल्लुक़ तोड़े तुम उस से तअ़ल्लुक़ जोड़ो।"(1)

﴾52﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "नेकी और सिलए रेह़मी का सवाब सब से जल्द मिलता है औार सब से जल्द सज़ा ना फ़रमानी और क़त़्ए़ रेह़मी की मिलती है।"(2)

﴾53﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़त़्ए़ रेह़मी, ख़ियानत और झूट से बढ़ कर किसी गुनाह की सज़ा देने में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जल्दी नहीं फ़रमाता कि आख़िरत में भी इस की सज़ा दे और दुन्या में भी, बिला शुबा सवाब के ए'तिबार से सब से जल्दी सिलए रेह़मी का सवाब मिलता है यहां तक कि किसी के घर वाले फ़क़ीर हों और आपस में सिलए रेह़मी करें तो उन के अम्वाल बढ़ जाएंगे और ता'दाद भी ज़ियादा हो जाएगी।"(3)

❁❁❁❁❁❁❁

---

1 ......مجمع الزوائد،كتاب البر والصلة،باب مكارم الاخلاق، الحديث : ١٣٦٩٥ ،ج٨،ص٣٤٥۔

2 ......سنن ابن ماجه،ابواب الزهد ،باب البغی ،الحديث : ٤٢١٢،ص٢٧٣٣۔

3 ......سنن ابن ماجه،ابواب الزهد،باب البغی، الحديث : ٤٢١١، ص٢٧٣٣۔
الترغيب والترهيب،كتاب البر والصلة،باب الترغيب فی صلة الرحم......الخ، الحديث : ٣٨٢٦،ج٣،ص٢٧٦۔


www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 304 : ख़ुद को आक़ा के इ़लावा की त़रफ़ मन्सूब करना

### किस की इ़बादत क़बूल नहीं होती ?

﴾1﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जिस ने अपने आप को बाप के इ़लावा की त़रफ़ मन्सूब किया या अपने आक़ा के इ़लावा दूसरे को अपना मालिक बताया उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, फ़रिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस के नफ़्ल क़बूल फ़रमाएगा न फ़र्ज़ ।''[1]

﴾2﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने अपने आप को अपने आक़ा के इ़लावा की त़रफ़ मन्सूब किया वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले ।''[2]

﴾3﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने अपने आप को बाप के इ़लावा की त़रफ़ मन्सूब किया या अपने आक़ा के इ़लावा दूसरे को अपना मालिक बताया उस पर लगातार क़ियामत के दिन तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत है ।''[3]

## कबीरा नम्बर 305 : ग़ुलाम को आक़ा के ख़िलाफ़ भड़काना

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने किसी के ख़िलाफ़ उस की बीवी या उस के ग़ुलाम को भड़काया वोह हम में से नहीं ।''[4]

﴾2﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने किसी औ़रत को उस के शोहर के ख़िलाफ़ या किसी ग़ुलाम को उस के आक़ा के ख़िलाफ़ भड़काया वोह हम में से नहीं ।''[5]

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الحج ،باب فضل المدینۃ......الخ،الحدیث : ۳۳۲۷،ص۹۰۵۔

2 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتا ب العتق،باب الولاء،الحدیث : ۴۳۱۲، ج۶،ص۲۶۷۔

3 ......سنن ابی داود، کتاب الادب،باب فی الرجل ینتمی الی غیرموالیہ، الحدیث : ۵۱۱۵، ص۱۵۹۸۔

4 ......المسند للامام احمد بن حنبل ،حدیث بریدۃ الاسلمی ،الحدیث : ۲۳۰۴۱،ج۹،ص۱۶۔

5 ......سنن ابی داود، کتاب الطلاق ،باب فیمن خبب امراۃ علی زوجھا ،الحدیث : ۲۱۷۵،ص۱۳۸۳۔



www.dawateislami.net

﴾3﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने किसी गुलाम को उस के घर वालों (या'नी मालिकों) के ख़िलाफ़ भड़काया वोह हम में से नहीं और जिस ने किसी औ़रत को उस के शोहर के ख़िलाफ़ भड़काया वोह भी हम में से नहीं।''(1)

## तम्बीह :

मज़्कूरा अहादीसे मुबा–रका तक़ाज़ा करती हैं कि इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया जाए क्यूं कि किसी के मुसल्मान होने की नफ़ी करना एक सख़्त वईद है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शिहाबुद्दीन अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (मु–तवफ़्फ़ा 783 हि.) वग़ैरा ने इस की मिस्ल गुनाहों के मु–तअ़ल्लिक़ वज़ाहत फ़रमाई है, फिर मैं ने बा'ज़ उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का कलाम पाया कि उन्हों ने इस के कबीरा होने की तसरीह़ की है।

## कबीरा नम्बर 306 : गुलाम का भाग जाना

## किस गुलाम की नमाज़ मक़्बूल नहीं ?

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो गुलाम अपने आक़ा से भाग गया उस से (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का) ज़िम्मा उठ गया।''(2)

﴾2﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म–दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जब गुलाम भाग जाता है तो उस की कोई नमाज़ क़बूल नहीं की जाती।''(3)

﴾3﴿...... एक रिवायत में है : ''यक़ीनन उस ने कुफ़्र किया यहां तक कि उन (या'नी अपने मालिकों) के पास वापस आ जाए।''(4)

## किस औ़रत की इ़बादत क़बूल नहीं ?

﴾4﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''2 क़िस्म के लोग ऐसे हैं कि जिन की नमाज़ उन के सरों से तजावुज़ नहीं करती : (1) वोह गुलाम जो अपने मालिक से भाग गया यहां तक कि लौट आए और (2) वोह औ़रत जिस ने अपने

---

1......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب الحظر والاباحة، الحديث: ۵۵۳۴، ج۷، ص۴۳۴۔

2......صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب تسمية العبد الآبق كافرا، الحديث: ۲۲۹، ص۶۹۱۔

3......المرجع السابق، الحديث: ۲۳۰۔ 4......المرجع السابق، الحديث: ۲۲۸۔



www.dawateislami.net

शोहर की ना फ़रमानी की यहां तक कि लौट आए।''(1)

﴾5﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''3 शख़्स ऐसे हैं जिन की नमाज़ उन के कानों से तजावुज़ नहीं करती : (1)...... भागा हुवा ग़ुलाम यहां तक कि लौट आए (2)...... जो औ़रत इस ह़ालत में रात गुज़ारे कि उस का शोहर उस पर नाराज़ हो और (3)...... किसी क़ौम का ऐसा इमाम जिसे वोह ना पसन्द करते हों।''(2)

﴾6﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस भागे हुए ग़ुलाम को मौत आ जाए वोह जहन्नम में दाख़िल होगा अगर्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में क़त्ल कर दिया जाए।''(3)

﴾7﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ 3 अफ़राद की न तो कोई नमाज़ क़बूल फ़रमाता है और न ही उन की कोई नेकी आस्मान की त़रफ़ बुलन्द होती है : (1)...... नशे में मदहोश इन्सान यहां तक कि होश में आ जाए (2)...... ऐसी औ़रत जिस का शोहर उस पर नाराज़ हो और (3)...... भागा हुवा ग़ुलाम यहां तक कि वापस लौट कर अपना हाथ अपने मालिकों के हाथ में दे दे।''(4)

﴾8﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''3 शख़्स ऐसे हैं जिन से कोई सुवाल न होगा (या'नी उन्हें बिग़ैर हि़साबो किताब जहन्नम में दाख़िल कर दिया जाएगा) : ''(1)...... वोह शख़्स जो जमाअ़त से अ़ला-ह़दा हुवा और अपने इमाम की ना फ़रमानी की (2)...... वोह ग़ुलाम जो अपने आक़ा से भाग कर मर गया तो वोह ना फ़रमान हो कर मरा और (3)...... जिस औ़रत का शोहर उस के पास मौजूद न था और उस (के शोहर) ने उस की ज़रूरिय्याते दुन्या पूरी कीं फिर भी औ़रत ने इस के बा'द उस से ख़ियानत की।'' और मज़ीद 3 शख़्स ऐसे हैं जिन से कोई सुवाल न होगा : ''(1)...... वोह शख़्स जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस की रिदा (चादर) में झगड़ा किया क्यूं कि बड़ाई व किब्रियाई उस की रिदा है जब कि इ़ज़्ज़त उस का इज़ार (तहबन्द)

---

(1)......المعجم الاوسط،الحديث : ٣٦٢٨،ج٢،ص٣٩٣۔

(2)......جامع الترمذی،ابواب الصلاۃ،باب ماجاء (فی) من ام قوما وھم له كارھون،الحديث : ٣٦٠،ص١٦٧٦۔

(3)......المعجم الاوسط،الحديث :٩٢٣٢،ج٦،ص٤٠٨۔

(4)......المعجم الاوسط،الحديث :٩٢٣١،ج٦،ص٤٠٨۔

الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان،كتاب الاشربة ،باب آداب الاشربة، الحديث :٥٣٣١،ج٧،ص٣٧٠۔



www.dawateislami.net

है[1] । (2)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के किसी हुक्म में शक करने वाला और (3)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत से मायूस होने वाला ।''[2]

﴾9﴿...... इमाम हाकिम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की रिवायत में ''उस (औरत) ने इस के बा'द उस से ख़ियानत की'' के बजाए येह अल्फ़ाज़ हैं : ''उस ने अपने शोहर के बा'द (अजनबी मर्दों के लिये) ज़ैबो ज़ीनत इख़्तियार की ।'' और एक रिवायत में इस त़रह़ है : ''वोह लौंडी और ग़ुलाम जो अपने आक़ा से भाग जाए ।''[3]

**तम्बीह :** इन सह़ीह़ कसीर अह़ादीसे मुबा-रका की बिना पर इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है जो कि बिल्कुल वाज़ेह़ है ।

۞۞۞۞۞۞۞

## कबीरा नम्बर 307 : आज़ाद इन्सान को ग़ुलाम बना कर ख़िदमत लेना

### किस इमाम की नमाज़ मक़्बूल नहीं ?

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ 3 अफ़राद की नमाज़ क़बूल नहीं फ़रमाता : (1) जो किसी क़ौम का इमाम बने जब कि लोग उसे ना पसन्द करते हों (2) वक़्त गुज़ार कर नमाज़ पढ़ने वाला और (3) वोह शख़्स जिस ने किसी आज़ाद को ग़ुलाम बनाया ।''[4]

---

1...... मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان (मु-तवफ़्फ़ा 1391 हि.) मिरआतुल मनाजीह़ जिल्द 6, सफ़ह़ा 659 पर फ़रमाते हैं : ''किब्र से मुराद ज़ाती बड़ाई है । और अ़ज़्मत (इ़ज़्ज़त) से मुराद सिफ़ाती बड़ाई । चादर और तहबन्द फ़रमाना हम को समझाने के लिये है कि जैसे एक चादर एक तहबन्द दो आदमी नहीं पहन सकते, यूं ही अ़ज़्मतो किब्रियाई सिवाए मेरे (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के), दूसरे के लिये नहीं हो सकती । ख़याल रहे कि किब्रियाई, अ़ज़्मत से आ'ला व अफ़्ज़ल है । इस लिये किब्रियाई को चादर और अ़ज़्मत को तहबन्द फ़रमाया । चादर तहबन्द से अफ़्ज़ल होती है ।'' (मुलख़्ख़सन)

2......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب السیر، باب طاعة الائمة، الحدیث: ۴۵۴۱، ج۷، ص۴۴۔
البحرالزخارالمعروف بمسندالبزار، مسند فضالة بن عبید، الحدیث: ۳۷۴۹، ج۹، ص۲۰۴۔

3......المستدرک للحاکم، کتاب العلم، باب من فارق الجماعة......الخ، الحدیث: ۴۱۹، ج۱، ص۳۲۳۔

4......سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب الرجل یؤم القوم وھم له کارھون، الحدیث: ۵۹۳، ص۱۲۶۷۔



www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा ख़त्ताबी عَلَيْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 388 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं : "आज़ाद को ग़ुलाम बनाने से मुराद येह है कि कोई शख़्स किसी ग़ुलाम को आज़ाद कर के उस की आज़ादी को छुपाए रखे या आज़ाद करने से इन्कार कर दे और येह बा'द वाले से ज़ियादा बुरा है। या येह मुराद है कि आज़ाद करने के बा'द भी उसे रोके रखे और उस से ज़बर दस्ती ख़िदमत ले।" और इस सूरत का हुक्म बाक़ी है कि वोह किसी दूसरे के ग़ुलाम से ख़िदमत ले या उसे ज़बर दस्ती ग़ुलाम बना ले।

**तम्बीह :** ज़िक्र कर्दा सरीह़ ह़दीसे पाक से इस का कबीरा गुनाह होना वाज़ेह़ है।

## कबीरा नम्बर 308 : ग़ुलाम का आक़ा की लाज़िम ख़िदमत न करना

## कबीरा नम्बर 309 : आक़ा का ग़ुलाम की ज़रूरिय्यात पूरी न करना और त़ाक़त से ज़ियादा काम लेना

## कबीरा नम्बर 310 : उसे हमेशा ज़दो कोब करना

## कबीरा नम्बर 311 : उसे ख़सी कर के तक्लीफ़ देना ख़्वाह वोह ना बालिग़ हो, नीज़ बिला सबबे शर-ई ग़ुलाम या चौपाए को कोई और अ़ज़ाब देना

## कबीरा नम्बर 312 : जानवरों को आपस में लड़ाना

﴾1﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم इर्शाद फ़रमाते हैं कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "मेरी नाराज़ी उस शख़्स पर शिद्दत इख़्तियार कर जाती है जो किसी ऐसे शख़्स पर ज़ुल्म करे जो मेरे सिवा किसी को मददगार नहीं पाता।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू शैख़ और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ह़ब्बान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا नक़्ल करते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के एक बन्दे को क़ब्र में 100 कोड़े लगाने का हुक्म दिया गया, वोह बराबर अ़र्ज़ करता रहा यहां तक कि एक कोड़ा रह गया पस उस एक कोड़े से ही क़ब्र में आग

1......المعجم الصغير للطبرانی،الحديث :٧١،الجزء الاول،ص٣١۔



www.dawateislami.net

भर गई। जब वोह आग ठन्डी हुई और उसे इफ़ाक़ा हुवा तो उस ने पूछा : ''मुझे कोड़ा क्यूं मार रहे हो ?'' फ़रिश्तों ने जवाब दिया : ''तूने एक नमाज़ बिग़ैर वुज़ू के पढ़ी थी और एक मज़्लूम के पास से गुज़रा था लेकिन (कुदरत रखने के बा वुजूद) तूने उस की मदद न की थी।''(1)

﴾2﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू मस्ऊ़द बदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं अपने एक ग़ुलाम को कोड़े से मार रहा था कि पीछे से आवाज़ सुनी : ''ऐ अबू मस्ऊ़द जान लो !'' मैं ने गुस्से की वज्ह से आवाज़ न समझी और जब आवाज़ देने वाली शख़्सिय्यत मेरे क़रीब आई तो देखा कि वोह दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं, जो इर्शाद फ़रमा रहे थे कि : ''ऐ अबू मस्ऊ़द ! जान लो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ पर इस से ज़ियादा कुदरत रखता है जितना तू इस ग़ुलाम पर क़ादिर है।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''आयिन्दा मैं किसी ग़ुलाम को कभी नहीं मारूंगा।''(2)

﴾3﴿...... एक रिवायत में है, (हज़रते सय्यिदुना अबू मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :) मैं ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह रिज़ाए इलाही के लिये आज़ाद है।'' तो सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर तू ऐसा न करता तो तुझे आग ज़रूर जला देती या तुझे आग ज़रूर पकड़ लेती।''(3)

﴾4﴿...... हज़रते सय्यिदुना ज़ाज़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ''मैं हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की ख़िदमत में उस वक़्त ह़ाज़िर था जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना ग़ुलाम आज़ाद कर के ज़मीन से एक लकड़ी या कोई चीज़ उठाई और इर्शाद फ़रमाया : ''इस (ग़ुलाम) में मेरे लिये इस के बराबर भी कोई अज्र नहीं क्यूं कि मैं ने शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : ''जिस ने अपने ग़ुलाम को त़मांचा रसीद किया या उसे मारा तो इस का कफ़्फ़ारा येह है कि उसे आज़ाद कर दे।''(4)

﴾5﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने अपने ग़ुलाम को ऐसे गुनाह की ह़द लगाई जो उस ने नहीं किया या उसे थप्पड़ मारा तो

---

1 ......التمهيد لابن عبد البر،يحيى بن سعيد الانصارى،تحت الحديث :٢٣/٣٢، ج١٠،ص١٢٦۔

2 ......صحيح مسلم ،كتاب الأيمان،باب صحبة المماليک و كفارة من لطم عبده، الحديث :٤٣٠٦، ص٩٢٩۔

3 ......المرجع السابق،الحديث : ٤٣٠٨۔

4 ......سنن ابى داود، كتا ب الادب،باب فى حق المملوک،الحديث :٥١٦٨،ص١٦٠١۔



www.dawateislami.net

इस का कफ़्फ़ारा येह है कि उसे आज़ाद कर दे।''(1)

﴾6﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने ज़ुल्मन अपने ग़ुलाम को मारा क़ियामत के दिन उस से इस का बदला लिया जाएगा।''(2)

﴾7﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने अपने ग़ुलाम पर ऐसी तोहमत लगाई जिस से वोह बरी था तो उस पर क़ियामत के दिन ह़द लगाई जाएगी मगर येह कि वोह (या'नी ग़ुलाम) ऐसा ही हो जैसा उस ने कहा।''(3)

﴾8﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अपने ग़ुलामों से बुरा सुलूक करने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा।'' सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या आप ने हमें नहीं बताया कि इस उम्मत में तमाम उम्मतों से ज़ियादा ग़ुलाम और यतीम होंगे।'' तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हां ! पस तुम इन की अपनी औलाद की त़रह़ इ़ज़्ज़त करो और इन्हें वोही खिलाओ जो ख़ुद खाते हो।'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''हमारे लिये दुन्या में कौन सी चीज़ नफ़्अ़ बख़्श है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''वोह घोड़ा जिस को तुम बांध कर रखते हो ताकि उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करो और तुम्हारा ग़ुलाम तुम्हारे लिये काफ़ी है और अगर वोह नमाज़ पढ़े तो वोह तुम्हारा भाई है।''(4)

﴾9﴿...... एक रिवायत में मुख़्तसरन इतना ही है कि ''अपने ग़ुलामों से बुरा सुलूक करने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा।''(5)

﴾10﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने ग़ुलाम को अपने जैसा लिबास पहनाया और इस का सबब येह बयान फ़रमाया कि इन्हों ने एक शख़्स को उस की मां की

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان،باب صحبة الممالیک و کفارة من لطم عبده ،الحدیث : ۴۲۹۹،ص۹۲۹۔

2 ......حلیة الاولیاء،الرقم۲۸۴ میمون بن ابن شبیب، الحدیث :۲۰۶۴، ج۴، ص۴۲۰۔

3 ......جامع الترمذی،ابواب البروالصلة،باب النهی عن ضرب الخدام وشتمهم،الحدیث :۱۹۴۷،ص۱۸۴۸۔

4 ......سنن ابن ماجه،ابواب الادب ،باب الاحسان الی الممالیک ،الحدیث :۳۶۹۱،ص۲۶۹۷۔

5 ......جامع الترمذی،ابواب البروالصلة ،باب ماجاء فی الاحسان الی الخادم ،الحدیث :۱۹۴۶،ص۱۸۴۷۔



www.dawateislami.net

वज्ह से आ़र दिलाई क्यूं कि वोह अ़-जमी थी (और वोह मुअज़्ज़िने रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन रबाह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ थे) । उस ने सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में शिकायत की तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अबू ज़र ! तुम में जाहिलिय्यत की बू बाक़ी है ।'' फिर इर्शाद फ़रमाया : ''येह तुम्हारे भाई हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें इन पर फ़ज़ीलत दी है पस जो तुम्हारे मिज़ाज के मुवाफ़िक़ न हो उसे बेच दो लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ को तक्लीफ़ न दो ।''(1)

﴾11﴿...... इस से मिलती जुलती एक रिवायत में है कि ''वोह तुम्हारे भाई हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें तुम्हारे मा तह़्त किया है, पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जिस के मा तह़्त उस के भाई को किया तो उसे वोही खिलाए जो ख़ुद खाता है और वोही पहनाए जो ख़ुद पहनता है और उस से ऐसा काम न कराए जो उसे आ़जिज़ कर दे और अगर ऐसा काम कराए तो उस में उस की मदद भी करे ।''(2)

﴾12﴿...... तिरमिज़ी शरीफ़ की रिवायत में इस त़रह़ है कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे भाइयों को जवानी की ह़ालत में तुम्हारे मा तह़्त किया है, पस जिस के मा तह़्त उस का कोई भाई हो तो उसे अपने खाने से खिलाए और अपने लिबास से पहनाए और उस से ऐसा काम न कराए जो उसे आ़जिज़ कर दे, अगर ऐसा काम कराए तो उस में उस की मदद भी करे ।''(3)

﴾13﴿...... सु-नने अबी दावूद की रिवायत में इस त़रह़ है : ''ग़ुलामों में से जो तुम्हारे मिज़ाज के मुवाफ़िक़ हो उसे वोही खिलाओ जो ख़ुद खाते हो और वोही पहनाओ जो ख़ुद पहनते हो और उन में से जो तुम्हारे मिज़ाज के मुवाफ़िक़ न हो उसे बेच दो लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ को अ़ज़ाब न दो ।''(4)

﴾14﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर इर्शाद फ़रमाया : ''अपने ग़ुलामों को वोही खिलाओ जो ख़ुद खाते हो और वोही पहनाओ जो ख़ुद पहनते हो, अगर उन से कोई ऐसी ग़-लत़ी सरज़द हो जाए जिसे तुम मुआ़फ़ नहीं करना चाहते तो

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الادب، ابواب النوم، باب فی حق المملوک، الحدیث: ۵۱۵۷، ص۱۶۰۰۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الادب، باب ماینھی من السباب واللعن، الحدیث: ۶۰۵۰، ص۵۱۱۔

3 ......جامع الترمذی، ابواب البر والصلۃ، باب ماجاء فی الاحسان الی الخدام، الحدیث: ۱۹۴۵، ص۱۸۴۷۔

4 ......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی حق المملوک، الحدیث: ۵۱۶۱، ص۱۶۰۰۔



www.dawateislami.net

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों को बेच दो लेकिन उन्हें सज़ा न दो।''(1)

﴾15﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने गुलामों के बारे में इर्शाद फ़रमाया : ''अगर वोह अच्छा काम करें तो क़बूल कर लो और अगर बुराई करें तो मुआफ़ कर दिया करो, लेकिन अगर वोह तुम पर ग़-लबा चाहें तो उन्हें बेच दो।''(2)

﴾16﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बकरियां अपने मालिकों के लिये बाइसे ब-र-कत हैं, ऊंट अपने मालिकों के लिये इ़ज़्ज़त का बाइस हैं और घोड़ों की तो पेशानियों में भलाई रखी गई है और गुलाम तुम्हारा भाई है, उस से अच्छा सुलूक करो, अगर उसे तक्लीफ़ में देखो तो उस की मदद करो।''(3)

﴾17﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''गुलाम के लिये खाना, पीना और पहनना (आक़ा के ज़िम्मे) है और उसे त़ाक़त से ज़ियादा मुश्किल काम न दिया जाए, अगर तुम उन्हें कोई मेह़नत वाला काम कहो तो उस में उन की मदद करो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों को सज़ा न दो वोह भी तुम्हारी त़रह़ मख़्लूक़ हैं।''(4)

﴾18﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तुम अपने ख़ादिम के काम में जितनी नरमी करोगे तुम्हारे लिये मीज़ान में (उतना ही) अज्र होगा।''(5)

﴾19﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم इर्शाद फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का आख़िरी कलामे मुबारक येह था : ''नमाज़, नमाज़ (की पाबन्दी करो) और अपने गुलामों के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो।''(6)

﴾20﴿...... एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं : ''नमाज़ और अपने गुलामों के मुआ़-मले में (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते रहो)।''(7)

﴾21﴿...... एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं : ''मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل ،حديث عبد الرحمٰن بن يزيد ،الحديث : ١٦٤٠٩ ،ج٥،ص٥٢٤۔

2 ......الترغيب والترهيب، كتاب القضاء ،باب الترغيب فى الشفقة......الخ ،الحديث : ٣٤٩٠، ج٣، ص١٦٧ ۔

3 ......البحرالزخارالمعروف بمسند البزار،مسند حذيفة بن اليمان ،الحديث : ٢٩٤٢ ،ج٧،ص٣٤٥، بتغيرٍقليلٍ۔

4 ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب العتق،باب التخفيف عن الخادم ،الحديث :٤٢٩٤ ،ج٦،ص٢٥٥۔

5 ......المرجع السابق،الحديث : ٤٢٩٣۔

6 ......سنن ابى داود ،كتاب الادب ،باب فى حق المملوک ،الحديث :٥١٥٦،ص١٦٠٠ ۔

7 ......سنن ابن ماجه،ابواب الوصايا ،باب وهل اوصى رسول اللهﷺ ،الحديث : ٢٦٩٧،ص٢٦٣٩۔



www.dawateislami.net

صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने म-रज़े विसाल में येही फ़रमाते रहे : नमाज़ और जो तुम्हारे ग़ुलाम हैं। यहां तक कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने अक़्दस में लुक्नत आ गई।''(1)

﴾22﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : ''इन्सान के लिये इतना ही गुनाह काफ़ी है कि वोह उन की ग़िज़ा रोक ले जिन का वोह मालिक है।''(2)

﴾23﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने विसाले मुबारक से पांच रातें क़ब्ल इर्शाद फ़रमाया : ''हर नबी के लिये उस की उम्मत में एक ख़लील था और मेरा ख़लील अबू बक्र बिन अबू क़ुहाफ़ा है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे नबी को अपना ख़लील बनाया है, ख़बरदार ! तुम से पहली उम्मतें अपने अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام की क़ब्रों को सज्दा गाह बना लेती थी लेकिन मैं तुम्हें ऐसा करने से मन्अ़ करता हूं।'' फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने 3 मर्तबा फ़रमाया : ''या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! क्या मैं ने पैग़ाम नहीं पहुंचाया ?'' फिर 3 मर्तबा फ़रमाया : ''या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! गवाह हो जा।'' इस के बा'द आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कुछ देर बेख़ुदी की कैफ़िय्यत रही फिर इर्शाद फ़रमाया : ''अपने ग़ुलामों के मुआ-मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो, उन के पेट भरो, उन्हें कपड़े पहनाओ और उन से नरमी से गुफ़्त-गू करो।''(3)

﴾24﴿...... एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ख़ादिम को कितनी बार मुआफ़ करूं ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''हर रोज़ **70** मर्तबा।''(4)

﴾25﴿...... एक रिवायत में यूं है कि (एक शख़्स ने अ़र्ज़ की :) ''मेरा ख़ादिम बुरे काम और ज़ुल्म करता है, क्या मैं उसे मार सकता हूं ?'' तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''उसे हर रोज़ **70** बार मुआफ़ किया करो।''(5)

﴾26﴿...... उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا इर्शाद फ़रमाती हैं : ''एक शख़्स हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में

---

1 ......سنن ابن ماجه،ابواب الجنائز ،باب ماجاء فی ذکرمرض رسول اللّٰہﷺ،الحدیث : ۱۶۲۵،ص۲۵۷۴۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ،باب فضل النفقة علی العیال والمملوک......الخ ،الحدیث : ۲۳۱۲،ص۸۳۵۔

3 ......المعجم الکبیر،الحدیث : ۸۹،ج۱۹ ،ص ۴۱۔

4 ......جامع الترمذی ،ابواب البر والصلة ،باب ماجاء فی العفوعن الخادم ،الحدیث : ۱۹۴۹،ص۱۸۴۸۔

5 ......مسند ابی یعلی الموصلی ،مسند عبد اللّٰہ بن عمر،الحدیث :۵۷۳۳،ج۵،ص۱۶۱۔



www.dawateislami.net

हाज़िर था उस ने अ़र्ज़ की : ''मेरे कुछ गुलाम हैं जो मुझ से झूट बोलते, ख़ियानत करते और मेरी ना फ़रमानी करते हैं तो मैं उन्हें गालियां देता और मारता हूं, बताइये ! मैं उन के साथ कैसा हूं ?'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब क़ियामत का दिन होगा तो जो उन्हों ने तुम से ख़ियानत की, तुम्हारी ना फ़रमानी की और तुम से झूट बोला फिर तुम ने उन्हें जो सज़ा दी सब का ह़िसाब होगा, अगर तुम्हारी सज़ा उन के गुनाहों के बराबर हुई तो मुआ़-मला बराबर हो जाएगा या'नी न तुम पर कुछ वबाल होगा और न ही उन पर कोई गिरिफ़्त, लेकिन अगर तुम्हारी सज़ा उन के गुनाहों से ज़ियादा हुई तो उन के लिये तुम से ज़ियादती का बदला लिया जाएगा ।'' पस वोह शख़्स एक त़रफ़ हट कर फ़रियाद करने और रोने लगा तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या तुम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह मुबारक फ़रमान नहीं पढ़ा :

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ۝ (پ۱۷، الانبیاء۴۷)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और हम अ़द्ल की तराज़ूएं रखेंगे क़ियामत के दिन तो किसी जान पर कुछ ज़ुल्म न होगा और अगर कोई चीज़ राई के दाने के बराबर हो तो हम उसे ले आएंगे और हम काफ़ी हैं ह़िसाब को ।''

तो उस ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं अपने और उन के लिये अ़ला-ह़दा हो जाने से बेहतर कोई सूरत नहीं पाता, लिहाज़ा मैं आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को गवाह बनाता हूं कि वोह तमाम के तमाम आज़ाद हैं ।''(1)

﴾27﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने किसी को ज़ुल्मन एक कोड़ा मारा तो बरोज़े क़ियामत उस से इस का बदला लिया जाएगा ।''(2)

﴾28﴿...... मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान की दादी से मन्क़ूल है कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे घर तशरीफ़ फ़रमा थे, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस

---

(1) ......جامع الترمذی، ابواب التفسیرالقرآن، باب ومن سورۃ الانبیاء، الحدیث: ۳۱۶۵،ص۱۹۷۳۔

مشکاۃ المصابیح، کتاب احوال القیمۃ،باب الحساب و القصاص،الفصل الثالث،الحدیث: ۵۵۶۱،ج۲،ص۳۱۷۔

(2) ......المعجم الاوسط،الحدیث: ۱۴۴۵،ج۱،ص۳۹۴۔



www.dawateislami.net

में मिस्वाक थी, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी या मेरी ख़ादिमा को आवाज़ दी (लेकिन वोह न आई) यहां तक कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अक्दस पर जलाल के आसार ज़ाहिर हो गए तो मैं फ़ौरन हुजरों की त़रफ़ निकल पड़ी और उस ख़ादिमा को एक चौपाए के साथ खेलते हुए पा कर कहा : ''मैं तुम्हें इस चौपाए के साथ खेलते देख रही हूं जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम्हें बुला रहे हैं।'' (जब ख़ादिमा बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुई तो) तो उस ने अ़र्ज़ की : ''(**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !) उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ मब्ऊ़स फ़रमाया ! मैं ने सुना नहीं।'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर क़िसास (या'नी बदला) लिये जाने का ख़ौफ़ न होता तो मैं तुम्हें ज़रूर इस मिस्वाक से तक्लीफ़ पहुंचाता।''(1)

﴾29﴿...... एक रिवायत में है : ''मैं ज़रूर तुम्हें इस मिस्वाक से मारता।''(2)

﴾30﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो रह़म नहीं करता उस पर रह़म नहीं किया जाता।''(3)

﴾31﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : ''एक औ़रत मह़ज़ एक बिल्ली की वज्ह से जहन्नम में दाख़िल होगी, क्यूं कि उस ने उसे बांधे रखा, न तो उसे कुछ खिलाया और न ही छोड़ा कि वोह ज़मीन के कीड़े मकोड़े खा लेती।''(4)

﴾32﴿...... एक रिवायत में है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''एक औ़रत को इस वज्ह से अ़ज़ाब में मुब्तला कर दिया गया कि उस ने एक बिल्ली को क़ैद किये रखा न तो उसे कुछ खिलाया पिलाया और न ही छोड़ा कि वोह कीड़े मकोड़े खा कर गुज़ारा कर लेती यहां तक कि मर गई।''(5)

﴾33﴿...... मुस्नदे अह़मद की रिवायत में इतना ज़ाइद है कि ''इस वज्ह से उस के लिये जहन्नम वाजिब हो गई।''(6)

---

1 ......مسند ابی یعلی الموصلی، مسند ام سلمة، الحدیث : ۶۹۰۸، ج۶، ص۹۴۔

2 ......المرجع السابق، الحدیث : ۶۸۹۲، ص۹۰۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب الادب، باب رحمة الناس والبهائم، الحدیث : ۶۰۱۳، ص۵۰۹۔

4 ......صحیح البخاری، کتاب بدء الخلق، باب اذا وقع، باب اذا وقع الذباب فی شراب......الخ، الحدیث : ۳۳۱۸، ص۲۶۷۔

5 ......صحیح مسلم، کتاب البر والصلة، باب تحریم تعذیب الهرة......الخ، الحدیث : ۶۶۷۵، ص۱۱۳۵۔

6 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند جابر بن عبد الله، الحدیث : ۱۴۲۰۸، ج۵، ص۹۴۔



www.dawateislami.net

﴾34﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : "मैं जन्नत में दाख़िल हुवा तो मैं ने देखा कि अक्सर अहले जन्नत फु-क़रा हैं और मैं ने जहन्नम में झांका तो देखा कि जहन्नम में अक्सर औ़रतें हैं और 3 लोगों को अ़ज़ाब में मुब्तला देखा : (1)...... क़बीलए ह़िम्यर की एक दराज़ क़द औ़रत ने अपनी बिल्ली को भूका प्यासा बांध रखा था और उसे न छोड़ा कि वोह ज़मीन के कीड़े मकोड़े खा लेती (यहां तक कि वोह मर गई) वोह बिल्ली उस की अगली और पिछली शर्मगाह नोच रही थी। (2)...... मैं ने जहन्नम में बनी दा'दअ़ का एक शख़्स देखा जो टेढ़े मुंह वाली लकड़ी से ह़ाजियों की चोरी किया करता था, जब मा'लूम हो जाता तो कहता येह मेरी लकड़ी से अटक गया था और (3)...... जिस ने मेरे (या'नी **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के) क़ुरबानी के 2 ऊंट चोरी किये।"[1]

﴾34﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "मुझ पर जहन्नम पेश की गई, अगर मैं उसे तुम से दूर न करता तो वोह तुम्हें ढांप लेती और मैं ने जहन्नम में 3 शख़्स अ़ज़ाब में मुब्तला देखे, (उन में से एक) क़बीलए ह़िम्यर की दराज़ क़ामत सियाह रंग की औ़रत थी जिसे अपनी बिल्ली की वज्ह से अ़ज़ाब हो रहा था, उसे उस ने बांध दिया और ज़मीन के कीड़े मकोड़े खाने के लिये न छोड़ा और न ही ख़ुद कुछ खिलाया यहां तक कि वोह मर गई। जब वोह सामने से आती तो उसे नोचती और जब पीछे से आती तो भी नोचती।"[2]

﴾35﴿...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना अस्मा बिन्ते अबी बक्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡهَا से मरवी है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़े कुसूफ़ अदा फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया : "दोज़ख़ मेरे क़रीब कर दी गई यहां तक कि मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ! क्या मेरी मौजू-दगी में (मेरी उम्मत को) अ़ज़ाब दिया जा रहा है ?" इसी अस्ना में मेरी नज़र एक औ़रत पर पड़ी।" ह़ज़रते सय्यि-दतुना अस्मा बिन्ते अबू बक्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡهَا फ़रमाती हैं कि मेरे ख़याल में आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उसे एक बिल्ली नोच रही थी।" आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "इस औ़रत का क्या मुआ़-मला है ?" तो फ़िरिश्ते बोले : "इस ने एक बिल्ली को बांधे रखा यहां तक कि वोह भूक से मर गई।"[3]

---

1 ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان ،كتاب اخباره......الخ ،باب صفة النار واهلها،الحديث : ٧٤٤٦، ج٩، ص٢٨٥ـ

2 ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب الحظر والاباحة ،فصل فيما يتعلق بالدواب، الحديث : ٥٥٩٣، ج٧، ص٤٥٥ـ

3 ......صحيح البخارى، كتاب المساقاة، باب فضل سقى الماء،الحديث : ٢٣٦٤، ص١٨٥ـ



www.dawateislami.net

﴾36﴿...... हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इर्शाद फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जानवरों को बाहम लड़ाने से मन्अ़ फ़रमाया।"(1)

## तम्बीह :

मज़्कूरा 5 गुनाहों में से पहले को कबीरा गुनाह क़रार देना वाज़ेह़ है क्यूं कि येह आक़ा पर ज़ुल्म करना है बल्कि भगोड़े ग़ुलाम के मु-तअ़ल्लिक़ बयान कर्दा गुज़श्ता अहादीसे मुबा-रका भी इस गुनाह को शामिल हैं क्यूं कि आक़ा की लाज़िम ख़िदमत न करना और इस में कोताही करना मा'नन भागने की त़रह़ है। अ़न्क़रीब ज़ुल्म के मु-तअ़ल्लिक़ अहादीसे मुबा-रका में ऐसी बातें आएंगी जो इस गुनाह को भी शामिल होंगी और दीगर 4 गुनाहों को कबीरा में शुमार करना मेरी ज़िक्र कर्दा अहादीसे त़य्यिबा से वाज़ेह़ है ह़त्ता कि जानवरों को लड़ाने का कबीरा गुनाह होना भी बिल्कुल वाज़ेह़ है क्यूं कि येह भी अ़ज़ाब देने में दाख़िल है।

हज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं : "ईज़ा न देने वाली बिल्ली को जान बूझ कर क़त्ल करना भी कबीरा गुनाहों में दाख़िल है, क्यूं कि एक औ़रत बिल्ली की वज्ह से जहन्नम में जा पहुंची और बिल्ली के हुक्म में वोह जानवर भी दाख़िल हैं जो इस जैसे हों।"

गुनाहे कबीरा होने के लिये क़त्ल शर्त़ नहीं बल्कि शदीद ईज़ा शर्त़ है जैसे दर्दनाक ज़र्ब लगाना। फिर मैं ने देखा कि बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने वाज़ेह़ त़ौर पर लिखा है कि बिला सबब ह़ैवान को तक्लीफ़ देना, ग़ुलाम को ख़सी करना और ज़ुल्मो ज़ियादती करते हुए उसे अज़िय्यत पहुंचाना कबीरा गुनाहों में से है और दूसरों को ग़ुलाम पर क़ियास किया जाएगा, हां ! किसी छोटे जानवर को इस लिये ख़सी करना जाइज़ है ताकि वोह मोटा हो और उस का गोश्त अच्छा हो, लेकिन ग़ुलामों और चौपायों से बुरा सुलूक करना कबीरा गुनाह है।

जब मैं इस बह़स से फ़ारिग़ हुवा तो मुझे इस मौज़ूअ़ पर तफ़्सीली कलाम मिला लिहाज़ा मैं ने मज़्कूरा बह़स पर ज़ाइद कलाम का ख़ुलासा बयान करना मुनासिब समझा अगर्चे इस में ऐसी बातें भी हैं जो मैं पहले बयान कर चुका हूं। जो कलाम मुझे मिला उस का उ़न्वान येह है :

---

(1)......سنن ابی داود، کتاب الجہاد، باب فی التحریش بین البہائم، الحدیث: ۲۵۶۲، ص۱۴۱۳۔



www.dawateislami.net

# कमज़ोर, ग़ुलाम, लौंडी, बीवी और जानवरों की बे हुरमती करना

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमाने आलीशान में इन सब के साथ एह़सान करने का हुक्म फ़रमाया :

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَیْــٴًـا وَّ بِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًا وَّ بِذِی الْقُرْبٰى وَ الْیَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِیْنِ وَ الْجَارِ ذِی الْقُرْبٰى وَ الْجَارِ الْجُنُبِ وَ الصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَ ابْنِ السَّبِیْلِۙ وَ مَا مَلَكَتْ اَیْمَانُكُمْؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَاۙ﴿۳۶﴾ (پ۵، النساء:۳۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** की बन्दगी करो और उस का शरीक किसी को न ठहराओ और मां बाप से भलाई करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मोह़ताजों और पास के हमसाए और दूर के हमसाए और करवट के साथी और राहगीर और अपनी बांदी ग़ुलाम से बेशक **अल्लाह** को ख़ुश नहीं आता कोई इतराने वाला, बड़ाई मारने वाला।

## बा'ज़ अल्फ़ाज़े क़ुरआनिया की वज़ाह़त :

वालिदैन और क़रीबी रिश्तेदारों से एह़सान करने से मुराद उन के साथ नेकी करना है। यतीमों से एह़सान करने से मुराद उन के साथ नरमी करना, उन्हें क़ुर्ब बख़्शना और उन के सर पर शफ़्क़त से हाथ फैरना है। और मसाकीन के साथ एह़सान येह है कि उन्हें कुछ अ़त़ा करना या अच्छे त़रीक़े से वापस लौटा देना है। وَالْجَارِ ذِی الْقُرْبٰى से मुराद वोह हमसाया है जिस से आप की रिश्तेदारी हो उस का अपना भी ह़क़ है और पड़ोसी व मुसल्मान होने का भी ह़क़ है। وَالْجَارِ الْجُنُبِ से मुराद अजनबी पड़ोसी है, उस के सिर्फ़ मज़्कूरा आख़िरी दो हुक़ूक़ हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد के नज़्दीक وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ से मुराद रफ़ीक़े सफ़र है, इस के लिये भी पड़ोस और सोह़बत का ह़क़ है और وَمَا مَلَكَتْ اَیْمَانُكُمْ से मुराद येह है कि अपने ग़ुलाम को अच्छा खाना खिलाए, उस की ग़-लतियां मुआ़फ़ कर दे।

येही वज्ह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी एक सियाह फ़ाम लौंडी पर कोड़ा उठाया, लेकिन फिर उस से इर्शाद फ़रमाया : ''अगर क़िसास का हुक्म न होता तो मैं तुझे ज़रूर इस के साथ मारता, लेकिन मैं तुझे उस ज़ात को बेच दूंगा जो तेरी पूरी पूरी क़ीमत अदा करेगी, लिहाज़ा जा, चली जा तू रिज़ाए इलाही के लिये आज़ाद है।''(1)

(1) ......الزھد للامام احمد بن حنبل ،زھد ابی ھریرۃ ،الحدیث : ۹۹۰،ص۱۹۷۔



www.dawateislami.net

﴾37﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक औरत हाज़िर हुई और अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने अपनी लौंडी को "ऐ ज़ानिया" कह दिया है।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तुम ने उसे ज़िना करते देखा है ?" अ़र्ज़ की : "नहीं।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह क़ियामत के दिन तुझ से क़िसास (या'नी बदला) लेगी।" वोह औरत अपनी लौंडी के पास वापस गई और उसे कोड़ा दे कर कहा : "मुझे कोड़ा मार।" लौंडी ने ऐसा करने से इन्कार किया तो उस ने उसे आज़ाद कर दिया, फिर दोबारा आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में हाज़िर हुई और उसे आज़ाद करने की ख़बर दी तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उम्मीद है कि तेरा उसे आज़ाद करना तेरी तोहमत को मिटा दे।"(1)

रहीम व करीम आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुन्या से पर्दा फ़रमाते वक़्त भी ग़ुलामों के मु-तअ़ल्लिक़ वसिय्यत फ़रमाई जैसा कि अहादीसे मुबा-रका गुज़र चुकी हैं, चुनान्चे,

﴾38﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ को अ़ज़ाब न दो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें उन का मालिक बनाया है अगर वोह चाहता तो उन्हें तुम्हारा मालिक बना देता।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के पास चन्द लोग ह़ाज़िर हुए। उन दिनों आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मदाइन के अमीर थे। वोह आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को अपने घर वालों के लिये आटा गूंधते देख कर बोले : "क्या आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपनी लौंडी से आटा नहीं गुंधवाते।" तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "हम ने उसे एक काम भेजा था, अब हम ने ना पसन्द किया कि दूसरा काम भी उसे सोंपें।"(2)

किसी बुज़ुर्ग का क़ौल है कि "अपने ग़ुलाम को हर क़ुसूर पर न मारा करो बल्कि उस की उन ग़-लतियों को याद रखो और जब वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करे तो उस पर उसे मारो और फिर उसे वोह गुनाह और ग़-लतियां भी याद दिलाओ जिन का तअ़ल्लुक़ तुम्हारे और उस के दरमियान है।"

लौंडी, ग़ुलाम या चौपाए से सब से बड़ी बद अख़्लाक़ी येह है कि इन्हें भूका रखा जाए। चुनान्चे,

---

1 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنيا، كتاب الاهوال، باب ذكر القصاص والمظالم، الحديث: ٢٦١، ج٦، ص٢٤٨ـ

2 ......الطبقات الكبرى لابن سعد، الرقم ٣٥٩ سلمان الفارسی، ج٤، ص٦٧، مفهوماًـ



www.dawateislami.net

﴾39﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''इन्सान के लिये इतना ही गुनाह काफ़ी है कि वोह उस की ख़ूराक रोक ले जिस का वोह मालिक है।''(1)

चौपाए को सख़्त ज़र्ब लगाना या उसे क़ैद कर देना या उस की ज़रूरिय्यात पूरी न करना या उस से ताक़त से ज़ियादा काम लेना भी मज़्कूरा ज़ुल्म व बद अख़्लाक़ी में दाख़िल है। चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِی الْاَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ یَّطِیْرُ بِجَنَاحَیْهِ اِلَّاۤ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا فِی الْكِتٰبِ مِنْ شَیْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ یُحْشَرُوْنَ ﴿۳۸﴾ (پ۷، الانعام:۳۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और नहीं कोई ज़मीन में चलने वाला और न कोई परिन्द कि अपने परों पर उड़ता है मगर तुम जैसी उम्मतें हम ने इस किताब में कुछ उठा न रखा फिर अपने रब की त़रफ़ उठाए जाएंगे।

## जानवरों का ह़िसाबो किताब :

﴾40﴿...... मज़्कूरा आयते मुबा-रका की तफ़्सीर में है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''क़ियामत के दिन सब जानवरों को लाया जाएगा जब कि लोग खड़े होंगे, फिर उन के दरमियान फ़ैसला किया जाएगा यहां तक कि सींगों वाली बकरी से बिग़ैर सींगों वाली बकरी के लिये बदला लिया जाएगा और च्यूंटी से च्यूंटी का बदला लिया जाएगा, फिर कहा जाएगा : ''मिट्टी हो जाओ।'' उस वक़्त काफ़िर कहेगा : '' یٰلَیْتَنِیْ كُنْتُ تُرٰبًا ﴿۴۰﴾ (پ۳۰، النبا: ۴۰)
**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** हाए, किसी त़रह़ मैं ख़ाक हो जाता।''(2)

येह रिवायत चौपायों के आपस में और इन के और इन्सानों के दरमियान क़िसास की दलील है, यहां तक कि अगर इन्सान ने नाह़क़ किसी चौपाए को मारा या उसे भूका प्यासा रखा या उस से ताक़त से ज़ियादा काम लिया तो क़ियामत के दिन उस से उसी की मिस्ल बदला लिया जाएगा जो उस ने जानवर पर ज़ुल्म किया या उसे भूका रखा। इस पर दर्जे ज़ैल ह़दीसे पाक दलालत करती है। चुनान्चे,

रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जहन्नम में एक औ़रत को इस ह़ाल में देखा कि वोह लटकी हुई है और एक बिल्ली उस के चेहरे और सीने को नोच रही है

---

(1)......صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فضل النفقۃ علی العیال والمملوک......الخ، الحدیث: ۲۳۱۲، ص۸۳۵۔

(2)......موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الاھوال، ذکر الحساب والعرض والقصاص، الحدیث: ۲۲۴، ج۶، ص۲۳۱۔
المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی ہریرۃ، الحدیث: ۸۲۰۸، ج۳، ص۱۸۔



www.dawateislami.net

और उसे वैसे ही अ़ज़ाब दे रही है जैसे उस ने दुन्या में क़ैद कर के और भूका रख कर उसे तक्लीफ़ दी थी।[1] इस रिवायत का हुक्म तमाम जानवरों के ह़क़ में आ़म है।

## जानवरों को मारना कैसा ?

अगर उन से त़ाक़त से ज़ियादा काम लिया गया तो भी क़ियामत के दिन बदला लिया जाएगा। चुनान्चे,

﴾41﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''एक शख़्स गाय पर सुवार हो कर उसे हांके जा रहा था। उस ने गाय को मारा तो वोह बोल पड़ी : ''हमें सुवारी के लिये नहीं बल्कि काश्त-कारी के लिये पैदा किया गया है।''[2]

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या में उस गाय को बोलने की त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई तो उस ने अपने आप को बचा लिया कि उसे अज़िय्यत न दी जाए और उस काम के लिये इस्ति'माल न किया जाए जिस के लिये उसे पैदा नहीं किया गया। जिस ने जानवरों से उन की त़ाक़त से ज़ियादा काम लिया या उन्हें नाह़क़ मारा तो क़ियामत के दिन उस से मारने और अ़ज़ाब देने के बराबर बदला लिया जाएगा।

## गधे की नसीह़त :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : ''एक दफ़्आ़ मैं गधे पर सुवार था, मैं ने उसे दो तीन मर्तबा मारा तो उस ने अपना सर उठा कर मेरी त़रफ़ देखा और कहने लगा : ''ऐ अबू सुलैमान ! क़ियामत के दिन इस मारने का बदला लिया जाएगा, अब तुम्हारी मरज़ी है कम मारो या ज़ियादा।'' तो मैं ने कहा : ''अब मैं किसी को भी नहीं मारूंगा।''

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا क़ुरैश के बच्चों के पास से गुज़रे, जो एक परिन्दे को बांध कर उस पर निशाना बाज़ी कर रहे थे जब कि उन्हों ने परिन्दे के मालिक से येह त़ै किया हुवा था कि जो तीर निशाने पर न लगा वोह उस का होगा। जब उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को आते देखा तो भाग गए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ''येह किस ने किया है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसा करने वाले पर ला'नत फ़रमाए, बेशक रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी ज़ी रूह़ को तीर अन्दाज़ी का निशाना बनाने वाले पर ला'नत फ़रमाई है।''[3]

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المساقاۃ،باب فضل سقی الماء،الحدیث : ۲۳۶۴،ص۱۸۵،مفھوماً ۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب احادیث الانبیاء،باب۵۴،الحدیث : ۳۴۷۱،ص۲۸۴۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الصید،باب النھی عن صبر البھائم، الحدیث : ۵۰۶۲،ص۱۰۲۷،"بصبیان"بدلہ"بفتیان"۔



www.dawateislami.net

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जानवरों को क़त्ल करने के लिये क़ैद करने से मन्अ़ फ़रमाया ।(1)

जिन जानवरों को क़त्ल करना जाइज़ है जैसे 5 ख़बीस जानवर तो उन्हें बिग़ैर अ़ज़ाब दिये एक ही ज़र्ब से मारा जाए । चुनान्चे,

《42》...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जब तुम इन्हें ज़ब्ह़ करो तो अच्छी त़रह़ ज़ब्ह़ करो ।''(2)

## हैवानात को जलाना कैसा ?

इसी त़रह़ हैवानात को जलाना भी मन्अ़ है । चुनान्चे,

《43》...... हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मैं ने तुम्हें फ़ुलां फ़ुलां को आग में जलाने का हुक्म दिया था मगर आग के साथ सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही अ़ज़ाब देगा लिहाज़ा तुम उन्हें पाओ तो क़त्ल कर दो ।''(3)

《44》...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : ''हम हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ एक सफ़र में थे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ज़ाए ह़ाजत के लिये तशरीफ़ ले गए तो हम ने एक चिड़िया देखी जिस के दो बच्चे थे, हम ने उन्हें पकड़ लिया । चिड़िया आई और फड़-फड़ाने लगी । शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और दरयाफ़्त फ़रमाया : ''किस ने इसे इस के बच्चों के मुआ़-मले में तक्लीफ़ पहुंचाई ? इस के बच्चे इसे लौटा दो ।'' फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने च्यूंटियों का एक बिल मुला-ह़ज़ा फ़रमाया जिसे हम ने जला दिया था तो दरयाफ़्त फ़रमाया : ''इसे किस ने जलाया है ?'' हम ने अ़र्ज़ की : ''हम ने ।'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''आग के मालिक के सिवा किसी के लिये आग के ज़रीए़ तक्लीफ़ देना जाइज़ नहीं ।''(4)

इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में च्यूंटी और पिस्सू को भी आग के साथ तक्लीफ़ देने से मुमा-न-अ़त है ।

---

1 ......صحیح مسلم،کتاب الصید،باب النھی عن صبر البھائم، الحدیث : ۵۰۵۷،ص۱۰۲۷۔

2 ......المرجع السابق،باب الامر باحسان الذبح......الخ،الحدیث : ۵۰۵۵۔

3 ......جامع الترمذی ،ابواب السیر ،باب النھی عن الاحراق بالنار ،الحدیث : ۱۵۷۱،ص۱۸۱۴۔

4 ......سنن ابی داود،کتاب الجھاد،باب فی کراھیة حرق العدو بالنار،الحدیث : ۲۶۷۵،ص۱۴۲۱،"ترفرف"بدلہ"تفرش"۔



www.dawateislami.net

# كتاب الجنايات [1]

## कबीरा नम्बर 313 : अ़मद या शि-बहे अ़मद[2] से मुसल्मान या ज़िम्मी को क़त्ल करना

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ﴿۶۸﴾ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ﴿۶۹﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ (پ۱۹، الفرقان:۶۸تا۷۰)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो येह काम करे वोह सज़ा पाएगा बढ़ाया जाएगा उस पर अ़ज़ाब क़ियामत के दिन और हमेशा उस में ज़िल्लत से रहेगा मगर जो तौबा करे।

या'नी जिस ने किसी जान को नाह़क़ क़त्ल किया। दूसरे मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया :

مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۚۛ كَتَبْنَا عَلٰى بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًۢا بِغَیْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِی الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِیْعًاؕ وَ مَنْ اَحْیَاهَا فَكَاَنَّمَاۤ اَحْیَا النَّاسَ جَمِیْعًاؕ (پ۶، المائدة:۳۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** इस सबब से हम ने बनी इसराईल पर लिख दिया कि जिस ने कोई जान क़त्ल की बिग़ैर जान के बदले या ज़मीन में फ़साद किये तो गोया उस ने सब लोगों को क़त्ल किया और जिस ने एक जान को जिला लिया उस ने गोया सब लोगों को जिला लिया।

---

❶...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1197 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''बहारे शरीअ़त'' जिल्द सिवुम सफ़्ह़ा 751 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रत मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ''जिनायत से मुराद वोह फे'ल है जिस से जान या आ'ज़ा को नुक़्सान पहुंचाया जाए।''

❷...... **बहारे शरीअ़त,** जिल्द सिवुम सफ़्ह़ा 751 ता 753 पर है : ''**क़त्ले अ़मद** येह है कि किसी धारदार आले से क़स्दन क़त्ल करे, आग से जला देना भी क़त्ले अ़मद ही है। धारदार आला म-सलन तलवार, छुरी या लकड़ी और बांस की खपच्ची (बांस का चिरा हुवा टुकड़ा) में धार निकाल कर क़त्ल किया या धारदार पथ्थर से क़त्ल किया। लोहे और तांबा पीतल वग़ैरा की किसी चीज़ से क़त्ल करेगा अगर उस से जर्ह़ या'नी ज़ख़्म हुवा तो क़त्ले अ़मद है म-सलन छुरी, ख़न्जर, तीर, नेज़ा, बल्लम (या'नी बरछा) वग़ैरा कि येह सब आलए जारिह़ा हैं। गोली और छर्रे से क़त्ल हुवा येह भी इसी में दाख़िल है। क़त्ले अ़मद की सज़ा दुन्या में फ़क़त़ क़िसास है या'नी येही मु-तअ़य्यन है, हां ! अगर औलियाए मक़्तूल मुआ़फ़ कर दें या क़ातिल से माल ले कर मुसा-लह़त कर लें तो येह भी हो सकता है मगर बिग़ैर मरज़िये क़ातिल अगर माल लेना चाहें तो नहीं हो सकता। क़त्ल की दूसरी क़िस्म **शि-बहे अ़मद** है, वोह येह है कि क़स्दन क़त्ल करे मगर अस्लह़ा से या जो चीज़ें अस्लह़े के क़ाइम मक़ाम हों उन से क़त्ल न करे म-सलन किसी को लाठी या पथ्थर से मार डाला येह शि-बहे अ़मद है, इस सूरत में भी क़ातिल गुनहगार है और इस पर कफ़्फ़ारा वाजिब है और क़ातिल के अ़-सबा (या'नी बाप की त़रफ़ से क़रीबी रिश्तेदारों) पर दियते मुग़ल्लज़ा वाजिब जो तीन साल में अदा करेंगे।''



www.dawateislami.net

# अल्फ़ाज़े कुरआनिया की वज़ाहत

## مِنْ اَجْلِ का मफ़्हूम :

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का इस में इख़्तिलाफ़ है कि इस आयते मुबा-रका में "مِنْ اَجْلِ" किस के मु-तअ़ल्लिक़ है, ज़ियादा ज़ाहिर येही है कि येह كَتَبْنَا के मु-तअ़ल्लिक़ है और ذٰلِكَ से क़ाबील के अपने भाई को क़त्ल करने की त़रफ़ इशारा है। **اجل** अस्ल में जिनायत को कहते हैं, اَجَلَ الْاَمْرُ اَجْلًا وَاِجْلًا उस वक़्त कहा जाता है जब कोई तन्हा जुर्म करे और فَعَلْتُهُ مِنْ اَجْلِكَ اَوْ لِاَجْلِكَ का मा'ना येह है कि मैं ने तेरी वज्ह से ऐसा किया क्यूं कि तूने ऐसा किया और इसे ज़रूरी क़रार दिया। इसी त़रह فَعَلْتُهُ مِنْ جَرَّاكَ وَجَرَّائِكَ से मुराद है कि मैं ने येह काम तेरी वज्ह से किया है, फिर येह लफ़्ज़े "جَرَّ" सबब के मा'ना में इस्ति'माल होने लगा। चुनान्चे, ह़दीसे पाक में लफ़्ज़े "مِنْ جَرَّایَ"[1] "مِنْ اَجْلِی" के मा'ना में इस्ति'माल हुवा है (या'नी मेरे सबब से)। और आयते मुबा-रका में مِنْ इब्तिदाए ग़ायत के लिये है या'नी बनी इसराईल पर हुक्मे क़िसास फ़र्ज़ करने की इब्तिदा क़त्ल के जुर्म से की गई।

## क़िसास की फ़र्ज़िय्यत और क़िस्सए क़ाबील व हाबील में वज्हे मुना-सबत :

**ह़ज़रते** सय्यिदुना ह़सन और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़्ह़ाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا ने बनी इसराईल पर क़िसास फ़र्ज़ होने और क़िस्सए क़ाबील व हाबील में वज्हे मुना-सबत येह बयान फ़रमाई है कि वोह दोनों बनी इसराईल में से थे न कि ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सुल्बी बेटे थे। मगर सह़ीह़ येही है कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सुल्बी बेटे थे। नीज़ यहां सिर्फ़ क़ाबील के हाबील को क़त्ल करने की त़रफ़ इशारा नहीं बल्कि क़त्ले ह़राम के सबब जो ख़राबियां लाज़िम आती हैं उन की त़रफ़ भी इशारा है। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया :

فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۳۰﴾ (پ۶، المائدۃ:۳۰) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो रह गया नुक़्सान में।

या'नी उसे दीन व दुन्या का ख़सारा मिला। मज़ीद फ़रमाया :

فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِیْنَ ﴿۳۱﴾ (پ۶، المائدۃ:۳۱) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो पचताता रह गया।

या'नी उसे नदामत व ह़सरत और ग़म लाह़िक़ हो गए और अब वोह उन से छुटकारा दिलाने वाली कोई चीज़ भी नहीं पाता। इसी त़रह ज़ुल्म से क़त्ल करने वाले हर शख़्स को ऐसा

[1] ......صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب اذا همّ العبد بحسنة......الخ، الحديث:۳۳۶، ص۴۰۰۔



www.dawateislami.net

ख़सारा और नदामत होगी कि जिस से नजात दिलाने वाला कोई नहीं होगा।

क़िसास का हुक्म अक्सर उम्मतों में जारी था मगर इसे बनी इसराईल के साथ ख़ास करने का सबब यहूदियों पर सख़्ती करना और उन के बुरे ख़सारे को बयान करना है क्यूं कि उन्हें क़ाबील के ख़सारे व नदामत के मु-तअ़ल्लिक़ मा'लूम होने के साथ साथ येह भी मा'लूम था कि उस का भाई नबी नहीं था, इस के बा वुजूद उन्हों ने अम्बियाए किराम और रसूलों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को क़त्ल करने की जसारत की और येह फ़े'ल उन के दिलों की इन्तिहाई सख़्ती और इताअ़ते ख़ुदा वन्दी से दूरी पर दलालत करता है।

## क़िस्सए क़ाबील व हाबील बयान करने का सबब :

बनी इसराईल या'नी यहूदियों ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को जान से मारने का अ़ज़्म कर रखा था, इन वाक़िआ़त को ज़िक्र करने का मक़्सद हमारे नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तसल्ली देना है इस लिये बनी इसराईल का ख़ास तौर पर ज़िक्र किया गया।

## अफ़्आ़ले इलाही के मुअ़ल्लल न होने में इख़्तिलाफ़ :

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मज़्कूरा फ़रमाने आ़लीशान ''مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۚ كَتَبْنَا عَلٰى بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ'' से बा'ज़ लोगों ने इस्तिद्लाल किया है कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अफ़्आ़ल मुअ़ल्लल होते हैं (या'नी उन की कोई इ़ल्लत होती है)।'' और मो'तज़िला कहते हैं : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अफ़्आ़ल बन्दों के मसालेह़ के साथ मुअ़ल्लल होते हैं, पस उस का कुफ़्र और लोगों को बुरी ह़-र-कतों को पैदा करना और उन से उन के वाक़ेअ़ होने का इरादा करना मुम्तनअ़ है क्यूं कि इस त़रह़ वोह उन के मसालेह़ की रिआ़यत करने वाला न होगा।''

अह़कामे इलाही की ता'लील मुह़ाल होने के क़ाइलीन इस का एक जवाब येह देते हैं कि अगर इ़ल्लत क़दीम हो तो मा'लूल का क़दीम होना लाज़िम आएगा या अगर इ़ल्लत ह़ादिस हो तो उस का किसी दूसरी इ़ल्लत के साथ मुअ़ल्लल होना लाज़िम आएगा जिस से इ़ल्लतों का तसल्सुल लाज़िम आएगा, दूसरा जवाब येह देते हैं कि अगर वोह किसी दूसरी इ़ल्लत के साथ मुअ़ल्लल हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ निस्बत के ए'तिबार से इस इ़ल्लत का वुजूद और अ़-दमे वुजूद बराबर हो तो उस का इ़ल्लत होना मुम्तनअ़ होगा या अगर उस का वुजूद और अ़-दमे वुजूद बराबर न हो तो उन दोनों में से एक ब द-र-जए औला मुम्तनअ़ होगा और येह दवा-ई (या'नी अस्बाब) पर इस फ़े'ल की औ-लविय्यत से इस के मुस्तफ़ीद होने का तक़ाज़ा करता है और दवा-ई में वुक़ूए़ तसल्सुल मुम्तनअ़ है बल्कि इन का पहले दा-ई पर ख़त्म होना



www.dawateislami.net

वाजिब है जो बन्दे में पैदा हुवा और उस का पैदा होना बन्दे की त़रफ़ से नहीं बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है, पस जब सब कुछ उस की त़रफ़ से है तो साबित हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह़काम और अफ़्आ़ल का बन्दों के मसालेह़ की रिआ़यत के साथ मुअ़ल्लल होना मुम्तनअ़ है। यहां आयते मुबा-रका का ज़ाहिरी मा'ना मुराद नहीं बल्कि येह तो उन के लिये दर्जे ज़ैल हुक्म मशरूअ़ करने की ह़िक्मत है। चुनान्चे, इर्शाद फ़रमाया :

قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَ اُمَّهٗ وَ مَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا

(پ٦،المائدہ:١٧)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमा दो फिर **अल्लाह** का कोई क्या कर सकता है अगर वोह चाहे कि हलाक कर दे मसीह़ बिन मरयम और उस की मां और तमाम ज़मीन वालों को।

येह आयते मुबा-रका नस्स है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हर चीज़ अच्छी होती है उस की तख़्लीक़ और हुक्म मसालेह़ की रिआ़यत पर बिल्कुल मौक़ूफ़ नहीं।

## اَوْ فَسَادٍ की वज़ाह़त :

जुम्हूर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने "**بِغَيْرِ نَفْسٍ**" पर इस का अ़त़्फ़ फ़रमाया है या'नी "**اَوْ بِغَيْرِ فَسَادٍ**" यहां फ़साद करने वाले को क़त्ल करना मुराद नहीं जैसे क़िसास में या काफ़िर, शादी शुदा ज़ानी और डाकू वग़ैरा को क़त्ल करना (क्यूं कि इन के क़त्ल का हुक्म तो शरीअ़त ने दिया है)।

## एक इन्सान का क़त्ल पूरी इन्सानिय्यत का क़त्ल है :

एक इन्सान के क़त्ल को तमाम इन्सानों के क़त्ल की मिस्ल क़रार देने की वज्ह इस मुआ़-मले को इन्तिहाई बड़ा क़रार देने में मुबा-लग़ा करना और इन्सान की अ़ज़मते शान बयान करना है या'नी जिस त़रह़ पूरी इन्सानिय्यत का क़त्ल हर एक के नज़्दीक बहुत बुरा फ़े'ल है इसी त़रह़ एक शख़्स का क़त्ल भी सब के नज़्दीक बहुत बुरा होना चाहिये। इन दोनों या'नी इन्सान और इन्सानिय्यत के क़त्ल के मुशतरक होने से मुराद बड़ा होने में एक जैसा होना है न कि मिक़्दार में, क्यूं कि येह ज़रूरी नहीं कि दो अश्या में बाहम मुशा-बहत हर ए'तिबार से उन की बराबरी का तक़ाज़ा करे। अगर लोगों को मा'लूम हो जाए कि कोई शख़्स इन्हें क़त्ल करना चाहता है तो जिस त़रह़ वोह उसे रोकने और क़त्ल करने की पूरी कोशिश करते हैं इसी त़रह़ जब उन्हें मा'लूम हो कि एक शख़्स दूसरे को ज़ुल्म से क़त्ल करना चाहता है तो उन पर लाज़िम है कि वोह उस का दिफ़ाअ़ करने की कोशिश करें। इसी त़रह़ जिस ने ज़ुल्मन किसी को क़त्ल किया उस ने


www.dawateislami.net

शर, शह्‌वत और ग़ज़ब के अस्बाब को अस्बाबे ताअ़त पर तरजीह़ दी और जिस शख़्स की ह़ालत ऐसी हो कि अगर हर इन्सान उस से अपना मत़लूब व मक़्सूद ह़ासिल करने के मु-तअ़ल्लिक़ झगड़ा करे और उस के क़त्ल पर क़ादिर हो तो उसे क़त्ल कर दे।

"ह़दीस के मुताबिक़ नेक कामों में मोमिन की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। तो इसी त़रह़ बुरे कामों में उस की निय्यत उस के अ़मल से बुरी होगी।"(1)

पस इस ए'तिबार से जिस ने किसी इन्सान को ज़ुल्मन क़त्ल किया गोया उस ने तमाम इन्सानों को क़त्ल किया। चुनान्चे,

## क़त्ले इन्सान के मु-तअ़ल्लिक़ अक़्वाले सालिह़ीन :

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : "जिस ने किसी नबी या आ़दिल इमाम को क़त्ल किया गोया उस ने तमाम लोगों को क़त्ल किया और जिस ने किसी की पुश्त पनाही की गोया उस ने तमाम लोगों को ज़िन्दा किया।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَاحِد फ़रमाते हैं : "जिस ने किसी ह़ुरमत वाली जान को क़त्ल किया वोह उसे क़त्ल करने की वज्ह से जहन्नम में जाएगा जैसा कि अगर वोह तमाम लोगों को क़त्ल करता तो उस में जाता और जिस ने एक इन्सान को ज़िन्दा किया या'नी उस को क़त्ल करने से मह़फ़ूज़ रहा गोया वोह तमाम लोगों को क़त्ल करने से मह़फ़ूज़ रहा।"(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जहां क़त्ले इन्सानी से मह़फ़ूज़ रहने पर अज्रे अ़ज़ीम अ़त़ा फ़रमाया वहां इस में मुब्तला होने को भी बहुत गुनाह बड़ा क़रार दिया है।"(4) या'नी जिस ने किसी इन्सान को ज़ुल्मन क़त्ल किया गोया उस ने गुनाह के ए'तिबार से तमाम लोगों को क़त्ल किया क्यूं कि अब वोह इस से मह़फ़ूज़ नहीं और जिस ने किसी एक इन्सान को ज़िन्दा किया और उसे क़त्ल करने से बचा रहा गोया उस ने सवाब के ए'तिबार से तमाम लोगों को ज़िन्दा किया क्यूं कि वोह सब इस से मह़फ़ूज़ हैं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "**فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِیۡعًا**" से मुराद येह है कि उस पर क़िसास वाजिब है जैसा कि अगर वोह तमाम इन्सानों को क़त्ल करता तो उस पर

---

1. ......التمہیدلابن عبد البر،مالک عن محمدبن المنکدر،تحت الحدیث : ۴/۲۷۳،ج۵،ص۷۸،بتغیرقلیلٍ۔
2. ......تفسیر الطبری ،المائدۃ ،تحت الآیۃ۳۲،الحدیث : ۱۱۷۷۴،ج۴،ص۵۴۱۔
3. ......المرجع السابق ،الحدیث:۱۱۷۷۶،ص۵۴۲۔
4. ......المرجع السابق،الحدیث:۱۱۸۰۲،ص۵۴۵۔



www.dawateislami.net

क़िसास वाजिब होता और "وَمَنْ اَحْيَاهَا" से मुराद येह है कि जिस ने उस शख़्स को मुआफ़ किया जिस पर क़िसास वाजिब है गोया उस ने तमाम लोगों को ज़िन्दा किया।"(1)

हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन अ़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی ने हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से अ़र्ज़ की : "ऐ अबू सईद ! क्या हुक्मे क़िसास हमारे लिये भी इसी त़रह़ है जिस त़रह़ बनी इसराईल के लिये था ?" तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बनी इसराईल का ख़ून हमारे ख़ून से ज़ियादा अ़ज़ीज़ नहीं।"(2)

وَمَنْ اَحْيَاهَا से मुराद येह है कि "जिस ने किसी इन्सान को हलाक कर देने वाली अश्या जैसे जलने, डूबने, बहुत ज़ियादा भूक और इन्तिहाई गर्मी या सर्दी वग़ैरा से नजात दिला कर ज़िन्दा किया।"(3)

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿۹۳﴾ (پ۵،النساء:۹۳)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो कोई मुसल्मान को जान बूझ कर क़त्ल करे तो उस का बदला जहन्नम है कि मुद्दतों उस में रहे और **अल्लाह** ने उस पर ग़ज़ब किया और उस पर ला'नत की और उस के लिये तय्यार रखा बड़ा अ़ज़ाब।

## आयते मुबा-रका की वज़ाह़त

इस आयते मुबा-रका में गुनाह और वईद दोनों का ज़िक्र इन दोनों की त़रफ़ तवज्जोह दिलाने और इन के सबब के मु-तअ़ल्लिक़ ज़ज्रो तौबीख़ और झिड़क्ने में मुबा-लग़ा करने के लिये है।

## शाने नुज़ूल :

मज़्कूरा बाला आयते मुबा-रका का शाने नुज़ूल येह है कि क़ैस बिन ज़बाबा कनानी और इस का भाई हिशाम मुसल्मान हो गए। क़ैस ने अपने भाई को बनी नज्जार में मुर्दा पाया तो हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर मुआ़-मला अ़र्ज़ किया। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के साथ बनी नज्जार की त़रफ़ बनी

---

1 ......تفسیر البغوی، المائدة، تحت الایة ۳۲، ج۲، ص۲۵۔

2 ......تفسیر الطبری، المائدة، تحت الآیة ۳۲، الحدیث: ۱۱۸۰۴، ج۴، ص۵۴۵۔

3 ......التفسیر الکبیر، المائد، تحت الایة ۳۲، ج۴، ص۳۴۴۔



www.dawateislami.net

फ़ेह्र के एक शख़्स को येह पैग़ाम दे कर भेजा : ''रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया है कि अगर तुम हिशाम के क़ातिल को जानते हो तो उसे क़ैस के ह़वाले कर दो और अगर नहीं जानते तो उस की दियत अदा करो।'' जब उस फ़ेहरी ने येह पैग़ाम पहुंचाया तो बनी नज्जार ने जवाब दिया : ''हम ने सुना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त की, हम उस के क़ातिल को नहीं जानते लेकिन हम दियत अदा कर देते हैं।'' पस उन्हों ने 100 ऊंट दियत अदा कर दी।

फिर वोह दोनों मदीना शरीफ़ की त़रफ़ वापस चल दिये। रास्ते में शैत़ान ने क़ैस के दिल में वस्वसा डाला कि ''तू अपने भाई की दियत क़बूल करेगा तो येह तुझ पर आ़र होगी अपने साथ वाले को क़त्ल कर दे, इस त़रह़ जान के बदले जान हो जाएगी और दियत इस के इ़लावा होगी।'' पस वोह फ़ेहरी से लड़ने लगा और एक पथ्थर मार कर उस का सर फोड़ दिया, फिर दियत के ऊंटों में से एक पर सुवार हो कर उसे एड़ लगाई और बाक़ियों को ले कर काफ़िर हो कर मक्कए मुकर्रमा चला गया। उस वक़्त येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई : ''وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا'' या'नी अपने कुफ़्र और इरतिदाद (या'नी कुफ़्र की त़रफ़ लौट जाने) की वज्ह से हमेशा जहन्नम में रहेगा।

हुज़ूर सरापा नूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर अमान पाने वालों में से इसे ख़ारिज कर दिया और येह इस ह़ाल में क़त्ल हुवा कि ग़िलाफ़े का'बा के साथ चिमटा हुवा था।(1)

## क़त्ल के मु-तअ़ल्लिक़ अह़काम :

जान लीजिये ! क़त्ल के मु-तअ़ल्लिक़ कुछ शर-ई अह़काम हैं जैसे क़िसास और दियत वग़ैरा। चुनान्चे सूरए ब-क़रह में इर्शादे बारी तआ़ला है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ (پ۲،البقرۃ:۱۷۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो तुम पर फ़र्ज़ है कि जो नाह़क़ मारे जाएं उन के ख़ून का बदला लो।

## क़त्ल की अक़्साम :

क़त्ल की तीन अक़्साम हैं : (1) क़त्ले अ़मद (2) क़त्ले ख़त़ा और (3) शि-बहे अ़मद।

---

(1)......تفسیر البغوی،النساء،تحت الایۃ۹۳،ج۱،ص۳۷۰۔
شعب الایمان للبیھقی،باب فی حشرالناس......الخ، الحدیث:۲۹۶،ج۱، ص۲۷۷۔



www.dawateislami.net

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सू-रतुन्निसाअ की मज़्कूरा आयत ''وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا'' में क़त्ले अ़मद और इस से पहली आयते मुबा-रका में क़त्ले ख़त़ा का ज़िक्र फ़रमाया और शि-बहे अ़मद का ज़िक्र नहीं फ़रमाया।

इसी वज्ह से इस के इस्बात में अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का इख़्तिलाफ़ है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) ने अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की त़रह़ इसे साबित किया है जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق (मु-तवफ़्फ़ा 179 हि.) और उ़-लमा के एक गुरौह ने इस की नफ़ी की है।

फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ''जिसे किसी ऐसी चीज़ से म-सलन दांतों से काट कर या थप्पड़ और कोड़ा मार कर क़त्ल किया गया जिस से उ़मूमन क़त्ल नहीं किया जाता तो येह क़त्ले अ़मद है और इस में क़िसास है और तमाम अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का इत्तिफ़ाक़ है कि क़त्ले अ़मद की दियत जुर्म करने वाले के माल से ली जाएगी और क़त्ले ख़त़ा में दियत वारिसों पर होगी। जब कि शि-बहे अ़मद की दियत में अइम्मा का इख़्तिलाफ़ है, एक गुरौह कहता है कि येह जुर्म करने वाले पर होगी जब कि अक्सर फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़्दीक क़ातिल के वारिसों पर होगी।'' ﴿अह़नाफ़ का मौक़िफ़ सफ़ह़ा 326 पर ह़ाशिये में बयान हो चुका है।﴾

## आयते मुबा-रका का हुक्म :

जान लीजिये ! इस आयते मुबा-रका के हुक्म में उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का इख़्तिलाफ़ है। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : ''मोमिन को जान बूझ कर क़त्ल करने वाले की तौबा नहीं होती।'' आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से कहा गया : क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सूरए फुरक़ान में येह नहीं फ़रमाया :

وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِیْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ﴿۶۸﴾ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ﴿۶۹﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ (پ۱۹، الفرقان:۶۸تا۷۰)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और उस जान को जिस की **अल्लाह** ने हुरमत रखी नाह़क़ नहीं मारते और बदकारी नहीं करते और जो येह काम करे वोह सज़ा पाएगा, बढ़ाया जाएगा उस पर अ़ज़ाब क़ियामत के दिन और हमेशा उस में ज़िल्लत से रहेगा मगर जो तौबा करे।

तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह हुक्म ज़मानए जाहिलिय्यत में था। इस हुक्म की वज्ह येह है कि मुशरिकीन ने क़त्ल और ज़िना का इरतिकाब किया था वोह सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आए और कहने लगे : ''जिस दीन



www.dawateislami.net

की त़रफ़ आप बुलाते हैं वोह बहुत अच्छा है, मगर हमें येह बताइये कि हमारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा क्या होगा।'' तो येह आयाते त़य्यिबात ''اِلَّامَنۡ تَابَ(پ۱۹،الفرقان:۶۸تا۷۰) से وَالَّذِیۡنَ لَایَدۡعُوۡنَ مَعَ اللّٰہِ اِلٰـھًا اٰخَرَ'' तक नाज़िल हुई येह हुक्म मुश्रिकीन के लिये था। जब कि सूरए निसाअ की मज़्कूरा आयत ''وَمَنۡ یَّقۡتُلۡ مُؤۡمِنًا......الاٰیۃ(پ۵،النساء:۹۳)'' उस मुसल्मान के मु-तअ़ल्लिक़ है, जो इस्लाम और इस के अह़काम को जानते हुए किसी को क़त्ल करे तो वोह जहन्नमी है।''(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ''जब सूरए फ़ुरक़ान की मज़्कूरा आयाते मुबा-रका नाज़िल हुईं तो हम इन में मौजूद नर्म हुक्म से मु-तअ़ज्जिब हुए, पस हम 7 महीने इसी हुक्म पर क़ाइम रहे, फिर सख़्त हुक्म वाली आयत नाज़िल हुई या'नी नर्म हुक्म के बा'द सूरए निसाअ की आयते मुबा-रका नाज़िल हुई तो नर्म हुक्म मन्सूख़ (या'नी ख़त्म) हो गया।''

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : ''सूरए फ़ुरक़ान की आयत मक्की और सूरए निसाअ की आयत म-दनी है लेकिन इन में कोई भी मन्सूख़ नहीं।''(2)

## अहले सुन्नत व जमाअ़त का मौक़िफ़ :

अहले सुन्नत व जमाअ़त मुत़्लक़न क़ातिल की तौबा क़बूल होने के क़ाइल हैं। क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَاِنِّیۡ لَغَفَّارٌ لِّمَنۡ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اھۡتَدٰی ﴿۸۲﴾ (پ۱۶،طٰہٰ:۸۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूं उसे जिस ने तौबा की और ईमान लाया और अच्छा काम किया फिर हिदायत पर रहा।

दूसरे मक़ाम पर फ़रमाने बारी तआ़ला है :

اِنَّ اللّٰہَ لَا یَغۡفِرُ اَنۡ یُّشۡرَکَ بِہٖ وَیَغۡفِرُ مَا دُوۡنَ ذٰلِکَ لِمَنۡ یَّشَآءُ ۚ (پ۵،النساء:۴۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** इसे नहीं बख़्शता कि उस के साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है।

अहले सुन्नत व जमाअ़त ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी रिवायत का जवाब येह देते हैं कि अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से येह रिवायत सह़ीह़ त़ौर पर साबित हो तो इस से मक़्सूद मुबा-लग़ा और ज़ज्रो तौबीख़ करना और क़त्ल से नफ़्रत दिलाना है, नीज़ मज़्कूरा आयते मुबा-रका में मो'तज़िला और उन लोगों के लिये कोई दलील

---

(1) ......صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ما لقی النبی......الخ، الحدیث : ۳۸۵۵، ۴۷۶۴، ص۳۱۳، ۳۰۴، ۳۰۴، مفہوماً۔

(2) ......تفسیر البغوی، النساء، تحت الایۃ ۹۳، ج۱، ص۳۷۰۔



www.dawateislami.net

नहीं जो इस बात के क़ाइल हैं कि कबीरा गुनाहों का मुर–तकिब हमेशा जहन्नम में रहेगा क्यूं कि येह काफ़िर क़ातिल (या'नी क़ैस बिन ज़बाबा) के बारे में नाज़िल हुई। और अगर येह मान भी लिया जाए कि येह आयते मुबा–रका मोमिन क़ातिल के मु–तअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई तो येह हुक्म उस के मु–तअ़ल्लिक़ है जो इज्माई तौर पर ह़राम क़त्ल को ह़लाल जान कर करे और क़त्ले ह़राम को ह़लाल जानना कुफ़्र है। जैसा कि किताब के शुरूअ़ में गुज़र चुका है।

**मन्कूल** है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन उ़बैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़ला عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعُلٰى के पास ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : ''क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वा'दा ख़िलाफ़ी फ़रमाएगा ?'' आप ने जवाब दिया : ''नहीं।'' तो उन्हों ने दोबारा अ़र्ज़ की : ''क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह इर्शाद नहीं फ़रमाया : ''وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا......الاية'' तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अबू उ़स्मान ! क्या तुम अ़जम से आए हो ? क्यूं कि अहले अ़रब वई़द के पूरा न करने को वा'दा ख़िलाफ़ी या बुराई शुमार नहीं करते बल्कि वा'दा पूरा न करने को वा'दा ख़िलाफ़ी और बुरा समझते हैं।'' और फिर येह शे'र पढ़ा :

وَاِنِّیْ وَاِنْ اَوْعَدْتُهٗ اَوْ وَعَدْتُهٗ لَمُخْلِفُ اِیْعَادِیْ وَمُنْجِزُ مَوْعِدِیْ

**तरजमा :** बिला शुबा अगर मैं उसे कोई धमकी दूं तो उस को पूरा करने वाला नहीं लेकिन अगर कोई वा'दा करूं तो उस को पूरा करने वाला हूं।(1)

शिर्क के इ़लावा कोई गुनाह जहन्नम में हमेशा रहने का मूजिब नहीं। इस पर दलील **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ (پ۵،النساء:۴۸)

**तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** इसे नहीं बख़्शता कि उस के साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है।

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान भी इस पर दलील है कि ''जो इस ह़ालत में मरा कि उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक न ठहराया था वोह जन्नत में दाख़िल होगा अगर्चे उस ने ज़िना किया हो या चोरी की हो।''(2)

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लै–लतुल अ़–क़बा में अपने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से इस बात पर बैअ़त ली कि ''वोह न तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक ठहराएंगे और न ही चोरी और ज़िना वग़ैरा का

---

1 ......اللباب فی علوم الكتاب، النساء، تحت الآية: ۹۳، ج۶، ص۵۷۳، مفهوماً۔

2 ......صحيح البخاری، كتاب الرقاق، باب قول النبی: ما يسرنی ان عندی مثل احد هذا ذهبا، الحديث: ۶۴۴۴، ص۵۴۱۔



www.dawateislami.net

इरतिकाब करेंगे।'' फिर इर्शाद फ़रमाया : ''तुम में से जो इन बातों को पूरा करे उस का अज्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है और जो इन में से किसी (गुनाह) में मुब्तला हुवा और उसे दुन्या में सज़ा दे दी गई तो येह उस के लिये कफ़्फ़ारा होगा और जिस ने इन में से कोई गुनाह किया फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की पर्दा पोशी फ़रमाई तो अब उस की मरज़ी है चाहे तो उसे मुआ़फ़ कर दे और चाहे तो अ़ज़ाब दे।'' पस तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने इन सब बातों पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बैअ़त की।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम वाह़िदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : ''इस आयते मुबा-रका का जवाब देने में हमारे अस्ह़ाब ने बहुत से तुरुक़ अपनाए हैं लेकिन मैं ने उन में से कोई त़रीक़ा इख़्तियार नहीं किया क्यूं कि उन का कलाम तख़्सीस, मुख़ा-लफ़त या छुपाने के लिये है जब कि आयत के अल्फ़ाज़ इन में से किसी चीज़ पर दलालत नहीं करते।'' और मैं दो तौजीहात पर ए'तिमाद करता हूं :

(1)...... मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इज्माअ़ है कि येह आयते मुबा-रका उस काफ़िर के मु-तअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जिस ने एक मोमिन को क़त्ल कर दिया था फिर (इमाम वाह़िदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى ने) गुज़श्ता वाक़िआ़ ज़िक्र किया।

(2)...... आयते मुबा-रका के अल्फ़ाज़ ''فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ'' का मा'ना येह है कि ''उसे मुस्तक़्बिल (या'नी आख़िरत) में जहन्नम की सज़ा दी जाएगी।'' और येह एक वई़द है और वई़द का पूरा न करना करम है।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़्रुद्दीन मुह़म्मद बिन उ़मर राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने पहली तौजीह को इस ए'तिबार से ज़ईफ़ क़रार दिया कि ए'तिबार लफ़्ज़ के उ़मूम का होता है न कि सबब के ख़ुसूस का और उसूले फ़िक़्ह में एक क़ाइदा है कि मुनासिब सिफ़त पर हुक्म को मुरत्तब करना इस बात पर दलालत करता है कि येह सिफ़त इस हुक्म के लिये इ़ल्लत है। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْۤا اَیْدِیَهُمَا (پ٦، المائدة:٣٨)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो मर्द या औ़रत चोर हो तो उन का हाथ काटो।

اَلزَّانِیَةُ وَالزَّانِیْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ (پ١٨، النور:٢)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** जो औ़रत बदकार हो और जो मर्द तो उन में हर एक को सो कोड़े लगाओ।

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب(١١)، الحدیث:١٨، ص٣۔

2 ......اللباب فی علوم الکتاب، النساء، تحت الآیة:٩٣، ج٦، ص٥٧٤۔



www.dawateislami.net

**पस** जिस त़रह़ येह आयाते मुबा-रका दलालत करती हैं कि हाथ काटने और कोड़े मारने का सबब चोरी और ज़िना है इसी त़रह़ यहां पर जहन्नम की वईद का मूजिब क़त्ले अ़मद है क्यूं कि येह हुक्म के लिये वस्फ़े मुनासिब है और जब मुआ़-मला इस त़रह़ है तो आयते मुबा-रका का काफ़िर के साथ ख़ास होना बाक़ी न रहा। लिहाज़ा अ़ज़ाबे जहन्नम का मूजिब अगर कुफ़्र हो तो इस शदीद वईद में क़त्ले अ़मद का मुत़्लक़न कोई असर बाक़ी नहीं रहता जब कि इस का मूजिब कुफ़्र नहीं, और अगर इस का मूजिब क़त्ले अ़मद हो तो इस से लाज़िम आएगा कि जब येह वाक़ेअ़ हो तो वईद आ जाए, पस उन की इस तौजीह की कोई ह़ैसिय्यत नहीं।

दूसरी तौजीह में भी इन्तिहाई फ़साद पाया जाता है क्यूं कि वईद ख़बर की अक़्साम में से एक क़िस्म है, जब हम ने इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये वईद को पूरा न करना जाइज़ क़रार दिया तो हम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर झूट जाइज़ क़रार दिया जो कि बहुत बड़ी ख़त़ा बल्कि कुफ़्र के क़रीब है क्यूं कि उ़-क़ला का इज्माअ़ है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **झूट से पाक है।"** येह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के कलाम का खुलासा है।

दूसरी तौजीह में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम वाह़िदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى मुन्फ़रिद नहीं बल्कि उन से पहले उन से बड़े उ़-लमा जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र बिन अ़ला رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه वग़ैरा का भी येही मौक़िफ़ है जैसा कि उन के ह़वाले से बयान हो चुका है, पस इस के क़ाइल अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام को ऐसी बड़ी बुराई से बचाने के लिये येह तावील की जाएगी कि "इन की मुराद ख़बर में ख़िलाफ़ वाक़ेअ़ होना नहीं बल्कि येह है कि (1)...... अगर उस पर नरमी न की गई और उसे मुआ़फ़ न किया गया या (2)...... उस ने तौबा न की या (3)...... उस से क़िसास न लिया गया (4)...... या उसे मुआ़फ़ न किया गया तो तक़्दीर उसे जहन्नम में ले जाएगी।" इस पर दलील ज़ाहिर है, पहली सूरत तो क़त़्ई त़ौर पर सच्ची है जब कि बा'द वाली तीनों में सुन्नत फ़ैसला करने वाली है, पहली सूरत को बर क़रार रखने में कोई ऐसी चीज़ नहीं जो आयते मुबा-रका को वईद से ख़ारिज कर दे क्यूं कि अगर आक़ा ने अपने ग़ुलाम से कहा : "मैं तुझे इस जुर्म पर सज़ा दूंगा मगर येह कि मुझे तुझ पर रह़्म आ जाए या तू ऐसा काम करे जो तेरे क़ुसूर को मिटा दे या कोई शख़्स तेरी सिफ़ारिश कर दे।" तो उस का येह क़ौल वईद होगा।

आयते मुबा-रका में वईद का पूरा न करना इस ए'तिबार से है कि मज़्कूरा मह़ज़ूफ़ बातें इस में ज़ाहिरन नहीं बल्कि पोशीदा हैं, पस येह ज़ाहिर के ए'तिबार से पूरा न करना है न कि ह़क़ीक़त के ए'तिबार से। लिहाज़ा इस से फ़ाएदा ह़ासिल कीजिये ताकि आप इस त़ा'नो तश्नीअ़ का जवाब दे सकें जो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन मुह़म्मद बिन उ़मर राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى



www.dawateislami.net

ने इस मौक़िफ़ के क़ाइलीन पर की और उन पर ऐसी बातें लाज़िम कीं जो उन्हों ने नहीं कहीं और न ही उन के दिल में ऐसी बातों का ख़याल खटका बल्कि वोह इस से बहुत ज़ियादा दूर हैं।

फिर मैं ने हज़रते सय्यिदुना क़फ़्फ़ाल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْجَلَال (मु-तवफ़्फ़ा 365 हि.) को देखा कि उन्हों ने अपनी तफ़्सीर में जवाब देते हुए मज़्कूरा तौजीह के इलावा एक और तौजीह ज़िक्र की जो ग़ौरो फ़िक्र से मा'लूम हो सकती है। चुनान्चे फ़रमाया : "आयते मुबा-रका इस पर तो दलालत करती है कि क़त्ल की सज़ा वोही है जो उस में मज़्कूर हुई लेकिन इस में येह दलील नहीं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे सज़ा देगा भी या नहीं ? क्यूं कि एक शख़्स अपने ग़ुलाम से कहता है : "तेरी सज़ा तो येह है कि मैं तेरे साथ ऐसा करूं मगर मैं ऐसा नहीं करूंगा।"

येह तौजीह इस ए'तिबार से ज़ईफ़ है कि इस आयते मुबा-रका से साबित होता है कि क़त्ले अ़मद की सज़ा वोही है जो मज़्कूर हुई और कई आयाते मुक़द्दसा से साबित है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुस्तहिक़्क़ीन को सज़ा देगा। चुनान्चे, फ़रमाने बारी तआ़ला है :

مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ (پ۵، النساء:۱۲۳) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** जो बुराई करेगा उस का बदला पाएगा।

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ﴿٨﴾ (پ۳۰، الزلزال:۸) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा।

इस दलील को येह कह कर रद कर दिया गया है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़रमाने आ़लीशान में "**يُّجْزَ بِهٖ**" और "**يَّرَهٗ**" से मुराद येह है कि उस को सज़ा तब मिलेगी जब उस की मुआ़फ़ी पर इस त़रह़ की दलील वाक़ेअ़ न हो जैसे क़ुरआने पाक में है :

وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ (پ ۵، النساء:۴۸) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और कुफ़्र के नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है।

पस "**يُّجْزَ بِهٖ**" और "**يَّرَهٗ**" के शर्त़ की जज़ा होने से मुराद येह है कि येह शर्त़ पर मुरत्तब है और मुरत्तब होने से जज़ा का वाक़ेअ़ होना लाज़िम नहीं आता।

इसी त़रह़ आयते मुबा-रका में हमेशा जहन्नम में रहने की सज़ा क़त्ले अ़मद पर मुरत्तब है और इस से वाक़ेअ़ होना लाज़िम नहीं आता, क्या आप देखते नहीं कि अगर आप किसी को येह कहें कि "अगर आप मेरे पास आए तो मैं आप की इ़ज़्ज़तो तक्रीम करूंगा।" पस इ़ज़्ज़त उस की आमद पर मुरत्तब होगी। लिहाज़ा जब वोह आएगा तो इ़ज़्ज़त पाई भी जा सकती है और नहीं भी।

चूंकि येह क़ौल मेरे इब्तिदाई जवाब के क़रीब है इस लिये येह हज़रते सय्यिदुना इमाम वाहि़दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى और दीगर साबिक़ा मो'तरिज़ीन के ए'तिराज़ात का जवाब बन सकता



www.dawateislami.net

है और इस सूरत में वईद के पूरा न करने का मा'ना येह होगा कि अगर मुआफ़ी वग़ैरा का सुबूत न हो तो उस वक़्त वोह तरतीब ह़ासिल होती है जिस पर आयते मुबा–रका दलालत करती है और अगर मुआफ़ी का सुबूत पाया जाए तो वोह तरतीब ह़ासिल नहीं होती, पस इस मा'ना के ए'तिबार से ख़लफ़ से मुराद ख़बर का पूरा न होना नहीं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की दी हुई ख़बर के मु–तअ़ल्लिक़ पूरा न होने का वह्म भी नहीं किया जा सकता।

फिर मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़्रुद्दीन मुह़म्मद बिन उ़मर राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى का कलाम देखा उन्हों ने भी वोही जवाब दिया जो मैं पहले ज़िक्र कर चुका हूं और उन का जवाब येह है कि येह आयते मुबा–रका दो सूरतों में ख़ास है। **पहली** येह कि क़त्ले अ़मद ज़ियादती के बिग़ैर हो म–सलन क़िसास में किसी को क़त्ल करने से येह वईद बिल्कुल न पाई जाएगी। **दूसरी** येह कि ज़ुल्मो ज़ियादती के साथ क़त्ल करने वाला जब तौबा कर ले तो भी येह वईद बिल्कुल न पाई जाएगी। जब इन दोनों सूरतों में क़त्ले अ़मद को ख़ास किया जा सकता है तो येह तख़्सीस इस सूरत में भी पाई जा सकती है जब मुजरिम को (वईद सुनाने के बा'द) मुआफ़ कर दिया जाए और उस की दलील **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दर्जे ज़ैल फ़रमाने आ़लीशान है :

**وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ** (پ ۵، النساء: ۴۸)

**तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान :** और कुफ़्र के नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआफ़ फ़रमा देता है।

**सुवाल :** उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इस के मु–तअ़ल्लिक़ जो कुछ ज़िक्र फ़रमाया है उस में इख़्तिलाफ़ का मक़ाम येह है कि क्या क़ातिल की तौबा क़बूल होगी या नहीं? और क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे मुआफ़ भी करेगा या नहीं? लिहाज़ा इस सूरत में मज़्कूरा जवाब कैसे सह़ीह़ हो सकता है?

**जवाब :** जब ह़दीसे पाक में इस की सराह़त मौजूद है तो आयते मुबा–रका को भी इसी मा'ना पर मह़मूल करना ज़रूरी है और मुख़ालिफ़ीन की त़रफ़ तवज्जोह न की जाए क्यूं कि उन के शुबुहात कमज़ोर हैं और उन के त़रीक़े हवा में उड़ने वाले गर्दो ग़ुबार की मिस्ल हैं। चुनान्चे,

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "7 हलाक करने वाली चीज़ों से बचो।" अ़र्ज़ की गई : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह क्या हैं?" इर्शाद फ़रमाया : "(1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक ठहराना (2) जादू करना (3) किसी जान को नाहक़ क़त्ल करना (4) सूद खाना (5) यतीम का माल खाना (6) जंग के दिन पीठ फैर लेना और



www.dawateislami.net

(7) पाक दामन मोमिना सीधी सादी औरतों पर तोहमत लगाना।''(1)

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कबीरा गुनाहों का ज़िक्र करते हुए इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना और किसी जान को क़त्ल करना।''(2)

﴾3﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक कौन सा गुनाह सब से बड़ा है ?'' तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम्हारा (मख़्लूक़ को) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुक़ाबिल ठहराना ह़ालां कि उस ने तुम्हें पैदा फ़रमाया।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''बेशक येह तो बहुत बड़ा गुनाह है, इस के बा'द कौन सा गुनाह बड़ा है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''तुम्हारा अपने बेटे को इस ख़ौफ़ से क़त्ल कर देना कि वोह तुम्हारे साथ खाएगा।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''फिर कौन सा ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''तुम्हारा अपने पड़ोसी की बीवी से ज़िना करना।''(3)

﴾4﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''कबीरा गुनाह येह हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना, किसी जान को क़त्ल करना और झूटी क़सम खाना।''(4)

﴾5﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कबीरा गुनाहों के मु-तअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया गया तो इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, मुसल्मान जान को क़त्ल करना और जंग के दिन भाग जाना।''(5)

﴾6﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''कबीरा गुनाहों में से सब से बड़े गुनाह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, किसी को नाह़क़ क़त्ल करना

---

(1)......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الکبائر و اکبرھا، الحدیث : ۲۶۲، ص۶۹۳۔

(2)......صحیح البخاری، کتاب الادب، باب عقوق الوالدین من الکبائر، الحدیث : ۵۹۷۷، ص۵۰۶۔

(3)......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان کون الشرک اقبح الذنوب و بیان اعظمھا، الحدیث : ۲۵۷، ص۶۹۳۔

(4)......صحیح البخاری، کتاب الاَیمان والنذور، باب الیمین الغموس، الحدیث : ۶۶۷۵، ص۵۵۸۔

(5)......سنن النسائی، کتاب المحاربۃ، باب ذکر الکبائر، الحدیث : ۴۰۱۴، ص۲۳۵۰۔



www.dawateislami.net

और सूद खाना है।''(1)

﴾7﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''7 कबीरा गुनाहों से बचो (फिर उन में से चन्द बयान फ़रमाए) : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, किसी जान को क़त्ल करना और जंग से भाग जाना।''(2)

﴾8﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कबीरा गुनाहों का तज़्किरा करते सुना : ''वालिदैन की ना फ़रमानी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, किसी जान को नाह़क़ क़त्ल करना और पाक दामन औ़रतों पर तोहमत लगाना।''(3)

﴾9﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''कबीरा गुनाह 7 हैं (फिर इन में से चन्द बयान फ़रमाए) : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, किसी जान को नाह़क़ क़त्ल करना और पाक दामन औ़रत पर ज़िना की तोहमत लगाना।''(4)

﴾10﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अहले यमन की त़रफ़ अपने मुबारक पैग़ाम में तह़रीर फ़रमाया : ''बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बड़ा गुनाह उस के साथ शरीक ठहराना और किसी मोमिन को नाह़क़ क़त्ल करना है।''(5)

﴾11﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : ''मोमिन अपने दीन के मुआ़-मले में हमेशा कुशा-दगी में रहता है जब तक वोह नाह़क़ ख़ून नहीं बहाता।''(6)

﴾12﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि ''नाह़क़ ह़राम ख़ून बहाना हलाक करने वाले उन उमूर में से है जिन से निकलने की कोई राह नहीं।''(7)

﴾13﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान

---

(1)......مجمع الزوائد، كتاب الايمان، باب فی الكبائر، الحديث : ٣٨٢، ج ١، ص ٢٩١۔

(2)......المعجم الكبير، الحديث : ٥٦٣٦، ج٦، ص١٠٣۔

(3)......المعجم الكبير، الحديث : ٣، ج١٣، ١٤، ص٦۔ (4)......المعجم الاوسط، الحديث : ٥٧٠٩، ج٤، ص٢٠٠۔

(5)......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان ، كتاب التاريخ ، باب كتب النبی صلی اللہ علیہ وسلم، الحديث : ٦٥٢٥، ج٨، ص١٨٠۔

(6)......صحيح البخاری، كتاب الديات، باب قول الله تعالى: وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا...... الاية، الحديث : ٦٨٦٢، ص٥٧٢۔

(7)......المرجع السابق، الحديث : ٦٨٦٣۔



www.dawateislami.net

है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां सारी दुन्या का तबाह हो जाना किसी मोमिन के नाहक़ क़त्ल से ज़ियादा आसान है।"(1)

﴾14﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "किसी मोमिन को क़त्ल करने में अगर तमाम ज़मीन व आस्मान वाले शरीक हो जाएं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन सब को जहन्नम में दाख़िल कर दे।"(2)

﴾15﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सारी दुन्या का तबाह हो जाना नाहक़ ख़ून बहाने से ज़ियादा आसान है।"(3)

﴾16﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सारी दुन्या का मिट जाना किसी मुसल्मान के (नाहक़) क़त्ल से ज़ियादा आसान है।"(4)

﴾17﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "किसी मुसल्मान का क़त्ल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक दुन्या के बरबाद होने से बड़ा है।"(5)

﴾18﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दौराने त़वाफ़ का'बा शरीफ़ से (मुख़ात़िब हो कर) इर्शाद फ़रमाते सुना : "तू कितना अच्छा है और तेरी ख़ुश्बू कितनी पाकीज़ा है! तू कितना अ़ज़ीम है और तेरी हुरमत कितनी ज़ियादा है! उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की जान है! मोमिन के माल और ख़ून की हुरमत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक तेरी हुरमत से भी ज़ियादा है।"(6)

﴾19﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "किसी मोमिन के ख़ून में अगर तमाम ज़मीन व आस्मान वाले शरीक हो जाएं तो

(1)......سنن ابن ماجه،ابواب الديات،باب التغليظ فی قتل مسلم ظلما،الحديث : ٢٦١٩،ص٢٦٣٣۔
(2)......الترغيب والترهيب،كتاب الحدود،باب الترهيب من قتل النفس......الخ،الحديث : ٣٧١٨،ج٣،ص٢٣٤۔
(3)......شعب الايمان للبيهقی، باب فی تحريم النفوس والجنايات عليها،الحديث : ٥٣٤٤،ج٤،ص٣٤٥۔
(4)......جامع الترمذی،ابواب الديات،باب ما جاء فی تشديد قتل المؤمن، الحديث : ١٣٩٥، ص١٧٩٣۔
(5)......سنن النسائی،كتاب المحاربة ،باب تعظيم الدم ،الحديث : ٣٩٩٥،ص٢٣٤٩۔
(6)......سنن ابن ماجه،ابواب الفتن،باب حرمة دم المومن وماله،الحديث : ٣٩٣٢،ص٢٧١٢۔



www.dawateislami.net

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन सब को जहन्नम में धकेल दे।''(1)

﴾20﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में मदीना शरीफ़ में एक शख़्स को क़त्ल कर दिया गया लेकिन क़ातिल का पता न चल सका। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मिम्बरे अक़्दस पर जल्वा अफ़रोज़ हो कर इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ लोगो ! एक शख़्स क़त्ल हो गया जब कि मैं तुम में मौजूद हूं और क़ातिल का पता नहीं चल रहा, अगर तमाम ज़मीन व आस्मान वाले किसी मोमिन को क़त्ल करने में शरीक हो जाएं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन सब को अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमा दे मगर येह कि वोह जो चाहे करे।''(2)

﴾21﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''किसी मुसल्मान को क़त्ल करने में अगर तमाम ज़मीन व आस्मान वाले शरीक हो जाएं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन सब को औंधे मुंह जहन्नम में गिरा दे।''(3)

﴾22﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने मोमिन के क़त्ल पर मदद की अगर्चे आधा कलिमा कहा वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि उस की दोनों आंखों के दरमियान लिखा होगा : ''اٰیِسٌ مِّنْ رَّحْمَۃِ اللہ'' या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस।''(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ह़वाले से ''आधे कलिमे'' की वज़ाह़त येह फ़रमाई कि वोह ''اُقْتُلْ'' (या'नी तू इसे मार डाल) के बजाए सिर्फ़ ''اُقْ'' कह दे।

﴾23﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने किसी मुसल्मान के ख़ून पर मदद की अगर्चे आधा कलिमा कहा क़ियामत के दिन उस की दोनों आंखों के दरमियान लिखा होगा, ''اٰیِسٌ مِّنْ رَّحْمَۃِ اللہ'' या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस।''(5)

---

(1)......جامع الترمذی،ابواب الدیات ،باب الحکم فی الدماء ،الحدیث : ۱۳۹۸ ،ص۱۷۹۳ ۔

(2)......شعب الایمان للبیھقی ،باب فی تحریم النفوس والجنایات علیھا ،الحدیث : ۵۳۵۱ ،ج۴،ص۳۴۷،دون قولہ:مؤمن۔

(3)......المعجم الصغیر للطبرانی،الحدیث : ۵۶۶،الجزء الاول،ص۲۰۵ ۔

(4)......سنن ابن ماجہ،ابواب الدیات ،باب التغلظ فی قتل مسلم ظلماً، الحدیث : ۲۶۲۰، ص۲۶۳۴ ۔

(5)......شعب الایمان للبیھقی ،باب فی تحریم النفوس والجنایات علیھا ،الحدیث : ۵۳۴۶ ،ج۴،ص۳۴۶۔



www.dawateislami.net

﴿24﴾...... सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तुम में से जो इस्तिताअत रखता है कि उस के और जन्नत के दरमियान किसी मुसल्मान का चुल्लू भर ख़ून बहाने का गुनाह भी हाइल न हो जितना मुर्ग़ी ज़ब्ह करते वक़्त बहाया जाता है (तो वोह ऐसा ज़रूर करे क्यूं कि) ऐसा शख़्स (या'नी नाहक़ ख़ून बहाने वाला) जब भी जन्नत के किसी दरवाज़े पर जाएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के और जन्नत के माबैन रुकावट हाइल कर देगा और तुम में से जो ताक़त रखता है कि उस के पेट में पाक चीज़ ही जाए (तो वोह ऐसा ज़रूर करे) क्यूं कि (मरने के बा'द) सब से पहले इन्सान का पेट ही बदबूदार होता है।"(1)

﴿25﴾...... रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "कोई भी शख़्स नाहक़ क़त्ल किया जाता है तो उस गुनाह का हिस्सा हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बेटे (क़ाबील) को ज़रूर मिलता है क्यूं कि इसी ने सब से पहले क़त्ल का तरीक़ा राइज किया।"(2)

﴿26﴾...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हक़ीक़त बयान है : "क़ियामत के दिन सब से पहले लोगों के दरमियान ख़ून बहाने के मु-तअल्लिक़ फ़ैसला किया जाएगा।"(3)

## बरोज़े क़ियामत सब से पहला हिसाब :

﴿27﴾...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : "सब से पहले बन्दे से नमाज़ का हिसाब लिया जाएगा और सब से पहले लोगों के दरमियान ख़ून बहाने के बारे में फ़ैसला किया जाएगा।"(4)

## हदीस की वज़ाहत :

मज़्कूरा हदीस में ज़िक्र कर्दा दोनों बातें एक दूसरे के मुनाफ़ी नहीं। क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक़ूक़ में से सब से पहले इन्सान से नमाज़ का हिसाब लिया जाएगा इस लिये कि येह **हुक़ूक़ुल्लाह** में सब से अहम हक़ है और लोगों के हुक़ूक़ में से सब से पहले क़त्ल के बारे में हिसाब होगा क्यूं कि येह **हुक़ूक़ुल इबाद** में सब से अहम है।

﴿28﴾...... हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی ،باب فی تحریم النفوس والجنایات علیها ،الحدیث : ۵۳۵۰، ج۴، ص۳۴۷۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب خلق آدم وذریته، الحدیث : ۳۳۳۵، ص۲۶۹۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب القسامة، باب المجازاة بالدماء فی الآخرة......الخ ،الحدیث : ۴۳۸۱، ص۹۷۴۔

4 ......سنن النسائی ،کتاب المحاربة، باب تعظیم الدم ،الحدیث : ۳۹۹۶، ص۲۳۴۹۔



www.dawateislami.net

निशान है : "उम्मीद है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर गुनाह बख़्श देगा सिवाए उस शख़्स के जो ह़ालते कुफ़्र में मरे या जो मोमिन को जान बूझ कर क़त्ल करे।"(1)

﴾29﴿...... एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की बारगाह में अ़र्ज़ की : "क्या क़ातिल के लिये कोई तौबा है ?" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه ने तअ़ज्जुब भरे अन्दाज़ में फ़रमाया : "क्या कह रहे हो ?" उस ने अपना सुवाल दोहराया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه ने इसी त़रह़ दो या तीन मर्तबा पूछा : "क्या कह रहे हो ?" फिर इर्शाद फ़रमाया : मैं ने सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते सुना : क़ियामत के दिन मक़्तूल बारगाहे इलाही में यूं ह़ाज़िर होगा कि एक हाथ में अपना सर और दूसरे हाथ में क़ातिल का गिरीबान पकड़ा होगा जब कि उस की रगों से ख़ून बह रहा होगा यहां तक कि वोह अ़र्शे इलाही के पास पहुंच कर **अल्लाहु रब्बुल आ़-लमीन** की बारगाह में अ़र्ज़ करेगा : "येह है वोह शख़्स जिस ने मुझे क़त्ल किया।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ातिल से फ़रमाएगा : "हलाक हो जा।" फिर उसे जहन्नम की त़रफ़ ले जाया जाएगा।(2)

﴾30﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में मक़्तूल अपने क़ातिल को पकड़े हुए ह़ाज़िर होगा जब कि उस की गरदन की रगों से ख़ून बह रहा होगा, वोह अ़र्ज़ करेगा : "ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! इस से पूछ, इस ने मुझे क्यूं क़त्ल किया।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ातिल से दरयाफ़्त फ़रमाएगा : "तूने इसे क्यूं क़त्ल किया।" वोह अ़र्ज़ करेगा : "मैं ने इसे फ़ुलां की इ़ज़्ज़त के लिये क़त्ल किया।" तो उसे कहा जाएगा : "इ़ज़्ज़त तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के लिये है।"(3)

﴾31﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : सुब्ह़ के वक़्त इब्लीस अपने लश्कर फैला देता है और उन से कहता है : "जिस ने आज किसी मुसल्मान को ज़लीलो रुस्वा किया मैं उसे ताज पहनाऊंगा।" आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : एक आ कर कहता है : "मैं एक शख़्स पर मुसल्लत़ रहा यहां तक कि उस ने अपनी बीवी को त़लाक़ दे दी।" शैत़ान जवाब देता है : "हो सकता है वोह फिर निकाह़ कर ले।" दूसरा आ कर कहता है : "मैं एक आदमी के साथ लगा रहा यहां तक कि उस ने अपने वालिदैन की ना फ़रमानी की।" तो वोह कहता है : "शायद ! वोह उन के साथ अच्छा सुलूक कर ले।" तीसरा आ कर कहता है : "मैं

---

1 ......سنن النسائی، کتا ب المحاربۃ، باب تحریم الدم ، الحدیث : ۳۹۸۹، ص۲۳۴۹، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

2 ......المعجم الاوسط، الحدیث : ۴۲۱۷، ج۳، ص۱۷۰ ۔ 3 ......المعجم الاوسط ، الحدیث : ۷۲۶، ج۱، ص۲۲۴۔



www.dawateislami.net

एक शख़्स के साथ चिमटा रहा यहां तक कि वोह शिर्क कर बैठा।'' तो वोह कहता है : ''तूने बड़ा काम किया।'' चौथा आ कर कहता है : ''मैं एक आदमी के साथ साथ रहा यहां तक कि उस ने एक शख़्स को क़त्ल कर दिया।'' तो वोह कहता है : ''तूने तो कमाल कर दिया।'' फिर उसे ताज पहना देता है।[1]

﴾32﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जिस ने किसी मोमिन को क़त्ल किया फिर उस के क़त्ल पर ख़ुश हुवा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के नफ़्ल क़बूल फ़रमाएगा न फ़र्ज़।''[2]

हज़रते सय्यिदुना अल्लामा ग़ुस्सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : ''किसी मोमिन को क़त्ल कर के उस पर ख़ुश होने का मा'ना येह है कि वोह उसे फ़ितना व फ़साद में ख़ुद को हक़ पर समझते हुए क़त्ल करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे मुआफ़ न फ़रमाएगा।''

﴾33﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : जहन्नम से एक गरदन निकलेगी और कहेगी : ''मुझे आज 3 (क़िस्म के) लोगों पर मुसल्लत किया गया है : (1)...... हर सरकश ज़ालिम पर (2)...... जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ दूसरा मा'बूद बनाया और (3)...... जिस ने किसी जान को नाहक़ क़त्ल किया।'' फिर वोह उन पर लिपट जाएगी और उन्हें जहन्नम के अंगारों पर फेंक देगी।[3]

﴾34﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जहन्नम से एक गरदन निकलेगी जो फ़सीहो बलीग़ ज़बान में कलाम करेगी, उस की दो आंखें होंगी जिन से वोह देखेगी और एक ज़बान होगी जिस से वोह कलाम करेगी वोह कहेगी : ''मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी को मा'बूद बनाने वाले, हर सरकश ज़ालिम और किसी जान को नाहक़ क़त्ल करने वाले के मु-तअल्लिक़ हुक्म दिया गया है।'' पस वोह उन (3 क़िस्म के लोगों) को दीगर तमाम लोगों से 500 साल पहले (जहन्नम में) ले जाएगी।[4]

﴾35﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान

---

1 ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان ، كتاب التاريخ ،باب بدء الخلق، الحديث : ٦١٥٦ ، ج٨،ص٢٤،بتغيرٍقليلٍ۔

2 ......سنن ابی داود، كتاب الفتن ،باب فی تعظيم قتل المؤمن ،الحديث :٤٢٧٠،ص١٥٣٤ ۔

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل،مسند ابی سعيد الخدری،الحديث :١١٣٥٤ ،ج٤،ص٨٠۔

الترغيب والترهيب، كتاب الحدود، باب الترهيب من قتل النفس......الخ ،الحديث : ٣٧٣٥،ج٣،ص٢٣٧۔

4 ......المعجم الاوسط،الحديث : ٣١٨،ج١،ص١٠٣ ۔

الترغيب والترهيب، كتاب الحدود،باب الترهيب من قتل النفس......الخ،الحديث : ٣٧٣٥،ج٣، ص٢٣٧۔



www.dawateislami.net

है : ''जिस ने किसी ऐसे शख़्स को क़त्ल किया जिस के साथ मुआ़-हदा था तो वोह न तो जन्नत की ख़ुश्बू पाएगा और न ही सूंघ सकेगा, ह़ालां कि उस की ख़ुश्बू 40 साल की मसाफ़त से आएगी।''(1)

﴾36﴿...... नसाई शरीफ़ में येह ह़दीसे पाक इन अल्फ़ाज़ में है : ''जिस ने अहले ज़िम्मा में से किसी को क़त्ल किया।''(2)

﴾37﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो किसी मुआ़हिद को ग़ैर वक़्त में [या'नी ऐसे वक़्त के इ़लावा जिस में उस का क़त्ल जाइज़ हो म-सलन मुआ़-हदा न रहा। अज़ मुसन्निफ़] क़त्ल करेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर जन्नत ह़राम फ़रमा देगा।''(3)

﴾38﴿...... नसाई शरीफ़ में मज़ीद येह अल्फ़ाज़ भी हैं : ''उस पर जन्नत की ख़ुश्बू ह़राम फ़रमा देगा।''(4)

﴾39﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने अहले ज़िम्मा में से किसी शख़्स को क़त्ल किया वोह जन्नत की ख़ुश्बू न पाएगा ह़ालां कि उस की ख़ुश्बू 70 साल की मसाफ़त से आएगी।''(5)

﴾40﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने किसी अ़ह्द वाले शख़्स को नाह़क़ क़त्ल किया वोह जन्नत की ख़ुश्बू न पाएगा ह़ालां कि उस की ख़ुश्बू 500 साल की मसाफ़त से आएगी।''(6)

**नोट :** 40, 70 और 500 साल की मसाफ़त की रिवायत में तत़्बीक़ येह है कि येह फ़र्क़ ख़ुश्बू सूंघने वाले मुख़्तलिफ़ लोगों और उन के मरातिब के ए'तिबार से होगी।

﴾41﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ख़बरदार ! जिस ने किसी ऐसे शख़्स को क़त्ल किया जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के ज़िम्मे में हो तो उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मे को तोड़ दिया और वोह

(1) ......صحیح البخاری، کتاب الجزیة و الموادعة، باب اثم من قتل معاهدًا بغیر جرم، الحدیث: ۳۱۶۶، ص۲۵۶۔

(2) ......سنن النسائی ، کتاب القسامة ، باب تعظیم قتل المجاهد ، الحدیث: ۴۷۵۴، ص۲۳۹۵۔

(3) ......سنن ابی داود ، کتاب الجهاد ، باب فی الوفاء للمعاهد و حرمة ذمته ، الحدیث : ۲۷۶۰، ص۱۴۲۹۔

(4) ......سنن النسائی ، کتاب القسامة ، باب تعظیم قتل المعاهد ، الحدیث: ۴۷۵۲، ص۲۳۹۵۔

(5) ......المرجع السابق، الحدیث : ۴۷۵۳۔

(6) ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب اخباره ﷺ، باب وصف الجنة واهلها، الحدیث : ۷۳۳۹، ۷۳۴۰، ج۹، ص ۲۳۹۔



www.dawateislami.net

जन्नत की ख़ुश्बू न पाएगा ह़ालां कि उस की ख़ुश्बू 40 साल की मसाफ़त से आएगी।''[1]

जब ज़िम्मी को क़त्ल करने का येह अ़ज़ाब है जो कि कुछ मुद्दत के लिये दारुल इस्लाम में पनाह गुज़ीं है तो मुसलमान को क़त्ल करने वाले के बारे में आप का क्या ख़याल है ?

**तम्बीह :**

वाज़ेह़ अह़ादीसे मुबा-रका की वज्ह से इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है, इसी वज्ह से क़त्ले अ़मद के कबीरा होने पर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللہُ السَّلَام का इज्माअ़ है, लेकिन इख़्तिलाफ़ इस में है कि शिर्क के बा'द सब से बड़ा गुनाह कौन सा है ? अलबत्ता ! नस्स से साबित सह़ीह़ क़ौल येह है कि शिर्क के बा'द सब से बड़ा गुनाह क़त्ल है और एक क़ौल के मुत़ाबिक़ ज़िना है।

मैं ने शि-बहे अ़मद को ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम हरवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शुरैह़ रौयानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی के सरीह़ अक़्वाल की बिना पर कबीरा गुनाह शुमार किया है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम हरवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''कबीरा गुनाह की ता'रीफ़ में चार चीज़ें दाख़िल हैं : (1) ह़द का सुबूत (2) क़त्ल का सुबूत (3) फ़े'ल पर क़ुदरत (4) शि-बहे अ़मद की वज्ह से सज़ा का साक़ित़ हो जाना।''

ह़ज़रते सय्यिदुना जलाल बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی मज़्कूरा क़ौल की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं : ''इमाम हरवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی का क़ौल ''क़त्ल का सुबूत'' से मुराद क़िसास में क़त्ल करना है और इस को ह़द नहीं कहा जाता अलबत्ता ! डाकू और राहज़न के क़त्ल को ह़द कहा जाता है और इस के भी ग़ालिब मा'ना में इख़्तिलाफ़ है कि क्या येह क़िसास के मा'ना में है या ह़द के मा'ना में ? और नज़रो फ़िक्र की क़ुव्वत के ए'तिबार से हुक्म मुख़्तलिफ़ होता है। उन का क़ौल ''फ़े'ल पर क़ुदरत'' इस त़रफ़ इशारा करता है कि शि-बहे अ़मद में फ़े'ल पर क़ुदरत की वज्ह से इसे कबीरा कहा जा सकता है, ब ख़िलाफ़ क़त्ले ख़त़ा के क्यूं कि वोह इख़्तियार से नहीं होता। इसी त़रह़ जिस सज़ा में शुबा की वज्ह से क़िसास साक़ित़ हो जाए वोह भी कबीरा होता है क्यूं कि क़िसास किसी मानेअ़ की वज्ह से साक़ित़ हो जाता है।

इस से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना हरवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने इर्शाद फ़रमाया था : ''किसी के आ़दिल होने के लिये शर्त़ है कि वोह ह़द को वाजिब करने वाले कबीरा गुनाहों का इरतिकाब न करे जैसे चोरी, ज़िना और राहज़नी या जो फ़े'ल पर क़ादिर होना साबित करे अगर्चे शुबे की

1 ......جامع الترمذی، ابواب الدیات،باب ماجاء فیمن ــ الخ، الحدیث : ۱۴۰۲،ص۱۷۹۳،"اربعین"بدلہ"سبعین"۔



www.dawateislami.net

वज्ह से या चीज़ के ग़ैर महफ़ूज़ होने की वज्ह से उस में ह़द वाजिब न हो और नाह़क़ क़त्ल जान बूझ कर हो या शि-बहे अ़मद से।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) ने अपने इस क़ौल से इसी त़रफ़ इशारा किया है कि "क़त्ल वग़ैरा की ह़द उसी की जिन्स से वाजिब होती है।"

## मक़्तूल का क्या क़ुसूर :

﴾42﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जब दो मुसल्मान अपनी तलवारों के साथ आमने सामने आएं तो क़ातिल और मक़्तूल दोनों जहन्नम में जाएंगे।" अ़र्ज़ की गई : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! एक तो क़ातिल है लेकिन मक़्तूल का क्या क़ुसूर है ?" इर्शाद फ़रमाया : "वोह भी अपने मद्दे मुक़ाबिल को क़त्ल करने पर ह़रीस होता है।"(1)

## ह़दीसे पाक की वज़ाह़त :

इस ह़दीसे पाक के बारे में ह़ज़रते सय्यिदुना ख़त्ताबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 388 हि.) फ़रमाते हैं : येह हुक्म इस सूरत में है जब वोह दोनों किसी शर-ई वज्ह से न लड़ रहे हों बल्कि ज़ाती दुश्मनी, तअ़स्सुब या दुन्यवी लालच वग़ैरा की वज्ह से एक दूसरे से बर-सरे पैकार हों। अलबत्ता ! जिस ने ऐसी सूरत में सरकशों को क़त्ल किया कि उस पर उन को क़त्ल करना वाजिब हो चुका था, पस उस ने किसी को क़त्ल कर दिया या अपने आप से और अपने घर से दूर भगा दिया तो वोह इस वईद में दाख़िल न होगा क्यूं कि वोह मद्दे मुक़ाबिल को क़त्ल नहीं करना चाहता था बल्कि इसे ख़ुद को बचाने के लिये क़िताल का हुक्म दिया गया। क्या आप नहीं देखते कि सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मक़्तूल के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाया : "वोह भी अपने मद्दे मुक़ाबिल को क़त्ल करने पर ह़रीस होता है।"

जिस ने किसी बाग़ी या मुसल्मानों को रास्ते में लूटने वाले किसी डाकू को क़त्ल किया तो वोह बेशक उसे क़त्ल करने का ह़रीस नहीं बल्कि वोह उसे अपने आप से दूर करना चाहता है, अगर उस का मद्दे मुक़ाबिल रुक गया तो वोह भी उस से रुक जाएगा और उस का पीछा नहीं करेगा, पस येह ह़दीसे पाक इस सिफ़त वाले लोगों के बारे में वारिद नहीं लिहाज़ा वोह इस में दाख़िल न होंगे। अलबत्ता ! जो इस सिफ़त पर न हों वोही इस से मुराद हैं।

---

(1) ......صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ......الخ، الحدیث: ۳۱، ص ۴۔



www.dawateislami.net

**कबीरा नम्बर 314 :** **ख़ुदकुशी करना**

## ख़ुदकुशी ह़राम है :

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِیْمًا ﴿۲۹﴾ وَمَنْ یَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِیْهِ نَارًا ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ یَسِیْرًا ﴿۳۰﴾ (پ۵، النساء:۲۹،۳۰)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और अपनी जानें क़त्ल न करो बेशक **अल्लाह** तुम पर मेह्रबान है और जो ज़ुल्मो ज़ियादती से ऐसा करेगा तो अ़न्क़रीब हम उसे आग में दाख़िल करेंगे और येह **अल्लाह** को आसान है।

## आयते मुबा-रका की वज़ाह़त

''وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ'' से क्या मुराद है। इस के मु-तअ़ल्लिक़ दो अक़्वाल मरवी हैं :

﴾1﴿...... तुम एक दूसरे को क़त्ल न करो। यहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ''اَنْفُسَكُمْ ؕ'' फ़रमाया इसी लिये शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मुअमिनीन एक जान की मिस्ल हैं।'' और दूसरी वज्ह येह है कि जब अहले अ़रब का कोई शख़्स क़त्ल किया जाता तो वोह कहते : ''قُتِلْنَا وَرَبِّ الْكَعْبَةِ'' या'नी रब्बे का'बा की क़सम ! हम सब मार डाले गए।'' क्यूं कि उन के नज़्दीक एक का क़त्ल सब के क़त्ल के बराबर था।[1]

﴾2﴿...... या आयते मुबा-रका में इन्सान को ह़क़ीक़तन ख़ुद को क़त्ल करने से मन्अ़ किया गया है और ज़ाहिर मा'ना भी येही है। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا और अक्सर मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से पहला मा'ना मन्क़ूल है, जब कि मैं ने बा'ज़ रिवायात में दूसरे मा'ना की तसरीह़ भी पाई है। चुनान्चे,

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को ग़ज़्वए ज़ातुस्सलासिल में एह़तिलाम हो गया, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को ग़ुस्ल की सूरत में सर्दी से हलाक होने का ख़ौफ़ लाह़िक़ हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने तयम्मुम कर लिया और सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن के साथ फ़ज्र की नमाज़ पढ़ ली, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस का ज़िक्र किया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''तुम ने अपने दोस्तों के साथ नमाज़ पढ़ ली ह़ालां कि तुम पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ था।'' तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपना उ़ज़्र बयान किया और फिर दलील पेश करते हुए अ़र्ज़ की : ''मैं ने येह आयते मुबा-रका सुन

---

1 ......التفسیر الکبیر، النساء،تحت الآیة:۲۹،ج۴،ص۵۸۔



www.dawateislami.net

रखी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ۝۲۹
(پ۵، النساء:۲۹)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और अपनी जानें क़त्ल न करो बेशक **अल्लाह** तुम पर मेह्रबान है।

तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कुरा दिये और कुछ न फ़रमाया।''(1)

येह रिवायत दलालत करती है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने इस आयते मुबा-रका में अपने आप को क़त्ल करना मुराद लिया न कि किसी दूसरे को क़त्ल करना और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस पर इन्कार न फ़रमाया।

एक क़ौल येह है कि ''मोमिन को ईमान के बा वुजूद अपने आप को क़त्ल करने से कैसे रोका जा सकता है जब कि वोह (दुन्या में) इन्तिहाई मज़म्मत और (आख़िरत में) शदीद अ़ज़ाब की वज्ह से ख़ुद को क़त्ल न करने पर मजबूर है।'' पस उस वक़्त उसे मन्अ़ करने का कोई फ़ाएदा नहीं, इस लिये कि येह मुमा-न-अ़त उस शख़्स के मु-तअ़ल्लिक़ है जो अपने आप को क़त्ल करने का ए'तिक़ाद रखता हो जैसा कि **अहले हिन्द** रखते हैं और मोमिन ऐसा अ़क़ीदा नहीं रख सकता।

इस का जवाब येह है कि मोमिन के ख़ुद को क़त्ल न करने पर मजबूर होने की मुमा-न-अ़त साबित है बल्कि मोमिन को ईमान, ख़ुदकुशी की क़बाह़त और इस के दर्द के ज़ियादा होने का इ़ल्म होने के बा वुजूद कभी कभार मोमिन ऐसे ग़म और अज़िय्यत में मुब्तला होता है कि उस ग़म व अज़िय्यत (को बरदाश्त करने) की ब निस्बत उस का ख़ुद को क़त्ल करना आसान मा'लूम होता है, येही वज्ह है कि आप देखते हैं कि बहुत से लोग अपने आप को क़त्ल कर देते हैं या इस से मुराद येह है कि ऐसे अफ़्आ़ल न करो जो क़त्ल का बाइ़स बनते हैं म-सलन शादी शुदा होने के बा वुजूद ज़िना करना और मुरतद होना।

''اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا'' फ़रमाने का मक़्सद येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस उम्मत पर रह़ीम है और इसी रह़मत की वज्ह से इन्हें हर उस काम से मन्अ़ फ़रमाया है जिस में मशक़्क़त व मुसीबत पेश आ सकती हो, नीज़ इन्हें उन मुश्किल कामों और बोझों का भी मुकल्लफ़ नहीं बनाया जिन का इन से पहली उम्मतों को मुकल्लफ़ बनाया गया था, लिहाज़ा इन्हें ना फ़रमानी की वज्ह से तौबा के त़ौर पर अपने आप को क़त्ल करने का हुक्म नहीं दिया जिस त़रह़ कि बनी इसराईल

(1) ......سنن ابی داود، كتاب الطهارة، باب اذا خاف الجنب البرد أيتيمم؟، الحديث: ۳۳۴، ص۱۲۴۸، مفهومًا۔



www.dawateislami.net

के साथ किया गया कि उन्हें बतौरे तौबा अपने आप को क़त्ल करने का हुक्म दिया गया।[1]

चुनान्चे, इर्शादे बारी तआला है :

فَتُوْبُوْۤا اِلٰى بَارِىٕكُمْ فَاقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِىٕكُمْؕ فَتَابَ عَلَيْكُمْؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ۝۵۴ (پ ۱، البقرة:۵۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो अपने पैदा करने वाले की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ तो आपस में एक दूसरे को क़त्ल करो येह तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़्दीक तुम्हारे लिये बेहतर है तो उस ने तुम्हारी तौबा क़बूल की बेशक वोही है बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेह्रबान।

**पस** उन्हों ने ऐसा ही किया यहां तक कि उन में से एक ही लम्हे में 70 हज़ार क़त्ल हो गए।[2]

आयते मुक़द्दसा के इस हिस्से ''وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ'' में अपने आप को क़त्ल करने की त़रफ़ इशारा है, लिहाज़ा येह शदीद वईद इसी पर मुरत्तब होगी और (ज़ुजाज) कहता है कि इस से मुराद बात़िल त़रीक़े से माल खाना भी है क्यूं कि एक ही आयते मुबा-रका में दोनों का ज़िक्र है। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : ''इस से मुराद सूरए मुबा-रका के शुरूअ़ से ले कर इस मक़ाम तक बयान कर्दा तमाम अह़काम हैं जिन की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुमा-न-अ़त फ़रमाई है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू जा'फ़र मुह़म्मद बिन जरीर त़-बरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ''इस से मुराद वोह तमाम अह़काम हैं जिन से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मन्अ़ फ़रमाया है सिर्फ़ वोही अह़काम मुराद नहीं जो इस सूरत की इब्तिदा से इस मक़ाम तक बयान हुए हैं क्यूं कि येह (या'नी وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ) एक ऐसा कलिमा है जिस के साथ वईद मिली हुई है, बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान : ''يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًاؕ (پ ۴، النساء:۱۹)'' **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! तुम्हें ह़लाल नहीं कि औ़रतों के वारिस बन जाओ ज़बर दस्ती।'' से ले कर यहां तक वईद है, क्यूं कि इस के बा'द इस के इलावा कोई वईद नहीं।''[3]

## उ़दवान और ज़ुल्म का मफ़्हूम :

वईद को उ़दवान और ज़ुल्म के साथ मुक़य्यद किया गया है ताकि इस से भूलचूक,

1 ......التفسیر الکبیر، النساء، تحت الآیة ۲۹، ج ۴، ص ۵۸، مفهوماً۔

2 ......تفسیر الطبری، البقرة، تحت الآیة ۵۴، الحدیث: ۹۴۰، ج ۱، ص ۳۲۶۔

3 ......اللباب فی علوم الکتاب، النساء، تحت الآیة ۳۰، ج ۶، ص ۳۴۰۔



www.dawateislami.net

ग़-लती और जहालत से किया हुवा फ़े'ल निकल जाए और इन दोनों अल्फ़ाज़ (या'नी उ़दवान और ज़ुल्म) को इस लिये ज़िक्र किया गया क्यूं कि अगर्चे येह दो मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ हैं मगर मा'ना के ए'तिबार से क़रीब क़रीब हैं जैसे ''بُعْدًا और سُحْقًا या'नी रह़मते इलाही से दूरी और फिटकार।'' और जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया :

اِنَّمَاۤ اَشْكُوْا بَثِّیْ وَ حُزْنِیْۤ اِلَى اللّٰهِ (پ۱۳،یوسف:۸۶) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** मैं तो अपनी परेशानी और ग़म की फ़रियाद **अल्लाह** ही से करता हूं।

जैसे किसी शाइ़र का क़ौल है :

وَاُلْفٰی قَوْلَـھَا كَذِبًا وَمَيْنًا **तरजमा :** उस ने मह़बूबा के क़ौल को बहुत झूटा पाया।

''**उ़दवान**'' का मा'ना है : ह़द से बढ़ जाना और ''**ज़ुल्म**'' से मुराद है : किसी चीज़ को ग़ैरे मह़ल में रखना।

''نُصْلِیْهِ نَارًا'' का मा'ना है कि हम उसे आग में दाख़िल करेंगे और उसे उस की गरमी चखाएंगे और ''یَسِیْرًا'' का मा'ना है : आसान।(1)

## अह़ादीसे मुबा-रका में ख़ुदकुशी की मज़म्मत :

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने अपने आप को किसी पहाड़ से गिराया और अपने आप को क़त्ल कर दिया वोह जहन्नम की आग में गिरता रहेगा और हमेशा उस में रहेगा और जिस ने घूंट घूंट ज़हर पी कर अपने आप को क़त्ल किया उस का ज़हर उस के हाथ में होगा और वोह उसे जहन्नम की आग में घूंट घूंट कर के पीता रहेगा और हमेशा उस में रहेगा और जिस ने अपने आप को किसी लोहे (के आले) से क़त्ल किया वोह लोहा उस के हाथ में होगा और वोह जहन्नम की आग में अपने आप को उस से मारता रहेगा और हमेशा उस में रहेगा।''(2)

﴾3﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने अपना गला घोंटा (या'नी दबाया) वोह जहन्नम में भी उसे घोंटता रहेगा और जिस ने ख़ुद को नेज़ा मारा वोह जहन्नम में भी अपने आप को नेज़ा मारता रहेगा और जिस ने

---

1 ......اللباب فی علوم الکتاب،النساء، تحت الآیۃ ۳۰،ج۶،ص ۳۴۰۔

2 ......صحیح البخاری،کتاب الطب،باب شرب السم والدواء بہ......الخ،الحدیث: ۵۷۷۸،ص ۴۹۳۔



www.dawateislami.net

अपने आप को (किसी बुलन्द जगह से) गिराया वोह जहन्नम में भी ख़ुद को गिराता रहेगा।"(1)

﴾4﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 110 हि.) फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना जुन्दब बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इस मस्जिद में हमें अह़ादीसे मुबा-रका बयान किया करते थे, हम उन में से एक ह़दीसे पाक भी नहीं भूले और न ही हमें येह ख़ौफ़ है कि उन्हों ने सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर झूट बोला, आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त बयान है : एक शख़्स को ज़ख़्म था उस ने अपने आप को क़त्ल कर दिया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरे बन्दे ने अपनी जान के मुआ़-मले में जल्द बाज़ी की लिहाज़ा मैं ने इस पर जन्नत ह़राम कर दी।"(2)

﴾5﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम से पहले एक शख़्स को ज़ख़्म था उसे दर्द हुवा तो उस ने एक छुरी ली और उस से अपना हाथ काट दिया, ख़ून न रुका यहां तक कि वोह मर गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरे बन्दे ने अपनी जान के मुआ़-मले में जल्द बाज़ी की।"(3)

﴾6﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : तुम से पहली उम्मतों में से एक शख़्स के चेहरे पर एक फुन्सी निकली। जब उसे तक्लीफ़ हुई तो उस ने अपने तरकश से एक तीर निकाल कर ठीक होने से पहले उसे छील दिया, ख़ून न रुका यहां तक कि वोह मर गया तो तुम्हारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने इस पर जन्नत ह़राम कर दी।"(4)

﴾7﴿...... मरवी है कि "एक शख़्स को ज़ख़्म था, उस का तरकश लाया गया तो उस ने लम्बे चौड़े फल वाला नेज़ा लिया और अपने आप को ज़ब्ह़ कर दिया तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस की नमाज़े जनाज़ा न पढ़ी।"(5)

﴾8﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान

---

(1)......صحیح البخاری، کتاب الجنائز،باب ماجاء فی قاتل النفس، الحدیث ۱۳۶۵، ص۱۰۶۔
شعب الایمان للبیهقی،باب فی تحریم النفوس و الجنایات علیها،الحدیث: ۵۳۶۲،ج۴،ص۳۵۰۔

(2)......صحیح البخاری، کتاب الجنائز،باب ماجاء فی قاتل النفس،الحدیث: ۱۳۶۴،ص۱۰۶۔

(3)......صحیح البخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ما ذکرعن بنی اسرائیل، الحدیث: ۳۴۶۳،ص۲۸۲۔

(4)......صحیح مسلم، کتاب الایمان،باب بیان غلظ تحریم قتل الانسان نفسه......الخ،الحدیث: ۳۰۷،ص۶۹۷۔

(5)......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الجنائز ،فصل فی الصلاة علی الجنازه ،الحدیث:۳۰۸۴،ج۵،ص۳۸۔



www.dawateislami.net

है : ''जिस ने जान बूझ कर इस्लाम के इ़लावा किसी मिल्लत की झूटी क़सम खाई तो वोह ऐसा ही है जैसा उस ने कहा। जिस ने अपने आप को किसी चीज़ से क़त्ल किया उसे क़ियामत के दिन उसी चीज़ के साथ अ़ज़ाब दिया जाएगा। इन्सान पर वोह नज़्र पूरी करना लाज़िम नहीं जिस का वोह मालिक नहीं। और मोमिन को ला'न ता़'न करना उसे क़त्ल करने की त़रह़ है। जिस ने किसी मोमिन को काफ़िर कहा तो येह उसे क़त्ल करने की त़रह़ है। जिस ने (अपने आप को) किसी चीज़ से ज़ब्ह़ किया उसे क़ियामत के दिन उसी चीज़ के साथ अ़ज़ाब दिया जाएगा।''(1)

﴾9﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''इन्सान पर वोह नज़्र पूरी करना लाज़िम नहीं जिस का वोह मालिक नहीं। मोमिन को ला'न ता़'न करने वाला उसे क़त्ल करने वाले की त़रह़ है। जिस ने किसी मोमिन पर कुफ़्र की तोहमत लगाई वोह उसे क़त्ल करने वाले की त़रह़ है। जिस ने अपने आप को किसी चीज़ से क़त्ल किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उसे उस चीज़ के साथ अ़ज़ाब देगा जिस के साथ उस ने ख़ुद को क़त्ल किया।''(2)

## सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इ़ल्मे ग़ैब :

﴾10﴿...... मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और मुश्रिकीन का आमना सामना हुवा और जंग शुरूअ़ हो गई। जब हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने लश्कर की त़रफ़ और कुफ़्फ़ार अपने लश्कर की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए तो सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में एक शख़्स ऐसा था जिस ने जथ्थे से छूटने वाले या जुदा होने वाले किसी फ़र्द को न छोड़ा या'नी मुश्रिकीन की जमाअ़त से जुदा होने वाले हर फ़र्द का पीछा किया और उसे अपनी तलवार से मार डाला। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आज हम में से किसी को भी ऐसा सवाब न मिलेगा जैसा फ़ुलां को मिलेगा।'' आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''वोह जहन्नमियों में से है।''(3)

﴾10﴿...... एक रिवायत में है, इस पर लोग कहने लगे : ''अगर येह भी जहन्नमी है तो जन्नती कहां हैं ?'' लेकिन उन में से एक शख़्स ने कहा : ''मैं हर लम्ह़ा उस के साथ रहूंगा।'' रावी

1 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان غلظ تحریم قتل الانسان......الخ، الحدیث: ۳۰۲، ۳۰۳، ۳۰۴، ص۶۹۶۔
صحیح البخاری، کتاب الادب، باب مَنْ اَکْفَرَ اَخَاهُ......الخ، الحدیث: ۶۱۰۵، ص۵۱۵۔

2 ......جامع الترمذی، ابواب الایمان، باب ماجاء فیمن رمی اخاه بکفر، الحدیث: ۲۶۳۶، ص۱۹۱۷۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب الجهاد، باب لایقال: فلان شهید، الحدیث: ۲۸۹۸، ص۲۳۳۔



www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं : "वोह उस के साथ निकल पड़ा, जब भी वोह ठहरता येह भी उस के साथ ठहर जाता और जब वोह तेज़ चलता येह भी तेज़ चलने लग जाता, उस शख़्स का कहना है कि "उस शख़्स को शदीद ज़ख़्म लग गया तो उस ने मौत में जल्द बाज़ी की और अपनी तलवार ज़मीन पर रख कर उस की नोक सीने के दरमियान रखी फिर अपनी तलवार पर बोझ डाला और ख़ुद को क़त्ल कर दिया।" वोह शख़्स मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "मैं गवाही देता हूं कि आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हैं।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या हुवा ?" उस ने अ़र्ज़ की : "एक शख़्स के मु-तअ़ल्लिक़ अभी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जहन्नमी होने की पेशीन गोई फ़रमाई तो लोगों ने उसे बहुत बड़ा समझा तो मैं ने कहा : "मैं तुम्हें उस की ख़बर दूंगा।" लिहाज़ा मैं ह़क़ीक़ते ह़ाल जानने के लिये निकल पड़ा मैं ने देखा कि उसे शदीद ज़ख़्म लगा था जिस की वज्ह से उस ने मौत में जल्दी की और अपनी तलवार ज़मीन पर रख कर उस की नोक अपने सीने के दरमियान रखी फिर अपनी तलवार पर बोझ डाला और ख़ुद को क़त्ल कर दिया।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बन्दा लोगों के सामने जन्नतियों जैसे आ'माल करता रहता है ह़ालां कि वोह जहन्नमी होता है और एक शख़्स ज़ाहिरन जहन्नमियों जैसे आ'माल करता रहता है ह़ालां कि वोह जन्नती होता है।"(1)

## तम्बीह :

इस बाब में मज़्कूर आयते मुबा-रका और अह़ादीसे मुबा-रका की रू से ख़ुदकुशी को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और येह वाज़ेह़ है अगर्चे मैं ने किसी को इस का ज़िक्र करते हुए नहीं देखा। और ज़ाहिर येह है कि इस में ख़ुद अपना ख़ून बहाने वाला भी दाख़िल है जैसे शादी शुदा ज़ानी और डाकू जिस को क़त्ल करना ज़रूरी हो। क्यूं कि अगर्चे इन्सान अपना ख़ून बहा सकता है लेकिन फिर भी इसे अपना ख़ून बहाना जाइज़ नहीं बल्कि अगर इस ने ख़ून बहा दिया तो येह इस के लिये कफ़्फ़ारा न होगा, क्यूं कि कफ़्फ़ारे का हुक्म उस पर होता है जिसे उस के किसी जुर्म की सज़ा दी गई हो मगर जिस ने अपने आप को ख़ुद सज़ा दी वोह उस के मा'ना में नहीं जिसे सज़ा दे दी गई।

❁❁❁❁❁❁❁

(1)......صحيح البخارى، كتاب المغازى، باب غزوة خيبر، الحديث: ٤٢٠٣، ٤٢٠٧، ص٣٤٥-



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 315 : क़त्ले ह़राम या उस के मुक़द्दमात पर मदद करना
## कबीरा नम्बर 316 : मौजूद होते हुए बा वुजूदे क़ुदरत क़त्ल से न रोकना

### रह़मते इलाही से मायूस :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने किसी मोमिन को क़त्ल करने पर मदद की अगर्चे आधी बात से, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि उस की दोनों आंखों के दरमियान लिखा होगा : ''اٰیِسٌ مِّنْ رَّحْمَۃِ اللہ'' या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस ।''[1]

### क़त्ले नाह़क़ की नुहूसत :

﴾2﴿...... हुज़ूर रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तुम में से कोई ऐसी जगह हरगिज़ खड़ा न हो जहां किसी शख़्स को ज़ुल्मन क़त्ल किया जा रहा हो क्यूं कि वहां मौजूद लोगों पर भी ला'नत उतरती है जब कि वोह मक़्तूल का दिफ़ाअ़ न करें ।''[2]

﴾3﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने किसी मुसल्मान की पीठ पर नाह़क़ ज़ख़्म लगाया वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि वोह उस पर नाराज़ होगा ।''[3]

﴾4﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मोमिन की पीठ मह़फ़ूज़ है सिवाए ह़क़ के (या'नी उसे जुर्म पर सज़ा मिल सकती है) ।''[4]

﴾5﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तुम में से कोई क़त्ल होने वाले के पास मौजूद न रहे, शायद ! वोह मज़्लूम हो और इस पर भी ग़ज़ब नाज़िल हो जाए ।''[5]

﴾6﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

---

1 ......سنن ابن ماجه،ابواب الديات ،باب التغليظ فی قتل المسلم ظلماً،الحديث : ۲۶۲۰،ص۲۶۳۴۔

2 ......المعجم الكبير،الحديث : ۱۱۶۷۵،ج۱۱،ص۲۰۸۔

3 ......المعجم الكبير،الحديث: ۷۵۳۶،ج۸،ص۱۱۶۔ 4 ......المعجم الكبير،الحديث :۴۷۶،ج۱۷،ص۱۸۰۔

5 ......المسند للامام احمد بن حنبل،حديث خرشه بن الحارث ،الحديث :۱۷۵۳۰،ج۶،ص۱۶۷ بتغيرٍ۔



www.dawateislami.net

''तुम में से कोई क़त्ल होने वाले के पास हाज़िर न हो क़रीब है कि वोह मज़्लूम हो और उन (क़त्ल करने वालों) पर ग़ज़ब नाज़िल हो और येह भी उस की ज़द में आ जाए।''[1]

## तम्बीह :

पहले गुनाह का कबीरा होना पहली ह़दीसे पाक से वाज़ेह़ है जब कि दूसरे का कबीरा होना दूसरी और तीसरी ह़दीसे पाक से वाज़ेह़ है, बहर ह़ाल मेरी नज़र से किसी का क़ौल नहीं गुज़रा जिस ने इसे कबीरा शुमार किया हो। फिर मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़लीमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الغَنِی का कलाम देखा जो इस के मुख़ालिफ़ है, वोह फ़रमाते हैं : ''जब उस ने मत़्लूबा शख़्स पर रहनुमाई कर दी ताकि उसे ज़ुल्मन क़त्ल किया जाए या क़त्ल का इरादा करने वाले को छुरी ला कर दी तो येह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान की वज्ह से ह़राम है : ''وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪ (پ٦، المائدة:٢) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो।'' लेकिन येह सग़ीरा गुनाह है, क्यूं कि इस से फ़ी नफ़्सिही मन्अ़ नहीं किया गया बल्कि मन्अ़ करने की वज्ह ज़ुल्म पर क़ुदरत देने का ज़रीआ़ है, पस अक्सर क़ातिल की मदद करने में इरादे में मददगार भी शरीक हो जाता है और इरादा जब फ़े'ल से ख़ाली हो तो वोह कबीरा गुनाह नहीं होता। इसी त़रह़ किसी का दूसरे ऐसे शख़्स को किसी के क़त्ल करने का कहना जिस पर उस की इत़ाअ़त लाज़िम न हो तो येह कबीरा गुनाह नहीं क्यूं कि इस में सिर्फ़ उस के हलाक होने का इरादा शामिल है जब कि उस के साथ फ़े'ले क़त्ल मौजूद नहीं।''

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़लीमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الغَنِی के इस सारे कलाम का दारो मदार ह़दीस के मु-तअ़ल्लिक़ उन की ग़ैर मा'रूफ़ इस्तिलाह़ पर है जब कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के कलाम और अह़ादीसे मुबा-रका के मुत़ाबिक़ मेरा ज़िक्र कर्दा कलाम है, अगर्चे हम तस्लीम कर लें कि इस बाब की पहली ह़दीस ज़ईफ़ है कि ''जिस ने किसी मुसल्मान के क़त्ल पर मदद की......اِلخ'' फिर मैं ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शिहाबुद्दीन अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़लीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الوَلِی पर ए'तिराज़ करते हुए फ़रमाया : ''उन्हों ने जो ज़िक्र किया कि क़त्ल पर रहनुमाई सग़ीरा गुनाहों में से है इस की ताईद मुश्किल है और हमारे शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام इस से मुवा-फ़क़त जाइज़ नहीं समझते बल्कि उन्हों ने तो बादशाह से किसी की शिकायत करना भी कबीरा गुनाहों में शुमार किया है और ज़ुल्म से किसी बे क़ुसूर शख़्स के क़त्ल पर रहनुमाई करना तो इस से भी क़बीह़

[1]......المعجم الكبير، الحديث: ٤١٨١، ج٤، ص٢١٩، بتغيرٍ قليلٍ ـ



www.dawateislami.net

है। चुनान्चे, **मश्हूर** ह़दीसे पाक में है (जो इस बाब की इब्तिदा में मज़्कूर है कि) : जिस ने किसी मोमिन को क़त्ल करने पर मदद की अगर्चे आधी बात से तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि उस की दोनों आंखों के दरमियान लिखा होगा : ''اٰيِسٌ مِّنْ رَّحْمَةِ اللّٰه'' या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस।''(1)

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़लीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى का येह क़ौल मह़ल्ले नज़र है कि ''ऐसे शख़्स से क़त्ल का मुत़ा-लबा करना जिस पर उस की इत़ाअ़त लाज़िम नहीं, येह कबीरा गुनाह नहीं'' ख़ुसूसन जब कि येह मा'लूम हो या गुमान हो कि वोह इत़ाअ़त करेगा और इस का हुक्म मानने में जल्दी करेगा।

और येही बात ज़ाहिर है। पस सह़ीह़ वोही है जो मैं ने ज़िक्र किया (या'नी क़त्ल पर मदद करना कबीरा गुनाह है न कि सग़ीरा)।

## कबीरा नम्बर 317 : बिला वज्हे शर-ई़ किसी मुसल्मान या ज़िम्मी को मारना

### किसी को नाह़क़ तक्लीफ़ देने की सज़ा :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने किसी की पीठ पर नाह़क़ ज़ख़्म लगाया वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि वोह उस पर नाराज़ होगा।''(2)

﴾2﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मोमिन की पीठ मह़फ़ूज़ है सिवाए ह़क़ के (या'नी उसे जुर्म पर सज़ा मिल सकती है)।''(3)

### जैसी करनी वैसी भरनी :

﴾3﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो दुन्या में लोगों को (बिला वज्ह) अज़िय्यत देते हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (बरोज़े क़ियामत) उन्हें अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमाएगा।''(4)

---

(1)......مسند ابی یعلی الموصلی،مسند ابی ہریرة، الحدیث :۵۸۷۴،ج۵، ص۲۴۶،"عینیه"بدله"جبهته"۔

(2)......المعجم الکبیر،الحدیث : ۷۵۳۶،ج۸،ص۱۱۶،"جرح":بدله"جرد"۔

(3)......المعجم الکبیر،الحدیث : ۴۷۶،ج۱۷،ص۱۸۰۔

(4)......صحیح مسلم،کتاب البر والصلة،باب الوعید الشدید لمن عذب الناس بغیرحق،الحدیث : ۲۶۱۳،ص۱۱۳۴۔



www.dawateislami.net

﴾4﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तुम में से कोई ऐसी जगह हरगिज़ खड़ा न हो जहां किसी शख़्स को ज़ुल्म से क़त्ल किया जा रहा हो क्यूं कि ला'नत उन पर भी होती है जो वहां मौजूद हों जब कि वोह उस का दिफ़ाअ़ न करें।"(1)

## तम्बीह :

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है, शैख़ैन (या'नी इमाम राफ़ेई व इमाम न-ववी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا) वग़ैरा का भी येही मौक़िफ़ है और येह इस के मु-तअ़ल्लिक़ वारिद शदीद वई़द से वाज़ेह़ है लेकिन शैख़ैन ने इसे मुसल्मान के साथ मुक़य्यद किया है जब कि मु-तअख़्ख़िरीन के एक गुरौह ने इस पर ए'तिराज़ करते हुए कहा है कि "मुसल्मान और ज़िम्मी के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) अपनी किताब "**अत्तवस्सुत़**" में फ़रमाते हैं : "इस गुनाह को मुसल्मान के साथ मुक़य्यद करने में ए'तिराज़ है, ख़ुसूसन जब कि मज़्रूब (या'नी जिस को मारा जाए) रिश्तेदार हो और इस में कोई ख़फ़ा नहीं कि कलाम उस के बारे में है जिस की ह़िफ़ाज़त की ज़िम्मादारी उठाई गई हो।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़लीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى मुत़्लक़न फ़रमाते हैं : "नोचना, एक या दो ज़र्बें लगाना सग़ीरा गुनाहों में से है, नीज़ कभी कभी दो मार खाने वालों के दरमियान क़ुव्वत व कमज़ोरी और शरफ़ व कमीनगी के ए'तिबार से फ़र्क़ किया जाता है।"

"**अल ख़ादिम**" में ह़ज़रते सय्यिदुना ह़लीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى का कलाम ज़िक्र करने के बा'द फ़रमाया : "येह हो सकता है कि इसे "**अल उ़द्दह**" के कलाम पर मह़मूल किया जाए या'नी मुत़्लक़ मारना कबीरा गुनाह है और शैख़ैन ने इस पर ज़ियादती साबित की है, फिर मुसल्मान के साथ इस मारने को मुक़य्यद करने का कोई मफ़्हूम नहीं क्यूं कि ज़िम्मी भी इसी त़रह़ है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़लीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى का मज़्कूरा क़ौल "**अल मिन्हाज**" की इब्तिदा में मज़्कूर है और इसी किताब के आख़िर में पहले से भी ज़ियादा मुश्किल अन्दाज़ में ज़िक्र किया या'नी "अगर क़त्ल को छोड़ कर इस से कम तक्लीफ़ वाली कोई ऐसी ज़र्ब लगाई जो उसे लाग़र व कमज़ोर करने वाली न हो या कोई ऐसा ज़ख़्म लगाया जिस से उस का कोई उ़ज़्व न टूटा और न ही उस के बदन की मन्फ़अ़त में से कोई चीज़ नाकारा हुई तो येह कबीरा गुनाह नहीं लेकिन अगर उस ने येही सब कुछ अपने मां, बाप या किसी रिश्तेदार से किया या

(1)......المعجم الكبير،الحديث:١١٦٧٥،ج١١،ص٢٠٨۔



www.dawateislami.net

येह फ़े'ल ह़-रमे पाक में या उन महीनों में किया जिन में ऐसा करना मन्अ़ है या किसी मुसल्मान को कमज़ोर समझते या उस पर बर-तरी चाहते हुए ऐसा किया तो येह भी कबीरा गुनाह है।''

इस कलाम का दारो मदार भी उसी पर है जिस पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़लीमी عَلَيْهِ رَحمَةُاللهِ الغَنِى के पिछले बाब में मज़्कूर कलाम का दारो मदार था और उन्हों ने फ़ाह़िशा, कबीरा और सग़ीरा के दरमियान फ़र्क़ को इख़्तियार किया, या'नी कोई गुनाह ऐसा नहीं जिस में सग़ीरा और कबीरा न हो और कभी सग़ीरा किसी क़रीने के मिलने से कबीरा बन जाता है और कभी कबीरा किसी क़रीने की वज्ह से फ़ाह़िशा बन जाता है सिवाए कुफ़्र के क्यूं कि येह तमाम कबीरा गुनाहों से फ़ोह़्श तरीन है और इस की क़िस्म में से कोई भी सग़ीरा नहीं, फिर इस की मिसालें ज़िक्र कीं जिन में से क़त्ल कबीरा गुनाह है और अगर रिश्तेदार को क़त्ल किया तो येह फ़ाह़िशा बन जाएगा और क़त्ल से कम तक्लीफ़ वाली चोटें गुज़श्ता क़ैद के साथ सग़ीरा हैं, ह़ालां कि येह इस्तिलाह़े सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن, शैख़ैन (या'नी इमाम राफ़ेई व इमाम न-ववी) और अइम्मए मु-तअख़्ख़िरीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के मौक़िफ़ के ख़िलाफ़ है क्यूं कि बे क़ुसूर को मारना और उसे ईज़ा देना कबीरा गुनाह है।

फिर मैं ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُاللهِ القَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) का कलाम मेरे मौक़िफ़ की ताईद करता है। चुनान्चे, वोह ह़ज़रते सय्यिदुना ह़लीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى पर ए'तिराज़ करते हुए फ़रमाते हैं : ''जब नोचने और मारने की तक्लीफ़ बहुत ज़ियादा हो या बाप या वली के साथ इन दोनों में से कोई एक फ़े'ल किया जाए तो उन्हें कबीरा से मिलाना चाहिये।''

۞۞۞۞۞۞۞

## ......6 अफ़्राद पर ला'नत......

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा :** 6 त़रह़ के लोगों पर मैं ला'नत करता हूं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उन पर ला'नत फ़रमाता है और हर नबी की दुआ़ क़बूल है। ''6 अश्ख़ास येह हैं (1) **किताबुल्लाह** में इज़ाफ़ा करने वाला (2) तक्दीर को झुटलाने वाला (3) मेरी उम्मत पर ज़ुल्म के साथ तसल्लुत़ करने वाला कि उस शख़्स को इ़ज़्ज़त देता है जिस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़लील किया और उस को ज़लील करता है जिस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाई (4) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़रम (या'नी ह़-रमे मक्का) को ह़लाल ठहराने वाला (5) मेरे अहले बैत की हुरमत जिस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दिया है उस को पामाल करने वाला और (6) मेरी सुन्नत को छोड़ने वाला।'' (صحیح ابن حبان،الحدیث:۵۷۱۹،ج۷،ص۵۰۱)



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 318 : मुसल्मान को डराना

## कबीरा नम्बर 319 : इस की त़रफ़ अस्लह़ा वग़ैरा के साथ इशारा करना

### किसी को डराना ज़ुल्मे अ़ज़ीम है :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक शख़्स ने मज़ाक़ में दूसरे का जूता ले कर ग़ाइब कर दिया उस ने हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस बात का ज़िक्र किया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मुसल्मान को न डराओ क्यूं कि मुसल्मान को डराना बहुत बड़ा ज़ुल्म है।''(1)

﴾2﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने किसी मोमिन को डराया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ है कि उसे क़ियामत के दिन की घबराहटों और परेशानियों से अम्न न दे।''(2)

﴾3﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने किसी मुसल्मान को नाह़क़ डराने वाली नज़रों से देखा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन ख़ौफ़ज़दा करेगा।''(3)

﴾4﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''किसी मुसल्मान के लिये जाइज़ नहीं कि वोह किसी मुसल्मान को डराए।''(4)

हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह बात उस वक़्त इर्शाद फ़रमाई जब सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में से एक शख़्स ने सोए हुए शख़्स को डराया और रस्सी उठा कर उस के पास खड़ा हो गया। जब वोह बेदार हुवा तो ख़ौफ़ज़दा हो गया।

﴾5﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम में से कोई मज़ाक़न या ह़क़ीक़तन अपने भाई का सामान न उठाए।''(5)

﴾6﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान

---

(1)......الترغیب والترهیب، کتاب الادب، باب الترهیب من ترویع المسلم......الخ، الحدیث: ۴۳۰۱، ج۳، ص۳۸۶۔

(2)......المعجم الاوسط، الحدیث: ۲۳۵۰، ج۲، ص۲۰۔ (3)......المعجم الکبیر، الحدیث: ۷۰، ج۱۳، ۱۴، ص۲۲۔

(4)......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب من یاخذ الشیٔ من مزاح، الحدیث: ۵۰۰۴، ص۱۵۸۹۔

(5)......المرجع السابق، الحدیث: ۵۰۰۳۔



www.dawateislami.net

है : "जिस ने अपने भाई की त़रफ़ किसी लोहे की चीज़ से इशारा किया तो फ़रिश्ते उस पर ला'नत भेजते रहते हैं यहां तक कि वोह उस से रुक जाए अगर्चे वोह उस का मां या बाप की त़रफ़ से भाई हो।"(1)

## क़ातिल व मक़्तूल दोनों जहन्नम में :

﴾7﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब दो मुसल्मान अपनी तलवारों के साथ एक दूसरे के मुक़ाबिल आएं तो क़ातिल और मक़्तूल दोनों जहन्नम में जाएंगे।"(2)

﴾8﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब दो मुसल्मानों में से एक अपने (मद्दे मुक़ाबिल) भाई पर अस्लह़ा उठाता है तो वोह दोनों जहन्नम के कनारे पर होते हैं और जब उन में से एक दूसरे को क़त्ल करता है तो दोनों जहन्नम में दाख़िल हो जाते हैं।" रावी फ़रमाते हैं : "हम ने अ़र्ज़ की या अ़र्ज़ की गई : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! एक तो क़ातिल है लेकिन मक़्तूल का क्या क़ुसूर है ?" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उस ने भी अपने मद्दे मुक़ाबिल को क़त्ल करने का इरादा कर रखा था।"(3)

﴾9﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम में से कोई अपने भाई की त़रफ़ अस्लह़े के साथ इशारा न करे क्यूं कि वोह नहीं जानता कि शायद शैत़ान उस के हाथ में खींच ले (या'नी हो सकता है कि उस का इरादा मारने का न हो मगर इत्तिफ़ाक़न लग जाए और सामने वाला मर जाए ऐसे वाक़िआ़त बहुत देखे गए हैं) और वोह जहन्नम के गढ़े में चला जाए।"(4)

## तम्बीह :

इन दोनों गुनाहों में से पहले का कबीरा होना उन अह़ादीसे मुबा-रका से सरा-ह़तन साबित है जिन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी का ज़िक्र हुवा जब कि दूसरे गुनाह का कबीरा होना उन अह़ादीसे मुबा-रका से साबित है जिन में ला'नत का ज़िक्र हुवा।

---

(1)......صحیح مسلم ،کتاب البر والصلة ،باب النھی عن الاشارة......الخ،الحدیث :٢٦٦٦،ص١١٣٤،"ینتھی"بدله"یدعه"۔

(2)......صحیح مسلم ،کتاب الفتن ، باب اذا تواجه المسلمان بسیفیھما ،الحدیث :٧٢٥٢،ص١١٧٨۔

(3)......المرجع السابق،الحدیث :٧٢٥٥،٧٢٥٢۔

(4)......صحیح مسلم،کتاب البر والصلة،باب النھی عن الاشارة بالسلاح الی مسلم،الحدیث :٦٦٦٨،ص١١٣٥۔



www.dawateislami.net

मुसल्मान को डराना इस सूरत में ह़राम है जब येह मा'लूम हो कि डराने से ऐसा ख़ौफ़ पैदा होगा जिसे आ़दतन बरदाश्त करना मुश्किल है और कबीरा गुनाह इस सूरत में कहलाएगा जब येह मा'लूम हो कि येह ख़ौफ़ उस के बदन या अ़क़्ल में नुक़्सान का बाइ़स बनेगा और दूसरे गुनाह को भी इन्हीं सूरतों पर मह़मूल किया जाएगा।

**कबीरा नम्बर 320 : ऐसा जादू करना जिस में कुफ़्र न हो**

**कबीरा नम्बर 321 : जादू सीखना**

**कबीरा नम्बर 322 : जादू सिखाना**

**कबीरा नम्बर 323 : जादू पर अ़मल करना**

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ۗ وَمَاۤ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ؕ وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَاۤ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ؕ فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ؕ وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ؕ وَلَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۚ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖۤ اَنْفُسَهُمْ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۲﴾ (پ ۱، البقرة: ۱۰۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और उस के पैरव हुए जो शैत़ान पढ़ा करते थे सल्त़नते सुलैमान के ज़माने में और सुलैमान ने कुफ़्र न किया हां शैत़ान काफ़िर हुए लोगों को जादू सिखाते हैं और वोह (जादू) जो बाबिल में दो फ़रिश्तों हारूत व मारूत पर उतरा और वोह दोनों किसी को कुछ न सिखाते जब तक येह न कह लेते कि हम तो निरी आज़्माइश हैं तो अपना ईमान न खो तो उन से सीखते वोह जिस से जुदाई डालें मर्द और उस की औ़रत में और उस से ज़रर नहीं पहुंचा सकते किसी को मगर ख़ुदा के हुक्म से और वोह सीखते हैं जो उन्हें नुक़्सान देगा नफ़्अ़ न देगा और बेशक ज़रूर उन्हें मा'लूम है कि जिस ने येह सौदा लिया आख़िरत में उस का कुछ ह़िस्सा नहीं और बेशक क्या बुरी चीज़ है वोह जिस के बदले उन्हों ने अपनी जानें बेचीं किसी त़रह़ उन्हें इ़ल्म होता।



www.dawateislami.net

इस आयते मुबा–रका में ऐसे दलाइल मौजूद हैं जो जादू के इन्तिहाई बुरा होने को ज़ाहिर करते हैं और जादू या तो कुफ़्र है या फिर कबीरा गुनाह जैसा कि अहादीसे मुबा–रका में आएगा और मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने भी इस आयते मुबा–रका पर वसीअ़ कलाम फ़रमाया है और मैं ने इस का ख़ुलासा बयान करने का इरादा किया है क्यूं कि इस के फ़वाइद बहुत ज़ियादा हैं।

## आयते मुबा–रका की वज़ाहत

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान ''وَاتَّبَعُوْا'' का सूरए ब–क़रह की गुज़श्ता आयते मुबा–रका ''وَلَمَّاجَآءَهُمْ......الاية'' पर अ़त्फ़ है, इस के ख़िलाफ़ गुमान करना ग़लत़ है। और ''مَـا'' मौसूला है, इसे नाफ़िया समझना ग़लत़ है। और ''تَتْلُوا'' (फ़े'ले मुज़ारेअ़) تَـلَـتْ (फ़े'ले माज़ी) के मा'ना में है और ''عَـلٰـى'' فِـىْ के मा'ना में है या'नी उन्हों ने (जादू के कुफ़्रिय्या कलिमात) ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सल्त़नत के ज़माने में या'नी आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शरीअ़त में पढ़े। या फिर ''تَتْلُوا'' का मा'ना ''تَتَقَوَّلُ'' है या'नी वोह झूट घड़ते और आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शरीअ़त को झुटलाते और येही ज़ियादा बेहतर है क्यूं कि हुरूफ़ में तब्दीली करना अफ़्आ़ल में तब्दीली करने से बेहतर है और ''تَلَا'' जब ''عَـلٰـى'' के साथ मु–तअ़द्दी हो तो उस का मजरूर ''مَتْلُوًّا عَلَيْه'' होता है। (या'नी जिस के सामने पढ़ा जाए) जब कि ''مُلْك'' का मुआ़–मला ऐसा नहीं।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''تَلَاعَلَيْه उस वक़्त कहा जाता है जब कोई झूट बोले और जब कोई सच बोले तो تَلَاعَـنْـهُ बोला जाता है और अगर सिर्फ़ تَلَا कहा जाए तो दोनों मा'ना मुराद लिये जा सकते हैं।'' ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى मज़्कूरा क़ौल नक़्ल करने के बा'द फ़रमाते हैं : ''येह सूरत मम्किन है कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से सुन कर ख़बरें देते हों। पस इस सूरत में तमाम औसाफ़ जम्अ़ हो जाएंगे।''(1)

**सुवाल :** इस आयते मुबा–रका में मज़्कूर ''وَاتَّبَعُوْا'' (या'नी जादू सिखाने वाले शयात़ीन की पैरवी करने वालों) से कौन लोग मुराद हैं ?

**जवाब :** एक क़ौल येह है कि इस से मुराद यहूदी हैं, एक क़ौल के मुत़ाबिक़ इस से मुराद हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने के यहूदी हैं। एक

---

(1)......التفسیر الکبیر، البقرة، تحت الآیة ۱۰۲، ج۱، ص۶۱۷۔



www.dawateislami.net

क़ौल के मुताबिक़ इस से मुराद ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ज़माने के जादूगर हैं । अक्सर यहूदी ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की नबुव्वत का इन्कार करते और आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को दुन्या के दीगर बादशाहों में शुमार करते और येह ए'तिक़ाद रखते कि इन की बादशाहत जादू से फैली ह़ालां कि सह़ीह़ येह है कि आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام नबी भी थे और बादशाह भी ।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना सुद्दी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : यहूदियों ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तौरात से मुवा-ज़ना किया तो क़ुरआने करीम को तौरात के मुवाफ़िक़ पाया, तो (वोह तौरात को पसे पुश्त डाल कर) ह़ज़रते सय्यिदुना आसिफ़ बिन बरख़िया رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की किताब और हारूत व मारूत के जादू की त़रफ़ भाग गए । इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आ़लीशान दलालत करता है :

وَلَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِیْقٌ مِّنَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙۗ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۱﴾

(پ ۱، البقرۃ: ۱۰۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जब उन के पास तशरीफ़ लाया **अल्लाह** के यहां से एक रसूल उन की किताबों की तस्दीक़ फ़रमाता तो किताब वालों से एक गुरौह ने **अल्लाह** की किताब अपने पीठ पीछे फेंक दी गोया वोह कुछ इ़ल्म ही नहीं रखते ।

आयते मुबा-रका में ''शयात़ीन'' से मुराद सरकश जिन्नात हैं क्यूं कि वोह आस्मान से चोरी चोरी सुन लेते और इस में झूट की आमैज़िश कर के काहिनों के पास ले जाते जो उसे किताबों में लिख देते और लोगों को सिखाते, ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ज़माने में येह बात आ़म हो चुकी थी ।[2]

## सय्यिदुना सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام के मु-तअ़ल्लिक़ यहूद का बात़िल अ़क़ीदा :

यहूदी कहते थे कि जिन्न ग़ैब जानते हैं, नीज़ वोह कहते थे कि सेह़्र (या'नी जादू) ह़ज़रते सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का इ़ल्म है और आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सल्त़नत की तक्मील जिन्नो इन्स, परिन्दों और सरकश जिन्नात के सेह़्र से हुई और उस हवा के सेह़्र के सबब हुई जो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के हुक्म से चलती थी । चुनान्चे, मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान

1 ......التفسیر الکبیر، البقرۃ، تحت الآیۃ ۱۰۲، ج ۱، ص ۶۱۷۔

2 ......التفسیر الکبیر، البقرۃ، تحت الآیۃ ۱۰۲، ج ۱، ص ۶۱۷۔



www.dawateislami.net

عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बहुत से उ़लूम जिन के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप ख़ास किया था, अपने शाही तख़्त के नीचे दफ़्न कर दिये इस ख़ौफ़ की वज्ह से कि अगर ज़ाहिरी उ़लूम हलाक हो जाएं तो उन में से येह दफ़्न शुदा बाक़ी रह जाएं, कुछ अ़र्से के बा'द मुनाफ़िक़ीन उस (मदफ़ून इल्मी ख़ज़ाने) तक पहुंच गए और उन्हों ने उस में से कुछ ऐसी अश्या लिख दीं जो बा'ज़ वुजूहात के ए'तिबार से सेहूर से मुना-सबत रखती थीं, फिर आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के विसाल के बा'द जब लोग इन लिखी गई तह़रीरों से आगाह हुए तो उन्हों ने वह्म किया कि येह ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के अ़मल में से हैं और आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के इस अ़ज़ीम मक़ाम तक पहुंचने का ज़रीआ़ येही सेहूर है।[1]

## आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ जादू मन्सूब करने की वज्ह :

यहूदियों के, ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ जादू मन्सूब करने की 3 वुजूहात हैं : (1)...... या इस वज्ह से कि जादू की शान बुलन्द हो और लोग इसे क़बूल करें। (2)...... या इस वज्ह से कि यहूदी कहते थे कि आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने जादू ही के ज़रीए़ येह बादशाहत पाई।

(3)...... या इस वज्ह से कि जब जिन्नात आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये मुसख़्ख़र कर दिये गए और आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام उन से मिल कर अ़जीबो ग़रीब राज़ ह़ासिल करते तो फ़ासिद गुमान करने वालों पर येह बात (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस से पनाह दे) ग़ालिब आ गई कि आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام उन से जादू सीखते हैं ह़ालां कि येह जादू कुफ़्र है, इसी लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को अपने फ़रमाने आ़लीशान ''وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ'' के ज़रीए़ इस इल्ज़ाम से बरी फ़रमा दिया जो इस बात पर दलालत करता है कि उन्हों ने आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ कुफ़्र की निस्बत कर दी थी। चुनान्चे, बा'ज़ यहूदी उ़-लमा कहते थे : ''क्या तुम मुह़म्मद की इस बात पर तअ़ज्जुब नहीं करते जिन के गुमान में सुलैमान नबी थे ह़ालां कि वोह तो (نَعُوْذُبِاللّٰه) जादूगर थे।'' येह भी मरवी है कि यहूदी जादूगरों का गुमान था कि उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से जादू ह़ासिल किया है, पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلَیْہِ السَّلَام को इस से बरी फ़रमा दिया और वाज़ेह़ फ़रमा दिया कि इस इन्तिहाई बुरे कुफ़्र का तअ़ल्लुक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान ''وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا'' की रू से उन्ही के साथ है।[2]

---

1 ......التفسير الكبير، البقرة، تحت الآية ١٠٢، ج١، ص٦١٧۔ 2 ......المرجع السابق، ص٦١٨۔



www.dawateislami.net

## सेहूर का लुग़वी मा'ना :

इस का लुग़वी मा'ना है : ''हर वोह चीज़ जो लतीफ़ और बारीक हो ।'' और येह **''स-ह़रह''** से है और उस वक़्त बोला जाता है जब किसी शख़्स के लिये कोई ऐसा मुआ-मला ज़ाहिर हो जिस का समझना उस पर दुश्वार और मख़्फ़ी हो । कुरआने मजीद में येह लफ़्ज़ इस त़रह़ बयान हुवा है :

فَلَمَّآ اَلْقَوْا سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ النَّاسِ (پ۹، الاعراف:۱۱٦) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** जब उन्हों ने डाला, लोगों की आंखों पर जादू कर दिया ।

और सहूर (س के फ़त्ह़ा के साथ) गि़ज़ा को कहते हैं इस के पोशीदा होने की वज्ह से । फेफड़ों और हुल्कूम से मु-तअ़ल्लिक़ जिस्मानी हि़स्से को भी सहूर कहते हैं । उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के मुबारक फ़रमान में येह लफ़्ज़ इसी मा'ना में इस्ति'माल हुवा है । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : ''हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस ह़ाल में विसाल फ़रमाया कि मेरे सीने के साथ टेक लगाए हुए थे ।''(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की क़ौम ने आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से जो कुछ कहा उसे हि़कायतन बयान करते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِیْنَ (پ۱۹، الشعراء:۱۵۳)'' इस का मा'ना येह है कि उन्हों ने कहा कि आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ऐसी मख़्लूक़ में से हैं जो खाते और पीते हैं और इस की दलील देते हुए कहने लगे :

مَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا (پ۱۹، الشعراء:۱۵۴) **तर-ज-मए तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तुम तो हमीं जैसे आदमी हो ।

या'नी तुम तो हमारी मिस्ल खाने पीने वाले इन्सान ही हो ।

## सेहूर का शर-ई मा'ना :

शर-ई तौ़र पर येह लफ़्ज़ हर उस अम्र के साथ ख़ास है जिस का सबब पोशीदा हो और इसे ह़क़ीक़त के इ़लावा पर मह़मूल किया जाए और येह ह़क़ाइक़ की पर्दा पोशी और धोका देही के क़ाइम मक़ाम होता है ।

जब येह लफ़्ज़ मुत़्लक़ इस्ति'माल किया जाए तो मज़्मूम मा'ना मुराद होता है, बा'ज़ अवक़ात इस का इस्ति'माल किसी नफ़अ़ मन्द और क़ाबिले ता'रीफ़ फे़'ल में होता है मगर किसी क़ैद के साथ । चुनान्चे,

(1)......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی ووفاتہ، الحدیث: ۴۴۴۹، ص۳٦۵۔



www.dawateislami.net

﴾1﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बिला शुबा बा'ज़ बयान जादू होते हैं।"(1)

## ह़दीसे पाक की तशरीह़ :

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह बात इस लिये इर्शाद फ़रमाई क्यूं कि बयान करने वाला मुश्किल की वज़ाह़त करता है और अपने ह़ुस्ने बयान और बलीग़ इ़बारत से मुश्किल कलाम की ह़क़ीक़त से पर्दा उठाता है। फ़साह़तो बलाग़त की वज्ह से इसे मज़म्मत से ख़ारिज क़रार देने की वज्ह येह है कि इसे जादू के मुशाबेह क़रार देना बई़द है और जिस फ़रमाने आ़लीशान से इस्तिद्लाल किया गया है उस में कोई दलालत नहीं और वोह फ़रमाने आ़लीशान येह है : "शायद ! तुम में से कोई एक, दलील क़ाइम करने में दूसरे से ज़ियादा ख़ुश बयान हो।"(2)

## सब से ना पसन्दीदा कौन ?

﴾2﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मुझे तुम में सब से ज़ियादा ना पसन्द बातूनी और बढ़ा चढ़ा कर बातें करने वाले हैं।"(3)

ह़दीसे पाक के रावी ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर शअ़बी और ह़ज़रते सय्यिदुना सअ़-सअ़ह बिन सूहान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मन्क़ूल है कि बयान को सेह़र कहने से मक़्सूद मज़म्मत है। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रमाने आ़लीशान : "اِنَّ مِنَ الْبَيَانِ لَسِحْرًا" में भी लफ़्ज़े सेह़र से मक़्सूद मज़म्मत है। म-सलन एक शख़्स पर कोई ह़क़ लाज़िम हो मगर वोह साह़िबे ह़क़ से बेहतर अन्दाज़ में दलाइल दे सकता हो, और वोह लोगों को अपने बयान से मु-तअस्सिर कर ले और दूसरे का ह़क़ मार ले ह़ालां कि ह़क़ इस पर लाज़िम हो और उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام इस ह़द तक बलाग़त और ज़बान दानी को पसन्द करते हैं कि वोह कलाम में तूल, तफ़्सील और बातिल को ह़क़ की सूरत देने की ह़द तक न पहुंचे।

पहला क़ौल येह है कि बयान को सेह़र कहना मद्ह़ के लिये है क्यूं कि इस में ह़क़ वाज़ेह़ करने और इश्काल को दूर करने वाली फ़साह़त पाई जाती है, पस जो शै ह़क़ वाज़ेह़ करती है

(1)......صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب الخطبۃ، الحدیث: ۵۱۴۶، ص۴۴۵۔

(2)......صحیح البخاری، کتاب الحیل، باب (۱۰) الحدیث: ۶۹۶۷، ص۵۸۱۔

(3)......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی ثعلبۃ الخشنی، الحدیث: ۱۷۷۴۷، ج۶، ص۲۲۰۔



www.dawateislami.net

उसे सेहूर और जादू का नाम दिया जाता है और इस से मक्सूद पोशीदा को ज़ाहिर करना है न कि ज़ाहिर को पोशीदा करना और येह मफ़्हूम उस के बर अक्स है जिस पर लफ़्ज़े सेहूर दलालत करता है, क्यूं कि इस की इतनी मिक्दार अपने लुत्फ़ो हुसन की वज्ह से दिलों को अपनी त़रफ़ माइल कर लेती है, लिहाज़ा इस ए'तिबार से येह उस जादू के मुशाबेह है जो दिलों को मोह लेता है। इसी त़रह़ बयान पर कुदरत रखने वाला अक्सर बुरे को अच्छा और अच्छे को बुरा बना कर पेश करने पर क़ादिर होता है लिहाज़ा इस ए'तिबार से भी येह जादू के मुशाबेह है।

## ह़क़ीक़ते सेहूर :

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इस में इख़्तिलाफ़ है कि क्या जादू की कोई ह़क़ीक़त भी है या नहीं ?

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "येह मह़ज़ एक ख़याल है जिस की कोई ह़क़ीक़त नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿۶۶﴾
(پ۱۶، طٰہٰ:۶۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** उन के जादू के ज़ोर से उन के ख़याल में दौड़ती मा'लूम हुईं।

अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "जादू की ह़क़ीक़त ह़दीसे मुबा-रका से साबित है और येही सह़ीह़ है, इस लिये कि ला'नती यहूदी जादूगर लबीद बिन आ'सम ने रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर जादू किया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वह़्य के ज़रीए आगाह हो कर ज़ी अरवान नामी कूंएं से उस जादू का सामान निकालने का हुक्म इर्शाद फ़रमाया, लिहाज़ा उसे वहां से निकाला गया, वोह गिरहों वाला था, उस की गिरहें खोल दी गईं। जब भी उस की कोई गिरह खुलती तो जादू का असर कम हो जाता यहां तक कि सारी खुल गईं तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसे हो गए गोया कि आप को रस्सी से आज़ाद कर दिया गया हो।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا दरख़्तों पर लगे हुए फल शुमार करने के लिये ख़ैबर तशरीफ़ ले गए तो यहूदियों ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه पर जादू कर दिया जिस से आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का हाथ शदीद मु-तअस्सिर हुवा तो अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते

---

1 ......سنن النسائی، کتاب المحاربة، باب سحرة اهل الکتاب، الحدیث : ۴۰۸۵، ص۲۳۵۵۔
المعجم الکبیر، الحدیث : ۵۰۱۶، ج۵، ص۱۸۰۔



www.dawateislami.net

सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यहूदियों को ख़ैबर से निकाल दिया।

एक औ़रत उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के पास आई और कहने लगी : "ऐ उम्मुल मुअमिनीन ! जब औ़रत अपने ऊंट को बांध दे तो इस पर कोई ह़रज है ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को उस की मुराद समझ न आई और इर्शाद फ़रमाया : "उस पर कोई ह़रज नहीं।" तो वोह बोली : **"मैं ने अपने शोहर को औ़रतों से रोक दिया है।"** इस पर उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने फ़रमाया : **"इस जादूगरनी को मुझ से दूर कर दो।"**(1)

पहले गुरौह ने जिस आयते मुबा-रका से अपने क़ौल पर इस्तिद्लाल किया है इस का जवाब येह है कि हम जादू के ख़याल होने का इन्कार नहीं करते मगर हम कहते हैं कि इस ख़याल की भी ह़क़ीक़त है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान "وَاللّٰہُ یَعْصِمُکَ مِنَ النَّاسِ ؕ (پ۶،المائدۃ:۶۷) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** तुम्हारी निगहबानी करेगा लोगों से।" के बा वुजूद आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर जादू का असर हुवा। इस की वज्ह येह है कि आयते मुबा-रका में **"इस्मत"** से मुराद (1)...... या तो दिल और ईमान की ह़िफ़ाज़त है, दुन्यवी ह़ादिसात से जिस्म की ह़िफ़ाज़त मुराद नहीं। येही वज्ह है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर जादू किया गया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ज़ख़्मी किया गया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने वाले दो दांत मुबारक शहीद किये गए। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर जानवर की ओझड़ी और मिट्टी फेंकी गई। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कु़रैश की जमाअ़त ने तक्लीफ़ दी। (2)...... या फिर इस से मुराद ना गहानी आफ़त से जान की ह़िफ़ाज़त है, उन अ़वारिज़ से ह़िफ़ाज़त मुराद नहीं जो नफ़्स की सलामती के साथ बदन को लाह़िक़ होते हैं।

यहां येह मा'ना मुराद लेना बेहतर है बल्कि येही मा'ना दुरुस्त है क्यूं कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी ह़िफ़ाज़त का एहतिमाम फ़रमाया करते थे मगर जब येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (मुह़ाफ़िज़ीन को) ह़िफ़ाज़त न करने का हुक्म फ़रमा दिया।

## जादू की अक़्साम :

जादू की कई अक़्साम हैं :

---

1 ......السنن الکبری للبیھقی، کتاب القسامۃ ،باب من لا یکون سحرہ کفرا......الخ ،الحدیث : ۱۶۵۰۷ ،ج۸،ص۲۳۷،مفھوماً۔



www.dawateislami.net

## पहली क़िस्म :

येह **क-सदानिय्यों** का जादू है जो क़दीम ज़माने में सितारों की इ़बादत करते थे और गुमान करते थे कि सितारे सारी काएनात का निज़ाम चलाने वाले हैं, हर भलाई और बुराई का सुदूर इन्ही से होता है। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को उन की बातों के बुत़लान और उन की तरदीद के लिये उन की त़रफ़ मब्ऊ़स फ़रमाया गया। उन के तीन गुरौह थे :

## पहला गुरौह :

येह वोह लोग हैं जो येह गुमान करते थे कि तमाम आस्मान और सितारे ज़ाती त़ौर पर वाजिबुल वुजूद हैं जो किसी बनाने और पैदा करने वाले के मोह़ताज नहीं और येही आस्मान और सितारे काएनात के निज़ाम को बनाने और बिगाड़ने वाले हैं, इन्हें "**साइबा** और **दह्रिया**" कहा जाता है।

## दूसरा गुरौह :

इन से मुराद वोह लोग हैं जो अफ़्लाक के मा'बूद होने के क़ाइल थे और गुमान करते थे कि अफ़्लाक चक्कर काट कर और ह़-र-कत कर के ह़वादिस में मुअस्सिर होते हैं, इसी बिना पर वोह अफ़्लाक की इ़बादत करने और उन्हें अ़ज़ीम जानने लगे और उन्हों ने हर आस्मान के लिये एक मख़्सूस मुजस्समा और मुअ़य्यन बुत बना लिया और फिर उन की ख़िदमत में मश्ग़ूल हो गए, येह बुत परस्तों का मज़्हब है।

## तीसरा गुरौह :

येह वोह लोग हैं जिन्हों ने सितारों और अफ़्लाक के लिये (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को) साह़िबे इख़्तियार फ़ाइल साबित किया जिस ने इन्हें अ़दम से वुजूद बख़्शा मगर इन का गुमान है कि उस बुज़ुर्गो बरतर हस्ती ने इन सितारों और अफ़्लाक को एक ऐसी ग़ालिब क़ुव्वत अ़त़ा फ़रमा दी है जो इस काएनात में जारी है और काएनात का निज़ाम चलाना भी इन्ही सितारों और अफ़्लाक के सिपुर्द कर दिया है।

## दूसरी क़िस्म :

इस से मुराद वहमी और क़वी नुफ़ूस के मालिक लोगों का जादू है।



www.dawateislami.net

## तीसरी क़िस्म :

इस से मुराद ज़मीनी रूहों से मदद त़लब करने वाला जादू है।

**याद रखिये !** बा'ज़ मु-तअख़्ख़िर फ़लासिफ़ा और मो'तज़िला ने जिन्नात के वुजूद का इन्कार किया और अकाबिर फ़लासिफ़ा ने इस का इन्कार तो नहीं किया मगर इन्हें ''اَلْاَرْوَاحُ الْاَرْضِيَّة या'नी ज़मीनी अरवाह़'' का नाम दिया, जिन्न अपनी ज़ात के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ होते हैं, इन में अच्छे भी हैं जो मोमिन हैं और शरीर भी हैं जो काफ़िर हैं।

## चौथी क़िस्म :

इस में ख़यालात और नज़र को बन्द कर दिया जाता है (और येह हो सकता है) क्यूं कि निगाहों का फिरना ब कसरत पाया जाता है। म-सलन कश्ती पर सुवार शख़्स को कश्ती साकिन और कनारे मु-तह़र्रिक नज़र आते हैं और मु-तह़र्रिक चीज़ साकिन दिखाई देती है और आस्मान से उतरने वाली बारिश तुझे सीधा ख़त़ नज़र आएगी और चराग़ की तेज़ी से घूमती हुई बत्ती तुझे दाएरा दिखाई देगी और इस त़रह़ कई मिसालें हैं।

## पांचवीं क़िस्म :

इस में हिन्दसी तरतीब पर आलात को जोड़ कर अ़जीबो ग़रीब अफ़आ़ल ज़ाहिर किये जाते हैं म-सलन हाथ में बिगुल लिये हुए घोड़े की तस्वीर कि जब दिन की एक घड़ी गुज़रती है तो किसी के छूए बिग़ैर बिगुल आवाज़ निकालता है। मुख़्तलिफ़ कैफ़िय्यात में रूम की तसावीर कि वोह रोने वाली और हंसने वाली हैं यहां तक कि ख़ुशी की मुस्कुराहट, शरमिन्दगी की मुस्कुराहट और नदामत की मुस्कुराहट में वाज़ेह़ फ़र्क़ मा'लूम हो जाता है। फ़िरऔ़न के जादूगरों का जादू भी इसी क़िस्म से मु-तअ़ल्लिक़ है। भारी चीज़ों के खींचने का इ़ल्म भी इसी में दाख़िल है और वोह येह है कि भारी भरकम शै हलके से आले के साथ निहायत आसानी से खींच ली जाए। दर ह़क़ीक़त इस क़िस्म को सेह़र के बाब में शुमार नहीं करना चाहिये क्यूं कि इस के लिये यक़ीनी और मा'लूम अस्बाब होते हैं और जो इन पर आगाह हो वोही जादू की इस क़िस्म पर क़ादिर हो सकता है।

## छटी क़िस्म :

इस में अ़क़्ल वग़ैरा को ज़ाइल करने वाली अदवियात के ख़वास से मदद ली जाती है।

## सातवीं क़िस्म :

इस में दिल को मुअ़ल्लक़ कर दिया जाता है इस की सूरत येह है कि कोई इन्सान दा'वा



www.dawateislami.net

करे कि वोह इस्मे आ'ज़म जानता है और जिन्न उस की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी करते हैं, अगर उस का दा'वा सुनने वाला कमज़ोर अ़क्ल और कम तमीज़ वाला हो तो वोह उसे ह़क़ समझ लेता है, उस का दिल उस से मुअ़ल्लक़ हो जाता है और सुनने वाले के दिल में उस का रो'ब और ख़ौफ़ पैदा हो जाता है, पस उस वक़्त जादू करने वाला इस बात पर क़ादिर होता है कि उस के साथ जो चाहे कर ले।

## जादू के मु-तअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ आराअ :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं : जादू अ़क्ल को ख़राब करता, इन्सान को बीमार और क़त्ल कर देता है और आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने जादू के ज़रीए क़त्ल करने वाले पर क़िसास वाजिब क़रार दिया। येह एक शैत़ानी अ़मल है जिसे जादूगर शैत़ान से सीखता है और जब उस से सीख लेता है तो उसे दूसरों के ख़िलाफ़ इस्ति'माल करता है। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ जादू सूरतों को बदलने में मुअस्सिर होता है (म-सलन इन्सान को गधे की सूरत में और गधे को इन्सान की सूरत में बदल देता है) जब कि एक क़ौल येह है कि असह़्ह़ येह है कि जादू एक तख़य्युल है लेकिन बीमारियों, मौत और जुनून के ज़रीए ब-दनों में असर करता है और त़बीअ़तों और नुफ़ूस में कलाम मुअस्सिर होता है जैसा कि इन्सान जब कोई ना पसन्दीदा बात सुने तो उस का रंग सुर्ख़ हो जाता है और उसे ग़ुस्सा आ जाता है और कभी तो वोह इस की वज्ह से बीमार हो जाता है यहां तक कि एक क़ौम कलाम सुन कर हलाक हो गई, पस जादू ब-दनों में मुअस्सिर होने वाली बीमारियों की त़रह़ है।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू **अ़ब्दुल्लाह** मुह़म्मद बिन अह़मद अन्सारी क़ुरत़ुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 671 हि.) फ़रमाते हैं : ''हमारे उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जादूगर के हाथ से ऐसी ख़िलाफ़े आ़दात बातों के ज़ुहूर का इन्कार नहीं किया जा सकता जो बन्दे की क़ुदरत में नहीं जैसे बीमारी, जुदाई, अ़क्ल का ज़ाइल होना और किसी उ़ज़्व का टेढ़ा हो जाना वग़ैरा ऐसी चीज़ें जिन के मु-तअ़ल्लिक़ दलील क़ाइम है कि बन्दे का इन पर क़ादिर होना मुह़ाल है।''

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام मज़ीद येह भी फ़रमाते हैं : ''जादू में दर्जे ज़ैल उमूर बईद नहीं : (1) जादूगर का जिस्म सुकड़ जाए यहां तक कि वोह दीवार के छोटे से सूराख़ में भी

1 ......تفسیر البغوی، البقرۃ، تحت الآیۃ ۱۰۲، ج ۱، ص ۶۳۔



www.dawateislami.net

दाख़िल हो जाए (2) बांस या सरकन्डे के सिरे पर सीधा खड़ा हो जाना (3) बारीक धागे पर चलना (4) हवा में उड़ना (5) पानी पर चलना और (6) कुत्ते की सुवारी करना वग़ैरा। जादू इन अफ़्आ़ल की इ़ल्लत है न इन का मूजिब, बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जादू के पाए जाने के वक़्त येह अश्या पैदा फ़रमाता है जैसा कि वोह खाना खाते वक़्त आसू-दगी (या'नी शिकम सैरी) और पानी पीते वक़्त सैराबी पैदा करता है।

﴾3﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 161 हि.) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार ज़हबी عَلَيْهِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत फ़रमाते हैं : ''वलीद बिन उ़क़्बा के पास एक जादूगर था जो रस्सी पर चलता और गधे की सुरीन (या'नी उस के पाख़ाने के मक़ाम) से दाख़िल होता और मुंह से निकल जाता था, ह़ज़रते सय्यिदुना जुन्दुब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की तलवार पर क़ब्ज़ा कर लिया और उसी से उसे क़त्ल कर दिया।'' येह ह़ज़रते सय्यिदुना जुन्दुब बिन का'ब अज़्दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं जिन्हें बजली कहा जाता था। येही वोह शख़्सिय्यत है जिस की शान में हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरी उम्मत में एक ऐसा शख़्स है जिसे जुन्दुब कहा जाता है वोह तलवार के एक ही वार से ह़क़ और बाति़ल के दरमियान फ़र्क़ कर देता है।''(1) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिसा बिन मुज़र्रिब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मदीनी عَلَيْهِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی से रिवायत फ़रमाया कि लोग ह़ज़रते सय्यिदुना जुन्दुब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जादूगरों का क़ातिल समझते थे। (ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی का कलाम ख़त्म हुवा) (2)

## जादू के मु-तअ़ल्लिक़ मो'तज़िला का न-ज़रिय्या :

मो'तज़िला ने जादू की मज़्कूरा अक़्साम में से पहली 3 का इन्कार किया। मन्क़ूल है कि शायद उन्हों ने जादू और उस के वुजूद के क़ाइलीन को काफ़िर क़रार दिया है।

## अहले सुन्नत व जमाअ़त का न-ज़रिय्या :

अहले सुन्नत व जमाअ़त ने जादू की तमाम अक़्साम को तस्लीम किया है, म-सलन जादूगर का हवा में उड़ने या इन्सान को गधे और गधे को इन्सान में बदलने पर क़ादिर होना और

(1)......المصنف لعبد الرزاق، كتاب العقول، باب قتل الساحر، الحديث: ١٩٠١٩، ج٩، ص٤٢٨، دون قوله: يكون ...... الى جندب۔

(2)......الجامع لاحكام القرآن للقرطبی، البقرة، تحت الآية ١٠٢، ج١، الجزء الثانی، ص٣٦۔



www.dawateislami.net

इस के इलावा जादू की दीगर अक़्साम। मगर वोह कहते हैं : जादूगर के मुअ़य्यना कलिमात से जादू करते वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही इन अश्या को पैदा फ़रमाने वाला है। इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आ़लीशान दलील है :

وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ (پ ۱، البقرۃ:۱۰۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और इस से ज़रर नहीं पहुंचा सकते किसी को मगर ख़ुदा के हुक्म से।

﴾4﴿...... येह बात बयान हो चुकी है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर जादू किया गया यहां तक कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुझे ख़याल गुज़रता है कि मैं येह बात कह रहा हूं या येह काम कर रहा हूं ह़ालां कि न तो मैं ने वोह बात कही होती है और न ही वोह काम किया होता है।"(1)

﴾5﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर जादू करने वाले लबीद बिन आ'सम और इस की बेटियों ने कंघी और उस से झड़े हुए मूए मुबारक और नर खजूर की झिल्ली में फूंकें मारी हुई गिरहें लगा कर जादू किया, फिर उसे कूंएं की तह में पथ्थर के नीचे रख दिया, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर जादू ने असर किया और येह बर क़रार रहा यहां तक कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में दो फ़रिश्ते देखे, उन में से एक ने दूसरे से पूछा : "इस हस्ती को क्या मरज़ है ?" दूसरे ने जवाब दिया : "इन पर जादू किया गया है।" पूछा : "किस ने जादू किया ?" जवाब दिया : "लबीद बिन आ'सम ने।" पूछा : "किस चीज़ में किया ?" बताया : "कंघी और उस से झड़े हुए बालों और नर खजूर की झिल्ली में।" पूछा "वोह (चीज़ें जिन पर जादू का अ़मल किया गया) कहां हैं ?" बताया "ज़ी अरवान के कूंएं में।"(2)

﴾6﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! क्या तुम जानती हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे वोह बात बता दी है जो मैं पूछता था ? मेरे पास दो शख़्स आए, उन में से एक मेरे सिरहाने और दूसरा मेरे पाउं की त़रफ़ बैठ गया, फिर सर की त़रफ़ बैठने वाले ने पाइंती वाले या पाइंती वाले ने सिरहाने वाले से पूछा : "इन्हें क्या तक्लीफ़ है ?" दूसरे ने जवाब दिया : "इन पर जादू किया गया है।" पूछा : "किस ने जादू किया ?" जवाब दिया :

1 ......التفسیر الکبیر،البقرۃ،تحت الآیۃ ۱۰۲، ج ۱، ص ۶۲۶۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الطب، باب السحر، الحدیث : ۵۷۶۳، ص ۴۹۲ مفہوماً۔



www.dawateislami.net

''लबीद बिन आ'सम ने।'' पूछा : ''किस चीज़ में ?'' बताया : ''कंघी और इस से झड़े हुए बालों और नर खजूर की झिल्ली में।'' पूछा : ''वोह कहां है ?'' जवाब दिया : ''ज़ी अरवान के कूंएं में।'' जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस पर आगाह किया गया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस कूंएं की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए और उस जादू को उसी त़रह़ बाहर निकलवा दिया जिस त़रह़ उस का त़रीक़ा बताया गया था, कूंएं का पानी तब्दील हो कर मेहंदी के पानी का रंग इख़्तियार कर चुका था और उस के इर्द गिर्द खजूरों के दरख़्त शयात़ीन के सरों जैसे हो गए थे।(1)

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुअ़व्व-ज़तैन (या'नी सूरए फ़लक़ और सूरए नास) नाज़िल फ़रमाईं और येह दोनों मुबारक सूरतें आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत के लिये जादू से शिफ़ा हैं।

## जादू बरबादिये ईमान का सबब है :

﴾7﴿...... मरवी है कि एक औ़रत उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ की : ''मैं जादूगरनी हूं, क्या मेरे लिये तौबा है ?'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ''तेरा जादू क्या है ?'' उस ने बताया : मैं जादू का इ़ल्म सीखने हारूत व मारूत के ठिकाने पर गई, तो उन्हों ने मुझे कहा : ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दी ! दुन्या के लिये आख़िरत का अ़ज़ाब इख़्तियार न कर।'' लेकिन मैं ने इन्कार कर दिया तो उन्हों ने कहा : ''जाओ और उस राख पर पेशाब करो।'' मैं उस पर पेशाब करने के लिये गई लेकिन मैं ने अपने दिल में सोच कर कहा कि मैं ऐसा नहीं करूंगी फिर उन के पास लौट गई और कहा : ''मैं ने कर लिया है।'' उन्हों ने पूछा : ''जब तुम ने पेशाब किया तो क्या देखा।'' मैं ने कहा : ''मैं ने कुछ नहीं देखा।'' उन्हों ने दोबारा (समझाते हुए) कहा : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर और ऐसा न कर।'' लेकिन मैं ने फिर इन्कार कर दिया तो उन्हों ने कहा : ''जाओ और (राख पर पेशाब) करो।'' मैं गई और जब मैं ने पेशाब किया तो देखा कि मेरी शर्मगाह से हथियारों से ढांपी हुई घोड़े की मिस्ल कोई चीज़ निकली और आस्मान की त़रफ़ चढ़ गई। फिर मैं ने आ कर उन्हें बताया तो उन्हों ने कहा : ''वोह ईमान था जो तुझ से निकल चुका है, अब तूने अच्छी त़रह़ जादू सीख लिया है।'' मैं ने पूछा : ''वोह जादू क्या है ?'' उन्हों ने बताया : ''तू जिस चीज़ का भी इरादा करेगी और उस की सूरत अपने ख़याल में लाएगी तो वोह मौजूद

1......صحیح البخاری، کتاب الطب، باب السحر، الحدیث : ۵۷۶۳، ص۴۹۲، بتغیرٍ قلیلٍ۔



www.dawateislami.net

होगी।'' चुनान्चे, मैं ने अपने दिल में गन्दुम के दाने का तसव्वुर किया तो दाना मौजूद पाया, मैं ने कहा : ''काश्त हो जा।'' वोह काश्त हो गया और उसी वक़्त बाली निकल आई, मैं ने दोबारा कहा : ''अभी गुंध जा।'' वोह उसी वक़्त गुंध गया। मैं ने कहा : ''रोटी बन जा।'' तो वोह रोटी बन गया अब मैं जिस चीज़ का भी इरादा कर के दिल में उस का तसव्वुर करती हूं तो वोह मौजूद होती है। उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने (उस की बात सुन कर) इर्शाद फ़रमाया : **''तेरे लिये कोई तौबा नहीं।''**(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अबू अ़ब्दुल्लाह** मुह़म्मद बिन अह़मद क़ुरतुबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 671 हि.) फ़रमाते हैं : ''मुसल्मानों का इस पर इज्माअ़ है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी त़रफ़ से जो करता है वोह जादू नहीं, म-सलन टिड्डियों, जूओं और मैंडकों का नाज़िल करना, समुन्दर का फट जाना, लाठी का सांप में बदल जाना, मुर्दों को ज़िन्दा करना, क़ुव्वते गोयाई से मह़रूम लोगों को बोलने पर क़ुदरत अ़त़ा करना और इसी त़रह़ अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात भी जादू नहीं।''(2)

## जादू और मो'जिज़े में फ़र्क़ :

जादू और मो'जिज़े में फ़र्क़ येह है कि जादू जादूगर और इसे सीखने वाले हर शख़्स से सादिर हो सकता है और कभी एक जमाअ़त जादू सीखती है और ब-यक वक़्त उस से जादू का वुक़ूअ़ हो जाता है जब कि मो'जिज़े की शान येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी को उस की मिस्ल या मुक़ाबिल लाने की क़ुदरत नहीं देता।(3)

## जादू सीखने का हुक्म :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन मुह़म्मद बिन उ़मर राज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : ''मुह़क़्क़िक़ीन का इत्तिफ़ाक़ है कि जादू का इ़ल्म न बुरा है और न ही मम्नूअ़ इस लिये कि हर इ़ल्म ज़ाती त़ौर पर शरफ़ वाला है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान में इ़ल्म का उ़मूमी हुक्म है :

---

1 ......التفسیر الکبیر،البقرة ،تحت الآیة ۱۰۲ ،ج ۱ ،ص۲۲۶۔

المستدرک،کتاب البر والصلة ،باب حکایة امراة فزعت من عمل السحر،الحدیث :۷۳۴۴، ج۵،ص۲۱۵۔

2 ......الجامع لاحکام القرآن للقرطبی، البقرة ،تحت الآیة ۱۰۲ ،ج ۱ ،الجزء الثا نی ،ص۳۶۔

3 ......الجامع لاحکام القرآن للقرطبی، البقرة ،تحت الآیة ۱۰۲ ،ج ۱ ،الجزء الثا نی ،ص۳۶۔



www.dawateislami.net

هَلْ يَسْتَوِی الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ (پ۲۳،الزمر:۹)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** क्या बराबर हैं जानने वाले और अनजान।

अगर जादू न सीखा जाता तो जादू और मो'जिज़े के दरमियान फ़र्क़ करना मुम्किन न होता और चूंकि अ़क्ल को आ़जिज़ कर देने वाली चीज़ को आ़जिज़ कर देने का इ़ल्म ह़ासिल करना वाजिब है तो जिस पर वाजिब मौक़ूफ़ होता है उस का इ़ल्म ह़ासिल करना भी वाजिब है पस येह इस बात का तक़ाज़ा करता है कि जादू का इ़ल्म सीखना वाजिब है, लिहाज़ा जो शै वाजिब हो वोह ह़राम और बुरी कैसे हो सकती है।(1)

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से मन्क़ूल है : ''मुफ़्ती पर जादू का इ़ल्म सीखना वाजिब है ताकि वोह जान सके कि किस जादू की वज्ह से क़त्ल हो सकता है और किस की वज्ह से नहीं और क़िसास के वाजिब होने में उस के मुत़ाबिक़ फ़तवा दे।''(2)

## मज़्कूरा इ़बारात पर मुसन्निफ़ का तब्सिरा :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی का मज़्कूरा कलाम महल्ले नज़र है और अगर इसे तस्लीम कर भी लिया जाए तो फिर भी येह हमारे ज़िक्र कर्दा इस उ़न्वान के मुनाफ़ी नहीं कि ''जादू सीखना और सिखाना कबीरा गुनाह है।'' क्यूं कि कलाम जादू के सीखने या सिखाने के मु-तअ़ल्लिक़ नहीं बल्कि उस शख़्स के मु-तअ़ल्लिक़ है जो जादू सीखे ख़्वाह इस की हुरमत पर आगाह हो या न हो और फिर तौबा कर ले तो अब उस के पास जादू का जो इ़ल्म है जिस में कुफ़्र भी नहीं तो क्या वोह फ़ी नफ़्सिही बुरा है या नहीं ? इस में ज़ाहिर हुक्म येह है कि वोह फ़ी नफ़्सिही बुरा नहीं बल्कि बुराई इस पर मुरत्तब होने वाले गुनाह की वज्ह से है।

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का मुफ़्ती के जादू सीखने का क़ौल भी सह़ीह़ नहीं क्यूं कि क़िसास वाजिब होने या न होने का फ़तवा देने के लिये जादू का इ़ल्म सीखना ज़रूरी नहीं, क्यूं कि फ़तवे का त़रीक़ए कार येह है कि अगर जादू का इ़ल्म रखने वाले दो आ़दिल शख़्स जो जादू से तौबा कर चुके हों, उस की गवाही दे दें कि अक्सर इस क़िस्म के जादू से क़त्ल हो जाता है तो जादू करने वाले को क़त्ल किया जाएगा वरना नहीं। इसी त़रह़ मो'जिज़े का इ़ल्म जादू सीखने पर मौक़ूफ़ नहीं क्यूं कि अक्सर बल्कि सिवाए चन्द एक के तमाम उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام इन दोनों के दरमियान फ़र्क़ तो जानते हैं लेकिन जादू का इ़ल्म नहीं रखते। इन दोनों

---

1 ......التفسير الكبير، البقرة، تحت الآية ۱۰۲، ج۱، ص۶۲۶۔

2 ......اللباب فی علوم الكتاب، البقرة، تحت الآية ۱۰۲، ج۲، ص۳۳۴۔



www.dawateislami.net

के दरमियान फ़र्क़ करने वाली येही बात काफ़ी है कि जादू के बर अ़क्स मो'जिज़ा दा'वए नबुव्वत के साथ मिला होता है। पस जब फ़र्क़ करना मुम्किन है तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى का क़ौल बात़िल हो गया।

जादू और मो'जिज़े में अम्रे मुश्तरक येह है कि येह दोनों आ़दत के ख़िलाफ़ होते हैं और इन दोनों में यूं फ़र्क़ किया जाता है कि जादू के बर अ़क्स मो'जिज़ा दा'वए नबुव्वत के साथ मिला होता है क्यूं कि नबुव्वत के झूटे दा'वेदार के हाथ पर इस का ज़ुहूर मुम्किन नहीं जैसा कि इस अ़ज़ीम मन्सब की चरागाह को कज़्ज़ाबों (या'नी नबुव्वत के झूटे दा'वेदारों) के ह़म्लों से बचाने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की आ़दत जारी है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 671 हि.) का कलाम गुज़र चुका है कि "मुसल्मानों का इस पर इज्माअ़ है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी त़रफ़ से जो टिड्डियों वग़ैरा का अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाता है वोह जादू में दाख़िल नहीं।" पस येह और इस जैसी दीगर बातों (या'नी टिड्डियों वग़ैरा के अ़ज़ाबात) के मु-तअ़ल्लिक़ यक़ीनी बात येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जादूगरों के इरादे के वक़्त ऐसे उमूर वाक़ेअ़ नहीं फ़रमाता। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा क़ाज़ी बाक़िल्लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى फ़रमाते हैं : "हम ने इज्माअ़ की वज्ह से अ़ज़ाबे इलाही के जादू में दाख़िल होने का इन्कार किया है, अगर इज्माअ़ न होता तो हम इसे जाइज़ क़रार देते।"(1)

## एक ए'तिराज़ और उस का जवाब :

इस पर ए'तिराज़ करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 671 हि.) ने फ़िरऔ़न की जादू की रस्सियों के मु-तअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आ़लीशान पेश किया :

وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿٦٦﴾ (پ١٦، طه:٦٦)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और उन की लाठियां उन के जादू के ज़ोर से उन के ख़याल में दौड़ती मा'लूम हुईं।

मगर येह ए'तिराज़ सह़ीह़ नहीं क्यूं कि इस पर इज्माअ़ है कि ह़क़ीक़तन कोई चीज़ नहीं बदलती, बल्कि येह तो मह़ज़ एक ख़याल होता है, क्या आप इस आयते मुबा-रका के अल्फ़ाज़ "يُخَيَّلُ اِلَيْهِ" में ग़ौर नहीं करते।

---

1 ......الجامع لاحكام القرآن للقرطبى، البقرة ،تحت الآية ١٠٢ ،ج ١ ،الجزء الثانى ،ص٣٦۔
اللباب فى علوم الكتاب،البقرة،تحت الآية ١٠٢ ،ج٢،ص٣٣٥۔



www.dawateislami.net

## जादू करने वाले के मु-तअ़ल्लिक़ हुक्मे शर-ई :

जादू करने वाले के मु-तअ़ल्लिक़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इख़्तिलाफ़ है कि क्या वोह काफ़िर हो जाएगा या नहीं ?

जादू की बयान कर्दा गुज़श्ता अक़्साम में से पहली दो अक़्साम का जादू करने वाले के काफ़िर होने में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं, इस लिये कि उस शख़्स के कुफ़्र में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं जो सितारों के मु-तअ़ल्लिक़ निज़ामे काएनात चलाने का ए'तिक़ाद रखे या येह अ़क़ीदा रखे कि इन्सान अपने नफ़्स को साफ़ सुथरा कर के इस मक़ाम तक पहुंच जाता है कि उस का नफ़्स किसी जिस्म के बनाने या उस में ज़िन्दगी पैदा करने या उस की सूरत तब्दील करने में मुअस्सिर होता है। तीसरी क़िस्म येह है कि जादू करने वाला येह ए'तिक़ाद रखे कि वोह नफ़्स को साफ़ करने, ता'वीज़ पढ़ने और बा'ज़ दवाओं को धुवां देने में इस मक़ाम तक पहुंच चुका है कि जिन्न जिस्मानी साख़्त और सूरत तब्दील करने में इस की इताअ़त करते हैं। मो'तज़िला ने सिर्फ़ इन तीनों अक़्साम का जादू करने वालों को काफ़िर क़रार दिया। जादू की दीगर अक़्साम के मु-तअ़ल्लिक़ एक गुरौह का क़ौल है कि वोह मुत़्लक़न कुफ़्र हैं क्यूं कि जब यहूदियों ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ जादू मन्सूब किया तो उन की इस से पाकी बयान करते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया :

وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ق (پ ۱، البقرة:۱۰۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और सुलैमान ने कुफ़्र न किया हां शैतान काफ़िर हुए लोगों को जादू सिखाते हैं।

इस आयते मुबा-रका से वाज़ेह़ होता है कि शयात़ीन जादू सिखाने की वज्ह से काफ़िर हुए क्यूं कि हुक्म को मुनासिब वस्फ़ पर मुरत्तब करना शुऊ़र दिलाता है कि वोह वस्फ़ इस हुक्म की इ़ल्लत है और जो शै कुफ़्र न हो उस के सिखाने से कुफ़्र साबित नहीं होता और येह उसूल इस बात का तक़ाज़ा करता है कि जादू मुत़्लक़न कुफ़्र है।

इसी त़रह़ **हारूत** व **मारूत** फ़रिश्तों के मु-तअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आ़लीशान भी जादू के कुफ़्र होने का तक़ाज़ा करता है :

وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَاۤ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ط (پ ۱، البقرة:۱۰۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह दोनों किसी को कुछ न सिखाते जब तक येह न कह लेते कि हम तो निरी आज़्माइश हैं तो अपना ईमान न खो।



www.dawateislami.net

जादू के मुत़्लक़न कुफ़्र न होने के क़ाइलीन जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) और आप के अस्ह़ाब इस का जवाब येह देते हैं कि ह़िकायते ह़ाल की सच्चाई के लिये एक ही सूरत काफ़ी होती है, पस पहली आयत में हुक्म को उस शख़्स के जादू पर मह़मूल किया जाएगा जो सितारों के मा'बूद होने का अ़क़ीदा रखे, इसी त़रह़ हम येह भी तस्लीम नहीं करते कि इस में किसी ऐसे वस्फ़ पर हुक्म मुरत्तब है जो इस के इ़ल्लत होने का शुऊ़र दिलाता है क्यूं कि आयते मुबा-रका का मा'ना येह है कि उन्हों ने कुफ़्र किया और इस के साथ साथ वोह जादू भी सिखाते थे ।[1]

## जादूगर की तौबा का हुक्म :

इस में इख़्तिलाफ़ है कि क्या जादू करने वाले की तौबा मानी जाएगी या नहीं ? जादू की पहली दो अक़्साम में से किसी एक का ए'तिक़ाद रखने वाला मुरतद है, अगर वोह तौबा करे तो सह़ीह़ है वरना उसे क़त्ल कर दिया जाएगा। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मु-तवफ़्फ़ा 179 हि.) और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मु-तवफ़्फ़ा 150 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं : ''उन की तौबा नहीं मानी जाएगी ।'' अलबत्ता ! तीसरी और चौथी क़िस्म का हुक्म येह है कि अगर जादूगर उन के मुबाह़ होने का अ़क़ीदा रखे तो उसे कुफ़्र की वज्ह से क़त्ल किया जाएगा क्यूं कि जिस फ़े'ल की हुरमत पर इज्माअ़ हो और वोह ज़रूरिय्याते दीन में से हो उसे ह़लाल जानना कुफ़्र है। अगर जादूगर उन के ह़राम होने का ए'तिक़ाद रखे तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) के नज़्दीक येह एक जुर्म है, अगर उस ने किसी पर जादू किया और इक़रार कर लिया कि इन्सान उस से अक्सर क़त्ल हो जाता है तो उसे क़त्ल किया जाएगा क्यूं कि येह क़त्ल अ़-मदन (या'नी जान बूझ कर क़त्ल करना) है या येह इक़रार किया कि इस से इन्सान कभी कभार क़त्ल होता है तो येह क़त्ले शिबह अ़मद है या जादू करते हुए (दो नामों की मुशा-बहत के सबब) नाम में ख़त़ा खा गया तो येह क़त्ले ख़त़ा है, लिहाज़ा आख़िरी दोनों सूरतों में वु-रसा पर दियत होगी बशर्ते़ कि वोह इस की तस्दीक़ करें क्यूं कि उन के ख़िलाफ़ जादूगर का इक़रार क़बूल नहीं किया जाएगा ।

जब जादूगर ख़ुद इक़रार कर ले या उस के जादूगर होने पर गवाही क़ाइम हो जाए और गवाह उस का ऐसा वस्फ़ बयान करें जिस से मा'लूम हो कि वोह वाक़ेई जादूगर है तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मु-तवफ़्फ़ा 150 हि.) के नज़्दीक उसे मुत़्लक़न

1 ......اللباب فی علوم الکتاب،البقرۃ،تحت الآیۃ۱۰۲،ج۲،ص۳۳۵۔



www.dawateislami.net

क़त्ल किया जाएगा और उस का येह क़ौल क़बूल नहीं किया जाएगा कि मैं जादू छोड़ता और तौबा करता हूं और अगर वोह इक़रार करे कि मैं त़वील अ़र्सा जादू करता रहा लेकिन कुछ अ़र्से से इसे छोड़ दिया है तो उस की बात मान ली जाएगी और उसे क़त्ल नहीं किया जाएगा। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मु-तवफ़्फ़ा 150 हि.) से पूछा गया : ''जादूगर के लिये मुरतद जैसा हुक्म क्यूं नहीं यहां तक कि मुरतद की तौबा क़बूल कर ली जाती है ?'' तो आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्यूं कि इस ने कुफ़्र के साथ साथ ज़मीन में फ़साद फैलाने की कोशिश भी की और ऐसे शख़्स को मुत़्लक़न क़त्ल किया जाएगा।''(1)

इस दलील की तरदीद येह कह कर की गई कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस यहूदी को क़त्ल न किया जिस ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर जादू किया था तो मोमिन का इन्ही जैसा हुक्म है क्यूं कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : ''इन (या'नी ज़िम्मियों) के लिये वोही हुक़ूक़ हैं जो मुसल्मानों के लिये हैं और इन पर वोही वाजिबात हैं जो मुसल्मानों पर हैं।''(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मु-तवफ़्फ़ा 150 हि.) ने इस रिवायत से इस्तिद्लाल किया कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की लौंडी ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर जादू किया तो लोगों ने उसे पकड़ लिया। जब उस ने अपने फ़े'ल का ए'तिराफ़ कर लिया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हुक्म पर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस लौंडी को क़त्ल कर दिया, येह बात अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तक पहुंची तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इसे ना पसन्द फ़रमाया। इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और उस औ़रत का मुआ़-मला अ़र्ज़ किया। गोया अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के क़त्ल को इस लिये ना पसन्द फ़रमाया क्यूं कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की इजाज़त के बिग़ैर उसे क़त्ल कर दिया था।(3)

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुक्म फ़रमाया : ''हर जादूगर और जादूगरनी को क़त्ल कर दो।'' तो लोगों ने 3 जादूगरों को क़त्ल कर दिया।(4)

---

1 ......اللباب فی علوم الکتاب،البقرۃ،تحت الآیۃ ۱۰۲،ج۲،ص۳۳۶۔

2 ......سنن ابی داود،کتاب الجھاد،باب علی ما یقاتل المشرکون ،الحدیث :۲۶۴۱،ص۱۴۱۸۔

3 ......المصنف لابن ابی شیبۃ،کتاب الدیات ،باب الدم یقضی فیہ الامراء ،الحدیث :۴،ج۶،ص۴۳۰۔

4 ......المصنف لابن ابی شیبۃ ،کتاب الحدود،باب ما قالوا فی الساحر،مایصنع بہ؟،الحدیث : ۷،ج۶،ص۵۸۳۔



www.dawateislami.net

## अह्नाफ़ के दलाइल का जवाब :

शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इस का जवाब येह दिया कि इन दोनों रिवायात के साबित होने की सूरत में येह एह्तिमाल है कि इन दोनों में जादूगर को क़त्ल करना उस के कुफ़्र की वज्ह से हो उस के जादू में जादू की पहली दो अक़्साम में से एक क़िस्म पाई जाती हो और येह दोनों अक़्साम तो इख़्तिलाफ़ का मह़ल ही नहीं और इस पर कौन सी दलील क़ाइम है कि मज़्कूरा रिवायात में जादूगर का जादू दीगर इख़्तिलाफ़ी अक़्साम से तअ़ल्लुक़ रखता था जैसे शो'बदा बाज़ी और हिन्दसा पर मब्नी अ़जीब आलात और इस क़िस्म की ख़ौफ़ व वह्म दिलाने, डराने वाली चीजे़ं।

## तम्बीह 1 :

## जादू के तोड़ का हुक्म :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अबू अ़ब्दुल्लाह** मुह़म्मद बिन अह़मद कुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 671 हि.) एक सुवाल क़ाइम फ़रमाते हैं : "सेह़्र ज़दा से जादू का असर ज़ाइल करने के लिये जादूगर से उस का तोड़ पूछना जाइज़ है ?" (फिर खु़द ही जवाब इर्शाद फ़रमाते हैं :) ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इसे जाइज़ फ़रमाया है।"(1) ह़ज़रते सय्यिदुना मु-ज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى भी इसी क़ौल की त़रफ़ माइल हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 110 हि.) ने इसे मकरूह क़रार दिया जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना शअ़बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इर्शाद फ़रमाते हैं : "आसेब ज़दा के जादू खुलवाने में कोई ह़रज नहीं।"(2)

## जादू के तोड़ का एक अ़मल :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने बत़्त़ाल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَلَال फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की किताब में है कि सेह़्र ज़दा शख़्स, बेरी के 7 सब्ज़ पत्ते ले कर इन्हें दो पथ्थरों के दरमियान कूट ले, फिर उन्हें पानी में मिला कर आ-यतुल कुर्सी (और बा'ज़ कुतुब में इस के साथ चारों कुल पढ़ने का भी लिखा है) पढ़ कर दम करे, फिर उस पानी से 3 घूंट पी कर बक़िय्या से गु़स्ल करे तो اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ इस से हर बीमारी दूर हो जाएगी।"

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الطب، باب ھل یستخرج السحر؟،ص۴۹۲۔

2 ......الجامع لاحکام القرآن للقرطبی ،البقرة،تحت الآیة۱۰۲،ج ۱،الجزء الثانی،ص۳۸۔



www.dawateislami.net

येह अ़मल उस शख़्स के लिये इन्तिहाई मुफ़ीद है जिसे (जादू के ज़रीए) बीवी से रोक दिया गया हो।[1]

''وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ'' में ما से क्या मुराद है, इस के मु-तअ़ल्लिक़ 4 अक़्वाल हैं :

(1)...... ज़ियादा ज़ाहिर येह है कि येह ما मौसूला है जिस का अ़त्फ़ सेहर पर है, या'नी शयात़ीन लोगों को जादू और फ़रिश्तों पर उतरने वाला इ़ल्म सिखाते थे।

(2)...... एक क़ौल येह है कि ما नाफ़िया है, या'नी फ़रिश्तों पर जादू के मुबाह़ होने का हुक्म नहीं उतरा।

(3)...... एक क़ौल के मुत़ाबिक़ ما मौसूला है मगर मह़ल्ले जर में है और مُلْكِ سُلَيْمٰنَ पर इस का अ़त्फ़ है क्यूं कि सेहर पर इस का अ़त्फ़ करना तक़ाज़ा करता है कि उन पर जादू नाज़िल हुवा हो और नाज़िल करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हो और येह जाइज़ नहीं, जैसा कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मु-तअ़ल्लिक़ येह कहना जाइज़ नहीं कि उन्हें जादू सिखाने के लिये भेजा गया तो फ़रिश्तों के मु-तअ़ल्लिक़ ऐसी बात कहना ब द-र-जए औला जाइज़ नहीं।

(4)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ कुफ़्र की निस्बत कैसे की जा सकती है ? इस की निस्बत तो कुफ़्फ़ार और सरकश लोगों की त़रफ़ की जाएगी और मा'ना येह होगा कि शयात़ीन ने जादू की निस्बत ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सल्त़नत और फ़रिश्तों पर उतरे हुए इ़ल्म की त़रफ़ कर दी ह़ालां कि आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बादशाहत और फ़रिश्तों पर नाज़िल होने वाला इ़ल्म जादू से बरी है बल्कि इन पर तो शरीअ़त और दीन नाज़िल किया गया और वोह लोगों को इस के क़बूल करने और इस पर अ़मल करने की ता'लीम देते थे, एक गुरौह उस पर अ़मल करता और दूसरा मुख़ा-लफ़त करता था।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन मुह़म्मद बिन उ़मर राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى आयते मुबा-रका में लफ़्ज़े ما के मु-तअ़ल्लिक़ मज़्कूरा अक़्वाल पर ए'तिराज़ करते हुए फ़रमाते हैं : ''इस को مُلْك पर अ़त्फ़ करना बई़द है पस इस के लिये किसी दलील का होना ज़रूरी है।'' आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

(1)...... येह बात नुक़्सान देह नहीं कि अगर जादू फ़रिश्तों पर नाज़िल हो तो नाज़िल करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ होगा क्यूं कि कभी किसी चीज़ की रग़बत दिलाने के लिये उस की सिफ़त की ता'रीफ़ की जाती है यहां तक कि मुकल्लफ़ उसे पा लेता है और कभी उस से नफ़रत दिलाने

---

[1] ......الجامع لمعمر بن راشد مع المصنف لعبد الرزاق، باب النشر وما جاء فيه، الحديث: ١٩٩٣٣، ج١٠، ص٧٧۔



www.dawateislami.net

के लिये उस की ता'रीफ़ की जाती है यहां तक कि वोह उस से बच जाता है जैसे किसी ने कहा है : "मैं ने शर और बुराई को पहचाना मगर बुराई के लिये नहीं बल्कि उस से बचने के लिये।"

(2)...... येह कहना भी मुफ़ीद नहीं कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जादू की ता'लीम के लिये मब्ऊ़स नहीं हुए, क्यूं कि जादू की ता'लीम से मुराद इस के फ़साद और बाति़ल होने के मु-तअ़ल्लिक़ सिखाना है।

(3)...... येह कहना भी मम्नूअ़ है कि जादू की ता'लीम कुफ़्र है और अगर इसे कुफ़्र तस्लीम कर भी लिया जाए तो भी ह़िकायते ह़ाल की सच्चाई के लिये एक ही सूरत काफ़ी होती है (या'नी इस क़िस्म का जादू सिखाना कुफ़्र है जिस में सितारों को मा'बूदे ह़क़ीक़ी मानना पड़े)।

(4)...... जादू के सीखने को काफ़िरों और सरकश जिन्नात की त़रफ़ मन्सूब करना तब सह़ीह़ है जब कि इस से मुराद जादू करना हो न कि सीखना क्यूं कि इस पर अ़मल करने से मन्अ़ किया गया है और इस के फ़साद पर आगाह करने के लिये इस के सीखने का हुक्म दिया गया है।[1]

"بِبَابِلَ" में ह़र्फ़े जर ب के मा'ना में है और "بَلْبَلَةٌ" का मा'ना है जुदा और अलग।

## शह्र बाबिल की वज्हे तस्मिया और मह़ल्ले वुक़ूअ़ :

इस शह्र को बाबिल कहने के मु-तअ़ल्लिक़ कई अक़्वाल हैं। चुनान्चे,

**मन्क़ूल** है कि इस शह्र में मख़्लूक़ की ज़बानों के फैल जाने की वज्ह से इसे येह नाम दिया गया है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हवा को हुक्म दिया जिस ने उन्हें इस ज़मीन में इकठ्ठा कर दिया लेकिन उन में से कोई नहीं जानता था कि दूसरा क्या कह रहा है, फिर हवा ने उन्हें मुख़्तलिफ़ शहरों में जुदा जुदा कर दिया, फिर हर एक, एक ख़ास ज़बान में कलाम करने लगा।

**मन्क़ूल** है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहर गई तो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने कश्ती से नीचे उतर कर एक गाउं बनाया और उसे कश्ती वालों की ता'दाद की मुना-सबत से **समानीन** का नाम दिया, एक दिन ऐसा आया कि उन की ज़बानें 80 लुग़ात में तक़्सीम हो गईं। एक क़ौल येह भी है कि नमरूद का मह़ल गिरते वक़्त मख़्लूक़ की ज़बानें मुख़्तलिफ़ हो गईं।

बाबिल सर ज़मीने इराक़ है, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

---

[1]......اللباب فی علوم الكتاب، البقرة،تحت الآية ۱۰۲، ج۲،ص۳۳۷۔



www.dawateislami.net

इर्शाद फ़रमाते हैं : "बाबिल कूफ़ा की ज़मीन है।"(1)

## हारूत और मारूत के मु-तअ़ल्लिक़ तह़क़ीक़ :

हारूत व मारूत के मु-तअ़ल्लिक़ सह़ीह़ येह है कि वोह फ़रिश्ते हैं और अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का मौक़िफ़ येही है, अलबत्ता ! इसे एक शाज़ क़िराअत में لام के कस्रा के साथ "مَلِكَيْنِ" भी पढ़ा गया है तो मा'ना येह होगा कि येह दोनों इन्सान हैं।

जुम्हूर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़्दीक **हारूत** और **मारूत** की تَ पर फ़त्ह़ा है और **مَلَكين** में **لَام** के फ़त्ह़ा की सूरत में येह दोनों इस से बदल हैं। एक क़ौल येह है कि येह **اَلنَّاس** से ब-दले बा'ज़ हैं। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ येह दोनों **شَيٰطِيْن** से बदल हैं। एक क़ौल येह भी है कि येह दोनों **مَنْصُوبٌ عَلَى الذَّمّ** हैं या'नी हारूत और मारूत तमाम शयात़ीन के दरमियान क़ाबिले मज़म्मत हैं जिस ने **مـلـكـيـن** के **لَام** को कस्रा दिया उस ने मज़्कूरा क़ाइदा जारी किया। हां ! अगर **مَلَكَان** की तफ़्सीर ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से की जाए जैसा कि बा'ज़ मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इस का तज़्किरा भी किया है तो इस सूरत में **हारूत** और **मारूत** को **شَيٰطِيْن** या **اَلنَّاس** से बदल बनाना ज़रूरी होगा।

**لَام** के फ़त्ह़ा की बिना पर एक क़ौल के मुत़ाबिक़ इन से मुराद दो आस्मानी फ़रिश्ते हैं जिन का नाम **हारूत** और **मारूत** है और येही सह़ीह़ है जिस की तसरीह़ शराब की बह़्स में आने वाली सह़ीह़ ह़दीसे पाक में आएगी। एक क़ौल येह है कि इन से मुराद ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल और ह़ज़रते सय्यिदुना मीकाईल عَلَيْهِمَا السَّلَام हैं। **ملكين** में لام के कस्रा की सूरत में एक क़ौल येह है कि इन से मुराद जिन्नों के दो क़बीले हैं जब कि एक क़ौल के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद और ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं। बा'ज़ ने कहा : वोह दो नेक आदमी थे। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ इन से मुराद दो जादूगर हैं। एक क़ौल येह भी है कि इन से मुराद बाबिल के **इल्जान** और **अक्लफ़ान** नामी दो शख़्स हैं जो लोगों को जादू सिखाते थे।

एक क़ौल के मुत़ाबिक़ **يُعَلِّمَانِ** बाबे इफ़्आ़ल से **يُعْلِمَانِ** है, इस लिये कि बाबे इफ़्आ़ल और तफ़्ई़ल एक दूसरे की जगह आते रहते हैं क्यूं कि फ़रिश्ते जादू नहीं सिखाते थे बल्कि इस की बुराई के मु-तअ़ल्लिक़ आगाह करते थे। **يُعْلِمُ** बाबे इफ़्आ़ल से बयान करने वाले ह़ज़रते

(1)......اللباب فی علوم الکتاب، البقرة،تحت الآیة ١٠٢،ج٢،ص٣٤٠۔



www.dawateislami.net

सय्यिदुना इब्ने आ'राबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अम्बारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى हैं।(1)

## हारूत और मारूत फ़िरिश्ते हैं या नहीं(2) ?

इन को फ़िरिश्ता न मानने वालों की पहली दलील येह है कि फ़रिश्तों के शायाने शान नहीं कि वोह जादू की ता'लीम दें। दूसरी दलील (येह है कि फ़रिश्तों को नाज़िल करना जाइज़ नहीं क्यूं कि) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَلَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِىَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ۝ (پ۷، الانعام:۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर हम फ़िरिश्ता उतारते तो काम तमाम हो गया होता फिर उन्हें मोहलत न दी जाती।

और तीसरी दलील येह है कि वोह दोनों फ़रिश्ते अगर इन्सानी सूरत में नाज़िल किये जाते तो येह ह़क़ीक़त को छुपाना होता ह़ालां कि येह दुरुस्त नहीं और अगर ऐसा हो सकता तो हर एक शख़्स के मु-तअ़ल्लिक़ येह भी कहा जा सकता था कि वोह ह़क़ीक़तन इन्सान नहीं क्यूं कि इस में एह़तिमाल है कि शायद वोह इन्सानी सूरत में फ़रिश्ता हो और अगर दोनों फ़िरिश्ते इन्सानी सूरत में नाज़िल न किये जाते तो येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान के मुनाफ़ी होता :

---

1......اللباب فی علوم الكتاب، البقرة،تحت الآية ۱۰۲، ج۲،ص۳۴۰ تا۳۴۲۔

2...... आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से हारूत व मारूत फ़रिश्तों के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल हुवा कि हारूत व मारूत जो चाहे बाबिल में क़ैद हैं फ़िरिश्ते हैं या जिन्न या इन्सान ? अगर इन को फ़िरिश्ता माना जाए तो इस्मत फ़रिश्तों की किस दलील से साबित की जाए ? और अगर जिन्नो इन्स कहा जाए तो दराज़िये उ़म्र के वासिते़ क्या हुज्जत (दलील) पेश की जाए ? इस के जवाब में इर्शाद फ़रमाया : "क़िस्सए हारूत व मारूत जिस त़रह़ आ़म में शाएअ़ है अइम्मए किराम को इस पर सख़्त इन्कार शदीद है। यहां तक कि इमामे अजल क़ाज़ी इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : هٰذِهِ الْاَخْبَارُ مِنْ كُتُبِ الْيَهُوْدِ وَافْتِرَائِهِم येह ख़बरें यहूदियों की किताबों और उन की इफ़्तिराओं से हैं। इन को जिन्न या इन्स माना जाए जब भी दराज़िये उ़म्र मुस्तब्अ़द (बई़द) नहीं। सय्यिदुना ख़िज़्र व सय्यिदुना इल्यास व सय्यिदुना ईसा صَلَوَاتُ اللهِ تَعَالٰى وَسَلَامُهٗ عَلَيْهِم इन्स हैं और इब्लीस जिन्न है और राजेह़ येही है कि हारूत व मारूत दो फ़रिश्ते हैं जिन को रब عَزَّوَجَلَّ ने इब्तिलाए ख़ल्क़ (या'नी मख़्लूक़ की आज़्माइश) के लिये मुक़र्रर फ़रमाया कि जो सेहूर (जादू) सीखना चाहे उसे नसीह़त करें कि : اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ (پ۲، البقرة:۱۰۲) हम तो आज़्माइश ही के लिये मुक़र्रर हुए हैं तो कुफ़्र न कर। और जो न माने अपने पाउं जहन्नम में जाए उसे ता'लीम करें, तो वोह ता़अ़त में हैं न कि मा'सियत में। بِهٖ قَالَ اَكْثَرُ الْمُفَسِّرِيْنَ عَلٰى مَاعَزَااِلَيْهِمْ فِى الشِّفَاءِ الشَّرِيْف अक्सर मुफ़स्सिरीन ने येही कहा है जैसा कि शिफ़ा शरीफ़ में इन की त़रफ़ मन्सूब है। (الشفاء بتعريف حقوق المصطفٰى فصل فی العقول فی عصمة الملائكة، ج۲،ص۱۷۰،۱۷۱) وَاللهُ تَعَالٰى اَعْلَم।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 26, स. 396 मुल्तक़त़न)



www.dawateislami.net

وَلَوْجَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا (پ۷، الانعام:۹) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर हम नबी को फ़रिश्ता करते जब भी उसे मर्द ही बनाते।

**पहली** दलील का जवाब येह दिया गया कि जादू करने के लिये इस का सीखना मम्नूअ़ है मगर इस का फ़साद बयान करने के लिये सीखना मम्नूअ़ नहीं। **दूसरी** दलील का जवाब येह है कि आयते मुबा-रका से मुराद येह है कि अगर हम लोगों को दा'वत देने के लिये फ़रिश्ते को रसूल बना कर भेजते तो उसे भी इन्सान बना कर भेजते ताकि लोगों के लिये उस से सीखना और ह़ासिल करना मुम्किन होता और यहां पर ऐसा नहीं, लिहाज़ा फ़रिश्ते के ग़ैरे इन्सानी शक्ल पर होने में कोई मुमा-न-अ़त नहीं। तीसरी दलील का जवाब येह है कि अगर हम कहें कि वोह दोनों फ़िरिश्ते इन्सानी सूरत में न थे तो तीसरी दलील और इस में मज़्कूर आयते मुबा-रका में कोई तज़ाद नहीं रहता जैसा कि हम ने वज़ाह़त कर दी है और अगर हम कहें कि वोह दोनों इन्सानी सूरत में थे तो हर शख़्स पर फ़रिश्ता होने का हुक्म फ़िरिश्तों के नुज़ूल के ज़माने में हो सकता है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام के ह़ज़रते सय्यिदुना दिह़्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की सूरत में नाज़िल होने का इल्म होने के बा'द अगर कोई आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को देखता तो वोह क़त़्ई त़ौर पर नहीं कह सकता था कि येह ह़ज़रते सय्यिदुना दिह़्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की सूरत है क्यूं कि हो सकता था कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام हों।(1)

बा'ज़ मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इन दलाइल का जवाब दिया है मगर वोह मुफ़ीद नहीं बल्कि इस में ए'तिराज़ ज़ाहिर है।

## हारूत व मारूत का मुख़्तसर क़िस्सा :

मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इन दो फ़िरिश्तों के मु-तअ़ल्लिक़ एक बहुत त़वील क़िस्सा नक़्ल फ़रमाया है जिस का ख़ुलासा येह है कि फ़रिश्तों ने जब तख़्लीक़े आदम पर सुवाल करते हुए बारगाहे रबूबिय्यत में अ़र्ज़ की : "اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ (پ۱، البقرة:۳۰) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** क्या ऐसे को नाइब करेगा जो इस में फ़साद फैलाएगा और ख़ूं रेज़ियां करेगा।" और येह कहते हुए अपनी ता'रीफ़ की : "وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ (پ۱، البقرة:۳۰) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और हम तुझे सराहते हुए तेरी तस्बीह़ करते और तेरी पाकी बोलते हैं।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें ऐसी आज़्माइश में मुब्तला फ़रमाया जिस ने उन के दा'वों को रद कर दिया। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हारूत और मारूत नामी दो फ़रिश्तों में शह्वत रख दी और

1 ......اللباب فی علوم الکتاب، البقرة،تحت الآية ۱۰۲،ج۲،ص۳۴۴، مفهوماً۔



www.dawateislami.net

उन्हें हाकिम बना कर ज़मीन में उतार दिया, वहां उन्हें ज़हरा नामी औरत के ज़रीए आज़्माया गया वोह उन के सामने इन्तिहाई ख़ूब सूरत कर के लाई गई। जब वोह उस के साथ बुराई के मुर-तकिब हो गए तो उन्हें दुन्या व आख़िरत के अ़ज़ाब में से एक का इख़्तियार दिया गया। उन्हों ने दुन्या का अ़ज़ाब इख़्तियार किया, अब उन्हें क़ियामत तक अ़ज़ाब दिया जाता रहेगा।

एक गुरौहे उ़-लमा ने इस वाक़िए के सुबूत का इन्कार किया जब कि ऐसा नहीं जैसा उन्हों ने गुमान किया बल्कि इस की सिह़ह़त में ह़दीस वारिद है और अ़न्क़रीब शराब के बयान में वोह ह़दीसे पाक आएगी जिस में येह है कि जब इन के सामने औ़रत लाई गई और इन्हों ने उस के नफ़्स पर क़ुदरत चाही तो उस ने इन्हें शिर्क का हुक्म दिया लेकिन इन्हों ने इन्कार कर दिया, फिर उस ने (एक जान को) क़त्ल करने का कहा तो इन्हों ने इस से भी इन्कार कर दिया, इस के बा'द उस ने शराब पीने का कहा तो इन्हों ने शराब पी ली, फिर उस के साथ बुराई के मुर-तकिब हुए और क़त्ल भी कर डाला, जब इन्हें इन के इस फ़े'ल की ख़बर दी गई तो इन्हों ने अपने लिये दुन्या का अ़ज़ाब इख़्तियार कर लिया जैसा कि मज़्कूर हुवा।

## मज़्कूरा वाक़िए पर ए'तिराज़ात और उन के जवाबात :

इस वाक़िए का इन्कार करने वालों में एक ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़्रुद्दीन मुह़म्मद बिन उ़मर राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی भी हैं, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस वाक़िए की रिवायत फ़ासिद और मरदूद है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब में इस पर कोई दलील नहीं बल्कि क़ुरआने मजीद की कई आयाते मुबा-रका कई वुजूहात की बिना पर इस की तरदीद करती हैं :

**पहला ए'तिराज़ :** फ़रिश्ते हर गुनाह से मा'सूम हैं।

**जवाब :** फ़रिश्तों की इ़स्मत उस वक़्त तक बर क़रार रहती है जब तक वोह फ़रिश्तों की सिफ़त पर रहें लेकिन जब वोह इन्सानों की सिफ़ात में तब्दील हो जाएं तो वोह इ़स्मत का मह़ल नहीं रहते और मज़्कूरा ह़दीसे पाक से मा'लूम होता है कि **हारूत** व **मारूत** का वाक़िआ़ एक मिसाल है न कि ह़क़ीक़त, इस लिये कि उन के सामने ज़हरा को एक औ़रत की सूरत में लाया गया और फिर उन के साथ जो हुवा इस का बयान गुज़र चुका है और इस से मक़्सूद उन के इस सुवाल का जवाब देना था :

اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَؕ
(پ ۱، البقرۃ:۳۰)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** क्या ऐसे को नाइब करेगा जो इस में फ़साद फैलाएगा और ख़ूं रेज़ियां करेगा और हम तुझे सराहते हुए, तेरी तस्बीह़ करते और तेरी पाकी बोलते हैं।



www.dawateislami.net

**दूसरा ए'तिराज़ :** येह गुमान फ़ासिद है कि उन्हें दो अ़ज़ाबों के दरमियान इख़्तियार दिया गया, बल्कि येह कहना ज़ियादा बेहतर है कि उन्हें तौबा और अ़ज़ाब के दरमियान इख़्तियार दिया गया क्यूं कि जो तमाम उ़म्र शिर्क करता रहे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे भी तौबा और अ़ज़ाब के दरमियान इख़्तियार देता है तो उन दोनों को ब द-र-जए औला येह इख़्तियार देना चाहिये।

**जवाब :** उन पर सज़ा में सख़्ती करते हुए ऐसा किया गया और उन्हें शिर्क करने वाले पर क़ियास नहीं किया जाएगा क्यूं कि कुरआनो सुन्नत से साबित उमूर में राय की गुन्जाइश नहीं होती।

**तीसरा ए'तिराज़ :** सब से अ़जीब बात येह है कि वोह लोगों को अ़ज़ाब की ह़ालत में भी जादू सिखा रहे हैं और जादू की त़रफ़ बुला रहे हैं ह़ालां कि उन्हें इसी की वज्ह से सज़ा दी जा रही है।

**जवाब :** इस में भी कोई तअ़ज्जुब नहीं क्यूं कि इस बात का कोई मानेअ़ मौजूद नहीं कि कुछ लम्ह़ात के लिये उन से अ़ज़ाब उठा लिया जाता हो और वोह उसी वक़्त में लोगों को जादू सिखाते हों, इस लिये कि उन का नुज़ूल एक तो अपनी आज़्माइश के लिये हुवा और इस की वज्ह ज़िक्र हो चुकी है और दूसरा लोगों की आज़्माइश के लिये हुवा ताकि वोह उन से जादू सीखें।

## नुज़ूले हारूत व मारूत की ह़िक्मतें :

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि हारूत व मारूत को नाज़िल करने की कई ह़िक्मतें हैं :

## पहली ह़िक्मत :

उस ज़माने में जादूगर बहुत ज़ियादा थे और उन्हों ने नबुव्वत की अ़जीबो ग़रीब अक़्साम घड़ रखी थीं और वोह नबुव्वत का दा'वा करते और जादू के ज़रीए लोगों को चेलेन्ज करते। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने लोगों को जादू सिखाने के लिये दो फ़रिश्ते उतारे ताकि वोह जादू सीख कर उन नबुव्वत के झूटे दा'वेदार जादूगरों से टक्कर लेने के क़ाबिल हो जाएं। और येह मक़्सद वाज़ेह़ है।

## दूसरी ह़िक्मत :

मो'जिज़ा के जादू के मुख़ालिफ़ होने का इ़ल्म दोनों की माहिय्यत के इ़ल्म पर मौक़ूफ़ है, लोग चूंकि जादू की माहिय्यत से ना वाक़िफ़ थे लिहाज़ा उन के लिये जादू की ह़क़ीक़त की पहचान मुश्किल थी। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस मक़्सद के लिये जादू की माहिय्यत की



www.dawateislami.net

पहचान कराने के लिये इन दोनों फ़रिश्तों को भेजा।

## तीसरी हिक्मत :

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मनों में जुदाई डालने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दोस्तों के दरमियान महब्बत डालने वाला जादू उन की शरीअ़त में जाइज़ या मुस्तहब था, इसी मक़्सद के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ऐसे जादू की ता'लीम के लिये इन दो फ़रिश्तों को भेजा, लिहाज़ा लोगों ने इन से येह जादू सीखा मगर उसे बुरे कामों, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दोस्तों के दरमियान जुदाई डालने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मनों के दरमियान महब्बत डालने के लिये इस्ति'माल किया।

## चौथी हिक्मत :

हर चीज़ का इल्म हासिल करना अच्छा है और जब जादू मम्नूअ़ है तो इस का मा'लूम और मु-तसव्वर होना ज़रूरी है वरना इस से मन्अ़ न किया जाता।

## पांचवीं हिक्मत :

शायद ! जिन्नों के पास जादू की ऐसी अक़्साम थीं जिन की मिस्ल लाने पर इन्सान क़ादिर न था तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन फ़िरिश्तों को भेजा ताकि इन्सान इन से जादू सीख कर जिन्नों का मुक़ाबला कर सके।

## छटी हिक्मत :

लोगों को शर-ई अह़काम का पाबन्द करने में सख़्ती करने के लिये इन फ़रिश्तों को भेजा इस ए'तिबार से कि जब इन्सान कोई ऐसा इल्म सीख लेगा जिस के ज़रीए वोह दुन्यवी लज़्ज़ात तक पहुंच सकता हो फिर उसे उस के इस्ति'माल से रोक दिया जाए तो येह इन्तिहाई मशक़्क़त है जिस पर वोह मज़ीद सवाब का ह़क़दार होगा।

बयान कर्दा वुजूहात से साबित हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जादू सिखाने के लिये फ़रिश्तों को भेज सकता है।(1)

## नुज़ूले हारूत व मारूत का ज़माना :

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "येह वाक़िआ़ ह़ज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ज़माने में पेश आया।"

आयते मुबा-रका में लफ़्ज़े "**فِتْنَةٌ**" से मुराद ऐसी महब्बत है जिस के ज़रीए ह़क़ व

1 ......اللباب فی علوم الکتاب، البقرۃ،تحت الآیۃ ۱۰۲، ج۲،ص۳۴۵۔



www.dawateislami.net

बातिल और मुतीअ़ व ना फ़रमान में फ़र्क़ किया जा सके।

**हारूत** व **मारूत** जादू सिखाने से पहले नसीहत के लिये ''اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ'' कहते या'नी वोह कहते कि हम तुझे येह समझा देते हैं कि अगर्चे जादू सिखाने से मक़्सूद जादू और मो'जिज़े में फ़र्क़ बताना है लेकिन मुम्किन है कि येह तुम्हें ख़राबियों और गुनाहों की त़रफ़ ले जाए, लिहाज़ा इसे ना जाइज़ कामों के लिये इस्ति'माल करने से इज्तिनाब करना।[1]

इस में मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इख़्तिलाफ़ है कि इस फ़रमाने ख़ुदा वन्दी में मियां बीवी में जुदाई डालने से क्या मुराद है ? एक क़ौल येह है कि जुदाई डालने का मत़लब येह है कि जब सेह़्र ज़दा येह ए'तिक़ाद रखे कि इस जुदाई में मुअस्सिर (ह़क़ीक़ी) जादू है और येह ए'तिक़ाद कुफ़्र है और जब इस ने कुफ़्र किया तो इस की बीवी इस से जुदा हो गई। एक क़ौल येह है कि जादूगर मुलम्मअ़ साज़ी, धोका देही और ह़ीलों से मियां बीवी में जुदाई डालते थे और यहां दीगर बुराइयों पर झिड़क्ने के लिये सिर्फ़ मियां बीवी में जुदाई डालने को ज़िक्र किया और दीगर बातों को ज़िक्र न किया जो वोह सीखते थे और इन्सान को दीगर क़रीबी रिश्तेदारों की निस्बत अपनी बीवी से ज़ियादा मह़ब्बत होती है, लिहाज़ा जब जादू के ज़रीए शिद्दते मह़ब्बत के बा वुजूद मियां बीवी में जुदाई हो सकती है तो दीगर रिश्तेदारों में ब द-र-जए औला हो सकती है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आ़लीशान ''وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ'' मुन्दरिजए बाला बात पर एक दलील है क्यूं कि यहां ज़रर को मुत़्लक़ ज़िक्र फ़रमाया और इसे मियां बीवी में जुदाई पर मुन्ह़सिर न किया पस येह इस बात पर दलील है कि मियां बीवी के दरमियान जुदाई डालने को ख़ास त़ौर पर इस लिये ज़िक्र किया है क्यूं कि येह सब से ज़ियादा नुक़्सान देह मुआ़-मला है।[2]

## इज़्न का मफ़्हूम :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़्रुद्दीन मुह़म्मद बिन उ़मर राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : ''दर ह़क़ीक़त इज़्न हुक्म में होता है जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जादू का हुक्म नहीं देता क्यूं कि उस ने तो इस की मज़म्मत बयान फ़रमाई है, लिहाज़ा अगर वोह इस का हुक्म देता तो इस की मज़म्मत न करता। पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान ''اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ'' की तावील

1 ......اللباب فی علوم الکتاب، البقرة،تحت الآیة۱۰۲، ج۲،ص۳۴۵،۳۴۶،۳۴۷۔

2 ......اللباب فی علوم الکتاب، البقرة،تحت الآیة۱۰۲، ج۲،ص۳۴۹۔



www.dawateislami.net

करना ज़रूरी है। इस के मु-तअ़ल्लिक़ कई अक़्वाल हैं :

**(1)**...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''इज़्न से मुराद तख़्लिया है या'नी जब इन्सान जादू करता है तो अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे तो उसे रोक दे और चाहे तो उसे जादू का नुक़्सान उठाने के लिये छोड़ दे।''

**(2)**...... ह़ज़रते सय्यिदुना असम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''इज़्न से मुराद इ़ल्म है, क्यूं कि अज़ान और इज़्न का मा'ना आगाह करना है।''

**(3)**...... इज़्न का मा'ना तख़्लीक़ है क्यूं कि जादू करते वक़्त ह़ासिल होने वाला नुक़्सान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पैदा करने से ही होता है।

**(4)**...... अगर मियां बीवी के दरमियान जुदाई डालने को कुफ़्र क़रार दिया जाए तो इज़्न से मुराद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हुक्म है, क्यूं कि इसे कुफ़्र क़रार देना एक शर-ई हुक्म है जो हुक्मे इलाही से ही हो सकता है।[1]

''**خَلَاقٍ**'' से मुराद ह़िस्सा है और इस के ज़िक्र करने से मक़्सूद जादूगरों की इन्तिहाई मज़म्मत और इन के लिये क़बीह़ अ़ज़ाब है क्यूं कि इस से ज़ियादा ख़सारे वाला, बुरा, ह़क़ीर और ज़लील कोई नहीं हो सकता जिस के लिये आख़िरत की ने'मतों में कोई ह़िस्सा न हो। इसी वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस के बा'द फ़रमाया : ''**وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖۤ اَنْفُسَهُمْ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۲﴾**'' या'नी यहूदियों ने अपने आप को जादू के बदले बेच डाला, अगर वोह इस की इन्तिहाई मज़म्मत जानते तो इस के बदले अपनी जानें न बेचते। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसी आयते मुबा-रका से पहले ''**وَلَقَدْ عَلِمُوْا**'' फ़रमा कर उन के लिये इस का इ़ल्म साबित फ़रमाया और आयत के आख़िर में ''**لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۲﴾**'' फ़रमा कर उन से इस के इ़ल्म की नफ़ी फ़रमा दी क्यूं कि दूसरे फ़रमान का मा'ना येह है कि अगर वोह इ़ल्म से इस की मज़म्मत जानते तो उस पर अ़मल न करते गोया वोह इस से अ़ला-ह़दा हो जाते। या फिर दूसरे फ़रमान से मुराद अ़क़्लो फ़ह्म रखना है क्यूं कि इ़ल्म अ़क़्ल का नतीजा है, लिहाज़ा जब अस्ल की नफ़ी होगी तो उस के नतीजे की भी नफ़ी हो जाएगी और इस ए'तिबार से इ़ल्म का पाया जाना इस के न पाए जाने की त़रह़ हो जाएगा कि वोह इस से नफ़्अ़ ह़ासिल न कर सकेंगे जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुफ़्फ़ार को अन्धा, बहरा और गूंगा कहा है क्यूं कि वोह अपने ह़वास (या'नी आंख, कान और ज़बान) से नफ़्अ़ ह़ासिल नहीं कर सकते। या दोनों (या'नी **عَلِمُوْا** और **يَعْلَمُوْنَ**) के मु-तअ़ल्लिक़ में फ़र्क़ है या'नी वोह आख़िरत में इस का

[1]......التفسير الكبير، البقرة، تحت الآية ١٠٢، ج١، ص٦٣٢۔



www.dawateislami.net

ख़सारा जान लेंगे और उन्हों ने दुन्या में इस का नफ़्अ़ न जाना। येह तमाम तफ़्सील इस सूरत में है जब कि عَلِمُوْا और يَعْلَمُوْنَ का फ़ाइल एक हो जैसा कि ज़ाहिर है और अगर फ़ाइल मुख़्तलिफ़ बनाया जाए जैसे ''عَلِمُوْا'' में ज़मीरे जम्अ़ ''مَلَكَيْن या شَيَاطِيْن'' के लिये हो और ''شَرَوْا'' और इस के मा बा'द दूसरे अफ़्आ़ल की ज़मीरे जम्अ़ यहूद के लिये हो तो इस में कोई इश्काल नहीं।

इस आयते मुबा-रका से जादू, इस की बुन्याद, इस की ह़क़ीक़त व अक़्साम, इस का ज़रर व क़ुब्ह़ और इस पर मुरत्तब शदीद वईदों के साबित होने के बा वुजूद इस को सरकश शैत़ान या ज़ालिम मु-तकब्बिर ही इख़्तियार करेगा।

## जादू की मज़म्मत में अह़ादीसे मुबा-रका :

जादू की मज़म्मत में कसीर अह़ादीसे मुबा-रका वारिद हुईं, जिन में चन्द येह हैं :

﴾8﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''7 हलाक करने वाली चीज़ों से बचो।'' लोगों ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह क्या हैं ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''(1)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना (2)...... जादू करना (3)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा जान को नाह़क़ क़त्ल करना (4)...... सूद खाना (5)...... यतीम का माल खाना (6)...... जंग के दिन भाग जाना और (7)...... सीधी सादी पाक दामन मोमिन औ़रतों पर ज़िना की तोहमत लगाना।''(1)

﴾9﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अहले यमन की त़रफ़ एक ख़त़ लिखा जिस में फ़राइज़, सुन्नतों, दिय्यतों और ज़कात के अह़काम थे, नीज़ उस में येह भी तह़रीर था : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बड़े गुनाह येह हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, किसी मुसल्मान को नाह़क़ क़त्ल करना, जंग के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह से भाग जाना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना, पाक दामन औ़रतों पर तोहमत लगाना, जादू सीखना, सूद खाना और यतीम का माल खाना।''(2)

﴾10﴿...... एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत मआब में अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! कबीरा गुनाह कितने हैं ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''कबीरा गुनाह 9 हैं, इन

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الوصایا، باب فی قول اللّٰہ تعالی: اِنَّ الَّذِیْنَ یَاْکُلُوْنَ اَمْوَالَ......الخ، الحدیث: ۲۷۶۶، ص۲۲۲۔

2 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب التاریخ، باب کتب النبی، الحدیث: ۶۵۲۵، ج۸، ص۱۸۰، ۱۸۱۔



www.dawateislami.net

में सब से बड़े (येह हैं :) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, मोमिन को नाहक़ क़त्ल करना, जंग से भाग जाना, पाक दामन औ़रत पर तोहमत लगाना, जादू करना, यतीम का माल खाना और सूद खाना।''(1)

﴾11﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जिस ने गिरह लगा कर उस में फूंक मारी उस ने जादू किया और जिस ने जादू किया उस ने शिर्क किया और जिस ने कुछ (या'नी ता'वीज़) लटकाया तो वोह उसी के सिपुर्द किया जाएगा(2)।''(3)

﴾12﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबिल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام रात की एक घड़ी अपने घर वालों को बेदार करते और इर्शाद फ़रमाते : ''ऐ आले दावूद ! उठो और नमाज़ पढ़ो क्यूं कि इस घड़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जादूगर और टेक्स लेने वाले के इ़लावा हर एक की दुआ़ क़बूल फ़रमाता है।''(4)

﴾13﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त

---

1 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۰۱، ج۱۷، ص۴۸۔

2 ...... मज़्कूरा वईद ना जाइज़ अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल ता'वीज़ात लटकाने वालों के मु-तअ़ल्लिक़ है जब कि ऐसे ता'वीज़ात इस्ति'माल करना जाइज़ है जो आयाते क़ुरआनिया, अस्माए इलाहिय्यह या दुआ़ओं पर मुश्तमिल हों। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَوَّل (मु-तवफ़्फ़ा 241 हि.) येह रिवायत नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अपने बालिग़ बच्चों को सोते वक़्त येह कलिमात पढ़ने की तल्क़ीन फ़रमाते : ''بِسْمِ اللّٰہِ اَعُوْذُ بِکَلِمَاتِ اللّٰہِ التَّامَّۃِ مِنْ غَضَبِہٖ وَعِقَابِہٖ وَشَرِّ عِبَادِہٖ وَمِنْ ھَمَزَاتِ الشَّیَاطِیْنِ وَاَنْ یَّحْضُرُوْنَ۔'' और उन में से जो ना बालिग़ होते और याद न कर सकते तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه मज़्कूरा कलिमात लिख कर उन का ता'वीज़ बच्चों के गले में डाल देते। (المسند للامام احمد بن حنبل، الحدیث: ۶۷۰۸، ج۲، ص۶۰۰) दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1197 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**बहारे शरीअ़त**'' जिल्द सिवुम सफ़्ह़ा 652 पर है : ''गले में ता'वीज़ लटकाना जाइज़ है, जब कि वोह ता'वीज़ जाइज़ हो या'नी आयाते क़ुरआनिया या अस्माए इलाहिय्यह या अदइय्यह से ता'वीज़ किया गया हो और **बा'ज़ ह़दीसों में जो मुमा-न-अ़त आई है इस से मुराद वोह ता'वीज़ात हैं जो ना जाइज़ अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल हों, जो ज़मानए जाहिलिय्यत में किये जाते थे।** इसी त़रह़ ता'वीज़ात और आयात व अह़ादीस व अदइय्यह (दुआ़एं) रिकाबी में लिख कर मरीज़ को ब निय्यते शिफ़ा पिलाना भी जाइज़ है। जुनुब (या'नी जिस पर जिमाअ़ या एह़तिलाम या शह्वत के साथ मनी ख़ारिज होने की वज्ह से ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो गया हो) व ह़ाइज़ (ह़ैज़ वाली) व नु-फ़सा (निफ़ास वाली) भी ता'वीज़ात को गले में पहन सकते हैं, बाज़ू पर बांध सकते हैं जब कि ता'वीज़ात ग़िलाफ़ में हों।''

3 ......سنن النسائی، کتاب المحاربۃ، باب الحکم فی السحرۃ، الحدیث: ۴۰۸۴، ص۲۳۵۵۔

4 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث عثمان بن ابی العاص الثقفی، الحدیث: ۱۶۲۸۱، ج۵، ص۴۹۲۔



www.dawateislami.net

बयान है : ''3 बातें ऐसी हैं कि अगर किसी शख़्स में इन में से एक भी न पाई जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के चाहता है उस के इलावा गुनाह बख़्श देता है। (वोह येह हैं :) (1)...... जो इस ह़ाल में मरे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक न ठहराता हो (2)...... जादूगरों के पीछे चलने वाला जो जादूगर न हो (ताकि उन से जादू सीखे फिर लोगों को सिखाए और जादू करे) और (3)...... वोह अपने भाई से कीना न रखता हो।''(1)

﴿14﴾...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''शराब का आ़दी, जादू पर यक़ीन रखने वाला और क़त़ए़ रेह़्मी करने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा।''(2)

﴿15﴾...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ बयान है : ''तीन शख़्स जन्नत में दाख़िल न होंगे : ''शराब का आ़दी, क़त़ए़ तअ़ल्लुक़ी करने वाला और जादू की तस्दीक़ करने वाला (या'नी इसे सह़ीह़ कहने वाला)।''(3)

## तम्बीह 2 :

मैं ने शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना जलाल बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِى की त़रह़ मज़्कूरा 4 गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार किया है। इन में से बा'ज़ क़ुरआने ह़कीम की आयाते बय्यिनात से और बा'ज़ अह़ादीसे मुबा-रका से सरा-ह़तन साबित हैं और येह गुज़श्ता बह़्स से वाज़ेह़ है बल्कि कई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने फ़रमाया कि येह तमाम गुनाह कुफ़्र हैं। (अगर कुफ़्र न भी हों तो) कम अज़ कम कबीरा तो होंगे ख़ुसूसन जब कि इन के मु-तअ़ल्लिक़ शदीद वई़दात और सख़्त तम्बीहात वारिद हैं जैसा कि आयते मुबा-रका पर मज़्कूरा तफ़्सीली बह़्स से ज़ाहिरो बाहिर है।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्लो करम से हमें अपनी नाराज़ी व ना फ़रमानी से मह़फ़ूज़ फ़रमाए। (आमीन)

---

(1)......المعجم الكبير،الحديث:۱۳۰۰۴،ج۱۲،ص۱۸۸۔

(2)......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان ،كتاب الكهانة والسحر ،الحديث :۶۱۰۴،ج۷،ص۶۴۸،دون قوله:رحم۔

(3)......المسند للامام احمد بن حنبل ،حديث ابى موسى الاشعرى ،الحديث :۱۹۵۸۶،ج۷،ص۱۳۹۔



www.dawateislami.net

**कबीरा नम्बर 324 : काहिन बनना**

**कबीरा नम्बर 325 : सितारा शनास बनना**

**कबीरा नम्बर 326 : फ़ाल निकालना**

**कबीरा नम्बर 327 : परिन्दों को उड़ा कर शुगून लेना**

**कबीरा नम्बर 328 : इ़ल्मे नुजूम सीखना**

**कबीरा नम्बर 329 : ख़त़ खींच कर शुगून लेना**

**कबीरा नम्बर 330 : काहिन के पास जाना**

**कबीरा नम्बर 331 : सितारा शनास के पास जाना**

**कबीरा नम्बर 332 : पेशिन गोई करने वाले के पास जाना**

**कबीरा नम्बर 333 : नुजूमी के पास जाना**

**कबीरा नम्बर 334 : फ़ाल निकलवाने के लिये फ़ाल निकालने वाले के पास जाना**

**कबीरा नम्बर 335 : ख़त़ खिंचवाने के लिये ख़त़ खींचने वाले के पास जाना**

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ وَ الْبَصَرَ وَ الْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ﴿۳۶﴾ (پ۱۵، بنی اسرائیل:۳۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और उस बात के पीछे न पड़ जिस का तुझे इ़ल्म नहीं बेशक कान और आंख और दिल इन सब से सुवाल होना है।

या'नी अश्या में से किसी शै के मु-तअ़ल्लिक़ कोई ऐसी बात न कह जिस का तुझे इ़ल्म नहीं क्यूं कि तेरे ह़वास (या'नी कान, आंख वग़ैरा) से इस के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा और क़ुरआने मजीद में एक दूसरे मक़ाम पर फ़रमाने बारी तआ़ला है :

عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ (پ۲۹، الجن:۲۶،۲۷)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ग़ैब का जानने वाला तो अपने ग़ैब पर किसी को मुसल्लत़ नहीं करता सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के।

इस का मत़लब येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही आ़लिमुल ग़ैब है और इस पर अपनी



www.dawateislami.net

मख़्लूक़ में से किसी को आगाह नहीं फ़रमाता सिवाए उस के जिसे अपनी रिसालत के लिये पसन्द कर ले, वोह अपने ग़ैब में से जिस पर चाहता है, अपने रसूल को आगाह फ़रमा देता है।

एक क़ौल के मुताबिक़ اِلَّا हर्फ़े इस्तिस्ना के बा'द वाला कलाम इस्तिस्ना मुन्क़तअ़ है तो मा'ना येह होगा : ''मगर जिसे अपनी रिसालत के लिये पसन्द फ़रमाता है उस के आगे पीछे (फ़रिश्तों का) पहरा मुक़र्रर फ़रमा देता है।''

## अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ السَّلَام का इल्मे ग़ैब :

पहला मा'ना ही सह़ीह़ है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मुग़ीबाते कसीरा (या'नी बे शुमार ग़ैबी बातों) पर आगाह फ़रमाया बल्कि उन का वारिस बनाया मगर वोह मुग़ीबाते कसीरा इल्मे इलाही के मुक़ाबले में जुज़्इय्याते क़लीला (या'नी थोड़ी सी जुज़्इय्यात) हैं, मुत्लक़ तौर पर कुल्ली व जुज़्ई मुग़ीबात के इल्म में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही मुन्फ़रिद है[1]।

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने बद शुगूनी की या उस के लिये बद शुगूनी की गई या जिस ने कहानत की या जिस के लिये कहानत की गई या जिस ने जादू किया या जिस के लिये जादू किया गया और जो काहिन के पास गया और उस की बात की तस्दीक़ की तो उस ने उस का इन्कार किया जो (मुझ) मुह़म्मद पर नाज़िल किया गया।''[2]

﴾2﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : ''जो किसी काहिन के पास गया और उस की बात की तस्दीक़ की तो वोह उस से बरी हो गया जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने (मुझ) मुह़म्मद पर नाज़िल फ़रमाया और जो काहिन के पास गया मगर उस की तस्दीक़ न की तो उस की 40 रातों की नमाज़ क़बूल नहीं की जाती।''[3]

---

1...... आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे आ'ज़म, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن उ़लूमे अम्बिया व मुर-सलीन عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मु-तअ़ल्लिक़ अहले सुन्नत व जमाअ़त का अ़क़ीदा बयान फ़रमाते हैं : ''बिला शुबा ह़क़ येही है कि तमाम अम्बिया व मुर-सलीन व मलाइकए मुक़र्रबीन व अव्वलीनो आख़िरीन के मज्मूअ़ए उ़लूम मिल कर इल्मे बारी عَزَّوَجَلَّ से वोह निस्बत नहीं रख सकते जो एक बूंद के करोड़वें ह़िस्से को करोड़ों समुन्दरों से है।'' (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 14, स. 377)

2......البحرالزخارالمعروف بمسند البزار،مسند عمران بن حصين،الحديث : ٣٥٧٨،ج٩،ص٥٢۔

3......المعجم الاوسط،الحديث : ٦٦٧٠،ج٥،ص٨٧،"ليلةً"بدله"يوماً"۔



www.dawateislami.net

﴾3﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो काहिन के पास आया और उस से किसी चीज़ के बारे में पूछा तो 40 रातों तक उस की तौबा रोक दी जाती है और अगर उस ने उस की तस्दीक़ की तो कुफ़्र किया।''(1)

﴾4﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''वोह शख़्स बुलन्द द-रजात को नहीं पा सकता जिस ने कहानत की या तीरों के ज़रीए फ़ाल निकाली या बद शुगूनी की वज्ह से सफ़र से वापस लौट आया।''(2)

﴾5﴿...... हुज़ूरे नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ बयान है : ''जो अ़र्राफ़ (या'नी नुजूमी) के पास गया और उस से किसी चीज़ के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा और उस की तस्दीक़ की तो उस की 40 दिन की नमाज़ क़बूल नहीं की जाती।''(3)

﴾6﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जो किसी नुजूमी या काहिन के पास गया और उस के क़ौल की तस्दीक़ की तो उस ने उस का इन्कार किया जो (मुझ) मुह़म्मद पर नाज़िल किया गया।''(4)

﴾7﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ''जो किसी नुजूमी या काहिन या जादूगर के पास गया और उस से कोई बात पूछी और उस की बातों की तस्दीक़ की तो उस ने उस का इन्कार किया जो मुह़म्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर नाज़िल किया गया।''(5)

﴾8﴿...... ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो किसी नुजूमी या जादूगर या काहिन के पास गया और उस की बातों पर यक़ीन किया तो उस ने उस का इन्कार किया जो (मुझ) मुह़म्मद पर नाज़िल किया गया।''(6)

﴾9﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने इ़ल्मे नुजूम की कोई बात सीखी उस ने जादू का एक ह़िस्सा सीखा, जिस ने

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث: ١٦٩، ج٢٢، ص٧٩ـ

2 ......مجمع الزوائد، كتاب الطب، باب فيمن اتى كاهنا اوعرافا، الحديث: ٨٤٨٧، ج٥، ص٢٠٣ـ

3 ......صحيح مسلم، كتاب السلام، باب التحريم الكهانةواتيان الكهان، الحديث: ٥٨٢١، ص١٠٧٤ـ

المسند للامام احمد بن حنبل، حديث بعض ازواج النبى، الحديث: ٢٣٢٨٢، ج٩، ص٧٩ـ

4 ......المستدرک، كتاب الايمان، با ب التشديد فى اتيان الكاهن و تصديقه، الحديث: ١٥، ج١، ص١٥٤ـ

5 ......مسند ابى يعلى الموصلى، مسند عبد الله بن مسعود، الحديث: ٥٣٨٦، ج٤، ص٣٨٢ـ

6 ......المعجم الكبير، الحديث: ١٠٠٠٥، ج١٠، ص٧٦، دون قوله: ساحراًـ



www.dawateislami.net

(इल्मे नुजूम में) इज़ाफ़ा किया उस ने (जादू में) इज़ाफ़ा किया।"[1]

﴾10﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ बयान है : "ख़त़ खींचना, फ़ाल निकालना और परिन्दे उड़ा कर शुगून लेना **जिब्त** में से है।"[2]

**जिब्त** से मुराद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा हर वोह चीज़ है जिस की इबादत की जाए।

## तम्बीह :

मज़्कूरा गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है, इन में से अक्सर के मु-तअ़ल्लिक़ मज़्कूरा सरीह़ अह़ादीस वारिद हैं जब कि बक़िय्या को इन्ही पर क़ियास किया गया है जो कि वाज़ेह़ है क्यूं कि तमाम में एक ही चीज़ का लिह़ाज़ रखा गया है।

## काहिन की ता'रीफ़ :

काहिन से मुराद वोह शख़्स है जो बा'ज़ पोशीदा बातें बताता है जिन में से कुछ सह़ीह़ और अक्सर ग़लत़ होती हैं और गुमान करता है कि येह बातें उसे जिन्न बताता है। बा'ज़ ने कहानत के मु-तअ़ल्लिक़ वज़ाह़त की है कि इस से मुराद किसी का ज़मानए मुस्तक़्बिल की पोशीदा बातों के मु-तअ़ल्लिक़ आस्मानी बातें बता कर इल्मे ग़ैब जानने का दा'वा करना और येह गुमान करना कि येह बातें उसे जिन्न बताता है।

## अ़र्राफ़ की ता'रीफ़ :

बा'ज़ के नज़्दीक अ़र्राफ़ काहिन ही को कहते हैं लेकिन गुज़श्ता ह़दीसे मुबा-रका के येह अल्फ़ाज़ "عَرَّافًا اَوْ كَاهِنًا" इस बात को रद करते हैं और एक क़ौल के मुताबिक़ इस से मुराद जादूगर है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू मुह़म्मद ह़ुसैन बिन मस्ऊ़द ब-ग़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 516 हि.) फ़रमाते हैं : "अ़र्राफ़ वोह होता है जो ऐसे अस्बाब और मुक़द्दमात के ज़रीए़ उमूरे ग़ैबिया जानने का दा'वा करता है जिन के ज़रीए़ वोह उन उमूर के वाक़ेअ़ होने की जगहों पर इस्तिदलाल करता है जैसे चोरी किया हुवा माल, जिस ने चोरी किया और जहां से चोरी किया गया उस जगह की पहचान वग़ैरा।"

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام नुजूमी को भी काहिन कहते हैं।

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الکھانة والتطیر، باب فی النجوم، الحدیث: ۳۹۰۵، ص۱۵۱۰۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب الکھانة والتطیر، باب فی الخط وزجر الطیر، الحدیث: ۳۹۰۷، ص۱۵۱۰۔



www.dawateislami.net

## तर्क की ता'रीफ़

हज़रते सय्यिदुना अबू दावूद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "तर्क का मतलब येह है कि परिन्दों को अच्छी या बुरी फ़ाल लेने के लिये उड़ाना ताकि अगर वोह दाईं तरफ़ उड़ें तो अच्छा शुगून लेना और अगर बाईं तरफ़ उड़ें तो बुरा शुगून लेना।"

हज़रते सय्यिदुना इब्ने फ़ारिस رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "पेशीन गोई के लिये कंकरियां फेंकना भी कहानत की एक क़िस्म है।"

## इल्मे नुजूम :

इल्मे नुजूम मम्नूअ़ है जिस का जानने वाला मुस्तक़्बिल में पेश आ–मदा वाक़िआत जानने का दा'वा करता है जैसे बारिश का आना, बर्फ़बारी होना, हवा का चलना और अश्या की क़ीमतों का तब्दील होना वग़ैरा। वोह गुमान करते हैं कि वोह ख़ास ज़माने में सितारों के चलते हुए एक दूसरे से मिलने और जुदा होने और ज़ाहिर होने के ज़रीए इन बातों का इदराक कर लेते हैं। हालां कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस इल्म को अपने साथ ख़ास कर रखा है, इस के सिवा (अपने अन्दाज़े से) कोई नहीं जानता, पस जिस ने मज़्कूरा ज़राएअ़ से उस के जानने का दा'वा किया वोह फ़ासिक़ है बल्कि अक्सर अवक़ात येह इल्म कुफ़्र की तरफ़ ले जाता है।

जो येह कहे कि सितारों के यूं एक दूसरे से मिलने और जुदा होने को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मज़्कूरा चीज़ों (हवा, बारिश वग़ैरा) के वुक़ूअ़ पर अपनी जारी आदत की अलामत बनाया है मगर कभी ऐसा नहीं भी होता तो ऐसा कहने वाले पर कोई गुनाह नहीं। इसी तरह इल्मे नुजूम की मदद से मुशा–हदे के ज़रीए समझी जाने वाली बातों की ख़बर देना जिन के ज़रीए ज़वाल का वक़्त और क़िब्ले की सम्त मा'लूम की जाती है और पता चलता है कि कितना वक़्त गुज़र चुका है और कितना बाक़ी है तो इस में भी कोई गुनाह नहीं बल्कि येह **फ़र्ज़े किफ़ाया** है।

﴾11﴿...... हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ालिद जु–हनी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه बयान करते हैं कि एक बार हम ने फ़ज्र की नमाज़ सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ बारिश में पढ़ी जो रात से बरस रही थी। जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़ारिग़ हुए तो लोगों की तरफ़ मु–तवज्जेह हो कर इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ ने क्या इर्शाद फ़रमाया है ?" सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही बेहतर जानते हैं।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "मेरे कुछ बन्दे मुझ पर ईमान लाए और



www.dawateislami.net

कुछ ने मेरा इन्कार किया, पस जिस ने येह कहा कि हम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल और उस की रह़मत से बारिश हुई तो वोह मुझ पर ईमान लाने वाला और सितारों का इन्कार करने वाला है और जिस ने कहा कि हम पर फ़ुलां सितारे की वज्ह से बारिश हुई वोह मेरा मुन्किर और सितारों पर ईमान लाने वाला है।''(1)

## ह़दीसे पाक की वज़ाह़त :

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ''जो मज़्कूरा ह़दीसे पाक के अल्फ़ाज़ ''हम पर फ़ुलां सितारे की वज्ह से बारिश हुई'' से येह मुराद ले कि सितारा ही बारिश पैदा करने वाला और बरसाने वाला है तो वोह काफ़िर है। लेकिन अगर कोई येह कहे कि फ़ुलां सितारा मह़्ज़ बारिश नाज़िल होने की अ़लामत है जब कि बारिश नाज़िल करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही है तो वोह अगर्चे काफ़िर नहीं लेकिन ऐसा कहना मक्रूह है क्यूं कि येह जुम्ला कुफ़्रिय्या अल्फ़ाज़ में से है।''

﴾12﴿...... कुछ लोगों ने रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से काहिन या काहिनों के मु-तअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह लोग कोई चीज़ नहीं (या'नी सह़ीह़ नहीं)।'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह बा'ज़ अवक़ात हमें किसी चीज़ के बारे में बताते हैं और वोह सह़ीह़ होती है।'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''वोह अल्फ़ाज़ वह़्य के होते हैं जो जिन्न आस्मान से सुन कर अपने दोस्त के कान में डाल देता है और फिर वोह उस के साथ 100 झूट मिला देता है।''(2)

﴾13﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ग़ैब निशान है : ''फ़िरिश्ते बादलों में उतरते हैं और आस्मान में होने वाले फ़ैसले का आपस में ज़िक्र करते हैं तो शैत़ान चोरी छुपे सुन रहा होता है पस वोह उन की बातें सुन लेता है और काहिनों को बता देता है, फिर वोह अपनी त़रफ़ से उस के साथ 100 झूट मिला लेते हैं।''(3)

۞۞۞۞۞۞۞

1 ......صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب بيان كفر من قال مطرنا بالنوء، الحديث: ۲۳۱، ص۲۹۱ـ

2 ......صحيح البخارى، كتاب الطب، باب الكهانة، الحديث: ۵۷۶۲، ص۴۹۲ـ

3 ......صحيح البخارى، كتاب بدء الخلق، باب ذكر الملائكة، الحديث: ۳۲۱۰، ص۲۶۰، "فيوجه" بدله "فتوحيه"ـ



www.dawateislami.net

# ۱۔ باب البغاۃ

## कबीरा नम्बर 336 : बग़ावत करना

**( या'नी बिग़ैर किसी वज्ह के इमाम से बग़ावत करना अगर्चे वोह ज़ालिम हो या बग़ावत तो किसी वज्ह से हो मगर वोह वज्ह क़त्अ़न बातिल हो )**

## कुरआने मजीद में सरकशी की मज़म्मत :

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۴۲﴾

(پ۲۵، الشورٰى:۴۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** मुवा-ख़ज़ा तो उन्हीं पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़ सरकशी फैलाते हैं उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

## अह़ादीसे मुबा-रका में सरकशी की मज़म्मत :

﴾1﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी त़रफ़ वह्य फ़रमाई कि आ़जिज़ी इख़्तियार करो यहां तक कि न तो कोई किसी से बग़ावत करे और न ही कोई किसी पर फ़ख़्र करे।''(1)

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबी बक्रह رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''कोई गुनाह बग़ावत और क़त़्ए रेह़मी से ज़ियादा ह़क़ नहीं रखता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के मुर-तकिब को आख़िरत में सज़ा देने के साथ साथ दुन्या में भी जल्दी सज़ा दे।''(2)

﴾3﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिन कामों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की जाती है उन में से किसी की सज़ा बग़ावत के बराबर नहीं।''(3)

﴾4﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

---

1 ......صحیح مسلم ، کتاب الجنة ، باب الصفات التی یعرف بها......الخ ، الحدیث : ۷۲۱۰، ص۱۱۷۵۔

2 ......جامع الترمذی، ابواب صفة القیامة، باب فی عظم الوعید علی البغی وقطیعة الرحم ، الحدیث : ۲۵۱۱، ص۱۹۰۴۔

3 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی حفظ اللسان، الحدیث : ۴۸۴۲، ج۴، ص۲۱۷، بتغیرٍ قلیلٍ۔



www.dawateislami.net

"अगर एक पहाड़ दूसरे पहाड़ से बग़ावत करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बाग़ी को टुकड़े टुकड़े फ़रमा दे।"(1)

जब क़ारून लईन ने अपनी क़ौम पर सरकशी व ज़ियादती की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे ज़मीन में धंसा दिया जैसा कि कुरआने पाक में इस के मु-तअ़ल्लिक़ ख़बर दी :

اِنَّ قَارُوۡنَ کَانَ مِنۡ قَوۡمِ مُوۡسٰی فَبَغٰی عَلَیۡہِمۡ ۪ وَ اٰتَیۡنٰہُ مِنَ الۡکُنُوۡزِ مَاۤ اِنَّ مَفَاتِحَہٗ لَتَنُوۡٓاُ بِالۡعُصۡبَۃِ اُولِی الۡقُوَّۃِ ٭ اِذۡ قَالَ لَہٗ قَوۡمُہٗ لَا تَفۡرَحۡ اِنَّ اللّٰہَ لَا یُحِبُّ الۡفَرِحِیۡنَ ﴿۷۶﴾ وَ ابۡتَغِ فِیۡمَاۤ اٰتٰىکَ اللّٰہُ الدَّارَ الۡاٰخِرَۃَ وَ لَا تَنۡسَ نَصِیۡبَکَ مِنَ الدُّنۡیَا وَ اَحۡسِنۡ کَمَاۤ اَحۡسَنَ اللّٰہُ اِلَیۡکَ وَ لَا تَبۡغِ الۡفَسَادَ فِی الۡاَرۡضِ ؕ اِنَّ اللّٰہَ لَا یُحِبُّ الۡمُفۡسِدِیۡنَ ﴿۷۷﴾ قَالَ اِنَّمَاۤ اُوۡتِیۡتُہٗ عَلٰی عِلۡمٍ عِنۡدِیۡ ؕ اَوَ لَمۡ یَعۡلَمۡ اَنَّ اللّٰہَ قَدۡ اَہۡلَکَ مِنۡ قَبۡلِہٖ مِنَ الۡقُرُوۡنِ مَنۡ ہُوَ اَشَدُّ مِنۡہُ قُوَّۃً وَّ اَکۡثَرُ جَمۡعًا ؕ وَ لَا یُسۡـَٔلُ عَنۡ ذُنُوۡبِہِمُ الۡمُجۡرِمُوۡنَ ﴿۷۸﴾ فَخَرَجَ عَلٰی قَوۡمِہٖ فِیۡ زِیۡنَتِہٖ ؕ قَالَ الَّذِیۡنَ یُرِیۡدُوۡنَ الۡحَیٰوۃَ الدُّنۡیَا یٰلَیۡتَ لَنَا مِثۡلَ مَاۤ اُوۡتِیَ قَارُوۡنُ ۙ اِنَّہٗ لَذُوۡ حَظٍّ عَظِیۡمٍ ﴿۷۹﴾ وَ قَالَ الَّذِیۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ وَیۡلَکُمۡ ثَوَابُ اللّٰہِ خَیۡرٌ لِّمَنۡ اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًا ۚ وَ لَا یُلَقّٰہَاۤ اِلَّا الصّٰبِرُوۡنَ ﴿۸۰﴾ فَخَسَفۡنَا بِہٖ وَ بِدَارِہِ الۡاَرۡضَ ۟

(پ۲۰،القصص۷۶ تا ۸۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक क़ारून मूसा की क़ौम से था फिर उस ने उन पर ज़ियादती की और हम ने उस को इतने ख़ज़ाने दिये जिन की कुन्जियां एक ज़ोर आवर जमाअ़त पर भारी थीं, जब उस से उस की क़ौम ने कहा इतरा नहीं, बेशक **अल्लाह** इतराने वालों को दोस्त नहीं रखता और जो माल तुझे **अल्लाह** ने दिया है उस से आख़िरत का घर त़लब कर और दुन्या में अपना ह़िस्सा न भूल और एह़सान कर जैसा **अल्लाह** ने तुझ पर एह़सान किया और ज़मीन में फ़साद न चाह, बेशक **अल्लाह** फ़सादियों को दोस्त नहीं रखता। बोला : येह तो मुझे एक इ़ल्म से मिला जो मेरे पास है और क्या उसे येह नहीं मा'लूम कि **अल्लाह** ने उस से पहले वोह संगतें (क़ौमें) हलाक फ़रमा दीं जिन की कुव्वतें उस से सख़्त थीं और जम्अ़ इस से ज़ियादा और मुजरिमों से उन के गुनाहों की पूछ नहीं तो अपनी क़ौम पर निकला अपनी आराइश में, बोले वोह जो दुन्या की ज़िन्दगी चाहते हैं किसी त़रह़ हम को भी ऐसा मिलता जैसा क़ारून को मिला, बेशक इस का बड़ा नसीब है और बोले वोह जिन्हें इ़ल्म दिया गया ख़राबी हो तुम्हारी ! **अल्लाह** का सवाब बेहतर है उस के लिये जो ईमान लाए और अच्छे काम करे और येह उन्हीं को मिलता है जो सब्र वाले हैं तो हम ने उसे और उस के घर को ज़मीन में धंसा दिया।

(1) ......شعب الایمان للبیھقی،باب فی تحریم اعراض الناس، الحدیث : ۶۷۹۳،ج۵،ص۲۹۱۔



www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : क़ारून की बग़ावत येह थी कि उस ने एक फ़ाहिशा की उजरत मुक़र्रर की, कि वोह हर बुराई से मुनज़्ज़ह व मुबर्रह ज़ात हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर ज़िना की तोहमत लगाए। चुनान्चे, उस ने तोहमत लगाई। इस पर आप عَلَیْہِ السَّلَام ने उस औ़रत से क़सम ली तो उस ने बताया कि क़ारून ने मुझे इस पर उक्साया था। आप عَلَیْہِ السَّلَام जलाल में आ गए और उसे बद-दुआ़ दी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वह़्य फ़रमाई : "मैं ने ज़मीन को तेरी इत़ाअ़त करने का हुक्म दिया है पस तू इसे हुक्म दे।" आप عَلَیْہِ السَّلَام ने ज़मीन को हुक्म फ़रमाया : "ऐ ज़मीन ! इसे पकड़ ले।" तो ज़मीन ने उसे पकड़ लिया यहां तक कि उस का तख़्त ग़ाइब हो गया। जब क़ारून ने येह देखा तो आप عَلَیْہِ السَّلَام से रह़्म की दर-ख़्वास्त की लेकिन आप عَلَیْہِ السَّلَام ने ज़मीन को दोबारा फ़रमाया : "ऐ ज़मीन ! इसे पकड़ ले।" तो ज़मीन ने उसे पकड़ लिया यहां तक कि उस के दोनों क़दम ग़ाइब हो गए लेकिन आप عَلَیْہِ السَّلَام लगातार फ़रमाते रहे : "ऐ ज़मीन ! इसे पकड़ ले।" यहां तक कि ज़मीन ने उसे बिल्कुल ग़ाइब कर दिया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : "ऐ मूसा ! मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! अगर क़ारून मुझ से मदद त़लब करता तो मैं ज़रूर उस की मदद कर देता।" पस ज़मीन ने उसे सब से निचली ज़मीन की त़रफ़ धंसा दिया।

हज़रते सय्यिदुना समुरह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "क़ारून हर रोज़ इन्सान के क़द जितना धंसाया जाता है।"

जब उसे धंसा दिया गया तो येह कहा जाने लगा कि हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस के माल व अस्बाब और घर पर क़ब्ज़ा जमाने के लिये उस को हलाक कर दिया, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने 3 दिन बा'द उस के माल व अस्बाब और घर को भी धंसा दिया।

क़ारून की बग़ावत से मुराद उस का तकब्बुर है। एक क़ौल येह है कि उस का कुफ़्र है। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ उस के कपड़ों के एक बालिश्त लम्बे होने की वज्ह से येह कहा गया जब कि एक क़ौल येह भी है कि वोह फ़िरऔ़न का ख़ादिम था उस ने बनी इसराईल पर ज़ुल्म और ज़ियादती की थी।

## तम्बीह :

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام की तसरीह़ के मुत़ाबिक़ इसे कबीरा गुनाहों में



www.dawateislami.net

शुमार किया गया है लेकिन उन्हों ने मुत्लक़न बग़ावत को कबीरा गुनाह क़रार देते हुए फ़रमाया : ''पचासवां कबीरा गुनाह बग़ावत है।'' ह़ालां कि येह एक मुश्किल अम्र है। हमारे शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ''बेशक बग़ावत मज़म्मत का नाम नहीं क्यूं कि बाग़ी फ़ासिक़ नहीं होते, इसी वज्ह से मैं ने उ़न्वान में इसे मुक़य्यद करते हुए कहा : ''बिग़ैर किसी वज्ह के बग़ावत करना या बग़ावत तो किसी वज्ह से करना मगर वोह वज्ह क़त्अ़न बात़िल हो।''

इस सूरत में येह गुनाह कबीरा तब कहलाएगा जब येह ऐसे मफ़ासिद का सबब बने जिन का नुक़्सान ना क़ाबिले शुमार हो और न ही उस के शर की आग बुझ सकती हो और बाग़ियों के पास बग़ावत का कोई उ़ज़्र भी न हो। लेकिन अगर कोई शख़्स किसी वज्ह से बग़ावत कर रहा हो तो उस का हुक्म इस के बर अ़क्स है क्यूं कि उस के लिये एक क़िस्म का उ़ज़्र है। इसी वज्ह से जंग की ह़ालत में ऐसे लोगों (या'नी किसी वज्ह से बग़ावत करने वालों) से जो कुछ ज़ाएअ़ हो जाए वोह उस के ज़ामिन न होंगे और न ही उन में से पीछे रह जाने वालों को क़त्ल किया जाएगा।

❁❁❁❁❁❁❁

## कबीरा नम्बर 337 : दुन्यवी मक़्सद पूरा न होने पर इमाम की बैअ़त तोड़ देना

## अह़ादीसे मुबा-रका में बैअ़त तोड़ने की मज़म्मत :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत 3 क़िस्म के लोगों से न तो कलाम फ़रमाएगा, न उन की त़रफ़ नज़रे रह़मत फ़रमाएगा और न ही उन्हें पाक फ़रमाएगा बल्कि उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब होगा : (1)...... जो शख़्स बे आबो गियाह मैदान में मुसाफ़िर से इज़ाफ़ी पानी रोके (2)...... जो किसी शख़्स को अ़स्र के बा'द सामान बेचे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम खाए कि मैं ने इतने इतने में लिया और लेने वाला उसे सच्चा जाने ह़ालां कि उस ने इतने में न लिया हो और (3)...... जो शख़्स दुन्या के लिये इमाम की बैअ़त करे, अगर वोह उसे दुन्या अ़त़ा करे तो उस से वफ़ा करे और अगर अ़त़ा न करे तो वफ़ा न करे।''(1)

(1)......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان غلظ تحریم اسبال الازار......الخ، الحدیث: ۲۹۷، ص۲۹۶۔



www.dawateislami.net

﴾2﴿...... अमीरुल मुअमिनीन मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है कि ''कबीरा गुनाह येह हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, किसी जान को (नाह़क़) क़त्ल करना, यतीम का माल खाना, पाक दामन औ़रत पर तोहमत लगाना, जंग से भाग जाना, हिजरत के बा'द दारुल कुफ़्र की त़रफ़ लौट जाना, जादू करना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना, सूद खाना, जमाअ़त को छोड़ना और बैअ़त तोड़ना।''(1)

**तम्बीह :**

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है जो कि मज़्कूरा अह़ादीसे मुबा-रका से वाज़ेह़ है और कई मु-तअख़्ख़िरीन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इस की तसरीह़ फ़रमाई है और इस के कबीरा होने की वज्ह येह है कि येह बहुत सी ख़राबियों का सबब है जिन की कोई इन्तिहा नहीं।

❁❁❁❁❁❁❁

﴾......फ़ज़ाइले कु़रआने करीम......﴿

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा :** ''येह कु़रआने मजीद, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ज़ियाफ़त है तो तुम अपनी इस्तित़ाअ़त के मुत़ाबिक़ उस की ज़ियाफ़त क़बूल करो। बेशक येह कु़रआने मजीद, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मज़्बूत़ रस्सी, नूरे मुबीन, नफ़्अ़ बख़्श शिफ़ा, जो इसे इख़्तियार करता है उस के लिये ढाल और जो इस पर अ़मल करे उस के लिये नजात है। येह ह़क़ से नहीं फिरता कि उस के इज़ाले के लिये थकना पड़े और येह टेढ़ी राह नहीं कि इसे सीधा करना पड़े। इस के फ़वाइद ख़त्म नहीं होते और कस्रते तिलावत से पुराना नहीं होता (या'नी अपनी ह़ालत पर क़ाइम रहता है)। तो तुम इस की तिलावत किया करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हर ह़र्फ़ की तिलावत पर 10 नेकियां अ़त़ा फ़रमाएगा। मैं नहीं कहता कि ''**الٓمّٓ**'' एक ह़र्फ़ है बल्कि ''**الف**'' एक ह़र्फ़ ''**لام**'' एक ह़र्फ़ और ''**ميم**'' एक ह़र्फ़ है।''

(المستدرک،الحدیث :۲۰۸۴،ج۲،ص۲۵۶)

1......تفسیرابن ابی حاتم، النساء،تحت الآیة ۳۱،الحدیث : ۵۲۱۲، ج۳،ص۹۳۳،"البیعة"بدله"الصفقة"۔



www.dawateislami.net

# ٢۔ باب الإمامة العظمى

## कबीरा नम्बर 338 : अपनी ख़ियानत जानने के बा वुजूद इमाम या ह़ाकिम बनना

## कबीरा नम्बर 339 : इस का पुख़्ता इरादा करना और इस का मुत़ा-लबा करना

## कबीरा नम्बर 340 : मज़्कूरा इ़ल्म और अ़ज़्म के साथ साथ इस के लिये माल व दौलत ख़र्च करना

### अह़ादीसे मुबा-रका में इमारत व हुकूमत की मज़म्मत :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें इमारत के मु-तअ़ल्लिक़ कुछ बताऊं और वोह क्या है ?" तो मैं ने अपनी बुलन्द आवाज़ में अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह क्या है ?" तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इस में अव्वल मलामत, दुवुम नदामत, सिवुम क़ियामत के दिन का अ़ज़ाब है मगर वोह जो अ़द्ल करे ह़ालां कि वोह अपने क़रीबी रिश्तेदार के साथ (जब कि वोह मुजरिम हो) कैसे अ़द्ल करेगा ?"(1)

﴾2﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जो शख़्स 10 या इस से ज़ियादा आदमियों के मुआ़-मलात का वाली बनेगा बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस ह़ाल में ह़ाज़िर होगा कि उस के हाथ उस की गरदन के साथ बंधे होंगे, उन्हें उस की नेकी खोलेगी या उस का गुनाह मज़ीद जकड़ लेगा। इस की इब्तिदा मलामत, इस का दरमियान नदामत और इस की इन्तिहा क़ियामत के दिन का अ़ज़ाब है।"(2)

﴾3﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे (ज़कात

---

(1) البحرالزخارالمعروف بمسند البزار،مسندعوف بن مالک الاشجعی،الحدیث : ۲۷۵۶،ج۷،ص۱۸۸۔

(2) المسند للامام احمدبن حنبل،حدیث ابی امامۃ الباھلی،الحدیث : ۲۲۳۶۳،ج۸،ص۳۰۵،"اوثقہ"بدلہ"اوبقہ"۔



www.dawateislami.net

वग़ैरा जम्अ़ करने पर) आ़मिल नहीं बना देते ?" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते अक़्दस मेरे कन्धों पर रखा और फ़रमाया : "ऐ अबू ज़र ! तू कमज़ोर है और येह अमानत है और येह क़ियामत के दिन अ़ज़ाब और नदामत का बाइ़स होगी मगर जो इसे इस के ह़क़ से ले और वोह ज़िम्मादारियां पूरी करे जो इस में हैं।"(1)

﴾4﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अबू ज़र ! मैं तुझे कमज़ोर पाता हूं और तेरे लिये वोही पसन्द करता हूं जो अपने लिये पसन्द करता हूं, कभी दो आदमियों पर भी अमीर न बनना और न ही किसी यतीम के माल का वाली बनना।"(2)

## अच्छी ज़िन्दगी और बुरी मौत :

﴾5﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अ़न्क़रीब तुम इमारत व हुकूमत की ह़िर्स करोगे तो येह बरोज़े क़ियामत नदामत होगी, दूध पिलाने वाली कितनी अच्छी और छुड़ाने वाली कितनी बुरी है(3)।"(4)

## आस्मान से लटक्ना हुक्मरानी से बेहतर है :

﴾6﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "उ-मरा के लिये हलाकत है, सरदारों के लिये हलाकत है, अमीन बनने वालों के लिये हलाकत है, क़ियामत के दिन कुछ लोग ज़रूर तमन्ना करेंगे कि उन्हें उन के बालों से सुरय्या (सितारे) से लटका दिया जाता और ज़मीन व आस्मान के दरमियान हिलते रहते मगर किसी काम

---

1 ......صحیح مسلم ،کتاب الامارة،باب کراهة الامارة......الخ،الحدیث : ۴۷۱۹،ص۱۰۰۵۔

2 ......المرجع السابق،الحدیث : ۴۷۲۰۔

3 ...... मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان (मु-तवफ़्फ़ा 1391 हि.) मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 5, सफ़ह़ा 349 पर इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : "سُبْحٰنَ اللہ कैसी नफ़ीस इबारत है, सल्त़नत को रआ़या की मां क़रार दिया गया, ज़ालिम सल्त़नत को दूध से मह़रूम करने वाली मां फ़रमाया गया और आ़दिल सल्त़नत को दूध देने वाली सगी मां क़रार दिया गया या'नी रआ़या को हुक़ूक़ देने वाली सल्त़नत अच्छी है और मह़रूम करने वाली सल्त़नत बुरी।"

4 ......صحیح البخاری،کتاب الاحکام، باب مایکره من الحرص علی الامارة، الحدیث : ۷۱۴۸،ص۵۹۵۔



www.dawateislami.net

का वाली न बनाया जाता।"(1)

﴾7﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अ़न्क़रीब एक शख़्स तमन्ना करेगा कि वोह सुरय्या से गिर जाता लेकिन लोगों के किसी मुआ़-मले का वाली न बनता।"(2)

## इमारत व हुकूमत का सुवाल न करो :

﴾8﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ता़ने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुर्रह़मान बिन समुरह ! इमारत का सुवाल न करना क्यूं कि अगर वोह तुझे बिग़ैर मांगे दी गई तो उस पर तेरी मदद की जाएगी और अगर मांगने पर दी गई तो तुझे उसी के सिपुर्द कर दिया जाएगा।"(3)

## सय्यिदुना अमीर ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नसीह़त :

﴾9﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे कोई ज़िम्मादारी सौंप दें जिसे मैं निभाता रहूं।" तो सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ चचा ह़म्ज़ा ! क्या तुम्हें वोह नफ़्स पसन्द है जिसे तुम ज़िन्दा रख सको या वोह जिसे तुम मार दो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "वोह नफ़्स जिसे मैं ज़िन्दा रख सकूं।" इर्शाद फ़रमाया : "तुम पर अपने नफ़्स की ह़िफ़ाज़त लाज़िम है (मत़लब येह कि ओ़हदा क़बूल करना नफ़्स को हलाकत में डालने के मु-तरादिफ़ है)।"(4)

﴾10﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना मिक़्दाम बिन मा'दी करिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कन्धे पर थपकी देते हुए इर्शाद फ़रमाया : "ऐ कुदैम ! अगर तू इस ह़ाल में फ़ौत हुवा कि न तू अमीर हो, न कातिब और न ही सरदार तो तू काम्याब हो गया।"(5)

---

1 ......المستدرک، کتاب الاحکام، باب قاضیان فی النار وقاض فی الجنة، الحدیث: ۷۰۹۹، ج۵، ص۱۲۳، بتغیرٍ۔

2 ......المرجع السابق، الحدیث: ۷۰۹۸، "لیوشکن" بدله "لیوشک"۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب الاحکام، باب من لم یسئل الامارة اعانة اللّٰه علیها، الحدیث: ۷۱۴۶، ص۵۹۵۔

4 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللّٰه بن عمرو بن العاص، الحدیث: ۶۶۵۰، ج۲، ص۵۸۸۔

5 ......سنن ابی داود، کتاب الخراج والفیء والامارة، باب فی العرافة، الحدیث: ۲۹۳۳، ص۱۴۴۲۔



www.dawateislami.net

## हुक्मरानी का वबाल :

﴾11﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, ह़ज़रते सय्यिदुना शरीक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं नहीं जानता कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इसे मरफ़ूअ़ रिवायत किया या नहीं, बहर ह़ाल आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''इमारत व हुकूमत का अव्वल नदामत, दरमियान नुक़्सान और आख़िर क़ियामत के दिन का अ़ज़ाब है।''(1)

## सह़ाबिये रसूल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़ौफ़े आख़िरत :

﴾12﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्र बिन आ़सिम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को हवाज़न के स-दक़ात पर आ़मिल मुक़र्रर फ़रमाया लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ न गए तो अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उन से मिले और दरयाफ़्त फ़रमाया : ''किस चीज़ ने तुम्हें पीछे छोड़ा ? क्या हमारे लिये हुक्म सुनना और इत़ाअ़त करना नहीं ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''क्यूं नहीं, लेकिन मैं ने हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते सुना : ''जो मुसल्मानों के किसी मुआ़-मले का वाली बना उसे क़ियामत के दिन लाया जाएगा यहां तक कि उसे जहन्नम के एक पुल पर खड़ा किया जाएगा, अगर वोह एह़सान करने वाला हुवा तो नजात पा जाएगा और अगर बुराई करने वाला हुवा तो पुल नीचे से फट जाएगा, और वोह जहन्नम में 70 साल की मसाफ़त पर जा गिरेगा।''

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़मगीन और शिकस्ता दिल हो कर जा रहे थे कि रास्ते में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात हो गई उन्हों ने पूछा : ''क्या वज्ह है कि मैं आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को शिकस्ता दिल और ग़मगीन देख रहा हूं।'' तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया : ''मैं दिलगीर और ग़मगीन क्यूं न होउं जब कि मैं ने ह़ज़रते बिश्र बिन आ़सिम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह कहते सुना कि प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो मुसल्मानों के किसी मुआ़-मले का वाली बना उसे क़ियामत के दिन लाया जाएगा यहां तक कि उसे जहन्नम के एक पुल पर खड़ा किया जाएगा, अगर वोह एह़सान करने वाला हुवा तो नजात पा जाएगा और अगर बुराई करने वाला हुवा तो पुल नीचे से फट जाएगा और वोह जहन्नम में 70 साल की मसाफ़त पर जा गिरेगा।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं ने भी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

1......المعجم الاوسط، الحديث : ۵۲۱۶، ج۴، ص۱۷۳ ۔



www.dawateislami.net

को येह इर्शाद फ़रमाते सुना : ''जो मुसल्मानों के किसी मुआ़-मले का वाली बना उसे क़ियामत के दिन लाया जाएगा यहां तक कि उसे जहन्नम के पुल पर खड़ा किया जाएगा, अगर वोह एह़सान करने वाला हुवा तो नजात पा जाएगा और अगर बुराई करने वाला हुवा तो पुल नीचे से फट जाएगा, और वोह जहन्नम में 70 साल की मसाफ़त पर जा गिरेगा जो सियाह और तारीक होगी।''

इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : ''इन दोनों में से कौन सी ह़दीसे पाक आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दिल को ज़ियादा ग़मगीन करने वाली है।'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''दोनों मेरे दिल को ज़ियादा ग़मगीन करने वाली हैं, तो (इतनी शदीद वई़द के बा वुजूद) ख़िलाफ़त को इस के ह़ुक़ूक़ समेत कौन क़बूल करेगा ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ''वोही क़बूल करेगा जिस की नाक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ काट डाले और जिस के रुख़्सार ज़मीन से मिला दे, बहर ह़ाल हम तो भलाई के सिवा कुछ नहीं जानते, या अगर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ऐसे शख़्स को लोगों के मुआ़-मलात का वाली बनाया जो अ़द्ल नहीं करता तो आप इस गुनाह से नजात न पा सकेंगे।''(1)

﴾13﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अ़न्क़रीब तुम ज़मीन के मशरिक़ व मग़रिब फ़त्ह़ कर लोगे, और उस के उ़म्माल (या'नी ह़ुक्मरान) जहन्नम में जाएंगे मगर जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरे और अमानत अदा करे।''(2)

﴾14﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़दी बिन उ़मैरा किन्दी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते सुना : ''हम तुम में से किसी को किसी काम पर आ़मिल बनाएं फिर वोह हम से एक सूई या इस से भी छोटी चीज़ छुपाए तो येह ख़ियानत है और वोह क़ियामत के दिन उसे ले कर आएगा।'' अन्सार में से काले रंग का एक शख़्स खड़ा हुवा गोया मैं अब भी उसे देख रहा हूं। उस ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझ से अपना काम वापस ले लीजिये।'' आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''तुझे क्या हुवा ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''मैं ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ऐसा ऐसा फ़रमाते सुना है।'' इर्शाद फ़रमाया : ''मैं अब भी येही कहता हूं कि जिसे हम किसी

1 ......المعجم الكبير،الحديث : ۱۲۱۹، ج۲،ص۳۹، بتغيرٍقليلٍ۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، احاديث رجال،الحديث : ۲۳۱۷۰،ج۹،ص۴۳۔



www.dawateislami.net

काम पर आ़मिल बनाएं वोह क़लील व कसीर सब ले कर हाज़िर हो जाए इस के बा'द उसे उस में से जो दिया जाए वोह ले ले और जिस से मन्अ़ किया जाए उस से रुक जाए।''(1)

## आ़मिल के हदिय्या लेने का हुक्म :

﴾15﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़बीलए अज़्द के एक शख़्स को स-दक़ा वुसूल करने का आ़मिल बनाया जिसे (क़बीलए बनी लुत्ब की निस्बत से) इब्नुल लुत्बिय्यह कहा जाता था। जब वोह वापस आया तो कहने लगा : ''येह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये है और येह मेरे लिये हदिय्या है।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खड़े हो गए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना करने के बा'द इर्शाद फ़रमाया : ''मैं ने तुम में से एक शख़्स को उस का आ़मिल बनाया जिस की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे विलायत दी अब वोह कहता है कि येह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये है और येह मेरे लिये हदिय्या है, अगर वोह सच्चा है तो अपने मां बाप के घर क्यूं न बैठा रहा यहां तक कि उसे येह हदिय्या पहुंच जाता ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम में से कोई भी शख़्स जो चीज़ नाह़क़ लेगा क़ियामत के दिन उसे उठाए हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश होगा।''(2)

## क़ब्र में आग का कुरता :

﴾16﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब अ़स्र की नमाज़ पढ़ लेते तो बनी अ़ब्दुल अश्हल के पास तशरीफ़ ले जाते और उन के पास गुफ़्त-गू फ़रमाते रहते यहां तक कि मग़रिब के लिये अज़ान या इक़ामत कही जाती। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जल्दी जल्दी नमाज़े मग़रिब के लिये तशरीफ़ ले जा रहे थे कि बक़ीअ़ के मक़ाम पर हमारे पास से गुज़रे और इर्शाद फ़रमाया : ''तुम पर अफ़्सोस ! तुम पर अफ़्सोस !'' इस बात से मेरे दिल में डर और ख़ौफ़ पैदा हुवा और मैं पीछे हो गया और गुमान किया कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे फ़रमा रहे हैं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، باب تحریم ھدایا العمال، الحدیث: ۴۷۴۳، ص۱۰۰۷۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الھبۃ، باب من لم یقبل الھدیۃ لعلۃ، الحدیث: ۲۵۹۷، ص۲۰۴۔
صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، باب تحریم ھدایا العمال، الحدیث: ۴۷۴۰، ص۱۰۰۷۔



www.dawateislami.net

ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या हुवा, जल्दी चलो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अभी कुछ इर्शाद फ़रमाया है।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तो तुझे क्या हुवा ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ पर अफ़्सोस फ़रमाया है।" इर्शाद फ़रमाया : "नहीं, बल्कि वोह तो फ़ुलां शख़्स है जिसे मैं ने बनी फ़ुलां के पास स-दक़ा लेने के लिये भेजा और उस ने एक धारीदार चादर चुरा ली, बिल आख़िर वैसा ही आग का कुरता उसे (क़ब्र में) पहना दिया गया।"[1]

**तम्बीह :** इन तीनों को कबीरा गुनाहों में शुमार करना मज़्कूरा सहीह़ अह़ादीसे मुबा-रका से वाज़ेह़ है और येह ज़ाहिर है, अलबत्ता ! मैं ने किसी को इसे ज़िक्र करते हुए नहीं पाया अगर्चे येह अह़ादीस मुत़्लक़ हैं लेकिन येह दीगर क़राइन और अह़ादीस की रू से हमारे ज़िक्र कर्दा कलाम पर मह़्मूल हैं।

## कबीरा नम्बर 341 : ज़ालिम या फ़ासिक़ को मुसल्मानों के मुआ़-मलात का वाली बनाना

### अक़्रिबा को हुकूमती ओहदों से नवाज़ने पर वईद :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि जब अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मुझे शाम भेजा तो इर्शाद फ़रमाया : "ऐ यज़ीद ! तुम्हारी क़रीबी रिश्तेदारियां हैं, हो सकता है तुम इमारत में उन्हें तरजीह़ दो और शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस इर्शाद के बा'द मुझे तुम पर सब से ज़ियादा ख़ौफ़ इसी चीज़ का है (और वोह इर्शाद येह है :) "जो मुसल्मानों के किसी मुआ़-मले का वाली बना फिर अपने किसी क़राबत दार को उन पर अमीर बनाया तो उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के नफ़्ल क़बूल फ़रमाएगा न फ़र्ज़ यहां तक कि उसे जहन्नम में दाख़िल कर देगा।"[2]

---

1 ......سنن النسائی، کتاب الامامة، باب الاسراع الی الصلاة من غیر سعی، الحدیث : ٨٦٣، ص ٢١٤٢۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی بکر الصدیق، الحدیث : ٢١، ج١، ص ٢٤۔



www.dawateislami.net

## ना अह्ल लोगों को नवाज़ने वाले का हुक्म :

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो अपने गुरौह में से किसी को आ़मिल बनाए और उन में ऐसा शख़्स भी हो जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़ियादा राज़ी हो तो उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और मुअमिनीन से ख़ियानत की।''[1]

## तम्बीह :

मज़्कूरा गुनाह को कबीरा गुनाह शुमार किया गया है। इस की वज्ह येह है कि पहली ह़दीसे पाक में ला'नत की तसरीह़ मौजूद है और दूसरी ह़दीसे पाक से इस का कबीरा गुनाह होना वाज़ेह़ है अगर्चे मैं ने किसी को इस का ज़िक्र करते हुए नहीं पाया। मैं ने उ़न्वान में इस की त़रफ़ इशारा किया है कि दोनों अह़ादीस को इस पर मह़मूल करना ज़रूरी है वरना इन दोनों अह़ादीसे मुबा-रका का ज़ाहिरी मा'ना मुराद लेना बहुत मुश्किल है। फिर मैं ने बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام को देखा कि उन्हों ने इस के कबीरा होने की तसरीह़ करते हुए इर्शाद फ़रमाया : ''क़ाज़ी या इमाम का अपनी दोस्ती या क़राबत दारी की बिना पर किसी ना अह्ल शख़्स को ज़िम्मेदार बनाना कबीरा गुनाह है।''

۞۞۞۞۞۞۞

## कबीरा नम्बर 342 : अह्ल को मा'ज़ूल कर के ना अह्ल को अमीर बनाना

इसे भी कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है इस की त़रफ़ बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने इशारा फ़रमाया और मज़्कूरा ह़दीसे पाक से इस्तिद्लाल किया है कि ''जो मुसल्मानों के किसी मुआ़-मले का वाली बना फिर अपने किसी क़राबत दार को उन पर अमीर बनाया तो उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के नफ़्ल क़बूल फ़रमाएगा न फ़र्ज़ यहां तक कि उसे जहन्नम में दाख़िल कर देगा।''[2]

۞۞۞۞۞۞۞

---

1 ......المستدرک، کتاب الاحکام ،باب الامارۃ امانۃ وھی یوم القیامۃ خزی وندامۃ ،الحدیث: ۷۱۰۵،ج۵،ص۱۲۶۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند ابی بکر الصدیق ،الحدیث: ۲۱،ج۱،ص۲۴۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 343 : ह़ाकिम या उस के नाइब का लोगों पर ज़ुल्म करना
## कबीरा नम्बर 344 : अमीर या उस के नाइब का रआ़या से धोका करना
## कबीरा नम्बर 345 : ह़ाकिम या उस के नाइब का अ़वाम की ज़रूरिय्यात पूरी न करना

### ज़ालिम हुक्मरानों का अन्जाम :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''क़ियामत के दिन लोगों में सब से सख़्त अ़ज़ाब उसे होगा जिस ने किसी नबी को शहीद किया या जिसे किसी नबी ने क़त्ल किया और ज़ालिम इमाम (या'नी ह़ाकिम) को ।''(1)

बज़्ज़ार की रिवायत में ''ज़ालिम इमाम'' की जगह ''गुमराह इमाम'' है ।''(2)

### सब से ना पसन्दीदा लोग :

﴾2﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''चार (क़िस्म के) लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ना पसन्द फ़रमाता है : (1) क़सम खा कर माल बेचने वाला (2) मु-तकब्बिर फ़क़ीर (3) बूढ़ा ज़ानी और (4) ज़ालिम ह़ाकिम ।''(3)

﴾3﴿...... मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में येह अल्फ़ाज़ भी हैं : ''झूटा बादशाह और मु-तकब्बिर फ़क़ीर ।''(4)

### ज़ालिम ह़ाकिम की नमाज़ मक़्बूल नहीं :

﴾4﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन **उ़बैदुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते सुना :

---

(1) ......المعجم الكبير،الحديث: ١٠٤٩٧،١٠٥١٥،ج١٠،ص٢١١،٢١٦۔

(2) ......البحرالزخارالمعروف بمسند البزار،مسند عبد الله بن مسعود،الحديث: ١٧٢٨،ج٥،ص١٣٨۔

(3) ......سنن النسائی، کتاب الزكاة،باب الفقير المختال،الحديث: ٢٥٧٧،ص٢٢٥٤۔

(4) ......صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب بيان غلظ تحريم اسبال الازار......الخ، الحديث: ٢٩٦،ص٦٩٦۔



www.dawateislami.net

''ख़बरदार ! ऐ लोगो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़ालिम (ह़ाकिम) की नमाज़ क़बूल नहीं फ़रमाता।''(1)

## तौह़ीद की गवाही किस की क़बूल नहीं ?

﴾5﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तीन (क़िस्म के) लोगों की तौह़ीद की गवाही क़बूल नहीं फ़रमाता।'' उन में ज़ालिम ह़ाकिम का भी ज़िक्र फ़रमाया।(2)

## ह़ाकिमे इस्लाम ज़मीन पर ज़िल्ले इलाही होता है :

﴾6﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''सुल्त़ान ज़मीन पर ज़िल्ले इलाही होता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों में से हर मज़्लूम उस की पनाह लेता है, अगर वोह अ़द्ल करे तो उस के लिये अज्र और रआ़या पर शुक्र लाज़िम है और अगर वोह ज़ुल्मो ज़ियादती करे तो उस पर गुनाह और रआ़या पर सब्र है। जब बादशाह ज़ुल्म करते हैं तो बारिश रुक जाती (या'नी क़ह़्त़-साली हो जाती) है। जब ज़कात रोक ली जाए तो जानवर हलाक होने लगते हैं। जब ज़िना आ़म हो जाए तो मोह़ताजी और ग़रीबी आ़म हो जाती है और जब ज़िम्मा तोड़ दिया जाए तो कुफ़्फ़ार को ग़-लबा ह़ासिल हो जाता है (रावी फ़रमाते हैं :) या इसी की मिस्ल कोई कलिमा इर्शाद फ़रमाया।''(3)

## पांच बुराइयों का नतीजा :

﴾7﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बयान करते हैं कि हम बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर थे कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब तुम में 5 बुराइयां आ़म हो जाएंगी तो उस वक़्त तुम्हारी क्या ह़ालत होगी, मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से पनाह त़लब करता हूं कि वोह तुम में पैदा हों या तुम उन्हें पाओ : (1) जब किसी क़ौम में ए'लानिया फ़ह़्ह़ाशी आ़म हो जाएगी तो उन में त़ाऊ़न और ऐसी बीमारियां (म-सलन एड्ज़ (Aids) वग़ैरा) ज़ाहिर हो जाएंगी जो उन से पहलों में न थीं (2) जब कोई क़ौम ज़कात रोक लेगी तो आस्मान से बारिश रोक दी जाएगी और अगर चौपाए न होते तो उन पर कभी बारिश न बरसती (3) जब कोई क़ौम नाप तोल में कमी करेगी तो क़ह़्त़-साली, शदीद तंगी और बादशाह के ज़ुल्म का शिकार हो जाएंगे (4) जब

---

1 ......المستدرک ، کتاب الاحکام ،باب لا یقبل اللّٰہ صلاۃ......الخ ، الحدیث : ۷۰۹۱،ج۵،ص۱۲۱،بتغیرٍ۔

2 ......المعجم الاوسط،الحدیث : ۳۱۰۴،ج۲،ص۲۳۰۔

3 ......الکامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی ،الرقم۱۸۰ سعید بن سنان الحمصی،ج۴،ص۴۰۲، بتغیرٍقلیلٍ۔



www.dawateislami.net

हुक्मरान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब के ख़िलाफ़ हुक्म देंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन पर दुश्मन मुसल्लत़ कर देगा जो उन से वोह सल्त़नत भी छीन लेगा जो उन के क़ब्ज़े में होगी और (5) लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब और उस के नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की सुन्नत को छोड़ेंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के दरमियान लड़ाई झगड़ा डाल देगा।''[1]

## क़ुरैश की अ़ज़मते शान :

﴿8﴾...... ह़ज़रते सय्यिदुना बुकैर बिन वह्ब ज–ज़री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : मैं तुम्हें एक ऐसी ह़दीसे पाक सुनाता हूं जो मैं हर किसी को नहीं सुनाता : ''एक रोज़ हम घर के अन्दर थे कि बाहर से सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़–लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आवाज़ सुनाई दी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे थे : ''इमाम क़ुरैश से होंगे, मेरा तुम पर ह़क़ है और इसी की मिस्ल उन का भी तुम पर ह़क़ है जब तक कि उन से रह़्म त़लब किया जाए तो वोह रह़्म करें, अगर कोई अ़ह्द करें तो उसे पूरा करें, अगर कोई फ़ैसला करें तो अ़द्लो इन्साफ़ से करें और उन में से जिस ने ऐसा न किया उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, फ़िरिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत है।''[2]

﴿9﴾...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''येह (ख़िलाफ़त का) मुआ़–मला उस वक़्त तक क़ुरैश में रहेगा जब तक कि उन से रह़्म त़लब किया जाए तो वोह रह़्म करें, जब फ़ैसला करें तो अ़द्ल करें और जब (माले ग़नीमत वग़ैरा) तक़्सीम करें तो इन्साफ़ करें और उन में से जिस ने ऐसा न किया उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, फ़िरिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के नफ़्ल क़बूल फ़रमाएगा न फ़र्ज़।''[3]

﴿10﴾...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस क़ौम को पाक नहीं फ़रमाता जिस में ह़क़ के साथ फ़ैसला नहीं किया जाता और कमज़ोर त़ाक़त वर से अपना ह़क़ बिग़ैर परेशानी के वुसूल नहीं कर सकता।''[4]

---

1 ......شعب الایمان للبیھقی،باب فی الزکاۃ/التشدید علی من منع الزکاۃ،الحدیث : ۳۳۱۵،ج۳، ص۱۹۷۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالک بن النضر، الحدیث:۱۲۳۰۹،ج۴،ص۲۵۹۔

3 ......المسند للام احمد بن حنبل ،حدیث ابی موسی الاشعری، الحدیث: ۱۹۵۵۸، ج۷، ص۱۳۳۔

4 ......المعجم الکبیر، الحدیث : ۶۳۵۹۰۳،ج۱۹،۲۴،ص۲۴۸۳۸۵ ۔



www.dawateislami.net

## घड़ी भर ज़ुल्म का गुनाह :

﴾11﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अबू हुरैरा ! एक घड़ी का अ़द्ल ऐसे 60 साल की इ़बादत से बेहतर है जिन की रातें क़ियाम और दिन रोज़े की ह़ालत में गुज़रें और ऐ अबू हुरैरा ! हुकूमत में एक घड़ी का ज़ुल्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक 60 साल के गुनाहों से ज़ियादा सख़्त और बड़ा है।''(1)

## एक दिन के अ़द्ल की फ़ज़ीलत :

﴾12﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''एक दिन का अ़द्ल 60 साल की इ़बादत से अफ़्ज़ल है।''(2)

﴾13﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : ''आ़दिल ह़ाकिम का एक दिन 60 साल की इ़बादत से अफ़्ज़ल है और ज़मीन में ह़क़ के साथ जो ह़द क़ाइम की जाती है वोह सुब्ह़ के वक़्त की 40 बारिशों से ज़ियादा पाक करने वाली है।''(3)

## सब से पसन्दीदा और ना पसन्दीदा लोग :

﴾14﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त बयान है : ''बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से पसन्दीदा और मजलिस के ए'तिबार से उन में सब से क़रीब शख़्स आ़दिल ह़ाकिम होगा, और सब से ना पसन्दीदा और मजलिस के ए'तिबार से सब से दूर शख़्स ज़ालिम ह़ाकिम होगा।''(4)

﴾15﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मर्तबे के लिह़ाज़ से सब से बेहतर अ़द्ल और नरमी करने वाला ह़ाकिम होगा और क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मर्तबे के ए'तिबार से सब

---

(1)......فضیلة العادلین لابی نعیم الاصبھانی،الحدیث : ۱۵،ص۱۱۷۔

(2)......المعجم الکبیر،الحدیث : ۱۱۹۳۲،ج۱۱،ص۲۶۷،بتغیرٍقلیلٍ۔

(3)......المعجم الاوسط،الحدیث : ۴۷۶۵،ج۳،ص۳۳۴۔
المعجم الکبیر،الحدیث : ۱۱۹۳۲،ج۱۱،ص۲۶۷۔

(4)......جامع الترمذی، ابواب الاحکام،باب ماجاء فی الامام العادل،الحدیث : ۱۳۲۹،ص۱۷۸۵۔



www.dawateislami.net

से बदतर ज़ुल्म करने वाला बद अख़्लाक़ हाकिम होगा।''(1)

## ज़ालिम क़ाज़ी, शैतान का साथी :

﴾16﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ाज़ी (या'नी फ़ैसला करने वाले) के साथ होता है जब तक कि वोह ज़ुल्म न करे। जब वोह ज़ुल्म करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे छोड़ देता है और शैतान उसे पकड़ लेता है।''(2)

﴾17﴿...... हाकिम की रिवायत में है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब वोह ज़ुल्म करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से बरी हो जाता है।''(3)

## ज़ालिम क़ाज़ी, जहन्नम के निचले द-रजे में :

﴾18﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क़ियामत के दिन क़ाज़ी को लाया जाएगा और उसे हिसाब के लिये जहन्नम के कनारे खड़ा कर दिया जाएगा, अगर उसे जहन्नम में गिराने का हुक्म दिया गया तो वोह 70 साल उस में गिरता रहेगा।''(4)

﴾19﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना बिश्र बिन आसिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बयान फ़रमाया कि उन्हों ने हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते सुना : ''जो भी शख़्स लोगों के किसी मुआ-मले का वाली बनता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम के पुल पर खड़ा करेगा, पुल उस (के बोझ) से कांपने लगेगा, फिर या तो वोह नजात पाने वाला होगा या नहीं, फिर उस की हर हड्डी दूसरी से जुदा हो जाएगी, अगर उस ने नजात न पाई तो उसे जहन्नम में क़ब्र जैसे तारीक कूंएं में ले जाया जाएगा जिस की तह तक वोह 70 साल में पहुंचेगा।'' अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी और हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी

---

1......المعجم الاوسط،الحديث : ٣٤٨،ج ١،ص ١١٢، بتغيرٍقليلٍ۔

2......جامع الترمذى، ابواب الاحكام، باب ماجاء فى الامام العادل، الحديث : ١٣٣٠،ص ١٧٨٥۔

3......المستدرک ، كتاب الاحكام ،باب ان اللّٰه مع القاضى مالم يجر ،الحديث: ٧١٠٨،ج٥،ص ١٢٧۔

4......البحرالزخارالمعروف بمسند البزار، مسند عبد اللّٰه بن مسعود، الحديث: ١٩٣٩،ج٥،ص ٣٢١۔



www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से दरयाफ़्त फ़रमाया : ''क्या तुम ने येह ह़दीसे पाक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी है ?'' तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''जी हां।''(1)

﴾20﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो मेरी उम्मत के किसी गुरौह का वाली बना ख़्वाह वोह कम हों या ज़ियादा और उस ने उन में अ़द्ल न किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे मुंह के बल जहन्नम में गिराएगा।''(2)

﴾21﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जो शख़्स इस उम्मत के किसी मुआ़-मले का वाली बना और उस ने उन में अ़द्ल न किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे औंधे मुंह जहन्नम में गिराएगा।''(3)

## ज़ालिमों का ठिकाना :

﴾22﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जहन्नम में एक वादी है, उस में एक कूंवां है जिसे **हबहब** कहा जाता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि हर ज़ालिम सरकश को उस में रखे।''(4)

## बरोज़े क़ियामत अ़द्ल काम आएगा :

﴾23﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''बरोज़े क़ियामत 10 आदमियों के अमीर को भी बंधा हुवा लाया जाएगा और उसे सिर्फ़ अ़द्ल ही छुड़ा सकेगा।''(5)

﴾24﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ बयान है : ''10 आदमियों के अमीर को भी बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में लाया जाएगा कि वोह बंधा हुवा होगा और उसे इस बन्धन से उस का अ़द्ल ही छुड़ा सकेगा।''(6)

---

(1)......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الاھوال، باب ذکر الحساب۔۔الخ، الحدیث: ۲۴۶، ج۶، ص۲۴۳، بتغیرٍ۔

(2)......المعجم الاوسط، الحدیث: ۶۶۲۹، ج۵، ص۷۷۔

(3)......المستدرک، کتاب الاحکام، باب قاضیان فی النار وقاض فی الجنة، الحدیث: ۷۰۹۷، ج۵، ص۱۲۳۔

(4)......المعجم الاوسط، الحدیث: ۳۵۴۸، ج۲، ص۳۶۳۔

(5)......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی ھریرة، الحدیث: ۹۵۷۹، ج۳، ص۴۲۵۔

(6)......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث سعد بن عبادة، الحدیث: ۲۲۵۲۶، ج۸، ص۳۳۹۔



www.dawateislami.net

﴾25﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''क़ियामत के दिन 10 आदमियों के अमीर को भी बांध कर लाया जाएगा यहां तक कि उसे अ़द्ल छुड़ा लेगा या ज़ुल्म पकड़ लेगा।''(1)

﴾26﴿...... एक रिवायत में है : ''अगर वोह बुराई का मुर-तकिब हो तो उस के बन्धन में इज़ाफ़ा कर दिया जाएगा।''(2)

﴾27﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो शख़्स 10 आदमियों का भी वाली बना उसे क़ियामत के दिन इस ह़ाल में लाया जाएगा कि उस के हाथ उस की गरदन के साथ बंधे हुए होंगे यहां तक कि उस के और लोगों के दरमियान फ़ैसला हो जाए।''(3)

﴾28﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''3 आदमियों का वाली भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि उस का दायां हाथ बंधा हुवा होगा फिर उसे उस का अ़द्ल छुड़ा लेगा या उस का ज़ुल्म पकड़ लेगा।''(4)

﴾29﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : ''मुझ पर जहन्नम में पहले दाख़िल होने वाले 3 शख़्स पेश किये गए : (1)...... लोगों पर मुसल्लत़ अमीर (2)...... अपने माल में से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ अदा न करने वाला मालदार और (3)...... तकब्बुर करने वाला फ़क़ीर।''(5)

﴾30﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मुझे अपनी उम्मत पर 3 आ'माल का ख़ौफ़ है।'' लोगों ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन से आ'माल हैं ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''(1)...... आ़लिम की लग़्ज़िश (2)...... ज़ालिम की हुक्मरानी और (3)...... ख़्वाहिशे नफ़्स की पैरवी।''(6)

---

1 ......المعجم الاوسط ،الحديث : ٦٥٢٥،ج٤،ص٣٥٥۔

2 ......المعجم الاوسط ،الحديث : ٤٧٦٣،ج٣،ص٣٣٤۔

3 ......المعجم الكبير ،الحديث : ١٢٦٨٩،ج١٢،ص١٠٥۔

4 ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان ،كتاب السير ،الحديث : ٤٥٠٨،ج٧،ص٢٨۔

5 ......صحيح ابن خزيمة،كتاب الزكاة،باب ذكرادخال مانع الزكاة......الخ،الحديث : ٢٢٤٩،ج٤،ص٨۔

6 ......المعجم الكبير، الحديث : ١٤،ج ١٧،ص١٧۔



www.dawateislami.net

## ज़ालिम हुक्मरानों के ख़िलाफ़ आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़ :

﴾31﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जो मेरी उम्मत के किसी मुआ़-मले का वाली बना और उस ने उन को मशक़्क़त में डाला तो तू भी उसे मशक़्क़त में डाल और जो मेरी उम्मत के किसी मुआ़-मले का वाली बना और उस ने उन के साथ नरमी की तो तू भी उस के साथ नरमी फ़रमा।"(1)

﴾32﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो मेरी उम्मत के किसी मुआ़-मले का वाली बना और उस ने उन को मशक़्क़त में डाला तो उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **बह्लह** है।" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **बह्लह** से क्या मुराद है ?" इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत।"(2)

## ख़ुश्बूए जन्नत से मह़रूम कौन ?

﴾33﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मेरा जो उम्मती लोगों के किसी मुआ़-मले का वाली बना फिर उन की उस चीज़ से ह़िफ़ाज़त न की जिस से वोह अपनी ह़िफ़ाज़त करता है तो वोह जन्नत की ख़ुश्बू न पाएगा।"(3)

## ख़ाइन हुक्मरान जहन्नमी है :

﴾34﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस बन्दे को रआ़या का निगरान बनाए और वोह अपनी रआ़या से ख़ियानत करते हुए मर जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर जन्नत ह़राम फ़रमा देता है।"(4)

﴾35﴿...... बुख़ारी व मुस्लिम की एक रिवायत में इस के बा'द येह भी है : "और वोह ख़ैर

1......صحیح مسلم،کتاب الامارة، باب فضیلة الامیر العادل......الخ ،الحدیث : ۴۷۲۲،ص۱۰۰۶۔

2......مسند ابی عوانة،کتاب الامراء ،بیان ثواب الامام العادل المسقط، الحدیث : ۷۰۲۳،ج۴،ص۳۸۰۔

3......المعجم الصغیر للطبرانی، الحدیث : ۹۱۸، الجزء الثانی،ص۵۴۔

4......صحیح مسلم ،کتاب الایمان ،باب استحقاق الوالی الغاش لرعیته النار ،الحدیث : ۳۶۳،ص۷۰۱۔



www.dawateislami.net

ख़्वाही के साथ उन की निगरानी न करे तो वोह जन्नत की ख़ुश्बू न पा सकेगा।''(1)

﴾36﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो शख़्स मुसल्मानों के मुआ़-मलात का निगरान बने फिर उन के लिये कोशिश न करे और उन की ख़ैर ख़्वाही न करे तो वोह उन के साथ जन्नत में दाख़िल न होगा।''(2)

﴾37﴿...... एक रिवायत में येह इज़ाफ़ा है : ''जैसी ख़ैर ख़्वाही और कोशिश अपने लिये करता है (वैसी उन के लिये न करे तो उन के साथ जन्नत में दाख़िल न होगा)।''(3)

﴾38﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो मुसल्मानों के किसी मुआ़-मले का निगरान बना फिर उन से ख़ियानत की तो वोह जहन्नमी है।''(4)

﴾39﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ह़ाकिम या निगरान ने कोई तारीक रात अपनी रआ़या से धोका करते हुए गुज़ारी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर जन्नत ह़राम फ़रमा देगा।''(5)

﴾40﴿...... एक रिवायत में सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ह़ाकिम ने अपनी रआ़या से धोका करते हुए रात गुज़ारी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर जन्नत ह़राम फ़रमा देगा ह़ालां कि क़ियामत के दिन उस की ख़ुश्बू 70 साल की मसाफ़त से पाई जाएगी।''(6)

﴾41﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो मुसल्मानों के किसी मुआ़-मले का अमीर बना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त तक उस की कोई ह़ाजत पूरी न फ़रमाएगा जब तक वोह लोगों की ज़रूरिय्यात की त़रफ़ तवज्जोह न दे।''(7)

1 ......صحیح البخاری، کتاب الاحکام، باب من استرعی رعیة فلم ینصح، الحدیث: ۷۱۵۰، ص۵۹۵۔
2 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب استحقاق الوالی الغاش لرعیته النار، الحدیث: ۳۶۶، ص۷۰۲۔
3 ......المعجم الصغیر، الحدیث: ۲۶۶، الجزء الاول، ص۱۶۷۔
4 ......المعجم الاوسط، الحدیث: ۳۴۸۱، ج۲، ص۳۴۰۔
5 ......الترغیب والترھیب، کتاب القضاء، باب ترغیب من ولی من امور۔۔الخ، الحدیث: ۳۳۸۰، ج۳، ص۱۳۳۔
6 ......الترغیب والترھیب، کتاب القضاء، باب ترغیب من ولی من امور۔۔الخ، الحدیث: ۳۳۸۰، ج۳، ص۱۳۳۔
7 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۳۶۰۳، ج۱۲، ص۳۳۶۔



www.dawateislami.net

﴾42﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मुर्रह जु-हनी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से बयान किया कि मैं ने रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते सुना : ''जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुसल्मानों के किसी मुआ़-मले का वाली बनाए फिर वोह बे कसी और ग़रीबी के वक़्त उन की ह़ाजत बरआरी न करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उस की बे कसी और मोह़ताजी में उस की ह़ाजत पूरी न फ़रमाएगा।'' पस ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुसल्मानों की ज़रूरिय्यात पूरी करने के लिये एक आदमी मुक़र्रर फ़रमा दिया।(1)

﴾43﴿...... हु़ज़ूर रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो ह़ाकिम ह़ाजत मन्दों, बे कसों और मोह़ताजों पर अपना दरवाज़ा बन्द करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की बे बसी, ह़ाजत मन्दी और मोह़ताजी पर आस्मान के दरवाज़े बन्द फ़रमा देता है।''(2)

﴾44﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो मुसल्मानों के किसी मुआ़-मले का निगरान बना और उस ने कमज़ोरों और ह़ाजत मन्दों से कनारा कशी की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की ह़ाजत पूरी न फ़रमाएगा।''(3)

﴾45﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू शम्माह़ अज़्दी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی अपने चचाज़ाद भाई, सह़ाबिये रसूल से रिवायत करते हैं वोह अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास तशरीफ़ लाए और बयान किया कि मैं ने हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते सुना : ''जो मुसल्मानों के किसी मुआ़-मले का वाली बना फिर मिस्कीन, मज़्लूम और ह़ाजत मन्दों पर अपना दरवाज़ा बन्द रखा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उस की ह़ाजत और मोह़ताजी पर अपनी रह़मत के दरवाज़े बन्द रखेगा जब कि वोह उस का ज़ियादा मोह़ताज होगा।''(4)

﴾46﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जुहैफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इर्शाद फ़रमाते हैं कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने लोगों का एक गुरौह भेजा, लोग निकल पड़े लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दह़दाह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ वापस लौट आए तो अमीरुल

1 ......سنن ابی داود،کتاب الخراج ،باب فیما یلزم الامام......الخ ،الحدیث:۲۹۴۸،ص۱۴۴۳، دون قولہ:یوم القیامۃ۔

2 ......جامع الترمذی،ابواب الاحکام ،باب ماجاء فی امام الرعیۃ ،الحدیث:۱۳۳۲،ص۱۷۸۵۔

3 ......المسند للامام احمد حنبل،حدیث معا ذ بن جبل ،الحدیث:۲۲۱۳۷،ج۸،ص۲۵۰۔

4 ......المسند للامام احمد بن حنبل،حدیث رجل من اصحاب ،الحدیث:۱۵۶۵۱،ج۵،ص۳۱۵۔



www.dawateislami.net

मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नहीं गए ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "क्यूं नहीं, लेकिन मैं ने हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से एक ह़दीसे पाक सुन रखी है मैं ने पसन्द किया कि आप से बयान कर दूं, मुझे अन्देशा है कि इस के बा'द मेरी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात न हो सकेगी (वोह ह़दीसे पाक येह है :) मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : "ऐ लोगो ! तुम पर जो कोई किसी काम का वाली बनाया गया और उस ने अपना दरवाज़ा ह़ाजत मन्दों पर बन्द कर दिया ।" या फिर येह इर्शाद फ़रमाया : "मुसल्मानों की ह़ाजतों पर बन्द कर दिया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर जन्नत के दरवाज़े से दाख़िला बन्द फ़रमा देगा और जिस का मक़्सद दुन्या हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर मेरा पड़ोस ह़राम फ़रमा देगा क्यूं कि मैं दुन्या को वीरान करने (या'नी इस से बे रग़बती दिलाने) के लिये भेजा गया हूं और इसे आबाद (या'नी ह़ासिल) करने के लिये नहीं भेजा गया ।"(1)

## तम्बीह :

मज़्कूरा तीनों गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार करना इन सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका की सराह़त से वाज़ेह़ है अगर्चे मैं ने किसी को इन्हें कबीरा गुनाह शुमार करते हुए नहीं पाया और मेरा उ़न्वान में "**ह़वाइज**" की क़ैद लगाना भी वाज़ेह़ है कि अह़ादीसे मुबा-रका में मुत़्लक़ ह़वाइज से येही मुराद है । अलबत्ता ! बा'ज़ अह़ादीसे मुबा-रका में मिस्कीन और मज़्लूम से ता'बीर कर के इसी क़ैद की त़रफ़ इशारा किया गया है । फिर मैं ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना जलाल बुल्क़ीनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ने ख़िया़नत के मु-तअ़ल्लिक़ मेरे ज़िक्र कर्दा मौक़िफ़ के मुवाफ़िक़ ज़िक्र किया और फ़रमाया : साठवां कबीरा गुनाह "**हुक्मरानों का रआ़या से धोका करना**" है । क्यूं कि बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीसे पाक में है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस बन्दे को रआ़या का निगरान बनाए और वोह अपनी रआ़या से ख़िया़नत करते हुए मर जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर जन्नत ह़राम फ़रमा देता है ।"(2)

फिर मैं ने दीगर उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام का कलाम देखा कि उन्हों ने भी हुक्काम के ज़ुल्म, रआ़या के साथ उन के धोके और ह़ाजत मन्दों और मिस्कीनों की ह़ाजतें पूरी न करने का ज़िक्र किया ।

❁❁❁❁❁❁❁

1 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۷۶۵، ج۲۲، ص۳۰۱۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب استحقاق الوالی الغاش لرعیته النار، الحدیث: ۳۶۳، ص۷۰۱۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 346 : बादशाह, क़ाज़ी वग़ैरा का मुसल्मान या ज़िम्मी पर ज़ुल्म करना म-सलन उन का माल खाना, उन्हें मारना या गाली देना वग़ैरा

## कबीरा नम्बर 347 : मज़्लूम को ज़लील करना

## कबीरा नम्बर 348 : ज़ालिमों के पास जाना

## कबीरा नम्बर 349 : ज़ुल्म पर उन की मदद करना

## कबीरा नम्बर 350 : बादशाह वग़ैरा को ना जाइज़ शिकायत करना

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद में इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۬ؕ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ۙ﴿۴۲﴾ (پ۱۳، ابراھیم:۴۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और हरगिज़ **अल्लाह** को बे ख़बर न जानन ज़ालिमों के काम से उन्हें ढील नहीं दे रहा है मगर ऐसे दिन के लिये जिस में आंखें खुली की खुली रह जाएंगी।

وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ﴿۲۲۷﴾ (پ۱۹، الشعراء:۲۲۷)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और अब जाना चाहते हैं ज़ालिम कि किस करवट पर पलटा खाएंगे।

وَلَا تَرْكَنُوْۤا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ (پ۱۲، ھود:۱۱۳)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और ज़ालिमों की त़रफ़ न झुको कि तुम्हें आग छूएगी और **अल्लाह** के सिवा तुम्हारा कोई ह़िमायती नहीं फिर मदद न पाओगे।

"किसी चीज़ की त़रफ़ झुकाव" से मुराद सुकून ह़ासिल करना और मह़ब्बत के साथ उस की त़रफ़ माइल होना है। इसी वज्ह से ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इस आयते मुबा-रका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "मह़ब्बत व मवद्दत और नर्म गुफ़्त-गू के ज़रीए उन की त़रफ़ मुकम्मल त़ौर पर माइल न हो जाओ।" ह़ज़रते सय्यिदुना सुद्दी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ज़ैद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "इन को ज़ाहिरी त़ौर पर ख़ुश न करो।" ह़ज़रते सय्यिदुना इक्रिमा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "न इन की पैरवी करो


www.dawateislami.net

और न ही इन से महब्बत करो।" हज़रते सय्यिदुना अबू आलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "इन के आ'माल पर रिज़ा मन्द न रहो।"(1) ज़ाहिर येह है कि मज़्कूरा तमाम अक़्वाल गुज़श्ता आयते मुबा–रका से मुराद हो सकते हैं।

एक और मक़ाम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

اُحْشُرُوا الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا وَ اَزْوَاجَهُمْ (پ۲۳، الصافات:۲۲) **तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान :** हांको ज़ालिमों और उन के जोड़ों को।

या'नी उन के हम–मिस्ल और पैरवी करने वाले।

## बरोज़े क़ियामत ज़ुल्म की ह़ालत :

हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**ज़ुल्म क़ियामत के दिन कई तारीकियों (का सबब) होंगे।**"(2)

﴾1﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म–दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ज़ुल्म से बचो क्यूं कि ज़ुल्म क़ियामत के दिन कई तारीकियां होंगे और बुख़्ल से बचो क्यूं कि बुख़्ल ने तुम से पहले लोगों को हलाक कर दिया, इस ने उन्हें इस बात पर उभारा कि वोह लोगों का ख़ून बहाएं और उन की ह़राम चीज़ों को ह़लाल जानें।"(3)

## ज़ुल्म ह़राम है :

﴾2﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "**ऐ मेरे बन्दो ! मैं ने ख़ुद पर ज़ुल्म ह़राम ठहराया और तुम्हारे दरमियान भी इसे ह़राम क़रार दे दिया** पस आपस में एक दूसरे पर ज़ुल्म न करो।"(4)

﴾3﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ज़ुल्म से बचो क्यूं कि **ज़ुल्म क़ियामत के दिन तारीकियां होंगे** और फ़ोह़्श कलामी से बचो क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बुरी बातें और बे शर्मी के काम करने वाले को पसन्द नहीं फ़रमाता और बुख़्ल से

(1) ......كتاب الكبائر للذهبی، الكبيرة السادسة والعشرون الظلم، فصل فی الحذرمن الدخول......الخ ،ص ۱۲۵ ـ

(2) ......صحيح البخاری، كتاب المظالم، باب الظلم ظلمات يوم القيامة، الحديث: ۲۴۴۷، ص ۱۹۲ ـ

(3) ......صحيح مسلم ، كتاب البر والصلة والادب ، باب تحريم الظلم، الحديث : ۲۵۷۸، ص ۱۱۲۹ ـ

(4) ......صحيح مسلم ، كتاب البر والصلة والادب ، باب تحريم الظلم ، الحديث : ۲۵۷۲، ص ۱۱۲۹ ـ



www.dawateislami.net

बचो क्यूं कि बुख़्ल ने तुम से पहले लोगों को आमादा किया तो उन्हों एक दूसरे के ख़ून बहाए और ह़राम चीज़ों को ह़लाल जाना।''(1)

﴾4﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ख़ियानत से बचो क्यूं कि येह बुरी ख़स्लत है और ज़ुल्म से बचो क्यूं कि **ज़ुल्म क़ियामत के दिन तारीकियां होंगे** और बुख़्ल से बचो क्यूं कि बुख़्ल ने तुम से पहले लोगों को हलाक कर दिया यहां तक कि उन्हों ने लोगों के ख़ून बहाए और उन की ह़राम चीज़ों को ह़लाल जाना।''(2)

## ज़ुल्म क़ह़त़-साली का सबब है :

﴾5﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''आपस में एक दूसरे पर ज़ुल्म न करो वरना तुम दुआ़ करोगे तो क़बूल न होगी और बारिश मांगोगे तो बारिश न दी जाएगी और मदद त़लब करोगे तो मदद न की जाएगी।''(3)

## शफ़ाअ़त से मह़रूम लोग :

﴾6﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मेरी उम्मत में दो क़िस्म के लोगों को मेरी शफ़ाअ़त न पहुंचेगी : (1)...... बहुत ज़ियादा ज़ालिम और सख़्त दिल ह़ाकिम और (2)...... दीन में ह़द से बढ़ने वाला और इस से निकल जाने वाला हर शख़्स।''(4)

## जुदाई का सबब :

﴾7﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाया करते थे : ''मुसल्मान मुसल्मान का भाई है, न तो इस पर ज़ुल्म करता है और न ही इस से ख़ियानत करता है।'' और येह भी फ़रमाते : ''उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है! दो शख़्स आपस में मह़ब्बत करते रहते हैं फिर उन में से किसी एक के कोई गुनाह करने के सबब उन के

(1)......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان ،کتاب التاریخ ،باب بدء الخلق ،الحدیث : ۶۲۱۵ ،ج۸،ص۴۸۔

(2)......المعجم الاوسط،الحدیث: ۲۲۹،ج۱،ص۱۸۹۔

(3)......مجمع الزوائد، کتاب الخلافۃ ،باب الزجر عن الظلم، الحدیث : ۹۱۹۱ ،ج۵،ص۴۲۳۔

(4)......المعجم الکبیر، الحدیث : ۸۰۷۹،ج۸، ص۲۸۱۔

المعجم الاوسط، الحدیث: ۶۴۰،ج۱،ص۱۹۲۔



www.dawateislami.net

दरमियान जुदाई डाल दी जाती है।''(1)

﴾8﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़ालिम को ढील देता रहता है जब पकड़ता है तो फिर नहीं छोड़ता फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِىَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗۤ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ﴿۱۰۲﴾ (پ۱۲، هود:۱۰۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐसी ही पकड़ है तेरे रब की जब बस्तियों को पकड़ता है उन के ज़ुल्म पर बेशक उस की पकड़ दर्दनाक करी है।(2)

﴾9﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''शैतान सर ज़मीने अ़रब में बुतों की पूजा किये जाने से मायूस हो चुका है मगर इस के बदले वोह तुम से उन गुनाहों से राज़ी हो जाएगा जिन को तुम ह़क़ीर समझते हो ह़ालां कि येह क़ियामत के दिन हलाक करने वाले होंगे, ह़स्बे इस्तित़ाअ़त ज़ुल्म से बचो इस लिये कि बन्दा क़ियामत के दिन नेकियां ले कर आएगा और समझेगा कि येह इसे नजात दिला देंगी, एक और शख़्स बारगाहे रबूबिय्यत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ करेगा : ''ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरे बन्दे ने मुझ पर ज़ुल्म किया।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (फ़रिश्तों से) इर्शाद फ़रमाएगा : ''इस (ज़ालिम) की नेकियों को कम कर दो।'' पस इस त़रह़ होता रहेगा यहां तक कि गुनाहों के सबब उस के पास कोई नेकी न रहेगी। इस की मिसाल उन मुसाफ़िरों की सी है जिन्हों ने एक बयाबान ज़मीन पर पड़ाव किया लेकिन उन के पास लकड़ियां न थीं, पस वोह लकड़ियां इकट्ठी करने के लिये बिखर गए और लकड़ियां इकट्ठी कर के आग रोशन की और फिर जो चाहा पकाया और गुनाहों का मुआ़-मला भी इसी त़रह़ है।''(3) (लकड़ियों के गट्ठे की त़रह़ एक एक कर के गुनाहों का भी अम्बार लग जाता है)

﴾10﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने इ़ज़्ज़त या किसी दूसरी चीज़ में अपने भाई पर ज़ुल्म किया हो वोह उस वक़्त से पहले आज ही मुआ़फ़ी मांग ले कि जब दीनार होंगे न दिरहम। अगर उस के पास अच्छा अ़मल होगा तो उस के ज़ुल्म के बराबर उस से वोह ले लिया जाएगा और अगर उस के पास नेकियां न होंगी तो मज़्लूम के गुनाह उस के खाते में डाल दिये जाएंगे।''(4)

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد الله بن عمر بن الخطاب ، الحديث : ۵۳۵۷، ج۲، ص۳۴۸۔

2 ......صحيح البخارى، كتاب التفسير، سورة هود، باب قوله﴿وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ...الخ، الحديث : ۴۶۸۶، ص۳۸۹۔

3 ......مسند ابى يعلى الموصلى، مسند عبد الله بن مسعود، الحديث : ۵۱۰۰، ج۴، ص۳۸۱۔

4 ......صحيح البخارى ، كتاب المظالم، باب من كانت له مظلمة ......الخ ، الحديث : ۲۴۴۹، ص۱۹۲۔



www.dawateislami.net

## मुफ़्लिस कौन है ?

﴾11﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो कि मुफ़्लिस कौन है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "हम में मुफ़्लिस वोह है जिस के पास न दिरहम हो और न ही माल ।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत में मुफ़्लिस वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़े और ज़कात ले कर आएगा लेकिन उस ने इस को गाली दी होगी, उस पर तोहमत लगाई होगी, इस का माल खाया होगा, उस का ख़ून बहाया होगा और इस को मारा होगा, पस इस को भी उस की नेकियां दी जाएंगी और उस को भी उस की नेकियां दी जाएंगी, फिर अगर हुक़ूक़ पूरे होने से पहले उस की नेकियां ख़त्म हो गईं तो उन के गुनाह उस पर डाल दिये जाएंगे, फिर उसे (जहन्नम की) आग में फेंक दिया जाएगा ।"(1)

## मज़्लूम की बद-दुआ़ :

﴾12﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को यमन की त़रफ़ भेजा तो इर्शाद फ़रमाया : "मज़्लूम की बद-दुआ़ से बचो क्यूं कि उस के और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरमियान कोई ह़िजाब नहीं होता ।"(2)

## तीन क़िस्म के मक़्बूल बन्दे :

﴾13﴿...... ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तीन शख़्स ऐसे हैं जिन की दुआ़ रद नहीं होती : (1) रोज़ादार की यहां तक कि इफ़्त़ार करे (2) आ़दिल हुक्मरान की और (3) मज़्लूम की, इस की दुआ़ को तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बादलों के ऊपर बुलन्द कर देता है और उस के लिये आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और परवर दगार عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : मेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! मैं ज़रूर तेरी मदद करूंगा चाहे कुछ देर बा'द ही हो ।"(3)

---

1 ......صحیح مسلم ،کتاب البر والصلة والادب ،باب تحریم الظلم ،الحدیث :۲۵۷۹،ص۱۱۲۹ ۔

2 ......صحیح البخاری،کتاب الزکاة،باب اخذالصدقة من الاغنیاء وترد فی......الخ، الحدیث :۱۴۹۶،ص۱۱۸ ۔

3 ......جامع الترمذی ،کتاب الدعوات ،باب سبق المفردون ،الحدیث :۳۵۹۸،ص۲۰۲۲ ۔



www.dawateislami.net

﴾14﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि तीन बन्दों की दुआ रद न फ़रमाए : (1) रोज़ादार यहां तक कि इफ़्तार कर ले (2) मज़्लूम यहां तक कि उस की मदद कर दी जाए और (3) मुसाफ़िर यहां तक कि वापस लौट आए।''(1)

﴾15﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''तीन बन्दों की क़बूलिय्यते दुआ में कोई शक नहीं : (1) मज़्लूम की दुआ (2) मुसाफ़िर की दुआ और (3) बाप की बेटे के लिये दुआ।''(2)

﴾16﴿...... सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''मज़्लूम की बद-दुआ से बचो क्यूं कि वोह आस्मान की त़रफ़ बुलन्द होती है गोया कि वोह चिंगारी है।''(3)

﴾17﴿...... रह़मते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''तीन शख़्सों की दुआ क़बूल की जाती है : बाप, मुसाफ़िर और मज़्लूम।''(4)

﴾18﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मज़्लूम की दुआ क़बूल की जाती है और अगर वोह फ़ाजिर हो तो उस के गुनाहों का अ़ज़ाब उसे पहुंचेगा।''(5)

﴾19﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''दो दुआएं ऐसी हैं कि उन के और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरमियान कोई ह़िजाब नहीं होता : (1) मज़्लूम की दुआ और (2) किसी शख़्स का अपने भाई के लिये पीठ पीछे दुआ करना।''(6)

﴾20﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''मज़्लूम की बद-दुआ से बचो क्यूं कि वोह बादल के ऊपर उठा ली जाती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं तेरी ज़रूर मदद करूंगा ख़्वाह कुछ देर

---

1 ......الترغيب والترهيب، كتاب القضاء، باب الترهيب من الظلم......الخ، الحديث: ٣٤٠٩، ج٣، ص١٤١۔

2 ......جامع الترمذی، ابواب البر والصلة، باب ماجاء فی دعوة الوالدين، الحديث: ١٩٠٥، ص١٨٤٤۔

3 ......المستدرک، كتاب الايمان، باب اتقوا دعوات المظلوم، الحديث: ٨٩، ج١، ص١٨٧۔

4 ......المعجم الكبير، الحديث: ٩٣٩، ج١٧، ص٣٤٠۔

5 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی هريرة، الحديث: ٨٨٠٣، ج٣، ص٢٩٦۔

6 ......المعجم الكبير، الحديث: ١١٢٣٢، ج١١، ص٩٨۔



www.dawateislami.net

बा'द सही।''(1)

﴾21﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मज़्लूम की दुआ़ में कोई ह़िजाब नहीं होता अगर्चे वोह काफ़िर ही हो।''(2)

﴾22﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''मेरा ग़ज़ब उस पर शदीद होता है जिस ने उस शख़्स पर ज़ुल्म किया जो मेरे सिवा किसी को मददगार नहीं पाता।''(3)

﴾23﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मुसल्मान मुसल्मान का भाई है, न उस पर ज़ुल्म करता है, न उस से ख़ियानत करता है और न ही उसे ह़क़ीर जानता है (रावी फ़रमाते हैं फिर) आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने सीनए अक़्दस की त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया : तक़्वा यहां है, तक़्वा यहां है, और एक इन्सान के लिये इतनी ही बुराई काफ़ी है कि वोह अपने मुसल्मान भाई को ह़क़ीर जाने, हर मुसल्मान पर मुसल्मान का ख़ून, इ़ज़्ज़त और माल ह़राम है।''(4)

## सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सह़ीफ़े :

﴾24﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सह़ीफ़े कैसे थे ?'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''वोह तमाम के तमाम मिसालों पर मुश्तमिल थे : (म-सलन) (1)...... ऐ मग़रूर व मुसल्लत़ बादशाह ! मैं ने तुझे दुन्या को एक दूसरी पर इकठ्ठा करने के लिये नहीं भेजा बल्कि इस लिये भेजा कि मुझ से मज़्लूम की दुआ़ को रोक क्यूं कि मैं उस की दुआ़ रद नहीं करता अगर्चे वोह काफ़िर ही हो। (2)...... जब तक अ़क़्ल मन्द की अ़क़्ल पर कोई चीज़ ग़ालिब नहीं आती उस वक़्त तक उस के लिये चन्द घड़ियां हैं : (i) एक वोह घड़ी जिस में वोह अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात करता है।

---

(1)......المعجم الكبير، الحديث : ٣٧١٨، ج٤، ص٨٤۔

(2)......المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند انس بن مالک بن النضر ،الحديث :١٢٥٥١ ،ج٤،ص٣٠٦۔

(3)......المعجم الصغير للطبرانی، الحديث :٧١، الجزء الاول،ص٣١۔

(4)......صحيح مسلم، كتاب البر والصلة والادب ،باب تحريم ظلم المسلم......الخ ،الحديث :٢٥٦٤،ص١١٢٧۔



www.dawateislami.net

(ii) एक वोह जिस में वोह अपने नफ़्स का मुहा-सबा करता है। (iii) एक वोह जिस में वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र करता है और (iv) एक वोह जिस में वोह अपने खाने पीने की ज़रूरिय्यात के लिये अ़ला-ह़दा होता है। (3) अ़क़्ल मन्द पर लाज़िम है कि वोह 3 मक़ासिद के लिये सफ़र करे : (i) आख़िरत के लिये ज़ादे राह तय्यार करना या (ii) गु-ज़रे अवक़ात के लिये कमाना (iii) ग़ैर ह़राम में लज़्ज़त ह़ासिल करना। (4)...... अ़क़्ल मन्द पर लाज़िम है कि वोह अपने ज़माने को देखने वाला, अपनी शान पर तवज्जोह रखने वाला और अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने वाला हो। (5)...... जो अपने कलाम का अपने काम से मुवा-ज़ना करता है और वोह बा मक़्सद बात ही करता है।"

## सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सह़ीफ़े :

(ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :) मैं ने फिर अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के सह़ीफ़े कैसे थे ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह तमाम के तमाम इ़ब्रत वाले (या'नी इ़ब्रत अंगेज़ बातों पर मुश्तमिल) थे : (म-सलन) (1)...... मुझे उस पर तअ़ज्जुब है जिसे मौत का यक़ीन है फिर भी वोह ख़ुश होता है (2)...... मैं उस पर ह़ैरान हूं जिसे जहन्नम का यक़ीन है फिर भी वोह हंसता है (3)...... मुझे उस पर ह़ैरानी है जिसे तक़्दीर का यक़ीन है फिर भी वोह ह़ीला साज़ी करता है (4)...... तअ़ज्जुब है मुझे उस पर जो दुन्या और दुन्यादारों पर दुन्या का पलटना देखता रहता है फिर भी इस से मुत्मइन होता है और (5)..... मैं उस पर सख़्त ह़ैरान हूं जिसे कल ह़िसाबो किताब का यक़ीन भी है फिर भी वोह अ़मल नहीं करता।"

## आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नसीह़तें :

(ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :) मैं ने फिर अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे नसीह़त फ़रमाइये।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने की नसीह़त करता हूं क्यूं कि येह तमाम मुआ़-मले की अस्ल है।" मैं ने फिर अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मज़ीद नसीह़त फ़रमाइये।" इर्शाद फ़रमाया : "अपने ऊपर क़ुरआने करीम की तिलावत और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र लाज़िम कर लो, इस लिये कि येह तेरे लिये ज़मीन में नूर और आस्मान में चरचे का बाइ़स होगा।" मैं ने फिर अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मज़ीद नसीह़त फ़रमाइये।" इर्शाद फ़रमाया : "ज़ियादा हंसने से बचो क्यूं कि येह दिल को मुर्दा करता



www.dawateislami.net

और चेहरे का नूर ख़त्म कर देता है।'' मैं ने फिर अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मज़ीद नसीह़त फ़रमाइये।'' इर्शाद फ़रमाया : ''अपने ऊपर जिहाद लाज़िम कर लो क्यूं कि येही मेरी उम्मत की रोहबानिय्यत है।'' मैं ने फिर अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मज़ीद नसीह़त फ़रमाइये।'' इर्शाद फ़रमाया : ''मसाकीन से मह़ब्बत करो और उन के साथ बैठा करो।'' मैं ने फिर अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मज़ीद नसीह़त फ़रमाइये।'' इर्शाद फ़रमाया : ''अपने से कमतर की त़रफ़ देखो, अपने से बेहतर की त़रफ़ न देखो क्यूं कि तेरे लिये येही बेहतर है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत को ह़क़ीर न समझो।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मज़ीद नसीह़त फ़रमाइये।'' इर्शाद फ़रमाया : ''ह़क़ बात कहो अगर्चे कड़वी ही हो।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मज़ीद नसीह़त फ़रमाइये।'' इर्शाद फ़रमाया : ''तू अपने जिस ऐ़ब को जानता है वोह तुझे लोगों से दूर न करे और जो गुनाह तू ख़ुद करता हो उस की बिना पर लोगों से नाराज़ न हो और तेरे लिये इतना ही ऐ़ब काफ़ी है कि तू लोगों के उ़यूब जाने मगर अपने अन्दर मौजूद ख़ामियों से ग़ाफ़िल हो और जो गुनाह तू ख़ुद करता हो उस के सबब लोगों से नाराज़ हो।'' (ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं :) फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते अक़्दस मेरे सीने पर मारा और इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अबू ज़र ! तदबीर जैसी कोई अ़क़्ल मन्दी नहीं, (ह़राम कामों से) बचने जैसा कोई तक़्वा नहीं और अच्छे अख़्लाक़ जैसी कोई शराफ़त नहीं।''(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ ज़किय्युद्दीन अ़ब्दुल अ़ज़ीम मुन्ज़िरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक को ज़िक्र करने के बा'द फ़रमाते हैं : ''येह ह़दीसे पाक ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन हिश्शाम बिन यह़्या ग़स्सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی अपने वालिद से रिवायत करने में मुन्फ़रिद हैं, येह त़वील ह़दीसे मुबा–रका है जिस की इब्तिदा में ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़िक्रे ख़ैर है, मैं ने इस में से येही ह़िस्सा ज़िक्र किया है क्यूं कि इस में अ़ज़मत वाले अह़काम और बड़ी बड़ी नसीह़तें मौजूद हैं।''(2)

## जैसी करनी वैसी भरनी :

﴾25﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो किसी मुसल्मान को ऐसे मक़ाम पर ज़लील करे जहां उस की बे इ़ज़्ज़ती और आबरू रेज़ी

(1) ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان،باب ماجاء فی الطاعات ثوابھا،الحدیث : ۳۶۲،ج ۱،ص۲۸۸ ـ

(2) ......الترغیب والترھیب، کتاب القضاء، باب الترھیب من الظلم......الخ ،تحت الحدیث : ۳۴۱۸،ج۳،ص۱۴۴ ـ



www.dawateislami.net

की जा रही हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसी जगह ज़लीलो रुस्वा करेगा जहां वोह अपनी मदद चाहता होगा और जो किसी मुसल्मान की ऐसी जगह मदद करे जहां उस की इ़ज़्ज़त घटाई जा रही हो और उस की हुरमत का ख़याल न रखा जा रहा हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की ऐसी जगह पर मदद फ़रमाएगा जहां उसे मददे इलाही दरकार होगी।''(1)

## मज़्लूम की मदद न करने की सज़ा :

﴾26﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों में से किसी बन्दे को क़ब्र में 100 कोड़े मारने का हुक्म दिया गया, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करता रहा और पुकारता रहा यहां तक कि उस की सज़ा एक कोड़ा रह गई और (कोड़ा लगा तो) उस की क़ब्र में आग ही आग हो गई, जब आग ख़त्म हुई और उसे इफ़ाक़ा हुवा तो उस ने (फ़रिश्तों से) पूछा : ''तुम ने मुझे कोड़ा क्यूं मारा ?'' उन्हों ने बताया : ''तू ने एक नमाज़ बिग़ैर त़हारत के पढ़ी थी और एक मज़्लूम के पास से गुज़रा था लेकिन उस की मदद न की।''(2)

﴾27﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं ज़ालिम से दुन्या व आख़िरत में ज़रूर इन्तिक़ाम लूंगा और उस से भी ज़रूर इन्तिक़ाम लूंगा जिस ने किसी मज़्लूम को देखा और उस की मदद पर क़ुदरत के बा वुजूद मदद न की।''(3)

## ज़ालिम की मदद करने का त़रीक़ा :

﴾28﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अपने भाई की मदद कर ख़्वाह वोह ज़ालिम हो या मज़्लूम।'' एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर वोह मज़्लूम हो फिर तो मैं उस की मदद करूंगा और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क्या ख़याल है कि अगर वोह ज़ालिम हो तो उस की मदद कैसे करूं ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''तू उसे ज़ुल्म से रोके या मन्अ़ करे, बेशक येही उस की मदद है।''(4)

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب الرجل یذب عن عرض اخیه، الحدیث: ۴۸۸۴، ص۱۵۸۱، بتغیرٍقلیلٍ۔

2 ......التمهید لابن عبدالبر، یحیٰی بن سعید الانصاری، تحت الحدیث: ۳۲/۷۳۸، ج۱۰، ص۱۲۶۔

3 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۰۶۵۲، ج۱۰، ص۲۷۸۔

4 ......صحیح البخاری، کتاب الاکراه، باب یمین الرجل لصاحبه ......الخ، الحدیث: ۶۹۵۲، ص۵۸۰۔



www.dawateislami.net

﴾29﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बन्दे को अपने ज़ालिम या मज़्लूम भाई की मदद करनी चाहिये अगर वोह ज़ालिम हो तो उसे रोके, बेशक येही उस की मदद है और अगर वोह मज़्लूम हो तो उस की मदद करे।''(1)

﴾30﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो शख़्स किसी मोमिन को मुनाफ़िक़ से बचाए (रावी फ़रमाते हैं कि) मेरे ख़याल में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह इर्शाद फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक फ़रिश्ता भेजेगा जो क़ियामत के दिन उस के गोश्त को जहन्नम की आग से बचाएगा।''(2)

﴾31﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने गाउं में रिहाइश इख़्तियार की उस का मिज़ाज सख़्त हो गया और जिस ने शिकार का पीछा किया वोह ग़ाफ़िल हो गया और जो बादशाह के दरवाज़े पर आया वोह आज़्माइश में मुब्तला किया गया और बन्दा बादशाह के जितना ज़ियादा क़रीब होता है वोह रह़मते इलाही से उतना ज़ियादा दूर हो जाता है।''(3)

﴾32﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने गाउं में सुकूनत इख़्तियार की उस का मिज़ाज सख़्त हो गया और जिस ने शिकार का पीछा किया वोह ग़ाफ़िल हो गया और जो बादशाह के पास आया वोह आज़्माइश में मुब्तला हुवा।''(4)

## जामे कौसर से मह़रूमी का एक सबब :

﴾33﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन उ़ज्रह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे बे वुक़ूफ़ों की हुकूमत से पनाह में रखे।'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''बे वुक़ूफ़ों की हुकूमत से क्या मुराद है ?'' तो आप

---

1......صحيح مسلم، كتاب البر والصلة والادب، باب نصر الاخ ظالما او مظلوما، الحديث: ٢٥٨٢، ص ١١٣٠ ـ

2......سنن ابی داود، كتاب الادب، باب الرجل يذب عن عرض اخيه، الحديث: ٤٨٨٣، ص ١٥٨١ ـ

3......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی هريرة، الحديث: ٨٨٤٥، ج٣، ص ٣٠٤ ـ

4......سنن ابی داود، كتاب الصيد، باب فی اتباع الصيد، الحديث: ٢٨٥٩، ص ١٤٣٦ ـ
المعجم الكبير، الحديث: ١١٠٣٠، ج ١١، ص ٤٧ ـ



www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरे बा'द ऐसे उ–मरा व हुक्मरान होंगे जो न मेरी हिदायत के मुत़ाबिक़ हिदायत देंगे और न ही मेरी सुन्नत पर अ़मल करेंगे, पस जिन लोगों ने उन के झूट को सच क़रार दिया और उन के ज़ुल्म पर उन की मदद की तो वोह मुझ से नहीं और न मैं उन से हूं और न ही वोह मेरे ह़ौज़ पर आएंगे और जिन लोगों ने उन के झूट को सच क़रार न दिया और न ही उन के ज़ुल्म पर उन की मदद की तो वोह मुझ से हैं और मैं उन से हूं, अ़न्क़रीब वोह मेरे ह़ौज़ पर आएंगे। ऐ का'ब बिन उ़ज्रह ! रोज़ा ढाल है और स–दक़ा गुनाहों को मिटाता है और नमाज़ क़ुर्बे इलाही का ज़रीआ़ है, (रावी फ़रमाते हैं) या फ़रमाया : नमाज़ दलील है। ऐ का'ब बिन उ़ज्रह ! लोग दो ह़ाल में सुब्ह़ करते हैं पस अपने नफ़्स को बेचने वाला उसे आज़ाद करने वाला होता है या उस को बेचने वाला उसे हलाक करने वाला होता है।"(1)

﴾34﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अ़न्क़रीब उ–मरा होंगे, जो उन के पास आएगा, उन के ज़ुल्म पर उन की मदद करेगा, उन के झूट को सच क़रार देगा तो मेरा उस से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं और न ही उस का मुझ से कोई तअ़ल्लुक़ है और वोह मेरे ह़ौज़ पर हरगिज़ न आएगा और जो उन के पास न गया, उन के ज़ुल्म पर उन की मदद न की, न ही उन के झूट को सच क़रार दिया तो वोह मुझ से है और मैं उस से हूं, अ़न्क़रीब वोह मेरे ह़ौज़ पर आएगा।"(2)

﴾35﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन उ़ज्रह رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है, (ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया :) "ऐ का'ब बिन उ़ज्रह ! मैं तेरे बारे में ऐसे उ–मरा से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करता हूं जो मेरे बा'द होंगे, जो उन के दरवाज़ों से वाबस्ता हुवा और उन के झूट को सच क़रार दिया और उन के ज़ुल्म पर उन की मदद की तो वोह मुझ से नहीं और न मैं उस से हूं और वोह मेरे ह़ौज़ पर न आएगा, और जो उन से वाबस्ता हुवा या न हुवा और उन के झूट को सच क़रार न दिया और न ही उन के ज़ुल्म पर उन की इआ़नत की तो वोह मुझ से है और मैं उस से हूं और अ़न्क़रीब वोह मेरे ह़ौज़ पर आएगा।"(3)

1 ......المسند للامام احمد حنبل،مسند جابربن عبد الله ،الحديث : ۱۴۴۴۸،ج۵،ص۶۲۔

2 ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان ،كتاب الصلاة ،باب فضل الصلوات الخمس ،الحديث : ۱۷۲۰،ج۳،ص۱۱۱۔

3 ......جامع الترمذى ،ابواب السفر ،باب ماذكر فى فضل الصلاة ،الحديث : ۶۱۴،ص۱۷۰۶۔



www.dawateislami.net

﴾36﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन उ़ज्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए हम 9 अफ़्राद थे, 5 एक और 4 एक या'नी एक गुरौह अ़-रबों का और एक अ़-जमिय्यों का था। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ग़ौर से सुनो ! क्या तुम सुन रहे हो ? यक़ीनन अ़न्क़रीब मेरे बा'द उ-मरा होंगे जो उन के पास जाएगा और उन के झूट को सच क़रार देगा और उन के ज़ुल्म पर उन की मदद करेगा तो मेरा उस से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं और न ही उस का मुझ से कोई तअ़ल्लुक़ है और वोह मेरे ह़ौज़ पर हरगिज़ न आएगा और जो उन के पास न गया और उन के ज़ुल्म पर उन की मदद न की और न ही उन के झूट को सच क़रार दिया तो वोह मुझ से है और मैं उस से हूं और वोह मेरे ह़ौज़ पर आने वाला है।"(1)

﴾37﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़े इशा के बा'द हमारे पास तशरीफ़ लाए जब कि हम मस्जिद में थे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आस्मान की त़रफ़ निगाहे रह़मत उठाई फिर नीचे कर ली यहां तक कि हम ने गुमान किया कि आस्मान में कोई मुआ़-मला पेश आया है, फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जान लो ! मेरे बा'द ऐसे उ-मरा होंगे जो ज़ुल्म करेंगे और झूट बोलेंगे, जिस ने उन के झूट को सच क़रार दिया और उन के ज़ुल्म पर उन की मदद की वोह मुझ से नहीं और न ही मैं उस से हूं और जिस ने उन के झूट को सच क़रार न दिया और न ही उन के ज़ुल्म पर उन के साथ तआ़वुन किया वोह मुझ से है और मैं उस से हूं।"(2)

﴾38﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हम सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरे अक़्दस पर बैठे हुए थे कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : "ग़ौर से सुनो।" हम ने अ़र्ज़ की : "इर्शाद फ़रमाइये।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर फ़रमाया : "ग़ौर से सुनो।" हम ने अ़र्ज़ की : "इर्शाद फ़रमाइये।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरे बा'द ऐसे हुक्मरान होंगे कि तुम उन के झूट की तस्दीक़ न करना और न ही उन के ज़ुल्म पर इआ़नत करना, जिस ने उन के झूट की तस्दीक़ की और उन के ज़ुल्म पर उन की

1 ......جامع الترمذی،ابواب الفتن، باب فی التحذیر عن موافقة امراء السوء، الحدیث : ۲۲۵۹،ص۱۸۷۹۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل ،حدیث النعمان بن بشیر ،الحدیث : ۱۸۳۸۱،ج۶،ص۳۷۳۔



www.dawateislami.net

मदद की वोह हौज़ पर न आएगा।''(1)

﴾39﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''कुछ हुक्काम ऐसे होंगे जिन्हें उन के मुसाह़िबीन और ग़वाश (या'नी चालाक व अ़य्यार) लोग रआ़या के मुआ़-मलात से अंधेरे में रखेंगे, वोह झूट बोलेंगे और ज़ुल्म करेंगे। तो जो शख़्स उन के पास आए, उन के झूट की तस्दीक़ करे और ज़ुल्म पर उन की मदद करे उस का मुझ से कोई तअ़ल्लुक़ है न मुझे उस से कोई सरोकार, और जो उन के पास न जाए और उन के झूट की तस्दीक़ न करे और ज़ुल्म पर उन की मदद न करे मैं उस से हूं और वोह मुझ से है।''(2)

﴾40﴿...... एक रिवायत में हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने उन के झूट को सच क़रार दिया और उन के ज़ुल्म पर मदद की मैं उस से बरी हूं और वोह मुझ से बरी है।''(3)

## ख़ारदार दरख़्त से फूल हाथ नहीं आते :

﴾41﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मेरी उम्मत के कुछ लोग दीन में समझ ह़ासिल करेंगे, क़ुरआन पढ़ेंगे और कहेंगे : हम उ-मरा के पास जाते हैं ताकि उन से उन की दुन्या (की दौलत) ह़ासिल करें मगर हम अपने दीन को उन से जुदा रखते हैं। ह़ालां कि ऐसा नहीं होगा जैसा कि कांटेदार दरख़्त से कांटे ही हाथ आते हैं इसी त़रह़ वोह उन के क़ुर्ब से गुनाह ही पाएंगे।'' ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सबाह़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : ''गोया वोह उन के क़ुर्ब से गुनाहों के सिवा कुछ न पाएंगे।''(4)

﴾42﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से मरवी है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अहले बैत के लिये दुआ़ फ़रमाई और उन में अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم और ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ाति-मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا वग़ैरा का नाम लिया तो मैं ने अ़र्ज़

---

(1)......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب الصدق والامر بالمعروف......الخ، الحدیث: ۲۸۴، ج۱، ص۲۵۱۔

(2)......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی سعید الخدری، الحدیث: ۱۱۱۹۲، ۱۱۸۲۳، ج۴، ص۵۰، ۱۸۳۔

(3)......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب الصدق والامر بالمعروف......الخ، الحدیث: ۲۸۶، ج۱، ص۲۵۲۔

(4)......سنن ابن ماجه، کتاب السنة، باب الانتفاع بالعلم والعمل به، الحدیث: ۲۵۵، ص۲۴۹۳۔



www.dawateislami.net

की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या मैं भी अहले बैत से हूं ?" इर्शाद फ़रमाया : "हां ! जब तक तू किसी बादशाह के दरवाज़े पर खड़ा न होगा या किसी अमीर के पास सुवाल करने न जाएगा (तू अहले बैत से है) ।"(1)

## गुफ़्त-गू के गहरे अ-सरात :

﴾43﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अहले मदीना में से एक बा इ़ज़्ज़त शख़्स के पास से गुज़रे और उस से इर्शाद फ़रमाया : मेरा तुम से एक हु़रमत का तअ़ल्लुक़ है और दूसरा मुसल्मान होने का ह़क़ है, मैं ने तुम्हें उन उ-मरा के पास जाते और उन के हां गुफ़्त-गू करते देखा है जब कि सह़ाबिये रसूल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन ह़ारिस मु-ज़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को मैं ने येह इर्शाद फ़रमाते सुना कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम में से कोई शख़्स ऐसा कलिमा कह देता है जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ुश हो जाता है मगर वोह नहीं जानता कि इस बात ने क्या असर किया लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस बात की वज्ह से उस के लिये क़ियामत तक की ख़ुशनूदी लिख देता है और कभी तुम में से किसी के मुंह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी का कलिमा निकल जाता है और वोह नहीं जानता कि इस का क्या असर होगा लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के ह़क़ में क़ियामत तक की नाराज़ी लिख देता है ।" अब तुम ख़ुद समझ लो कि अपने मुंह से किस क़िस्म की बातें करते हो और मैं ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से सुनी हुई ह़दीसे पाक की वज्ह से बहुत सी बातों से ख़ामोश रहता हूं ।(2)

﴾44﴿...... एक रिवायत में यूं है कि ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने बेटों से इर्शाद फ़रमाया : "जब तुम किसी बादशाह के पास जाओ तो अच्छी त़रह़ (मोह़तात़ हो कर) जाओ क्यूं कि मैं ने सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना फिर गुज़श्ता ह़दीसे पाक बयान की ।"

**तम्बीह :** इन पांच गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार करना मज़्कूरा आयाते बय्यिनात और सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका से वाज़ेह़ है और येह ज़ाहिर है अगर्चे मैं ने किसी को पहले और

---

1 ......المعجم الاوسط ،الحديث : ۲۶۰۷، ج۲، ص۸۵۔

2 ......سنن ابن ماجه،ابواب الفتن،باب كف اللسان فی الفتنة،الحديث : ۳۹۶۹، ص۲۷۱۵۔

الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب البروالاحسان، باب الصدق والامر......الخ، الحديث : ۲۸۰، ج۱، ص۲۴۹۔



www.dawateislami.net

आख़िरी गुनाह के इ़लावा किसी का ज़िक्र करते हुए नहीं पाया। फिर मैं ने देखा कि बा'ज़ उ़-लमा ने चौथे गुनाह को ज़िक्र किया और इस का उ़न्वान येह क़ाइम किया : "किसी सह़ीह़ इरादे के बिग़ैर ज़ालिमों के पास जाना बल्कि उन की मदद या इ़ज़्ज़त करना या उन से मह़ब्बत करना।"

पांचवें गुनाह के मु-तअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शिहाबुद्दीन अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) ने इर्शाद फ़रमाया : "ज़ालिम बादशाह के पास मह़ज ना जाइज़ शिकायत करने को कबीरा गुनाह क़रार देना मुश्किल है जब कि इस से पैदा होने वाला गुनाह सग़ीरा हो। अलबत्ता ! अगर यूं कहा जाए कि येह उस वक़्त कबीरा बन जाता है जब उस के साथ कोई दूसरी चीज़ मिल जाए म-सलन जिस की शिकायत की जाए उस पर दबाव डाला जाए या उस के घर वालों पर रो'ब त़ारी किया जाए या बादशाह के बुलावे की वज्ह से उन्हें डराया जाए तो येह कबीरा गुनाह बन जाएगा।" फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़लीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى का गुज़श्ता कलाम ज़िक्र किया जो क़ातिल की मदद करने और मक़्तूल पर उस की रहनुमाई करने के मु-तअ़ल्लिक़ है और इर्शाद फ़रमाया : "बिला शुबा येह कलाम इस बात का तक़ाज़ा नहीं करता कि ज़ालिम बादशाह को ना जाइज़ शिकायत करना कबीरा गुनाह नहीं।"

पहले बयान हो चुका है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़लीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى का येह कलाम रद कर दिया गया है और क़ाबिले ए'तिमाद नहीं और येह जिस बात का तक़ाज़ा करता है उस की त़रफ़ नहीं देखा जाएगा। पस सह़ीह़ येही है कि ज़ालिम बादशाह को ना जाइज़ शिकायत करना कबीरा गुनाह है क्यूं कि येह चुग़ली है बल्कि चुग़ली की इन्तिहाई बुरी क़िस्म है और चुग़ली को कबीरा क़रार देना सह़ीह़ ह़दीसे पाक से साबित है, फिर जैसा कि मैं ने उ़न्वान में ज़िक्र किया, इस से मुराद येह है कि छुटकारा पाने के लिये बादशाह या दीगर हुक्काम को ना जाइज़ शिकायत करना और जिस सूरत में क़ाज़ी की गवाही ज़रूरी होती है वोह इस में शामिल नहीं बल्कि इस में मुआ़-मला ह़ाकिम तक पहुंचाना ज़रूरी है सिवाए येह कि कोई उ़ज़्र हो।

ह़ज़रते सय्यिदुना क़मूली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى "**अल जवाहिर**" में चुग़ली के मु-तअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम यह़्या बिन शरफ़ न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 676 हि.) के ह़वाले से फ़रमाते हैं : "अगर कोई शर-ई मस्लह़त हो तो चुग़ली मम्नूअ़ नहीं जैसा कि जब एक आदमी किसी को ख़बर देता है कि फ़ुलां शख़्स उस को, उस के घर वालों को हलाक करना चाहता है या कोई शख़्स अमीर या ह़ाकिम को बताता है कि फ़ुलां फ़साद वाले काम करता है (तो ऐसी चुग़ली मन्अ़ नहीं) और ऐसी सूरत में ह़ाकिम पर वाजिब है कि उस की तफ़्तीश व इज़ाला करे, इस की मिस्ल तमाम सूरतों में चुग़ली मम्नूअ़ नहीं बल्कि मौक़अ़ की मुना-सबत


www.dawateislami.net

से कभी वाजिब होती है और कभी मुस्तह़ब।''(1)

मैं ने उ़न्वान में आखि़री गुनाह के बारे में लफ़्ज़े ''बाति़ल'' की क़ैद लगाई और येह उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की तसरीह़ के मुताबिक़ है और बा'ज़ मु-तअख़्ख़िरीन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ''ऐसी शिकायत करना कबीरा गुनाह है जो मुसल्मान के ह़क़ में नुक़्सान देह हो अगर्चे शिकायत करने वाला सच्चा हो और इस का एह़्तिमाल है बल्कि जब इस से शदीद नुक़्सान हो तो इस का कबीरा होना यक़ीनी है।''

जान लीजिये ! जो ज़ालिमों के पास जाने का आ़दी हो वोह बा'ज़ अवक़ात येह दलील देता है कि इस का इरादा मज़्लूम या कमज़ोर की मदद करने या ज़ुल्म को दूर करने या नेकी में वासित़ा बनने का है ? इस का जवाब येह है कि जब वोह उन ज़ालिमों का खाना खाता है या उन के मक़ासिद में या उन के ह़राम माल में से किसी चीज़ में शरीक होता है या किसी बुराई के मुआ़-मले में ह़क़ पोशी करता है तो उस की बुरी ह़ालत के पेशे नज़र किसी दलील की ज़रूरत नहीं क्यूं कि हर साह़िबे बसीरत गवाही देगा कि वोह सीधे रास्ते से भटका हुवा और अपने पेट और ख़्वाहिश का ग़ुलाम है, पस येह उन लोगों में से है जिन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने गुमराह और हलाक कर दिया, नीज़ आ'माल के ए'तिबार से उन ख़सारा उठाने वाले लोगों में से है जिन की कोशिश दुन्यवी ज़िन्दगी में गुम हो चुकी है और वोह समझते हैं कि अच्छा काम कर रहे हैं, और वोह उन लोगों में से है जो ख़ुद को इस्लाह़ करने वाला गुमान करते हैं जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाता है :

اَلَاۤ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ لَّا یَشْعُرُوْنَ ﴿۱۲﴾ (پ۱، البقرة:۱۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** सुनता है वोही फ़सादी हैं मगर उन्हें शुऊ़र नहीं।

जो इन तमाम बातों से पाक हो तब भी वोह मह़ल्ले इश्तिबाह में है और उस के ह़ाल के लिये एक तराज़ू और मीज़ान है जो कभी उस के कामिल होने का तक़ाज़ा करता है और कभी नाक़िस होने का और जब वोह उ-मरा के पास जाने में मजबूर हो मगर चाहता हो कि काश इस के बिग़ैर गुज़ारा हो जाता और इस के बिग़ैर वोह मज़्लूम की मदद कर सकता और वोह उन की सोह़बत पर राज़ी भी न हो और अपनी ज़बान की लग़्ज़िशों का शिकार भी न हो म-सलन यूं न कहे कि मेरे बादशाह को सिफ़ारिश करने की वज्ह से वोह ज़ालिम से मह़फ़ूज़ रहा वग़ैरा और अगर बादशाह किसी को इस पर तरजीह़ दे कर अपना क़रीबी बना ले और वोह उस से मुत़्मइन हो जाए और उस का ख़याल रखने लगे तो इस पर गिरां न गुज़रे बल्कि येह ख़ुशी मह़सूस करे

(1)......شرح صحيح مسلم للنووى، كتاب الايمان، باب بيان تحريم النميمة، ج١، الجزء الثانى، ص١١٣۔



www.dawateislami.net

कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे इस बड़ी आज़्माइश से नजात अ़ता फ़रमाई है। पस इन सूरतों में वोह सह़ीह़ इरादे वाला और बहुत ज़ियादा सवाब पाने वाला है और जब उस में येह तमाम ख़स्लतें न पाई जाएं तो वोह फ़ासिद निय्यत वाला और हलाक होने वाला है क्यूं कि उस का इरादा मर्तबे की त़लब और हम-अ़स्रों पर मुमताज़ होना है। हम इस बह़्स को मज़ीद अह़ादीसे मुबा-रका और आसार के बयान के साथ मुकम्मल करेंगे जिन्हें बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने ज़िक्र किया है। चुनान्चे,

﴾45﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के माल में नाह़क़ तसर्रुफ़ करते हैं उन के लिये क़ियामत के दिन (जहन्नम की) आग है।"(1)

## बालिश्त भर ज़ुल्म का अ़ज़ाब :

﴾46﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने एक बालिश्त ज़मीन के बराबर भी ज़ुल्म किया बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के गले में सात ज़मीनों का त़ौक़ डालेगा।"(2)

बा'ज़ किताबों में है, ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "मेरा ग़ज़ब उस पर शदीद हो जाता है जो ऐसे शख़्स पर ज़ुल्म करे जो मेरे सिवा किसी को मददगार नहीं पाता।"(3)

शाइ़र ने कितनी अच्छी बात कही :

لَا تَظْلِمَنَّ إِذَا مَا كُنْتَ مُقْتَدِرًا　　فَالظُّلْمُ تَرْجِعُ عُقْبَاهُ إِلَى النَّدَمِ

تَنَامُ عَيْنَاكَ وَالْمَظْلُومُ مُنْتَبِهٌ　　يَدْعُوْ عَلَيْكَ وَعَيْنُ اللّٰهِ لَمْ تَنَمِ

**तरजमा :** (1)...... अगर तुझे त़ाक़त ह़ासिल हो तो हरगिज़ ज़ुल्म न कर क्यूं कि ज़ुल्म का अन्जाम नदामत है।

(2)...... तेरी आंखें सो जाती हैं मगर मज़्लूम बेदार रहता है और तुझे बद-दुआ़ देता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नहीं सोता।

एक और शाइ़र ने कहा :

---

1 ......صحیح البخاری ،کتاب فرض الخمس ،باب قوله تعالی:فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ ،الحدیث : ۳۱۱۸،ص۲۵۱۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند السیدة عائشة ،الحدیث :۲۶۲۸۴،ج۱۰،ص۱۱۷۔

3 ......المعجم الصغیر للطبرانی ،الحدیث :۷۱،الجزء الاول،ص۳۱۔



www.dawateislami.net

اِذَا مَا الظَّلُوْمُ اسْتَوْطَأَ الْاَرْضَ مَرْكَبًا وَلَجَّ غُلُوًّا فِیْ قَبِیْحِ اِکْتِسَابِہٖ
فَکِلْہُ اِلٰی صَرْفِ الزَّمَانِ فَاِنَّہٗ سَیُبْدِیْ لَہٗ مَا لَمْ یَکُنْ فِیْ حِسَابِہٖ

**तरजमा :** (1)...... जब ज़ालिम ज़ुल्म को नर्मो नाज़ुक सुवारी पाता है तो अपने बुरे अ़मल में ह़द से बढ़ जाता है।

(2)...... पस इस मुआ़-मले को ज़माने के सिपुर्द कर दे, बेशक ज़माना उस के लिये वोह चीज़ ज़ाहिर कर देगा जो उस के वह्मो गुमान में भी नहीं।

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "कमज़ोरों पर हरगिज़ ज़ुल्म न करो वरना किसी दिन बुरे त़ाक़त वर लोगों में से हो जाओगे।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "बेशक हुबारा (या'नी सुर्ख़ाब नामी परिन्दा) ज़ालिम के ज़ुल्म की वज्ह से ला-ग़री व कमज़ोरी की ह़ालत में अपने घोंसले में ही मर जाता है।"(2)

## ज़ालिम की सज़ा :

**मन्क़ूल** है, **तौरात** में लिखा है कि "पुल सिरात़ के पीछे से एक मुनादी निदा करेगा : ऐ ज़ुल्म व सरकशी करने वालो ! ऐ ऐ़श परस्त बद बख़्तो ! बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी इ़ज़्ज़त की क़सम खाता है कि किसी ज़ालिम का ज़ुल्म आज येह पुल पार न कर सकेगा।"(3)

﴾47﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब ह़बशा के मुहाजिरीन हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास लौट कर आए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तुम मुझे बताओगे कि तुम ने सर ज़मीने ह़बशा में कौन सी अ़जीब चीज़ देखी ?" ह़ज़रते सय्यिदुना क़ुतैबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी उन में शामिल थे, उन्हों ने अ़र्ज़ की : जी हां ! **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! एक दिन हम बैठे हुए थे कि वहां की एक ज़ईफ़ुल उ़म्र ख़ातून हमारे पास से गुज़री जिस ने अपने सर पर पानी का एक मटका उठा रखा था, जूं ही वोह एक नौ जवान के पास से गुज़री तो उस ने अपना एक हाथ

(1)......كتاب الكبائرللذهبی، الكبيرة السادسة والعشرون:الظلم،ص ۱۱۸،۱۱۹۔

(2)......تفسير الطبری ، النحل ،تحت الآية ۲۱، الحديث : ۲۱۶۲۹،ج۷،ص۵۰۱۔

(3)......كتاب الكبائرللذهبی ،الكبيرة السادسة والعشرون:الظلم ،ص ۱۱۹۔



www.dawateislami.net

औ़रत के कन्धों के दरमियान रख कर उसे धक्का दिया, वोह बुढ़िया घुटनों के बल गिर पड़ी और उस का मटका टूट गया। जब वोह खड़ी हुई तो उस की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो कर कहा : "ऐ ग़द्दार ! अ़न्क़रीब तू जान लेगा जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरसी रखेगा और अगलों पिछलों को इकठ्ठा फ़रमाएगा और हाथ और पाउं बताएंगे जो वोह किया करते थे, अ़न्क़रीब तू जान लेगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां कल मेरा और तेरा क्या मुआ़-मला होगा ?" रावी फ़रमाते हैं : (येह सुन कर) आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस क़ौम को कैसे पाक करेगा जिस में त़ाक़त वर से कमज़ोर का ह़क़ वुसूल नहीं किया जाता ?"[(1)]

## पांच जहन्नमी :

﴾48﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "5 शख़्स ऐसे हैं जिन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ग़ज़ब होता है, अगर चाहे तो दुन्या ही में उन पर ग़ज़ब फ़रमाता है वरना आख़िरत में उन्हें जहन्नम में ले जाने का हुक्म फ़रमाएगा : (1)...... क़ौम का ऐसा अमीर जो रआ़या से अपना ह़क़ तो लेता है मगर ख़ुद उन से इन्साफ़ नहीं करता और न ही उन से ज़ुल्म दूर करता है। (2)...... क़ौम का ऐसा सरदार कि सारी क़ौम तो उस की इत़ाअ़त करती है मगर वोह त़ाक़त वर और कमज़ोर के दरमियान बराबर सुलूक नहीं करता और अपनी ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ बातें करता है। (3)...... वोह शख़्स जो अपने अहलो इयाल को इत़ाअ़ते इलाही का हुक्म नहीं देता और न ही उन्हें दीन के अह़काम सिखाता है। (4)...... वोह शख़्स जो किसी मज़दूर से उजरत पर काम लेता है और वोह काम पूरा कर लेता है मगर येह उस की मज़दूरी अदा नहीं करता और (5)...... वोह शख़्स जो किसी औ़रत पर महर के मुआ़-मले में ज़ुल्म करता है।"[(2)]

## अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मज़्लूम का रफ़ीक़ है :

﴾49﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन सलाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मख़्लूक़ को पैदा फ़रमाया और वोह अपने क़दमों पर खड़ी हो गई तो उन्हों ने बारगाहे इलाही में अपने सरों को बुलन्द कर के अ़र्ज़ की : "ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! तू किस के साथ है ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं मज़्लूम के साथ हूं यहां तक कि उसे उस

---

1 ......سنن ابن ماجه،ابواب الفتن،باب الامر بالمعروف والنهى عن المنكر،الحديث:٤٠١٠،ص٢٧١٨، بتغيرقليلٍ۔

2 ......كتاب الكبائرللذهبى،الكبيرة السادسة والعشرون:الظلم ،ص١١٩۔



www.dawateislami.net

का हक़ अदा कर दिया जाए।"(1)

## जाबिर बादशाह का महल तबाह हो गया :

﴾50﴿...... हज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि किसी जाबिर बादशाह ने एक महल बनवाया और उसे खूब पुख़्ता किया, एक मिस्कीन बुढ़िया ने पनाह लेने के लिये महल की एक त़रफ़ झोंपड़ी बना ली, एक दिन उस ज़ालिम ने सुवार हो कर महल के इर्द गिर्द चक्कर लगाया तो बुढ़िया की झोंपड़ी को देख कर पूछा : "येह किस की है ?" उसे बताया गया : "येह एक फ़क़ीर औ़रत की है, वोह इस में रहती है।" उस ने उस के गिराने का हुक्म दिया और वोह गिरा दी गई। जब बुढ़िया आई तो उसे गिरा हुवा पा कर पूछा : "इसे किस ने गिराया है ?" उसे बताया गया कि "बादशाह ने इसे देखा तो गिरा दिया।" बुढ़िया ने अपना सर आस्मान की त़रफ़ उठाया और अ़र्ज़ की : "ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मैं तो मौजूद न थी मगर तू तो मौजूद था ?" रावी फ़रमाते हैं : "पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام को हुक्म दिया कि महल को उस में रहने वालों पर उलट दें।" चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने उसे उलट दिया।(2)

## अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मज़्लूम की बद-दुआ से बे ख़बर नहीं :

**मन्कूल** है कि जब ख़ालिद बिन बरमक और इस के बेटे को क़ैद किया गया तो बेटे ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे बाप ! हम इ़ज़्ज़त के बा'द क़ैदो बन्द की सुऊ़बतों का शिकार हो गए।" तो उस ने जवाब दिया : "ऐ मेरे बेटे ! मज़्लूम की दुआ़ रात को जारी रही लेकिन हम उस से ग़ाफ़िल रहे, जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से बे ख़बर न था।"(3)

हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन ह़कीम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَلِیْم फ़रमाया करते थे कि मैं उस से ज़ियादा किसी से नहीं डरा जिस पर मैं ने ज़ुल्म किया और मैं जानता हूं कि उस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मददगार नहीं। वोह मुझ से कहता है : "मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही काफ़ी है,

---

(1) ......الدرالمنثور، البقرة، تحت الاية ۲۰۷،ج۲،ص۷۶۔

(2) ......كتاب الكبائرللذهبى، الكبيرة السادسة والعشرون:الظلم ،ص ۱۲۰ ۔

(3) ......تاريخ بغداد، الرقم ۷۴۵۹ يحيٰى بن خالد بن بَرْمَک ،ج ۱۴ ،ص۱۳۶۔



www.dawateislami.net

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही मेरे और तेरे दरमियान (इन्साफ़ करने वाला) है।''(1)

## जहन्नम ज़ालिमों का ठिकाना :

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ''क़ियामत के दिन ज़ालिम आएगा यहां तक कि जब वोह जहन्नम के पुल पर होगा तो उसे मज़्लूम मिलेगा और वोह उस पर अपने किये हुए ज़ुल्म जान लेगा, पस ज़ालिम मज़्लूमों से नजात न पाएंगे यहां तक कि उन की तमाम नेकियां मज़्लूम छीन लेंगे और अगर उन के पास नेकियां न पाएंगे तो उन पर मज़्लूमों के गुनाह डाल दिये जाएंगे जिस तरह उन्हों ने ज़ुल्म किया था यहां तक कि उन्हें जहन्नम के सब से निचले तबक़े में डाल दिया जाएगा।''(2)

## क़ियामत का होलनाक मन्ज़र :

﴾51﴿...... हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उनैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : क़ियामत के दिन लोग नंगे पाउं, बरह्ना बदन, बिला ख़तना और एक रंग में इकठ्ठे किये जाएंगे और एक मुनादी ऐसी निदा देगा जिसे दूर वाला भी ऐसे सुनेगा जैसे क़रीब वाला सुनेगा : ''मैं ग़ालिब बादशाह हूं, किसी ऐसे जन्नती को जन्नत में दाख़िल होने की इजाज़त नहीं जिस से अहले दोज़ख़ में से किसी ने अपना हक़ लेना हो यहां तक कि एक तमांचा भी किसी को मारा हो या ज़ियादा ज़ुल्म किया हो और न ही किसी ऐसे जहन्नमी को जहन्नम में दाख़िले की इजाज़त है जिस के ज़िम्मे किसी का हक़ हो यहां तक कि एक थप्पड़ या इस से ज़ियादा।'' (और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :) ''وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ﴿۴۹﴾ (پ۱۵، الکھف:۴۹) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम्हारा रब किसी पर ज़ुल्म नहीं करता।'' हम ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह कैसे होगा जब कि हम नंगे पाउं, बरह्ना बदन, बिला ख़तना और एक रंग में हाज़िर होंगे ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''नेकियों और बुराइयों के बदले में बराबर जज़ा मिलेगी।''(3)

---

1 ......كتاب الكبائر للذهبی، الكبيرة السادسة والعشرون: الظلم، ص ۱۲۰ ـ

2 ......المعجم الاوسط، الحديث: ۵۹۷۶، ج۴، ص۲۷۶، "حملوا" بدله "ادرك"

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث عبدالله بن انيس، الحديث: ۱۶۰۴۲، ج۵، ص۴۲۹ ـ

جامع بيان العلم، باب ذكر الرحلة فی طلب العلم، الحديث: ۴۲۱، ص۱۳۰ ـ



www.dawateislami.net

(चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :)

وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ﴿۴۹﴾ (پ۱۵، الکھف:۴۹) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम्हारा रब किसी पर ज़ुल्म नहीं करता।

﴾52﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने किसी को ज़ुल्मन एक कोड़ा मारा बरोज़े क़ियामत उस से भी क़िसास लिया जाएगा।''(1)

## अनोखा सबक़ :

बयान किया जाता है कि किस्रा (ईरान के बादशाह) ने अपने बेटे के लिये एक उस्ताज़ मुक़र्रर किया जो उसे ता'लीम देता और अदब सिखाता। जब लड़का मुकम्मल त़ौर पर इ़ल्मो अदब सीख गया तो एक दिन उस्ताज़ साहि़ब ने उसे बुलाया और बिग़ैर किसी जुर्म और सबब के उसे ज़ोरदार थप्पड़ लगा दिया इस वज्ह से बच्चे ने दिल में उस्ताज़ का कीना रख लिया यहां तक कि जब वोह बड़ा हुवा और उस का बाप मर गया तो वोह मम्लकत का वाली बन गया। अब उस ने उस्ताज़ को बुलाया और पूछा : ''फ़ुलां दिन बिग़ैर किसी जुर्म के आप को किस चीज़ ने मुझे मारने पर उभारा था ?'' उस्ताज़ साहि़ब ने कहा : ''ऐ बादशाह सलामत ! जान लीजिये ! जब तुम ने मुकम्मल त़ौर पर इ़ल्मो अदब सीख लिया और मैं ने जान लिया कि तुम अपने बाप के बा'द बादशाहत पा लोगे तो मैं ने चाहा कि तुम्हें सज़ा और ज़ुल्म के दर्द का मज़ा चखा दूं ताकि तुम इस के बा'द किसी पर ज़ुल्म न करो।'' तो उस ने कहा : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए (आमीन)।'' और फिर उस्ताज़ साहि़ब को इन्आ़मो इक्राम दे कर रवाना करने का हुक्म दिया।(2)

जैसा कि मैं ने गुज़श्ता एक उ़न्वान में ज़िक्र किया था कि टेक्स लेना और यतीम का माल खाना भी ज़ुल्म है और इन दोनों पर काफ़ी व शाफ़ी कलाम गुज़र चुका है।

## बहाना बाज़ी करना ज़ुल्म है :

अदाएगी की क़ुदरत के बा वुजूद किसी का ह़क़ देने में टाल मटोल करना ज़ुल्म में दाख़िल है। चुनान्चे,

﴾53﴿...... सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम में है, सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह

---

1 ......المعجم الاوسط، الحديث: ۱۴۴۵، ج۱، ص۳۹۴۔

2 ......كتاب الكبائر للذهبى، الكبيرة السادسة والعشرون: الظلم، ص۱۲۱۔



www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मालदार का टाल मटोल करना ज़ुल्म है।''[1]

﴾54﴿...... एक रिवायत में है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ख़ुशह़ाल आदमी का टाल मटोल करना ज़ुल्म है, उस की शिकायत करना और उसे सज़ा देना जाइज़ है।''[2]

## शर्हे ह़दीस :

ह़दीसे पाक में सज़ा से मुराद येह है कि उसे क़ैद कर के या मारने के साथ सज़ा देना जाइज़ है और मह्र, नफ़क़ा या कपड़ों के मुआ़–मले में बीवी पर ज़ुल्म करना ख़ुशह़ाल आदमी के टाल मटोल में दाख़िल है।

## क़ियामत का इम्तिह़ान :

﴾55﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन एक बन्दे या लौंडी के हाथ को पकड़ कर सब लोगों के सामने निदा दी जाएगी : ''येह फ़ुलां बिन फ़ुलां है जिस का इस पर ह़क़ हो वोह अपना ह़क़ वुसूल कर ले।'' तो वोह औ़रत ख़ुश हो जाएगी कि उस का अपने बेटे या भाई या शोहर पर कोई ह़क़ होगा। फिर आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने येह आयते मुबा–रका तिलावत फ़रमाई :

فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿۱۰۱﴾ (پ۱۸، المؤمنون:۱۰۱)

**तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान :** तो न उन में रिश्ते रहेंगे और न एक दूसरे की बात पूछे।

आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने ह़क़ में से जो चाहेगा मुआ़फ़ फ़रमा देगा लेकिन लोगों के ह़ुक़ूक़ बिल्कुल मुआ़फ़ नहीं करेगा बल्कि बन्दे को लोगों के सामने खड़ा किया जाएगा। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़क़दारों से इर्शाद फ़रमाएगा : ''आ कर अपने ह़ुक़ूक़ ले लो।'' आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : बन्दा अ़र्ज़ करेगा : ''ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने दुन्या फ़ना कर दी अब मैं इन के ह़ुक़ूक़ कैसे अदा करूं ?'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों से इर्शाद फ़रमाएगा : ''इस के नेक आ'माल ले लो और हर साह़िबे ह़क़ को उस के मुत़ा–लबे के मुत़ाबिक़ ह़क़ अदा कर दो।'' फिर अगर वोह बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दोस्त हुवा और उस की ज़र्रा बराबर नेकी भी बच गई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये उसे दुगना फ़रमा देगा यहां तक कि उस की

---

1 ......صحيح البخارى، كتاب الاستقراض والديون، باب مطل الغنى ظلم، الحديث: ۲۴۰۰، ص۱۸۸۔

2 ......سنن ابى داود، كتاب القضاء، باب فى الدين هل يحبس به، الحديث: ۳۶۲۸، ص۱۴۹۲، دون قوله"ظلم"۔



www.dawateislami.net

वज्ह से उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा और अगर वोह बन्दा बद बख़्त हुवा और उस की कोई नेकी न बची तो फ़िरिश्ते **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! इस की नेकियां ख़त्म हो गईं मगर मुता़–लबा करने वाले अभी बाक़ी हैं।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "उन लोगों के गुनाह ले कर इस के गुनाहों में मिला दो फिर इसे ज़ोर से मारते हुए जहन्नम में फेंक दो।"(1)

## ह़क़ीक़ी मुफ़्लिस :

गुज़श्ता रिवायत की ताईद येह ह़दीसे पाक करती है। चुनान्चे, सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़–लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो कि मुफ़्लिस कौन है ?" फिर ख़ुद ही इर्शाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत में मुफ़्लिस वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा और ज़कात ले कर आएगा और उस ने इस को गाली दी होगी और उस को मारा होगा और इस का माल लिया होगा, पस येह भी उस की नेकियों में से ले लेगा और वोह भी उस की नेकियों में से ले लेगा, फिर अगर हुक़ूक़ पूरे होने से पहले उस की नेकियां ख़त्म हो गईं तो उन के गुनाह इस पर डाल दिये जाएंगे और फिर उसे जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।"(2)

## मज़दूर की उजरत न देना ज़ुल्म है :

इसी त़रह़ मज़दूर को उस की मज़दूरी न देना भी ज़ुल्म है। जैसा कि इस की दलील गुज़र चुकी है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "मैं क़ियामत के दिन 3 आदमियों का मुक़ाबिल होउंगा : (1) जो मेरे नाम पर अ़ह्द करे फिर उस की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करे (2) जो आज़ाद शख़्स को बेच कर उस की क़ीमत खाए और (3) जो किसी शख़्स को उजरत पर रखे, उस से पूरा काम ले मगर उस की मज़दूरी अदा न करे।"(3)

## काफ़िर का माल ज़बर दस्ती लेना ज़ुल्म है :

किसी यहूदी या नसरानी पर ज़ियादती करना भी ज़ुल्म है या'नी जब्रन उस का माल ले लेना क्यूं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस

---

1 ......الزهد لابن المبارک، باب فضل ذکر اللّٰہ، الحدیث : ۱۳۱۶، ص۴۹۷، بتغیرٍقلیلٍ۔

2 ......صحیح مسلم ، کتاب البروالصلة والادب،باب تحریم الظلم، الحدیث : ۲۵۷۹، ص۱۱۲۹ ،بتغیرٍقلیلٍ۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب البیوع، باب اثم من باع حرًّا، الحدیث : ۲۲۲۷، ص۱۷۳۔



www.dawateislami.net

ने किसी ज़िम्मी पर ज़ुल्म किया मैं क़ियामत के दिन उस का मुक़ाबिल होउंगा।''(1)

## मा'मूली ह़क़ दबाने की सज़ा :

झूटी क़सम खा कर किसी का ह़क़ ले लेना भी ज़ुल्म में दाख़िल है। चुनान्चे, सह़ीह़ैन (या'नी बुख़ारी व मुस्लिम) में है :

﴾55﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो क़सम खा कर किसी मुसल्मान का ह़क़ मार ले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जहन्नम वाजिब कर देता और उस पर जन्नत ह़राम फ़रमा देता है।'' अ़र्ज़ की गई : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर्चे वोह थोड़ी सी चीज़ हो ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''अगर्चे वोह पीलू के दरख़्त की टहनी ही हो।''(2)

﴾56﴿...... मरवी है कि : ''बरोज़े क़ियामत बन्दा किसी जानने वाले को देखना सब से ना पसन्द करेगा इस ख़ौफ़ से कि कहीं वोह दुन्या में इस पर किये गए ज़ुल्म का मुत़ा-लबा न करने लगे।''(3)

जैसा कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''क़ियामत के दिन हुक़ूक़ ह़क़दारों को अदा किये जाएंगे यहां तक कि सींगों वाली बकरी से भी बिग़ैर सींगों वाली बकरी के लिय क़िसास (या'नी बदला) लिया जाएगा(4)।''(5)

## मज़्लूम से दुन्या में मुआ़फ़ी का हुक्म :

﴾57﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने इ़ज़्ज़त या किसी चीज़ के मुआ़-मले में अपने भाई पर ज़ियादती की हो वोह

1 ......سنن ابی داود، کتاب الخراج، باب فی تعشیراھل الذمۃ اذا اختلفوابالتجارۃ، الحدیث : ۳۰۵۲، ص۱۴۵۳ ـ
معرفۃ الصحابۃ، الرقم ۱۵۹۸عبداللہ بن جراد، الحدیث : ۴۰۷۵، ج۳، ص۱۱۹ ـ

2 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب وعید من اقتطع ......الخ، الحدیث : ۳۵۳، ص۷۰۱ ـ

3 ......کتاب الکبائرللذھبی، الکبیرۃ السادسۃ والعشرون : الظلم، فصل ومن الظلم ان یستأجر......الخ، ص۱۲۴ ـ

4 ...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़-करिय्या यह़्या बिन शरफ़ न-ववी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : ''येह क़िसास मुकल्लफ़ होने की वज्ह से (बत़ौरे सज़ा) नहीं लिया जाएगा क्यूं कि बकरी शर-ई अह़काम की पाबन्द नहीं, बल्कि बदले के त़ौर पर लिया जाएगा।''
(شرح صحیح مسلم للنووی، کتاب البروالصلۃ والادب، باب تحریم الظلم، ج۸، جزء۱۶، ص۱۳۷)

5 ......صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ والادب، باب تحریم الظلم، الحدیث : ۲۵۸۰، ص۱۱۲۹ ـ



www.dawateislami.net

आज ही उस से मुआफ़ी मांग ले इस से पहले कि जब न दीनार होगा और न ही दिरहम, अगर उस का कोई अच्छा अ़मल होगा तो उस से उस के ज़ुल्म के बराबर ले लिया जाएगा और अगर उस के पास नेकियां न हुईं तो मज़्लूम के गुनाह उस पर डाल दिये जाएंगे, फिर उसे जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।''(1)

## हाथ पाउं की गवाही :

﴾58﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क़ियामत के दिन सब से पहले एक शख़्स और उस की बीवी का झगड़ा होगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उस औ़रत की ज़बान न बोलेगी बल्कि उस के हाथ पाउं उस के ख़िलाफ़ गवाही देंगे जो वोह दुन्या में अपने शोहर की ना फ़रमानी करती थी और मर्द के भी हाथ पाउं उस की गवाही देंगे जो वोह अपनी बीवी के साथ अच्छा और बुरा सुलूक करता था, फिर इसी त़रह़ एक शख़्स और उस के ख़ादिमीन को बुलाया जाएगा और उन से दिरहम व क़ीरात़ नहीं लिये जाएंगे बल्कि ज़ालिम की नेकियां मज़्लूम को दी जाएंगी और मज़्लूम के गुनाह ज़ालिम पर डाल दिये जाएंगे, फिर जाबिरों को लोहे के कोड़ों या हथोड़ों या गुर्ज़ों के साथ लाया जाएगा और कहा जाएगा : ''इन्हें हांक कर जहन्नम की त़रफ़ ले जाओ।''(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी शुरैह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाया करते थे : ''अ़न्क़रीब ज़ालिम उन का ह़क़ जान लेंगे जिन का ह़क़ इन्हों ने पूरा अदा नहीं किया था, बेशक ज़ालिम सज़ा का इन्तिज़ार करता है जब कि मज़्लूम मदद और सवाब का इन्तिज़ार करता है।'' और मरवी है : ''जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे से भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उस पर ज़ालिम शख़्स को मुसल्लत़ कर देता है।''(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाऊस यमानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ख़लीफ़ा हिश्शाम बिन अ़ब्दुल मलिक के पास तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : ''अज़ान के दिन से डरो।'' ख़लीफ़ा ने अ़र्ज़ की : ''अज़ान का दिन कौन सा है ?'' फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ بَیْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِیْنَ ۙ﴿۴۴﴾ (پ۸، الاعراف:۴۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और बीच में मुनादी ने पुकार दिया कि **अल्लाह** की ला'नत ज़ालिमों पर।

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المظالم، باب من کانت له مظلمة عند......الخ، الحدیث: ۲۴۴۹، ص۱۹۲۔
صحیح مسلم، کتاب البر والصلة والادب، باب تحریم الظلم، الحدیث: ۶۵۷۹، ص۱۱۲۹۔

2 ......الموسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الاهوال، ذکر الحساب۔۔الخ، الحدیث: ۲۳۸، ج۶، ص۲۳۹۔

3 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی حسن الخلق، الحدیث : ۸۰۹۷، ج۶، ص۲۶۵ بتغیرٍ، قول: فضیل بن عیاض۔



www.dawateislami.net

तो ख़लीफ़ा चीख़ उठा, ह़ज़रते सय्यिदुना ताऊस رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "येह तो ज़िल्लत की सूरत है (इस को सुन कर तुम्हारी येह ह़ालत है) तो ज़िल्लत का मुशा-हदा कैसे करोगे ?"(1)

येह बात बयान हो चुकी है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ज़ालिम के मददगार से बरी हैं। चुनान्चे,

﴾59﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने किसी ज़ालिम की मदद की उस पर उसी को मुसल्लत़ कर दिया जाएगा।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "अपनी आंखों को ज़ालिमों के मददगारों से न भरो (या'नी ज़ुल्म होता न देखो) मगर येह कि तुम्हारे दिल इन्कार करते हों कहीं तुम्हारे नेक आ'माल मिटा न दिये जाएं।"(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना मक्हूल दिमश्क़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "क़ियामत के दिन एक मुनादी निदा देगा कि ज़ुल्म करने वाले और उन के मददगार कहां हैं ? तो कोई शख़्स बाक़ी न बचेगा जिस ने उन के लिये दवात में सियाही डाली होगी या क़लम तराशा होगा या इस से बड़ा कोई ज़ुल्म का काम किया होगा मगर वोह उन के साथ आएगा फिर उन्हें आग के ताबूत में डाल कर जहन्नम में धकेल दिया जाएगा।"

एक दरज़ी ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यानी सौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 161 हि.) की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "मैं बादशाह के कपड़े सीता हूं, क्या आप मुझे भी ज़ालिमों का मददगार समझते हैं ?" आप ने फ़रमाया : "(नहीं) तू तो ज़ालिमों में से है लेकिन तुझे सूई या धागा बेचने वाले, वोह ज़ालिमों के मददगार हैं।"(4)

## कोड़े मारने की सज़ा :

﴾60﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "डन्डे बरदार (या'नी कोड़ों वाले) सिपाही बरोज़े क़ियामत सब से पहले जहन्नम में दाख़िल होंगे जो ज़ालिमों के सामने लोगों को कोड़े मारते हैं।"(5)

---

1 ......الجامع لاحكام القرآن للقرطبى،الاعراف ،تحت الآية ٤٤،ج٤،الجزء السابع ،ص١٥٢ ـ

2 ......تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر،الرقم ٣٦٢٣،عبد الباقى بن احمد، الحديث :٢١٩١٦،ج٣٤،ص٤ـ

3 ......حلية الاولياء ،سعيد بن المسيب ، الرقم :١٩٠٦،ج٢،ص١٩٣ ـ

4 ......كتاب الكبائرللذهبى،الكبيرة السادسة والعشرون الظلم ،فصل فى الحذر......الخ ،ص ١٢٦ ـ

5 ......كتاب الكبائرللذهبى،الكبيرة السادسة والعشرون الظلم ،فصل فى الحذر......الخ ،ص١٢٦ ـ



www.dawateislami.net

## जहन्नमी कुत्ते :

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : ''ज़ालिमों की मदद करने वाले और (हुक्मरानों के मददगार) सिपाही क़ियामत के दिन जहन्नम के कुत्ते होंगे।''(1)

## ज़ालिम मल्ऊ़न है :

﴾61﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह्य फ़रमाई : ''बनी इसराईल के ज़ालिमों को हुक्म दो कि मुझे कम याद करें क्यूं कि जो मुझे याद करता है मैं उसे याद करता हूं और मेरा उन (बनी इसराईल के ज़ालिमों) को याद करना यूं है कि मैं उन पर ला'नत भेजता हूं।''(2)

और एक रिवायत में है : ''उन (बनी इसराईल के ज़ालिमों) में से जो मुझे याद करता है मैं उसे ला'नत के साथ याद करता हूं।''(3)

﴾62﴿...... रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम में से कोई ऐसी जगह खड़ा न हो जहां किसी शख़्स को ज़ुल्मन मारा जा रहा हो क्यूं कि वहां मौजूद सब लोगों पर ला'नत उतरती है जब कि वोह मज़्लूम से ज़ुल्म दूर न करें।''(4)

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने एक शख़्स को मरने के बा'द ख़्वाब में देखा जो ज़ुल्म करने वालों और टेक्स लेने वालों की ख़िदमत किया करता था, वोह बहुत बुरी ह़ालत में था, मैं ने पूछा : ''तेरा क्या ह़ाल है ?'' उस ने बताया : ''बहुत बुरा ह़ाल है।'' मैं ने दोबारा पूछा : ''तेरा क्या अन्जाम हुवा ?'' उस ने बताया : ''मुझे अ़ज़ाबे इलाही में मुब्तला किया गया।'' मैं ने मज़ीद पूछा : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ज़ालिमों का कैसा ह़ाल है ?'' कहने लगा : ''बहुत बुरा ह़ाल है, क्या तुम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने इ़ब्रत निशान नहीं सुना ?

---

(1)......كتاب الكبائرللذهبی ،الكبيرة السادسة والعشرون الظلم ،فصل فی الحذر......الخ ،ص۱۲۶ـ

(2)......كتاب الكبائرللذهبی ،الكبيرة السادسة والعشرون الظلم ،فصل فی الحذر......الخ ،ص۱۲۶ـ

(3)......احياء علوم الدين ،كتاب اسرار الحج ،باب ثالث فی آداب دقيقة واعمال باطنة ،ج۱،ص۳۵۸ـ

(4)......المعجم الكبير،الحديث : ۱۱۶۷۵،ج۱۱،ص۲۰۸ـ



www.dawateislami.net

وَسَيَعۡلَمُ الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡۤا اَیَّ مُنۡقَلَبٍ يَّنۡقَلِبُوۡنَ ﴿۲۲۷﴾
(پ۱۹، الشعراء:۲۲۷)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और अब जाना चाहते हैं ज़ालिम कि किस करवट पर पलटा खाएंगे।''(1)

## ज़ालिमों के लिये इब्रत ही इब्रत :

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है, मैं ने एक शख़्स को देखा जिस के हाथ कन्धों से कटे हुए थे वोह ब आवाज़े बुलन्द कह रहा था : ''जो मुझे देख ले वोह हरगिज़ ज़ुल्म न करेगा।'' मैं उस की त़रफ़ बढ़ा और पूछा : ''ऐ मेरे भाई ! तेरा क्या वाक़िआ़ है ?'' तो उस ने जवाब दिया : ''मेरा वाक़िआ़ बहुत अ़जीब है और वोह येह है कि मैं ज़ालिमों के मददगारों में से था, मैं ने एक दिन एक शिकार करने वाले को देखा उस ने एक बहुत बड़ी मछली शिकार की जो मुझे भली लगी, मैं उस के पास गया और कहा : ''येह मछली मुझे दे दो।'' उस ने कहा : ''मैं नहीं दूंगा बल्कि इसे बेच कर अपने बच्चों के लिये खाना ख़रीदूंगा।'' मैं ने उसे मारा और ज़बर दस्ती उस से मछली ले कर चल पड़ा।

मछली उठाए जा ही रहा था कि उस ने मेरे अंगूंठे पर बहुत सख़्ती से काटा। फिर जब घर आ कर मैं ने उसे अपने हाथ से नीचे फेंका तो उस ने (तड़पते हुए) मेरे अंगूठे पर इस ज़ोर से ज़र्ब लगाई और शदीद तक्लीफ़ पहुंचाई कि तक्लीफ़ की शिद्दत से रात भर सो न सका और मेरा हाथ सूज गया, जब मैं सुब्ह़ उठा तो त़बीब के पास गया और उसे दर्द की शिकायत की तो वोह बोला : ''येह जिल्दी (या'नी उ़ज़्व को खा जाने वाली) बीमारी की इब्तिदा है, मैं इसे काट देता हूं वरना तुम्हारा पूरा हाथ ज़ाएअ़ हो जाएगा।'' पस मेरा अंगूठा काट दिया गया, फिर मेरे हाथ को चोट लगी और मुझे शिद्दते तक्लीफ़ से न नींद आई और न ही सुकून मिला तो मुझे कहा गया : ''अपनी हथेली काट दो।'' मैं ने उसे काट दिया लेकिन दर्द कलाई की त़रफ़ मुन्तक़िल हो गया और सख़्त तक्लीफ़ के बाइ़स मैं सो न सका और न ही मुझे सुकून आया लिहाज़ा शिद्दते तक्लीफ़ से चिल्लाने लगा, फिर मुझे कहा गया : ''कलाई भी कोहनी से काट दो।'' लिहाज़ा मैं ने उसे भी काट दिया लेकिन दर्द बाज़ू की त़रफ़ मुन्तक़िल हो गया और अब बाज़ू में शदीद तक्लीफ़ होने लगी, फिर कहा गया : ''अपने हाथ को कन्धे से काट दो वरना

1 ......كتاب الكبائر للذهبي، الكبيرة السادسة والعشرون الظلم ،فصل فى الحذر......الخ ،ص۱۲۷ ـ



www.dawateislami.net

येह बीमारी तुम्हारे जिस्म में सरायत कर जाएगी।'' पस मैं ने इसे काट दिया।

बा'ज़ लोगों ने मुझ से पूछा : ''तेरे दर्द का सबब क्या है?'' तो मैं ने मछली का क़िस्सा सुनाया, उन्हों ने मुझ से कहा : ''जब तुम्हें पहली मर्तबा तक्लीफ़ हुई थी तो तुम उसी वक़्त मछली के मालिक के पास लौट जाते और उस से मुआफ़ी मांगते और उसे राज़ी कर लेते और अपना हाथ न काटते, पस अब उस के पास जाओ और उस को राज़ी करो इस से पहले कि तक्लीफ़ तुम्हारे तमाम जिस्म में पहुंच जाए।''

वोह शख़्स मज़ीद कहता है : मैं उसे शह्र में ढूंडता रहा यहां तक कि मैं ने उसे पा लिया और उस के क़दमों पर गिर कर उन्हें चूमने लगा और रोते हुए अ़र्ज़ की : ''ऐ मेरे मोह़तरम ! मैं आप से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये सुवाल करता हूं कि मुझे मुआफ़ कर दें।'' उस ने पूछा : ''आप कौन हैं?'' मैं ने बताया : मैं वोही हूं जिस ने आप से मछली छीनी थी। उसे अपनी अलम-नाक रूदाद भी सुनाई और अपना हाथ भी उसे दिखाया। जब उस ने देखा तो रोने लगा और कहने लगा : ''ऐ मेरे भाई ! मैं ने तुम्हें इस मुसीबत में मुब्तला किया जो तुम ने देखी है।'' मैं ने गुज़ारिश की : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ऐ मेरे मोह़तरम ! जब मैं ने आप से मछली छीनी थी तो क्या आप ने मेरे लिये बद-दुआ़ की थी?'' उस ने कहा : ''हां ! मैं ने येह दुआ़ की थी : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! येह मेरी कमज़ोरी पर अपनी कुव्वत व त़ाक़त की वज्ह से ग़ालिब आ गया है कि जो रिज़्क़ तू ने मुझे दिया इस ने ज़ुल्मन ले लिया पस मुझे इस में अपनी कुदरत दिखा।'' मैं ने कहा : ''ऐ मेरे मोह़तरम ! बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को मुझ में अपनी कुदरत दिखा दी और मैं ज़ालिमों की ख़िदमत करने से भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सच्ची तौबा करता हूं कि आयिन्दा कभी उन के दरवाज़े पर खड़ा न होउंगा और जब तक ज़िन्दा हूं اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन के मददगारों में शामिल न होउंगा।''(1)

❁❁❁❁❁❁❁

1 ......كتاب الكبائر للذهبي، الكبيرة السادسة والعشرون الظلم ،فصل فى الحذر......الخ ،ص ١٢٧ ـ



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 351 : बिद्अ़तियों को पनाह देना

**या'नी इन्हें उन लोगों से बचाना जो इन से अपना पूरा ह़क़ वुसूल करना चाहते हैं और बिद्अ़तियों से मुराद वोह लोग हैं जो ऐसी बुराई में मुन्हमिक होते हैं जिस की वज्ह से कोई शर-ई हुक्म लाज़िम हो जाता है**

ह़ज़रते सय्यिदुना जलाल बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الغَنِى की वज़ाह़त के मुत़ाबिक़ इसे भी कबीरा गुनाह शुमार किया गया है और येह अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की रिवायत से वाज़ेह़ है। चुनान्चे, आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : "मुझ से हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने 4 कलिमात बयान फ़रमाए।" (रावी फ़रमाते हैं :) मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! वोह कौन से हैं ?" इर्शाद फ़रमाया : "(1)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स पर ला'नत फ़रमाए जो **ग़ैरुल्लाह** के नाम पर ज़ब्ह़ करे (जैसे बुतों के नाम पर)[1] (2)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर ला'नत फ़रमाए जो अपने वालिदैन पर ला'नत भेजे (3)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर ला'नत फ़रमाए जो किसी बिद्अ़ती को पनाह दे और (4)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर भी ला'नत फ़रमाए जो ज़मीन की अ़लामात व हुदूद तब्दील कर दे।"[2]

❁❁❁❁❁❁❁

---

1...... ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सय्यिदुना मुफ़्ती मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الهَادِى **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में पारह 2, अल ब-क़रह : 173 "وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ اللّٰهِ" के तह़त नक़्ल फ़रमाते हैं : "जिस जानवर पर वक़्ते ज़ब्ह़ ग़ैरे ख़ुदा का नाम लिया जाए ख़्वाह तन्हा या ख़ुदा के नाम के साथ अ़त़्फ़ से मिला कर वोह **ह़राम** है और अगर नामे ख़ुदा के साथ ग़ैर का नाम बिग़ैर अ़त़्फ़ मिलाया तो **मक्रूह** है। अगर ज़ब्ह़ फ़क़त़ **अल्लाह** के नाम पर किया और इस से क़ब्ल या बा'द ग़ैर का नाम लिया म-सलन येह कहा कि अ़क़ीक़े का बकरा, वलीमे का दुम्बा या जिस की त़रफ़ से वोह ज़बीह़ा है उसी का नाम लिया या जिन औलिया के लिये ईसाले सवाब मन्ज़ूर है उन का नाम लिया तो येह **जाइज़** है, इस में कुछ ह़रज नहीं।" (تفسيراتِ احمديه، ص۴۴)

2......صحيح مسلم،كتاب الاضاحى،باب تحريم الذبح لغير الله تعالى ولعن فاعله، الحديث: ۵۱۲۴،ص۱۰۳۱ ـ



www.dawateislami.net

# كتاب الردة

## कबीरा नम्बर 352 : किसी मुसल्मान को कहना : ऐ काफ़िर !
## कबीरा नम्बर 353 : किसी मुसल्मान को कहना : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन !

**( अगर क़ाइल का मक़्सद सिर्फ़ गाली देना हो न कि इस्लाम को कुफ़्र कहना तो उस की तक्फ़ीर नहीं की जाएगी )**

## मुसल्मान को काफ़िर कहने वाला काफ़िर है :

﴾1﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने किसी शख़्स को काफ़िर या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दुश्मन कहा, और वोह इस त़रह़ न था तो कहने वाले का क़ौल उसी पर लौट आएगा।"(1)

﴾2﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जिस ने किसी मोमिन को काफ़िर कहा तो येह उसे क़त्ल करने की त़रह़ है।"(2)

**तम्बीह :** इस में शदीद वई़द है और वोह येह कि उस पर कुफ़्र का लौट आना या उस का ख़ुद ही दुश्मने ख़ुदा ठहरना है नीज़ येह गुनाह क़त्ल की मिस्ल है। पस किसी को काफ़िर या दुश्मने ख़ुदा कहना या तो कुफ़्र है या'नी अगर उस ने किसी मुसल्मान को इस्लाम से मुत्तसिफ़ होने की वज्ह से काफ़िर या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दुश्मन कहा तो उस ने इस्लाम को कुफ़्र का नाम दिया और येह बात उस के दुश्मने ख़ुदा होने का तक़ाज़ा करती है जो कि कुफ़्र है। या येह (या'नी काफ़िर या दुश्मने ख़ुदा कहना) कबीरा गुनाह है या'नी जब कहने वाला मज़्कूरा इरादा न करे तो उस की त़रफ़ येह शदीद अ़ज़ाब और गुनाह की सूरत में लौटेगा और येह कबीरा गुनाहों की अ़लामात में से है। इस वज़ाह़त से इन दोनों को कबीरा गुनाहों में शुमार करना वाज़ेह़ हो गया अगर्चे मैं ने किसी को इन का ज़िक्र करते हुए नहीं पाया, अलबत्ता! मैं ने बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام को देखा कि उन्हों ने किसी मुसल्मान को काफ़िर कहने को कबीरा गुनाहों में शुमार किया और अगर उस ने किसी मुसल्मान से कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस का ईमान छीन ले या इस त़रह़ के कलिमात कहे तो बा'ज़ मु-तअख़्ख़िरीन की तरजीह़ के मुत़ाबिक़ उस ने कुफ़्र किया।" जब कि इस किताब के शुरूअ़ में इस के ख़िलाफ़ गुज़र चुका है।

---

1 ......صحیح مسلم کتاب الایمان ،باب بیان حال ایمان من قال لاخیه المسلم:یا کافرًا،الحدیث : ۲۱۷،ص۱ ۶۹ ۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الادب، باب من اکفر اخاه بغیر تاویل فهو کما قال،الحدیث:۶۱۰۵،ص۵۱۵ ۔



www.dawateislami.net

# كتاب الحدود

## कबीरा नम्बर 354 : हुदूदुल्लाह में सिफ़ारिश करना

﴾1﴿...... हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : ''जिस की सिफ़ारिश **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हुदूद में से किसी ह़द के सामने रुकावट बनी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ज़िद बाज़ी की और जिस ने बात़िल की ह़िमायत में जान बूझ कर झगड़ा किया वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी में रहेगा यहां तक कि उसे छोड़ दे और जिस ने किसी मोमिन के बारे में ऐसी बात कही जो उस में न थी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नमियों की पीप में रखेगा यहां तक कि वोह अपनी बात से तौबा कर ले।''(1)

﴾2﴿...... त़-बरानी शरीफ़ की रिवायत में येह भी है : ''और वोह वहां (या'नी दोज़ख़ियों के पीप) से न निकल सकेगा।''(2)

﴾3﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने नाह़क़ झगड़े में किसी की मुआ़-वनत की वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी में रहेगा यहां तक कि उसे छोड़ दे।''(3)

﴾4﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने ज़ुल्मन झगड़े में किसी की मदद की वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब में आ गया।''(4)

﴾5﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हुदूद में से किसी ह़द को रोकने की सिफ़ारिश की वोह हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी में रहेगा यहां तक कि उसे छोड़ दे और जिस ने किसी ऐसे झगड़े में किसी मुसल्मान पर शदीद ग़ज़ब किया जिस (के ह़क़ या बात़िल होने) का उसे इ़ल्म नहीं तो उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़क़ में उस की मुख़ा-लफ़त की और उस की नाराज़ी चाही उस पर रोज़े क़ियामत तक लगातार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत होगी और जिस ने दुन्या में ऐबदार करने के लिये किसी मुसल्मान के ख़िलाफ़ कोई बात आ़म की जब कि वोह उस से

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب القضاء، باب فی الرجل یعین......الخ، الحدیث: ۳۵۹۷، ص۱۴۹۰۔

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۳۴۳۵، ج۱۲، ص۲۹۷۔

3 ......المستدرک، کتاب الاحکام، باب لا تجوز شھادۃ بدوی علی صاحب قریۃ، الحدیث: ۷۱۳۳، ج۵، ص۱۳۵۔

4 ......سنن ابی داود، کتاب القضاء، باب فی الرجل یعین۔۔الخ، الحدیث: ۳۵۹۸، ص۱۴۹۰۔



www.dawateislami.net

बरी हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उसे क़ियामत के दिन जहन्नम में पिघलाए यहां तक कि अपनी कही हुई बात को साबित करे।"(1)

## झूटा ख़्वाब बयान करने की सज़ा :

﴾6﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस की सिफ़ारिश **हुदूदुल्लाह** में से किसी ह़द में ह़ाइल हुई उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस के मुल्क में मुक़ाबला किया और जिस ने झगड़े में किसी की मदद की ह़ालां कि वोह नहीं जानता कि वोह ह़क़ पर है या बात़िल पर, तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी में रहेगा यहां तक कि उस से अलग हो जाए और जो किसी ऐसी क़ौम के साथ चला जो समझती हो कि येह गवाह है ह़ालां कि वोह गवाह न हो तो वोह झूटे गवाह की त़रह़ है और जिस ने झूटा ख़्वाब बयान किया (बरोज़े क़ियामत) उसे पाबन्द किया जाएगा कि जव के दाने के दोनों कनारों के दरमियान गांठ लगाए और मुसल्मान को गाली देना फ़िस्क़ है और उसे (ह़लाल जान कर) क़त्ल करना कुफ़्र है।"(2)

**तम्बीह :** इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करना पहली और दूसरी ह़दीसे पाक से वाज़ेह़ और ज़ाहिर है अगर्चे मैं ने किसी को इस का ज़िक्र करते हुए नहीं पाया क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हुदूद में से किसी ह़द को तर्क करना बहुत बड़ा फ़साद है। इसी वज्ह से ह़दीस में गुज़रा कि,

﴾7﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ज़मीन में ह़क़ के मुत़ाबिक़ क़ाइम की जाने वाली ह़द सुब्ह़ की 40 बारिशों से ज़ियादा पाक करने वाली है।"(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलाल बुल्क़ीनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْغَنِی का गुज़श्ता कलाम मेरे इस मौक़िफ़ की ताईद करता है, फिर मैं ने कुछ दीगर उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام को पाया कि उन्हों ने मेरे ज़िक्र कर्दा मौक़िफ़ की तसरीह़ की।

---

(1)......الترغيب والترهيب، كتاب القضاء، باب الترهيب من اعانة المبطل......الخ، الحديث : ۳۴۳۹، ج۳، ص۱۵۱۔

(2)......المعجم الاوسط، الحديث : ۸۵۵۲، ج۶، ص۲۱۴۔

(3)......المعجم الاوسط، الحديث : ۴۷۶۵، ج۳، ص۳۳۴۔

المعجم الكبير، الحديث : ۱۱۹۳۲، ج۱۱، ص۲۶۷۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 355 : मुसल्मान की बे इ़ज़्ज़ती करना, उस की ख़ामियां ढूंडना, उसे रुस्वा करना और लोगों में ज़लील करना

### ऐ़ब पोशी का फ़ाएदा :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो अपने मुसल्मान भाई की पर्दा पोशी करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा और जो अपने मुसल्मान भाई का ऐ़ब ज़ाहिर करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का ऐ़ब ज़ाहिर फ़रमाएगा यहां तक कि उसे उस के घर में रुस्वा कर देगा।''(1)

### ऐ़ब जोई की सज़ा :

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मिम्बरे अक़्दस पर जल्वा अफ़रोज़ हुए और बुलन्द आवाज़ से इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ वोह लोगो ! जो ज़बान से ईमान लाए हो मगर अभी तक ईमान तुम्हारे दिलों में दाख़िल नहीं हुवा ! मुसल्मानों को तक्लीफ़ न दिया करो और न ही उन के ऐ़बों के पीछे पड़ो क्यूं कि जो अपने मुसल्मान भाई के ऐ़ब तलाश करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के ऐ़बों को ज़ाहिर कर देता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के ऐ़ब ज़ाहिर फ़रमा दे वोह उसे रुस्वा कर देता है अगर्चे वोह अपने घर में ही हो।'' एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने का'बा शरीफ़ की त़रफ़ देखा और इर्शाद फ़रमाया : ''तेरी शान कितनी बुलन्द है और तेरी हुरमत कितनी ज़ियादा है लेकिन बन्दए मोमिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तुझ से भी ज़ियादा मोह़तरम है।''(2)

﴾3﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ऐ वोह लोगो ! जो ज़बान से इस्लाम लाए हो मगर अभी ईमान तुम्हारे दिल में दाख़िल नहीं हुवा !

(1) ......سنن ابن ماجه، ابوا ب الحدود،باب الستر علی المومن ودفع الحدود بالشبهات، الحديث : ۲۵۴۶،ص۲۶۲۹۔

(2) ......جامع الترمذی، ابواب البر والصلة،باب ما جاء فی تعظيم المؤمن،الحديث : ۲۰۳۲،ص۱۸۵۵،دون قوله:يوشک۔



www.dawateislami.net

मुसल्मानों को तक्लीफ़ न दो और न ही उन पर ऐ़ब लगाओ और न ही उन की लग़्ज़िशों को देखो।''(1)

﴾4﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ऐ लोगो ! जो ज़बान से ईमान लाए हो मगर अभी ईमान तुम्हारे दिल में दाख़िल नहीं हुवा ! मुसल्मानों की ग़ीबत न किया करो और न ही उन के ऐ़बों का खोज लगाओ क्यूं कि जो मुसल्मानों के ऐ़ब तलाश करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के ऐ़ब ज़ाहिर कर देता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के ऐ़ब ज़ाहिर कर दे वोह उसे उस के घर में ही रुस्वा कर देगा।''(2)

﴾5﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया बिन अबी सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا बयान करते हैं कि मैं ने शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : ''अगर तुम लोगों की ऐ़ब जोई करते फिरोगे तो उन्हें बिगाड़ दोगे या उन्हें ख़राबी तक पहुंचा दोगे।''(3)

﴾6﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बेशक अमीर (या'नी ह़ाकिम व सरदार) जब लोगों में ऐ़ब ढूंडता है तो उन्हें बिगाड़ देता है।''(4)

﴾7﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने किसी मुसल्मान की कोई दुन्यवी परेशानी दूर की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से क़ियामत के दिन की परेशानी दूर फ़रमाएगा और जिस ने किसी मुसल्मान की पर्दा पोशी की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा और जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में होता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की मदद में होता है।''(5)

﴾8﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मुसल्मान मुसल्मान का भाई है न तो उस पर ज़ुल्म करता है और न ही उसे ऐ़बदार करता है और जो अपने भाई की ज़रूरत पूरी करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की ज़रूरत पूरी फ़रमाता है और जिस ने किसी मुसल्मान की मुसीबत दूर की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से क़ियामत के दिन की मुसीबत

---

(1)......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب الحظر والاباحة ،باب الغيبة ،الحديث : ۵۷۳۳،ج۷،ص۵۰۶

(2)......سنن ابی داود، كتاب الأدب ،باب فی الغيبة،الحديث : ۴۸۸۰،ص۱۵۸۱ ، "اسلم"بدله "آمن"۔

(3)......المرجع السابق،باب فی التجسس ،الحديث : ۴۸۸۸،ص۱۵۸۲ ۔

(4)......المرجع السابق، الحديث : ۴۸۸۹۔

(5)......المرجع السابق، باب فی المعونة للمسلم،الحديث : ۴۹۴۶، ص۱۵۸۵ ۔



www.dawateislami.net

दूर फ़रमाएगा और जिस ने किसी मुसल्मान की पर्दा पोशी की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा।''(1)

﴾9﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो शख़्स भी दुन्या में किसी बन्दे की पर्दा पोशी करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा।''(2)

﴾10﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : ''जो बन्दए मोमिन अपने (मुसल्मान) भाई का ऐ़ब देख कर उसे छुपाएगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस के बदले उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।''(3)

﴾11﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कातिब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हैसम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : ''मेरे पड़ोसी शराब नोशी करते हैं और मैं पोलीस को बुलाना चाहता हूं ताकि वोह उन्हें गिरिफ़्तार कर ले।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''ऐसा मत करो, उन्हें वा'ज़ो नसीह़त करो।'' अ़र्ज़ की : ''मैं ने उन्हें मन्अ़ किया है लेकिन इस के बा वुजूद वोह बाज़ नहीं आते, (तो अब) मैं पोलीस को बुलाना चाहता हूं ताकि वोह उन्हें गिरिफ़्तार कर ले।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : तेरी हलाकत हो, ऐसा मत कर बेशक मैं ने रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : ''जिस ने किसी का ऐ़ब छुपाया गोया उस ने ज़िन्दा दबाई हुई बच्ची को उस की क़ब्र में ज़िन्दा किया (या'नी उस की जान बचाई)।''(4)

## सय्यिदुना माइज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तौबा :

﴾12﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन नुऐ़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिदे माजिद से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना माइज़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और 4 बार (ज़िना का) इक़रार किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को रज्म (या'नी संगसार) करने का हुक्म दिया और ह़ज़रते सय्यिदुना हज़्ज़ाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इर्शाद फ़रमाया : ''अगर तुम इसे अपने कपड़े से छुपा

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الأدب، باب المواخاۃ، الحدیث : ۴۸۹۳، ص ۱۵۸۲ ۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ والادب، باب بشارۃ من ستراللّٰہ......الخ، الحدیث : ۲۵۹۵، ص ۱۱۳۰ ۔

3 ......المعجم الاوسط، الحدیث : ۱۴۸۰، ج ۱، ص ۴۰۴ ۔

4 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب الجار، الحدیث : ۵۱۸، ج ۱، ص ۳۶۷ ۔



www.dawateislami.net

लेते तो तुम्हारे लिये बेहतर था।" हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से येह बात इस लिये फ़रमाई क्यूं कि उन्हों ने ही ह़ज़रते सय्यिदुना माइज़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास (अपने किये की ख़बर देने) भेजा था।(1)

अबू दावूद शरीफ़ की दूसरी रिवायत में यूं है कि ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन नुऐम बिन हज़्ज़ाल अस्लमी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه अपने वालिदे गिरामी से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना माइज़ बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه यतीमी की वज्ह से मेरे बाप की परवरिश में थे, वोह क़बीले की एक लौंडी से ज़िना कर बैठे तो मेरे वालिद साहि़ब ने उन से कहा : "रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में जाओ और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने किये की ख़बर दो, उम्मीद है वोह तुम्हारे लिये इस्तिग़फ़ार फ़रमाएंगे।" और उन के रज्म के मु-तअ़ल्लिक़ ह़दीसे पाक ज़िक्र की।(2) नीज़ आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه जिस के साथ ज़िना में मुब्तला हुए उस का नाम फ़ाति़मा था और एक क़ौल के मुताबिक़ कोई और नाम था और वोह ह़ज़रते सय्यिदुना हज़्ज़ाल رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की कनीज़ थी।(3)

﴿13﴾...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो अपने भाई की किसी बुराई पर आगाह हो और उसे छुपाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा।"(4)

﴿14﴾...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने किसी मुसल्मान का ऐ़ब छुपाया गोया उस ने ज़िन्दा दरगोर बच्ची को ज़िन्दा किया (या'नी उस की जान बचाई)।"(5)

**तम्बीह :** इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करना पहली और बा'द वाली अह़ादीसे मुबा-रका से वाज़ेह़ है क्यूं कि ऐ़ब खोलने और रुस्वा करने में ऐसी वई़द है जो किसी से पोशीदा नहीं और येह मेरे क़ाइम कर्दा उ़न्वान पर मह़मूल है ह़त्ता कि येह शाफ़ेई़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के कलाम के भी मुनाफ़ी नहीं क्यूं कि वोह फ़रमाते हैं : "ज़ानी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के किसी ह़क़

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الحدود، باب الستر علی اهل الحدود، الحدیث: ۴۳۷۷،۴۳۷۸، ص۱۵۴۲۔

2 ......المرجع السابق، باب رجم ماعز من مالک، الحدیث: ۴۴۱۹، ص۱۵۴۵۔

3 ......الترغیب والترهیب، کتاب الحدود، باب الترهیب فی ستر المسلم......الخ، تحت الحدیث: ۳۵۶۴، ج۳، ص۱۹۱۔

4 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۰۶۷، ج۱۹، ص۴۳۹۔

5 ......المعجم الاوسط، الحدیث: ۸۱۳۳، ج۶، ص۹۷۔



www.dawateislami.net

में कोताही करने वाले के लिये मुस्तहब है कि अपने गुनाह को छुपाए ताकि उस के ज़ाहिर होने के सबब उसे हद न लगाई जाए और न ही ता'ज़ीर की जाए।" चुनान्चे,

﴾15﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो इन (या'नी ज़िना वग़ैरा) में से किसी बुराई में मुलव्वस हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पर्दे में छुपा रहे जो हमारे सामने अपना पर्दा फ़ाश करेगा हम उस पर हद क़ाइम करेंगे।"(1)

क़ातिल या तोहमत लगाने वाले का मुआ़-मला इस के बर अ़क्स है क्यूं कि इन पर ए'तिराफ़ करना लाज़िम है ताकि इन से पूरा पूरा बदला लिया जाए इस लिये कि बन्दों के हुक़ूक़ में सख़्ती की गई है और मज़ाक़ या दुश्मनी करते हुए किसी के गुनाह को बयान करना भी इस के बर अ़क्स है क्यूं कि येह सहीह़ अह़ादीसे मुबा-रका की रू से क़त्ई तौर पर हराम है। किसी गुनाह की गवाही देने वाले के लिये पर्दा पोशी करना सुन्नत है कि अगर वोह गवाही न देने में मस्लहत देखे तो न दे और अगर देने में मस्लहत देखे तो दे दे और अगर किसी में मस्लहत न पाए तो भी गवाही न देना बेहतर है। इस तफ़्सील के मुताबिक़ एक दूसरे मक़ाम पर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के इत्लाक़ को तर्के शहादत के मुस्तहब न होने पर महमूल किया जाए फिर तर्के शहादत के मुस्तहब होने को इस सूरत पर महमूल किया जाए कि इस के तर्क करने से किसी दूसरे पर हद का वाजिब करना मुअ़ल्लक़ न हो और अगर हद का वुजूब इस पर मुअ़ल्लक़ हो म-सलन तीन गवाह ज़िना की गवाही दें तो चौथा गवाही न देने की वज्ह से गुनहगार होगा और इस पर गवाही लाज़िम होगी।

हज़रते सय्यिदुना इमामुल ह-रमैन عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْكَوْنَيْن फ़रमाते हैं : "इस ज़ईफ़ क़ौल कि "**हद तौबा से साक़ित नहीं होती।**" की बिना पर शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का इत्तिफ़ाक़ है कि जिस ने हद को वाजिब करने वाले गुनाह का इरतिकाब किया उस पर लाज़िम है कि (तौबा के साथ साथ) गुनाह का इक़रार भी करे यहां तक कि उस में कोई एहतिमाल हो।" हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहयुद्दीन अबू ज़-करिय्या यहया बिन शरफ़ न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 676 हि.) ने इस को रद करते हुए फ़रमाया : "सहीह येह है कि हद के मूजिब गुनाह के मुर-तकिब पर गुनाह का इक़रार करना लाज़िम नहीं और इस ज़ईफ़ क़ौल की बिना पर तौबा से ज़ाहिरन (या'नी शर-अ़न) हद साक़ित नहीं होती, अलबत्ता! बातिनन (या'नी **इन्दल्लाह**) तौबा गुनाह को ख़त्म कर देती है।"

۞۞۞۞۞۞۞

(1)......الموطا للامام مالک، کتاب الحدود، باب ماجاء فیمن اعترف ـــ الخ، الحدیث : ۱۵۸۸، ج۲، ص۳۳۶، بتغیرٍ۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 356 : लोगों के सामने नेक बनना और तन्हाई में ना जाइज़ काम करना ख़्वाह सग़ाइर के ज़रीए

### जब आ'माल ग़ुबार की त़रह़ उड़ेंगे :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (ग़ैब की ख़बर देते हुए) इर्शाद फ़रमाया : ''मैं अपनी उम्मत में से उन लोगों को जानता हूं जो क़ियामत के दिन तिहामा नामी सफ़ेद पहाड़ों की मिस्ल (नेक) आ'माल ले कर आएंगे लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें ग़ुबार की त़रह़ उड़ा देगा।'' ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमारे सामने उन का साफ़ साफ़ ह़ाल बयान फ़रमा दीजिये ! ताकि हम न जानते हुए उन में से न हो जाएं।'' इर्शाद फ़रमाया : ''वोह तुम्हारे भाई होंगे, तुम्हारे हम-क़ौम होंगे, रातों को तुम्हारी त़रह़ इ़बादत करेंगे लेकिन तन्हाई में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ों की ह़ुरमत पामाल करेंगे।''(1) (या'नी ह़राम काम करेंगे)

### अ़र्श की मोहर :

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अ़र्श के पाए के साथ एक मोहर मुअ़ल्लक़ है, जब ह़ुरमत पामाल की जाती, ना फ़रमानी की जाती और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर जुरअत की जाती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मोहर को भेजता है जो ना फ़रमान शख़्स के दिल पर लग जाती है फिर उसे किसी चीज़ की समझ नहीं रहती।''(2)

﴾3﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक ऐसे सीधे रास्ते की मिसाल बयान फ़रमाई जिस के दोनों त़रफ़ घर हैं, इन के खुले हुए दरवाज़े हैं, दरवाज़ों पर पर्दे हैं और ऊपर से एक बुलाने वाला बुलाता है : وَاللّٰہُ یَدْعُوْۤا اِلٰی دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَیَهْدِیْ مَنْ یَّشَآءُ اِلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿۲۵﴾ (پ ۱۱، یونس:۲۵) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** सलामती के घर की त़रफ़ पुकारता है और जिसे चाहे सीधी राह चलाता है। रास्ते के दोनों

---

1 ......سنن ابن ماجه،ابواب الزهد،باب ذکر الذنوب،الحدیث : ۴۲۴۵،ص۲۷۳۵،"باعمال"بدله "بحسنات"۔

2 ......شعب الایمان للبیهقی،باب فی معالجة کل ذنب بالتوبة، الحدیث :۷۲۱۳،ج۵،ص۴۴۳۔



www.dawateislami.net

त़रफ़ खुले हुए दरवाजे़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हुदूद हैं, जब कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हुदूद को तोड़ता है तो पर्दा उठा दिया जाता है और ऊपर से बुलाने वाला परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का वाइज़ है।''(1)

﴾4﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सीधे रास्ते की मिसाल बयान फ़रमाई जिस के दोनों त़रफ़ ऐसी दीवारें हैं जिन में खुले हुए दरवाजे़ हैं और दरवाज़ों पर पर्दे लटके हुए हैं और रास्ते के कनारे पर एक बुलाने वाला है, वोह कहता है : ''रास्ते पर सीधे रहो और टेढ़े न हो।'' और उस से ऊपर एक बुलाने वाला बुला रहा है, जब भी कोई बन्दा उन दरवाज़ों में से किसी को खोलने का इरादा करता है तो वोह कहता है : ''तेरी ख़राबी हो, इसे न खोल क्यूं कि अगर तू इसे खोलेगा तो इस में गिर जाएगा।'' फिर हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद ही इस की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाया : ''सीधा रास्ता इस्लाम है और खुले हुए दरवाजे़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीजे़ं हैं जब कि लटके हुए पर्दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हुदूद हैं और इस रास्ते के कनारे पर बुलाने वाला कुरआन है और ऊपर से बुलाने वाला हर मोमिन के दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वाइज़ है।''(2)

## पांच चीज़ों पर अ़मल की ज़मानत :

﴾5﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''कोई है जो मुझ से कलिमात ले ले और उन पर ख़ुद अ़मल करे या अ़मल करने वाले को सिखाए ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, मैं ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं लूंगा।'' आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा हाथ पकड़ा और 5 बातें शुमार करते हुए इर्शाद फ़रमाया : ''(1)...... ह़राम अश्या से बचो सब से ज़ियादा इ़बादत करने वाले बन जाओगे (2)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़त़ा कर्दा हिस्से पर राज़ी रहो सब से ज़ियादा ग़नी हो जाओगे (3)...... पड़ोसी से अच्छा सुलूक करो (कामिल) मोमिन हो जाओगे। (4)...... जो अपने लिये पसन्द करते हो वोही लोगों के लिये पसन्द करो (कामिल) मुसल्मान हो

1 ......جامع الترمذی، ابواب الامثال،باب ماجاء فی مثل اللہ لعبادہ ،الحدیث : ۲۸۵۹،ص۱۹۳۸ ـ

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل،حدیث النواس بن سمعان،الحدیث : ۱۷۶۵۱،۱۷۶۵۳،ج۶،ص۱۹۹ ـ
مشکاۃ المصابیح،کتاب الایمان،باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، الفصل الثالث،الحدیث : ۱۹۱،ج۱،ص۵۷ـ



www.dawateislami.net

जाओगे (5)...... और ज़ियादा न हंसा करो क्यूं कि ज़ियादा हंसना दिल को मुर्दा करता है।''(1)

﴾6﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मैं तुम्हें तुम्हारी पुश्तों से पकड़ता हूं और कहता हूं : जहन्नम से बचो और हुदूद (तोड़ने) से डरो ! जहन्नम से बचो और हुदूद (तोड़ने) से डरो !'' येह बात तीन बार फ़रमाई, फिर इर्शाद फ़रमाया : ''जब मैं दुन्या से चला जाऊंगा तो तुम्हें छोड़ जाऊंगा और हौज़े (कौसर) पर तुम्हारा फ़रत़ (पेशरव) होउंगा, जो वहां ह़ाज़िर हो गया वोह काम्याब हो गया(2)।''(3)

## अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ग़यूर है :

﴾7﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ग़ैरत फ़रमाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ग़ैरत येह है कि बन्दए मोमिन उस की ह़राम कर्दा चीज़ों का इरतिकाब करे।''(4)

## तम्बीह :

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करना पहली ह़दीसे पाक से वाज़ेह़ है और येह बईद नहीं अगर्चे मैं ने किसी को इस का ज़िक्र करते हुए नहीं पाया और इस के कबीरा गुनाह होने की

---

(1)......جامع الترمذی، ابواب الزھد، باب من اتقی المحارم فھو اعبد الناس،الحدیث : ۲۳۰۵،ص۱۸۸۴۔

(2)...... मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 8, सफ़ह़ा 286 पर ह़दीसे पाक में मज़्कूर लफ़्ज़े फ़रत़ की तशरीह़ व तह़क़ीक़ करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : ''فَرَطٌ ब मा'ना فَارِطٌ है जैसे تَبَعٌ ब मा'ना تَابِعٌ, फ़रत़ वोह शख़्स है जो किसी जमाअ़त से आगे मन्ज़िल पर पहुंच कर उन के त़आ़म, क़ियाम वग़ैरा तमाम ज़रूरिय्यात का इन्तिज़ाम करे जिस से वोह जमाअ़त आ कर हर त़रह़ आराम पाए। मत़लब येह है कि मैं तुम से पहले जा रहा हूं ताकि तुम्हारी शफ़ाअ़त, तुम्हारी नजात, तुम्हारी हर त़रह़ कारसाज़ी (या'नी मदद) करूं, तुम में से जो भी ईमान पर फ़ौत होगा वोह मेरे पास मेरी ह़िफ़ाज़त, मेरे इन्तिज़ाम में इस त़रह़ आवेगा जैसे मुसाफ़िर अपने घर आता है, भरे घर में। (اَشِعَّۃُ اللَّمْعَات،ج۴،ص۲۱۸) मोमिन मरते ही हुज़ूर (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के पास पहुंचता है, बल्कि बा'ज़ मोमिनों की जां-कनी के वक़्त ख़ुद हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) उन्हें लेने तशरीफ़ लाते हैं जैसा कि इमाम (मुह़म्मद बिन इस्माईल) बुख़ारी (عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَارِی) का वाक़िआ़ हुवा, और बहुत मरने वालों से (नज़्अ़ के वक़्त) सुना गया हुज़ूर (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) आ गए। ख़याल रहे कि छोटे फ़ौत शुदा बच्चों को भी ''फ़रत़'' फ़रमाया गया है मगर वोह ''फ़रते़ नाक़िस'' हैं। हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ''फ़रते़ कामिल'' या'नी हर त़रह़ के मुन्तज़िम, हुज़ूर (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) अपनी उम्मत के दाइमी मुन्तज़िम हैं।''

(3)......المعجم الکبیر، الحدیث : ۱۲۵۰۸،ج ۱۲، ص۵۶۔ المعجم الاوسط،الحدیث : ۲۸۷۴،ج۲، ص ۱۲۰۔

(4)......صحیح مسلم،کتاب التوبۃ، باب غیرۃ اللہ تعالی وتحریم الفواحش ،الحدیث : ۲۹۹۵،ص۱۱۵۶۔



www.dawateislami.net

वज्ह येह है कि अपनी नेकियां ज़ाहिर करना और बुराइयां छुपाना जिस की आ़दत हो वोह मुसल्मानों को बहुत ज़ियादा नुक़्सान पहुंचाता है और गुमराह करता है। क्यूं कि उस की गरदन से तक़्वा और ख़ौफ़ का पट्टा खुल जाता है।

## कबीरा नम्बर 357 : हुदूद क़ाइम करने में सुस्ती करना

## ह़द नाफ़िज़ करने की ब-रकात :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो ह़द (या'नी शर-ई अह़काम के मुत़ाबिक़ सज़ा) ज़मीन में क़ाइम की जाती है वोह अहले ज़मीन के लिये सुब्ह़ की 30 बारिशें बरसने से बेहतर है।''(1)

﴾2﴿...... एक रिवायत में है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ज़मीन पर ह़द क़ाइम करना अहले ज़मीन के लिये 40 रातों की बारिश से बेहतर है।''(2)

﴾3﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ह़द पर ज़मीन में अ़मल किया जाता है वोह अहले ज़मीन के लिये सुब्ह़ की 40 बारिशें बरसने से ज़ियादा मुफ़ीद है।''(3)

﴾4﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ज़मीन पर ह़द क़ाइम करना अहले ज़मीन के लिये सुब्ह़ की 40 बारिशों से बेहतर है।''(4)

﴾5﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हुदूद में से कोई ह़द क़ाइम करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के शहरों में 40 रातों की बारिश से बेहतर है।''(5)

---

1 ......سنن النسائی، کتا ب قطع السارق، باب الترغیب فی اقامۃ الحد، الحدیث : ۴۹۰۸، ص۲۴۰۵، بتغیرٍ۔

2 ......سنن النسائی، کتا ب قطع السارق، باب الترغیب فی اقامۃ الحد ، الحدیث : ۴۹۰۹، ص۲۴۰۵۔

3 ......سنن ابن ماجه، ابواب الحدود، باب اقامۃ الحدود، الحدیث : ۲۵۳۸، ص۲۶۲۹۔

4 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان ، کتا ب الحدود ، الحدیث : ۴۳۸۱، ج۲، ص۲۹۰۔

5 ......سنن ابن ماجه، ابواب الحدود ، باب اقامۃ الحدود ، الحدیث : ۲۵۳۷، ص۲۶۲۹۔



www.dawateislami.net

## इमामे आ़दिल के एक दिन की फ़ज़ीलत :

﴾6﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''आ़दिल इमाम का एक दिन 60 साल की इ़बादत से अफ़्ज़ल है और ज़मीन में ह़क़ के मुताबिक़ जो ह़द क़ाइम की जाती है वोह ज़मीन पर (बसने वालों को) चालीस साल की बारिश से ज़ियादा पाक करने वाली होती है।''(1)

﴾7﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़द्दें दूर व नज़्दीक (वालों) में क़ाइम करो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (के हुक्म) के मुआ़-मले में किसी मलामत करने वाले की मलामत तुम्हें न रोके।''(2)

## हुदूद में सिफ़ारिश जाइज़ नहीं :

﴾8﴿...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि जब क़ुरैश के नज़्दीक (फ़ातिमा बिन्ते अस्वद) मख़्ज़ूमिया का मुआ़-मला इख़्तियार कर गया जिस ने चोरी की थी तो कहने लगे : ''इस के मु-तअ़ल्लिक़ कौन मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बात करे ?'' किसी ने कहा : ''हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मह़बूब ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सिवा कोई नहीं कर सकता।'' ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूले पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ उसामा ! क्या तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हुदूद में सिफ़ारिश करते हो ?'' फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खड़े हुए और ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाया : ''तुम से पहले लोग इसी वज्ह से हलाक हुए क्यूं कि जब उन में कोई त़ाक़त वर चोरी करता तो उसे छोड़ देते और अगर कोई कमज़ोर चोरी करता तो उस पर ह़द क़ाइम करते, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर फ़ातिमा बिन्ते मुह़म्मद भी चोरी करती तो मैं उस का भी हाथ काट देता।''(3)

## हुदूद क़ाइम करने और तोड़ने वालों की मिसाल :

﴾9﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हुदूद को क़ाइम करने वालों और तोड़ने वालों की मिसाल उन लोगों की सी है जिन्हों ने कश्ती के ह़िस्से बाहम

---

(1)......المعجم الكبير، الحديث: ١١٩٣٢، ج١١، ص٢٦٧۔

(2)......سنن ابن ماجه،ابواب الحدود ،باب اقامة الحدود ،الحديث : ٢٥٤٠،ص٢٦٢٩۔

(3)......صحيح مسلم ،كتاب الحدود ،باب قطع السارق ......الخ ،الحديث :٤٤١٠،ص٩٧٦۔



www.dawateislami.net

तक़्सीम कर लिये, बा'ज़ को ऊपर वाला हिस्सा मिला और बा'ज़ को नीचे वाला। नीचे वालों को जब प्यास लगती तो ऊपर वालों के पास जाना पड़ता। उन्हों ने कहा : "हम अपने हिस्से में सूराख़ कर लेते हैं, इस से ऊपर वालों को तक्लीफ़ न देंगे।" अगर ऊपर वाले उन को छोड़ देते हैं तो तमाम हलाक हो जाएंगे, लेकिन अगर वोह उन को रोकते हैं तो येह भी बच जाएंगे और दीगर तमाम लोग भी नजात पा जाएंगे।(1)

**तम्बीह :** इस को कबीरा गुनाहों में शुमार करना आख़िरी और इस से पहली ह़दीसे पाक से वाज़ेह़ है, अगर्चे मैं ने किसी को इस का ज़िक्र करते नहीं पाया और जब ह़ुदूद में सिफ़ारिश करने पर वईद की गई है तो ह़क़ पोशी और ग़फ़्लत करते हुए इसे तर्क करने वाला वईद का मुस्तह़िक़ क्यूं न होगा।

## कबीरा नम्बर 358 : ज़िना

**अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्लो करम से हमें ज़िना और दीगर गुनाहों से मह़फ़ूज़ फ़रमाए। ( आमीन )**

## क़ुरआने ह़कीम में ज़िना की मज़म्मत :

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी लारैब किताब क़ुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद में ज़िना के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाता है :

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰۤى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِیْلًا ﴿۳۲﴾ (پ۱۵، بنی اسرائیل:۳۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और बदकारी के पास न जाओ बेशक वोह बे ह़याई है, और बहुत बुरी राह।

وَالّٰتِیْ یَاْتِیْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَآىٕكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَیْهِنَّ اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ فِی الْبُیُوْتِ حَتّٰى یَتَوَفّٰىهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ یَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِیْلًا ﴿۱۵﴾ وَالَّذٰنِ یَاْتِیٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِیْمًا ﴿۱۶﴾ (پ۴،النساء:۱۵تا۱۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम्हारी औ़रतों में जो बदकारी करें उन पर ख़ास अपने में के चार मर्दों की गवाही लो फिर अगर वोह गवाही दे दें तो उन औ़रतों को घर में बन्द रखो यहां तक कि उन्हें मौत उठा ले या **अल्लाह** उन की कुछ राह निकाले, और तुम में जो मर्द औ़रत ऐसा करें उन को ईज़ा दो फिर अगर वोह तौबा कर लें और नेक हो जाएं तो उन का पीछा छोड़ दो, बेशक **अल्लाह** बड़ा तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है।

(1)......صحیح البخاری، کتاب الشرکة، باب هل يقرع فی القسمة والاستهام فيه؟، الحديث: ۲۴۹۳، ص۱۹۶۔



www.dawateislami.net

وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّمَقْتًا ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿۲۲﴾ (پ۴،النساء:۲۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और बाप दादा की मन्कूहा से निकाह न करो मगर जो हो गुज़रा, वोह बेशक बे हयाई और ग़ज़ब का काम है और बहुत बुरी राह।

## बा'ज़ अल्फ़ाज़े कुरआनिया की वज़ाहत

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आख़िरी आयते मुबा-रका में निकाह ब मा'ना ज़िना के तीन बुरे औसाफ़ बयान फ़रमाए जब कि पहली आयते तय्यिबा में ज़िना के सिर्फ़ दो वस्फ़ बयान फ़रमाए। इस की वज्ह येह है कि आख़िरी आयते मुबा-रका में मज़्कूर ज़िना ज़ियादा बुरा और क़बीह है क्यूं कि बाप की बीवी मां की मिस्ल है लिहाज़ा इस से हराम कारी करना इन्तिहाई बुरा अमल है क्यूं कि जु-हला की जाहिलिय्यत में भी माओं से निकाह करना तमाम गुनाहों से बुरा था, पस फ़ोहूश काम सब से ज़ियादा क़बीह गुनाह है और ''مَقْت'' से मुराद किसी को हक़ीर जानते हुए इस से नफ़रत करना है, येह फ़ोहूश काम से ख़ास है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से बन्दे के हक़ में इन्तिहाई अज़ाब और ख़सारे पर दलालत करता है और وَسَآءَ سَبِيْلًا के साथ साथ मज़्कूरा बुरे औसाफ़ भी बयान किये गए क्यूं कि मुमा-न-अत से पहले भी ज़िना उन के दिलों में ना पसन्दीदा और बुरा था और वोह अपने बाप की बीवी से ऐसा फ़े'ल करने से पैदा होने वाले बच्चे को **मुक़ीत** कहते थे, जब कि अ-रबों में कुछ क़बाइल ऐसे भी थे जो अपने बाप की बीवी से निकाह करते थे, येह आदते बद अन्सार में लाज़िमन पाई जाती थी जब कि कुरैश में बाहम रिज़ा मन्दी से इस की इजाज़त थी।[1]

## बुराई के द-रजात :

जान लीजिये ! बुराई के 3 द-रजात हैं : (1) अक़्लन क़बीह (2) शर-अन क़बीह और (3) आदतन क़बीह। पस فَاحِشَةً से पहले द-रजे या'नी अक़्लन क़बीह की तरफ़ इशारा है और مَقْتًا से दूसरे द-रजे या'नी शर-अन क़बीह की तरफ़ जब कि سَآءَ سَبِيْلًا से तीसरे द-रजे या'नी आदतन क़बीह की तरफ़ इशारा है। जिस शख़्स में येह तीनों द-रजात जम्अ हो गए वोह बुराई में इन्तिहा को पहुंच गया।

एक क़ौल के मुताबिक़ ''اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ'' में इस्तिस्ना मुन्क़तअ है क्यूं कि माज़ी और मुस्तक़्बिल का इज्तिमाअ नहीं हो सकता और इस का मा'ना येह है : ''मगर माज़ी में जो फ़े'ल सरज़द हो चुका उस में कोई गुनाह नहीं।'' एक क़ौल के मुताबिक़ ''**निकाह**'' से मुराद अक़्दे

1 ......اللباب فی علوم الکتاب لابن عادل الحنبلی، النساء، تحت الآیة۲۲، ج۶، ص۲۷۹۔



www.dawateislami.net

सह़ीह़ है और ह़र्फ़े इस्तिस्ना से बा'ज़ के ज़िना में मुब्तला होने की इस्तिस्ना की गई है। पस मा'ना येह होगा कि उन औ़रतों से निकाह़ न करो जिन से ज़मानए जाहिलिय्यत में तुम्हारे बापों ने निकाह़ किया था मगर उन औ़रतों से निकाह़ करने में ह़रज नहीं जिन से उन्हों ने ज़मानए माज़ी में ज़िना किया था क्यूं कि तुम पर वोह औ़रतें ह़राम नहीं जिन से तुम्हारे बापों ने ज़िना किया था। एक क़ौल येह है कि इस में इस्तिस्ना मुत्तसिल है जब कि निकाह़ से मुराद वत़ी ली जाए या'नी उन औ़रतों से वत़ी न करो जिन से तुम्हारे बापों ने शादी कर के जाइज़ वत़ी की मगर जिन से उन्हों ने ज़मानए जाहिलिय्यत में ज़िना किया था उन से तुम्हारा वत़ी करना जाइज़ है।[1] एक क़ौल के मुत़ाबिक़ ''مَا'' मस्दरिय्या है इस सूरत में मा'ना येह होगा कि ''ज़मानए जाहिलिय्यत में जिस त़रह़ तुम्हारे आबाओ अज्दाद निकाह़ करते थे इस त़रह़ निकाह़ न करो मगर जो फ़ासिद निकाह़ तुम कर चुके हो इस्लाम में तुम्हारे लिये उन पर क़ाइम रहना जाइज़ है बशर्ते़ कि वोह निकाह़ ऐसे हों जिन्हें इस्लाम में बर क़रार रखा जाता हो।'' और साह़िबे तफ़्सीरे कश्शाफ़ ज़मख़्शरी मो'तज़िली के कलाम का ख़ुलासा येह है कि येह इस्तिस्ना मुत्तसिल है और मा'ना येह है कि ''उन औ़रतों से निकाह़ न करो जिन से तुम्हारे बापों ने निकाह़ किया सिवाए उन के जो गुज़र चुकीं और मर गईं।'' और इस मा'ना का मुह़ाल होना इस्तिस्ना के सह़ीह़ होने से मानेअ़ नहीं और न ही इसे इस्तिस्ना मुत्तसिल होने से ख़ारिज करता है। एक क़ौल येह है कि ''اِلَّا'' ब मा'ना ''بَعْدَ'' है, जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है : ''اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى ۚ (پ۲۵، الدُّخان:۵۶) **तरजमा :** पहली मौत के बा'द।'' और एक क़ौल येह भी है कि ''اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ'' आयते ह़ुरमत के नुज़ूल से पहले का हुक्म है क्यूं कि येह साबित है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के निकाह़ को बर क़रार रखा फिर जुदाई का हुक्म दिया ताकि बित्तदरीज उन्हें घटिया आ़दत से निकालें। येह कह कर इस की तरदीद कर दी गई कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने बाप की बीवी से किसी का निकाह़ बर क़रार न रखा।[2] चुनान्चे,

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه इर्शाद फ़रमाते हैं : ''मेरे मामूं ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बुर्दा बिन नियार رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه मेरे पास से गुज़रे और उन के पास एक झन्डा था, मैं ने पूछा : ''कहां का इरादा है ?'' फ़रमाने लगे : ''मुझे सरकारे वाला तबार, हम

---

1...... येह शवाफ़ेअ़ के नज़्दीक है, **अह़नाफ़ का मौक़िफ़ :** ''बाप दादा की मन्कूह़ा से निकाह़ जाइज़ नहीं'' क्यूं कि बाप की बीबी ब मन्ज़िलए मां के है कहा गया है निकाह़ से वत़ी मुराद है इस से साबित होता है कि बाप की मौत़ूअह या'नी जिस से उस ने सोह़बत की हो ख़्वाह निकाह़ कर के या ब त़रीक़े ज़िना या वोह बांदी हो उस का वोह मालिक हो कर इन में से हर सूरत में बेटे का उस से निकाह़ ह़राम है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 4, सू-रतुन्निसाअ, तह़तल आयह : 22)

2......اللباب فی علوم الکتاب لابن عادل الحنبلی، النساء، تحت الآیۃ ۲۲، ج۶، ص۲۷۶تا۲۸۰، ملخصاً۔



www.dawateislami.net

बे कसों के मददगार صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस शख़्स की त़रफ़ भेजा है जिस ने अपने बाप के (मरने या त़लाक़ देने के) बा'द उस की बीवी से निकाह़ कर लिया ताकि उस का सर काट लाऊं और उस का माल भी छीन लूं।''(1)

इस की तरदीद के लिये ग़ौरो फ़िक्र की ज़रूरत है क्यूं कि हो सकता है येह वाक़िआ़ ऐसे निकाह़ों को मन्सूख़ करने के हुक्म के बा'द हुवा हो पस इस में गुज़श्ता मौक़िफ़ के इन्कार पर कोई दलील नहीं। इस क़ौल के क़ाइल की सब से बेहतर तरदीद यूं की जा सकती है कि इस से उस क़ौल का सुबूत त़लब किया जाए कि आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुछ अ़र्सा उन्हें उसी निकाह़ पर बर क़रार रखा फिर जुदाई का हुक्म दिया।

''اِنَّهٗ كَانَ'' में كَانَ सिर्फ़ माज़ी पर दलालत नहीं करता क्यूं कि येह इस मा'ना में है कि वोह अपने इ़ल्म और हुक्म में हमेशा इस सिफ़त के साथ मुत्तसिफ़ है। एक क़ौल येह है कि येही वोह मा'ना है जिस ने मुबर्रिद को इस बात के दा'वे पर मजबूर किया कि यहां كَانَ ज़ाइदा है, जैसा कि साबित हो चुका है। इस के ज़ाइदा होने से मुराद येह है कि येह सिर्फ़ माज़ी पर दलालत नहीं करता वरना ज़ाइदा में ख़बर का न पाया जाना शर्त़ है और वोह यहां मौजूद नहीं।(2)

दूसरी आयते मुक़द्दसा के हुक्म के पहली आयाते मुबा-रका पर मुरत्तब होने की वज्ह येह है कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने गुज़श्ता आयाते बय्यिनात में औ़रतों पर एह़सान करने का हुक्म फ़रमाया तो इस आयते मुबा-रका में उन में से बुराई का इरतिकाब करने वालियों पर सख़्ती करने का हुक्म फ़रमाया और दर ह़क़ीक़त येह उन पर एह़सान है। इस की वज्ह येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस त़रह़ अपनी मख़्लूक़ को पूरा पूरा बदला इनायत फ़रमाता है इसी त़रह़ उन से मुत़ा-लबा भी करता है क्यूं कि उस के अह़काम में किसी की त़रफ़ दारी नहीं होती। दूसरी वज्ह येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का उन पर एह़सान करने का हुक्म उन पर हुदूद के नफ़ाज़ को तर्क करने का सबब न बन जाए और फिर येह चीज़ मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मफ़ासिद में पड़ने का सबब न बन जाए।(3)

मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इस पर इज्माअ़ है कि यहां फ़ाह़िशा से मुराद ज़िना है। लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का क़ौल इस की नफ़ी करता है।

1 ......جامع الترمذی، ابواب الاحکام،باب فیمن تزوج امرأة أبیه، الحدیث :۱۳۶۲،ص۱۷۸۸۔

المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث البراء بن عازب، الحدیث :۱۸۵۸۱،ج۶، ص۴۱۹۔

2 ......اللباب فی علوم الکتاب لابن عادل الحنبلی ، النساء،تحت الآیة۲۲، ج۶، ص۲۷۹۔

3 ......المرجع السابق ، تحت الآیة ۱۵، ص۲۳۶۔



www.dawateislami.net

अलबत्ता ! येह कहा जा सकता है कि इस का ख़िलाफ़ मा'रूफ़ नहीं और इस पर इत्लाक़ करने की वज्ह येह है कि येह दूसरी तमाम बुराइयों से ज़ियादा क़बीह़ है । यहां एक ए'तिराज़ है कि कुफ़्र और क़त्ल के ज़िना से ज़ियादा बुरा होने के बा वुजूद इन में से किसी को फ़ाह़िशा नहीं कहा गया । जब कि हमारा ख़याल येह है कि इन में से हर एक को फ़ाह़िशा का नाम न देना मम्नूअ़ है बल्कि सह़ीह़ येह है कि इन्हें भी फ़ाह़िशा ही कहा जाए लेकिन इन को येह नाम नहीं दिया गया तो इस का जवाब येह है कि काफ़िर बज़ाते ख़ुद कुफ़्र को बुरा नहीं जानता और न ही इस के क़बीह़ होने का ए'तिक़ाद रखता है बल्कि इसे सह़ीह़ समझता है और इसी त़रह़ क़त्ल भी है कि क़ातिल क़त्ल कर के फ़ख़्र मह़सूस करता है और उसे अपनी बहादुरी समझता है, मगर ज़िना करने वाला हर शख़्स न सिर्फ़ इस के बुरा और फ़ोह़्श होने का अ़क़ीदा रखता है बल्कि आख़िर में आ़र भी मह़सूस करता है ।(1)

## ग़ौरो फ़िक्र करने की क़ुव्वतें :

इन्सान की जिस्मानी क़ुव्वतों को चलाने वाली क़ुव्वतें 3 हैं : (1) **क़ुव्वते नात़िक़ा** (2) **क़ुव्वते ग़-ज़बिय्या** और (3) **क़ुव्वते शह्वानिय्या ।** पहली क़ुव्वत का फ़साद कुफ़्रो बिद्अ़त वग़ैरा है, दूसरी का फ़साद क़त्ल वग़ैरा है जब कि तीसरी क़ुव्वत सब से ज़ियादा बुरी है बिला शुबा इस का फ़साद भी सब से ज़ियादा बुरा होगा इसी वज्ह से इस फ़े'ल को ख़ास त़ौर पर फ़ाह़िशा का नाम दिया गया ।(2)

''اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ'' या'नी 4 मुसल्मान । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दा'वा करने वाले पर सख़्ती करने के लिये और बन्दों से छुपाने के लिये ज़िना पर गवाही के लिये कम अज़ कम 4 की ता'दाद मु-तअ़य्यन फ़रमाई और येह हुक्म तौरात और इन्जील में भी इसी त़रह़ साबित है ।(3)

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि यहूदी एक ऐसे मर्द और औ़रत को सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ले कर ह़ाज़िर हुए जिन्हों ने ज़िना किया था, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यहूदियों से फ़रमाया : ''तुम अपने में से सब से ज़ियादा इ़ल्म वाले को मेरे पास ले आओ ।'' पस वोह दो आदमियों को ले आए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ''तौरात में तुम इन दोनों के मु-तअ़ल्लिक़ क्या हुक्म पाते हो ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''हम तौरात में येह

---

1 ......اللباب فی علوم الکتاب لابن عادل الحنبلی ، النساء ،تحت الآیة ٢٢، ج٦، ص٢٣٩ـ

2 ......التفسیر الکبیر للرازی ، النساء ، تحت الایة ١٥ ، ج٣، ص٥٢٨ـ

3 ......الجامع لاحکام القرآن للقرطبی ، النساء، تحت الآیة ١٥ ، ج٣ ، الجزء الخامس، ص٥٩ـ



www.dawateislami.net

हुक्म पाते हैं कि जब चार शख़्स गवाही दें कि उन्हों ने मर्द के आलए तनासुल को औ़रत की शर्मगाह में इस त़रह़ देखा जिस त़रह़ सुरमा दानी में सलाई होती है तो उन दोनों को रज्म किया जाएगा।'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम्हें इन को रज्म करने से किस चीज़ ने रोका ?'' उन्हों ने बताया : ''हमारा बादशाह चला गया तो हम ने क़त्ल करने को ना पसन्द किया।'' रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने गवाहों को बुलाया जिन्हों ने गवाही दी कि उन्हों ने मर्द के आलए तनासुल को औ़रत की शर्मगाह में इस त़रह़ देखा है जिस त़रह़ सुरमा दानी में सलाई होती है तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें रज्म करने का हुक्म दिया।(1)

एक गुरोह का क़ौल है : ''ज़िना में चार गवाह इस लिये बनाए गए हैं ताकि तमाम हुक़ूक़ की त़रह़ ज़िना करने वालों में से भी हर एक पर दो गवाह बन जाएं, क्यूं कि येह भी एक ह़क़ है जो दोनों में से हर एक से लिया जाएगा।'' उन का येह क़ौल येह कह कर रद कर दिया गया है कि यमीन (या'नी क़सम) को यहां कोई दख़्ल नहीं पस ज़िना का मुआ़-मला तमाम हुक़ूक़ की त़रह़ नहीं हो सकता।

जुम्हूर मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ''इस आयते मुबा-रका से मुराद येह है कि जब किसी औ़रत की त़रफ़ ज़िना की निस्बत की जाए तो अगर चार आज़ाद आ़दिल मर्द गवाही दे दें कि इस ने ज़िना किया है तो उसे मरने तक घर में क़ैद रखा जाए या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये कुछ राह निकाले।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''यहां पर फ़ाह़िशा से मुराद औ़रतों का आपस में ज़िना करना है और इस की ह़द येह है कि इस को मरने तक क़ैद में रखा जाए।'' और ''وَالَّذٰنِ یَاْتِیٰنِهَا مِنْكُمْ'' से क़ौमे लूत़ जैसा अ़मल करने वाले मुराद हैं और इन की ह़द क़ौल व फ़े'ल से तक्लीफ़ पहुंचाना है जब कि सूरए नूर की आयते मुबा-रका से मुराद मर्द व औ़रत का आपस में ज़िना करना है और ग़ैर शादी शुदा की ह़द कोड़े लगाना और शादी शुदा की ह़द संगसार करना है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पहली दलील येह है कि اَلّٰتِیْ औ़रतों के लिये और اَلَّذٰنِ मर्दों के लिये आता है और येह भी नहीं कहा जाएगा कि यहां लफ़्ज़न मुज़क्कर को ग़-लबा दिया गया है क्यूं कि साबिक़ा आयते मुबा-रका में औ़रतों का अ़ला-ह़दा ज़िक्र इस की तरदीद करता है। दूसरी दलील येह है कि इस सूरत में इन दोनों आयात में से किसी को मन्सूख़ न मानना पड़ेगा जब कि इस के बर अ़क्स इन दोनों आयात में नस्ख़ लाज़िम आता है और नस्ख़ अस्ल के ख़िलाफ़ है। तीसरी दलील येह है कि इस की बर अ़क्स सूरत

1 ......سنن ابی داود، کتاب الحدود، باب فی رجم الیھودیین، الحدیث ۴۴۵۲، ص۱۵۳۹، بتغیرٍقلیلٍ۔



www.dawateislami.net

में एक चीज़ का एक ही महल में दो बार आना लाज़िम आता है और येह बुरा है। चौथी दलील येह है कि जो कहते हैं येह आयते मुबा-रका ज़िना के मु-तअ़ल्लिक़ है, उन्हों ने سَبِيۡلًا की तफ़्सीर कोड़ों, जला व-त़नी और रज्म से की है और येह चीज़ औ़रतों के ख़िलाफ़ हैं न कि इन के ह़क़ में। जब कि हम इस की तफ़्सीर यूं करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ निकाह़ के ज़रीए इन के लिये शह्वत पूरा करना आसान फ़रमा दे, नीज़ हमारे मौक़िफ़ पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने इ़ब्रत निशान दलालत करता है : ''जब मर्द मर्द से बद फे़'ली करे तो वोह दोनों ज़ानी हैं और जब औ़रत औ़रत से बदकारी करे तो वोह दोनों भी ज़ानिया हैं।''(1)

जुम्हूर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इस की तरदीद करते हुए दर्जे ज़ैल जवाबात दिये। पहला जवाब येह है कि मु-तक़द्दिमीन मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام में से किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की तफ़्सीर के मुत़ाबिक़ तफ़्सीर नहीं की। दूसरा जवाब येह है कि ह़दीसे पाक में سَبِيۡلًا की तफ़्सीर येह बयान फ़रमाई गई है कि **सबिय्या** को संगसार किया जाए और बाकिरा को कोड़े लगाए जाएं और येह इस बात पर दलील है कि येह आयते मुबा-रका ज़ानियों के मु-तअ़ल्लिक़ है। तीसरा जवाब येह है कि लिवात़त के हुक्म में सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का इख़्तिलाफ़ था और इन में से किसी ने भी इस आयते मुबा-रका से इस्तिदलाल नहीं किया, पस दलील की इन्तिहाई ज़रूरत के बा वुजूद इन का इस से इस्तिदलाल न करना इस बात पर दलील है कि इसी मौक़िफ़ के दलाइल क़वी हैं कि येह आयते मुक़द्दसा लिवात़त के मु-तअ़ल्लिक़ नहीं।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इन के जवाबात को रद करते हुए फ़रमाया : ''ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد ने इसी त़रह़ कहा है और वोह हमारे अकाबिर मु-तक़द्दिमीन मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام में से हैं। नीज़ उसूले फ़िक़्ह में येह बात साबित है कि आयते मुबा-रका में ऐसी नई तावील करना जाइज़ है जिसे साबिक़ा मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने ज़िक्र न किया हो और जुम्हूर मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का मौक़िफ़ आयते मुबा-रका को ख़बरे वाह़िद से मन्सूख़ करने का सबब बनता है और येह मम्नूअ़ है और सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का मुत़ा-लबा येह था कि क्या लूत़ी पर ह़द क़ाइम की जाएगी ? और इस आयते मुबा-रका में येह हुक्म नहीं इस लिये वोह इस की त़रफ़ मु-तवज्जेह ही न हुए।''(2)

1 ......شعب الايمان للبيهقى، باب فى تحريم الفروج، الحديث: ۵۴۵۸، ج۴، ص۳۷۵۔

2 ......اللباب فى علوم الكتاب لابن عادل الحنبلى، النساء، تحت الآية ۱۵، ج۶، ص۲۴۰۔



www.dawateislami.net

मज़्कूरा दलाइल के जवाब में जुम्हूर मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد का क़ौल हज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मौक़िफ़ के ख़िलाफ़ है और ख़बरे वाहिद से आयते मुबा–रका मन्सूख़ हो सकती है क्यूं कि नस्ख़ तो सिर्फ़ दलालत में होता है जो कि इन दोनों में ज़न्नी है। इस बिना पर अन्क़रीब बयान होगा कि इस आयते मुबा–रका के हुक्म में कोई नस्ख़ नहीं और उन का येह गुमान मरदूद है कि سَبِيْلًا की तफ़्सीर कोड़ों या रज्म से करना औ़रतों के ख़िलाफ़ है न कि उन के ह़क़ में, क्यूं कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने سَبِيْلًا की तफ़्सीर बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया : ''मुझ से येह बात जान लो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने औ़रतों के लिये सबील बना दी है, शादी शुदा (मर्द) शादी शुदा (औ़रत) से ज़िना करे तो सो कोड़े और पथ्थरों के साथ संगसार किया जाए और ग़ैर शादी शुदा ग़ैर शादी शुदा से ज़िना करे तो उन्हें सो कोड़े और एक साल के लिये जला वत़न किया जाए।''(1)

जब ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने سَبِيْلًا की तफ़्सीर बयान फ़रमा दी तो इसे क़बूल करना ज़रूरी है नीज़ लुग़वी ए'तिबार से भी इस की वज्ह ज़ाहिर है क्यूं कि किसी चीज़ से छुटकारा पाना सबील कहलाता है ख़्वाह मुश्किल से हो या ब आसानी।

''نِّسَآئِكُمْ'' से मुराद बीवियां हैं जब कि एक क़ौल के मुत़ाबिक़ शादी शुदा औ़रतें हैं।

## ज़ानिया को घर में बन्द रखने की ह़िक्मत :

पहले ज़ानिया को घर में क़ैद रखने के हुक्म की ह़िक्मत येह है कि वोह बाहर निकलने और ज़ाहिर होने से ज़िना में मुब्तला हो सकती है, लिहाज़ा जब उसे घर में बन्द कर दिया जाएगा तो वोह ज़िना पर क़ादिर न होगी। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه और ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : ''येह हुक्म इब्तिदाए इस्लाम में था फिर हुक्मे ईज़ा के साथ उसे मन्सूख़ कर दिया गया जो इस के बा'द मज़्कूर है फिर शादी शुदा को रज्म करने के हुक्म के साथ उसे भी मन्सूख़ कर दिया गया।'' एक क़ौल के मुत़ाबिक़ पहले ईज़ा का हुक्म था फिर घरों में क़ैद रखने के हुक्म के साथ इसे मन्सूख़ कर दिया गया लेकिन इस आयत की तिलावत का हुक्म बाक़ी है। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने फ़ूरक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''रोकने और घरों में क़ैद रखने का हुक्म इब्तिदाए इस्लाम

(1) ......صحیح مسلم، کتاب الحدود، باب حد الزنی، الحدیث ۴۴۱۲، ص۹۷۷، "وتغریب عام" بدله "ثم نفی سنة"۔



www.dawateislami.net

में था जब फ़ोहूश कामों की कसरत न थी, मगर जब बदकारी आ़म हो गई और उन के क़वी हो जाने का ख़दशा हुवा तो उन के लिये जेलें बनाई गईं।''

''يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ'' का मा'ना येह है कि उन्हें मौत आ जाए या फ़रिश्ते उन की जान निकाल लें जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला है :

اَلَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ (پ۱۴،النحل:۳۲) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जिन की जान निकालते हैं फ़रिश्ते सुथरे पन में।

''اَوْ يَجْعَلَ'' में ''اَوْ'' عاطفه या اِلَّا के मा'ना में है। पहली सूरत में يَجْعَلَ रोकने के लिये ग़ायत होगा दूसरी सूरत में ग़ायत न होगा।[1]

## क्या कोड़े रज्म में दाखि़ल हैं ?

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के बारे में है कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने सुराह़ा हमदानिया को जुम्अ़ारात के दिन 100 कोड़े लगाए, फिर जुमुआ़ के दिन उसे रज्म किया और इर्शाद फ़रमाया : ''मैं ने इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब के मुत़ाबिक़ कोड़े मारे और सुन्नते रसूल के मुत़ाबिक़ रज्म किया।''[2]

आ़म उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का मौक़िफ़ येह है कि कोड़े मारना रज्म करने में दाखि़ल है क्यूं कि ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना माइज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और ह़ज़रते सय्यि-दतुना ग़ामिदिय्या رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا को रज्म किया लेकिन उन्हें कोड़े न लगाए।

﴾3﴿...... (जैसा कि ह़दीसे पाक में है :) ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उनैस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को ह़ुक्म फ़रमाया : ''इस शख़्स की बीवी के पास जाओ अगर वोह (ज़िना का) ए'तिराफ़ करे तो उसे रज्म कर दो।''[3] लेकिन कोड़े लगाने का ह़ुक्म न दिया।

## ज़ानी को जला वत़न करने का ह़ुक्म :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (मु-तवफ़्फ़ा 150 हि.) के नज़्दीक बाकिरा को जला वत़न करने का ह़ुक्म मन्सूख़ है जब कि

---

1 ......اللباب فی علوم الکتاب لابن عادل الحنبلی، النساء،تحت الآیة ۱۵، ج۶، ص۲۴۱_۲۴۲_

2 ......المستدرک، کتاب الحدود، باب حکایة رجم امرأة من غامد، الحدیث: ۸۱۵۱،۸۱۵، ج۵، ص۵۲۱_

3 ......صحیح البخاری، کتاب الوکالة، باب الوکالة فی الحدود،الحدیث: ۲۳۱۴، ص۱۸۱، "امض" بدله "اغد"_



www.dawateislami.net

अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام इस का सुबूत पेश करते हैं क्यूं कि, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कोड़े भी लगाए और जला वत़न भी किया और ह़ज़राते अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने भी इसी त़रह़ किया।[1]

## ज़ानिया को घर में क़ैद रखने में इख़्तिलाफ़ :

ज़ानिया को घर में क़ैद रखने में भी अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का इख़्तिलाफ़ है, एक क़ौल येह है कि येह ह़द नहीं बल्कि इस की धमकी है। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "येह ह़द है।" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ज़ैद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मज़ीद येह भी फ़रमाया कि "जब उन्हों ने ग़लत़ त़रीक़े (या'नी ज़िना) के ज़रीए निकाह़ का मुत़ा-लबा किया तो उन्हें सज़ा के त़ौर पर निकाह़ से बाज़ रखा जाए यहां तक कि वोह मर जाएं और येह इस बात पर दलालत करता है कि येह न सिर्फ़ ह़द है बल्कि इस से भी सख़्त है अलबत्ता ! इस की एक ग़ायत है और वोह दूसरी आयते मुबा-रका में साबिक़ा दोनों तावीलों के इख़्तिलाफ़ के मुत़ाबिक़ **اَلاَذٰی** है और इन दोनों की भी एक ग़ायत है और वोह कोड़े लगाना और रज्म करना है जैसा कि गुज़श्ता ह़दीसे पाक में हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वाज़ेह़ त़ौर पर फ़रमाया : "خُذُوْا عَنِّی"[2]

मु-तअख़्ख़िरीन मुह़क़्क़िक़ीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن के नज़्दीक इस सूरत में आयते मुबा-रका में कोई नस्ख़ नहीं क्यूं कि येह इस आयते मुबा-रका की त़रह़ है :

ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّیَامَ اِلَی الَّیْلِ (پ۲، البقرۃ:۱۸۷)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** फिर रात आने तक रोज़े पूरे करो।

पस इस हुक्मे रब्बानी से रोज़ों का हुक्म वक़्त ख़त्म होने के बाइ़स उठता है न कि मन्सूख़ होने के सबब। नीज़ नस्ख़ के लिये शर्त़ है कि दो मुख़ालिफ़ चीज़ों को जम्अ़ करना ना मुम्किन हो जब कि यहां क़ैद, जला व-त़नी, कोड़ों और रज्म को जम्अ़ करना मुम्किन है जैसा कि साबित हो चुका है, पस यहां मु-तक़द्दिमीन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का नस्ख़ का इत़्लाक़ करना जाइज़ नहीं। बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "कोड़े मारने के साथ साथ ईज़ा देने और जला वत़न करने की सज़ा बाक़ी है क्यूं कि येह दोनों आपस में मुख़ालिफ़ नहीं बल्कि

---

1 ......جامع الترمذی،ابواب الحدود، باب ماجاء فی النفی، الحدیث: ۱۴۳۸، ص۱۷۹۸۔

2 ......اللباب فی علوم الکتاب لابن عادل الحنبلی ، النساء ، تحت الآیۃ ۱۵ ،ج۶، ص۲۴۴۔



www.dawateislami.net

एक ही शख़्स पर महमूल हैं मगर क़ैद रखना बिल इज्माअ़ मन्सूख़ है।''(1)

इस्मे मौसूल ''اَللَّذٰنِ और اَللَّاتِیْ'' के तकरार में भी अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इख़्तिलाफ़ है। ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : ''पहला इस्मे मौसूल औ़रतों के मु-तअ़ल्लिक़ जब कि दूसरा मर्दों के मु-तअ़ल्लिक़ है, इस लिये कि औ़रत बाहर निकलने के बाइ़स अक्सर ज़िना में मुब्तला हो जाती है, पस इसे क़ैद करने से इस बुराई की जड़ कट जाएगी, जब कि मर्द को घर में रोकना मुश्किल है क्यूं कि वोह अपनी रोज़ी कमाने के लिये घर से निकलने पर मजबूर है।'' एक क़ौल के मुताबिक़ दोनों में ईज़ा मुश्तरक है लेकिन घर में रोकने का हुक्म औ़रत के साथ ख़ास है। ह़ज़रते सय्यिदुना सुद्दी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''दूसरा इस्मे मौसूल ग़ैर शादी शुदा के मु-तअ़ल्लिक़ है जब कि पहला शादी शुदा के मु-तअ़ल्लिक़।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ता رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه और ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ''فَاٰذُوْهُمَا'' से मुराद येह है कि उन्हें ज़बान से आ़र दिलाते हुए कहो : क्या तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ नहीं।'' वग़ैरा। ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : ''उन्हें सब्बो शत्म करो।'' एक क़ौल येह है कि उन्हें कहो : ''तुम ने बुरा काम किया और तुम फ़ासिक़ हो गए।'' ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : ''उन्हें ज़बान से आ़र दिला कर तक्लीफ़ दो और जूतों से मारो।''(2)

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَ الَّذِیْنَ لَا یَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَ لَا یَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِیْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَ لَا یَزْنُوْنَ ۚ وَ مَنْ یَّفْعَلْ ذٰلِكَ یَلْقَ اَثَامًا ۙ﴿۶۸﴾ یُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وَ یَخْلُدْ فِیْهٖ مُهَانًا ﴿۶۹﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ (پ ۱۹، الفرقان: ۶۸تا۷۰)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जो **अल्लाह** के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पूजते और उस जान को जिस की **अल्लाह** ने हुरमत रखी नाहक़ नहीं मारते और बदकारी नहीं करते और जो येह काम करे वोह सज़ा पाएगा, बढ़ाया जाएगा उस पर अ़ज़ाब क़ियामत के दिन और हमेशा उस में ज़िल्लत से रहेगा, मगर जो तौबा करे।

## चन्द अल्फ़ाज़े क़ुरआनिया की वज़ाह़त

मज़्कूरा आयते मुबा-रका में ذٰلِكَ से बयान कर्दा तमाम बातों की त़रफ़ इशारा है क्यूं

(1) ......الجامع لاحکام القرآن للقرطبی، النساء، تحت الآیة ۱۵، ج۳، الجزء الخامس، ص۲۰۔

(2) ......اللباب فی علوم الکتاب لابن عادل الحنبلی، النساء، تحت الآیة ۱۶، ج۶، ص۲۴۶ ۔ ۲۴۷۔



www.dawateislami.net

कि येह मज़्कूरा कलाम के मा'ना में है इस लिये इसे वाहिद ज़िक्र किया गया। **اَثَامًا** से मुराद सज़ा है। एक क़ौल के मुताबिक़ **اِثْمٌ** से मुराद उस का नफ़्स है या'नी उस का नफ़्स गुनाह की सज़ा पाएगा। हज़रते सय्यिदुना हसन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''येह जहन्नम के नामों में से एक नाम है।'' हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : ''येह जहन्नम की एक वादी का नाम है।'' एक क़ौल येह भी है कि ''येह जहन्नम के एक कूंएं का नाम है। **يُضَاعَفُ** और **يَخْلُدُ** को रफ़्अ़ के साथ (या'नी आख़िरी हर्फ़ पर पेश) पढ़ा जाए तो हाल या जुम्ला मु-सतानिफ़ा होगा और जज़्म के साथ पढ़ा जाए तो **يَلْقَ** से ब-दले इश्तिमाल होगा। **مُهَانًا اَهَانَهٗ** से है या'नी किसी को ज़लील करना और उसे ज़िल्लत का मज़ा चखाना। **فِيْهِ** से मुराद अ़ज़ाब या ता'ज़ीब या दुगना अ़ज़ाब है और इस दुगने अ़ज़ाब का सबब येह है कि मुश्रिक ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराने के साथ साथ इन गुनाहों का भी इरतिकाब किया पस शिर्क के इ़लावा इन गुनाहों पर भी अ़ज़ाब दिया जाएगा।''(1)

## शाने नुज़ूल :

इस आयते मुबा-रका का शाने नुज़ूल येह है कि मुश्रिकीन ने बहुत ज़ियादा क़त्ल और ज़िना किये थे, पस वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कहने लगे : ''ऐ मुहम्मद ! जिस (दीन) की तरफ़ आप बुलाते हैं वोह बहुत अच्छा है लेकिन हमें येह तो बताइये कि जो गुनाह हम ने किये हैं उन का कोई कफ़्फ़ारा भी हो सकता है ?'' पस मज़्कूरा और येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई :

**قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝۵۳** (پ۲۴، الزمر:۵۳)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो ! जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की **अल्लाह** की रह़मत से ना उम्मीद न हो, बेशक **अल्लाह** सब गुनाह बख़्श देता है, बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है।(2)

## पड़ोसी की बीवी से ज़िना की मज़म्मत :

﴾4﴿...... एक शख़्स ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते

---

1 ......اللباب فی علوم الکتاب لابن عادل الحنبلی ، الفرقان ، تحت الآیة۶۸، ج۱۴، ص۵۷۰،۵۷۱۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب التفسیر، سورة الزمر، باب قوله یعبادی الذین اسرفوا......الخ ،الحدیث : ۴۸۱۰،ص۴۰۹،مفهوماً۔



www.dawateislami.net

अक्दस में अर्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बड़ा गुनाह कौन सा है ?" इर्शाद फ़रमाया : "(सब से बड़ा गुनाह येह है कि) तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराए ह़ालां कि उसी ने तुझे पैदा किया।" उस ने अर्ज़ की : "बेशक येह तो बहुत बड़ा है।" दोबारा पूछा : "फिर कौन सा ?" इर्शाद फ़रमाया : "तू अपने बेटे को इस ख़ौफ़ से क़त्ल कर दे कि वोह तेरे साथ खाएगा।" उस ने फिर अर्ज़ की : "इस के बा'द कौन सा ?" इर्शाद फ़रमाया : "तू अपने पड़ोसी की बीवी से ज़िना करे।" पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस इर्शाद की तस्दीक़ में येह आयते मुबा-रका (وَالَّذِیْنَ لَا یَدْعُوْنَ ...... ذٰلِكَ یَلْقَ اَثَامًا) नाज़िल फ़रमाई।[1]

इस की मुवा-फ़क़त और ताईद करने वाला कलाम अन्क़रीब अह़ादीसे मुबा-रका में आएगा।

## ज़िना की दुन्यवी सज़ा :

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इब्रत निशान है :

اَلزَّانِیَةُ وَالزَّانِیْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۪ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِیْ دِیْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَلْیَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآىٕفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِیْنَ ۝ (پ۱۸، النور:۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** जो औ़रत बदकार हो और जो मर्द तो उन में हर एक को सो कोड़े लगाओ और तुम्हें उन पर तर्स न आए **अल्लाह** के दीन में अगर तुम ईमान लाते हो **अल्लाह** और पिछले दिन पर और चाहिये कि उन की सज़ा के वक़्त मुसल्मानों का एक गुरोह ह़ाज़िर हो।

## आयते मुबा-रका की ज़रूरी वज़ाह़त

लफ़्ज़े جَلْد से मुराद मारना है और येह इस लिये फ़रमाया ताकि ऐसी सख़्त चोट न लगाई जाए कि खाल उधेड़ कर गोश्त तक पहुंच जाए। رَاْفَةٌ से मुराद रह़मत और नरमी है और नरमी से मन्अ़ करने का सबब येह है कि इस फ़े'ल के मुर-तकिब ने कबीरा फ़ाह़िशा का इरतिकाब किया है बल्कि क़त्ल के बा'द येह सब से बड़ा गुनाह है, इसी वज्ह से साबिक़ा आयते मुबा-रका में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे शिर्क के साथ मिला कर ज़िक्र फ़रमाया।

## ज़िना के छ[6] नुक़्सानात :

﴾5﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان کون الشرک اقبح......الخ، الحدیث: ۲۵۷، ۲۵۸، ص۲۹۳۔



www.dawateislami.net

निशान है : "ऐ लोगो ! ज़िना से बचो क्यूं कि इस में छ6 बुराइयां हैं 3 दुन्या में और 3 आख़िरत में, दुन्या में पहुंचने वाली बुराइयां येह हैं : (1) उस (के चेहरे) की रौनक़ चली जाएगी (2) तंगदस्ती आएगी और (3) उस की उ़म्र में कमी हो जाएगी और आख़िरत में पहुंचने वाली बुराइयां येह हैं : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी (2) बुरा ह़िसाब और (3) जहन्नम का अ़ज़ाब ।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد और इन के हम-अ़स्र अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के एक त़बके़ ने "وَلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ" का मा'ना येह बयान फ़रमाया : "तुम्हें उन पर तर्स न आए कि तुम हुदूद तर्क कर दो और उन्हें क़ाइम न करो ।" एक क़ौल येह है कि यहां नरमी करने से मुमा-न-अ़त है और दोनों (या'नी ज़ानी और ज़ानिया) को दर्दनाक ज़र्ब लगाने का हुक्म है और येह ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुसय्यब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है और فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ का मा'ना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हुक्म है ।"(2)

## ह़द लगाने का त़रीक़ा :

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की एक लौंडी ने ज़िना किया तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस को ह़द लगाई और जल्लाद से फ़रमाया : "इसे पुश्त और पाउं पर मारो ।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के बेटे ने अ़र्ज़ की : "وَلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ" तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे इसे क़त्ल करने का हुक्म नहीं दिया बल्कि मैं ने इसे मारा भी है और तक्लीफ़ भी पहुंचाई है ।"(3)

इसी वज्ह से हमारे अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام इर्शाद फ़रमाते हैं : "औ़रत को ज़िना और दीगर हुदूद में मो'तदिल कोड़े से मारा जाएगा, न कि नए कोड़े से कि ज़ख़्मी हो जाए और न ही ऐसे पुराने से कि दर्द ही न हो, और उसे घसीटा न जाएगा और न ही बांधा जाएगा बल्कि छोड़ दिया जाएगा अगर्चे वोह अपने हाथों के ज़रीए ख़ुद को बचाती रहे जब कि मर्द को खड़ा कर के मारा जाएगा और जो चीज़ उसे दर्द पहुंचने से मानेअ़ हो उसे अ़ला-ह़दा कर दिया जाएगा और औ़रत को बिठाया जाएगा और उस पर उस के कपड़े लपेट दिये जाएंगे ताकि उस का जिस्म ज़ाहिर न हो और उस के आ'ज़ा पर मु-तफ़र्रिक़ जगहों पर कोड़े मारे जाएंगे, किसी एक जगह

---

1 ......الکامل فی ضعفاء الرجال، الرقم ۱۷۹۹، مَسْلَمَة بن علی، ج۸، ص۱۹۔
التفسیر الکبیر، النور، تحت الآیة ۲، ج۸، ص۳۰۲۔

2 ......اللباب فی علوم الکتاب لابن عادل الحنبلی، النور، تحت الآیة ۲، ج۱۴، ص۲۸۴۔

3 ......تفسیر البغوی، النور، تحت الآیة ۲، ج۳، ص۲۷۲۔



www.dawateislami.net

न लगाए जाएंगे और हलाकत का सबब बनने वाली जगहों म-सलन चेहरा, गरदन, पेट और शर्मगाह को बचाया जाएगा।[1]''

लफ़्ज़े طَآئِفَةٌ से क्या मुराद है, एक क़ौल के मुताबिक़ एक आदमी, एक क़ौल के मुताबिक़ दो और एक क़ौल के मुताबिक़ 3 आदमी हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : ''इन की ता'दाद ज़िना के गवाहों के बराबर 4 हो।'' और येही सह़ीह़ है। एक क़ौल के मुताबिक़ 10 आदमी हैं। وَلْيَشْهَدْ (सीग़ए अम्र) का ज़ाहिरी मफ़्हूम येह है कि उन की मौजू-दगी वाजिब है। जब कि फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने ऐसा नहीं कहा बल्कि उन्हों ने इसे मुस्तह़ब क़रार दिया इस लिये कि इस से मक़्सूद ह़द क़ाइम करने का ए'लान करना है क्यूं कि इस में डांट डपट और तोहमत का दूर करना पाया जाता है। एक क़ौल के मुताबिक़ त़ाइफ़ा से मुराद येह है कि गवाहों का मौजूद रहना मुस्तह़ब है ताकि उन का गवाही पर क़ाइम रहना मा'लूम हो जाए। (ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم (मु-तवफ़्फ़ा 150 हि.) के नज़्दीक रज्म के वक़्त इमाम और गवाहों का मौजूद होना ज़रूरी है जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی के नज़्दीक इमाम और गवाहों का मौजूद होना ज़रूरी नहीं। चुनान्चे) ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (मु-तवफ़्फ़ा 150 हि.) फ़रमाते हैं : ''अगर ज़िना गवाहियों से साबित हो तो ज़रूरी है कि पहले गवाह पथ्थर मारें फिर इमाम और फिर दीगर लोग और अगर इक़रार से साबित हो तो पहले इमाम पथ्थर मारे फिर दीगर लोग।'' और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) अपने मौक़िफ़ पर दलील देते हुए फ़रमाते हैं : ''सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना माइज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और ह़ज़रते सय्यि-दतुना ग़ामिदिय्या رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا को रज्म करने का हुक्म दिया लेकिन आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खुद वहां तशरीफ़ न लाए।''[2]

इस के बा'द कोड़ों का ज़िक्र है जिस की वज़ाह़त ह़दीसे पाक से हो चुकी है कि येह हुक्म ग़ैर शादी शुदा के मु-तअ़ल्लिक़ है।

## مُحْصِن का मफ़्हूम :

**محصن** से मुराद वोह आज़ाद और मुकल्लफ़ (या'नी बालिग़) शख़्स है जिस ने निकाहे सह़ीह़ से वत़ी की हो अगर्चे ज़िन्दगी में एक बार की हो। इस की ह़द येह है कि उसे पथ्थरों

---

1 ......اللباب فی علوم الکتاب لابن عادل الحنبلی، النور، تحت الآیة۲، ج۱۴، ص۲۸۳۔

2 ......التفسیرالکبیر، النور، تحت الآیة۲، ج۸، ص۳۱۶، ۳۱۷، بتقدمٍ وتأخرٍ۔



www.dawateislami.net

के साथ रज्म किया जाए यहां तक कि मर जाए। उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام इर्शाद फ़रमाते हैं : ''जो ह़द और तौबा के बिग़ैर मर गया उसे जहन्नम में आग के कोड़ों से अ़ज़ाब दिया जाएगा।'' चुनान्चे, ज़बूर शरीफ़ में है : ''ज़िना करने वाले जहन्नम में अपनी शर्मगाहों के साथ लटके होंगे और उन्हें लोहे के गुर्ज़ों से मारा जाएगा।'' गुर्ज़ लगने की वज्ह से जब उन में से कोई फ़रियाद करेगा तो **ज़बानिया** (या'नी अ़ज़ाब के फ़रिश्ते) कहेंगे : ''येह आवाज़ उस वक़्त कहां थी जब कि तुम हंसते और ख़ुश होते थे बल्कि ख़ुशी से फूले न समाते थे, न तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से डरते और न ही उस से ह़या करते थे।''

ह़दीसे पाक में ज़ानी ख़ुसूसन अपने पड़ोसी की बीवी या जिस का शोहर घर में न हो, से ज़िना करने वाले के मु-तअ़ल्लिक़ इन्तिहाई सख़्त हुक्म आया है। चुनान्चे,

﴾6﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बड़ा गुनाह कौन सा है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराए ह़ालां कि उसी ने तुझे पैदा किया।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''बेशक येह तो बहुत बड़ा है।'' दोबारा अ़र्ज़ की : ''फिर कौन सा ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''तू अपने बेटे को इस ख़ौफ़ से क़त्ल कर दे कि वोह तेरे साथ खाएगा।'' मैं ने फिर अ़र्ज़ की : ''इस के बा'द कौन सा ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''तू अपने पड़ोसी की बीवी से ज़िना करे।''(1)

﴾7﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नसाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम तिरमिज़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 279 हि.) की रिवायत में मज़ीद येह भी है कि इस के बा'द आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ﴿۶۸﴾ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ﴿۶۹﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ (پ۱۹،الفرقان:۶۸تا۷۰)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जो **अल्लाह** के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पूजते और उस जान को जिस की **अल्लाह** ने हुरमत रखी नाह़क़ नहीं मारते और बदकारी नहीं करते और जो येह काम करे वोह सज़ा पाएगा, बढ़ाया जाएगा उस पर अ़ज़ाब क़ियामत के दिन और हमेशा उस में ज़िल्लत से रहेगा, मगर जो तौबा करे।(2)

1 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان کون الشرک اقبح الذنوب وبیان اعظمها بعده، الحدیث ۲۵۷، ص۲۹۳۔

2 ......جامع الترمذی، ابواب التفسیر، باب ومن سورة الفرقان، الحدیث: ۳۱۸۳، ص۱۹۷۶، دون قوله "اِلَّا مَنْ تَابَ"۔



www.dawateislami.net

## रह़मते इलाही से मह़रूम लोग :

﴾8﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ बयान है : "3 शख़्स ऐसे हैं जिन के साथ बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न कलाम फ़रमाएगा, न उन्हें पाक करेगा और न ही उन की त़रफ़ नज़रे रह़मत फ़रमाएगा बल्कि उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब होगा : (1) बूढ़ा ज़ानी (2) झूटा बादशाह और (3) मु-तकब्बिर फ़क़ीर ।"(1)

﴾9﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन बूढ़े ज़ानी और बूढ़ी ज़ानिया की त़रफ़ नज़रे रह़मत न फ़रमाएगा ।"(2)

﴾10﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गु़यूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ 4 बन्दों को ना पसन्द फ़रमाता है : (1) बहुत ज़ियादा क़समें खाने वाला ताजिर (2) तकब्बुर करने वाला फ़क़ीर (3) बूढ़ा ज़ानी और (4) ज़ालिम हुक्मरान ।"(3)

## जन्नत से मह़रूम लोग :

﴾11﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "3 शख़्स जन्नत में दाख़िल न होंगे : (1) बूढ़ा ज़ानी (2) झूटा इमाम और (3) मग़रूर फ़क़ीर ।"(4)

﴾12﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ 3 बन्दों को ना पसन्द फ़रमाता है : (1) बूढ़ा ज़ानी (2) मु-तकब्बिर फ़क़ीर और (3) मालदार ज़ालिम ।"(5)

﴾13﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उशैमित़** (या'नी पुख़्ता उ़म्र वाले) ज़ानी और मु-तकब्बिर फ़क़ीर की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाता ।"(6)

---

1 ......صحيح مسلم، كتا ب الايمان ،باب بيان غلظ تحريم إِسْبَال الإِزار......الخ ،الحديث ٢٩٦،ص٢٩٦ـ

2 ......المعجم الاوسط، الحديث :٨٤٠١،ج٦، ص١٧٢ـ

3 ......سنن النسائى، كتاب الزكاة، باب الفقير المختال، الحديث : ٢٥٧٧، ص٢٢٥٤ـ

4 ......البحرالزخار المعروف بمسند البزار، مسند سلمان الفارسى، الحديث :٢٥٢٩،ج٦، ص٤٩٣ـ

5 ......جامع الترمذى، ابواب صفة الجنة، باب احاديث فى صفة الثلاثة الذين يحبهم الله، الحديث :٢٥٦٨،ص١٩١٠ـ

6 ......المعجم الكبير، الحديث: ١٣١٩٥،ج١٢، ص٢٣٧ـ



www.dawateislami.net

**नोट : उशैमित़, अश्मत़** की तस्ग़ीर है और **अश्मत** उसे कहते हैं जिस के सर के सियाह बाल सफ़ेद बालों के साथ ख़ल्त़ मल्त़ हो गए हों।

## ईमान कब बाक़ी नहीं रहता ?

﴾14﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''ज़ानी जब ज़िना करता है तो वोह मोमिन नहीं होता, चोर जब चोरी करता है तो वोह मोमिन नहीं होता और शराबी जब शराब पीता है तो वोह मोमिन नहीं होता।''(1)

﴾15﴿...... सु-नने नसाई की रिवायत में मज़ीद येह भी है : ''पस जब उस ने ऐसा किया तो अपनी गरदन से इस्लाम का पट्टा उतार दिया, फिर अगर वोह तौबा कर ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है।''(2)

﴾16﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''चोर जब चोरी करता है तो वोह मोमिन नहीं होता, ज़ानी जब ज़िना करता है तो वोह मोमिन नहीं होता, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां ईमान इस से मुकर्रम है (कि इन गुनाहों के वक़्त उसे उन के दिल में रहने दे)।''(3)

﴾17﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो मुसल्मान इस बात की गवाही देता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं उस का ख़ून ह़लाल नहीं सिवाए 3 वुजूह में से किसी एक वज्ह से : (1)...... शादी शुदा ज़ानी (2)...... (क़िसास में) जान के बदले जान और (3)...... जमाअ़त से अलग हो कर अपने दीन को तर्क करने वाला।''(4)

﴾18﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जो मुसल्मान इस बात की गवाही देता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं उस का ख़ून ह़लाल नहीं सिवाए 3 वुजूह में से किसी एक वज्ह से : (1)...... शादी शुदा ज़िना करे तो उसे रज्म किया जाएगा

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان ،باب بیان نقصان الایمان بالمعاصی......الخ ،الحدیث ۲۰۲،ص۶۹۰۔

2 ......سنن النسائی، کتاب قطع السارق، باب تعظیم السرقۃ، الحدیث:۴۸۷۶،ص۲۴۰۳۔

3 ......مجمع الزوائد ،کتاب الایمان ، باب فی قولہ لایزنی الزانی حین......الخ ، الحدیث :۳۷۳،ج۱، ص۲۸۹۔

4 ......صحیح مسلم ،کتاب القسامۃ ،باب ما یباح بہ دم المسلم ،الحدیث ۴۳۷۵،ص۹۷۴۔



www.dawateislami.net

(2)...... जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) से जंग करने के लिये निकला तो उसे क़त्ल किया जाएगा या फांसी दी जाएगी या जला वत़न कर दिया जाएगा और (3)...... जो शख़्स किसी जान को (नाहक़) क़त्ल करे तो उसे उस के बदले क़त्ल किया जाएगा।"(1)

﴾19﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "ऐ गुरौहे अ़रब ! बेशक मुझे तुम पर ज़िना और पोशीदा शह्वत का सब से ज़ियादा ख़ौफ़ है।"(2)

## ग़ैबी निदा :

﴾20﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : आधी रात के वक़्त आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और एक मुनादी पुकारता है : "है कोई दुआ़ करने वाला कि उस की दुआ़ क़बूल की जाए ? है कोई सुवाल करने वाला कि उसे अ़त़ा किया जाए ? है कोई मुसीबत ज़दा कि उस की मुसीबत दूर की जाए ? पस जो भी मुसल्मान कोई दुआ़ करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पूरी फ़रमाता है सिवाए ज़ानिया के जो कि अपनी शर्मगाह के ज़रीए़ कमाती है या टेक्स लेने वाले के।"(3)

﴾21﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (लुत़्फ़ो रह़मत के ए'तिबार से) अपनी मख़्लूक़ के क़रीब होता है और जो उस से इस्तिग़फ़ार करे उसे बख़्श देता है अलबत्ता ! अपनी शर्मगाह से बदकारी करने वाली या टेक्स लेने वाले को नहीं बख़्शता।"(4)

﴾22﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक ज़ानियों के चेहरों से आग भड़क रही होगी।"(5)

## तंगदस्ती का सबब :

﴾23﴿...... हुज़ूर सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान

---

1 ......سنن ابی داود، کتا ب الحدود، باب الحکم فیمن ارتد، الحدیث: ۴۳۵۳، ص۱۵۴۰۔

2 ......مجمع الزوائد، کتاب الحدود ، باب ذم الزنا، الحدیث: ۱۰۵۳۵، ج۶، ص۳۸۸، "بغایا" بدلہ "نعایا"۔

3 ......المعجم الاوسط ، الحدیث: ۲۷۶۹، ج۲، ص۱۳۳۔

4 ......المعجم الکبیر ، الحدیث: ۸۳۷۱، ج۹، ص۵۴۔

5 ......الترغیب والترھیب، کتاب الحدود ، باب الترھیب من الزناسیما......الخ ، الحدیث: ۳۶۵۰، ج۳، ص۲۱۴۔



www.dawateislami.net

है : ''ज़िना तंगदस्ती लाता है।''(1)

## भड़क्ते तन्नूर का अ़ज़ाब :

﴾24﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''मैं ने आज रात दो शख़्स देखे, वोह मेरे पास आए और मुझे एक मुक़द्दस सर ज़मीन की त़रफ़ ले गए।'' इस के बा'द (रावी ने) पूरी ह़दीसे पाक ज़िक्र की यहां तक कि सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''फिर हम तन्नूर की मिस्ल एक सूराख़ के पास पहुंचे जिस का ऊपर वाला ह़िस्सा तंग और नीचे वाला कुशादा था, उस के नीचे आग जल रही थी, जब आग के शो'ले बुलन्द होते तो उस में मौजूद लोग भी ऊपर आ जाते यहां तक कि वोह निकलने के क़रीब पहुंच जाते और जब आग बुझ जाती तो वोह उसी में वापस लौट जाते और उस में बरह्ना मर्द और औ़रतें थीं।''(2)

﴾25﴿...... एक रिवायत में है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''फिर हम तन्नूर की मिस्ल एक चीज़ के पास पहुंचे।'' रावी कहते हैं मेरा गुमान है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे थे : ''उस में से चीख़ो पुकार की आवाज़ें आ रही थीं।'' फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हम ने उस में झांका तो उस में नंगे मर्द और औ़रतों को पाया जब कि उन के नीचे से एक शो'ला उन की त़रफ़ आता और जब उन तक पहुंचता तो वोह चीख़ने लगते।'' इस ह़दीस के आख़िर में है : ''नंगे मर्द और औ़रतें जो कि तन्नूर की मिस्ल सूराख़ में थे, वोह सब ज़ानी मर्द और ज़ानी औ़रतें थीं।''(3)

## अ़ज़ाब की मुख़्तलिफ़ सूरतें :

﴾26﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : ''मैं मह़्वे आराम था कि इस दौरान मेरे पास दो शख़्स (या'नी फ़रिश्ते इन्सानी सूरत में) आए, उन्हों ने मुझे पहलूओं से

---

1 ......شعب الایمان للبیہقی، باب فی تحریم الفروج ،الحدیث ۵۴۱۸،ج۴،ص۳۶۳۔

2 ......صحیح البخاری ،کتاب الجنائز ،باب۹۳، الحدیث:۱۳۸۶،ص۱۰۸،''الی نقب''بدلہ''الی ثقب''۔

3 ......صحیح البخاری ،کتاب التعبیر ،باب تعبیر الرؤیا بعد صلاۃ الصبح ،الحدیث۷۰۴۷،ص۵۸۸۔



www.dawateislami.net

थामा और एक दुश्वार गुज़ार पहाड़ पर ले गए और अ़र्ज़ की : ''इस पर चढ़िये।'' मैं ने कहा : ''मैं इस की त़ाक़त नहीं रखता।'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''हम इसे आप के लिये आसान कर देंगे।'' पस मैं ऊपर चढ़ गया यहां तक कि जब मैं पहाड़ के दरमियान पहुंचा तो वहां शदीद आवाज़ें सुनीं तो दरयाफ़्त किया : ''येह आवाज़ें कैसी हैं ?'' उन्हों ने जवाब दिया : ''येह दोज़ख़ियों की चीख़ो पुकार है।'' फिर मुझे एक ऐसी क़ौम के पास ले जाया गया जो अपनी कोंचों के साथ लटके हुए थे और उन के जबड़े कटे हुए थे और जबड़ों से ख़ून बह रहा था, मैं ने दरयाफ़्त किया : ''येह कौन हैं ?'' तो बताया गया : ''येह वोह लोग हैं जो रोज़ा (इफ़्त़ार करने) का जाइज़ वक़्त शुरूअ़ होने से पहले इफ़्त़ार कर लेते थे।'' (फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने) फ़रमाया : ''यहूदो नसारा ना मुराद हो गए।'' (राविये ह़दीस) ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''मैं नहीं जानता कि येह अल्फ़ाज़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुने या अपनी राय से कहे।''

हु़ज़ूर रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मज़ीद फ़रमाते हैं : ''फिर मुझे एक ऐसी क़ौम के पास ले जाया गया जिन के पेट फूले हुए थे और उन से बदबू आ रही थी, उन की सूरतें इन्तिहाई ना पसन्दीदा थीं, मैं ने दरयाफ़्त किया : ''येह कौन हैं ?'' तो उन्हों ने बताया : ''येह ह़ालते कुफ़्र में क़त्ल होने वाले हैं।'' फिर मुझे एक ऐसी क़ौम के पास ले जाया गया जो फूले हुए थे और उन से तअ़फ़्फ़ुन के भबके उठ रहे थे, गोया उन की बदबू पाख़ाने की जगहों जैसी थी, मैं ने दरयाफ़्त किया : ''येह कौन हैं ?'' उन्हों ने बताया : ''येह ज़ानी मर्द और औ़रतें हैं।'' फिर मुझे ऐसी औ़रतों के पास ले जाया गया जिन की छातियों को सांप नोच रहे थे, मैं ने दरयाफ़्त किया : ''इन औ़रतों का माजरा क्या है ?'' उन्हों ने बताया : ''येह वोह औ़रतें हैं जो अपने बच्चों को दूध नहीं पिलाती थीं।'' फिर मुझे आगे ले जाया गया तो मैं ने ऐसे बच्चे देखे जो दो नहरों के दरमियान खेल रहे थे, मैं ने पूछा : ''येह कौन हैं ?'' जवाब दिया गया : ''येह ईमान वालों की औलाद है।'' फिर मुझे शरफ़ वाली जगह ले जाया गया जहां मैं ने 3 शख़्स देखे जो शराबे (त़हूर) नोश कर रहे थे, मैं ने पूछा : ''येह कौन लोग हैं ?'' तो उन्हों ने बताया : ''येह ह़ज़रते जा'फ़र, ह़ज़रते ज़ैद और ह़ज़रते इब्ने रवाह़ा हैं।'' फिर मुझे एक ऐसी शरफ़ वाली जगह ले जाया गया जहां मैं ने तीन आदमियों का गुरौह देखा तो पूछा : ''येह कौन हैं ?'' उन्हों ने बताया : ''येह ह़ज़रते इब्राहीम, ह़ज़रते मूसा और



www.dawateislami.net

हज़रते ईसा عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं जो आप का इन्तिज़ार कर रहे हैं।''(1)

## ईमान का निकल जाना और लौट आना :

﴾27﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जब कोई शख़्स ज़िना करता है तो उस का ईमान निकल जाता है और उस पर तारीकी की तरह छा जाता है, फिर जब वोह ज़िना से अ़ला-हदा हो जाता है तो उस का ईमान उस की तरफ़ लौट आता है।''(2)

﴾28﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जो ज़िना का इरतिकाब करे या शराब पिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का ईमान इस तरह निकाल लेता है जिस तरह इन्सान अपने सर से क़मीस को निकालता है।''(3)

﴾29﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''ईमान एक ऐसा लिबास है जिस के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहता है ढांप देता है और जब बन्दा ज़िना करता है तो उस से ईमान का लिबास उतार लिया जाता है, अगर वोह तौबा कर ले तो उस का ईमान लौटा दिया जाता है।''(4)

﴾30﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक शख़्स के पास तशरीफ़ लाए जिस ने शराब पी हुई थी तो इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ लोगो ! अब वक़्त है कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हुदूद से रुक जाओ, जो इन बुराइयों (या'नी शराब वग़ैरा) में से किसी में मुलव्वस हो जाए तो उसे चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पर्दे में छुपा रहे, जो हमारे सामने अपना पर्दा फ़ाश करेगा हम उस पर **किताबुल्लाह** का फ़ैसला (या'नी मुक़र्ररा हद) क़ाइम करेंगे।'' फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

---

1 ......صحیح ابن خزیمة، کتاب الصیام باب ذکر تعلیق المفطرین......الخ، الحدیث: ۱۹۸۶، ج۳، ص۲۳۷۔
الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب اخباره......الخ باب صفة النار واھلھا، الحدیث: ۷۴۴۸، ج۹، ص۲۸۶۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب السنة، باب الدلیل علی زیادة الایمان، الحدیث ۴۶۹۰، ص۱۵۶۷، بتغیرٍ قلیلٍ۔

3 ......المستدرک، کتاب الایمان، باب اذا زنی العبد خرج منه الایمان، الحدیث: ۶۵، ج۱، ص۱۷۶۔

4 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی تحریم الفروج، الحدیث: ۵۳۶۶، ج۴، ص۳۵۲۔



www.dawateislami.net

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ﴿۶۸﴾
(پ۱۹،الفرقان:۶۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जो **अल्लाह** के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पूजते और उस जान को जिस की **अल्लाह** ने हुरमत रखी नाहक़ नहीं मारते और बदकारी नहीं करते और जो येह काम करे वोह सज़ा पाएगा।

और फ़रमाया : ''ज़िना को शिर्क के साथ शुमार किया गया है।'' मज़ीद येह भी फ़रमाया : ''ज़ानी ज़िना करते वक़्त मोमिन नहीं होता।''(1)

## दो रोटियों के बदले जन्नत :

﴾31﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : बनी इसराईल का एक इबादत गुज़ार शख़्स बहुत इबादत किया करता था, उस ने अपने इबादत ख़ाने में 60 साल तक इबादत की, ज़मीन बारिश से सर सब्ज़ो शादाब हो गई, राहिब ने इबादत ख़ाने से झांका तो कहने लगा : ''अगर मैं नीचे बस्ती की तरफ़ जाऊं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करूं तो और ज़ियादा ब-र-कत होगी।'' पस वोह नीचे उतरा, उस के पास एक या दो रोटियां थीं, वोह ज़मीन में घूम फिर रहा था कि उसे एक औरत मिली, वोह दोनों एक दूसरे से बातें करते रहे यहां तक कि राहिब ने उस से ज़िना कर लिया लेकिन इस के बा'द उस पर (ख़ौफ़े इलाही की वज्ह से) ग़शी तारी हो गई, फिर वोह तालाब में उतरा ताकि ग़ुस्ल कर ले इतने में एक सुवाली आया तो उस ने उसे इशारा किया कि वोह दोनों रोटियां ले ले, इस के बा'द वोह मर गया तो उस की 60 सालह इबादत का उस ज़िना से मुवा-ज़ना किया गया तो ज़िना का गुनाह उस की नेकियों से ज़ियादा था, फिर एक या दो रोटियां उस की नेकियों के साथ रखी गईं तो उस की नेकियां ग़ालिब आ गईं, पस उस की बख़्शिश हो गई।(2)

﴾32﴿...... शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ग़ुलाम हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''तकब्बुर करने वाला मिस्कीन जन्नत में दाख़िल न होगा, न ही बूढ़ा ज़ानी और न ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर अपने अमल से एहसान जतलाने वाला।''(3)

---

(1) ......الترغيب والترهيب، كتاب الحدود، باب الترهيب من الزناسيما......الخ، الحديث: ۳۶۵۸، ج۳، ص۲۱۶ص۳۳۶۔

(2) ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب البروالاحسان، باب ماجاء فى الطاعات وثوابها، الحديث ۳۷۹، ج۱، ص ۲۹۸۔

(3) ......التاريخ الكبير للبخارى، باب النون، باب نافع، الرقم ۱۱۵۹۳/۲۲۵۵، ج۷، ص۳۸۶۔



www.dawateislami.net

## जन्नत की ख़ुश्बू से महरूम लोग :

﴾33﴿...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बयान करते हैं कि हम एक जगह इकट्ठे बैठे हुए थे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया, इस के बा'द (रावी ने) पूरी ह़दीसे पाक बयान की यहां तक कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''वालिदैन की ना फ़रमानी से बचो क्यूं कि जन्नत की ख़ुश्बू हज़ार (1000) साल की मसाफ़त से पाई जाएगी मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उसे वालिदैन का ना फ़रमान, क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ी करने वाला, बूढ़ा ज़ानी और तकब्बुर से अपना तहबन्द लटकाने वाला न पाएगा, बेशक किब्रियाई **रब्बुल आ़-लमीन** ही के लिये है।''(1)

## ज़ानियों की बदबू :

﴾34﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : ''7 आस्मान और 7 ज़मीनें बूढ़े ज़ानी पर ला'नत भेजती हैं और बेशक ज़ानियों की शर्मगाहों की बदबू जहन्नमियों को अज़िय्यत देगी।''(2)

﴾35﴿...... अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से मरवी है : क़ियामत के दिन लोगों पर एक बदबूदार हवा भेजी जाएगी जिस से हर नेक व बद अज़िय्यत में मुब्तला होगा यहां तक कि वोह उन सब तक मुकम्मल तौ़र पर पहुंच जाएगी तो एक मुनादी निदा देगा और उन्हें अपनी आवाज़ सुनाएगा और उन से कहेगा : ''क्या तुम इस हवा के मु-तअ़ल्लिक़ जानते हो जिस ने तुम्हें अज़िय्यत में मुब्तला कर रखा है ?'' वोह कहेंगे : ''हम नहीं जानते, मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह हमें मुकम्मल तौ़र पर पहुंच चुकी है।'' तो उन्हें कहा जाएगा : ''जान लो ! येह उन ज़ानियों की शर्मगाहों की बदबू है जिन्हों ने दुन्या में तौबा न की और ज़िना (के गुनाह) को लिये हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिले।'' फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें नज़र अन्दाज़ फ़रमा देगा और नज़र अन्दाज़ करते हुए जन्नत या दोज़ख़ का ज़िक्र न करेगा।(3)

---

1 ......المعجم الاوسط ، الحديث : ۵۲۶۴،ج۴، ص۱۸۷۔

2 ......البحرالزخار المعروف بمسند البزار، مسند بريدة بن الحصيب، الحديث : ۴۴۳۱،ج۱۰، ص۳۱۰۔

3 ......ذم الهوى، الباب الخامس والعشرون فى ذم الزنا، الحديث : ۵۷۱، ص۱۵۵۔

جامع الاحاديث، مسند على ، الحديث : ۲۳۳۶،ج۱۵، ص۲۰۱۔



www.dawateislami.net

﴾36﴿..... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ''जो शराब की आ़दत में मर गया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे नहरे ग़ौत़ा से पिलाएगा।'' अ़र्ज़ की गई : ''नहरे ग़ौत़ा क्या है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''जो ज़ानी औ़रतों की शर्मगाहों से जारी होगी, उन की शर्मगाहों की बदबू जहन्नमियों को सख़्त अज़िय्यत देगी।''(1)

﴾37﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ज़िना पर क़ाइम रहने वाला बुत परस्त की त़रह़ है।''(2)

﴾38﴿...... येह सह़ीह़ रिवायत भी इस की ताईद करती है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब शराब का आ़दी मरेगा तो एक बुत परस्त की त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलेगा और इस में कोई शक नहीं कि ज़िना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक शराब पीने से भी ज़ियादा सख़्त और बड़ा गुनाह है।''(3)

﴾39﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जब मुझे आस्मानों की सैर कराई गई तो मैं ऐसे मर्दों के पास से गुज़रा जिन की खालों को आग की क़ैंचियों से काटा जा रहा था, मैं ने दरयाफ़्त किया : ''ऐ जिब्रईल ! येह कौन हैं ?'' अ़र्ज़ की : ''येह वोह लोग हैं जो ज़ीनत के लिये बनाव सिंघार करते थे।'' इस के बा'द सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''फिर मैं एक बदबूदार हवा वाले कूंएं के पास से गुज़रा तो मैं ने उस में शदीद आवाज़ें सुनीं, पूछा : ''ऐ जिब्रईल ! येह कौन हैं ?'' उन्हों ने बताया : ''येह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की (उम्मत की) औ़रतें हैं जो ज़ीनत के लिये बनाव सिंघार किया करती थीं और ऐसे काम करती थीं जो उन के लिये जाइज़ न थे।''(4)

## नुज़ूले अ़ज़ाब के अस्बाब :

﴾40﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरी उम्मत उस वक़्त तक भलाई पर रहेगी जब तक उन में ज़िना आ़म न होगा और जब उन में ज़िना आ़म

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل ،حديث ابو موسى الاشعرى ،الحديث: ١٩٥٨٦، ج٧، ص١٣٩ ـ

2 ......الترغيب والترهيب، كتاب الحدود، باب الترهيب من الزناسيما......الخ ، الحديث: ٣٦٢٩، ج٣، ص٢٢٠ ـ

3 ......المرجع السابق ـ المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد الله بن العباس، الحديث: ٢٤٥٣، ج١، ص٥٨٣ ـ

4 ......شعب الايمان للبيهقى ،باب فى تحريم اعراض الناس، الحديث: ٦٧٥٠، ج٥، ص٣٠٩، "تقرض" بدله "تقطع" ـ



www.dawateislami.net

हो जाएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमा देगा।''(1)

﴾41﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरी उम्मत उस वक़्त तक अपने मुआ–मले को मज़्बूती से पकड़े हुए और भलाई पर रहेगी जब तक उन में ज़िना की औलाद आ़म न होगी।''(2)

﴾42﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''जब ज़िना आ़म हो जाएगा तो तंगदस्ती और गुरबत आ़म हो जाएगी।''(3)

﴾43﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''किसी क़ौम में ज़िना और सूद ज़ाहिर नहीं हुवा मगर येह कि उन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब नाज़िल हो गया।''(4)

## नसब का इन्कार करने पर वईद :

﴾44﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि जब आयते मुला–अ़ना (पारह : 18, अन्नूर : 6 ता 9) नाज़िल हुई तो उन्हों ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते सुना : ''जिस औ़रत ने अपने बच्चे को उस क़ौम में शामिल किया जिन में से वोह नहीं तो उस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीन में कुछ ह़िस्सा नहीं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी जन्नत में भी दाख़िल न फ़रमाएगा और जिस ने दीदा दानिस्ता अपने बच्चे के नसब का इन्कार किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उसे अपनी रह़मत से दूर फ़रमा देगा और उसे अगले पिछलों के सामने रुस्वा करेगा।''(5)

## 10 ज़िनाओं से बढ़ कर ज़िना :

﴾45﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से इर्शाद फ़रमाया : ''तुम ज़िना के मु–तअ़ल्लिक़ क्या कहते हो?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''येह ह़राम है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे

---

(1)......المسند للامام احمد حنبل، حديث ميمونة بنت الحارث، الحديث: ۲۶۸۹۴، ج۱۰، ص۲۴۶، بتغير۔

(2)......مسند ابی يعلى الموصلى، حديث ميمونة زوج النبی صلی اللہ علیہ وسلم، الحديث: ۷۰۵۵، ج۶، ص۱۴۸۔

(3)......شعب الايمان للبيهقى، باب فى طاعة أُولَى الأمر، فصل فى فضل الامام العادل، الحديث: ۷۳۶۹، ج۶، ص۱۶۔

(4)......مسند ابی يعلى الموصلى، مسند عبد الله بن مسعود، الحديث: ۴۹۶۰، ج۴، ص۳۱۴۔

(5)......سنن النسائى، كتاب الطلاق، باب التغليظ فى الانتفاء من الولد، الحديث: ۳۵۱۱، ص۲۳۱۷۔



www.dawateislami.net

ह़राम फ़रमाया है लिहाज़ा येह क़ियामत तक ह़राम है।'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से इर्शाद फ़रमाया : ''एक शख़्स 10 औ़रतों से ज़िना करे येह अपने पड़ोसी की बीवी से ज़िना करने से कम (गुनाह) है।''(1)

﴾46﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पड़ोसी की बीवी से ज़िना करने वाले की त़रफ़ न तो नज़रे रह़मत फ़रमाएगा और न ही उसे पाक करेगा बल्कि उसे हुक्म देगा : ''जहन्नम में दाख़िल होने वालों के साथ दाख़िल हो जा।''(2)

﴾47﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जो (ज़िना के लिये) ऐसी औ़रत के पास बैठा जिस का शोहर ग़ाइब हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उस पर एक अज़्दहा मुसल्लत़ फ़रमाएगा।''(3)

﴾48﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुकर्रम है : ''जो ऐसी औ़रत के बिस्तर पर बैठता है जिस का शोहर ग़ाइब हो, उस की मिसाल उस शख़्स की सी है जिसे क़ियामत के दिन ख़त़रनाक ज़हरीले सांपों में से एक सांप डसेगा।''(4)

﴾49﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''मुजाहिदीन की औ़रतों की हु़रमत (उस से) पीछे रह जाने वालों पर ऐसे ही है जैसे उन की माओं की हु़रमत, जिहाद करने वाला कोई शख़्स पीछे रह जाने वाले किसी शख़्स को अपने घर वालों (की ह़िफ़ाज़त) के लिये छोड़े फिर वोह उस में ख़ि़यानत करे तो क़ियामत के दिन उसे खड़ा किया जाएगा और मुजाहिद उस की नेकियों में से जो चाहेगा ले लेगा यहां तक कि वोह राज़ी हो जाएगा।'' फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारी त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और इर्शाद फ़रमाया : ''तो तुम्हारा क्या ख़याल है ?''(5)

﴾50﴿...... अबू दावूद शरीफ़ की रिवायत में येह भी है : ''मगर येह कि उसे क़ियामत के दिन खड़ा किया जाएगा और कहा जाएगा : येह है तेरे घर वालों में पीछे रह जाने वाला। लिहाज़ा उस की

(1) ......المسند للامام احمد بن حنبل،حديث المقداد بن الاسود، الحديث:٢٣٩١٥،ج٩،ص٢٢٦۔

(2) ......فردوس الاخبار للديلمى ، الحديث : ٣١٩٠،ج١، ص٤٢٦۔

(3) ......المعجم الكبير، الحديث: ٣٢٧٨ ، ج٣، ص٢٤١۔

(4) ......مجمع الزوائد ،كتاب الحدود، باب حرمة نساء المجاهدين ، الحديث:١٠٥٥٩،ج٦، ص٣٩٥۔

(5) ......صحيح مسلم،كتاب الامارة، باب حرمة نساء المجاهدين۔۔الخ، الحديث:٤٩٠٨،٤٩١٠،ص١٠١٧۔



www.dawateislami.net

नेकियों में से जो चाहे ले ले।''(1)

﴾51﴿...... नसाई शरीफ़ की रिवायत में मज़ीद येह अल्फ़ाज़ हैं : ''तुम्हारा क्या ख़याल है कि क्या वोह उस की नेकियों में से कुछ छोड़ेगा ?''(2)

**तम्बीह :** ज़िना को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है इस पर अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इज्माअ़ है बल्कि सह़ीह़ ह़दीसे पाक गुज़र चुकी है कि ''पड़ोसी की बीवी से ज़िना करना सब से बड़ा गुनाह है।'' एक क़ौल येह है कि ज़िना मुत़्लक़न क़त्ल से भी बड़ा गुनाह है और येह ऐसा गुनाह है जिसे शिर्क से मुत्तसिल ज़िक्र किया गया। जब कि असह़्ह़ क़ौल येह है कि शिर्क से मुत्तसिल क़त्ल है फिर ज़िना और ज़िना की सब से बुरी क़िस्म अपने पड़ोसी की बीवी से ज़िना करना है।

**हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मु–तवफ़्फ़ा 505 हि.) ''**एह़याउल उ़लूम**'' में फ़रमाते हैं : ''ज़िना लिवात़त से भी बड़ा गुनाह है, इस लिये कि इस में शह्वत दोनों त़रफ़ से दा'वत देती है। इस का वुक़ूअ़ अक्सर होता है और इस की कसरत से नुक़्सान ज़ियादा होता है।''(3)

**ए'तिराज़ :** येह बात गुज़र चुकी है कि लिवात़त की ह़द ज़िना से सख़्त है। इस की एक दलील येह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मु–तवफ़्फ़ा 179 हि.) और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मु–तवफ़्फ़ा 241 हि.) और दीगर अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने लूत़ी को रज्म करने का हुक्म दिया अगर्चे वोह ग़ैर शादी शुदा हो ब ख़िलाफ़ ज़ानी के और दूसरी दलील येह है कि उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के दूसरे गुरोह ने लूत़ी की ह़द में जितनी शिद्दत इख़्तियार की ज़िना की ह़द में इतनी शिद्दत इख़्तियार नहीं की ?

**जवाब :** इस का जवाब येह है कि बा'ज़ अवक़ात मफ़्ज़ूल (या'नी जिस पर किसी को फ़ज़ीलत दी गई हो) में ज़ियादती होती है और इस में बहुत कलाम है। इस ज़िम्न में ह़ज़रते सय्यिदुना ह़लीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى का कलाम भी है जिस की मिसालें बयान हो चुकी हैं मगर वोह उन की ज़ाती आराअ पर मब्नी है जब कि अस्ह़ाब (या'नी शाफ़ेई उ़–लमाए किराम) رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का मौक़िफ़ इस के बर ख़िलाफ़ है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की किताब **अल मिन्हाज** की इ़बारत येह

1 ......سنن ابی داود ،کتاب الجهاد ،باب فی حرمة النساء المجاهدین علی القاعدین ،الحدیث:۲۴۹۶،ص۱۴۰۸۔

2 ......سنن النسائی،کتاب الجهاد،باب من خان غازیا فی اهله ،الحدیث :۳۱۹۳،ص۲۲۹۴،بتغیرٍ۔

3 ......احیاء علوم الدین،کتاب التوبة ،بیان اقسام الذنوب......الخ ،ج۴،ص۲۵۔



www.dawateislami.net

है : "ज़िना कबीरा गुनाह है अगर्चे पड़ोसी की बीवी, रिश्तेदार या अजनबी औ़रत से हो, लेकिन माहे र-मज़ान या मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में ज़िना करना फ़ोह़्श है और ह़द के मूजिब ज़िना से कम कोई बुरा फ़े'ल किया जाए तो वोह सग़ीरा गुनाह है और अगर अपने बाप की बीवी या बेटे की बीवी या किसी अजनबी औ़रत से ज़बर दस्ती मजबूर कर के ज़िना किया जाए तो भी कबीरा गुनाह है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शिहाबुद्दीन अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) ने इस मौक़िफ़ की तरदीद करते हुए फ़रमाया : ज़िना मुत़्लक़न फ़ोह़्श तरीन गुनाह है। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया :

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰۤى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿۳۲﴾ (پ ۱۵، بنی اسرائیل: ۳۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और बदकारी के पास न जाओ बेशक वोह बे ह़याई है, और बहुत ही बुरी राह।

और सिर्फ़ अपने पड़ोसी की बीवी और इस के साथ मज़्कूर दीगर औ़रतों से ज़िना करने को फ़ोह़्श गुनाह क़रार देना दुरुस्त नहीं।

और बा'ज़ ने यहां कई उमूर ज़िक्र किये जो दर्जे ज़ैल हैं। जहन्नम के बारे में इस फ़रमाने बारी तआ़ला : "لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ ؕ (پ ۱۴، الحجر: ۴۴)" **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** इस के सात दरवाज़े हैं।" की तफ़्सीर करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "ग़म, तक्लीफ़, गरमी और बदबूदार हवा के ए'तिबार से इन दरवाज़ों में से सब से ज़ियादा सख़्त दरवाज़ा ज़ानियों के लिये होगा।" और ह़ज़रते सय्यिदुना मक्ह़ूल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जहन्नमी बदबूदार हवा पाएंगे तो कहेंगे : "ऐसी सख़्त बदबूदार हवा तो हम ने कभी नहीं पाई।" तो उन्हें कहा जाएगा : "येह ज़ानियों की शर्मगाहों की बदबू है।"

इमामुत्तफ़्सीर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ज़ैद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "ज़ानियों की शर्मगाहों की बदबू जहन्नमिय्यों को अज़िय्यत देगी।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये जो 10 आयात अ़त़ा फ़रमाईं उन में येह भी है : "और चोरी और ज़िना से बचते रहना वरना मैं तुम से अपनी रह़मत रोक दूंगा।" पस जब अपने मुक़र्रब नबी ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को येह इर्शाद फ़रमाया तो किसी दूसरे की क्या ह़ैसिय्यत हो सकती है ?"(1)

---

(1) ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی حفظ اللسان، الحدیث: ۵۸۵۸، ج۴، ص۲۲۲۔
کتاب الکبائر للذهبی، الکبیرة العاشرة: الزنی......الخ، ص ۵۷۔



www.dawateislami.net

## शैतान का ख़ास साथी :

﴾52﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इब्लीस ज़मीन में अपने लश्कर फैला देता है और कहता है : ''तुम में से जिस ने किसी मुसल्मान को गुमराह किया मैं उस के सर पर ताज पहनाऊंगा।'' पस उन में सब से ज़ियादा फ़ितना बाज़ उस का सब से ज़ियादा क़रीबी होता है। एक उस के पास आ कर कहता है : ''मैं फ़ुलां शख़्स पर मुसल्लत़ रहा यहां तक कि उस ने बीवी को त़लाक़ दे दी।'' तो शैत़ान कहता है : ''तूने कुछ नहीं किया, अ़न्क़रीब वोह किसी दूसरी से शादी कर लेगा।'' फिर दूसरा आ कर कहता है : ''मैं फ़ुलां के साथ लगा रहा यहां तक कि मैं ने उस के और उस के भाई के दरमियान फूट डाल दी।'' शैत़ान कहता है : ''तूने भी कुछ नहीं किया, अ़न्क़रीब वोह आपस में सुल्ह़ कर लेंगे।'' फिर तीसरा आ कर कहता है : ''मैं फ़ुलां के साथ चिमटा रहा यहां तक कि उस ने ज़िना कर लिया।'' तो इब्लीसे मल्ऊ़न कहता है : ''तूने बहुत अच्छा काम किया।'' पस वोह उसे अपने क़रीब कर के उस के सर पर ताज रख देता है।''(1)

हम शैत़ान और उस के लश्कर के शर से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करते हैं। (आमीन)

﴾53﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक शिर्क के बा'द इस से बड़ा गुनाह कोई नहीं कि इन्सान अपना नुत़्फ़ा ह़राम शर्मगाह में डाले।''(2)

## वादिये जुब्बुल ह़ुज़्न की मख़्लूक़ :

﴾54﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जहन्नम में एक वादी है जिस में सांप हैं, हर सांप ऊंट की गरदन जितना मोटा है, वोह बे नमाज़ी को डसेगा तो उस का ज़ह्र बे नमाज़ी के जिस्म में 70 साल तक जोश मारता रहेगा, फिर उस का गोश्त गल कर हड्डियों से अलग हो जाएगा और जहन्नम में एक ऐसी वादी भी है जिस का नाम **जुब्बुल ह़ुज़्न** (या'नी ग़म का कूंवां) है, इस में सांप और बिच्छू हैं, इन में से हर बिच्छू ख़च्चर जितना बड़ा है, उस के 70 डंक हैं, हर डंक में ज़ह्र की मश्क है, जब वोह ज़ानी को डंक मारेगा और

---

(1) ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب التاريخ، باب بدء الخلق، الحديث: ٦١٥٦، ج٨، ص٢٤۔
صحيح مسلم، كتاب صفات المنافقين، باب تحريش الشيطان......الخ، الحديث: ٧١٠٦، ص١١٢٨، دون قوله: حتى القيت ......الى العداوة۔

(2) ......موسوعة الامام ابن ابى الدنيا، كتاب الورع، باب الورع فى الفرج، الحديث: ١٣٧، ج١، ص٢١٩۔



www.dawateislami.net

अपना ज़ह्र उस के जिस्म में उंडेलेगा तो वोह हज़ार (1000) साल तक उस के दर्द की शिद्दत महसूस करता रहेगा, फिर उस का गोश्त झड़ जाएगा और उस की शर्मगाह से पीप और कच-लहू (या'नी ख़ून मिली पीप) बहने लगेगी।''[1]

## दय्यूस पर जन्नत ह़राम है :

﴾55﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जिस ने किसी शादी शुदा औ़रत से ज़िना किया तो ज़ानी और ज़ानिया को क़ब्र में इस उम्मत का निस्फ़ अ़ज़ाब होगा, फिर जब क़ियामत का दिन होगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस औ़रत के शोहर को ज़ानी की नेकियां लेने का हुक्म देगा, येह तब होगा जब कि उसे इस (ज़िना) का इ़ल्म न था और अगर वोह जानने के बा वुजूद ख़ामोश रहा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर जन्नत ह़राम कर देगा क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत के दरवाज़े पर लिख दिया है कि तू दय्यूस पर ह़राम है।'' दय्यूस वोह है जो अपनी बीवी की बे ह़याई से आगाह होने के बा वुजूद ख़ामोश रहता है और ग़ैरत नहीं खाता।[2]

## आ'ज़ा की गवाही :

﴾56﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : जिस ने किसी औ़रत को शह्वत से हाथ लगाया जो उस पर ह़लाल नहीं तो वोह क़ियामत के दिन इस ह़ाल में आएगा कि उस का हाथ गरदन से बंधा होगा और अगर उसे बोसा दिया तो उस के दोनों होंट जहन्नम में काट दिये जाएंगे और अगर उस से ज़िना किया तो उस की रान बोलेगी और क़ियामत के दिन उस के ख़िलाफ़ गवाही देगी और कहेगी : ''मैं ह़राम चीज़ पर सुवार हुई।'' पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की त़रफ़ नाराज़ी की नज़र से देखेगा तो उस के चेहरे का गोश्त झड़ जाएगा और वोह झगड़ा करते हुए कहेगा : ''मैं ने ऐसा नहीं किया।'' तो उस की ज़बान उस के ख़िलाफ़ गवाही देगी और कहेगी : ''मैं ने ह़राम कलाम किया।'' और उस के हाथ कहेंगे : ''मैं ने ह़राम पकड़ा।'' और उस की आंख कहेगी : ''मैं ने ह़राम शै को देखा।'' और उस का पाउं कहेगा : ''मैं ह़राम कामों की त़रफ़ चला।'' और उस की शर्मगाह कहेगी : ''मैं ने ऐसा किया।'' और मुह़ाफ़िज़ फ़िरिश्ता कहेगा : ''मैं ने सुना।'' और दूसरा फ़िरिश्ता कहेगा : ''मैं ने लिखा।'' और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा :

1 ......كتاب الكبائر للذهبی، الكبيرة العاشرة: الزنی......الخ ، ص٥٩۔
2 ......المرجع السابق۔



www.dawateislami.net

''मैं भी इस को जानता था लेकिन मैं ने इसे छुपाया।'' फिर फ़रमाएगा : ''ऐ फ़रिश्तो ! इसे पकड़ो और मेरे अ़ज़ाब का मज़ा चखाओ, मेरा सब से ज़ियादा ग़ज़ब उस पर होता है जो मुझ से बहुत कम ह़या करता है।''(1)

और आ'ज़ा के गवाही देने के बारे में फ़रमाने ख़ुदा वन्दी है :

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾ (پ۱۸، النور:۲۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** जिस दिन उन पर गवाही देंगी उन की ज़बानें और उन के हाथ और उन के पाउं जो कुछ करते थे।

मह़रम औ़रतों (जिन से निकाह़ ह़राम है) से ज़िना करना सब से बड़ा ज़िना है और सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जिस ने मह़रम औ़रत से ज़िना किया उसे क़त्ल कर दो।''(2)

## ज़िना के नताइज :

मज़्कूरा कलाम से मा'लूम हुवा कि ज़िना के नताइज इन्तिहाई बुरे हैं। उन में से चन्द येह हैं : (1) येह जहन्नम और शदीद अ़ज़ाब में मुब्तला करता है (2) फ़क़्रो तंगदस्ती लाता है और (3) ज़ानी की औलाद से भी ऐसा ही सुलूक किया जाता है। चुनान्चे,

## जैसी करनी वैसी भरनी :

एक बादशाह के मु-तअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है कि उस ने अपनी बेटी के साथ इस बात का तजरिबा किया जो कि इन्तिहाई ह़सीनो जमील थी, उस ने एक मिस्कीन औ़रत के साथ उसे बाहर भेजा और हुक्म दिया कि इस के साथ कोई जो चाहे करे वोह किसी को न रोके, इस के बा'द उसे कहा कि वोह उस की बेटी के चेहरे से ह़िजाब हटा कर उसे ले कर बाज़ारों में घूमे फिरे, चुनान्चे उस ने ऐसा ही किया लेकिन वोह जिस शख़्स के पास से भी गुज़रती वोह शर्मो ह़या से अपना सर नीचे झुका लेता, जब उस ने तमाम शह्र घूम लिया और किसी ने उस की त़रफ़ आंख उठा कर भी न देखा यहां तक कि वोह उसे ले कर बादशाह के घर के पास पहुंच गई जूं ही वोह घर में दाख़िल होने लगी तो एक शख़्स ने उस शहज़ादी को रोक लिया और उस को बोसा दिया, इस के बा'द उसे छोड़ कर चला गया, उस औ़रत ने शहज़ादी को बादशाह के पास पहुंचाया, बादशाह ने सारा माजरा दरयाफ़्त किया तो उस ने बता दिया, पस बादशाह ने

1 ......كتاب الكبائر للذهبي، الكبيرة العاشرة: الزنى......الخ، ص ۵۹۔

2 ......سنن ابن ماجه، ابواب الحدود، باب من اتى ذات مَحْرَم ومن اتى بهيمة، الحديث: ۲۵۶۴، ص ۲۶۳۱۔



www.dawateislami.net

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सज्दए शुक्र किया और यूं अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि मैं ने अपनी सारी ज़िन्दगी में सिर्फ़ एक औ़रत को बोसा दिया और मुझ से उस का बदला ले लिया गया।"

## ज़िना के द-रजात :

मज़्कूरा बह़्स से मा'लूम हुवा कि ज़िना के कई द-रजात हैं : (1)...... बिग़ैर शोहर वाली अजनबी औ़रत से ज़िना करना बड़ा गुनाह है (2)...... इस से भी बड़ा गुनाह शोहर वाली अजनबी औ़रत से ज़िना करना है (3)...... इस से भी बढ़ कर गुनाह मह़रम औ़रत से ज़िना करना है (4)...... सय्यिबा (या'नी शादी शुदा) औ़रत से ज़िना करना बाकिरा (या'नी कुंवारी) से ज़िना करने से ज़ियादा बड़ा गुनाह है इस की दलील येह है कि इन दोनों की ह़द मुख़्तलिफ़ है (5)...... बूढ़े का ज़िना करना उस की अ़क़्ल के कामिल होने की वज्ह से जवान के ज़िना करने से ज़ियादा बुरा है (6)...... आज़ाद और आ़लिम का ज़िना करना इन के कामिल होने की वज्ह से गु़लाम और जाहिल के ज़िना करने से ज़ियादा क़बीह़ है।

# ख़ातिमा : शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त

## सायए अ़र्श पाने वाला ख़ुश नसीब :

﴾1﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ 7 बन्दों को उस दिन अपने (अ़र्श के) साए में रखेगा जिस दिन उस के साए के सिवा कोई साया न होगा (इन में से) एक वोह शख़्स है जिसे कोई मन्सब व जमाल वाली औ़रत बुराई की दा'वत दे तो वोह कहे : बेशक मैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता हूं।"(1)

## किफ़्ल की बख़्शिश :

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को एक या दो मर्तबा येह ह़दीसे पाक बयान फ़रमाते नहीं सुना यहां तक कि 7 तक का अ़दद शुमार कर के फ़रमाया बल्कि मैं ने 7 से ज़ाइद मर्तबा सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : बनी इसराईल में **किफ़्ल** नामी एक शख़्स था जो

(1)......صحیح البخاری ، کتاب الزکاۃ ، باب الصدقۃ بالیمین ، الحدیث : ۱۴۲۳ ، ص ۱۱۲ ۔



www.dawateislami.net

अपने किसी अ़मल में भी गुनाह से न बचता था, एक दफ़्अ़ा उस के पास एक औ़रत आई, उस ने उसे 60 दीनार इस शर्त़ पर दिये कि वोह उस के साथ ज़िना करेगा। जब वोह उस औ़रत के पास (ज़िना के लिये) इस त़रह़ बैठ गया जिस त़रह़ शोहर अपनी बीवी के पास बैठता है तो वोह औ़रत कांपने और रोने लगी, उस ने पूछा : ''तुझे किस चीज़ ने रुलाया ? क्या मैं ने तुझे मजबूर किया ?'' तो औ़रत ने कहा : ''नहीं, मगर (मेरे रोने की वज्ह येह है कि) मैं ने पहले कभी ऐसा बुरा काम नहीं किया और मुझे शदीद ह़ाजत ने ऐसा करने पर मजबूर किया है।'' तो उस ने कहा : ''तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से ऐसा कर रही है तो मैं उस से डरने का ज़ियादा ह़क़दार हूं, तू चली जा और मैं ने तुझे जो कुछ दिया है वोह भी तेरे लिये है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आयिन्दा मैं कभी भी उस की ना फ़रमानी नहीं करूंगा।'' फिर उसी रात उस का इन्तिक़ाल हो गया, सुब्ह़ उस के दरवाज़े पर लिखा हुवा था : ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **किफ़्ल** की बख़्शिश फ़रमा दी।'' लोगों को इस पर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा।(1)

## तर्के ज़िना पर दुन्या में इन्आ़म :

इमाम बुख़ारी व मुस्लिम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا ने इन 3 अशख़ास के मु-तअ़ल्लिक़ रिवायत ज़िक्र की जिन पर ग़ार का मुंह बन्द हो गया था तो वोह एक दूसरे से कहने लगे : ''तुम्हें इस चट्टान से उसी सूरत में नजात मिल सकती है कि अपने अच्छे आ'माल के वसीले से दुआ़ करो।'' तो उन में से एक ने कहा : **''या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** मेरी एक चचाज़ाद बहन थी जो मुझे लोगों में सब से ज़ियादा अ़ज़ीज़ थी, मैं ने उसे उस के नफ़्स के बारे में बहुत वर-ग़लाया मगर उस ने इन्कार कर दिया यहां तक कि एक साल शिद्दते क़ह़त़ के सबब उसे ह़ाजत पेश आई तो मेरे पास आई, मैं ने उसे 120 दीनार इस शर्त़ पर दिये कि वोह मुझे अपने साथ तन्हाई मुहय्या करे, वोह मेरी बात मान गई यहां तक कि जब मैं ने उस पर क़ुदरत पाई तो वोह कहने लगी : ''तेरे लिये जाइज़ नहीं कि तू नाह़क़ इस मोह्‌र को तोड़े (या'नी निकाह़ के बिग़ैर ऐसा काम करे)।'' तो मैं ज़िनाकारी से बाज़ रहा और उसे छोड़ दिया ह़ालां कि वोह मुझे लोगों में सब से ज़ियादा मह़बूब थी और सोने के जो दीनार मैं ने उसे दिये थे वोह भी उसी के पास रहने दिये, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** अगर मैं ने येह अ़मल फ़क़त़ तेरी रिज़ा के लिये किया था तो हम जिस मुसीबत

---

(1) ......جامع الترمذی،ابواب صفة القيامة ،باب فيه اربعة احاديث، الحديث:٢٤٩٦،ص١٩٠٣۔
جامع الاصول للجزری، قصة الكفل، الحديث :٧٨٢٣، ج١٠،ص٣١١۔



www.dawateislami.net

में मुब्तला हैं वोह हम से दूर फ़रमा दे।" पस चट्टान हट गई।[1]

## जन्नत की नवीदे मसर्रत :

﴾3﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "ऐ कुरैश के जवानो ! अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करो और ज़िना न करो, सुन लो ! जिस ने अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त की उस के लिये जन्नत है।"[2]

﴾4﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "ऐ कुरैश के जवानो ! ज़िना मत करो बेशक जिस की जवानी (गुनाह से) महफ़ूज़ रही वोह जन्नत में दाख़िल हो गया।"[3]

﴾5﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस औरत ने पांचों फ़र्ज़ नमाज़ें पढ़ीं और अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त की और अपने शोहर की इताअत की तो वोह जन्नत के दरवाज़ों में से जिस से चाहे दाख़िल हो जाए।"[4]

﴾6﴿...... सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो मुझे अपने दोनों जबड़ों और अपनी टांगों की दरमियान वाली चीज़ (या'नी ज़बान और शर्मगाह) की ज़मानत दे मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं।"[5]

﴾7﴿...... रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस के दोनों जबड़ों और दोनों टांगों के दरमियान वाली चीज़ के शर से बचाया वोह जन्नत में दाख़िल हो गया।"[6]

﴾8﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने मेरी ख़ातिर दोनों जबड़ों और दोनों रानों के दरमियान वाली चीज़ की हिफ़ाज़त की वोह जन्नत में दाख़िल होगा।"[7]

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الاجارة، باب من استأجر أجیراً فترک اجره......الخ ،الحدیث: ۲۲۷۲،ص۱۷۶۔

2 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی تحریم الفروج ،الحدیث ۵۴۲۵،ج۴،ص۳۶۵۔

3 ......المرجع السابق، الحدیث:۵۴۲۶۔

4 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان ،کتاب النکاح ،باب معاشرة الزوجین، الحدیث :۴۱۵۱،ج۶،ص۱۸۴۔

5 ......صحیح البخاری ،کتاب الرقاق ،باب حفظ اللسان ،الحدیث :۶۴۷۴،ص۵۴۳،"ضمنت"بدله"اضمن"۔

6 ......جامع الترمذی ،ابواب الزهد ،باب ماجاء فی حفظ اللسان،الحدیث:۲۴۰۹،ص۱۸۹۳۔

7 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۹۱۹،ج۱،ص۳۱۱۔



www.dawateislami.net

﴾9﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जिस ने दोनों जबड़ों के दरमियान वाली चीज़ और शर्मगाह की हिफ़ाज़त की वोह जन्नत में दाख़िल होगा।''[1]

﴾10﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''तुम मुझे अपनी 6 चीज़ों की ज़मानत दो मैं तुम्हें जन्नत की ज़मानत देता हूं : (1)...... जब गुफ़्त-गू करो तो सच बोलो (2)...... जब वा'दा करो तो पूरा करो (3)...... जब तुम्हारे पास अमानत रखी जाए तो उसे अदा करो (4)...... अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करो (5)...... अपनी निगाहों को झुकाए रखो और (6)...... अपने हाथों को (ज़ियादती से) रोके रखो।''[2]

## तर्के गुनाह के नसीहत आमोज़ वाक़िआत :

﴾1﴿...... अ़रब के एक शख़्स को एक औ़रत से इश्क़ हो गया, उस ने उस पर बहुत ज़ियादा माल ख़र्च किया यहां तक कि उस औ़रत ने उसे अपने नफ़्स पर क़ुदरत दे दी, जब वोह उस के साथ फ़े'ले बद के इरादे से बैठा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे गुनाह से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई और वोह फ़िक्र मन्द हो गया फिर उस औ़रत को छोड़ कर जाने लगा तो उस ने पूछा : ''तुझे क्या हुवा ?'' उस ने जवाब दिया : ''जो थोड़ी सी लज़्ज़त के बदले ऐसी जन्नत बेचे जिस की चौड़ाई ज़मीन व आस्मान जितनी है यक़ीनन वोह उस रक़्बे की अहम्मिय्यत से बहुत कम वाक़िफ़ है।'' फिर उसे छोड़ दिया और चला गया।

## जलते चराग़ पर उंगली रख दी :

﴾2﴿...... एक नेक शख़्स के मु-तअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है कि उसे उस के नफ़्स ने बुराई पर उभारा, उस के क़रीब एक चराग़ रखा हुवा था, वोह अपने नफ़्स से कहने लगा : ''ऐ नफ़्स ! मैं अपनी उंगली इस चराग़ पर रखता हूं, अगर तूने इस की ह़रारत को बरदाश्त कर लिया तो मैं तुझे उस चीज़ की क़ुदरत दे दूंगा जिस का तू इरादा रखता है।'' फिर जूं ही उस ने चराग़ पर अपनी उंगली रखी तो उस के नफ़्स ने मह़सूस किया कि क़रीब है कि आग की शिद्दत की वज्ह से रूह़ निकल जाए जब कि ह़ालत येह थी कि वोह इस को बरदाश्त कर रहे थे और अपने नफ़्स से फ़रमा रहे थे : ''क्या तू इसे बरदाश्त नहीं कर सकता ? जब तू इस मा'मूली आग को बरदाश्त नहीं कर सकता जिसे पानी में 70 मर्तबा बुझाया गया यहां तक कि अहले दुन्या इस को बरदाश्त करने

---

1 ......المسند للامام احمد حنبل ،حدیث ابی موسی الاشعری ، الحدیث:۱۹۵۷۶ ،ج۷،ص۱۳۷۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل ، حدیث عبادة بن الصامت ، الحدیث:۲۲۸۲۱ ،ج۸، ص۴۱۲۔



www.dawateislami.net

पर क़ादिर हुए तो तू जहन्नम की उस आग को कैसे बरदाश्त करेगा जिस की तपिश इस से 70 गुना ज़ियादा है।'' पस उस का नफ़्स उस ख़याल से फिर गया और इस के बा'द उसे कभी ऐसा ख़याल भी न गुज़रा।

❁❁❁❁❁❁❁

## कबीरा नम्बर 359 : लिवात़त
## कबीरा नम्बर 360 : चौपाए से बदकारी करना
## कबीरा नम्बर 361 : औ़रत की दुबुर में वत़ी करना

## लिवात़त की मज़म्मत में अह़ादीसे मुबा-रका :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मुझे अपनी उम्मत पर सब से ज़ियादा क़ौमे लूत़ के अ़मल का ख़ौफ़ है।''(1)

﴾2﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो क़ौम भी अ़ह्द तोड़ देती है उस में क़त्लो ग़ारत गरी (आ़म) हो जाती है और जिस क़ौम में फ़ह़्ह़ाशी आ जाती है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर मौत मुसल्लत़ फ़रमा देता है और जो क़ौम ज़कात रोक लेती है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से बारिश रोक लेता है।''(2)

﴾3﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारी त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ गुरौहे मुहाजिरीन ! 5 बातें ऐसी हैं जिन से तुम आज़्माए जाओगे और मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से पनाह त़लब करता हूं कि तुम उन्हें पाओ, (उन में से पहली येह है कि) जब किसी क़ौम में फ़ह़्ह़ाशी ज़ाहिर हुई और उन्हों ने ए'लानिया इस का इरतिकाब किया तो उन में त़ाऊ़न और ऐसी बीमारी फैल गई जो इन से पहले लोगों में न थी।''(3)

﴾4﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान

---

1 ......جامع الترمذی ،ابواب الحدود ،باب ما جاء فی حد اللوطی ، الحدیث:۱۴۵۷،ص۱۸۰۰۔

2 ......المستدرک،کتاب الجهاد، باب ما نقض قوم العهد......الخ، الحدیث :۲۶۲۳،ج۲،ص۴۶۱۔

3 ......سنن ابن ماجه،ابواب الفتن ،باب العقوبات، الحدیث :۴۰۱۹،ص۲۷۱۸، دون قوله"خصال"۔



www.dawateislami.net

है : "जब ज़िम्मियों पर ज़ुल्म किया जाएगा तो सल्तनत दुश्मनों के पास चली जाएगी और जब ज़िना बहुत ज़ियादा हो जाएगा तो क़ैदियों की कसरत हो जाएगी और जब लिवात़त की कसरत हो जाएगी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मख़्लूक़ से अपना दस्ते रह़मत उठा लेगा, फिर वोह जिस वादी में भी हलाक हो जाएं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कोई परवाह न करेगा।"(1)

﴾5﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने 7 बन्दों पर 7 आस्मानों के ऊपर से ला'नत फ़रमाता है, उन में से एक पर 3 बार ला'नत लौटती है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन में से हर एक पर ऐसी ला'नत करता है जो उसे काफ़ी होती है।" आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : "(1) जिस ने क़ौमे लूत़ का सा अ़मल किया वोह मल्ऊ़न है, जिस ने क़ौमे लूत़ जैसा अ़मल किया वोह मल्ऊ़न है, जिस ने क़ौमे लूत़ जैसा अ़मल किया वोह मल्ऊ़न है (2) जिस ने **ग़ैरुल्लाह** (या'नी बुतों वग़ैरा) के नाम पर ज़ब्ह़ किया वोह भी मल्ऊ़न है (इस के मु-तअ़ल्लिक़ ह़ाशिया कबीरा नम्बर 351, सफ़ह़ा 60 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये) (3) जिस ने किसी चौपाए से बद फ़े'ली की वोह भी मल्ऊ़न है (4) जिस ने अपने वालिदैन की ना फ़रमानी की वोह भी मल्ऊ़न है (5) जिस ने किसी औ़रत और उस की बेटी को (निकाह़ में) जम्अ़ किया वोह भी मल्ऊ़न है (6) जिस ने ज़मीन की ह़ुदूद को बदला वोह भी मल्ऊ़न है और (7) जिस ने ख़ुद को अपने मालिकों के इ़लावा की त़रफ़ मन्सूब किया वोह भी मल्ऊ़न है।"(2)

﴾6﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस शख़्स पर ला'नत फ़रमाई जिस ने ज़मीन की ह़ुदूद को बदला, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस शख़्स पर भी ला'नत फ़रमाई जिस ने अन्धे को रास्ते से भटकाया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस शख़्स पर भी ला'नत फ़रमाई जिस ने अपने मां बाप को गाली दी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस शख़्स पर भी ला'नत फ़रमाई जिस ने अपने आप को अपने मालिक के इ़लावा की त़रफ़ मन्सूब किया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस शख़्स पर भी ला'नत फ़रमाई जिस ने क़ौमे लूत़ जैसा अ़मल किया।" रावी फ़रमाते हैं, आख़िरी बात आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन मर्तबा दोहराई।(3)

﴾7﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है :

---

1 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۷۵۲، ج۲، ص۱۸۴ ۔ 2 ......المعجم الاوسط، الحدیث: ۸۴۹۷، ج۶، ص۱۹۹ ۔

3 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الحدود، باب الزنا وحدّہ، الحدیث: ۴۴۰۰، ج۶، ص۲۹۹ ۔



www.dawateislami.net

''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस शख़्स पर ला'नत फ़रमाई जिस ने क़ौमे लूत़ जैसा अ़मल किया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस शख़्स पर ला'नत फ़रमाई जिस ने क़ौमे लूत़ का सा अ़मल किया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस शख़्स पर ला'नत फ़रमाई जिस ने क़ौमे लूत़ जैसा अ़मल किया।''(1)

﴾8﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''चार क़िस्म के लोग ऐसे हैं जो सुब्ह़ भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी में करते हैं और शाम भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी में करते हैं।'' रावी फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन लोग हैं ?'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''औ़रतों की मुशा-बहत इख़्तियार करने वाले मर्द और मर्दों की मुशा-बहत इख़्तियार करने वाली औ़रतें और चौपायों और मर्दों से वत़ी करने वाला।''(2)

﴾9﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जिस को तुम क़ौमे लूत़ का अ़मल करते पाओ तो फ़ाइल और मफ़ऊ़ल (या'नी लिवात़त करने और करवाने वाले) दोनों को क़त्ल कर दो।''(3)

﴾10﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जो चौपाए से सोह़बत करे उसे क़त्ल कर दो और चौपाए को भी उस के साथ क़त्ल कर दो(4)।''(5)

﴾11﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''तीन आदमियों की तौह़ीद की गवाही क़बूल नहीं की जाती : (1)...... लिवात़त करने

---

(1)......السنن الكبرى للنسائى، ابواب التعزيرات والشهود،باب من عمل عمل قوم لوط،الحديث:۷۳۳۷،ج۴،ص۳۲۲۔

(2)......المعجم الاوسط،الحديث : ۶۸۵۸،ج۵، ص۱۴۳۔

شعب الايمان للبيهقى،باب فى تحريم الفروج، الحديث : ۵۳۸۵،ج۴، ص۳۵۶۔

(3)......سنن ابى داود، كتاب الحدود ،باب فيمن عمل عمل قوم لوط ،الحديث : ۴۴۶۲،ص۱۵۴۹۔

(4)...... मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان (मु-तवफ़्फ़ा 1391 हि.) मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 5, सफ़ह़ा 296 पर इस ह़दीसे पाक की तशरीह़ करते हुए फ़रमाते हैं : ''(जानवर को) क़त्ल फ़रमाने में इशारा इस त़रफ़ है कि उसे ज़ब्ह़ न किया जाए कि जानवर का ज़ब्ह़ सिर्फ़ खाने के लिये होता है इसे खाना नहीं, सिर्फ़ मार कर जलाना या दफ़्न कर देना है। येह जानवर का क़त्ल या इस लिये है ताकि इस से मख़्लूत़ बच्चा न पैदा हो जाए जो आदमी और जानवर की मख़्लूत़ शक्ल रखता हो ताकि उस की बक़ा से इस फ़े'ल का चरचा न हो और उस (शख़्स) की बदनामी न हो।''

(5)......سنن ابى داود، كتاب الحدود،باب فيمن اتى بهيمة،الحديث:۴۴۶۴۔



www.dawateislami.net

और करवाने वाला (2)...... आपस में बदकारी करने वाली दो अ़ौरतें और (3)...... ज़ालिम इमाम।''(1)

﴾12﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाता जो मर्द के साथ बद फ़े'ली करे या अ़ौरत के पिछले मक़ाम में वत़ी करे।''(2)

﴾13﴿...... एक रिवायत में है : ''येह छोटी लिवात़त है या'नी मर्द अपनी बीवी के पिछले मक़ाम में वत़ी करे।''(3)

﴾14﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ह़या करो ! बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़क़ बात से ह़या नहीं फ़रमाता और अ़ौरतों के पिछले मक़ाम में वत़ी न करो।''(4)

﴾15﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने 3 बार इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़क़ बात (बयान करने) से ह़या नहीं फ़रमाता, अ़ौरतों के पिछले मक़ाम में वत़ी न करो।''(5)

﴾16﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़ौरतों के पिछले मक़ाम में वत़ी करने से मन्अ़ फ़रमाया है।(6)

﴾17﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या करो, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़क़ बात (बयान करने) से ह़या नहीं फ़रमाता, तुम्हारे लिये अ़ौरतों के साथ उन की दुबुर में वत़ी करना जाइज़ नहीं।''(7)

---

1 ......المعجم الاوسط، الحديث: ۳۱۰۴، ج۲، ص۲۳۰۔

2 ......جامع الترمذی، ابواب الرضاع، باب ماجاء فی کراهية اتيان النساء فی ادبارهن، الحديث: ۱۱۶۵، ص۱۷۶۶۔

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد الله بن عمرو بن العاص، الحديث: ۶۷۱۸، ج۲، ص۶۰۲۔

4 ......السنن الکبری للنسائی، کتاب عشرة النساء، باب ذکر حديث عمر بن الخطاب فيه، الحديث: ۹۰۰۹، ج۵، ص۳۲۲۔

5 ......سنن ابن ماجه، ابواب النکاح، باب النهی عن اِتيان النساء فی اَدبارهن، الحديث: ۱۹۲۴، ص۲۵۹۲۔

6 ......المعجم الاوسط، الحديث: ۷۷۲۲، ج۵، ص۳۹۳۔

7 ......جامع الترمذی، ابواب صفة القيامة، باب فی بيان مايقتضيه الاستحياء۔۔الخ، الحديث: ۲۴۵۸، ص۱۸۹۹۔
سنن الدارقطنی، کتاب النکاح، باب المهر، الحديث: ۳۷۰۸، ج۳، ص۳۴۱۔



www.dawateislami.net

﴿18﴾...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन लोगों पर ला'नत फ़रमाई जो औ़रतों के पिछले मक़ाम में वत़ी करते हैं।''(1)

**मह़ाश, मिह़श्शतुन** की जम्अ़ है और इस से मुराद औ़रत का पिछला मक़ाम है।

﴿19﴾...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जिस ने औ़रतों के पिछले मक़ाम में (ह़लाल जानते हुए) वत़ी की उस ने कुफ़्र किया।''(2)

﴿20﴾...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स की त़रफ़ नज़्रे रह़मत नहीं फ़रमाता जो औ़रत के पिछले मक़ाम में वत़ी करे।''(3)

﴿21﴾...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''मल्ऊ़न (या'नी रह़मते इलाही से दूर) है वोह शख़्स जो औ़रत के पिछले मक़ाम में वत़ी करे।''(4)

﴿22﴾...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जिस ने ह़ाएज़ा औ़रत से जिमाअ़ किया या औ़रत के पिछले मक़ाम में वत़ी की या काहिन के पास आया और उसे सच्चा जाना तो उस ने **मुह़म्मद** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर नाज़िल कर्दा दीन का इन्कार किया।''(5)

﴿23﴾...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने ह़ाएज़ा औ़रत से सोह़बत की या औ़रत के पिछले मक़ाम में जिमाअ़ किया या काहिन के पास आया फिर उस की तस्दीक़ की तो वोह उस से बरी है जो **मुह़म्मद** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर नाज़िल किया गया।''(6)

﴿24﴾...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : '' औ़रतों

---

(1)......المعجم الاوسط،الحدیث : ۱۹۳۱،ج۱، ص۵۲۴۔

(2)......المعجم الاوسط، الحدیث : ۹۱۷۹،ج۶، ص۳۹۳۔

(3)......سنن ابن ماجه، کتاب النکاح،باب النھی عن اِتیان النساء فی اَدبارھن ،الحدیث : ۱۹۲۳،ص۲۵۹۲۔

(4)......المسند للامام احمد بن حنبل،مسند ابی ھریرة ،الحدیث : ۹۷۳۹،ج۳،ص۴۵۱۔

(5)......سنن ابن ماجه، ابوا ب التیمم، باب النھی عن اِتیان الحائض ، الحدیث : ۶۳۹، ص۲۵۱۴۔

(6)......سنن ابی داود، کتاب الکھانة والتطیر، باب فی الکھان ،الحدیث : ۳۹۰۴،ص۱۵۱۰۔



www.dawateislami.net

से उन के पिछले मक़ाम में सोह़बत न करो बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़क़ बात से ह़या नहीं फ़रमाता।''(1)

**तम्बीह :**

इन तीन को भी कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है, पहले के कबीरा होने में तो अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللہُ السَّلَام का इज्माअ़ है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस का नाम **फ़ाह़िशा** और **ख़बीसा** रखा और इस की वज्ह से उ-ममे साबिक़ा में से एक उम्मत की सज़ा का भी ज़िक्र फ़रमाया।

शवाफ़ेअ़ के नज़्दीक मश्हूर येही है कि क़ियासन लुग़त के सुबूत से येह ज़िना के तह़्त दाख़िल है और जुम्हूर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللہُ السَّلَام के नज़्दीक इस में ह़द (या'नी मुक़र्ररा सज़ा) है। हमारे (शाफ़ेई) अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللہُ السَّلَام के एक गुरौह ने पहले गुनाह की त़रह़ दूसरे और तीसरे को भी कबीरा क़रार दिया है जैसा कि येह ज़ाहिर और वाज़ेह़ है नीज़ येह फ़े'ले बद क़ौमे लूत़ भी करती थी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें डराने के लिये अपनी किताबे अ़ज़ीज़ में उन का क़िस्सा बयान फ़रमाया ताकि हम उन की राह पर न चलें और हम भी उस गुनाह में मुब्तला न हो जाएं जिस में वोह मुब्तला हुए। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَ اَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴃ مَّنْضُوْدٍ ﴿۸۲﴾ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ؕ وَ مَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ﴿۸۳﴾

(پ۱۲،ھود: ۸۲تا ۸۳)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** फिर जब हमारा हुक्म आया हम ने उस बस्ती के ऊपर को उस का नीचा कर दिया और उस पर कंकर के पथ्थर लगातार बरसाए, जो निशान किये हुए तेरे रब के पास हैं और वोह पथ्थर कुछ ज़ालिमों से दूर नहीं।

## मज़्कूरा आयात की तफ़्सीर

''فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا'' से मुराद येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म इर्शाद फ़रमाया कि उन की बस्तियों को जड़ से उखेड़ दे पस इन्हों ने उन की बस्तियों को उखेड़ा और उन्हें ले कर उफ़ुक़ के कनारे तक बुलन्दी पर पहुंच गए या'नी अपने परों पर इतना ऊपर उठा लिया यहां तक कि आस्माने दुन्या के रहने वाले फ़रिश्तों ने उन के जानवरों की आवाज़ें सुन लीं और फिर उस बस्ती को उन पर पलट दिया। ''سِجِّيْلٍ'' से मुराद ऐसी तर मिट्टी है जिस को आग में जलाया गया हो। ''مَّنْضُوْدٍ'' से मुराद येह है कि पै दर पै, एक दूसरे के फ़ौरन बा'द वोह पथ्थर बरसाए गए। ''مُّسَوَّمَةً'' से मुराद है कि उन में से हर एक

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی،باب فی تحریم الفروج ، الحدیث : ۵۳۷۵،ج۴،ص۳۵۵۔



www.dawateislami.net

पर उस शख़्स का नाम लिखा हुवा था जिसे वोह लगता या उस पर ऐसी अ़लामत होती जिस से मा'लूम होता कि येह दुन्यावी पथ्थरों में से नहीं। ''عِنْدَ رَبِّكَ'' से मुराद येह है कि वोह पथ्थर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ज़ानों में हैं जिन में उस की इजाज़त से ही तसर्रुफ़ किया जा सकता है। ''وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ'' से मुराद येह है कि उन बस्तियों में बसने वाले, ज़ालिम काफ़िरों से कुछ दूर नहीं। एक क़ौल येह है कि पथ्थरों का येह अ़ज़ाब इस उम्मत के ज़ालिमों से बईद नहीं कि अगर येह उन जैसे बुरे काम करें तो इन पर भी वोही अ़ज़ाब उतरेगा जो उन पर नाज़िल हुवा, जैसा कि पहले गुज़र चुका है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मुझे अपनी उम्मत पर सब से ज़ियादा क़ौमे लूत़ के अ़मल का ख़ौफ़ है फिर जिस ने ऐसा काम किया उस पर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने 3 बार ला'नत फ़रमाई।'' और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इब्रत निशान है :

اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۶۵﴾ وَتَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ ﴿۱۶۶﴾ (پ۱۹، الشعراء:۱۶۵ تا۱۶۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** क्या मख़्लूक़ में मर्दों से बद फे़'ली करते हो और छोड़ते हो वोह जो तुम्हारे लिये तुम्हारे रब ने जोरूएं बनाईं, बल्कि तुम लोग ह़द से बढ़ने वाले हो।

''قَوْمٌ عٰدُوْنَ'' से मुराद येह है कि वोह लोग ह़द से बढ़ने वाले और ह़लाल से ह़राम की त़रफ़ तजावुज़ करने वाले थे।(1)

एक दूसरे मक़ाम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ﴿۷۴﴾ (پ۱۷، الانبیاء:۷۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और उसे उस बस्ती से नजात बख़्शी जो गन्दे काम करती थी, बेशक वोह बुरे लोग बे हुक्म थे।

''وَنَجَّيْنٰهُ'' या'नी हम ने **लूत़** को नजात बख़्शी। ''كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ'' से मुराद येह है कि उन का सब से गन्दा काम येह था कि वोह लोगों की मौजू-दगी में मर्दों से बद फे़'ली करते थे। उन के अन्दर मज़ीद येह गन्दी आ़दतें भी पाई जाती थीं कि वोह अपनी मजालिस में ठठ्ठा के त़ौर पर गूज़ मारते या'नी बुलन्द आवाज़ से अपनी हवा ख़ारिज करते, अपनी शर्मगाहें खोल कर चलते और बैठते थे, औ़रतों की त़रह़ मेहंदी लगाते और बनाव सिंघार करते थे, नीज़ इस

---

1 ......تفسير البغوى، الشعراء، تحت الآية ۱۶۶، ج۳، ص۳۳۹۔



www.dawateislami.net

के इ़लावा और भी बुरी ह़-र-कतें किया करते थे।

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : ''10 आ़दतें क़ौमे लूत़ के आ'माल में से हैं : (1)...... बालों को ख़ूब जमाना (या'नी मांग निकालना) (2)...... तहबन्द खुला छोड़े रखना (3)...... ग़ुलैल बाज़ी करना और कंकरियां फेंकना (4)...... उड़ने वाले कबूतरों के साथ खेलना (5)...... उंग्लियां चटख़ाना (6)...... टख़्नों से आवाज़ें निकालना (7)...... तहबन्द लटकाना (8)...... क़बाओं (या'नी कपड़ों के ऊपर पहने जाने वाले ढीले लिबास) के बटन खुले छोड़ देना (9)...... शराब नोशी का आ़दी होना और (10)...... मर्दों से वत़ी करना।''

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मज़ीद फ़रमाते हैं : ''अ़न्क़रीब इस उम्मत में मज़ीद एक बुराई का इज़ाफ़ा हो जाएगा और वोह औ़रतों का आपस में बदकारी करना है।'' मरवी है कि ''शत़रन्ज खेलना, कुत्तों के दरमियान लड़ाई कराना, मेंढों की लड़ाई के ज़रीए़ एक दूसरे को शिकस्त देना, मुर्ग़ों को लड़ाना, बिग़ैर तहबन्द के ह़म्माम में दाख़िल होना और नाप तोल में कमी करना भी उन की आ़दतों में शामिल था, पस जिस ने ऐसा किया उस के लिये हलाकत है।''(1)

## कबूतर बाज़ों के लिये दर्से इ़ब्रत :

ह़दीसे पाक में है, मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जो कबूतर के साथ खेलता है वोह उस वक़्त तक न मरेगा जब तक फ़क़्र का दर्दो अलम न चख ले।''(2)

## क़ौमे लूत़ पर अ़ज़ाब की कैफ़िय्यत :

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी उम्मत पर इस त़रह़ अ़ज़ाब जम्अ़ न किया जिस त़रह़ क़ौमे लूत़ पर अ़ज़ाब जम्अ़ किया, उस ने उन की आंखें बे नूर कर दीं और उन के चेहरे सियाह कर दिये, ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام को उन की बस्तियों को जड़ से उखेड़ने और फिर उन्ही पर पलटने का हुक्म दिया गया ताकि उन का ऊपर का ह़िस्सा नीचे की त़रफ़ हो जाए, इस के बा'द उन्हें ज़मीन में धंसा दिया गया, फिर उन पर आस्मान से पथ्थरों की बारिश बरसाई गई।

---

(1)......كتاب الكبائر للذهبی، الكبيرة الحادية عشرة: اللواط، ص ٦٢، ٦٣۔

(2)......شعب الايمان للبيهقی، باب فی تحريم الملاعب والملاهی، الحديث: ٦٥٣٨، ج٥، ص ٢٤٥۔



www.dawateislami.net

## लूती की सज़ा में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल :

लूती को क़त्ल करने पर सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का इज्माअ़ है मगर इस के क़त्ल की कैफ़िय्यत में इख़्तिलाफ़ है। ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने किसी बच्चे से बद फ़े'ली की उस ने कुफ़्र किया।''

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : ''लूती जब बिग़ैर तौबा किये मर जाता है तो क़ब्र में उस का चेहरा मस्ख़ हो कर ख़िन्ज़ीर जैसा हो जाता है।''(1)

मन्क़ूल है कि इस उम्मत में 3 क़िस्म के लोग लूती हैं : ''(1)...... जो अम्रदों को सिर्फ़ देखते हैं (2)...... जो उन से हाथ मिलाते हैं और (3)...... जो उन के साथ बद फ़े'ली करते हैं।''(2)

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : किसी औ़रत या अम्रद को शह्वत से देखना ज़िना है। क्यूं कि हुज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सह़ीह़ सनद के साथ साबित है कि ''आंखों का ज़िना देखना, ज़बान का ज़िना बोलना, हाथों का ज़िना पकड़ना और पाउं का ज़िना चलना है जब कि दिल माइल होता और तमन्ना करता है और शर्मगाह इस की तस्दीक़ या तक्ज़ीब करती है।''(3) इसी लिये सालिह़ीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने अम्रदों (या'नी जिन्हें देख कर शह्वत आए उन) को देखने, उन से ख़ल्त़ मल्त़ होने और उन के साथ बैठने से बचने के मु-तअ़ल्लिक़ मुबा-लग़ा फ़रमाया।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन ज़क्वान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ''अमीरों की औलाद के साथ न बैठा करो क्यूं कि उन की सूरतें कुंवारी औ़रतों की सूरतों जैसी होती हैं नीज़ वोह औ़रतों से ज़ियादा फ़ितने में डालने वाले हैं।'' एक ताबेई बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''मैं नौ जवान सालिक (या'नी आ़बिदो ज़ाहिद नौ जवान) के साथ बे रीश लड़के के बैठने को 7 दरिन्दों से ज़ियादा ख़त़रनाक समझता हूं।''(4)

---

1 ......كتاب الكبائر للذهبی، الكبيرة الحادية عشرة:اللواط ، ص٦٣۔

2 ......شعب الايمان للبيهقی ، باب فی تحريم الفروج ، الحديث : ٥٤٠٢،ج٤،ص٣٥٩۔

3 ......صحيح مسلم،كتاب القدر،باب قدر علی ابن آدم حظه.الخ، الحديث : ٢٧٥٣،٢٧٥٤،ص١١٤١ ، بتغيرٍ قليلٍ۔

4 ......شعب الايمان للبيهقی،باب فی تحريم الفروج، الحديث : ٥٣٩٦ـ٥٣٩٧،ج٤،ص٣٥٨۔



www.dawateislami.net

अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने औ़रत पर क़ियास करते हुए घर, दुकान या ह़म्माम में अम्रद के साथ ख़ल्वत को ह़राम क़रार दिया क्यूं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो शख़्स किसी औ़रत के साथ तन्हा होता है तो उन के दरमियान शैत़ान दाख़िल हो जाता है।"(1)

जो अम्रद औ़रतों से ज़ियादा ख़ूब सूरत होता है उस में फ़ितना भी ज़ियादा होता है, क्यूं कि उस से औ़रतों की निस्बत ज़ियादा बुराई का इम्कान होता है और उस के ह़क़ में औ़रतों की निस्बत शक और शर के ऐसे त़रीक़े आसान हैं जो औ़रत के ह़क़ में आसान नहीं लिहाज़ा उस के साथ तन्हाई इख़्तियार करना ब द-र-जए औला ह़राम होना चाहिये। उन से बचने और नफ़रत करने के बारे में अस्लाफ़ के बे शुमार अक़्वाल हैं और वोह इन्हें अनतान (या'नी बदबूदार) कहते थे क्यूं कि शर-ई त़ौर पर वोह गन्दगी का बाइ़स हैं जो बहूस ज़िक्र की गई है इस सब में येही हुक्म है ख़्वाह अच्छी निय्यत से देखा जाए या बुरी निय्यत से।(2)

बा'ज़ का येह कहना कि सह़ीह़ नज़र से अम्रद की त़रफ़ देखना मम्नूअ़ नहीं, येह शैत़ानी मक्रो फ़रेब है और इस की वज्ह से बा'ज़ के क़लम बहक गए। जब शारेअ़ ने देखा जो कि लोगों से ज़ियादा इन के बारे में आगाह है तो इस की त़रफ़ इशारा कर दिया। अलबत्ता ! जब उस ने इस (या'नी ज़िना और लिवात़त) को मुत़्लक़ ज़िक्र किया और तफ़्सील बयान न की तो हम ने जान लिया कि इन में कोई फ़र्क़ नहीं। इस के इ़लावा भी कसीर तौजीहात हैं जो इस से भी ज़ियादा अ़जीब हैं लेकिन जिन के नफ़्स ख़बीस हों, अ़क़्लें और दीन फ़ासिद हों और उन्हों ने ख़ुद को शर-ई अह़काम का पाबन्द भी न बनाया हो तो शैत़ान उन के लिये येह चीज़ें मुज़य्यन करता है यहां तक कि उन्हें इस से ज़ियादा क़बीह़ गुनाह में मुब्तला कर देता है जैसा कि शैत़ाने मल्ऊ़न की आ़दत है कि वोह जाहिल अमीर और कोताह लोगों को ज़लील करता है, पस जो अपने नफ़्स पर शैत़ान को थोड़ी सी गुन्जाइश देता है वोह उस का मज़ाक़ उड़ाता, उसे घटिया समझता और मस्ख़री का आला बना लेता है, फिर उस के साथ इस त़रह़ खेलता है जिस त़रह़ बच्चे गेंद के साथ खेलते हैं। लिहाज़ा ऐ मोह़तात़, अ़क़्ल मन्द, देखने वाले, नुक्ता चीन और कामिल इन्सान ! तुझ पर लाज़िम है कि उस के रास्तों, बहकावों और ख़ुश नुमाइयों से इज्तिनाब कर, ख़्वाह वोह कम हों या ज़ियादा, ज़ाहिर हों या मख़्फ़ी, नीज़ बिग़ैर किसी शको शुबा के इस बात का ध्यान रख कि कहीं वोह तेरे लिये वाज़ेह़ त़ौर पर ऐसा दरवाज़ा न खोल दे जो शरीअ़त

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث: ٧٨٣٠، ج٨، ص٢٠٥۔

2 ......كتاب الكبائر للذهبى، الكبيرة الحادية عشرة: اللواط، ص٦٤۔



www.dawateislami.net

ने नहीं खोला और वोह चाहता है कि तुझे इस से बड़ी बुराई में मुब्तला कर दे क्यूं कि तू यक़ीनी तौ़र पर जानता है कि कुरआने पाक की दलील और इज्माए़ उम्मत की रोशनी में वोह तेरा दुश्मन है और दुश्मन अपने दुश्मन को मुकम्मल तौ़र पर हलाक कर के ही खुश होता है।

## अम्रद के मु-तअ़ल्लिक़ सय्यिदुना सुफ्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی का फ़रमान :

हज़रते सय्यिदुना सुफ्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 161 हि.) (जिन की मा'रिफ़त, इल्म, ज़ोह्दो तक़्वा और नेकियों में पेश क़-दमी से तो आप वाक़िफ़ ही हैं) एक ह़म्माम में दाख़िल हुए, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास एक ख़ूब सूरत लड़का आ गया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "इसे मुझ से दूर करो ! इसे मुझ से दूर करो ! क्यूं कि मैं हर औ़रत के साथ एक शैत़ान देखता हूं जब कि हर लड़के के साथ 10 से ज़ियादा शैत़ान देखता हूं।"(1)

## अम्रद के मु-तअ़ल्लिक़ सय्यिदुना इमाम अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد का फ़रमान :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل (मु-तवफ़्फ़ा 241 हि.) की ख़िदमत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा, उस के साथ एक ख़ूब सूरत बच्चा भी था, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पूछा : "तुम्हारे साथ येह कौन है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "येह मेरा भान्जा है।" तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "आयिन्दा इसे ले कर मेरे पास न आना और इसे साथ ले कर रास्ते में न चला कर ताकि इसे और तुम्हें न जानने वाले बद गुमानी न करें।"

जब क़बीलए अ़ब्दुल क़ैस का वफ़्द सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो उन के साथ एक ख़ूब सूरत लड़का भी था, आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे अपनी पुश्ते मुबारक के पीछे बिठा दिया और फ़रमाया : "ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की आज़्माइश भी नज़र के सबब हुई।"(2)

शाइ़र ने कितनी प्यारी बात कही है :

كُلُّ الْحَوَادِثِ مَبْدَؤُهَا مِنَ النَّظَرِ ۔۔۔ وَمُعْظَمُ النَّارِ مِنْ مُّسْتَصْغَرِ الشَّرَرِ
وَالْمَرْءُ مَا دَامَ ذَا عَيْنٍ يُّقَلِّبُهَا ۔۔۔ فِیْ اَعْيُنِ الْعِيْنِ مَوْقُوْفٌ عَلَی الْخَطَرِ
كَمْ نَظْرَةٍ فَعَلَتْ فِیْ قَلْبِ صَاحِبِهَا ۔۔۔ فِعْلَ السِّهَامِ بِلَا قَوْسٍ وَّلَا وَتَرِ
يَسُرُّ نَاظِرَهٗ مَا ضَرَّ خَاطِرَهٗ ۔۔۔ لَا مَرْحَبًا بِسُرُوْرٍ عَادَ بِالضَّرَرِ

(1)......شعب الايمان للبيهقى ،باب فى تحريم الفروج ،الحديث : ۵۴۰۴،ج۴،ص۳۶۰۔

(2)......المصنف لابن ابى شيبة، كتاب الزهد، كلام داود، الحديث : ۵،ج۸،ص۱۱۵۔
كتاب الكبائر للذهبى، الكبيرة الحادية عشرة: اللواط، ص۶۵۔



www.dawateislami.net

**तरजमा :** (1)...... हर फ़साद की इब्तिदा नज़र से होती है और बहुत बड़ी आग के भड़क्ने की इब्तिदा भी छोटी सी चिंगारी से होती है।

(2)...... इन्सान जब तक आंख वाला होता है और उसे दूसरों की आंखों में डालता है तो वोह ख़त़रे पर खड़ा होता है।

(3)...... कितनी ही निगाहों ने देखने वाले के दिल में बिग़ैर कमान और वत्र के तीर का काम किया।

(4)...... अम्रद को देखने वाला दिल को नुक़्सान पहुंचाने वाली चीज़ से ख़ुश होता है, ऐसी ख़ुशी के लिये कोई मुबारक बाद नहीं जो नुक़्सान लाए।

मन्क़ूल है : ''नज़र ज़िना की डाक (या'नी इस का क़ासिद) है।''[1]

इस की ताईद इस ह़दीसे क़ुदसी से होती है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है (कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :) ''नज़र इब्लीस के ज़हरीले तीरों में से एक तीर है, जिस ने मेरे ख़ौफ़ से इसे तर्क किया मैं उसे इस के बदले ऐसा ईमान अ़त़ा फ़रमाऊंगा जिस की ह़लावत वोह अपने दिल में पाएगा।''[2]

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मरयम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام सैर करते हुए एक आग के पास से गुज़रे जो एक शख़्स पर जलाई गई थी, आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने पानी लिया ताकि उसे बुझाएं तो वोह आग बच्चे की सूरत में बदल गई और वोह शख़्स आग में बदल गया, आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام इस पर बहुत ह़ैरान हुए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : ''ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! इन्हें दुन्यावी ह़ालत में लौटा दे ताकि मैं इन से इन के मु-तअ़ल्लिक़ पूछ सकूं।'' चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन दोनों को ज़िन्दा किया तो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने देखा कि वोह एक मर्द और एक ना बालिग़ लड़का था, आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ''तुम्हारा क्या मुआ़-मला है ?'' उस शख़्स ने जवाब दिया : ''ऐ **रूहुल्लाह** (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ! मैं दुन्या में इस लड़के की मह़ब्बत में मुब्तला था, शह्वत ने मुझे इस के साथ बद फ़े'ली करने पर उभारा, इस के बा'द जब मैं और येह बच्चा मर गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक मर्तबा इस बच्चे को आग में बदल दिया ताकि मुझे जलाए और दूसरी मर्तबा मुझे आग बना दिया ताकि मैं इसे जलाऊं, लिहाज़ा क़ियामत तक येह अ़ज़ाब जारी रहेगा।''

---

1 ......كتاب الكبائر للذهبي، الكبيرة الحادية عشرة:اللواط،ص ٢٥ـ

2 ......المعجم الكبير ،الحديث :١٠٣٦٢،ج١٠،ص١٧٣ـ



www.dawateislami.net

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से उस की पनाह त़लब करते हैं और उस से आ़फ़िय्यत और उस की रिज़ा ह़ासिल करने की तौफ़ीक़ का सुवाल करते हैं ।(1)

## तम्बीह 2 : अह़ादीस में वारिद मुख़्तलिफ़ सज़ाओं में तत़्बीक़ :

ह़दीसे पाक में गुज़र चुका है कि जो किसी चौपाए से सोह़बत करे तो चौपाए को भी उस के साथ क़त्ल कर दिया जाए। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़त़्त़ाबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 388 हि.) फ़रमाते हैं : ''हैवान के क़त्ल की मुमा-न-अ़त वाली ह़दीस इस ह़दीसे पाक से मआ़रिज़ हो सकती है।'' साह़िबे किताब फ़रमाते हैं अ़ल्लामा ख़त़्त़ाबी ने जो कलाम किया है वोह दुरुस्त है। पस غَيْرِمَاْكُوْلَه (या'नी ह़राम जानवर) को क़त्ल नहीं किया जाएगा और مَاْكُوْلَه (या'नी ह़लाल जानवर) को ज़ब्ह़ नहीं किया जाएगा, येह क़ौल उन के ख़िलाफ़ है जिन्हों ने जानवर को क़त्ल करने का गुमान किया। इसी त़रह़ ह़दीसे पाक में गुज़रा है कि ''लिवात़त करने वाले और जिस से की जाए दोनों को क़त्ल कर दिया जाए।'' एक रिवायत में येह भी है कि ''फ़ाइल और मफ़ऊ़ल और चौपायों से वत़ी करने वाले को क़त्ल कर दो।''(2)

मुह़्यिस्सुन्नह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू मुह़म्मद ह़ुसैन बिन मस्ऊ़द ब-ग़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि लूत़ी की ह़द में अहले इ़ल्म का इख़्तिलाफ़ है, एक क़ौम का क़ौल है कि लिवात़त करने वाले (या'नी फ़ाइल) की ह़द वोही है जो ज़िना की है या'नी अगर शादी शुदा हो तो उसे रज्म किया जाएगा और अगर ग़ैर शादी शुदा हो तो 100 कोड़े लगाए जाएंगे, येह ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुसय्यब, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन, ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा और ह़ज़रते सय्यिदुना नख़ई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का क़ौल है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 161 हि.) और सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का भी येही क़ौल है और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) के दो अक़्वाल में से ज़ियादा ज़ाहिर क़ौल भी येही है, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से भी इसी त़रह़ ह़िकायत किया गया है और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) के नज़्दीक इस क़ौल की बिना पर 100 कोड़े और एक साल की जला व-त़नी है, ख़्वाह वोह मर्द हो या औ़रत, शादी शुदा हो या ग़ैर शादी शुदा।

---

1 ......كتاب الكبائر للذهبى، الكبيرة الحادية عشرة:اللواط،ص ۲۶ ـ

2 ......شعب الايمان للبيهقى،باب فى تحريم الفروج، الحديث : ۵۳۸۷، ج۴، ص۳۵۷ـ



www.dawateislami.net

एक गुरौह का क़ौल है कि लूत़ी को रज्म किया जाएगा अगर्चे ग़ैर शादी शुदा हो, येह क़ौल ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه और ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد ने ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से नक़्ल किया है और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शअ़बी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 103 हि.) से भी नक़्ल किया गया है जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی ने भी इसी को इख़्तियार किया और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इस्ह़ाक़ बिन राहविया رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का भी येह ही क़ौल है।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन इब्राहीम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَرِیْم ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्राहीम नख़ई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی से नक़्ल फ़रमाते हैं कि ''अगर किसी को दो बार रज्म करने की सज़ा दी जाती तो लूत़ी को दी जाती।''

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) का दूसरा क़ौल येह है कि ''लिवात़त करने वाले और करवाने वाले दोनों को क़त्ल कर दिया जाए जैसा कि ह़दीसे पाक में आया है।''(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ इमाम ज़किय्युद्दीन अ़ब्दुल अ़ज़ीम मुन्ज़िरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''4 ख़ु-लफ़ा अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और ख़लीफ़ा हश्शाम बिन अ़ब्दुल मलिक ने लूत़ी को आग से जलाया।''(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमत में एक ख़त़ रवाना किया कि उन्हों ने अ़रब के अत़राफ़ में एक शख़्स को पाया जिस से उसी त़रह़ जिमाअ़ किया जाता है जिस त़रह़ औ़रत से किया जाता है तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस शख़्स के मु-तअ़ल्लिक़ फ़ैसला करने के लिये सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن को जम्अ़ फ़रमाया, उन में अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم भी थे, उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक

---

1 ......شرح السنة للبغوی، کتاب الحدود، باب من عمل عمل قوم لوط، تحت الحدیث : ۲۵۸۷، ج۵، ص۴۷۹۔

2 ......الترغیب والترهیب، کتاب الحدود، باب الترهیب من اللواط......الخ، تحت الحدیث : ۳۷۰۰، ج۳، ص۲۲۹۔



www.dawateislami.net

येह एक ऐसा गुनाह है जो सिर्फ़ एक उम्मत ने किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें वोह अ़ज़ाब दिया जो तुम जानते हो, मेरा ख़याल है कि हम इसे आग से जला दें।'' पस सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का उसे आग से जलाने पर इज्माअ़ हो गया तो अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे आग से जलाने का हुक्म दे दिया और ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे आग से जला दिया।(1)

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''जो शख़्स ख़ुद को लिवातत के लिये पेश करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे औरतों की शह्वत में मुब्तला कर देगा और उसे क़ियामत के दिन तक क़ब्र में मरदूद शैत़ान की सूरत में रखेगा।''(2)

इस बात पर उम्मत का इज्माअ़ है कि जिस ने अपने गु़लाम से मल्ऊ़न, फ़ासिक़ और मुजरिम क़ौमे लूत़ जैसा फ़े'ल किया उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, फ़रिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत है। ह़क़ीक़त येह है कि येह आ़दत ताजिरों और सरमाया दारों में आ़म हो गई और उन्हों ने इस बुरे फ़े'ल के लिये सियाह और सफ़ेद ख़ूब सूरत गु़लाम अपनाए, पस उन पर शदीद दाइमी ज़ाहिरी ला'नत है और बड़ी ज़िल्लतो रुस्वाई, हलाकत और दुन्या व आख़िरत में अ़ज़ाब है, जब तक कि वोह उन बुरी ऐ़बदार, बदनुमा और ख़त़रनाक ख़स्लतों पर क़ाइम रहें जो कि तंगदस्ती, माल की हलाकत, ब-रकात के ख़ातिमे और मुआ़-मलात व अमानात में ख़ियानत का मूजिब हैं।

येही वज्ह है कि जिन लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ने'मतें और माल अ़त़ा फ़रमाया आप उन में से अक्सर को पाएंगे कि वोह अपने बुरे मुआ़-मले और जुर्म की बुराई की वज्ह से फ़क़्र में मुब्तला हो गए और ना फ़रमान अपने ख़ालिक़, अ़दम से वुजूद में लाने वाले और रिज़्क़ देने वाले की त़रफ़ न लौटा बल्कि मुरव्वत और ह़या की चादर उतार कर और फ़हमो फ़िरासत की तमाम सिफ़ात से ख़ाली हो कर नीज़ चौपायों की सिफ़ात अपना कर वाज़ेह़ त़ौर पर उस रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ का मुक़ाबला किया बल्कि चौपायों से भी बुरी और क़ाबिले नफ़्रत सिफ़त अपनाई क्यूं कि हम किसी मुज़क्कर ह़ैवान को भी नहीं पाते जो अपने जैसे किसी मुज़क्कर जानवर से सोह़बत करता हो। पस इस फ़े'ले बद के इन्तिहाई घटिया होने के लिये येही काफ़ी है कि गधे भी इस से परहेज़ करते हैं तो येह उस शख़्स की शान के लाइक़ कैसे हो सकता है जो रईस या

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی،باب فی تحریم الفروج،الحدیث:۵۳۸۹،ج۴،ص۳۵۷۔

2 ......کتاب الکبائر للذهبی،الکبیرة الحادیة عشرة:اللواط، ص ۶۲۔



www.dawateislami.net

सरदार हो, हरगिज़ नहीं बल्कि वोह शख़्स इस की गन्दगी से भी बुरा है, उस की ख़बर भी मन्हूस है और मुर्दार से भी ज़ियादा बदबूदार है बल्कि बुरा और ह़द से तजावुज़ करने वाला है, अ़ज़ाब और रुस्वाई उस की क़िस्मत में है और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ह्द और उस की अमानत को तोड़ने वाला है, पस उस के लिये रह़मते इलाही से दूरी और फिटकार है और वोह जहन्नम में हलाक होने और जलने का ह़क़दार है।

❁❁❁❁❁❁❁

## कबीरा नम्बर 362 : औ़रतों का आपस में बद फ़े'ली करना

**( या'नी एक औ़रत दूसरी औ़रत से सोह़बत करे जिस त़रह़ मर्द औ़रत के साथ करता है )**

इसी त़रह़ बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने ज़िक्र फ़रमाया और सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने इ़ब्रत निशान से इस्तिद्लाल किया कि "**سحاق** से मुराद औ़रतों का आपस में बद फ़े'ली करना है।"

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ 3 आदमियों के لَا اِلٰهَ اِلَّا الله कहने की गवाही क़बूल नहीं फ़रमाता : (1)...... क़ौमे लूत़ का अ़मल करने और करवाने वाला (2)...... आपस में बदकारी करने वाली दो औ़रतें और (3)...... ज़ालिम हुक्मरान।"[1]

❁❁❁❁❁❁❁

### ......ता'रीफ़ और सआ़दत......

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर बैज़ावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 685 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं कि "जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी करता है दुन्या में उस की ता'रीफ़ें होती हैं और आख़िरत में सआ़दत मन्दी से सरफ़राज़ होगा।"

(تفسیرالبیضاوی، پ۲۲، الاحزاب، تحت الآیۃ: ۷۱، ج۴، ص ۳۸۸)

---

1 ......فردوس الاخبار للدیلمی، الحدیث: ۲۳۳۹، ج۱، ص۳۲۰۔



www.dawateislami.net

**कबीरा नम्बर 363 : मुश-त-रका लौंडी से शरीक का वत़ी करना**

**कबीरा नम्बर 364 : मुर्दा बीवी से सोह़बत करना**

**कबीरा नम्बर 365 : वली और गवाहों के बिग़ैर होने वाले निकाह़ में वत़ी करना**

**कबीरा नम्बर 366 : निकाह़े मुत्अ़ा में जिमाअ़ करना**

**कबीरा नम्बर 367 : उजरत पर ले कर वत़ी करना**

**कबीरा नम्बर 368 : किसी औ़रत को रोकना ताकि ज़ानी उस से ज़िना करे**

मैं ने पहले 5 गुनाहों को कबीरा शुमार करते हुए किसी को नहीं पाया लेकिन इन का कबीरा होना वाज़ेह़ है, अगर्चे येह तस्लीम कर लिया जाए कि इन का नाम ज़िना नहीं क्यूं कि बा'ज़ अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के नज़्दीक येह कोड़ों और रज्म को वाजिब नहीं करते जैसा कि पहले दो और चौथे के मु-तअ़ल्लिक़ शाफ़िइय्यों का मौक़िफ़ है और दीगर के मु-तअ़ल्लिक़ दूसरे अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का मौक़िफ़ है। खुलासए कलाम येह है कि हर वोह शुबा जो किसी फ़े'ल के मुबाह़ होने का तक़ाज़ा न करे वोह ह़द साक़ित़ होने का फ़ाएदा तो देता है मगर उस गुनाह से कबीरा का नाम ज़ाइल नहीं करता इस लिये कि मज़्कूरा गुनाह शदीद हुरमत की वज्ह से मा'नन ज़िना की त़रह़ हैं क्यूं कि येह बद तरीन फ़ह़्ह़ाशी और न-सबों के इख़्तिलात़ का बाइस हैं। छटे गुनाह को कबीरा शुमार करने का सबब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू मुह़म्मद बिन अ़ब्दुस्सलाम عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ السَّلَام का दर्जे ज़ैल क़ौल है : "जिस ने किसी शादी शुदा औ़रत को रोका ताकि ज़ानी उस के साथ ज़िना करे या किसी मुसल्मान को रोका ताकि क़ातिल उसे (नाह़क़) क़त्ल कर दे तो बिला शुबा इस का फ़साद यतीम का माल खाने से भी ज़ियादा है।"(1)

ज़ाहिर येह है कि औ़रत के साथ مُحْصَنَةٌ (या'नी शादी शुदा होने) की क़ैद लगाना मुराद नहीं, इसी लिये मैं ने इसे ह़ज़्फ़ कर दिया क्यूं कि जिस फ़साद की त़रफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अ़ब्दुस्सलाम عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ السَّلَام ने इशारा किया वोह शादी शुदा औ़रत के साथ मुक़य्यद नहीं। याद रखिये! हमारे शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने वाज़ेह़ त़ौर पर फ़रमाया : ज़िना जब्रो इक्राह से जाइज़ नहीं हो जाता अगर्चे कोई भी सूरत हो इस लिये कि क़ाबिले शह्वत औ़रत

(1)......شرح المسلم للنووی، کتاب الایمان، باب الکبائر واکبرھا، ج۲، ص۸۶۔



www.dawateislami.net

को देखने से हैजान पैदा होना एक ऐसा त़ब्ई़ अम्र है जो इख़्तियार देने वाले पर मौक़ूफ़ नहीं इसी त़रह़ उन्हों ने येह भी तसरीह़ की, कि अगर्चे इक्राह ज़िना को जाइज़ नहीं करता मगर येह ऐसा शुबा है जो ह़द को साक़ित़ कर देता है। अब सुवाल येह है कि क्या येह एक ऐसा शुबा है जिस से ज़िना का कबीरा होना साक़ित़ हो जाएगा या इस का कबीरा और गुनाह होना अपने ह़ाल पर बाक़ी रहेगा अगर्चे ज़िना बिलजब्र हो ? इस का जवाब येह है कि मैं ने किसी को इस का ज़िक्र करते हुए नहीं पाया, अलबत्ता ! इस में ग़ौरो फ़िक्र की गुन्जाइश है और येह कहा जा सकता है कि येह सग़ीरा गुनाह तब होगा जब कि उस ने येह फ़े'ल बिलजब्र किया हो और येह किसी को जब्रन क़त्ल करने की त़रह़ नहीं क्यूं कि वहां बन्दा अपनी ज़िन्दगी को तरजीह़ देता है, इसी वज्ह से उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इस पर इज्माअ़ किया कि क़त्ल इक्राह से जाइज़ नहीं हो जाता। अलबत्ता ! उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के एक गुरौह का क़ौल है : "बेशक ज़िना इक्राह से जाइज़ हो जाता है।" पस हम ने मज़्कूरा दोनों अक़्वाल के दरमियान फ़र्क़ को अच्छी त़रह़ जान लिया।

**ए'तिराज़ :** आप ने इस छटे कबीरा गुनाह में शुबा को क्यूं तरजीह़ दी ह़ालां कि पहले 5 गुनाहों में इसे तरजीह़ नहीं दी ?

**जवाब :** इन में इस ए'तिबार से फ़र्क़ किया जाएगा कि मज़्कूरा 5 गुनाहों में इस बात का क़ाइल कोई नहीं कि येह शुबा एक उ़ज़्र है जो ह़िल्लत की त़रफ़ ले जाने वाला है, पहले दो और पांचवें गुनाह में येह बात बिल्कुल ज़ाहिर है जब कि तीसरे और चौथे गुनाह की इबाह़त के क़ाइल के लिये शर्त़ है कि वोह क़ाइले इबाह़त की तक़्लीद करे। मगर क़ाइले हु़रमत के मुक़ल्लिद के लिये बिल इज्माअ़ येह गुनाह जाइज़ नहीं और यहां कलाम क़ाइले हु़रमत के मुक़ल्लिद के बारे में है।

चूंकि जब्रो इक्राह कसीर मसाइल में गुनाह को साक़ित़ करने वाला उ़ज़्र शुमार किया जाता है बल्कि ज़िना और क़त्ल की तमाम सूरतों में भी ऐसा ही होता है लिहाज़ा यहां भी मुम्किन है कि इक्राह कबीरा को साक़ित़ करने वाला उ़ज़्र शुमार किया जाए अगर्चे गुनाह को साक़ित़ न करे, क्यूं कि अम्रे ताबेअ़ में वोह चीज़ मुआ़फ़ कर दी जाती है जो अम्रे ह़क़ीक़ी में मुआ़फ़ नहीं की जाती और येही गुनाह की अस्ल है। रहा इस का कबीरा या सग़ीरा गुनाह होना तो जान लीजिये कि येह उस के लिये एक अम्रे ताबेअ़ है।



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 369 : चोरी करना

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْۤا اَیْدِیَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِؕ وَاللّٰهُ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ(۳۸)

(پ۶، المائدة:۳۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो मर्द या औ़रत चोर हो तो उन का हाथ काटो उन के किये का बदला **अल्लाह** की त़रफ़ से सज़ा, और **अल्लाह** ग़ालिब ह़िक्मत वाला है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने शिहाब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَهَّاب फ़रमाते हैं : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने लोगों का माल चोरी करने में हाथ काटने की सज़ा मुक़र्रर फ़रमाई है।'' और ''وَاللّٰهُ عَزِیْزٌ'' से मुराद येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चोर से इन्तिक़ाम लेने में ग़ालिब है और ''حَكِیْمٌ'' से मुराद येह है कि हाथ काटने को वाजिब क़रार देने में उस की ह़िक्मत है।

﴿1﴾...... सह़ीह़ ह़दीसे पाक में गुज़र चुका है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''ज़ानी जब ज़िना करता है तो वोह मोमिन नहीं होता, चोर जब चोरी करता है तो वोह मोमिन नहीं होता और शराबी जब शराब पीता है तो वोह मोमिन नहीं होता।''[(1)]

﴿2﴾...... एक रिवायत में येह इज़ाफ़ा है : ''और शराबी शराब पीते वक़्त मोमिन नहीं होता मगर इस के बा'द भी तौबा उस के सामने मौजूद होती है।''[(2)]

﴿3﴾...... एक रिवायत में येह इज़ाफ़ा है : ''पस जब उस ने ऐसा किया तो अपनी गरदन से इस्लाम का पट्टा उतार दिया फिर अगर वोह तौबा कर ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है।''[(3)]

﴿4﴾...... एक रिवायत में यूं भी है : ''चोर चोरी करते वक़्त मोमिन नहीं होता और ज़ानी ज़िना करते वक़्त मोमिन नहीं होता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां ईमान इस से मुकर्रम है (कि वोह इन गुनाहों के वक़्त ईमान उस के दिल में रहने दे)।''[(4)]

﴿5﴾...... एक रिवायत में येह है : ''ज़ानी ज़िना करते वक़्त मोमिन नहीं होता और चोर चोरी करते

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان نقصان الایمان بالمعاصی......الخ، الحدیث: ۲۰۲، ص۶۹۰۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب السنة، باب الدلیل علی زیادة الایمان و نقصانه، الحدیث: ۴۶۸۹، ص۱۵۶۷، دون قوله "لکن"۔

3 ......سنن النسائی، کتاب قطع السارق، باب تعظیم السرقة، الحدیث: ۴۸۷۶، ص۲۴۰۳۔

4 ......الترغیب والترهیب، کتاب الحدود، باب الترهیب من الزنا سیما......الخ، الحدیث: ۳۶۴۴، ج۳، ص۲۱۳۔



www.dawateislami.net

वक़्त मोमिन नहीं होता, अलबत्ता ! तौबा उस के सामने मौजूद होती है।''(1)

﴾6﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **''अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चोर पर ला'नत फ़रमाई कि वोह अन्डा चोरी करता है तो उस का (एक) हाथ काट दिया जाता है फिर रस्सी चोरी करता है तो (दूसरा) हाथ काट दिया जाता है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना आ'मश رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : ''उ़-लमाए ह़दीस फ़रमाते हैं कि इस से मुराद लोहे का अन्डा है और रस्सी ऐसी है जिस की क़ीमत तीन दिरहम के बराबर हो।''(2)

## तम्बीह :

चोरी को कबीरा गुनाहों में शुमार करने पर उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام का इत्तिफ़ाक़ है और येह मज़्कूरा अह़ादीसे मुबा-रका से वाज़ेह़ है, ज़ाहिर येह है कि कबीरा होने के ए'तिबार से इन दोनों सूरतों में कोई फ़र्क़ नहीं कि वोह चोरी हाथ काटने का मूजिब हो या किसी शुबे के सबब हाथ काटने का मूजिब न हो जैसे मस्जिद की चटाई वग़ैरा चोरी कर लेना या ग़ैर मह़फ़ूज़ मक़ाम से कोई चीज़ उठा लेना।

ह़ज़रते सय्यिदुना हरवी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی जो हमारे (शाफ़ेई़) अइम्मा में से हैं इस की तसरीह़ करते हुए फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना शुरैह़ रूयानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوۡرَانِی ने **''अरौज़ा''** में इसी को इख़्तियार किया है।

गुनाहे कबीरा की ता'रीफ़ में येह 4 बातें शर्त़ हैं : वोह ह़द को वाजिब करता हो या क़िसास का बाइ़स हो या उस फ़े'ल की क़ुदरत को साबित करता हो और ऐसी सज़ा का बाइ़स हो जो शुबे की वज्ह से साक़ित़ हो जाती हो जब कि जान बूझ कर इस फ़े'ल का इरतिकाब करने वाला गुनहगार होगा। ह़ज़रते सय्यिदुना जलालुद्दीन बुल्क़ीनी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی इस की वज़ाह़त में फ़रमाते हैं : ''اَوۡقُدۡرَۃً......اِلَخ'' से इस त़रफ़ इशारा है कि ऐसी चोरी करना जो मह़फ़ूज़ न होने या किसी शुबे की वज्ह से हाथ कटने का तक़ाज़ा न करे वोह भी कबीरा गुनाह है, अलबत्ता ! सज़ा मानेअ़ की वज्ह से साक़ित़ हो जाती है, येह इस लिये कि गुज़श्ता सफ़ह़ात में आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का येह फ़रमान गुज़रा : ''आ़दिल होने के लिये शर्त़ है कि बन्दा ह़द वाजिब करने वाले कबीरा गुनाहों का इरतिकाब न करे म-सलन चोरी, ज़िना, राहज़नी करना या इस फ़े'ल पर क़ादिर होना अगर्चे उस में किसी शुबे या ग़ैर मह़फ़ूज़ होने की वज्ह से ह़द वाजिब न हो।''

---

1......جامع الترمذی، ابواب الایمان، باب ماجاء لا یزنی الزانی وھو مؤمن، الحدیث:۲۶۲۵،ص۱۹۱۶۔

2......صحیح البخاری،کتاب الحدود، باب لعن السارق اذا لم یسم، الحدیث:۶۷۸۳،ص۵۶۲، دون قولہ" ثمنہ ثلاثۃ"۔



www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इस पर इज्माअ़ है कि एक दाना भी ग़स्ब या चोरी करना कबीरा गुनाह है।" इस पर ए'तिराज़ किया गया कि येह दा'वा सह़ीह़ नहीं क्यूं कि मुह़्यिस्सुन्नह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद ह़ुसैन बिन मस्ऊ़द ब-ग़वी عَلَیْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 516 हि.) वग़ैरा ने मग़्सूबा माल में येही ए'तिबार किया है कि इस की मिक़्दार चौथाई दीनार हो और इस का तक़ाज़ा है कि चोरी में भी येह शर्त़ हो। ग़स्ब की बह़्स में इस मस्अले की ज़ियादा तफ़्सील है, उस की त़रफ़ रुजूअ़ कर लीजिये।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़लीमी عَلَیْهِ رَحْمَةُاللهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : "चोरी कबीरा गुनाह है, डाका डाल कर माल छीनना फ़ोह़्श काम है और डाका डाल कर क़त्ल करना इस से ज़ियादा बुरा है जब कि थोड़ी सी चीज़ चोरी करना सग़ीरा गुनाह है अलबत्ता ! जिस की चोरी की गई अगर वोह मिस्कीन हो और जो चीज़ चोरी की गई वोह उस का मोह़ताज हो तो येह कबीरा गुनाह है अगर्चे ह़द वाजिब न हो।" ह़ज़रते सय्यिदुना ह़लीमी عَلَیْهِ رَحْمَةُاللهِ الْغَنِی का येह जुम्ला मह़ल्ले नज़र है कि "जिस की चोरी की गई अगर वोह मिस्कीन हो और जो चीज़ चोरी की गई वोह उस का मोह़ताज हो तो येह कबीरा गुनाह है।" बल्कि अगर वोह अमीर भी हो तब भी उस का मोह़ताज हो सकता है म-सलन बे आबो गियाह सह़रा में उस का पानी या रोटी चोरी हो जाए और वहां उस के पास और कुछ न हो तो भी इसी त़रह़ कबीरा होगा। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मज़ीद फ़रमाते हैं : "लोगों के अम्वाल नाह़क़ ले लेना भी कबीरा गुनाह है और जिस का माल छीना गया अगर वोह फ़क़ीर हो या छीनने वाले के उसूल (या'नी मां, बाप और दादा, दादी वग़ैरा) में से हो या जब्रन माल लिया गया हो तो येह फ़ोह़्श काम है। इसी त़रह़ अगर क़िमार के त़ौर पर कुछ लिया गया और अगर थोड़ी सी चीज़ ली गई और जिस से ली गई वोह अमीर हो और इस वज्ह से उसे कोई नुक़्सान न हो तो येह सग़ीरा गुनाह है और ग़स्ब के मु-तअ़ल्लिक़ इसी के मुवाफ़िक़ कलाम गुज़र चुका है, अलबत्ता ! क़ाबिले ए'तिमाद क़ौल इस के ख़िलाफ़ है।"

## फ़ाइदए जलीला :

﴾7﴿...... ह़दीसे पाक में है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस चोरी में हाथ काटा जिस की क़ीमत 3 दिरहम थी।[1]

---

[1] ......صحیح البخاری، کتاب الحدود، باب قول اللہ تعالٰی:"وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْا اَیْدِیَهُمَا"، الحدیث:۶۷۹۵،ص۵٦٧۔



www.dawateislami.net

﴾8﴿ एक दूसरी ह़दीसे पाक में है : "चौथाई दीनार या इस से ज़ियादा में हाथ काटा जाए इस से कम में नहीं ।"(1)

और येह पिछली ह़दीस के मुनाफ़ी नहीं क्यूं कि उस वक़्त चौथाई दीनार 3 दिरहम के बराबर था और एक दीनार 12 दिरहम के बराबर था ।

﴾9﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुहैरीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हम ने ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ज़ाला बिन **उ़बैदुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से चोर के हाथ उस की गरदन में लटकाने के मु-तअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया कि क्या येह सुन्नत है ? तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में एक चोर लाया गया और उस का हाथ काट दिया गया, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया तो उस (के हाथ) को उस की गरदन में लटका दिया गया ।"(2)

उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "चोर और ग़ासिब वग़ैरा जिस ने भी बिला वज्ह माल लिया तो उसे तौबा नफ़्अ़ न देगी मगर येह कि उस ने जो कुछ लिया वोह वापस लौटा दे ।" जैसा कि اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तौबा की बह़्स में आएगा ।

۞۞۞۞۞۞۞

**﴾......इ़ल्म सीखने से आता है......﴿**

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

"इ़ल्म सीखने से ही आता है और फ़िक़्ह ग़ौरो फ़िक्र से ह़ासिल होती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन में समझ बूझ अ़त़ा फ़रमाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं ।"

(المعجم الکبیر،ج۱۹،ص۵۱۱،الحدیث:۷۳۱۲)

1 ......صحیح مسلم، کتاب الحدود، باب حد السرقة ونصابها، الحدیث:۴۳۹۸،ص۹۲۶، دون قوله"لا اقلّ"۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب الحدود، باب فی السارق تعلق یده فی عنقه، الحدیث:۴۴۱۱،ص۱۵۴۵۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 370 : चोरी के इरादे से रास्ता रोकना

### ( या'नी लोगों को ख़ौफ़ज़दा करना अगर्चे न तो किसी को क़त्ल किया जाए और न ही माल लिया जाए )

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِیْنَ یُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ یَسْعَوْنَ فِی الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ یُّقَتَّلُوْۤا اَوْ یُصَلَّبُوْۤا اَوْ تُقَطَّعَ اَیْدِیْهِمْ وَ اَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ اَوْ یُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِؕ ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْیٌ فِی الدُّنْیَا وَ لَهُمْ فِی الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِیْمٌ ﴿۳۳﴾ اِلَّا الَّذِیْنَ تَابُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَیْهِمْۚ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۳۴﴾ (پ ٦، المائدة: ٣٣، ٣٤)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** वोह कि **अल्लाह** और उस के रसूल से लड़ते और मुल्क में फ़साद करते फिरते हैं उन का बदला येही है कि गिन गिन कर क़त्ल किये जाएं या सूली दिये जाएं या उन के एक त़रफ़ के हाथ और दूसरी त़रफ़ के पाउं काटे जाएं या ज़मीन से दूर कर दिये जाएं, येह दुन्या में उन की रुस्वाई है, और आख़िरत में उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब, मगर वोह जिन्हों ने तौबा कर ली इस से पहले कि तुम उन पर क़ाबू पाओ जान लो कि **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

## आयाते बय्यिनात की तफ़्सीर

जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी जान को नाहक़ क़त्ल करने के गुनाह की सख़्ती और ज़मीन में फ़साद फैलाने का ज़िक्र किया तो इस के फ़ौरन बा'द ज़मीन में फ़साद फैलाने की एक क़िस्म (राहज़नी) का ज़िक्र करते हुए इर्शाद फ़रमाया : اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِیْنَ یُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ **अल्लाह** और रसूल से लड़ने से मुराद मुसल्मानों से जंग करना है। जुम्हूर मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इसी बात को साबित किया।

**जारुल्लाह ज़मख़्शरी** मो'तज़िली लिखता है : ''या'नी वोह **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जंग करते हैं और मुसल्मानों से जंग करना **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जंग करने के हुक्म में है।''(1)

या'नी आयते मुबा-रका से मक़्सूद सिर्फ़ रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जंग करने को बयान फ़रमाना है जब कि रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जंग करने की वज्ह से ता'ज़ीमन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम ज़िक्र किया गया है जैसा कि इस आयते मुबा-रका में इर्शाद फ़रमाया :

---

(1) ......الكشاف ، المائدة، تحت الآية ٣٣،ج ١،ص ٦٢٨ـ



www.dawateislami.net

اِنَّ الَّذِیْنَ یُبَایِعُوْنَكَ اِنَّمَا یُبَایِعُوْنَ اللّٰهَ (پ۲۶، الفتح:۱۰)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो तुम्हारी बैअ़त करते हैं वोह तो **अल्लाह** ही से बैअ़त करते हैं।

आप ''मुहा़-रबत (या'नी लड़ने)'' को हुक्म की मुख़ा-लफ़त पर भी मह़मूल कर सकते हैं, इस सूरत में मा'ना येह होगा कि ''जो लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़काम की मुख़ा-लफ़त करते और मुल्क में फ़साद करते फिरते हैं उन की सज़ा येह है कि उन्हें क़त्ल किया जाए या फांसी दी जाए या एक त़रफ़ का हाथ और दूसरी त़रफ़ का पाउं काट दिया जाए या जला वत़न कर दिया जाए।'' पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ निस्बत के ए'तिबार से उस के अह़काम की मुख़ा-लफ़त और रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ख़ु-लफ़ाए राशिदीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم की त़रफ़ निस्बत के लिहा़ज़ से इन से जंग करना मुराद होगा और ''وَیَسْعَوْنَ فِی الْاَرْضِ فَسَادًا'' का मत़लब येह है कि वोह लोगों को नाह़क़ क़त्ल कर के या उन का माल ले कर या रास्तों को पुर ख़त़र बना कर ज़मीन में फ़साद बरपा करते। पस मुसल्मानों पर अस्लह़ा तानने वाला हर शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जंग करने वाला है।

## शाने नुज़ूल :

इस आयते मुबा-रका के शाने नुज़ूल के मु-तअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अक़्वाल मरवी हैं : एक क़ौल येह है कि येह आयते त़य्यिबा अहले किताब की उस जमाअ़त के बारे में नाज़िल हुई जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़ह्द शि-कनी की, डाका ज़नी की और फ़साद फैलाया। एक क़ौल येह है कि येह आयते मुबा-रका हिलाल अस्लमी की क़ौम के मु-तअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जिन से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस बात पर मुसा-लह़त की थी कि हम न तुम्हारी मदद करेंगे, न तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी की मदद करेंगे और जो शख़्स तुम्हारे पास से गुज़र कर हमारे पास आएगा वोह अम्न में होगा। मुआ़-हदा के बा'द हिलाल अस्लमी की अ़दम मौजू-दगी में क़ौमे किनाना इस्लाम लाने के इरादे से उस की क़ौम के पास से गुज़री तो उस की क़ौम ने उन्हें क़त्ल कर दिया और उन का माल व अस्बाब ले लिया, पस ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَیْهِ السَّلَام येह हुक्म ले कर नाज़िल हो गए।

एक क़ौल येह है कि येह आयते मुबा-रका **उ़रैना** और **उ़कल** नामी दो क़बीलों के मु-तअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई उन्हों ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर इस्लाम पर बैअ़त की जब



www.dawateislami.net

कि वोह लोग झूटे थे । उन्हें मदीनए त़य्यिबा की आबो हवा मुवाफ़िक़ न आई तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें स-दक़े के ऊंटों की त़रफ़ भेज दिया ताकि वोह ऊंटनियों का दूध पियें । लेकिन वोह मुरतद हो गए और चरवाहों को क़त्ल कर के ऊंटों को हांक कर ले गए । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की त़रफ़ कुछ लोग भेजे जो उन्हें पकड़ कर ले आए, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के हाथ पाउं काटने और उन की आंखों में आग की जलती मैख़ें डालने का हुक्म दिया और उन्हें धूप में फेंक दिया, वोह पानी त़लब करते रहे लेकिन पानी न पिलाया गया यहां तक कि वोह मर गए ।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "उन लोगों ने क़त्लो ग़ारत गरी की थी या'नी माल लूटने के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ जंग की और ज़मीन में फ़साद फैलाने की कोशिश की, पस आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़े'ल को मन्सूख़ करने के लिये येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई जो कि कुरआन से सुन्नत को मन्सूख़ करने की मिसाल है ।" अलबत्ता ! बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इस बात (या'नी कुरआन से सुन्नत को मन्सूख़ करने) का इन्कार किया है, वोह फ़रमाते हैं : "एक सुन्नत को दूसरी सुन्नत ही मन्सूख़ करती है और येह आयते मुबा-रका मन्सूख़ करने वाली सुन्नत के मुत़ाबिक़ है ।"(2)

## मुस्ला की मुमा-न-अ़त :

फिर आंखों में आग की सलाइयां डालना और मुस्ला करना (या'नी शक्ल बिगाड़ना) मन्सूख़ हो गया मगर क़त्ल का हुक्म अब भी बाक़ी है । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : "येह हुक्म अह़कामे हुदूद के नुज़ूल से पहले का था ।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़नाद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जब ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के साथ ऐसा किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुदूद नाज़िल फ़रमाईं और मुस्ला से मन्अ़ फ़रमा दिया ।"(3) ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "हमें येह बात पहुंची है कि इस वाक़िए के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم स-दक़ा पर उभारते और **मुस्ला** से मन्अ़

---

1 ......تفسیر البغوی، المائدة، تحت الآیة ۳۳، ج ۲، ص ۲۶۔

صحیح البخاری، کتاب الجهاد، باب اذا حرّق المشرک......الخ، الحدیث: ۳۰۱۸، ص ۲۴۲۔

2 ......اللباب فی علوم الکتاب لابن عادل الحنبلی، المائدة، تحت الآیة ۳۳، ج۷، ص ۳۰۶۔

3 ......تفسیر البغوی، المائدة، تحت الآیة ۳۳، ج ۲، ص ۲۶۔



www.dawateislami.net

फ़रमाते थे।"(1)

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "उन की आंखें इस लिये फोड़ी गईं क्यूं कि उन्हों ने चरवाहों की आंखें फोड़ दी थीं।"(2)

अगर येह रिवायत हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से साबित भी हो तब भी इस से नस्ख़ साबित नहीं होता मगर ज़ाहिर येह है कि येह रिवायत साबित नहीं। हज़रते सय्यिदुना लैस बिन सा'द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد फ़रमाते हैं : "येह आयते मुबा-रका आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तवज्जोह दिलाने और उन को दी गई सज़ा के बड़ा होने को बयान करने के लिये नाज़िल हुई, पस इस आयते मुबा-रका में इर्शाद फ़रमाया : "उन की सज़ा येह थी, न कि मुस्ला।" इसी वज्ह से आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब भी ख़ुत्बे के लिये खड़े होते तो मुस्ला से मन्अ फ़रमाते।"(3)

एक क़ौल येह है कि येह आयते मुबा-रका मुसल्मान लुटेरों के मु-तअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई, अक्सर फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का येही मौक़िफ़ है, वोह फ़रमाते हैं : "इस आयते मुबा-रका को मुरतद्दीन पर महमूल करना जाइज़ नहीं इस की दलील येह है कि मुरतद को क़त्ल करना मुरतद्दीन से जंग करने पर मौक़ूफ़ नहीं और न ही हमारे मुल्क (या'नी दारुल इस्लाम) में फ़साद ज़ाहिर करने पर मौक़ूफ़ है और इस में हाथ काटने और जला वतन करने पर इक्तिफ़ा जाइज़ नहीं, बल्कि उस का क़त्ल तौबा से साक़ित हो जाता है अगर्चे वोह क़त्ल पर क़ुदरत हासिल होने के बा'द तौबा करे, नीज़ उसे फांसी देना भी जाइज़ नहीं। मुहारिब वोह लोग हैं जो जथ्थे की सूरत में हों और उन के सामने माल वग़ैरा लेने से कोई रुकावट भी न हो अगर वोह सहरा में हों तो बिल इत्तिफ़ाक़ उन्हें राहज़न कहा जाएगा या अगर शहर में हों और उन का कोई मददगार न हो तो हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई, हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक, हज़रते सय्यिदुना इमाम लैस और हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِين के नज़्दीक उन्हें येही नाम दिया जाएगा, उन के दलाइल येह हैं : (1) वोह शहर में ज़ियादा बड़े गुनाहों के मुर-तकिब होते हैं (2) इस आयते मुबा-रका का हुक्म आ़म है और (3) येह एक हद है लिहाज़ा येह दीगर तमाम हुदूद की तरह मकान बदलने से नहीं बदलती। हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा नो'मान बिन साबित رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मु-तवफ़्फ़ा 150 हि.) और हज़रते सय्यिदुना इमाम

1 ......صحیح البخاری،کتا ب المغازی،باب قصة عُکْل وعُرَیْنَة،الحدیث: ۴۱۹۲،ص۳۴۴۔

2 ......جامع الترمذی، ابواب الطهارة، باب ماجاء فی بول ما یؤکل لحمه، الحدیث :۷۳،ص۱۶۳۸۔

3 ......تفسیرالبغوی،المائدة،تحت الآیة ۳۳،ج۲،ص۲۶۔



www.dawateislami.net

मुहम्मद बिन हसन शैबानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "मुहारिबीन को डाकू नहीं कहा जाएगा।"

आयते मुबा-रका में हर्फ़े अत्फ़ اَوْ से क्या मुराद है, इस में मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इख़्तिलाफ़ है : हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह** बिन अब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "यहां हर्फ़े अत्फ़ इख़्तियार और जवाज़ के लिये है, पस इमाम डाकूओं को सज़ाए मौत और दीगर जो सज़ाएं चाहे दे सकता है।" हज़रते सय्यिदुना हसन, हज़रते सय्यिदुना इब्ने मुसय्यब, हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद और हज़रते सय्यिदुना इमाम नख़ई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का येही क़ौल है। हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह** बिन अब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की दूसरी रिवायत में है : "यहां हर्फ़े अत्फ़ जुर्म के मुख़्तलिफ़ होने की बिना पर अहकाम के इख़्तिलाफ़ और उन की तरतीब बयान करने के लिये है।" पस येह मुख़्तलिफ़ अक़्साम का हुक्म बयान करने के लिये है या'नी अगर वोह क़त्ल करें और माल भी ले लें तो उन्हें क़त्ल किया जाए और फांसी भी लगाई जाए और अगर वोह क़त्ल करें लेकिन माल न लें तो सिर्फ़ क़त्ल किया जाए। इन दोनों सूरतों में क़त्ल करना ज़रूरी है वली के मुआफ़ करने से भी साक़ित न होगा। अगर वोह सिर्फ़ माल लें तो उन के हाथ पाउं मुख़ालिफ़ सम्त से काट दिये जाएं। अगर वोह रास्ते में सिर्फ़ ख़ौफ़ज़दा करें तो जला वतन कर दिये जाएं। येह हज़रते सय्यिदुना क़तादा, हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई, हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई, हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن और अस्हाबे राय का क़ौल है।

## क़त्ल और फांसी की कैफ़िय्यत :

डाकू के क़त्ल और फांसी की कैफ़िय्यत में फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इख़्तिलाफ़ है। हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) के नज़्दीक उसे क़त्ल कर के ग़ुस्ल व कफ़न दिया जाएगा और उस पर नमाज़े जनाज़ा भी पढ़ी जाएगी, फिर उसे उस के जुर्म की मिस्ल तम्बीह और सज़ा के तौर पर तीन दिन लकड़ी पर उलटा लटकाया जाएगा, इस के बा'द उसे दफ़्न कर दिया जाएगा। हज़रते सय्यिदुना इमाम लैस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "उसे ज़िन्दा हालत में फांसी दी जाए फिर नेज़ा मारा जाए यहां तक कि वोह मर जाए।" एक क़ौल येह है कि "उसे तीन दिन ज़िन्दा लटकाया जाए फिर उतार कर क़त्ल कर दिया जाए।" एक क़ौल के मुताबिक़ उस के हाथ पाउं मुख़ालिफ़ सम्त से काट दिये जाएं, पस दायां हाथ काटा जाए और उसे दाग़ दिया जाए, फिर बायां पाउं काटा जाए और उसे भी दाग़ दिया जाए।



www.dawateislami.net

## जला व-त़नी के मु-तअ़ल्लिक़ इख़्तिलाफ़ :

जला व-त़नी में भी उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का इख़्तिलाफ़ है। ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا फ़रमाते हैं : "ह़ाकिम उसे तलाश करे और जिस जगह भी उसे पाए वहां से बाहर निकाल दे।" एक क़ौल येह है कि "उसे इस लिये तलाश किया जाए ताकि उस पर ह़द क़ाइम की जाए।" ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि ह़ाकिम उस का ख़ून मुबाह़ कर दे और ए'लान कर दे कि "जो उसे पाए क़त्ल कर दे।" येह हुक्म उस हुक्मरान के मु-तअ़ल्लिक़ है जो उसे पकड़ने पर क़ादिर न हो और जो उसे पकड़ने पर क़ादिर हो तो उसे जला वत़न करने से मुराद क़ैद करना है। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ जला व-त़नी से मुराद क़ैद है, अक्सर अहले लुग़त ने इसी क़ौल को इख़्तियार किया है, वोह इस की वज्ह येह बयान करते हैं कि अगर इस से मुराद तमाम ज़मीन से निकालना हो तो येह मुह़ाल है या दूसरे इस्लामी मुल्क की त़रफ़ निकालना हो तो येह भी जाइज़ नहीं क्यूं कि येह वहां के मुसल्मानों को तक्लीफ़ देगा या इस से मुराद काफ़िर ममालिक की त़रफ़ निकालना हो तो येह उसे मुरतद होने पर उभारेगा। लिहाज़ा येही सूरत बाक़ी रहती है कि उसे क़ैद कर दिया जाए और क़ैदी को जला वत़न ही समझा जाता है क्यूं कि न तो वोह दुन्या की ने'मतों और लज़्ज़ात से कोई फ़ाएदा उठा सकता है और न ही अपने क़राबत दारों और दोस्तों के साथ मिल बैठ सकता है। पस वोह ह़क़ीक़तन जला वत़न शख़्स की त़रह़ ही होता है। येही वज्ह है कि जब सालेह़ बिन अ़ब्दुल क़ुद्दूस को ज़िन्दीक़ होने की तोहमत की बिना पर तंग मकान में क़ैद किया गया और वहां उस का ठहरना त़वील हो गया तो उस ने येह अश्आ़र कहे :

خَرَجْنَا مِنَ الدُّنْيَا وَنَحْنُ مِنْ اَهْلِهَا فَلَسْنَا مِنَ الْمَوْتٰى عَلَيْهَا وَلَا الْاَحْيَاءِ

اِذْ جَاءَنَا السَّجَّانُ يَوْمًا لِحَاجَةٍ عَجِبْنَا وَقُلْنَا جَاءَ هٰذَا مِنَ الدُّنْيَا

**तरजमा : (1)** हम दुन्या से निकल गए ह़ालां कि हम दुन्या वालों में से हैं लेकिन इस ह़ालत में न मुर्दों में से हैं न ज़िन्दों में से।

**(2)** एक दिन जब दारोग़ए जेल किसी ज़रूरत के लिये हमारे पास आया तो हम ह़ैरान हो गए और कहने लगे कि येह दुन्या से आया है।

ذٰلِكَ से मुराद बयान कर्दा जज़ा है, خِزْیٌ से मुराद रुस्वाई, ज़िल्लत और अ़ज़ाब है और "وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ" से मुराद येह है कि आख़िरत में उन के लिये बहुत बड़ा अ़ज़ाब है मगर



www.dawateislami.net

येह कि तुम्हारे उन पर कुदरत पाने से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें मुआफ़ कर दे जैसा कि दूसरे दलाइल इस पर दलालत करते हैं। मो'तज़िला का मौक़िफ़ इस के बर अक्स है। "غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ" से मुराद येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के लिये ग़फ़ूर भी है और उन पर रहीम भी है पस वोह उन से डाका डालने की सज़ा ख़त्म फ़रमा देगा। एक क़ौल येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने और बन्दों के हुक़ूक़ से मु-तअ़ल्लिक़ा हर सज़ा और हक़ साक़ित फ़रमा देगा ख़्वाह वोह ख़ून हो या माल। अलबत्ता ! अगर उस के पास माल बि ऐनिही मौजूद हो तो वोह मालिक को लौटा दे। एक क़ौल के मुताबिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सिर्फ़ वोही सज़ा और हक़ साक़ित फ़रमाएगा जिस का तअ़ल्लुक़ **हुक़ूक़ुल्लाह** से हो।

**तम्बीह :**

इसे भी कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है जिस की एक गुरौहे उ़-लमा ने तसरीह़ की है लेकिन उन्हों ने इसे यूं मुक़य्यद ज़िक्र न किया जैसे मैं ने उ़न्वान में मुक़य्यद ज़िक्र किया है और मैं ने जो कुछ ज़िक्र किया वोह वाज़ेह़ है और इस पर आयते मुबा-रका दलालत करती है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्सानों को फ़क़त रास्तों पर धमकाने से मु-तअ़ल्लिक़ साबिक़ा अक़्साम में से हर एक क़िस्म पर और इस से मा क़ब्ल क़िस्म पर दुन्या में ज़िल्लत और आख़िरत में बड़े अ़ज़ाब का हुक्म इर्शाद फ़रमाया और येह इन्तिहाई सख़्त वईद है। फिर मैं ने देखा कि बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने मज़्कूरा आयते मुबा-रका ज़िक्र करने के बा'द वाज़ेह़ तौर पर फ़रमाया कि डाका डालना और रास्तों पर धमकाना भी कबीरा गुनाह है तो माल छीनना, ज़ख़्मी करना और क़त्ल करना वग़ैरा का इरतिकाब करना क्यूं न कबीरा गुनाह कहलाएगा जब कि अक्सर डाकू बे नमाज़ी भी होते हैं और लूटा हुवा माल शराब और ज़िना वग़ैरा पर ख़र्च कर देते हैं।

۞۞۞۞۞۞۞

**......जन्नत में ले जाने वाले आ'माल......**

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स ह़लाल खाए, सुन्नत पर अ़मल करे और लोग उस के शर से मह़फ़ूज़ रहें वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ऐसे लोग तो इस वक़्त बहुत हैं।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अ़न्क़रीब मेरे बा'द भी ऐसे लोग होंगे।" (المستدرک، الحدیث:۷۱۵۵، ج۵، ص۱۴۲)



www.dawateislami.net

**कबीरा नम्बर 371 : शराब पीना**

**कबीरा नम्बर 372 : दीगर नशा आवर अश्या पीना अगर्चे शाफ़ेई एक क़त्रा पिये**

**कबीरा नम्बर 373 : शराब या नशा आवर चीज़ में से किसी एक को बनाना और आने वाली क़ैद के साथ उसे बनवाना**

**कबीरा नम्बर 374 : शराब उठाना**

**कबीरा नम्बर 375 : शराब पीने के लिये उठवाना**

**कबीरा नम्बर 376 : शराब पिलाना**

**कबीरा नम्बर 377 : शराब पिलाने का कहना**

**कबीरा नम्बर 378 : शराब बेचना**

**कबीरा नम्बर 379 : शराब ख़रीदना**

**कबीरा नम्बर 380 : शराब बेचने या ख़रीदने का कहना**

**कबीरा नम्बर 381 : इस की क़ीमत खाना**

**कबीरा नम्बर 382 : आने वाली क़ैद के साथ शराब या इस की क़ीमत का अपने पास रोकना**

**( येह बारह बाब शराब के मु-तअ़ल्लिक़ हैं और दीगर नशा आवर अश्या का भी येही हुक्म है )**

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

يَسۡـَٔلُوۡنَکَ عَنِ الۡخَمۡرِ وَ الۡمَیۡسِرِ ؕ قُلۡ فِیۡہِمَاۤ اِثۡمٌ کَبِیۡرٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۫ وَ اِثۡمُہُمَاۤ اَکۡبَرُ مِنۡ نَّفۡعِہِمَا ؕ (پ۲، البقرہ:۲۱۹)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तुम से शराब और जूए का हुक्म पूछते हैं तुम फ़रमा दो कि इन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के कुछ दुन्यवी नफ़्अ़ भी, और उन का गुनाह उन के नफ़्अ़ से बड़ा है।

## आयते मुबा-रका की तफ़्सीर

''يَسۡـَٔلُوۡنَکَ عَنِ الۡخَمۡرِ وَ الۡمَیۡسِرِ ؕ'' का मा'ना येह है कि वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इन



www.dawateislami.net

दोनों (या'नी शराब और जूए) का हुक्म पूछते हैं।

## ख़म्र किसे कहते हैं ? :

**ख़म्र** (या'नी शराब) अंगूर के उस रस या ज्यूस को कहते हैं जिसे ख़ूब जोश दिया जाए यहां तक कि वोह झाग छोड़ दे। शराब पर मजाज़ी तौर पर इस लफ़्ज़ का इत्लाक़ किया जाता है बल्कि हक़ीक़ी तौर पर इसे येही नाम दिया जाता है आने वाली अहादीस इस की इल्लत को वाज़ेह करेंगी या सहीह तरीन क़ौल के मुताबिक़ लुग़त क़ियास से साबित करती है कि **ख़म्र** अंगूर के इलावा हर उस शै को कहते हैं जो जोश मारने और झाग देने वाली हो।

## ख़म्र कहने का सबब :

इसे **ख़म्र** कहने की वज्ह येह है कि येह अ़क़्ल को ढांप या'नी छुपा लेती है, औरत की ओढ़नी को भी इस लिये **ख़िमार** कहते हैं क्यूं कि वोह उस के चेहरे को छुपा लेती है। नीज़ **ख़ामिर** उस शख़्स को कहा जाता है जो अपनी गवाही छुपा लेता है। एक क़ौल येह है कि इस को **ख़म्र** इस लिये कहते हैं क्यूं कि येह ढांप दी जाती है यहां तक कि शिद्दत इख़्तियार कर लेती है, हदीसे पाक के येह अल्फ़ाज़ इसी से हैं : "خَمِّرُوْا اٰنِيَتَكُمْ या'नी अपने बरतन ढांपो।"(1)

बा'ज़ अहले लुग़त कहते हैं कि इसे **ख़म्र** कहने की वज्ह येह है कि येह अ़क़्ल को ख़ल्त मल्त कर देती है, इसी से अ़-रबों का येह क़ौल है : خَامَرَهُ دَاءٌ "या'नी बीमारी ने इसे ख़ल्त मल्त कर दिया।" बा'ज़ के नज़्दीक इसे **ख़म्र** इस लिये कहते हैं कि येह छोड़ दी जाती है यहां तक कि जोश आ जाए और इसी से येह क़ौल भी है : "اِخْتَمَرَ الْعَجِيْنُ या'नी आटे में ख़मीर बन गया और इस से मुराद येह है कि वोह अपने मक़्सूद तक पहुंच गया।" बहर हाल मज़्कूरा तमाम मआ़नी बाहम क़रीब क़रीब हैं पस इस बिना पर **ख़म्र** एक ऐसा मस्दर है जिस से इस्मे फ़ाइल या इस्मे मफ़ऊल मुराद है और जो फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام अंगूर के रस और दीगर चीज़ों के रस को भी **ख़म्र** कहते हैं उन्हों ने दर्जे ज़ैल 2 अहादीसे मुबा-रका से इस्तिदलाल किया है :

﴾1﴿...... "जिस दिन **ख़म्र** की हुरमत नाज़िल हुई इन 5 चीज़ों से बनी हुई शराब के मु-तअ़ल्लिक़ थी : अंगूर, खजूर, गन्दुम, जव और जुवार (क्यूं कि उस वक़्त शराब इन्हीं से बनती

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الاشربة، باب تغطية الاناء، الحديث: ٥٦٢٣، ص٤٨٢۔



www.dawateislami.net

थी) । **ख़म्र** वोह है जो अ़क़्ल को ढांप ले ।''(1)

﴾2﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मु-तअ़ल्लिक़ मरवी है कि उन्हों ने मिम्बरे रसूल पर खड़े हो कर फ़रमाया : ''ख़बरदार ! बेशक **ख़म्र** ह़राम कर दी गई है और येह इन 5 चीज़ों से बनती है : अंगूर, खजूर, शह्द, गन्दुम और जव । **ख़म्र** वोह है जो अ़क़्ल को ढांप ले ।''(2)

येह दोनों रिवायात इस बारे में सरीह़ हैं कि **ख़म्र** की ह़ुरमत इन अन्वाअ़ की ह़ुरमत को शामिल है, पहली रिवायत तो बिल्कुल वाज़ेह़ है, रही दूसरी रिवायत तो चूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आ़लिमे लुग़त हैं लिहाज़ा इस की ह़ुरमत के मु-तअ़ल्लिक़ इन के क़ौल की त़रफ़ रुजूअ़ किया जाएगा जब कि आप फ़रमा चुके हैं कि ''**ख़म्र** वोह है जो अ़क़्ल को ढांप ले ।'' ख़ुसूसन जब कि येह क़ौल अबू दावूद शरीफ़ की मज़्कूरा रिवायत के भी मुवाफ़िक़ है ।

﴾3﴿...... इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू दावूद सुलैमान बिन अश्अ़स सिजिस्तानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی ने येह ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाई कि ''शराब अंगूर से भी, खजूर से भी और शह्द से भी बनती है ।''(3)

येह ह़दीसे पाक भी सरा-ह़तन बयान करती है कि येह अश्या **ख़म्र** की ह़ुरमत के तह़त दाख़िल हैं क्यूं कि शारेअ़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का मक़्सद लुग़ात सिखाना नहीं था बल्कि इन का मक़्सद येह बयान करना था कि **ख़म्र** में साबित ह़ुक्म हर नशा आवर चीज़ में साबित है ।

## ख़म्र को पांच अश्या के साथ ख़ास करने का सबब :

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़त्ताबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 388 हि.) फ़रमाते हैं : ''**ख़म्र** को इन 5 अश्या के साथ ख़ास करने की वज्ह येह है कि उस ज़माने में सिर्फ़ इन्ही चीज़ों से शराब बनती थी । लिहाज़ा हर वोह चीज़ जो मा'नवी त़ौर पर उस की मिस्ल हो वोह भी इसी त़रह़

---

(1)......سنن ابی داود، کتاب الشربة، باب تحریم الخمر، الحدیث:٣٦٦٩،ص١٤٩٥،"الذرة"بدله"العسل"۔

(2)......صحیح مسلم،کتاب التفسیر،باب فی نزول تحریم الخمر، الحدیث:٧٥٢٠،ص١٢٠٢، بتغیرقلیلٍ۔

(3)......سنن ابی داود،کتاب الاشربة،باب الخمر مما ھی،الحدیث:٣٦٧٦،ص١٤٩٥۔



www.dawateislami.net

ह़राम है, जैसा कि सूद की हुरमत वाली ह़दीसे पाक में 6 मख़्सूस अश्या का ज़िक्र है लेकिन वोह ह़दीसे पाक इन 6 अश्या के इलावा में सूद का हुक्म साबित होने से मानेअ़ नहीं।''

## हर नशा आवर चीज़ ह़राम है :

﴾4﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त बयान है : ''हर नशा आवर चीज़ शराब है और हर नशा आवर चीज़ ह़राम है।''(1)

﴾5﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सरापा अ़-ज़मत है : ''हर नशा आवर चीज़ शराब है और हर शराब ह़राम है।''(2)

﴾6﴿...... एक रिवायत में है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ बयान है : ''ख़बरदार ! हर नशा आवर चीज़ शराब है और हर शराब ह़राम है।''(3)

﴾7﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से शह्द की शराब के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा गया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हर शराब जो नशा लाए वोह ह़राम है।''(4)

## शर्ह़े ह़दीस :

इस ह़दीसे पाक के तह़त ह़ज़रते सय्यिदुना ख़त्ताबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 388 हि.) फ़रमाते हैं कि इस रिवायत में दो ए'तिबार से दलालत है :

﴾1﴿...... जब आयते मुबा-रका ने हुरमते शराब को बयान फ़रमाया और लोग इस के नाम से ना वाक़िफ़ थे तो शारेअ़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने येह कहना पसन्द फ़रमाया कि इस लफ़्ज़ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मुराद येह है और (लु-ग़तन) इस के लिये **ख़म्र** का लफ़्ज़ इस्ति'माल किया गया जैसे नमाज़, रोज़ा के लिये सलात और सौम का लफ़्ज़ इस्ति'माल किया गया।

﴾2﴿...... इस से मुराद येह है कि शह्द की शराब अंगूर की शराब की त़रह़ ह़राम है क्यूं कि

---

(1)......صحيح مسلم، كتاب الاشربة، باب بيان ان كل مسكر خمر وان كل خمر حرام، الحديث:۵۲۱۸،ص۱۰۳۶۔

(2)......المرجع السابق، الحديث :۵۲۲۱۔

(3)......المرجع السابق، الحديث :۵۲۲۱۔
المسند للامام احمد بن حنبل، حديث قيس بن سعد بن عبادة، الحديث:۱۵۴۸۲ / ۲، ج۵، ص۲۷۴۔

(4)......صحيح البخارى، كتاب الاشربة، باب الخمر من العَسَل وهو البِتْع، الحديث:۵۵۸۵،ص۴۷۹۔



www.dawateislami.net

इन का क़ौल "هٰذَا خَمْرٌ" अगर ह़क़ीक़त के तौ़र पर हो तो मुद्दआ़ ह़ासिल हो गया और अगर मजाज़न हो तो इस का हुक्म उस के हुक्म की त़रह़ होगा क्यूं कि हम ने वाज़ेह़ किया है कि शारेअ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मक़्सद लुग़ात सिखाना नहीं बल्कि अह़काम की ता'लीम देना था, शह्द की शराब के मु-तअ़ल्लिक़ सह़ीह़ैन (या'नी बुख़ारी व मुस्लिम) की मज़्कूरा ह़दीसे पाक इसे ह़लाल क़रार देने वालों की ज़िक्र कर्दा हर तावील को बात़िल कर देती है और उन लोगों का क़ौल भी फ़ासिद हो जाता है जिन का गुमान है कि ग़ैर नशा आवर नबीज़ ह़लाल है, क्यूं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से नबीज़ की एक क़िस्म के मु-तअ़ल्लिक़ इस्तिफ़्सार किया गया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिन्स की हु़रमत को बयान फ़रमाया जो क़लील व कसीर को शामिल है और अगर यहां नबीज़ की अक़्साम और मिक़्दारों में से किसी चीज़ में कोई तफ़्सील होती तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे न छोड़ते बल्कि ज़रूर बयान फ़रमा देते। चुनान्चे,

﴾8﴿...... एक ह़दीसे पाक में शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस चीज़ की ज़ियादा मिक़्दार नशा लाए उस की कम मिक़्दार भी ह़राम है।"(1)

﴾9﴿...... दूसरी रिवायत में ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस शै का एक फ़रक़ (या'नी सोलह रत़्ल के बराबर पैमाना) नशा दे उस का चुल्लू भर भी ह़राम है।"(2)

﴾10﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हर **मुस्किर व मुफ़्तिर** (या'नी नशा आवर और अ़क़्ल में फ़ुतूर डालने वाली) चीज़ से मन्अ़ फ़रमाया है।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़त्ताबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 388 हि.) फ़रमाते हैं : "**मुफ़्तिर** से मुराद हर वोह शराब है जो आ'ज़ा में फ़ुतूर और बे ह़िसी लाती है।" हर नशा आवर नबीज़ की हु़रमत के क़ाइलीन ने अपने मौक़िफ़ पर इस से भी इस्तिद्लाल किया है कि लफ़्ज़े ख़म्र किन अश्या से मुश्तक़ है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आ़लीशान भी इन की दलील है :

1 ......سنن ابی داود، کتا ب الاشربة، باب ماجاء فی السکر، الحدیث:۳۶۸۱،ص۱۴۹۶۔

2 ......جامع الترمذی، ابوا ب الاشربة، باب ماجاء ما اسکر کثیره فقلیله حرام، الحدیث :۱۸۶۶،ص۱۸۴۱۔

3 ......سنن ابی داود، کتا ب الاشربة، باب ماجاء فی السکر، الحدیث :۳۶۸۶، ص۱۴۹۶۔



www.dawateislami.net

اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ (پ۷، المائدة: ۹۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** शैतान येही चाहता है कि तुम में बैर और दुश्मनी डलवा दे शराब और जूए में और तुम्हें **अल्लाह** की याद और नमाज़ से रोके।

आयते मुबा-रका में बयान कर्दा इ़ल्लत तमाम नबीज़ों में पाई जाती है क्यूं कि इन सब में मज़्कूरा ख़राबियों का गुमान पाया जाता है।

इसी त़रह़ अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا के बारे में मरवी है कि उन्हों ने अ़र्ज़ की : **"या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! शराब अ़क्ल को सल्ब करने वाली और माल को ज़ाएअ़ करने वाली है।"(1)

और येह इ़ल्लत हर क़िस्म की नबीज़ में मौजूद है। अलबत्ता ! इस आयते मुबा-रका : وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا حَسَنًا (پ۱۴، النحل: ۶۷) "**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और खजूर और अंगूर के फलों में से कि इस से नबीज़ बनाते हो और अच्छा रिज़्क़।" से दलील पकड़ना मरदूद है कि यहां سَكَرًا सियाक़े इस्बात में नकिरह है और अगर आप येह कहें कि येह नशा ही नबीज़ है इस बिना पर कि मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام का इस बात पर इज्माअ़ है कि येह आयते मुबा-रका शराब की हु़रमत पर दलालत करने वाली आयात से पहले नाज़िल हुई लिहाज़ा हु़रमत वाली आयात इस हुक्म को मन्सूख़ करने वाली या ख़ास करने वाली हैं। चुनान्चे

मरवी है कि " सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **ह़ज्जतुल वदाअ़** के साल ह़ाजियों को पानी पिलाने की जगह टेक लगा कर तशरीफ़ फ़रमा हुए और फ़रमाया : "मुझे पानी पिलाओ।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "हम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को वोह नबीज़ न पिलाएं जो हम अपने घरों में बनाते हैं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोही पिलाओ जो लोगों को पिला रहे हो।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नबीज़ का एक पियाला ले कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो गए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे सूंघा तो चेहरए अक़्दस पर शि-कनें नुमूदार हो गईं और उसे वापस लौटा दिया, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने

(1)......التفسير الكبير، البقرة، تحت الآية ۲۱۹، ج۲، ص۳۹۸۔



www.dawateislami.net

अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अहले मक्का पर इन की शराब ह़राम फ़रमा दी है ?'' तो इर्शाद फ़रमाया : ''मुझे पियाला वापस करो।'' उन्हों ने वापस किया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आबे ज़मज़म मंगवा कर उस में उंडेला और इस के बा'द नोश फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया : ''जब तुम पर कोई पीने वाली शै सख़्त (नशा आवर) हो जाए तो उस का जोश पानी के ज़रीए ख़त्म कर लिया करो।''(1)

अगर मज़्कूरा रिवायत को सह़ीह़ तस्लीम कर भी लिया जाए तब भी येह दलील मरदूद है क्यूं कि हो सकता है वोह ऐसा पानी हो जिस का खारा पन ज़ाइल करने की ख़ातिर उस में खजूरें डाली गई हों लेकिन पानी का ज़ाएक़ा कुछ तुर्शी की वज्ह से तब्दील हो गया हो चूंकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़बीअ़त मुबारक बहुत ज़ियादा पाकीज़ा थी लिहाज़ा आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे बरदाश्त न किया और चेह्‌रए अन्वर पर शिकन पड़ गए, फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस की तुर्शी या ज़ाएक़ा को ख़त्म करने के लिये उस में मज़ीद पानी मिला दिया।

और सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की बा'ज़ रिवायात इस की ह़िल्लत का तक़ाज़ा करती हैं। चुनान्चे, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने बा'ज़ आ़मिलीन को लिखा : ''मुसल्मानों को ऐसा त़िलाअ पीने दीजिये जिस के 2 ह़िस्से जल जाएं।''(2) (त़िलाअ अंगूर का वोह शीरा जिस को इतना पकाया जाए कि वोह गाढ़ा हो जाए)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा और ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के मु-तअ़ल्लिक़ शराब पीने की रिवायत भी मरदूद है। इसे सह़ीह़ तस्लीम कर भी लें तब भी दीगर रिवायात इस की तरदीद करती हैं। लिहाज़ा ए'तिराज़ दूर हो गया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सह़ीह़ सनद के साथ साबित रिवायात बाक़ी रह गई जिस में फ़रमाया कि हर नशा आवर चीज़ अगर्चे नशा न लाए ह़राम है ख़्वाह कम हो या ज़ियादा। क्यूं कि येह बात बयान हो चुकी है कि इस की हुरमत की अह़ादीस इतनी सरीह़ हैं कि तावील का एह्‌तिमाल नहीं रखतीं और इस के ह़लाल होने का शुबा कमज़ोर है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) फ़रमाते हैं : ''मैं इस की ह़िल्लत का ए'तिक़ाद रखने वाले को ह़द लगाऊंगा मगर उस की

---

1 ......التفسير الكبير، البقرة، تحت الآية ٢١٩، ج٢، ص٣٩٨۔

2 ......سنن النسائی، كتاب الاشربة، باب ذكر ما يجوز شربه من الطلاء وما لا يجوز، الحديث: ٥٧١٨، ص٢٤٥١۔



www.dawateislami.net

गवाही क़बूल करूंगा।" आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस लिये ह़द लगाने का हुक्म दिया क्यूं कि इस की ह़िल्लत का शुबा कमज़ोर है और दूसरा येह कि ए'तिबार उस ह़ाकिम के मज़हब का होगा जिस के पास झगड़ा ले जाया जाए न कि मद्दे मुक़ाबिल का, इस के मक़्बूलुश्शहादह होने की वज्ह येह है कि वोह अपने अ़क़ीदे में फ़िस्क़ का मुर-तकिब नहीं हुवा।

जिस शै के पीने से बिल्कुल नशा न आए उस के हुक्म में इख़्तिलाफ़ है, अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام का इस की हुरमत पर इत्तिफ़ाक़ है और शराब के तमाम अह़काम इस शै के लिये साबित होते हैं और उन्हों ने मुख़ा-लफ़त और ग़लत़ बयानी करने वाले के जवाब में त़वील कलाम फ़रमाया और ऐसी शराब का पीना जो बिल फ़े'ल नशा लाए ह़राम है और पीने वाला बिल इज्माअ़ फ़ासिक़ है, इसी त़रह़ निचोड़े हुए अंगूर या खजूर की थोड़ी सी मिक़्दार जब वोह आग पर पकाए बिग़ैर शदीद जोश में आ जाए तो वोह भी ह़राम है और इज्माअ़न नजिस है, इस के पीने वाले को ह़द लगाई जाएगी और वोह फ़ासिक़ हो जाएगा बल्कि अगर ह़लाल जान कर पिये तो काफ़िर हो जाएगा।

उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि शराब की हुरमत के मु-तअ़ल्लिक़ 4 आयात नाज़िल हुईं। पहले इर्शाद फ़रमाया :

وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِیْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّ رِزْقًا حَسَنًاؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ۝۶۷ (پ۱۴، النحل: ۶۷)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और खजूर और अंगूर के फलों में से कि इस से नबीज़ बनाते हो और अच्छा रिज़्क़ बेशक इस में निशानी है अ़क़्ल वालों को।

मुसल्मान फिर भी इसे पीते रहे इस लिये कि येह उन के लिये ह़लाल थी फिर अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ वग़ैरा जैसे सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमें शराब के बारे में फ़तवा दीजिये, क्यूं कि येह अ़क़्ल को ख़त्म करने वाली और माल को सल्ब करने वाली है।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह हुक्म नाज़िल हुवा :

یَسْــٴَـلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَ الْمَیْسِرِؕ قُلْ فِیْهِمَاۤ اِثْمٌ كَبِیْرٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ٘ وَ اِثْمُهُمَاۤ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَاؕ (پ۲، البقرۃ: ۲۱۹)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तुम से शराब और जूए का हुक्म पूछते हैं, तुम फ़रमा दो कि इन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के कुछ दुन्यवी नफ़्अ़ भी और इन का गुनाह इन के नफ़्अ़ से बड़ा है।

पस नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :



www.dawateislami.net

''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शराब की हुरमत की त़रफ़ तवज्जोह दिला रहा है, लिहाज़ा जिस के पास शराब हो तो उसे बेच दे।''(1)

कुछ लोगों ने इस फ़रमान اِثْمٌ كَبِيْرٌ की वज्ह से शराब छोड़ दी और कुछ इस फ़रमान وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ की वज्ह से पीते रहे यहां तक कि एक दफ़्आ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खाना तय्यार कर के कुछ सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को दा'वत दी और उन्हें शराब भी पेश की, उन्हों ने शराब पी तो मदहोश हो गए, नमाज़े मग़रिब का वक़्त हुवा तो उन में से एक नमाज़ पढ़ाने के लिये आगे बढ़ा और उस ने इन आयाते मुबा-रका : ''قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ(پ۳۰،الکافرون:۱،۲)'' **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमाओ ! ऐ काफ़िरो ! न मैं पूजता हूं जो तुम पूजते हो।'' में ''لَاۤ اَعْبُدُ'' की बजाए ''اَعْبُدُ'' पढ़ा, या'नी اَعْبُدُ से पहले ह़र्फ़े لَا को छोड़ दिया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते मुबा-रका नाज़िल फ़रमाई :

لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَ اَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ (پ۵، النساء:۴۳)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** नशे की ह़ालत में नमाज़ के पास न जाओ जब तक इतना होश न हो कि जो कहो उसे समझो।

पस नमाज़ के अवक़ात में नशा ह़राम हो गया और जब येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई तो कुछ लोगों ने अपने ऊपर शराब ह़राम कर ली और कहा : ''उस चीज़ में कोई भलाई नहीं जो हमारे और नमाज़ के दरमियान ह़ाइल हो जाए।'' और कुछ लोगों ने सिर्फ़ नमाज़ के अवक़ात में शराब पीना छोड़ दी, उन में से कोई शख़्स नमाज़े इशा के बा'द शराब पीता तो सुब्ह़ तक उस का नशा ज़ाइल हो चुका होता और फ़ज्र की नमाज़ के बा'द शराब पीता तो ज़ोहर के वक़्त तक होश में आ जाता।

एक दफ़्आ़ ह़ज़रते सय्यिदुना इत्बान बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खाना तय्यार किया और मुसल्मानों को दा'वत दी, जिन में ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी थे, उन्हों ने उन के लिये ऊंट का सर भूना, उन्हों ने उसे खाया और शराब भी पी यहां तक कि उन पर नशा त़ारी हो गया, फिर आपस में फ़ख़्र करने और बुरा भला कहने लगे और अश्आ़र पढ़ने लगे फिर किसी ने एक ऐसा क़सीदा पढ़ा जिस में अन्सार की हज्व थी और उस की क़ौम

(1)......المعجم الكبير، الحديث ۱۲۹۰۷، ج۱۲، ص۵۹۱۔

صحيح مسلم، كتاب المساقاة والمزارعة، باب تحريم بيع الخمر، الحديث: ۴۰۴۳، ص۹۵۲۔



www.dawateislami.net

के लिये फ़ख़्र था तो एक अन्सारी ने ऊंट के जबड़े की हड्डी ली और ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के सर पर दे मारी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه शदीद ज़ख़्मी हो गए और सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर उस अन्सारी की शिकायत की तो अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अ़र्ज़ की : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें शराब के बारे में वाज़ेह़ हुक्म बयान फ़रमा दे।" पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह हुक्म नाज़िल फ़रमाया :

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَ الْمَیْسِرُ وَ الْاَنْصَابُ وَ الْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّیْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۹۰﴾ اِنَّمَا یُرِیْدُ الشَّیْطٰنُ اَنْ یُّوْقِعَ بَیْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَآءَ فِی الْخَمْرِ وَ الْمَیْسِرِ وَ یَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ عَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿۹۱﴾ (پ۷، المائدۃ:۹۰،۹۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! शराब और जूआ और बुत और पांसे नापाक ही हैं शैत़ानी काम तो इन से बचते रहना कि तुम फ़लाह़ पाओ, शैत़ान येही चाहता है कि तुम में बैर और दुश्मनी डलवा दे शराब और जूए में और तुम्हें **अल्लाह** की याद और नमाज़ से रोके तो क्या तुम बाज़ आए।

येह हुक्म ग़ज़्वए अह़ज़ाब के कुछ दिन बा'द नाज़िल हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : "ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! हम इस से रुक गए।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : "इस तरतीब पर हुरमत वाक़ेअ़ करने में ह़िक्मत येह थी कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जानता था कि येह लोग शराब नोशी के बहुत दिलदादा हैं और इन्हें इस से बहुत ज़ियादा नफ़्अ़ भी ह़ासिल होता है, अगर इन्हें एक ही हुक्म से मन्अ़ किया गया तो येह इन पर गिरां गुज़रेगा, लिहाज़ा उन पर शफ़्क़त फ़रमाते हुए द-रजा ब द-रजा हुरमत नाज़िल फ़रमाई। कुछ लोग कहते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सूरए ब-क़रह की मज़्कूरा आयते मुबा-रका से शराब और जूए को ह़राम फ़रमाया, फिर येह हुक्म नाज़िल हुवा "لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَ اَنْتُمْ سُكٰرٰی" येह फ़रमाने बारी तआ़ला भी शराब नोशी की हुरमत का तक़ाज़ा करता है क्यूं कि शराब पीने वाले पर नशे की ह़ालत में नमाज़ मुश्किल होती है तो इस से मुमा-न-अ़त ज़िम्नी त़ौर पर पीने से मुमा-न-अ़त है, फिर सूरए माइदह की मज़्कूरा आयते मुबा-रका नाज़िल हुई जो कि हुरमत में इन्तिहाई पुख़्ता है।"(2)

1 ......تفسیر البغوی، البقرۃ، تحت الآیۃ ۲۱۹، ج ۱، ص ۱۴۰۔

2 ......التفسیر الکبیر، البقرۃ، تحت الآیۃ ۲۱۹، ج ۲ ص ۳۹۶۔



www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "जब शराब को हराम क़रार दिया गया तो उन दिनों अहले अ़रब के लिये इस से ज़ियादा ऐश वाली कोई चीज़ न थी और न ही उन के लिये किसी चीज़ की हुरमत इस से सख़्त थी।"[1]

मज़ीद फ़रमाते हैं : "हमारे पास आग के बिग़ैर कच्ची खजूरों की बनी हुई शराब थी, मैं हज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और फ़ुलां फ़ुलां को शराब पिला रहा था कि एक शख़्स आया और बताया कि शराब ह़राम हो गई है, तो उन सब ने मुझ से कहा : "ऐ अनस ! इन मटकों को उंडेल दीजिये।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि लोगों के बताने के बा'द उन सब सहाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने उस के मु-तअ़ल्लिक़ न तो किसी से पूछा और न इस की त़रफ़ दोबारा लौटे।"[2]

## जूए का बयान :

مَیْسِر से मुराद **क़िमार** या'नी जूआ है, अन्क़रीब **बाबुश्शहादात** में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़रमाने आ़लीशान "فِیْہِمَاۤ اِثْمٌ كَبِیْرٌ" के तह़त कलाम आएगा और فِیْہِمَاۤ से मुराद इन दोनों (या'नी जूए और शराब) का आ़दी है। लफ़्ज़े كَبِیْر को كَبِیْر और كَثِیْر दोनों त़रह़ पढ़ा गया है, गुनाह के बड़ा होने को बयान करने के लिये मुबा-लग़े के त़ौर पर اِثْمٌ की सिफ़त كَبِیْرٌ ज़िक्र की गई है। इसी त़रह़ की क़ुरआने ह़कीम में येह मिसालें भी हैं :

اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِیْرًا ۝۲ (پ۴، النساء:۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक येह बड़ा गुनाह है।

اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآىِٕرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ (پ۵، النساء:۳۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** अगर बचते रहो कबीरा गुनाहों से जिन की तुम्हें मुमा-न-अ़त है।

चूंकि शराब पीना और जूआ खेलना दोनों कबीरा गुनाह हैं इस लिये इन दोनों की सिफ़त भी कबीर ही ज़ियादा मुनासिब है।

**क़ुर्राए सब्आ़** इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि सूरए ब-क़रह की गुज़श्ता आयत के अल्फ़ाज़ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا में اَكْبَرُ ही पढ़ा जाएगा जब कि **अ-ख़वैन** (या'नी इमाम ह़म्ज़ा और इमाम किसाई رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَيْهِمَا) ने इसे كَثِيْرٌ पढ़ा है। इस की कुछ वुजूहात हैं : (1)...... इस ए'तिबार से कि शराब पीने और जूआ खेलने वाले दोनों ना फ़रमान हैं (या'नी इन में से हर एक गुनाहगार है) (2)...... या इस ए'तिबार से कि शराब और जूए के आ़दी लोगों पर मुसलसल और दुगना

1 ......تفسير البغوی، البقرة، تحت الآية ۲۱۹، ج۱، ص۱۴۰۔

2 ......صحيح البخاری، كتاب التفسير، تفسير سورة المائدة، باب اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ......الخ، الحديث: ۴۶۱۷، ص۳۸۱۔



www.dawateislami.net

अ़ज़ाब होगा (3)...... या इस ए'तिबार से कि शराब पीने और जूआ खेलने वाले बुरी बातों और क़बीह़ कामों का इरतिकाब करते हैं (4)...... या इस ए'तिबार से कि अंगूर से ले कर शराब बनने तक शराबी ने इसे लिये रखा क्यूं कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शराब पर ला'नत फ़रमाई और इस के साथ दीगर 10 दूसरी चीज़ों पर भी ला'नत फ़रमाई जिन का बयान आगे आएगा (5)...... या इस ए'तिबार से कि लफ़्ज़े اِثْم यहां पर مَنَافِع के मुक़ाबिल है और मनाफ़ेअ़ जम्अ़ का सीग़ा है पस मुनासिब येही है कि इस का मुक़ाबिल भी जम्इय्यत या'नी कसरत के मा'ना में हो। पस दोनों क़िराअतें न सिर्फ़ वाज़ेह़ हो गईं बल्कि येह भी मा'लूम हो गया कि दोनों का मक़्सूद एक ही चीज़ है क्यूं कि कबीर को कसीर और कसीर को कबीर कह सकते हैं जैसा कि सग़ीर को ह़क़ीर और यसीर कह सकते हैं।[1]

मु-तकल्लिम पर ज़रूरी है कि वोह बिग़ैर किसी ए'तिराज़ के तमाम क़िराअतों की तौजीह को क़बूल कर ले क्यूं कि क़िराअते मु-तवातिरा में कमज़ोरी है और **जारुल्लाह ज़मख़्शरी मो'तज़िली** वग़ैरा ने कई मक़ामात पर (शराब की अ़-दमे हुरमत का क़ौल) ज़िक्र किया है और येह उस की लग़्ज़िश और ख़त़ा है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़रमाने आ़लीशान اِثْمٌ كَبِيْرٌ से शराब की हुरमत साबित होती है जिस की दलील येह आयते मुबा-रका है :

قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّیَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ (پ۸، الاعراف:۳۳)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमाओ ! मेरे रब ने तो बे ह़याइयां ह़राम फ़रमाई हैं जो इन में खुली हैं और जो छुपी और गुनाह।

اِثْمٌ से मुराद या तो सज़ा है या इस का सबब और इन दोनों में से हर एक के साथ किसी ह़राम चीज़ की ही सिफ़त बयान की जा सकती है इसी त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا" पस गुनाह को नफ़्अ़ से ज़ियादा क़रार दिया और येह बात हुरमत को साबित करती है।

## चन्द सुवालात व जवाबात :

**सुवाल (1) :** सूरए ब-क़रह की मज़्कूरा आयते मुक़द्दसा शराब पीने की हुरमत पर दलालत नहीं करती बल्कि इस बात पर दलालत करती है कि शराब पीने में एक गुनाह है तो आप इस गुनाह को ह़राम समझो, फिर आप येह क्यूं कहते हैं कि शराब नोशी में चूंकि येह गुनाह पाया जाता है इस लिये इस का ह़राम होना लाज़िम है ?

1......اللباب فی علوم الکتاب لابن عادل الحنبلی، البقرة، تحت الآیة ۲۱۹، ج۴، ص۳۶،۳۷۔



www.dawateislami.net

**जवाब :** लोगों का सुवाल मुत्लक़ शराब के बारे में था, जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वाज़ेह़ फ़रमाया कि इस में गुनाह है, तो इस का मत़्लब येह था कि येह गुनाह इसे तमाम ह़ालतों में लाज़िम है, लिहाज़ा शराब पीना इस ह़रामे लुज़ूमियत को लाज़िम है और जो चीज़ ह़ुरमत को लाज़िम हो वोह भी ह़राम होती है पस शराब नोशी का ह़राम होना लाज़िम है।

**सुवाल (2) :** येह आयते मुबा–रका ह़ुरमते शराब पर दलालत नहीं करती क्यूं कि इस में तो इस के मनाफ़ेअ़ साबित किये गए हैं ह़ालां कि ह़राम चीज़ में मन्फ़अ़त नहीं होती ?

**जवाब :** शराब से नफ़अ़ का ह़ुसूल इस की ह़ुरमत के मानेअ़ नहीं क्यूं कि ख़ास का सुबूत आ़म के सुबूत का लाज़िम है और इस पर दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आ़लीशान से भी ए'तिराज़ नहीं किया जा सकता कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी उम्मत की शिफ़ा उस चीज़ में नहीं रखी जो इन पर ह़राम है।"(1)

चूंकि मनाफ़ेअ़ शिफ़ा से आ़म हैं लिहाज़ा शिफ़ा की नफ़ी से मुत्लक़ मनाफ़ेअ़ की नफ़ी लाज़िम नहीं आती।

**सुवाल (3) :** सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने भी सिर्फ़ इस आयते मुबा–रका को ह़ुरमत पर दलालत करने में काफ़ी नहीं समझा यहां तक कि सूरए माइदह और (नशे की ह़ालत में) नमाज़ की मुमा–न–अ़त वाली आयाते मुबा–रका नाज़िल हुई ?

**जवाब :** ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि येह आयते मुबा–रका नाज़िल हुई और शराब ह़राम हो गई और ज़िक्र कर्दा तवक़्क़ुफ़ तमाम सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के मु–तअ़ल्लिक़ मरवी नहीं बल्कि बा'ज़ के बारे में है, और अकाबिर सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का ऐसे वाज़ेह़ हुक्म की दर–ख़्वास्त करना जाइज़ था जो ह़ुरमते शराब में इस आयते मुबा–रका से मुअक्कद हो जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने मुर्दों को ज़िन्दा करने के मुशा–हदे की दर–ख़्वास्त की ताकि उन के यक़ीन व इत़्मीनान में इज़ाफ़ा हो जाए।

**सुवाल (4) :** इस आयते मुबा–रका से तो येह साबित होता है कि शराब के औसाफ़ में से है कि इस में बहुत बड़ा गुनाह है, अगर येह आयते मुबा–रका ह़ुरमते शराब पर दलालत करती तो इस बात पर भी दलालत करती कि येह न हमारी शरीअ़त में कभी ह़लाल हुई और न किसी दूसरी शरीअ़त में ह़लाल थी जब कि येह बात़िल है ?

**जवाब :** इस फ़रमाने बारी तआ़ला "فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ" से मुराद ह़ाल की ख़बर देना है न कि माज़ी

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث: ٧٤٩، ج٢٣، ص٣٢٦، بتغيرٍقليلٍ۔



www.dawateislami.net

की, लिहाज़ा इस आयते मुबा–रका से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आगाह फ़रमाया कि शराब पीना इस उम्मत के लिये फ़साद का बाइस है इन से पहलों के लिये नहीं।(1)

## शराब के नुक़्सानात :

शराब का एक बड़ा नुक़्सान येह भी है कि येह उस अ़क़्ल को ख़त्म कर देती है जो इन्सान की आ'ला व अशरफ़ सिफ़ात में से है, जब शराब आ'ला औसाफ़ की ह़ामिल चीज़ या'नी अ़क़्ल की दुश्मन है तो इसी से इस का घटिया होना लाज़िम हो गया।

## अ़क़्ल की वज्हे तस्मिया :

अ़क़्ल को अ़क़्ल इस लिये कहते हैं कि येह साह़िबे अ़क़्ल को उन बुरे अफ़आ़ल से रोकती है जिन की त़रफ़ उस की त़बीअ़त माइल होती है। लिहाज़ा जब वोह शराब पीता है तो बुराइयों से रोकने वाली अ़क़्ल ज़ाइल हो जाती है और वोह उन बुराइयों से मानूस हो जाता है और चूं कि शराब भी फ़ित़री त़ौर पर उन्ही बुराइयों में से एक है, लिहाज़ा वोह न सिर्फ़ इसे पीने का इरतिकाब करता है बल्कि इस से बढ़ कर दूसरे गुनाहों का भी मुर–तकिब होता है यहां तक कि उस की अ़क़्ल वापस लौट आए।(2)

## पेशाब से वुज़ू करने वाला शराबी :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अबिद्दुन्या رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मेरा गुज़र नशे में मस्त एक शख़्स के पास से हुवा वोह अपने हाथ पर पेशाब कर रहा था और वुज़ू करने वाले की तरह़ उस से अपना हाथ धो रहा था और कह रहा था : ''اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ جَعَلَ الْاِسْلَامَ نُوْرًا وَّالْمَاءَ طُھُوْرًا'' या'नी तमाम ता'रीफ़ें उस ज़ात के लिये जिस ने इस्लाम को नूर और पानी को पाक करने वाला बनाया।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन मिरदास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मु–तअ़ल्लिक़ मरवी है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में इन से पूछा गया : ''आप शराब क्यूं नहीं पीते ह़ालां कि येह तो जिस्म की ह़रारत में इज़ाफ़ा करती है ?'' तो इन्हों ने जवाब दिया : ''मैं न तो अपनी जहालत को ख़ुद अपने हाथ से पकड़ने वाला हूं कि उसे अपने पेट में दाख़िल करूं और न ही इस बात को पसन्द करता हूं कि अपनी क़ौम के सरदार की ह़ैसिय्यत से सुब्ह़ करूं मगर मेरी शाम बे वुक़ूफ़ शख़्स जैसी हो।''(3)

शराब का एक नुक़्सान येह भी है कि येह ज़िक्रे इलाही और नमाज़ से रोकती है और

---

1 ......التفسیر الکبیر، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۱۹، ج۲، ص۳۹۹۔

2 ......المرجع السابق، ص۴۰۰۔ 3 ......المرجع السابق، ص۴۰۱۔



www.dawateislami.net

दुश्मनी और बुग़्ज़ का बाइ़स बनती है जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सूरए माइदह की मज़्कूरा आयते मुक़द्दसा में बयान फ़रमाया।

## शराबी की ह़िर्स बढ़ती ही रहती है :

शराब का एक नुक़्सान येह भी है कि येह एक ऐसी मा'सियत है जिस के ख़्वास में से है कि इन्सान जब इस से मानूस हो जाता है तो उस की त़रफ़ मैलान बढ़ जाता है और दीगर गुनाहों के बर अ़क्स इस के लिये उस की जुदाई बरदाश्त करना मुह़ाल हो जाता है और दीगर तमाम गुनाहों के बर ख़िलाफ़ इस का आ़दी इस से नहीं उक्ताता। क्या आप ज़ानी को नहीं देखते कि उस की ख़्वाहिश एक ही बार इस गुनाह के इरतिकाब से ख़त्म हो जाती है और जब भी वोह इस गुनाह के इरतिकाब में इज़ाफ़ा करता है तो उस का फ़ुतूर भी ज़ियादा हो जाता है मगर शराबी जब शराब नोशी की कसरत करता है तो वोह पहले से ज़ियादा चाको चौबन्द हो जाता है और जिस्मानी लज़्ज़ात उसे घेर लेती है और वोह आख़िरत की याद से ग़ाफ़िल हो जाता है और उसे भूली बिसरी बात की त़रह़ पसे पुश्त डाल देता है, लिहाज़ा वोह उन लोगों में से हो जाता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को भूल गए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अपनी जानों से भी ग़ाफ़िल कर दिया वोही लोग फ़ासिक़ हैं।

ख़ुलासए कलाम येह है कि जब अ़क़्ल ज़ाइल हो जाए तो हर क़िस्म की बुराइयां मुकम्मल त़ौर पर आ जाती हैं, इसी वज्ह से सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "शराब से बचो क्यूं कि येह तमाम बुराइयों की जड़ है।"(1)

इस के मज़्कूरा मनाफ़ेअ़ में से एक येह भी है कि अहले अ़रब जब कभी अपने क़ुर्बो जवार से शराब ले कर आते तो उस की ता'रीफ़ में ह़द द-रजा मुबा-लग़ा आमेज़ी करते, ख़रीदार जब इस के ख़रीदने में क़ीमत कम करवाना छोड़ देता तो वोह उसे इस की फ़ज़ीलत व करामत शुमार करते पस इस वज्ह से उन का नफ़्अ़ ज़ियादा हो जाता था।

इस के मज़ीद चन्द फ़वाइद येह हैं : (1) येह कमज़ोर को त़ाक़त वर करती है (2) खाना हज़्म करती है (3) जिमाअ़ पर मदद देती है (4) ग़मज़दा की तसल्ली का बाइ़स बनती है (5) बुज़दिल को बहादुर बनाती है (6) रंग साफ़ करती है (7) ह़रारते ग़रीज़िया (या'नी जिस्म के अन्दरूनी द-र-जए ह़रारत) को मो'तदिल करती है और (8) हिम्मत और बर-तरी में इज़ाफ़ा करती है।

जब येह ह़राम हो गई तो इस के मज़्कूरा तमाम फ़वाइद ख़त्म हो गए और इस के बा'द

---

(1) ......سنن النسائی، کتاب الاشربة، باب ذکر الآثام المتولدة عن شرب الخمر......الخ، الحدیث: ۵۶۶۹، ص۲۴۴۸۔



www.dawateislami.net

येह सिर्फ़ नुक़्सान और अचानक मौत का सबब बन गई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्लो करम से हमें अपनी ना फ़रमानी से पनाह अ़ता फ़रमाए। (आमीन)

## शराब की हुरमत पर अहादीसे मुबा-रका :

वाज़ेह रोशन अहादीसे मुबा-रका में शराब पीने, इस के बेचने, ख़रीदने, निचोड़ने, उठाने और इस की क़ीमत खाने पर इन्तिहाई सख़्त वईदें वारिद हुई हैं और शराब छोड़ने और इस से तौबा करने की बहुत ज़ियादा तरग़ीब दिलाई गई है।

## शराबी शराब पीते वक़्त मोमिन नहीं होता :

﴾11﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत फ़रमाते हैं कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ज़ानी जब ज़िना करता है तो वोह मोमिन नहीं होता, चोर जब चोरी करता है तो वोह मोमिन नहीं होता और शराबी जब शराब पीता है तो वोह मोमिन नहीं होता।''(1)

﴾12﴿...... अबू दावूद शरीफ़ में मज़्कूरा रिवायत के आख़िर में है : ''मगर इस के बा'द भी तौबा उस के सामने मौजूद होती है।''(2)

﴾13﴿...... एक रिवायत में है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ज़ानी ज़िना करते वक़्त मोमिन नहीं होता, चोर चोरी करते वक़्त मोमिन नहीं होता और शराबी शराब पीते वक़्त मोमिन नहीं होता।'' (रावी फ़रमाते हैं) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चौथी चीज़ भी बयान फ़रमाई मगर मैं भूल गया, (मज़ीद फ़रमाया) ''जब किसी ने ऐसा किया तो उस ने अपनी गरदन से इस्लाम का पट्टा उतार दिया, फिर अगर वोह तौबा कर ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है।''(3)

## शराबी और इस के मददगार मल्ऊ़न हैं :

﴾14﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शराब पर, इस के पीने वाले, पिलाने वाले, ख़रीदने वाले, बेचने वाले, बनाने वाले, बनवाने वाले, उठाने वाले और उठवाने वाले पर ला'नत फ़रमाई है।''(4)

---

(1)......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان نقصان الایمان بالمعاصی......الخ، الحدیث: ۲۰۲،ص۶۹۰۔

(2)......سنن ابی داود، کتاب السنة، باب الدلیل علی زیادة الایمان ونقصانه، الحدیث: ۴۶۸۹،ص۱۵۶۷، دون قوله"لکن"۔

(3)......سنن النسائی، کتاب قطع السارق، باب تعظیم السرقة، الحدیث: ۴۸۷۶،ص۲۴۰۳، دون قوله"السارق"۔

(4)......سنن ابی داود، کتاب الاشربة، باب العصیر للخمر، الحدیث: ۳۶۷۴،ص۱۴۹۵۔



www.dawateislami.net

﴾15﴿...... इब्ने माजह शरीफ़ की रिवायत में मज़ीद येह भी है : "और इस की क़ीमत खाने वाले पर भी (ला'नत फ़रमाई) ।"(1)

﴾16﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शराब के मुआ़-मले में 10 बन्दों पर ला'नत फ़रमाई है : (1) शराब बनाने वाला (2) बनवाने वाला (3) पीने वाला (4) उठाने वाला (5) उठवाने वाला (6) पिलाने वाला (7) बेचने वाला (8) इस की क़ीमत खाने वाला (9) ख़रीदने वाला और (10) ख़रीदवाने वाला ।(2)

﴾17﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शरीअ़त बयान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शराब और इस की क़ीमत (या'नी कमाई), मुर्दार और इस की कमाई, ख़िन्ज़ीर और इस की कमाई को ह़राम क़रार दिया है ।"(3)

﴾18﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने यहूदियों पर तीन मर्तबा ला'नत फ़रमाई, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन पर (गुर्दों, आंतों और मे'दे की) चरबी खाना ह़राम की तो उन्हों ने इसे बेचा और इस की कमाई खाई, जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी क़ौम पर कोई चीज़ ह़राम करता है तो उस की कमाई भी उन पर ह़राम कर देता है ।"(4)

## शराब पीना ख़िन्ज़ीर खाने के मु-तरादिफ़ है :

﴾19﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो शख़्स शराब बेचे उसे चाहिये कि ख़िन्ज़ीर के गोश्त के टुकड़े करे ।"(5)

## ह़दीसे पाक की तशरीह़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ख़त्ताबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 388 हि.) इस ह़दीसे पाक की वज़ाह़त में फ़रमाते हैं : "इस से मुराद हु़रमत की ताकीद और शिद्दत बयान करना है ।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "जिस ने शराब बेचने को ह़लाल जाना तो उसे चाहिये कि वोह ख़िन्ज़ीर खाने

1 ......سنن ابن ماجه، ابواب الاشربة، باب لعنت الخمر على عشرة اوجه، الحديث : ٣٣٨٠،ص ٢٦٨١ـ
2 ......جامع الترمذى، ابواب البيوع،باب النهى ان يتخذ الخمر خلّا، الحديث : ١٢٩٥،ص ١٧٨١ـ
3 ......سنن ابى داود، كتاب الاجارة، باب فى ثمن الخمر والميتة، الحديث : ٣٤٨٥،ص ١٤٨٢ـ
4 ......المرجع السابق، الحديث : ٣٤٨٨،ص ١٤٨٣ـ
5 ......المرجع السابق، الحديث : ٣٤٨٩ـ



www.dawateislami.net

को भी ह़लाल समझे क्यूं कि शराब और ख़िन्ज़ीर दोनों हुरमत और गुनाह में बराबर हैं, पस अगर आप ख़िन्ज़ीर का गोश्त खाने को ह़लाल नहीं समझते तो शराब की कमाई भी ह़लाल न जानो।''

﴾20﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''मेरे पास जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : ''ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शराब पर, इस के बनाने वाले, बनवाने वाले, पीने वाले, उठाने वाले, उठवाने वाले, बेचने वाले, ख़रीदने वाले, पिलाने वाले और त़लब करने वाले पर ला'नत फ़रमाई।''(1)

## ना फ़रमान क़ौम पर अ़ज़ाब की सूरतें :

﴾21﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''इस उम्मत का एक गुरौह खाने पीने और लह्वो लअ़ब में रात गुज़ारेगा लेकिन सुब्ह़ वोह लोग उठेंगे तो बन्दर और ख़िन्ज़ीर बन चुके होंगे, उन्हें ज़मीन में धंसने और आस्मान से पथ्थर बरसने के वाक़िआ़त पेश आएंगे यहां तक कि लोग सुब्ह़ उठेंगे तो कहेंगे : आज रात फुलां क़बीला धंसा दिया गया और आज रात फुलां शख़्स का घर धंसा दिया गया, उन पर ज़रूर आस्मान से पथ्थर बरसाए जाएंगे जैसा कि क़ौमे लूत़ के क़बीलों और घरों पर बरसाए गए, उन पर ज़रूर तबाह करने वाली ऐसी आंधी भेजी जाएगी जिस ने क़ौमे आ़द को उन के क़बीलों और घरों में हलाक कर दिया था और ऐसा उन के शराब पीने, रेशम पहनने, गाने वाली लौंडियां रखने, सूद खाने और क़त़्ए रेह़्मी करने की वज्ह से होगा।'' (इमाम अबू दावूद त़ियालिसी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :) ''एक और बुरी ख़स्लत भी थी जिसे (रावी) ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه भूल गए।''(2)

## ज़वाले उम्मत के अस्बाब :

﴾22﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जब मेरी उम्मत 15 बातों को अपना लेगी तो वोह मुसीबतों में घिर जाएगी।'' अ़र्ज़ की गई : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन सी हैं ?'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''(1)...... जब ग़नीमत को ज़ाती दौलत (2)...... अमानत को ग़नीमत और

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد الله بن عباس، الحديث : ٢٨٩٩، ج١، ص٦٧٧۔

2 ......مسند ابى داود الطيالسى، احاديث ابى امامة الباهلى، الحديث : ١١٣٧، ص١٥٥۔



www.dawateislami.net

(3)...... ज़कात को तावान समझा जाने लगेगा (4)...... आदमी अपनी बीवी की इत़ाअ़त और (5)...... मां की ना फ़रमानी करेगा (6)...... अपने दोस्त से अच्छा सुलूक और (7)...... बाप से बद सुलूकी करेगा (8)...... मसाजिद में आवाज़ें बुलन्द होंगी (9)...... ज़लील तरीन शख़्स उन का हुक्मरान बन जाएगा (10)...... इन्सान के शर के डर से उस की इ़ज़्ज़त की जाएगी (11)...... शराब पी जाएगी (12)...... रेशम पहना जाएगा (13)...... गाने बजाने वाली लौंडियां रखी जाएंगी (14)...... (घरों में) गाने बजाने के आलात रखे जाएंगे और (15)...... इस उम्मत के बा'द वाले पहलों पर ला'न त़ा'न करेंगे । **तो उस वक़्त लोगों को चाहिये कि सुर्ख़ आंधी या ज़मीन में धंसने या चेहरों के मस्ख़ होने ( या'नी बदल जाने ) का इन्तिज़ार करें ।**"[1]

## ज़ानी व शराबी का ईमान कैसे निकलता है ?

﴾23﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो ज़िना करता है या शराब पीता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से ईमान इस त़रह़ खींच लेता है जिस त़रह़ इन्सान अपने सर से क़मीस उतारता है ।"[2]

﴾24﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि शराब न पिये और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि ऐसे दस्तर ख़्वान पर न बैठे जिस पर शराब पी जाती हो ।"[3]

## शराबी जन्नती शराब से मह़रूम होगा :

﴾25﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हर नशा आवर चीज़ शराब है और हर नशा आवर चीज़ ह़राम है, जिस ने दुन्या में शराब पी और फिर शराब पीने की ह़ालत में मर गया तो वोह आख़िरत में शराबे (त़हूर) न पियेगा ।"[4]

﴾26﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

1 ......جامع الترمذی، ابواب الفتن، باب ماجاء فی علامة حلول المسخ والخسف، الحدیث : ۲۲۱۰، ص۱۸۷۴ ـ

2 ......المستدرک، کتاب الایمان، باب اذا زنی العبد خرج منه الایمان، الحدیث : ۶۵، ج۱، ص۱۷۶ ـ

3 ......المعجم الکبیر، الحدیث : ۱۱۴۶۲، ج۱۱، ص۱۵۳ ـ

4 ......صحیح مسلم، کتاب الاشربة، باب بیان ان کل مسکر خمر وان کل خمر حرام، الحدیث:۵۲۱۸، ص۱۰۳۶ ـ



www.dawateislami.net

"जिस ने दुन्या में शराब पी और तौबा न की वोह आख़िरत में शराबे (त़हूर) न पियेगा अगर्चे जन्नत में दाख़िल भी हो जाए।"(1)

﴾27﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने दुन्या में शराब पी फिर तौबा न की तो आख़िरत की शराब उस पर ह़राम कर दी जाएगी।"(2)

**नोट :** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ख़त़्त़ाबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं कि मुह़्यिस्सुन्नह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद हुसैन बिन मस्ऊ़द ब-ग़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 516 हि.) इस ह़दीसे पाक के तह़्त "**शर्हुस्सुन्नह**" में फ़रमाते हैं : "हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान "**حُرِمَهَا فِي الْآخِرَةِ**" में वई़द है कि शराबी जन्नत में दाख़िल न होगा क्यूं कि शराब तो अहले जन्नत के पीने के लिये होगी लेकिन उस के पीने से न तो वोह दर्दे सर में मुब्तला होंगे और न ही बहकेंगे और जो जन्नत में दाख़िल हो जाएगा उस पर जन्नती शराब ह़राम न होगी।"(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ब-ग़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की मज़्कूरा तशरीह़ में ग़ौरो फ़िक्र की ज़रूरत है और **शु-अ़बुल ईमान** की मज़्कूरा ह़दीसे पाक इस की तरदीद करती है जिस में तसरीह़ है कि शराबी शराबे त़हूर न पियेगा अगर्चे जन्नत में दाख़िल भी हो जाए।

## शराबी दुख़ूले जन्नत से मह़रूम है :

﴾28﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "3 शख़्स जन्नत में दाख़िल न होंगे : (1)...... शराब का आ़दी (2)...... (रिश्तेदारों से) तअ़ल्लुक़ात तोड़ने वाला और (3)...... जादू की तस्दीक़ करने वाला, और जो आ़दी शराबी मरेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे **नहरे ग़ूत़ा** से पिलाएगा।" अ़र्ज़ की गई : "**नहरे ग़ूत़ा** कौन सी नह्र है ?" इर्शाद फ़रमाया : "येह वोह नह्र है जो ज़ानी औ़रतों की शर्मगाहों से निकलेगी और उन की शर्मगाहों की बदबू अहले दोज़ख़ को अज़िय्यत देगी।"(4)

---

(1)......شعب الایمان للبیہقی، باب فی المطاعم والمشارب، الحدیث : ۵۵۷۳،ج۵، ص۶۔

(2)......صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ، باب عقوبۃ من شرب الخمر......الخ، الحدیث : ۵۲۲۳،ص۱۰۳۶۔

(3)......شرح السنۃ للبغوی، کتاب الاشربۃ، باب وعید شارب الخمر، تحت الحدیث : ۲۹۰۶،ج۶،ص۱۱۷۔

(4)......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی موسی الاشعری، الحدیث : ۱۹۵۸۶،ج۷،ص۱۳۹۔



www.dawateislami.net

﴾29﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "शराब का आ़दी, जादू की तस्दीक़ करने वाला और (रिश्तेदारों से) क़त़ए़ तअ़ल्लुक़ी करने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा।"(1)

﴾30﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन **अ़ब्दुल्लाह** ह़ाकिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मज़्कूरा रिवायत को सह़ीह़ क़रार दिया मगर इस पर ए'तिराज़ किया कि इस का कुछ ह़िस्सा छोड़ दिया गया है (या'नी अस्ल रिवायत येह है) : "4 क़िस्म के लोग ऐसे हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि न तो उन्हें जन्नत में दाख़िल करे और न ही उस की ने'मतें चखाए : (1)...... शराब का आ़दी (2)...... सूद खाने वाला (3)...... यतीम का माल खाने वाला और (4)...... वालिदैन का ना फ़रमान।"(2)

﴾31﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जन्नत के बाग़ात में न शराब का आ़दी दाख़िल होगा, न वालिदैन का ना फ़रमान और न ही अपनी अ़त़ा पर एह़सान जताने वाला।"(3)

﴾32﴿...... एक रिवायत में जन्नतुल फ़िरदौस के अल्फ़ाज़ हैं।"(4)

## बिग़ैर तौबा किये मरने वाले शराबी का अन्जाम :

﴾33﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "शराब का आ़दी (बिग़ैर तौबा किये) मर गया तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बुत परस्त की त़रह़ पेश होगा।"(5)

﴾34﴿...... एक रिवायत में है कि दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मुलाक़ात करे कि वोह शराब का आ़दी हो तो वोह अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से बुतों के पुजारी की त़रह़ मिलेगा।"(6)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه (अपने बाप से) रिवायत करते हैं, वोह

(1)......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الکهانة والسحر، الحدیث : ۶۱۰۴، ج۷، ص۶۴۸۔

(2)......المستدرک، کتاب البیوع، باب ان اربی الربا عرض الرجل المسلم، الحدیث : ۲۳۰۷، ج۲، ص۳۳۸۔

(3)......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالک، الحدیث : ۱۳۳۵۹، ج۴، ص۴۵۰۔

(4)......الترغیب والترهیب، کتاب الحدود، باب الترهیب من شرب الخمر......الخ، الحدیث : ۳۶۰۲، ج۳، ص۲۰۲۔

(5)......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد الله بن العباس، الحدیث : ۲۴۵۳، ج۱، ص۵۸۳۔

(6)......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الاشربة، فصل فی الاشربة، الحدیث : ۵۳۲۳، ج۷، ص۳۶۷۔



www.dawateislami.net

फ़रमाया करते थे : "मैं शराब पीने या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को छोड़ कर इस सुतून को पूजने में कोई फ़र्क़ महसूस नहीं करता।"(1)

इस से मुराद येह है कि शराबी और बुतों का पुजारी दोनों गुनाह में एक दूसरे के क़रीब क़रीब हैं गोया उन्हों ने येह बात सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान "كَعَابِدِ وَثَنٍ" से अख़्ज़ की।

और सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के मु-तअ़ल्लिक़ मरवी है कि जब शराब ह़राम हुई तो उन में से कुछ अपने दूसरे दोस्तों के पास गए और कहने लगे : "शराब ह़राम कर दी गई है और इसे (गुनाह के ए'तिबार से) शिर्क के बराबर क़रार दिया गया है।"(2)

﴾35﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "न तो शराब का आ़दी जन्नत में दाख़िल होगा, न ही वालिदैन का ना फ़रमान और न ही एह़सान जताने वाला।" ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : येह फ़रमाने अक़्दस मुझ पर बहुत गिरां गुज़रा क्यूं कि मुअमिनीन गुनाहों में मुब्तला हो जाते हैं यहां तक कि मैं ने वालिदैन के ना फ़रमान के मु-तअ़ल्लिक़ येह हुक्मे क़ुरआनी पाया :

فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ وَ تُقَطِّعُوْۤا اَرْحَامَكُمْ ﴿۲۲﴾ (پ۲۶،محمد:۲۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो क्या तुम्हारे येह लच्छन (अन्दाज़) नज़र आते हैं कि अगर तुम्हें हुकूमत मिले तो ज़मीन में फ़साद फैलाओ और अपने रिश्ते काट दो।

और एह़सान जताने वाले के मु-तअ़ल्लिक़ येह आयते मुबा-रका पाई :

لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَ الْاَذٰى ۙ (پ۳،البقرة:۲۶۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** अपने स-दक़े बात़िल न कर दो एह़सान रख कर और ईज़ा दे कर।

और शराब के मु-तअ़ल्लिक़ येह फ़रमाने बारी तआ़ला पाया :

اِنَّمَا الْخَمْرُ وَ الْمَیْسِرُ وَ الْاَنْصَابُ وَ الْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّیْطٰنِ (پ۷، المائدة:۹۰)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** शराब और जूआ और बुत और पांसे नापाक ही हैं शैतानी काम।(3)

---

1 ......سنن النسائی، کتاب الاشربة، باب ذکر الروایات المغلظات فی شرب الخمر، الحدیث:۵۶۶۶،ص۲۴۴۸۔

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۱۲۳۹۹،ج۱۲،ص۳۰۔

3 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۱۱۱۷۰،ج۱۱،ص۸۲۔



www.dawateislami.net

﴾36﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "3 शख़्स ऐसे हैं जिन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत ह़राम कर दी है : (1)...... शराब का आ़दी (2)...... वालिदैन का ना फ़रमान और (3)...... दय्यूस जो अपनी बीवी में बदकारी बर क़रार रखता है।"[1]

﴾37﴿...... हु़स्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा ब-र-कत है : "जन्नत की ख़ुश्बू 500 साल की मसाफ़त से सूंघी जाएगी लेकिन अपने अ़मल पर फ़ख़्र करने वाला, (वालिदैन का) ना फ़रमान और शराब का आ़दी जन्नत की ख़ुश्बू नहीं पाएंगे।"[2]

ह़ाफ़िज़ ज़किय्युद्दीन अ़ब्दुल अ़ज़ीम मुन्ज़िरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मैं इस ह़दीसे पाक के किसी रावी को नहीं जानता कि जिस पर जर्ह़ की गई हो (या'नी इसे ग़ैरे आ़दिल क़रार दिया गया हो) और इस के बहुत से शवाहिद[3] मौजूद हैं।"[4]

﴾38﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "3 शख़्स कभी जन्नत में दाख़िल न होंगे : (1)...... दय्यूस (2)...... मर्दानी औ़रतें और (3)...... शराब का आ़दी।" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! शराब के आ़दी को तो हम जानते हैं लेकिन दय्यूस कौन है?" इर्शाद फ़रमाया : "जो इस बात की परवाह नहीं करता कि उस की बीवी के पास कौन आता है।" (रावी फ़रमाते हैं) फिर हम ने अ़र्ज़ की : "मर्दानी औ़रतें कौन हैं?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह औ़रतें जो मर्दों की मुशा-बहत इख़्तियार करती हैं।"[5]

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد الله بن عمر بن الخطاب، الحديث: ٦١٢١، ج٢، ص٤٨٢۔

2 ......المعجم الصغير للطبرانی، الحديث: ٤٠٩، الجزء الاول، ص١٤٥۔

3 ...... शवाहिद, शाहिद की जम्अ़ है, इस्तिलाहे़ उसूले ह़दीस में अगर दो ह़दीसें एक सह़ाबी से मरवी हों तो दूसरी को पहली का "मुताबेअ़" और अगर दो ह़दीसें दो सह़ाबियों से मरवी हों तो दूसरी को पहली का "शाहिद" कहते हैं, नीज़ अगर वोह दोनों ह़दीसें "लफ़्ज़ व मा'ना" में मुवाफ़िक़ हों तो दूसरी को "मिस्लुहू" और अगर सिर्फ़ "मा'ना" में मुवाफ़िक़ हों तो दूसरी को "नह़्वुहू" कहते हैं।
(المقدمة للشيخ عبد الحق محدث دهلوی عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی، ص٢٦)

4 ......الترغيب والترهيب، كتاب الحدود، باب الترهيب من شرب الخمر......الخ، تحت الحديث: ٣٦٠٩، ج٣، ص٢٠٣۔

5 ......شعب الايمان للبيهقی، باب فی الغيرة والمذاء، الحديث: ١٠٨٠٠، ج٧، ص٤١٢۔



www.dawateislami.net

## शराब हर बुराई की जड़ है :

﴾39﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "शराब से बचो ! बेशक येह हर बुराई की चाबी है।"[1]

﴾40﴿...... सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "शराब गुनाह की बुन्याद है और औरतें शैतान के जाल हैं और दुन्या की महब्बत हर बुराई की जड़ है।"[2]

## सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वसिय्यत :

﴾41﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मुझे मेरे ख़लील صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वसिय्यत फ़रमाई कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक न ठहरा अगर्चे तुझे काट दिया जाए या जला दिया जाए और जान बूझ कर फ़र्ज़ नमाज़ तर्क न कर कि जिस ने जान बूझ कर फ़र्ज़ नमाज़ तर्क की उस से ज़िम्मेदारी उठा ली गई और शराब न पीना क्यूं कि येह हर बुराई की चाबी है।"[3]

# शराब की तबाह कारियां

## बनी इसराईल का एक शराबी :

﴾42﴿...... हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और कुछ दूसरे सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द इकठ्ठे बैठे थे कि सब से बड़े गुनाह का ज़िक्र होने लगा लेकिन उन्हें इस के मु-तअ़ल्लिक़ ज़ियादा इ़ल्म न था, उन्हों ने मुझे हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की ख़िदमत में भेजा ताकि मैं उन से पूछ आऊं, पस उन्हों ने मुझे बताया : "सब से बड़ा गुनाह शराब पीना है।" मैं ने वापस आ कर येह बात बताई तो उन्हों ने मानने से इन्कार कर दिया और फ़ौरन उन की

---

1 ......المستدرک، کتاب الاشربۃ، باب اجتنبوا الخمر فانھا مفتاح کل شر، الحدیث : ۷۳۱۳، ج۵، ص۲۰۱۔

2 ......دلائل النبوۃ للبیھقی، باب ما روی فی خطبتہ بتبوک، ج۵، ص۲۴۲۔

موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، کتاب ذم الدنیا، الحدیث : ۹، ج۵، ص۲۲۔

3 ......سنن ابن ماجہ، ابواب الفتن، باب الصبر علی البلاء، الحدیث : ۴۰۳۴، ص۲۷۲۰۔



www.dawateislami.net

त़रफ़ चल पड़े यहां तक कि सब उन के घर पहुंच गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने उन्हें बताया कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बनी इसराईल के किसी बादशाह ने एक शख़्स को पकड़ लिया और उसे इख़्तियार दिया कि वोह शराब पिये या किसी को क़त्ल करे या ज़िना करे या ख़िन्ज़ीर का गोश्त खाए वरना वोह उसे क़त्ल कर देंगे, चुनान्चे उस ने शराब पीना इख़्तियार कर लिया। जब उस ने शराब पी ली तो उस ने वोह तमाम काम किये जोह वोह उस से करवाना चाहता था।" आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स शराब पीता है चालीस रातों तक उस की नमाज़ क़बूल नहीं की जाती, और जो शख़्स इस ह़ालत में मरे कि उस के पेट में शराब हो तो इस की वज्ह से उस पर जन्नत ह़राम कर दी जाएगी, पस अगर वोह उन चालीस रातों में मरा तो जाहिलिय्यत की मौत मरा।"[1]

## शराब ने क्या गुल खिलाए :

﴾43﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : बुराइयों की अस्ल (या'नी शराब) से बचो क्यूं कि तुम से पहले एक शख़्स था जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत किया करता और लोगों से अलग थलग रहता, एक औ़रत उस की मह़ब्बत में गिरिफ़्तार हो गई और उस की त़रफ़ ख़ादिम को कहला भेजा कि हम तुम्हें गवाही के लिये बुला रहे हैं। चुनान्चे वोह वहां पहुंच गया। जब भी वोह किसी दरवाज़े से अन्दर दाख़िल होता तो वोह उस पर बन्द कर दिया जाता यहां तक कि वोह एक निहायत ह़सीनो जमील औ़रत के पास पहुंचा जिस के क़रीब एक लड़का खड़ा था और वहां शीशे का एक बड़ा बरतन था जिस में शराब मौजूद थी। उस औ़रत ने आ़बिद से कहा : "मैं ने तुझे किसी क़िस्म की गवाही देने के लिये नहीं बुलाया बल्कि इस लिये बुलाया है कि तू इस लड़के को क़त्ल कर के मुझ से ज़िना करे या फिर शराब का एक जाम पी ले, अगर तूने इन्कार किया तो मैं वावेला करूंगी और तुझे ज़लीलो रुस्वा कर दूंगी।" जब उस शख़्स ने देखा कि उस के पास इस से छुटकारे की कोई राह नहीं तो उस ने कहा : "मुझे शराब का गिलास पिला दे।" औ़रत ने शराब का एक जाम पिलाया तो उस ने मज़ीद मांगा, पस वोह इसी त़रह़ शराब पीता रहा यहां तक कि उस औ़रत के साथ मुंह भी काला किया और लड़के को भी क़त्ल कर दिया। लिहाज़ा तुम शराब से बचते रहो, बिला शुबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ईमान और शराब नोशी दोनों किसी शख़्स के सीने

---

1 ......المستدرک ، کتاب الاشربۃ، باب ان اعظم الکبائر شرب الخمر، الحدیث: ۷۳۱۸ ،ج۵، ص۲۰۳۔



www.dawateislami.net

में कभी जम्अ़ नहीं हो सकते, हां ! अ़न्क़रीब एक दूसरे को बाहर निकाल देगा।[1]

## हारूत व मारूत की आज़्माइश :

﴿44﴾...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना कि जब ह़ज़रते आदम عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ज़मीन पर उतारा गया तो फ़रिश्तों ने अ़र्ज़ की : ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ !

اَتَجۡعَلُ فِیۡہَا مَنۡ یُّفۡسِدُ فِیۡہَا وَیَسۡفِکُ الدِّمَآءَ ۚ وَنَحۡنُ نُسَبِّحُ بِحَمۡدِکَ وَنُقَدِّسُ لَکَ ؕ قَالَ اِنِّیۡۤ اَعۡلَمُ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۳۰﴾ (پ ۱، البقرۃ:۳۰)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** क्या ऐसे को नाइब करेगा जो उस में फ़साद फैलाएगा और ख़ूं रेज़ियां करेगा और हम तुझे सराहते हुए, तेरी तस्बीह़ करते और तेरी पाकी बोलते हैं, फ़रमाया : मुझे मा'लूम है जो तुम नहीं जानते।

उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! हम ह़ज़रते आदम عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की औलाद से ज़ियादा तेरी इत़ाअ़त करने वाले हैं।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन से फ़रमाया : ''दो फ़रिश्ते मुन्तख़ब करो फिर हम जांचेंगे कि वोह कैसे अ़मल करते हैं ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! हम **हारूत** व **मारूत** का इन्तिख़ाब करते हैं।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन दोनों को हुक्म फ़रमाया : ''ज़मीन पर उतर जाओ।'' फिर उन दोनों के सामने ज़ोहरा नामी औ़रत इन्तिहाई ख़ूब सूरत कर के लाई गई, तो वोह उस औ़रत के पास गए और उस के नफ़्स पर क़ुदरत चाही तो उस ने कहा : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह उस वक़्त तक नहीं हो सकता जब तक तुम येह शिर्किय्या कलिमा न कहो।'' उन्हों ने कहा : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम कभी भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक नहीं ठहराएंगे।'' फिर वोह उन्हें छोड़ कर चली गई दोबारा उन के पास आई तो उस ने एक बच्चा उठाया हुवा था, उन्हों ने दोबारा उस के नफ़्स पर क़ुदरत चाही तो उस ने कहा : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह उस वक़्त तक नहीं हो सकता जब तक तुम इस बच्चे को क़त्ल न कर दो।'' उन्हों ने फिर जवाब दिया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम कभी भी इस बच्चे को क़त्ल नहीं करेंगे।'' वोह फिर चली गई और शराब का एक पियाला उठाए हुए वापस आई, उन्हों ने फिर उस के नफ़्स पर क़ुदरत चाही तो उस ने कहा : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! बिल्कुल नहीं जब तक कि तुम येह शराब न पी लो।'' लिहाज़ा दोनों ने शराब पी ली और उन पर नशा त़ारी हो गया और दोनों ने न सिर्फ़ उस से ज़िना किया

---

1......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الاشربۃ، فصل فی الاشربۃ، الحدیث : ۵۳۲۴، ج۷، ص۳۶۷۔



www.dawateislami.net

बल्कि बच्चे को भी क़त्ल कर दिया। जब उन्हें होश आया तो उस औरत ने उन्हें बताया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम ने मुझ से जिन कामों का इन्कार किया था उन में से हर काम तुम ने नशे की हालत में कर डाला है।" पस उन दोनों को दुन्या और आख़िरत के अ़ज़ाब के दरमियान इख़्तियार दिया गया तो उन्हों ने दुन्या का अ़ज़ाब इख़्तियार कर लिया।(1)

﴾45﴿...... हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि जब शराब ह़राम की गई तो हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن एक दूसरे के पास जा कर कहने लगे : "शराब ह़राम कर दी गई है और इसे शिर्क के बराबर क़रार दिया गया है।"(2)

﴾46﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू तमीम जैशानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی से मरवी है कि उन्हों ने अन्सार के सरदार हज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़रमाते सुना उस वक़्त वोह मिस्र के गवर्नर थे कि मैं ने सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : "जिस ने मुझ पर जान बूझ कर झूट बांधा वोह अपना ठिकाना या घर आग या जहन्नम में बना ले।"(3)

हज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : "जिस ने शराब पी वोह क़ियामत के दिन प्यासा आएगा, ख़बरदार ! हर नशा आवर चीज़ शराब है और हर क़िस्म की शराब ह़राम है, और **ग़ुबैरा** (या'नी जुवार से बनी हुई शराब) से बचो।" (रावी कहते हैं :) मैं ने हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को भी इसी की मिस्ल ह़दीसे पाक बयान करते सुना, अलबत्ता ! इन की रिवायत में "घर और ठिकाना" के अल्फ़ाज़ मुख़्तलिफ़ हैं।(4)

﴾47﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللہ بن عمر بن الخطاب، الحدیث: ۶۱۸۶، ج۲، ص۴۹۵۔

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۲۳۹۹، ج۱۲، ص۳۰۔

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث قیس بن سعد، الحدیث: ۱/۱۵۴۸۲، ج۵، ص۲۷۴۔

4 ......المرجع السابق، الحدیث: ۲/۱۵۳۸۲۔

الترغیب والترھیب، کتاب الحدود، باب الترھیب من شرب الخمر......الخ، الحدیث: ۳۶۱۷، ج۳، ص۲۰۶۔



www.dawateislami.net

है : "जिस ने शराब पी उस के दिल से ईमान का नूर निकल गया।"(1)

﴾48﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जिस ने शराब पी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम का खौलता हुवा पानी पिलाएगा।"(2)

﴾49﴿...... एक शख़्स यमन के शह्र **जैशान** से आया उस ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जुवार से बनी हुई शराब के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा जिसे लोग उस के मुल्क में पीते हैं और इसे **मिज़्र** कहते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या वोह नशा आवर है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "जी हां।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हर नशा आवर चीज़ ह़राम है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह हुक्म मु-तअ़य्यन फ़रमा दिया है कि जो कोई नशा आवर चीज़ पियेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे **ती़-नतुल ख़बाल** से पिलाएगा।" सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **ती़-नतुल ख़बाल** क्या है ?" इर्शाद फ़रमाया : "दोज़ख़ियों का पसीना या उन की पीप।"(3)

﴾50﴿...... हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त बयान है कि "(रह़मत के) फ़रिश्ते 3 क़िस्म के बन्दों के पास नहीं आते : (1) जुनुबी (2) नशा करने वाला और (3) ज़ा'फ़रान मिले खुलूक़ (खुश्बू) में लिथड़ा हुवा।"(4)

﴾51﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ 3 क़िस्म के बन्दों की नमाज़ क़बूल नहीं फ़रमाता और न ही उन की कोई नेकी आस्मान की त़रफ़ बुलन्द होती है : (1) भागा हुवा गुलाम यहां तक कि अपने आक़ा के पास लौट आए और अपना हाथ उस के हाथ में रख दे (2) ऐसी औ़रत जिस पर उस का शोहर नाराज़ हो यहां तक कि राज़ी हो जाए (3) नशा करने वाला यहां तक कि नशा उतर जाए।"(5)

## शराबी पर ग़-ज़बे जब्बार :

﴾52﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

---

1 ......المعجم الاوسط، الحديث : ۳۴۱۱، ج۱، ص۱۰۱، "خرج" بدله "اخرج الله"۔

2 ......المعجم الكبير، الحديث : ۷۸۵۲، ج۸، ص۲۱۱۔

3 ......صحيح مسلم، كتاب الاشربة، باب بيان ان كل مُسْكِر خمر وان كل خمر حرام، الحديث : ۵۲۱۷، ص۱۰۳۶۔

4 ......البحر الزخار المعروف بمسند البزار، مسند بريدة بن الحصيب، الحديث : ۴۴۴۶، ج۱۰، ص۳۲۱، بتغيرٍ۔

5 ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب الاشربة، فصل فى الاشربة، الحديث : ۵۳۳۱، ج۷، ص۳۷۰۔



www.dawateislami.net

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे तमाम जहानों के लिये रहमत और हिदायत बना कर भेजा और मुझे हुक्म फ़रमाया कि मज़ामीर (या'नी गाने बाजे के आलात), सारंगियां और तबले तोड़ डालूं और बुतों को पाश पाश कर दूं जिन की ज़मानए जाहिलिय्यत में पूजापाट की जाती थी, मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने अपनी इज़्ज़त की क़सम याद कर के इर्शाद फ़रमाया कि "मेरा जो बन्दा शराब का एक घूंट पियेगा तो मैं उस की सज़ा में उसे जहन्नम का खौलता हुवा पानी पिलाऊंगा ख़्वाह उसे अ़ज़ाब दिया गया हो या बख़्श दिया गया, और मेरा जो बन्दा मेरे ख़ौफ़ से शराब न पियेगा तो मैं उसे जन्नत की (पाकीज़ा) शराब पिलाऊंगा।"(1)

﴾53﴿...... एक रिवायत के अल्फ़ाज़ येह हैं : "जिस ने कुदरत के बा वुजूद शराब तर्क की तो मैं उसे जन्नत की (पाकीज़ा) शराब पिलाऊंगा और जिस ने रेशम न पहना जब कि वोह पहन सकता था तो मैं उसे जन्नती लिबास पहनाऊंगा।"(2)

﴾54﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "जिसे येह पसन्द हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे आख़िरत में (पाकीज़ा) शराब पिलाए तो उसे चाहिये कि दुन्या में इसे छोड़ दे और जिसे पसन्द हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे आख़िरत में रेशम पहनाए तो उसे चाहिये कि दुन्या में इसे छोड़ दे।"(3)

﴾55﴿...... हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जो शराब का एक घूंट पियेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ 3 दिन तक उस का कोई फ़र्ज़ क़बूल फ़रमाएगा न नफ़्ल और जो एक गिलास पियेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ 40 दिन तक उस की कोई नमाज़ क़बूल न फ़रमाएगा और जो हमेशा शराब पियेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर हक़ है कि उसे **नहरुल ख़बाल** से पिलाए।" अ़र्ज़ की गई : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **नहरुल ख़बाल** क्या है ?" इर्शाद फ़रमाया : "दोज़ख़ियों की पीप।"(4)

﴾56﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! मेरी उम्मत के कुछ

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث ابی امامة الباهلی، الحديث: ۲۲۲۸۱، ج۸، ص۲۸۶، بتغيرٍ۔

2 ......الترغيب والترهيب، کتاب الحدود، باب الترهيب من شرب الخمر......الخ، الحديث: ۳۶۲۴، ج۳، ص۲۰۸۔

3 ......المعجم الاوسط، الحديث: ۸۸۷۹، ج۶، ص۳۱۲۔

4 ......المعجم الكبير، الحديث: ۱۱۴۶۵، ج۱۱، ص۱۵۴۔

الترغيب والترهيب، کتاب الحدود، باب الترهيب من شرب الخمر......الخ، الحديث: ۳۶۲۶، ج۳، ص۲۰۸۔



www.dawateislami.net

लोग गुनाहों, गुरूर व तकब्बुर और लह्वो लअ़ब में रात गुज़ारेंगे और सुब्ह़ इस ह़ाल में करेंगे कि ह़राम को ह़लाल जानने, गाने बजाने वाली लौंडियां रखने, शराब पीने और रेशम पहनने की वज्ह से मस्ख़ हो कर बन्दरों और ख़िन्ज़ीरों की सूरत में बदल चुके होंगे।''(1)

﴾57﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मेरी उम्मत के कुछ लोग शराब का नाम तब्दील कर के इसे पियेंगे, उन के सरों पर आलाते मूसीक़ी बजाए जाएंगे और गाने वाली लौंडियां गाएंगी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन को ज़मीन में धंसा देगा और बा'ज़ को बन्दर और सुवर बना देगा।''(2)

﴾58﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन साबित رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मुर-सलन मरवी है कि ''इस उम्मत में ज़मीन में धंसना, सूरतों का मस्ख़ होना और पथ्थरों का बरसना होगा।'' मुसल्मानों में से एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह कब होगा ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''जब गाना गाने वाली लड़कियां या लड़के और आलाते मूसीक़ी आ़म हो जाएंगे और शराबें पी जाएंगी।''(3)

﴾59﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरा जो उम्मती इस ह़ाल में मरा कि वोह शराब पीता था तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर जन्नत में इस का पीना ह़राम फ़रमा देगा और मेरा जो उम्मती इस ह़ाल में मरा कि वोह सोना पहनता था तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर जन्नत में इस का लिबास पहनना ह़राम फ़रमा देगा।''(4)

## शराबी को क़त्ल करने का हुक्म :

﴾60﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो शराब पिये उसे कोड़े मारो अगर चौथी बार पिये तो उसे क़त्ल कर दो।''(5)

﴾61﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जब लोग शराब पियें तो उन्हें कोड़े मारो, अगर दोबारा पियें तो दोबारा कोड़े मारो,

---

(1) ......المسند للامام احمد بن حنبل، اخبار عبادة بن الصامت، الحديث :۲۲۸۵۴،ج۸، ص۴۲۴، بتغيرٍقليلٍ۔

(2) ......سنن ابن ماجه، ابواب الفتن، باب العقوبات صبر على البلاء، الحديث :۴۰۲۰،ص۲۷۱۹، بتغيرٍقليلٍ۔

(3) ......جامع الترمذی، ابواب الفتن، باب ما جاء فی علامة حلول المسخ والخسف، الحديث :۲۲۱۲،ص۱۸۷۴۔

(4) ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد الله بن عمرو بن العا ص، الحديث :۶۹۲۲،ج۲،ص۶۵۹۔

(5) ......جامع الترمذی، ابواب الحدود، باب ما جاء من شرب الخمر ......الخ، الحديث :۱۴۴۴،ص۱۷۹۹۔



www.dawateislami.net

अगर फिर पियें तो फिर कोड़े मारो, इस के बा'द भी पियें तो उन्हें क़त्ल कर दो।"(1)

﴾62﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "जब कोई नशा करे तो उसे कोड़े मारो, अगर दोबारा नशा करे तो दोबारा कोड़े मारो, अगर फिर नशा करे तो फिर कोड़े मारो, फिर अगर चौथी बार नशा करे तो उसे क़त्ल कर दो।"(2)

﴾63﴿...... एक रिवायत में है : "उस की गरदन काट दो।"(3)

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "चौथी बार शराब पीने पर किसी सह़ीह़ सबब के बिग़ैर क़त्ल का हुक्म देना मन्सूख़ है।"

## शराबी की इबादत राएगां जाती है :

﴾64﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जिस ने शराब पी उस की 40 दिन की नमाज़ क़बूल नहीं की जाती, अगर तौबा कर ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है, अगर वोह दोबारा ऐसा करे तो उस की 40 दिन की नमाज़ कबूल नहीं की जाती, हां, अगर तौबा कर ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है और अगर (तीसरी बार) फिर ऐसा करे तो उस की 40 दिन की नमाज़ क़बूल नहीं की जाती, अलबत्ता ! अगर तौबा कर ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है और अगर (चौथी मर्तबा) फिर ऐसा करे तो उस की 40 दिन की नमाज़ क़बूल नहीं की जाती फिर अगर तौबा भी करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल न फ़रमाएगा और उसे **नह्‌रुल ख़बाल** से पिलाएगा।" राविये ह़दीस ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से दरयाफ़्त किया गया : "ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه **नह्‌रुल ख़बाल** क्या है ?" तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने बताया कि वोह नह्‌र दोज़ख़ियों की पीप से जारी होगी।"(4)

﴾65﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मौक़ूफ़न मरवी है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "जिस ने शराब

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الحدود، باب اذا تتابع فی شرب الخمر، الحدیث: ۴۴۸۲، ص۱۵۵۱۔

2 ......المرجع السابق، الحدیث: ۴۴۸۴۔

3 ......سنن النسائی، کتاب الاشربۃ، باب ذکر الروایات المغلظات فی شرب الخمر، الحدیث: ۵۶۷۵، ص۲۴۴۸۔

4 ......جامع الترمذی، ابواب الاشربۃ، باب ماجاء فی شارب الخمر، الحدیث: ۱۸۶۲، ص۱۸۴۰۔



www.dawateislami.net

पी और उसे नशा न हुवा तो जब तक वोह उस के पेट या रगों में रहेगी उस की नमाज़ क़बूल न की जाएगी और अगर (इस दौरान) वोह मर गया तो ह़ालते कुफ़्र में मरेगा, और अगर (शराब पीने से) नशा हो गया तो उस की 40 दिन की नमाज़ क़बूल न की जाएगी और अगर इस दौरान वोह मर गया तो कुफ़्र की ह़ालत में मरेगा।''[1]

﴾66﴿...... **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जिस ने शराब पी और उसे अपने पेट में उतारा तो उस की 7 दिन की नमाज़ क़बूल न की जाएगी, अगर इसी दौरान वोह मर गया तो कुफ़्र की ह़ालत में मरेगा। मज़ीद फ़रमाया : ''अगर शराब ने उस की अ़क़्ल को ज़ाएअ़ कर दिया और कोई फ़र्ज़ साक़ित़ हो गया'' एक रिवायत में यूं है ''शराब ने उसे क़ुरआन भुला दिया तो उस की 40 दिन की नमाज़ क़बूल न होगी और अगर इस दौरान वोह मर गया तो ह़ालते कुफ़्र में मरेगा।''[2]

**नोट :** शराबी के ह़ालते कुफ़्र में मरने में शर्त़ है कि वोह शराब पीने को ह़लाल जाने या कुफ़्राने ने'मत का मुर-तकिब हो।

﴾67﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने शराब पी और उस पर नशा त़ारी हो गया तो उस की 40 दिन की नमाज़ क़बूल नहीं की जाती, (इस दौरान) अगर वोह मर गया तो जहन्नम में दाख़िल होगा और अगर तौबा कर ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है, फिर अगर दोबारा शराब पिये और उस पर नशा छा जाए तो उस की 40 दिन की नमाज़ क़बूल नहीं की जाती और अगर (इसी दौरान) वोह मर गया तो जहन्नम में दाख़िल होगा और अगर तौबा कर ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है और अगर फिर शराब पिये और नशा आ जाए तो उस की 40 दिन की नमाज़ क़बूल नहीं की जाती, अगर (इसी दौरान) वोह मर गया तो जहन्नम में दाख़िल होगा और अगर तौबा कर ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है, अगर चौथी बार फिर उस ने ऐसा किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उसे **त़ी-नतुल ख़बाल** से पिलाए।'' किसी ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **त़ी-नतुल ख़बाल** क्या है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''जहन्नमियों की पीप।''[3]

---

1 ......سنن النسائی، کتاب الاشربۃ، باب ذکر الاثام المتولدۃ......الخ، الحدیث: ۵۶۷۱، ص۲۴۴۸، بتغیرٍقلیلٍ۔

2 ......المرجع السابق، الحدیث: ۵۶۷۲۔

3 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الاشربۃ، فصل فی الاشربۃ، الحدیث: ۵۳۳۳، ج۷، ص۳۷۰۔



www.dawateislami.net

﴾68﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''मेरा जो उम्मती शराब पियेगा उस की 40 दिन की नमाज़ क़बूल न की जाएगी ।''(1)

﴾69﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''हर नशा आवर चीज़ शराब है और हर नशा आवर चीज़ ह़राम है, जिस ने नशा आवर चीज़ पी उस की 40 दिन की नमाज़ें कम कर दी जाएंगी, फिर अगर वोह तौबा कर ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है और अगर चौथी बार फिर ऐसा करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उसे **त़ी-नतुल ख़बाल** से पिलाए ।'' अ़र्ज़ की गई : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **त़ी-नतुल ख़बाल** क्या है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''जहन्नमियों की पीप ।'' मज़ीद फ़रमाया : ''जिस ने किसी छोटे बच्चे को जो कि ह़लाल व ह़राम की तमीज़ नहीं रखता शराब पिलाई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उसे **त़ी-नतुल ख़बाल** से पिलाए ।''(2)

﴾70﴿...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जिस ने शराब पी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से 40 दिन तक राज़ी न होगा, (इसी दौरान) अगर वोह मर गया तो ह़ालते कुफ़्र में मरेगा और अगर उस ने तौबा कर ली तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमाएगा और अगर चौथी मर्तबा उस ने ऐसा किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उसे **त़ी-नतुल ख़बाल** से पिलाए ।'' अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **त़ी-नतुल ख़बाल** क्या है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''जहन्नमियों की पीप ।''(3)

﴾71﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जो शख़्स शराब पिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ 40 दिन तक उस पर नाराज़ रहता है और वोह शराबी नहीं जानता कि हो सकता है उस की मौत उन्ही रातों में वाक़ेअ़ हो जाए, अगर वोह दोबारा पिये तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ 40 दिन तक उस पर नाराज़ रहता है जब कि वोह नहीं जानता कि शायद उस की मौत उन्ही रातों में वाक़ेअ़ हो जाए और अगर वोह फिर पिये तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ 40 दिन तक उस पर नाराज़ रहता है और येह 120 रातें हो गईं, इस के बा'द अगर वोह फिर पिये तो **रद-ग़तुल ख़बाल**

---

1 ......المستدرک، کتاب الامامة وصلاة الجماعة، باب اذا حضرت الصلوة......الخ، الحدیث : ۹۸۴، ج ۱، ص ۵۳۸ـ

2 ......سنن ابی داود، کتاب الاشربة، باب ماجاء فی السکر، الحدیث : ۳۶۸۰، ص ۱۴۹۶، "نَجَّسَتْ" بدله "بُخِسَتْ"ـ

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث اَسماء ابنة یزید، الحدیث : ۲۷۶۷۴، ج ۱۰، ص ۴۴۳ـ



www.dawateislami.net

में होगा।'' अ़र्ज़ की गई : **''रद-ग़तुल ख़बाल** क्या चीज़ है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''जहन्नमियों का पसीना और पीप।''

## जहन्नम में शराबी का खाना पीना :

《72》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जो नशे की ह़ालत में दुन्या से गया वोह क़ब्र में भी नशे की ह़ालत में दाख़िल होगा और बरोज़े क़ियामत भी नशे की ह़ालत में उठाया जाएगा और उसे नशे ही की ह़ालत में जहन्नम में एक पहाड़ की त़रफ़ जाने का हुक्म दिया जाएगा जिस का नाम **सक्रान** है, उस में एक चश्मा है जिस से पीप और ख़ून निकलता है और ज़मीनो आस्मान की उ़म्र के बराबर येही शराबियों का खाना पीना होगा।''(1)

《73》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जिस ने ह़ालते नशा में एक नमाज़ छोड़ी गोया उस के पास दुन्या और उस में मौजूद सब कुछ था मगर उस से छीन लिया गया और जिस ने नशे की ह़ालत में 4 नमाज़ें छोड़ीं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उसे **त़ी-नतुल ख़बाल** से पिलाए।'' अ़र्ज़ की गई : **''त़ी-नतुल ख़बाल** क्या है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''जहन्नमियों की पीप।''(2)

《74》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जिस ने ह़ालते नशा में एक नमाज़ छोड़ी गोया उस के पास दुन्या और उस में मौजूद सब कुछ था मगर उस से छीन लिया गया।''(3)

《75》...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ग़ैब निशान है : ''जब मेरी उम्मत 5 चीज़ों को ह़लाल समझने लगेगी तो उन पर तबाही व बरबादी आएगी : (1)...... जब एक दूसरे को ला'न त़ा'न करना आ़म हो जाएगा (2)...... लोग शराबें पियेंगे (3)...... रेशम (का लिबास) पहनेंगे (4)...... गाने वाले लड़के रखेंगे और (5)...... मर्द मर्दों से और औ़रतें औ़रतों से ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया पूरी करेंगे।''(4)

---

1 ......الکامل فی ضعفاء الرجال، الرقم ۵۵ ابراھیم ابو ھُدْبَۃ، ج۱، ص۳۴۳۔

2 ......المستدرک، کتاب الاشربۃ، باب اجتنبوا الخمر فانھا مفتاح کل شر، الحدیث: ۷۳۱۵، ج۵، ص۲۰۲۔

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللہ بن عمرو بن العاص، الحدیث: ۶۶۷۱، ج۲، ص۵۹۳۔

4 ......شعب الایمان للبیہقی، باب فی تحریم الفروج، الحدیث: ۵۴۶۹، ج۴، ص۳۷۷۔



www.dawateislami.net

## तम्बीह :

## एक क़त्रा शराब पीने का हुक्म :

मज़्कूरा तमाम गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और येह मज़्कूरा और आयिन्दा आने वाली अहादीसे मुबा-रका से अच्छी त़रह़ वाज़ेह़ है। इस का हुक्म येह है कि शराब का एक क़त्रा पीना भी इज्माअ़न कबीरा गुनाह है। येही हुक्म दीगर नशा आवर चीज़ों का है और ग़ैर नशा आवर चीज़ों में इख़्तिलाफ़ है कि क्या इन का एक क़त्रा पीना कबीरा गुनाह है या नहीं ? शवाफ़ेअ़ के नज़्दीक येह भी कबीरा गुनाह है। और शराब को "**अक्बरुल कबाइर**" का नाम दिया गया है। चुनान्चे,

## सब से बड़ा गुनाह :

﴾76﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से शराब के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह सब से बड़ा गुनाह और तमाम बुराइयों की जड़ है, शराब पीने वाला नमाज़ छोड़ देता है और अपनी मां, ख़ाला और फूफी से बदकारी का मुर-तकिब हो जाता है।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना रूयानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی का कलाम तक़ाज़ा करता है कि "शराब के इ़लावा किसी दूसरी चीज़ का पीना इस सूरत में कबीरा गुनाह है जब कि वोह नशा लाए।" लेकिन इसे रद कर दिया गया है क्यूं कि शवाफ़ेअ़ के नज़्दीक मश्हूर येही है कि नशा आवर चीज़ की ग़ैर नशा आवर मिक्दार भी शराब के तह़्त दाख़िल है और येह क़ियासी त़ौर पर लुग़त से साबित है और शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام के नज़्दीक इस मिक्दार में भी ह़द (या'नी मुक़र्ररा सज़ा) है या'नी ह़द इस बात की क़त्ई अ़लामत है कि येह (ह़द) जिस चीज़ पर लगाई जाए वोह कबीरा गुनाह है। ह़ज़रते सय्यिदुना रूयानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی के कलाम पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی का सुकूत इख़्तियार करना कमज़ोर बात है।

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़लीमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "अगर किसी ने शराब में इस के बराबर मिक्दार में पानी मिलाया और उस की शिद्दत ख़त्म हो गई फिर उस ने पी ली तो येह सग़ीरा गुनाह है।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی येह क़ौल ज़िक्र करने

1 ......مجمع الزوائد، کتاب الاشربۃ، باب ماجاء فی الخمر، الحدیث: ۸۱۴۷، ج۵، ص۱۰۴۔



www.dawateislami.net

के बा'द फ़रमाते हैं : ''इस में ग़ौरो फ़िक्र की ज़रूरत है क्यूं कि मेरे ख़याल के मुताबिक़ अस्हाबे मज़हब (या'नी शाफ़ेई उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام) ने इसे जाइज़ क़रार न दिया बल्कि वोह तो फ़रमाते हैं कि इस का एक क़त्रा पीना भी कबीरा गुनाह है हालां कि सब को मा'लूम है कि इस से नशा नहीं आता।'' हज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى का मज़्कूरा क़ौल वाज़ेह है। मगर येह उस शख़्स के मु-तअ़ल्लिक़ है जो शराब की हुरमत का अ़क़ीदा रखे जब कि इसे हलाल समझने वाले के मु-तअ़ल्लिक़ हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : ''मैं उसे हद लगाऊंगा मगर उस की गवाही क़बूल करूंगा।'' इस की वज़ाहत गुज़र चुकी है और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से येह भी मन्क़ूल है कि जिस का अ़क़ीदा हो कि शराब पीना कबीरा गुनाह नहीं (उस को भी हद लगेगी) इस बिना पर कि हज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى ने हज़रते सय्यिदुना रूयानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى से जो नक़्ल किया उसी की मिस्ल हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी अबू सईद हरवी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने भी ज़िक्र किया लेकिन उन के बर अ़क्स हुक्म लगाया और उन में से किसी को तरजीह न दी और कबीरा गुनाहों को शुमार करते हुए फ़रमाया कि शराब और इस के इलावा दीगर नशा आवर अश्या को पीना कबीरा गुनाह है और दीगर नशा आवर चीज़ों की थोड़ी मिक़्दार पीने में इख़्तिलाफ़ है जब कि पीने वाला शाफ़ेई मज़हब से तअ़ल्लुक़ रखता हो। मज़्कूरा बहस में ज़ियादा राजेह क़ौल येही है कि शराब का एक क़त्रा पीना भी कबीरा गुनाह है।

हज़रते सय्यिदुना हलीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى का येह क़ौल भी रद कर दिया गया है कि ''शराब पीना कबीरा गुनाह है, अगर इतनी कसरत से पिये कि नशा छा जाए या हिज़्यान बकने लगे तो येह फ़ोहूश काम है और अगर किसी ने शराब में उस के बराबर पानी मिलाया जिस से उस की शिद्दत और नुक़्सान ख़त्म हो गया तो येह सग़ीरा गुनाह है।'' बल्कि सहीह क़ौल वोह है जो हज़रते सय्यिदुना जलालुद्दीन बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى का है कि ''हज़रते सय्यिदुना हलीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के मज़्कूरा क़ौल के बर ख़िलाफ़ हमारे अस्हाब (या'नी शाफ़ेई उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام) इसे जाइज़ क़रार नहीं देते बल्कि येह लाज़िमी तौर पर कबीरा गुनाह है।''

(किताब की इब्तिदा में) हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्दुस्सलाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ السَّلَام के हवाले से कबीरा गुनाह की ता'रीफ़ गुज़र चुकी है : ''कबीरा गुनाह वोह है जिस के मुर-तकिब से दीन को हलका जानना इस तरह ज़ाहिर हो कि वोह **मन्सूस अ़लैह** (या'नी कुरआनो हदीस से साबित) सब से छोटे कबीरा गुनाह को हक़ीर जाने।'' और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस ता'रीफ़ को दलाइल से साबित किया यहां तक कि इर्शाद फ़रमाया : ''इस ता'रीफ़ की बिना पर हर वोह



www.dawateislami.net

फ़े'ल जिस के मु-तअ़ल्लिक़ मा'लूम हो कि इस का फ़साद उस फ़े'ल के फ़साद जितना हो जिस के साथ कोई वईद, ला'नत या ह़द मिली हुई हो या (उस का फ़साद) इस से भी ज़ियादा हो तो वोह कबीरा गुनाह है।''

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के शागिर्दे रशीद ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने दक़ीक़ुल ईद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मज़्कूरा इबारत के ह़ाशिये में फ़रमाते हैं : ''फ़साद डालने वाली चीज़ का उस चीज़ से ख़ाली होना ज़रूरी है जिस के साथ कोई दूसरा अम्र मिला हुवा हो क्यूं कि कभी इस में ग़-लती वाक़ेअ़ हो जाती है।'' मज़ीद फ़रमाते हैं : ''क्या आप ग़ौर नहीं करते कि शराब के फ़साद में ज़ेह्न सब से पहले नशा और अ़क़्ल के ख़लल की त़रफ़ जाता है और अगर हम शराब को इन मफ़ासिद से ख़ाली समझें तो लाज़िम आएगा कि मज़्कूरा फ़साद से ख़ाली होने के सबब इस का एक क़त़रा पीना कबीरा गुनाह न हो लेकिन इस का एक क़त़रा पीना भी दूसरी ख़राबी की वज्ह से कबीरा गुनाह है और वोह (ख़राबी) कस्रते शराब नोशी की जुरअत करना है और येह चीज़ मज़ीद ख़राबी में मुब्तला करती है। पस इस के साथ दूसरी ख़राबी का मिलना इसे कबीरा गुनाह बना देता है।''

**अल ख़ादिम** में है : ''ऐसी नबीज़ जिस के ह़राम होने में इख़्तिलाफ़ है, ह़ुरमत का ए'तिक़ाद रखते हुए उस की थोड़ी सी मिक़्दार पीने के कबीरा होने में उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इख़्तिलाफ़ है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) ने तसरीह़ की, कि इस में 2 मौक़िफ़ हैं अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ''थोड़ी सी शराब पीने वाले की गवाही रद कर दी जाएगी क्यूं कि वोह फ़ासिक़ है।'' और अगर ह़ुरमत के क़ौल पर अ़मल करते हुए शराब बत़ौरे दवा इस्ति'माल की गई तो इस का एह़तिमाल है कि इसे कबीरा न कहा जाए बशर्ते कि हमारा इस के मु-तअ़ल्लिक़ क़ौल येह हो कि इस सूरत में ह़द वाजिब नहीं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़-करिय्या यह़्या बिन शरफ़ न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने भी इसे सह़ीह़ क़रार दिया, और शराब नोशी पर जुरअत पैदा होने की वज्ह से इस के ख़िलाफ़ भी हो सकता है।''

दीगर बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जब येह साबित हो गया कि शराब का एक क़त़रा पीना भी कबीरा गुनाह है तो इसी त़रह़ हर नशा आवर चीज़ का एक क़त़रा भी कबीरा गुनाह होगा। पस अह़ादीसे मुबा-रका में शराब के मुआ़-मले में दस क़िस्म के लोगों पर वारिद ला'नत दीगर नशा आवर चीज़ों में भी जारी होगी। इस के जारी होने के 2 त़रीक़े हैं : (1)...... नस्स का त़रीक़ा या'नी बयान कर्दा सह़ीह़ क़ौल के मुत़ाबिक़ कि लुग़त क़ियासी



www.dawateislami.net

तौर पर साबित होती है। (2)...... या क़ियास का त़रीक़ा क्यूं कि येह बात मा'लूम है कि **मक़ीस** (या'नी जिसे क़ियास किया जाए) और **मक़ीस अ़लैह** (या'नी जिस पर क़ियास किया जाए) अह़काम में बराबर होते हैं।

﴾77﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा सलाहुद्दीन अ़लाई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मु–तवफ़्फ़ा 761 हि.) फ़रमाते हैं कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने शराब के मुआ़–मले में 10 क़िस्म के बन्दों पर ला'नत फ़रमाई है : (1)...... शराब बनाने वाला (2)...... बनवाने वाला (3)...... पीने वाला (4)...... उठाने वाला (5)...... उठवाने वाला (6)...... पिलाने वाला (7)...... बेचने वाला (8)...... इस की क़ीमत खाने वाला (9)...... ख़रीदने वाला और (10)...... ख़रीदवाने वाला।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलालुद्दीन बुल्क़ीनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ुल इस्लाम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जिस ह़दीस की त़रफ़ इशारा फ़रमाया है वोह मज़्कूरा अल्फ़ाज़ से मरवी नहीं बल्कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद, सय्यिदुना इमाम अबू दावूद और सय्यिदुना इमाम इब्ने माजह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم ने ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से इन अल्फ़ाज़ के साथ रिवायत की है कि दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''शराब को 10 ए'तिबार से मल्ऊन क़रार दिया गया है : (1)...... बज़ाते ख़ुद शराब पर (2)...... इस को पीने वाले (3)...... पिलाने वाले (4)...... बेचने वाले (5)...... ख़रीदने वाले (6)...... बनाने वाले (7)...... बनवाने वाले (8)...... उठाने वाले (9)...... उठवाने वाले और (10)...... इस की क़ीमत खाने वाले पर ला'नत की गई है।''[2] इस ह़दीसे पाक में शराब पीने वाले के इ़लावा 8 लोगों पर ला'नत की गई है, येह मुस्नदे अह़मद के अल्फ़ाज़ हैं जब कि अबू दावूद और इब्ने माजह शरीफ़ की रिवायत में है कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शराब पर, इस के पीने वाले, पिलाने वाले, बेचने वाले, ख़रीदने वाले, बनाने वाले, बनवाने वाले, उठाने वाले, और उठवाने वाले पर ला'नत फ़रमाई है।''[3] मज़्कूरा अल्फ़ाज़ अबू दावूद शरीफ़ के हैं और इब्ने माजह शरीफ़ की रिवायत में मज़ीद येह अल्फ़ाज़ भी हैं : ''और इस की क़ीमत खाने वाले पर भी (ला'नत फ़रमाई)।''[4]

---

1 ......جامع الترمذی، ابواب البیوع،باب النھی ان یتخذ الخمر خلّا، الحدیث : ۱۲۹۵ ،ص۱۷۸۱ ـ

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللّٰہ بن عمر بن الخطاب، الحدیث : ۴۷۸۷، ج۲،ص۲۵۴ ـ

3 ......سنن ابی داود ،کتاب الاشربۃ ، باب العصیر للخمر، الحدیث : ۳۶۷۴، ص۱۴۹۵ ـ

4 ......سنن ابن ماجہ، ابواب الاشربۃ، باب لعنت الخمر علی عشرۃ اوجہ، الحدیث : ۳۳۸۰، ص۲۶۸۱ ـ



www.dawateislami.net

इस ह़दीसे पाक में भी शराब पीने वाले के इ़लावा 8 क़िस्म के लोगों पर ला'नत की गई है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ई़सा तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحمَةُاللهِ الْقَوِى ने एक रिवायत नक़्ल फ़रमाई और इस के मु-तअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया कि येह ग़रीब है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि ''सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शराब के मुआ़-मले में 10 क़िस्म के लोगों पर ला'नत फ़रमाई है : (1) शराब बनाने वाला (2) बनवाने वाला (3) पीने वाला (4) पिलाने वाला (5) उठाने वाला (6) उठवाने वाला (7) बेचने वाला (8) इस की क़ीमत खाने वाला (9) ख़रीदने वाला और (10) ख़रीदवाने वाला।''[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने माजह क़ज़्वीनी عَلَيْهِ رَحمَةُاللهِ الْغَنِى ने भी इसी की मिस्ल रिवायत नक़्ल फ़रमाई जो शराब पीने वाले के इ़लावा दीगर 9 क़िस्म के लोगों को शामिल है।

मैं ने इब्तिदा में सह़ीह़ ह़दीसे पाक ज़िक्र की, कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शराब के मुआ़-मले में 10 क़िस्म के बन्दों पर ला'नत फ़रमाई : (1) शराब बनाने वाला (2) बनवाने वाला (3) पीने वाला (4) उठाने वाला (5) उठवाने वाला (6) पिलाने वाला (7) बेचने वाला (8) इस की क़ीमत खाने वाला (9) ख़रीदने वाला और (10) ख़रीदवाने वाला।[2]

इसी त़रह़ सह़ीह़ ह़दीसे पाक में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया मेरे पास जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام आए और कहा : ''ऐ **मुह़म्मद** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शराब, इस के बनाने वाले, बनवाने वाले, पीने वाले, उठाने वाले, उठवाने वाले, बेचने वाले, ख़रीदने वाले, पिलाने वाले और जिसे पिलाई जाए, सब पर ला'नत फ़रमाई है।''[3]

और एक रिवायत में इस त़रह़ है : ''ऐ **मुह़म्मद** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शराब पर, इस के बनाने वाले, बनवाने वाले, बेचने वाले, ख़रीदने वाले, पीने वाले, इस की क़ीमत खाने

---

1 ......جامع الترمذی، ابواب البیوع، باب النھی ان یتخذ الخمرخلا، الحدیث: ۱۲۹۵، ص۱۷۸۱۔

2 ......جامع الترمذی، ابواب البیوع، باب النھی ان یتخذ الخمرخلا، الحدیث: ۱۲۹۵، ص۱۷۸۱۔

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللہ بن عباس، الحدیث: ۲۸۹۹،ج۱،ص۶۷۷۔

المستدرک، کتاب الاشربۃ، باب ان اللہ لعن الخمر وشاربھا، الحدیث: ۷۳۱۱،ج۵،ص۲۰۱۔



www.dawateislami.net

वाले, उठाने वाले, उठवाने वाले, पिलाने वाले, और जिसे पिलाई जाए, सब पर ला'नत फ़रमाई है।"[1]

अह़ादीसे मुबा-रका के मज़्कूरा मज्मूए़ से उ़न्वान में ज़िक्र कर्दा मेरा मौक़िफ़ वाज़ेह़ हो गया नीज़ अक्सर शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने भी इन के कबीरा गुनाह होने की तसरीह़ की है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा सलाहुद्दीन अ़लाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه (मु-तवफ़्फ़ा 761 हि.) फ़रमाते हैं : "शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इस बात पर दलील क़ाइम फ़रमाई है कि शराब बेचना कबीरा गुनाह है और इस का आ़दी फ़ासिक़ है। शराब ख़रीदने, इस की कमाई खाने, इसे उठाने और पिलाने का भी येही हुक्म है। अलबत्ता ! इसे बनाने और बनवाने वाले के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं कि वोह इस वज्ह से फ़ासिक़ न होगा।"

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं : "फ़िस्क़ का हुक्म उस की निय्यत के साथ मश्रूत़ होना चाहिये या'नी अगर शराब बनाने या बनवाने वाले ने इस से शराब की निय्यत की तो ह़दीसे पाक में वारिद वईद के तह़्त दाख़िल होगा और अगर शराब के इलावा किसी और चीज़ (म-सलन सिर्का) की निय्यत हो तो इस के तह़्त दाख़िल न होगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सब्बाग़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने नक़्ल फ़रमाया कि "शराब का मह़ज़ रखना कबीरा गुनाह नहीं बल्कि इसे सिर्के में बदलने के लिये रखना जाइज़ है।" ह़ज़रते सय्यिदुना मावर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "शराब को सिर्का बनाने के लिये रखना ह़राम नहीं लेकिन अगर इस ने शराब को उसी ह़ालत पर ज़ख़ीरा करने का इरादा किया तो फ़ासिक़ हो जाएगा।" और क़स्द के मा'ना से जिस त़रफ़ हम ने इशारा किया है येह उस के मुत़ाबिक़ है।

ह़ज़रते सय्यिदुना जलालुद्दीन बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : "क़स्द से जिस त़रह़ अ़ल्लामा सलाहुद्दीन अ़लाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه (मु-तवफ़्फ़ा 761 हि.) ने इशारा किया है वोह सह़ीह़ है और अगर शराब बनाने से कोई इरादा ही न हो या सिर्का बनाने का इरादा हो तो ह़राम नहीं।"

## ह़ासिले कलाम :

ह़ासिले बह़्स येह है कि हुरमत के इ़ल्म के बा वुजूद जानबूझ कर शराब या नबीज़ की मा'मूली मिक़्दार पीना अगर्चे पकी हुई हो, कबीरा गुनाह है, येही हुक्म बिला ह़ाजत इसे बेचने और ख़रीदने का है म-सलन दवा के त़ौर पर या सिर्का बनाने के इरादे से ऐसा करे, इसी त़रह़

[1] ......المستدرک، کتاب البیوع، باب ان اللّٰہ لعن الخمر......الخ،الحدیث :۲۲۸۱،۲۲۸۲،ج۲،ص۳۳۱۔



www.dawateislami.net

इसे बनाने और बनवाने वग़ैरा का भी येही हुक्म है जब कि वोह इस से पीने या पीने पर मदद ह़ासिल करने का इरादा करे, अलबत्ता ! इसे सिर्का बनाने या बनवाने के इरादे से रखना जाइज़ है।

## ख़ातिमा :

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने मज़्कूरा बह़्स के बा'द ख़ातिमा लिखा है लिहाज़ा मैं भी यहां एक ख़ातिमा ज़िक्र कर रहा हूं ताकि जो रिवायात बयान न हो सकीं उन का ज़िक्र हो जाए अगर्चे इस में बा'ज़ वोह रिवायात भी आएंगी जो बयान हो चुकी हैं। ख़ुलासए कलाम दर्जे ज़ैल है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमाने आ़लीशान में शराब पीने से मन्अ़ फ़रमाया और इस से बचने का हुक्म फ़रमाया :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَ الْمَيْسِرُ وَ الْاَنْصَابُ وَ الْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَ الْمَيْسِرِ وَ يَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ عَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ۝ (پ۷، المائدة: ۹۰، ۹۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! शराब और जूआ और बुत और पांसे नापाक ही हैं शैत़ानी काम तो इन से बचते रहना कि तुम फ़लाह़ पाओ, शैत़ान येही चाहता है कि तुम में बैर और दुश्मनी डलवा दे शराब और जूए में और तुम्हें **अल्लाह** की याद और नमाज़ से रोके तो क्या तुम बाज़ आए।

﴾78﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तमाम बुराइयों की जड़ शराब से बचो ![1] जो इस से न बचा उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी की और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी की वज्ह से अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ हो गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَ مَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ يَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۪ وَ لَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ (پ۴، النساء: ۱۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो **अल्लाह** और उस के रसूल की ना फ़रमानी करे और उस की कुल ह़दों से बढ़ जाए **अल्लाह** उसे आग में दाख़िल करेगा जिस में हमेशा रहेगा और उस के लिये ख़्वारी का अ़ज़ाब है।''

अह़ादीस में येह मज़्मून बयान हो चुका है कि जब शराब ह़राम कर दी गई तो सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن एक दूसरे के पास गए और कहने लगे : ''शराब ह़राम कर दी

---

1 ......سنن النسائی، کتاب الاشربة، باب ذکر الآثام المتولدة عن شرب الخمر......الخ، الحدیث: ۵۶۶۹، ص۲۴۴۸۔



www.dawateislami.net

गई है और इसे शिर्क के बराबर क़रार दिया गया है।" शराब का आदी बुत परस्त की त़रह़ है और अगर वोह तौबा किये बिग़ैर मर गया तो जन्नत में दाख़िल न होगा (या'नी अगर वोह ह़लाल जान कर पिये)।

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का मौक़िफ़ येह है कि शराब नोशी करना कबीरा गुनाहों में सब से बड़ा गुनाह है और बिला शुबा येह तमाम बुराइयों की जड़ है और कई अह़ादीसे मुबा-रका में इस के पीने वाले और दीगर मुआ़विनीन पर ला'नत की गई है। नीज़ ह़दीसे पाक में येह बात गुज़र चुकी है कि नशा करने वाले की नमाज़ 40 दिन तक क़बूल नहीं की जाती और न ही इस की कोई नेकी आस्मान की त़रफ़ बुलन्द होती है।

﴾79﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जिस ने शराब पी और उसे नशा न हुवा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से 40 रातों तक ए'राज़ फ़रमाता है और जिस ने शराब पी और उस पर नशा त़ारी हो गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ 40 रातें न तो उस के नफ़्ल क़बूल फ़रमाएगा और न ही फ़र्ज़ और अगर वोह इसी दौरान मर गया तो बुत परस्त की मौत मरा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उसे **ती़-नतुल ख़बाल** से पिलाए।" अ़र्ज़ की गई : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **ती़-नतुल ख़बाल** क्या है ?" इर्शाद फ़रमाया : "जहन्नमियों का ख़ून और पीप।"(1)

﴾80﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अबी औफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शराब पीने की आ़दत में मरा वोह लात व उ़ज़्ज़ा की पूजा करने वाले की त़रह़ मरा।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा गया : "**मुदमिनुल ख़म्र** वोह है जिसे शराब पीने से इफ़ाक़ा न हो।" इर्शाद फ़रमाया : "नहीं, बल्कि **मुदमिनुल ख़म्र** उसे कहते हैं कि जब भी शराब पाए पी ले अगर्चे इसे कई साल के बा'द मिले।"(2)

﴾81﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने शाम को शराब पी वोह सुब्ह़ मुशरिक हो जाएगा और जिस ने सुब्ह़ को शराब पी वोह शाम के वक़्त मुशरिक हो जाएगा।"(3)

---

1 ......كتاب الكبائر للذهبى، الكبيرة التاسعة عشرة: شرب الخمر، ص ٩٢۔

2 ......المرجع السابق ـ الكامل فى ضعفاء الرجال، الرقم ٤٤٥ الحسن بن عمارة، ج٣، ص١٠٤ ـ

3 ......كتاب الكبائر للذهبى، الكبيرة التاسعة عشرة: شرب الخمر، ص ٩٣۔

المصنّف لعبد الرزاق ،كتاب الاشربة والظروب،باب ما يقال فى الشراب، الحديث: ١٧٣٨٣، ج٩، ص١٤٩ ـ



www.dawateislami.net

## शराबियों से दूर रहने का हुक्म :

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : ''जब शराबी बीमार हो जाएं तो उन की इ़यादत न करो।''(1)

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی ने ज़िक्र फ़रमाया : ''हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि शराबियों को सलाम न करो।''(2)

﴾82﴿...... सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''न शराबियों के साथ बैठो, न उन के बीमारों की इ़यादत करो और न ही उन के जनाज़ों में शिर्कत करो, शराब पीने वाला बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में आएगा कि उस का चेहरा सियाह होगा, उस की ज़बान सीने पर लटक रही होगी, थूक बह रहा होगा और हर देखने वाला उस से नफ़रत करेगा।''(3)

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि शराबियों की इ़यादत करने और इन्हें सलाम करने से मन्अ़ किया गया है, इस लिये कि शराब पीने वाला फ़ासिक़ व मल्ऊ़न है जैसा कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस पर ला'नत फ़रमाई है, पस अगर उस ने शराब ख़रीदी और उसे बनाया तो वोह 2 मर्तबा मल्ऊ़न है और अगर किसी दूसरे को पिलाई तो 3 मर्तबा मल्ऊ़न है, इसी वज्ह से उस की इ़यादत करने और उसे सलाम करने से मन्अ़ किया गया है मगर येह कि वोह तौबा करे या'नी अगर उस ने तौबा कर ली तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमाएगा।

## शराब को बत़ौरे दवा इस्ति'माल करना कैसा ?

शराब को बत़ौरे दवा इस्ति'माल करना भी जाइज़ नहीं। चुनान्चे,

﴾83﴿...... हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : ''मेरी बेटी ने मुझ से किसी मरज़ की शिकायत की तो मैं ने उस के लिये एक कूज़े में नबीज़ बनाई, हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ लाए जब कि नबीज़ जोश मार रही थी, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ''ऐ उम्मे स-लमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا)

---

1 ......الادب المفرد للبخاری، باب عیادة الفاسق، الحدیث : ۵۲۹،ص۱۴۰، "شربة" بدله "شُرّاب"۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب من لم یسلم علی من اقترف ذنبا......الخ، ص۵۲۷۔

3 ......الکامل فی ضعفاء الرجال، الرقم ۳۹۹ الحکم بن عبد اللّٰہ، ج۲، ص۵۰۲۔



www.dawateislami.net

येह क्या है ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''मैं इस से अपनी बेटी का इलाज करूंगी।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो चीज़ मेरी उम्मत पर ह़राम की है उस में इस के लिये शिफ़ा नहीं रखी।''(1)

## शराब के मु-तअ़ल्लिक़ मु-तफ़र्रिक़ अह़ादीस :

शराब के बारे में मु-तफ़र्रिक़ अह़ादीस मरवी हैं। उन में से एक ह़दीसे पाक ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू नुऐ़म अह़मद बिन **अ़ब्दुल्लाह** अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने ''**ह़िल्यतुल औलियाअ व त़-बक़ातुल अस्फ़ियाअ**'' में ज़िक्र फ़रमाई है। चुनान्चे,

﴾84﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में एक मटके में जोश मारती हुई नबीज़ लाई गई तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इसे दीवार पर दे मारो, यक़ीनन येह उस शख़्स का मश्रूब है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और यौमे आख़िरत पर ईमान नहीं रखता।''(2)

## बरोज़े क़ियामत शराबी का मद्दे मुक़ाबिल कौन होगा ?

﴾85﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस के सीने में क़ुरआने पाक की कोई आयते मुबा-रका हो और वोह उस पर शराब बहा दे तो उस आयते मुबा-रका का हर ह़र्फ़ आएगा और उसे पेशानी से पकड़ लेगा यहां तक कि उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में खड़ा कर के उस से झगड़ा करेगा और जिस से क़ुरआन झगड़ा करेगा वोह उस का मद्दे मुक़ाबिल होगा, पस उस के लिये ख़राबी है जिस का मद्दे मुक़ाबिल बरोज़े क़ियामत क़ुरआन होगा।''(3)

## नशा करने वालों की सोह़बत इख़्तियार करने का अन्जाम :

﴾86﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ग़ैब निशान है : जो लोग दुन्या में किसी नशा करने वाले के पास जम्अ़ होते हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन सब को आग में जम्अ़ फ़रमाएगा तो वोह एक दूसरे के पास मलामत करते हुए आएंगे, उन में से एक दूसरे से कहेगा : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे मेरी त़रफ़ से अच्छा बदला न दे तूने ही मुझे इस जगह पहुंचाया।'' तो

---

1 ......المعجم الكبير،الحديث : ٧٤٩ ،ج٢٣، ص٣٢٦، بتغيرٍقليلٍ۔

2 ......حلية الاولياء،ابو عمروالاوزاعی، الحديث : ٨١٤٨،ج٦،ص١٥٩ ، بتغيرٍ قليلٍ۔

3 ......كتاب الكبائر للذهبی، الكبيرة التاسعة عشرة:شرب الخمر،ص ٩٥ ۔



www.dawateislami.net

दूसरा भी इसी त़रह़ जवाब देगा।(1)

## आख़िरत में शराबियों का मश्रूब :

﴾87﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने दुन्या में शराब पी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे काले सांपों के ज़ह्र का ऐसा घूंट पिलाएगा कि जिसे पीने से पहले ही उस के चेहरे का गोश्त बरतन में गिर जाएगा, और जब वोह उसे पियेगा तो उस का गोश्त और खाल झड़ जाएगी जिस से दोज़ख़ियों को भी अज़िय्यत पहुंचेगी। याद रखो ! बेशक शराब पीने वाला, बनाने और बनवाने वाला, उठाने और उठवाने वाला और इस की कमाई खाने वाला, सब गुनाह में बराबर के शरीक हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न तो इन में से किसी की कोई नमाज़ क़बूल फ़रमाएगा, न रोज़ा और न ही ह़ज यहां तक कि वोह तौबा कर लें, अगर बिग़ैर तौबा किये मर गए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उन्हें दुन्या में पिये हुए हर घूंट के बदले जहन्नम की पीप पिलाए। जान लो ! हर नशा आवर चीज़ ह़राम है और हर शराब ह़राम है।"(2)

﴾88﴿...... ह़दीसे पाक में है कि "शराबी जब पुल सिरात़ पर आएंगे तो जहन्नम के फ़िरिश्ते उन्हें उठा कर **नह्रुल ख़बाल** की त़रफ़ ले जाएंगे, पस वोह शराब के पिये हुए हर गिलास के बदले **नह्रुल ख़बाल** से पियेंगे और वोह ऐसा मश्रूब है कि अगर आस्मान से बहा दिया जाए तो उस की ह़रारत से तमाम आस्मान जल जाएं। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस की पनाह त़लब करते हैं।"(3)

## शराब के मु-तअ़ल्लिक़ अक़्वाले अस्लाफ़ :

शराब के मु-तअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن के भी कई फ़रामीन मन्क़ूल हैं। चुनान्चे,

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "जब कोई शराबी मर जाए तो उसे दफ़्न कर दो, इस के बा'द मुझे एक लकड़ी पर लटका कर उस की क़ब्र खोदो, अगर उस का चेहरा क़िब्ले से फिरा हुवा न पाओ तो मुझे यूंही लटक्ता छोड़ देना।"(4)

---

(1)......كتاب الكبائر للذهبی، الكبيرة التاسعة عشرة:شرب الخمر،ص ٩٥۔

(2)......مسند الحارث، زوائد الهيثمی، كتاب الصلاة،باب فی خطبته قد كذبها، الحديث:٢٠٥،ج١،ص٣٠٩۔
كتاب الكبائرللذهبی، الكبيرة التاسعة عشرة: شرب الخمر، ص ٩٥۔

(3)......كتاب الكبائر للذهبی، الكبيرة التاسعة عشرة:شرب الخمر،ص ٩٦۔ (4)......المرجع السابق۔



www.dawateislami.net

## शराब पीने वाला ईमान से महरूम हो गया :

﴾2﴿...... मन्कूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने एक शागिर्द के पास तशरीफ़ लाए जिस की मौत का वक़्त क़रीब था, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उसे कलिमए शहादत की तल्क़ीन की मगर उस की ज़बान से अदा न हो सका, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उस के पास बार बार कलिमए त़य्यिबा दोहराते रहे तो उस ने कहा : ''मैं नहीं पढ़ता और मैं इस से बेज़ार हूं।'' इस के बा'द वोह मर गया तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अश्क बहाते हुए वहां से वापस तशरीफ़ ले आए, कुछ मुद्दत के बा'द आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उसे ख़्वाब में इस ह़ाल में देखा कि उसे आग में घसीटा जा रहा था, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ''ऐ मिस्कीन! किस सबब से तुझ से ईमान छीन लिया गया ?'' उस ने कहा : ''ऐ उस्ताज़े मोह़तरम! मुझे एक बीमारी लग गई थी, मैं चन्द त़बीबों के पास गया तो उन्हों ने कहा : हर साल शराब का एक पियाला पी लिया कर, अगर तूने ऐसा न किया तो तेरी बीमारी कभी ख़त्म न होगी, चुनान्चे मैं हर साल बत़ौरे दवा शराब का एक पियाला पी लिया करता था।''[1] पस जब दवा के त़ौर पर शराब पीने वाले का येह अन्जाम हुवा तो उन लोगों का क्या ह़ाल होगा जो इसे बिला उ़ज़्र पीते हैं ? हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हर आफ़त व मुसीबत से आ़फ़िय्यत त़लब करते हैं।

## शराबी का मुंह क़िब्ले से फिर गया :

﴾3﴿...... किसी तौबा करने वाले से उस की तौबा का सबब पूछा गया तो उस ने बताया कि मैं क़ब्रें खोदा करता था, मैं ने उन में कुछ मुर्दे ऐसे देखे जिन के चेहरे क़िब्ले से फिरे हुए थे, जब उन के घर वालों से इस की वज्ह पूछी तो उन्हों ने बताया कि वोह दुन्या में शराब पिया करते थे और बिग़ैर तौबा किये मर गए।

﴾4﴿...... एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मेरा बेटा फ़ौत हो गया, दफ़्न करने के कुछ दिन बा'द मैं ने उसे ख़्वाब में देखा कि उस के सर के बाल सफ़ेद हो चुके थे, मैं ने पूछा : ''ऐ मेरे बेटे! मैं ने तुझे नौ उ़म्री में दफ़्न किया था तो किस चीज़ ने तुझे बूढ़ा कर दिया ?'' उस ने जवाब दिया : ''ऐ मेरे वालिदे मोह़तरम! जब आप ने मुझे दफ़्न कर दिया तो मेरे क़रीब एक ऐसे शख़्स को दफ़्न किया गया जो दुन्या में शराब पीता था, पस उस के आने से उस की क़ब्र में आग इस

1......منهاج العابدين للغزالی ، الباب الخامس فی العقبة الخامسةوهی عقبة البواعث ، ص ۱۵ ۔



www.dawateislami.net

शिद्दत से भड़की कि उस की गरमी की शिद्दत से हर बच्चा बूढ़ा हो गया।''(1)

## ह़शीश का हुक्म :

जान लीजिये ! ह़शीश भी शराब की त़रह़ ह़राम है और उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के एक त़बके़ के नज़्दीक शराबी की त़रह़ इसे खाने वाले को भी ह़द लगाई जाएगी। ह़शीश, शराब से ज़ियादा ख़बीस इस ए'तिबार से है कि येह अ़क़्ल और मिज़ाज में बिगाड़ पैदा कर देती है और इसे इस्ति'माल करने वाला दीगर मफ़ासिद का शिकार हो जाता है यहां तक कि उस में मुरव्वत नाम की कोई चीज़ नहीं रहती और हीजड़ा पन, मिज़ाज की ख़राबी और दीगर कई बुराइयों का मुशा-हदा होने लगता है जैसे औ़रतों जैसी फ़ित़रत हो जाना। दूसरों के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ैरत खाना तो दूर की बात है वोह अपने बीवी बच्चों के मुआ़-मले में भी इस क़दर बे ग़ैरती पर उतर आता है कि एक अ़क़्ल मन्द इन्सान इस ह़-र-कत को इन्तिहाई अ़जीब समझता है। भंग और अफ़्यून वग़ैरा के आ़दी का भी येही हुक्म है।(2) जैसा कि **किताबुल बैअ़** से पहले (जिल्द **1**, कबीरा नम्बर **170** में) बयान हो चुका है। शराब, भंग से ज़ियादा बुरी इस ए'तिबार से है कि येह दूसरों पर ग़-लबा पाने, एक दूसरे से बह़सो मुबा-ह़सा और लड़ाई झगड़ा करने और आपस में दस्तो गिरीबान होने की त़रफ़ ले जाती है, अलबत्ता ! दोनों में से हर एक ज़िक्रे इलाही और नमाज़ से रोकती है। बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की राय येह है कि भंग की त़रह़ ह़शीश खाने वाले को भी ता'ज़ीर की जाए। ह़द के क़ाइलीन की क़वी दलील येह है कि ह़शीश खाने वाले पर नशा त़ारी हो जाता है और शराबी की त़रह़ मज़ीद त़लब करता है यहां तक कि खु़द को इस से नहीं रोक सकता और मज़्कूरा बुराइयों (म-सलन अ़क़्ल व मिज़ाज की ख़राबी और बे ग़ैरती वग़ैरा) के साथ साथ येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र और नमाज़ से भी रोक देती है।

---

(1)......كتاب الكبائر للذهبی،الكبيرة التاسعة عشرة:شرب الخمر،ص ٩٦ ـ

(2)...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**बहारे शरीअ़त**'' जिल्द सिवुम सफ़ह़ा 673 पर है **:** ''भंग (एक क़िस्म का नशा आवर पत्तों वाला पौदा जिस के पत्तों को घोट कर पीते हैं) और अफ़्यून (एक नशा आवर चीज़ जो पोस्त के रस को मुन्जमिद कर के बनाई जाती है) इतनी इस्ति'माल करना कि अ़क़्ल फ़ासिद हो जाए, ना जाइज़ है जैसा कि अफ़्यूनी और भंगेड़े (अफ़्यून और भंग का नशा करने वाले अफ़राद) इस्ति'माल करते हैं और अगर कमी के साथ इतनी इस्ति'माल की गई कि अ़क़्ल में फ़ुतूर नहीं आया जैसा कि बा'ज़ नुस्ख़ों में अफ़्यून क़लील जुज़ होता है कि फ़ी ख़ूराक इस का इतना ख़फ़ीफ़ जुज़ होता है कि इस्ति'माल करने वाले को पता भी नहीं चलता कि अफ़्यून खाई है, इस में ह़रज नहीं।''



www.dawateislami.net

## ह़शीश के हुक्म में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल :

इस के मु-तअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं। ह़शीश में ह़द लगाने और इस के नापाक होने में उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के इख़्तिलाफ़ का सबब येह है कि येह ठोस खाई जाने वाली है और शराब नहीं। एक क़ौल येह है कि येह शराब की त़रह़ नजिस है। ह़ना-बला और बा'ज़ शवाफ़ेअ़ के नज़्दीक येही क़ौल सह़ीह़ है। जब कि एक क़ौल के मुत़ाबिक़ येह ठोस होने की वज्ह से पाक है और शवाफ़ेअ़ के नज़्दीक येही सह़ीह़ है। एक क़ौल येह भी है कि माएअ़ ह़ालत में नापाक और ठोस ह़ालत में पाक है। बहर ह़ाल येह नशा आवर शराब के हुक्म में दाख़िल है जिसे शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सरीह़ और मा'नवी त़ौर पर ह़राम क़रार दिया है।

﴾89﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हमें इन दो शराबों के मु-तअ़ल्लिक़ हुक्म इर्शाद फ़रमाइये जो हम यमन में बनाते थे। एक "**बित्अ़**" है जो शह्द की नबीज़ है यहां तक कि सख़्त हो जाए और (दूसरी) "**मिर्ज़**" है जो जुवार और जव की नबीज़ है यहां तक कि ख़ूब गाढ़ी हो जाए।" आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه इर्शाद फ़रमाते हैं कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **जवामिउ़ल कलिम**(1) मुकम्मल त़ौर पर अ़त़ा किये गए थे। चुनान्चे, इर्शाद फ़रमाया : "हर नशा आवर चीज़ ह़राम है।"(2)

﴾90﴿...... और येह भी इर्शाद फ़रमाया : "जिस की ज़ियादा मिक़्दार नशा दे उस की थोड़ी मिक़्दार भी ह़राम है।"(3)

मज़्कूरा फ़रमाने आ़लीशान में हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खाई या पी जाने वाली (नशा आवर) चीज़ में फ़र्क़ नहीं किया क्यूं कि कभी शराब भी रोटी के साथ बत़ौरे सालन खाई जाती है और कभी ह़शीश भी घोल ली जाती है, पस इन दोनों में से हर एक खाई और पी जा सकती है। उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने

---

1...... जवामिउ़ल कलिम से मुराद ऐसे कलिमात हैं जो इ़बारत के लिहाज़ से मुख़्तसर और मआ़नी व मत़ालिब के लिहाज़ से जामेअ़ हों। (कौसरुल ख़ैरात, स. 55)

2......صحيح مسلم، كتاب الاشربة، باب بيان ان كل مسكر خمر......الخ، الحديث: ٥٢١٦،٥٢١٤، ص١٠٣٦۔

3......سنن ابى داود، كتاب الاشربة، باب ماجاء فى السكر، الحديث: ٣٦٨١، ص١٤٩٦۔



www.dawateislami.net

इस का ज़िक्र नहीं फ़रमाया क्यूं कि येह अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के ज़माने में नहीं थी बल्कि इस्लामी मुल्कों में तातारियों की यलग़ार के बा'द येह नुमूदार हुई और किसी ने कितनी अच्छी बात कही :

فَــآكِـلُهَـا وَزَاعِـمُهَـا حَلَالاً      فَتِلْكَ عَلَى الشَّقِيِّ مُصِيبَتَانِ

**तरजमा :** इसे खाने वाले और इसे ह़लाल गुमान करने वाले बद बख़्त पर दो मुसीबतें हैं।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! शैत़ान जिस क़दर ह़शीश पीने से ख़ुश हुवा उतना किसी चीज़ से ख़ुश नहीं हुवा क्यूं कि उस ने इसे कमीने लोगों के लिये आरास्ता व मुज़य्यन किया।(1)

## कफ़न चोर के इन्किशाफ़ात :

मन्क़ूल है कि ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान के पास एक नौ जवान ग़मगीन ह़ालत में आया और अ़र्ज़ की : "ऐ ख़लीफ़ा ! मैं ने एक बहुत बड़े गुनाह का इरतिकाब किया है, क्या मेरे लिये तौबा की कोई सूरत है ?" अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान ने पूछा : "तेरा गुनाह क्या है ?" उस ने बताया : "बहुत बड़ा है।" ख़लीफ़ा ने दोबारा पूछा : "तेरा गुनाह जो भी हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तौबा कर वोह अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता और गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाता है।" उस ने अ़र्ज़ की : "ऐ ख़लीफ़ा ! मैं (कफ़न चोरी करने के लिये) क़ब्रें खोदा करता था, इस दौरान मैं ने उन में अ़जीबो ग़रीब चीज़ें देखीं।" ख़लीफ़ा ने पूछा : "तूने क्या देखा ?" उस ने बताया : मैं ने एक रात एक क़ब्र खोदी तो देखा कि मुर्दे का मुंह क़िब्ले से फिरा हुवा है, मैं डर गया और निकलने का इरादा ही किया था कि क़ब्र में से किसी कहने वाले ने कहा : "क्या तुम मय्यित के बारे में नहीं पूछोगे कि इस का चेहरा क़िब्ले से क्यूं फैर दिया गया है ?" मैं ने इस का सबब पूछा तो उस ने बताया कि "येह नमाज़ को हलका जानता था लिहाज़ा इस जैसे की येही सज़ा है।"

फिर मैं ने दूसरी क़ब्र खोदी तो क़ब्र वाले को देखा कि वोह ख़िन्ज़ीर बन चुका था और उस की गरदन बेड़ियों और त़ौक़ से बंधी हुई थी। मैं उस से भी डर गया और निकलने का इरादा ही किया था कि अचानक फिर किसी की येह आवाज़ सुनी : "क्या तुम इस के अ़मल के मु-तअ़ल्लिक़ नहीं पूछोगे और येह कि इसे क्यूं अ़ज़ाब दिया जा रहा है ?" मैं ने अ़ज़ाब का सबब पूछा तो उस ने बताया : "येह शराब पीता था और बिग़ैर तौबा किये मर गया।" फिर

---

(1)......كتاب الكبائر للذهبی، الكبيرة التاسعة عشرة:شرب الخمر، ص٩٨۔



www.dawateislami.net

मैं ने तीसरी क़ब्र खोदी तो क़ब्र वाले को ज़मीन में आग की मैख़ों से बंधा हुवा पाया, उस की ज़बान गुद्दी से बाहर निकली हुई थी, मैं डर गया और वापस पलटने की ख़ातिर निकलने का इरादा ही किया था कि अचानक आवाज़ आई : "क्या तुम इस के ह़ाल के बारे में नहीं पूछोगे और येह कि इसे क्यूं अ़ज़ाब दिया जा रहा है ?" मैं ने पूछा : "इसे अ़ज़ाब क्यूं दिया जा रहा है ?" तो उस ने बताया : "येह पेशाब (के छींटों) से नहीं बचता था और लोगों की चुग़ली खाता था लिहाज़ा इस जैसे की येही सज़ा है।" फिर मैं ने चौथी क़ब्र खोदी तो मुर्दे को आग में जलता पाया। ख़ौफ़ज़दा हो कर निकलने का इरादा ही किया था कि मुझे कहा गया : "क्या तुम इस के और इस के ह़ाल के मु-तअ़ल्लिक़ नहीं पूछोगे ?" मैं ने पूछा : "इस की इस ह़ालत की वज्ह क्या है ?" तो उस ने बताया : "येह नमाज़ तर्क करता था लिहाज़ा इस जैसे की येही सज़ा है।"

फिर मैं ने पांचवीं क़ब्र खोदी तो उसे ह़द्दे निगाह तक वसीअ़ पाया, उस में नूर ही नूर था और साह़िबे क़ब्र अपने बिस्तर पर मह़्वे आराम था और उस का लिबास इन्तिहाई ख़ूब सूरत था। येह मन्ज़र देख कर मुझ पर रो'ब त़ारी हो गया, अभी मैं ने निकलने का इरादा ही किया था कि आवाज़ आई : "क्या तुम इस के ह़ाल के बारे में नहीं पूछोगे कि इसे येह इ़ज़्ज़त क्यूं अ़त़ा की गई ?" मैं ने कहा : "(बताइये !) क्यूं अ़त़ा की गई ?" तो उस ने बताया : "येह फ़रमां बरदार नौ जवान था, इस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त व इ़बादत में ज़िन्दगी गुज़ारी।" येह सुन कर ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान ने कहा : **"इस में ना फ़रमानों के लिये इ़ब्रत और फ़रमां बरदारों के लिये बिशारत है।"**(1)

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें उन लोगों में से बनाए जो उस की इत़ाअ़त करते और उस के एह़सानो करम पर राज़ी हैं। (आमीन)

❁❁❁❁❁❁❁

1 ......كتاب الكبائر للذهبى، الكبيرة التاسعة عشرة:شرب الخمر، ص ٩٨ ـ



www.dawateislami.net

# باب الصيال

( क़त्ल करने, माल छीनने या डराने के लिये ह़म्ला करना )

## कबीरा नम्बर 383 : क़त्ल के इरादे से बे क़ुसूर आदमी पर ह़म्ला करना

## कबीरा नम्बर 384 : माल छीनने के लिये ह़म्ला करना

## कबीरा नम्बर 385 : बे इ़ज़्ज़ती के इरादे से ह़म्ला करना

## कबीरा नम्बर 386 : डराने, धम्काने के लिये ह़म्ला करना

### तेज़ धारदार आले से किसी को डराना बाइसे ला'नत है :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने अपने भाई की त़रफ़ लोहे (के आले) से इशारा किया तो फ़रिश्ते उस पर ला'नत भेजते रहते हैं यहां तक कि वोह इस से बाज़ आ जाए अगर्चे वोह मां बाप की त़रफ़ से उस का भाई हो।"[1]

### मक़्तूल जहन्नम में क्यूं ?

﴾2﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब दो मुसल्मान अपनी तलवारों के साथ मद्दे मुक़ाबिल होते हैं तो क़ातिल और मक़्तूल दोनों जहन्नमी होते हैं।"[2]

﴾3﴿...... एक रिवायत में है कि "जब दो मुसल्मानों में से एक अपने भाई पर अस्लह़ा उठाता है तो वोह दोनों जहन्नम के कनारे पर होते हैं और जब एक दूसरे को क़त्ल कर देता है तो दोनों जहन्नम में दाख़िल हो जाते हैं।" रावी फ़रमाते हैं कि हम ने अ़र्ज़ की या अ़र्ज़ की गई : **"या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! एक तो क़ातिल है लेकिन मक़्तूल का क्या क़ुसूर है ?" इर्शाद

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب البر، باب النهی عن الاشارة بالسلاح الی مسلم، الحدیث: ۲۶۱۶،ص۱۱۳۴،بتغیرٍ۔

2 ......صحیح مسلم،کتاب الفتن، باب اذا تواجه المسلمان بسیفیهما، الحدیث: ۷۲۵۲،ص۱۱۷۸۔



www.dawateislami.net

फ़रमाया : ''वोह भी अपने मद्दे मुक़ाबिल को क़त्ल करना चाहता था।''(1)

## मज़ाक़ में भी किसी को डराना जाइज़ नहीं :

﴾4﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''किसी मुसल्मान या मोमिन के लिये जाइज़ नहीं कि वोह मुसल्मान को डराए।''(2)

रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह बात उस वक़्त इर्शाद फ़रमाई जब एक शख़्स ने बतौरे मज़ाक़ दूसरे सोए हुए शख़्स के तरकश से तीर निकाल लिया उसे येह वह्म दिलाने के लिये कि वोह चोरी हो गया है।

﴾5﴿...... दूसरी रिवायत में है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसी जैसा मज़ाक़ करने वाले एक शख़्स से इर्शाद फ़रमाया : ''मुसल्मान को न डराओ ! क्यूं कि मुसल्मान को डराना बहुत बड़ा ज़ुल्म है।''(3)

﴾6﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : ''(हम बारगाहे मुस्त़फ़ा में ह़ाज़िर थे कि मह़फ़िल से) एक शख़्स उठ खड़ा हुवा मगर अपने जूते वहीं भूल गया, एक शख़्स ने ले कर अपने नीचे रख लिये, वोह शख़्स वापस आया और पूछने लगा : ''मेरे जूते तो नहीं देखे ?'' लोगों ने कहा : ''हम ने नहीं देखे।'' तो छुपाने वाला कहने लगा : ''येह पड़े हैं।'' इस पर हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मोमिन को डराना कैसा ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने अज़राहे मिज़ाह़ ऐसा किया था।'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दो या तीन बार इर्शाद फ़रमाया : ''मोमिन को डराना कैसा ?''(4)

﴾7﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जिस ने किसी मोमिन को डराया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उसे मह़शर के दिन की घबराहट से अम्न न दे।''(5)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الفتن، باب اذا تواجہ المسلمان بسیفیھما، الحدیث: ۲۲۵۲/۲۲۵۵، "حرف" بدلہ "جرف"۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب من یاخذ الشیٔ من مزاح، الحدیث: ۵۰۰۴، ص۱۵۸۹۔

3 ......الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب الترھیب من ترویع المسلم......الخ، الحدیث: ۴۳۰۱، ج۳، ص۳۸۶۔

4 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۹۸۰، ج۲۲، ص۳۹۵۔

5 ......المعجم الاوسط، الحدیث: ۲۳۵۰، ج۲، ص۲۰۔



www.dawateislami.net

﴾8﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जिस ने किसी मोमिन या मुसल्मान की त़रफ़ डराने वाली नज़र से नाहक़ देखा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत इस के बदले उसे ख़ौफ़ज़दा करेगा।"(1)

## तम्बीह :

मज़्कूरा गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और इस बाब की पहली और बा'द वाली अह़ादीसे मुबा-रका मज़्कूरा आख़िरी गुनाह के कबीरा होने पर सरा-ह़तन दलालत करती हैं और इस से पहले वाले गुनाहों का कबीरा होना इस से ब द-र-जए औला समझा जा सकता है और येह बिल्कुल वाज़ेह़ है अगर्चे मैं ने किसी को इन का ज़िक्र करते हुए नहीं पाया लेकिन येह बात इस के कबीरा गुनाह होने की ताईद करती है कि शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने मज़्कूरा सूरतों में ह़म्ला आवर का ख़ून मुबाह़ क़रार दिया है, फिर जिस पर ह़म्ला किया जाए कभी तो उस के लिये ख़ुद को ह़म्ला आवर से बचाना मुबाह़ क़रार देते हैं और कभी वाजिब। लिहाज़ा जब वोह अपना दिफ़ाअ़ करे तो लाज़िम है कि आसान से आसान त़रीक़ा अपनाए और आसान त़रीक़े के होते हुए कोई शदीद त़रीक़ा इख़्तियार न करे अलबत्ता ! अगर दुश्मन से दिफ़ाअ़ करते हुए उस के क़त्ल के इलावा कोई चारए कार न हो तो उस का ख़ून मुबाह़ है और उस के क़त्ल पर क़िसास, दियत या कफ़्फ़ारा नहीं। उस का ख़ून मुबाह़ क़रार देना उस के फ़ासिक़ होने की वाज़ेह़ दलील है पस जब उस का नाह़क़ ह़म्ला करना उस का ख़ून मुबाह़ क़रार दे रहा है तो ज़रूरी है कि वोह इस वज्ह से फ़ासिक़ कहलाए। लेकिन हम मज़्कूरा इस्तिद्लाल तब करते जब कि उस के मु-तअ़ल्लिक़ अह़ादीसे मुबा-रका मरवी न होतीं, लिहाज़ा जब अह़ादीसे मुबा-रका मौजूद हैं तो इस पर अ़मल कैसे हो सकता है। फिर मैं ने मुस्लिम शरीफ़ में इस की वाज़ेह़ दलील पाई। चुनान्चे,

## डाकू को क़त्ल करने का हुक्म :

﴾9﴿...... एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप क्या फ़रमाते हैं कि अगर कोई शख़्स मेरा माल छीनने के लिये आए (तो मैं क्या करूं) ?" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उसे अपना माल न दे।" उस ने अ़र्ज़ की :

---

(1)......المعجم الكبير، الحديث: ٧٠،ج١٣_١٤،ص٢٢، بتغيرٍقليلٍ۔


www.dawateislami.net

"अगर वोह मुझ से क़िताल करे ?" इर्शाद फ़रमाया : "तो तुम भी उस से क़िताल करो।" उस ने अ़र्ज़ की : "अगर वोह मुझे क़त्ल कर दे ?" इर्शाद फ़रमाया : "तो तुम शहीद होगे।" उस ने अ़र्ज़ की : "अगर मैं उसे क़त्ल कर दूं तो ?" इर्शाद फ़रमाया : "तो वोह जहन्नमी होगा।"(1)

﴾10﴿...... एक रिवायत में इस त़रह़ है कि एक शख़्स ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप क्या फ़रमाते हैं कि अगर कोई मेरे माल के मुआ़-मले में मुझ पर ज़ुल्म करे (तो मैं क्या करूं) ?" इर्शाद फ़रमाया : "उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा दो।" उस ने अ़र्ज़ की : "अगर वोह इन्कार कर दे तो ?" इर्शाद फ़रमाया : "फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा दो।" उस ने अ़र्ज़ की : "अगर वोह न माने तो ?" इर्शाद फ़रमाया : "फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा दो।" उस ने अ़र्ज़ की : "अगर फिर भी न माने तो ?" इर्शाद फ़रमाया : "उस से लड़ो, अगर तुम क़त्ल हो गए तो जन्नत में जाओगे और अगर तुम ने उसे क़त्ल कर दिया तो वोह जहन्नम में जाएगा।"(2)

﴾11﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बिशारत निशान है : "जो अपने माल को बचाते हुए क़त्ल हो गया वोह शहीद है और जो अपनी जान बचाते हुए क़त्ल हो गया वोह भी शहीद है और जो अपने दीन की ह़िफ़ाज़त करते हुए क़त्ल हुवा वोह भी शहीद है और जो अपने घर वालों की ह़िफ़ाज़त करते हुए मारा गया वोह भी शहीद है।"(3)

फिर मैं ने बा'ज़ मु-तअख़्ख़िरीन शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام को आख़िरी गुनाह के कबीरा होने की तसरीह़ करते हुए पाया या'नी वोह कहते हैं : "अपने मुसल्मान भाई को डराते हुए लोहे या किसी अस्लहे़ के साथ उस की त़रफ़ इशारा करना कबीरा गुनाह है।" और येह मेरे ज़िक्र कर्दा क़ौल के मुत़ाबिक़ है।

۞۞۞۞۞۞۞

1 ......صحیح مسلم ،کتاب الایمان، باب الدلیل علی ان من قصد اخذ مال......الخ، الحدیث : ۳۶۰،ص۷۰۱۔

2 ......سنن النسائی، کتاب المحاربۃ، باب مایفعل تعرض لمالہ،الحدیث ۴۰۸۷،ص۲۳۵۵۔

3 ......جامع الترمذی، ابواب الحدود، باب ماجاء فیمن قتل دون مالہ فھو شھید، الحدیث:۱۴۲۱،ص۱۷۹۵۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 387 : दूसरों के घरों में तांक झांक करना

**( या'नी बिला इजाज़त किसी के घर में किसी तंग सूराख़ वग़ैरा से उस की औ़रतों को झांकना )**

## अह़ादीसे मुबा-रका में तांकने झांकने की मज़म्मत :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो किसी क़ौम के घर में उन की इजाज़त के बिग़ैर झांके तो उन के लिये जाइज़ है कि उस की आंख फोड़ दें।''(1)

﴾2﴿...... एक रिवायत में है कि ''उन्हों ने उस की आंख फोड़ दी तो वोह राएगां गई।''(2)

﴾3﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जो बिला इजाज़त लोगों के घरों में झांके और वोह उस की आंख फोड़ दें तो उन पर दियत है न क़िसास।''(3)

﴾4﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा ब-र-कत है : ''जिस शख़्स ने (किसी घर का) पर्दा उठा कर इजाज़त से पहले अन्दर झांका तो वोह ऐसी ह़द पर आ गया जहां पर आना उस के लिये जाइज़ न था और अगर किसी ने उस की आंख फोड़ दी तो वोह राएगां गई और अगर कोई शख़्स किसी दरवाज़े के पास से गुज़रा जिस पर पर्दा न था और घर में मौजूद औ़रत पर उस की नज़र पड़ गई तो उस पर कोई गुनाह नहीं बल्कि गुनाह घर वालों पर है।''(4)

﴾5﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से घरों में इजाज़त त़लब करने के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा गया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने इजाज़त लेने और सलाम करने से पहले घर में झांका उस के लिये कोई इजाज़त नहीं और बिला शुबा उस ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की।''(5)

---

1 ......صحيح مسلم، كتاب الآداب، باب تحريم النظر فى بيت غيره، الحديث : ۵۶۴۲،ص۱۰۶۲ـ

2 ......سنن ابى داود، كتاب الادب، باب فى الاستئذان، الحديث : ۵۱۷۲،ص۱۶۰۱، بتغيرٍقليلٍـ

3 ......سنن النسائى، كتاب القسامة، باب من اقتص واخذحقه دون السلطان، الحديث :۴۸۶۴،ص۲۴۰۲ـ

4 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث ابى ذر الغفارى، الحديث : ۲۱۶۲۸،ج۸،ص۱۳۶ـ

5 ......الترغيب والترهيب، كتاب الادب، باب الترهيب ان يطلع الانسان فى__الخ، الحديث : ۴۱۸۸،ج۳،ص۳۵۴ـ



www.dawateislami.net

﴾6﴿...... एक शख़्स ने दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के किसी हुज्रए मुबा–रका में झांका तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस की त़रफ़ एक या कई **मिश्क़स** (या'नी भाले वाले तीर) ले कर आए और गोया मैं देख रहा हूं कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे तलाश फ़रमा रहे हैं कि उस की आंख में तीर मारें ।(1)

**मिश्क़स** के मा'ना के मु–तअ़ल्लिक़ 4 अक़्वाल हैं : (1)...... चोड़े फल वाला तीर (2)...... लम्बे फल वाला तीर (3)...... चोड़ा तीर (4)...... लम्बा तीर ।

﴾7﴿...... एक आ'राबी सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़–लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरे दौलत पर आया और दरवाज़े के सूराख़ से अपनी निगाह डाली, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे देख लिया और लोहा या लकड़ी से उस की आंख फोड़ने लगे तो उस ने देख कर अपनी निगाह हटा ली । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर तू अपनी आंख उसी जगह रखता तो मैं तेरी आंख फोड़ देता ।''(2)

﴾8﴿...... एक शख़्स ने शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुज्रए शरीफ़ा में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को झांक कर देखा जब कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक लकड़ी से अपना सरे अन्वर खुजला रहे थे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर मुझे मा'लूम होता कि तुम मुझे देख रहे हो तो येह लकड़ी तुम्हारी आंख में घोंप देता, इसी तांक झांक की वज्ह से ही इजाज़त त़लब करने का हुक्म दिया गया है ।''(3)

## 3 ना जाइज़ काम :

﴾9﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''3 काम किसी के लिये जाइज़ नहीं : (1)...... कोई शख़्स किसी क़ौम की यूं इमामत न करे कि वोह दुआ़ में उन्हें छोड़ कर सिर्फ़ अपने आप को ख़ास कर ले, अगर उस ने ऐसा किया तो बिला शुबा उन से ख़ियानत की (2)...... इजाज़त लेने से पहले किसी घर के अन्दर न झांके, अगर उस ने ऐसा किया तो बेशक वोह दाख़िल हो गया (या'नी वोह दूसरे के घर में बिला इजाज़त दाख़िल होने वाले की त़रह़ हो गया) और (3)...... पेशाब पाख़ाने की (शदीद) ह़ाजत के वक़्त नमाज़ न पढ़े यहां

1 ......صحیح البخاری، کتاب الاستیئذان، باب الاستئذان من اجل البصر، الحدیث ۶۲۴۲، ص۵۲۶۔

2 ......سنن النسائی، کتاب القسامة، ذکر حدیث عمرو بن حزم فی العقول......الخ، الحدیث: ۴۸۶۲، ص۲۴۰۲۔

3 ......جامع الترمذی، ابواب الاستئذان، باب من اطلع فی دار قوم بغیر اذنهم، الحدیث: ۲۷۰۹، ص۱۹۲۵۔



www.dawateislami.net

तक कि बोझ हलका कर ले।''(1)

﴾10﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीहत निशान है : ''किसी घर में दरवाज़े (के सामने) से न आओ बल्कि एक त़रफ़ से आओ और इजाज़त त़लब करो, अगर इजाज़त मिल जाए तो दाख़िल हो जाओ वरना लौट जाओ।''(2)

## तम्बीह :

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और येह मज़्कूरा अहादीसे मुबा-रका से वाज़ेह है अगर्चे मैं ने किसी को इसे ज़िक्र करते हुए नहीं पाया और झांकने वाले की आंख फोड़ना मुबाह क़रार देना इस फ़े'ल के फ़िस्क़ होने पर सरीह दलील है क्यूं कि झांकने की वज्ह से आंख का फोड़ना ह़द की त़रह़ है और इस पर सब का इत्तिफ़ाक़ है कि ह़द कबीरा गुनाह की अ़लामात में से है, पस ह़द के क़ाइम मक़ाम का भी वोही हुक्म होगा इस बिना पर कि उसे ह़द कहने से कोई चीज़ मानेअ़ नहीं क्यूं कि शारेअ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इसी फ़े'ल पर आंख फोड़ना जाइज़ क़रार दिया और आंख के इलावा दीगर आ'ज़ा की त़रफ़ तजावुज़ न फ़रमाया और येह हुदूद की ख़ुसूसिय्यत है न कि ता'ज़ीर की क्यूं कि ता'ज़ीर के लिये बदन का कोई ह़िस्सा मख़्सूस नहीं और येह बात इस के मुनाफ़ी नहीं कि घर वाले को उसे मुआ़फ़ करने का ह़क़ है क्यूं कि येह ह़द्दे क़ज़्फ़ के क़ाइम मक़ाम है और इस में भी मुआ़फ़ करना जाइज़ है।

❁❁❁❁❁❁❁

### ﴾......ता'रीफ़ और सआ़दत......﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर बैज़ावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 685 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं कि ''जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी करता है दुन्या में उस की ता'रीफ़ें होती हैं और आख़िरत में सआ़दत मन्दी से सरफ़राज़ होगा।'' (تفسیرالبیضاوی، پ۲۲،الاحزاب،تحت الایة:۷۱،ج۴،ص۳۸۸)

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب أيصلی الرجل وهو حاقن؟، الحديث : ۹۰،ص۱۲۲۸۔

2 ......البحرالزخارالمعروف بمسند البزار، مسند عبد الله بن بُسر، الحديث : ۳۴۹۹،ج۸، ص۴۲۹،بتغير۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 388 : चोरी छुपे लोगों की बातें सुनना जिन पर वोह किसी के आगाह होने को ना पसन्द करते हों

### झूटा ख़्वाब बयान करने की सज़ा :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो शख़्स झूटा ख़्वाब बयान करे जो उस ने देखा न हो उसे पाबन्द बनाया जाएगा कि जव के दो दानों के दरमियान गांठ लगाए और वोह न लगा सकेगा और जो लोगों की बातें सुने जब कि वोह उन का सुनना ना पसन्द करते हों तो क़ियामत के दिन उस के कानों में पिघला हुवा सीसा डाला जाएगा और जो शख़्स तस्वीर बनाए उसे बत़ौरे अ़ज़ाब इस बात का पाबन्द किया जाएगा कि उस में रूह़ फूंके और वोह न फूंक सकेगा।''(1)

### तम्बीह :

इसे भी कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और येह मज़्कूरा ह़दीसे पाक से वाज़ेह़ है अगर्चे मैं ने किसी को इसे ज़िक्र करते हुए नहीं पाया। इस के कबीरा गुनाह होने की दलील येह है कि क़ियामत के दिन कानों में पिघला हुवा सीसा डालना बहुत सख़्त वई़द है। ग़ीबत के बयान में इस इर्शादे बारी तआ़ला : ''وَلَا تَجَسَّسُوْا(پ۲۶،الحجرات:۱۲) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ़ब न ढूंडो।'' का मा'ना गुज़र चुका है।

﴾2﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़िक्मत निशान है : ''وَلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا تَحَسَّسُوْا या'नी न तो किसी की जासूसी करो और न ही छानबीन करो।''(2)

मज़्कूरा अल्फ़ाज़ के मा'ना के मु-तअ़ल्लिक़ 3 अक़्वाल हैं : (1)...... येह दोनों अल्फ़ाज़ मु-तरादिफ़ हैं और इन का मा'ना है कि लोगों की बातें जानने की कोशिश करना। (2)...... येह दोनों मुख़्तलिफ़ हैं पस تَحَسَّسُوْا का मा'ना है कि तू ख़ुद सुने और تَجَسَّسُوْا का

1 ......صحیح البخاری، کتاب التعبیر، باب من کَذَبَ فی حُلُمہ، الحدیث: ۷۰۴۲، ص۵۸۸۔
صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب من صَوَّرَصُورۃ کلف......الخ، الحدیث: ۵۹۶۳، ص۵۰۵۔
2 ......صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب لایخطب علی خطبۃ اخیہ حتی ینکح اویدع، الحدیث: ۵۱۴۳، ص۴۴۵۔



www.dawateislami.net

मा'ना है कि तू किसी दूसरे से इस के मु-तअ़ल्लिक़ पूछगछ करे। (3)...... تَحَسَّسُوْا का मा'ना है (चोरी छुपे) लोगों की बातें सुनना और تَجَسَّسُوْا का मा'ना है कि लोगों की पोशीदा बातों के मु-तअ़ल्लिक़ गुफ़्त-गू करना।

## ह़ासिले कलाम :

मज़्कूरा ह़दीसे पाक और दीगर रिवायात से मा'लूम होता है कि किसी इन्सान के लिये जाइज़ नहीं कि चोरी छुपे दूसरे के घर की बातें सुने या नाक से किसी की बू सूंघे या कोई ना पसन्दीदा बात जानने के लिये किसी इन्सान के कपड़े छूए और येह भी जाइज़ नहीं कि वोह घर के छोटे बच्चों या पड़ोसियों से किसी के मु-तअ़ल्लिक़ मा'लूमात लेता फिरे ताकि पड़ोसी के घर रूनुमा होने वाली बात जान सके। हां ! अगर इसे कोई आ़दिल शख़्स उन के किसी ना फ़रमानी पर इकठ्ठा होने की ख़बर दे तो वोह बिला इजाज़त उन पर छापा मार सकता है। येह बात **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ामिद इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) ने इर्शाद फ़रमाई। अ़न्क़रीब **''बुराई से मन्अ़ करने''** के बयान में اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ ऐसी बातें ज़िक्र की जाएंगी जो इस की ताईद करेंगी।

۞۞۞۞۞۞۞

### ......दो दिन और दो रातें......

**दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **84** सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी''** सफ़्ह़ा **76** पर है **:** ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं **:** ''क्या मैं तुम्हें उन दो दिनों और दो रातों के बारे में न बताऊं जिन की मिस्ल मख़्लूक़ ने नहीं सुनी **:**...... **एक दिन** वोह है जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आने वाला तेरे पास रिज़ाए इलाही का मुज़्दा ले कर आएगा या उस की नाराज़ी का पैग़ाम और...... **दूसरा दिन** वोह जब तू अपना नामए आ'माल लेने के लिये बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर होगा और नामए आ'माल तेरे दाएं हाथ में दिया जाएगा या बाएं में (और दो रातों में से)...... **एक रात** वोह है जो मय्यित अपनी क़ब्र में गुज़ारेगी और इस से पहले उस ने ऐसी रात कभी नहीं गुज़ारी होगी और...... **दूसरी रात** वोह है जिस की सुब्ह़ को क़ियामत का दिन होगा और फिर उस के बा'द कोई रात नहीं आएगी।''



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 389 : बुलूग़त के बा'द मर्द या औ़रत का ख़तना न करना(1)

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इसे मेरे ज़िक्र कर्दा उ़न्वान के मुताबिक़ ज़िक्र किया है।

मर्द के ख़तना तर्क करने के कबीरा गुनाह होने की इ़ल्लत येह है कि इस से कई ख़राबियां पैदा होती हैं जिन में बड़ी ख़राबी नमाज़ का छोड़ना है क्यूं कि ग़ैर मख़्तून का इस्तिन्जा सह़ीह़ नहीं होता इस लिये कि वोह ह़श्फ़ा (या'नी आलए तनासुल के सर) को नहीं धोता जो क़ुल्फ़ा (या'नी बिग़ैर ख़तना किये हुए उ़ज़्वे तनासुल की बढ़ी हुई खाल) के अन्दर होता है और जब क़ुल्फ़ा को ज़ाइल करना ज़रूरी है तो इस के नीचे का ह़िस्सा भी ज़ाहिर के हुक्म में है पस इस का धोना वाजिब है। अक्सर अवक़ात ग़ैरे मख़्तून इस में सुस्ती करते हैं और इस की परवाह नहीं करते, लिहाज़ा उन की नमाज़ें सह़ीह़ नहीं होतीं। गोया इसे गुनाहे कबीरा क़रार देने वाले ने इसी इ़ल्लत को पेशे नज़र रखा। और औ़रत के ख़तना न करने को कबीरा गुनाह क़रार देने की कोई वज्ह नहीं।

फिर मैं ने शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के कलाम में ऐसी बातें पाईं जो मेरे ज़िक्र कर्दा उ़न्वान की तसरीह़ करती हैं। नीज़ उन्हों ने **अक्लफ़** (या'नी ग़ैर मख़्तून) की गवाही क़बूल करने के मु-तअ़ल्लिक़ दो ए'तिबार से हुक्म लगाया है। **शारेहे़ मिन्हाज** ह़ज़रते सय्यिदुना कमाल दमीरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ''सह़ीह़ येह है कि अगर हम ख़तना को वाजिब क़रार दें तो बिला उ़ज़्र इस का तर्क करना फ़िस्क़ होगा।''

अपने इस क़ौल से उन्हों ने येह बात समझाई कि कलाम मर्द के ख़तना के मु-तअ़ल्लिक़ है न कि औ़रत के बारे में। और बिला उ़ज़्र ख़तना तर्क करने से मर्द फ़ासिक़ हो जाता है। लिहाज़ा उस के फ़ासिक़ होने से इस का कबीरा गुनाह होना लाज़िम आता है और इस की इ़ल्लत वोही है जो मैं ने पहले बयान कर दी है।

---

(1)...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**बहारे शरीअ़त**'' जिल्द सिवुम सफ़ह़ा 589 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रत **मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ''ख़तना सुन्नत है और येह शिआ़रे इस्लाम है कि मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम में इस से इम्तियाज़ होता है इसी लिये उ़र्फ़े आ़म में इस को **मुसल्मानी** भी कहते हैं।'' **आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن लड़कियों के ख़तने के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : ''लड़कियों के ख़तना करने का ताकीदी हुक्म नहीं और यहां पाक व हिन्द में रवाज न होने के सबब अ़वाम इस पर हंसेंगे और येह उन के गुनाहे अ़ज़ीम में पड़ने का सबब होगा और ह़िफ़्ज़े दीने मुसल्मानान वाजिब है। लिहाज़ा यहां (पाक व हिन्द में) इस का हुक्म नहीं।'' (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 680)



www.dawateislami.net

# كتاب الجهاد ( जिहाद का बयान )

## कबीरा नम्बर 390 : फ़र्ज़े ऐन जिहाद न करना

**( या'नी उस वक़्त जब ह़र्बी कुफ़्फ़ार दारुल इस्लाम में दाख़िल हो जाएं या किसी मुसल्मान को पकड़ लें और उस का छुड़ाना भी मुम्किन हो )**

## कबीरा नम्बर 391 : बिल्कुल जिहाद छोड़ देना

## कबीरा नम्बर 392 : सरह़दों को तक़्वियत न देना

**( या'नी अपने मुल्क की सरह़दों को मज़्बूत़ न करना जिस की वज्ह से इस पर कुफ़्फ़ार के ग़-लबे का ख़ौफ़ रहे )**

## जिहाद छोड़ने की मज़म्मत में आयाते क़ुरआनिया :

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَا تُلْقُوْا بِاَیْدِیْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ (پ۲، البقرة:۱۹۵) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और अपने हाथों हलाकत में न पड़ो।

## आयते मुबा-रका की तफ़्सीर

اَلتَّهْلُكَة, اَلْهَلَاك के मा'ना में मस्दर है और इन दोनों के माबैन कोई फ़र्क़ नहीं। बा'ज़ के नज़्दीक اَلتَّهْلُكَة से मुराद वोह बरबादी है जिस से बचना मुम्किन हो और اَلْهَلَاك मा'ना वोह तबाही है जिस से बचना मुम्किन न हो और एक क़ौल येह है कि اَلتَّهْلُكَة से मुराद मोहलिक चीज़ है और बा'ज़ ने कहा कि जो इन्सान की आख़िरत ख़राब करे।[1]

''اَلْاِلْقَاءُ بِالْاَیْدِیْ اِلَى التَّهْلُكَة'' (या'नी अपने हाथों हलाकत में पड़ना) इस की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का इख़्तिलाफ़ है। (चन्द अक़्वाल ज़िक्र किये जाते हैं :)

(1)...... ''اَلتَّهْلُكَة'' से मुराद माल ख़र्च करना है। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا और जुम्हूर मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का येही क़ौल है और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی ने भी इसी को इख़्तियार किया और इस के इ़लावा कुछ और ज़िक्र न किया ताकि ऐसा न हो कि लोग जिहादी मुहिम्मात में अपने मालो अस्बाब ख़र्च न करें और दुश्मन इन पर ग़ालिब आ कर इन्हें हलाक कर दे। गोया येह

---

1 ......اللباب فی علوم الكتاب لابن عادل الحنبلی ، البقرة، تحت الآية ۱۹۵ ،ج۳، ص۳۵۴۔



www.dawateislami.net

कहा गया है कि अगर तुम दीनदार शख़्स हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करो और अगर दुन्यादार हो तो अपने आप से हलाकत और नुक़्सान दूर करने में ख़र्च करो।

(2)...... इस से मुराद ख़र्च में ह़द से बढ़ना है क्यूं कि खाने, पीने और पहनने की शदीद ह़ाजत के वक़्त तमाम माल ख़र्च कर देना हलाकत की त़रफ़ ले जाता है।

(3)...... इस से मुराद बिग़ैर नफ़क़ा के जिहाद के लिये सफ़र करना है। एक क़ौम ने ऐसा ही किया पस वोह रास्ते में ही हलाक हो गए।

(4)...... इस से मुराद नफ़क़ा के इलावा चीज़ है। इस बिना पर कहा गया है कि इस से मुराद येह है कि वोह जिहाद से रुक जाएं और अपने आप को हलाकत या'नी जहन्नम के अ़ज़ाब के लिये पेश कर दें।

(5)...... इस से मुराद येह है कि दुश्मन पर ग़-लबे की उम्मीद के बिग़ैर जंग में बे ख़त़र कूद पड़े और क़त्ल हो जाए क्यूं कि इस त़रह़ वोह ख़ुद को ज़ुल्मन क़त्ल करने वाला शुमार होगा।[1]

## इन्कार करने वालों की पहली दलील :

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام इस क़ौल को रद करते हुए दलील देते हैं कि मुहाजिरीन में से एक शख़्स ने दुश्मन की सफ़ पर ह़म्ला किया तो लोग ब आवाज़े बुलन्द कहने लगे : "येह अपने हाथों हलाकत में पड़ा।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इर्शाद फ़रमाया : "हम इस आयते मुबा-रका के मफ़्हूम को ज़ियादा जानते हैं और येह हमारे मु-तअ़ल्लिक़ ही नाज़िल हुई, हम ने सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोह़बत पाई, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ तआ़वुन किया और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ कई मा'रिकों में शरीक हुए। जब इस्लाम मज़्बूत़ हो गया और मुसल्मानों की कसरत हो गई और हम अपने अहलो इ़याल और माल की बेहतरी के लिये उन की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो गए तो येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई। लिहाज़ा تَهْلُكَة से मुराद अहलो इ़याल में ठहरे रहना और माल ख़र्च न करना और जिहाद छोड़ देना है।"[2]

येही वज्ह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه सारी ज़िन्दगी राहे ख़ुदा में जिहाद करते रहे यहां तक कि आख़िरी ग़ज़्वा अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के ज़मानए ख़िलाफ़त में क़ुस्त़ुन्त़ुनिया में लड़ा और वहीं शहीद

---

1 ......اللباب فی علوم الکتاب لابن عادل الحنبلی ، البقرة، تحت الآية ١٩٥ ، ج٣، ص٣٥٤، مفهوماً۔

2 ......التفسير الكبير، البقرة، تحت الآية ١٩٥ ، ج٢،ص٢٩٥۔



www.dawateislami.net

हो गए। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को कुस्तुन्तुनिया शह्र की दीवार के क़रीब दफ़्न किया गया। **लोग आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ब-र-कत से बारिश त़लब करते हैं।**(1)

## पहली दलील का जवाब :

इस वाक़िए में कोई दलील नहीं क्यूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह नहीं फ़रमाया कि इज़्हारे ग़-लबा के बिग़ैर इन्सान का खु़द को हलाकत में मुब्तला करना जाइज़ है और येही हमारा दा'वा है।

## दूसरी दलील :

उन्हों ने येह भी दलील दी है कि सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के एक गुरौह ने अपने आप को दुश्मन के सामने डाल दिया और रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की ता'रीफ़ फ़रमाई और इस त़रह़ का एक वाक़िआ़ अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़माने में एक शख़्स के साथ पेश आया तो कहा गया : "येह अपने हाथों हलाकत में पड़ा है।" तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "इन लोगों ने ग़लत़ कहा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तो इर्शाद फ़रमा रहा है :

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ یَّشْرِیْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ (پ۲، البقرۃ:۲۰۷)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और कोई आदमी अपनी जान बेचता है **अल्लाह** की मरज़ी चाहने में।(2)

## दूसरी दलील का जवाब :

मज़्कूरा रिवायात में इन की कोई दलील नहीं इस लिये कि येह भी दा'वा के मुत़ाबिक़ नहीं क्यूं कि इन में से किसी वाक़िए में येह मज़्कूर नहीं कि किसी ने अपने आप को दुश्मन की सफ़ में दाख़िल किया हो यहां तक कि वोह क़त्ल कर दिया गया हो और उसे येह भी मा'लूम हो कि वोह उन पर ग़-लबा नहीं पा सकता। बल्कि सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के अह़्वाल से ज़ाहिर होता है कि उन्हों ने जब भी येह अ़ज़ीम इक़्दाम किया तो उन का मक़्सद दुश्मन पर ग़-लबा पाना था। ऐसा इरादा करने वाला कभी ग़-लबा पा लेता है और कभी नहीं पाता लेकिन येह नुक़्सान देह नहीं क्यूं कि दारो मदार तो दुश्मन पर ग़-लबा ह़ासिल करने के इरादे पर है न कि ग़-लबा पा लेने पर।

---

1 ......تفسیر البغوی، البقرۃ، تحت الآیۃ ۱۹۵، ج۱، ص۱۱۸۔

2 ......التفسیر الکبیر، البقرۃ، تحت الآیۃ ۱۹۵، ج۲، ص۲۹۵۔



www.dawateislami.net

(6)...... ''اَلتَّهْلُكَة'' से मुराद जिहाद में दिखावे, शोहरत और एह्सान जताने के लिये फ़ुज़ूल ख़र्ची करना है।

(7)...... इस से मुराद मायूस होना है। इस की सूरत येह है कि वोह किसी गुनाह का इरतिकाब करता है फिर समझता है कि इस की वज्ह से उसे कोई नेक अ़मल फ़ाएदा न देगा लिहाज़ा वोह मज़ीद गुनाहों में मुन्हमिक रहता है।

(8)...... इस से मुराद ख़बीस चीज़ों का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करना है। इस के इ़लावा और भी कई अक़्वाल हैं।

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू जा'फ़र मुह़म्मद बिन जरीर त़-बरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : लफ़्ज़े मज़्कूरा तमाम तौजीहात को शामिल है क्यूं कि येह उन का एह्तिमाल रखता है।

﴾1﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू इ़मरान رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि हम रूम के क़रीब थे कि वहीं से हमारी त़रफ़ एक बहुत बड़ी फ़ौज नुमूदार हो गई, मुसल्मानों में से उन्ही की मिस्ल लोग उन के मुक़ाबले में निकल पड़े। मुसल्मानों ने अहले शह्र पर हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को और जमाअ़त पर हज़रते सय्यिदुना फ़ज़ाला बिन उ़बैद رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को अमीर बनाया। अचानक एक मुसल्मान ने रूमियों की सफ़ पर ह़म्ला कर दिया यहां तक कि वोह उन के दरमियान दाख़िल हो गया, लोग ऊंची ऊंची आवाज़ में कहने लगे : ''سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! येह अपने हाथों हलाकत में पड़ रहा है।'' तो हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه खड़े हो गए और इर्शाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! तुम येह तावील करते हो जब कि येह आयते मुबा-रका हम अन्सार के मु-तअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई। जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस्लाम को इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाई और इस के मददगार ज़ियादा हो गए तो हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़दम मौजू-दगी में कुछ लोगों ने राज़दारी में एक दूसरे से कहा : ''हमारे अम्वाल ज़ाएअ़ हो गए हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस्लाम को शानो शौकत अ़त़ा फ़रमा दी और इस के मददगार कसीर हो गए हैं, लिहाज़ा हम अपने अहलो इयाल और माल में ठहर जाते हैं ताकि इन्हें ज़ाएअ़ होने से बचा लें।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर येह आयते मुबा-रका नाज़िल फ़रमाई जिस ने हमारी इन बातों की तरदीद की, चुनान्चे, फ़रमाया : ''وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ'' यहां تَهْلُكَة से मुराद अपने माल और उस की बेहतरी के लिये ठहर जाना और जिहाद तर्क कर देना है।'' फिर हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه हमेशा जिहाद करते रहे यहां तक कि रूम में दफ़्न किये गए।[1]

[1]......جامع الترمذی، ابواب تفسیر القرآن، باب ومن سورة البقرة، الحدیث:۲۹۷۲،ص۱۹۵۰۔



www.dawateislami.net

## तर्के जिहाद की तबाह कारी :

﴾2﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब तुम **बैअ़ ईना**[1] करोगे और बैलों की दुमें पकड़ोगे और काश्त-कारी में पड़ जाओगे और जिहाद छोड़ दोगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर ज़िल्लत मुसल्लत़ फ़रमा देगा और इसे तुम से न निकालेगा यहां तक कि तुम अपने दीन की त़रफ़ लौट आओ ।''[2]

## सि-फ़ते मुना-फ़क़त पर मौत :

﴾3﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

---

1...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1182 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, ''**बहारे शरीअ़त**'' जिल्द दुवुम सफ़ह़ा 779 पर है : ''बैअ़ ईना की सूरत येह है कि एक शख़्स ने दूसरे से म-सलन दस रुपै क़र्ज़ मांगे उस ने कहा : मैं क़र्ज़ नहीं दूंगा, येह अलबत्ता कर सकता हूं कि येह चीज़ तुम्हारे हाथ बारह रुपै में बेचता हूं, अगर तुम चाहो ख़रीद लो इसे बाज़ार में दस रुपै को बैअ़ कर देना तुम्हें दस रुपै मिल जाएंगे और काम चल जाएगा और इसी सूरत से बैअ़ हुई । बाएअ़ (या'नी बेचने वाले) ने ज़ियादा नफ़्अ़ ह़ासिल करने और सूद से बचने का येह ह़ीला निकाला कि दस की चीज़ बारह में बैअ़ कर दी उस का काम चल गया और ख़ातिर ख़्वाह उस को नफ़्अ़ मिल गया । बा'ज़ लोगों ने इस का येह त़रीक़ा बताया है कि तीसरे शख़्स को अपनी बैअ़ में शामिल करें या'नी मुक़्रिज़ (क़र्ज़ देने वाले) ने क़र्ज़दार के हाथ इस को बारह में बेचा और क़ब्ज़ा दे दिया फिर क़र्ज़दार ने सालिस के हाथ दस रुपै में बेच कर क़ब्ज़ा दे दिया उस ने मुक़्रिज़ के हाथ दस रुपै में बेचा और क़ब्ज़ा दे दिया और दस रुपै समन के मुक़्रिज़ से वुसूल कर के क़र्ज़दार को दे दिये । नतीजा येह हुवा कि क़र्ज़ मांगने वाले को दस रुपै वुसूल हो गए मगर बारह देने पड़ेंगे क्यूं कि वोह चीज़ बारह में ख़रीदी है ।''

मुजद्दिदे आ'ज़म, सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ''बैअ़ ईना'' के मु-तअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाते हैं : ''बैअ़ ईना को हमारे अइम्मए किराम (رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام) ने क्या ठहराया है, क्या मम्नूअ़, ना जाइज़, ह़राम, मक्रूहे तह़रीमी ? ह़ाशा हरगिज़ नहीं, येह मह़ज़ ग़लत़ व बात़िल है बल्कि (बैअ़ ईना) जाइज़, ह़लाल, रवा, दुरुस्त । ग़ायत द-रजा इस में इख़्तिलाफ़ हुवा कि ख़िलाफ़े औला भी है या नहीं, हमारे इमामे आ'ज़म (عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم) बिला कराहत मानते हैं, इमाम अबू यूसुफ़ (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ख़ुद सवाब व मुस्तह़ब जानते हैं, इमाम मुह़म्मद (عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد) एह़तियात़ के लिये सिर्फ़ ख़िलाफ़े औला ठहराते हैं ।'' (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 17, स. 547) बैअ़ ईना की तफ़्सील व तह़क़ीक़ नीज़ मत्न में मज़्कूर ह़दीस शरीफ़ की शर्ह़ फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ की इसी जिल्द (17) के सफ़ह़ा 464 ता 471 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं और आसानी से समझने के लिये मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ होने वाले सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت के इसी रिसाले (کِفْلُ الْفَقِیْہِ الْفَاھِم فِیْ اَحْکَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاھِم) की तस्हील बनाम ''**करन्सी नोट के शर-ई अह़कामात**'' (सफ़ह़ा 136 ता 145) का मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं । (**इ़ल्मिय्या**)

2......سنن ابی داود، کتاب الاجارۃ، باب فی النھی عن العینۃ، الحدیث: ۳۴۶۲، ص۱۴۸۱، "رغبتم" بدلہ "رضیتم"۔



www.dawateislami.net

''जो बिग़ैर जंग किये मर गया और न ही कभी इस की निय्यत की तो निफ़ाक़ के हिस्से पर मरेगा।''(1)

﴾4﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जिस ने कोई जिहाद न किया और किसी ग़ाज़ी को भी तय्यार न किया या ग़ाज़ी के घर वालों की भलाई के साथ ख़बर गीरी न की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे रोज़े मह़शर से पहले हिला देने वाली मुसीबत से दो चार करेगा।''(2)

﴾5﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जिहाद की किसी निशानी के बिग़ैर जिस की मौत वाक़ेअ़ हुई वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से नुक़्सान की ह़ालत में मिलेगा।''(3)

﴾6﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जिस क़ौम ने जिहाद छोड़ दिया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन में अ़ज़ाब आ़म कर दिया।''(4)

## तम्बीह :

इन तीनों को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है क्यूं कि इन में से हर एक से इस्लाम और अहले इस्लाम पर आने वाला ऐसा फ़साद ज़ाहिर हो सकता है जिस का ख़ला पुर नहीं किया जा सकता। मज़्कूरा आयते मुबा-रका और अह़ादीसे त़य्यिबा में वारिद शदीद वई़द को इस पर मह़मूल किया जाएगा, पस इस में ग़ौर कीजिये क्यूं कि मैं ने किसी को इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करते हुए नहीं पाया ह़ालां कि इस का कबीरा गुनाह होना वाज़ेह़ है।

❁❁❁❁❁❁❁

(1)......صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، باب ذم من مات ولم یغز......الخ، الحدیث: ۴۹۳۱، ص۱۰۱۹۔

(2)......سنن ابن ماجہ، ابواب الجھاد، باب التغلیظ فی ترک الجھاد، الحدیث: ۲۷۶۲، ص۲۶۴۳۔

(3)......جامع الترمذی، ابواب فضائل الجھاد، باب ماجاء فی فضل المرابط، الحدیث: ۱۶۶۶، ص۱۸۲۲۔

(4)......المعجم الاوسط، الحدیث: ۳۸۳۹، ج۳، ص۵۱۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 393 : कुदरत के बा वुजूद اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف तर्क कर देना

**( या'नी अपने जानो माल पर किसी क़िस्म का**
**ख़ौफ़ न होने के बा वुजूद नेकी की दा'वत छोड़ देना )**

## कबीरा नम्बर 394 : कुदरत के बा वुजूद نَهْیٌ عَنِ الْمُنْکَر तर्क करना

**( या'नी अपने जानो माल पर किसी क़िस्म का**
**ख़ौफ़ न होने के बा वुजूद बुराई से मन्अ़ करना छोड़ देना )**

## कबीरा नम्बर 395 : क़ौल का फ़े'ल के मुख़ालिफ़ होना

### امر بالمعروف ونہی عن المنکر के मु-तअ़ल्लिक़ आयाते मुबा-रका :

इस अहम फ़रीज़े के मु-तअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के चन्द फ़रामीने आ़लीशान मुला-हज़ा फ़रमाइये :

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِیَآءُ بَعْضٍ ۘ یَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَیَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ (پ۱۰، التوبۃ:۷۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और मुसल्मान मर्द और मुसल्मान औ़रतें एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं भलाई का हुक्म दें और बुराई से मन्अ़ करें।

**हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) फ़रमाते हैं : ''इस आयते मुबा-रका ने येह बात समझाई कि जिस ने इन दोनों को (या'नी नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना) छोड़ दिया वोह मुअमिनीन की सफ़ से निकल गया।''(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अबू अ़ब्दुल्लाह** मुह़म्मद बिन अह़मद कुरतुबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस आयते मुबा-रका को मुअमिनीन और मुनाफ़िक़ीन के दरमियान फ़र्क़ करने वाला बना दिया।''(2)

एक और मक़ाम पर इर्शाद होता है :

وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۪ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪ (پ۶، المائدۃ:۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और नेकी और परहेज़ गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो।

नीज़ बुराई से मन्अ़ न करना गुनाह पर तआ़वुन करना है। चुनान्चे, इर्शाद होता है :

---

1 ......احیاء علوم الدین، کتاب الامر بالمعروف والنہی عن المنکر، الباب الاول، ج ۲،ص۳۷۸، مفہوماً۔

2 ......الجامع لاحکام القرآن للقرطبی، آل عمران، تحت الآیۃ ۲۱،ج۲، الجزء الرابع، ص ۳۸۔



www.dawateislami.net

لُعِنَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا مِنۡۢ بَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ عَلٰی لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِیۡسَی ابۡنِ مَرۡیَمَ ؕ ذٰلِکَ بِمَا عَصَوۡا وَّ کَانُوۡا یَعۡتَدُوۡنَ ﴿۷۸﴾ کَانُوۡا لَا یَتَنَاہَوۡنَ عَنۡ مُّنۡکَرٍ فَعَلُوۡہُ ؕ لَبِئۡسَ مَا کَانُوۡا یَفۡعَلُوۡنَ ﴿۷۹﴾ (پ۶، المائدۃ:۷۸،۷۹)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ला'नत किये गए वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया बनी इसराईल में दावूद और ईसा बिन मरयम की ज़बान पर, येह बदला उन की ना फ़रमानी और सरकशी का, जो बुरी बात करते आपस में एक दूसरे को न रोकते ज़रूर बहुत ही बुरे काम करते थे।

मज़्कूरा आयते मुबा-रका में बहुत सख़्त धमकी और शिद्दत है जैसा कि अहादीसे मुबा-रका में बयान होगा। एक और मक़ाम पर इर्शादे ख़ुदा वन्दी है :

اَتَاۡمُرُوۡنَ النَّاسَ بِالۡبِرِّ وَتَنۡسَوۡنَ اَنۡفُسَکُمۡ وَاَنۡتُمۡ تَتۡلُوۡنَ الۡکِتٰبَ ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۴۴﴾ (پ۱، البقرۃ:۴۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** क्या लोगों को भलाई का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो हालां कि तुम किताब पढ़ते हो तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا لِمَ تَقُوۡلُوۡنَ مَا لَا تَفۡعَلُوۡنَ ﴿۲﴾ کَبُرَ مَقۡتًا عِنۡدَ اللّٰہِ اَنۡ تَقُوۡلُوۡا مَا لَا تَفۡعَلُوۡنَ ﴿۳﴾ (پ۲۸، الصف:۲،۳)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! क्यूं कहते हो वोह जो नहीं करते। कैसी सख़्त ना पसन्द बात है **अल्लाह** को वोह बात कि वोह कहो जो न करो।

## बुराई से मन्अ़ करने के 3 त़रीक़े :

﴾1﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू मस्ऊद बदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : ''तुम में से जो बुराई देखे तो उसे चाहिये कि अपने हाथ से उसे बदल दे, अगर वोह इस की त़ाक़त नहीं रखता तो अपनी ज़बान से बदल दे और अगर इस की भी त़ाक़त नहीं रखता तो अपने दिल में बुरा जाने और येह ईमान का कमज़ोर तरीन द-रजा है।''(1)

﴾2﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : ''तुम में से जिस शख़्स ने कोई बुराई देखी और उसे अपने हाथ से बदल दिया तो वोह (गुनाह से) बरी हो गया और जो हाथ से बदलने की त़ाक़त नहीं रखता पस उस ने अपनी ज़बान से बदल दिया तो वोह भी बरिय्युज़्ज़िम्मा हो गया और जो ज़बान से बदलने की इस्तित़ाअ़त नहीं रखता उस ने अपने दिल से बुरा जाना तो वोह

(1)......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان کون النھی عن المنکر......الخ، الحدیث: ۱۷۷، ص۶۸۸۔



www.dawateislami.net

भी बरी हो गया और येह ईमान का कमज़ोर तरीन द-रजा है।"(1)

﴾3﴿...... हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हम ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते ह़क़ परस्त पर बैअ़त की, कि हम आसानी व तंगी और ख़ुशी व ना ख़ुशी हर ह़ालत में और ख़ुद पर किसी को तरजीह़ दिये जाने की सूरत में भी अमीर की बात सुनेंगे और मानेंगे और येह कि हम ह़ाकिम के ख़िलाफ़ झगड़ा न करेंगे मगर येह कि खुल्लम खुल्ला कुफ़्र देखें जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हमारे पास कोई दलील हो और येह कि हम जहां भी होंगे सच बोलेंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुआ़-मले में किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरेंगे।(2)

﴾4﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "सब से अफ़्ज़ल जिहाद ज़ालिम बादशाह के सामने ह़क़ बात कहना है।"(3)

## बनी इसराईल क्यूं मल्ऊ़न हुए ?

﴾5﴿...... हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त बयान है : "बनी इसराईल में सब से पहली ख़राबी येह आई कि जब एक शख़्स दूसरे से मिलता तो कहता : ऐ फ़ुलां ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर और जो काम तू कर रहा है इसे छोड़ दे क्यूं कि येह तेरे लिये जाइज़ नहीं फिर जब दूसरे दिन उस से मिलता और वोह उसी गुनाह में मुब्तला होता तो उसे मन्अ़ न करता बल्कि उस के साथ खाता पीता और बैठता। जब उन्हों ने ऐसा किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के दिल एक जैसे कर दिये।" (रावी फ़रमाते हैं :) इस के बा'द आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

لُعِنَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَ عِیْسَى ابْنِ مَرْیَمَؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّ كَانُوْا یَعْتَدُوْنَ(۷۸) كَانُوْا لَا یَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ला'नत किये गए वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया बनी इसराईल में दावूद और ईसा बिन मरयम की ज़बान पर येह बदला उन की ना फ़रमानी और सरकशी का जो बुरी बात करते आपस में एक दूसरे को न रोकते ज़रूर बहुत

---

1 ......سنن النسائی، کتاب الایمان، باب تفاضل اھل الایمان، الحدیث: ۵۰۱۲، ص۲۴۱۱۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الإمارة، باب وجوب طاعة الامراء......الخ، الحدیث: ۴۷۶۸، ۴۷۷۱، ص۱۰۰۸۔

3 ......سنن ابن ماجه، ابواب الفتن، باب الامر بالمعروف والنھی عن المنکر، الحدیث: ۴۰۱۲، ص۲۷۱۸۔



www.dawateislami.net

يَفْعَلُوْنَ ۞ تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَ فِي الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ۞ وَ لَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ النَّبِيِّ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَ لٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۞ (پ۶، المائدۃ: ۷۸تا۸۱)

ही बुरे काम करते थे, उन में तुम देखोगे कि काफ़िरों से दोस्ती करते हैं, क्या ही बुरी चीज़ अपने लिये ख़ुद आगे भेजी येह कि **अल्लाह** का उन पर ग़ज़ब हुवा और वोह अ़ज़ाब में हमेशा रहेंगे और अगर वोह ईमान लाते **अल्लाह** और उन नबी पर और उस पर जो उन की त़रफ़ उतरा तो काफ़िरों से दोस्ती न करते मगर उन में तो बहुतेरे फ़ासिक़ हैं।

फिर इर्शाद फ़रमाया : "हरगिज़ नहीं ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम ज़रूर नेकी की दा'वत देते रहना और बुराई से मन्अ़ करते रहना। ज़ालिम का हाथ पकड़ कर उसे ह़क़ की त़रफ़ झुका देना और ह़क़ बात क़बूल करने पर उसे मजबूर कर देना।"(1)

﴾6﴿...... एक रिवायत में इतना ज़ाइद है : "वरना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे दिल एक जैसे कर देगा फिर तुम पर इसी त़रह़ ला'नत फ़रमाएगा जैसे उस ने बनी इसराईल पर ला'नत की थी।"(2)

﴾7﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ बयान है : "जब बनी इसराईल गुनाहों में मुब्तला हुए तो उन के उ़-लमा ने उन्हें रोका मगर वोह बाज़ न आए, तो उन के उ़-लमा भी उन के साथ उठने बैठने और खाने पीने लगे। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन सब के दिल एक जैसे कर दिये और ह़ज़रते दावूद और ह़ज़रते ईसा बिन मरयम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़बाने अक़्दस से उन पर ला'नत फ़रमाई, येह उन की ना फ़रमानी और सरकशी का बदला था।" (रावी फ़रमाते हैं :) पहले आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तकिये के साथ टेक लगाए तशरीफ़ फ़रमा थे फिर सीधे बैठ गए और इर्शाद फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! जब तक तुम, लोगों को ह़क़ बात के क़बूल करने पर मजबूर न कर दो बरिय्युज़्ज़िम्मा नहीं हो सकते।"(3)

(मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :) या'नी तुम, लोगों पर नरमी के साथ साथ सख़्ती भी करो और उन के लिये ह़क़ की पैरवी लाज़िम कर दो।

1 ......سنن ابی داود، کتاب الملاحم، باب الامر والنهی، الحدیث: ۴۳۳۶، ص۱۵۳۹، دون قوله "وهو علی حاله"۔

2 ......المرجع السابق، الحدیث: ۴۳۳۷۔

3 ......جامع الترمذی، ابواب تفسیر القرآن، باب ومن سورة المائدة، الحدیث: ۳۰۴۷، ص۱۹۵۹، "نهاهم" بدله "فنهتهم"۔



www.dawateislami.net

﴾8﴿...... सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : ''जिस क़ौम में कोई शख़्स गुनाह करता हो और लोग उसे बदलने पर क़ादिर हों फिर भी न बदलें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मौत से पहले उन पर अपना अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाएगा।''(1)

## सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ुरआन फ़हमी :

﴾9﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मु-तअ़ल्लिक़ मरवी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! बेशक तुम इस आयते मुबा-रका की तिलावत करते हो : ''یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا عَلَیْكُمْ اَنْفُسَكُمْۚ لَا یَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَیْتُمْؕ'' (پ۷، المآئدۃ:۱۰۵) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो।'' मैं ने दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : ''जब लोग ज़ालिम को (ज़ुल्म करता) देखें और उस के हाथ न पकड़ें तो क़रीब है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन सब को अ़ज़ाब में जकड़ ले।''(2)

﴾10﴿...... नसाई शरीफ़ के अल्फ़ाज़ येह हैं : ''रावी फ़रमाते हैं, मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना कि बेशक लोग या कोई क़ौम जब बुराई देखे लेकिन उसे न रोकें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन सब को अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार करेगा।''(3)

﴾11﴿...... अबू दावूद शरीफ़ के अल्फ़ाज़ येह हैं : (ह़ज़रते सय्यिदुना हुशैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :) मैं ने शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : ''जिस क़ौम में गुनाह होते हों और लोग उन्हें बदलने पर क़ादिर हों फिर भी न बदलें तो क़रीब है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन सब को अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार कर दे।''(4)

## नेकी की दा'वत छोड़ने का वबाल :

﴾12﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़्बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : ''ऐ लोगो ! भलाई का हुक्म दो और बुराई से मन्अ़ करो इस से पहले कि तुम **अल्लाह**

(1) ......سنن ابی داود، کتاب الملاحم، باب الامر والنھی، الحدیث : ۴۳۳۹،ص۱۵۳۹۔

(2) ......جامع الترمذی،ابواب الفتن،باب ماجاء فی نزول العذاب اذالم یغیر المنکر،الحدیث : ۲۱۶۸، ص۱۸۶۹۔

(3) ......السنن الکبریٰ للنسائی،کتاب التفسیر، سورۃ المائدۃ، باب ۱۲۸،الحدیث : ۱۱۱۵۷،ج۶،ص۳۳۹۔

(4) ......سنن ابی داود، کتاب الملاحم، باب الامر والنھی، الحدیث : ۴۳۳۸،ص۱۵۳۹۔



www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ करो तो वोह क़बूल न फ़रमाए और मग़्फ़िरत त़लब करो तो वोह तुम्हारी मग़्फ़िरत न फ़रमाए, बेशक नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना न तो रिज़्क़ को ख़त्म करता है और न ही मौत को क़रीब करता है। यहूदो नसारा के उ़-लमा ने जब नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना छोड़ दिया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन पर उन के अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़बान से ला'नत फ़रमाई, फिर उन सब को अ़ज़ाब में मुब्तला कर दिया गया।''(1)

## कलिमए त़य्यिबा के ह़क़ को हलका जानने का मफ़्हूम :

﴾13﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ हमेशा अपने कहने वालों को फ़ाएदा देता रहेगा और उन से अ़ज़ाब और सज़ा दूर करता रहेगा जब तक कि वोह इस के ह़क़ को हलका न जानें।'' लोगों ने अ़र्ज़ की : ''इस के ह़क़ को हलका जानने से क्या मुराद है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी के काम होने लगें तो उन्हें न तो बुरा समझा जाए और न ही बदला जाए।''(2)

﴾14﴿...... (ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं, मैं ने हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना :) ''दिलों पर पै दर पै फ़ित्ने यूं छा जाएंगे जैसे चटाई के तिन्के एक दूसरे में पैवस्त हो जाते हैं और जो दिल उन फ़ित्नों को क़बूल करेगा उस पर एक सियाह नुक़्ता पड़ जाएगा और जो उन्हें रद करेगा उस पर एक सफ़ेद नुक़्ता पड़ जाएगा यहां तक कि दोनों दिलों पर नुक़्ते होंगे एक पर चिक्ने और साफ़ पथ्थर की त़रह़ सफ़ेद नुक़्ता होगा, जब तक ज़मीनो आस्मान क़ाइम रहेंगे उसे कोई फ़ित्ना नुक़्सान न पहुंचा सकेगा और दूसरे पर इन्तिहाई सियाह नुक़्ता होगा और वोह (दिल) औंधे लोटे की त़रह़ होगा जो न तो नेकी पर अ़मल करेगा और न ही बुराई का इन्कार करेगा बल्कि अपनी ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ अ़मल करेगा।''(3)

## ह़दीसे पाक की वज़ाह़त :

**مُجَخِّيًا** का मा'ना है एक त़रफ़ लुढ़का हुवा या उलटा पड़ा हुवा या'नी जब दिल फ़ित्नों में मुब्तला हो जाए और उस से गुनाहों की हुरमत निकल जाए तो उस से ईमान का नूर निकल जाता है जैसा कि जब लोटा उलट जाए या टूट जाए तो उस से पानी निकल जाता है।

1 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الامر بالمعروف والنهی عن المنکر، الحدیث: ۱۴،ج۲،ص۲۰۶۔

2 ......الترغیب والترهیب، کتاب الحدود، باب الترغیب فی الامر بالمعروف......الخ، الحدیث: ۳۵۳۸،ج۳،ص۱۸۳۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب رفع الامانة والایمان......الخ، الحدیث: ۳۶۹،ص۷۰۲۔



www.dawateislami.net

﴾15﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जब तुम मेरी उम्मत को देखोगे कि वोह ज़ालिम को ज़ालिम कहने से डर रही है तो उसे भी छोड़ दिया जाएगा।''(1)

﴾16﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ बयान है : ''जब ज़मीन पर बुराई की जाए और जो वहां मौजूद हो और उसे ना पसन्द करे तो वोह उस शख़्स जैसा है जो वहां मौजूद ही नहीं और जो वहां मौजूद न हो मगर उस पर राज़ी हो तो वोह वहां मौजूद शख़्स की त़रह़ है।''(2)

## इस्लाम क्या है ?

﴾17﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इस्लाम येह है कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करो, उस के साथ किसी को शरीक न ठहराओ, नमाज़ क़ाइम करो, ज़कात अदा करो, र-मज़ान के रोज़े रखो, ह़ज करो, नेकी का हुक्म दो और बुराई से मन्अ़ करो और अपने घर वालों को सलाम करो। जिस ने इन में से किसी चीज़ को कम किया उस ने इस्लाम का एक ह़िस्सा छोड़ दिया और जिस ने इन सब को तर्क कर दिया उस ने इस्लाम से अपनी पीठ फैर ली।''(3)

﴾18﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इस्लाम के 8 ह़िस्से (या'नी शाखे़ं) हैं : दो शहादतें (या'नी इस बात की गवाही देना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के रसूल हैं) एक ह़िस्सा हैं, नमाज़ एक ह़िस्सा है, ज़कात एक ह़िस्सा है, रोज़ा एक ह़िस्सा है, ह़ज एक ह़िस्सा है, नेकी का हुक्म देना एक ह़िस्सा है, बुराई से मन्अ़ करना एक ह़िस्सा है, राहे ख़ुदा में जिहाद करना एक ह़िस्सा है और ना मुराद हुवा वोह शख़्स जिस के पास कोई ह़िस्सा नहीं।''(4)

## नेकी की दा'वत की अहम्मिय्यत :

﴾19﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं

---

1 ......المستدرک، کتاب الاحکام، باب الخصمان یقعدان بین یدی الحاکم، الحدیث: ۷۱۱۸، ج۵، ص۱۳۰۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب الملاحم، باب الامر والنهی، الحدیث: ۴۳۴۵، ص۱۵۴۰۔

3 ......المستدرک، کتاب الایمان، باب الاسلام ان تعبد الله......الخ، الحدیث: ۲۱، ج۱، ص۱۷۴، بتغیرٍ۔

4 ......البحرالزخارالمعروف بمسند البزار، مسند حذیفة بن الیمان، الحدیث: ۲۹۲۷، ج۷، ص۳۳۰۔



www.dawateislami.net

कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم काशानए अत़्हर में तशरीफ़ लाए तो मैं ने चेहरए अक़्दस से जान लिया कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कोई मुआ़-मला पेश आया है, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वुज़ू फ़रमाया और किसी से कलाम न फ़रमाया (और तशरीफ़ ले गए) । मैं हुज्रए मुबा-रका के साथ लग गई ताकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इर्शादात सुनती रहूं, फिर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मिम्बरे अक़्दस पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना की और इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ लोगो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें इर्शाद फ़रमाता है कि नेकी का हुक्म दो और बुराई से मन्अ़ करो, इस से पहले कि तुम दुआ़ करो तो मैं तुम्हारी दुआ़ क़बूल न करूं, मुझ से मांगो तो मैं तुम्हें अ़त़ा न करूं और मुझ से मदद त़लब करो तो मैं तुम्हारी मदद न करूं ।'' आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मज़ीद कुछ न फ़रमाया यहां तक कि मिम्बरे अन्वर से नीचे तशरीफ़ ले आए ।(1)

﴾20﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जो हमारे छोटों पर रह़्म न करे, हमारे बड़ों की ता'ज़ीम न करे, नेकी का हुक्म न दे और बुराई से मन्अ़ न करे वोह हम में से नहीं ।''(2)

## बुराई से न रोकने वाले का अन्जाम :

﴾21﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : हम सुनते हैं कि बरोज़े क़ियामत एक शख़्स दूसरे के साथ चिमट जाएगा ह़ालां कि उसे जानता भी न होगा तो दूसरा पूछेगा : ''तेरा मेरे साथ क्या मुआ़-मला है ? ह़ालां कि मेरे और तेरे दरमियान कोई जान पहचान नहीं ।'' तो वोह कहेगा : ''तू मुझे गुनाह और बुराइयों में मुब्तला पाता था लेकिन मन्अ़ न करता था ।''(3)

## रास्ते के हुक़ूक़ :

﴾22﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''रास्तों में बैठने से बचो ।'' सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमारा बैठने के सिवा कोई चारा नहीं, हम वहां आपस में गुफ़्त-गू करते हैं ।'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब तुम ने बैठना ही है तो रास्ते को उस का ह़क़ अदा करो ।'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''इस का ह़क़ क्या है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''निगाहें

(1)......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب البر والاحسان، باب الصدق......الخ، الحديث: ٢٩٠، ج١، ص٢٥٥، بتغير۔

(2)......جامع الترمذی، ابواب البر والصلة، باب ما جاء فی رحمة الصبيان، الحديث: ١٩٢١، ص١٨٤٥۔

(3)......جامع الاصول للجزری، كتاب القيامة، الباب الثانی: فی احوالها، الحديث: ٧٩٢١، ج١٠، ص٤٠٣۔



www.dawateislami.net

नीची रखना, (रास्ते से) तक्लीफ़ देह चीज़ दूर करना, सलाम का जवाब देना, नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना।''(1)

## बे अ़मल मुबल्लिग़ीन का अन्जाम :

﴾23﴿...... हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : क़ियामत के दिन एक शख़्स को ला कर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा तो उस के पेट की आंतें बाहर निकल आएंगी और वोह उन के इर्द गिर्द इस त़रह़ चक्कर लगाएगा जैसे गधा चक्की के इर्द गिर्द घूमता है, जहन्नमी उस के पास जम्अ़ हो जाएंगे और पूछेंगे : ''ऐ फ़ुलां ! तुझे क्या हुवा ? क्या तू नेकी का हुक्म न देता था और बुराई से मन्अ़ न करता था ?'' तो वोह कहेगा : ''हां ! क्यूं नहीं, मैं नेकी का हुक्म तो देता था लेकिन ख़ुद अ़मल नहीं करता था और बुराई से मन्अ़ तो करता था लेकिन ख़ुद उस में मुब्तला रहता था।''(2)

﴾24﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : क़ियामत के दिन एक शख़्स को लाया जाएगा और उसे जहन्नम में डाल दिया जाएगा तो उस के पेट की आंतें बाहर निकल पड़ेंगी और वोह उन के इर्द गिर्द इस त़रह़ घूमेगा जिस त़रह़ गधा चक्की के इर्द गिर्द घूमता है जहन्नमी उस के पास जम्अ़ हो कर पूछेंगे : ''ऐ फ़ुलां ! तेरा क्या मुआ़-मला है ? क्या तू नेकी का हुक्म न देता था और बुराई से मन्अ़ न करता था ?'' तो वोह कहेगा : ''मैं तुम्हें तो नेकी का हुक्म देता था लेकिन ख़ुद अ़मल नहीं करता था और तुम्हें तो बुराई से मन्अ़ करता था लेकिन ख़ुद बुराई में मुब्तला रहता था।''(3) (रावी फ़रमाते हैं :) मैं ने रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : मे'राज की रात मैं ऐसे लोगों के पास से गुज़रा जिन के होंट आग की क़ैंचियों से काटे जा रहे थे, मैं ने पूछा : ''ऐ जिब्रील ! येह कौन लोग हैं ?'' तो उन्हों ने बताया : ''येह आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत के ख़त़ीब हैं, जो ऐसी बातें कहते थे जिन पर ख़ुद अ़मल नहीं करते थे।''(4)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب النھی عن الجلوس فی الطرقات. الخ، الحدیث :۵۵۶۳، ص ۱۰۵۷۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الزھد، باب عقوبة من یأمر بالمعروف ولا یفعله......الخ، الحدیث :۷۴۸۳،ص۱۱۹۵۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب بدء الخلق،باب صفة النار وانھا مخلوقة، الحدیث :۳۲۶۷،ص۲۶۴۔

4 ......جامع الاصول للجزری ، الکتاب الرابع فی الریاء، الحدیث :۲۶۵۴،ج۴، ص۵۰۱۔



www.dawateislami.net

﴾25﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : मैं ने मे'राज की रात ऐसे लोगों को देखा जिन के होंट आग की क़ैंचियों से काटे जा रहे थे, मैं ने दरयाफ़्त किया : "ऐ जिब्रील ! येह कौन लोग हैं ?" तो उन्हों ने बताया : "येह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत के ख़त़ीब हैं जो लोगों को तो नेकी की दा'वत देते थे मगर अपने आप को भूल जाते थे ह़ालां कि क़ुरआने पाक पढ़ते थे क्या समझते न थे।"(1)

﴾26﴿...... एक रिवायत में इतना ज़ाइद है कि "जब भी उन के होंट काटे जाते तो वोह अपनी ह़ालत पर लौट आते।"(2)

﴾27﴿...... एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं : "ह़ालां कि वोह क़ुरआने पाक पढ़ते थे मगर उस पर अ़मल नहीं करते थे।"(3)

## वाइ़ज़ीन व मुबल्लिग़ीन से भी सुवाल होगा :

﴾28﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 110 हि.) से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जो शख़्स भी ख़ुत़्बा देता (या'नी बयान करता) है बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से दरयाफ़्त फ़रमाएगा : "तेरा इस (बयान करने) से क्या इरादा था ?" रावी (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन सुलैमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) फ़रमाते हैं कि इस रिवायत को बयान करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار रो पड़ते और इर्शाद फ़रमाते : "तुम क्या समझते हो कि तुम्हारे सामने येह बयान कर के मेरी आंखें ठन्डी हुई हैं ? जब कि मैं अच्छी त़रह़ जानता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन मुझ से इस के मु-तअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाएगा कि इस से तेरा क्या इरादा था ? तो मैं येही अ़र्ज़ करूंगा : "ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! तू मेरे दिल पर गवाह है, अगर मैं येह न जानता कि इस का बयान करना तुझे पसन्द है तो कभी दो आदमियों के सामने भी बयान न करता।"(4)

---

(1)......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الاسراء، الحدیث : ۵۳، ج ۱، ص۱۳۵۔

(2)......موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الصمت وآداب اللسان، باب ذم الکذب، الحدیث : ۵۷۵، ج۷، ص۳۱۶۔

(3)......شعب الایمان للبیهقی، باب فی حفظ اللسان، الحدیث : ۴۹۶۶مکرر، ج۴، ص۲۵۰۔

(4)......موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، کتاب ذم الکذب، باب ذم الکذب واهله، الحدیث : ۴۶، ج۵، ص۲۱۳۔



www.dawateislami.net

﴾29﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुकर्रम है : कुछ जन्नती लोग जहन्नमियों की त़रफ़ जाएंगे और पूछेंगे : "तुम किस वज्ह से जहन्नम में दाखि़ल हो गए ? खु़दा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम ने तो जो कुछ तुम से सीखा उसी वज्ह से जन्नत में दाखि़ल हुए।" तो जहन्नमी जवाब देंगे : "हम जो कहते थे उस पर अ़मल न करते थे।"(1)

## बे अ़मल मुबल्लिग़ की मिसाल :

﴾30﴿...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त बयान है : "जो लोगों को भलाई की बातें सिखाता है और अपने आप को भूल जाता है उस की मिसाल उस चराग़ की सी है जो खु़द को जला कर लोगों को रोशनी देता है।"(2)

﴾31﴿...... एक रिवायत में है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह चराग़ के धागे की मिस्ल है जो लोगों को तो रोशनी देता है लेकिन खु़द को जलाता है।"(3)

﴾32﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुझे अपने बा'द तुम पर सब से ज़ियादा ज़बान के आ़लिम (और दिल के जाहिल) मुनाफ़िक़ का खौ़फ़ है।"(4)

## क़ौल व फ़े'ल में मुवा-फ़क़त का हुक्म :

﴾33﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त बयान है : "बन्दा उस वक़्त तक (कामिल) मोमिन नहीं हो सकता जब तक उस का दिल उस की ज़बान के मुत़ाबिक़ न हो जाए और उस का क़ौल उस के अ़मल के मुखा़लिफ़ न हो और उस का पड़ोसी उस के ज़ुल्म से मह़फ़ूज़ रहे।"(5)

﴾34﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ बयान है : "मुझे अपनी उम्मत पर न किसी मोमिन की त़रफ़ से खौ़फ़ है और न मुश्रिक की त़रफ़ से, मोमिन को तो उस का ईमान बचाए रखेगा और मुश्रिक को उस का कुफ़्र ज़लील करता रहेगा। अलबत्ता ! मुझे उन पर ज़बान के तेज़ त़र्राज़ (या'नी गुफ़्त-गू के माहिर) मुनाफ़िक़ का खौ़फ़ है

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث : ٤٠٥،ج٢٢، ص١٥٠۔

2 ......المعجم الكبير،الحديث :١٦٨١،ج٢،ص١٦٦۔

3 ......الترغيب والترهيب ،كتاب العلم، باب الترهيب من ان يعلم ولا يعمل......الخ، الحديث :٢١٨،ج١،ص٩٣۔

4 ......المعجم الكبير، الحديث : ٥٩٣،ج١٨،ص٢٣٧۔

5 ......الترغيب والترهيب ،كتاب العلم، باب الترهيب من ان يعلم ولا يعمل......الخ، الحديث :٢٢٦،ج١،ص٩٥۔



www.dawateislami.net

जो बातें ऐसी करेगा कि तुम पसन्द करोगे और अ़मल ऐसे करेगा जिन्हें तुम ना पसन्द करोगे।''(1)

﴾35﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : ''तुम में से किसी को अपने भाई की आंख का तिन्का तो नज़र आता है मगर वोह अपनी आंख का शहतीर भूल जाता है।''(2)

## सब से बुरी बिद्अ़त :

सब से बुरी बिद्अ़त येह है कि जब नेकी का हुक्म दिया जाता और बुराई से मन्अ़ किया जाता है तो बा'ज़ जाहिल येह आयते मुबा-रका पढ़ देते हैं : ''عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ (پ۷،المائدۃ:۱۰۵) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो।'' लेकिन वोह जाहिल अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के इस फ़रमान को नहीं जानते कि ऐसा करने वाले का गुनाह अपनी राय से कुरआने पाक की तफ़्सीर करने के गुनाह से भी ज़ियादा है और **तफ़्सीर बिर्राय** कबीरा गुनाह है।

## मज़्कूरा आयते मुबा-रका की तफ़्सीर :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुसय्यब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ''आयते मुबा-रका का मा'ना येह है कि नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने के बा'द तुम पर अपने आप को गुनाहों से बचाना लाज़िम है।'' और इस के मु-तअ़ल्लिक़ दीगर अक़्वाल भी मन्क़ूल हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ''इस के इ़लावा कोई आयते मुबा-रका नहीं जिस में नासिख़ और मन्सूख़ दोनों जम्अ़ हों।'' एक क़ौल के मुत़ाबिक़ ''اِذَا اهْتَدَيْتُمْ'' नासिख़ है क्यूं कि यहां हिदायत से मुराद नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना है।

## तम्बीह :

इन 3 गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार करना मज़्कूरा अह़ादीसे मुबा-रका से वाज़ेह़ है क्यूं कि इन में सख़्त वई़द है। मैं ने उ़न्वान में मज़्कूर आख़िरी गुनाह के मु-तअ़ल्लिक़ किसी को तसरीह़ करते हुए नहीं पाया लेकिन मज़्कूरा अह़ादीसे मुबा-रका इस की भी तसरीह़ करती हैं जैसा कि साबित हो चुका है।

## एक इश्काल :

यहां एक इश्काल पेश किया जाता है कि क़ौल व फ़े'ल में मुख़ा-लफ़त के कबीरा गुनाह

---

1 ......المعجم الاوسط، الحديث: ۷۰۶۵، ج۵، ص۲۰۰۔

2 ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب الحظر والاباحة، باب الغيبة، الحديث: ۵۷۳۱، ج۷، ص۵۰۶۔



www.dawateislami.net

होने में शर्त़ येह है कि वोह कबीरा गुनाह के मुआ-मले में मुख़ा-लफ़त करे (या'नी दूसरों को कबीरा गुनाह से मन्अ़ करे मगर ख़ुद उस का इरतिकाब करे) क्यूं कि सख़्त वईद कबीरा गुनाह के मु-तअ़ल्लिक़ आई है मुत्लक़न अ़मल से क़ौल की मुख़ा-लफ़त और सग़ीरा गुनाह के मु-तअ़ल्लिक़ नहीं। येह ए'तिराज़ मज़्बूत़ है क्यूं कि इस सूरत में कबीरा गुनाह का तक़ाज़ा नहीं किया जा रहा।

**जवाब :** इस का पहला इल्तिज़ामी जवाब येह है कि हम येह तस्लीम नहीं करते कि सख़्त वईद इस कबीरा गुनाह के मु-तअ़ल्लिक़ आई है येह जवाब ही काफ़ी है और येह वईद अ़मल से क़ौल की मुख़ा-लफ़त के मु-तअ़ल्लिक़ है जो कि ज़ाहिर है। लिहाज़ा इस सूरत में बेहतर येह है कि इस वईद को मिलाया जाए क्यूं कि इस के मिलाने पर मज़ीद सज़ा मुरत्तब होगी जो इस के न मिलाने पर मुरत्तब नहीं होती।

दूसरा इल्तिज़ामी जवाब येह है कि अगर इस सग़ीरा गुनाह के साथ लोगों को धोका देना भी शामिल हो जाए या'नी वोह लोगों पर येह ज़ाहिर करे कि अकाबिर उ़-लमा व सालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن चूंकि जो कहते थे उस पर अ़मल भी करते थे लिहाज़ा मैं भी उन्ही के त़रीक़े पर अ़मल करता हूं और उन्ही की हिदायत से रहनुमाई लेता हूं जब कि उस का बात़िन उस के बर ख़िलाफ़ हो तो येह एक बहुत बड़ा धोका होगा जो बहुत से ऐसे मफ़ासिद का बाइ़स होगा जिन को शुमार नहीं किया जा सकता।

मैं ने इस की ताईद में एक क़ौल पाया जिसे (कबीरा नम्बर 350 में) ज़िक्र किया जा चुका है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शिहाबुद्दीन अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं : "ज़ालिम बादशाह के पास मह़्ज़ ना जाइज़ शिकायत करने को कबीरा गुनाह क़रार देना मुश्किल है जब कि इस से पैदा होने वाला गुनाह सग़ीरा हो। **अलबत्ता ! अगर यूं कहा जाए कि येह उस वक़्त कबीरा बन जाता है जब इस के साथ कोई दूसरी चीज़ मिल जाए म-सलन जिस की शिकायत की जाए उस पर दबाव डाला जाए या उस के घर वालों पर रो'ब त़ारी किया जाए या बादशाह के बुलावे की वज्ह से उन्हें डराया जाए तो येह कबीरा गुनाह बन जाएगा।**"

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मज़्कूरा क़ौल "**अलबत्ता ! अगर यूं कहा जाए.....اِلخ**" मेरे ज़िक्र कर्दा मौक़िफ़ की त़रह़ है और येह उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के कलाम से बईद नहीं पस इसी पर ए'तिमाद किया जाए।



www.dawateislami.net

## उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की आराअ :

पहले दो को कबीरा गुनाहों में शुमार करना ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی के क़ौल से मन्क़ूल है फिर उन्हों ने इस में तवक़्क़ुफ़ किया और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम यह़्या बिन शरफ़ न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने भी इन के तवक़्क़ुफ़ को साबित रखा लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना जलाल बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی ने इस से इज़्हारे बराअत फ़रमाया कि इस की दलील पुख़्ता नहीं जो कि अबू दावूद शरीफ़ की गुज़श्ता रिवायत है या'नी "फिर तुम पर ज़रूर ला'नत फ़रमाएगा जैसे बनी इसराईल पर की थी।" इस दलील के कमज़ोर होने की वज्ह येह है कि येह बयान हो चुका है कि इस ह़दीसे पाक की दो अस्नाद में से एक मुन्क़त़ेअ़ जब कि दूसरी मुरसल है।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलाल बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی के क़ौल की तरदीद की गई है कि अबू दावूद शरीफ़ की मज़्कूरा रिवायत के फ़ौरन बा'द तिरमिज़ी शरीफ़ की रिवायत और इस के बा'द दीगर कई सह़ीह़ रिवायात ख़ुसूसन अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का गुज़श्ता फ़रमान सब में इस की सराह़त है कि पहले दोनों गुनाह कबीरा हैं क्यूं कि इन के मु-तअ़ल्लिक़ सख़्त वईद मज़्कूर है और तवक़्क़ुफ़ का मक़ाम येह नहीं जो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی ने ज़िक्र किया। बल्कि ज़ाहिर बात येह है जिस की ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی ने तसरीह़ फ़रमाई है और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی का क़ौल नक़्ल फ़रमाया कि "बा'ज़ मु-तअख़्ख़िरीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : बुराई से रोकने के मु-तअ़ल्लिक़ येह फ़र्क़ होना चाहिये कि अगर गुनाहे कबीरा हो तो रोकने पर क़ुदरत के बा वुजूद इस पर ख़ामोश रहना कबीरा गुनाह है और अगर गुनाहे सग़ीरा हो तो इस पर ख़ामोशी इख़्तियार करना सग़ीरा गुनाह है और जब हम कहते हैं कि वाजिबात मुख़्तलिफ़ हैं तो हर मामूर बिह (या'नी जिस का हुक्म दिया गया हो उस) के छोड़ने को उसी पर क़ियास किया जाएगा और येह बात वाज़ेह़ है।"

मज़्कूरा कलाम में एक चीज़ रह गई है जिस से उन की बयान कर्दा तफ़्सील की दुरुस्ती वाज़ेह़ होती है और वोह उन का येह क़ौल है कि "आप के लिये जाइज़ है कि आप बुराई से मन्अ़

---

1...... **ह़दीसे मुन्क़त़ेअ़ :** वोह है जिस की सनद से कोई भी रावी साक़ित़ हो जाए। मुरसल **:** वोह ह़दीस है जिस में सनद के आख़िर से रावी साक़ित़ हो या'नी ताबेई ह़दीस बयान करे और सह़ाबी का नाम न ले।

(نزهة النظرفی توضیح نخبة الفکر،ص ۸۲،۸۴)



www.dawateislami.net

न करने को मुत्लक़न कबीरा गुनाह क़रार दें इस लिये कि ह़राम ग़ीबत से न रोकना कबीरा गुनाह है जब कि इस के क़ाइल या'नी **साह़िबुल उद्दह** ने ग़ीबत को मुत्लक़न सग़ीरा गुनाह क़रार दिया है।''

लेकिन येह बात अ़क़्ल में कैसे आ सकती है कि ग़ीबत बज़ाते ख़ुद तो सग़ीरा गुनाह हो मगर इस से मन्अ़ न करना कबीरा गुनाह हो । इस तफ़्सील से येह बात वाज़ेह़ हो गई कि कबीरा से मन्अ़ न करना कबीरा गुनाह और सग़ीरा से न रोकना सग़ीरा गुनाह है ।

## वाजिबात व फ़राइज़ का हुक्म न देना :

ह़ज़रते सय्यिदुना जलाल बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الغَنِى फ़रमाते हैं कि वाजिबात के मु-तअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) ने ज़िक्र फ़रमाया कि वाजिबात मुख़्तलिफ़ हैं, इस का मा'ना येह है कि मिसाल के त़ौर पर सलाम का जवाब देना वाजिब है और दा'वत क़बूल करना भी वाजिब है[1] लेकिन इन दोनों का मर्तबा नमाज़, ज़कात, ह़ज और रोज़े से कम है । लिहाज़ा बा वुजूदे क़ुदरत नमाज़ जैसे अह़काम का हुक्म न देना तो कबीरा गुनाह है मगर बा वुजूदे क़ुदरत सलाम का जवाब देने या दा'वत क़बूल करने का हुक्म न देना कबीरा गुनाह नहीं ।

## मुस्तह़ब्बात का हुक्म न देना :

ह़ज़रते सय्यिदुना जलाल बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الغَنِى फ़रमाते हैं : ''मुस्तह़ब्बात का हुक्म न देना कबीरा गुनाह नहीं । एक क़ौल के मुत़ाबिक़ येह सग़ीरा गुनाह भी नहीं । इस लिये कि उस नेकी का हुक्म देना वाजिब है जिस का करना मुकल्लफ़ पर वाजिब हो और मक्रूहात से मन्अ़ करना इस त़रह़ वाजिब नहीं जिस त़रह़ ह़राम कामों से मन्अ़ करना वाजिब है बल्कि मुस्तह़ब्बात का हुक्म देना और मक्रूहात से मन्अ़ करना मुस्तह़ब है । **अरौज़ा** में नमाज़े ईद का हुक्म देने के वाजिब होने के मु-तअ़ल्लिक़ दो वज्हें ज़िक्र की गईं और वाजिब होने को सह़ीह़ कहा गया, अगर्चे हम कहते हैं कि ईद की नमाज़ सुन्नत है क्यूं कि येह वाज़ेह़ शिआ़र है[2] ।''

## ह़ज़रते मुसन्निफ़ رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का तब्सिरा :

(ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने ह़जर मक्की عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الوَلِى फ़रमाते हैं :) ''मेरी तह़क़ीक़ के

---

❶...... मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الحَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 4, सफ़ह़ा 74 पर अह़नाफ़ का मौक़िफ़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : ''ह़क़ येह है कि वलीमा हो या कोई और दा'वते त़आ़म, क़बूल करना सुन्नत है।''

❷...... अह़नाफ़ के नज़्दीक : ''ईदैन की नमाज़ वाजिब है।'' (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, ईदैन का बयान, जि. 1, स. 779)



www.dawateislami.net

मुताबिक़ मक्रूह अवक़ात में नमाज़ पढ़ने से रोकना चाहिये अगर्चे येह (या'नी मक्रूह अवक़ात में नमाज़ पढ़ना) हमारे नज़्दीक मक्रूहे तन्ज़ीही है क्यूं कि अगर येह ह़राम होता तो सह़ीह़ क़ौल के मुताबिक़ वोह नमाज़ ही बातिल होती जैसा कि इस मस्अले की शिक़ मौजूद है। पस उस वक़्त नमाज़े ईद का हुक्म न देना और मक्रूह अवक़ात में नमाज़ पढ़ने से न रोकना कबीरा गुनाह से मुल्ह़िक़ न होगा। जब हम येह कहते हैं कि मक्रूहे तन्ज़ीही कबीरा गुनाह नहीं तो शायद ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى की अपने इस क़ौल से भी येही मुराद हो कि नेकी का हुक्म न देने और बुराई से मन्अ़ न करने में मुत़्लक़न तवक़्क़ुफ़ की गुन्जाइश है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना जलाल बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى ने जो नमाज़े ईद का हुक्म देना वाजिब ज़िक्र किया है तो वोह मोह़्तसिब (या'नी अ़वाम के मुआ़-मलात की निगरानी करने वाले) के साथ ख़ास है और इस (ख़ास करने) से शैख़ैन (या'नी इमाम न-ववी व इमाम राफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا) और **अरौंज़ा** के क़ौल के दरमियान तत़्बीक़ हो जाती है, शैख़ैन का क़ौल येह है कि नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने से मुराद शर-ई वाजिबात का हुक्म देना और ह़राम कामों से मन्अ़ करना है और **अरौंज़ा** का क़ौल येह है कि नमाज़े ईद का हुक्म देना वाजिब है, अगर्चे हम इसे सुन्नत कहें क्यूं कि नेकी का हुक्म देना इत़ाअ़त ही का हुक्म देना है ख़ुसूसन जो कि वाज़ेह़ शिआ़र हो। लिहाज़ा पहला क़ौल आ़म लोगों के मु-तअ़ल्लिक़ है कि सिर्फ़ वाजिब और ह़राम कामों में उन पर किसी बात का हुक्म देना और मन्अ़ करना लाज़िम है और दूसरा अ़वाम की निगरानी करने वाले के मु-तअ़ल्लिक़ है। लिहाज़ा वाज़ेह़ शिआ़र का हुक्म देना उस पर लाज़िम होगा अगर्चे वोह वाजिब न हो।

## हुक्मरान व मोह़्तसिब की ज़िम्मादारियां :

हुक्मरान के मु-तअ़ल्लिक़ बड़े बड़े फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि इस के लिये मुस्तह़ब का हुक्म देना मुस्तह़ब है। इस मुआ़-मले में अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने कई मक़ामात पर मोह़्तसिब और ग़ैर मोह़्तसिब के दरमियान फ़र्क़ किया है। उन में से एक येह है कि वोह फ़रमाते हैं : "अगर बादशाह या उस के नाइब ने नमाज़े इस्तिस्क़ा या इस के रोज़े वग़ैरा का हुक्म दिया तो वोह वाजिब हो जाएगा और अगर आ़म शख़्स ने हुक्म दिया तो वाजिब न होगा।"

मोह़्तसिब (या'नी क़ाज़ी, तफ़्तीशी ऑफ़ीसर) के लिये अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के क़ौल के मुताबिक़ कई ख़ुसूसी अह़काम हैं :

(1)...... हुक्मरान पर लाज़िम है कि वोह मोह़्तसिब को नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़


www.dawateislami.net

करने का हुक्म दे क्यूं कि इस के हुक्म पर ज़ियादा अ़मल होता है अगर्चे येह दोनों काम इस के साथ ख़ास नहीं ।

(2)...... इस के लिये जाइज़ नहीं कि किसी को उस के मज़्हब के ख़िलाफ़ (या'नी दूसरा मज़्हब इख़्तियार करने) पर मजबूर करे क्यूं कि लोगों पर अपने इमाम (या'नी जिस की वोह तक़्लीद करता हो उस) के इ़लावा के मज़्हब की इत्तिबाअ़ लाज़िम नहीं ।

(3)...... मुसल्मानों को फ़र्ज़ और सुन्नत नमाज़ों की पाबन्दी का हुक्म दे लेकिन अव्वल वक़्त से ताख़ीर करने पर उन से पुरसिश न करे क्यूं कि इस में उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का इख़्तिलाफ़ है ।

(4)...... ऐसे काम का हुक्म दे जिस का नफ़्अ़ आ़म हो जैसे शह्र की दीवार ता'मीर करना, मोह़ताजों की मदद करना लेकिन येह काम बैतुल माल की रक़म से करना वाजिब है और अगर बैतुल माल में कुछ न हो या (इस से ख़र्च करने से) ज़ुल्मन रोक दिया जाए तो ऐसे काम करना साह़िबे क़ुदरत ख़ुशह़ाल लोगों पर लाज़िम है ।

(5)...... अगर कोई आदमी ख़ुशह़ाल शख़्स से क़र्ज़ त़लब करे तो ह़ाकिम उसे टाल मटोल करने से मन्अ़ करे ।

(6)...... अगर कोई शख़्स तन्हाई में किसी औ़रत के साथ खड़ा हो तो उसे मन्अ़ करे और कहे : अगर येह तेरी मह़रम है तो तोहमत की जगहों से इस की ह़िफ़ाज़त कर और अगर अज्नबिय्या है तो इस के साथ तन्हाई इख़्तियार करने से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर क्यूं कि ऐसा करना ह़राम है ।

(7)...... औ़रत के औलिया को (ह़सब व नसब में) उस के हम-पल्ला मर्द के साथ उस का निकाह़ करने का हुक्म दे ।

(8)...... औ़रतों को अपनी इ़द्दत सह़ीह़ त़रीक़े से पूरी करने का हुक्म दे ।

(9)...... आक़ा को ग़ुलामों के साथ नरमी करने का हुक्म दे ।

(10)...... जानवर पालने वालों को उन की देखभाल करने और उन के साथ नरमी करने का हुक्म दे ।

(11)...... जो जहरी (या'नी ऊंची आवाज़ से क़िराअत वाली) नमाज़ को सिर्रन पढ़े (या'नी उस में आहिस्ता क़िराअत करे) या इस के बर अ़क्स करे या अज़ान में ज़ियादती करे (जैसे राफ़िज़ी करते हैं) या कमी करे तो उसे मन्अ़ करे ।

(12)...... **ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद** के मुआ़-मले में साह़िबे ह़क़ के मुत़ा-लबा करने से पहले उस से



www.dawateislami.net

पूछगछ न करे जिस पर कोई ह़क़ लाज़िम हो।

(13)...... क़र्ज़ के लिये न क़ैद करे, न मारे।

(14)...... क़ाज़ियों को फ़ैसलों के छुपाने या अपने फ़राइज़ में कोताही करने से मन्अ़ करे।

(15)...... रास्तों की मसाजिद के अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام को मुक़्तदियों पर नमाज़ लम्बी करने से मन्अ़ करे।

(16)...... और औ़रतों के मुआ़-मले में ख़ियानत करने से मन्अ़ करे।

## सग़ीरा गुनाह से मन्अ़ करना भी वाजिब है :

ह़ज़राते अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि कबीरा गुनाह की त़रह़ सग़ीरा गुनाह से मन्अ़ करना भी वाजिब है बल्कि अगर फ़ाइल के ख़ास होने की वज्ह से वोह फ़े'ल ना फ़रमानी न भी हो तब भी उस से मन्अ़ करना वाजिब है जैसा कि अगर वोह ग़ैर मुकल्लफ़ को ज़िना करते या शराब पीते देखे तो उसे इस से रोकना ज़रूरी है। ना फ़रमानी को ख़त्म करने के बा'द नसीह़त काफ़ी है बल्कि उसे छुपाना सुन्नत है जैसा कि "**बाबुल हुदूद**" में तफ़्सीलन गुज़र चुका है।

"**शर्हे मुस्लिम**" में है : "जिस का फ़साद मा'रूफ़ हो अगर किसी फ़ितने का अन्देशा न हो तो उस का ज़ाहिर करना और ह़ाकिम तक पहुंचाना मुस्तह़ब है और जिसे किसी बुराई के आयिन्दा होने की ख़बर मिले जैसे वोह किसी शख़्स के मु-तअ़ल्लिक़ सुने कि वोह कल शराब पीने या ज़िना करने का पुख़्ता इरादा रखता है तो उसे फ़क़त़ नसीह़त करे। लेकिन अगर वोह सुने बिग़ैर सिर्फ़ क़राइन से ऐसा समझे तो उसे नसीह़त करना ह़राम है क्यूं कि येह चीज़ मुसल्मान के मु-तअ़ल्लिक़ बद गुमानी को ज़िम्न में लिये हुए है।"

(मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं :) मुत़्लक़ त़ौर पर नसीह़त को ह़राम क़रार देने में ग़ौरो फ़िक्र की ज़रूरत है बल्कि ह़राम होने की सूरत येह है कि वोह वा'ज़ो नसीह़त में उस के फ़िस्क़ को मश्हूर करे और जिस ने किसी अज्नबिय्या के साथ तन्हाई इख़्तियार की या अज्नबिय्या को देखने के लिये खड़ा हुवा उसे ज़बर दस्ती रोका जाए, येह न हो सके तो ज़बान से मन्अ़ किया जाए क्यूं कि इस से ना फ़रमानी साबित हो गई।

## नेकी की दा'वत किस पर लाज़िम है ?

इसी त़रह़ अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना उस के साथ ख़ास नहीं जिस की बात सुनी जाए बल्कि हर मुकल्लफ़ पर लाज़िम



www.dawateislami.net

है कि अम्र व नह्य का फ़रीज़ा सर अन्जाम देता रहे अगर्चे उसे लोगों की आ़दत मा'लूम हो कि उन्हें नसीहत कोई फ़ाएदा न देगी, ख़्वाह हुक्म देने वाला या मन्अ़ करने वाला ख़ुद अ़मल न भी करता हो और न ही ह़ाकिमे इस्लाम की त़रफ़ से उस की ज़िम्मादारी हो। क्यूं कि उस पर दो काम लाज़िम हैं : (1)...... ख़ुद अ़मल करना और (2)...... दूसरों को नेकी का हुक्म देना। जब इन में से एक रह भी गया तो दूसरा साक़ित़ न होगा।

मुश्किल मसाइल में सिर्फ़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف और نَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر का फ़रीज़ा सर अन्जाम दें, आ़म लोग ना वाक़िफ़ होने की वज्ह से येह काम न करें और ज़ाहिरी आ'माल जैसे नमाज़, रोज़ा और शराब पीने में नेकी का हुक्म देने में अ़वाम और उ़-लमा सब बराबर हैं।

आ़लिम भी सिर्फ़ उन्हीं बातों से मन्अ़ करे जिन के बुरा होने पर इत्तिफ़ाक़ हो या जिन्हें करने वाला ह़राम समझता हो और दीगर बातों में रोक टोक न करे। अलबत्ता ! इस के लिये मुस्तह़ब है कि इख़्तिलाफ़ से बचने के लिये नसीह़त के त़ौर पर मन्अ़ करे कि कहीं दूसरे इख़्तिलाफ़ और सुन्नते साबिता छोड़ने का मुर-तकिब न हो जाए क्यूं कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इत्तिफ़ाक़ है कि उस वक़्त इख़्तिलाफ़ से निकलना मुस्तह़सन है।

## امر بالمعروف ونهى عن المنكر के बारह म-दनी फूल :

साबिक़ा अह़ादीसे मुबा-रका से दर्जे ज़ैल नताइज ह़ासिल होते हैं :

(1)...... बुराई से मन्अ़ करने वाला सब से पहले बुराई को हाथ से रोके।

(2)...... अगर इस से आ़जिज़ हो तो ज़बान से रोके।

(3)...... इस पर लाज़िम है कि मुम्किना ह़द तक बुराई को बदलने की कोशिश करे और जो उसे ख़त्म कर सकता हो उस के लिये सिर्फ़ नसीह़त करना काफ़ी नहीं और जो ज़बान से रोकने की त़ाक़त रखता हो उस के लिये सिर्फ़ दिल में बुरा जानना काफ़ी नहीं।

(4)...... जिस के शर का ख़ौफ़ हो उस से और जाहिल से बुराई दूर करने में नरमी करे क्यूं कि येह चीज़ उन्हें नेकी की दा'वत देने वाले की बात क़बूल करने पर आमादा करेगी नीज़ बुराई दूर करने का बेहतरीन ज़रीआ़ नरमी है।

(5)...... अगर जंग और अस्लह़ा के फ़ितने का अन्देशा न हो तो बुरे शख़्स के ख़िलाफ़ दूसरों से मदद त़लब करे जब कि इस्तिक़्लाल मुम्किन न हो।



www.dawateislami.net

(6)...... अगर वोह हाथ या ज़बान से रोकने से आ़जिज़ आ जाए तो मुआ़-मला हुक्मरान के पास ले जाए।

(7)...... अगर इस से भी आ़जिज़ हो तो दिल में बुरा जाने।

(8)...... नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने वाले के लिये तफ़्तीश या छानबीन करना जाइज़ नहीं और न ही मह्ज़ गुमान की वज्ह से किसी घर पर धावा बोलना (या'नी ज़बर दस्ती घुसना) जाइज़ है।

(9)...... अगर इसे कोई बा ए'तिमाद शख़्स किसी के मु-तअ़ल्लिक़ ख़बर दे कि वोह हुरमत को पामाल करने वाले ह़राम काम में मुलव्वस है तो वोह उस की रोकथाम करे जैसे किसी के मु-तअ़ल्लिक़ ख़बर दे कि फ़ुलां शख़्स ज़िना के लिये औ़रत के साथ तन्हाई इख़्तियार किये हुए है या किसी शख़्स को क़त्ल करने के लिये तन्हाई में ले गया है तो इस पर लाज़िम है कि उस घर पर धावा बोल दे और उस के मु-तअ़ल्लिक़ छानबीन करे।

(10)...... अगर इसे किसी बुराई का यक़ीनी मा'लूम हो जाए जैसे वोह गाने बजाने के आलात या गाने वाली लड़कियों या नशे में मुब्तला अफ़राद की आवाज़ सुने तो घर में दाख़िल हो और गाने के आलात तोड़ कर गाने वालियों को बाहर निकाल दे।

(11)...... किसी फ़ासिक़ के दामन के नीचे से शराब की बू आ रही हो तो उसे उठा कर देखना जाइज़ नहीं।

(12)...... बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि अगर इसे मा'लूम हो कि दामन के नीचे सारंगी वग़ैरा है तो भी येही हुक्म है या'नी दामन उठा कर न देखे।

इस में वाज़ेह़ तौ़र पर ग़ौरो फ़िक्र की ज़रूरत है बल्कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के कलाम का ज़ाहिरी मफ़्हूम येह है कि अगर इसे मा'लूम हो कि इस के नीचे सारंगी है तो उसे निकाले और तोड़ दे।

## तजस्सुस का मफ़्हूम :

**तजस्सुस** से मुराद येह है कि जब आप किसी काम के मु-तअ़ल्लिक़ किसी की छानबीन करें तो आप का जानना उस के करने वाले पर गिरां गुज़रे।

नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना उस वक़्त साक़ित़ हो जाता है जब इन के सबब जान, माल, जिस्म या उ़ज़्व के नुक़्सान का अन्देशा हो या दूसरे शख़्स के मौजूदा बुराई से बड़ी बुराई में मुब्तला होने का ख़ौफ़ हो या उस का ग़ालिब गुमान हो कि बुराई का मुर-तकिब दुश्मनी करते हुए उस में ज़ियादती करेगा।



www.dawateislami.net

## फ़ाएदा : नेकी की दा'वत देना फ़र्ज़े किफ़ाया है :

नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना हर मुकल्लफ़, आज़ाद, गुलाम और मर्द व औ़रत पर वाजिब है लेकिन **वाजिब अ़लल किफ़ाया** है। इस की दलील **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आ़लीशान है : ''وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ(پ۴،اٰل عمران:۱۰۴) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम में एक गुरौह ऐसा होना चाहिये।'' क्यूं कि अगर येह फ़र्ज़े ऐ़न होता तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता : ''وَلْتَكُوْنُوْا'' हां ! कभी येह फ़र्ज़े ऐ़न भी हो जाता है जैसे अगर वोह ऐसे मक़ाम पर हो जहां कोई दूसरा इस का इ़ल्म नहीं रखता या दूसरा इस पर कुदरत नहीं रखता।

**फ़र्ज़े किफ़ाया** वोह होता है कि जिसे अगर एक शख़्स सर अन्जाम दे दे तो उसे सवाब मिल जाएगा और बाक़ियों से ज़िम्मादारी साक़ित़ हो जाएगी। इसी वज्ह से उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के एक त़बक़े के नज़्दीक इस का नफ़्अ़ ज़ियादा होने की वज्ह से येह फ़र्ज़े ऐ़न से अफ़्ज़ल है।

एक शख़्स के फ़र्ज़े किफ़ाया फ़े'ल अदा करने से दूसरे से इस के साक़ित़ होने में शर्त़ येह है कि उसे दूसरे के अदा करने का यक़ीनी इ़ल्म हो वरना उस से साक़ित़ न होगा जैसे अपने गुमान से (कि दूसरे अदा करते होंगे) जानबूझ कर किसी वाजिब को तर्क कर देना। क्यूं कि गुनाह में दारो मदार फ़ाइ़ल की ज़ात पर होता है न कि नफ़्से फ़े'ल पर। क्या आप जानते नहीं कि जिस ने किसी औ़रत को अजनबी गुमान करते हुए उस से वत़ी की ह़ालां कि वोह उस की बीवी थी तो उसे ज़िना का गुनाह मिलेगा और इस के बर अ़क्स हो (या'नी अजनबी औ़रत को अपनी बीवी समझ कर उस से वत़ी की) तो उस पर कोई गुनाह नहीं।

## हाथ और ज़बान से बुराई को रोकने के अह़काम :

अगर सब लोग बराबर त़ौर पर हाथ और ज़बान से रोक सकते हों तो इस की ज़िम्मादारी सब पर आ़इद होगी और अगर एक शख़्स हाथ से और दूसरे ज़बान से रोकने पर क़ादिर हों तो पहले की ज़िम्मादारी होगी, अलबत्ता ! अगर ज़बान से रोकने वाले के ज़रीए़ बुराई से रुकना ज़ियादा आसान हो या ज़बान से रोकने से वोह ज़ाहिरी व बात़िनी त़ौर पर रुक जाए जब कि हाथ से रोकने से सिर्फ़ ज़ाहिरन रुके तो इस सूरत में ज़बान से रोकने वाले की ज़िम्मादारी होगी।

## दिल में बुरा जानने का हुक्म :

दिल में बुरा जानना मुकल्लफ़ से बिल्कुल साक़ित़ न होगा क्यूं कि येह ना फ़रमानी को ना पसन्द करना है जो हर मुकल्लफ़ पर वाजिब है बल्कि उ़-लमा के एक त़बक़े के नज़्दीक बुराई को दिल में बुरा न जानना कुफ़्र है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَوَّل



www.dawateislami.net

भी उन्ही में शामिल हैं। क्यूं कि ह़दीसे पाक में है कि "येह ईमान का कमज़ोर तरीन द-रजा है।"(1)

जो शख़्स ना वाक़िफ़िय्यत व जहालत की बिना पर किसी बुराई में मुब्तला हो कि अगर आगाह हो जाए तो उस से रुक जाए तो उसे नरमी से समझाना वाजिब है, यहां तक कि अगर उसे मा'लूम हो कि किसी दूसरे को मुख़ात़ब कर के समझाना इसे फ़ाएदा देगा तो दूसरे को मुख़ात़ब करे। या जो शख़्स बुराई को जानने के बा वुजूद उस में मुब्तला हो म-सलन भत्ता लेने और ग़ीबत पर डटा रहने वाला, तो उसे नसीह़त करे और उस गुनाह की वई़द याद दिला कर ख़ौफ़ दिलाए। फिर द-रजा ब द-रजा इन्तिहाई नरमी व ख़न्दा पेशानी से समझाए क्यूं कि हर चीज़ अपनी क़ज़ा व क़द्र के साथ होती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लुत़्फ़ो करम पर अपनी नज़र रखे कि उस ने इस बुराई से बचाया, अगर वोह चाहता तो इस के बर अ़क्स कर देता बल्कि अब भी वोह इस बुराई में मुब्तला होने से मह़फ़ूज़ नहीं।

अगर ज़बान से रोकने से आ़जिज़ आ जाए या इस पर क़ादिर न हो और तुर्श-रूई, झिड़क्ने, सख़्ती करने और ग़ज़ब नाक होने की क़ुदरत रखता हो तो ऐसा करना ज़रूरी है और सिर्फ़ दिल में बुरा जानना काफ़ी नहीं। अगर इस ने वा'ज़ो नसीह़त न की और बुराई में मुब्तला शख़्स का इस पर डटा रहना मा'लूम हुवा तो उस से सख़्त कलामी से पेश आए और उसे डांट डपट करे मगर गालियां न बके जैसे यूं कहे : "ऐ फ़ासिक़ ! ऐ जाहिल ! ऐ अह़मक़ ! ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से न डरने वाले !"

बुराई से मन्अ़ करने वाले को चाहिये कि ग़ज़ब नाक होने से बचे वरना अपनी नुसरत के लिये बुराई से मन्अ़ करेगा या किसी और फ़े'ले ह़राम में मुब्तला हो जाएगा तो इस का सवाब अ़ज़ाब में बदल जाएगा। येह तमाम अह़काम उस बुराई के लिये हैं जो हाथ से न रोकी जा सके और जो हाथ से दूर की जा सके उसे हाथ से ख़त्म करना ज़रूरी है म-सलन ग़ैर मोह़तरम शराब बहाना (या'नी ऐसी शराब जो शराब ही के लिये रखी गई हो न कि सिर्का वग़ैरा के लिये), आलाते लह्व तोड़ना, मर्द सोना या रेशम पहने हो तो उतरवा देना, बकरी वग़ैरा को तोड़ फोड़ करने से रोकना और जुनुबी, गन्दगी खाने वाले और नजासत वाले शख़्स से नजासत टपक रही हो तो उसे मस्जिद से बाहर निकालना। बल्कि अगर हाथ से न रोक सके तो उसे अपने पाउं से धकेल दे या किसी मददगार के ज़रीए उसे दूर करे और शराब बहाने और आलाते लह्व को बुरी त़रह़ तोड़ने से बचे, अलबत्ता ! अगर वोह तोड़े बिग़ैर न बहती हो या ख़ौफ़ हो कि फ़ासिक़ लोग इसे ले लेंगे और इसे रोक लेंगे तो हर वोह काम करे जिस का करना ज़रूरी हो ख़्वाह उसे

1 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان کون النھی عن المنکر......الخ، الحدیث: ۱۷۷، ص۴۸۸۔



www.dawateislami.net

जलाना या बहाना पड़े।

हाकिम ज़ज्रो तौबीख़ और सज़ा के तौर पर मुत़्लक़न ऐसा कर सकता है और जो दुरुश्त कलाम से भी बाज़ न आए तो उसे हाथ से मार सकता है और अगर वोह अस्लहा सोंते बिग़ैर बाज़ न आए ख़्वाह वोह अकेला हो या जमाअ़त के साथ तो ऐसा करें लेकिन क़ाबिले ए'तिमाद बात येह है कि हुक्मरान की इजाज़त से ऐसा करें। **हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) फ़रमाते हैं कि "हुक्मरान की इजाज़त ज़रूरी नहीं।"(1)

एक क़ौल के मुताबिक़ क़ियास का तक़ाज़ा भी येही है जैसा कि अपने फ़िस्क़ की हिमायत में बोलने वाले फ़ासिक़ को क़त्ल करना जाइज़ है और अगर किसी बुराई के मुर-तकिब ने हक़ बात समझाने वाले को क़त्ल कर दिया तो वोह शहीद है और इसी त़रह बादशाह को भी नसीहत की जाएगी और अगर उस का नुक़्सान पहुंचाने का अन्देशा न हो तो न मानने की सूरत में उस से सख़्त कलामी की जाएगी ख़्वाह नसीहत करने वाला इस की पादाश में क़त्ल हो जाए। क्यूं कि सहीह ह़दीसे पाक में है कि,

﴾36﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अफ़्ज़ल शहीद हज़रते हम्ज़ा हैं और वोह शख़्स जिस ने ज़ालिम हुक्मरान के सामने खड़े हो कर उसे (नेकी का) हुक्म दिया और (बुराई से) मन्अ़ किया और उस (हुक्मरान) ने इसे क़त्ल कर दिया।"(2)

अगर किसी शख़्स ने चौपाए को किसी का माल ज़ाएअ़ करते देखा तो अगर उस (चौपाए) से ख़त़रा न हो तो उसे रोकना वाजिब है और अगर किसी को अपना उ़ज़्व काटते देखे तो रोके ख़्वाह येह चीज़ उस के क़त्ल की त़रफ़ ले जाए क्यूं कि इस का मक़्सद मुम्किना हद तक गुनाहों का रास्ता बन्द करना है न कि उस की जान या उ़ज़्व की हिफ़ाज़त। इसी त़रह जो इस का माल ज़ाएअ़ करना चाहता है या इस की बीवी से बुराई करना चाहता है तो उसे रोके अगर्चे उसे क़त्ल करना पड़े। जिस औ़रत के फ़िस्क़ को जानता हो अगर उसे ज़ीनत करते और रात को बाहर निकलते देखे तो मन्अ़ करे और जो डाके डालने में मश्हूर हो उसे भी मन्अ़ करे जब कि वोह रास्ते में अस्लहा ले कर खड़ा हो और बेटा अपने वालिदैन को नरमी से नेकी करने और बुराई से रुकने की गुज़ारिश करे और इन्तिहाई ज़रूरत के बिग़ैर उन्हें न डराए और अगर बुराई

---

1 ......احياء علوم الدين، كتاب الامر بالمعروف والنهى عن المنكر، الباب الثانى، ج ٢،ص٣٨٧،مفهوماً۔

2 ......تاريخ بغداد ، الرقم٣٤٠٩ اسحاق بن يعقوب ،ج ٦، ص ٣٧٤۔



www.dawateislami.net

से मन्अ़ करने में मश्ग़ूलिय्यत उसे रिज़्क़े ह़लाल कमाने से रोके तो मन्अ़ करना छोड़ दे बल्कि मह़्ज़ अपने लिये, अपने ज़ेरे कफ़ालत लोगों के लिये और क़र्ज़ की अदाएगी के लिये कमाई करे।

## कबीरा नम्बर 396 : सलाम का जवाब न देना

बा'ज़ अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इसी त़रह़ ज़िक्र किया है मगर इस में ग़ौरो फ़िक्र की ज़रूरत है और बा'ज़ अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने तसरीह़ की है कि येह सग़ीरा गुनाह है और इसी की त़रफ़ तवज्जोह जाती है। हां ! अगर सलाम का जवाब छोड़ने के साथ ऐसे क़राइन मिले हुए हों कि वोह इस से किसी मुसल्मान को सख़्त तक्लीफ़ और अज़िय्यत पहुंचाए तो इस सूरत में सलाम का जवाब तर्क करना कबीरा गुनाह हो सकता है क्यूं कि इस में बहुत बड़ी ना क़ाबिले बरदाश्त अज़िय्यत है।

## कबीरा नम्बर 397 : इन्सान का अपनी ता'ज़ीम के लिये खड़ा होना पसन्द करना

﴾1﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो येह पसन्द करता है कि लोग उस के लिये खड़े रहें वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।''(1)

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अ़सा के सहारे हमारे पास तशरीफ़ लाए तो हम ता'ज़ीमन खड़े हो गए, आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐसे खड़े न हुवा करो जैसे अ़-जमी खड़े होते हैं कि उन के बा'ज़ बा'ज़ की ता'ज़ीम करते हैं(2)।''(3)

---

1......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب الرجل یقوم للرجل یعظمه بذلک، الحدیث : ۵۲۲۹، ص۱۶۰۵ـ

جامع الترمذی، ابواب الادب، باب ما جاء فی کراهیة قیام الرجل للرجل، الحدیث : ۲۷۵۵، ص۱۹۲۹ـ

2...... मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 6, सफ़ह़ा 373 पर इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : ''या'नी तुम्हारा येह क़ियाम तो ठीक है मगर अ़-जमिय्यों (या'नी ग़ैर अ़-रबी लोगों) का सा क़ियाम न करना कि मख़्दूम बैठा हो। ख़ुद्दाम सामने दस्त बस्ता सर्व क़द खड़े हुए हों और मख़्दूम इस ता'ज़ीम की ख़्वाहिश भी करता हो कि ऐसा क़ियाम मम्नूअ़ है। येह क़ुयूद ख़याल में रहें। (साह़िबे) मिरक़ात ने फ़रमाया कि यहां क़ियाम से मुराद वुक़ूफ़ है या'नी किसी के लिये ता'ज़ीमन खड़ा रहना।''

3......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب الرجل یقوم للرجل یعظمه بذلک، الحدیث : ۵۲۳۰، ص۱۶۰۵ـ



www.dawateislami.net

**तम्बीह :** इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और येह पहली ह़दीसे पाक से वाज़ेह़ है लेकिन इस का मह़ल वोही है जो मैं ने ज़िक्र किया है। इसी वज्ह से शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि आने वाले पर अपने लिये खड़ा होने को पसन्द करना ह़राम है और उन्हों ने मज़्कूरा पहली ह़दीसे पाक से इस्तिद्लाल किया।

## किसी की ख़ातिर खड़े होने का मफ़्हूम :

किसी की ख़ातिर खड़े होने से मुराद येह है कि इन्सान बैठा रहे और लोग मुस्तक़िल खड़े रहें जैसे ज़ालिम बादशाहों की आ़दत है। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन हुसैन बैहक़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى ने इस त़रफ़ इशारा फ़रमाया है।

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करते हुए फ़रमाया : आदमी अपने सामने लोगों के खड़ा रहने को पसन्द करे और ख़ुद बैठा हुवा हो। इसी त़रह़ हम-अ़स्रों पर बर-तरी और बड़ाई ज़ाहिर करने के लिये अपने लिये दूसरों के खड़ा होने को पसन्द करना भी कबीरा गुनाह है। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने इमाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد ने इस बात से आगाह फ़रमाया कि जिस ने मज़्कूरा सबब से नहीं बल्कि अपनी इ़ज़्ज़त के लिये खड़ा होना पसन्द किया तो ह़राम नहीं क्यूं कि इस ज़माने में मह़ब्बत ह़ासिल करने के लिये येह शिआ़र बन चुका है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन पर और हम पर अपना ख़ास फ़ज़्लो करम और रह़मत फ़रमाए। (आमीन)

## किस किस के लिये ता'ज़ीमन खड़ा होना जाइज़ है :

दूसरी ह़दीसे पाक शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के इस फ़रमान के ख़िलाफ़ नहीं कि दर्जे ज़ैल लोगों की ता'ज़ीम के लिये खड़ा होना मुस्तह़ब है : साह़िबे इ़ल्म, नेक, बुज़ुर्ग, वालिदैन, रिश्तेदार या अमीर या ह़ाकिम बशर्ते कि मज़्कूरा लोग अ़दालत व पाक दामनी से मुत्तसिफ़ हों या जिस से सच्ची दोस्ती हो वग़ैरा। क्यूं कि हमारे उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इसे अपने इस क़ौल के साथ मुक़य्यद किया कि येह खड़ा होना नेकी और इ़ज़्ज़तो एह़तिराम के त़ौर पर हो, बड़ाई ज़ाहिर करने और दिखावे के लिये न हो।

उन्हों ने इसी क़ियाम से मन्अ़ फ़रमाया जिस से हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस फ़रमाने आ़लीशान में मन्अ़ फ़रमाया कि ''जैसे अ़-जमी खड़े होते हैं कि उन के बा'ज़ बा'ज़ की ता'ज़ीम करते हैं।''(1)

---

(1)......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب الرجل یقوم للرجل یعظمه بذلک، الحدیث : ۵۲۳۰، ص۱۶۰۵ ۔



www.dawateislami.net

लिहाज़ा मज़्कूरा क़ैद के साथ खड़ा होने के मुस्तहब होने के मु-तअ़ल्लिक़ सहीह़ अह़ादीस मरवी हैं जिन्हें ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़-करिय्या यह़्या बिन शरफ़ न-ववी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 676 हि.) ने इस मौज़ूअ़ पर लिखे गए अपने रिसाले में जम्अ़ फ़रमाया और इस के मुस्तह़ब होने का इन्कार करने वाले की तरदीद की।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं : इस ज़माने में अ़दावत और क़त़्ए़ रेह़्मी दूर करने के लिये इस का वाजिब होना ज़ाहिर होता है जैसा कि इस की त़रफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्दुस्सलाम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ السَّلَام ने इशारा फ़रमाया। पस येह मफ़ासिद दूर करने के बाब से है।

۞۞۞۞۞۞۞

## कबीरा नम्बर 398 : जंग से फ़िरार होना

**या'नी जंग में एक काफ़िर या ज़ियादा कुफ़्फ़ार से डर कर फ़िरार हो जाना जो मुसल्मानों के मुक़ाबले में दो गुना से ज़ियादा न हों लेकिन अगर मक़्सूद लड़ाई का हुनर करना या मदद चाहने के लिये अपने गुरौह में जा मिलना हो तो कबीरा गुनाह नहीं**

## क़ुरआने पाक में जंग से भागने की मज़म्मत :

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَمَنۡ یُّوَلِّہِمۡ یَوۡمَئِذٍ دُبُرَہٗۤ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوۡ مُتَحَیِّزًا اِلٰی فِئَۃٍ فَقَدۡ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰہِ وَمَاۡوٰىہُ جَہَنَّمُ ؕ وَبِئۡسَ الۡمَصِیۡرُ ﴿۱۶﴾ (پ۹،الانفال:۱۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो उस दिन उन्हें पीठ देगा मगर लड़ाई का हुनर करने या अपनी जमाअ़त में जा मिलने को, तो वोह **अल्लाह** के ग़ज़ब में पलटा और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और क्या बुरी जगह है पलटने की।

## अह़ादीसे मुबा-रका में जंग से भागने की मज़म्मत :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "7 हलाक करने वाली चीज़ों से बचो।" अ़र्ज़ की गई : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कौन सी हैं ?" इर्शाद फ़रमाया : "(1)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना (2)...... जादू करना (3)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा जान को नाह़क़ क़त्ल करना (4)...... सूद खाना (5)...... यतीम का माल खाना (6)...... जंग के दिन पीठ फैर लेना और (7)...... पाक दामन सीधी सादी मोमिन औ़रतों पर तोहमत



www.dawateislami.net

लगाना ।''(1)

﴾2﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कबीरा गुनाहों के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा गया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, मुसल्मान को (नाहक़) क़त्ल करना और **जंग** के दिन फ़िरार हो जाना।''(2)

﴾3﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया गया : ''कबीरा गुनाह कौन से हैं ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना और जंग से फ़िरार हो जाना।''(3)

﴾4﴿...... एक रिवायत में यूं है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, जंग से फ़िरार हो जाना और किसी को (नाहक़) क़त्ल करना।''(4)

﴾5﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''कबीरा गुनाह 7 हैं : इन में पहला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना फिर किसी को नाहक़ क़त्ल करना, सूद खाना, यतीम का माल खाना, जंग के दिन फ़िरार हो जाना और पाक दामन औ़रतों पर तोहमत लगाना है।''(5)

﴾6﴿...... रहमते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''7 कबीरा गुनाहों से बचो : (3 उन में से येह हैं :) (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना (2) लोगों को (नाहक़) क़त्ल करना और (3) जंग से फ़िरार होना।''(6)

﴾7﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से कबीरा गुनाहों के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा गया तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : ''कबीरा गुनाह 7 हैं।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''वोह कौन से हैं ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, पाक दामन औ़रतों पर तोहमत लगाना, मोमिन को (नाहक़) क़त्ल करना, जंग से फ़िरार हो जाना और जादू

(1)......صحيح البخاری، كتاب المحاربين، باب رمی المحصنات......الخ، الحديث : ٦٨٥٧، ص٥٧٢۔

(2)......سنن النسائی، كتاب المحاربة(تحريم الدم)، باب ذكر الكبائر، الحديث :٤٠١٤،ص٢٣٥٠۔

(3)......جمع الجوامع ، قسم الاقوال ، حرف الميم ، الحديث :٢١٤٤٥،ج٧، ص١٠٩۔

(4)......المعجم الكبير، الحديث: ٥٦٣٦،ج٦،ص١٠٣۔

(5)......الترغيب والترهيب،كتاب البيوع، باب الترهيب من الربا، الحديث :٢٨٧٢،ج٢، ص٤٠٣۔

(6)......المعجم الكبير، الحديث :٥٦٣٦،ج٦، ص١٠٣۔



www.dawateislami.net

करना (सूद खाना और यतीम का माल खाना) ।''(1)

﴾8﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अहले यमन की त़रफ़ एक मक्तूब लिखा जिस में फ़राइज़, सुन्नतें और दियतें लिखी हुई थीं और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन ह़ज़्म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को दे कर भेजा। उस में येह भी था : ''यक़ीनन बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बड़े गुनाह येह होंगे : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, मोमिन को (नाह़क़) क़त्ल करना, जंग के दिन फ़िरार हो जाना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना, पाक दामन औ़रत पर तोहमत लगाना, जादू सीखना, सूद खाना और यतीम का माल खाना।''(2)

﴾9﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''3 गुनाहों की मौजू-दगी में कोई अ़मल फ़ाएदा नहीं देता : (1)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना (2)...... वालिदैन की ना फ़रमानी करना और (3)...... जंग से फ़िरार हो जाना।''(3)

## पांच गुनाहों का कोई कफ़्फ़ारा नहीं :

﴾10﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : ''जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिला कि उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक न ठहराया और सवाब के लिये बख़ुशी ज़कात अदा की और ह़क़ सुन कर इत़ाअ़त की तो उस के लिये जन्नत है या वोह जन्नत में दाख़िल होगा और 5 गुनाहों का कोई कफ़्फ़ारा नहीं : (1)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना (2)...... किसी को नाह़क़ क़त्ल करना (3)...... किसी मोमिन पर तोहमत लगाना (4)...... जंग से फ़िरार हो जाना और (5)...... झूटी क़सम खा कर नाह़क़ किसी का माल हड़प कर लेना।''(4)

﴾11﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मिम्बरे अक़्दस पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर इर्शाद फ़रमाया : ''मुझे क़सम है, मुझे क़सम है।'' इस के बा'द नीचे तशरीफ़ ला कर इर्शाद फ़रमाया : ''जो 5 नमाज़ें पढ़े और कबीरा गुनाहों से इज्तिनाब करे उसे ख़ुश ख़बरी सुना दो, उसे

(1)......مسند ابن الجعد، الحديث :٣٣٠٣،ص٤٧٧،"هن سبع"بدله"هن تسع"۔

(2)......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب التاريخ، باب كتب النبى، الحديث: ٦٥٢٥،ج٨،ص١٨٠،١٨١۔

(3)......المعجم الكبير، الحديث : ١٤٢٠،ج٢،ص٩٥۔

(4)......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابى هريرة، الحديث : ٨٧٤٥،ج٣،ص٢٨٦،"بهت"بدله"نهب"۔



www.dawateislami.net

खुश ख़बरी सुना दो कि जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जाए।'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा गया : ''क्या आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूले पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इन का ज़िक्र करते सुना ?'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''जी हां ! (कबीरा गुनाह येह हैं) (1)...... वालिदैन की ना फ़रमानी करना (2)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना (3)...... किसी जान को नाहक़ क़त्ल करना (4)...... पाक दामन औ़रत पर तोहमत लगाना (5)...... यतीम का माल खाना (6)...... जंग के दिन जिहाद से भागना और (7)...... सूद खाना।''(1)

## औलियाउल्लाह رَحِمَھُمُ اللہ की पहचान :

﴾12﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** के वली नमाज़ी हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की फ़र्ज़ कर्दा पांचों नमाज़ें पढ़ते और सवाब के लिये र-मज़ान के रोज़े रखते हैं और बख़ुशी सवाब के लिये ज़कात अदा करते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मन्अ़ कर्दा कबीरा गुनाहों से इज्तिनाब करते हैं।'' सहाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن में से किसी ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! कबीरा गुनाह कितने हैं ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''9 हैं : (1)...... इन में सब से बड़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना (2)...... मोमिन को नाहक़ क़त्ल करना (3)...... जंग से फ़िरार होना (4)...... पाक दामन औ़रत पर तोहमत लगाना (5)...... जादू करना (6)...... यतीम का माल खाना (7)...... सूद खाना (8)...... मुसल्मान वालिदैन की ना फ़रमानी करना और (9)...... बैतुल ह़राम में जो चीज़ें ह़राम हैं उन्हें ह़लाल जानना जो ज़िन्दगी में और मौत के बा'द भी तुम्हारा क़िब्ला है। जो इस ह़ाल में मरे कि उस ने इन कबीरा गुनाहों का इरतिकाब न किया हो और नमाज़ पढ़ता हो और ज़कात अदा करता हो तो वोह जन्नत (के ऐसे मह़ल) के वस्त़ में मेरा रफ़ीक़ होगा जिस के दरवाज़ों के पट सोने के होंगे।''(2)

## तम्बीह :

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है जैसा कि मैं ने उ़न्वान में ज़िक्र किया और उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللہُ السَّلَام ने इस की तसरीह़ फ़रमाई है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) ने फ़रमाया : ''जब

(1)......المعجم الکبیر، الحدیث:۳،ج۱۳ـ۱۴، ص۶ـ (2)......المعجم الکبیر، الحدیث:۱۰۱،ج۱۷،ص۴۸ـ



www.dawateislami.net

मुसल्मान लड़ें और अपने से दुगने दुश्मन का मुक़ाबला करें तो उन का पीठ फैरना ह़राम है और अगर मक़्सूद लड़ाई के जौहर दिखाना या अपने गुरौह में जा मिलना हो तो ह़राम नहीं और अगर दुगने से भी ज़ियादा हों तो अब उन का पीठ फैर कर भागना ह़राम नहीं अगर्चे भागना लड़ाई का जौहर दिखाने या अपने गुरौह से जा मिलने के लिये न हो और मेरे नज़्दीक वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी के ह़क़दार न होंगे।''[1] और येह ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का मश्हूर मज़्हब है।

۞۞۞۞۞۞۞

**कबीरा नम्बर 399 :** ## ताऊ़न से भागना

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ ۪ فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ۫ ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ؕ (پ۲،البقرة:۲۴۳)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मह़बूब ! क्या तुम ने न देखा था उन्हें जो अपने घरों से निकले और वोह हज़ारों थे मौत के डर से, तो **अल्लाह** ने उन से फ़रमाया मर जाओ फिर उन्हें ज़िन्दा फ़रमा दिया।

## आयते मुबा-रका की तफ़्सीर :

जान लीजिये ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की आ़दते मुबा-रका है कि अह़काम बयान करने के बा'द वाक़िआ़त बयान फ़रमाता है ताकि सुनने वाले को इन की अहम्मिय्यत मा'लूम हो। यहां पर हम्ज़ा ह़र्फ़े नफ़ी पर दाख़िल होने की वज्ह से इस्तिफ़्हामे तक़्रीरी के लिये है इस ए'तिबार से कि इस के नुज़ूल से पहले मुख़ात़ब पूरे क़िस्से को जान चुका है और हम्ज़ा यहां तम्बीह के लिये और उन की ह़ालत पर तअ़ज्जुब के लिये है और ख़ित़ाब ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से है या हर सुनने वाला इस का मुख़ात़ब है।

अक्सर मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि इस से मुराद वासत़ के क़रीब (दावर दान नामी) बस्ती है जो ताऊ़न में मुब्तला हो गई तो वहां रहने वाले आ़म लोग निकल खड़े हुए और एक गुरौह बाक़ी रह गया और उन में से कुछ मरीज़ ही बाक़ी बचे। जब ताऊ़न ख़त्म हो गया और भागने वाले सह़ीह़ो सालिम वापस आ गए तो बीमारों ने कहा : ''येह लोग हम

[1] ......المجموع شرح المهذب، كتاب السير، فصل واذا التقى الزحفان......الخ، ج ۱۹، ص۲۹۴۔



www.dawateislami.net

से ज़ियादा मोह़तात़ हैं, अगर हम भी इन की त़रह़ करते तो नजात पा जाते अब अगर दोबारा ता़ऊन आया तो हम भी ऐसे अ़लाक़े में चले जाएंगे जहां कोई बीमारी न होगी।'' आयिन्दा साल फिर ता़ऊन आया तो वहां रहने वाले आ़म लोग भाग खड़े हुए और उन की ता'दाद 30 हज़ार थी।

बा'ज़ कहते हैं कि वोह 70 हज़ार थे। बा'ज़ के नज़्दीक 3 हज़ार थे। ह़ज़रते सय्यिदुना वाह़िदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं कि उन्हों ने येह नहीं कहा कि वोह 3 हज़ार से कम थे और न ही येह कहा कि वोह 70 हज़ार से ज़ाइद थे। लफ़्ज़ी तौजीह येह है कि उन की ता'दाद 10 हज़ार से ज़ियादा थी, येह जम्ए़ कसरत है क्यूं कि 10 और इस से कम ता'दाद के लिये **उलूफ़** (अल्फ़ की जम्अ़) शाज़ो नादिर या'नी कभी कभी ही इस्ति'माल होता है।

यहां तक कि वोह एक कुशादा वादी में उतरे और इसी में अपनी नजात समझी। वादी के ऊपर और नीचे से एक एक फ़रिश्ते ने उन्हें कहा : मर जाओ। पस वोह तमाम मर गए और उन के जिस्म बोसीदा हो गए।

एक क़ौल के मुत़ाबिक़ बनी इसराईल के तीसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना ह़िज़्क़ील عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उन मुर्दों के पास से गुज़रे। आप عَلَيْهِ السَّلَام ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के विसाल (ज़ाहिरी) के बा'द तीसरे ख़लीफ़ा हुए। पहले ख़लीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना यूशुअ़ बिन नून, दूसरे ह़ज़रते सय्यिदुना कालिब बिन यौक़न्ना और तीसरे येही इब्ने अ़जूज़ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़िज़्क़ील عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام थे। इन्हें इब्ने अ़जूज़ (या'नी उ़म्र रसीदा औ़रत का बेटा) इस लिये कहा जाता है कि इन की वालिदए माजिदा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا ने किब्र सिनी और बांझपन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बच्चे का सुवाल किया था।

दूसरा क़ौल ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन और मक़ातिल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا का है कि गुज़रने वाले ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुल किफ़्ल عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام थे क्यूं कि उन्हों ने 70 अम्बियाए किराम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की कफ़ालत फ़रमाई और उन्हें क़त्ल से बचाया।

बहर ह़ाल ह़ज़रते सय्यिदुना ह़िज़्क़ील عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जब उन मुर्दों के पास से गुज़रे तो ह़ैरान व मु-तअ़ज्जिब हो कर खड़े हो गए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : ''क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें कोई निशानी दिखाऊं ?'' अ़र्ज़ की : ''हां।'' कहा गया कि इन्हें बुलन्द आवाज़ से कहो : ''ऐ हड्डियो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें इकठ्ठा होने का हुक्म देता है।'' पस वोह एक दूसरी की त़रफ़ उड़ती हुई आईं यहां तक कि मुकम्मल हो गईं फिर



www.dawateislami.net

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह्य फ़रमाई : "इन्हें पुकारो कि ऐ हड्डियो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हुक्म देता है कि गोश्त और ख़ून का लिबास पहन लो।" फिर आप عَلَیْہِ السَّلَام ने उन्हें पुकारा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें खड़ा होने का हुक्म देता है।" चुनान्चे, वोह येह कहते हुए खड़े हो गए : "ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! तू पाक है, यक्ता है, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं।" इस के बा'द वोह लोग अपनी क़ौम की त़रफ़ लौटे तो मौत की अ़लामतें उन के चेहरों और जिस्मों पर ज़ाहिर थीं यहां तक कि वोह बा'द में अपने मुक़र्ररा वक़्त में मर गए।[1]

## सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का वबाई अ़लाक़े से वापस पलटना :

﴾1﴿...... मरवी है कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुल्के शाम जाने के लिये निकले और सर्ग़ के मक़ाम पर पहुंचे तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'लूम हुवा कि शाम में वबा फूट पड़ी है। पस आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जलीलुल क़द्र सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से मश्वरा त़लब किया लेकिन उन में से किसी के पास इस के मु-तअ़ल्लिक़ कोई इल्म न पाया यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ ले आए और रिवायत बयान की, कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : "जब तुम किसी ज़मीन में बीमारी के मु-तअ़ल्लिक़ सुनो तो वहां न जाओ और जब बीमारी किसी जगह पहुंच जाए और तुम वहां मौजूद हो तो वहां से न भागो।" चुनान्चे, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मक़ामे सर्ग़ से वापस लौट आए।[2]

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام के एक गुरौह का क़ौल है कि उन लोगों की मौत का सबब येह था कि बनी इसराईल के एक बादशाह ने अपने लश्कर को जिहाद का हुक्म दिया तो उन्हों ने बुज़दिली का मुज़ा-हरा करते हुए येह उ़ज़्र पेश किया कि जिस ज़मीन की त़रफ़ हम जा रहे हैं वहां बीमारी है, हम वहां नहीं जाएंगे जब तक कि बीमारी ख़त्म न हो जाए। पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन पर मौत भेज दी तो वोह इस से भागते हुए अपने शहरों से निकल खड़े हुए। जब बादशाह ने येह देखा तो बारगाहे

1 ......اللباب فی علوم الکتاب ، البقرۃ، تحت الآیۃ ۲۴۳، ج۴،ص۲۴۸۔
تفسیر البغوی، البقرۃ، تحت الآیۃ ۲۴۳، ج۱، ص۱۶۶۔۱۶۷۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الحیل، باب ما یکرہ من الاحتیال فی الفرارمن الطاعون، الحدیث : ۶۹۷۳، ص۵۸۲۔



www.dawateislami.net

खुदा वन्दी में अ़र्ज़ की : ''ऐ ह़ज़रते सय्यिदुना या'कू़ब और ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मालिक व मा'बूद ! तूने अपने बन्दों की ना फ़रमानी देख ली, पस इन्हें इन की जानों में कोई निशानी दिखा ताकि इन्हें यक़ीन हो जाए कि येह तुझ से भाग नहीं सकते ।''

चुनान्चे, जब वोह निकले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन से इर्शाद फ़रमाया : ''मर जाओ ।'' या'नी उन्हें एक ह़ालत से दूसरी ह़ालत में मुन्तक़िल होने का हुक्म दिया पस एक शख़्स की मौत की त़रह़ वोह तमाम लोग और उन के चौपाए मर गए । 8 दिन इसी त़रह़ पड़े रहे यहां तक कि वोह फट गए और उन के जिस्म बदबूदार हो गए । बनी इसराईल को उन की मौत की ख़बर पहुंची तो उन्हें दफ़्न करने के लिये निकले लेकिन उन की ता'दाद बहुत ज़ियादा होने की वज्ह से आ़जिज़ आ गए और दरिन्दों से बचाव के लिये उन पर बाड़ (या'नी चार दीवारी) बना दी । फिर 8 दिन के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें ज़िन्दा कर दिया और उस बदबू में से कुछ उन में बाक़ी रही और आज तक उन की औलाद में भी है ।[1]

बा'ज़ ने इस के इलावा अस्बाब बयान किये हैं ।

## فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا की तफ़्सीर :

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान ''فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا'' दर्जे ज़ैल फ़रमाने आ़लीशान के बाब से है :

اِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَیْءٍ اِذَاۤ اَرَدْنٰهُ اَنْ نَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ۠ (پ۱۴، النحل: ۴۰)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** जो चीज़ हम चाहें उस से हमारा फ़रमाना येही होता है कि हम कहें हो जा वोह फ़ौरन हो जाती है ।

इस आयते मुबा-रका का मफ़्हूम येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मुराद का इन्तिहाई जल्द वाक़ेअ़ हो जाना और उस के इरादे से पीछे न रहना क्यूं कि यहां कोई क़ौल नहीं ।

एक क़ौल येह है कि आयते मुबा-रका में रसूल या फ़रिश्ते को ऐसा कहने का हुक्म है । मगर पहला मा'ना ज़ाहिर है ।

## ثُمَّ اَحْیَاهُمْ की तफ़्सीर :

येह मौत के बा'द दोबारा ज़िन्दा होने की वाज़ेह़ दलील है और बिला शुबा येह मुम्किन है । सच्चे रब عَزَّوَجَلَّ ने इस की ख़बर दी है लिहाज़ा इस पर यक़ीन करना वाजिब है ।

---

1 ......التفسير الكبير، البقرة، تحت الآية ۲۴۳، ج۲، ص۴۹۶۔ تفسير البغوی، البقرة، تحت الآية ۲۴۳، ج۱، ص۱۶۷۔



www.dawateislami.net

मो'तज़िला कहते हैं कि मुर्दे को ज़िन्दा करना ख़िलाफ़े आ़दत फ़े'ल है जिस का इज़्हार नबी के मो'जिज़े से ही हो सकता है लेकिन अहले सुन्नत ने इस का येह जवाब दिया कि वली की करामत और ग़ैरे वली से भी ख़िर्क़े आ़दत फ़े'ल सादिर हो सकता है और इस का इन्कार करना इनाद और दुश्मनी है और इन की गुमराह फ़ासिद अ़क़्लों से ऐसी बात बईद नहीं।

उन्हें ज़िन्दा करने का सबब उन की बाक़ी मांदा ज़िन्दगी को पूरा करना था और वाक़िए में गुज़र चुका है कि उन पर अचानक मौत आई थी जैसे नींद आती है और उन्हों ने मौत की शिद्दत और तकालीफ़ का मुशा-हदा न किया था। इस से मो'तज़िला के इस क़ौल का रद हो गया कि "मौत के क़रीब इस की अ़लामात और तकालीफ़ का मुशा-हदा ज़रूरी हो जाता है। क्यूं कि अगर वोह ज़िन्दा थे तो ज़रूरी है कि उन्हें वोह अश्या याद रहतीं क्यूं कि बड़ी अश्या अ़क़्ले कामिल के साथ नहीं भूलतीं और उन के वोह उ़लूम भी बाक़ी रहते और अगर दोबारा ज़िन्दा होना मान लिया जाए तो वोह मुकल्लफ़ न रहेंगे जैसा कि (मौत की तकालीफ़ देख लेने के बा'द) वोह आख़िरत में मुकल्लफ़ न होंगे।" हम लाज़िमी तौ़र पर येह कहते हैं कि उन्हों ने मौत की सख़्तियों का मुशा-हदा किया और इस से मज़्कूरा बातें लाज़िम नहीं आतीं क्यूं कि हो सकता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़िन्दा करने के बा'द उन्हें वोह मुसीबत भुला दी हो जो उन्हें पहुंची थी यहां तक कि बक़िय्या ज़िन्दगी में वोह मुकल्लफ़ रहे जिसे पूरा करने के लिये उन्हें ज़िन्दा किया गया था।[1]

## ता़ऊ़न का मा'ना :

हज़रते सय्यिदुना इमाम जौहरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "**ता़ऊ़न, ता़'नुन** से **फ़ाऊ़ल** के वज़्न पर है। मगर जब इसे अपनी अस्ल से फैरा गया तो बीमारी के साथ मौत पर दलालत करने वाला बना दिया गया।"[2]

और इस मा'ना का दारो मदार दोनों (या'नी मौत और वबा) के एक जैसा होने पर है लेकिन सहीह़ क़ौल इस के बर अ़क्स है क्यूं कि वबा से मुराद वोह आ़म मौत है जिस का सबब पोशीदा हो और ता़ऊ़न रैत के बारीक ज़र्रात की त़रह़ छोटे छोटे दानों से होता है जो बदन के अन्दर से निकल कर बग़लों की त़रह़ पूरी जिल्द पर फैल जाते हैं।

## उम्मत का ख़ातिमा दो चीज़ों से होगा :

﴾3﴿...... उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है कि

---

1 ......اللباب فی علوم الکتاب ، البقرة، تحت الآية ٢٤٣،ج٤، ص٢٥٠ ـ

2 ......الجامع لاحكام القرآن للقرطبى، البقرة، تحت الآية ٢٤٣،ج٢،الجزء الثالث،ص ١٧٩ ـ



www.dawateislami.net

शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरी उम्मत का ख़ातिमा त़ा'न (या'नी जिहाद में नेज़ाबाज़ी करने) और त़ाऊ़न के साथ होगा।'' मैं ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! त़ा'न को तो हम ने जान लिया, येह त़ाऊ़न क्या है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''ऊंट की गिलटी (या'नी रसोली या फोड़े) की त़रह़ एक गिलटी है जो जिल्द और बग़लों में निकलती है।''(1)

## त़ाऊ़न मोमिन पर रह़मत और काफ़िर के लिये अ़ज़ाब है :

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने ना फ़रमानों और काफ़िरों में से जिस पर चाहे अ़ज़ाब और सज़ा के त़ौर पर और नेक लोगों के लिये शहादत और रह़मत के त़ौर पर त़ाऊ़न भेजता है। क्यूं कि (मुल्के शाम में इस्लामी लश्कर में फैलने वाले पहले त़ाऊ़न) **त़ाऊ़ने अ़-मवास** के मु-तअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : ''येह तुम्हारे लिये शहादत और रह़मत और तुम्हारे नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ है।'' और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़ येह है कि ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुआ़ज़ और इस के घर वालों को अपनी रह़मत का ह़िस्सा अ़त़ा फ़रमा।'' पस आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की हथेली में फोड़ा निकल आया।(2)

## त़ाऊ़न बाइ़से शहादत है :

﴿4﴾...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरी उम्मत त़ा'न (या'नी जिहाद में नेज़ाबाज़ी करने) और त़ाऊ़न के साथ फ़ना होगी।'' मैं ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इस त़ा'न को तो हम ने जान लिया है लेकिन त़ाऊ़न क्या है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''येह ऊंट की गिलटी की त़रह़ एक गिलटी है, इस में साबित क़दम रहने वाला शहीद की मिस्ल है और इस से भागने वाला जंग से भागने वाले जैसा है।''(3)

---

1 ......التمهيد لابن عبد البر،محمد بن شهاب الزهرى، تحت الحديث: ١٣٥، ج٣،ص ٧١۔

2 ......الجامع لاحكام القرآن للقرطبى، البقرة، تحت الآية ٢٤٣،ج٢، الجزء الثالث، ص ١٧٩ ۔

المسند للامام احمد بن حنبل، حديث معاذ بن جبل، الحديث : ٢٢١٩٧، ج٨، ص٢٦٧۔

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السيدة عائشة، الحديث :٢٥١٧٢،ج٩، ص٤٧٨۔



www.dawateislami.net

## ताऊन से भागना जंग से भागना है :

﴾5﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हक़ीक़त बयान है : "ताऊन ऊंट की गिलटी की तरह एक गिलटी है जो मेरी उम्मत को उन के दुश्मन जिन्नों की तरफ़ से पहुंचती है जो इस पर साबित क़दम रहा वोह पड़ाव डाले हुए (मुक़ीम) शख़्स की तरह है और जिसे येह पहुंचा वोह शहीद है और जो इस से भाग खड़ा हुवा वोह जंग से भागने वाले की तरह है।"(1)

﴾6﴿...... (उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं :) मैं ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह ता'न तो हम ने जान लिया है लेकिन ताऊन क्या है ?" इर्शाद फ़रमाया : "येह फोड़े की तरह होता है जो बग़लों और जिल्द में निकलता है और इस में लोगों के आ'माल की तहारत व पाकीज़गी है और येह हर मुसल्मान के लिये शहादत है।"(2)

हज़रते सय्यिदुना ज़किय्युद्दीन अ़ब्दुल अ़ज़ीम मुन्ज़िरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى इन तमाम रिवायात को ज़िक्र करने के बा'द इर्शाद फ़रमाते हैं कि इन रिवायात की तमाम अस्नाद हसन हैं।(3)

﴾7﴿...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ताऊन के बारे में इर्शाद फ़रमाते सुना : "ताऊन से भागने वाला जंग से भागने वाले की तरह है और जिस ने इस में सब्र किया उस के लिये शहीद की मिस्ल अज्र है।"(4)

**तम्बीह :** इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है जो कि अक्सर मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की तफ़्सीर की बिना पर आयते मुबा-रका से वाज़ेह है और मज़्कूरा अहादीसे तय्यिबा से भी येही ज़ाहिर है। क्यूं कि इन में जंग से भागने से तश्बीह देना तक़ाज़ा करता है कि येह कबीरा गुनाह होने में उस की मिस्ल हो। अगर्चे तश्बीह दो मु-तशाबेह अश्या के हर ए'तिबार से बराबर होने का तक़ाज़ा नहीं करती लेकिन इस का यहां पर लाना ख़ास कबीरा गुनाह होने में दोनों में बराबरी का तक़ाज़ा करता है क्यूं कि इस तश्बीह से मक़्सूद जंग से भागने वाले को झिड़क्ना और उस पर सख़्ती करना है यहां तक कि वोह रुक जाए और ऐसा तभी हो

---

1 ......مسند ابی یعلی الموصلی، مسند عائشة، الحدیث : ۴۶۴۵، ج۴، ص۱۷۹۔

2 ......الترغیب والترهیب، کتاب الجهاد، باب الترهیب من ان یموت......الخ، الحدیث: ۲۱۸۴، ج۲، ص۲۰۶۔

3 ......المرجع السابق، تحت الحدیث: ۲۱۸۴۔

4 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند جابر بن عبد الله، الحدیث: ۱۴۷۹۹، ج۵، ص۱۲۶۔



www.dawateislami.net

सकता है कि येह जंग से भागने की त़रह़ कबीरा गुनाह हो।

जब हम इसे जंग से भागने की त़रह़ क़रार देते हैं तो हम येह भी जानते हैं कि दो मु-तशाबेह अश्या हर ए'तिबार से एक जैसी नहीं होतीं क्यूं कि हमें मा'लूम है कि अगर्चे येह दोनों कबीरा गुनाह हैं मगर जंग से भागने का गुनाह ज़ियादा सख़्त और बड़ा है क्यूं कि वोह आ़म शदीद, क़बीह़ ख़राबियों का बाइ़स बनता है या'नी मुसल्मानों के दिलों का टूटना, कुफ़्फ़ार का तसल्लुत़ जमाना और ग़-लबा ह़ासिल करना वग़ैरा और येह सब से बड़ी और बुरी ख़राबियां हैं।

## त़ाऊ़न एक अ़ज़ाब है :

﴾8﴿...... जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से वबा का ज़िक्र किया गया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह एक अ़ज़ाब है जिस में बा'ज़ उम्मतों को मुब्तला किया गया, फिर इस का कुछ ह़िस्सा बाक़ी रह गया, जो कभी चला जाता है और कभी वापस आ जाता है। पस जो शख़्स किसी ज़मीन में इस (त़ाऊ़न) के मु-तअ़ल्लिक़ सुने तो वहां न जाए और अगर उस ज़मीन में फूट पड़े जहां वोह रहता है तो वहां से न भागे।''(1)

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और दीगर सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने इस ह़दीसे पाक पर अ़मल किया जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन्हें वबा की ख़बर दी तो वोह मक़ामे सर्ग़ से वापस लौट आए।

## एह़तियाती तदाबीर का हुक्म :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू जा'फ़र मुह़म्मद बिन जरीर त़-बरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ह़दीसे पाक इस बात पर दलालत करती है कि इन्सान पर वाजिब है कि मुसीबतों के नुज़ूल से पहले अपने आप को उन से बचाए और ख़ौफ़नाक अश्या के ह़म्ला करने से पहले उन से इज्तिनाब करे और इसी त़रह़ फ़ितना व फ़साद वाले तमाम गिरां गुज़रने वाले उमूर में त़ाऊ़न की त़रह़ अ़मल करे। इस की मिसाल आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने

(1)......صحيح البخاری، كتاب الحيل، باب ما يكره من الاحتيال فی الفرار من الطاعون، الحديث: ۶۹۷۴، ص۵۸۲۔



www.dawateislami.net

आ़लीशान है : ''दुश्मन से मुक़ाबला करने की ख़्वाहिश न करो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से आ़फ़िय्यत मांगो और जब उन से मुक़ाबला करो तो सब्र करो।''(1)

जब अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वापस लौटने का इरादा फ़रमाया जैसा कि बयान हो चुका है तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ''क्या आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीर से भाग रहे हैं ?'' तो अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अबू उ़बैदा ! काश ! येह बात तुम्हारे इ़लावा कोई और कहता हां ! हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीर से उस की तक़्दीर की त़रफ़ भाग रहे हैं।''

इस का मा'ना येह है कि इन्सान उस से फ़िरार नहीं हो सकता जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस के लिये मुक़द्दर फ़रमा दिया है लेकिन उस ने हमें ख़ौफ़नाक, हलाक करने वाली और ना पसन्दीदा चीज़ों से ख़ुद को बचाने का हुक्म दिया है। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम्हारा क्या ख़याल है कि अगर तुम्हारे ऊंट किसी वादी में उतर जाएं जिस के दो टुकड़ों में से एक सर सब्ज़ो शादाब जब कि दूसरा बन्जर हो तो क्या ऐसा नहीं है कि अगर वोह सर सब्ज़ो शादाब मैदान में चरें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीर से चरेंगे और अगर सूखे से चरें तो भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीर से चरेंगे ?'' चुनान्चे अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वहीं से मदीनए त़य्यिबा की त़रफ़ लौट आए।(2)

## शहादत की मुख़्तलिफ़ सूरतें :

त़ाऊ़न के बाइ़स हलाक होने वाले के शहीद होने के मु-तअ़ल्लिक़ दीगर अह़ादीसे मुबा-रका भी मरवी हैं कि जिन में राहे ख़ुदा में क़त्ल होने वालों के इ़लावा दीगर शु-हदा का भी ज़िक्र है। चुनान्चे,

﴿9﴾...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम

---

1 ......الجامع لاحكام القرآن للقرطبی، البقرة، تحت الآية ۲۴۳، ج۲،الجزء الثالث، ص۱۷۷۔
صحیح مسلم، كتاب الجهاد،باب كراهة تمنی لقاء العدو ......الخ، الحديث : ۴۵۴۲،ص۹۸۶۔

2 ......صحيح البخاری، كتاب الطب، باب ما يذكر فی الطاعون، الحديث : ۵۷۲۹، ص۴۸۹۔
الجامع لاحكام القرآن للقرطبی، البقرة، تحت الآية۲۴۳، ج۲،الجزء الثالث، ص۱۷۸۔



www.dawateislami.net

رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से दरयाफ़्त फ़रमाया : ''तुम अपने आप में किन लोगों को शहीद शुमार करते हो ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में मारा जाए वोह शहीद है।'' (आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तब तो मेरी उम्मत के शु–हदा बहुत कम होंगे।'' सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इन के इलावा और कौन शहीद है।'') तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में मर जाए वोह भी शहीद है, जो ताऊ़न में मर जाए वोह भी शहीद है और जो पेट की बीमारी में मर जाए वोह भी शहीद है।''(1)

﴾10﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''शहीद की 5 क़िस्में हैं : (1) ताऊ़न में मरने वाला (2) पेट की बीमारी में मरने वाला (3) डूब कर मरने वाला (4) दब कर मरने वाला और (5) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में शहीद होने वाला।''(2)

﴾11﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''(राहे ख़ुदा में) क़त्ल होना भी शहादत है, ताऊ़न की बीमारी से फ़ौत होना शहादत है, पेट की बीमारी से फ़ौत होना शहादत है, डूब कर हलाक हो जाने से शहादत है और वोह औ़रत भी शहीद है जो बच्चे की पैदाइश के वक़्त बच्चे समेत मर जाए।''(3)

﴾12﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़–लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक अन्सारी की इ़यादत के लिये तशरीफ़ ले गए, उस के घर वाले रोने लगे तो उस के चचा ने कहा : ''अपनी आवाज़ों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तक्लीफ़ न दो।'' तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब तक येह (मरीज़) ज़िन्दा है इन्हें रोने दो और जब मौत वाक़ेअ़ हो जाए तो इन्हें सुकून से रहना चाहिये।'' फिर किसी ने मरीज़ से कहा : ''हम नहीं चाहते कि तुझे मौत बिस्तर पर आए यहां तक कि तू रसूले पाक صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मइय्यत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में शहीद हो जाए।'' तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में मरने वाला ही शहीद है ? फिर तो मेरी उम्मत के शु–हदा बहुत कम होंगे, (बल्कि ह़क़ीक़त येह है कि) त़ा'न (या'नी नेज़ों के साथ जिहाद करते मर जाना) शहादत

(1)......صحیح مسلم، کتاب الامارة، باب بیان الشهداء، الحدیث: ۴۹۴۱، ص ۱۰۲۰۔

(2)......صحیح البخاری، کتاب الجهاد، باب الشهادة سبع سوی القتل، الحدیث: ۲۸۲۹، ص ۲۲۸۔

(3)......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث عبادة بن الصامت، الحدیث: ۲۲۷۴۷، ج۸، ص ۳۹۵، مفهوماً۔



www.dawateislami.net

है, पेट की बीमारी से मर जाना शहादत है, ताऊन में फ़ौत होना शहादत है, निफ़ास वाली औरत बच्चे के बाइस मर जाए तो वोह शहीद है, जल कर मर जाना शहादत है, डूब कर मर जाना शहादत है और पसली की बीमारी में भी मर जाना शहादत है।''(1)

﴾13﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में क़त्ल होना शहादत है, ताऊन शहादत है, डूब जाना शहादत है, पेट की बीमारी शहादत है और निफ़ास वाली औरत का बच्चा उसे अपनी कटी हुई नाल से खींचते हुए जन्नत में ले जाएगा।''(2)

﴾14﴿..... एक रिवायत में है : ''बैतुल मुक़द्दस का ख़ादिम, जलने वाला और सिल की बीमारी में हलाक होने वाला भी शहीद है।''(3)

सिल की बीमारी फेफड़ों में लगती है और पस्लियों की त़रफ़ जाती है, बा'ज़ के नज़्दीक इस से मुराद ज़ुकाम या ठहरे हुए बुख़ार के साथ त़वील खांसी है और बा'ज़ ने कुछ और कहा है।

﴾15﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में शहीद होने वाले के इ़लावा 7 शु-हदा हैं : पेट की बीमारी और ताऊन में शहादत है, जलने वाला शहीद है और किसी चीज़ के नीचे दब कर मरने वाला और बच्चे के बाइस मरने वाली औरत शहीद है।''(4)

﴾16﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''ताऊन हर मुसल्मान के लिये शहादत है।''(5)

﴾17﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं ने ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ताऊन के

---

1 ......المعجم الكبير،الحديث : ٧٠٦٢،ج٥،ص٢٨۔
الترغيب والترهيب،كتاب الجهاد،باب الترهيب من ان يموت......الخ،الحديث :٢١٦٩،ج٢، ص٢٠٢۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث راشد بن حبيش، الحديث : ١٥٩٩٨، ج٥،ص٣١٧۔

3 ......المرجع السابق،"السل"بدله"السيل"۔

4 ......سنن ابی داود، كتاب الجنائز، باب فی فضل من مات بالطاعون، الحديث : ٣١١١،ص١٤٥٧۔
سنن النسائی، كتاب الجنائز، باب النهی عن البكاء علی الميت، الحديث : ١٨٤٧، ص٢٢٠٩۔

5 ......صحيح البخاری،كتاب الجهاد، باب الشهادة سبع سوی القتل، الحديث : ٢٨٣٠، ص٢٢٨۔



www.dawateislami.net

मु-तअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह अ़ज़ाब था जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम से पहलों पर भेजा। पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे मुअमिनीन के लिये रह़मत बना दिया। कोई बन्दा किसी शहर में रहता है और (त़ाऊ़न की वबा फैलने पर भी) वोह उसी शहर में ठहरा रहता है, सब्र करते हुए और अज्र की उम्मीद रखते हुए वहां से भागता नहीं और यक़ीन रखता है कि उसे वोही मुसीबत पहुंचेगी जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस के लिये लिख दी है तो उस के लिये शहीद की मिस्ल अज्र है।''(1)

﴾18﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ह़ज़रते जिब्रईल (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام) मेरे पास बुख़ार और त़ाऊ़न ले कर आए, मैं ने बुख़ार मदीने में रोक लिया और त़ाऊ़न को शाम की त़रफ़ भेज दिया। पस त़ाऊ़न मेरी उम्मत के लिये शहादत और काफ़िर पर गन्दगी है।''(2)

﴾19﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शाम में ख़ुत़्बा देते हुए त़ाऊ़न का ज़िक्र किया और इर्शाद फ़रमाया : ''येह तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और तुम्हारे नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام की दुआ़ है। तुम से पहले नेक लोग इस से फ़ौत हुए हैं, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुआ़ज़ की औलाद पर इस रह़मत का ह़िस्सा उतार।'' फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना मक़ाम छोड़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास तशरीफ़ ले गए। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِیْنَ ﴿۶۰﴾ (پ۳،ال عمران:۶۰)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ सुनने वाले ! येह तेरे रब की त़रफ़ से ह़क़ है तो शक वालों में न होना।

तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह आयते मुबा-रका पढ़ी :

سَتَجِدُنِیْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۱۰۲﴾ (پ۲۳،الصافات:۱۰۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ख़ुदा ने चाहा तो क़रीब है कि आप मुझे साबिर पाएंगे।(3)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب القدر، باب﴿قل لن یصیبنا الا ما کتب اللّٰہ لنا﴾ التوبۃ:۵۱،الحدیث : ۶۶۱۹،ص۵۵۴۔
جامع الاصول للجزری، کتاب الطب، الباب الثالث فی الطاعون......الخ،الحدیث : ۵۷۳۱،ج۷،ص۶۷۵۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی عُسَیب، الحدیث : ۲۰۷۹۳،ج۷،ص۳۹۳۔

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث معا ذ بن جبل، الحدیث : ۲۲۱۴۶،ج ۸،ص۲۵۳۔



www.dawateislami.net

﴾20﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : "अ़न्क़रीब तुम (तुम जिहाद के लिये) सर ज़मीने शाम की त़रफ़ हिजरत करोगे, और येह ज़मीन तुम्हारी हो जाएगी (या'नी तुम फ़त्ह़ पाओगे) और तुम्हें फोड़े या फुन्सी जैसी एक बीमारी लगेगी जो इन्सान की जिल्द पर लगती है जिस की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम को मर्तबए शहादत पर फ़ाइज़ फ़रमाएगा और तुम्हारे आ'माल को पाक कर देगा।"

(फिर ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दुआ़ फ़रमाई :) ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू जानता है कि अगर मुआ़ज़ ने येह बात हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी है तो इस के घर वालों को इस का वाफ़िर ह़िस्सा अ़त़ा फ़रमा। चुनान्चे, उन्हें त़ाऊ़न की बीमारी लग गई और उन में से कोई भी इस बीमारी से न बचा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत की उंगली में त़ाऊ़न की बीमारी लगी थी और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते थे कि मुझे येह बात ख़ुश नहीं करती कि मेरे पास इस के बदले सुर्ख़ ऊंट हों।[1]

## त़ाऊ़न से मरने वालों की फ़ज़ीलत :

﴾21﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत की फ़ना त़ा'न (या'नी जिहाद में नेज़ाबाज़ी करने) और त़ाऊ़न के साथ होगी।" मैं ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! त़ा'न तो हम ने जान लिया, लेकिन त़ाऊ़न क्या है ?" इर्शाद फ़रमाया : "येह तुम्हारे दुश्मन जिन्नों की त़रफ़ से कचोका (या'नी ह़म्ला वग़ैरा) है और हर कचोके में शहादत है।"[2]

﴾22﴿...... दूसरी सह़ीह़ रिवायत में यूं है : "येह तुम्हारे दुश्मन जिन्नों की त़रफ़ से कचोका है जो तुम्हारे लिये शहादत है।"[3]

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث معا ذ بن جبل،الحديث : ٢٢١٤٩، ص٢٥٤،بتغيرٍ قليلٍ۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث ابی موسی الاشعری، الحديث: ١٩٥٤٥،ج٧،ص١٣١۔
البحرالزخارالمعروف بمسند البزار،مسند ابی موسی الاشعری، الحديث :٢٩٨٦،ج٨، ص١٦۔

3 ......البحرالزخارالمعروف بمسند البزار، مسند ابی موسیٰ الاشعری، الحديث:٣٠٩١،ج٨،ص٩٢۔



www.dawateislami.net

﴾23﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी में अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी उम्मत का ख़ातिमा अपनी राह में नेज़ों के साथ शहीद होने और त़ाऊ़न से फ़रमा।"(1)

﴾24﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "शु-हदा और अपने बिछोनों पर मरने वाले त़ाऊ़न से मरने वालों के मु-तअ़ल्लिक़ रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में झगड़ा करेंगे। शु-हदा अ़र्ज़ करेंगे : इन्हों ने इस त़रह़ क़िताल किया जिस त़रह़ हम ने किया और अपने बिस्तरों पर मरने वाले कहेंगे : येह हमारे भाई भी अपने बिस्तरों पर मरे जैसा कि हम मरे। तो हमारा रब عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "इन के ज़ख़्मों को देखो अगर तो वोह क़त्ल होने वालों के ज़ख़्मों की त़रह़ हैं तो येह उन्हीं में से हैं।" चुनान्चे, जब देखा जाएगा तो उन के ज़ख़्म मक़्तूलीन के ज़ख़्मों की त़रह़ होंगे।"(2)

﴾25﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीमुश्शान है : "शु-हदा और त़ाऊ़न से मरने वालों को लाया जाएगा तो त़ाऊ़न वाले अ़र्ज़ गुज़ार होंगे : "हम शु-हदा हैं।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "देखो ! अगर इन के ज़ख़्म शु-हदा के ज़ख़्मों की त़रह़ हैं और इन का ख़ून कस्तूरी की त़रह़ बह रहा है तो येह भी शु-हदा हैं।" चुनान्चे, वोह उन्हें इसी त़रह़ पाएंगे।"(3)

﴾26﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नजात बयान है : "जिसे दस्त ने शहीद कर दिया उसे क़ब्र में अ़ज़ाब नहीं दिया जाएगा।"(4)

۞۞۞۞۞۞۞

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث ابی بردة بن قيس اخی ابی موسیٰ الاشعری، الحديث: ۱۸۱۰۲،ج۶،ص۳۱۲۔

2 ......سنن النسائی،کتاب الجهاد، باب مسألة الشهادة، الحديث: ۳۱۶۶،ص۲۲۹۲۔

3 ......المعجم الكبير، الحديث: ۲۹۲،ج۱۷،ص۱۱۸۔

4 ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان،کتاب الجنائز، باب ما جاء فی الصبر......الخ، الحديث: ۲۹۲۲،ج۴،ص ۲۵۷۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 400 : माले ग़नीमत में धोका देना

## कबीरा नम्बर 401 : माले ग़नीमत छुपाना

### "ग़नीमत में धोके" की मज़म्मत में आयाते क़ुरआनिया :

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

وَمَا كَانَ لِنَبِیٍّ اَنْ یَّغُلَّ ؕ وَ مَنْ یَّغْلُلْ یَاْتِ بِمَا غَلَّ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰی كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَ هُمْ لَا یُظْلَمُوْنَ ﴿۱۶۱﴾ (پ۴، ال عمران: ۱۶۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और किसी नबी पर येह गुमान नहीं हो सकता कि वोह कुछ छुपा रखे और जो छुपा रखे वोह क़ियामत के दिन अपनी छुपाई चीज़ ले कर आएगा फिर हर जान को उन की कमाई भरपूर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा।

### "ग़नीमत में धोके" की मज़म्मत में अह़ादीसे मुबा-रका :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के माले ग़नीमत पर मुक़र्रर **किरकिरह** नामी शख़्स फ़ौत हो गया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह जहन्नम में है।" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن उसे देखने के लिये गए तो एक क़मीस पाई जो उस ने ख़ियानत कर के ली थी।[1]

﴾2﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की गई : "आप का फ़ुलां ग़ुलाम शहीद कर दिया गया है।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "नहीं बल्कि वोह उस क़मीस में जहन्नम में धकेला जा रहा है जो उस ने ख़ियानत कर के ली थी।"[2]

﴾3﴿...... ख़ैबर के दिन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से एक साह़िब फ़ौत हो गए, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में इस का ज़िक्र किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अपने रफ़ीक़ पर नमाज़ पढ़ो।" इस पर लोगों के चेहरों के रंग बदल गए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हारे दोस्त ने राहे ख़ुदा में ख़ियानत की।" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने उस के सामान की तलाशी ली तो उस में

1......صحیح البخاری، کتاب الجهاد، باب القلیل من الغلول، الحدیث: ۳۰۷۴، ص۲۴۷۔

2......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث رجل سمع النبی ﷺ، الحدیث: ۲۰۳۷۲، ج۷، ص۲۹۹۔



www.dawateislami.net

यहूदियों के मन्कों में से एक मन्का पाया (जो माले ग़नीमत में से था) जिस की क़ीमत दो दिरहम भी न होगी[1] ।[2]

﴾4﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से रिवायत फ़रमाते हैं कि ग़ज़्वए ख़ैबर के दिन सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चन्द सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان आए और कहने लगे कि फ़ुलां शहीद है फ़ुलां शहीद है यहां तक कि वोह एक शख़्स के पास से गुज़रे और कहने लगे येह भी शहीद है तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हरगिज़ नहीं, बिला शुबा मैं ने इसे वोह चादर ओढ़े या क़मीस पहने जहन्नम में देखा है जो इस ने ख़ियानत कर के ली थी।'' फिर इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ इब्ने ख़त़्ताब ! जाओ और लोगों में ए'लान कर दो कि ईमान वाले ही जन्नत में दाख़िल होंगे।''[3]

## दुश्मन अमानत दार के सामने नहीं ठहर सकता :

﴾5﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : ''अगर मेरी उम्मत ख़ियानत न करे तो उस के सामने दुश्मन क़दम न जमा सके।'' ह़ज़रते

---

1...... मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 5, सफ़ह़ा 587 पर मज़्कूरा ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : ''या'नी उस मरने वाले ने निहायत मा'मूली क़ीमत के कुछ छोटे मोती तक़्सीम से पहले ले लिये थे। उस मा'मूली चीज़ की वज्ह से हु़ज़ूर की नमाज़ से मह़रूम हो गए। ख़याल रहे कि येह जुर्म (या'नी तक़्सीम से पहले मा'मूली क़ीमत के मोती ले लेना) गुनाहे सग़ीरा है जो एक बार इन सह़ाबी से सरज़द हुवा, लिहाज़ा येह फ़िस्क़ नहीं, तमाम सह़ाबा आ़दिल हैं। फ़िस्क़ के मा'ना हैं गुनाहे कबीरा करना या गुनाहे सग़ीरा हमेशा करते रहना।'' **अल्लाह** तआ़ला ने अपने मह़बूब के सह़ाबा को फ़िस्क़ से बचाया है। (सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان की शान में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :) ''وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى (پ۵،النساء:۹۵) (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** ने सब से भलाई का वा'दा फ़रमाया।) लिहाज़ा वोह मक़रूज़ सह़ाबा जिन पर हु़ज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने नमाज़ न पढ़ी और येह सह़ाबी इन की सह़ाबिय्यत मक़्बूलिय्यते यक़ीनी है। हु़ज़ूरे अन्वर की येह सर-ज़निश फ़रमाना हम लोगों की ता'लीम के लिये है, गन्दुम खा लेने से (ह़ज़रते सय्यिदुना) आदम عَلَیۡہِ السَّلَام नबी ही रहे।''

2......سنن ابی داود، کتاب الجهاد، باب فی تعظیم الغلول، الحدیث: ۲۷۱۰، ص۱۴۲۴۔

المعجم الکبیر، الحدیث: ۵۱۷۹، ج۵، ص۲۳۱۔

3......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب غلظ تحریم الغلول......الخ، الحدیث: ۳۰۹، ص۶۹۷۔

المصنف لابن ابی شیبة، کتاب المغازی، باب غزوة خیبر، الحدیث: ۱۳، ج۸، ص۵۲۳۔



www.dawateislami.net

सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब बिन मस्लमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा : "क्या तुम्हारे सामने दुश्मन बकरी का दूध दोहने की देर ठहरा रहता है ?" तो उन्हों ने जवाबन कहा : "जी हां ! बल्कि तीन दूध वाली बकरियों के दूध दोहने की देर तक।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "रब्बे का'बा की क़सम ! तुम ने ख़ियानत की है।"(1)

## बरोज़े क़ियामत ख़ाइन की ह़ालत :

﴿6﴾...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक दिन हमारे दरमियान खड़े हुए और ख़ियानत का ज़िक्र किया और इसे और इस के मुआ़–मले को बहुत बड़ा गुनाह बताया यहां तक कि इर्शाद फ़रमाया : मैं तुम में से किसी को ऐसा न पाऊं कि वोह बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में आए कि उस की गरदन पर बड़-बड़ाने वाला ऊंट हो और वोह कह रहा हो : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी फ़रियाद रसी फ़रमाइये।" तो मैं कहूंगा : "मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तेरे लिये कुछ नहीं कर सकता, मैं तुझ तक अह़काम पहुंचा चुका।" मैं तुम में से किसी को ऐसा न पाऊं कि वोह रोज़े मह़शर इस ह़ाल में आए कि अपनी गरदन पर एक हिनहिनाने वाला घोड़ा लिये हो और कह रहा हो : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी इमदाद फ़रमाइये।" तो मैं कहूंगा : "मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तेरे लिये कुछ नहीं कर सकता, मैं तुझ तक अह़काम पहुंचा चुका।" मैं तुम में से किसी को ऐसा न पाऊं कि वोह क़ियामत के दिन इस ह़ाल में आए कि उस की गरदन पर एक मिनमिनाने वाली बकरी हो और वोह कह रहा हो : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी फ़रियाद रसी फ़रमाइये।" तो मैं कहूंगा : "मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तेरे लिये कुछ नहीं कर सकता, मैं तुझ तक अह़काम पहुंचा चुका।" मैं तुम में से किसी को ऐसा न पाऊं कि वोह क़ियामत के दिन इस ह़ाल में आए कि उस की गरदन पर काग़ज़ (जिस पर लोगों के हुक़ूक़ लिखे होते हैं) फड़फड़ा रहा हो और वोह कह रहा हो : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी इमदाद फ़रमाइये।" तो मैं कहूंगा : "मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तेरे लिये कुछ नहीं कर सकता, मैं तुझ तक अह़काम पहुंचा चुका।" मैं तुम में से किसी को ऐसा न पाऊं कि वोह बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में आए कि उस की गरदन पर ख़ामोश शै (जैसे सोना चांदी वग़ैरा) हो और वोह कह रहा हो : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी फ़रियाद रसी फ़रमाइये।" तो मैं कहूंगा : "मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के

---

(1)......المعجم الاوسط، الحديث : ٨١٠٨،ج٦،ص٨٩۔



www.dawateislami.net

मुक़ाबले में तेरे लिये कुछ नहीं कर सकता, मैं तुझ तक अह़काम पहुंचा चुका।''[1]

﴾7﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : ''सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब माले ग़नीमत ह़ासिल फ़रमाते तो ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुक्म देते वोह लोगों में ए'लान करते, लोग अपना अपना माले ग़नीमत ले कर ह़ाज़िर हो जाते आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **ख़ुमुस** (या'नी पांचवां ह़िस्सा) निकाल लेते और उसे तक़्सीम फ़रमा देते। एक दिन एक शख़्स इस (या'नी माले ग़नीमत जम्अ़ हो चुकने, ख़ुमुस निकालने और तक़्सीम कर देने) के बा'द बालों की लगाम लाया और अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह भी उसी माले ग़नीमत से है जो हम ने ह़ासिल किया था।'' तो इर्शाद फ़रमाया : ''क्या तुम ने नहीं सुना था कि बिलाल ने 3 बार बा आवाज़े बुलन्द ए'लान किया था ?'' बोला : ''जी हां ! सुना था।'' इर्शाद फ़रमाया : ''तो तुझे इस के लाने से किस ने रोका ?'' वोह उ़ज़्र करने लगा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम यूं ही रहो कि इसे क़ियामत के दिन लाओगे तो मैं तुम से हरगिज़ क़बूल न करूंगा।''[2]

﴾8﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ख़ैबर की त़रफ़ निकले, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाई, हम ने माले ग़नीमत में सोना या चांदी न पाया बल्कि सामान, खाना और कपड़े पाए, फिर हम वादिये क़ुरा की त़रफ़ पलटे और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का (मिद्अ़म नामी सियाह फ़ाम) ग़ुलाम हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ था जो बनी ज़ुबैब के एक साह़िब ह़ज़रते सय्यिदुना रिफ़ाआ़ बिन ज़ैद ज़ुज़ामी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तोह़फ़तन पेश किया था। जब हम वादी में उतरे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ग़ुलाम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सामान उतारने लगा तो उसे एक तीर लगा जिस से उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! उसे शहादत मुबारक हो।'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हरगिज़ नहीं, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की जान है ! वोह

1 ......صحیح مسلم ،کتاب الامارۃ، باب غلظ تحریم الغلول، الحدیث :۴۷۳۴،ص۱۰۰۶۔
مسند ابی یعلی الموصلی، مسند ابی ھریرۃ، الحدیث :۶۰۷۲، ج۵، ص۳۴۳۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب الجھاد، باب فی الغلول اذا کان یسیرا......الخ، الحدیث :۲۷۱۲،ص۱۴۲۴۔



www.dawateislami.net

चादर इस पर आग भड़का रही है जो इस ने तक़्सीम से पहले माले ग़नीमत में से ले ली थी।" रावी फ़रमाते हैं कि लोग ख़ौफ़ज़दा हो गए और एक शख़्स एक या दो तस्मे ले कर हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : मैं ने येह ग़ज़्वए ख़ैबर के दिन पाए थे तो रसूले अ़ज़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह तस्मा आग का है या दोनों तस्मे आग के हैं।"(1)

## क़ब्र में आग का कुरता :

﴾9﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब अ़स्र की नमाज़ पढ़ लेते तो बनी अ़ब्दिल अश्हल के पास तशरीफ़ ले जाते और उन के पास गुफ़्त-गू फ़रमाते रहते यहां तक कि मग़रिब के लिये अज़ान या इक़ामत कही जाती। हज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : (एक दफ़्अ़) हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जल्दी जल्दी नमाज़े मग़रिब के लिये तशरीफ़ ले जा रहे थे कि बक़ीए (ग़रक़द) के मक़ाम पर हमारे पास से गुज़रे और इर्शाद फ़रमाया : "तुम पर अफ़्सोस ! तुम पर अफ़्सोस ! तुम पर अफ़्सोस !" इस बात से मेरे दिल में डर और ख़ौफ़ पैदा हुवा और मैं पीछे हो गया और गुमान किया कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे फ़रमा रहे हैं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या हुवा ? जल्दी चलो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अभी कुछ इर्शाद फ़रमाया है।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तो तुझे क्या हुवा ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ पर अफ़्सोस फ़रमाया है।" इर्शाद फ़रमाया : "नहीं, बल्कि वोह तो फ़ुलां शख़्स है जिसे मैं ने फ़ुलां क़बीले के पास स-दक़ा लेने के लिये भेजा और उस ने एक धारीदार चादर चुरा ली (या'नी ऊनी चादर जिसे अ़रब लोग पहनते हैं), बिल आख़िर वैसा ही आग का कुरता उसे (क़ब्र में) पहना दिया गया।"(2)

﴾10﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जो 3 ख़स्लतों से बरी हो कर आया वोह जन्नत में दाख़िल हो गया : तकब्बुर, ख़ियानत और क़र्ज़।"(3)

---

1 ......صحیح مسلم ، کتاب الایمان، باب غلظ تحریم الغلول......الخ، الحدیث : ۳۱۰، ص۶۹۷۔

2 ......سنن النسائی ، کتاب الامامۃ ،باب الاسراع الی الصلاۃ من غیر سعی ،الحدیث :۸۶۳،ص۲۱۴۲۔

3 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان،کتاب الایمان،باب فرض الایمان، الحدیث : ۱۹۸، ج۱، ص۲۱۰۔



www.dawateislami.net

﴾11﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अ़-ज़मत में माले ग़नीमत में से एक चमड़े का बिछोना लाया गया और अ़र्ज़ की गई : **"या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये है, ताकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस के ज़रीए धूप से साया ह़ासिल करें।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम पसन्द करते हो कि तुम्हारा नबी क़ियामत के दिन जहन्नम के साए से साया ह़ासिल करे।"(1)

﴾12﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना समुरह बिन जुन्दुब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़म्दो सना के बा'द इर्शाद फ़रमाया कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त बयान है : "जो ख़ियानत करने वाले की पर्दा पोशी करता है वोह उसी की मिस्ल है।"(2)

## तम्बीह :

अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने ख़ियानत करने को वाज़ेह़ तौर पर कबीरा गुनाह शुमार किया और बा'ज़ अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि मुसल्मानों के मुश-त-रका माल, बैतुल माल और ज़कात में ख़ियानत करना गुनाहे कबीरा होने में माले ग़नीमत में ख़ियानत करने की त़रह़ है और येह वाज़ेह़ है। अलबत्ता ! जो माले ज़कात में ख़ियानत करने वाला है उस के मुआ़-मले में कोई फ़र्क़ नहीं कि वोह ज़कात के मुस्तह़िक़ीन में से है या ग़ैर मुस्तह़िक़ीन में से। इस लिये कि माले ज़कात में अपनी मरज़ी से ह़क़ की वुसूली मम्नूअ़ है क्यूं कि इस में निय्यत शर्त़ है। बल्कि अगर मालिक ने इस की मिक़्दार अ़ला-ह़दा कर ली और निय्यत भी कर ली तब भी बज़ाते ख़ुद अपना ह़क़ ले लेना जाइज़ नहीं क्यूं कि इस का सह़ीह़ होना मालिक के देने पर मौक़ूफ़ है और जब तक वोह न दे दूसरे का मालिक बन जाना मुश्किल है। लिहाज़ा येह मालिक की मिल्किय्यत में बाक़ी रहेगा यहां तक कि वोह ख़ुद दूसरे को दे। इस से वाज़ेह़ हो गया कि माले ज़कात में अपनी मरज़ी से ह़क़ ले लेना मुत़्लक़न मम्नूअ़ है।

﴾13﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कुछ सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने कबीरा गुनाहों का ज़िक्र किया जब कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم टेक लगा कर तशरीफ़ फ़रमा थे, उन्हों ने कहा कि यतीम का माल खाना, जंग से फ़िरार हो जाना,

---

1 ......مراسيلِ ابی داود، باب فی الغلول، ص١٤ ـ المعجم الاوسط، الحديث : ٧١٣١، ج٥، ص٢٢١ ـ

2 ......سنن ابی داود، کتاب الجهاد، با ب النهی عن الستر علی من غل، الحديث : ٢٧١٦، ص١٤٢٥ ـ



www.dawateislami.net

पाक दामन औरत पर तोहमत लगाना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना, झूट बोलना, ख़ियानत करना, जादू करना, सूद खाना कबीरा गुनाह हैं तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया इस आयते मुबा-रका को तुम किस ज़िम्न में शुमार करते हो ? (फिर तिलावत फ़रमाई :)

اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَ اَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا (پ٣، اٰل عمران : ٧٧)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** जो **अल्लाह** के अ़ह्द और अपनी क़समों के बदले ज़लील दाम लेते हैं।[1]

और ख़ियानत करने वाले की ख़ियानत को छुपाना भी कबीरा गुनाह शुमार किया गया है और इस के मु-तअ़ल्लिक़ सरीह़ ह़दीस गुज़र चुकी है। मज़्कूरा अहादीसे मुबा-रका से साबित हुवा कि ख़ियानत येह है कि अमीर या इस के इलावा किसी ग़ाज़ी का तक़्सीम से पहले माले ग़नीमत में से कोई चीज़ अपने लिये ख़ास कर लेना जब कि वोह उसे लश्कर के अमीर के पास न लाए ताकि वोह ख़ुम्स निकाले अगर्चे ख़ास की गई चीज़ कम ही हो। हां ! हमारे नज़्दीक तक़्सीम से पहले माले ग़नीमत में से अपने या अपने चौपाए के खाने के लिये इस के मु-तअ़ल्लिक़ मज़्कूर शराइत़ के साथ कुछ लेना जाइज़ है।

❁❁❁❁❁❁❁

## ......अच्छी आ़दतों की नसीह़त......

**दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का मत़्बूआ़ **43** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला, "**इमामे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم **की वसिय्यतें**" सफ़ह़ा **27** पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم ने अपने एक शागिर्द को यूं नसीह़त फ़रमाई : "तुम हर शख़्स को उस के मर्तबे के लिहाज़ से इ़ज़्ज़त देना, शु-रफ़ा की इ़ज़्ज़त और अहले इ़ल्म की ता'ज़ीमो तौक़ीर करना, बड़ों का अ-दबो एह़तिराम और छोटों से प्यार व मह़ब्बत करना, आ़म लोगों से तअ़ल्लुक़ क़ाइम करना, फ़ासिक़ो फ़ाजिर को ज़लीलो रुस्वा न करना, अच्छे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करना, सुल्त़ान की इहानत करने से बचना, किसी को भी ह़क़ीर न समझना, अपने अख़्लाक़ व आ़दात में कोताही न करना, किसी पर अपना राज़ ज़ाहिर न करना, बिग़ैर आज़्माए किसी की सोह़बत पर भरोसा न करना, किसी ज़लील व घटिया शख़्स की ता'रीफ़ न करना।"

---

1 ......تفسير الطبرى ، النساء ، تحت الاية ٣١، الحديث : ٩٢٢٧، ج٤، ص٤٥۔



www.dawateislami.net

# باب الامان

## कबीरा नम्बर 402 : अमान, ज़िम्मा या अ़ह्द वाले को क़त्ल करना

## कबीरा नम्बर 403 : उसे धोका देना

## कबीरा नम्बर 404 : उस पर ज़ुल्म करना

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَ اَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا ۝۳۴ (پ۱۵،بنی اسرائیل:۳۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और अ़ह्द पूरा करो बेशक अ़ह्द से सुवाल होना है।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ؕ (پ۶،المائدۃ:۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! अपने क़ौल पूरे करो।

## आयते मुबा-रका की तफ़्सीर :

यहां عُقُوْد से मुराद अ़ह्द है और इन में वोह अ़ह्द और अमान भी शामिल है जो हमारे और मुश्रिकों के दरमियान है जैसा कि बा'ज़ अइम्मए तफ़्सीर ने फ़रमाया है।

﴾1﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ड़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिस में 4 ख़स्लतें हों वोह पक्का मुनाफ़िक़ है और जिस में इन में से एक ख़स्लत पाई जाए उस में निफ़ाक़ की एक ख़स्लत होगी यहां तक कि उसे छोड़ दे : (1) जब बात करे तो झूट बोले (2) जब उस के पास अमानत रखी जाए तो ख़ियानत करे (3) जब अ़ह्द करे तो धोका दे और (4) जब झगड़ा करे तो गाली दे।"(1)

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "3 शख़्स ऐसे हैं कि मैं क़ियामत के दिन उन का मुक़ाबिल होउंगा : (1) जिस ने मेरे नाम पर अ़ह्द किया फिर अ़ह्द शि-कनी की (या'नी उसे तोड़ दिया) (2) जिस ने किसी आज़ाद को बेचा और उस की क़ीमत खा ली और (3) जिस ने किसी मज़दूर को उजरत पर रखा फिर उस से पूरा काम लिया

1......صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب علامات المنافق، الحدیث: ۳۴، ص۵، بتقدمٍ وتاخرٍ۔



www.dawateislami.net

मगर उस की उजरत न दी ।''(1)

## बरोज़े क़ियामत धोकेबाज़ की निशानी :

﴾3﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब अव्वलीनो आख़िरीन (या'नी अगलों पिछलों) को क़ियामत के दिन इकठ्ठा फ़रमाएगा तो हर धोकेबाज़ के लिये एक झन्डा बुलन्द फ़रमाएगा जिस से वोह पहचाना जाएगा, कहा जाएगा येह फ़ुलां बिन फ़ुलां का धोका है ।''(2)

## मुसल्मान को धोका देना :

﴾4﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मुसल्मानों का ज़िम्मा एक है जिस की कोशिश इन का अदना शख़्स भी करता है, लिहाज़ा जिस ने किसी मुसल्मान को धोका दिया और वा'दा ख़िलाफ़ी की तो उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, फ़रिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस के फ़र्ज़ क़बूल फ़रमाएगा न नफ़्ल ।''(3)

﴾5﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें जो भी ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाया उस में फ़रमाया : ''उस का कोई ईमान नहीं जो अमानत दार नहीं और उस का कोई दीन नहीं जो वा'दा पूरा नहीं करता ।''(4)

## क़त्लो ग़ारत और मौत का मुसल्लत़ होना :

﴾7﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जिस क़ौम ने वा'दा ख़िलाफ़ी की उन के दरमियान क़त्लो ग़ारत आ़म हो गई और जिस क़ौम में बुराई ज़ाहिर हुई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन पर मौत को मुसल्लत़ कर दिया और जिस क़ौम ने ज़कात रोकी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन से बारिश रोक ली ।''(5)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب البیوع، باب اثم من باع حرا، الحدیث: ۲۲۲۷،ص۱۷۳، دون قولہ: العمل۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الجھاد، باب تحریم الغدر، الحدیث :۴۵۲۹،۴۵۳۵ ، ص۹۸۶۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الحج، باب فضل المدینۃ......الخ، الحدیث:۳۳۳۱،۳۳۲۷،ص۹۰۵۔

4 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالک، الحدیث : ۱۲۳۸۶، ج۴،ص۲۷۱۔

5 ......المستدرک، کتاب الجھاد، باب ما نقص قوم العھد قط......الخ، الحدیث :۲۶۲۳،ج۲،ص۴۶۱۔



www.dawateislami.net

﴾8﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन सुलैम رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जिस ने किसी अ़ह्द वाले पर ज़ुल्म किया या उस का अ़ह्द तोड़ा या उसे त़ाक़त से ज़ियादा काम का पाबन्द किया या उस की ख़ुशी के बिग़ैर उस से कोई चीज़ ले ली तो मैं क़ियामत के दिन उस से झगड़ा करूंगा।"(1)

﴾9﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जो शख़्स किसी को अमान दे कर क़त्ल कर दे तो मैं क़ातिल से बरी हूं अगर्चे मक़्तूल काफ़िर हो।"(2)

﴾10﴿...... एक रिवायत में है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह (या'नी किसी को अमान दे कर क़त्ल करने वाला) क़ियामत के दिन ग़द्दारी का झन्डा उठाए होगा।"(3)

﴾11﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जिस ने किसी अ़ह्द वाली जान को नाह़क़ क़त्ल किया वोह जन्नत की ख़ुश्बू न पाएगा ह़ालां कि जन्नत की ख़ुश्बू 100 साल की मसाफ़त से आएगी।"(4)

﴾12﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जिस ने किसी अ़ह्द वाली जान को दौराने अ़ह्द नाह़क़ क़त्ल किया वोह जन्नत की ख़ुश्बू न पाएगा जब कि जन्नत की ख़ुश्बू 500 साल की मसाफ़त से आएगी।"(5)

﴾13﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ख़बरदार ! जिस ने किसी मुआ़हद (या'नी जिस से मुआ़-हदा किया गया हो) को क़त्ल किया जिस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िम्मा था उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िम्मा तोड़ दिया, पस वोह जन्नत की ख़ुश्बू न पाएगा ह़ालां कि उस की ख़ुश्बू 70 साल की मसाफ़त से आएगी।"(6)

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الخراج، باب فی تعشیر اهل الذمة اذا اختلفوا بالتجارة، الحدیث : ۳۰۵۲، ص۱۴۵۳ ۔

2 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الجنایات، باب ذکر الزجر عن قتل......الخ، الحدیث : ۵۹۵۰، ج۷، ص۵۸۸ ۔

3 ......سنن ابن ماجه، ابواب الدیات، باب من امن رجلا علی دمه فقتله، الحدیث : ۲۶۸۸، ص۲۶۳۸ ۔

4 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب اخباره......الخ، باب وصف الجنة واهلها، الحدیث : ۷۳۳۹، ج۹، ص۲۳۹ ۔

5 ......المرجع السابق، الحدیث : ۷۳۴۰ ۔

6 ......جامع الترمذی، ابواب الدیات، باب من جاء فیمن یقتل نفسا معاهدا، الحدیث : ۱۴۰۳، ص۱۷۹۳ ۔



www.dawateislami.net

## तम्बीह :

इन तीनों को कबीरा गुनाहों में शुमार करना मज़्कूरा सही़ह़ अह़ादीसे मुबा-रका से वाज़ेह़ और ज़ाहिर है, बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने मुआ़हद (या'नी जिस से अ़ह्द किया गया हो) या धोके से क़त्ल करने को वाज़ेह़ त़ौर पर कबीरा गुनाह शुमार किया है लेकिन इसे हुक्मरान के साथ बिग़ैर किसी शर्त़ के ख़ास किया है जैसा कि ज़ाहिर है।

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अ़ह्द तोड़ने को कबीरा गुनाहों में शुमार किया बल्कि शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़लाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मु-तवफ़्फ़ा 761 हि.) ने तसरीह़ फ़रमाई कि ह़दीसे पाक से साबित है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे कबीरा गुनाह क़रार दिया। लेकिन इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलाल बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی ने ए'तिराज़ किया कि इस गुनाह के मु-तअ़ल्लिक़ मज़्कूरा अह़ादीसे मुबा-रका में येह दलील नहीं कि येह कबीरा गुनाह है। हां ! इस में शदीद वई़द ज़रूर है जैसा कि पहले गुज़र चुका है।

ज़ाहिर येह है कि بِمَا تَقَدَّمَ से आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मुराद मुस्नदे अह़मद और बुख़ारी शरीफ़ की मज़्कूरा अह़ादीसे मुबा-रका हैं : "(**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :) 3 शख़्स ऐसे हैं कि मैं क़ियामत के दिन उन का मुक़ाबिल होउंगा : जिस ने मेरे नाम पर अ़ह्द किया फिर अ़ह्द शि-कनी की (या'नी उसे तोड़ दिया)......الخ।"(1)

पस जिस ने किसी काफ़िर को अमान दे कर धोका दिया तो उस ने उसे दी हुई अमान तोड़ दी। शायद ! **अमान** को **सफ़्क़ह** कहने की वज्ह येह है कि येह एक अ़क़्द है जो अम्न का फ़ाएदा देता है। लिहाज़ा येह मिल्किय्यत का फ़ाएदा देने वाली बैअ़ के अ़क़्द की त़रह़ है और अ़क़्दे बैअ़ को भी **सफ़्क़ह** कहा जाता है क्यूं कि जब दो अ़-रबी आपस में ख़रीदो फ़रोख़्त करते तो उन में से एक दूसरे के हाथ पर हाथ मारता पस अ़क़्द को मजाज़ी त़ौर पर येह नाम दे दिया गया।

---

(1)......صحیح البخاری، کتاب البیوع، باب اثم من باع حرا، الحدیث : ۲۲۲۷، ص۱۷۳۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 405 : मुसल्मानों का राज़ फ़ाश करना

इस गुनाह के कबीरा होने पर येह सहीह़ ह़दीसे पाक दलील है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिब बिन अबी बल्तआ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले मक्का की त़रफ़ पेश क़दमी करने की इत्त़िलाअ़ देते हुए मक्का वालों की त़रफ़ ख़त़ लिखा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आगाह फ़रमा दिया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़त़ ले जाने वाली औ़रत की त़रफ़ अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم और ह़ज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भेजा, जब वोह दोनों उसे ले कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और वोह ख़त़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने पढ़ा तो अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे इस (या'नी ह़ातिब बिन अबी बल्तआ) की गरदन मारने की इजाज़त दीजिये।'' मगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें क़त्ल करने से मन्अ़ फ़रमा दिया क्यूं कि वोह ग़ज़्वए बद्र में शरीक थे।[1]

मुसल्मानों के राज़ फ़ाश करना इस्लाम और अहले इस्लाम के लिये कमज़ोरी, क़त्ल, क़ैद और लूटमार का सबब है और येह तमाम चीज़ें बड़े बड़े कबीरा गुनाहों में से हैं क्यूं कि ऐसा करने वाले ने ज़मीन में फ़साद की कोशिश की और खेती और नस्ल को हलाक किया। लिहाज़ा उस का ठिकाना जहन्नम है और येह इन्तिहाई बुरा ठिकाना है। बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام के नज़्दीक ऐसा करने वाले को क़त्ल करना ज़रूरी है मगर मुत़्लक़न ऐसा नहीं जैसा उन्हों ने कहा।

۞۞۞۞۞۞۞

1 ......صحيح البخاری، كتاب التفسير، سورة الممتحنة،الحديث : ٤٨٩٠، ص٤١٩، بتغيرٍ۔



www.dawateislami.net

# باب المسابقة والمناضلة

**( तीर अन्दाज़ी का मुक़ाबला करना और घुड़दौड़ करना )**

## कबीरा नम्बर 406 : बतौरे तकब्बुर, मुक़ाबला बाज़ी या जूआ खेलने के लिये घोड़े वग़ैरा रखना

## कबीरा नम्बर 407 : बाज़ी या जूए के लिये तीर अन्दाज़ी का मुक़ाबला करना

## कबीरा नम्बर 408 : सीखने के बा'द बे रग़बती से तीर अन्दाज़ी छोड़ देना

**( अगर तीर अन्दाज़ी छोड़ना दुश्मन के ग़-लबे और मुसल्मानों को हक़ीर जानने का बाइस बने तो कबीरा गुनाह है )**

﴾1﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "घोड़े 3 क़िस्म के हैं, किसी के लिये बोझ, किसी के लिये पर्दा और किसी के लिये अज्र का बाइस हैं। जिस के लिये बोझ हैं इस से मुराद वोह शख़्स है जो इन्हें रिया, फ़ख़्र और अहले इस्लाम से दुश्मनी के लिये बांधे, येह उस के लिये बोझ हैं।"(1)

﴾2﴿...... एक रिवायत में है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह घोड़े बन्दे पर बोझ हैं जिन्हें वोह बुराई, रियाकारी, गुरूर और तकब्बुर के लिये रखता है।"(2)

## हदीसे पाक की शर्ह :

इस से मुराद वोह शख़्स है, जो तकब्बुर और बड़ाई ज़ाहिर करने और कमज़ोर व मिस्कीन मुसल्मानों पर अपनी बर-तरी क़ाइम रखने के लिये घोड़े रखता है।

---

1 ......صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب اثم مانع الزكاة، الحديث : ٢٢٩٠، ص٨٣٣_

2 ......صحيح ابن حزيمة، كتاب الزكاة، باب ذكر اسقاط الصدقة......الخ، الحديث : ٢٢٩١، ج٤، ص٣٢، ملتقطاً_



www.dawateislami.net

# रोज़े महशर की काम्याबी या ख़सारे का बयान :

﴾3﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "घोड़ों की पेशानियों में क़ियामत तक के लिये भलाई रख दी गई है तो जिस ने इन्हें राहे ख़ुदा में तय्यार करते हुए बांधा और सवाब की निय्यत से राहे ख़ुदा में इन पर ख़र्च किया तो इन की शिकम सैरी, भूक, तरो ताज़गी, प्यास, बौलो बराज़ बरोज़े क़ियामत उस के मीज़ान में काम्याबी का बाइस होंगे और जिस ने इन्हें रियाकारी, दिखावे और तकब्बुर के लिये बांधा तो इन की शिकम सैरी, भूक, तरो ताज़गी, प्यास और बौलो बराज़ क़ियामत के दिन उस के मीज़ान में ख़सारे का बाइस होंगे।"(1)

﴾4﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "घोड़े 3 क़िस्म के हैं : (1)...... रहमान عَزَّوَجَلَّ के घोड़े (2)...... इन्सान के घोड़े और (3)...... शैतान के घोड़े। रहमान عَزَّوَجَلَّ के घोड़े वोह हैं जो जिहाद में इस्ति'माल किये जाएं और जिन के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मनों को क़त्ल किया जाए और इन्सान के घोड़े वोह हैं जिन से नस्ल बढ़ाई जाए और जिन पर सामान लादा जाए और शैतान के घोड़े वोह हैं जिन पर बाज़ी लगाई जाए और जूआ खेला जाए।"(2)

﴾5﴿...... एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं : "शैतान के घोड़े वोह हैं जिन पर जूआ खेला जाए और बाज़ी लगाई जाए।"(3)

﴾6﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "घोड़े तीन क़िस्म के हैं : एक वोह जिन्हें इन्सान राहे ख़ुदा में जिहाद के लिये बांधता है तो उन की क़ीमत ज़रीअ़ए सवाब है, उन की सुवारी भी ज़रीअ़ए सवाब है और उन का उधार भी ज़रीअ़ए सवाब है और एक वोह हैं जिन पर इन्सान जूआ खेलता और बाज़ी लगाता है, उन की क़ीमत भी बोझ है और उन की सुवारी भी बोझ है और तीसरे वोह जो नस्ल बढ़ाने के लिये रखता है, अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे तो हो सकता है कि वोह फ़क़्र से रुकावट बन जाएं।"(4)

---

(1)......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث اسماء ابنة يزيد، الحديث: ٢٧٦٣٥، ج١٠، ص٤٣٦۔

(2)......المعجم الكبير، الحديث: ٣٧٠٧، ج٤، ص٨٠۔

(3)......المسند للامام احمد ابن حنبل، مسند عبد الله بن مسعود، الحديث: ٣٧٥٦، ج٢، ص٥٠۔

(4)......المسند للامام احمد ابن حنبل، حديث ابی جبيرة الضحاک، الحديث: ٢٣٢٩٠، ج٩، ص٧٠، بتغيرٍ قليلٍ۔



www.dawateislami.net

## तीर अन्दाज़ी सीखने की तरग़ीब :

﴾7﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मिम्बरे अक़्दस पर येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाते हुए सुना : '' وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ (پ١٠،الانفال:٦٠) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और उन के लिये तय्यार रखो जो क़ुव्वत तुम्हें बन पड़े ।'' (फिर फ़रमाया :) जान लो ! क़ुव्वत तीर अन्दाज़ी है, जान लो ! क़ुव्वत तीर अन्दाज़ी है, जान लो ! क़ुव्वत तीर अन्दाज़ी है ।(1)

## तीर अन्दाज़ी सीख कर तर्क करने की मज़म्मत :

﴾8﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जिस ने तीर अन्दाज़ी सीखी फिर उसे छोड़ दिया वोह हम में से नहीं या उस ने मेरी ना फ़रमानी की ।''(2)

﴾9﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने तीर अन्दाज़ी सीखी फिर छोड़ दी उस ने मेरी ना फ़रमानी की ।''(3)

﴾10﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने तीर अन्दाज़ी सीखी फिर छोड़ दी उस ने एक ने'मत का इन्कार कर दिया ।''(4)

## एक तीर की वज्ह से जन्नत में जाने वाले :

﴾11﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक तीर के बदले 3 आदमियों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा : (1)...... एक, भलाई की उम्मीद रखते हुए तीर बनाने वाला (2)...... दूसरा, तीर चलाने वाला और (3)...... तीसरा, तीर अन्दाज़ को तीर पकड़ाने वाला ताकि वोह तीर मारे (या'नी इमदाद और क़ुव्वत देने के लिये मुजाहिद को माल देने वाला) । लिहाज़ा तीर अन्दाज़ी करो और (घोड़े की) सुवारी करो, मुझे सुवार होने से तीर अन्दाज़ी करना ज़ियादा पसन्द है और जिस ने सीखने के बा'द

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الامارة، باب فضل الرمی والحث علیه......الخ، الحدیث : ۴۹۴۶،ص۱۰۲۰۔

2 ......المرجع السابق، الحدیث : ۴۹۴۹،"تعلم"بدله"علم"۔

3 ......سنن ابن ماجه، ابواب الجهاد، باب الرمی فی سبیل اللّٰه، الحدیث : ۲۸۱۴،ص۲۶۴۷۔

4 ......المعجم الصغیر للطبرانی، الحدیث :۵۴۴،الجزء الاول،ص۱۹۷۔



www.dawateislami.net

ए'राज़ करते हुए तीर अन्दाज़ी छोड़ी उस ने एक ने'मत छोड़ी या फ़रमाया : उस ने उस ने'मत का इन्कार कर दिया।''(1)

﴾12﴿...... दूसरी रिवायत इन अल्फ़ाज़ में मरवी है : ''(1)...... जो भलाई की उम्मीद रखते हुए तीर बनाता है (2)...... जो जिहाद के लिये तीर तय्यार करता है और (3)...... जो राहे ख़ुदा में उस से तीर अन्दाज़ी करता है।''(2)

﴾13﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : ''तुम पर तीर अन्दाज़ी लाज़िम है क्यूं कि येह तुम्हारे अच्छे खेलों में से है।''(3)

﴾14﴿...... एक रिवायत में है : ''क्यूं कि येह बेहतरीन शै है या तुम्हारे अच्छे खेलों में से है।''(4)

## जाइज़ व मुबाह़ खेल :

﴾15﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''ज़िक्रे इलाही के इलावा हर काम खेलकूद और ग़फ़्लत है सिवाए 4 चीज़ों के : (1)...... आदमी का दो निशानों के दरमियान चलना (या'नी तीर अन्दाज़ का निशाना बाज़ी के मक़ाम का इरादा करना) (2)...... अपने घोड़े को सिखाना (3)...... इन्सान का अपनी बीवी से खेलना कूदना (और दिल-लगी करना) और (4)...... तैराकी सीखना।''(5)

## राहे ख़ुदा में तीर चलाने का सवाब :

﴾16﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में तीर चलाया तो येह उस के लिये एक ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर है।''(6)

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الجهاد، باب فی الرمی، الحدیث: ۲۵۱۳،ص۱۴۰۹، "مُحْتَسِبًا"بدله"يَحْتَسِبُ"۔

2 ......شعب الایمان للبیهقی، با ب فی المرابطة فی سبیل اللّٰه، الحدیث: ۴۳۰۱،ج۴،ص۴۴۔

3 ......المعجم الاوسط، الحدیث: ۲۰۴۹،ج۱،ص۵۵۷۔

4 ......البحرالزخارالمروف بمسند البزار، مسند سعد بن ابی وقاص، الحدیث: ۱۱۴۶،ج۳،ص۳۴۶۔

5 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۷۸۵،ج۲،ص۱۹۳۔

6 ......جامع الترمذی، ابواب فضائل الجهاد، باب ما جاء فی فضل الرمی فی سبیل اللّٰه، الحدیث: ۱۶۳۸،ص۱۸۲۰۔



www.dawateislami.net

﴾17﴿...... सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जो शख़्स इस्लाम में बूढ़ा हो तो वोह उस के लिये क़ियामत के दिन नूर होगा और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में तीर चलाया ख़्वाह दुश्मन को लगे या न लगे मगर उस के लिये एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब है और जिस ने किसी मोमिन को आज़ाद किया तो उस (मोमिन) के हर उ़ज़्व के बदले इस (आज़ाद करने वाले) के लिये जहन्नम से बचाव है।''(1)

**तम्बीह :**

मैं ने किसी को मज़्कूरा तीनों गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार करते हुए नहीं पाया, मगर पहले के कबीरा होने के मु-तअ़ल्लिक़ पहली ह़दीसे पाक वाज़ेह़ है और दूसरे को इसी पर क़ियास किया गया है और तीसरे के मु-तअ़ल्लिक़ لَيْسَ مِنَّا के अल्फ़ाज़ से इस का कबीरा होना साबित होता है जैसा कि बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام इन जैसे अल्फ़ाज़े वई़द के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं कि येह गुनाहे कबीरा होने का तक़ाज़ा करते हैं क्यूं कि बराअत का इज़्हार करना शदीद वई़द है। लेकिन शाफ़ेई़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام इसे ह़राम भी क़रार नहीं देते कबीरा तो दूर की बात है। अलबत्ता ! मेरा ज़िक्र कर्दा उ़न्वान इसे कबीरा के क़रीब कर देता है क्यूं कि ऐसी सूरते ह़ाल में तीर अन्दाज़ी छोड़ने में बड़ी बड़ी ख़राबियां हैं।

۞۞۞۞۞۞۞

**﴾......गुनाहों से नफ़रत करने का ज़ेह्न......﴿**

**दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के ''**म-दनी क़ाफ़िलों**'' में सफ़र और रोज़ाना ''**फ़िक्रे मदीना**'' के ज़रीए ''**म-दनी इन्आ़मात**'' का रिसाला पुर कर के हर म-दनी (इस्लामी) माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से ''**पाबन्दे सुन्नत**'' बनने, ''**गुनाहों से नफ़रत**'' करने और ''**ईमान की ह़िफ़ाज़त**'' के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

1......سنن النسائی، کتاب الجهاد، باب ثواب من رمی بسهم فی سبیل الله، الحدیث: ۳۱۴۶، ۳۱۴۴، ص۲۹۰۔



www.dawateislami.net

# كتاب الايمان

## कबीरा नम्बर 409 : यमीने ग़मूस ( जानबूझ कर झूटी क़सम खाना )
## कबीरा नम्बर 410 : यमीने काज़िबा अगर्चे ग़मूस न हो
## कबीरा नम्बर 411 : क़समों की कसरत अगर्चे वोह सच्चा हो

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَ اَیْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِیْلًا اُولٰٓىٕكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِی الْاٰخِرَةِ وَ لَا یُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَ لَا یَنْظُرُ اِلَیْهِمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وَ لَا یُزَكِّیْهِمْ ۪ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۷۷﴾ (پ۳، ال عمران:۷۷)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** जो **अल्लाह** के अ़ह्द और अपनी क़समों के बदले ज़लील दाम लेते हैं आख़िरत में उन का कुछ हिस्सा नहीं और **अल्लाह** न उन से बात करे, न उन की त़रफ़ नज़र फ़रमाए क़ियामत के दिन और न उन्हें पाक करे और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

## आयते मुबा-रका की तफ़्सीर

सह़ीह़ अह़ादीसे त़य्यिबा के मुत़ाबिक़ इस का शाने नुज़ूल येह है कि येह आयत उन दो आदमियों के मु-तअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जो एक ज़मीन के बारे में सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में झगड़ा ले कर आए और जिस के ख़िलाफ़ दा'वा किया गया था, उस ने क़सम उठाने का पुख़्ता इरादा कर लिया। फिर जब येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई तो वोह (क़सम से) पीछे हट गया और मुद्दई (या'नी दा'वा करने वाले) के लिये उस का ह़क़ तस्लीम कर लिया।

یَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ से मुराद येह है कि अ़ह्दे इलाही के बदले (दुन्या का ह़क़ीर माल) लेते हैं या'नी जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन से अ़ह्द लिया। وَ اَیْمَانِهِمْ या'नी झूटी क़समें। ثَمَنًا قَلِیْلًا या'नी बत़ौरे बदला दुन्या का ह़क़ीर माल या'नी वोह माल जिस पर वोह झूटी क़समें खाते हैं। اُولٰٓىٕكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِی الْاٰخِرَةِ या'नी उन के लिये आख़िरत की ने'मतों और सवाब में से कुछ नहीं। وَ لَا یُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन से ऐसा कलाम न फ़रमाएगा जो उन्हें ख़ुश कर दे। وَ لَا یَنْظُرُ اِلَیْهِمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ या'नी वोह उन की त़रफ़ नज़रे रह़मत न फ़रमाएगा। وَ لَا یُزَكِّیْهِمْ या'नी उन की भलाई में इज़ाफ़ा न फ़रमाएगा और न ही उन की ता'रीफ़ करेगा। وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ या'नी उन



www.dawateislami.net

के लिये इन्तिहाई तक्लीफ़ देह दर्दनाक अ़ज़ाब है।[1]

## नाह़क़ किसी का माल लेना :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो किसी मुसल्मान का माल नाह़क़ दबाने की ख़ातिर (झूटी) क़सम खाएगा वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि वोह उस से नाराज़ होगा।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस के मुत़ाबिक़ कुरआने पाक की येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

**اِنَّ الَّذِیْنَ یَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَ اَیْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِیْلًا اُولٰٓىٕكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِی الْاٰخِرَةِ وَ لَا یُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَ لَا یَنْظُرُ اِلَیْهِمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وَ لَا یُزَكِّیْهِمْ ۪ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۷۷﴾** (پ۳، ال عمران:۷۷)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** जो **अल्लाह** के अ़ह्द और अपनी क़समों के बदले ज़लील दाम लेते हैं आख़िरत में उन का कुछ ह़िस्सा नहीं और **अल्लाह** न उन से बात करे, न उन की त़रफ़ नज़र फ़रमाए क़ियामत के दिन और न उन्हें पाक करे और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।[2]

﴾2﴿...... एक रिवायत में मज़ीद येह भी है : "(रावी फ़रमाते हैं कि इसी दौरान) ह़ज़रते सय्यिदुना अश्अ़स बिन क़ैस किन्दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ लाए और पूछा : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान (**अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द) رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तुम से क्या बातें कर रहे थे ?" हम ने अ़र्ज़ की : ऐसा ऐसा फ़रमा रहे थे तो उन्हों ने फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान ने सच फ़रमाया, मेरे और एक शख़्स के दरमियान एक कूंएं के बारे में झगड़ा था। हम फ़ैसला करवाने के लिये हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हुए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "दो गवाह (पेश करो) या उस की क़सम पर फ़ैसला होगा।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "वोह तो झूटी क़सम खा लेगा और उसे इस की कोई परवाह नहीं।" तो हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने किसी मुसल्मान का माल नाह़क़ दबाने के लिये झूटी क़सम उठाई तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि वोह उस से नाराज़ होगा।" इस मौक़अ़ पर येह आयते मुबा-रका नाज़िल

---

1 ......كتاب الكبائرللذهبى،الكبيره الخامسة والعشرون: اليمين الغموس، ص ۱۱۴ـ

2 ......صحيح مسلم،كتاب الإيمان، باب وعيد من اقتطع حق مسلم بيمين فاجرة بالنار،الحديث : ۳۵۷،ص ۷۰۱ـ



www.dawateislami.net

हुई : ''اِنَّ الَّذِیۡنَ یَشۡتَرُوۡنَ بِعَهۡدِ اللّٰهِ وَ اَیۡمَانِهِمۡ ثَمَنًا قَلِیۡلًا......الخ (پ۳، ال عمران : ۷۷) ।''[1]

﴾3﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में शहरे **हज़रमौत** का एक शख़्स और क़बीलए **किन्दा** का एक शख़्स हाज़िर हुवा। हज़रमी ने अर्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इस ने मेरी ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लिया है जो मेरे बाप की थी।'' तो किन्दी कहने लगा : ''येह ज़मीन मेरे ही क़ब्ज़े में थी, मैं इस में काश्त कारी करता हूं, इस का इस में कोई हक़ नहीं।'' आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रमी से दरयाफ़्त फ़रमाया : ''क्या तेरे पास गवाह हैं ?'' अर्ज़ की : ''नहीं।'' इर्शाद फ़रमाया : ''अब तेरे लिये इस की क़सम है।'' उस ने अर्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह झूटा शख़्स है, किसी चीज़ पर झूटी क़सम खाने की परवाह नहीं करता और न ही किसी चीज़ से बचता है।'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इस की त़रफ़ से तेरे लिये सिर्फ़ येही है।'' तो किन्दी शख़्स क़सम खाने के लिये चला जब उस ने (क़सम खाने के लिये) पीठ फैरी तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर इस ने उस का माल ज़ुल्मन खाने के लिये क़सम खाई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि वोह इस से ए'राज़ फ़रमाएगा (या'नी इस पर नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाएगा)।''[2]

﴾4﴿...... शहरे **हज़रमौत** के एक शख़्स और क़बीलए किन्दा के एक शख़्स ने रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में यमन की एक ज़मीन के मु-तअ़ल्लिक़ अपना झगड़ा पेश किया, हज़रमी ने अर्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी ज़मीन इस के बाप ने छीन ली थी, अब वोह इस के क़ब्ज़े में है।'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ''क्या तुम्हारे पास कोई गवाह है ?'' अर्ज़ की : ''नहीं, लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम खाता हूं कि यक़ीनन येह ज़मीन मेरी है जो इस के बाप ने ग़स्ब कर ली थी।'' किन्दी भी क़सम खाने के लिये तय्यार हो गया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो (झूटी) क़सम खा कर किसी का माल (नाहक़) दबाएगा वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कोढ़ी हो कर मिलेगा।'' येह सुन कर किन्दी ने कह दिया कि येह ज़मीन इसी की है।[3]

1 ......صحیح مسلم، کتاب الإیمان، باب وعید من اقتطع حق مسلم بیمین فاجرة بالنار، الحدیث : ۳۵۵، ۳۵۶، ص ۷۰۱۔

2 ......المرجع السابق، الحدیث : ۳۵۸۔

3 ......سنن ابی داود، کتاب الأیمان والنذور، باب فیمن حلف لیقتطع بها مالا، الحدیث : ۳۲۴۴، ص ۱۴۶۶۔



www.dawateislami.net

﴾5﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जिस ने किसी मुसल्मान का माल लेने के लिये झूटी क़सम खाई वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कोढ़ी हो कर मिलेगा।''(1)

﴾6﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक्दस में दो शख़्स एक ज़मीन का झगड़ा ले कर ह़ाज़िर हुए, उन में से एक **हज़्रमौत** का था आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन में से एक के लिये क़सम मु-तअ़य्यन की तो दूसरे शख़्स ने पुकार कर कहा : ''यूं तो येह मेरी ज़मीन ले जाएगा।'' हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर इस ने क़सम के ज़रीए़ ज़ुल्मन माल ले लिया तो येह उन में से होगा जिन की त़रफ़ बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाएगा और न ही इसे पाक करेगा और इस के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।'' इस पर दूसरा शख़्स डर गया और ज़मीन लौटा दी।(2)

## ह़दीसे पाक की लुग़वी तशरीह़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ ज़किय्युद्दीन मुन्ज़िरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''येह वाक़िआ़ दूसरे अन्दाज़ में भी वारिद है। और ''وَرِعَ'' **راء** के कस्रा के साथ हो तो मा'ना येह होगा कि वोह गुनाह से बच गया और अपने इरादे से बाज़ आ गया और येह भी एह़्तिमाल है कि येह **راء** के फ़त्ह़ा के साथ **وَرَعَ** हो या'नी वोह पस्त हिम्मत हो गया और **راء** के ज़म्मा के साथ **وَرُعَ** हो तो भी येही मा'ना है मगर पहला मा'ना ज़ियादा बेहतर है।''(3)

﴾7﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''कबीरा गुनाह येह हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना और जानबूझ कर झूटी क़सम खाना।''(4)

﴾8﴿...... एक रिवायत में है कि एक आ'राबी मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह**

---

(1)......سنن ابن ماجه، ابواب الاحکام، باب من حلف ......الخ، الحدیث: ۲۳۲۳، ص۲۶۱۲۔

الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الدعوی، باب الاستحلاف، الحدیث: ۵۰۶۵، ج۷، ص۲۷۲۔

(2)......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی موسی الاشعری، الحدیث: ۱۹۵۳۱، ج۷، ص۱۲۹۔

(3)......الترغیب والترھیب، کتاب البیوع، باب الترھیب من الیمین الکاذبة الغموس، تحت الحدیث: ۲۸۵۱، ج۲، ص۳۹۸۔

(4)......صحیح البخاری، کتاب الأیمان والنذور، باب الیمین الغموس، الحدیث: ۶۶۷۵، ص۵۵۸۔



www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! सब से बड़ा कबीरा गुनाह कौन सा है ?'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना।'' उस ने फिर अ़र्ज़ की : ''इस के बा'द कौन सा ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''यमीने ग़मूस।'' अ़र्ज़ की : ''यमीने ग़मूस क्या है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''ऐसी झूटी क़सम जिस के ज़रीए़ किसी मुसल्मान का माल ले लिया जाए।''(1)

## झूटी क़सम खाना दिल पर दाग़ का बाइ़स है :

﴾9﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''कबीरा गुनाह येह हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना और जानबूझ कर झूटी क़सम खाना, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! कोई शख़्स मच्छर के पर के बराबर चीज़ पर क़सम खाता है तो क़ियामत के दिन उस के दिल पर दाग़ होगा।''(2)

﴾10﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''सब से बड़ा कबीरा गुनाह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना और जानबूझ कर झूटी क़सम खाना है।''(3)

﴾11﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो शख़्स क़सम खाए और उस में मच्छर के पर के बराबर झूट मिला दे तो क़ियामत के दिन तक वोह क़सम उस के दिल पर सियाह नुक्त़ा बन जाएगी।''(4)

﴾12﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''हम यमीने ग़मूस को उस गुनाह में से शुमार करते थे जिस का कोई कफ़्फ़ारा नहीं।'' अ़र्ज़ की गई : ''यमीने ग़मूस क्या है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''कोई शख़्स अपनी क़सम के ज़रीए़ दूसरे का माल क़ाबू कर ले।''(5)

﴾13﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिस बिन बरसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज के मौक़अ़

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب استتابة المرتدین، باب اثم من أشرک......الخ، الحدیث : ۶۹۲۰، ص۵۷۷، دون قوله"اکبر"۔

2 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الحظر والاباحة، الحدیث : ۵۵۳۷، ج۷، ص۴۳۵۔

3 ......المعجم الاوسط، الحدیث : ۳۲۳۷، ج۲، ص۲۶۵۔

4 ......جامع الترمذی، ابواب تفسیر القرآن، باب ومن سورة النساء، الحدیث : ۳۰۲۰، ص۱۹۵۶۔

5 ......المستدرک، کتاب الأیمان والنذور، باب من اکبر الکبائر......الخ، الحدیث : ۷۸۷۹، ج۵، ص۴۲۱۔



www.dawateislami.net

पर दोनों जमरों के दरमियान सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : ''जिस ने अपने भाई का माल झूटी क़सम के ज़रीए़ हड़प कर लिया तो उसे चाहिये कि अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले, लिहाज़ा तुम में जो ह़ाज़िर है वोह ग़ाइब को पहुंचा दे।'' आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह बात 2 या 3 बार इर्शाद फ़रमाई।(1)

﴾14﴿...... एक रिवायत में है कि ''उसे चाहिये कि जहन्नम में घर बना ले।''(2)

## माल के वबाल का सबब :

﴾15﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''झूटी क़सम माल ख़त्म कर देती है या माल ले जाती है।''(3)

﴾16﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी वाला कोई गुनाह ऐसा नहीं जिस की बग़ावत से ज़ियादा जल्दी सज़ा मिलती हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त वाली कोई नेकी ऐसी नहीं जिस का सिलए रेह़्मी से ज़ियादा जल्दी सवाब मिलता हो और झूटी क़सम घरों को उजाड़ देती है।''(4)

﴾17﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त बयान है : ''जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ालत में मिला कि उस ने शिर्क न किया और सवाब की उम्मीद पर ख़ुशदिली से ज़कात अदा की और सुन कर इत़ाअ़त की तो उस के लिये जन्नत है या वोह जन्नत में दाख़िल हो गया और 5 गुनाहों का कोई कफ़्फ़ारा नहीं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, किसी जान को नाह़क़ क़त्ल करना, किसी मोमिन पर तोहमत लगाना, जंग से भाग जाना और ऐसी झूटी क़सम खाना जिस के ज़रीए़ किसी का माल हड़प कर लिया जाए।''(5)

﴾18﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत

---

1 ......المستدرک، باب الأحادیث المنذرة عن یمین کاذبة، الحدیث : ۷۸۷۳، ج۵، ص۴۱۹۔

2 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الغصب، الحدیث: ۵۱۴۳، ج۷، ص۳۰۴، ملتقطاً۔

3 ......البحرالزخارالمعروف بمسند البزار، مسند عبد الرحمٰن بن عوف، الحدیث :۱۰۳۴، ج۳، ص۲۴۵۔

4 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی حفظ اللسان، الحدیث:۴۸۴۲، ج۴، ص۲۱۷۔

5 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی هریرة، الحدیث : ۸۷۴۵، ج۳، ص۲۸۶، "بَهْتُ" بدله "نَهْبُ"۔



www.dawateislami.net

निशान है : "जो जानबूझ कर झूटी क़सम खाए वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।"(1)

﴾19﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा ब-र-कत है : "जो शख़्स झूटी क़सम के ज़रीए़ किसी मुसल्मान का माल दबा लेता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक़्ता बन जाता है जिसे क़ियामत तक कोई चीज़ तब्दील न कर सकेगी।"(2)

﴾20﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे इजाज़त दी कि एक मुर्ग़(3) के बारे में बताऊं जिस के पाउं ज़मीन के नीचे तक पहुंचे हुए हैं और गरदन अ़र्शे (इलाही) के नीचे झुकी हुई है और वोह कहता है : "سُبْحَانَكَ مَا اَعْظَمَكَ رَبَّنَا" या'नी ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! तू पाक है, तेरी शान कितनी बुलन्द है।" तो उसे जवाब दिया जाता है : "जिस ने मेरे नाम पर झूटी क़सम खाई उस ने मेरी अ़-ज़मत को नहीं जाना।"(4)

﴾21﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गु़यूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "जिस ने (झूटी) क़सम के ज़रीए़ किसी का माल हड़प किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर जन्नत ह़राम कर देगा और उस के लिये जहन्नम वाजिब कर देगा।" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर्चे वोह थोड़ी सी चीज़ हो ?" इर्शाद फ़रमाया : "अगर्चे वोह एक तस्मा ही हो।"(5)

﴾22﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने (झूटी) क़सम के ज़रीए़ किसी शख़्स का माल हड़प कर लिया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जहन्नम वाजिब कर देगा और उस पर जन्नत ह़राम कर देगा।" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर्चे वोह मा'मूली सी

---

1 ......المستدرک، کتاب الأیمان و النذور، باب الاحادیث المنذرة عن یمین کاذبة، الحدیث : ۷۸۷۲، ج۵، ص۴۱۹۔

2 ......المرجع السابق، الحدیث : ۷۸۷۰، ص۴۱۸۔

3 ...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی मज़्कूरा ह़दीसे पाक में वारिद लफ़्ज़े **دِیْك** की तशरीह़ में फ़रमाते हैं : "यहां **دِیْك** से मुराद ह़क़ीक़ी मुर्ग़ नहीं बल्कि मुर्ग़ की सूरत का एक फ़िरिश्ता है जैसा कि इस की तसरीह़ दूसरी ह़दीसे पाक में है कि "आस्मान में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक फ़िरिश्ता है जिस का नाम **دِیْك** है।" (فیض القدیر للمناوی، تحت الحدیث:۱۶۸۰، ج۲، ص۲۶۳)

4 ......المعجم الاوسط، الحدیث : ۷۳۲۴، ج۵، ص۲۷۸۔

5 ......المعجم الکبیر، الحدیث : ۱۷۸۲، ج۲، ص۱۹۲، "شراکا" بدله "سواکا"۔



www.dawateislami.net

चीज़ हो ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''अगर्चे वोह पीलू के दरख़्त की एक टहनी ही हो ।''(1)

﴾23﴿...... एक रिवायत में येह है कि ''अगर्चे वोह पीलू के दरख़्त की एक टहनी ही हो, अगर्चे वोह पीलू के दरख़्त की एक टहनी ही हो ।''(2)

## झूटी क़सम खाने वाले पर जहन्नम वाजिब है :

﴾24﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो भी मर्द या औ़रत इस मिम्बर के पास झूटी क़सम खाए उस के लिये जहन्नम वाजिब है अगर्चे वोह एक ताज़ा मिस्वाक पर हो ।''(3)

﴾25﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जो शख़्स मेरे इस मिम्बर के पास झूटी क़सम खाए वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले अगर्चे वोह एक ताज़ा मिस्वाक पर हो ।''(4)

मज़्कूरा दोनों अहादीसे मुबा-रका से मा'लूम होता है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा और ह़ज़रते सय्यिदुना ख़त्ताबी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا (मु-तवफ़्फ़ा 388 हि.) ने ज़िक्र किया कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़मानए अक़्दस में मिम्बरे अन्वर के पास क़सम उठाई जाती थी ।

﴾26﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बेशक या तो क़सम तोड़नी पड़ती है या उस के बाइ़स नदामत उठानी पड़ती है ।''(5)

﴾27﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन मुत़्इ़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के मु-तअ़ल्लिक़ मरवी है कि उन्हों ने अपनी क़सम का फ़िदया 10 हज़ार दिरहम अदा किया फिर इर्शाद फ़रमाया : ''रब्बे का'बा की क़सम ! अगर मुझे क़सम खानी पड़ी तो सच्ची क़सम ही खाऊंगा और बेशक मैं ने येह

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الإیمان، باب وعید من اقتطع حق مسلم......الخ، الحدیث : ۳۵۳،ص۱۰۷۔

2 ......المُوَطّأ للامام مالک،کتاب الاقضیة، باب ماجاء فی الحنث علی منبر النبی، الحدیث :۱۴۷۴،ج۲،ص۲۵۰۔

3 ......سنن ابن ماجه، ابواب الاحکام، باب الیمین عند مقاطع الحقوق، الحدیث :۲۳۲۶،ص۲۶۱۱۔

4 ......المرجع السابق، الحدیث :۲۳۲۵،ص۲۶۱۱۔

5 ......سنن ابن ماجه، ابواب الکفارات، باب الیمین حِنْثٌ اونَدَمٌ، الحدیث : ۲۱۰۳،ص۲۶۰۳۔



www.dawateislami.net

अपनी क़सम का फ़िदया अदा किया है।''(1)

﴾28﴿...... इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अश्अ़स बिन क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में मरवी है कि एक मर्तबा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी क़सम के बदले 7 हज़ार (दिरहम) अदा किये।(2)

**तम्बीह :** पहले गुनाह को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है जिस की मज़्कूरा अह़ादीसे मुबा–रका में वज़ाह़त हो चुकी है जिन में कभी इसे कबीरा गुनाह और कभी **अक्बरुल कबाइर** कहा गया है जो एक शदीद वईद है बल्कि इस से शदीद वईद कोई नहीं। इसी वज्ह से शाफ़ेई उ़–लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام का इस के गुनाहे कबीरा होने पर इत्तिफ़ाक़ है और दूसरे गुनाह को कबीरा गुनाह क़रार देना साबिक़ा इस सह़ीह़ ह़दीसे पाक से वाज़ेह़ है कि ''जिस ने मेरे नाम पर झूटी क़सम खाई उस ने मेरी अ़–ज़मत को न जाना।''(3) क्यूं कि इस में बहुत बड़ी डांट और सख़्त वईद है। फिर मैं ने इस की सराह़त करने वाला येह कलाम पाया कि हमारे बा'ज़ (शाफ़ेई) अइम्मए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام जैसे **साह़िबुल उ़द्दह** ने इसे **यमीने फ़ाजिरा** कहा और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र–कशी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने इस की वज़ाह़त येह फ़रमाई कि ऐसी क़सम जो झूट को शामिल हो अगर्चे वोह साबिक़ा मा'ना के ए'तिबार से झूटी न हो।

## यमीने ग़मूस का मफ़्हूम :

आप رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मज़ीद फ़रमाते हैं कि ''इस से मुराद वोह झूटी क़सम है जो नाह़क़ उठाई जाए या जिस के ज़रीए़ किसी का ह़क़ बात़िल किया जाए और इसे ग़मूस कहने की वज्ह येह है कि येह क़सम, उठाने वाले को जहन्नम में डाल देती है।'' इन के क़ौल ''जो नाह़क़ उठाई जाए'' से मुराद येह है कि अगर्चे इस की वज्ह से ह़क़ बात़िल न हो और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र–कशी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی के गुज़श्ता कलाम से पैदा होने वाले वह्म के बर अ़क्स इसे इस्त़िलाह़न ग़मूस नहीं कहा जाता। इसे कबीरा गुनाह शुमार करने की ताईद में दो रिवायात मुला–ह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे,

﴾29﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के पास ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : ''मैं ने गुनाहों का इरतिकाब किया है, लिहाज़ा मैं चाहता हूं कि आप मेरे सामने कबीरा गुनाह

(1)......المعجم الاوسط، الحديث : ۸۸۱،ج ۱،ص ۲۵۶،"ورب الكعبة"بدله"ورب هذا المسجد"۔

(2)......المرجع السابق، الحديث : ۱۵۵۹،ص ۴۲۵۔

(3)......المعجم الاوسط، الحديث : ۷۳۲۴،ج ۵،ص ۲۷۸۔



www.dawateislami.net

गिनवाइये।'' रावी फ़रमाते हैं कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के सामने 7 या 8 गुनाह गिनवाए : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना (2) वालिदैन की ना फ़रमानी करना (3) किसी जान को नाहक़ क़त्ल करना (4) सूद खाना (5) यतीम का माल खाना (6) पाक दामन औ़रतों पर तोहमत लगाना और (7) झूटी क़सम खाना।(1)

﴾30﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गि़फ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''3 शख़्स ऐसे हैं जिन से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न कलाम फ़रमाएगा, न उन की त़रफ़ नज़रे करम फ़रमाएगा और न ही उन्हें पाक करेगा बल्कि उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह बात 3 बार इर्शाद फ़रमाई तो मैं ने अ़र्ज़ की : ''वोह तो ख़ाइबो ख़ासिर हो गए, **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कौन लोग हैं ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''(1)...... तकब्बुर से अपना तहबन्द लटकाने वाला (2)...... एह़सान जतलाने वाला और (3)...... झूटी क़सम खा कर माल बेचने वाला।''(2)

मज़्कूरा ह़दीसे पाक इस बारे में वाज़ेह़ है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम पर झूटी क़सम खाना कबीरा गुनाह है अगर्चे येह मज़्कूरा तफ़्सीर के मुताबिक़ यमीने ग़मूस नहीं। मगर इस से कम अज़ कम येह ज़रूर साबित होता है कि झूटी क़सम खा कर माल बेचने से मुसल्मान का माल क़ाबू कर लिया जाता है और वोह यूं कि झूटी क़सम के ज़रीए ख़रीदार से क़ीमत वुसूल कर लेना क्यूं कि अगर वोह झूटी क़सम न खाता तो ख़रीदार उस चीज़ में कभी रक़म ख़र्च न करता गोया इस ने क़सम के ज़रीए उस का माल हड़प कर लिया।

﴾31﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''3 (क़िस्म के) लोगों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न तो कलाम फ़रमाएगा और न ही उन्हें पाक फ़रमाएगा बल्कि उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है : (1) जो शख़्स अपना इज़ाफ़ी पानी मुसाफ़िर से रोक ले (2) जो शख़्स अ़स्र के बा'द किसी शख़्स को माल बेचे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम खाए कि इस ने येह चीज़ इतने इतने में ख़रीदी है और ख़रीदार उसे सच्चा समझे ह़ालां कि ह़क़ीक़तन ऐसा न हो और (3) जो शख़्स दुन्या (की दौलत) के लिये किसी हुक्मरान की बैअ़त करे कि अगर वोह इसे दे तो उस का वफ़ादार रहे और अगर न दे तो वफ़ा न करे।''(3)

---

1 ......الجامع لمعمر مع المصنف لعبد الرزاق، باب الكبائر، الحديث : ١٩٨٧٥، ج١٠، ص٢٥، عن سعيد الجريری۔

2 ......صحيح مسلم، كتاب الإيمان، باب بيان غلظ تحريم إسبال الإزار......الخ، الحديث : ٢٩٣، ص٢٩٦۔

3 ......المرجع السابق، الحديث : ٢٩٧۔



www.dawateislami.net

## ह़दीसे पाक की वज़ाह़त :

अ़स्र के बा'द की क़ैद इस लिये है कि इस वक़्त झूटी क़सम ज़ियादा क़बीह़ है। लेकिन इस का येह मा'ना नहीं कि इस शदीद सज़ा का मुस्तह़िक़ होने के लिये येह (या'नी बा'दे अ़स्र झूटी क़सम खाना) शर्त़ है। तीसरे गुनाह को कबीरा गुनाहों में शुमार करना ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र-कशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के इस कलाम से साबित है कि "इस में कोई शक नहीं कि इस में एक बह़्स का आग़ाज़ हो रहा है जिस की त़रफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) ने अपने इस क़ौल से इशारा फ़रमाया कि क़सम को झूट के साथ मुक़य्यद करने की बा'ज़ सूरतों में तवक़्क़ुफ़ की गुन्जाइश है और कहा जाता है कि बेशक क़समों की कसरत अगर्चे सच्ची हों, फ़िस्क़ का तक़ाज़ा करती है जैसे झगड़ों की कसरत के मु-तअ़ल्लिक़ कहा गया।"

इस का एह़्तिमाल है और इस के ख़िलाफ़ का भी एह़्तिमाल है और वोही ह़क़ के ज़ियादा क़रीब है क्यूं कि झगड़े अगर्चे ह़क़ बात पर हों फिर भी उन की कसरत ना जाइज़ कामों में मुब्तला कर देती है। यहां तो मुख़्तसर कलाम किया गया अ़न्क़रीब इस की तफ़्सील आएगी।

## ह़ासिले कलाम :

मज़्कूरा अह़ादीसे मुबा-रका से मा'लूम हुवा कि यमीने ग़मूस (या'नी झूटी क़सम) वोह है जो इन्सान जानबूझ कर उठाता है येह जानते हुए भी कि ह़क़ीक़त इस के बर अ़क्स है ताकि वोह बात़िल को ह़क़ साबित करे या इस के ज़रीए ह़क़ को बात़िल कर दे जैसा कि इस के ज़रीए किसी बे गुनाह का माल हड़प कर ले ख़्वाह वोह ग़ैर मुस्लिम ही हो जैसा कि ज़ाहिर है और जिन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने यहां सिर्फ़ मुसल्मान का ए'तिबार किया है तो उन्हों ने ग़ालिब पर अ़मल किया है और इसे ग़मूस इस लिये कहा जाता है क्यूं कि येह दुन्या में क़सम खाने वाले को गुनाह में डुबो देती है और क़ियामत के दिन जहन्नम में ग़र्क़ करेगी। गुज़श्ता अह़ादीसे मुबा-रका में اَلْيَمِيْنُ الصَّابِرَةُ, صَبْرٌ और مَصْبُوْرٌ के इस्तिलाह़ी अल्फ़ाज़ हुक्म के ए'तिबार से क़सम खाने वाले को लाज़िम हैं। पस उसे इस की वज्ह से रोका जाता है और सब्र की अस्ल रोकना है। इसी से अ़-रबों का क़ौल है : "قُتِلَ فُلَانٌ صَبْرًا" या'नी फुलां को ज़ुल्मन रोक कर क़त्ल कर दिया गया।"



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 412 : अमानत की क़सम उठाना

## कबीरा नम्बर 413 : बुत की क़सम उठाना

## कबीरा नम्बर 414 : क़सम को कुफ़्र से मश्रूत़ करना

**( जैसे बा'ज़ ना आ़क़िबत अन्देशों का येह कहना कि अगर मैं ऐसा करूं तो मैं काफ़िर हूं या इस्लाम या नबी عَلَيْهِ السَّلَام से बरी हूं )**

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इन 3 गुनाहों के कबीरा होने की त़रफ़ इशारा किया। फिर इस मौज़ूअ़ पर वसीअ़ कलाम करते हुए फ़रमाया : "**ग़ैरुल्लाह** की क़सम खाना भी यमीने ग़मूस (या'नी झूटी क़सम) में दाख़िल है जैसे नबिय्ये पाक, का'बए मुशर्रफ़ा, फ़रिश्तों, आस्मान, आबाओ अज्दाद, ज़िन्दगी और अमानत की क़सम खाना और मज़्कूरा तमाम अल्फ़ाज़ ऐसे हैं जिन के मु-तअ़ल्लिक़ सख़्त मुमा-न-अ़त है और रूह़, सर, बादशाह की ज़िन्दगी, सुल्त़ान की ने'मत और किसी की क़ब्र की क़सम खाना वग़ैरा।" फिर कई अह़ादीस ज़िक्र फ़रमाई जिन में ऐसी क़समों की मुमा-न-अ़त और सख़्त वई़द है। चुनान्चे,

﴾1﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें अपने आबाओ अज्दाद की क़समें खाने से मन्अ़ फ़रमाता है, लिहाज़ा क़सम खाने वाले को चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम खाए या ख़ामोश रहे।"(1)

﴾2﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रही़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बुतों और अपने आबाओ अज्दाद की क़समें न खाओ।"(2)

## ह़दीसे पाक की लुग़वी तशरीह़ :

طَوَاغِی, طَاغِيَةٌ की जम्अ़ है इस का मा'ना बुत है। चुनान्चे, ह़दीसे पाक में है : "هٰذِهٖ طَاغِيَةُ دَوْسٍ या'नी येह क़बीलए दौस का बुत और मा'बूद है।"(3)

﴾3﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الأیمان، باب النھی عن الحلف بغیر اللّٰہ، الحدیث : ۴۲۵۷،ص۹۲۶۔

2 ......المرجع السابق،باب من حلف باللات......الخ، الحدیث :۴۲۶۲۔

3 ......صحیح البخاری،کتاب الفتن، باب تغیر الزمان حتی تعبد الاثان، الحدیث :۷۱۱۶،ص۵۹۳۔



www.dawateislami.net

है : ''जो अमानत की क़सम खाए वोह हम में से नहीं ।''(1)

﴾4﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने क़सम उठाई और कहा कि मैं इस्लाम से बरी हूं अगर वोह झूटा हो तो वोह ऐसा ही हो जाएगा जैसा उस ने कहा और अगर सच्चा हो तो फिर भी सलामती के साथ इस्लाम की त़रफ़ न लौटेगा ।''(2)

﴾5﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के मु-तअ़ल्लिक़ मरवी है कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने किसी शख़्स को येह कहते हुए सुना : ''नहीं, का'बे की क़सम !'' तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इर्शाद फ़रमाया : **ग़ैरुल्लाह** की क़सम न खाओ क्यूं कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना कि ''जिस ने **ग़ैरुल्लाह** की क़सम खाई बिला शुबा उस ने कुफ़्रो शिर्क किया(3) ।''(4)

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि मज़्कूरा फ़रमाने मुस्त़फ़ा सख़्ती पर मह़मूल है जैसे ह़दीसे पाक है कि ''रियाकारी शिर्क है ।''(5)

---

1 ......سنن ابی داؤد، کتا ب الأیمان والنذور، باب کراھیۃ الحلف بالامانۃ، الحدیث : ۳۲۵۳، ص۱۴۶۷ ـ

2 ......المرجع السابق، باب ماجاء فی الحلف بالبراءَۃ وبملۃ غیر الإسلام، الحدیث : ۳۲۵۸ ـ

3 ...... मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 5, सफ़ह़ा 194 पर एक ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : ''या'नी ग़ैरे ख़ुदा की क़सम खाने से मन्अ़ फ़रमाया गया चूंकि अहले अ़रब उ़मूमन बाप दादों की क़सम खाते थे इस लिये इसी का ज़िक्र हुवा, ग़ैरे ख़ुदा की क़सम खाना मक्रूह है, वोह जो ह़दीस शरीफ़ में है : اَفْلَحَ وَاَبِی या'नी क़सम मेरे वालिद की वोह काम्याब हो गया वोह क़सम शर-ई नहीं मह़ज़ ताकीदे कलाम के लिये है और यहां शर-ई क़सम से मुमा-न-अ़त है या वोह ह़दीस इस ह़दीस से मन्सूख़ है, या वोह बयाने जवाज़ के लिये है येह ह़दीस बयाने कराहत के लिये । एक और ह़दीस की शर्ह़ में फ़रमाया : ''या'नी अगर भूल कर लात व उ़ज़्ज़ा की क़सम खा ले तो कफ़्फ़ारे के लिये कलिमए त़य्यिबा पढ़ ले कि नेकियां गुनाह को मिटा देती हैं और अगर दीदा दानिस्ता बुतों की ता'ज़ीम करते हुए इन की क़सम खाई है तो काफ़िर हो गया, दोबारा कलिमा पढ़ कर मुसल्मान हो, लात व उ़ज़्ज़ा मक्का वालों के दो मश्हूर बुत थे जो का'बए मुअ़ज़्ज़मा में रखे हुए थे अब जो गंगा, जमना या राम लक्ष्मन की क़सम खाए इस का हुक्म भी येही है इस से मा'लूम हुवा कि इस जैसी क़सम में कफ़्फ़ारा नहीं सिर्फ़ येह ही हुक्म है जो यहां मज़्कूर हुवा ।''

4 ......جامع الترمذی، ابواب النذور والأیمان، باب ماجاء فی ان من حلف بغیر اللّٰہ فقد اشرک، الحدیث : ۱۵۳۵، ص۱۸۰۹ ـ

5 ......المرجع السابق ـ



www.dawateislami.net

## ग़ैरुल्लाह की क़सम खाने पर कलिमए त़य्यिबा पढ़ने का हुक्म :

﴾6﴿...... एक रिवायत में है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने लात व उ़ज़्ज़ा की क़सम खाई तो वोह कलिमए त़य्यिबा لَا اِلٰهَ اِلَّا الله पढ़े।''(1)

## शर्हे ह़दीस :

मज़्कूरा ह़दीसे पाक में कलिमए त़य्यिबा पढ़ने का हुक्म दिया गया, इस का सबब येह है कि बा'ज़ सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का इस त़रह़ की क़समें उठाने का दौरे जाहिलिय्यत नया नया गुज़रा था लिहाज़ा कभी कभार ज़बान से इस त़रह़ की क़सम निकल जाती थी। लिहाज़ा हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें हुक्म दिया कि इस पर फ़ौरन لَا اِلٰهَ اِلَّا الله पढ़ लिया करो ताकि उन की ज़बान से जो कुछ निकला वोह इस की वज्ह से मिट जाए। येह मज़्कूरा बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के बयान कर्दा कलाम का खुलासा है।

हमारे शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का कलाम इस मौक़िफ़ की ताईद नहीं करता क्यूं कि उन्हों ने मुत़्लक़न **ग़ैरुल्लाह** की क़सम मक्रूह क़रार दी। हां ! अगर उस की क़सम खाने से वोह उस की ऐसी ता'ज़ीम का अ़क़ीदा रखे जैसा वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बारे में रखता है तो इस सूरत में वोह क़सम कुफ़्र होगी और ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا की ह़दीसे पाक और आने वाली अह़ादीसे मुबा-रका का येही मत़लब है और बुत वग़ैरा की क़सम खाने से अगर उस की ता'ज़ीम का इरादा हो तो कुफ़्र है वरना नहीं और इस सूरत में एक त़रह़ का एह़्तिमाल है कि येह कबीरा गुनाह है और बा'ज़ ना आ़क़िबत अन्देशों के (उ़न्वान में) ज़िक्र कर्दा क़ौल पर गुनाहे कबीरा का हुक्म लगाना बईद अज़ क़ियास नहीं क्यूं कि साबिक़ा ह़दीसे पाक और आने वाली अह़ादीसे मुबा-रका में इस पर सख़्त वई़द है और वोह येह है कि अगर वोह झूटा हो तो कुफ़्र है या अगर सच्चा हो तो फिर भी इस्लाम की त़रफ़ सह़ीह़ो सालिम न पलटेगा और इस में कोई मुज़ा-यक़ा नहीं कि इस मौज़ूअ़ पर मज़्कूरा बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की बयान कर्दा अह़ादीसे मुबा-रका को इस्नाद और उन की सिह़्ह़त पर कलाम किये बिग़ैर ज़िक्र कर दिया जाए। चुनान्चे,

---

(1)......صحیح البخاری، کتاب التفسیر، سورۃ والنجم، باب اَفَرَءَ یْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰی، الآیۃ۱۹، الحدیث: ۴۸۶۰، ص۴۱۵۔



www.dawateislami.net

﴾7﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें अपने आबाओ अज्दाद की क़समें खाने से मन्अ़ फ़रमाता है, लिहाज़ा क़सम खाने वाले को चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम खाए या ख़ामोश रहे।''(1)

﴾8﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी शख़्स को अपने बाप की क़सम खाते सुना तो इर्शाद फ़रमाया : ''अपने आबाओ अज्दाद की क़समें न खाओ जो क़सम खाए वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम उठाए और जिस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम खाई जाए उसे चाहिये कि राज़ी हो जाए (या'नी तस्लीम कर ले) और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम पर भी राज़ी न हुवा उस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से कुछ नहीं।''(2)

﴾9﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने **ग़ैरुल्लाह** की क़सम खाई तह़क़ीक़ उस ने कुफ़्रो शिर्क किया।''(3)

﴾10﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा जिस की भी क़सम खाई जाती है वोह शिर्क है।''(4)

﴾11﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ''मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम की झूटी क़सम खाना **ग़ैरुल्लाह** की सच्ची क़सम खाने से ज़ियादा पसन्द है।''(5)

﴾12﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जिस ने अमानत की क़सम खाई वोह हम में से नहीं।''(6)

﴾13﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने क़सम उठाई और कहा कि मैं इस्लाम से बरी हूं अगर वोह झूटा हो तो वोह ऐसा ही हो जाएगा जैसा उस ने कहा और अगर सच्चा हो तो फिर भी सलामती के साथ इस्लाम की

---

1 ......صحیح مسلم،کتاب الأیمان، باب النھی عن الحلف بغیر اللّٰہ، الحدیث : ۴۲۵۷،ص۹۶۶۔

2 ......سنن ابن ماجه، ابواب الکفارات، باب من حلف باللّٰہ فلیرض، الحدیث :۲۱۰۱،ص۲۶۰۳،بتغیرٍ۔

3 ......جامع الترمذی، ابواب النذور والأیمان، باب ماجاء فی ان من حلف......الخ، الحدیث : ۱۵۳۵، ص۱۸۰۹۔

4 ......المستدرک،کتاب الإیمان، باب کل یمین یحلف بھا دون اللّٰہ شرک، الحدیث :۵۰،ج۱،ص۱۲۹۔

5 ......المصنف لابن ابی شیبة،کتاب الأیمان، باب الرجل یحلف بغیر اللّٰہ او بأبیه، الحدیث : ۷،ج۳،ص۴۸۰۔

6 ......سنن ابی داود،کتاب الأیمان والنذور، باب کراھیة الحلف بالامانة، الحدیث : ۳۲۵۳،ص۱۴۶۷۔



www.dawateislami.net

तरफ़ न लौटेगा।''(1)

﴾14﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने क़सम खाई वोह ऐसा ही है जैसा उस ने कहा, अगर उस ने कहा कि वोह यहूदी है तो वोह यहूदी है, अगर कहा कि वोह नसरानी है तो नसरानी है और अगर कहा कि वोह इस्लाम से बरी है तो वोह उसी त़रह़ है और जो शख़्स जाहिलिय्यत की पुकार पुकारे वोह जहन्नमियों में से है।'' सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर्चे वोह नमाज़ पढ़े और रोज़ा रखे।'' इर्शाद फ़रमाया : ''अगर्चे वोह नमाज़ पढ़े और रोज़ा रखे।''(2)

﴾15﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को येह कहते सुना कि तब तो मैं यहूदी हूं तो इर्शाद फ़रमाया : ''(इस पर येह बात) वाजिब हो गई।''(3)

﴾16﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने इस्लाम के इ़लावा किसी दूसरे मज़्हब की झूटी क़सम खाई तो वोह अपने कहने के मुत़ाबिक़ है।''(4)

۞۞۞۞۞۞۞

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الأیمان والنذور، باب ماجاء فی الحلف بالبراءة و......الخ، الحدیث : ۳۲۵۸، ص۱۴۶۷۔

2 ......المستدرک، کتاب الأیمان والنذور، باب من حلف علی یمینہ الخ، الحدیث : ۷۸۸۷، ج۵، ص۴۲۴، بتغیرٍقلیلٍ۔

3 ......سنن ابن ماجه، ابواب الکفارات، باب من خلف بملة غیر الاسلام، الحدیث : ۲۰۹۹، ص۲۶۰۳۔

4 ......صحیح البخاری، کتاب الادب، باب من أکفرأخاه بغیرتأویل فهو کما قال، الحدیث : ۶۱۰۵، ص۵۱۵۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 415 : इस्लाम के इलावा किसी मज़हब की झूटी क़सम खाना

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इसे इसी त़रह़ ज़िक्र किया है मगर इस में ग़ौरो फ़िक्र की ज़रूरत है और ज़ाहिर येह है कि इस से वोही मुराद है जो बा'ज़ जाहिलों के बयान कर्दा इस क़ौल से मुराद है कि "अगर उस ने ऐसा किया तो वोह यहूदी है।" लेकिन इस का गुनाहे कबीरा होना झूट पर मौक़ूफ़ नहीं बल्कि इस का कहने वाला फ़ासिक़ हो जाएगा अगर्चे वोह झूटा न हो क्यूं कि मुअ़ल्लक़ करना कुफ़्र का एह़्तिमाल रखता है बल्कि येह इस में वाज़ेह़ है ख़्वाह उस की येह मुराद न हो। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम यह़्या बिन शरफ़ न-ववी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 676 हि.) की किताब "**अल अज़्कार**" में है : "अगर किसी ने कहा कि वोह यहूदी या नसरानी है या इन जैसे दीगर अल्फ़ाज़ कहे तो अगर उस ने अपने इन अक़्वाल के ज़रीए इस्लाम से ख़ारिज होने को मुअ़ल्लक़ करने का इरादा किया तो वोह फ़ौरन काफ़िर हो गया और उस पर मुरतद्दीन के अह़काम जारी होंगे और अगर इस्लाम से निकलने का इरादा न किया तो वोह ह़राम काम का मुर-तकिब हुवा लिहाज़ा उस पर सच्ची तौबा वाजिब है वोह यूं कि वोह ना फ़रमानी से रुक जाए और अपने फे़'ल पर शर्मसार हो और दोबारा कभी ऐसा न करने का अ़ज़्म करे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत चाहे और कहे : لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللّٰه या'नी **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के रसूल हैं।"[1]

इस्तिग़फ़ार करना और कलिमए शहादत पढ़ना दोनों मुस्तह़ब हैं।

# بَابُ النَّذْر

## कबीरा नम्बर 416 : नज़्र पूरी न करना (ख़्वाह वोह नज़्र इबादत की हो या झगड़े की)

इसे कबीरा गुनाह शुमार करना वाज़ेह़ है क्यूं कि येह उस ह़क़ को अदा करने से रुकना है जिस की अदाएगी फ़िलफ़ौर लाज़िम है। पस येह ज़कात अदा न करने की त़रह़ है क्यूं कि हमारे नज़्दीक सह़ीह़ येह है कि जिस त़रह़ नज़्र के अह़काम में वाजिबे शर-ई का त़रीक़ा अपनाया जाता है इसी त़रह़ इसे छोड़ने के बहुत बड़े गुनाह में वाजिब का त़रीक़ा अपनाया जाएगा और इस से येह हुक्म साबित होता है कि इसे छोड़ना कबीरा गुनाह और फ़िस्क़ है।

❁❁❁❁❁❁❁

1 ......الاذکارللنووی، کتاب حفظ اللسان، باب فی الفاظ یکرہ استعمالها، ص۲۸۵ـ



www.dawateislami.net

# باب القضاء

## कबीरा नम्बर 417 : क़ाज़ी बनाना

## कबीरा नम्बर 418 : क़ाज़ी बनना

## कबीरा नम्बर 419 : अपनी ख़ियानत व ज़ुल्म को जानते हुए ओ़ह्दए क़ज़ा का सुवाल करना

## कबीरा नम्बर 420 : जाहिल को क़ाज़ी बनाना

## कबीरा नम्बर 421 : ज़ालिम को क़ाज़ी बनाना

अ़दलो इन्साफ़ न करने वाले के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रामीने बारी तआ़ला मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

﴾1﴿ وَمَنۡ لَّمۡ یَحۡکُمۡ بِمَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰہُ فَاُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡکٰفِرُوۡنَ ﴿۴۴﴾ (پ۶، المائدۃ:۴۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो **अल्लाह** के उतारे पर हुक्म न करे वोही लोग काफ़िर हैं।

﴾2﴿ وَمَنۡ لَّمۡ یَحۡکُمۡ بِمَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰہُ فَاُولٰٓئِکَ ہُمُ الظّٰلِمُوۡنَ ﴿۴۵﴾ (پ۶، المائدۃ:۴۵)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो **अल्लाह** के उतारे पर हुक्म न करे तो वोही लोग ज़ालिम हैं।

﴾3﴿ وَمَنۡ لَّمۡ یَحۡکُمۡ بِمَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰہُ فَاُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡفٰسِقُوۡنَ ﴿۴۷﴾ (پ۶، المائدۃ:۴۷)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो **अल्लाह** के उतारे पर हुक्म न करें तो वोही लोग फ़ासिक़ हैं।

### क़ाज़ी बनना गोया बिग़ैर छुरी के ज़ब्ह़ होना है :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ओ़ह्दए क़ज़ा जिस के सिपुर्द किया गया या जिसे लोगों के दरमियान फ़ैसला करने वाला बनाया गया उसे बिग़ैर छुरी के ज़ब्ह़ किया गया।''(1)

---

(1)......جامع الترمذی، ابواب الاحکام، باب ما جاء عن رسول اللہ ﷺ فی القاضی، الحدیث: ۱۳۲۵،ص۱۷۸۵۔



www.dawateislami.net

## शर्हे ह़दीस :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ख़त्ताबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 388 हि.) इस ह़दीसे पाक की वज़ाहत में फ़रमाते हैं : "इस का मा'ना येह है कि छुरी के साथ ज़ब्ह़ करने से रूह़ निकलने की तक्लीफ़ जल्दी ख़त्म होने की वज्ह से ज़बीह़ा को सुकून मिलता है लेकिन जब उसे छुरी के बिग़ैर ज़ब्ह़ किया जाए तो येह उस के लिये ज़ियादा तक्लीफ़ देह है।"

एक क़ौल के मुत़ाबिक़ ज़ाहिरी उ़र्फ़ व आ़दत में छुरी के साथ ज़ब्ह़ किया जाता है मगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ज़ाहिरी आ़दत से हट कर दूसरा मा'ना मुराद लिया ताकि मा'लूम हो जाए कि इस क़ौल से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुराद उस के दीन की हलाकत का ख़ौफ़ है न कि बदन की हलाकत का। इस के इ़लावा और एह़्तिमालात भी हो सकते हैं लेकिन हर ए'तिबार से इस से मुराद येह है कि क़ाज़ी ने ओ़ह्दए क़ज़ा क़बूल कर के ख़ुद को ऐसी मशक़्क़त के लिये पेश कर दिया है कि जिसे आ़दतन बरदाश्त नहीं किया जाता और इस की वज्ह से वोह अ़ज़ाबे जब्बार व ग़-ज़बे क़ह्हार का मुस्तह़िक़ हो जाता है। इसी वज्ह से अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इस से इन्तिहाई नफ़रत की। नीज़ ओ़ह्दए क़ज़ा क़बूल न करने वाले को फ़ासिक़ क़रार नहीं दिया जाएगा अगर्चे उस पर येह ज़िम्मादारी क़बूल करना लाज़िम हो जाए क्यूं कि उस की उ़ज़्र ख़्वाही मह़्ज़ इस अन्देशे की वज्ह से है कि इस ओ़हदे को क़बूल करने वाला अक्सर बे शुमार हलाकतों और फ़ितनों का शिकार हो जाता है।

## क़ाज़ी 3 त़रह़ के हैं :

﴾2﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ाज़ी (फ़ैसला करने वाले) 3 त़रह़ के हैं : एक जन्नत में है और दो जहन्नम में (1) जन्नत में वोह है जिस ने ह़क़ जान कर उस के मुत़ाबिक़ फ़ैसला किया (2) जिस ने ह़क़ जानते हुए फ़ैसले में ज़ुल्म किया वोह जहन्नम में है और (3) जिस ने न जानते हुए लोगों में फ़ैसला किया वोह भी जहन्नम में है।"[1]

﴾3﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ाज़ी 3 क़िस्म के हैं : दो जहन्नम में और एक जन्नत में : (1) जिस ने ह़क़ को जानते हुए नाह़क़ फ़ैसला किया वोह जहन्नम में है (2) जिस ने न जानते हुए लोगों के ह़ुक़ूक़ ज़ाएअ़ कर दिये वोह

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب القضاء، باب فی القاضی یخطیء، الحدیث : ۳۵۷۳، ص ۱۴۸۸۔



www.dawateislami.net

जहन्नम में है और (3) जिस ने हक़ के मुताबिक़ फ़ैसला किया वोह जन्नत में है।''(1)

## सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का ओ़ह्दए क़ज़ा क़बूल न करना :

﴾4﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से इर्शाद फ़रमाया : ''जाओ क़ाज़ी बन जाओ।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ''ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! क्या आप मुझे इस से मुआ़फ़ फ़रमाएंगे ?'' अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फिर इर्शाद फ़रमाया : ''जाओ और लोगों के दरमियान फ़ैसला करो।'' तो उन्हों ने दोबारा अ़र्ज़ की : ''ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! मुझे इस से मुआ़फ़ी दे दीजिये।'' तो अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''मैं ने तुम्हें क़ाज़ी बना कर भेजने का पुख़्ता इरादा कर लिया है।'' तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''जल्दी न कीजिये ! मैं ने रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना है कि ''जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से पनाह मांगी तह़क़ीक़ उस ने ऐसी हस्ती से पनाह मांगी जिस से पनाह मांगी जाती है।'' तो अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''हां ! ऐसा ही है।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ''पस मैं क़ाज़ी बनने से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करता हूं।'' अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ''तुम्हें किस चीज़ ने क़ाज़ी बनने से रोका ह़ालां कि तुम्हारे वालिद भी तो फ़ैसले किया करते थे ?'' अ़र्ज़ की : ''इस लिये कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : ''जो क़ाज़ी था और जहालत की वज्ह से नाह़क़ फ़ैसला किया तो वोह जहन्नमियों में से है और जो क़ाज़ी था और उस ने ज़ुल्म के साथ फ़ैसला किया तो वोह भी जहन्नमी है और जो क़ाज़ी था और उस ने अ़दलो इन्साफ़ से फ़ैसला किया तो उस ने बराबरी की बुन्याद पर जां बख़्शी का सुवाल किया।'' मैं इस के बा'द किस चीज़ की उम्मीद करूं ?''(2)

﴾5﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन ईसा तिरमिज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 279 हि.) ने इस रिवायत को मुख़्तसरन बयान किया है कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने अ़र्ज़ की : ''मैं ने हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना कि ''जो क़ाज़ी था और उस ने अ़दलो इन्साफ़ से फ़ैसला किया तो येह इस

---

1 ......جامع الترمذی، ابواب الاحکام،باب ماجاء عن رسول اللہ ﷺ فی القاضی، الحدیث : ۱۳۲۲، ص۱۷۸۵، بتغیرٍقلیلٍ۔

2 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب القضاء، الحدیث :۵۰۳۴، ج۷، ص۲۵۷۔



www.dawateislami.net

लाइक़ है कि बराबरी की बुन्याद पर क़ज़ा (के शर) का बदला हो जाए।'' मैं इस के बा'द किस चीज़ की उम्मीद करूं ?''[1]

## बरोज़े क़ियामत क़ाज़ी की तमन्ना :

﴾6﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''क़ियामत के दिन आ़दिल क़ाज़ी पर ऐसी घड़ी आएगी कि वोह तमन्ना करेगा कि काश ! वोह दो शख़्सों के दरमियान कभी एक खजूर का भी फ़ैसला न करता।''[2]

﴾7﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''क़ियामत के दिन आ़दिल क़ाज़ी को बुलाया जाएगा पस वोह शिद्दते ह़िसाब की वज्ह से तमन्ना करेगा कि काश ! इस ने अपनी ज़िन्दगी में कभी दो बन्दों के दरमियान भी फ़ैसला न किया होता।''[3]

## ह़दीसे पाक की वज़ाह़त :

تَمْرَةٌ और عُمُرُهٗ दोनों लिखने के ए'तिबार से क़रीब क़रीब हैं, शायद ! इन में से एक में इश्तिबाह की वज्ह से ग़-लती़ वाक़ेअ़ हुई। लेकिन मज़्कूरा मौक़िफ़ इख़्तियार करने की कोई ह़ाजत नहीं क्यूं कि मा'ना दोनों सूरतों में सह़ीह़ है, इन दोनों के अलग अलग रिवायत होने से कौन सी चीज़ मानेअ़ है ?

## रोज़े मह़शर हुक्मरानों की ह़ालत :

﴾8﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो मुसल्मानों के किसी मुआ़-मले का वाली (या'नी ज़िम्मादार) बना उसे क़ियामत के दिन लाया जाएगा यहां तक कि उसे जहन्नम के एक पुल पर खड़ा कर दिया जाएगा, अगर वोह नेकी करने वाला हुवा तो नजात पा जाएगा और अगर बुराई करने वाला हुवा तो पुल उस से फट जाएगा और वोह 70 साल तक उस में गिरता रहेगा जब कि जहन्नम सियाह और तारीक है।''[4]

---

1 ......جامع الترمذی، ابواب الاحکام، باب ما جاء عن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فی القاضی، الحدیث : ۱۳۲۲، ص۱۷۸۴۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السیدۃ عائشۃ، الحدیث : ۲۴۵۱۸، ج۹، ص۳۵۱۔

3 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب القضاء، الحدیث : ۵۰۳۳، ج۷، ص۲۵۷۔

4 ......المعجم الکبیر، الحدیث : ۱۲۱۹، ج۲، ص۳۹، "نجا" بدلہ "تجاوز"۔



www.dawateislami.net

﴾9﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो शख़्स 10 या इस से ज़ियादा लोगों के किसी मुआ-मले का वाली बना वोह बरोज़े क़ियामत बारगाहे इलाही में इस त़रह़ आएगा कि उस के हाथ गरदन से बंधे हुए होंगे, उसे (इस अ़ज़ाब से) उस की नेकी छुड़ाएगी या उस का गुनाह उसे मज़ीद जकड़ लेगा, इस (सरदारी व विलायत) की इब्तिदा मलामत, दरमियान नदामत और इन्तिहा रोज़े मह़शर का अ़ज़ाब है।''(1)

﴾10﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अबू ज़र ! मैं तुझे कमज़ोर देखता हूं और तेरे लिये वोही पसन्द करता हूं जो अपने लिये पसन्द करता हूं, तुम न तो दो आदमियों पर अमीर बनना और न ही यतीम के माल का वाली बनना।''(2)

﴾11﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अ़ब्दुर्रह़मान बिन समुरह ! इमारत का सुवाल न करो, क्यूं कि अगर वोह तुझे बिग़ैर मांगे दी गई तो इस पर तेरी मदद की जाएगी और अगर मांगने पर दी गई तो तुझे उस के सिपुर्द कर दिया जाएगा।''(3)

﴾12﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने मन्सबे क़ज़ा की ख़्वाहिश की और इस के लिये सिफ़ारिश लाया तो वोह अपने नफ़्स के सिपुर्द कर दिया जाएगा और जिसे ज़बर दस्ती क़ाज़ी बनाया गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देता है जो उसे राहे रास्त पर चलाता है।''(4)

﴾13﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने मन्सबे क़ज़ा का सुवाल किया वोह अपने नफ़्स के ह़वाले किया गया और जो इस पर मजबूर किया गया तो उस पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा दिया जाता है जो उसे राहे रास्त पर रखता है।''(5)

﴾14﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने मुसल्मानों का क़ाज़ी बनने का मुत़ा-लबा किया यहां तक कि इसे ह़ासिल कर लिया फिर उस का अ़द्ल उस के ज़ुल्म पर ग़ालिब आ गया तो उस के लिये जन्नत है और अगर उस का

---

(1) ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی امامة الباهلی، الحدیث:۲۲۳۶۳، ج۸، ص۳۰۵، "اوثقه"بدله"اوبقه"۔

(2) ......صحیح مسلم، کتاب الامارة، باب کراهة الامارة بغیرضرورة، الحدیث: ۴۷۲۰، ص۱۰۰۵۔

(3) ......صحیح البخاری، کتاب کفارات الایمان، باب الکفارة قبل الحنث وبعده، الحدیث: ۶۷۲۲، ص۵۶۲۔

(4) ......جامع الترمذی، ابواب الاحکام، باب ما جاء عن رسول اللهﷺ فی القاضی، الحدیث: ۱۳۲۴، ص۱۷۸۵۔

(5) ......سنن ابن ماجه، ابواب الاحکام، باب ذکر القضاة، الحدیث: ۲۳۰۹، ص۲۶۱۵۔



www.dawateislami.net

जु़ल्म उस के अ़द्ल पर ग़ालिब आया तो उस के लिये जहन्नम है।''(1)

﴾15﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : ''यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ाज़ी की ताईद फ़रमाता है जब तक वोह ज़ुल्म न करे और जब ज़ुल्म करता है तो उस का साथ छोड़ देता है और शैत़ान उस के साथ चिमट जाता है।''(2)

﴾16﴿...... एक रिवायत में है कि ''जब वोह ज़ुल्म करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से बरी हो जाता है।''(3)

## अ़दालते फ़ारूक़ी :

﴾17﴿...... एक मुसल्मान और यहूदी अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की बारगाह में एक झगड़ा ले कर आए, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने यहूदी को ह़क़ पर पाया तो उस के ह़क़ में फ़ैसला कर दिया। इस पर यहूदी ने कहा : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप ने ह़क़ के साथ फ़ैसला किया।'' तो अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उसे दुर्रा मारा और दरयाफ़्त फ़रमाया : ''तुझे कैसे मा'लूम हुवा ?'' तो यहूदी ने कहा : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम तौरात में पाते हैं कि जो भी क़ाज़ी ह़क़ के साथ फ़ैसला करता है तो उस के दाईं बाईं त़रफ़ मौजूद दो फ़रिश्ते उसे राहे रास्त पर रखते हैं और जब तक वोह ह़क़ के साथ रहता है उसे ह़क़ के मुवाफ़िक़ रखते हैं और जब वोह ह़क़ को छोड़ देता है तो दोनों बुलन्द हो जाते और उसे छोड़ देते हैं।''(4)

﴾18﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''क़ियामत के दिन क़ाज़ी को लाया जाएगा और उसे ह़िसाब के लिये जहन्नम के एक किनारे पर खड़ा किया जाएगा फिर अगर गिरने का हुक्म दिया गया तो वोह इस में 70 साल तक गिरता रहेगा।''(5)

﴾19﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो शख़्स भी लोगों के किसी मुआ़-मले का वाली बना उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जहन्नम के

---

(1)......سنن ابی داود، کتاب القضاء، باب فی القاضی یخطئ، الحدیث : ۳۵۷۵، ص۱۴۸۸ ـ

(2)......جامع الترمذی، ابواب الاحکام، باب ما جاء فی الامام العادل، الحدیث : ۱۳۳۰، ص۱۷۸۵ ـ

(3)......المستدرک، کتاب الاحکام، باب ان اللّٰہ مع القاضی ما لم یجر، الحدیث : ۷۱۰۸، ج۵، ص۱۲۷ ـ

(4)......الموطأ للامام مالک، کتاب الاقضیة، باب الترغیب فی القضاء بالحق، الحدیث : ۱۴۶۳، ج۲، ص۲۴۳ ـ

(5)......البحرالزخارالمعروف بمسند البزار، مسند عبد اللّٰہ بن مسعود، الحدیث : ۱۹۳۹، ج۵، ص۳۲۱، دون قولہ" للحساب"ـ



www.dawateislami.net

एक पुल पर खड़ा करेगा तो पुल इस की वज्ह से थरथर कांपने लगेगा, पस वोह या तो नजात पाने वाला होगा या न होगा, उस की हड्डियां एक दूसरी से जुदा हो जाएंगी, फिर अगर नजात पाने वाला न हुवा तो उसे जहन्नम में क़ब्र की त़रह़ तारीक कूंएं में डाल दिया जाएगा जिस की तह तक वोह 70 साल में भी न पहुंचेगा।''(1)

## रआ़या का ख़याल न रखने वाला जहन्नमी है :

﴾20﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो अमीर मुसल्मानों के उमूर का वाली बनता है लेकिन उन के लिये न तो कोशिश करता है और न ही उन की ख़ैर ख़्वाही करता है वोह उन के साथ जन्नत में दाख़िल न होगा।''(2)

﴾21﴿...... एक रिवायत में यूं है : ''वोह लोगों के लिये इस त़रह़ कोशिश नहीं करता जैसे वोह अपने लिये कोशिश या अपनी ख़ैर ख़्वाही करता है।''(3)

﴾22﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो लोगों के किसी मुआ़-मले का ज़िम्मादार बना फिर मिस्कीन, मज़्लूम और ह़ाजत मन्द पर अपना दरवाज़ा बन्द रखा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़क़्र व ह़ाजत के वक़्त उस पर अपनी रह़मत के दरवाज़े बन्द रखेगा जब कि वोह उस की रह़मत का ज़ियादा मोह़ताज होगा।''(4)

## तम्बीह :

मैं ने किसी को मज़्कूरा 5 गुनाहों को कबीरा गुनाह शुमार करते हुए नहीं पाया लेकिन इन का गुनाहे कबीरा होना ज़िक्र कर्दा सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका से वाज़ेह़ है। दूसरे गुनाह का कबीरा होना यूं वाज़ेह़ है कि इस बाब में मज़्कूर पहली ह़दीसे पाक इस के मु-तअ़ल्लिक़ सरीह़ है कि जिस में बिग़ैर छुरी के ज़ब्ह़ करने के साथ शदीद अ़ज़ाब और वई़द की त़रफ़ इशारा किया गया है। नीज़ इस को मेरे ज़िक्र कर्दा उ़न्वान पर मह़मूल करना वाज़ेह़ व मु-तअ़य्यन है। इसी त़रह़ दूसरी और तीसरी ह़दीसे पाक भी इस के मु-तअ़ल्लिक़ वाज़ेह़ है क्यूं कि जाहिल और ज़ालिम क़ाज़ियों पर जहन्नमी होने का हुक्म लगाना एक सख़्त वई़द है और जब ओ़ह्दए क़ज़ा

1 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنيا ،كتاب الأهوال، باب ذكر الحساب ــ الخ، الحديث : ۲۴۲،ج۶،ص۲۴۳ـ

2 ......صحيح مسلم، كتاب الامارة، باب فضيلة الامير العادل......الخ، الحديث : ۴۷۳۱،ص۱۰۰۶، بتغيرٍقليلٍـ

3 ......المعجم الصغير للطبرانی، الحديث : ۴۲۶،الجزء الاول،ص ۱۶۷ـ

4 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث رجل اصحاب النبی، الحديث : ۱۵۶۵۱،ج۵،ص۳۱۵، بتغيرٍقليلٍـ



www.dawateislami.net

के मु-तअ़ल्लिक़ शदीद वई़द साबित हो गई तो इस का मुत़ा-लबा व सुवाल करने के बारे में ख़ुद बख़ुद साबित हो जाएगी और आख़िरी दो गुनाहों के मु-तअ़ल्लिक़ दूसरी और तीसरी ह़दीसे मुबा-रका वाज़ेह़ है। इस बह़्स से मज़्कूरा 5 गुनाहों को कबीरा शुमार करना वाज़ेह़ हो जाता है।

## ओ़हदए क़ज़ा के मु-तअ़ल्लिक़ अस्लाफ़ के फ़रामीन :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "क़ाज़ी को चाहिये कि एक दिन फ़ैसले करे और एक दिन अपने आप पर रोए।"(1)

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "क़ियामत के दिन ह़िसाब के लिये सब से पहले क़ाज़ियों को बुलाया जाएगा।"(2)

﴾3﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं कि मैं ने शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : "हर क़ाज़ी और वाली (या'नी ज़िम्मादार) को क़ियामत के दिन लाया जाएगा यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पुल सिरात़ पर खड़ा किया जाएगा और फिर उस का नामए आ'माल खोल कर तमाम मख़्लूक़ के सामने पढ़ा जाएगा, अगर वोह आ़दिल हुवा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के अ़द्ल की वज्ह से उसे नजात देगा और अगर आ़दिल न हुवा तो पुल टूटने लगेगा और उस के तमाम आ'ज़ा के दरमियान इतना इतना (या'नी बहुत ज़ियादा) फ़ासिला हो जाएगा, फिर जहन्नम की त़रफ़ पुल में शिगाफ़ पड़ जाएगा।"(3)

﴾4﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना मक्ह़ूल رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "अगर मुझे मन्सबे क़ज़ा और क़त्ल किये जाने के दरमियान इख़्तियार दिया जाता तो मैं अपने क़त्ल किये जाने को पसन्द करता और ओ़हदए क़ज़ा को इख़्तियार न करता।"(4)

﴾5﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब सख़्तियानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "मैं ने लोगों

---

(1)......المجالسة وجواهر العلم،الرقم ۳۲۸،ج ۱،ص ۱۷۲۔

(2)......المجالسة وجواهر العلم،الرقم ۳۲۷،ج ۱،ص ۱۷۲۔

(3)......كتاب الكبائر للذهبى، الكبيرة الحادية والثلاثون:القاضى السوء، ص ۱۴۷۔

(4)......تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر، الرقم ۷۲۲۲ مكحول بن دبر، ج ۶۰، ص ۲۲۱۔



www.dawateislami.net

में सब से ज़ियादा इल्म वाले को ओ़ह्दए क़ज़ा से सब से ज़ियादा भागने वाला पाया।"(1)

﴾6﴿...... मालिक बिन मुन्ज़िर ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बसरा का क़ाज़ी बनाने के लिये बुलवाया तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इन्कार कर दिया। पस उसे आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से दुश्मनी हो गई और कहने लगा : "इस ओ़हदे पर बैठ जाओ वरना मैं तुम्हें कोड़े लगाऊंगा।" तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर तुम ऐसा करोगे तो कर सकते हो क्यूं कि तुम ह़ाकिम हो, लेकिन दुन्या की ज़िल्लत आख़िरत की ज़िल्लत से बेहतर है।"(2)

﴾7﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 161 हि.) से कहा गया कि ह़ज़रते सय्यिदुना शुरैह़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को क़ाज़ी बना दिया गया है तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "अफ़्सोस ! उन्हों ने कैसे शख़्स को बरबाद कर दिया।"(3)

## ख़ुलासए कलाम :

ह़ासिले कलाम येह है कि येह ओ़हदा तमाम ओ़हदों से ख़त़रनाक और तमाम मशक़्क़तों और ख़राबियों से ज़ियादा भयानक है। मैं ने बुरे ओ़ह्दए क़ज़ा के बारे में एक मुस्तक़िल तस्नीफ़ की है जिस का नाम "جَمْرُ الْغَضَا لِمَنْ تَوَلَّى الْقَضَا" है। उस में क़ाज़ियों के ऐसे इन्तिहाई क़बीह़ अह़वाल और बुरे आ'माल ज़िक्र किये हैं जो समाअ़तों और त़बीअ़तों को ना गवार गुज़रते हैं क्यूं कि ऐसे अफ़्आ़ल पर जुर्अत यक़ीन दिलाती है कि वोह परहेज़ गार लोगों में से नहीं बल्कि मुसल्मानों में से भी नहीं।

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस के फ़ज़्लो करम से आ़फ़िय्यत का सुवाल करते हैं। (आमीन)

❁❁❁❁❁❁❁

---

(1)......تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر، الرقم ٣٣٠٢عبد الله بن زيد، ج٢٨، ص٣٠٣۔

(2)......حلية الاولياء،محمد بن واسع، الرقم : ٢٧٠٧، ج٢، ص٣٩٧۔

(3)......الكامل فى ضعفاء الرجال، الرقم ٨٨٨ شريك بن عبد الله، ج٥، ص١٣۔

كتاب الكبائر للذهبى، الكبيرة الحادية والثلاثون:القاضى السوء، ص١٤٧۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 422 : ह़क़ को बाति़ल करने वाले की मदद करना

## बाति़ल की मदद ग़-ज़बे इलाही का मूजिब है :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गु़यूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : "जिस ने किसी झगड़े में बाति़ल की मदद की वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब में रहेगा यहां तक कि उसे छोड़ दे।"(1)

﴾2﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने किसी झगड़े में नाह़क़ मदद की वोह ग़-ज़बे इलाही का मुस्तह़िक़ हो गया।"(2)

﴾3﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो शख़्स अपनी क़ौम की नाह़क़ मदद करता है वोह कूंएं में गिरने वाले उस ऊंट की मिस्ल है जिसे दुम पकड़ कर खींचा जाता है।"(3)

## शर्हे ह़दीस :

इस का मा'ना येह है कि वोह गुनाह और हलाकत में इस त़रह़ मुब्तला हो गया जैसा कि ऊंट जब किसी हलाकत ख़ेज़ कूंएं में गिर जाता है तो उसे दुम पकड़ कर खींचा जाता है लेकिन फिर भी उसे बचाया नहीं जा सकता।

﴾4﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हु़दूद में से किसी ह़द को रोकने की सिफ़ारिश की वोह हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी में रहेगा यहां तक कि उसे छोड़ दे और जिस ने किसी ऐसे झगड़े में किसी मुसल्मान पर शदीद ग़ज़ब किया जिस (के ह़क़ या बाति़ल होने) का उसे इ़ल्म न था तो उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़क़ में उस की मुख़ा-लफ़त की और उस की नाराज़ी चाही और उस पर यौमे क़ियामत तक लगातार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत बरसती रहेगी और जिस ने दुन्या में किसी मुसल्मान को ऐबदार करने के लिये उस के ख़िलाफ़ कोई बात फैलाई जब कि वोह इस से बरी था तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उसे क़ियामत

---

(1) ......المستدرک، کتاب الاحکام، باب لا تجوزشهادة بدوی علی صاحب قریة، الحدیث : ۷۱۳۳، ج۵، ص۱۳۵۔

(2) ......سنن ابی داود، کتاب القضاء، باب فی الرجل یعین علی......الخ، الحدیث : ۳۵۹۸، ص۱۴۹۰۔

(3) ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرهن، باب ماجاء فی الفتن، الحدیث : ۵۹۱۲، ج۷، ص۵۷۳۔



www.dawateislami.net

के दिन जहन्नम में पिघलाए यहां तक कि वोह अपनी कही हुई बात को साबित करे।''(1)

## ग़-ज़बे इलाही के मुस्तह़िक़ लोग :

﴾5﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने **हुदूदुल्लाह** में से किसी ह़द को रोकने की सिफ़ारिश की उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस के मुल्क में मुक़ाबला किया और जिस ने झगड़े में किसी की मदद की ह़ालां कि वोह नहीं जानता कि वोह ह़क़ पर है या बात़िल पर, तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी में रहेगा यहां तक कि उसे छोड़ दे और जो किसी ऐसी क़ौम के साथ चला जो समझती हो कि येह गवाह है ह़ालां कि वोह गवाह न हो तो वोह झूटे गवाह की त़रह़ है और जिस ने झूटा ख़्वाब बयान किया (बरोज़े क़ियामत) उसे पाबन्द किया जाएगा कि जव के दाने के दोनों कनारों के दरमियान गिरह लगाए और मुसलमान को गाली देना फ़िस्क़ और (ह़लाल जान कर) उसे क़त्ल करना कुफ़्र है।''(2)

﴾6﴿...... मदीने के ताजवर, रसूलों के अफ़्सर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : ''जिस ने किसी ज़ालिम की बात़िल काम पर मदद की ताकि वोह उस के ज़रीए ह़क़ को दूर करे तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़िम्मे से बरी है और जो ज़ालिम के साथ उस की मदद के लिये चला ह़ालां कि वोह जानता है कि येह ज़ालिम है तो वोह इस्लाम से ख़ारिज हो गया(3)।''(4)

---

1 ......الترغیب والترھیب، کتاب القضاء، باب الترھیب من اعانة المبطل......الخ، الحدیث: ۳۴۳۹، ج۳، ص۱۵۱۔

2 ......المعجم الاوسط، الحدیث: ۸۵۵۲، ج۶، ص۲۱۴۔

3 ...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی इसी ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : ''**वोह इस्लाम से ख़ारिज है**'' येह कलाम ज़ज्रो तौबीख़ के लिये है न कि ह़क़ीक़तन इस्लाम से ख़ारिज होना मुराद है या इस से मुराद येह है कि वोह मुसल्मानों के त़रीक़े से हट गया या इस से मुराद येह है कि अगर वोह उस के ज़ुल्म और ज़ुल्म पर मुआ़-वनत को ह़लाल जाने तब वोह इस्लाम से ख़ारिज है। (فیض القدیر للمناوی، تحت الحدیث: ۹۰۴۹، ج۶، ص۲۹۷) और मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 6, सफ़ह़ा 679 पर फ़रमाते हैं : ''चलने से मुराद मुत़्लक़न उस की ज़ुल्म पर मदद देना है। ख़्वाह उस के साथ चल कर हो या घर में बैठे बैठे, फिर ख़्वाह ज़बान से हो या क़लम से, ज़ुल्म की मदद बहर ह़ाल ह़राम है। रब तआ़ला फ़रमाता है : وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَی الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ (پ۶، المائدة:۲) (और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो) फ़ी ज़माना ज़ालिमों से ज़ियादा ज़ालिमों के ह़िमायती लोग हैं। या'नी येह ज़ालिमों के ह़िमायती इस्लाम के नूर से निकल गए या इस्लाम की ह़क़ीक़त से ख़ारिज हो गए कि ह़क़ीक़ते इस्लाम येह है कि लोग उस के शर से सलामत रहें।'' (مرقات)

4 ......المعجم الاوسط، الحدیث: ۲۹۴۴، ج۲، ص۱۸۰۔ المعجم الکبیر، الحدیث: ۶۱۹، ج۱، ص۲۲۷۔



www.dawateislami.net

## तम्बीह :

मज़्कूरा गुनाह को बयान कर्दा सरीह़ अह़ादीसे मुबा-रका की रोशनी में कबीरा गुनाह शुमार किया गया है और येही ज़ाहिर है अगर्चे मैं ने किसी को इसे कबीरा गुनाह शुमार करते हुए नहीं पाया।

۞۞۞۞۞۞۞

## कबीरा नम्बर 423 : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी मोल ले कर क़ाज़ी वग़ैरा का लोगों को राज़ी करना

﴾1﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने लोगों को नाराज़ कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा चाही तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उस से राज़ी हो जाएगा और लोगों को भी उस से राज़ी कर देगा और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को नाराज़ कर के लोगों को राज़ी करना चाहा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उस से नाराज़ हो जाएगा और लोगों को भी उस से नाराज़ कर देगा।"(1)

﴾2﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने लोगों को राज़ी रखने की ख़ातिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी मोल ली **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से नाराज़ हो जाएगा और उन्हें भी उस से नाराज़ कर देगा जिन्हें उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को नाराज़ कर के राज़ी किया था और जिस ने लोगों को नाराज़ कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को राज़ी किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उस से राज़ी हो जाएगा और उन्हें भी उस से राज़ी कर देगा जिन्हें उस ने रिज़ाए इलाही की ख़ातिर नाराज़ किया था यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे मुज़य्यन फ़रमा देगा और उस के क़ौल व फ़े'ल को उन लोगों की निगाहों में भी अच्छा कर देगा।"(2)

﴾3﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने रब عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी वाले कामों से ह़ाकिम को राज़ी किया वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीन से ख़ारिज हो गया।"(3)

---

1 ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب الصدق والامر......الخ، الحدیث: ۲۷۶، ج۱، ص۲۴۷۔

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۱۶۹۶، ج۱۱، ص۲۱۴۔

3 ......المستدرک، کتاب الاحکام، باب من ارضی سلطانا......الخ، الحدیث: ۷۱۵۳، ج۵، ص۱۴۱۔



www.dawateislami.net

﴾4﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानियां कर के लोगों की ता'रीफ़ें त़लब कीं तो उस की ता'रीफ़ें करने वाला उस की मज़म्मत करने लगेगा।"(1)

﴾5﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने लोगों को नाराज़ कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को राज़ी किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे काफ़ी है और जिस ने लोगों को राज़ी कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को नाराज़ किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे लोगों के ही सिपुर्द फ़रमा देगा।"(2)

﴾6﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने लोगों की रिज़ा मन्दी में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी चाही तो उस की ता'रीफ़ करने वाला उस की मज़म्मत करने लगेगा।"(3)

﴾7﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने लोगों के लिये वोह चीज़ पसन्द की जिस से वोह मह़ब्बत करते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (की ना फ़रमानी कर के उस) से मुक़ाबला किया तो वोह बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ालत में मिलेगा कि वोह उस से नाराज़ होगा।"(4)

## तम्बीह :

मज़्कूरा गुनाह को बयान कर्दा सरीह़ अह़ादीसे मुबा-रका की रोशनी में कबीरा गुनाह शुमार किया गया है और येही ज़ाहिर है अगर्चे मैं ने किसी को इसे कबीरा गुनाह शुमार करते हुए नहीं पाया।

❁❁❁❁❁❁❁

(1)......الزهد الكبير للبيهقى، باب الورع والتقوى، الحديث : ۸۸۸، ص۳۳۱۔

(2)......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب البر والاحسان، باب الصدق والامر......الخ، الحديث : ۲۷۷، ج۱، ص۲۴۷۔

(3)......الزهد الكبير للبيهقى، باب الورع والتقوى، الحديث : ۸۸۷، ص۳۳۱۔

(4)......المعجم الكبير، الحديث : ۴۹۹، ج۱۷، ص۱۸۶۔



www.dawateislami.net

**कबीरा नम्बर 424 :** रिश्वत लेना ख़्वाह देने वाला ह़क़ पर हो

**कबीरा नम्बर 425 :** बात़िल के लिये रिश्वत देना

**कबीरा नम्बर 426 :** रिश्वत देने और लेने वाले के दरमियान वासित़ा बनना

**कबीरा नम्बर 427 :** ओ़ह्दए क़ज़ा देने पर रिश्वत लेना

**कबीरा नम्बर 428 :** ओ़ह्दए क़ज़ा के लिये रिश्वत देना जब कि उस पर लाज़िम न हुवा हो और न ही उस पर माल ख़र्च करना लाज़िम हो

## क़ुरआने पाक में रिश्वत की मज़म्मत :

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَلَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَیْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَ تُدْلُوْا بِهَاۤ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِیْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَ اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ۠ (پ۲، البقرۃ:۱۸۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और आपस में एक दूसरे का माल नाह़क़ न खाओ और न ह़ाकिमों के पास उन का मुक़द्दमा इस लिये पहुंचाओ कि लोगों का कुछ माल ना जाइज़ त़ौर पर खा लो जानबूझ कर।

## आयते मुबा-रका की तफ़्सीर :

मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि मज़्कूरा आयए मुबा-रका में खाने से ख़ास त़ौर पर खाना मुराद नहीं लेकिन चूंकि मालो दौलत से सब से बड़ा मक़्सूद खाना है और माल ख़र्च करने वाले के मु-तअ़ल्लिक़ कहा जाता है कि उस ने खाया लिहाज़ा खाने का ख़ास त़ौर पर ज़िक्र किया गया और लफ़्ज़े ''بِالْبَاطِلِ'' बात़िल त़रीक़े की तमाम सूरतों को और शारेअ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मन्अ़ कर्दा तमाम उमूर को शामिल है ख़्वाह उन की ज़ात में ख़राबी हो जैसे नशा आवर और ईज़ा देने वाली अश्या या उस के हुसूल में ख़राबी हो जैसे मग़सूबा और चोरी की हुई चीज़ या उस के इस्ति'माल की जगह में ख़राबी हो जैसे वोह इसे गुनाह में ख़र्च करता हो। और ''وَتُدْلُوْا بِهَاۤ اِلَى الْحُكَّامِ'' का अ़त़्फ़ لِتَاْكُلُوْا पर है। इस की दलील येह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़िराअत में ''وَلَا تُدْلُوْا بِهَا'' है बा'ज़ का क़ौल इस



www.dawateislami.net

के बर अ़क्स है। اِدْلَاء का मा'ना है, सैराबी चाहने के लिये कूंएं में डोल डालना और (बाब نَصَرَ से) دَلَا का मा'ना है कि उस ने डोल बाहर निकाला फिर हर क़ौल व फ़े'ल की अदाएगी को اِدْلَاء कहा जाने लगा। इस का एक मा'ना येह है कि ''اَدْلٰى بِحُجَّتِهٖ या'नी इस ने अपना दा'वा साबित करने के लिये दलील पेश की।'' गोया वोह अपनी मुराद तक पहुंचने के लिय दलील देता है। इस का एक मा'ना येह भी है, ''اَدْلٰى اِلَى الْمَيِّتِ بِقَرَابَتِهٖ या'नी मय्यित की जानिब अपने क़रीबी रिश्तेदार होने की निस्बत करना।'' ताकि इस निस्बत से मीरास ह़ासिल कर सके بِهَا की ب ता'दिय्यत (या'नी फ़े'ल को मु-तअ़द्दी बनाने) के लिये है और एक क़ौल के मुत़ाबिक़ येह बाए सिब्बिय्यत है और اِدْلَاء से मुराद मालों में झगड़ा करना है। और بِالْاِثْمِ की ب सिब्बिय्यत या मुसा-ह़बत की है।

## रिश्वत को اِدْلَاء से तश्बीह देने की वज्ह :

इस की वज्ह या तो येह है कि येह दूर की ह़ाजत को क़रीब कर देती है जैसा कि पानी से भरा हुवा डोल रस्सी के ज़रीए़ दूर से क़रीब आ जाता है, पस रिश्वत के ज़रीए़ दूर की चीज़ नज़्दीक हो जाती है। या फिर येह है कि रिश्वत के ज़रीए़ ह़ाकिम बिग़ैर सुबूत के हुक्म को साबित और नाफ़िज़ कर देता है जिस त़रह़ रस्सी में डोल होता है।

## बात़िल त़रीक़े से माल खाने से मुराद :

इस के मु-तअ़ल्लिक़ चन्द अक़्वाल ज़िक्र किये जाते हैं :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और एक गुरौहे मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक बात़िल त़रीक़े से माल खाने का मत़लब येह है कि लोगों की अमानतें और वोह चीजें खाना जिन पर कोई वाज़ेह़ दलील न हो।

﴾2﴿...... एक क़ौल के मुत़ाबिक़ इस से मुराद येह है कि वसी (जिसे वसिय्यत की गई हो उस) के पास यतीम का माल हो जिस में से कुछ माल वोह ह़ाकिम के पास भेज दे ताकि वोह उस की सर परस्ती और फ़ासिद तसर्रुफ़ में बाक़ी रहे।

﴾3﴿...... बा'ज़ ने ह़ाकिम तक मुक़द्दमा पहुंचाने से झूटी गवाही मुराद ली है और بِهَا में هَا ज़मीर मज़्कूर के मा'लूम होने की वज्ह से उस की त़रफ़ लौट रही है।

﴾4﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं : इस से मुराद येह है कि वोह



www.dawateislami.net

बातिल को हक़ साबित करने के लिये क़सम उठाए।

## मज़्कूरा आयए मुबा-रका का शाने नुज़ूल :

इस आयते मुबा-रका का शाने नुज़ूल येह है कि "इमराउल क़ैस बिन आ़बिस किन्दी ने रबीआ़ बिन अ़बदान ह़ज़्रमी के ख़िलाफ़ शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक ज़मीन के मु-तअ़ल्लिक़ दा'वा किया कि इस ने मेरी ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लिया है। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से गवाही त़लब की मगर वोह पेश न कर सका तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दूसरे से इर्शाद फ़रमाया : "तेरे लिये क़सम है।" पस वोह क़सम के लिये आगे बढ़ा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर इस ने ज़ुल्मन इस का माल खाने के लिये क़सम उठाई तो यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ालत में मिलेगा कि वोह इस से ए'राज़ फ़रमाएगा।"

इस मौक़अ़ पर येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई। या'नी तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मुबाह़ कर्दा सूरतों के इ़लावा एक दूसरे का माल न खाओ।[1]

﴾5﴿...... एक क़ौल के मुत़ाबिक़ इस से मुराद ह़ाकिम को रिश्वत देना है।

﴾6﴿...... बा'ज़ मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि साबिक़ा क़ौल आयते मुबा-रका के ज़ाहिरी मा'ना के क़रीब है या'नी हुक्काम को रिश्वत न दो कि वोह तुम्हारे लिये दूसरों के हुक़ूक़ छीनें। और आयते मुबा-रका के अल्फ़ाज़ को बयान कर्दा तमाम सूरतों पर मह़मूल करना बईद अज़ क़ियास नहीं क्यूं कि येह तमाम बात़िल त़रीक़े से माल खाने को शामिल हैं।

"وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ" से मुराद येह है कि ह़ालां कि तुम उस का बात़िल होना जानते हो और बिला शुबा किसी काम की क़बाह़त को जानने के बा वुजूद उसे करना ज़ियादा क़बीह़ है और ऐसा करने वाला सज़ा का ज़ियादा ह़क़दार है।

## अह़ादीसे मुबा-रका में रिश्वत की मज़म्मत :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि ताजदारे रिसालत,

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب وعید من اقتطع......الخ، الحدیث: ۳۵۸، ص ۷۰۱۔

تفسیر البغوی، البقرۃ، تحت الایۃ ۱۸۸، ج ۱، ص ۱۱۴۔



www.dawateislami.net

शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रिश्वत लेने और देने वाले पर ला'नत फ़रमाई ।(1)

﴾2﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''रिश्वत लेने और देने वाले पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत है ।''(2)

﴾3﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''रिश्वत लेने और देने वाले दोनों जहन्नमी हैं ।''(3)

## सूद और रिश्वत की तबाह कारियां :

﴾4﴿...... हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन आ़स رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस क़ौम में ज़िना आ़म हो जाता है वोह क़ह़त़ साली में मुब्तला हो जाती है और जिस क़ौम में रिश्वत आ़म हो जाती है वोह (दुश्मन के) रो'ब का शिकार हो जाती है ।''(4)

﴾5﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि ''रसूले पाक عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़ैसले में रिश्वत लेने और देने वाले पर ला'नत फ़रमाई ।''(5)

﴾6﴿...... एक रिवायत में है कि ''नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़ैसले में रिश्वत लेने वाले, देने वाले और जो उन दोनों के दरमियान लैन दैन में मदद करता है, सब पर ला'नत फ़रमाई ।''(6)

﴾7﴿...... हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि ''सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रिश्वत लेने वाले, देने वाले और उन के माबैन लैन दैन में मदद करने वाले पर ला'नत फ़रमाई ।''(7)

---

(1)......سنن ابی داود، کتاب القضاء، باب فی کراھیة الرشوة، الحدیث: ۳۵۸۰، ص۱۴۸۸۔

(2)......سنن ابن ماجه، ابواب الاحکام، باب التغلیظ فی الحیف والرشوة، الحدیث: ۲۳۱۳، ص۲۶۱۵۔

(3)......المعجم الاوسط، الحدیث: ۲۰۲۶، ج۱، ص۵۵۰۔

(4)......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث عمرو بن العاص، الحدیث: ۱۷۸۳۹، ج۶، ص۲۴۵، "الزنا" بدله "الربا"۔

(5)......جامع الترمذی، ابواب الاحکام، باب ما جاء فی الراشی والمرتشی فی الحکم، الحدیث: ۱۳۳۶، ص۱۷۸۶۔

(6)......المستدرک، کتاب الاحکام، باب لعن رسول الله الراشی والمرتشی، الحدیث: ۷۱۴۹، ج۵، ص۱۳۹۔

اتحاف الخیرة المهرة، کتاب االقضاء، باب لعن الراشی والمرتشی، تحت الحدیث: ۶۷۱۹، ج۷، ص۱۸۶۔

(7)......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ثوبان، الحدیث: ۲۲۴۶۲، ج۸، ص۳۲۷۔



www.dawateislami.net

﴾8﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़ैसले में रिश्वत लेने और देने वाले पर ला'नत फ़रमाई ।"(1)

## लोगों की मरज़ी के मुत़ाबिक़ फ़ैसला करने वाले का अन्जाम :

﴾9﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो 10 आदमियों का वाली (या'नी ह़ाकिम) बना और उन के दरमियान उन की पसन्द या ना पसन्द के मुत़ाबिक़ फ़ैसला किया तो उस के दोनों हाथ बांध कर लाया जाएगा, अगर उस ने अ़द्ल किया और रिश्वत न ली और न ही किसी पर ज़ुल्म किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस से आज़ाद फ़रमा देगा और अगर उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाज़िल कर्दा हुक्म के ख़िलाफ़ फ़ैसला किया और रिश्वत ली और किसी की त़रफ़ दारी की तो उस का बायां हाथ दाएं के साथ कस के बांध दिया जाएगा, फिर उसे जहन्नम में फेंक दिया जाएगा और वोह 500 साल में भी उस की तह तक न पहुंचेगा ।"(2)

## रिश्वत की कमाई ख़बीस है :

﴾10﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि "फ़ैसले में रिश्वत लेना कुफ़्र है और येह लोगों के दरमियान ख़बीस कमाई है ।"(3)

## तम्बीह :

उ़न्वान में मज़्कूर गुनाहों को उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के बयान कर्दा कलाम के मुत़ाबिक़ कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और दूसरे और तीसरे गुनाह का कबीरा होना इन के मु-तअ़ल्लिक़ वारिद सरीह़ अह़ादीसे मुबा-रका की रोशनी में मुझ पर वाज़ेह़ हुवा, इस के बा'द आख़िरी दो गुनाहों को मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलाल बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى के कलाम में देखा । नीज़ उन का कलाम दूसरे और तीसरे गुनाह के बारे में मेरी बयान कर्दा वज़ाह़त की ताईद करता है और उन की इ़बारत येह है : "फ़ैसलों में रिश्वत लेना (कबीरा गुनाह है) ख़्वाह वोह बात़िल फ़ैसला करने में ले या ह़क़ फ़ैसला करने में ।" और इसी के मा'ना में

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث : ١٥٩، ج٢٣، ص٣٩٨ـ

2 ......المستدرک، کتاب الاحکام، باب لعن رسول اللّٰه الراشی والمرتشی، الحديث : ٧١٥١، ج٥، ص١٤٠، بتغيرٍـ

3 ......المعجم الكبير، الحديث : ٩١٠٠، ج٩، ص٢٢٦ـ



www.dawateislami.net

है कि ओ़हदए क़ज़ा देने पर रिश्वत लेना और ओ़हदए क़ज़ा के लिये रिश्वत देना जब कि उस पर लाज़िम न हुवा हो और न ही उस पर माल ख़र्च करना लाज़िम हो। मेरी ज़िक्र कर्दा अह़ादीसे मुबा-रका मज़्कूरा अक्सर गुनाहों के बारे में सरीह़ हैं क्यूं कि इन में रिश्वत लेने वाले, देने वाले और दोनों के दरमियान सफ़ीर (या'नी वासित़ा) बनने वाले पर ला'नत और शदीद अ़ज़ाब है।

## ज़रूरतन रिश्वत देना जाइज़ मगर लेना ह़राम है :

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के इस क़ौल की वज्ह से मैं ने दूसरे गुनाह में "بِبَاطِلٍ" की क़ैद ज़िक्र की, कि कभी रिश्वत देना जाइज़ मगर लेना ह़राम होता है जैसा कि इस मस्अले में है और जैसा कि शाइ़र की मज़म्मत से बचने के लिये उसे रिश्वत दी जाती है। लिहाज़ा ज़रूरत के बाइ़स रिश्वत देना जाइज़ मगर लेना ह़राम है क्यूं कि येह ज़ुल्म है और रिश्वत देने वाला देने पर मजबूर शख़्स की त़रह़ है। किसी ने क़ाज़ी या ह़ाकिम को रिश्वत या तोह़फ़ा दिया तो अगर येह बात़िल फ़ैसला करवाने या ना जाइज़ मक़्सद ह़ासिल करने या किसी मुसल्मान को अज़िय्यत पहुंचाने के लिये हो तो वोह रिश्वत और तोह़फ़ा देने की वज्ह से और लेने वाला लेने की वज्ह से फ़ासिक़ हो गया और दोनों के दरमियान मदद करने वाला भी फ़ासिक़ हो गया अगर्चे क़ाज़ी ने इस के बा'द फ़ैसला न भी किया हो और अगर रिश्वत या तोह़फ़ा इस लिये दिया ताकि वोह उस के लिये ह़क़ फ़ैसला करे या उस से ज़ुल्म दूर करे या येह अपना ह़क़ वुसूल कर ले तो सिर्फ़ लेने वाला फ़ासिक़ होगा, देने वाला फ़ासिक़ न होगा क्यूं कि वोह किसी भी त़रीक़े से अपना ह़क़ ह़ासिल करने पर मजबूर है। यहां पर **राइश** (रिश्वत का लैन दैन कराने वाला) के मु-तअ़ल्लिक़ ब ज़ाहिर कहा जा सकता है कि अगर वोह रिश्वत लेने वाले की त़रफ़ से हो तो फ़ासिक़ है क्यूं कि येह बात साबित हो चुकी है कि रिश्वत लेना मुत़्लक़न फ़ासिक़ कर देता है लिहाज़ा इस के मददगार का भी येही हुक्म है। लेकिन अगर वोह देने वाले की त़रफ़ से हो तो अगर हम रिश्वत देने वाले पर फ़ासिक़ होने का हुक्म लगाएं तो क़ासिद फ़ासिक़ होगा वरना नहीं होगा। फिर मैं ने बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام को **राइश** के बारे में येह ज़िक्र करते हुए पाया कि "वोह रिश्वत देने वाले के इरादे में उस के ताबेअ़ होता है अगर वोह भलाई का इरादा करे तो उस पर ला'नत न होगी और अगर वोह बुराई का इरादा करे तो उस पर भी ला'नत होगी।"

## कम या ज़ियादा रिश्वत का हुक्म :

जिस रिश्वत से फ़िस्क़ साबित होता है उस में माल के कम या ज़ियादा होने में कोई फ़र्क़



www.dawateislami.net

नहीं। इसी वज्ह से ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शिहाबुद्दीन अज़्रई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) ने अपनी किताब "**तवस्सुत़**" में फ़रमाया कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शुरैह़ रूयानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی वग़ैरा ने मुत़्लक़ फ़रमाया कि बात़िल त़रीक़े से यतीमों वग़ैरा का माल खाना कबीरा गुनाहों में से है और इसी त़रह़ रिश्वत के त़ौर पर माल लेना भी कबीरा गुनाह है और उन्हों ने इस में कोई फ़र्क़ नहीं किया कि इस की मिक़्दार चौथाई दीनार हो या इस से कम। इसी त़रह़ **साह़िबुल उ़द्दह** ने यतीमों का माल खाने और रिश्वत लेने को मुत़्लक़न कबीरा गुनाह क़रार दिया और ह़ज़राते शैख़ैन (या'नी इमाम राफ़ेई व इमाम न-ववी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا) ने भी इस में और नाप तोल (में ख़ियानत के बारे) में मुत़्लक़न गुनाहे कबीरा ही कहा। अ़न्क़रीब इस मौक़िफ़ की ताईद में दलील पेश की जाएगी। नीज़ येह इस क़ैद के कमज़ोर होने को भी बयान करती है कि ग़स्ब में चौथाई दीनार ग़स्ब करना कबीरा गुनाह है। इस से मु-तअ़ल्लिक़ा बह़स (पहली जिल्द में) ग़स्ब के बयान में गुज़र चुकी है और रिश्वत की ह़ुरमत सिर्फ़ क़ाज़ियों के साथ ही ख़ास नहीं जैसा कि कई उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام ने इस की वज़ाह़त फ़रमाई है मगर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बद्र बिन जमाअ़ह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वग़ैरा ने इस से इख़्तिलाफ़ फ़रमाया। चुनान्चे,

﴾11﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ुमैद साइदी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "आ़मिलीन के तह़ाइफ़ ख़ियानत (या'नी धोका) हैं।"(1)

﴾12﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने किसी शख़्स के लिये सिफ़ारिश की और उस ने इस पर हदिय्या दिया तह़क़ीक़ वोह सूद के बड़े दरवाज़े पर आ गया।"(2)

## रिश्वत के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रामीने अस्लाफ़ :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "ह़राम कमाई येह है कि तेरा भाई तुझ से कोई ह़ाजत त़लब करे और तू उसे पूरा कर दे फिर वोह तेरी त़रफ़ हदिय्या भेजे तो तू क़बूल कर ले।"(3)

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی حمید الساعدی، الحدیث : ۲۳۶۲۲، ج۹، ص۱۵۳۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب الاجارۃ، باب فی الھدیۃ لقضاء الحاجۃ، الحدیث : ۳۵۴۱، ص۱۴۸۶، بتغیرٍقلیلٍ۔

3 ......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب البیوع، باب فی الرجل یکلم الرجل......الخ، الحدیث : ۲، ج۵، ص۱۰۱۔



www.dawateislami.net

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के बारे में मन्क़ूल है कि उन्हों ने इब्ने ज़ियाद से ज़ुल्मन लिये हुए एक ह़क़ के बारे में बात की तो उस ने वोह ह़क़ वापस कर दिया। जिस का माल ज़ुल्मन लिया गया था उस ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की त़रफ़ एक ख़ादिम हदिय्यतन भेजा मगर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने क़बूल न किया और वापस लौटा दिया फिर इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को इर्शाद फ़रमाते सुना कि जिस ने किसी मुसल्मान का ज़ुल्मन लिया हुवा माल लौटाया और उसे इस पर थोड़ा बहुत दिया गया तो येह ह़राम कमाई है।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "ऐ **अबू अ़ब्दुल्लाह** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ! हम तो येह गुमान करते थे कि **सुह़्त** से मुराद फ़क़त़ फ़ैसलों में रिश्वत लेना है।" तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "येह कुफ़्र है, हम इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करते हैं।"[1]

﴾3﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बैरूत में रहते थे, एक नसरानी आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास आया और कहने लगा : "**बअ़्-लबक्क** के ह़ाकिम ने एक ह़क़ के सिल्सिले में मुझ पर ज़ुल्म किया और मैं चाहता हूं कि आप मेरे मु-तअ़ल्लिक़ उस की त़रफ़ लिखें।" वोह बत़ौरे हदिय्या आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास एक शहद की सुराह़ी लाया था। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर तू चाहे तो मैं तुझे येह सुराह़ी वापस कर दूं और (सिफ़ारिशी बन कर) उस की त़रफ़ लिख दूं और अगर चाहे तो इसे रख लूं लेकिन सिफ़ारिश न करूं।" तो नसरानी ने अ़र्ज़ की : "लिख दें और वोह बरतन वापस कर दें।" चुनान्चे, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ह़ाकिम से सिफ़ारिश की, कि इस का ख़िराज कम कर दे तो उस ने 30 दिरहम कम कर दिया।[2]

﴾4﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) फ़रमाते हैं : "अगर क़ाज़ी ने अपने फ़ैसले पर रिश्वत ली तो उस का फ़ैसला मरदूद है अगर्चे वोह ह़क़ फ़ैसला करे और रिश्वत भी मरदूद होगी और जब क़ाज़ी को फ़ैसले पर रिश्वत दी जाए तो उस का ओ़हदए क़ज़ा बात़िल और फ़ैसला मरदूद है, अलबत्ता ! जो शख़्स बादशाह से हम-कलाम होता है उस के ह़क़ में ह़ुसूले इन्आ़म के लिये (बादशाह पर) माल ख़र्च करना रिश्वत में से नहीं बल्कि येह देना जाइज़ है।"

❁❁❁❁❁❁❁

1 ......كتاب الكبائر للذهبی، الكبيرة الثانية والثلاثون:آخذو الرشوةعلى الحكم، ص ١٥٠ ـ

2 ......المرجع السابق۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 429 : सिफ़ारिश के सबब तहाइफ़ क़बूल करना

## सिफ़ारिश में हदिय्या देने की मज़म्मत :

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने किसी शख़्स के लिये सिफ़ारिश की इस पर उस को हदिय्या दिया गया और उसे क़बूल कर लिया तह्क़ीक़ वोह कबीरा गुनाहों के बड़े दरवाज़े पर आ गया।"(1)

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हवाले से बयान हो चुका है कि येह ह़राम कमाई है और इसे हज़रते सय्यिदुना इमाम कुरतुबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मु-तवफ़्फ़ा 179 हि.) से नक़्ल किया।

## तम्बीह :

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करने के मु-तअ़ल्लिक़ बा'ज़ अइम्मए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام की तसरीहात मौजूद हैं लेकिन इस में मज़ीद ग़ौरो फ़िक्र की ज़रूरत है क्यूं कि येह हमारे उसूलों के मुताबिक़ नहीं बल्कि हमारा मज़हब येह है कि जिसे क़ैद किया गया फिर उस ने किसी दूसरे पर इस लिये माल ख़र्च किया ताकि वोह इस की सिफ़ारिश करे और इस के छुटकारे के लिये बातचीत करे तो जाइज़ है और येह भी देना जाइज़ है और इस से वाज़ेह होता है कि मुमा-न-अ़त को ह़राम काम में सिफ़ारिश करने के बदले माल लेने पर मह़मूल किया जाए।

۞۞۞۞۞۞۞

---

(1)......سنن ابی داود، کتاب الاجارۃ، باب فی الھدیۃ لقضاء الحاجۃ، الحدیث : ۳۵۴۱، ص۱۴۸۶۔

الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ، باب الترغیب فی قضاء الحوائج......الخ، الحدیث : ۴۰۳۳، ج۳، ص۳۲۰۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 430 : नाहक़ झगड़ा करना या ला इ़ल्मी में झगड़ा करना म-सलन क़ाज़ी के वु-कला का आपस में झगड़ना

## कबीरा नम्बर 431 : त़-लबे ह़क़ के लिये झगड़ना जब कि मद्दे मुक़ाबिल को तक्लीफ़ देने और उस पर ग़-लबा पाने के लिये इन्तिहाई दुश्मनी और झूट से काम लिया जाए

## कबीरा नम्बर 432 : मह़ज़ दुश्मनी की वज्ह से मुख़ालिफ़ पर सख़्ती के इरादे से झगड़ा करना

## कबीरा नम्बर 433 : बिला वज्ह झगड़ा करना

## कबीरा नम्बर 434 : मज़मूम झगड़ा करना

झगड़े की मज़म्मत करते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ يُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِىْ قَلْبِهٖۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿۲۰۴﴾ وَ اِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِى الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ﴿۲۰۵﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُؕ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۲۰۶﴾ (پ۲، البقرة: ۲۰۴تا۲۰۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और बा'ज़ आदमी वोह है कि दुन्या की ज़िन्दगी में उस की बात तुझे भली लगे और अपने दिल की बात पर **अल्लाह** को गवाह लाए और वोह सब से बड़ा झगड़ालू है और जब पीठ फैरे तो ज़मीन में फ़साद डालता फिरे और खेती और जानें तबाह करे और **अल्लाह** फ़साद से राज़ी नहीं और जब उस से कहा जाए कि **अल्लाह** से डर तो उसे और ज़िद चढ़े गुनाह की ऐसे को दोज़ख़ काफ़ी है और वोह ज़रूर बहुत बुरा बिछोना है।

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तेरे लिये येही गुनाह काफ़ी है कि तू हमेशा झगड़ता रहे।''(1)

---

1 ......جامع الترمذی، ابواب البر والصلة، باب ماجاء فی المراء، الحدیث: ۱۹۹۴، ص۱۸۵۱۔



www.dawateislami.net

﴾2﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से ना पसन्दीदा शख़्स बहुत ज़ियादा झगड़ा करने वाला है।"(1)

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) अपनी किताब "**अल अम**" में अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के बारे में नक़्ल फ़रमाते हैं कि आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को एक झगड़े में वकील बनाया गया तो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाने लगे : "झगड़े में सख़्ती व तबाही है और इस में शैतान आ घुसता है।"(2)

﴾3﴿...... सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने किसी झगड़े में बिग़ैर इल्म के बहस की वोह हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी में रहेगा यहां तक कि उसे छोड़ दे।"(3)

﴾4﴿...... रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "कोई क़ौम हिदायत हासिल करने के बा'द गुमराह नहीं हुई मगर येह कि उन्हों ने झगड़ा किया।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

مَاضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ﴿۵۸﴾ (پ۲۵، الزخرف: ۵۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** उन्हों ने तुम से येह न कही मगर नाहक़ झगड़े को बल्कि वोह हैं झगड़ालू लोग।(4)

## तम्बीह :

मज़्कूरा गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और पहले गुनाह के मु-तअल्लिक़ बुख़ारी शरीफ़ की मज़्कूरा हदीसे पाक सरीह है, बा'द वाले गुनाह भी इसी जैसे हैं और येह वाज़ेह है। मैं ने देखा कि बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने बाहमी झगड़े में बद तहज़ीबी को कबीरा गुनाह शुमार किया और मिराअ व जिदाल दोनों को अलग अलग मुत्लक़न कबीरा गुनाह शुमार किया है मगर इस में मज़ीद ग़ौरो फ़िक्र की ज़रूरत है, इसी लिये मैं ने इस

1 ......صحیح البخاری، کتاب التفسیر، سورۃ البقرۃ، باب وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ، تحت الآیۃ ۲۰۴، الحدیث: ۴۵۲۳، ص۳۷۱۔

2 ......الام للامام الشافعی، کتاب الرھن الکبیر، باب الضمان، الوکالۃ، ج ۲، الجزء الثالث، ص۲۳۷۔

3 ......موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الصمت وآداب اللسان، باب ذم الخصومات، الحدیث: ۱۵۳، ج۷، ص۱۱۱۔

4 ......جامع الترمذی، ابواب تفسیر القرآن، باب ومن سورۃ الزخرف، الحدیث: ۳۲۵۳، ص۱۹۸۴۔



www.dawateislami.net

के साथ मज़्मूम की क़ैद लगाई। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम यह़्या बिन शरफ़ न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 676 हि.) का बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से नक़्ल कर्दा येह क़ौल इसे कबीरा गुनाह शुमार करने की ताईद करता है कि ''मैं ने बाहमी झगड़े से बढ़ कर दीन को बरबाद, मुरव्वत को कम, लज़्ज़त को ज़ाएअ़ और दिल को मश्ग़ूल करने वाली कोई चीज़ नहीं देखी।''(1)

## झगड़े की मज़्मूम और जाइज़ सूरतें :

**अल अज़्कार लिन्न-ववी** में है कि अगर आप कहें कि अपने हुक़ूक़ की ख़ातिर इन्सान के लिये झगड़े के बिग़ैर कोई चारा नहीं तो क्या येह इस सूरत में भी मज़्मूम होगा ? तो इस का जवाब **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) ने येह दिया है कि मज़म्मत उस के लिये है जो बात़िल में या बिग़ैर इ़ल्म के झगड़ा करे जैसे क़ाज़ी का वकील, क्यूं कि वोह येह जाने बिग़ैर वकील बन जाता है कि ह़क़ पर कौन है। इसी त़रह़ जो शख़्स अपना ह़क़ त़लब करता है मगर सिर्फ़ ब क़दरे ह़ाजत पर इक्तिफ़ा नहीं करता बल्कि मद्दे मुक़ाबिल पर ग़-लबा पाने या उसे तक्लीफ़ देने के लिये इन्तिहाई दुश्मनी और झूट से काम लेता है तो वोह भी इस मज़म्मत में दाख़िल हो जाता है। यूंही जो शख़्स मह़ज़ दुश्मनी की बिना पर मद्दे मुक़ाबिल पर ग़ालिब आने या उसे नीचा दिखाने के लिये झगड़ा करता है। येही हुक्म उस शख़्स का भी है जो झगड़े में अज़िय्यत नाक अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करता है ह़ालां कि उसे हुसूले मक़्सद के लिये ऐसे अल्फ़ाज़ की ज़रूरत नहीं होती।

झगड़े की मज़्कूरा तमाम सूरतें क़ाबिले मज़म्मत हैं लेकिन जो शख़्स मज़्लूम हो और शर-ई त़रीक़े से अपने मुक़द्दमे की नुसरत करे कि न इन्तिहाई दुश्मनी और लड़ाई झगड़े से काम ले, न मद्दे मुक़ाबिल से बुग़्ज़ो इनाद करे और न ही उसे ईज़ा पहुंचाने का इरादा करे तो उस के लिये ऐसा झगड़ा न तो क़ाबिले मज़म्मत है और न ही ह़राम, लेकिन बेहतर येह है कि जिस क़दर मुम्किन हो इस से बचने की कोशिश करे क्यूं कि झगड़े में ज़बान को ह़द्दे ए'तिदाल पर रखना मुश्किल होता है और चूंकि दुश्मनी सीनों में ग़ुस्से की आग भड़काती और ग़ज़ब को उभारती है, लिहाज़ा जब ग़ुस्सा बढ़ जाता है तो दोनों के दरमियान कीना पैदा हो जाता है यहां तक कि दोनों में से हर एक दूसरे की बुराई पर ख़ुश और ख़ुशी पर ग़मगीन होता है और उस की इ़ज़्ज़त ख़राब करने में अपनी ज़बान आज़ाद कर देता है। पस जो झगड़ा करता है उसे येह आफ़ात पेश आती हैं और इस में सब से छोटी आफ़त येह है कि उस का दिल हर लम्ह़ा इसी में मश्ग़ूल रहता

---

1 ......الاذکارللنووی، کتاب حفظ اللسان، باب فی الفاظ یکرہ استعمالها، ص۲۹۶۔



www.dawateislami.net

है यहां तक कि वोह नमाज़ में होता है लेकिन उस का दिल लड़ाई झगड़ों में मश्गूल होता है। लिहाज़ा उस की ह़ालत इस्तिक़ामत पर बाक़ी नहीं रहती। ख़ुसूमत हर बुराई की जड़ है इसी त़रह़ **मिराअ** व **जिदाल** हैं। पस इन्सान को चाहिये कि वोह लड़ाई झगड़े का दरवाज़ा न खोले सिवाए इस के कि इस के बिग़ैर कोई चारा न हो फिर भी अपनी ज़बान व दिल को इस की आफ़ात से बचाए।(1)

बा'ज़ मु-तअख़्ख़िरीन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "क़ाज़ी के वु-कला की गवाही क़बूल न करना अ़जीब मस्अला है।" ह़ालां कि आज कल अक्सर क़ाज़ियों के वु-कला के ए'तिबार से इस मस्अले को देखा जाए तो इस में कोई अ़जीब बात नहीं क्यूं कि वोह वकालत में क़बीह़ मफ़ासिद और कबीरा गुनाहों बल्कि क़ाबिले नफ़रत फ़ोह़्श बातों की लपेट में आ जाते हैं।

## ख़ुसूमत, मिराअ और जिदाल की ता'रीफ़ें :

**हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) फ़रमाते हैं : आफ़ाते ज़बान में ख़ुसूमत, **मिराअ** और जिदाल भी क़ाबिले मज़म्मत हैं। **मिराअ** से मुराद येह है कि किसी की ख़ामियां निकालने के लिये उस के कलाम में त़ा'न करना और इस से मक़्सूद उस की ह़क़ारत और अपनी बर-तरी के इलावा कुछ न हो। **जिदाल** मज़ाहिब को ज़ाहिर और साबित करने के लिये होता है। **ख़ुसूमत** से मुराद अपना या दूसरे का माल लेने के लिये कलाम में झगड़ा करना है। येह कभी इब्तिदाअन होती है और कभी बत़ौरे ए'तिराज़, अलबत्ता ! **मिराअ** सिर्फ़ बत़ौरे ए'तिराज़ होता है।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम यह़्या बिन शरफ़ न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 676 हि.) फ़रमाते हैं कि जिदाल कभी ह़क़ में होता है वोह यूं कि ह़क़ का इस्बात, इज़्हार और वज़ाह़त करना और कभी बात़िल में होता है वोह इस त़रह़ कि ह़क़ को रोकना या बिग़ैर इ़ल्म के झगड़ा करना। चुनान्चे, इस के मु-तअ़ल्लिक़ 3 फ़रामीने ख़ुदावन्दी मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

وَلَا تُجَادِلُوْۤا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ
(پ ۲۱، العنکبوت: ۴۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ मुसल्मानो ! किताबियों से न झगड़ो मगर बेहतर त़रीक़े पर।

---

1 ......الاذکار للنووی، کتاب حفظ اللسان، باب فی الفاظ یکرہ استعمالها، ص ۲۹۲۔

1 ......المرجع السابق۔ احیاء علوم الدین، کتاب آفات اللسان، الآفة الخامسة الخصومة، ج ۳، ص ۱۴۶۔



www.dawateislami.net

وَ جَادِلۡهُمۡ بِالَّتِیۡ هِیَ اَحۡسَنُ ؕ (پ۱۴،النحل:۱۲۵)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और इन से उस त़रीक़े पर बह़स करो जो सब से बेहतर हो।

مَا یُجَادِلُ فِیۡۤ اٰیٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِیۡنَ كَفَرُوۡا (پ۲۴،المؤمن:۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** की आयतों में झगड़ा नहीं करते मगर काफ़िर।

मज़्कूरा तफ़्सील के मुत़ाबिक़ ज़िक्र कर्दा आयात के इलावा भी कई आयाते मुबा-रका हैं जिन में से बा'ज़ इस की मज़म्मत और बा'ज़ इस की ता'रीफ़ में वारिद हुई।[1]

## फ़ाएदा :

ह़ज़राते शैख़ैन (या'नी इमाम राफ़ेई व इमाम न-ववी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا) ने **साह़िबुल उ़द्दह** के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाया है कि बहुत ज़ियादा झगड़ना सग़ीरा गुनाहों में दाख़िल है अगर्चे झगड़ने वाला ह़क़ पर हो। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं : "शैख़ैन ने **साह़िबुल उ़द्दह** के कलाम से येह बात समझी है कि सग़ीरा से वोह गुनाह मुराद हैं जिन का मुर-तकिब गुनहगार होता है जैसा कि ज़ेह्न इसी त़रफ़ जाता है और फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام की इस्त़िलाह़ में येही मश्हूर है और येह भी हो सकता है कि उन की येह मुराद न हो बल्कि इसे इन में और इन के इलावा ऐसे गुनाहों में शुमार किया हो जिन से शहादत रद हो जाती है अगर्चे फ़ाइल गुनहगार नहीं होता। अ़न्क़रीब इस का ताईदी कलाम आएगा, क्यूं कि येह कहना बई़द अज़ क़ियास है कि जो झगड़े में ह़क़ पर हो वोह भी गुनहगार होता है, अलबत्ता ! येह कहा जा सकता है कि अक्सर झगड़ने वाला गुनाह में मुब्तला हो जाता है।" **साह़िबुल उ़द्दह** के शागिर्द ने **अल ख़ादिम** में इसी त़रह़ ज़िक्र किया और फ़रमाया कि ज़ाहिर येह है कि उन्हों ने इस से आ़म मा'ना मुराद लिया और मुरव्वत कम करने वाले कामों से भी शहादत रद हो जाती है, लिहाज़ा जो झगड़े में ह़क़ पर हो उसे भी इसी में शुमार किया क्यूं कि कोई भी इसे गुनाहगार न कहेगा बल्कि येह तर्के मुरव्वत के बाब से है और बिग़ैर किसी अ़जीब बात वग़ैरा के हंसने का हुक्म भी येही है। अगर आप कहें कि जिस काम में कोई गुनाह न हो उसे सग़ीरा गुनाह क़रार देना इस्त़िलाह़ से ख़ारिज है ? तो मैं कहूंगा कि इस से मुराद येह है कि शहादत क़बूल न होने में झगड़े का हुक्म सग़ीरा गुनाह के हुक्म जैसा है जब वोह इस पर इसरार करे।

---

1 ......الاذکارللنووی،کتاب حفظ اللسان، باب فی الفاظ یکرہ استعمالھا،فصل نھی الامراۃ ان تخبر......الخ، ص۲۹۶۔



www.dawateislami.net

मुरव्वत के बारे में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) फ़रमाते हैं : ''जो सुन्नते मुअक्कदा और रुकूअ़ व सुजूद की तस्बीह़ात छोड़ने का आ़दी हो सुन्नतों में सुस्ती करने की वज्ह से उस की गवाही रद की जाएगी।'' पस येह इस बारे में सरीह़ है कि ख़िलाफ़े मस्नून काम पर हमेशगी इख़्तियार करने से गवाही रद कर दी जाएगी ह़ालां कि इस में कोई गुनाह नहीं। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़लीमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने मुत़्लक़न फ़रमाया कि साइल को (ख़ाली हाथ) लौटाना सग़ीरा गुनाह है।

**हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) फ़रमाते हैं : ''मुबाह़ काम भी हमेशगी इख़्तियार करने से सग़ीरा गुनाह बन जाता है जैसे शत़रन्ज खेलना।''[1]

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ग़ैरे ह़राम पर सग़ीरा गुनाह का इत़्लाक़ किया। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) का कलाम इख़्तिताम को पहुंचा।

मज़्कूरा कलाम से वाज़ेह़ हुवा कि झगड़ों के मु-तअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) ने जो बह़्स फ़रमाई और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 676 हि.) ने उस को सह़ीह़ क़रार दिया वोह इस त़रह़ नहीं जैसे ह़ज़राते शैख़ैन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا ने फ़रमाया और उन का कलाम **साह़िबुल उ़द्दह** के कलाम के मुत़ाबिक़ भी नहीं क्यूं कि उन्हों ने येह नहीं फ़रमाया कि येह ना फ़रमानी है जैसा कि सुन्नतें छोड़ने वाला गुनाहगार नहीं होता मगर सुन्नतों को अहम्मिय्यत न देने की वज्ह से उस की गवाही क़बूल नहीं की जाती और इस में कोई शक नहीं कि झगड़ों की कसरत, अ़-दमे चश्म पोशी और ह़द से बढ़ना सख़्ती और जुरअत का बाइ़स है और बिग़ैर इ़ल्म के झगड़ना भी झगड़े की कसरत के मा'ना में है जैसा कि क़ाज़ी के वु-कला करते हैं। **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) ने इस की तसरीह़ फ़रमाई और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 676 हि.) ने इन के ह़वाले से **''अल अज़्कार''** में इसे नक़्ल फ़रमाया।

۞۞۞۞۞۞۞

1 ......احیاء علوم الدین، کتاب التوبۃ، باب بیان أقسام الذنوب بالإضافۃ إلی صفات العبد، ج۴، ص۲۸۔



www.dawateislami.net

# باب القسمة

## कबीरा नम्बर 435 : तक़्सीम करने में ज़ुल्म करना

## कबीरा नम्बर 436 : क़ीमत लगाने में ज़ुल्म करना

## कुरैश की फ़ज़ीलत :

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक घर में तशरीफ़ फ़रमा हुए जहां कुरैश का एक गुरौह था, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चौखट के दोनों अत़राफ़ पकड़ कर फ़रमाया : ''क्या घर में कुरैश के इलावा भी कोई है ?'' लोगों ने अ़र्ज़ की : ''सिवाए हमारे भान्जे के कोई नहीं।'' तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क़ौम का भान्जा उन्ही में से होता है।'' फिर इर्शाद फ़रमाया : ''यक़ीनन येह ख़िलाफ़त का मुआ़-मला कुरैश में रहेगा जब तक कि लोग इन से रह़्म त़लब करें तो येह रह़्म करें और जब फ़ैसला करें तो अ़द्ल करें और जब तक़्सीम करें तो इन्साफ़ करें और इन में से जिस ने ऐसा न किया उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, फ़रिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत है।''(1)

## तम्बीह :

मैं ने किसी को मज़्कूरा दोनों गुनाहों को कबीरा शुमार करते हुए नहीं पाया मगर पहले गुनाह के मु-तअ़ल्लिक़ सरीह़ ह़दीसे पाक मौजूद है और दूसरे को इसी पर क़ियास किया जाएगा बल्कि येह उन गुनाहों में से है जिन के कबीरा होने पर ह़दीसे पाक दलालत करती है क्यूं कि तक़्सीम में ज़ुल्म करना कि जिस पर मज़्कूरा आ़म ला'नत की वई़द है, ह़िस्सों और क़ीमत लगाने में ज़ुल्म करने को शामिल है।

۞۞۞۞۞۞۞

---

(1) ......المعجم الاوسط، الحدیث : ۲۵۶۳،ج۲،ص۷۲۔



www.dawateislami.net

# كتاب الشهادات

## कबीरा नम्बर 437 : झूटी गवाही देना

## कबीरा नम्बर 438 : झूटी गवाही क़बूल करना

### अह़ादीसे मुबा-रका में झूटी गवाही की मज़म्मत :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बिक्रह नफ़ीअ़ बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि हम रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में बैठे हुए थे कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने 3 मर्तबा इर्शाद फ़रमाया : ''क्या मैं तुम्हें सब से बड़े गुनाहों के मु-तअ़ल्लिक़ न बताऊं ?'' हम ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर इर्शाद फ़रमाएं।'' इर्शाद फ़रमाया : ''वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना और वालिदैन की ना फ़रमानी करना है।'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم टेक लगाए तशरीफ़ फ़रमा थे फिर सीधे हो कर बैठ गए और इर्शाद फ़रमाया : ''याद रखो ! झूट बोलना और झूटी गवाही देना (भी कबीरा गुनाह है)।'' (रावी फ़रमाते हैं) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बार बार येही फ़रमाते रहे यहां तक कि हम कहने लगे कि ''काश ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाएं।''[1]

﴾2﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''कबीरा गुनाह येह हैं : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना (2) वालिदैन की ना फ़रमानी करना (3) किसी जान को क़त्ल करना और (4) झूटी क़सम खाना।''[2]

﴾3﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कबीरा गुनाहों का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना और किसी जान को क़त्ल करना कबीरा गुनाह हैं।'' फिर फ़रमाया : ''क्या मैं तुम्हें सब से बड़े गुनाह के बारे में न बताऊं ? और वोह झूट बोलना है या फ़रमाया : झूटी गवाही देना है।''[3]

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الشهادات، باب ماقیل فی شهادة الزور، الحدیث: ۲۶۵۴، ص۲۰۹۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الأیمان والنذور، باب الیمین الغَموس......الخ، الحدیث : ۶۶۷۵، ص۵۵۸۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب الأدب، باب عقوق الوالدین من الکبائر، الحدیث : ۵۹۷۷، ص۵۰۶۔



www.dawateislami.net

## झूटी गवाही देना शिर्क के बराबर है :

﴾4﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना खुरैम बिन फ़ातिक अ-सदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाई, जब फ़ारिग़ हुए तो खड़े हो कर 3 मर्तबा इर्शाद फ़रमाया : ''झूटी गवाही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करने के बराबर क़रार दी गई है।'' फिर येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ﴿۳۰﴾ حُنَفَآءَ لِلّٰہِ غَیْرَ مُشْرِکِیْنَ بِہٖ (پ۱۷، حج:۳۰،۳۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो दूर हो बुतों की गन्दगी से और बचो झूटी बात से, एक **अल्लाह** के हो कर कि उस का साझी किसी को न करो।[1]

## झूटा गवाह जहन्नमी है :

﴾5﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जिस ने किसी मुसल्मान के ख़िलाफ़ ऐसी गवाही दी जिस का वोह अह्ल नहीं था तो वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।''[2]

﴾6﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''(बरोज़े क़ियामत) झूटी गवाही देने वाले के क़दम अपनी जगह से नहीं हटेंगे ह़त्ता कि उस के लिये जहन्नम वाजिब हो जाएगा।''[3]

﴾7﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''क़ियामत की होलनाकी के सबब परिन्दे चोंचें मारेंगे और दुमों को ह़-र-कत देंगे और झूटी गवाही देने वाला कोई बात न करेगा और उस के क़दम अभी ज़मीन से जुदा भी न होंगे कि उसे जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।''[4]

## गवाही छुपाना गोया झूटी गवाही देना है :

﴾8﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب القضاء، باب فی شہادۃ الزور، الحدیث : ۳۵۹۹، ص۱۴۹۰۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی ہریرۃ، الحدیث : ۱۰۶۲۲، ج۳، ص۵۸۵۔

3 ......سنن ابن ماجہ، ابواب الشہادات، باب شہادۃ الزور، الحدیث : ۲۳۷۳، ص۲۶۱۹۔

4 ......المعجم الاوسط، الحدیث : ۷۶۱۶، ج۵، ص۳۶۲، "لایفارق" بدلہ "لاتقار"۔



www.dawateislami.net

ने गवाही छुपाई जब उसे गवाही के लिये बुलाया गया तो वोह झूटी गवाही देने वाले की त़रह़ है।''[1]

﴾9﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या मैं तुम्हें सब से बड़े गुनाह के बारे में न बताऊं ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना और वालिदैन की ना फ़रमानी करना।'' और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ालते इह़्तिबा[2] में तशरीफ़ फ़रमा थे फिर हाथ छोड़ कर अपनी ज़बाने ह़क़ तरजुमान को पकड़ा और इर्शाद फ़रमाया : ''जान लो ! और झूट बोलना (भी कबीरा गुनाह है)।''[3]

﴾10﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''क्या मैं तुम्हें सब से बड़े गुनाह के बारे में न बताऊं ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना।'' फिर येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰۤى اِثْمًا عَظِيْمًا ﴿۴۸﴾ (پ۵، النساء:۴۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जिस ने ख़ुदा का शरीक ठहराया उस ने बड़ा गुनाह का तूफ़ान बांधा।

(फिर इर्शाद फ़रमाया :) ''और वालिदैन की ना फ़रमानी करना।'' इस के बा'द येह आयते मुबा-रका पढ़ी :

اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَ لِوَالِدَيْكَ ؕ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿۱۴﴾ (پ ۲۱، لقمان:۱۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** येह कि ह़क़ मान मेरा और अपने मां बाप का आख़िर मुझी तक आना है।

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सहारा लिये बैठे थे फिर सीधे हो कर तशरीफ़ फ़रमा हो गए और इर्शाद फ़रमाया : ''जान लो ! और झूट बोलना (भी कबीरा गुनाह है)।''[4]

## तम्बीह :

मज़्कूरा दो गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है इन में से पहले गुनाह के मु-तअ़ल्लिक़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने तसरीह़ फ़रमाई है और दूसरे को इसी पर क़ियास किया गया है।

---

1 ......المعجم الاوسط، الحديث : ۴۱۶۷، ج۳، ص۱۵۶۔

2 ...... इह़्तिबा येह है कि ''दोनों रानों से पिंडलियां मिला कर घुटने खड़े कर के सुरीन के बल बैठ कर हाथों से पिंडलियों के गिर्द ह़ल्क़ा बना लेना। इस त़रह़ बैठना सुन्नत है।'' (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 378, मुलख़्ख़सन)

3 ......مجمع الزوائد، كتاب الايمان، باب فی الكبائر، الحديث : ۳۸۳، ج۱، ص۲۹۲۔

4 ......المعجم الكبير، الحديث : ۲۹۳، ج۱۸، ص۱۴۰، "فقعد" بدله "فاحتفز"۔



www.dawateislami.net

## झूटी गवाही की ता'रीफ़ :

झूटी गवाही येह है कि कोई उस बात की गवाही दे जिस का उस के पास सुबूत न हो। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इ़ज़्ज़ुद्दीन बिन अ़ब्दुस्सलाम عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ السَّلَام फ़रमाते हैं : "झूटी गवाही को गुनाहे कबीरा शुमार करना वाज़ेह़ है जब कि येह बहुत ज़ियादा माल में हो और अगर कम माल में हो म-सलन किशमिश या खजूर वग़ैरा में तो इस को गुनाहे कबीरा क़रार देना मुश्किल है। पस इन ख़राबियों का दरवाज़ा हमेशा के लिये बन्द करने की ख़ातिर इसे कबीरा गुनाह क़रार देना जाइज़ है जैसा कि शराब का एक क़तरा भी पीना कबीरा गुनाह है अगर्चे फ़साद साबित न हो और झूटी गवाही से ह़ासिल होने वाले माल की मिक़्दार को चोरी के निसाब के बराबर क़रार देना भी जाइज़ है।" मज़ीद फ़रमाते हैं कि "यतीम का माल खाने के बारे में भी येही क़ौल है।"

(ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र-कशी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى) **अल ख़ादिम** में फ़रमाते हैं कि दूसरे क़ौल की ताईद में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम हरवी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى का येह क़ौल है कि ग़स्ब के गुनाहे कबीरा होने में शर्त़ है कि मग़्सूबा चीज़ चौथाई दीनार की हो।" लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अ़ब्दुस्सलाम عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ السَّلَام के ह़वाले से बयान हो चुका है कि एक दाना भी ग़स्ब या चोरी करने के कबीरा गुनाह होने पर इज्माअ़ है और येह क़ौल पहले क़ौल की ताईद करता है या'नी इस इन्तिहाई क़बीह़ फ़साद को दाइमी त़ौर पर बन्द करने के लिये झूटी गवाही के कबीरा गुनाह होने में कोई फ़र्क़ नहीं ख़्वाह माल थोड़ा हो या ज़ियादा। इसी वज्ह से इसे शिर्क के बराबर क़रार दिया गया और इसे बयान करते वक़्त हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जलाल में आ गए और बार बार बयान किया जब कि इस से बड़े गुनाहों जैसे क़त्ल व ज़िना को बयान करते हुए आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ऐसी कैफ़िय्यत त़ारी न हुई। लिहाज़ा येह बात इस मुआ़-मले के ख़त़रनाक होने पर दलालत करती है, येही वज्ह है कि बयान कर्दा बा'ज़ अह़ादीसे मुबा-रका में इसे **अक्बरुल कबाइर** भी कहा गया।

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इ़ज़्ज़ुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْمُبِين फ़रमाते हैं : "अगर नाह़क़ गवाही में झूटा हो तो वोह 3 गुनाहों का मुर-तकिब होगा : (1)...... ना फ़रमानी का गुनाह (2)...... ज़ालिम की मदद करने का गुनाह और (3)...... मज़्लूम को रुस्वा करने का गुनाह और अगर गवाह सच्चा हो तो सिर्फ़ ना फ़रमानी के गुनाह में मुब्तला होगा और ज़ालिम के ज़िम्मे को बरी करने और मज़्लूम को उस का ह़क़ पहुंचाने की वज्ह से दीगर गुनाहों का मुर-तकिब


www.dawateislami.net

न होगा।'' मज़ीद इर्शाद फ़रमाते हैं : ''जिस ने ह़क़ की गवाही दी अगर वोह सच्चा हो तो उसे उस के इरादे, इत़ाअ़त, मुस्तह़िक़ को ह़क़ दिलाने और ज़ालिम को ज़ुल्म से बचाने पर सवाब दिया जाएगा और अगर वोह अपनी गवाही की वज्ह से ह़क़ को साक़ित़ करने के सबब झूटा हो लेकिन उसे इस साक़ित़ होने का इ़ल्म न हो तो उसे अपने नेक इरादे की वज्ह से सवाब मिलेगा मगर गवाही की वज्ह से सवाब न मिलेगा क्यूं कि येह गवाही दोनों फ़रीक़ों के लिये नुक़्सान देह है।'' मज़ीद फ़रमाते हैं : ''जो गवाही किसी पर क़र्ज़ की अदाएगी को लाज़िम क़रार देने और ज़ालिम से ज़ुल्मन ली हुई चीज़ के लौटाने का मुत़ा-लबा करने के मु-तअ़ल्लिक़ हो उस में ग़ौरो फ़िक्र की ज़रूरत है क्यूं कि अस्बाब व मुबा-शरात (या'नी बिल वासित़ा और बिला वासित़ा मुआ़-मलात) में ग़-लत़ी व जहालत दोनों ज़मान (या'नी तावान) में बराबर हैं।''

❁❁❁❁❁❁❁

## कबीरा नम्बर 439 : बिला उ़ज़्र गवाही छुपाना

## क़ुरआने मजीद में गवाही छुपाने की मज़म्मत :

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ (پ٣، البقرة:٢٨٣)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो गवाही छुपाएगा तो अन्दर से उस का दिल गुनहगार है।

## ह़दीसे पाक में गवाही छुपाने की मज़म्मत :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जब किसी को गवाही के लिये बुलाया जाए उस वक़्त उस ने गवाही छुपाई तो वोह झूटी गवाही देने वाले की त़रह़ है।''(1)

## तम्बीह :

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है जिस की उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने तसरीह़ फ़रमाई है और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى ने इस के कबीरा गुनाह होने में येह क़ैद लगाई है कि उसे गवाही के लिये बुलाया जाए और वोह इन्कार कर दे। इस की दलील येह फ़रमाने बारी तआ़ला है :

---

(1) ......المعجم الاوسط، الحديث : ٤١٦٧، ج٣،ص١٥٦۔



www.dawateislami.net

وَلَا يَأْبَ الشُّهَدَآءُ اِذَا مَا دُعُوْا (پ۳، البقرۃ:۲۸۲) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और गवाह जब बुलाए जाएं तो आने से इन्कार न करें।

रहा वोह शख़्स जिस के पास किसी शख़्स के ह़क़ में गवाही हो लेकिन उसे मा'लूम न हो या वोह किसी ऐसे मुआ़-मले का गवाह हो जो दा'वे का मोह़ताज न हो बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां अज्र का उम्मीद वार हो। इस सूरत में उस ने न तो उस की गवाही दी और न ही साह़िबे ह़क़ को कुछ बताया कि उसे गवाही की ख़ात़िर बुलाया जाता तो क्या येह भी गवाही छुपाना कहलाएगा ? तो इस मस्अले में ग़ौरो फ़िक्र की ज़रूरत है और गवाही देने के मु-तअ़ल्लिक़ शैख़ैन (या'नी इमाम राफ़ेई व इमाम न-ववी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا) का कलाम इस पर दलील है कि वोह क़ुसूर वार नहीं होगा। मगर इस में भी मज़ीद ग़ौरो फ़िक्र की ज़रूरत है जैसा कि बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने फ़रमाया और आयते मुबा-रका उस मफ़्हूम पर दलालत नहीं करती जिस के साथ इसे मुक़य्यद किया गया है। लिहाज़ा क़ाबिले तरजीह़ बात येह है कि इस में कोई फ़र्क़ नहीं।

❁❁❁❁❁❁❁

## कबीरा नम्बर 440 : ऐसा झूट जिस में ह़द या ज़रर हो

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اَلَا لَعْنَةُ اللهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۸﴾ (پ۱۲، هود:۱۸) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** अरे ! ज़ालिमों पर ख़ुदा की ला'नत।

## अह़ादीसे मुबा-रका में झूट की मज़म्मत :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तुम पर सच बोलना लाज़िम है क्यूं कि सच नेकी की त़रफ़ रहनुमाई करता है और नेकी जन्नत का रास्ता दिखाती है, आदमी हमेशा सच बोलता रहता है और सच की जुस्त-जू में रहता है यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक **सिद्दीक़** लिख दिया जाता है और झूट से बचो ! क्यूं कि झूट गुनाहों की त़रफ़ ले जाता है और गुनाह जहन्नम में पहुंचा देते हैं, आदमी हमेशा झूट बोलता रहता है और इस की जुस्त-जू में रहता है यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक **कज़्ज़ाब** लिख दिया जाता है।"(1)

---

(1)......جامع الترمذی، ابواب البر والصلة، باب ما جاء فی الصدق والکذب، الحدیث: ۱۹۷۱، ص۱۸۵۰۔



www.dawateislami.net

﴾2﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तुम पर सच बोलना लाज़िम है क्यूं कि येह नेकी के साथ है और येह दोनों जन्नत में (ले जाते) हैं और झूट से बचो क्यूं कि येह गुनाहों के साथ है और येह दोनों जहन्नम में (ले जाते) हैं।"(1)

﴾3﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने लुहैआ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की रिवायत में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है : बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जन्नती अ़मल कौन सा है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सच, जब बन्दा सच बोलता है तो नेक हो जाता है और जब नेक हो जाता है तो मोमिन बन जाता है और जब मोमिन बन जाता है तो जन्नत में दाख़िल हो जाता है।" फिर अ़र्ज़ की गई : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जहन्नमी अ़मल कौन सा है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "झूट, जब बन्दा झूट बोलता है तो गुनाहगार हो जाता है और जब गुनहगार होता है तो काफ़िर हो जाता है और जब काफ़िर हो जाता है तो जहन्नम में दाख़िल हो जाता है।"(2) (यहां झूट तर्क करने पर उभारा गया है। (فيض القدير، ج٢، ص ٤٧٧)

## झूट की इशाअ़त करने की सज़ा :

﴾4﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "मैं ने आज रात देखा कि दो फ़रिश्ते मेरे पास आए और कहने लगे कि वोह शख़्स जिसे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने देखा कि उस का जबड़ा चीरा जा रहा है, येह वोह बहुत बड़ा झूटा है जो झूटी ख़बर देता है, जो उस से नक़्ल की जाती है, ह़त्ता कि सारे मुल्क में फैल जाती है। लिहाज़ा क़ियामत तक उसे येह अ़ज़ाब दिया जाता रहेगा।"(3)

## मुनाफ़िक़ की अ़लामत :

﴾5﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : "मुनाफ़िक़ की 3 निशानियां हैं : (1) जब बात करे तो झूट बोले (2) जब वा'दा करे तो

---

1 ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب الحظر والاباحة، باب الكذب، الحديث: ٥٧٠٤، ج٧، ص٤٩٤۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد الله بن عمرو بن العاص، الحديث: ٦٦٥٢، ج٢، ص٥٨٩۔

3 ......صحيح البخارى، كتاب الادب، باب قول الله تعالى: يايها الذين امنوا اتّقوا الله......الخ، الحديث: ٦٠٩٦، ص٥١٥۔



www.dawateislami.net

वा'दा ख़िलाफ़ी करे और (3) जब अ़ह्द करे तो अ़ह्द शि-कनी करे।"(1)

﴾6﴿...... एक रिवायत में मज़ीद येह भी है : "अगर्चे वोह रोज़ा रखे और नमाज़ पढ़े और खुद को मुसल्मान कहता फिरे।"(2)

﴾7﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस में 4 ख़स्लतें हों वोह ख़ालिस मुनाफ़िक़ है और जिस में इन में से एक ख़स्लत हो उस में निफ़ाक़ की एक ख़स्लत होगी यहां तक कि उसे छोड़ दे : (1) जब उस के पास अमानत रखी जाए तो ख़ियानत करे (2) जब बात करे तो झूट बोले (3) जब कोई मुआ़-हदा करे तो उसे तोड़ दे और (4) जब झगड़ा करे तो गालम गलोच करे।"(3)

﴾8﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जिस में (दर्जे ज़ैल) तीन बातें पाई जाएं वोह मुनाफ़िक़ है अगर्चे नमाज़ पढ़े, रोज़ा रखे, ह़ज व उ़म्रह करे, और कहे कि मैं मुसल्मान हूं : (1)...... जब बात करे तो झूट बोले (2)...... जब वा'दा करे तो वा'दा ख़िलाफ़ी करे और (3)...... जब उस के पास अमानत रखी जाए तो ख़ियानत करे।"(4)

## कामिल मोमिन की अ़लामत :

﴾9﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : "बन्दा उस वक़्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मज़ाक़ में भी झूट बोलना और झगड़ना न छोड़ दे अगर्चे सच्चा हो।"(5)

﴾10﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : "बन्दा उस वक़्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि ठठ्ठा करना और झूट बोलना न छोड़ दे और झगड़ना भी छोड़ दे अगर्चे ह़क़ पर हो।"(6)

---

(1)......صحیح البخاری، کتاب الإیمان، باب علامات المنافق، الحدیث: ۳۴،۳۳، ص۵۔

(2)......صحیح مسلم، کتاب الإیمان، باب خصال المنافق، الحدیث: ۲۱۳، ص۶۹۰۔

(3)......صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب علامات المنافق، الحدیث: ۳۴، ص۵۔

(4)......مسند ابی یعلی الموصلی، مسند انس بن مالک، الحدیث: ۴۰۸۴، ج۳، ص۳۹۶۔

(5)......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی ھریرة، الحدیث: ۸۷۷۴، ج۳، ص۲۹۰،۲۹۱۔

(6)......الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب الترغیب فی الصدق ــ الخ، الحدیث: ۴۵۱۲، ج۳، ص۴۵۵۔



www.dawateislami.net

## मोमिन झूटा और ख़ाइन नहीं हो सकता :

﴾11﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इन्सान की फ़ित्रत में ख़ियानत और झूट के इ़लावा तमाम ख़स्लतें हो सकती हैं।''(1)

﴾12﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मोमिन की फ़ित्रत में ख़ियानत और झूट के इ़लावा हर ख़स्लत हो सकती है।''(2)

﴾13﴿...... मरवी है कि बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या मोमिन बुज़दिल हो सकता है ?'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हां।'' पूछा गया : ''क्या मोमिन बख़ील हो सकता है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''हां।'' पूछा गया : ''क्या मोमिन कज़्ज़ाब (या'नी झूटा) हो सकता है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''नहीं।''(3)

﴾14﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीमुश्शान है : ''किसी शख़्स के दिल में ईमान और कुफ़्र जम्अ़ नहीं हो सकते, न सच और झूट एक साथ जम्अ़ हो सकते हैं और न ही अमानत और ख़ियानत एक साथ इकट्ठे हो सकते हैं।''(4)

﴾15﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बड़ी ख़ियानत येह है कि तू अपने भाई से ऐसी बात कहे जिस में वोह तुझे सच्चा समझ रहा हो जब कि तू उस से झूट बोल रहा हो।''(5)

﴾16﴿...... एक रिवायत में है : ''जब कि उस बात में तू उस से झूट बोल रहा हो।''(6)

﴾17﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَलَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث ابى امامة الباهلى، الحديث : ۲۲۲۳۲،ج۸،ص۲۷۶،"المرء"بدله"المؤمن"۔

2 ......البحرالزخارالمعروف بمسند البزار، مسند سعد بن ابى وقاص، الحديث : ۱۱۳۹،ج۳،ص۳۴۰۔

3 ......المُوَطّأ للامام مالک، کتاب الکلام، باب ما جاء فى الصدق والکذب، الحديث : ۱۹۱۳،ج۲،ص۴۶۸۔

4 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابى هريرة، الحديث : ۸۶۰۱،ج۳،ص۲۶۱،بتقدمٍ وتأخرٍ۔

5 ......الادب المفرد للبخارى، باب اذا کذبت لرجل هو لک مُصَدِّقٌ، الحديث : ۳۹۳،ص۱۰۷۔

6 ......سنن ابى داود، کتاب الادب، باب فى المعاريض، الحديث : ۴۹۷۱،ص۱۵۸۷۔



www.dawateislami.net

है : ''ख़बरदार ! झूट चेहरे को सियाह करता और चुग़ली अ़ज़ाबे क़ब्र में मुब्तला करती है।''(1)

﴾18﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : ''वालिदैन के साथ नेक सुलूक उ़म्र में इज़ाफ़ा करता, झूट रिज़्क़ में कमी करता और दुआ़ क़ज़ा को टाल देती है।''(2)

## झूट से फ़रिश्तो की नफ़रत :

﴾19﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''जब बन्दा झूट बोलता है तो उस से आने वाली बदबू की वज्ह से फ़रिश्ते एक मील दूर चले जाते हैं।''(3)

## सब से बुरी आ़दत :

﴾20﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को झूट से ज़ियादा ना पसन्द कोई आ़दत न थी। जब किसी का इस आ़दत में मुब्तला होना मा'लूम होता तो वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ल्बे मुनव्वर से निकल जाता यहां तक कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जान लेते कि उस ने तौबा कर ली है।(4)

﴾21﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को झूट से ज़ियादा ना पसन्द कोई ख़स्लत न थी और कोई शख़्स हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मौजू-दगी में झूट बोलता तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह बात अपने क़ल्बे अत़्हर में रख लेते (या'नी उसे ना पसन्दीदा जानते) यहां तक कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मा'लूम हो जाता कि उस ने तौबा कर ली है।(5)

﴾22﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को झूट से ज़ियादा ना पसन्द कोई

---

1 ......مسند ابی یعلی الموصلی، حدیث ابی برزة الاسلمی، الحدیث : ۷۴۰۴، ج۶، ص۲۷۲۔

2 ......الکامل فی ضعفاء الرجال، الرقم ۶۰۰ خالد بن اسماعیل ،ج ۳، ص۴۷۹۔

3 ......جامع الترمذی، ابواب البر والصلة، باب ما جاء فی الصدق والکذب، الحدیث : ۱۹۷۲، ص۱۸۵۰۔

4 ......الترغیب والترهیب، کتاب الادب، باب الترغیب فی الصدق ۔۔الخ، الحدیث : ۴۵۲۳، ج۳، ص۴۵۶۔

5 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السیدة عائشة، الحدیث : ۲۵۲۳۸، ج۹، ص۴۹۱۔



www.dawateislami.net

चीज़ न थी, जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी के झूट पर आगाह होते अगर्चे वोह छोटा सा होता तो उसे अपने क़ल्बे अत़्हर से निकाल देते यहां तक कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जान लेते कि उस ने नए सिरे से तौबा कर ली है।(1)

## झूट झूट ही है ख़्वाह छोटा हो या बड़ा :

﴾23﴿...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं ने सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर हम में से किसी ने अपनी पसन्दीदा चीज़ के मु-तअ़ल्लिक़ कहा : येह मुझे पसन्द नहीं, तो क्या येह झूट शुमार होगा ?" इर्शाद फ़रमाया : "बेशक झूट को झूट ही लिखा जाता है यहां तक कि छोटे से झूट को भी छोटा सा झूट लिख दिया जाता है।"(2)

﴾24﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने किसी बच्चे से कहा : इधर आओ ! मैं तुम्हें कुछ दूंगा, फिर उसे कुछ न दिया तो येह भी एक झूट है।"(3)

﴾25﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : एक दिन नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे घर में तशरीफ़ फ़रमा थे कि मुझे मेरी अम्मीजान ने बुलाया और कहा : "इधर आओ, मैं तुम्हें कुछ दूंगी।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम उसे क्या देना चाहती हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "मेरा उसे खजूर देने का इरादा है। तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर तुम उसे कुछ न देती तो तुम्हारा एक झूट लिख दिया जाता।"(4)

﴾26﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "उस शख़्स के लिये हलाकत है जो लोगों को हंसाने के लिये बात करता है और झूट

---

1 ......المستدرک، کتاب الاحکام، باب ظهور شهادة الزور من أشراط الساعة، الحديث : ۷۱۲۶، ج۵، ص۱۳۳۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث اسماء بنت عميس، الحديث : ۲۷۵۴۱، ج ۱۰، ص۴۱۳، عن اسماء بنت عميس۔

3 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنيا، کتاب الصمت و آداب اللسان، باب ذم الکذب، الحديث : ۵۲۳، ج۷، ص۲۹۷۔

المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی هريرة، الحديث : ۹۸۴۳، ج۳، ص۴۶۷۔

4 ......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب التشديد فی الکذب، الحديث : ۴۹۹۱، ص۱۵۸۸۔



www.dawateislami.net

बोलता है, उस के लिये हलाकत है, उस के लिये हलाकत है।''(1)

《27》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''बरोज़े क़ियामत 3 (क़िस्म के) लोगों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न तो कलाम फ़रमाएगा, न उन की त़रफ़ नज़रे रह़मत फ़रमाएगा और न ही उन्हें पाक करेगा बल्कि उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब होगा : (1) बूढ़ा ज़ानी (2) झूटा हुक्मरान और (3) मु-तकब्बिर फ़क़ीर।''(2)

《28》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''3 शख़्स जन्नत में दाख़िल न होंगे : (1) बूढ़ा ज़ानी (2) झूटा ह़ाकिम या बादशाह और (3) ख़ुद पसन्द और मु-तकब्बिर फ़क़ीर।''(3)

## तम्बीह :

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है जिस की उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने तसरीह़ की है लेकिन एक क़ौल के मुत़ाबिक़ इस के गुनाहे कबीरा होने में येह शर्त़ है कि उस में कोई ज़रर भी हो, इस लिये कि मुत़्लक़न झूट कबीरा गुनाह नहीं होता बल्कि कभी येह कबीरा गुनाह होता है जैसे अम्बियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام पर झूट बांधना और कभी कबीरा नहीं होता।

मज़्कूरा क़ौल में ग़ौरो फ़िक्र की ज़रूरत है बल्कि तवज्जोह इस त़रफ़ जाती है कि जब झूट का नुक़्सान शदीद हो कि आ़म तौ़र पर बरदाश्त न किया जा सके तो येह गुनाहे कबीरा होगा। अलबत्ता ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम रूयानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने **''अल बह़्र''** में तसरीह़ फ़रमाई है कि येह गुनाहे कबीरा है अगर्चे नुक़्सान न हो। मज़ीद फ़रमाते हैं कि जिस ने जानबूझ कर झूट बोला उस की गवाही मक़्बूल नहीं, अगर्चे उस का झूट किसी दूसरे को नुक़्सान न दे क्यूं कि झूट हर ह़ाल में ह़राम है और इस की मज़म्मत में ह़दीसे पाक मरवी है और मज़्कूरा अह़ादीसे मुबा-रका ज़ाहिरन या सरा-ह़तन इस की मुवा-फ़क़त करती हैं। गोया उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इस मौक़िफ़ से उ़दूल करने (या'नी फिरने) की वज्ह अक्सर लोगों का इस में मुब्तला होना है। एक त़ब्क़ए उ़-लमा के नज़्दीक येह हुक्म में ग़ीबत की मिस्ल है जैसा

---

1 ......جامع الترمذی، ابواب الزهد، باب ما جاء من تكلم بالكلمة ليضحك الناس، الحديث : ٢٣١٥،ص١٨٨٥۔

2 ......صحيح مسلم،كتاب الإيمان، باب غلظ تحريم إسبال الإزار......الخ، الحديث : ٢٩٦،ص٦٩٦، بتقديم وتأخيرٍ۔

3 ......البحرالزخارالمعروف بمسند البزار، مسند سلمان الفارسی، الحديث : ٢٥٢٩،ج٦،ص٤٩٣۔



www.dawateislami.net

कि उस के बारे में बयान हो चुका है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं कि कभी मह्ज़ ख़ाली झूट भी कबीरा गुनाह होता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) किताब "**अल उम**" में फ़रमाते हैं कि "जो शख़्स वाज़ेह़ तौर पर झूट बोलता हो और उसे न छुपाता हो उस की गवाही जाइज़ नहीं।"(1)

## झूट की ता'रीफ़ :

अहले सुन्नत के नज़्दीक झूट येह है कि किसी चीज़ के मु-तअ़ल्लिक़ उस की अस्ली ह़ालत के बर अ़क्स ख़बर देना ख़्वाह उसे मा'लूम हो और जानबूझ कर ऐसा करे या मा'लूम न हो। इस के गुनाह होने के लिये 2 शराइत़ हैं : (1) किसी चीज़ का इ़ल्म होना और (2) जानबूझ कर इस के ख़िलाफ़ बयान करना।

मो'तज़िला ने गुनहगार होने के लिये सिर्फ़ इ़ल्म होना शर्त़ क़रार दिया है जब कि मज़्हबे अहले सुन्नत के मुत़ाबिक़ जिस ने अपने गुनाह के मुत़ाबिक़ किसी चीज़ के मु-तअ़ल्लिक़ इस की अस्ली ह़ालत के बर अ़क्स ख़बर दी तो वोह झूटा तो है मगर गुनहगार नहीं। झूट का गुनाहे सग़ीरा या कबीरा होना इ़ल्म के साथ मुक़य्यद है और इस के थोड़ा या ज़ियादा होने में भी कोई फ़र्क़ नहीं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى ने **अर्रिसालह** में इस की तसरीह़ फ़रमाई है।

ह़द और किसी नुक़्सान से ख़ाली झूट फ़िस्क़ को लाज़िम नहीं करता जैसा कि ह़ज़राते शैख़ैन (या'नी इमाम राफ़ेई व इमाम न-ववी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا) रह्न के बाब में इस की तसरीह़ फ़रमाई है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) फ़रमाते हैं : "अगर दो आदमियों ने किसी चीज़ में बाहम झगड़ा किया, फिर किसी वाक़िए़ में गवाही दी तो उन की गवाही क़बूल की जाएगी अगर्चे उस झगड़े में उन दोनों में से एक झूटा हो।"

फिर इस की इ़ल्लत बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "इस का मह़ल येह है कि ह़द और ज़रर से ख़ाली हो।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं : "कभी (ह़द और ज़रर से ख़ाली) एक झूट भी कबीरा गुनाह बन जाता है।" और

---

(1)......الام للامام الشافعی، کتاب القاضی الی القاضی، باب شهادة الاعمی، ج۴، الجزء السابع، ص۵۲۔



www.dawateislami.net

**''अल बहूर''** में मुरसल ह़दीसे पाक ज़िक्र की गई कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मह़ज़ एक झूट बोलने के सबब एक शख़्स की गवाही रद फ़रमा दी।

## झूट की जवाज़ी सूरतों का बयान :

जान लीजिये ! झूट कभी मुबाह़ होता है और कभी वाजिब। इस का क़ाइदा **''एह़याउल उ़लूम''** में **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) ने येह बयान फ़रमाया है कि हर अच्छा मक़्सूद जिस का हुसूल झूट और सच दोनों त़रीक़ों से मुम्किन हो उस में झूट बोलना ह़राम है और अगर उस का हुसूल झूट के ज़रीए मुम्किन हो और मक़्सूद ह़ासिल करना मुबाह़ हो तो उस में झूट बोलना मुबाह़ है और अगर उस का हुसूल वाजिब हो तो झूट बोलना वाजिब है जैसा कि अगर कोई शख़्स किसी बे क़ुसूर को देखे कि वोह किसी ज़ालिम के डर से छुपा बैठा है जो उसे क़त्ल करने या ईज़ा देने का इरादा रखता है तो यहां पर झूट बोलना वाजिब है क्यूं कि बे क़ुसूर को बचाना वाजिब है इसी त़रह़ अगर किसी ने ऐसी वदीअ़त के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा जो वोह उस से छीनना चाहता था तो इन्कार करना वाजिब है अगर्चे झूट बोलना पड़े बल्कि अगर वोह क़सम ले तो क़सम भी उठा ले और **तोरिया** करे (या'नी वाज़ेह़ मा'ना छोड़ कर दूसरा मुराद ले), वरना ह़ानिस हो जाएगा (या'नी क़सम टूट जाएगी) और कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा और अक्सर जंगी चाल, दो नाराज़ होने वालों में सुल्ह़ कराना और मज़्लूम के दिल को माइल करना झूट के बिग़ैर नहीं हो सकता, लिहाज़ा इन सूरतों में झूट बोलना मुबाह़ है।(1)

अगर किसी से बादशाह ने उस के पोशीदा गुनाह के बारे में पूछा जैसे ज़िना और शराब नोशी तो उस के लिये भी झूट बोलना जाइज़ है और वोह यूं कहे : ''मैं ने ऐसा नहीं किया।'' इसी त़रह़ उस के लिये अपने भाई के पोशीदा गुनाह को भी छुपाना जाइज़ है।

मज़्कूरा सूरतें बयान करने के बा'द **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) फ़रमाते हैं : बेहतर येह है कि झूट के फ़साद और सच की वज्ह से पैदा होने वाली ख़राबियों के दरमियान तक़ाबुल किया जाए। अगर सच्चाई का फ़साद ज़ियादा हो तो झूट बोलना जाइज़ है। अगर मुआ-मला इस के बर अ़क्स हो या शक हो

---

(1)......احياء علوم الدين، كتاب آفات اللسان، الآفة الرابعة عشرة الكذب فى القول واليمين، ج ٣، ص ١٦٩ ـ



www.dawateislami.net

तो झूट बोलना ह़राम है। किसी मुआ़-मले का तअ़ल्लुक़ अगर अपनी ज़ात से हो तो झूट न बोलना ज़ियादा पसन्दीदा है और अगर इस का तअ़ल्लुक़ दूसरे की ज़ात से हो तो उस के ह़क़ के मुआ़-मले में चश्म पोशी जाइज़ नहीं। अलबत्ता ! एह़तियात़ येह है कि जहां झूट बोलना मुबाह़ हो वहां भी तर्क कर दे और जो बात मुबा-ल-ग़तन कही जाती है वोह ह़राम झूट में दाख़िल नहीं जैसे किसी को येह कहना कि मैं तेरे पास हज़ार बार आया क्यूं कि यहां मुबा-लग़े का समझाना मक़्सूद है न कि ता'दाद बताना लेकिन अगर वोह इस के पास सिर्फ़ एक मर्तबा आया तो झूटा है।

## कलामे ग़ज़ाली पर मुसन्निफ़ का तब्सिरा :

मुबा-लग़े के मु-तअ़ल्लिक़ **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) के बयान कर्दा मौक़िफ़ पर सह़ीह़ ह़दीसे पाक दलालत करती है। चुनान्चे, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अबू जह्म अपना अ़सा अपनी गरदन से उतारता ही नहीं।"[1]

ह़ालां कि सब जानते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जह्म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه अक्सर अ़सा रख देते थे (और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मज़्कूरा फ़रमान बत़ौरे मुबा-लग़ा है)। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का वदीअ़त के बारे में क़सम को वाजिब क़रार देने का क़ौल कमज़ोर है और ज़ियादा सह़ीह़ येह है कि क़सम वाजिब नहीं और झूट की इबाह़त पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़्कूरा कलाम की ताईद ह़दीसे पाक में बयान कर्दा झूट की मुबाह़ सूरतों से होती है, जो दर्जे ज़ैल हैं : (1)...... झूट बोल कर दो मर्दों या मर्द और औ़रत के दरमियान सुल्ह़ करवाना (2)...... जंग में (चाल चलना) कि जिस सम्त से ह़म्ले का इरादा हो उस के ख़िलाफ़ ज़ाहिर करना और (3)...... बीवी से झूट बोलना ताकि उसे शोहर से राज़ी कर दे। इसी त़रह़ शे'र में भी झूट जाइज़ है बशर्ते कि उसे मुबा-लग़े पर मह़मूल करना मुम्किन न हो। लेकिन शे'र में झूट को गवाही क़बूल न होने में (ह़राम) झूट के साथ न मिलाया जाएगा।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा क़फ़्फ़ाल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَلَال (मु-तवफ़्फ़ा 365 हि.) फ़रमाते हैं : झूट हर ह़ाल में ह़राम है, अलबत्ता ! अगर येह मुबा-लग़े के त़ौर पर शु-अ़रा और कातिबों

[1]......صحيح مسلم، كتاب الطلاق، باب المطلقة البائن لا نفقة لها، الحديث : ٣٦٩٧،ص٩٣١ـ



www.dawateislami.net

(या'नी लिखने वालों) के त़रीक़े पर हो तो ह़राम नहीं म-सलन किसी का यूं कहना ह़राम नहीं कि "मैं तेरे लिये दिन रात दुआ़ करता हूं और मेरी कोई मजलिस तेरे शुक्र से ख़ाली नहीं होती।" क्यूं कि झूट बोलने वाला अपने झूट को सच ज़ाहिर करता और उसे फैलाता है जब कि शाइ़र का मक़्सद शे'र में सच ज़ाहिर करना नहीं होता बल्कि येह तो अश्आ़र की बनावट है, लिहाज़ा इस बिना पर झूट के कम या ज़ियादा होने में कोई फ़र्क़ नहीं।

ह़ज़राते शैख़ैन (या'नी इमाम राफ़ेई़ व इमाम न-ववी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمَا) ने ह़ज़रते सय्यिदुना क़फ़्फ़ाल عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡجَلَال (मु-तवफ़्फ़ा 365 हि.) और ह़ज़रते सय्यिदुना सै-दलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوۡرَانِی से येह क़ौल नक़्ल करने के बा'द इर्शाद फ़रमाया : "هٰذَا حَسَنٌ بَالِغٌ" या'नी येह क़ौल बहुत अच्छा है।" अ़न्क़रीब शे'र की बह़्स में इस की तफ़्सील आएगी।

## तोरिया का बयान :

**अल ख़ादिम** में है कि जहां झूट जाइज़ हो तो क्या वहां **तोरिया** शर्त़ है या मुत़्लक़न झूट बोलना जाइज़ है ?(1)

तोरिया के फ़ुरूई (या'नी जुज़्वी) मसाइल में इख़्तिलाफ़ है म-सलन जब किसी को त़लाक़ पर मजबूर किया जाए और वोह तोरिया पर क़ादिर हो तो क्या उस के लिये ग़ैर त़लाक़ (या'नी त़लाक़ न देने) की निय्यत करना शर्त़ है ? इस सूरत में असह़्ह़ (या'नी ज़ियादा सह़ीह़) येह है कि उस के लिये निय्यत करना शर्त़ नहीं जब कि ग़ैर त़लाक़ का एह़्तिमाल भी है। क्यूं कि तोरिया में निय्यत और त़लाक़ में अल्फ़ाज़ देखे जाते हैं या'नी येह देखा जाएगा कि क्या सरा-ह़तन झूट बोलना मुबाह़ है या ता'रीज़ (या'नी तोरिया) करना और (ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन ह़ुसीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ मरफ़ूअ़न रिवायत फ़रमाते हैं कि) "बिला शुबा तोरिया में झूट से बचा जा सकता है।"(2)

---

1...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द सिवुम सफ़ह़ा 518 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रत **मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : "तोरिया या'नी लफ़्ज़ के जो ज़ाहिर मा'ना हैं वोह ग़लत़ हैं मगर उस ने दूसरे मा'ना मुराद लिये जो सह़ीह़ हैं, **ऐसा करना बिला ह़ाजत जाइज़ नहीं और ह़ाजत हो तो जाइज़ है।** तोरिया की मिसाल येह है कि तुम ने किसी को खाने के लिये बुलाया वोह कहता है मैं ने खाना खा लिया। इस के ज़ाहिर मा'ना येह हैं कि इस वक़्त का खाना खा लिया है मगर वोह येह मुराद लेता है कि कल खाया है येह भी झूट में दाख़िल है।"

2......شعب الایمان للبیهقی، با ب فی حفظ اللسان، الحدیث: ۴۷۹۴، ج۴، ص۲۰۳۔



www.dawateislami.net

इस से नतीजा निकलता है कि मुत़्लक़न तोरिया वाजिब नहीं इस लिये कि झूट को जाइज़ क़रार देने वाला उ़ज़्र तर्के तोरिया को भी जाइज़ क़रार देता है क्यूं कि तोरिया में ह़रज है।

**हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى (मु–तवफ़्फ़ा 505 हि.) तसरीह़ फ़रमाते हैं : और बेहतर येह है कि (झूट के बजाए) तोरिया करे और तोरिया येह है कि मुत़्लक़ त़ौर पर एक लफ़्ज़ बोले जिस का एक मा'ना ज़ाहिर हो मगर उस की मुराद दूसरा मा'ना हो जिसे वोह लफ़्ज़ शामिल तो हो लेकिन वोह ज़ाहिरी मा'ना के ख़िलाफ़ हो। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नख़्ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : अगर किसी शख़्स को तेरी त़रफ़ से उस के मु–तअ़ल्लिक़ कही हुई बात की ख़बर पहुंचे और वोह तस्दीक़ चाहता हो तो, तू कह दे : ''اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا قُلْتُ مِنْ ذٰلِكَ شَيْئًا'' या'नी मैं ने उस में से जो कुछ कहा वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जानता है।'' तो सुनने वाला **مَا** नाफ़िया समझे जब कि तेरी मुराद **مَا** ब मा'ना इस्मे मौसूल **اَلَّذِىْ** हो। (या'नी सुनने वाला इस का मत़लब येह समझे : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जानता है कि मैं ने इस में से कुछ नहीं कहा।) और ह़ाजत के वक़्त ऐसा करना जाइज़ है।

## तोरिया का हुक्म :

ह़ाजत के वक़्त तोरिया करना जाइज़ है जब कि बिला ह़ाजत मक्रूह है और इस के ज़रीए बात़िल का ह़ुसूल या ह़क़ की तरदीद हो तो ह़राम है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى ''**अर्रिसालह**'' में फ़रमाते हैं : ''पोशीदा झूट भी झूट ही है और इस से मुराद येह है कि इन्सान ऐसे शख़्स की रिवायत बयान करे जिस के सच को उस के झूट से न पहचाना जा सकता हो।''(1)

**शारेहे रिसालह**, ह़ज़रते सय्यिदुना सै–रफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى इस की वज्ह बयान करते हुए फ़रमाते हैं : दिल क़ाबिले भरोसा शख़्स की बात से मुत़्मइन हो जाता है और उस की बात की तस्दीक़ करता है और अगर वोह बात झूटी हो तो वोह भी झूट में उस का शरीक हो जाता है और इस की मिसाल येह ह़दीसे पाक है : ''रिया पोशीदा शिर्क है।''(2)

۞۞۞۞۞۞۞

---

1 ......الرسالة للامام الشافعی، باب خبر الواحد، الحديث ١١٠٠، الجزء الثالث، ص٣٠٠۔

2 ......سنن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب الرياء والسمعة، الحديث ٤٢٠٤، ص٢٧٣٢، مفهوماً۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 441 : शराबियों और दीगर फ़ासिक़ों का दिल बहलाने के लिये उन के साथ बैठना

हज़रते सय्यिदुना इमाम शिहाबुद्दीन अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) इस के मु-तअ़ल्लिक़ ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं कि शैख़ैन (या'नी इमाम राफ़ेई व इमाम न-ववी عَلَيْهِمَا رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى) ने "**साहिबुल उद्दह**" के क़ौल को बर क़रार रखा कि येह सग़ीरा गुनाहों में से है।

### मुमा-न-अ़त का सबब :

मैं कहता हूं कि येह इत़्लाक़ मम्नूअ़ है बल्कि शराब पीने वालों, इन जैसे फ़ासिक़ों और दीगर ह़राम लह्वो लअ़ब में मुब्तला लोगों के साथ बैठना कबीरा गुनाह है जब कि वोह उन्हें इन कामों से रोकने पर क़ादिर हो या फिर बुराई की रोकथाम से आ़जिज़ हो और उन से जुदा होने की क़ुदरत रखता हो। ख़ुसूसन जब उन के साथ बैठने वाला उन की इत्तिबाअ़ का इरादा करे।

۞۞۞۞۞۞۞

## कबीरा नम्बर 442 : फ़ासिक़ क़ुर्रा और फ़ासिक़ अहले इ़ल्म के साथ बैठना

### फ़ासिक़ों की हम-नशीनी में ख़त़रा :

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इसे कबीरा गुनाहों में ज़िक्र किया है। ज़ाहिर येह है कि उन के नज़्दीक इस बात में कोई फ़र्क़ नहीं कि वोह फ़िस्क़ो फ़ुजूर में मुब्तला होने की ह़ालत में उन के पास बैठे या मुब्तला न होने की ह़ालत में बैठे। कभी येह तौजीह भी बयान की जाती है कि येह लोग नेक और फ़रमां बरदार लोगों की सूरत इख़्तियार किये होते हैं, पस जब येह लोग इस ज़ाहिरी सूरत में बात़िनी फ़िस्क़ को छुपाए हुए हों तो उन के पास बैठने में बहुत बड़ा ख़त़रा है। क्यूं कि बार बार उन के साथ बैठने की वज्ह से नफ़्स उन से मानूस हो जाएगा और यक़ीनी त़ौर पर उन के अफ़्आ़ल की त़रफ़ माइल होगा। इस की वज्ह येह है कि उस की फ़ित़रत में बुराई और हर नुक़्सान देह चीज़ की मह़ब्बत शामिल है। पस उस वक़्त येह उन की बुरी ख़स्लतों की जुस्त-जू में रहता है और उन की इत्तिबाअ़ करने लग जाता है और उन फ़ासिक़ों की पैरवी की वज्ह से येह भी उन्हीं में से हो जाता है और उस बुराई का इरतिकाब करता है जिस


www.dawateislami.net

की महब्बत नफ़्स की फ़ित्रत में रख दी गई है और येह बहुत बड़ा नुक़्सान उन की हम-नशीनी इख़्तियार करने के बाइस होता है और येह इस कलाम की इन्तिहा है।

पिछले कबीरा गुनाह में आप जान चुके हैं कि येह हमारे मज़हब के मुताबिक़ नहीं क्यूं कि जब हमारे उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़ासिक़ों के फ़िस्क़ में मुब्तला होने की ह़ालत में उन के साथ बैठने को सग़ीरा शुमार करते हैं अगर्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) का इस में इख़्तिलाफ़ है तो इस को ब द-र-जए औला सग़ीरा क़रार दिया जाएगा।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) के बयान कर्दा मौक़िफ़ और इस में फ़र्क़ येह है कि फ़ुस्साक़ के पास मौजूद शख़्स फ़िस्क़ो फ़ुजूर को मिटाने पर क़ादिर हो और अपनी मरज़ी से वहां मौजूद हो तो वोह उन के फ़े'ल को बर क़रार रखने वाला, इन पर राज़ी और मुईनो मददगार शुमार होगा और इन तमाम बुराइयों को कबीरा गुनाह शुमार करना बईद नहीं। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) के मज़्कूरा कलाम से येही वाज़ेह़ होता है।

## फ़ुस्साक़ की हम-नशीनी की जाइज़ व ना जाइज़ सूरत :

रहा फ़ासिक़ साहिबे इल्म या क़ारी वग़ैरा के साथ मुत़्लक़न बैठने का मुआ़-मला जब कि वोह फ़िस्क़ो फ़ुजूर में मुब्तला न हों तो इसे कबीरा गुनाह शुमार करना बईद है, बल्कि इस के अस्लन ह़राम होने में भी कलाम है कि जब उन के फ़िस्क़ या वस्फ़े फ़िस्क़ की वज्ह से उन की दिलजोई के लिये उन की हम-नशीनी इख़्तियार करना मक़्सूद न हो बल्कि क़रीबी तअ़ल्लुक़ात या किसी जाइज़ ज़रूरत वग़ैरा के लिये उन का दिल बहलाना मक़्सूद हो तो इस सूरत में इसे अस्लन ह़राम क़रार नहीं दिया जा सकता और अगर उन के फ़ासिक़ होने की वज्ह से उन की दिलजोई करे तो इस के ह़राम होने में कोई शुबा नहीं।

**हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) ने भी फ़ुस्साक़ो फ़ुज्जार से दोस्ती करने और शराब पीते वक़्त शराबियों के साथ बैठने को गुनाह शुमार किया है।[1]

1 ......احياء علوم الدين، كتاب التوبة، بيان اقسام الذنوب بالإضافة إلى صفات العبد، ج٤،ص٢٨ ـ



www.dawateislami.net

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के फ़रमान का पहला हिस्सा कि ''फ़ुस्साक़ो फ़ुज्जार से क़ल्बी महब्बत करना'' इस बारे में सरीह है कि फ़क़त उन्स व महब्बत करना भी हराम है अगर्चे उन का हम-नशीन न हो और दूसरा हिस्सा इस बारे में सरीह है कि फ़ासिक़ों के साथ सिर्फ़ बैठने में कोई गुनाह नहीं जब कि उन से उन्स व महब्बत और उन की दिलजोई मक़्सूद न हो और येह बात मेरे ज़िक्र कर्दा मौक़िफ़ की ताईद करती है।

۞۞۞۞۞۞۞

## कबीरा नम्बर 443 : जूआ खेलना

**( जूआ खेलना ख़्वाह अलग तौर पर या किसी मक्रूह खेल के साथ मिला कर जैसे शतरंज या हराम खेल के साथ मिला कर जैसे नर्द )**

## क़ुरआने ह़कीम में जूआ की मज़म्मत :

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

اِنَّمَا الْخَمْرُ وَ الْمَيْسِرُ وَ الْاَنْصَابُ وَ الْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۹۰﴾ اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَ الْمَيْسِرِ وَ يَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ عَنِ الصَّلٰوةِ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿۹۱﴾ (پ۷، المائدة:۹۰،۹۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** शराब और जूआ और बुत और पांसे नापाक ही हैं शैतानी काम तो इन से बचते रहना कि तुम फ़लाह पाओ, शैतान येही चाहता है कि तुम में बेर और दुश्मनी डलवा दे शराब और जूए में और तुम्हें **अल्लाह** की याद और नमाज़ से रोके तो क्या तुम बाज़ आए।

## आयते मुबा-रका की तफ़्सीर :

مَيْسِر से मुराद क़िमार या'नी जूआ है ख़्वाह वोह किसी भी क़िस्म का हो और इस से रोकने और इस का मुआ-मला ख़तरनाक होने की वज्ह येह है कि इस में बातिल तरीक़ों से लोगों के माल खाए जाते हैं जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमाने आलीशान के ज़रीए मन्अ फ़रमाया है :

وَلَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ (پ۲، البقرة:۱۸۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ।



www.dawateislami.net

# जूआ की मज़म्मत में अहादीसे मुबा-रका

## दूसरों के माल में नाहक़ दख़्ल देने की सज़ा :

﴾1﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जो लोग दूसरों के माल में नाहक़ दख़्ल अन्दाज़ी करते हैं उन के लिये जहन्नम है।"(1)

## जूआ की दा'वत देने का कफ़्फ़ारा :

﴾2﴿...... सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने अपने दोस्त से कहा : आओ ! जूआ खेलें तो वोह स-दक़ा करे।"(2)

(मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :) "जब महज़ जूआ खेलने की दा'वत देना कफ़्फ़ारा और वाजिब या मस्नून स-दक़ा देने का तक़ाज़ा करता है तो अ-मली तौर पर इस गुनाह का इरतिकाब करने वाले के मु-तअ़ल्लिक़ तेरा क्या ख़याल है ?"

## तम्बीह :

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करना पहली आयते मुबा-रका से वाज़ेह है और येह बिल्कुल ज़ाहिर है।

---

1 ......صحيح البخاری، كتاب فرض الخمس، باب قوله تعالٰی (فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ)، الحديث : ٣١١٨، ص٢٥١، بتغيرٍ۔

2 ......صحيح البخاری، كتاب التفسير، سورة والنجم، باب (اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى)، الحديث : ٤٨٦٠، ص٤١٥۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 444 : चौसर खेलना(1)

## चौसर खेलने का हुक्म(2) :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने चौसर खेला तह़क़ीक़ उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी की।''(3)

## चौसर खेलना ख़िन्ज़ीर के ख़ून से हाथ रंगना है :

﴾2﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने चौसर खेला गोया उस ने अपना हाथ ख़िन्ज़ीर के ख़ून से रंगा।''(4)

﴾3﴿...... एक रिवायत में है : ''गोया उस ने अपना हाथ ख़िन्ज़ीर के गोश्त और ख़ून में डाला।''(5)

﴾4﴿...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो चौसर खेलता फिर नमाज़ पढ़ने के लिये खड़ा होता है वोह उस की मिस्ल है जो पीप और ख़िन्ज़ीर के ख़ून के साथ वुज़ू कर के नमाज़ पढ़ने के लिये खड़ा होता है।''(6)

(मुसन्निफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :) या'नी उस की नमाज़ क़बूल नहीं होती जैसा कि

---

❶...... चौसर एक घरेलू खेल जो चौसर की बिसात़ (या'नी बिछी हुई चादर) पर कोड़ियों के पांसे (या'नी शश पहलू टुकड़े जिसे बारी बारी खिलाड़ी फेंकते हैं) से खेला जाता है और 4 फ़रीक़ 4 मुख़्तलिफ़ रंग की गोटियों से खेल सकते हैं। (फ़रहंगे तलफ़्फ़ुज़, स. 429)

❷...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**बहारे शरीअ़त**'' जिल्द सिवुम सफ़ह़ा 511 पर है : ''गन्जिफ़ा, चौसर (या'नी नर्द शीर) खेलना ना जाइज़ है, शत़रंज का भी येही हुक्म है। इसी त़रह़ लह्वो लअ़ब की जितनी क़िस्में हैं सब बात़िल हैं, सिर्फ़ तीन क़िस्म के लह्व की ह़दीस में इजाज़त है, बीबी से मुला-अ़बत और घोड़े की सुवारी और तीर अन्दाज़ी करना।''

**गन्जिफ़ा** एक खेल का नाम है जो ताश की त़रह़ खेला जाता है इस में 96 पत्ते और आठ रंग होते हैं और तीन खिलाड़ी खेलते हैं।

❸......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی النھی عن اللعب بالنرد، الحدیث : ۴۹۳۸،ص۱۵۸۵۔

❹......صحیح مسلم، کتاب الشِّعر، باب تحریم اللعب بالنردشیر، الحدیث : ۵۸۹۶،ص۱۰۷۸۔

❺......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی النھی عن اللعب بالنرد، الحدیث : ۴۹۳۹،ص۱۵۸۵۔

❻......المسند للامام احمد بن حنبل، احادیث رجال من اصحاب النبی، الحدیث : ۲۳۱۹۹،ج۹،ص۵۰۔



www.dawateislami.net

दूसरी रिवायात इस की वज़ाहत करती हैं।

﴾5﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन अबी कसीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कुछ लोगों के पास से गुज़रे जो चौसर खेल रहे थे तो इर्शाद फ़रमाया : ''दिल लह्वो लअ़ब में, हाथ फ़ुज़ूल कामों में और ज़बानें बेहूदा कलाम में मश्ग़ूल हैं।''(1)

﴾6﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''उन दो निशान ज़दा मोहरों (या'नी चौसर की गोटियों) से बचो जिन्हें ह़-र-कत दी जाती (या फेंका जाता) है क्यूं कि येह अ़-जमिय्यों का जूआ है।''(2)

﴾7﴿...... एक रिवायत में है : ''उन निशान ज़दा मोहरों (या'नी चौसर की गोटियों) से बचो जिन्हें ह-र-कत दी जाती (या'नी फेंका जाता) है क्यूं कि येह भी जूआ है।''(3)

## लग़्वियात में मश्ग़ूल लोगों को सलाम करने का ह़ुक्म :

﴾8﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जब तुम उन लोगों के पास से गुज़रो जो फ़ाल निकालने वाले तीरों, शत़रंज, चौसर और इन जैसे (हर ह़राम) खेल खेलते हैं तो उन्हें सलाम न करो और अगर वोह तुम्हें सलाम करें तो जवाब न दो।''(4)

﴾9﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''उन दो निशान ज़दा मोहरों (या'नी चौसर की गोटियों) से बचो जिन्हें ह़-र-कत दी जाती (या फेंका जाता) है क्यूं कि येह अ़-जमिय्यों का जूआ है।''(5)

﴾10﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तीन चीज़ें **मैसिर** में से हैं : ''जूआ खेलना, मोहरों को उलटना पलटना और कबूतर के लिये सीटियां बजाना।''(6)

---

(1) ......شعب الایمان للبیھقی، باب فی تحریم الملاعب والملاھی، الحدیث : ٦٥١٦، ج٥، ص٢٤١۔

(2) ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللّٰہ بن مسعود، الحدیث : ٤٢٦٣، ج٢، ص١٥٦۔

(3) ......مجمع الزوائد، کتاب الادب، باب ما جاء فی القمار، الحدیث : ١٣٢٦٥، ج ٨، ص ٢١١۔

(4) ......فردوس الاخبار للدیلمی، الحدیث : ١٠٥١، ج١، ص١٢٠۔

(5) ......السنن الکبرٰی للبیھقی، کتاب الشھادات، باب کراھیۃ اللعب......الخ، الحدیث : ٢٠٩٥٤، ج ١٠، ص٣٦٤، بتغیرٍ قلیلٍ۔

(6) ......الجامع الصغیر للسیوطی، الحدیث : ٣٤٣٣، ص٢٠٦۔



www.dawateislami.net

**तम्बीह :**

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करना मज़्कूरा अहादीसे मुबा–रका से वाज़ेह है खुसूसन दूसरी और तीसरी हदीसे पाक। इस लिये कि इन दोनों में तश्बीह शदीद वईद का फ़ाएदा देती है क्यूं कि इस की वज्ह से नमाज़ क़बूल नहीं होती।

## चौसर के मु-तअ़ल्लिक़ उ़-लमाए इस्लाम की आराअ

### चौसर खेलने वाले की गवाही मरदूद है :

**अल बयान** में हमारे अक्सर शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के ह़वाले से इस की तसरीह़ की गई है कि ''चौसर खेलना ह़राम है और ''**अल उम**'' में इस के ह़राम होने पर क़त़्ई दलील दी गई है और चौसर खेलने वाला फ़ासिक़ है और उस की गवाही मरदूद है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन अ़ली बिन मुह़म्मद मावर्दी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى ने सब से पहले ''**अल ह़ावियुल कबीर**'' में इस की तसरीह़ की, जिस की इ़बारत येह है : ''सह़ीह़ वोही मज़्हब है जो अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का है कि चौसर खेलना ह़राम है और खेलने वाला फ़ासिक़ और **मरदूदुश्शहादत** है।''

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम रूयानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى ने ''**अल बह़र**'' में ह़स्बे आ़दत इन की इत्तिबाअ़ की और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى के ''**अल मुख़्तसर**'' में नक़्ल कर्दा क़ौल को नक़्ल करने के बा'द इर्शाद फ़रमाया : ''मैं ह़दीसे पाक की बिना पर चौसर खेलने को मक्रूह समझता हूं।'' और हमारे आ़म शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि चौसर खेलना मक्रूह है और इस की वज्ह से गवाही मरदूद हो जाती है और मक्रूह से मुराद मक्रूहे तह़रीमी है और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : चौसर शत़रंज की त़रह़ है। मगर येह क़ौल ग़लत़ है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम रूयानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى की किताब ''**तजरिबा**'' की इ़बारत येह है : ''हमारे बा'ज़ शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि अगर उस ने ऐसा किया तो फ़ासिक़ हो जाएगा और उस की गवाही क़बूल न होगी।'' ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मह़ामली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى की किताब ''**मजमूअ़ा**'' की इ़बारत येह है : ''जिस ने चौसर खेला वोह फ़ासिक़ है और उस की गवाही मरदूद है। येह हमारे आ़म शाफ़ेई उ़-लमाए किराम



www.dawateislami.net

رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का क़ौल है मगर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं कि येह शत़रंज की त़रह़ है लेकिन येह क़ौल क़ाबिले ए'तिमाद नहीं और पहला मज़हब ही सह़ीह़ है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''सह़ीह़ क़ौल के मुत़ाबिक़ येह कबीरा गुनाहों में से है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) इसी क़ौल को इख़्तियार करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : ''जो चौसर खेले ह़ालां कि उसे इस के मु-तअ़ल्लिक़ वारिद वईदें न सिर्फ़ मा'लूम हों बल्कि याद भी हों तो वोह फ़ासिक़ है और उस की गवाही मरदूद है ख़्वाह वोह किसी भी शह्र में हो और इस की वज्ह मुरव्वत को तर्क करना नहीं बल्कि शदीद मम्नूअ़ फ़े'ल का इरतिकाब करना है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) और इन से क़ब्ल ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد से इस के सग़ीरा होने का क़ौल मन्क़ूल है।

**सुवाल :** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) फ़रमाते हैं कि हम ने जिस के मक्रूहे तह़रीमी होने का हुक्म लगाया है जैसा कि चौसर। तो क्या येह कबीरा गुनाहों में से है यहां तक कि सिर्फ़ एक बार इस का इरतिकाब करने से गवाही मरदूद हो जाए या सग़ीरा गुनाहों में से है कि जिस में ब कसरत इरतिकाब से गवाही मरदूद होती है। ?

**जवाब :** इस में 2 सूरतें हैं। इमामुल ह़-रमैन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का कलाम पहले की तरजीह़ की त़रफ़ माइल है और ह़क़ के क़रीब दूसरा कलाम है। **अत्तह्ज़ीब** वग़ैरा में इसी त़रह़ मज़्कूर है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इस्नवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इसी पर ए'तिमाद करते हुए फ़रमाते हैं : सह़ीह़ वोही क़ौल है जो शैख़ अबू मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد से मन्क़ूल है, इसी त़रह़ वोह क़ौल भी सह़ीह़ है जिसे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) ने फ़स्ल के आख़िर में क़ाबिले तरजीह़ क़रार दिया और फिर अपना मज़्कूरा क़ौल ज़िक्र करने के बा'द इर्शाद फ़रमाया : **शर्हे सग़ीर** में भी इसे तरजीह़ दी गई है। लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) के कलाम पर ए'तिराज़ किया और फ़रमाया : अगर सह़ीह़ मज़हब वोही है जिसे अक्सर उ़-लमा ने सह़ीह़ क़रार दिया तो ह़ज़रते सय्यिदुना मह़ामली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی ने **अत्तज्रीद** में आ़म शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से इसी क़ौल की मिस्ल नक़्ल किया है जिसे इमामुल ह़-रमैन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने सह़ीह़ क़रार दिया है या'नी येह मुत़्लक़न कबीरा गुनाह है।



www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन अ़ली बिन मावर्दी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने भी अक्सर शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام के ह़वाले से ज़िक्र करते हुए फ़रमाया : "येही क़ौल सह़ीह़ है। तो इस सूरत में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) का येह क़ौल क़ाइम न रहेगा कि येह बात "**अत्तह्ज़ीब**" वग़ैरा में मज़्कूर है और अगर इस से मुराद दलील है तो वोह दलील कहां है जिस के ज़रीए़ उन्हों ने अपने मुद्दआ़ पर इस्तिद्लाल किया है ?"

इस से उन्हों ने इस त़रफ़ इशारा किया है कि इस के सग़ीरा होने का क़ौल अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام के मौक़िफ़ के ख़िलाफ़ है और येह बात उन से नक़्ल कर्दा गुज़श्ता क़ौल, इस के मु-तअ़ल्लिक़ मरवी अह़ादीसे मुबा-रका और मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीसे पाक में मरवी शदीद वई़द से बिल्कुल वाज़ेह़ है और बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने इस में तफ़्सील बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि शहरों की आ़दत को देखा जाएगा, अगर वहां के लोग इसे कबीरा समझें तो एक बार इरतिकाब करने से ही उस की गवाही मरदूद हो जाएगी वरना (या'नी अगर वोह इसे कबीरा गुनाह न समझें तो मरदूद) न होगी। लेकिन येह फ़र्क़ ज़ई़फ़ है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुल्क़ीनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ने फ़रमाया और इस के सग़ीरा होने के क़ौल की बिना पर येह सग़ीरा गुनाह उस वक़्त होगा जब जूआ से ख़ाली हो वरना बिला इख़्तिलाफ़ गुनाहे कबीरा होगा जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र-कशी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने इस की त़रफ़ इशारा फ़रमाया और येह क़ौल वाज़ेह़ है।

## चौसर खेलने में 4 मुख़्तलिफ़ मौक़िफ़ :

जब येह बात साबित हो गई तो मा'लूम हुवा कि चौसर खेलने के मु-तअ़ल्लिक़ उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام के 4 मौक़िफ़ हैं :

## पहला मौक़िफ़ :

चौसर खेलना मक्रूहे तन्ज़ीही है। येह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ मर-वज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अस्फ़रायिनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی का क़ौल है। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ख़ैरान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن से भी येही मन्कूल है और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़य्यिब رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भी इसी को इख़्तियार किया है। ह़ालां कि बयान हो चुका है कि येह ग़लत़ है और मन्कूल और दलील की मुख़ा-लफ़त की वज्ह से इस की कोई ह़ैसिय्यत नहीं और एक



www.dawateislami.net

जमाअ़त का येह क़ौल मरदूद है कि **''अल उम''** वग़ैरा में इस के मक्रूहे तन्ज़ीही होने पर शर–ई दलील क़ाइम की गई है। पस इस सूरत में इस का तअ़ल्लुक़ उस के साथ क़ाइम नहीं करना चाहिये क्यूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى अक्सर मुत़्लक़ मक्रूह कह कर मक्रूहे तह़रीमी मुराद लेते हैं। बल्कि **''अल बयान''** के ह़वाले से गुज़र चुका है कि **''अल उम''** में इस के मक्रूहे तह़रीमी होने की सराह़त की गई है। हमारे अक्सर अस्ह़ाब का येही क़ौल है और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम रूयानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى **''अल ह़िल्या''** में फ़रमाते हैं कि हमारे अक्सर शाफ़ेई उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام इसे मक्रूहे तह़रीमी क़रार देते हैं और इन के नज़्दीक ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى का येही मज़हब है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्बास अह़मद बिन उ़मर बिन इब्राहीम अन्सारी कुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु–तवफ़्फ़ा 656 हि.) के शर्हे मुस्लिम में नक़्ल कर्दा इस क़ौल से भी मक्रूहे तन्ज़ीही का क़ौल बात़िल हो जाता है कि ''चौसर खेलने की मुत़्लक़न ह़ुरमत पर उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इत्तिफ़ाक़ है।'' और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **मुवफ़्फ़क़ुद्दीन अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद बिन मुह़म्मद बिन क़ुदामा मक़्दिसी ह़म्बली** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु–तवफ़्फ़ा 620 हि.) ने भी अपनी किताब **''अल मुग़नी''** में चौसर खेलने की ह़ुरमत पर उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इज्माअ़ नक़्ल फ़रमाया है।

## दूसरा मौक़िफ़ :

येह ह़राम लेकिन सग़ीरा गुनाह है और येह बात बयान हो चुकी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु–तवफ़्फ़ा 623 हि.) वग़ैरा ने इसी क़ौल को तरजीह़ दी है।

## तीसरा मौक़िफ़ :

येह ह़राम और कबीरा गुनाह है और पहले बयान हो चुका है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى और हमारे दीगर अक्सर शाफ़ेई उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का येही मौक़िफ़ है और सह़ीह़ ह़दीसे पाक इस की सराह़त करती है।

## चौथा मौक़िफ़ :

शहरों के ए'तिबार से इस के ह़ुक्म में फ़र्क़ है। जिस जगह के लोग इसे बड़ा गुनाह समझते हैं वहां गवाही मरदूद होगी और जहां के लोग इसे बड़ा गुनाह नहीं समझते वहां गवाही मरदूद न होगी, अलबत्ता ! अगर वहां अक्सर लोग इस का इरतिकाब करें तो उन की



www.dawateislami.net

गवाही भी मरदूद होगी।

## नर्द ( या'नी चौसर ) की वज्हे तस्मिया :

''**अल मुहिम्मात**'' में है : ''ईरान के पहले हुक्मरान की निस्बत से इसे नर्द शीर कहा जाता है क्यूं कि वोही पहला शख़्स है जिस ने इसे ईजाद किया।'' ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर बैज़ावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى **शर्हुल मसाबीह़** में एक क़ौल नक़्ल फ़रमाते हैं कि सब से पहले सासान के दूसरे बादशाह **साबूर बिन अर्द शीर** ने इसे ईजाद किया, इसी वज्ह से इसे **नर्द शीर** कहा जाता है और इस के तख़्ते को ज़मीन के साथ तश्बीह दी और चार मौसिमों (या'नी गरमा, सरमा, बहार, ख़ज़ां) के साथ तश्बीह देते हुए 4 अक़्साम में तक़्सीम कर दिया।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन अ़ली बिन मुह़म्मद मावर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى भी एक क़ौल नक़्ल फ़रमाते हैं कि ''चौसर 12 बुर्जों और 7 सितारों पर मुश्तमिल होता है क्यूं कि बुर्जों की त़रह़ इस के घर 12 हैं और मह़ल के अत़राफ़ में 7 सितारों की त़रह़ 7 नुक़्ते़ हैं और इसे सितारों और बुर्जों के निज़ाम की त़रह़ रखा गया है।''[2]

❁❁❁❁❁❁❁

**﴾......इ़ल्म सीखने से आता है......﴿**

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''इ़ल्म सीखने से ही आता है और फ़िक़्ह ग़ौरो फ़िक्र से ह़ासिल होती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन में समझ बूझ अ़त़ा फ़रमाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं।'' (المعجم الكبير،ج ١٩،ص ٥١١،الحديث:٧٣١٢)

---

1 ......فيض القدير للمناوى، باب حرف الميم، تحت الحديث : ٩٠٠٧، ج٦،ص٢٨٥ـ

2 ......الحاوى الكبير للماوردى،كتاب الشهادات الثانى، مسألة:واكره اللعب بالنرد للخبر، ج ٢١،ص ٢٠٢ـ



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 445 : शत्रंज खेलना(1)

**( ह़राम क़रार देने वालों के नज़्दीक शत्रंज खेलना जैसे अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का मौक़िफ़ है या जाइज़ कहने वालों के नज़्दीक खेलना जब कि इस के साथ जूआ मिला हो या नमाज़ क़ज़ा हो जाए या गाली गलोच वग़ैरा में मुब्तला हो जाए )**

## 360 बार नज़्रे रह़मत :

﴾1﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रोज़ाना 360 मर्तबा अपनी मख़्लूक़ की त़रफ़ नज़्रे रह़मत फ़रमाता है मगर इस में **साह़िबुश्शाह** (या'नी शत्रंज खेलने वाले) के लिये कोई ह़िस्सा नहीं।''(2)

शत्रंज खेलने वाले को **साह़िबुश्शाह** कहने की वज्ह येह है कि वोह (खेलते हुए) शाह कहता है (शत्रंज की बड़ी गोट को शाह या बादशाह कहते हैं)।

## खेलकूद में मश्ग़ूल रहने वालों की मिसाल :

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जब तुम उन लोगों के पास से गुज़रो जो फ़ाल निकालने वाले तीरों, चौसर, शत्रंज और दीगर लह्वो लअ़ब में

---

❶...... ''एक खेल जो चौंसठ चौकोर ख़ानों की बिसात़ (या'नी बिछी हुई चादर) पर दो रंग के 32 मोहरों से खेला जाता है, हर रंग में 8 पियादे (पैदल), दो रुख़, दो फ़ील (हाथी), दो अस्प (घोड़े), एक वज़ीर (फ़रज़ीन) और एक बादशाह होता है, हर मोहरे का अपना ख़ाना मुक़र्रर है और चाल का त़रीक़ा भी मुक़र्रर है।'' (उर्दू लुग़त, जि. 12, स. 591)

इस का हुक्म बयान करते हुए मुजद्दिदे आ'ज़म, इमामे अहले सुन्नत ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ''शत्रंज को अगर्चे बा'ज़ उ़-लमा ने बा'ज़ रिवायात में चन्द शर्तों के साथ जाइज़ बताया है : (1) बद कर (या'नी शर्त़ बांध कर) न हो (2) नादिरन कभी कभी हो, आ़दत न डालें (3) उस के सबब नमाज़े बा जमाअ़त ख़्वाह किसी वाजिबे शर-ई में ख़लल न आए (4) उस पर क़समें न खाया करें (5) फ़ोह़्श न बकें। मगर तह़क़ीक़ येह कि **मुत़्लक़न मन्अ़ है** और ह़क़ येह कि इन शर्तों का निबाह हरगिज़ नहीं होता। ख़ुसूसन शर्त़े दुवुम व सिवुम कि जब इस का चस्का पड़ जाता है ज़रूर मुदा-वमत करते हैं और ला अक़ल (या'नी कम अज़ कम) वक़्ते नमाज़ में तंगी या जमाअ़त में ग़ैर ह़ाज़िरी बेशक होती है। जैसा कि तजरिबा इस पर शाहिद और बिलफ़र्ज़ हज़ार में एकआध आदमी ऐसा निकले कि इन शराइत़ का पूरा लिह़ाज़ रखे तो नादिर पर हुक्म नहीं होता।''

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 76)

❷...... المَجْرُوْحِين من المُحَدِّثِيْن، لابن حبان، الرقم۹۹۶ محمد بن الحجاج المصفر، ج۲،ص۳۱۴، دون قوله"الی خلقه"۔



www.dawateislami.net

मश्गूल होते हैं तो उन्हें सलाम न करो क्यूं कि जब वोह इकट्ठे हो कर ऐसे खेल में मश्गूल होते हैं तो शैत़ान उन के पास अपने लश्करों के साथ आ जाता है पस वोह मुसल्सल खेलते रहते हैं यहां तक कि उन कुत्तों की त़रह़ एक दूसरे से जुदा होते हैं जो किसी मुर्दार पर जम्अ़ हो कर पेट भरने तक खाते रहते हैं फिर अ़ला-ह़दा हो जाते हैं।''(1)

﴾3﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन सब से सख़्त अ़ज़ाब साह़िबे शाह (शत़रंज खेलने वाले) को होगा, क्या आप देखते नहीं कि वोह कहता है : ''मैं ने उसे हलाक कर दिया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह मर गया।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर बोहतान और झूट बांधा।(2)

## शत़रंज के मु-तअ़ल्लिक़ अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के फ़रामीन :

﴾1﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم का फ़रमाने ह़क़ीक़त बयान है : ''शत़रंज अ़-जमिय्यों का जूआ है।'' आप رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه एक क़ौम के पास से गुज़रे जो शत़रंज खेल रही थी तो येह अल्फ़ाज़े क़ुरआनी तिलावत फ़रमाए : ''مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿۵۲﴾ (پ۱۷، الانبياء:۵۲) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** येह मूरतें क्या हैं जिन के आगे तुम आसन मारे (पूजा के लिये बैठे) हो ?'' (फिर फ़रमाया :) ''बेशक तुम में से कोई अंगारा पकड़ ले यहां तक कि वोह बुझ जाए येह उस के लिये इन को छूने से भी बेहतर है।'' फिर फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम्हारी तख़्लीक़ का मक़्सद कोई दूसरा है।''(3)

﴾2﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से एक क़ौल येह भी मरवी है कि ''शत़रंज खेलने वाला लोगों में सब से ज़ियादा झूट बोलता है, उन में से एक कहता है कि मैं ने हलाक कर दिया, ह़ालां कि उस ने हलाक नहीं किया होता और (कहता है) वोह मर गया ह़ालां कि वोह मरा नहीं होता।''(4)

﴾3﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : ''ख़त़ाकार ही शत़रंज

---

1 ......فردوس الاخبار للديلمی، الحديث : ۱۰۵۱، ج۱، ص۱۶۰۔
کتاب الكبائر للذهبی، الكبيرة العشرون القمار، ص۱۰۲۔

2 ......الورع للامام احمد بن حنبل، ص۹۲۔

3 ......السنن الكبرٰی للبيهقی، کتاب الشهادات، باب الاختلاف فی اللعب بالشطرنج، الحديث : ۲۰۹۲۸، ۲۰۹۳۰، ۲۰۹۳۲، ج۱۰، ص۳۵۸۔

4 ......کتاب الكبائر للذهبی، الكبيرة العشرون القمار، ص۱۰۲۔



www.dawateislami.net

खेलता है।''(1)

﴾4﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इस्ह़ाक़ बिन राहविया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से दरयाफ़्त किया गया : ''क्या आप शत्रंज खेलने में ह़रज समझते हैं ?'' तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : ''इस में ह़रज ही ह़रज है।'' अ़र्ज़ की गई : ''सरह़दों की ह़िफ़ाज़त करने वाले जंग के लिये खेलते हैं।'' इर्शाद फ़रमाया : ''येह गुनाह है।''

﴾5﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन का'ब क़रज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی से शत्रंज खेलने के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : ''इस में सब से कम नुक़्सान येह है कि शत्रंज खेलने वाला बरोज़े क़ियामत बात़िल लोगों के साथ पेश किया जाएगा या उन के साथ उठाया जाएगा।''

﴾6﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से शत्रंज के बारे में पूछा गया तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इर्शाद फ़रमाया : ''शत्रंज जूए से भी ज़ियादा बुरी है।''

﴾7﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (मु-तवफ़्फ़ा 179 हि.) का क़ौल भी इसी के मुवाफ़िक़ है, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से शत्रंज के मु-तअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया : ''शत्रंज चौसर ही का ह़िस्सा है।'' और चौसर के बारे में बयान हो चुका है कि येह अकाबिर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के नज़्दीक कबीरा गुनाह है।(2)

## सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का शत्रंज जला देना :

﴾8﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق (मु-तवफ़्फ़ा 179 हि.) फ़रमाते हैं कि हमें ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के मु-तअ़ल्लिक़ येह बात पहुंची है कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को एक यतीम के माल का वाली बनाया गया तो आप ने उस के बाप के माल में शत्रंज देख कर उसे जला दिया। अगर उस के साथ खेलना जाइज़ होता तो उसे जलाना जाइज़ न होता क्यूं कि वोह यतीम का माल था लेकिन चूंकि उस के साथ खेलना ह़राम था इस लिये उसे जला दिया। पस येह शराब की जिन्स से हुई कि जब यतीम के माल में शराब पाई जाए तो उसे बहा देना ज़रूरी है। और येह **ह़िब्रुल उम्मह** (या'नी उम्मत के बड़े आ़लिम) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का मज़हब है।(3)

---

(1)......السنن الكبرى للبيهقى، كتاب الشهادات، باب الاختلاف فى اللعب بالشطرنج، الحديث: ٢٠٩٣٥، ج١٠، ص٣٥٩۔

(2)......كتاب الكبائر للذهبى، الكبيرة العشرون القمار، ص١٠٢۔ (3)......المرجع السابق۔



www.dawateislami.net

﴾9﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़्ई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی से पूछा गया कि आप शत्रंज खेलने के मु-तअ़ल्लिक़ क्या फ़रमाते हैं ? फ़रमाया : ''येह मल्ऊ़न है (या'नी इस का खेलने वाला ला'नत का मुस्तह़िक़ है) ।''[1]

﴾10﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना वकीअ़ जर्राह़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه और ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इस फ़रमाने बारी तआ़ला : ''وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ (پ۶، المائدۃ:۳) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और पांसे डाल कर बांटा करना ।'' के मु-तअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाते हैं कि यहां मुराद शत्रंज है ।[2]

## ख़ातिमा बिलख़ैर न होना :

﴾11﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : जो शख़्स भी मरने लगता है तो उस के हम-नशीनों की मिसाली शक्लें उस के सामने पेश की जाती हैं । चुनान्चे, ऐसे ही एक क़रीबुल मौत शत्रंज के खिलाड़ी से कहा गया : ''لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ पढ़ो ।'' तो वोह कहने लगा : ''شَاهُكَ या'नी तेरा शाह ।'' फिर वोह मर गया । पस ज़िन्दगी में शत्रंज खेलने की वज्ह से जिस बात का वोह आ़दी हो चुका था मरते वक़्त उस की ज़बान पर वोही बात ग़ालिब आ गई तो उस ने वोह फ़ुज़ूल व बात़िल बात कह दी और कलिमए त़य्यिबा न पढ़ा जिस के मु-तअ़ल्लिक़ सादिक़ो मस्दूक़ नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़बर दी है कि ''जिस का दुन्या में आख़िरी कलाम कलिमए त़य्यिबा होगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा ।''[3]

## ह़दीसे पाक की वज़ाह़त :

इस का मत़लब येह है कि उसे मुत़्लक़ अ़ज़ाब ही न होगा या फिर सिर्फ़ बा'ज़ दीगर वुजूहात की बिना पर होगा और हम ने येह तावील इस लिये की क्यूं कि हर मुसल्मान बिल आख़िर ज़रूर जन्नत में दाख़िल होगा अगर्चे उसे अ़ज़ाब में मुब्तला भी किया जाए । वरना इस बात की ख़बर देने का कोई फ़ाएदा नहीं कि कलिमए त़य्यिबा का आख़िरी कलाम होना दुख़ूले जन्नत का तक़ाज़ा करता है सिवाए इस के कि उस में कोई ऐसी ख़ुसूसिय्यत हो जो उस के साथ

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی تحریم الملاعب والملاهی، الحدیث : ۶۵۲۰، ج۵، ص۲۴۲۔

2 ......الجامع لاحکام القرآن للقرطبی، المائدة، تحت الآیة ۳، ج۳، الجزء السادس، ص۲۳۔

3 ......کتاب الکبائر للذهبی، الکبیرة العشرون القمار، ص۱۰۳۔

سنن ابی داود، کتاب الجنائز، باب فی التلقین، الحدیث : ۳۱۱۶، ص۱۴۵۸۔



www.dawateislami.net

दुख़ूले जन्नत की तख़्सीस का तक़ाज़ा करती हो और इस ख़ुसूसिय्यत से मुराद या तो येह है कि बिग़ैर अ़ज़ाब के नजात पाने वालों के साथ जन्नत में दाख़िल हो या फिर जिस अ़ज़ाब का वोह मुस्तह़िक़ था **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस में तख़्फ़ीफ़ फ़रमा दे तो वोह इस कलिमे पर ख़ातिमा न होने के सबब जिस अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ होता उस के वक़्त से पहले ही जन्नत में दाख़िल हो जाएगा।

मज़्कूरा शख़्स जिस का ख़ातिमा شَاهُكَ के लफ़्ज़ पर हुवा, उस की मिस्ल एक और शख़्स का वाक़िआ़ भी है जो शराबियों के साथ बैठा करता था। जब उस की मौत का वक़्त क़रीब आया तो उसे कलिमए शहादत की तल्क़ीन की गई, लेकिन उस ने तल्क़ीन कराने वाले से कहा : "ख़ुद भी शराब पियो और मुझे भी पिलाओ।" इस के बा'द वोह मर गया[1]। [2] لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

## जैसी ज़िन्दगी वैसी मौत :

मश्हूर ह़दीसे पाक मज़्कूरा वाक़िए पर सादिक़ आती है कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हर इन्सान उसी ह़ालत पर मरता है जिस पर ज़िन्दगी बसर करता है और जिस ह़ालत पर मरता है उसी पर उठाया जाएगा।"[3]

हम करीम व ग़नी और अपने फ़ज़्ल से अ़ता करने वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इल्तिजा करते हैं कि हमें कामिल अह़्वाल पर मौत दे और बरोज़े मह़शर इसी पर उठाए ताकि हम उस से मिलें तो वोह अपने फ़ज़्लो करम से हम से राज़ी हो, बेशक वोह जवाद व रह़ीम है। (आमीन)

"**फ़तावा न-ववी**" में है कि अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़्दीक शत़रंज ह़राम है और इसी त़रह़ हमारे नज़्दीक भी येह ह़राम है बशर्ते कि इस के सबब नमाज़ का वक़्त फ़ौत हो जाए या किसी चीज़ को इवज़ ठहरा कर खेली जाए और अगर ऐसा न हो तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى के नज़्दीक मक्रूह है और दीगर अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़्दीक ह़राम है।

---

1...... शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : "मरने वाले को येह न कहा जाए कि कलिमा पढ़ बल्कि तल्क़ीन का सह़ीह़ त़रीक़ा येह है कि सकरात वाले के पास बुलन्द आवाज़ से कलिमा शरीफ़ का विर्द किया जाए ताकि उसे भी याद आ जाए।" (बयानाते अ़त्तारिय्या, ह़िस्सए दुवुम, स. 114)

2......كتاب الكبائر للذهبى، الكبيرة العشرون القمار، ص ١٠٣ـ

3......المرجع السابق ـصحيح مسلم، كتاب الجنة، باب الأمر بحسن الظن بالله عند الموت، الحديث: ٧٢٣٢، ص ١١٧٦ـ



www.dawateislami.net

# चन्द सुवालात व जवाबात

**सुवाल 1 :** जिन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने शत़रंज को ह़राम क़रार दिया उन के नज़्दीक येह कबीरा गुनाह है अगर्चे जूए और नमाज़ के ज़ियाअ़ वग़ैरा से ख़ाली हो और येह बात ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर, सय्यिदुना इमाम मालिक और सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم वग़ैरा के बयान कर्दा फ़रामीन से ज़ाहिर है। इस लिये कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق के फ़रमान में इसे जूए से मिलाना और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के फ़रमान में जूए से ज़ियादा बुरा क़रार देना, नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का इसे जला देना इस के कबीरा होने में ज़ाहिर है और ह़ज़रते सय्यिदुना इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق का फ़रमान कि तमाम ह़रज इसी में है और येह गुनाह है और इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना वकीअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَدِيْع और ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان का आयते मुबा-रका के अल्फ़ाज़ ''وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ'' की तफ़्सीर शत़रंज के साथ करना। पस येह तमाम फ़रामीने मुबा-रका इस बारे में वाज़ेह़ हैं कि जो शत़रंज खेलने को ह़राम क़रार देते हैं उन के नज़्दीक येह गुनाहे कबीरा है और इसे जाइज़ क़रार देने वाले इस को उस वक़्त कबीरा गुनाह क़रार देते हैं जब इस के साथ गुज़श्ता बयान कर्दा ख़राबियां मिली हुई हों। लिहाज़ा उन के नज़्दीक इस का कबीरा गुनाह होना इस के साथ मिली हुई ख़राबियों की वज्ह से है न कि येह ज़ाती त़ौर पर कबीरा है।

**जवाब :** हां ! मुआ़-मला तो इसी त़रह़ है मगर कभी कभार कोई शै क़बीह़ चीज़ से मिल कर वोह फ़ाएदा देती है कि अ़ला-ह़दा त़ौर पर नहीं देती। येह बात बई़द नहीं कि इस मिलने को ही ऐसा बना दिया जाए कि उस से नफ़्रत दिलाने और सख़्ती करने के लिये येह इस बात का तक़ाज़ा करे कि येह कबीरा गुनाह हो (लिहाज़ा येह कबीरा गुनाह है)।

**सुवाल 2 :** अगर शत़रंज खेलने में इस क़दर मगन रहे यहां तक कि नमाज़ का वक़्त ख़त्म हो जाए लेकिन इस में उस का इरादा शामिल न हो तो उस को ना फ़रमान क़रार देने की कोई वज्ह नहीं और दूसरी बात येह है कि इस ह़ालत में वोह ग़ाफ़िल था और ग़ाफ़िल ग़ैर मुकल्लफ़ होता है। पस इस को ना फ़रमान क़रार देना मुह़ाल (या'नी ना मुम्किन) है।

**जवाब :** भूलने वाला और ग़ाफ़िल उस वक़्त ग़ैर मुकल्लफ़ होता है जब भूल, ग़फ़्लत और जहालत उस की कोताही की पैदावार न हो वरना वोह मुकल्लफ़ और गुनहगार होगा।



www.dawateislami.net

## ग़फ़्लत की सूरत में कोताही का सुबूत :

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने शत़रंज में मुन्हमिक हो कर ग़फ़्लत का शिकार होने वाले के मु-तअ़ल्लिक़ तसरीह़ कर दी है कि किसी ऐसे शख़्स को मा'ज़ूर नहीं समझा जाएगा जो खेल में इस क़दर मुन्हमिक हो जाए यहां तक कि नमाज़ का वक़्त निकल जाए और उसे शुऊ़र तक न हो। क्यूं कि येह बात साबित शुदा है कि येह ग़फ़्लत उस के बज़ाते ख़ुद इस मक्रूह फ़े'ल में ज़ियादा मुन्हमिक होने और इस पर हमेशगी इख़्तियार करने की कोताही की वज्ह से पैदा हुई है यहां तक कि इस की वज्ह से उस ने फ़र्ज़ को ज़ाएअ़ कर दिया।

## जहालत की सूरत में कोताही का सुबूत :

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने जहालत के मु-तअ़ल्लिक़ भी वज़ाह़त फ़रमाई कि अगर एक शख़्स फ़ौत हो गया और एक मुद्दत तक उस की तज्हीज़ो तक्फ़ीन न की गई और न ही नमाज़े जनाज़ा पढ़ी गई तो उस का पड़ोसी गुनहगार होगा ख़्वाह इसे उस की मौत की ख़बर न हो। क्यूं कि पड़ोसी के अह़्वाल से इस क़दर बे ख़बर रहना सख़्त कोताही है। लिहाज़ा उसे ना फ़रमान और ख़त़ाकार क़रार दिया जा सकता है।

## चौसर और शत़रंज में फ़र्क़ :

**सुवाल 3 :** हमारे नज़्दीक चौसर और शत़रंज के दरमियान क्या फ़र्क़ है ?

**जवाब :** हमारे (शाफ़ेई) अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इन दोनों में फ़र्क़ किया है कि चौसर में (हार जीत का) इन्ह़िसार मोहरों (या'नी गोटियों) पर होता है जब कि शत़रंज में दारो मदार सोचो बिचार और ग़ौरो फ़िक्र पर होता है और येह जंग की तदबीर में फ़ाएदा देती है।

## हुज़्ज़ह और क़िर्क़ में फ़र्क़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : "मैं "**हुज़्ज़ह** और **क़िर्क़**" खेलने को ना पसन्द करता हूं।"

## हुज़्ज़ह की ता'रीफ़ :

इस से मुराद लकड़ी का टुकड़ा होता है जिस में 3 सत़रों का गढ़ा खोद कर उस में छोटे छोटे कंकर रख कर खेला जाता है और इसे **अर-बआ़ अ़शर** भी कहते हैं, जब कि मिस्र में इसे **मिन्क़ला** कहा जाता है। ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपनी किताब "**तक़रीब**" में इस के मु-तअ़ल्लिक़ वज़ाह़त यूं फ़रमाई कि येह एक लकड़ी होती है जिस में 28 सूराख़ किये



www.dawateislami.net

जाते हैं, 14 एक त़रफ़ और चौदह दूसरी त़रफ़ और इन के साथ खेला जाता है। शायद ! येह दो क़िस्म के खेल हों लिहाज़ा दोनों में कोई तज़ाद नहीं।

## क़िर्क़ की ता'रीफ़ :

इस का तलफ़्फ़ुज़ **क़िर्क़** है मगर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु–तवफ़्फ़ा 623 हि.) ने क़ाज़ी रूयानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى की तह़रीर से इस के दोनों ह़ुरूफ़ को मफ़्तूह़ कहा है (या'नी **क़रक़**) और **क़िर्क़** मग़रिबी शत़रंज को कहते हैं या'नी ज़मीन पर एक चौकोर ख़त़ लगाया जाता है और उस के दरमियान सलीब की त़रह़ दो ख़त़ खींचे जाते हैं, फिर ख़त़ों के सिरों पर छोटे छोटे कंकर रख कर खेला जाता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु–तवफ़्फ़ा 623 हि.) फ़रमाते हैं : "**अश्शामिल** में है कि इन दोनों (या'नी **ह़ुज़्ज़ह़** और **क़िर्क़**) के साथ खेलना चौसर खेलने की त़रह़ है।" ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू ह़ामिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ता'लीक़ (या'नी शर्ह़ या ह़ाशिया) में है कि येह शत़रंज की त़रह़ है और येह कहना ज़ियादा बेहतर है कि जिस खेल में (हार जीत का) दारो मदार मोहरों (या'नी गोटियों) पर हो वोह चौसर की त़रह़ है और जिस में दारो मदार ग़ौरो फ़िक्र पर हो वोह शत़रंज की मिस्ल है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु–तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं : येह क़ौल सह़ीह़ और बेहतरीन है, नीज़ जुम्हूर के चौसर और शत़रंज के माबैन बयान कर्दा फ़र्क़ के मुत़ाबिक़ भी है। फिर उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू ह़ामिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد से मन्क़ूल कलाम में इख़्तिलाफ़ किया जिस की तफ़्सील येह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मह़ामली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى ने इन से नक़्ल किया कि **ह़ुज़्ज़ह़** चौसर की त़रह़ है और ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इन से नक़्ल किया कि **ह़ुज़्ज़ह़** और **क़िर्क़** दोनों चौसर की त़रह़ हैं और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बन–दनीजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने तसरीह़ की, कि येह चौसर की त़रह़ है और येह तीनों ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू ह़ामिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد की सनद और उन की ता'लीक़ के रावी हैं और इसे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम रूयानी और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इमरानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا ने ज़िक्र किया।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने रिफ़्अ़ह रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने "**अल मत़लब**" में नक़्ल फ़रमाया : "इन दोनों को ह़राम क़रार देना इराक़ियों के मज़हब के ऐन मुत़ाबिक़ है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बन–दनीजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सब्बाग़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه



www.dawateislami.net

(मु-तवफ़्फ़ा 477 हि.) ने इस की तसरीह़ की है।'' फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू ह़ामिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد की ता'लीक़ के ह़वाले से ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) की ह़िकायत और इन की बह़्स को ज़िक्र कर के इसे बर क़रार रखा। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इस्नवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) की साबिक़ा **क़िर्क़** वाली बह़्स से इन दोनों (या'नी **हुज़्ज़ह** और **क़िर्क़**) का जाइज़ होना मा'लूम होता है क्यूं कि इन दोनों में से हर एक में दारो मदार ग़ौरो फ़िक्र पर होता है न कि उस चीज़ पर जिसे फेंका जा रहा हो और **अरौंज़ह** में येह बह़्स छोड़ दी। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه वग़ैरा के ज़िक्र कर्दा इस कलाम पर ए'तिराज़ किया कि येह दोनों चौसर के मा'ना में बराबर हैं क्यूं कि अगर इन दोनों में ग़ौरो फ़िक्र पर ए'तिमाद होता तो दोनों का हुक्म चौसर की त़रह़ न होता। फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : ''शायद ! शहरों के उ़र्फ़ व आ़दत वग़ैरा के मुख़्तलिफ़ होने से हुक्म बदलता रहता है।'' सह़ीह़ येह है कि इस में बहुत ज़ियादा इख़्तिलाफ़ नहीं क्यूं कि जब क़ाइदा मा'रूफ़ और साबित हो तो हुक्म का दारो मदार इसी पर होता है। लिहाज़ा जब इस में ग़ौरो फ़िक्र और ह़िसाब पर ए'तिमाद हो तो शत़रंज की त़रह़ जाइज़ होने के इलावा कोई सूरत नहीं और जब अन्दाज़े पर ए'तिमाद हो तो चौसर की त़रह़ ह़राम होने के इलावा कोई सूरत नहीं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) का गुज़श्ता फ़ैसला और ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन अ़ली बिन मुह़म्मद मावर्दी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی का सह़ीह़ क़ौल येह है कि चौसर खेलना ह़राम और फ़िस्क़ है और इस से गवाही मरदूद हो जाती है और अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का भी येही मौक़िफ़ है। इसी त़रह़ चौदह मोहरों के साथ खेला जाने वाला खेल और इस जैसे दीगर खेल चौसर की त़रह़ ह़राम हैं और वोह खेल भी ह़राम है जिसे आ़म लोग **त़ाब** और **दुक** कहते हैं क्यूं कि इस में ए'तिमाद उस शै पर होता है जिसे नरकल के 4 ह़िस्से निकालते हैं और इस से दिल में ख़ुशी होती है अगर्चे येह खेल जूआ और बे हूदगी से ख़ाली होता है मगर बा'ज़ अवक़ात इस की त़रफ़ ले जाता है (लिहाज़ा येह भी ह़राम है)।

**अल ख़ादिम** में ऐसा ही कलाम ज़िक्र किया और फ़रमाया : ''गन्जिफ़ा भी इसी की मिस्ल है। (येह एक ना जाइज़ खेल है, इस की ता'रीफ़ सफ़ह़ा नम्बर **732** पर ह़ाशिये में मुला-ह़ज़ा



www.dawateislami.net

फ़रमाइये) और मुसा-बक़त (या'नी मुक़ा-ब-लए तीर अन्दाज़ी) के बाब में अंगूठी के साथ खेलने के मु-तअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) का कलाम इसी हुक्म का तक़ाज़ा करता है और जो हुक्म चौसर खेलने के बारे में है वोही हुक्म चौदह मोहरों, **सद्र, सुल्फ़ा, सवाक़ील, किआ़ब, रबारीब** और **ज़र्राफ़ात** के साथ खेलने के मु-तअ़ल्लिक़ है (येह अ़-रबों के चन्द खेल हैं) और फ़रमाया : ''जो शख़्स इस जिन्स का कोई भी खेल खेले वोह बे वुक़ूफ़ और **मरदूदुश्शहादह** है ख़्वाह उस में जूआ हो या न हो।''

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं : ''ज़िक्र कर्दा बा'ज़ खेलों के मु-तअ़ल्लिक़ मैं नहीं जानता।''

❁❁❁❁❁❁❁

## कबीरा नम्बर 446 : गाने बजाने के आलात बजाना
## कबीरा नम्बर 447 : गाने बजाने के आलात सुनना
## कबीरा नम्बर 448 : बांसरी बजाना
## कबीरा नम्बर 449 : बांसरी सुनना
## कबीरा नम्बर 450 : त़बला या डुगडुगी बजाना
## कबीरा नम्बर 451 : त़बला या डुगडुगी सुनना

खेल तमाशे की मज़म्मत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِىْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٦ (پ٢١، لقمٰن:٦)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और कुछ लोग खेल की बात ख़रीदते हैं कि **अल्लाह** की राह से बहका दें बे समझे और इसे हंसी बना लें उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है।

## आयते मुबा-रका की तफ़्सीर :

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ لَهْوَ الْحَدِيْثِ की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि इस से मुराद खेल के आलात हैं। अ़न्क़रीब इस की वज़ाह़त आएगी। दूसरे मक़ाम पर इर्शादे बारी तआ़ला है :


www.dawateislami.net

وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ (پ۱۵، بنی اسرائیل:۶۴) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और डगा दे (बहका दे) उन में से जिस पर क़ुदरत पाए अपनी आवाज़ से।

## आयते मुबा-रका की तफ़्सीर :

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد ने इस की तफ़्सीर गानों बाजों के साथ की।

सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तम्बूरा, सारंगी और डुगडुगी बजाने वाले के इलावा हर गुनहगार को मुआफ़ फ़रमा देता है।''(1)

## तम्बीह :

मज़्कूरा 6 गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है। इन में से बा'ज़ के बारे में अक्सर का येही मौक़िफ़ है और दीगर को इन्ही पर क़ियास किया गया है बल्कि ''**अश्शामिल**'' में तमाम को कबीरा गुनाह क़रार दिया गया जैसा कि अन्क़रीब इस की वज़ाहत आएगी।

## गाने बाजे का हुक्म :

हज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन अ़ब्दुल मलिक बिन **अ़ब्दुल्लाह** जुवैनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं कि मेरे शैख़ (या'नी वालिदे मोहतरम) हज़रते सय्यिदुना अबू मुहम्मद **अ़ब्दुल्लाह** जुवैनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा गाने बाजे सुनना गवाही मरदूद होने का मूजिब नहीं बल्कि इस पर इसरार करने से येह मरदूद होती है और इराक़ियों और हमारे अ़ज़ीम शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने इसे क़त़ई तौ़र पर गुनाहे कबीरा क़रार दिया और **हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) ने भी येही फ़रमाया।

दोनों फ़रमाते हैं कि गाने बजाने के आलात सुनने के बारे में हमारा मज़्कूरा कलाम इस सूरत के मु-तअ़ल्लिक़ है कि जब एक मर्तबा इस का इरतिकाब करना मदहोशी व मस्ती न लाए वरना एक बार से ही गवाही मरदूद हो जाएगी।

हज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के नज़्दीक येह हुक्म हर उस चीज़ के मु-तअ़ल्लिक़ आ़म है जो गाने बाजे की मिस्ल हो और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इराक़ियों की त़रफ़ मन्सूब कर्दा क़ौल में तवक़्क़ुफ़ करते हुए हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अबिद्दम

(1) ......النهاية فی غريب الحديث: والأثر، باب العين مع الراء، عرطب، ج۳،ص۱۹۶۔



www.dawateislami.net

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं कि मैं ने किसी को इस की तसरीह़ करते हुए नहीं देखा बल्कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन अ़ली बिन मुह़म्मद मावर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى शाफ़ेई होने के बा वुजूद इमामुल ह़-रमैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मौक़िफ़ के बर अ़क्स राय पर ए'तिमाद करते हुए फ़रमाते हैं : ''जब हम गाने बजाने के आलात को ह़राम क़रार देंगे तो येह सग़ीरा गुनाह कहलाएंगे न कि कबीरा, जिन में इस्तिग़्फ़ार की ज़रूरत होगी और इन पर इसरार किये बिग़ैर गवाही भी मरदूद न होगी और जब हम किसी चीज़ को मक्रूह क़रार देंगे तो इस से मुराद नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी वाले काम होंगे जिन में इस्तिग़्फ़ार की ह़ाजत होगी न गवाही मरदूद होगी जब तक कि कसरत से इन का इरतिकाब न करे।''

''**अल मुहज़्ज़ब**'' में इसी को इख़्तियार किया गया इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी हुसैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी ''**ता'लीक़**'' (या'नी शर्ह़ या ह़ाशिया) में फ़रमाते हैं कि हमारे बा'ज़ शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के नज़्दीक अगर कोई शख़्स निकाह़ मुन्अ़क़िद होते वक़्त रेशम पर बैठा तो उस की गवाही मुन्अ़क़िद न होगी क्यूं कि इस में मह़ल्ले शहादत अदाए शहादत की त़रह़ होता है।

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के नज़्दीक येह सग़ीरा गुनाहों में से है और इस से जो मसाइल अख़्ज़ होते हैं वोह फ़िस्क़ को लाज़िम नहीं करते। ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ूरानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى ने ''**अल इनाबह**'' में इसी क़ौल को ज़िक्र किया और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबिद्दम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की त़रफ़ से ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मज़्कूरा तरदीद का रद करते हुए फ़रमाया कि ''**ज़ख़ाइर**'' में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मह़ल्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى की तसरीह़ इसी क़ौल के मुत़ाबिक़ है। चुनान्चे, वोह फ़रमाते हैं कि इस का कबीरा होना **अश्शामिल** के कलाम से वाज़ेह़ है कि जो इन ह़राम चीज़ों में से कोई चीज़ सुने वोह फ़ासिक़ है और उस की गवाही मरदूद है और इस में बार बार सुनना भी शर्त़ नहीं।

येह गाने बाजे को ह़राम क़रार देने वालों के कलाम का ख़ुलासा है और इस के इ़लावा भी कई मज़ामीन हैं जिन पर कोई ए'तिराज़ नहीं। पस हम कहते हैं कि बाजे और हर मस्त करने वाली आवाज़ का सुनना ह़राम है जैसे सितार, सारंगी, बाजा, दोतारा या'नी छोटी सारंगी, झांझ, इ़राक़ी बांसरी, चरवाहे की बांसरी, डुगडुगी और इस के इ़लावा दीगर गाने बाजे के आलात वग़ैरा।



www.dawateislami.net

## मिअ्-ज़फ़ह का मा'ना :

इस के मु-तअ़ल्लिक़ एक क़ौल येह है कि मिअ्-ज़फ़ह से मुराद गाने वाली लौंडियों की आवाज़ें हैं जब कि गाने के साथ सारंगी को भी इस्ति'माल किया जाए वरना इस को येह नाम नहीं दिया जाएगा।

एक क़ौल के मुताबिक़ इस से मुराद हर गाने बजाने वाला आला है क्यूं कि येह ऐसे आलात हैं जो शराब पर उभारते हैं और इन में शराबियों से मुशा-बहत पाई जाती है जो कि ह़राम है। इसी वज्ह से अगर चन्द लोग किसी जगह इकट्ठे हों और अपनी इस मजलिस में शराब नोशी के बरतन और पियाले ला कर उन में सकन-जबीन (या'नी तुर्शी और मिठास से बना हुवा शरबत) उंडेलें और एक साक़ी (या'नी पिलाने वाला) मुक़र्रर करें जो इन सब के इर्द गिर्द चक्कर लगा कर उन्हें पिलाए और वोह एक दूसरे के साथ ऐसी बातें करें जो शराब नोशों की आ़दत है तो उन का येह अ़मल ह़राम है (अगर्चे शरबत ह़लाल है फिर भी शराबियों की मुशा-बहत की वज्ह से ह़राम है)।

## इब्ने ह़ज़्म[1] की तरदीद :

गाने बजाने के आलात की हुरमत कई अस्नाद से साबित है और इब्ने ह़ज़्म को इस के ख़िलाफ़ वह्म हुवा (लिहाज़ा उस ने इन की हुरमत के मु-तअ़ल्लिक़ मरवी रिवायात को मौज़ूअ़ क़रार दे दिया) ह़ालां कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने इस पर ता'लीक़ लिखी और सय्यिदुना इस्माईली, सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, सय्यिदुना इमाम इब्ने माजह **अबू अ़ब्दुल्लाह** मुह़म्मद बिन यज़ीद क़ज़्वेनी, सय्यिदुना इमाम अबू नुऐ़म और सय्यिदुना इमाम अबू दावूद सुलैमान बिन अश्अ़स सिजिस्तानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم ने इसे ऐसी सह़ीह़ असानीद के साथ बयान फ़रमाया कि जिन के मु-तअ़ल्लिक़ कोई वज्हे त़ा'न नहीं पाई जाती और अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की एक दूसरी जमाअ़त ने भी इन रिवायात

---

[1]...... इब्ने ह़ज़्म के मु-तअ़ल्लिक़ ख़ुद मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه كَفُّ الرِّعَاعِ عَنْ مُحَرَّمَاتِ اللَّهْوِ وَالسَّمَاعِ عَلٰى هَامِش الزَّوَاجِر जिल्द 1, सफ़ह़ा 145 पर फ़रमाते हैं : ''याद रखो ! अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इब्ने ह़ज़्म की तज़्लील करते हुए फ़रमाया कि इब्ने ह़ज़्म की बहुत सी बे तुकी बातें हैं और उमूरे क़बीह़ा हैं जो उस की सख़्ती (त़बीअ़त) और ज़वाहिर पर जुमूद की वज्ह से पैदा हुईं। इस लिये मुह़क़्क़िक़ीन ने फ़रमाया : इब्ने ह़ज़्म का कोई वज़्न नहीं और न उस के कलाम की त़रफ़ नज़र की जाएगी और न उस के ख़िलाफ़ (जो अहले सुन्नत से किया) पर कोई ए'तिबार व ए'तिमाद किया जाएगा।'' इसी किताब के सफ़ह़ा 163 पर मज़ीद फ़रमाते हैं : ''इब्ने ह़ज़्म तो इस बारह में उन सब ज़ाहिरिय्यों (या'नी ग़ैर मुक़ल्लिदीन) से ज़ियादा क़बीह़ है। बेशक उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के नज़्दीक इब्ने ह़ज़्म और इस के अस्ह़ाब का कोई वज़्न नहीं और किसी के लिये इब्ने ह़ज़्म की तक़्लीद जाइज़ नहीं और उस की बात की त़रफ़ कान लगाना बिल्कुल ना जाइज़ है।'' (तआ़रुफ़ चन्द मुफ़स्सिरीन मुह़द्दिसीन मुअर्रिख़ीन का, स. 9, 10)



www.dawateislami.net

को सहीह क़रार दिया जैसा कि बा'ज़ हुफ़्फ़ाज़े हदीस ने फ़रमाया इस बिना पर कि ख़ुद इब्ने हज़्म ने दूसरे मक़ाम पर इस की तसरीह की, कि जब कोई आदिल रावी आदिल रावी को पा कर उस से रिवायत करता है तो येह बात उस के समाअ़ (या'नी अहादीस सुनने) और मुलाक़ात पर महमूल होती है। अब ख़्वाह वोह कहे : اَخْبَرَنَا يا حَدَّثَنَا يا عَنْ فُلَانٍ يا قَالَ فُلَانٌ। तो उन में से हर लफ़्ज़ उस के समाअ़ पर दलालत करता है।

इब्ने हज़्म के कलाम में टकराव देखिये कि इस ने हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की इस रिवायत के ख़िलाफ़ हुक्म दिया। हज़रते सय्यिदुना अबू मालिक अश्अ़री رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत में ज़रूर एक ऐसी क़ौम होगी जो ज़िना, रेशम, शराब और गाने बाजे के आलात को हलाल जानेगी।"(1)

येह हदीसे पाक कैफ़ो मस्ती और लह्वो लअ़ब वाले आलात के हराम होने के मु-तअ़ल्लिक़ सरीह है और शैख़ैन (या'नी इमाम न-ववी व इमाम राफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا) ने बयान किया है कि इराक़ी बांसरी और दूसरे आलाते मूसीक़ी बजाने के हराम होने में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं।

इब्ने हज़्म और इस की पैरवी करने वालों की नफ़्स परस्ती पर तअ़ज्जुब है कि उन्हों ने तअ़स्सुब की इन्तिहा करते हुए इस रिवायत और इस बाब में मरवी दीगर तमाम रिवायात को मौज़ूअ़ क़रार दे दिया और येह उन की जानिब से वाज़ेह झूट है। लिहाज़ा इस मुआ-मले में किसी के लिये इस के किसी क़ौल पर ए'तिमाद करना जाइज़ नहीं।

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल अ़ब्बास अहमद बिन उमर क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "बांसरी, आलाते मूसीक़ी और तबला या डुगडुगी की आवाज़ सुनने की हुरमत में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं और मैं ने सलफ़ व ख़लफ़ (या'नी पहले और बा'द वाले) किसी भी मो'तबर इमाम के हवाले से इस के जवाज़ का कोई क़ौल नहीं सुना और येह हराम क्यूं न हो हालां कि येह चीज़ें शराबियों और फ़ासिक़ों का शिआ़र हैं और शह्वतों, फ़ितना व फ़साद और बे हयाई को फैलाने वाली हैं और जो चीज़ ऐसी हो उस की हुरमत में कोई शक नहीं और न ही ऐसा करने वाले के फ़ासिक़ और गुनहगार होने में कोई शक है।"

बा'ज़ शारिहीने **मिन्हाज** फ़रमाते हैं : "बांसरी शराबियों का शिआ़र नहीं बल्कि अक्सर इन के पास होती ही नहीं। इस लिये कि इस से उन का हाल ज़ाहिर हो जाता है। लेकिन

---

(1)......صحيح البخارى، كتاب الاشربة، باب ما جاء فيمن يستحل الخمر ويسميه بغير اسمه، الحديث : ٥٥٩٠،ص٤٨٠۔



www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं कि येह क़ौल बातिल है बल्कि वोह अपने मकानों में ऐसी चीज़ें रखते हैं जिन से गाने बाजे के आलात की आवाज़ ज़ाहिर नहीं होती बल्कि अ़लानिया फ़िस्क़ो फ़ुजूर में मुब्तला रहने वाले अरबाबे हुकूमत भी ऐसे आलात खुले आ़म रखते हैं।"

## आलाते मूसीक़ी से मुमा-न-अ़त की वुजूहात :

"**एहयाउल उ़लूम**" में है : (शराब की इत्तिबाअ़ में) गाने बजाने के आलात की हुरमत 3 वुजूहात की बिना पर है :

(1)...... आलाते मूसीक़ी शराब नोशी की दा'वत देते हैं और इन से ह़ासिल होने वाली लज़्ज़ात शराब नोशी की त़रफ़ ले जाती हैं और इसी इ़ल्लत की वज्ह से थोड़ी सी शराब पीना भी ह़राम है।

(2)...... जिस ने चन्द दिन से शराब पीना तर्क किया हो तो येह आलात उसे शराब की मजालिस याद दिलाते हैं और याद से शौक़ उभरता है और जब शौक़ ज़ियादा होता है तो शराब पीने की जुर्अत पैदा होती है।

(3)...... आलाते लह्वो लअ़्ब पर इकठ्ठा होना फ़ासिक़ों की अ़लामत बन चुका है साथ ही इन से मुशा-बहत भी पाई जाती है और जो किसी क़ौम की मुशा-बहत इख़्तियार करता है वोह उन्ही में से होता है।(1)

## आलाते मूसीक़ी के जवाज़ पर चन्द बातिल अक़्वाल और उन की तरदीद

गुज़श्ता बह्स में आलाते मूसीक़ी की हुरमत पर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इत्तिफ़ाक़ बयान किया जा चुका है मगर इस की मुख़ा-लफ़त में दर्जे ज़ैल बातिल अक़्वाल और कमज़ोर आराअ पाई जाती हैं :

## पहला क़ौल और उस का रद्दे बलीग़ :

पहला क़ौल इब्ने ह़ज़्म का है कि सारंगी की हुरमत के मु-तअ़ल्लिक़ कोई सह़ीह़ ह़दीस नहीं। बल्कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जा'फ़र رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने इस की आवाज़ सुनी।

इब्ने ह़ज़्म ने ज़ाहिरी क़बीह़ फ़िर्क़ा (या'नी ग़ैर मुक़ल्लिदियत व वहाबियत) पर जुमूद इख़्तियार करने की वज्ह से ऐसी बात कही और सारंगी ह़राम क्यूं न होगी जब कि येह भी तो

---

(1)......احياء علوم الدين، كتاب آداب السماع والوجد، بيان الدليل على إباحة السماع، ج ٢،ص٣٣٦، ٣٣٧۔



www.dawateislami.net

आलाते मूसीक़ी में से है और इस की हुरमत पर सहीह़ ह़दीसे पाक अभी गुज़री है और मज़्कूरा दो इमामों (या'नी सय्यिदुना इब्ने उ़मर और सय्यिदुना इब्ने जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) के मु-तअ़ल्लिक़ इब्ने ह़ज़्म का गुमान दुरुस्त नहीं क्यूं कि इन से ऐसी बात साबित नहीं और ऐसा हरगिज़ हो भी नहीं सकता जब कि वोह इन्तिहाई परहेज़ गार, लह्वो लअ़ब वग़ैरा को ह़राम क़रार देने और इस से दूर रहने वाले हैं और अगर इस ह़दीसे पाक के मु-तअ़ल्लिक़ इब्ने ह़ज़्म के गुमान को तस्लीम कर भी लिया जाए तब भी बिद्अ़त की मज़म्मत, नई नई बातों और इन के इन्कार पर दलालत करने वाली आ़म अह़ादीसे मुबा-रका सारंगी की हुरमत पर इस त़रह़ दलालत करती हैं कि जिस का रद नहीं किया जा सकता।

हमारे जलीलुल क़द्र आ़लिम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल ह़सन अ़ली बिन मुह़म्मद मावर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं : ''हमारे बा'ज़ शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام गाने बजाने के आलात में से सारंगी बजाने को ख़ास त़ौर पर मुबाह़ क़रार देते हैं ह़राम क़रार नहीं देते और इस की वज्ह येह बताते हैं कि येह उन ह़-रकात पर बनाई जाती है जो ग़म को ख़त्म करती, हिम्मत को क़ुव्वत देती और चुस्ती में इज़ाफ़ा करती हैं।''

फिर इस का रद करते हुए ख़ुद ही फ़रमाते हैं कि इस की ह़िल्लत की येह कोई वज्ह नहीं।

(मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :) पस इस वज्ह को रद करने में इमाम मावर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के इस क़ौल कि ''इस की ह़िल्लत की येह कोई वज्ह नहीं'' से शैख़ैन (या'नी इमाम राफ़ेई व इमाम न-ववी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا) के आलाते मूसीक़ी की हुरमत में इख़्तिलाफ़ की नफ़ी करने से ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इस्नवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى का इन से इख़्तिलाफ़ ख़ुद ब ख़ुद ख़त्म हो जाता है और इस के ख़त्म होने की वज्ह येह है कि येह शाज़ और दलील की नफ़ी करने वाला है जो तर्क कर देने, ए'राज़ करने और अहम्मिय्यत न देने के लाइक़ है। इलावा अज़ीं ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इस्नवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى का इस वज्ह को बयान करते हुए येह कहना दुरुस्त नहीं कि शैख़ैन ने आलाते मूसीक़ी में मुत़्लक़न इख़्तिलाफ़ की नफ़ी की है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम रूयानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى ने **''अल बह़्र''** में ख़ास त़ौर पर **ऊ़द** (या'नी सारंगी) के जवाज़ की एक वज्ह येह बयान की, कि कहा जाता है कि येह बा'ज़ अमराज़ में नफ़्अ़ देती है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मावर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने भी येही बात ज़िक्र फ़रमाई। मगर इस पर ए'तिराज़ किया जाता है कि जब इस के जवाज़ की इ़ल्लत बा'ज़ अमराज़ में नफ़्अ़ मन्द होना बयान की गई है तो इस की इबाह़त को सिर्फ़ उस मरज़ में मुब्तला शख़्स



www.dawateislami.net

के साथ ही मुक़य्यद करना चाहिये न कि किसी दूसरे को इस की इजाज़त देनी चाहिये।

**नीज़** जब इसे ह़ाजते मरज़ की वज्ह से मुबाह़ ठहराया गया है तो इस को बत़ौरे इल्लत बयान करने पर इक्तिफ़ा न किया जाए बल्कि क़त़ई त़ौर पर इस के जवाज़ का हुक्म देना चाहिये बशर्ते कि इलाज इसी पर मुन्ह़सिर हो जैसा कि ऐसी ह़ालत में किसी नजिस चीज़ के साथ इलाज करना भी जाइज़ हो जाता है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़लीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى ने अपनी किताब "**मिन्हाज**" में क़त़ई त़ौर पर येह मौक़िफ़ इख़्तियार किया है कि आलाते लह्व जब बा'ज़ अमराज़ में नफ़्अ़ दें तो उन्हें सुनना जाइज़ है। इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने इमाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد ने फ़रमाया : "आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल साबित है।" और मुआ़-मला यूंही है जैसे उन्हों ने फ़रमाया लिहाज़ा इस वक़्त इस वज्ह की कोई ह़क़ीक़त न रहेगी। पस येह बात वाज़ेह़ हो गई कि शैख़ैन का येह बयान करना सह़ीह़ है कि आलाते मूसीक़ी में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं और येह सब बिला इख़्तिलाफ़ ह़राम हैं।

## गुमराह इब्ने त़ाहिर का रद्दे बलीग़ :

इब्ने त़ाहिर ने साह़िबे **तम्बीह** के मु-तअ़ल्लिक़ बयान किया कि वोह बांसरी का सुनना न सिर्फ़ जाइज़ क़रार देते बल्कि सुनते भी थे और उन के मु-तअ़ल्लिक़ येह बात मशहूर है और उन के हम-अ़स्र किसी आ़लिम ने उन का रद न किया बल्कि इस के जाइज़ होने पर अहले मदीना का इत्तिफ़ाक़ है।

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इब्ने त़ाहिर का रद करते हुए फ़रमाया : "वोह ना आ़क़िबत अन्देश (या'नी बे वुक़ूफ़), मम्नूअ़ कामों को मुबाह़ क़रार देने वाला, बहुत बड़ा झूटा और गन्दे अ़क़ीदे का मालिक था।"

इसी वज्ह से ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) ने मज़्कूरा कलाम ज़िक्र करने के बा'द इर्शाद फ़रमाया : "इब्ने त़ाहिर का ऐसा करना ना आ़क़िबत अन्देशी है ह़ालां कि येह (या'नी बांसरी सुनना) मदीनए मुनव्वरह के बे ह़या और बेकार लोगों का अ़मल था और "**साह़िबे तम्बीह**" की त़रफ़ इस की निस्बत करना क़त़ई त़ौर पर बात़िल है जैसा कि मैं ने उन की किताब के **बाबुस्सिमाअ़** में देखा है और उन्हों ने अपनी किताब "**अल मुहज़्ज़ब**" और "**अल वसाया**" में बांसरी को ह़राम क़रार दिया है बल्कि उन की किताब **तम्बीह** का कलाम भी येही तक़ाज़ा करता है और जो शख़्स उन का ह़ाल, परहेज़ गारी की इन्तिहा और तक़्वा की पुख़्तगी जान लेगा वोह उन के इस से दूर और पाक होने का यक़ीन कर लेगा



www.dawateislami.net

और अ़क्ल मन्द शख़्स किसी ऐसे परहेज़ गार बन्दे के मु-तअ़ल्लिक़ येह गुमान कैसे करेगा कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीन में ऐसी बात कहेगा कि ख़ुद जिस के ख़िलाफ़ अ़मल करता हो और इस के साथ साथ उस बात में गुनाह और ना फ़रमानी की नजासत भी शामिल हो ? और हमारी मा'लूमात के मुताबिक़ जिस ने भी उन की सवानेहे ह़यात बयान की उस ने उन के मु-तअ़ल्लिक़ ऐसी कोई बात ज़िक्र नहीं की और इब्ने ताहिर का येह क़ौल कि ''اَنَّهٗ مَشْهُوْرٌ عَنْهُ'' भी उस की ना आ़क़िबत अन्देशियों में से है और उस का गाने और **लह्वो लअ़ब** के जवाज़ पर सहाबए किराम व ताबिईने इ़ज़ाम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के इज्माअ़ का दा'वा करना भी उस के अन्धे और बहरे होने का नतीजा है।''

इसी से इस क़ौल की भी तरदीद हो जाती है जो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इस्नवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने इब्ने ताहिर से ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق के ह़वाले से नक़्ल किया और इस पर कोई ए'तिराज़ न किया।

इसी वज्ह से **''अल ख़ादिम''** में कहा कि येह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इस्नवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی की त़रफ़ से **तल्बीस** (या'नी ख़िलाफ़े ह़क़ीक़त ज़ाहिर करना) है और इस में उन के दोस्त कमाल उद्फ़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने अपनी किताब **अल इम्ताअ़** में उन की पैरवी की। ह़ालां कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق के ह़वाले से इसे बयान करना जाइज़ नहीं। क्यूं कि उ़-लमाए ह़दीस के नज़्दीक गाने बजाने के आलात को मुबाह़ क़रार देने के सबब इब्ने ताहिर के मु-तअ़ल्लिक़ कलाम किया गया है।

ह़ज़राते शैख़ैन (या'नी इमाम राफ़ेई व इमाम न-ववी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا) के इस क़ौल ''बल्कि इराक़ी बांसरियों और दूसरे आलाते मूसीक़ी की ह़ुरमत में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं'' पर **अल ख़ादिम** के इस क़ौल से ए'तिराज़ करना रद किया गया है कि ''शैख़ैन के इस क़ौल में नज़र है क्यूं कि बांस की बांसरियों को तार वाले आलाते मूसीक़ी के साथ ज़िक्र करने में कोई मुना-सबत नहीं'' तरदीद की वज्ह येह है कि इन दोनों के दरमियान मुना-स-बते ताम्मा पाई जाती है इस लिये कि आ़म बांसरियां और दीगर तार वाले आलाते मूसीक़ी हम-जिन्स हैं।

## दूसरा क़ौल और इस का रद्दे बलीग़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल ह़सन अ़ली बिन मुह़म्मद मावर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی का झांझ के मु-तअ़ल्लिक़ एक क़ौल येह है कि येह गाने के साथ हो तो मक्रूह है और अगर अ़ला-ह़दा तौ़र पर बजाया जाए तो मक्रूह नहीं। इस लिये कि अ़ला-ह़दा तौ़र पर इस से कैफ़ो मस्ती नहीं



www.dawateislami.net

आती और येह क़ौल शाज़ है, इसी वज्ह से जब आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से **"अल बहूर"** में इस को नक़्ल किया गया तो इसे बातिल क़रार दिया गया हालां कि साहिबे **बहूर** अक्सर आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की इत्तिबाअ़ करते हैं बल्कि "साहिबे **बहूर**" का अक्सर कलाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मावर्दी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی की किताब **"अल ह़ावी"** ही का हिस्सा है।

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू ह़ामिद عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَاحِد फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی से झांझ के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने इर्शाद फ़रमाया : "सब से पहले ज़नादिक़ा (या'नी ला दीनों) ने इराक़ में इस का आग़ाज़ किया यहां तक कि लोग (इस में मश्ग़ूल हो कर) नमाज़ और ज़िक्रे इलाही से ग़ाफ़िल हो गए।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जौहरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی वग़ैरा फ़रमाते हैं : "झांझ अक्सर पीतल (की दो प्लेटों) से बनाई जाती है कि इन में से एक को दूसरी पर मारा जाता है और येह अ़-रबों के साथ ख़ास है जब कि तार वाले आलाते मूसीक़ी अ़-जमिय्यों के साथ ख़ास हैं और येह दोनों लफ़्ज़ (या'नी **सन्ज** और **ज़ुल अवतार**) अ़-जमी हैं जो बा'द में अ़-रबी में इस्ति'माल होने लगे।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी ह़मात बारिज़ी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی के ख़याल में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) की मुराद दूसरा क़ौल है और इन का इस त़रह़ की बात करना अ़जीब है ह़ालां कि इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) फ़रमाते हैं कि **तालियां बजाना ह़राम है** और इसे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू मुह़म्मद عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد वग़ैरा ने ज़िक्र किया लेकिन इमामुल ह़-रमैन رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने इस में तवक़्क़ुफ़ किया क्यूं कि इस के मु-तअ़ल्लिक़ कोई ह़दीस वारिद नहीं अलबत्ता ! डुगडुगी का मुआ़-मला इस के बर अ़क्स है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) मज़ीद फ़रमाते हैं कि अ़-रबी झांझ तालियां बजाने की त़रह़ है या येही अ़-रबी झांझ ही तालियां बजाना है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने मुईन जज़री عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی का क़ौल भी इन के क़ौल के मुवाफ़िक़ है कि सलील बिग़ैर गाने के कैफ़ो मस्ती वाले ह़राम आलाते मूसीक़ी में से है जिसे झांझ भी कहते हैं और इस से मुराद वोह आवाज़ है जो लोहे के दो टुकड़ों को एक दूसरे पर मारने से पैदा होती है।

**"अल मोह़्कम"** का कलाम इस पर दलालत करता है कि झांझ का इत़्लाक़ दफ़ पर



www.dawateislami.net

भी होता है और इस से मुराद अ़-रबी झांझ है और तार वाले आलाते मूसीक़ी पर भी इस का इत़्लाक़ होता है और इस सूरत में झांझ के मु-तअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) के कलाम को दोनों सूरतों पर मह़्मूल करना जाइज़ होगा न कि जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी बारिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने गुमान किया है।

"**अल बह़्र**" में शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से मुत़्लक़न तालियां बजाने की ह़ुरमत मन्क़ूल है और "**अल ख़ादिम**" में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى ने वज़ाह़त नहीं फ़रमाई कि तालियां बजाने से क्या मुराद है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अबिद्दम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं कि झांझ के मु-तअ़ल्लिक़ मु-तअख़्ख़िरीन फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इख़्तिलाफ़ है। इन में से बा'ज़ कहते हैं कि येह आबनूस की बहुत मज़बूत़ लकड़ी होती है, इस बात को येह इ़ल्लत बयान करना तक़्वियत देता है कि येह शराबियों की आ़दत है और बा'ज़ कहते हैं कि इस से मुराद पीतल से बनने वाली झांझें हैं जो ढोलों, सारंगियों और नक़्क़ारों के साथ बजाई जाती हैं और येह बात इस को ज़ईफ़ क़रार देती है कि येह न तो कैफ़ो मस्ती पैदा करती है और न ही कोई सह़ीहु़द्दिमाग़ और अ़क़्ले सलीम का मालिक शख़्स इस को सुन कर लज़्ज़त ह़ासिल करता है।

## आलाते मूसीक़ी की अक़्साम मअ़ अह़्काम :

﴿1﴾...... "**अल ह़ावी**" में है कि **लह्वो लअ़ब** के आलात या तो ह़राम हैं जैसे सारंगी, सितार, गाने बजाने के आलात, ढोल, बांसरी और हर वोह आलए मूसीक़ी जिस की आवाज़ से अ़ला-ह़दा त़ौर पर कैफ़ो मस्ती ह़ासिल हो।

﴿2﴾...... या येह आलात मक्रूह हैं या'नी जो गाने के साथ तो कैफ़ो मस्ती में इज़ाफ़ा करें लेकिन अ़ला-ह़दा त़ौर पर किसी कैफ़ का बाइ़स न बनें जैसे झांझ और नरसल। लिहाज़ा इन को गाने के साथ बजाना मक्रूह है वरना नहीं।

﴿3﴾...... या मुबाह़ हैं और इन से मुराद वोह आलात हैं जिन से पैदा होने वाली आवाज़ कैफ़ो मस्ती से निकाल कर डराने की त़रफ़ ले जाए जैसे बिगल या जंग का नक़्क़ारा बजाना या लोगों को इकठ्ठा करने या ए'लान करने के लिये कोई आला बजाना जैसे निकाह़ में दफ़ बजाना।

झांझ के मु-तअ़ल्लिक़ जो कुछ मज़्कूर हुवा वोह शाज़ है जैसा कि बयान हो चुका है इस का मह़ल येह है कि अगर इस की तफ़्सीर येह की जाए कि इस से मुराद तालियां बजाना नहीं वरना इस में कोई कैफ़ो सुरूर नहीं होता। हां ! बा'ज़ ममालिक में हीजड़े इन के आ़दी होते हैं



www.dawateislami.net

तो इस सूरत में हुरमत मु–तहक्क़क़ हो जाती है इस की वज्ह डुगडुगी बजाने के बयान में आएगी।

तम्बूर (सितार) ऊ़द (सारंगी) से मुख़्तलिफ़ होता है जैसा कि इन के कारीगरों में मश्हूर है। अलबत्ता ! अहले लुग़त कहते हैं कि तम्बूर ऊ़द को ही कहते हैं। एक क़ौल येह भी है कि ऊ़द और तम्बूर वग़ैरा इस्मे जिन्स हैं जिन के तहत मुख़्तलिफ़ अक़्साम आती हैं और कभी लफ़्ज़े ऊ़द का इत्लाक़ दीगर आलाते मूसीक़ी पर भी होता है। इस के मु–तअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इमरानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی और कई शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का कलाम येह है कि ''आलाते मूसीक़ी से पैदा होने वाली आवाज़ें 3 अक़्साम पर मुश्तमिल हैं इन में से एक ह़राम है और येह वोह आलात हैं जिन से बिग़ैर गाने के भी कैफ़ो मस्ती ह़ासिल होती है जैसे सारंगी, सितार, ढोल, बांसरियां, बाजे, पाइप की बांसरियां, नक़्क़ारे, सारंगी की मिस्ल एक तार वाले बाजे और आख़िरी दो के मुशाबेह आलाते मूसीक़ी।''

## मज़ामीर की अक़्साम :

मज़ामीर सुरनाई (बांसरी की त़रह़ का एक बाजा) को भी शामिल है और इस से मुराद बांस की ऐसी लकड़ी है जिस का एक सिरा तंग और दूसरा काफ़ी खुला होता है और येह क़ाफ़िलों और जंगों में और नक़्क़ारों पर बजाया जाता है और येह (मज़ामीर) **किर्जह** को भी शामिल है और येह भी सुरनाई की मिस्ल है मगर इस में बांस के निचले ह़िस्से में तांबे का एक टेढ़ा टुकड़ा रखा जाता है जो दीहातों में शादी के मौक़अ़ पर बजाया जाता है और येह (मज़ामीर) **नाय** को भी शामिल है (जो कि बांसरी की मिस्ल एक बाजा है)। येह पहली दोनों क़िस्मों से ज़ियाद ख़ुश कुन होता है और येह दो मिली हुई लकड़ियां होती हैं। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ सब से पहले बनी इसराईल ने बांसरियां बनाईं।

## तक्या बजाने का हुक्म :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی (मु–तवफ़्फ़ा 623 हि.) फ़रमाते हैं कि तक्यों पर कटी हुई शाख़ें मारना इराक़ियों के नज़्दीक मक्रूह है लेकिन साह़िबे **मुहज़्ज़ब** ने इस में हुरमत को तरजीह़ दी है और ''**अल काफ़ी**'' में अहले मराविज़ा के ह़वाले से इसे ह़राम कहा गया है (मराविज़ा एक शहर का नाम है)। इस पर ए'तिराज़ किया गया है कि इन के अकाबिर में से ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू अ़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی ने इस के मक्रूह होने पर जज़्म किया है और साह़िबे काफ़ी ने कटी हुई शाख़ से पीटने को समाअ़ में तालियां बजाने के साथ मिलाया है।

## मर्दों का तालियां बजाना कैसा ?

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़लीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं कि मर्दों के लिये तालियां



www.dawateislami.net

बजाना मक्रूह है क्यूं कि येह औ़रतों के साथ ख़ास है और मर्दों को इन की मुशा–बहत इख़्तियार करने से मन्अ़ किया गया है जैसा कि इन्हें ज़ा'फ़रानी लिबास पहनने से मन्अ़ किया गया है।

मज़्कूरा कलाम जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र–कशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया, तक़ाज़ा करता है कि येह मक्रूहे तह़रीमी है क्यूं कि औ़रतों के साथ मुशा–बहत इख़्तियार करना ह़राम बल्कि कबीरा गुनाह है।

## तीसरा क़ौल और उस का रद्दे बलीग़ :

इन्हीं अक़्वाल में से एक क़ौल ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु–तवफ़्फ़ा 623 हि.), सय्यिदुना इमाम मावर्दी, सय्यिदुना इमाम **ख़त्ताबी** (मु–तवफ़्फ़ा 388 हि.), सय्यिदुना इमाम रूयानी, सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली (मु–तवफ़्फ़ा 505 हि.) सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन यह़्या, सय्यिदुना इमाम बाजरमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم का भी है कि **''यराअ़''** जाइज़ है (येह भी बांसरी की एक क़िस्म है) इसे **शब्बाबा** (या'नी मदहोश कर देने वाला बांसरी जैसा आला) भी कहते हैं क्यूं कि येह सफ़र में चलने पर हुदी ख़्वानी की त़रह़ चुस्ती पैदा करता है।

येह क़ौल शाज़ है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु–तवफ़्फ़ा 783 हि.) ने फ़रमाया, जुम्हूर अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इसे ह़राम क़रार दिया और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़–करिय्या यह़्या बिन शरफ़ न–ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु–तवफ़्फ़ा 676 हि.) ने भी इसी क़ौल को तरजीह़ दी जिसे ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी अ़सरून رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दुरुस्त क़रार देते हुए फ़रमाया : बल्कि येह (या'नी यराअ़) उन तमाम बांसरियों से ज़ियादा ह़राम क़रार दिये जाने के लाइक़ है जिन की हुरमत पर इत्तिफ़ाक़ है क्यूं कि इस से कैफ़ो मस्ती ज़ियादा पैदा होती है और येह शराबियों और फ़ासिक़ों का शिआ़र है और इस वज्ह से भी कि येह अहले मूसीक़ी के नज़्दीक एक ऐसा मुकम्मल आला है जो तमाम नग़मात को पूरा करने वाला है और एक क़ौल के मुत़ाबिक़ येह क़ीरात़ (या'नी दौलत) में कमी का बाइ़स बनता है। बा'ज़ के नज़्दीक येह बांसरी की आ'ला क़िस्म है और जिन इ़ल्लतों की बिना पर बक़िय्या तमाम बांसरियां ह़राम हैं वोह तमाम बल्कि उन से भी ज़ियादा इ़ल्लतें इस में पाई जाती हैं लिहाज़ा इसे ब द–र–जए औला ह़राम क़रार देना चाहिये और इस मस्अले में इख़्तिलाफ़ करना बिला वज्ह झगड़ा करने के मु–तरादिफ़ है।

येही हुरमत का क़ौल मन्क़ूल के मुत़ाबिक़ है क्यूं कि इसी पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى और जुम्हूर अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने नस्स



www.dawateislami.net

क़ाइम फ़रमाई है। इसी त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस से कम कैफ़ो मस्ती वाले कई आलात को ह़राम क़रार दिया है जैसे डुगडुगी, लह्वो लअ़ब का त़बला या'नी बड़ा ढोल और ख़ुशी और बच्चों के ख़तना के मौक़अ़ के इ़लावा दफ़ बजाना और इन्हें ह़राम देने की वज्ह इन का **लह्व** होना है कि जिन से जाइज़ नफ़्अ़ ह़ासिल नहीं किया जाता। पस इस के **लह्व** होने के साथ साथ नुफ़ूस की ख़्वाहिशात व लज़्ज़ात की त़रफ़ मैलान ज़िक्रे इलाही और नमाज़ से रोकने का बाइ़स भी बनता है तो येह ब द-र-जए औला ह़राम होना चाहिये।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 676 हि.) ने शब्बाबा के मस्अले में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) से इख़्तिलाफ़ किया है और अस्ल मज़हब और अहले इ़राक़ का कलाम येही तक़ाज़ा करता है और **ज़ख़ाइर** में शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام का बेहतरीन हुक्म येह नक़्ल किया गया है कि तमाम बांसरियां मुत़्लक़न ह़राम हैं।''

इ़राक़ियों ने बिग़ैर तफ़रीक़ किये बांसरी की तमाम अक़्साम को ह़राम क़रार दिया। पस मज़्हबे जुम्हूर के मुत़ाबिक़ **शब्बाबा** ह़राम है और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम ज़ियाउद्दीन अ़ब्दुल मलिक बिन ज़ैद दौलई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने इस की तह़रीम की दलील में त़वील कलाम करते हुए फ़रमाया : उन अहले इ़ल्म पर ह़ैरानी होती है जो **शब्बाबा** को जाइज़ समझते हैं और इस की ऐसी वज्ह बयान करते हैं जिस की फ़साद के इ़लावा कोई सनद और अस्ल नहीं और इसे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی के मज़हब की त़रफ़ मन्सूब करते हैं। ख़ुदा न करे कि येह आप का मज़हब हो या आप के अस्ह़ाब में से किसी का मज़हब हो जिस पर आप के मज़हब को जानने में ए'तिमाद किया जाता हो और वोह आप की त़रफ़ मन्सूब होता हो।

यक़ीनी त़ौर पर येह बात मा'लूम हो चुकी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی ने तमाम अक़्साम के गाने बजाने के आलात को ह़राम क़रार दिया और **शब्बाबा** भी गाने बजाने के आलात में से है और इन की ही एक क़िस्म है बल्कि इसे ब द-र-जए औला ह़राम होना चाहिये क्यूं कि इस की तासीर (बांसरी की मिस्ल बाजों) **नाय** और **सुरनाई** से भी ज़ियादा होती है।

## आलाते मूसीक़ी की वज्हे हुरमत :

आलाते मूसीक़ी अपने नामों और ल-क़बों की वज्ह से ह़राम नहीं हैं बल्कि इन में



www.dawateislami.net

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र और नमाज़ से रुकावट, तक्वा से दूरी, ख़्वाहिशात की त़रफ़ मैलान, गुनाहों में डूबना और इस ह़राम काम के बर क़रार रखने में अपने नफ़्स को ढील देना पाया जाता है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى से ले कर आख़िर वक़्त तक बसरी, बग़दादी, खुरासानी, शामी, ख़-ज़्री, पहाड़ों में रहने वाले, हि़जाज़ी, मा वराउन्नह्र और यमन में रहने वाले सब इसी मज़्हब पर क़ाइम हैं और ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا के वाक़िए से इस्तिदलाल करते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम दौलई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى का कलाम अपने इख़्तिताम को पहुंचा।

गोया ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम दौलई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने मज़्कूरा कलाम की इब्तिदा में **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) पर ता'रीज़ की (या'नी उन की त़रफ़ इशारा किया) गोया येह उन के हम-ज़माना थे क्यूं कि इन की विलादत उन की वफ़ात के 10 साल बा'द हुई।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जमालुल इस्लाम बिन बिज़्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى अपने फ़तावा में फ़रमाते हैं : ''बिला शुबा **शब्बाबा** भी एक क़िस्म की बांसरी है जिस की हुरमत नस्स से साबित और मश्हूर है। इस का इन्कार करना वाजिब और सुनना ह़राम है और उ़-लमाए मु-तक़द्दिमीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين में से किसी ने इस की ह़िल्लत और इस के सुनने के जवाज़ का क़ौल नहीं किया और जिस ने इसे ह़लाल और इस का सुनना जाइज़ क़रार दिया वोह ख़त़ा करने वाला है।''

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल ह़सन अ़ली बिन मुह़म्मद मावर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى का येह क़ौल ज़ईफ़ बल्कि शाज़ है कि शह्र में ग़ैर मा'कूल इस्ति'माल की वज्ह से **शब्बाबा** मक्रूह है लेकिन सफ़र और चरागाह में मुबाह़ है क्यूं कि येह चलने पर उभारती और जब चौपाओं को चरने के लिये छोड़ दिया गया हो तो उन्हें इकठ्ठा करती है। (फिर मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस क़ौल में निहायत ही ज़ईफ़ एह्तिमाल बयान करते हुए फ़रमाते हैं :) मुत़्लक़ ह़िल्लत के क़ौल की त़रह़ इस सूरत पर मह़मूल कर दिया जाए कि जिस त़रह़ बच्चे और चरवाहे मूसीक़ी के किसी क़ानून को मद्दे नज़र रखे बिग़ैर बजाते हैं और वोह भी ऐसे कि जिस की एक ही **लै** (या'नी सुर) हो क्यूं कि उस वक़्त येह ह़िल्लत के क़रीब होगी जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) ने फ़रमाया, मज़ीद फ़रमाते हैं कि अगर इसे मसर्रत पैदा करने वाले मा'रूफ़ अन्दाज़ पर बजाया जाए तो येह मुत़्लक़न ह़राम है। बल्कि येह (या'नी शब्बाबा) उन तमाम बांसरियों से ज़ियादा ह़राम क़रार दिये जाने के लाइक़ है जिन की हुरमत पर इत्तिफ़ाक़ है क्यूं कि इस से कैफ़ो मस्ती ज़ियादा पैदा होती है और येह शराबियों और फ़ासिक़ों का शिआ़र


www.dawateislami.net

है और बा'ज़ कारीगर कहते हैं : येह एक ऐसा मुकम्मल आला है जो तमाम नग़मात को पूरा करने वाला है। और दीगर कहते हैं : येह क़ीरात़ (या'नी दौलत) में कमी का बाइ़स बनता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन उ़मर कुरतुबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 656 हि.) फ़रमाते हैं : "येह बांसरी की आ'ला क़िस्म है जिन इ़ल्लतों की बिना पर बक़िय्या तमाम बांसरियां ह़राम हैं वोह तमाम बल्कि उन से भी ज़ियादा इ़ल्लतें इस में पाई जाती हैं लिहाज़ा इसे ब द-र-जए औला ह़राम क़रार देना चाहिये।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम कुरतुबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 656 हि.) की बात वाज़ेह़ तौ़र पर साबित है और इस में इख़्तिलाफ़ करना ख़्वाह म ख़्वाह झगड़ा करना है और ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنهُمَا की ह़दीस जिस की त़रफ़ इशारा किया जा चुका है, इस में हुफ़्फ़ाज़े ह़दीस का इख़्तिलाफ़ है और इसी को ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنه ने आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنه से रिवायत किया कि "आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنه ने एक चरवाहे की बांसरी की आवाज़ सुनी तो अपने कानों में उंग्लियां रख लीं और रास्ते से हट गए और फ़रमाते रहे : "ऐ नाफ़ेअ़ ! क्या बांसरी की आवाज़ सुन रहे हो ?" तो मैं कहता रहा : जी हां और जब मैं ने कहा : नहीं तो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنه रास्ते की त़रफ़ लौट आए फिर इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इसी त़रह़ करते देखा।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद बिन नस्र सलामी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى से इस रिवायत के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा गया तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : "येह ह़दीस सह़ीह़ है।" फिर फ़रमाया : "उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنهُمَا बालिग़ थे क्यूं कि आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنه की उ़म्र 17 बरस थी।" मज़ीद फ़रमाया : "येह शारेअ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़िम्मादारी है कि अपनी उम्मत को सिखाए कि बांसरी, शब्बाबा और इन के क़ाइम मक़ाम दीगर आलाते मूसीक़ी का सुनना ह़राम है और सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنهُمَا को रुख़्सत देना इस वज्ह से था कि वहां ऐसी ज़रूरत साबित थी जिस का ह़ल फ़क़त़ येही था कि कभी ज़रूरतन ना जाइज़ चीज़ मुबाह़ हो जाती है।" फिर फ़रमाया : "पस जिस ने इस (या'नी गाने बाजे के) मुआ़-मले में रुख़्सत दी वोह सुन्नत की मुख़ा-लफ़त करने वाला है।"

---

(1)......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب الرقاق، باب الفقر والزهد والقناعة، الحديث: ٦٩٢، ج٢، ص٤٠۔



www.dawateislami.net

# बांसरी के जवाज़ में इख़्तिलाफ़

## क़ाइलीने जवाज़ के दलाइल :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं : इस हदीसे पाक से हमारे शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَھُمُ اللہُ السَّلَام ने बांसरियों की हुरमत पर इस्तिद्लाल किया और इसी पर **शब्बाबा** में हुरमत की बुन्याद रखी और जो उ-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللہُ السَّلَام इस के मुबाह होने पर इस से इस्तिद्लाल करते हैं कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا को कान बन्द करने का हुक्म न दिया और न ही चरवाहे को मन्अ़ फ़रमाया लिहाज़ा येह इस पर दलील है कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कराहते तन्ज़ीही के तौर पर ऐसा किया। या फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ज़िक्र या सोच व फ़िक्र की हालत में थे और बांसरी की आवाज़ ख़लल डाल रही थी इस वज्ह से अपने गोशे अक़्दस (या'नी कान मुबारक) बन्द फ़रमा लिये।

## क़ाइलीने जवाज़ की तरदीद :

क़ाइलीने जवाज़ की तरदीद में दर्जे ज़ैल उमूर ज़िक्र किये जाते हैं :

(1)...... पहला जवाब तो येह है कि चरवाहे की बांसरी दर अस्ल ऐसी न थी जिसे इस फ़न के माहिर बनाते हैं और इसी में इख़्तिलाफ़ है, या'नी वोह बांसरियां जिन्हें वोह महारत से बनाते हैं और जिन के तहूत उन की तमाम खुश कुन अन्वाअ़ होती हैं और येह बात भी मा'लूम शुदा है कि चरवाहों की बांसरी बांस की होती है जो उस बांसरी की तरह नहीं होती जिसे कारीगरी और नफ़ासत पसन्दी से बनाया जाता है बल्कि वोह ऐसे तरीक़े पर बनाई जाती है जिस में वोह ऐसे नग़मात ईजाद करते हैं जो शह्वत उभारने का बाइस बनते हैं।

(2)...... दूसरा जवाब येह है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا को कान बन्द करने का हुक्म न देने की वज्ह येह है कि सहाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के नज़्दीक येह बात साबित शुदा थी कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अफ़्आ़ल आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अक़्वाल की तरह हुज्जत हैं। लिहाज़ा जब आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ऐसा किया तो हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने भी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी करने में जल्दी की और इन के



www.dawateislami.net

मु-तअ़ल्लिक़ कैसे गुमान किया जा सकता है कि उन्हों ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ न की होगी हालां कि वोह सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में सब से ज़ियादा इत्तिबाअ़ करने वाले थे ? इसी वज्ह से ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम दौलई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : ''येह बात उस शख़्स के दिल में कभी नहीं खटक सकती जो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की क़द्रो मन्ज़िलत और उन के त़रीक़े से वाक़िफ़ हो ।'' मज़ीद फ़रमाते हैं : ''आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान कि ''یَاعَبْدَ اللہِ! تَسْمَعُ هَلْ تَسْمَعُ؟'' का मा'ना है, ''یَاعَبْدَ اللہِ! هَلْ تَسْمَعُ؟'' या'नी ऐ **अ़ब्दुल्लाह !** तुम सुन रहे हो, क्या आवाज़ आ रही है ?'' और कलाम की इस पर दलालत वाज़ेह़ होने की वज्ह से पहला **تَسْمَعُ** गिरा दिया क्यूं कि जो शख़्स अपने कानों में उंग्लियां डाल ले वोह नहीं सुन सकता जब कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस क़दर सुनने की इजाज़त फ़क़त़ ह़ाजत की वज्ह से दी गई थी ।''

(3)...... तीसरा जवाब येह है कि तवज्जोह से कान लगा कर सुनना मम्नूअ़ है न कि बिला इरादा इत्तिफ़ाक़न सुनना । इसी वज्ह से हमारे शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام ने वज़ाह़त फ़रमाई कि जिस के पड़ोस में **लह्वो लअ़ब** के ह़राम आलात सुने जाते हों और वोह उन्हें ख़त्म न कर सकता हो तो उस के लिये वहां से नक़्ले मकानी (या'नी चले जाना) ज़रूरी नहीं और वोह इरादे और कान लगाए बिग़ैर सुनने से गुनहगार भी न होगा ।

क़ाइलीने जवाज़ का रद करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं : ''नाफ़ेअ़ के क़ौल ''زَمَّارَةُ رَاعٍ'' (या'नी चरवाहे की बांसरी) के मु-तअ़ल्लिक़ येह सुबूत नहीं कि वोह **शब्बाबा** थी क्यूं कि चरवाहे तो **शुऐ़बा** वग़ैरा बजाते हैं जिस के मु-तअ़ल्लिक़ वह्म किया जाता है कि जिस का नाम **शुऐ़बा** है वोह ख़ालि-सतन मुबाह़ है । लेकिन मैं ने किसी इमाम को येह कहते हुए नहीं पाया । जब कि **शुऐ़बा** छोटी छोटी चन्द लकड़ियां क़ित़ार में जोड़ कर बनाई जाती है और इस से उस के आ़दी के मिज़ाज के मुत़ाबिक़ कैफ़ो मस्ती पैदा होती है और येह भी बिला शुबा **शब्बाबा** या मिज़्मार ही की एक क़िस्म है ।

## सय्यिदुना इमाम जलाल बुल्क़ीनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْغَنِی के क़ौल की तरदीद :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुल्क़ीनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْغَنِی ने **शब्बाबा** की इबाह़त की त़रफ़ मैलान करते हुए जो बात कही, मज़्कूरा दलील से इस का भी रद हो गया और वोह बात येह है कि हुरमत किसी मो'तबर दलील के बिग़ैर साबित नहीं होती और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम


www.dawateislami.net

मुहृयुद्दीन अबू ज़-करिय्या यहूया बिन शरफ़ न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 676 हि.) ने भी इस पर कोई दलील क़ाइम नहीं की और उन्हें येह जवाब भी दिया गया कि अगर येह तस्लीम कर भी लिया जाए कि ह़दीसे पाक में इस की हुरमत पर कोई दलील नहीं तो फिर भी यहां तो दलील मौजूद है और वोह गुज़श्ता तक़रीर से मा'लूम हो चुका है कि **शब्बाबा** को उन तमाम आलाते मूसीक़ी पर क़ियास किया गया है जिन की हुरमत पर इत्तिफ़ाक़ है क्यूं कि येह भी मस्ती व मदहोशी पैदा करने में दूसरे तमाम आलाते मूसीक़ी के साथ न सिर्फ़ शरीक है बल्कि बसा अवक़ात इस में ऐशो त़रब दीगर आलाते लह्वो लअ़ब जैसे सारंगी व रबाब वग़ैरा से ज़ियादा होता है। पस इसे या तो क़ियास करना बेहतर है या फिर येह सारंगी व रबाब के बराबर है और चूंकि मज़्कूरा दोनों आलात ह़राम हैं लिहाज़ा येह भी ह़राम है।

## यराअ़ से क्या मुराद है ?

**शब्बाबा** को **यराअ़** कहने की वज्ह येह है कि येह दरमियान से ख़ाली होता है। और इसी से है : ''رَجُلٌ يَرَاعٌ لَا قَلْبَ لَهٗ'' या'नी वोह इतना बुज़दिल शख़्स है गोया उस के पास दिल ही नहीं।'' या'नी वोह बांस की त़रह़ अन्दर से खोखला है। येह लफ़्ज़ इस्मे जिन्स है जिस का वाह़िद **यरा-अ़तुन** है जैसा कि **''तहज़ीबुन्न-ववी''** में है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जौहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **यराअ़** से मुराद हर वोह नबात है जिस का तना पतला, खोखला और गांठदार हो नीज़ उस में पोरी और गिरह भी हो जब कि **यरा-अ़तुन** से मुराद किसी दरख़्त की पोरी या नलकी है कि जिस के दोनों त़रफ़ गिरह हो। इस सूरत में **यराअ़** की तफ़्सीर **शब्बाबा** के साथ करना वुस्अ़त के त़ौर पर है क्यूं कि येह बात साबित हो चुकी है कि **यराअ़** का वाह़िद **यरा-अ़तुन** है तो फिर जम्अ़ से किसी मुफ़रद की तफ़्सीर कैसे हो सकती है ?

बा'ज़ मु-तअख़्ख़िरीन फ़रमाते हैं कि शैख़ैन (या'नी इमाम राफ़ेई व इमाम न-ववी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا) के इख़्तिलाफ़ का मह़ल नरकल नहीं जिसे मौसूल भी कहा जाता है इस लिये कि इसे भी दूसरे गाने बजाने के आलात के साथ मिला कर बजाया जाता है और येह शराबियों का शिआ़र है जैसा कि शराबियों के ह़ालात से वाक़िफ़ किसी पर येह बात मख़्फ़ी नहीं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) फ़रमाते हैं कि **यराअ़** से मुराद हर नरकल व बांस नहीं बल्कि इस से मुराद इराक़ी बांसरी है और ऐसे आलाते



www.dawateislami.net

मूसीक़ी बिला इख़्तिलाफ़ ह़राम हैं जिन्हें दूसरे गाने बजाने के आलात से मिला कर बजाया जाता है।

हज़रते सय्यिदुना इमाम बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی के मौक़िफ़ की तरदीद में किये गए कलाम से उस क़ौल की भी तरदीद हो जाती है जो हज़रते सय्यिदुना इमाम ताजुद्दीन सुबकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने अपनी किताब "**अत्तौशीह़**" में ज़िक्र किया कि मुझे इन्तिहाई जुस्त-जू के बा वुजूद **यराअ़** की ह़ुरमत पर कोई दलील नहीं मिली जो मेरे नज़्दीक जाइज़ है अगर इस के साथ भी कोई दूसरा ह़राम आला मिला दिया जाए तो दोनों ह़राम हो जाएंगे और जो अहले ज़ौक़ नहीं उन के लिये मेरे नज़्दीक औला येह है कि वोह इस से मुत़्लक़न ए'राज़ करें क्यूं कि इस में ज़ियादा तर नफ़्सानी ख़्वाहिशात ही ह़ासिल होती हैं जो कि शर-ई मक़ासिद में से नहीं और जो अहले ज़ौक़ हैं उन की ह़ालत उन्हीं के सिपुर्द कर दी जाएगी और उन का हुक्म उसी ह़ालत व कैफ़िय्यत के मुत़ाबिक़ होगा जो वोह अपने दिलों में पाते हैं।

## समाअ़ का बयान व तह़क़ीक़

हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी हुसैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इमामुस्सूफ़ियह हज़रते सय्यिदुना शैख़ जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं कि "मह़फ़िले समाअ़ में शरीक लोग (1)...... या अ़वाम होते हैं ह़ालां कि बक़ाए नुफ़ूस की ख़ात़िर उन के लिये समाअ़ ह़राम है (2)...... या ज़ाहिदीन होते हैं कि हुसूले मुजा-हदा की ख़ात़िर उन के लिये समाअ़ मुबाह़ है (3)...... या फिर आ़रिफ़ीन होते हैं कि ह़याते क़ल्बी की ख़ात़िर उन के लिये समाअ़ मुस्तह़ब है।"(1)

(साह़िबे "**क़ूतुल क़ुलूब**") हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू त़ालिब मुह़म्मद बिन अ़ली ह़ारिसी मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने भी इसी त़रह़ ज़िक्र फ़रमाया और **( सिल्सिलए सुहर वर्दिया के बानी व इमाम )** शैख़ुश्शुयूख़ हज़रते सय्यिदुना शिहाबुद्दीन अबू ह़फ़्स उ़मर बिन मुह़म्मद सुहर वर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने "**अ़वारिफ़ुल मआ़रिफ़**" में इसे सह़ीह़ क़रार दिया।

सय्यिदुत्त़ाइफ़ा हज़रते सय्यिदुना शैख़ जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی के कलाम से ज़ाहिर होता है कि उन्हों ने समाअ़ की **इस्तिलाह़ी** ह़ुरमत ज़िक्र नहीं फ़रमाई बल्कि उन की मुराद येह है कि समाअ़ नहीं होना चाहिये। फिर हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी हुसैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने नज़्म की सूरत में अपने वालिदे मोह़तरम से एक फ़तवा नक़्ल किया जिस का ख़ुलासा येह है कि रक़्स करने और दफ़ बजाने में इख़्तिलाफ़ है और बेशक शरीअ़त ने इसे हरगिज़ इबादत क़रार नहीं

(1)......الرسالة القشيرية، باب السماع، ص ٣٦٨۔



www.dawateislami.net

दिया और जिस ने इसे जाइज़ क़रार दिया उस ने भी इसे मुबाह़ ही कहा और जिस ने भी इसे अपने दीन के लिये इस त़रह़ चुन लिया कि इस की मौजू-दगी ही में इ़बादत करता है तो वोह ह़सरत व नुक़्सान में मुब्तला हुवा क्यूं कि आ़शिक़े ह़क़ीक़ी और **आ़रिफ़ बिल्लाह** पर जब **वज्द** की कैफ़िय्यत त़ारी होती है तो वोह ह़ालते मदहोशी में (मह़ब्बत व इ़श्क़ की वादियों में) इस त़रह़ सरगर्दां हो जाता है कि उसे इस ह़ालत पर मलामत नहीं की जाती बल्कि उस की ता'रीफ़ की जाती है क्यूं कि उसे ह़ासिल होने वाली लज़्ज़ात इन्तिहाई उ़म्दा व पाकीज़ा होती हैं।

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ''आज कल का समाअ़ बिला शुबा ह़राम है क्यूं कि इस में बे शुमार बुराइयां शामिल हो गई हैं जैसे मर्दों औ़रतों का इख़्तिलात़ और आ़म लोगों का फ़ुज़ूल कामों में मुब्तला होना। लिहाज़ा ह़ाकिम पर लाज़िम है कि इन्हें इस से रोके।''

और ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी हुसैन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने येह भी ज़िक्र फ़रमाया कि जिस ने हर महीने में कई बार समाअ़ की आ़दत बनाई वोह फ़ासिक़ हो गया और उस की गवाही क़बूल नहीं की जाएगी और अगर महीने में एक बार की आ़दत बनाई तो वोह फ़ासिक़ तो होगा लेकिन उस की गवाही मरदूद नहीं होगी। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) ने इस की तरदीद करते हुए फ़रमाया कि येह क़ौल कलामे फ़ु-क़हा के मफ़्हूम के बर अ़क्स है।

## समाअ़ की चन्द सूरतें :

**हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) फ़रमाते हैं : ''समाअ़ की 3 सूरतें हैं : (1)...... या तो येह मह़मूद (या'नी पसन्दीदा) है। इस की सूरत येह है कि जिस पर मह़ब्बते इलाही और उस की मुलाक़ात के शौक़ का ग़-लबा हो उस पर समाअ़ के ज़रीए़ कश्फ़ो करामात के अह़वाल ज़ाहिर हो जाते हैं। (2)...... या फिर मुबाह़ है। इस की सूरत येह है कि कोई शख़्स अपनी बीवी से जाइज़ इ़श्क़ करे या समाअ़ के सबब उस पर मह़ब्बते इलाही ग़ालिब आए न कि नफ़्सानी ख़्वाहिशात का ग़-लबा हो। (3)...... या फिर येह ह़राम है। इस की सूरत येह है कि समाअ़ के बाइ़स किसी शख़्स पर ह़राम चीज़ों की मह़ब्बत ग़ालिब आ जाए।''[1]

1 ......روح المعانی، لقمٰن، تحت الآیۃ٦،جز ا ٢ ٢ء،ص ٩٧۔



www.dawateislami.net

## रक़्स और अश्आर का हुक्म :

हज़रते सय्यिदुना इमाम इज़् बिन अ़ब्दुस्सलाम عَلَيْهِ رَحْمَةُاللّٰهِ السَّلَام से इस्तिफ़्सार किया अश्आर सुनने और रक़्स के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा गया तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "रक़्स बिद्अ़त है और कोई नाक़िसुल अ़क़्ल ही इस का आ़दी हो सकता है। लिहाज़ा येह औ़रतों को ही ज़ैब देता है और उन अश्आ़र के सुनने में कोई ह़रज नहीं जो उमूरे आख़िरत की याद दिला कर आ़ली मर्तबा अह़वाल पर उभारने वाले हों। बल्कि ऐसे अश्आ़र सुनना उस वक़्त मुस्तह़ब है जब कोई फ़ुतूर और मुर्दा दिली का शिकार हो। अलबत्ता ! जिस के दिल में बुरी ख़्वाहिशात हों वोह मह़फ़िले समाअ़ में ह़ाज़िर न हो क्यूं कि येह उस की दिली ख़्वाहिशात को मज़ीद उभारेगा।"[(1)]

## सुनने और सुनाने वालों के ए'तिबार से समाअ़ की अक़्साम :

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं कि सुनने और सुनाने वालों के ए'तिबार से समाअ़ का हुक्म मुख़्तलिफ़ होता है। अगर वोह सब मा'रिफ़ते इलाही रखते हों तो उन के अह़वाल के मुख़्तलिफ़ होने की वज्ह से उन का समाअ़ भी मुख़्तलिफ़ होता है।

﴾1﴿...... जिस पर ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी ग़ालिब हो तो ख़ौफ़ दिलाने वाली चीज़ों के ज़िक्र करने से इस में असर अन्दाज़ होता है कि उस के ग़म और आहो बुका में इज़ाफ़ा और रंग मु-तग़य्यर हो जाता है और उस की येह ह़ालत अ़ज़ाब के ख़ौफ़ या सवाब या उन्स व क़ुर्बे इलाही के फ़ौत होने की वज्ह से होती है और ऐसा शख़्स ख़ौफ़े इलाही रखने वाले या मह़फ़िले समाअ़ में ह़ाज़िर होने वाले तमाम लोगों से अफ़्ज़ल होता है और उस में क़ुरआने ह़कीम की तासीर भी दूसरों से ज़ियादा होती है।

﴾2﴿...... जिस शख़्स पर उम्मीद ग़ालिब हो तो उम्मीद दिलाने वाली चीज़ों के ज़िक्र से उस पर समाअ़ असर करता है। उन्स व क़ुर्ब की उम्मीद रखने वाले का समाअ़ सवाब की उम्मीद रखने वाले के समाअ़ से अफ़्ज़ल है।

﴾3﴿...... जिस पर इन्आ़माते इलाही की वज्ह से उस की मह़ब्बत ग़ालिब हो तो उस में इन्आ़मो इक्राम का समाअ़ मुअस्सिर होगा या मुत़्लक़ कमाल के सबब उस की मह़ब्बत ग़ालिब हो तो उस में ज़ात की बुज़ुर्गी और कामिल सिफ़ात का समाअ़ मुअस्सिर होगा और येह बयान कर्दा तमाम लोगों से अफ़्ज़ल है।

﴾4﴿...... जिस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ता'ज़ीमो इक्राम का ग़-लबा हो वोह शख़्स मज़्कूरा तमाम

---

1 ......روح المعانی، لقمٰن، تحت الآیة٦،جزا ٢١،ص ٩٧۔



www.dawateislami.net

लोगों से अफ़्ज़ल है।

येह तमाम कैफ़िय्यात सुनाने वाले के ए'तिबार से भी मुख़्तलिफ़ होती हैं या'नी वली से सुनना आ़म आदमी से सुनने से ज़ियादा मुअस्सिर होता है और नबी से सुनना वली से सुनने से ज़ियादा मुअस्सिर होता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुनना नबी से सुनने से ज़ियादा मुअस्सिर होता है। इसी वज्ह से अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُوَالسَّلام, सिद्दीक़ीन और सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان गाने बाजे और ग़िना में मश्ग़ूल नहीं होते थे बल्कि कलामे इलाही के सुनने पर इक्तिफ़ा फ़रमाते थे। (और अगर वोह मा'रिफ़ते इलाही न रखते हों तो उन के अह़्वाल भी मुख़्तलिफ़ होंगे। पस)

﴾5﴿...... जिस पर जाइज़ ख़्वाहिश ग़ालिब हो म-सलन वोह अपनी बीवी से मह़ब्बत करता हो तो उस में मह़ब्बत के आसार, जुदाई के ख़ौफ़ और मुलाक़ात की उम्मीद में समाअ़ मुअस्सिर होता है लिहाज़ा उस के समाअ़ में कोई ह़रज नहीं।

﴾6﴿...... जिस पर ह़राम काम की ख़्वाहिश ग़ालिब हो जैसे वोह किसी अम्रद या अजनबी औ़रत से इ़श्क़ करता हो तो उस में समाअ़ ह़राम काम की त़रफ़ कोशिश में मुअस्सिर होता है और जो चीज़ ह़राम की त़रफ़ ले जाए वोह भी ह़राम ही होती है।

बहर ह़ाल जो शख़्स ख़ुद में इन 6 अक़्साम में से कोई क़िस्म न पाए तो उस का समाअ़ मक्रूह है। **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) के ह़वाले से बयान हो चुका है कि येह मुबाह़ है और अक्सर समाअ़ में फ़ासिक़ो फ़ाजिर लोग शरीक होते, रोते धोते और ऐसे मक़ासिद के लिये बे क़रारी ज़ाहिर करते हैं जिस की ख़बासत को अपने दिलों में छुपाए होते हैं लेकिन ज़ाहिर येह करते हैं कि उन की येह ह़ालत अच्छे मक़्सद के लिये है। याद रखिये ! आख़िरत के आ़ली मर्तबा अह़्वाल और पसन्दीदा सिफ़ात को लाज़िम करने वाली सिफ़ात के ज़िक्र के बिग़ैर क़ाबिले ता'रीफ़ समाअ़ ह़ासिल नहीं हो सकता।[1]

## समाअ़ की शराइत़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम क़ुशैरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی जो कि शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام में शुमार किये जाते हैं, उन्हों ने समाअ़ के मु-तअ़ल्लिक़ एक किताब लिखी जिस में समाअ़ की शराइत़ ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं कि इस की शराइत़ में से है कि बन्दे को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अस्मा और सिफ़ात की मा'रिफ़त ह़ासिल हो ताकि वोह अफ़्आ़ल और मख़्लूक़ात की

1 ......روح المعانی، لقمٰن، تحت الآیۃ٦،جزا ٢١،ص٩٧۔



www.dawateislami.net

सिफ़ात में से सिफ़ाते ज़ाते बारी तआ़ला जान ले। नीज़ उसे इस बात की भी मा'रिफ़त ह़ासिल हो कि ज़ाते ह़क़ की ना'त गोई में कौन सी सिफ़ात बयान करना मन्अ़ हैं और उसे किन औसाफ़ से मुत्तसिफ़ करना जाइज़ और वाजिब है और उस पर किन अस्मा का इत़्लाक़ सह़ीह़ और किन का मम्नूअ़ है। समाअ़ के सह़ीह़ होने की येह शराइत़ दानिश मन्दों में से अहले तह़सील (या'नी समाअ़ की त़लब रखने वालों) के नज़्दीक हैं।[1]

## अहले ह़क़ीक़त के नज़्दीक समाअ़ की शर्त़ :

अहले ह़क़ीक़त के नज़्दीक समाअ़ में सच्चे मुजा-हदे के साथ नफ़्स को फ़ना करना और फिर मुशा-हदे की रूह़ से दिल को ज़िन्दा करना शर्त़ है। पस जिस ने सह़ीह़ त़ौर पर अपना मुआ़-मला सर अन्जाम न दिया और सच्चाई के साथ अपने मरातिब को न पा सका तो उस का समाअ़ ज़ियाअ़ और कैफ़िय्याते वज्द का इज़्हार त़ब्ई है, उस के लिये समाअ़ एक ऐसी आज़्माइश है कि जिस की दा'वत ग़-ल-बए फ़िस्क़ देता है अलबत्ता ! अगर शह्वत न पाई जाए और ख़ालिस मह़ब्बत ह़ासिल हो जाए तो फिर ग़-ल-बए फ़िस्क़ इस की दा'वत नहीं देता। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम कुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने इस बह़्स का त़वील ज़िक्र फ़रमाया और इन के ज़िक्र कर्दा उमूर से वाज़ेह़ होता है कि समाअ़ के आदाब को मल्ह़ूज़े ख़ात़िर न रखने के सबब आज कल के अक्सर बनावटी सूफ़ियों पर समाअ़ और रक़्स ह़राम है।[2]

# डुगडुगी की हु़रमत का बयान

## चौथा क़ौल और इस का रद्दे बलीग़ :

डुगडुगी के मु-तअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन अ़ब्दुल मलिक बिन **अ़ब्दुल्लाह** जुवैनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं : "अगर हम इसे मा'नवी ए'तिबार से देखें तो येह दफ़ के मा'ना में है। मैं ने इस में हु़रमत का तक़ाज़ा करने वाली कोई चीज़ नहीं पाई। अलबत्ता ! हीजड़े इस के बहुत शौक़ीन और इसे बजाने के आ़दी होते हैं।"

## आलाते मूसीक़ी के ह़राम होने का क़ाइदा :

इसी त़रह़ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मन्क़ूल है कि राय उस चीज़ की हु़रमत का तक़ाज़ा करती है कि जिस से ऐसी लुत़्फ़ अन्दोज़ सुरीली आवाज़ें निकलें जो इन्सान में जोश पैदा कर दें और उसे कैफ़ो मस्ती और उन आवाज़ों के पैदा होने की जगहों में बैठने पर बर अंगेख़्ता

---

1 ......روح المعانی، لقمٰن، تحت الآیۃ٦،جزا ٢١،ص٩٨۔

2 ......روح المعانی، لقمٰن، تحت الآیۃ٦،جزا ٢١،ص٩٨۔



www.dawateislami.net

करें। लिहाज़ा गाने बाजे के तमाम आलात का हुक्म येही है और हर वोह शै जिस की आवाज़ लज़्ज़त बख़्श न हो और उसे ऐसे नग़मों के लिये इस्ति'माल किया जाए जो ख़ुश कुन हों अगर्चे बाइसे लज़्ज़त न हों तो येह सब दफ़ के मा'ना में होते हैं और इसी ए'तिबार से डुगडुगी दफ़ की त़रह़ है। लिहाज़ा अगर इस के मु-तअ़ल्लिक़ हुरमत का हुक्म लगाना सह़ीह़ हो तो हम इसे ह़राम क़रार देंगे वरना इस में तवक्कुफ़ करेंगे। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से येह भी मन्क़ूल है कि इस में मा'नवी ए'तिबार से कोई ऐसी चीज़ नहीं जो इसे दीगर तमाम त़बलों से जुदा कर दे। अलबत्ता ! हीजड़े इसे बजाने के आ़दी और इस के दिलदादा होते हैं, अगर इस बारे में सह़ीह़ ह़दीस मिल जाए तो हम उस पर अ़मल करेंगे।

## इमामुल ह़-रमैन के क़ौल की तरदीद :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के क़ौल की तरदीद इसी बात से हो जाती है कि इन की मज़्कूरा बह़स इज्माअ़ के मुख़ालिफ़ है, लिहाज़ा हम इस पर ए'तिमाद नहीं करते और जिस मस्अले में इज्माअ़ हो चुका हो उस में ह़दीस की सिह़्ह़त व ज़ो'फ़ को नहीं देखा जाता। ह़ालां कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बज़ाते ख़ुद अपने वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू मुह़म्मद **अ़ब्दुल्लाह** बिन यूसुफ़ जुवैनी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْغَنِی से जो क़ौल नक़्ल किया वोह इज्माअ़ के मुवाफ़िक़ है। चुनान्चे, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे मोह़तरम इस के क़त़ई त़ौर पर ह़राम होने का हुक्म लगाते और फ़रमाते थे कि रिवायात में इस के बजाने और इस की आवाज़ सुनने वाले पर सख़्त हुक्म मौजूद है और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی ने इस बात पर नस्स क़ाइम फ़रमाई है कि तफ़रीह़े त़ब्अ़ के ढोल की वसिय्यत बात़िल है और हमें नहीं मा'लूम कि डुगडुगी के इ़लावा कोई ढोल दीगर आलाते मूसीक़ी में दाख़िल है ह़त्ता कि इस की वसिय्यत को बात़िल क़रार दिया जाए। "**बसीत़**" में इसी क़ौल की इत्तिबाअ़ करते हुए डुगडुगी को क़त़ई त़ौर पर ह़राम क़रार दिया गया है और येह कि त़बलों में से सिवाए इस के कोई ह़राम नहीं।

**ए'तिराज़ : अल काफ़ी** के क़ौल के मुत़ाबिक़ डुगडुगी ह़राम है और तफ़रीह़े त़ब्अ़ का ढोल भी इसी मा'ना में है जो इस बात पर दलील है कि ढोल और डुगडुगी में फ़र्क़ है और दूसरा येह कि इ़राक़ियों ने बिग़ैर किसी तफ़्सील के हर क़िस्म के ढोल को ह़राम क़रार दिया ?

**जवाब :** येह कमज़ोर त़रीक़ा है और सह़ीह़ येह है कि डुगडुगी के इ़लावा तमाम ढोल जाइज़ हैं और एक क़ौल येह है कि इ़राक़ियों की मुराद **लह्व** के ढोल हैं जैस कि कई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इस की सराह़त फ़रमाई और **लह्व** के ढोल को मुत़्लक़न ह़राम क़रार देने वालों



www.dawateislami.net

में ह़ज़रते सय्यिदुना इमरानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ब-ग़वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی और **साह़िबुल इन्तिसार** और ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू ह़ामिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَاحِد से येही ह़िकायत किया गया है और **अल ह़ावी** और **अल मक़्नअ़** वग़ैरा का कलाम भी येही तक़ाज़ा करता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी हुसैन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ढोल बजाना अगर **लह्व** के तौ़र पर हो तो जाइज़ नहीं और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़लीमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الغَنِی ने जंग और ईद के ढोल को दीगर ढोलों से ख़ारिज करते हुए बक़िय्या हर क़िस्म के ढोल को मुत़्लक़न ह़राम क़रार दिया और ईद में भी ढोल को सिर्फ़ मर्दों के लिये ख़ास किया और येह भी एक ज़ईफ़ त़रीक़ा है और इराक़ियों के एक गुरौह ने यक रुख़े (या'नी एक मुंह वाले) ढोलों को ह़राम चीज़ों में शुमार किया। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के दूसरे कलाम को ज़िक्र करने के बा'द इर्शाद फ़रमाया कि उन की येह बह़्स तो बड़ी ख़ूब है लेकिन उन से क़ाबिले क़बूल नहीं क्यूं कि इस में उन्हों ने ह़ज़राते अइम्मए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام के वाज़ेह़ कलाम की मुख़ा-लफ़त की। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने रिफ़्अ़ह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इमामुल ह़-रमैन का क़ौल ज़िक्र करने के बा'द फ़रमाते हैं कि येह कलाम इस बात पर दलालत करता है कि डुगडुगी के मु-तअ़ल्लिक़ मरवी रिवायात उन के नज़्दीक सह़ीह़ नहीं और जिन रिवायात से इमामुल ह़-रमैन के मज़्कूरा कलाम का जवाब दिया गया उन में से एक ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने **तक़रीब** में डुगडुगी की ह़ुरमत नक़्ल करने के बा'द ज़िक्र फ़रमाई कि ह़दीसे पाक में है कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सारंगी और डुगडुगी बजाने वाले के इ़लावा हर गुनहगार को मुआ़फ़ फ़रमा देता है।"(1)

ह़दीसे पाक में लफ़्ज़ عَرْطَبَۃ से मुराद सारंगी है।

मज़्कूरा वईद के साथ साथ डुगडुगी की ह़ुरमत पर इज्माअ़ भी है। लिहाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जो कि हमारे अकाबिरीन व मु-तक़द्दिमीन में से हैं, (उन) के डुगडुगी की ह़ुरमत पर इज्माअ़ नक़्ल करने पर आप ग़ौर करें तो वाज़ेह़ हो जाएगा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की जिस बह़्स की ता'रीफ़ की है वोह इज्माअ़ के ख़िलाफ़ है। इस सूरत में इस बात में कोई फ़र्क़ नहीं कि ह़दीस सह़ीह़ हो या न हो। बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام ने येही बात कही है क्यूं कि इज्माअ़ ह़ुज्जत होता है अगर्चे सह़ीह़ ह़दीस उस के ख़िलाफ़ हो इस

(1)......النھایۃ فی غریب الحدیث: والأثر، باب العین مع الراء، عرطب، ج ۳،ص۱۹۶۔



www.dawateislami.net

लिये कि इज्माअ़, ता'न और ए'तिराज़ से महफ़ूज़ दलील के साथ होता है, लिहाज़ा वोह ज़ियादा पुख़्ता होता है।

हज़रते सय्यिदुना अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन उ़मर कुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 656 हि.) ने भी डुगडुगी की हुरमत पर इज्माअ़ नक़्ल फ़रमाया और वोह अइम्मए नक़्ल में से हैं। चुनान्चे, फ़रमाते हैं : "इस के सुनने की हुरमत में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं और मैं ने सलफ़ व ख़लफ़ (या'नी पहले और बा'द वाले) किसी भी मो'तबर इमाम के ह़वाले से इस के जवाज़ का कोई क़ौल नहीं सुना।"

हज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का येह क़ौल कि "हीजड़े डुगडुगी बजाने के आ़दी और इन्तिहाई शौक़ीन होते हैं" इस की हुरमत की क़वी तरीन दलील है क्यूं कि जो काम हीजड़ों का शिआ़र हो तो उन के साथ मुशा-बहत ह़राम होने की वज्ह से इस का करना ह़राम है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं कि जो ढोल बच्चों के खेलों के लिये तय्यार किये जाते हैं अगर यक रुख़े ढोलों जैसे न हों तो येह दफ़ शुमार होंगे मगर डुगडुगी की त़रह़ किसी सूरत में नहीं हो सकते। इस से वाज़ेह़ होता है कि अगर येह त़बले डुगडुगी की सूरत में हों तो बच्चों को इन पर कुदरत देना ह़राम है लेकिन अगर दीगर ढोलों की सूरत पर हों तो ह़राम नहीं जैसा कि बयान हो चुका है कि ढोलों में से डुगडुगी ही ह़राम है जैसा कि शैख़ैन (या'नी इमाम राफ़ेई व इमाम न-ववी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا) वग़ैरा ने इस की तसरीह़ फ़रमाई है।

## كُوْبَہ के मफ़्हूम में इख़्तिलाफ़ :

हज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) की इबारत येह है कि "**एह़याउल उ़लूम** में है कि सिर्फ़ उसी ढोल की आवाज़ ह़राम है जिसे डुगडुगी कहा जाता है क्यूं कि इस के मु-तअ़ल्लिक़ मुमा-न-अ़त वारिद हुई है और येह एक लम्बा ढोल होता है जो दोनों अत़राफ़ से कुशादा और दरमियान से तंग होता है।"

كُوْبَہ की तफ़्सीर ढोल के साथ करने में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) की पैरवी की है और कलामे इस्नवी तक़ाज़ा करता है कि येह लोग मज़्कूरा तफ़्सीर में मुन्फ़रिद हैं मगर येह दुरुस्त नहीं। मज़्कूरा तफ़्सीर करने वालों में से ह़दीस के एक रावी हज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ली बिन नदीमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه भी हैं जैसा कि हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू बक्र अह़मद बिन हुसैन बैहक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 458 हि.) ने हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 161 हि.) के ह़वाले से ज़िक्र किया और रावी की तफ़्सीर किसी दूसरे की तफ़्सीर



www.dawateislami.net

से मुक़द्दम होती है क्यूं कि वोह अपनी रिवायत को ज़ियादा जानता है।

हज़रते सय्यिदुना इमाम जौहरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं कि येह एक छोटा सा बारीक कमर वाला ढोल होता है। हज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल्लतीफ़ बग़दादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِی ने भी **लुग़तुल ह़दीस** में इसी त़रह़ बयान किया और हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल ह़सन अ़ली बिन मुह़म्मद मावर्दी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی ने भी येही कहा। हज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं कि येही फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की मुराद है और साहिबे **तन्क़ीब** फ़रमाते हैं कि सह़ीह़ येह है कि येह मज़्कूरा ढोल ही है जिस के साथ नौ जवानाने क़ुरैश सफ़ा व मर्वह के दरमियान खेलते थे।

मज़्कूरा उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के इलावा कुछ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़्दीक **كُوْبَہ** से मुराद **नर्द** (या'नी चौसर) है। इन में से एक तो हज़रते सय्यिदुना इमाम ख़त्त़ाबी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡكَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 388 हि.) हैं जिन्हों ने डुगडुगी को ढोल कहने वालों को ग़लत़ क़रार दिया और इसी की मिस्ल हज़रते सय्यिदुना इब्ने आ'राबी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِی और ज़मख़्शरी ने भी ज़िक्र किया और हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने असीर عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَدِیۡر ने "**अन्निहायह**" में इसे सह़ीह़ क़रार दिया। हज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम जौहरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی वग़ैरा के ह़वाले से ज़िक्र कर्दा कलाम इस के मु-तअ़ल्लिक़ मरवी सख़्त हुक्म को ख़त्म नहीं करता। अलबत्ता! इस का ढोल नाम के हर आले पर इत़्लाक़ करना सह़ीह़ नहीं।

## ह़ासिले कलाम :

ख़ुलासए कलाम येह है कि डुगडुगी का ढोल पर इत़्लाक़ किया जा सकता है और येही फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की मुराद है और उन्हों ने गुज़श्ता ह़दीसे पाक कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सारंगी और डुगडुगी बजाने वाले के इलावा हर गुनहगार को मुआ़फ़ फ़रमा देता है" को ढोल, नर्द और शत़रंज पर मह़मूल किया है और नर्द अहले यमन की लुग़त है।

हज़रते सय्यिदुना इमाम इस्नवी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی के ख़याल के मुत़ाबिक़ इस की ढोल के साथ तफ़्सीर बयान करना लुग़त की किताबों में मश्हूर के ख़िलाफ़ है और हज़रते सय्यिदुना इमाम जौहरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی वग़ैरा के ह़वाले से मज़्कूर कलाम इन की तरदीद के लिये काफ़ी है। बल्कि सह़ीह़ येह है कि लुग़त के ए'तिबार से इसे ढोल और नर्द दोनों पर बोला जाता है जब कि फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इस से सिर्फ़ ढोल ही मुराद लिया है लेकिन आज कल



www.dawateislami.net

जो ढोल पाया जाता है उस के दोनों अत्राफ़ में बराबर कुशा–दगी नहीं होती, इसी त़रह़ एक त़रफ़ से खुला होता है जिस पर चमड़ा होता है और उस पर मारा जाता है और दूसरी त़रफ़ तंग होता है जिस पर कोई चीज़ नहीं होती (शायद ! मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के दौर में ढोल ऐसे होते थे) और येह तमाम सूरतें फु–क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की मज़्कूरा तफ़्सीर के मुनाफ़ी नहीं बर ख़िलाफ़ उस के जिस को इस में ग़लत़ गुमान हुवा मगर वोह हमारे नज़्दीक क़ाबिले ए'तिमाद नहीं ।

❁❁❁❁❁❁❁

## कबीरा नम्बर 452 : ग़ैर मुअ़य्यन लड़के के मु-तअ़ल्लिक़ इ़श्क़िया अश्आ़र कहना और उस से इज़्हारे इ़श्क़ करना

## कबीरा नम्बर 453 : अजनबी मख़्सूस औ़रत के मु-तअ़ल्लिक़ इ़श्क़िया अश्आ़र कहना अगर्चे बुरे अन्दाज़ में न कहे

## कबीरा नम्बर 454 : ग़ैर मुअ़य्यन औ़रत के मु-तअ़ल्लिक़ फ़ोह़्श अन्दाज़ में इ़श्क़िया अश्आ़र कहना

## कबीरा नम्बर 455 : मज़्कूरा इ़श्क़िया अश्आ़र को तरन्नुम से पढ़ना

पहले के कबीरा गुनाह होने की सराह़त ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम रूयानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने इस त़रह़ की है कि अगर कोई शख़्स किसी लड़के के मु–तअ़ल्लिक़ इ़श्क़िया अश्आ़र पढ़ता और उस से इ़श्क़ का इज़्हार करता है तो वोह फ़ासिक़ है अगर्चे मुअ़य्यन न भी करे क्यूं कि शह्वत के साथ लड़कों को देखना हर ह़ाल में ह़राम है ।

''**अत्तह्ज़ीब**'' वग़ैरा में है कि लड़के में भी औ़रत की त़रह़ मुअ़य्यन करना मो'तबर है ।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि येह क़ौल ह़क़ के ज़ियादा क़रीब है जब कि पहला क़ौल इन्तिहाई ज़ईफ़ है क्यूं कि किसी के मु–तअ़ल्लिक़ इ़श्क़िया अश्आ़र पढ़ने से शह्वत के साथ देखने पर कोई दलालत नहीं होती और अक्सर शाइ़र ह़ज़रात अपने अश्आ़र में नज़ाकत व लत़ाफ़त पैदा करने और इज़्हारे फ़न के लिये ऐसा कहते हैं वरना वोह ह़क़ीक़तन आ़शिक़ नहीं होते । लिहाज़ा बेहतर तौजीह येह है कि ग़ैर मुअ़य्यन शख़्स के मु–तअ़ल्लिक़ सिर्फ़ इ़श्क़िया अश्आ़र पढ़ने से कोई फ़ासिक़ नहीं होता । फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه



www.dawateislami.net

ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى की एक ग़ज़ल ज़िक्र की जिस का एक शे'र येह है :

لَوْ اَنَّ عَيْنَيَّ اِلَيْكِ الدَّهْرَ نَاظِرَةٌ　　جَاءَتْ وَفَاتِيْ وَلَمْ اَشْبَعْ مِنَ النَّظَرِ

**तरजमा :** अगर मेरी आंखें तमाम उ़म्र तुझे देखती रहें यहां तक कि मेरी मौत आ जाए तब भी मेरी नज़रों की प्यास न बुझेगी।

इस शे'र को ज़िक्र करने के बा'द फ़रमाते हैं कि इस में कोई तसरीह़ नहीं पाई जाती कि येह ग़ज़ल आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने किसी लड़के के बारे में कही है, क्यूं कि हो सकता है कि अपनी बीवी या कनीज़ के बारे में कही हो।

उ़न्वान में मज़्कूर दूसरा और तीसरा गुनाह भी कबीरा हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी शुरैह़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **"रौ-ज़तुल अह़काम"** में ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि जब कोई शख़्स किसी औ़रत के मु-तअ़ल्लिक़ इश्क़िया अश्आ़र कहे और फ़ोह़्श अन्दाज़ में इस का ज़िक्र करे तो वोह फ़ासिक़ है ख़्वाह उस का ज़िक्र तफ़्सील से करे या मुख़्तसर और अगर उसे मुअ़य्यन करे और वोह उस की कनीज़ या बीवी हो तो वोह फ़ासिक़ न होगा क्यूं कि येह कम ह़माक़त है और एक क़ौल के मुता़बिक़ उस की गवाही मरदूद हो जाएगी और अगर वोह औ़रत अजनबी और मुअ़य्यन हो तो वोह फ़ासिक़ हो जाएगा और अगर ग़ैर मुअ़य्यन हो तो फ़ासिक़ न होगा। एक क़ौल के मुता़बिक़ ग़ैर मुअ़य्यन होने की सूरत में भी वोह फ़ासिक़ हो जाएगा क्यूं कि येह भी गुनाह है।

ह़ज़राते शैख़ैन (या'नी इमाम राफ़ेई व इमाम न-ववी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا) की इ़बारत का ज़ाहिरी मफ़्हूम येह है कि वोह इस अ़मल से फ़ासिक़ न होगा और अगर कहा जाए कि उस की गवाही मरदूद हो जाएगी तो इस की वज्ह अ़-दमे मुरव्वत है न कि फ़िस्क़। **"अरौंज़ा"** की इ़बारत का ह़ासिल येह है कि येह क़ौल ज़ियादा बेहतर है कि ग़ैर मुअ़य्यन औ़रतों और लड़कों के मु-तअ़ल्लिक़ इश्क़िया अश्आ़र कहने से अ़दालत में ख़लल नहीं आता अगर्चे ऐसे अश्आ़र की कसरत हो क्यूं कि इश्क़िया अश्आ़र कहना एक फ़न है और शाइ़र का मक़्सद मह़्ज़ कलाम में उ़म्दगी लाना होता है न कि ज़िक्र की हुई बात को साबित करना। ह़ज़राते शैख़ैन फ़रमाते हैं : अगर वोह किसी ऐसी औ़रत का नाम ले जिसे जानता न हो कि वोह कौन है तब भी येही हुक्म होना चाहिये और अगर शाइ़र मुअ़य्यन औ़रत के मु-तअ़ल्लिक़ इश्क़िया अश्आ़र कहे या उस का फ़ोह़्श ज़िक्र करे या उस के पोशीदा आ'ज़ा की सिफ़त बयान करे तो उस की गवाही मरदूद है।



www.dawateislami.net

## बीवी या कनीज़ की तश्बीब का हुक्म :

अगर वोह अपनी कनीज़ या बीवी के मु-तअ़ल्लिक़ इ़श्क़िया अश्आ़र कहे तो इस में दो मौक़िफ़ हैं :

﴾1﴿...... पहला मौक़िफ़ येह है कि येह जाइज़ है और गवाही भी मरदूद न होगी। इस मौक़िफ़ के क़ाइलीन कहते हैं कि जब औ़रत मुअ़य्यन न हो तो उस की गवाही मरदूद न होगी क्यूं कि हो सकता है उस की मुराद वोह औ़रत हो जो उस के लिये ह़लाल हो।

﴾2﴿...... दूसरा मौक़िफ़ येह है कि सह़ीह़ मज़्हब येह है कि जब वोह अपनी बीवी के उन मुआ़-मलात का ज़िक्र करे जिन को छुपाना उस का ह़क़ है तो मुरव्वत के साक़ित़ होने की वज्ह से उस की गवाही मरदूद हो जाएगी।

**ए'तिराज़ :** जिस चीज़ का छुपाना ज़रूरी हो उस के मु-तअ़ल्लिक़ मुरव्वत के साक़ित़ होने का दा'वा करना मम्नूअ़ है।

**जवाब :** मुरव्वत के साक़ित़ होने की सूरत येह है कि इस के साथ बे परवाई इख़्तियार करना भी शामिल हो जाए क्यूं कि इस में उस की औलाद की रुस्वाई पाई जाती है और बिला शुबा इस मुआ़-मले में बे परवाई का मुज़ा-हरा करना मुरव्वत के मुनाफ़ी है।

**ए'तिराज़ :** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى ने इस के सबब गवाही मरदूद न होने पर नस्स क़ाइम फ़रमाई है।

**जवाब :** ह़र्फ़े आख़िर येह है कि इस मस्अले में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى से दो दलीलें मन्क़ूल हैं शैख़ैन ने इन में से एक को ज़ियादा वाज़ेह़ होने की वज्ह से तरजीह़ दी लिहाज़ा इन दोनों पर कोई ए'तिराज़ नहीं हो सकता।

**ए'तिराज़ :** जुम्हूर ने गवाही मरदूद न होने के क़ौल को तरजीह़ दी है।

**जवाब :** मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलाल बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى वग़ैरा का कलाम देखा इन सब का इस पर इत्तिफ़ाक़ पाया कि शैख़ैन की तरजीह़ और जुम्हूर के मज़्हब के दरमियान कोई टकराव नहीं। क्यूं कि शैख़ैन का क़ौल उस शख़्स के मु-तअ़ल्लिक़ है जो अपनी बीवी की पोशीदा बातें बयान करता है म-सलन जिमाअ़ और ख़ल्वत के मुआ़-मलात को बयान करता है और जुम्हूर का क़ौल उस शख़्स के मु-तअ़ल्लिक़ है जो ग़ैर मुअ़य्यन औ़रत या अपनी बीवी के मु-तअ़ल्लिक़ इ़श्क़िया अश्आ़र कहे मगर मुरव्वतन पोशीदा बातों का ज़िक्र न करे।

पहला मौक़िफ़ मेरे ज़िक्र कर्दा कलाम के मुवाफ़िक़ है और येह बात भी इस के ह़राम न होने की ताईद करती है कि ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन ज़ुहैर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ



www.dawateislami.net

के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मौजू-दगी में सुआ़द के मु-तअ़ल्लिक़ इश्क़िया अश्आ़र कहे मगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ न फ़रमाया। इस बात को इस पर मह़मूल किया गया कि दर अस्ल सुआ़द ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन ज़ुहैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की बीवी और चचाज़ाद बहन थी और उस के साथ उन की ज़िन्दगी का एक त़वील ह़िस्सा गुज़रा और अब जुदाई भी त़वील हो गई थी।

''**अरौंज़ा**'' में मज़्कूर येह क़ौल भी इस की ताईद करता है कि येह बात मुरव्वत में ख़लल डालती है कि कोई शख़्स लोगों की मौजू-दगी में अपनी बीवी को बोसा दे या बाहम ख़ल्वत के मुआ़-मलात बयान करे और ''**अरौंज़ा**'' में निकाह़ के बाब में इसे मक्रूह कहा और शर्ह़े मुस्लिम में इसे ह़राम क़रार दिया और येह बात इस ह़ुक्म के मुनाफ़ी नहीं क्यूं कि पहला क़ौल जिमाअ़ और इस के मुक़द्दमात ज़िक्र न करने के मु-तअ़ल्लिक़ है और दूसरा इन दोनों के ज़िक्र के मु-तअ़ल्लिक़ है। लिहाज़ा येह नहीं कहा जाएगा कि औ़रतों के मु-तअ़ल्लिक़ इश्क़िया अश्आ़र कहने वाले की गवाही मरदूद होनी चाहिये अगर्चे वोह किसी को मुअ़य्यन न करे, क्यूं कि अगर वोह उस की बीवी हो तो उस ने ऐसी बातों को ज़िक्र किया जिन्हें छुपाना उस का ह़क़ था या अगर वोह अज्नबिय्या थी तो इस से भी सख़्त जुर्म किया। क्यूं कि हम कहते हैं कि किसी की ता'यीन न होने की सूरत में दर गुज़र किया जा सकता है और इस सूरत में इन के माबैन मुवा-ज़ना करना जाइज़ नहीं अगर्चे बा'ज़ के नज़्दीक जाइज़ है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) का क़ौल इस की ताईद करता है कि ''अगर वोह अपनी बीवी के बारे में इश्क़िया अश्आ़र कहे और मह़ब्बत व चाहत के इलावा कोई चीज़ ज़िक्र न करे या मह़ज़ ज़ाहिरी तश्बीहात का ज़िक्र करे तो यक़ीनी त़ौर पर साबित है कि येह नुक़्सान देह नहीं। इसी त़रह़ अगर ग़ैर मुअ़य्यन औ़रत का तज़्किरा करे और फ़ोह़्श ज़िक्र न करे तो येही ह़ुक्म है।''

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) एक दूसरे मक़ाम पर फ़रमाते हैं कि येह भी यक़ीनी त़ौर पर साबित है कि अगर कोई शख़्स ऐसी औ़रत का नाम ले जिस को वोह नहीं जानता कि वोह कौन है और फ़ोह़्श बात और तोहमत के बिग़ैर उस के ज़ाहिरी मह़ासिन, चाहत और मह़ब्बत का तज़्किरा करे तो कहने वाले पर ऐ़ब नहीं लगाया जाएगा और इस में इख़्तिलाफ़ साबित नहीं। इस त़रह़ का तज़्किरा शु-अ़रा ने लैला, सा'दी, दअ़द, हिन्द और लुबना के मु-तअ़ल्लिक़ किया है और इस में इख़्तिलाफ़ कैसे हो सकता है


www.dawateislami.net

हा़लां कि ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन जुहैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हु़जू़र नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में (अपने क़सीदए लामिया का मत़्लअ़ या'नी पहला) शे'र पढ़ा :

بَانَتْ سُعَادُ فَقَلْبِی اَلْیَوْمَ مَتْبُوْلُ **तरजमा :** (आह) सुआ़द जुदा हो गई पस आज मेरा दिल मग़्मूम है।(1)

इस क़सीदे में ऐसे अश्आ़र हैं जिन में तह़सीने कलाम के तमाम ज़ाबिते़ मौजूद हैं और शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم समाअ़त फ़रमाते रहे लेकिन इस से बिल्कुल मन्अ़ न फ़रमाया।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम रूयानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی **''अल बह़र''** में फ़रमाते हैं : ''सुआ़द ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन जुहैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बीवी और चचाज़ाद बहन थी और इन के हु़जू़र नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से भागने की वज्ह से इन की उस से जुदाई त़वील हो गई।''

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अ़ब्दुल बर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''अहले इ़ल्म और अहले अ़क़्ल में से कोई भी अच्छे अश्आ़र का इन्कार नहीं करता और जलीलुल क़द्र सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان, अहले इ़ल्म और अ़ज़ीमुल मरातिब वाले अइम्मए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام में से हर एक ने ह़िक्मत वाले या मुबाह़ अश्आ़र खु़द कहे या बत़ौरे नमूना पेश किये या ऐसे अश्आ़र सुन कर रिज़ा मन्द रहे जिन में फ़ोह़श गोई या किसी मुसल्मान के लिये अज़िय्यत न थी और ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़बैदुल्लाह** बिन उ़त्बा बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीने के 10 बड़े फु-क़हा और 7 बड़े उ़म्दा शु-अ़रा में से थे।''

**''एह़याउल उ़लूम''** में है कि औ़रतों के रुख़्सारों, कन्पटियों और दीगर तमाम मह़ासिन के मु-तअ़ल्लिक़ इश्क़िया अश्आ़र कहने में ग़ौरो फ़िक्र की ज़रूरत है और सह़ीह़ येह है कि आवाज़ या बिग़ैर आवाज़ के मन्ज़ूम कलाम या तरन्नुम से ऐसे अश्आ़र पढ़ना ह़राम नहीं और सुनने वाले पर लाज़िम है कि इस से मुअ़य्यन औ़रत की त़रफ़ ज़ेह्न न ले जाए, फिर अगर उस ने अपनी बीवी मुराद ली तो जाइज़ है और अगर कोई दूसरी औ़रत मुराद ली तो इस वज्ह से गुनहगार होगा और इश्क़िया अश्आ़र सुन कर जिस का ज़ेह्न मुअ़य्यन औ़रतों की त़रफ़ चला जाता हो उसे ऐसे अश्आ़र सुनने से इज्तिनाब ज़रूरी है।(2)

❁❁❁❁❁❁❁

1 ......المستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب اسلام کعب بن زھیر، الحدیث: ۶۵۳۶، ج۴، ص۷۵۷۔

2 ......احیاء علوم الدین، کتاب آداب السماع والوجد، بیان الدلیل علی إباحۃ السماع، ج۲، ص۳۴۹۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 456 : मुसल्मान की हज्व वाले अश्आर पढ़ना अगर्चे सच हो

## कबीरा नम्बर 457 : फ़ोह्श कलाम पर मुश्तमिल अश्आर पढ़ना

## कबीरा नम्बर 458 : वाज़ेह़ झूट पर मुश्तमिल अश्आर पढ़ना

## कबीरा नम्बर 459 : हज्विया अश्आर त़र्ज़ से पढ़ना और उन की तश्हीर करना

### कौन सा शाइर मरदूदुश्शहादत है ?

इसे भी कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है जिस की जुरजानी ने अपनी किताब "**शाफ़ी**" में तसरीह़ करते हुए कहा है कि जो शे'र पढ़ता और बनाता है उस की गवाही उस वक़्त तक मरदूद नहीं होती जब तक कि उस के अश्आर किसी मुसल्मान की मज़म्मत या फ़ोह़्श गोई या वाज़ेह़ झूट पर मुश्तमिल न हों। या'नी अगर उस का मन्ज़ूम कलाम किसी मुसल्मान की मज़म्मत या फ़ोह़्श गोई या वाज़ेह़ झूट पर मुश्तमिल हो तो उस की गवाही मरदूद हो जाएगी और उस का मरदूद होना मुरव्वत के ख़त्म होने या तोहमत की वज्ह से नहीं बल्कि फ़िस्क़ की वज्ह से है और येह बात मा'लूम है कि यहां मुरव्वत का ख़त्म होना वग़ैरा नहीं पाया जा रहा तो साबित हुवा कि यहां पर इन तीनों के फ़िस्क़ होने की वज्ह से गवाही मरदूद है।

मुसल्मान की मज़म्मत करने को फ़िस्क़ क़रार देने वाले उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام में से एक ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इमरानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی हैं जिन्हों ने "**अल बयान**" में सराह़त की है कि "अगर किसी मुसल्मान की मज़म्मत की तो फ़ासिक़ हो जाएगा अलबत्ता ! ज़िम्मी की मज़म्मत करने से फ़ासिक़ न होगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम रूयानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی "**अल बह़्र**" में फ़रमाते हैं : "जब किसी ने अपने शे'र में ईज़ा पहुंचाई या'नी एक मुसल्मान या कई मुसल्मानों की मज़म्मत की तो फ़ासिक़ हो जाएगा इस लिये कि मुसल्मान को ईज़ा देना ह़राम है और हमारे शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि येह इस सूरत में है कि जब कसरत से ऐसा करे मगर मेरे नज़्दीक इन की इस बात में ग़ौरो फ़िक्र की ज़रूरत है।"

गोया ह़ज़राते शैख़ैन (या'नी इमाम राफ़ेई व इमाम न-ववी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا) ने मज़्कूरा दोनों इमामों (या'नी इमाम रूयानी व इमाम इमरानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا) का मौक़िफ़ इख़्तियार किया



www.dawateislami.net

वोह यूं कि उन्हों ने मुसल्मानों की मज़म्मत के बाइस मुत़्लक़न गवाही मरदूद क़रार दी ख़्वाह वोह सच्चा हो या झूटा।

**''तस्ह़ीहुल मिन्हाज''** में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलाल बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْغَنِى से मन्क़ूल है कि गवाही मरदूद होने से किसी फ़े'ल का ह़राम होना लाज़िम नहीं आता, क्यूं कि गवाही तो ख़िलाफ़े मुरव्वत काम से भी मरदूद हो जाती है लेकिन उन के शागिर्द ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़रआ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन की तरदीद की, कि येह मुरव्वत के ख़िलाफ़ नहीं और फ़रमाते हैं कि गवाही मरदूद होने का सबब इस फ़े'ल की हु़रमत है या'नी जब ऐसा है तो इस का कबीरा गुनाह होना लाज़िम हो गया क्यूं कि सग़ीरा गुनाह गवाही मरदूद होने का तक़ाज़ा नहीं करता। लिहाज़ा इस का गुनाहे कबीरा होना मु-तअ़य्यन हो गया।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़रआ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़्कूरा क़ौल का मुवा-ज़ना हमारे उस्ताज़ शैखु़ल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़-करिय्या (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की क़ब्र पर रह़मत की बारिश बरसाए। आमीन) के इस क़ौल से किया जा सकता है कि शैखै़न رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا के इस क़ौल ''अश्आ़र में मज़म्मत करने से गवाही मरदूद होती है'' की तावील येह है कि वोह ऐसे अल्फ़ाज़ से मज़म्मत करे जिन से बन्दा फ़ासिक़ हो जाता है। गोया वोह कसरत से ऐसा करे और उस की नेकियां उस के गुनाहों पर ऐसे क़रीने के साथ ग़ालिब न आएं जिस का ज़िक्र शैखै़न رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا ने किया। इस मुवा-ज़ना करने की सूरत येह है कि जब उस से अक्सर ऐसा हो तो वोह फ़ासिक़ हो जाएगा जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम रूयानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى के ह़वाले से हमारे शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का क़ौल बयान हो चुका है और इसी त़रह़ अगर वोह अक्सर ऐसा न करे तो भी येही हु़क्म है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम रूयानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى का मौक़िफ़ बयान हो चुका है और जब वोह कसरत की वज्ह से फ़ासिक़ हो गया तो इस से इस का कबीरा होना लाज़िम आता है और कबीरा का इरतिकाब फ़िस्क़ का बाइस है अगर्चे उस की नेकियां गुनाहों पर ग़ालिब हों।

## नेकियों और गुनाहों के ग़-लबे के दरमियान फ़र्क़ की पहचान :

सग़ीरा गुनाहों के इरतिकाब के वक़्त नेकियों और गुनाहों के ग़-लबे के माबैन फ़र्क़ देखा जाता है जब कि कबीरा गुनाहों का इरतिकाब फ़ासिक़ बनाता और मुत़्लक़न गवाही मरदूद होने का सबब बनता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र-कशी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِى (गवाही मरदूद होने के लिये मज़म्मत को) कसरत के साथ मुक़य्यद करने के मु-तअ़ल्लिक़ शवाफ़ेअ़ के मौक़िफ़ को सह़ीह़ क़रार देते



www.dawateislami.net

हुए फ़रमाते हैं : ''हज़राते शैख़ैन (या'नी इमाम राफ़ेई व इमाम न-ववी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا) के कलाम का तक़ाज़ा येह है कि मुत्लक़ मज़म्मते मुस्लिम से गवाही मरदूद हो जाती है और इस के कम या ज़ियादा होने में कोई फ़र्क़ नहीं लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम दारिमी عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی ने मज़म्मत की मा'मूली मिक़्दार मुआ़फ़ क़रार दी है और किताब **''अल उम''** में मज़म्मत को कसरत के साथ मुक़य्यद करने का येही तक़ाज़ा है और येही दुरुस्त है।''

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने उस्ताज़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) के कलाम का ख़ुलासा पेश करते हुए फ़रमाया : (अश्आ़र में मुसल्मानों की) मज़म्मत करने के सबब गवाही मरदूद होना बईद अज़ अ़क़्ल है क्यूं कि नज़्म भी नस्र (या'नी ग़ैर मन्ज़ूम कलाम) की त़रह़ होती है और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम दारिमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی ने ज़िक्र किया है कि शाइ़र जब झूट की मा'मूली आमैज़िश से किसी की ता'रीफ़ या मज़म्मत करे तो उस की गवाही क़बूल की जाएगी और **''अल उम''** का येह क़ौल इस की ताईद करता है कि अक्सर ग़ज़ब और मह़रूमी के मौक़अ़ पर लोगों में मज़म्मत का वुक़ूअ़ होता है यहां तक कि उस में बहुत ज़ियादा वाज़ेह़ और ख़ालिस झूट का इज़्हार हो तो दो ए'तिबार से उस की गवाही मरदूद है :

(1)...... अगर उस का कलाम मुन्फ़रिद हो तो इस सूरत में येह कहना ज़रूरी है कि अगर वोह अक्सर ऐसा करे या वोह इस में मश्हूर हो या ऐसी मज़म्मत करे जिस के कबीरा गुनाह होने की वज्ह से फ़ासिक़ हो जाए तो यक़ीनी त़ौर पर उस की गवाही मरदूद हो जाएगी।

(2)...... अगर वोह कसरत से मज़म्मत न करे, न इस में मश्हूर हो और न ही वोह कबीरा गुनाह हो तो गवाही मरदूद न होगी मगर ऐसा बहुत कम होता है। अलबत्ता ! येह कहा जा सकता है कि ग़ीबत कबीरा गुनाह है या जिस मज़म्मत में अज़िय्यत वाली बात पाई जाती हो, वोह उसे याद कर ले और हर वक़्त गुनगुनाता रहे और इस के ज़रीए़ मह्जू (या'नी जिस की मज़म्मत की गई उसे) और उस के बच्चों को अज़िय्यत पहुंचाता रहे तो इस के कबीरा होने का एह़तिमाल है लेकिन नस्र में नहीं क्यूं कि नज़्म याद हो जाती और ज़ेहनों में बैठ जाती है और इन्सान बार बार उसे दोहराता रहता है।

## नज़्म और नस्र में मज़म्मत का फ़र्क़ :

**''अल बह़्र''** में है कि शे'र की तरतीब आसानी से याद हो जाती है और येह नस्र के बर अ़क्स कई ज़मानों तक बाक़ी रहता है। और इस में येह भी लिखा है कि जब किसी ने अपने



www.dawateislami.net

शे'र में ईज़ा पहुंचाई या'नी एक मुसल्मान या कई मुसल्मानों की मज़म्मत की तो फ़ासिक़ हो जाएगा इस लिये कि मुसल्मान को ईज़ा देना ह़राम है और हमारे शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि येह इस सूरत में है कि जब कसरत से ऐसा करे मगर मेरे नज़्दीक उन की इस बात में ग़ौरो फ़िक्र की ज़रूरत है। कलामे अज़्रई का ख़ुलासा इख़्तिताम को पहुंचा।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) मज़ीद फ़रमाते हैं : "**मिन्हाज** का कलाम मुसल्मानों की मज़म्मत और औ़रतों के मु-तअ़ल्लिक़ ना जाइज़ इश्क़िया अश्आ़र पढ़ने की ह़ुरमत का तक़ाज़ा करता है जैसा कि ऐसे अश्आ़र बनाना ह़राम है मगर इसे मुत़्लक़ त़ौर पर ह़राम क़रार देना मुश्किल है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुवफ़्फ़क़ुद्दीन अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद बिन मुह़म्मद बिन क़ुदामा मक़्दिसी ह़म्बली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 620 हि.) ने कितनी अच्छी बात इर्शाद फ़रमाई कि हमारे शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने ज़िक्र फ़रमाया है कि मुअ़य्यन औ़रत के मह़ासिन में मुबा-लग़ा करते हुए इस के मु-तअ़ल्लिक़ इश्क़िया अश्आ़र कहना ह़राम है। अगर इस से मुराद येह हो कि ऐसा करना शे'र कहने वाले पर ह़राम है तो सह़ीह़ है और अगर येह मुराद हो कि रावी पर ह़राम है तो सह़ीह़ नहीं, क्यूं कि ग़ज़्वात के अब्वाब में सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की गुस्ताख़ी पर मुश्तमिल कुफ़्फ़ार के क़सीदे बयान किये गए हैं और कोई इस का इन्कार नहीं करता। चुनान्चे, मरवी है कि "ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इब्ने अबी सल्त के ह़ाइय्या क़सीदे के इ़लावा उन तमाम अश्आ़र की इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दी जिन के ज़रीए शु-अ़रा, बद्र व उहुद वग़ैरा के दिनों में (कुफ़्फ़ार से) मुक़ाबला करते थे।" और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बज़ाते ख़ुद ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन ज़ुहैर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का क़सीदा समाअ़त फ़रमाया और लोग हमेशा से इस जैसे क़साइद रिवायत करते आ रहे हैं और इस का इन्कार नहीं किया जाता।"[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुवफ़्फ़क़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जो ज़िक्र किया इस में कोई शक नहीं बशर्ते कि इस में न फ़ोह़्श गोई हो, न किसी ज़िन्दा या मुर्दा मुसल्मान को तक्लीफ़ पहुंचाई जाए और इस सूरत में येह बिला ह़ाजत जाइज़ है और उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने एक दूसरे की हज्व करने के सबब जरीर और फ़रज़्दक़ की मज़म्मत तो की मगर **इल्मुल बयान** में ए'राब वग़ैरा

1 ......المغنى لابن قدامة، كتاب الشهادات، مسئلة ۱۸۹۰ : العدل من لم تظهر منه ريبة ، فصل الشعر كالكلام......الخ، ج۱۴، ص۱۶۵۔



www.dawateislami.net

पर इस्तिद्लाल के लिये उन के अश्आर बतौरे दलील पेश करने वालों की मज़म्मत नहीं की और ह़ज़राते अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के अ़-दमे जवाज़ के कलाम को इस सूरत पर मह़्मूल करना ज़रूरी है जो लह्वो लअ़ब में मुब्तला और बेकार लोगों की आ़दत होती है और दूसरा येह कि इस से मुराद आज कल के शु-अ़रा का शे'र पढ़ना है जब कि वोह अश्आ़र ना जाइज़ हों क्यूं कि इन के कलाम में अज़िय्यत, ज़िन्दों की मज़म्मत, ज़िन्दों की मुर्दों के मु-तअ़ल्लिक़ बद कलामी या मुर्दों की बुराइयों का तज़्किरा होता है और वोह इस पाए के शु-अ़रा भी नहीं होते जिन से लुग़त वग़ैरा में हुज्जत पकड़ी जाए, मह़्ज़ लोगों की इ़ज़्ज़तों से खेलना रह जाता है।''

## ता'रीज़न मज़म्मत करने का हुक्म :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) फ़रमाते हैं : ''ता'रीज़[1] में मज़म्मत करना सरा-ह़तन मज़म्मत करने की त़रह़ है बल्कि बा'ज़ अवक़ात ता'रीज़ के साथ मज़म्मत ज़ियादा होती है।'' ''**शर्हुस्सग़ीर**'' में इस क़ौल पर क़त़्ई हुक्म दिया गया और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) ने इसे बेहतरीन क़ौल क़रार दिया और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने कज رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का येह क़ौल कमज़ोर है कि ता'रीज़ मज़म्मत में शुमार नहीं होती।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़लीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى का येह क़ौल मेरे ज़िक्र कर्दा मौक़िफ़ की ताईद करता है कि जिस चीज़ की तसरीह़ उस की ज़ात की वज्ह से ह़राम हो उस में ता'रीज़ भी ह़राम है और जिस चीज़ की तसरीह़ उस की ज़ात की वज्ह से ह़राम न हो बल्कि किसी दूसरे आ़रिज़ की वज्ह से ह़राम हो तो उस में ता'रीज़ जाइज़ है जैसे इ़द्दत वाली औ़रत को दा'वते निकाह़ देना।

**सुवाल :** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र-कशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने कज رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल क़ियास के ज़ियादा क़रीब है क्यूं कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام तोहमत के बाब में ता'रीज़ को किनाया के साथ भी मुल्ह़क़ नहीं करते तो येह तसरीह़ के साथ कैसे मिलाई जा सकती है ?

**जवाब :** येह हमारे मौज़ूअ़ के ख़िलाफ़ है क्यूं कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का कलाम ह़द के मुआ़-मले में (ता'रीज़ को तसरीह़ के साथ) मुल्ह़क़ न करने के मु-तअ़ल्लिक़ है और हमारा कलाम (ता'रीज़ से मज़म्मत करने की) हुरमत के मु-तअ़ल्लिक़ है और हर मौज़ूअ़ का ग़ौरो फ़िक्र

1...... ता'रीज़ येह है कि ''कलाम को किसी एक त़रफ़ माइल कर देना इस में इशारा एक जानिब होता है और मुराद दूसरी जानिब ले ली जाती है।'' (मो'जमे इस्तिलाहात, स. 55)



www.dawateislami.net

और समझने का अपना अपना महल है लिहाज़ा इन दोनों में से एक को दूसरे पर क़ियास नहीं किया जा सकता और तोहमत की बह्स में गुज़र चुका है कि ता'रीज़ से तोहमत लगाना कबीरा गुनाह है अगर्चे इस से हद वाजिब नहीं होती।

## मज़म्मत करने और इसे बयान करने वाले का हुक्म :

हज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) फ़रमाते हैं : मज़म्मत वाला कलाम कहने वाले की तरह नक़्ल करने वालों पर गुनाह नहीं। हज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं : येह बात सहीह है जब कि दोनों बराबर हों लेकिन अगर एक ने अश्आर कहे और आम न किये फिर दूसरे ने उन अश्आर को आम कर दिया तो बिला शुबा इस का गुनाह ज़ियादा शदीद होगा। इस क़ौल में हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र-कशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने इन्ही की पैरवी की।

हज़रते सय्यिदुना इमाम बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى ने शैख़ैन के हवाले से बयान कर्दा इस क़ौल कि "मज़म्मत में सच्चा इस में झूटे की तरह है" से इख़्तिलाफ़ करते हुए फ़रमाया : हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى की दलील येह हदीसे पाक है : "शे'र एक कलाम है, अच्छा शे'र अच्छे कलाम की तरह और बुरा शे'र बुरे कलाम की मिस्ल है।"[1] मज़्कूरा हदीसे पाक तक़ाज़ा करती है कि सच्ची मज़म्मत हराम नहीं इस ए'तिबार से सच्ची मज़म्मत वाला कलाम भी हराम नहीं और अगर इस में इशाअते फ़ाहिशा हो तो हराम है। येही मौक़िफ़ वाज़ेह है मगर हज़रते सय्यिदुना इमाम रूयानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى का क़ौल शैख़ैन के क़ौल की ताईद करता है कि मज़म्मत हराम है अगर्चे मज़म्मत करने वाला उस में सच्चा हो। बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि मु-तअख़्ख़िरीन ने इसी मौक़िफ़ को इख़्तियार किया और हज़रते सय्यिदुना इमाम क़मूली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने अपनी किताब **"जवाहिर"** में मज़ीद येह फ़रमाया कि सच्ची मज़म्मत करने वाले का गुनाह झूटे के गुनाह से कम होता है।

मैं ने उन्वान में मुसल्मान की क़ैद लगा कर काफ़िर की मज़म्मत से एह्तिराज़ किया क्यूं कि इस में इख़्तिलाफ़ और तफ़्सील है बल्कि इसी तरह मुसल्मान की मज़म्मत में भी तफ़्सील है।

## काफ़िर की मज़म्मत का हुक्म :

काफ़िर की मज़म्मत के मु-तअल्लिक़ ख़ुलासए कलाम येह है कि अक्सर शाफ़ेई उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इस को मुत्लक़न जाइज़ क़रार दिया। इन मैं हज़रते सय्यिदुना इमाम रूयानी, इमाम सैदलानी, इमाम इब्ने सब्बाग़, इमाम महामली, इमाम जुरजानी, साहिबुल

1......مسند الامام الشافعی، من کتاب الحج من الامالی، ص ۳۶۲۔



www.dawateislami.net

काफ़ी, साहिबुल बयान और साहिबुल ईज़ाह رَحْمَةُاللّٰہِ تعالیٰ عَلَيهِم हैं और हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने रिफ़अह رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भी अपनी किताब ''**अल मत़्लब**'' में मुत़्लक़ के क़ौल को इख़्तियार किया और सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुश्रिकीन की मज़म्मत करने का हुक्म देने से और इस दुआए मुस्तफ़ा से इस्तिद्लाल किया कि ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जिब्रईले अमीन के ज़रीए इस की ताईद फ़रमा।''(1)

चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कुरैश की मज़म्मत करते और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते : ''बेशक येह उन पर तीरों की बोछाड़ से ज़ियादा शाक़ गुज़रती है।''(2)

काफ़िरों की मज़म्मत का हुक्म आम है और मुअय्यन हर्बी ख़्वाह ज़िन्दा हो या मुर्दा जब कि उस का कोई क़रीबी ज़िम्मी रिश्तेदार न हो जो उस की मज़म्मत से अज़िय्यत महसूस करे तो उस की मज़म्मत जाइज़ है और अगर वोह ज़िम्मी हो या मुसल्मानों से उस का कोई अह्द तै पा चुका हो या ऐसा हर्बी हो जिस का क़रीबी रिश्तेदार ज़िम्मी या मुसल्मान हो जो उस की मज़म्मत से अज़िय्यत महसूस करे तो अब उस की मज़म्मत जाइज़ नहीं। जैसा कि एक त़ब्क़ए मु-तअख़्ख़िरीन ने कहा, हज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) भी इन में शामिल हैं। हज़रते सय्यिदुना इब्ने इमाद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْجَوَاد ने इस पर मज़ीद येह भी फ़रमाया कि बेशक मोमिन ज़िम्मी की त़रह है और इल्लत येह बयान की, कि हम पर अहले ज़िम्मा से मज़म्मत रोकना लाज़िम है जैसा कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इस की तसरीह फ़रमाई है और हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र-कशी عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی ने भी येही फ़रमाया और येह इस मस्अले की सहीह तफ़्सील है।

हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का कुफ़्फ़ारे कुरैश की मज़म्मत करने का जवाब येह है कि वोह अगर्चे मुअय्यन अश्ख़ास के मु-तअल्लिक़ थी मगर वोह सब हर्बी थे और बिलफ़र्ज़ उन कुफ़्फ़ार की मज़म्मत को ना जाइज़ मान भी लिया जाए तब भी इस के जवाज़ की सूरत येह थी कि वोह **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नामूस (या'नी इ़ज़्ज़त) का तहफ़्फ़ुज़ कर रहे थे, लिहाज़ा येह मज़म्मत न सिर्फ़ मुबाह बल्कि इबादत थी। इसी वज्ह से रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस का हुक्म दिया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हक़ में दुआ भी फ़रमाई।

1 ......صحیح البخاری، کتاب الادب، باب هجاء المشرکین، الحدیث: ٦١٥٢، ص٥١٩۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب فضائل حسان بن ثابت، الحدیث: ٦٣٩٥، ص١١١٥۔



www.dawateislami.net

## बिद्अ़ती की मज़म्मत का हुक्म :

**हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) ने इस मस्अले में बिद्अ़ती को ह़र्बी के साथ शामिल किया और मु-तअख़्ख़िरीन के एक गुरोह ने उन की इत्तिबाअ़ की। पस बिद्अ़त की वज्ह से उस की मज़म्मत जाइज़ है बशर्ते़ कि किसी शर-ई मक़्सद के लिये हो जैसे उस की बिद्अ़त से लोगों को बचाना मक़्सूद हो।

## मुरतद की मज़म्मत का हुक्म :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने इमाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد फ़रमाते हैं : "मुरतद की मज़म्मत जाइज़ है लेकिन बे नमाज़ी और शादी शुदा ज़ानी की मज़म्मत जाइज़ नहीं।"

मुरतद के मु-तअ़ल्लिक़ तो इन का क़ौल वाज़ेह़ है क्यूं कि वोह ह़र्बी की त़रह़ बल्कि इस से भी बुरा होता है लेकिन दूसरे दोनों की मज़म्मत तब तक जाइज़ नहीं जब तक कि उन का फ़िस्क़ो फ़ुजूर वाज़ेह़ न हो जाए।

## फ़ासिक़े मो'लिन की मज़म्मत का हुक्म :

फ़ासिक़े मो'लिन (या'नी ए'लानिया फ़िस्क़ करने वाले) की सिर्फ़ उसी फ़िस्क़ में मज़म्मत करना जाइज़ है जिस का वोह खुल्लम खुल्ला इज़्हार करता है क्यूं कि उस की उस फ़िस्क़ के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ीबत करना भी जाइज़ है। इस बिना पर तमाम उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के मुत़्लक़ अक़्वाल को फ़ासिक़े मो'लिन की मज़म्मत के जवाज़ पर मह़मूल किया जाएगा।

**सुवाल :** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं : राजेह़ क़ौल के मुत़ाबिक़ (फ़िस्क़िया अश्आ़र कहने वाले) फ़ासिक़ की मज़म्मत ह़राम है मगर झिड़क्ना मक़्सूद हो तो जाइज़ है क्यूं कि कभी मज़म्मत के बाइ़स वोह तौबा कर लेता है लेकिन शे'र का दाग़ उस पर बाक़ी रहता है जब कि काफ़िर इस्लाम ले आए तो इस का मुआ़-मला ऐसा नहीं होता (या'नी उस पर कुफ़्र का दाग़ बाक़ी नहीं रहता) ?

**जवाब :** इस का जवाब येह है कि फ़ासिक़ का अ़लानिया गुनाह करना, लोगों की भी परवाह न करना और लोगों का उस के मु-तअ़ल्लिक़ बातें करना उसे ना क़ाबिले एह़तिराम शख़्स बना देता है फिर उस का लिह़ाज़ नहीं रखा जाता। पस वोह अ़लानिया फ़िस्क़ में मुब्तला हो कर बज़ाते खु़द अपने नफ़्स की हु़रमत को पामाल करने वाला है लिहाज़ा इस ऐ़ब के उस पर बाक़ी रहने की परवाह नहीं की जाती।(1)

---

1 ......روح المعانی، الشعراء، تحت الآیۃ ۲۲۷، جز۱۹ء،ص۲۰۰۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 460 : शे'रगोई में आ़दत से ज़ियादा मुबा-लग़ा आमेज़ ता'रीफ़ करना

**( वोह यूं कि जाहिल या फ़ासिक़ को कभी आ़लिम और कभी आ़दिल कह देना )**

## कबीरा नम्बर 461 : शे'रगोई के ज़रीए दौलत कमाना

**( या'नी अपना अक्सर वक़्त सर्फ़ कर के शे'रगोई के ज़रीए दौलत कमाना और जब उस की मत़लूबा चीज़ रोक दी जाए तो अश्आ़र में मज़म्मत और बद कलामी में मुबा-लग़ा करना )**

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल ह़सन अ़ली बिन मावर्दी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى का आयिन्दा आने वाला कलाम इन दोनों को कबीरा गुनाह क़रार देने पर दलालत करता है। इसी त़रह़ **''अल उ़म्दह''** में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ूरानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى का येह कलाम भी इन के कबीरा होने पर दलालत करता है कि ''अगर किसी की ता'रीफ़ करने में मुबा-लग़ा किया और ऐसी बात कही जो आ़दतन नहीं कही जाती तो येह सरीह़ झूट और जहालत है जिस की वज्ह से गवाही मरदूद हो जाती है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं कि इसे आ़दत के साथ मुक़य्यद करना अच्छा है और ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد फ़रमाते हैं कि अगर वोह मह़ज़ झूट की कसरत न करे तो उस की गवाही जाइज़ है।

**''अल उ़म्दह''** में मज़ीद फ़रमाते हैं कि अगर उस ने किसी शख़्स को शेर और चांद के साथ तश्बीह दी तो उस पर कोई ऐ़ब नहीं लगाया जाएगा। इसी त़रह़ किसी कातिब ने जब ऐसी बात ज़िक्र की जो आ़दतन नहीं कही जाती म-सलन मैं तो दिन रात की घड़ियों में तेरा ही ज़िक्र करता रहता हूं और मेरी कोई मजलिस तेरे ज़िक्र से ख़ाली नहीं होती और तू मुझे मेरी जान से ज़ियादा मह़बूब है। तो उस पर ऐ़ब नहीं लगाया जाएगा क्यूं कि उस का मक़्सूद झूट नहीं बल्कि कलाम की तज़्ईन है, पस येह **यमीने लग़्व** के क़ाइम मक़ाम होगा और मज़्कूरा कलाम बेहतरीन कलाम है और इसी पर ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ क़फ़्फ़ाल (मु-तवफ़्फ़ा 365 हि.) और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सैदलानी رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا का कलाम भी दलालत करता है जो कि झूट की बह़्स में गुज़र चुका है।

अलबत्ता ! येह एह़्तिमाल हो सकता है कि मम्दूह़ों (या'नी जिन की ता'रीफ़ की जाए उन) के माबैन फ़र्क़ हो। पस जब वोह किसी के उन औसाफ़ म-सलन फ़ज़्लो करम, इ़ल्म या बहादुरी की ता'रीफ़ करे जिन से वोह मुत्तसिफ़ हो लेकिन इस में ह़द से तजावुज़ न करे तो इस में ह़रज



www.dawateislami.net

नहीं और अगर वोह उन औसाफ़ से बिल्कुल ख़ाली हो या'नी वोह फ़ासिक़, जाहिल या कन्जूस को सब से बड़ा आ़लिम, आ़दिल या सख़ी वग़ैरा क़रार दे जिस का झूट होना क़त्ई त़ौर पर मह़सूस हो तो वोह ह़या और मुरव्वत की चादर को चाक करने वाला है।

## मद्ह़ सराई को पेशा बनाने का हुक्म :

येही हुक्म उस शख़्स का है जो मद्ह़ सराई को अपना पेशा बना ले और अक्सर अवक़ात इसी में मगन रहे अलबत्ता ! उस का मुआ़-मला इस के बर अ़क्स है जो बा'ज़ अवक़ात मम्दूह़ की त़रफ़ से ह़ासिल होने वाली किसी ख़ैर व भलाई की वज्ह से उस की ता'रीफ़ करता है। पस उस का इस क़िस्म की ता'रीफ़ में मश्ग़ूल होना क़ाबिले मुआ़फ़ी है क्यूं कि उस का मक़्सद मह़ज़ फ़न्ने शाइ़री का इज़्हार और नज़्म की उ़म्दगी है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल ह़सन अ़ली बिन मुह़म्मद मावर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "शे'रगोई के ज़रीए कमाई करने वाले को जब अ़ता़ किया जाए तो ता'रीफ़ करे और जब न दिया जाए तो मज़म्मत न करे और जो थोड़ा बहुत उसे मिले बख़ुशी क़बूल कर ले तो उस की अ़दालत और गवाही क़बूल की जाएगी।" येह सह़ीह़ और बेहतरीन क़ौल है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) के कलाम और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मावर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के ह़वाले से ज़िक्र कर्दा कलाम के मफ़्हूम और इसे मुस्तह़सन क़रार दिये जाने से मेरे उ़न्वान में ज़िक्र कर्दा मौक़िफ़ की ताईद होती है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मावर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى मज़ीद फ़रमाते हैं : "अगर शाइ़र ता'रीफ़ करे और ख़ूब सराहे तो अगर उस की ता'रीफ़ मुबा-लग़े पर मह़मूल हो सकती हो तो जाइज़ है वरना वोह मह़ज़ झूट है जैसा कि आ़म शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने कहा है।"

## क्या शे'र में मुबा-लग़ा करना बेहतर है ?

उ-दबा वग़ैरा का इस बात में इख़्तिलाफ़ है कि शे'र में मुबा-लग़ा करना बेहतर है या किसी चीज़ को ह़क़ीक़त के मुत़ाबिक़ बयान करना। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ मुबा-लग़ा बेहतर है जब कि एक क़ौल येह है कि मुबा-लग़ा न करना बेहतर है और किसी चीज़ को ह़क़ीक़त के मुत़ाबिक़ ज़िक्र करना बेहतर है ताकि झूट से मह़फ़ूज़ रहे और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه वग़ैरा का इसी पर अ़मल है। अलबत्ता ! एक क़ौल के मुत़ाबिक़ अगर मुबा-लग़ा मुह़ाल चीज़ की त़रफ़ ले जाए तो इसे तर्क किया जाए वरना मुबा-लग़ा करना बेहतर है।

उ़न्वान में ज़िक्र कर्दा क़ैद से ख़ाली अश्आ़र पढ़ने और बनाने में कोई ह़रज नहीं। हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में



www.dawateislami.net

शु-अ़रा मौजूद रहते जिन के अश्आ़र आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तवज्जोह से समाअ़त फ़रमाते थे, जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन रवाह़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और (मुस्लिम शरीफ़ में है :) आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उमय्या बिन अबी सल्त का 100 अश्आ़र वाला क़सीदा पढ़वाया।[1]

हमारे आक़ा व मौला, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अश्आ़र पढ़वाए और कसीर सह़ाबा व ताबिईने किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان वग़ैरा ने पढ़े और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अस्मई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی के सामने हज़लियों के अश्आ़र पढ़े।

नीज़ अ़-रबी दीवान याद करने से किताब व सुन्नत समझने में बहुत ज़ियादा मदद मिलती है। ह़दीसे पाक में है कि "बेशक शे'र में ह़िक्मत है।"[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی ने मुर-सलन रिवायत बयान की : "शे'र एक कलाम है, अच्छा शे'र अच्छा कलाम और बुरा शे'र बुरा कलाम है।"[3]

या'नी शे'र का शे'र होना क़बीह़ नहीं बल्कि वोह हुक्म में कलाम की त़रह़ है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) वग़ैरा फ़रमाते हैं : "अश्आ़र में से जिस की ज़रूरत हो उसे याद करना ज़रूरी है क्यूं कि जो चीज़ इत़ाअ़त पर मदद दे वोह इत़ाअ़त ही होती है।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं : अश्आ़र की नस्री कलाम पर फ़ज़ीलत येह है कि येह मशहूर हो जाते हैं। इस का मा'ना येह है कि नस्र के बर अ़क्स येह किताबों में साबित रहते और पढ़े जाते हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल ह़सन अ़ली बिन मुह़म्मद मावर्दी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने कितनी अच्छी बात कही है कि "अ़रब के कलाम में 3 त़रह़ के अश्आ़र होते हैं : (1)...... **मुस्तह़ब :** येह वोह है जो दुन्या से बचाए और आख़िरत की रग़बत दिलाए या अच्छे अख़्लाक़ पर उभारे। (2)...... **मुबाह़ :** येह वोह है जिस में फ़ोह़श और झूट न हो। (3)...... **मम्नूअ़ :** इस की दो अक़्साम

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الشعر، باب فی انشاد الاشعار......الخ، الحدیث : ۵۸۸۵،ص۱۰۷۸۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الادب، باب ما یجوز من الشعر......الخ، الحدیث : ۶۱۴۵،ص۵۱۸۔

3 ......مسند الشافعی، من کتاب الحج من الامالی، ص ۳۶۲، بتغیرٍ قلیلٍ۔



www.dawateislami.net

हैं : झूट और फ़ोह्श और इन दोनों के कहने वालों को ऐब लगाया जाएगा और अगर कोई ह़ालते इज़्तिरार में पढ़ रहा हो तो मा'यूब नहीं लेकिन इख़्तियार से पढ़ने वाला मा'यूब है, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम रूयानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने भी इन्हीं की पैरवी की है।''(1) और बिला शुबा जो कलाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त, सुन्नत की पैरवी, बिद्अ़त से इज्तिनाब और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी से बचने पर उभारे वोह इबादत है और इसी त़रह़ जो कलाम हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'रीफ़ पर मुश्तमिल हो वोह भी इबादत है।

बेशक शाइ़र का मज़म्मत करना ह़राम है ख़्वाह वोह सच्चा हो या झूटा और उस की गवाही मरदूद है। इसी त़रह़ अगर वोह ना मुनासिब बुरा ज़िक्र करे या सरीह़ तोहमत लगाए तो येह भी ह़राम है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی ने शु-अ़रा की मज़म्मत में वारिद ह़दीसे पाक को इस हु़क्म पर मह़मूल किया और अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने इस बात पर मह़मूल किया है कि जब उस पर शे'र इस क़दर ग़ालिब आ जाएं कि इन में मश्ग़ूल हो कर कु़रआने पाक और फ़िक़्ह से ए'राज़ करने लगे। इसी वज्ह से ह़दीसे पाक में **इम्तिला** का ज़िक्र किया गया (या'नी पेट के पीप से भरे होने को अश्आ़र में मश्ग़ूलिय्यत से बेहतर क़रार दिया गया) और अश्आ़र में थोड़ा फ़ख़्र भी ज़ियादा फ़ख़्र की त़रह़ मज़्मूम है।


## ......म-दनी इन्क़िलाब......

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ و صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी के हु़सूल और बा किरदार मुसल्मान बनने के लिये ''**दा'वते इस्लामी**'' के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** से ''**म-दनी इन्आ़मात**'' नामी रिसाला ह़ासिल कर के इस के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश कीजिये और अपने अपने शहरों में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की बहारें लूटिये। **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के लिये बे शुमार **म-दनी क़ाफ़िले** शहर ब शहर, गाउं ब गाउं सफ़र करते रहते हैं, आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा करें। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप अपनी ज़िन्दगी में हैरत अंगेज़ त़ौर पर ''**म-दनी इन्क़िलाब**'' बरपा होता देखेंगे।


(1)...... روح المعانی، الشعراء،تحت الآیۃ ۲۲۷، جز ۱۹ء، ص ۲۰۰۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 462 : सग़ीरा गुनाहों पर इसरार करना

**या'नी एक या कई सग़ीरा गुनाहों पर यूं हमेशगी इख़्तियार करना कि उस की ना फ़रमानी इत़ाअ़त पर ग़ालिब आ जाए**

### सग़ीरा गुनाह पर इसरार करने का हुक्म :

हज़राते अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने तसरीह़ की है कि सग़ीरा गुनाह अ़दालत के साक़ित़ होने में कबीरा गुनाह की त़रह़ है और हज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی (मु–तवफ़्फ़ा 623 हि.) शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का क़ौल नक़्ल फ़रमाते हैं कि किसी के आ़दिल होने में इस का कबीरा गुनाहों से इज्तिनाब करना मो'तबर है, पस जिस ने कबीरा गुनाह का इरतिकाब किया वोह फ़ासिक़ हो गया और उस की गवाही क़बूल न होगी। अलबत्ता ! सग़ीरा गुनाहों से मुकम्मल त़ौर पर बचना शर्त़ नहीं लेकिन येह शर्त़ है कि इन पर इसरार न करे, अगर उस ने इसरार किया तो इसरार करने का हुक्म कबीरा गुनाह का इरतिकाब करने की त़रह़ होगा।

**सुवाल :** क्या अ़दालत को ख़त्म करने वाले इसरार से मुराद किसी एक ही सग़ीरा गुनाह पर हमेशगी इख़्तियार करना है या कई सग़ीरा गुनाहों की कसरत करना ख़्वाह वोह एक क़िस्म के हों या मुख़्तलिफ़ अक़्साम के ?

**जवाब :** बा'ज़ उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़्दीक पहला एह़तिमाल और बा'ज़ के कलाम से दूसरा एह़तिमाल मो'तबर है। जुम्हूर अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का क़ौल दूसरे मौक़िफ़ के मुवाफ़िक़ है कि जिस शख़्स की इत़ाअ़त उस की ना फ़रमानी पर ग़ालिब आ जाए वोह आ़दिल है और जिस की ना फ़रमानी उस की इत़ाअ़त पर ग़ालिब आ जाए उस की गवाही मक़्बूल नहीं। "**अल मुख़्तसर**" में हज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی (मु–तवफ़्फ़ा 204 हि.) का क़ौल भी इस के क़रीब क़रीब मफ़्हूम पर दलालत करता है और जब हम दूसरे एह़तिमाल को मो'तबर क़रार दें तो सग़ीरा गुनाहों की एक क़िस्म पर हमेशगी इख़्तियार करना नुक़्सान नहीं देता जब कि इत़ाअ़त ग़ालिब हो लेकिन पहले एह़तिमालात की बिना पर येह नुक़्सान देह है और साह़िबे रौज़ा ने **अरौज़ा** में इन्हीं की इत्तिबाअ़ की और दोनों का कलाम दूसरे एह़तिमाल को तरजीह़ देने का तक़ाज़ा करता है और येही ह़क़ीक़त है और हज़रते सय्यिदुना इब्ने सुराक़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه वग़ैरा ने भी इसी की तसरीह़ की है।

### ह़ासिले कलाम :

क़ाबिले ए'तिमाद बात येह है कि अक्सर मु–तअख़्ख़िरीन जैसे सय्यिदुना इमाम अज़्रई



www.dawateislami.net

(मु–तवफ़्फ़ा 783 हि.), सय्यिदुना इमाम जलाल बुल्क़ीनी, सय्यिदुना इमाम ज़र–कशी और सय्यिदुना इमाम इब्ने इमाद رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی علیہم वग़ैरा का मुत्तफ़िक़ा मौक़िफ़ येह है कि एक क़िस्म के सग़ीरा गुनाह पर हमेशगी नुक़्सान नहीं देती और न ही कई अक़्साम के गुनाहों पर मुदा–वमत नुक़्सान देह है ख़्वाह वोह एक सग़ीरा पर क़ाइम रहे या कई पर या उन गुनाहों को ब कसरत करे जब कि उस की नेकियां ना फ़रमानियों पर ग़ालिब हों, वरना वोह नुक़्सान देह है और ह़ज़राते शैख़ैन (या'नी इमाम राफ़ेई व इमाम न–ववी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہِمَا) के दूसरे दो मक़ामात पर वाक़ेअ़ कलाम को इस मा'ना पर मह़्मूल किया जाएगा और वोह कलाम येह है कि सग़ीरा गुनाह पर हमेशगी गवाही रद किये जाने में इसे कबीरा गुनाह की मिस्ल बना देती है लेकिन इस क़िस्म के साथ शर्त़ है कि उस की नेकियां ख़त़ाओं पर ग़ालिब न हों।

## गवाही में आ़दिल या ग़ैरे आ़दिल होना :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इस्नवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی के मज़्कूरा क़ौल की जो वज़ाह़त की वोह हमारी बयान कर्दा बा'ज़ बातों के ख़िलाफ़ है, लिहाज़ा इस की वज्ह से धोके में मुब्तला न हों और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन बुल्क़ीनी और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने इमाद رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہِمَا वग़ैरा ने इन के क़ौल पर ए'तिराज़ किया और इन की तरदीद की और जुम्हूर उ़–लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام का येह क़ौल भी मेरे मौक़िफ़ की ताईद करता है कि जिस की नेकियां उस के गुनाहों पर ग़ालिब हों वोह आ़दिल है। इस लिये कि इस क़ौल का ज़ाहिरी मफ़्हूम इस बात पर दलालत करता है कि जिस की बुराइयां उस की नेकियों पर ग़ालिब हों उस की गवाही क़बूल नहीं की जाएगी ख़्वाह वोह गुनाह एक क़िस्म के हों या मुख़्तलिफ़ अक़्साम के।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शिहाबुद्दीन अज़्रई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु–तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं कि मज़्हब, क़ौले जुम्हूर और जिस क़ौल पर नुसूस दलालत करती हैं वोह येह है कि जिस शख़्स पर उस की इत़ाअ़त और मुरव्वत ग़ालिब हो उस की गवाही मक़्बूल है और जिस पर ना फ़रमानी और ख़िलाफ़े मुरव्वत काम ग़ालिब हों उस की गवाही मक़्बूल नहीं। ह़ज़राते शैख़ैन رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہِمَا ने एक ज़ईफ़ क़ौल नक़्ल फ़रमाया है कि तीन बार सग़ीरा गुनाह का इरतिकाब करने से वोह कबीरा गुनाह बन जाता है या उसे इस क़ौल पर मह़्मूल किया जाएगा कि उस के साथ ना फ़रमानियों का ग़–लबा मिला हुवा हो।

## मूजिबे फ़िस्क़ ऐ़ब की ता'रीफ़ :

**''अल इबादी''** की इबारत येह है कि मूजिबे फ़िस्क़ ऐ़ब येह है कि वोह कबीरा गुनाहों



www.dawateislami.net

का इरतिकाब करे या उस के सग़ीरा गुनाह उस की नेकियों पर ग़ालिब आ जाएं।

## मुरव्वत की ता'रीफ़ :

मुरव्वत येह है कि इन्सान वोह काम न करे कि लोग इस जैसे शख़्स से ऐसा काम होने को ना पसन्द करें म-सलन खाना पीना वग़ैरा। येह इस बात पर दलील है कि अगर इन्सान खाने या लिबास के मुआ़-मले में अपने नफ़्स पर बुख़्ल और तंगी करे तो उस की गवाही मरदूद है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने इ़माद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इस्नवी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) से नक्ल किया कि सग़ीरा पर इसरार इसे कबीरा बना देता है। ह़ालां कि ऐसी कोई बात नहीं और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) ने तो येह इ़बारत ज़िक्र ही नहीं की बल्कि उन्हों ने येह बयान फ़रमाया कि गवाह फ़ासिक़ हो जाएगा और इस से येह लाज़िम नहीं आता कि सिर्फ़ कबीरा गुनाह ही की वज्ह से किसी को फ़ासिक़ क़रार दिया जाए या उस की गवाही रद कर दी जाए क्यूं कि कभी सग़ीरा गुनाहों पर इसरार करने और किसी इन्तिहाई संगीन सग़ीरा गुनाह के इरतिकाब से भी येह दोनों लाज़िम आ जाते हैं जैसे लोगों की मौजू-दगी में अजनबी औ़रत को बोसा देना।[1]

किसी को फ़ासिक़ क़रार देने के मु-तअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) ने जो ज़िक्र किया मुआ़-मला इस त़रह़ नहीं क्यूं कि कबीरा गुनाह के इरतिकाब से फ़िस्क़ लाज़िम आता है जब कि गवाही क़बूल न होने का मुआ़-मला इस के ख़िलाफ़ है क्यूं कि येह तो ख़िलाफ़े मुरव्वत काम से भी रद हो जाती है जैसा कि उन लोगों के नज़्दीक बोसे की मज़्कूरा सूरत जो इसे कबीरा गुनाह शुमार नहीं करते।

---

1...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द सिवुम सफ़ह़ा 446 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "अज्नबिय्या औ़रत के चेहरे और हथेली को देखना अगर्चे जाइज़ है मगर छूना जाइज़ नहीं, अगर्चे शह्वत का अन्देशा न हो क्यूं कि नज़र के जवाज़ की वज्ह ज़रूरत और बलवाए आ़म है छूने की ज़रूरत नहीं, लिहाज़ा छूना ह़राम है। इस से मा'लूम हुवा कि इन से मुसा-फ़ह़ा जाइज़ नहीं इसी लिये हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ब वक़्ते बैअ़त भी औ़रतों से मुसा-फ़ह़ा न फ़रमाते सिर्फ़ ज़बान से बैअ़त लेते। हां अगर वोह बहुत ज़ियादा बूढ़ी हो कि मह़ल्ले शह्वत न हो तो उस से मुसा-फ़ह़े में ह़रज नहीं। यूंही अगर मर्द बहुत ज़ियादा बूढ़ा हो कि फ़ित्ने का अन्देशा ही न हो तो मुसा-फ़ह़ा कर सकता है।" (الهداية، كتاب الكراهية، فصل في الوطء والنظر واللمس، ج٢، ص٣٦٨، وغيرها)



www.dawateislami.net

नीज़ मज़्कूरा इसरार के साथ उन की बयान कर्दा तम्सील भी मु-तनाज़अ़ है। लिहाज़ा इस में कोई दलील नहीं। मैं ने बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام को मज़्कूरा कलाम ज़िक्र करने के बा'द येह कहते हुए पाया कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का ज़िक्र कर्दा कलाम दुरुस्त नहीं।

हज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं कि ग़-लबे को समझने के लिये उ़र्फ़ को मे'यार बनाया जाएगा इस लिये कि इस से तमाम उ़म्र के गुनाह मुराद लेना मुश्किल है, लिहाज़ा मुस्तक़्बिल के गुनाह इस में दाख़िल न होंगे और इसी त़रह़ वोह गुनाह भी शामिल न होंगे जो तौबा वग़ैरा से ख़त्म हो गए हों।

## क़बूलिय्यते शहादत का मे'यार :

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) ने **"अल मुख़्तसर"** में फ़रमाया है कि हमारी मा'लूमात के मुताबिक़ बहुत कम लोग इताअ़त और मुरव्वत में मुख़्लिस हैं और जब किसी शख़्स पर इताअ़त और मुरव्वत ग़ालिब हो तो उस की गवाही मक़्बूल होगी और जब किसी पर मा'सियत और ख़िलाफ़े मुरव्वत काम ग़ालिब हों तो उस की गवाही क़बूल न होगी।[1]

हज़रते सय्यिदुना इमाम बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं कि हमारे शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि इस से मुराद सग़ीरा गुनाह हैं क्यूं कि कबीरा गुनाह का इरतिकाब तो फ़ौरन अ़दालत से निकाल देता है अगर्चे इताअ़त ग़ालिब हो। बेहतर क़ौल येह है कि अ़दालत की शर्त़ कबीरा गुनाहों से इज्तिनाब करना और नेकियों पर सग़ीरा गुनाहों का ग़ालिब न होना है।

हज़रते सय्यिदुना इमाम बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى का मज़्कूरा क़ौल कि "नेकियों पर सग़ीरा गुनाहों का ग़ालिब न होना" तक़ाज़ा करता है कि अगर दोनों बराबर हों कि दोनों में से एक दूसरे पर ग़ालिब न हो तो अ़दालत बाक़ी रहने का भी एह़तिमाल है और इस के ख़त्म होने का भी एह़तिमाल है जैसा कि अगर जाइज़ और ह़राम काम जम्अ़ हो जाएं तो ह़राम को इस की ख़बासत की वज्ह से तरजीह़ दी जाती है, इसी त़रह़ यहां भी ना फ़रमानी और गुनाहों को इन की ख़बासत की वज्ह से तरजीह़ दी जानी चाहिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे नसीह़त निशान है :

وَلَمْ يُصِرُّوْا (پ۴، ال عمران:۱۳۵) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और अड़ न जाएं।

---

1 ......الحاوی الکبیر للماوردی، کتاب الشهادات الثانی، مسألة:لیس من الناس احد نعلمه......الخ، ج۲۱،ص۱۵۹۔



www.dawateislami.net

## आयते मुबा–रका की तफ़्सीर :

हज़रते सय्यिदुना इमाम मावर्दी और हज़रते सय्यिदुना इमाम त़–बरी عَلَيْهِمَا رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने मज़्कूरा आयते मुबा–रका में इसरार की तफ़्सीर येह बयान फ़रमाई कि वोह उस गुनाह को दोबारा न करने का पुख़्ता इरादा न करें और येह तफ़्सीर तक़ाज़ा करती है कि जिस त़रह़ दोबारा करने के पुख़्ता इरादे को इसरार कहते हैं यूंही दोबारा न करने का अ़ज़्म न करना भी इसरार कहलाता है।

हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सलाह़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल भी इस की मुवा–फ़क़त करता है कि किसी गुनाह को दोबारा करने और फ़े'ले क़बीह़ के मुसल्सल इरतिकाब पर अ़ज़्मे मुसम्मम के साथ तौबा को इस की ज़िद के साथ इस त़रह़ मिला देना कि उसे उन गुनाहों के ज़ुमरे में दाख़िल कर दिया जाए जिन पर किसी वस्फ़े मुअ़य्यन की वज्ह से कबीरा का इत़्लाक़ करना दुरुस्त हो, इसरार कहलाता है और इस की मा'रिफ़त के लिये कोई वक़्त और अ़दद मुअ़य्यन नहीं। हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحِمَهُ اللهُ السَّلَام के नज़्दीक इसरार येह है कि सग़ीरा गुनाह का बार बार इतनी मर्तबा इरतिकाब हो कि जिस के सबब दीनी उमूर में ला परवाही बरत्ने की वज्ह से कबीरा गुनाह के इरतिकाब का शुऊ़र होने लगे। नीज़ फ़रमाते हैं कि इसरार से येह भी मुराद हो सकती है कि मुख़्तलिफ़ क़िस्म के सग़ीरा गुनाहों के मज्मूए़ से कबीरा गुनाहों में से सब से छोटे कबीरा का शुऊ़र होने लगे। **ज़ाबित़ए इसरार** की पहचान ज़रूरी है पस क़ौले ज़ईफ़ के मुत़ाबिक़ सग़ीरा पर मुत़्लक़ इसरार इसे कबीरा बना देता है। जब कि साबिक़ा क़ाबिले ए'तिमाद क़ौल के मुत़ाबिक़ इसरार का दारो मदार नेकियों और गुनाहों के ग़–लबे पर है और इस के मु–तअ़ल्लिक़ हज़रते सय्यिदुना इमाम बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى का ज़ाबित़ा येह है कि "इसरार की मा'रिफ़त के लिये उ़र्फ़ मे'यार है।" पस इस में नेकियों के दुगना व चौगुना होने को नहीं देखा जाएगा बल्कि इन को फ़क़त़ गुनाहों के मुक़ाबिल तसव्वुर किया जाएगा क़त़ए नज़र इस के कि नेकियां गुनाहों से दुगनी हों या न हों और बा'ज़ उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इस में तरद्दुद किया कि अगर नेकियां और गुनाह बराबर हों तो अ़दालत बाक़ी रहेगी या नहीं ? तो राजेह़ क़ौल येही है कि अ़दालत ज़ाइल हो जाएगी।

۞۞۞۞۞۞۞



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 463 : कबीरा गुनाह से तौबा न करना

इस का कबीरा होना वाज़ेह़ है अगर्चे मैं ने किसी को इसे कबीरा में शुमार करते हुए नहीं पाया। अ़न्क़रीब आने वाली अह़ादीसे मुबा-रका इस की तसरीह़ करती हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान इस की त़रफ़ इशारा करता है :

وَتُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ جَمِیْعًا اَیُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝۳۱ (پ۱۸، النور:۳۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** की त़रफ़ तौबा करो, ऐ मुसल्मानो ! सब के सब इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह़ पाओ।

### आयते मुबा-रका की तफ़्सीर :

आयते मुबा-रका इस त़रफ़ इशारा करती है कि तौबा न करना ख़सारा ही ख़सारा है।

### कबीरा गुनाहों से फ़ौरन तौबा करना :

इसी वज्ह से क़ुरआनो सुन्नत के दलाइल और इज्माए़ उम्मत की रोशनी में कबीरा गुनाहों से फ़ौरन तौबा करना **वाजिबुल ऐ़न** है।

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी बाक़िल्लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं कि तौबा की ताख़ीर पर भी तौबा करना वाजिब है।

### सग़ीरा गुनाहों से फ़ौरन तौबा करना :

इमामे अहले सुन्नत व जमाअ़त ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शैख़ अबुल ह़सन अश्अ़री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि सग़ीरा गुनाह से फ़ौरन तौबा करना **वाजिबुल ऐ़न** है जैसा कि कबीरा गुनाह के मु-तअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है।

इस में अबू अ़ली जुब्बाई मो'तज़िली के इ़लावा किसी ने इख़्तिलाफ़ नहीं किया और हमारे शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام वग़ैरा से ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अश्अ़री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی का क़ौल ही मन्क़ूल है बल्कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन अ़ब्दुल मलिक बिन **अ़ब्दुल्लाह** जुवैनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने इस पर इज्माअ़ ज़िक्र किया है और गोया कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जुब्बाई की मुख़ा-लफ़त को कोई अहम्मिय्यत न दी बा वुजूद इस के कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने **अल जवाहिर** में जुब्बाई ही के ह़वाले से बयान फ़रमाया कि सग़ीरा गुनाहों से तौबा उस वक़्त वाजिब है जब उन पर हमेशगी इख़्तियार की जाए।

मेरे मज़्कूरा कलाम कि ''ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जुब्बाई की मुख़ा-लफ़त को उस के ज़ईफ़ बल्कि बे अस्ल होने की वज्ह से कोई अहम्मिय्यत न दी''


www.dawateislami.net

से ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) का सग़ीरा गुनाहों के मुआ़-मले में इज्माए़ उम्मत के दा'वे को मह़ल्ले नज़र क़रार देना ज़ाइल हो गया (इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى अपने मौक़िफ़ पर येह दलील देते हैं कि) मो'तज़िला कहते हैं कि कबीरा गुनाहों का इरतिकाब करने से इज्तिनाब किया जाए तो सग़ीरा गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं और उन्हों ने सग़ीरा से तौबा के वाजिब होने में इख़्तिलाफ़ किया।

कबीरा गुनाहों से इज्तिनाब का सग़ीरा गुनाहों को मिटा देना सग़ीरा से तौबा के वाजिब होने पर इज्माअ़ से मानेअ़ नहीं क्यूं कि मिटाना छुपाने से ज़ियादा नहीं होता, लिहाज़ा जब उसे छुपा दिया जाए तो उम्मीद है कि उस का असर मिट जाएगा। येह मुआ़-मला कभी वाक़ेअ़ होता है और कभी नहीं होता क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर कोई चीज़ वाजिब नहीं फिर भी इस से तौबा करना वाजिब है ताकि इस के करने वाले से ना फ़रमानी और उस सरकशी का ऐ़ब ज़ाइल हो जाए जिस का इस ने इरतिकाब किया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी कर के उस से मुक़ाबला किया।

और मेरी मज़्कूरा तक़रीर और मज़्कूरा इज्माअ़ से ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल ह़सन तक़िय्युद्दीन अ़ली बिन अ़ब्दुल काफ़ी सुबकी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى का येह क़ौल भी ज़ाइल हो गया कि बहर ह़ाल सग़ीरा गुनाहों के मु-तअ़ल्लिक़ कहा जा सकता है कि येह नमाज़, कबीरा गुनाहों से इज्तिनाब और दीगर नेकियों से मिट जाते हैं तो इन से (फ़क़त़) तौबा ही वाजिबुल ऐ़न नहीं, बल्कि या तो (मुत़्लक़न) तौबा करेगा या कोई नेकी करेगा जो उसे मिटा दे या उस को मिटा देने वाली नेकी करने के बा'द तौबा करेगा या फिर फ़िलफ़ौर तौबा करेगा और येही ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अश्अ़री عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى का क़ौल है।

मज़्कूरा वाज़ेह़ तरदीद से इख़्तिलाफ़ करते हुए इन के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ताजुद्दीन सुबकी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया कि हर गुनाह से फ़ौरन तौबा करना वाजिबुल ऐ़न है, हां ! बिलफ़र्ज़ अगर सग़ीरा से तौबा न की थी फिर कोई ऐसा काम किया जो गुनाह मिटाने वाला था तो वोह दोनों सग़ीरा गुनाहों या'नी गुनाह और ताख़ीरे तौबा को मिटा देगा।

## तक्फ़ीर से मुराद :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि **तक्फ़ीर** पर्दा को कहते हैं पस नमाज़ की मिस्ल नेकी का गुनाहों को मिटाने का मा'ना येह है कि उस नेकी का सवाब बड़े गुनाह की सज़ा को (अपने दामन में) छुपा लेता है। चुनान्चे, वोह उस सज़ा को ढांप लेता और ब ए'तिबारे कसरत उस पर ग़ालिब आ जाता है और बाक़ी रहा येह कि येह सज़ा को


www.dawateislami.net

बिल्कुल मिटा देता है तो येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत पर है। अपनी इस तक़्रीर के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने येह भी फ़रमाया कि क़बूलिय्यते तौबा पर क़त़्ई तौ़र पर हुक्म न लगाना मज़्हबे मुख़ालिफ़ीन के बर ख़िलाफ़ है।

**सुवाल :** जब तुम क़बूलिय्यते तौबा का क़त़्ई हुक्म नहीं लगाते और तौबा सज़ा को भी ज़ाइल नहीं करती तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान को किस मा'ना पर मह़मूल करोगे ?

اِنۡ تَجۡتَنِبُوۡا كَبَآئِرَ مَا تُنۡهَوۡنَ عَنۡهُ نُكَفِّرۡ عَنۡكُمۡ سَيِّاٰتِكُمۡ (پ۵، النساء:۳۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** अगर बचते रहो कबीरा गुनाहों से जिन की तुम्हें मुमा-न-अ़त है तो तुम्हारे और गुनाह हम बख़्श देंगे।

नीज़ दर्जे ज़ैल फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और इस जैसी दीगर अह़ादीसे मुबा-रका को किस मा'ना पर मह़मूल करोगे ?

﴾1﴿...... पांच नमाज़ें इन के दरमियान वाले (सग़ीरा) गुनाहों का कफ़्फ़ारा हैं।[1]

﴾2﴿...... एक जुमुआ़ दूसरे जुमुआ़ के दरमियान के (सग़ीरा) गुनाहों का कफ़्फ़ारा है।[2]

﴾3﴿...... अ़-रफ़ा के दिन का रोज़ा दो साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है।[3]

﴾4﴿...... आ़शूरा के दिन का रोज़ा एक साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है।[4]

﴾5﴿...... बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक रात के बुख़ार से मोमिन की तमाम ख़त़ाएं (सग़ीरा गुनाह) मिटा देता है।[5]

**जवाब :** गुनाहों के इरतिकाब पर फ़ौरन तौबा करना वाजिब है, पस तमाम वाजिबात की त़रह़ तौबा करना भी वाजिब है और दर ह़क़ीक़त येह एक इ़बादत है जिस पर सवाब का वा'दा किया गया है। रहा सज़ा का ज़ाइल करना तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है और वोह ज़ात पाक है जिस से बेहतर उम्मीद की जाती और अच्छा सुवाल किया जाता है।

मो'तज़िला कहते हैं कि कबीरा गुनाहों से इज्तिनाब करने से सग़ीरा मुआ़फ़ हो जाते हैं और उन्हों ने अ़क़्ली तौ़र पर इस के वाजिब होने का दा'वा किया और उन पर इल्ज़ाम आता है कि जब येह नेकियां किसी गुनाह को नहीं मिटातीं इस लिये कि सिर्फ़ कबीरा गुनाहों से

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ، باب الصلوات الخمس......الخ، الحدیث: ۵۵۱، ص۴۲۰۔

2 ......سنن ابن ماجه، ابواب اقامة الصلوات، باب ماجاء فی فضل الجمعة، الحدیث: ۱۰۸۶، ص۲۵۴۰۔

3 ......السنن الکبری للنسائی، کتاب الصیام، باب صوم یوم عرفة......الخ، الحدیث: ۲۸۰۰، ج۲، ص۱۵۱۔

4 ......السنن الکبری للنسائی، کتاب الصیام، باب صوم یوم عرفة......الخ، الحدیث: ۲۸۰۰، ج۲، ص۱۵۱۔

5 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب المرض والکفارات، الحدیث: ۲۸، ج۴، ص۲۳۲۔



www.dawateislami.net

इज्तिनाब करना ही गुनाह मिटा देता है तो अ़-रफ़ा वग़ैरा के रोजे़ की मशक़्क़त उठाने की क्या ज़रूरत है ? हां ! बिला शुबा येह नेकियां हुक़ूक़ुल इबाद को नहीं मिटातीं बल्कि बन्दों को राज़ी करना ज़रूरी है और हमारे उसूल के मुताबिक़ अ़क्लन कोई गुनाह दूसरे गुनाह को नहीं मिटा सकता, नीज़ शरीअ़त का हुक्म इन मुब्हम अल्फ़ाज़ में वारिद है और इन की तावील का इ़ल्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के पास है ।

हज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के शागिर्द और उन की किताब "**अल इर्शादु फ़िल कलाम**" के शारेह़ हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम अन्सारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : "येह एह़तिमाल हो सकता है कि भूल जाने वाले सग़ीरा गुनाह मिटा दिये जाएं अगर्चे वोह किसी दूसरे के ह़क़ के साथ मुअ़ल्लक़ हों, क्यूं कि उन से उ़ज़्र ख़्वाही मुश्किल है और उस के लिये उन को ज़ाहिर करना भी मुशकिल है और "इसी में से एक नेकियों में कमी करना है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही इस कमी को पूरा फ़रमा सकता है" और इस्तिग़फ़ार के साथ कस्रते नवाफ़िल भी इस सग़ीरा को मिटा सकती है ।"

हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र-कशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़्कूरा कलाम में इस के लुग़वी मा'ना का लिहाज़ रखा गया है, इस लिये कि मिटाना छुपाने से ज़ियादा नहीं होता लेकिन हम कहते हैं कि जब वोह छुप गया तो मुआ़फ़ हो गया और तौबा के वाजिब होने पर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इज्माअ़ भी इस के मुनाफ़ी नहीं और हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम अन्सारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की तफ़्सील तस्लीम नहीं की जा सकती बल्कि कबीरा गुनाहों से इज्तिनाब तमाम सग़ीरा गुनाहों को मिटा देता है जैसा कि इस पर अह़ादीसे मुबा-रका दलालत करती हैं । जब कि मज़्कूरा तख़्सीस पर कोई दलील नहीं, हां ! जिस में बन्दे का ह़क़ हो मुम्किना ह़द तक इस का मुआ़फ़ कराना ज़रूरी है और तख़्सीस की मूजिब दलील (फ़क़त़) इस सूरत की ताईद करती है और ह़क़ येह है कि हर गुनाह से फ़ौरन तौबा करना वाजिबुल ऐ़न है । हां ! अगर सग़ीरा गुनाह से तौबा न की थी फिर इस गुनाह को मिटाने वाले काम किये तो इस से वोह दोनों गुनाह या'नी सग़ीरा और ताख़ीरे तौबा मिट जाएंगे । हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सलाह़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने फ़तावा में फ़रमाते हैं कि जब सग़ीरा गुनाह न पाया जाए तो नमाज़ वग़ैरा से बा'ज़ कबीरा गुनाह भी मिटा दिये जाते हैं ।

## क़बूलिय्यते तौबा क़त़ई है या ज़न्नी ?

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इस में इख़्तिलाफ़ है कि क्या तौबा की क़बूलिय्यत क़त़ई है या ज़न्नी ?



www.dawateislami.net

सहीह़ वोही क़ौल है जो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़-करिय्या यह़्या बिन शरफ़ न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی वग़ैरा ने इर्शाद फ़रमाया है कि इस्लाम लाने की वज्ह से काफ़िर की तौबा क़त़ई त़ौर पर मक़्बूल होती है और दूसरे गुनाहों की तौबा का मक़्बूल होना इस की शराइत़ के साथ भी ज़न्नी है। लेकिन हमारे मु-तक़द्दिमीन शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के एक गुरौह का इस क़ौल से इख़्तिलाफ़ है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि जब काफ़िर मुसल्मान हो जाए तो उस का इस्लाम लाना कुफ़्र से तौबा नहीं बल्कि इस की तौबा कुफ़्र पर नदामत से होगी और कुफ़्र पर नदामत के बिग़ैर उस का ईमान लाना मु-तसव्वर ही नहीं हो सकता बल्कि ईमान लाते वक़्त कुफ़्र पर नदामत ज़रूरी है। फिर बिल इज्माअ़ कुफ़्र का गुनाह ईमान लाने और कुफ़्र पर नदामत के साथ साक़ित़ हो जाएगा और क़बूलिय्यते तौबा इस ह़द तक तो क़त़ई है। अलबत्ता ! इस के इ़लावा दीगर गुनाहों से तौबा की क़बूलिय्यत ज़न्नी है यक़ीनी नहीं और तह़क़ीक़ उम्मत का इस पर इज्माअ़ है कि काफ़िर जब मुसल्मान हो जाए और अपने कुफ़्र से तौबा कर ले तो उस की तौबा सह़ीह़ है अगर्चे वोह मुसल्सल दूसरे गुनाहों का इरतिकाब करता रहे।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र-कशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि येह इज्माअ़ कुफ़्र के मु-तअ़ल्लिक़ है लेकिन कुफ़्र के इ़लावा दीगर गुनाह ख़ास त़ौर पर तौबा से ही मुआ़फ़ होंगे। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने अपनी त़वील सनद से ज़िक्र फ़रमाया और रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आ़लीशान "अगर उस ने इस्लाम में अच्छे काम किये तो उस से पहले और बा'द वाले आ'माल का मुआ-ख़ज़ा नहीं होगा और अगर उस ने इस्लाम में बुरे काम किये तो उस से पहले और बा'द वाले आ'माल का भी मुआ-ख़ज़ा होगा।"[(1)] से इस्तिदलाल करते हुए फ़रमाया : "पस अगर इस्लाम तमाम गुनाहों को मिटा देता तो मुसल्मान होने के बा'द किसी का मुआ-ख़ज़ा न होता।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू बक्र अह़मद बिन हुसैन बैहक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی **"शु-अ़बुल ईमान"** में फ़रमाते हैं कि इस के मु-तअ़ल्लिक़ कई अह़ादीसे मुबा-रका आई हैं कि हुदूद गुनाहों का कफ़्फ़ारा होती हैं मगर इन का भी कफ़्फ़ारा होना उस वक़्त है जब वोह तौबा कर ले। चुनान्चे, इस की दलील येह ह़दीसे पाक है कि जब एक चोर का हाथ काटा गया तो हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का की बारगाह में तौबा कर।"[(2)]

1 ......صحيح البخاری، كتاب استتابة المرتدين، باب اثم من اشرك بالله......الخ، الحديث: ۶۹۲۱، ص۵۷۷، بتغير۔

2 ......شعب الايمان، باب فی معالجة كل ذنب بالتوبة، الحديث: ۷۰۶۲، ج۵، ص۳۹۴۔



www.dawateislami.net

**अरौज़ा** और इस की अस्ल में शैख़ैन رَحمَۃُاللہِ تعَالٰی عَلَیْہِمَا से मन्कूल येह क़ौल भी इस की मुवा–फ़क़त करता है कि किसी हुरमत वाली जान को क़त्ल करने का तअ़ल्लुक़ आख़िरत में अ़ज़ाब के इलावा दुन्या में क़िसास, दियत और कफ़्फ़ारे[1] से भी है, लेकिन मज़्कूरा क़ौल से येह ज़ाहिर होता है कि आख़िरत में सज़ा बाक़ी रहेगी अगर्चे उस से क़िसास या दियत पूरी कर ली जाए लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम न–ववी عَلَیْہِ رَحمَۃُاللہِ الْقَوِی ने **शर्हे मुस्लिम** और अपने फ़तावा में तसरीह़ की है कि दियत या क़िसास वग़ैरा पूरा पूरा अदा कर देना, गुनाह और आख़िरत में मुता–लबा साक़ित़ कर देगा।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र–कशी عَلَیْہِ رَحمَۃُاللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं **:** "इस का तक़ाज़ा येह है कि इसे तौबा की ह़ाजत नहीं और ह़क़ के ज़ियादा क़रीब येह है कि यहां तफ़्सील की जाए कि वोह शख़्स जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की पैरवी करते हुए क़िसास वग़ैरा के लिये अपने आप को सिपुर्द कर दिया तो येह तौबा है और वोह शख़्स ज़बर दस्ती पकड़ कर लाया गया तो येह तौबा नहीं।"

इस में क़ाबिले तवज्जोह पहलू येह है कि जब उस से क़िसास वग़ैरा के ज़रीए़ पूरा पूरा बदला ले लिया जाए तो वोह बन्दे के ह़क़ से बरी हो जाएगा और शर्हे मुस्लिम और फ़तावा न–ववी का कलाम इसी पर मह़मूल किया जाएगा। जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीसे पाक है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया **:** "जो इन में से किसी बुराई में मुब्तला हो गया फिर उस पर सज़ा क़ाइम कर दी गई तो येही उस का कफ़्फ़ारा है।"[2]

अलबत्ता ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ बाक़ी रहेगा और जब तौबा करेगा तो वोह साक़ित़ हो जाएगा वरना नहीं और **अरौज़ा** और इस की अस्ल का कलाम इसी पर मह़मूल किया जाएगा कि जब एक चोर का हाथ काटा गया तो सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे फ़रमाया **:** "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर।"[3]

---

1 ...... **क़िसास :** फ़ाइल (या'नी ज़ालिम) के साथ वैसा ही सुलूक करना जैसा उस ने (दूसरे के साथ) किया म–सलन हाथ काटा तो उस का भी हाथ ही काटा जाए। (अत्ता'रीफ़ात, स. 124) **दियत :** उस माल को कहते हैं जो नफ़्स (जान) के बदले में लाज़िम होता है। (बहारे शरीअ़त, जि. 3, हिस्सा : 18, स. 830) **कफ़्फ़ारा :** जिस से गुनाह मुआफ़ हों जैसे स–दक़ा करना रोज़ा वग़ैरा रखना। (القاموس الفقھی،ص۳۲۱) जब कि **क़त्ल** का कफ़्फ़ारा एक मुसल्मान गुलाम या लौंडी का आज़ाद करना है और येह गुलाम या लौंडी ख़ुद क़ातिल अपने माल से आज़ाद करे इस का बोझ वारिसों पर न होगा। ख़याल रहे कि अगर गुलाम न मिले या न मिल सके तो क़ातिल इस के इवज़ दो माह के लगातार रोज़े रखे। (तफ़्सीरे नईमी, सू–रतुन्निसाअ तह़्तल आयह : 92, जि. 5, स. 303)

2 ......صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار،باب وفود الانصار......الخ،الحدیث :۳۸۹۲،ص۳۱۶۔

3 ......شعب الایمان للبیھقی، باب فی معالجۃ کل ذنب بالتوبۃ، الحدیث :۷۰۶۲،ج۵،ص۳۹۴۔



www.dawateislami.net

मज़्कूरा त़रीक़े से मु-तआ़रिज़ (या'नी बाहम मुख़ालिफ़) अह़ादीसे मुबा-रका और अक़्वाले फ़ु-क़हा को इकठ्ठा किया जा सकता है अगर्चे मैं ने किसी को ऐसी बात ज़िक्र करते हुए नहीं पाया।

## तौबा की अक़्साम :

जान लीजिये ! गुनाह को मिटाने वाली तौबा की दो अक़्साम हैं :

(1) एक वोह जिस से बन्दे का ह़क़ मु-तअ़ल्लिक़ नहीं होता और (2) दूसरी वोह जिस से बन्दे का ह़क़ मु-तअ़ल्लिक़ होता है।

## पहली क़िस्म :

इस की मिसाल अजनबी औ़रत से शर्मगाह के इ़लावा मक़ाम में वत़ी करना और शराब पीना है। इस क़िस्म में तौबा की शराइत़ या अरकान में इख़्तिलाफ़ है और रुज्ह़ान व मैलान इस त़रफ़ है कि इस की ह़क़ीक़त में किसी को कोई इख़्तिलाफ़ नहीं क्यूं कि जिन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़्दीक तौबा से मुराद इस का लुग़वी मा'ना या'नी रुजूअ़ करना है इन्हों ने शराइत़ मुक़र्रर कीं और जिन्हों ने इस से शर-ई मा'ना मुराद लिया उन के नज़्दीक इस के तीन अरकान हैं।

बा'ज़ कहते हैं : "येह उसूलियों का मौक़िफ़ है।" अलबत्ता ! ह़दीसे पाक की रोशनी में तौबा सिर्फ़ नदामत का नाम है। चुनान्चे, मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : "नदामत ही तौबा है।"[1]

## नदामत का बयान

गुनाह को फ़ौरन छोड़ देना और उस की त़रफ़ न लौटने का अ़ज़्म करना नदामत का स-मरा है, लेकिन येह दोनों इस के लिये शर्त़ की ह़ैसिय्यत नहीं रखते, इन के स-म-रए नदामत होने की दलील येह है कि इन दोनों के बिग़ैर नदामत का पाया जाना मुह़ाल है, अ़न्क़रीब आने वाली दलील के सबब कि नदामत फ़क़त़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये होना ज़रूरी है और जब मुआ़-मला यूं है तो येह दोनों को मुस्तल्ज़िम है।

पहले (या'नी तौबा से लुग़वी मा'ना मुराद लेने वाले) गुरौह ने इस का जवाब येह दिया कि ह़दीसे पाक में नदामत का ख़ा़स त़ौर पर ज़िक्र करने की वज्ह येह है कि येह इस के बड़े

1 ......سنن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب ذكر التوبة، الحديث: ۴۲۵۲، ص۲۷۳۵۔



www.dawateislami.net

अरकान में से है जैसे शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ह़ज अ़-रफ़ा का नाम है।''(1)

## नदामत की शराइत़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ताजुद्दीन सुबकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने तौबा की नदामत के साथ तफ़्सीर बयान करते हुए फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام और उ़-लमाए उसूल के दोनों त़रीक़ों के दरमियान तत़्बीक़ की फिर फ़रमाया कि नदामत इन उमूर के बिग़ैर मु-तह़क़्क़क़ नहीं होती जिन की ता'दाद फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने तीन बल्कि पांच बल्कि इस से भी ज़ियादा बताई है। इन उमूर की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

## पहली शर्त़ : गुज़श्ता गुनाह पर नादिम होना :

गुज़श्ता गुनाह पर नादिम होना ज़रूरी है और इसे नदामत तब शुमार किया जाएगा जब येह हुक़ूक़े इलाही की रिआ़यत न करने और गुनाह में पड़ने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या और इस के हुक़ूक़ की रिआ़यत न करने पर अफ़्सोस करते हुए हो। पस अगर किसी दुन्यवी वज्ह से नादिम हो म-सलन आ़र या माल के ज़ियाअ़, बदन की थकावट या अपने ही बेटे को क़त्ल करने की वज्ह से नादिम हो तो उस की ऐसी नदामत का कोई ए'तिबार नहीं जैसा कि हमारे उ़-लमाए उसूल ने ज़िक्र किया और हमारे फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का कलाम इस पर दलील है और उन्हों ने इस की सराह़त इस वज्ह से न की, कि तौबा एक इ़बादत है और इ़बादत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के लिये होती है, लिहाज़ा अगर तौबा किसी दूसरी ग़रज़ के लिये हो तो वोह तौबा शुमार न होगी। अगर्चे एक (ज़ईफ़) क़ौल येह भी है कि तौबा की ख़ुसूसिय्यात में से एक ख़ुसूसिय्यत येह है कि इस के बात़िनी मुआ़-मला होने की वज्ह से शैत़ान को इस पर कोई दख़्ल नहीं, पस इस की क़बूलिय्यत के लिये इख़्लास की भी ह़ाजत नहीं और न ही ख़ुद पसन्दी व रियाकारी को इस में कोई दख़्ल है। नीज़ मुख़ालिफ़ीन के लालच को भी इस में कोई दख़्ल नहीं।

## भूले हुए गुनाह से तौबा :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू नस्र क़ुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى अपने वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَاكِم के ह़वाले से ज़िक्र फ़रमाते हैं कि तौबा में शर्त़ है कि वोह गुज़श्ता लग़्ज़िश याद कर के उस पर नादिम हो और अगर उस ने पहले कभी कोई

1 ......جامع ترمذی، ابواب الحج، باب ما جاء فی من ادرک الامام بجمع فقد ادرک الحج، الحدیث : ۸۸۹،ص۱۷۳۵ ـ



www.dawateislami.net

गुनाह किया था लेकिन उसे भूल गया फिर तमाम गुनाहों से तौबा की और दोबारा गुनाह न करने का पुख़्ता इरादा किया तो उन गुनाहों से तौबा नहीं होगी जिन को वोह भूल चुका है और जब तक भूला रहेगा उस वक़्त तक भूले हुए गुनाह से तौबा का मुत़ा-लबा भी नहीं होगा लेकिन जब वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलेगा तो उस से उस लग़्ज़िश के मु-तअ़ल्लिक़ बाज़पुर्स होगी और येह इसी त़रह़ है कि अगर किसी पर दूसरे का क़र्ज़ था और वोह भूल गया या अदा करने पर क़ादिर न था तो इस ह़ालत में भूलने या तंगदस्ती की वज्ह से उस से मुत़ा-लबा नहीं लेकिन जब वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश होगा तो उस से उस क़र्ज़ के मु-तअ़ल्लिक़ पूछगछ की जाएगी। जब कि हमारे नज़्दीक हर गुनाह से अ़ला-ह़दा अ़ला-ह़दा तौबा करना मो'तबर है लेकिन अगर तमाम गुनाहों से उन की तफ़्सील ज़िक्र किये बिग़ैर तौबा करे तो उस की तौबा सह़ीह़ नहीं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र-कशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि येह हुक्म ज़ाहिर है क्यूं कि तौबा नदामत का नाम है और येह उसी वक़्त साबित होती है जब कि वोह गुनाह याद हो यहां तक कि उस पर नादिम होना मु-तसव्वर हो सके और ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी अबू बक्र رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर गुनाह की तफ़्सील याद न हो तो यूं कहे : "अगर मुझ से ऐसा गुनाह हुवा हो जिसे मैं नहीं जानता तो मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उस से तौबा करता हूं।" शायद ! इन्हों ने येह उस शख़्स के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाया जिसे अपने गुनाह मा'लूम तो हों लेकिन उन की तफ़्सील याद न हो और जिसे अपना कोई गुनाह याद ही न हो तो जिस चीज़ का वुजूद ही न हो उस पर नदामत मुम्किन नहीं और अगर उसे अपने गुनाह मा'लूम हों लेकिन याद दाश्त में तअ़य्युन न हो तो तमाम गुनाहों के इरतिकाब पर (बिग़ैर तफ़्सील बयान किये) नदामत की जा सकती है और फिर गुनाह की त़रफ़ बिल्कुल न लौटने का अ़ज़्म कर ले।

## गुनाह के इ़ल्म या अ़-दमे इ़ल्म पर तौबा की सूरत :

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी अबू बक्र رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की इबारत का ह़ासिल येह है कि अगर कोई शख़्स जो किसी एक या बहुत से गुनाहों में मुब्तला है और उन्हें जानता है या उसे इज्माली या तफ़्सीली त़ौर पर याद है तो तौबा करते हुए कहे कि जब भी मुझ से कोई ऐसा गुनाह सरज़द हुवा हो कि जिसे मैं जानता नहीं तो मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उस से तौबा करता हूं और उस की सज़ा से मग़्फ़िरत त़लब करे और जिसे वोह नहीं जानता या जानता तो है मगर गुनाह नहीं समझता या उस के दिल में उस के गुनाह होने का कभी खटका न हुवा तो उन (गुनाहों) से तौबा वाजिब नहीं बल्कि हमारे बयान कर्दा त़रीक़े के मुत़ाबिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इज्माली त़ौर



www.dawateislami.net

पर गुनाहों की मुआ़फ़ी त़लब करे और अगर उसे अपने गुनाह याद हों तो बा'ज़ से तौबा करना सहीह़ है और अगर तफ़्सीली त़ौर पर उसे मा'लूम हों तो तफ़्सीली त़ौर पर अ़ला-ह़दा अ़ला-ह़दा तौबा लाज़िम है और एक ही दफ़्आ़ तमाम गुनाहों से तौबा काफ़ी नहीं अलबत्ता ! ना मा'लूम गुनाहों से तौबा का मुआ़-मला इस के बर अ़क्स है ।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शैख़ इ़ज़्ज़ुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं कि मुम्किना ह़द तक गुज़श्ता गुनाहों को याद करे और जिन्हें याद करना मुश्किल हो उस पर उन से तौबा भी लाज़िम नहीं जिन का वोह ए'तिराफ़ न करे ।

## दूसरी शर्त़ : दोबारा न करने का अ़ज़्म करना :

येह पुख़्ता इरादा कर ले कि मुस्तक़्बिल में इस या इस जैसे किसी गुनाह की त़रफ़ न लौटेगा । इसे उस शख़्स के ह़क़ में शर्त़ ठहराया जा सकता है जो गुज़श्ता गुनाह की मिस्ल पर क़ुदरत रखता हो । जो शख़्स ज़िना के बा'द मजबूब हो (या'नी उस का आलए तनासुल काट दिया) गया या तोहमत लगाने वग़ैरा की वज्ह से उस की ज़बान काट दी गई तो उन के ह़क़ में भी येह शर्त़ है कि वोह इस गुनाह के छोड़ने का अ़ज़्मे मुसम्मम कर लें कि अगर दोबारा इन गुनाहों पर क़ुदरत ह़ासिल हो गई तब भी गुनाह न करेंगे । इस से मा'लूम हुवा कि दोबारा गुनाह करने से आ़जिज़ शख़्स की तौबा भी सहीह़ होती है और इस में इब्ने जुब्बाई मो'तज़िली के इ़लावा किसी ने इख़्तिलाफ़ नहीं किया इस का क़ौल है कि ऐसे शख़्स की तौबा सहीह़ नहीं क्यूं कि वोह गुनाह छोड़ने पर मजबूर है । इस का वोही जवाब दिया गया जो आलए तनासुल कटे हुए शख़्स के मु-तअ़ल्लिक़ बयान हो चुका है और येह क़ौल ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की किताब "**अल इर्शादु फ़िल कलाम**" की शर्ह़ में मज़्कूर क़ौल के मुनाफ़ी भी नहीं कि साबिक़ा गुनाह की मिस्ल पर क़ुदरत रखने वाले का इसे छोड़ने का अ़ज़्म करना तो सहीह़ है मगर मजबूब का येह अ़ज़्म करना सहीह़ नहीं कि वोह ज़िना नहीं करेगा बल्कि वोह इस त़रह़ अ़ज़्म करे कि अगर उस का आलए तनासुल लौटा दिया गया तब भी ज़िना न करेगा ।

## चन्द गुनाहों से तौबा का हुक्म :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق से नक़्ल किया कि "एक ही गुनाह की मिस्ल पर इसरार के बा वुजूद उस एक गुनाह से तौबा करना सहीह़ है ह़त्ता कि एक औ़रत से ज़िना करने के बा'द इस से तौबा सहीह़ है अगर्चे उस जैसी दूसरी औ़रत से ज़िना करने पर क़ाइम रहे और अगर एक औ़रत से दो मर्तबा



www.dawateislami.net

ज़िना किया तो बा वुजूद इसरार के एक बार से तौबा दुरुस्त है।" मगर हमारे शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام इस का इन्कार करते हैं और फ़रमाते हैं कि तौबा के सह़ीह़ होने की शर्त़ येह है कि उस की मिस्ल का इरतिकाब न करने का भी अ़ज़्म करे और उस की मिस्ल पर इसरार के साथ तौबा करना मुह़ाल है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़लीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : "एक कबीरा गुनाह से तौबा करना लेकिन उस की जिन्स के इ़लावा किसी दूसरे से तौबा न करना भी सह़ीह़ है।" मज़्कूरा क़ौल तक़ाज़ा करता है कि जब दूसरा कबीरा गुनाह इसी की जिन्स से हो तो उस एक से तौबा सह़ीह़ नहीं। ह़ज़रते सय्यिदुना उस्ताज़ अबू बक्र رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस की तसरीह़ की लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना उस्ताज़ अबू इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق ने मुख़ा-लफ़त की और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की किताब "**अल इर्शादु फ़िल कलाम**" के शारेह़ (सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम अन्सारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى) ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ाज़ी ह़ुसैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का एक क़ौल ज़िक्र किया है कि बा'ज़ बुराइयों पर क़ाइम रहने के साथ दूसरी बा'ज़ बुराइयों से तौबा के सह़ीह़ होने में अस्लाफ़े उम्मत में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "तौबा के कई अस्बाब हैं जिन के बिग़ैर तौबा सह़ीह़ नहीं होती फिर इस के येह अस्बाब भी मुख़्तलिफ़ हैं : इन में से एक सबब ज़ज्रो तौबीख़ की कसरत की वज्ह से ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद (के तलफ़ होने का मुआ़-मला) है, पस एक गुनाह से तौबा करने के बा वुजूद उस जैसे दूसरे गुनाह पर बर क़रार रहे तो येह तौबा दुरुस्त नहीं बशर्ते़ कि दोनों के दाई (या'नी दा'वत देने वाले) एक जैसे हों और अगर दोनों गुनाह जिन्स के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ हों जैसे क़त्ल करना और शराब पीना लेकिन दोनों का सबब एक हो तो दोनों एक ही गुनाह की मिस्ल हैं और एक पर क़ाइम रहते हुए दूसरे से तौबा सह़ीह़ नहीं क्यूं कि दोनों का सबब एक है और वोह नदामत है म-सलन तौबा का सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी और उस के अह़कामात की मुख़ा-लफ़त करना है और अगर एक गुनाह में तौबा का दाई बहुत बड़ा अ़ज़ाब व इ़क़ाब है जब कि दूसरे में दाई की कुछ वक़्अ़त नहीं तो सिर्फ़ एक गुनाह से तौबा काफ़ी है।"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को जानने और याद रखने वाला गुनाह पर अ़ज़ाब की वई़दों के डर से किसी तावील के बिग़ैर गुनाह नहीं करता और बिलक़स्द उस से गुनाह का इरतिकाब मु-तसव्वर नहीं होता जब कि उसे मा'लूम है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस से बा ख़बर है। पस अगर उस से कभी गुनाह सरज़द हो भी जाए तो येह ग़-ल-बए शह्वत और



www.dawateislami.net

इस की बसीरत और अ़क़्ल पर सिल की मिस्ल मरज़, तारीकी और पर्दे पड़ जाने का नतीजा है कि वोह गुनाह का इरतिकाब कर बैठता है। फिर अगर उस की ग़फ़्लत ज़ाइल हो जाए और शह्वत ख़त्म हो जाए तो वोह तमाम गुनाहों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर लेता है लेकिन उस के मु-तअ़ल्लिक़ येह तसव्वुर नहीं किया जा सकता कि वोह ऐसी ह़ालत में भी बा'ज़ से नादिम हुवा होगा। चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنَّ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓىٕفٌ مِّنَ الشَّیْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَۚ(۲۰۱) (پ۹،الاعراف:۲۰۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक वोह जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैत़ानी ख़याल की ठेस लगती है होशियार हो जाते हैं उसी वक़्त उन की आंखें खुल जाती हैं।

**मज़ीद** फ़रमाते हैं : अगर उस का ईमान ए'तिक़ादी हो तो ग़-ल-बए शह्वत के वक़्त उस से बा'ज़ गुनाहों से तौबा करना मु-तसव्वर हो सकता है और ख़ारिजिय्यों में से जो येह कहते हैं कि हर गुनाह कुफ़्र है। शायद ! उन्हों ने उन बातों को पेशे नज़र रखा हो जो हम ने ज़िक्र की हैं लेकिन वोह उस बह़्स का मुकम्मल त़ौर पर इह़ात़ा न कर सके। ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का कलाम अपने इख़्तिताम को पहुंचा।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं कि अहले सुन्नत व जमाअ़त का मश्हूर मज़हब येह है कि बा'ज़ गुनाहों पर इसरार के साथ बा'ज़ से तौबा सह़ीह़ है और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का ज़िक्र कर्दा कलाम उन की मियाना रवी पर दलालत करता है।

## तीसरी शर्त़ : ह़ालते गुनाह में ही उसे तर्क कर देना :

या'नी अगर गुनाह में मुब्तला हो या उस की त़रफ़ लौटने पर मुसिर हो तो उसे फ़ौरन छोड़ दे और इसे शर्त़ क़रार देना ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللهِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) के उस कलाम के ऐन मुत़ाबिक़ है जो उन्हों ने शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से नक़्ल किया है लेकिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इसे ज़िक्र कर्दा शराइत़ के साथ मुक़य्यद नहीं किया।
**ए'तिराज़ :** जुम्हूर ने तो मज़्कूरा शर्त़ बयान नहीं की ?
**जवाब :** जिन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इस शर्त़ को छोड़ दिया उन के पेशे नज़र वोह लोग थे जो न तो गुनाह में मुब्तला हों और न ही इन पर इसरार करने वाले हों, क्यूं कि ऐसे लोगों के ह़क़ में येह शर्त़ लगाने का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता और जिन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इस शर्त़ को ज़िक्र किया उन के पेशे नज़र येही दोनों क़िस्म के लोग थे, पस उन के ह़क़ में फ़ौरी त़ौर पर गुनाह को तर्क कर देने की शर्त़ लगाना क़त़्अ़न ज़रूरी है। क्यूं कि किसी


www.dawateislami.net

ऐसी चीज़ पर ह़क़ीक़ी नदामत का ह़ुसूल ना मुम्किन है जिस में नादिम (या'नी नदामत करने वाला) मुब्तला हो या आयिन्दा करने का पुख़्ता इरादा रखता हो। इस लिये कि साबिक़ा लग़्ज़िश पर ग़मगीन होना नदामत के लवाज़िमात में से है और येह चीज़ उस गुनाह को छोड़ने और आयिन्दा न करने के अ़ज़्म से ही मु-तह़क़्क़क़ हो सकती है।

## चौथी शर्त़ : ज़बान से इस्तिग़्फ़ार करना :

लफ़्ज़ी त़ौर पर (या'नी ज़बान से) इस्तिग़्फ़ार करना। जैसा कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की एक जमाअ़त का क़ौल है और "**अल मत़्लब**" में है : "**वसीत़** के कलाम का मफ़्हूम येह है कि फ़ासिक़ के लिये येह कहना ज़रूरी है कि मैं ने तौबा की। फिर फ़रमाते हैं कि मैं ने इस के इलावा किसी का कोई क़ौल नहीं पाया, हां ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ाज़ी ह़ुसैन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه वग़ैरा का क़ौल है कि ज़ुहूरे गुनाह के वक़्त अपनी ज़बान से ज़ाहिरी व बात़िनी त़ौर पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस्तिग़्फ़ार करे।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی की किताब "**तस्ह़ीह़ुल मिन्हाज**" में है कि **अल मिन्हाज** के कलाम का तक़ाज़ा येह है कि ग़ैर क़ौली गुनाह में ज़बान से इस्तिग़्फ़ार करना मो'तबर नहीं जैसे तोहमत लगाना ह़ालां कि ऐसा नहीं बल्कि इस में भी इस्तिग़्फ़ार मो'तबर है और येही ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुत्त़य्यिब, ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी ह़ुसैन और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मावर्दी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم का मौक़िफ़ है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : "ह़क़ीक़ी इ़ल्म तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास है अलबत्ता ! हमें क़ुरआनो सुन्नत से येह बात मा'लूम होती है कि मज़्कूरा गुनाह अगर्चे बात़िनी है लेकिन ऐसे अल्फ़ाज़ कहना ज़रूरी है जिन से उस का गुनाह पर नादिम होना ज़ाहिर हो या'नी वोह कहे : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने गुनाह पर मग़्फ़िरत त़लब करता हूं, या ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मेरी ख़त़ा मुआ़फ़ फ़रमा, या मैं ने बारगाहे इलाही में अपने गुनाह पर तौबा की।" फिर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस को राजेह़ क़रार दिया मगर इस में ग़ौरो फ़िक्र की ज़रूरत है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने रिफ़्अ़ह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का कलाम इस पर दलालत करता है कि जिन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इसे इस्तिग़्फ़ार से ता'बीर किया उन्हों ने इस से मुराद नदामत ली न कि अल्फ़ाज़ अदा करना। चुनान्चे, फ़रमाते हैं : जान लीजिये ! बात़िन में तौबा वोह है जिस के पीछे ज़ाहिर में भी ऐसी तौबा ह़ासिल हो कि जिस पर गुनाह की बख़्शिश वग़ैरा के अह़काम मुरत्तब किये जा सकें जैसा कि शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते



www.dawateislami.net

हैं : दो उमूर के सबब **हुदूदुल्लाह**, माली तावान और हुकूकुल इबाद बा'ज़ गुनाहों के साथ मु-तअ़ल्लिक़ नहीं होते म-सलन अजनबी औरत को बोसा देना और मुश्त ज़नी करना (या'नी हाथ से मनी ख़ारिज करना) वग़ैरा वग़ैरा और वोह दो उमूर येह हैं (1)...... उस गुनाह पर नदामत और (2)...... आयिन्दा न करने का पुख़्ता अ़ज़्म। इस की एक दूसरी ता'बीर येह भी की जाती है कि साबिक़ा गुनाह पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस्तिग़्फ़ार करे और मुस्तक़्बिल में इस पर इसरार छोड़ दे। चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۠ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۠ۥ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۵﴾ (پ۴، آل عمران:۱۳۵)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह कि जब कोई बे ह़याई या अपनी जानों पर ज़ुल्म करें **अल्लाह** को याद कर के अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी चाहें और गुनाह कौन बख़्शे सिवा **अल्लाह** के और अपने किये पर जानबूझ कर अड़ न जाएं।

हज़रते सय्यिदुना इमाम बन-दनीजी, हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी अबू तय्यिब, हज़रते सय्यिदुना इमाम मावर्दी, हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सब्बाग़, हज़रते सय्यिदुना इमाम ब-ग़वी, हज़रते सय्यिदुना इमाम महा-मली और हज़रते सय्यिदुना इमाम सुलैम राज़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم वग़ैरा का क़ौल भी इसी तरह है। हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने रिफ़्अ़ह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का कलाम ख़त्म हुवा।

मज़्कूरा दूसरी ता'बीर में ग़ौर करने से आप को मा'लूम होगा कि येह मेरे ज़िक्र कर्दा मौक़िफ़ के मु-तअ़ल्लिक़ सरीह़ है इस लिये कि दोनों इबारतों का मफ़्हूम एक ही है और जिन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इस्तिग़्फ़ार का ज़िक्र किया उन की मुराद इस के अल्फ़ाज़ नहीं बल्कि उन्हों ने भी इस से नदामत ही मुराद ली जिस का दीगर ने ए'तिबार किया पस अब इख़्तिलाफ़ बाक़ी न रहा और अब मज़्कूरा अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام में से कोई भी अल्फ़ाज़ के साथ इस्तिग़्फ़ार को शर्त़ क़रार देने का क़ाइल न होगा।

## पांचवीं शर्त़ : तौबा का वक़्ते मो'तबर में ही वाक़ेअ़ होना :

तौबा के वक़्त में तौबा करना ज़रूरी है और वोह गले में दम अटक्ने और मौत के आसार नज़र आने से पहले पहले तक है।

## छटी शर्त़ : ज़ुहूरे अ़लामाते क़ियामत से पहले तौबा करना :

क़ियामत की निशानियों जैसे मग़रिब से तुलूए आफ़्ताब वग़ैरा नज़र आने के बा'द मजबूरन तौबा वाक़ेअ़ न हुई हो।



www.dawateislami.net

बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "जब सूरज मग़रिब से तुलूअ़ हो और कोई शख़्स मजनून हो फिर जुनून से इफ़ाक़ा पा कर तौबा कर ले तो साबिक़ा उ़ज़्र की वज्ह से उस की तौबा सह़ीह़ है।" लेकिन येह क़ौल ज़ईफ़ है।

## सातवीं शर्त़ : मक़ामे गुनाह से जुदा हो जाना :

ज़मख़्शरी ने ज़िक्र किया है कि ना फ़रमानी की जगह से फ़ौरन जुदा हो जाए। येह एक शाज़ क़ौल है। **साह़िबुत्तम्बीह** ने इसे मुस्तह़ब क़रार देते हुए इर्शाद फ़रमाया : ह़ाजी के लिये मस्नून है कि जिस मकान में उस ने अपनी बीवी से जिमाअ़ किया हो उस जगह अपनी बीवी से जुदा हो जाए। इस लिये कि उस का नफ़्स उसे मा'सियत याद दिलाएगा तो हो सकता है वोह उस जगह दोबारा उसी गुनाह में मुब्तला हो जाए जैसा कि हमारे ज़माने में एक शख़्स के मु-तअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है कि वोह अपनी बीवी के साथ दूर दराज़ के मग़रिबी अ़लाक़े से ह़ज करने आया। जब दोनों मुज़्दलिफ़ा पहुंचे तो उस से जिमाअ़ कर बैठा, आयिन्दा साल ह़ज क़ज़ा करने के लिये आया तो फिर इसी जगह अपनी बीवी से दोबारा जिमाअ़ कर बैठा, तीसरे साल फिर आया मगर इस मर्तबा भी उसी जगह इस फ़े'ल का इरतिकाब कर बैठा। जब तंग आया तो चौथी मर्तबा बीवी को ख़ुद से जुदा रखा यहां तक कि दोनों ने ब ह़िफ़ाज़त ह़ज कर लिया।

## आठवीं शर्त़ : बार बार तौबा करना :

तौबा के बा'द जब भी गुनाह याद आए तो उस से तज्दीदे तौबा की जाए जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी अबू बक्र बाक़िल्लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی का ख़याल है, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि अगर उस ने नए सिरे से तौबा न की तो उस ने नया गुनाह किया जिस से तौबा वाजिब है और पहली तौबा सह़ीह़ है क्यूं कि गुज़श्ता इबादत को कोई गुनाह ख़त्म नहीं कर सकता।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन अ़ब्दुल मलिक बिन **अ़ब्दुल्लाह** जुवैनी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : "येह वाजिब नहीं बल्कि मुस्तह़ब है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) अपनी किताब "**तवस्सुत़**" में फ़रमाते हैं : "येह कहा जा सकता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने जिस क़ौल को इख़्तियार किया वोह इस सूरत में तो वाज़ेह़ है कि जब वोह गुनाह याद करे तो उस का दिल उस से नफ़्रत करे लेकिन अगर वोह उस से नफ़्रत न करे बल्कि उसे याद कर के लज़्ज़त ह़ासिल करे तो येह एक नया गुनाह है जिस से तौबा ज़रूरी है और सच्ची तौबा तक़ाज़ा करती है कि गुनाह का मुर-तकिब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या और अफ़्सोस करते हुए



www.dawateislami.net

गुज़श्ता गुनाहों को याद करे और जो शख़्स अहादीसे मुबा-रका और आसारे सहाबा में ग़ौर करेगा वोह इस के कई दलाइल पाएगा।"

गोया इन्हों ने हज़रते सय्यिदुना इमामुल ह-रमैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के क़ौल से येह नतीजा अख़्ज़ किया कि उस के नादिम होने से उस की तौबा सहीह होगी, इस के बा'द जब वोह उसे याद करे तो उस से तवज्जोह हटा दे और उस पर खुश न हो और इस में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं कि उस पर हमेशा नादिम रहना लाज़िम नहीं और एक दूसरी जगह फ़रमाते हैं कि उस पर लाज़िम है कि गुनाह पर इसरार न करे लेकिन उस पर तौबा लाज़िम आने का क़ौल सहीह नहीं। "**अश्शामिल**" में है : "तज्दीदे तौबा के वुजूब का न-ज़रिय्या कोई हैसिय्यत नहीं रखता क्यूं कि जो लोग इस्लाम लाए वोह ज़मानए जाहिलिय्यत के गुनाहों को याद किया करते थे लेकिन उन पर न तो तज्दीदे इस्लाम लाज़िम था और न ही उन्हें इस का हुक्म दिया गया था।"

मज़्कूरा इख़्तिलाफ़ तज्दीदे तौबा वाजिब होने के मु-तअ़ल्लिक़ है जब कि मुस्तहब होने में किसी का कोई इख़्तिलाफ़ नहीं।

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मोमिन अपने गुनाहों को यूं ख़याल करता है गोया वोह पहाड़ के नीचे बैठा है और उसे पहाड़ के गिरने का ख़ौफ़ है और फ़ाजिर अपने गुनाहों को यूं समझता है जैसे उस की नाक के ऊपर से मख्खी उड़ती हुई चली गई।"(1)

हज़रते सय्यिदुना इमामुल ह-रमैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : शायद! हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी बाक़िल्लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی की गुज़श्ता तक़रीर इस बात पर मब्नी है कि तौबा गुनाह की सज़ा को क़त्ई तौर पर ज़ाइल नहीं करती और इस की सिर्फ़ उम्मीद की जा सकती है क्यूं कि येह एक ज़न्नी और ग़ैर यक़ीनी बात है। जब मुआ-मला इस तरह हो तो जब भी वोह इस का तज़्किरा करेगा इस हाल में कि उसे तौबा क़बूल होने और सज़ा ज़ाइल होने का क़त्ई यक़ीन न हो तो लाज़िमी तौर पर दोबारा नादिम होगा ख़ास तौर पर इस हालत में कि जब उसे अपना अन्जाम भी मा'लूम न हो।

## नवीं शर्त : तौबा को बर क़रार रखना :

तौबा करने के बा'द दोबारा गुनाह की तरफ़ न लौटे जैसा कि हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ाज़ी बाक़िल्लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی का ख़याल है, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि अगर तौबा

1 ......صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب التوبة، الحدیث : ۶۳۰۸،ص ۵۳۱، "یطیر" بدلہ "مر"۔



www.dawateislami.net

करने वाला अपनी तौबा तोड़ दे तो जाइज़ है कि उस पर उस के गुनाह लौट आएं क्यूं कि उस ने तौबा को पूरा नहीं किया, लेकिन येह इस की निस्बत बहुत कम गुनहगार होगा जिस ने तौबा को हमेशा के लिये नज़र अन्दाज़ कर दिया हो।

हज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं : तौबा की शराइत़ में से है कि वोह दोबारा गुनाह की त़रफ़ न लौटे अगर दोबारा गुनाह की त़रफ़ पलटा तो पहली तौबा टूट जाएगी और येह शर्त़ फ़ासिक़ के मस्अले में फ़ाएदे से ख़ाली नहीं कि जब उस ने तौबा कर ली और निकाह़ कर लिया फिर फ़िस्क़ की त़रफ़ लौट आया तो ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी बाक़िल्लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی के क़ौल के मुत़ाबिक़ ब वक़्ते निकाह़ फ़िस्क़ वाज़ेह़ होने के सबब निकाह़ का सह़ीह़ न होना वाज़ेह़ हो जाएगा।

## दसवीं शर्त़ : ह़द क़ाइम करने पर क़ुदरत देना :

मुजरिम, ह़ाकिम के पास साबित होने वाली ह़द क़ाइम करने पर क़ुदरत दे। पस उस की तौबा ह़द क़ाइम करने पर क़ुदरत देने पर मौक़ूफ़ होगी, अगर उस पर ह़द क़ाइम करने पर क़ुदरत दी मगर ह़ाकिम या उस के नाइब ने ह़द न लगाई तो येह गुनहगार न होगा बल्कि वोह दोनों गुनहगार होंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सब्बाग़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه (मु-तवफ़्फ़ा 477 हि.) के कलाम का ज़ाहिर मफ़्हूम येह है कि किसी गुनाह का लोगों के दरमियान मश्हूर होना ह़ाकिम के हां साबित होने की त़रह़ है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि अगर लोगों के दरमियान मश्हूर हो जाए कि फ़ुलां शख़्स ने मूजिबे ह़द गुनाह का इरतिकाब किया है लेकिन वोह गुनाह ह़ाकिम के हां साबित न हो सके तो उस की तौबा सह़ीह़ होने के लिये अपने ऊपर ह़द क़ाइम करने की क़ुदरत देना शर्त़ है जब कि उस का अ़र्सा ज़ियादा न गुज़रा हो वरना लम्बा अ़र्सा गुज़रने के बा'द उस की ह़द साक़ित़ होने में इख़्तिलाफ़ है।

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी अबू त़य्यिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ''अगर उस का गुनाह साबित न हो, न ही लोगों में मश्हूर हो तो उस के लिये उसे छुपाना अफ़्ज़ल है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी ह़ुसैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ''उस का ज़ाहिर करना मक्रूहे तन्ज़ीही है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बन-दनीजी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''मुद्दते दराज़ गुज़रने के बा'द ज़ाहिर करने में कोई ह़रज नहीं।'' हम कहते हैं कि त़वील अ़र्सा गुज़रने के बा'द ह़द साक़ित़ हो जाएगी लिहाज़ा ह़द साक़ित़ होने की वज्ह से उस के लिये नफ़ाज़े ह़द पर क़ुदरत देना जाइज़ नहीं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं : ''इस


www.dawateislami.net

में इस क़ौल का एह्तिमाल है कि अगर उस पर कोई गवाही क़ाइम हुई हो न कोई मुत्त़लअ़ हुवा हो तो अब ह़द क़ाइम करने पर क़ुदरत देना जाइज़ नहीं और अगर उस ने उसे ज़ाहिर कर दिया तो उस के ज़ाहिर करने पर वक़्फ़ और यतीम वग़ैरा पर उस की विलायत बात़िल होने के कसीर मफ़ासिद का दरवाज़ा खुल जाएगा और इस की वज्ह से वोह ज़ालिम और ख़ियानत करने वाला बन जाएगा और अगर उसे दिल में छुपाए तो मह़फ़ूज़ रहेगा और इस के लिये इन मफ़ासिद वग़ैरा को ख़त्म करने के लिये उस का ज़ाहिर करना जाइज़ नहीं।''

## ग्यारहवीं शर्त़ : तर्के इबादत के गुनाह का तदारुक करना :

इबादत तर्क करने के गुनाह में मुब्तला हो तो उस को दूर करे म-सलन नमाज़ या रोज़ा छोड़ने पर उस की तौबा का सह़ीह़ होना उन की क़ज़ा पर मौक़ूफ़ है क्यूं कि उस पर फ़ौरन क़ज़ा वाजिब है और तौबा न करने पर फ़ासिक़ हो जाएगा(1)।

## क़ज़ा नमाज़ों की ता'दाद मा'लूम करने का त़रीक़ा :

**हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) फ़रमाते हैं कि अगर उसे क़ज़ा नमाज़ों की ता'दाद मा'लूम न हो तो ग़ौरो ख़ौज़ करे और बालिग़ होने के वक़्त से जितनी नमाज़ों के छोड़ने का यक़ीन हो जाए उसे क़ज़ा कर ले।

क़ुदरत के बा वुजूद ज़कात, कफ़्फ़ारा और नज़राना अदा न करने में उस की तौबा का सह़ीह़ होना मुस्तह़िक़ तक उन चीज़ों के पहुंचाने पर मौक़ूफ़ है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम वासित़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि बनी इसराईल की तौबा अपनी जानों को क़त्ल करने पर मौक़ूफ़ थी जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

فَتُوْبُوْٓا اِلٰى بَارِىٕكُمْ فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْؕ (پ ۱، البقرۃ:۵۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो अपने पैदा करने वाले की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ तो आपस में एक दूसरे को क़त्ल करो।

## आयते मुबा-रका की तफ़्सीर :

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इस की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि बनी इसराईल की तौबा मह़ज़

---

(1)...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 700 पर है : ''बिला उ़ज़्रे शर-ई नमाज़ क़ज़ा कर देना बहुत सख़्त गुनाह है, उस पर फ़र्ज़ है कि उस की क़ज़ा पढ़े और सच्चे दिल से तौबा करे, तौबा या ह़ज्जे मक़्बूल से गुनाहे ताख़ीर मुआ़फ़ हो जाएगा।'' (الدرالمختار، کتاب الصلوٰۃ، باب قضاء الفوائت، ج۲،ص۶۲۶)



www.dawateislami.net

जानों को ख़त्म करना थी जब कि इस उम्मत की तौबा उन से इन्तिहाई सख़्त है कि येह लोग अपनी जानों को उन की हैअत पर बर क़रार रखते हुए उन की ख़्वाहिशात ख़त्म कर दें। बा'ज़ ने इस की तफ़्सीर येह बयान फ़रमाई कि येह हुक्म उस शख़्स के बारे में है जिस ने किसी बोतल में बादाम या मोती तोड़ने का इरादा किया तो येह मुश्किल होने के बा वुजूद उस के लिये आसान है जिस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आसान फ़रमा दे।

## तौबा की दूसरी क़िस्म :

तौबा की इस क़िस्म का तअ़ल्लुक़ हुक़ूक़ुल इबाद से है। इस में भी गुज़श्ता तमाम शराइत़ का पाया जाना ज़रूरी है लेकिन इस में इस शर्त़ का इज़ाफ़ा है कि हुक़ूक़ुल इबाद का साक़ित़ (या'नी अदा) करना भी ज़रूरी है। अगर वोह ह़क़ माली हो और अभी तक इस के पास मौजूद हो तो उसे लौटा दे वरना उस का बदल उस के मालिक या नाइब या उस के मरने के बा'द उस के वारिस को दे जब तक कि उस माल के ह़क़दार ने इसे बरी न किया हो लेकिन उसे बरी करने की ख़बर देना लाज़िम नहीं और अगर उस का वारिस न हो या उस की ख़बर ही न हो तो वोह माली ह़क़ ह़ाकिम के ह़वाले कर दे ताकि वोह उसे बैतुल माल में डाल दे या किसी ऐसे ह़ाकिम के ह़वाले कर दे जिसे रिफ़ाई कामों में माल ख़र्च करने की इजाज़त दी गई हो(1)।

---

❶...... **मौजूदा दौर में हुक़ूक़े मालिया से बरिय्युज़्ज़िम्मा होने की सूरत : दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे "**मक-त-बतुल मदीना**" की मत़बूआ़ 107 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**चन्दे के बारे में सुवाल जवाब**" के सफ़ह़ा 45 पर शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तह़रीर फ़रमाते हैं **: सुवाल :** सूदी रक़म से ग़रीबों की मदद करना या मस्जिद के इस्तिन्जा ख़ाने ता'मीर करवाना कैसा ? क्या सूदी रक़म चन्दे में दी जा सकती है ? **जवाब :** किसी ने **सूद** अगर्चे नेक कामों में ख़र्च करने के लिये लिया ताहम उसे **सूद** लेने का गुनाह होगा। किसी भी नेक काम में **सूद** और माले ह़राम नहीं लगाया जा सकता। बल्कि सूदी माल के मु-तअ़ल्लिक़ हुक्म येह है कि जिस से लिया उसे वापस करें या उस माल को स-दक़ा करें जब कि रिश्वत, चोरी या गुनाहों की उजरत के बारे में हुक्म येह है कि इन्हें भी नेक कामों में ख़र्च नहीं कर सकते बल्कि इन में तो येह ज़रूरी है कि जिस की रक़म है उसे ही वापस लौटाए और वोह न रहे हों तो उस के वु-रसा को दे और वोह भी न मिलें तो फिर स-दक़ा करने का हुक्म है चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं **:** जो माल रिश्वत या तग़न्नी (या'नी गाने) या चोरी से ह़ासिल हुवा उस पर फ़र्ज़ है कि जिस जिस से लिया उन पर वापस कर दे, वोह न रहे हों उन के वु-रसा को दे, पता न चले तो फ़क़ीरों पर तसद्दुक़ करे। ख़रीदो फ़रोख़्त किसी काम में उस माल का लगाना **ह़रामे क़त़ई** है बिग़ैर सूरते मज़्कूरा के कोई त़रीक़ा इस के वबाल से सुबुक दोशी का नहीं येही हुक्म सूद वग़ैरा उ़क़ूदे फ़ासिदा का है फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि यहां जिस से लिया बिल ख़ुसूस उन्हें वापस करना फ़र्ज़ नहीं बल्कि इसे इख़्तियार है कि (जिस से लिया है) उसे वापस दे ख़्वाह इब्तिदाअन तसद्दुक़ (या'नी ख़ैरात)......



www.dawateislami.net

अगर इस के लिये मज़्कूरा त़रीके़ पर अ़मल करना मुश्किल हो तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इ़बादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡوَالِی और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡكَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) फ़रमाते हैं कि वाजिब जान कर वोह माल स-दक़ा कर दे। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡكَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) ने इसे अह़कामे विरासत में शामिल किया है और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इस्नवी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی और दीगर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इस (माल) को स-दक़ा की निय्यत से रिफ़ाई कामों में ख़र्च करने की इजाज़त देने में इसी को अस्ल ठहराया है। अगर वहां पर शराइत़ के मुत़ाबिक़ क़ाज़ी न हो तो अमीन ख़ुद रिफ़ाई कामों में सर्फ़ कर दे और अगर शराइत़ के मुत़ाबिक़ क़ाज़ी तो मौजूद हो मगर उसे रिफ़ाई कामों में इस्ति'माल करने की इजाज़त न हो तो इस की चन्द सूरतें हैं : (1)...... ऐसा माल क़ाज़ी के ह़वाले कर दे ताकि वोह ख़ुद तसर्रुफ़ करे बशर्ते कि वोह रिफ़ाई कामों में माल ख़र्च करने पर अमीन हो, वरना (2)...... क़ाज़ी को इस शर्त़ पर माल दे कि वोह उसे बैतुल माल में शामिल कर दे या (3)...... इस के क़ाइम मक़ाम जो भी उस की शर्त़ हो वहां ख़र्च कर दे। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : "तीसरी तौजीह ज़ईफ़ और पहली दो सह़ीह़ हैं और इन दोनों में ज़ियादा सह़ीह़ पहली है और अगर येह कहा जाए कि इसे पहली दोनों सूरतों के दरमियान इख़्तियार दे दिया जाए तो येह भी अच्छी राय है। मज़ीद फ़रमाते हैं कि मेरे नज़्दीक येही क़ौल राजेह़ है।"

अगर कहा जाए कि जब अमीन और अह्ल क़ाज़ी भी बिग़ैर इजाज़त रिफ़ाई कामों में इस माल को ख़र्च नहीं कर सकता तो फिर किसी और शख़्स को वोह माल कैसे दिया जा सकता है ? तो मा क़ब्ल बह़्स में ग़ौरो फ़िक्र करने से इस क़ौल का फ़साद मा'लूम हो जाएगा और जिस ने ह़ाकिम से कोई ह़राम चीज़ ली जिस के मालिक को वोह नहीं जानता तो एक गुरौहे उ़-लमा के नज़्दीक वोह चीज़ बादशाह को लौटा दे और स-दक़ा न करे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़ासिबी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡكَافِی ने इसी क़ौल को इख़्तियार किया जब कि दूसरे गुरौह के नज़्दीक मालिक की

...... कर दे। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 551) और येह भी याद रखिये कि सूद व रिश्वत वग़ैरा ह़राम माल को नेक कामों में ख़र्च कर के सवाब की उम्मीद रखने के बारे में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن फ़रमाते हैं : उसे या'नी माले ह़राम को ख़ैरात कर के जैसा पाक माल पर सवाब मिलता है उस की उम्मीद रखे तो सख़्त ह़राम है, बल्कि फु-क़हा (رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام) ने कुफ़्र लिखा है। हां वोह जो शर-अ़ ने हुक्म दिया कि ह़क़दार (या'नी जिस का माल है वोह, या वोह न रहा हो तो उस का वारिस और वोह भी) न मिले तो फ़क़ीर पर तसद्दुक़ (ख़ैरात) कर दे इस हुक्म को माना तो इस पर (या'नी हुक्मे शरीअ़त पर अ़मल करने पर) सवाब की उम्मीद कर सकता है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 580)



www.dawateislami.net

त़रफ़ से उस माल को स-दक़ा कर दे जब कि इसे मा'लूम हो कि बादशाह को नहीं लौटाएगा।

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़-करिय्या यह्या बिन शरफ़ न-ववी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : मुख़्तार मज़्हब येह है कि जब इसे मा'लूम हो या ग़ालिब गुमान हो कि ह़ाकिम इसे फ़ुज़ूल व ला या'नी कामों में ख़र्च कर देगा तो इस पर लाज़िम है कि रिफ़ाई कामों जैसे पुल वग़ैरा बनाने में ख़र्च कर दे और अगर इस पर ख़ौफ़ वग़ैरा की वज्ह से ऐसा करना मुश्किल हो तो ह़ाजत मन्दों पर स-दक़ा कर दे और सब से ज़ियादा मोह़ताज कमज़ोर व लाग़र ज़रूरत मन्द हैं और अगर येह गुमान न हो कि वोह फ़ुज़ूल काम में ख़र्च कर देगा तो अगर नुक़्सान न पहुंचे तो उसे ह़ाकिम या उस के नाइब को वापस कर दे वरना फ़लाह़ी कामों में ख़र्च करे और अगर ह़ाजत मन्द है तो अपनी ज़ात पर ख़र्च करे।

## मुख़्तलिफ़ लोगों पर ख़र्च करने का त़रीक़ा :

हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) फ़रमाते हैं : "जहां फ़ु-क़रा के लिये ख़र्च करना जाइज़ हो तो उन पर वुस्अ़त करे। या अपनी ज़ात पर ख़र्च करना जाइज़ हो तो मुम्किना ह़द तक कम ख़र्च करे। या अहलो इ़याल पर ख़र्च करना जाइज़ हो तो मियाना रवी इख़्तियार करे और इस से अमीर को न खिलाए मगर येह कि किसी दीहात में होने की वज्ह से किसी और को न पाए और अगर किसी फ़क़ीर की ज़ाहिरी ह़ालत से मा'लूम हो कि वोह ऐसा शख़्स है कि अगर उस की ह़क़ीक़त जान लेता तो इस से बचता, पस उस का ह़ाल जानने की ख़ात़िर उस के भूका होने तक मुअख़्ख़र कर दे और उसे अपने ह़ाल के मु-तअ़ल्लिक़ बता दे और सिर्फ़ इसी को काफ़ी न समझे कि वोह इस का ह़ाल नहीं जानता और इस के पास न तो किराए की सुवारी है और न ही वोह ख़रीद सकता है अगर्चे वोह मुसाफ़िर ही हो।"

हज़रते सय्यिदुना इमाम मावर्दी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं कि अगर वोह तंगदस्त हो तो उस की ख़ुशह़ाली का इन्तिज़ार किया जाएगा लेकिन उस की तौबा सह़ीह़ होगी।

## वारिस के वारिस का मुस्तह़िक़ होना :

"**अल जवाहिर**" में है कि अगर मुस्तह़िक़ मर गया और एक के बा'द दूसरा वारिस मुस्तह़िक़ बना तो चार वुजूहात की बिना पर सब से आख़िरी वारिस मुस्तह़िक़ होगा : पहली वज्ह : सब वारिसों में से आख़िरी वारिस मुस्तह़िक़ है, इस का आख़िरी होना हर वारिस की मुद्दते उ़म्र ख़त्म होने को साबित करता है और हज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) ने इसे हज़रते सय्यिदुना इमाम इ़बादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی के ह़वाले से


www.dawateislami.net

''**अर्रक्म**'' में नक्ल किया है और चौथी वज्ह : येह है कि अगर साहिबे हक़ ने इस से अपना हक़ मांगा और इस ने इन्कार कर दिया और क़सम उठा ली तो वोह उसी का होगा वरना उस के वु-रसा को मुन्तक़िल कर दिया जाएगा और हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ाज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى ने दा'वा किया है कि इस में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं कि अगर वोह क़सम उठा ले तो हक़ पहले के लिये होगा।

साहिबे **रौज़ा** ने भी पहली वज्ह को तरजीह दी और फ़रमाया कि इन में से राजेह तरीन येही है और हज़रते सय्यिदुना इमाम हन्नाती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى ने भी फ़तवा दिया कि येही इब्तिदाई साहिबे हक़ है और हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ाज़ी हुसैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि येह सहीह है और दूसरी वज्ह येह बयान की, कि येह तमाम वारिसों का होगा। हज़रते सय्यिदुना इमाम इस्नवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि ''**अर्रौज़ा**'' की तरजीह हज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) की नहीं बल्कि उन्हों ने तो येह क़ौल हज़रते सय्यिदुना इमाम हन्नाती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى से नक्ल किया है जिस की इबारत येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दूसरे तमाम वु-रसा के मरने के बा'द उसे वारिस बनाएगा और उस का हक़ क़ियामत में उस की तरफ़ लौटाएगा और ''**अर्रौज़ा**'' में जो अल्फ़ाज़ मज़्कूर हैं इस कैफ़िय्यत का इज़्हार नहीं करते या'नी वोह इस के मुनाफ़ी नहीं कि उन्हें इस पर महमूल किया जाए।

हज़रते सय्यिदुना इमाम नसाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं कि अगर एक के बा'द दूसरा वारिस किसी हक़ की अदाएगी का मुस्तहिक़ हो तो अब अगर साहिबे हक़ अपने हक़ का मुता-लबा कर दे और क़सम उठा ले तो ''**किफ़ायह**'' में है कि साहिबे हक़ का सब से आख़िरी वारिस से मुता-लबा करने में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं। या अगर उस ने क़सम न उठाई तो ''**किफ़ायह**'' में इस की चन्द वुजूह ज़िक्र की गई हैं जिन में सब से ज़ियादा असह्ह वोह वज्ह है जिस की निस्बत हज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) ने हज़रते सय्यिदुना इमाम हन्नाती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى की जानिब की है या'नी वोह पहले वारिस का होगा और दूसरी वज्ह के मुताबिक़ वोह सब वारिसों का होगा, तीसरी के मुताबिक़ सिर्फ़ आख़िरी का होगा और जो उस आख़िरी वारिस से पहले होंगे उन को उस हक़ से रोक कर रखने का सवाब मिलेगा। हज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) फ़रमाते हैं : ''जब सब से आख़िरी वारिस को हक़ दे दिया गया तो वोह सब के गुनाह से ख़ारिज हो जाएगा सिवाए उस गुनाह के जो उस ने टाल मटोल की थी।''



www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना इमाम हन्नाती عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡكَافِى का बक़िय्या कलाम भी येही है लेकिन येह उस क़ौल के बर अक्स है जिस का वहम हज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) के कलाम से होता है कि इस में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं कि अगर वारिस ने उसे बरी कर दिया और अपना पूरा हक़ वुसूल कर लिया तो हक़ साक़ित तो हो जाएगा लेकिन अगर उस ने टाल मटोल कर के ना फ़रमानी की हो तो इस से तौबा करे और जिस पर हक़ है अगर वोह तंगदस्त हो जाए तो निय्यत करे कि कुदरत पाने पर क़र्ज़ अदा कर देगा। हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ाज़ी हुसैन رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيۡه फ़रमाते हैं : ''और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपने गुनाह की मुआफ़ी भी तलब करे या'नी इस्तिग़्फ़ार करे और अगर वोह अदाएगिये हक़ पर कुदरत पाने से पहले मर गया तो फ़ज़्ले इलाही से मग़्फ़िरत की उम्मीद है।''

''**अल ख़ादिम**'' में है कि उन्हों ने अपनी फ़क़ाहत (या'नी इल्मे शरीअत की महारत) के मुताबिक़ जो कुछ कहा है इस में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं जैसा कि हज़रते सय्यिदुना इमामुल ह-रमैन رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيۡه की किताब ''**अल इर्शादु फ़िल कलाम**'' के शारेह हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम अन्सारी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡبَارِى फ़रमाते हैं : ''अगर नफ़्स या माल सिपुर्द करने के दरमियान कोई चीज़ हाइल हो जाए जैसे किसी ज़ालिम का उसे रोक लेना और किसी ऐसे मुआ-मले का पेश आ जाना जो उसे कुदरत से रोक दे तो येह हक़ उस से साक़ित हो जाएगा और उस पर येह अज़्म करना ज़रूरी है कि अगर मुम्किन हुवा तो उस हक़ को हक़दार के सिपुर्द कर दूंगा। मज़ीद फ़रमाते हैं कि इस में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं।'' हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़-करिय्या यहया बिन शरफ़ न-ववी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِى ने इस में इख़्तिलाफ़ करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि अहादीसे सहीहा का ज़ाहिर इस बात का तक़ाज़ा करता है कि ज़ुल्मन ली हुई चीज़ का मुता-लबा करना सहीह है जब कि वोह आजिज़ और तंगदस्त हो बशर्ते कि उस ने इल्तिज़ाम के साथ ना फ़रमानी की हो।

हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र-कशी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِى फ़रमाते हैं कि येह क़ौल महल्ले नज़र है और ''**अरौज़ा**'' में है कि ''अगर किसी ने अपनी जाइज़ ज़रूरत को पूरा करने के लिये क़र्ज़ लिया और उसे किसी ज़ाहिरी सबब या तरीक़े से उस की अदाएगी की उम्मीद भी थी लेकिन मौत तक उस की अदाएगी से आजिज़ रहा या फिर ग़-लती से किसी शै को ज़ाएअ कर दिया और मौत तक उस का तावान अदा करने से आजिज़ रहा तो ज़ाहिर येही है कि आख़िरत में उस से उस हक़ की अदाएगी का मुता-लबा नहीं किया जाएगा बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से उम्मीद है कि वोह साहिबे हक़ को उस का इवज़ अपने पास से अदा फ़रमा देगा और हज़रते



www.dawateislami.net

सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भी इसी जानिब इशारा किया है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सुबकी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی ने भी इसी के मुवाफ़िक़ ज़िक्र किया। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र-कशी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی का **एह़याउल उ़लूम** से नक़्ल कर्दा कलाम भी इसी के मुवाफ़िक़ है और इस की इ़बारत येह है कि "जिस का मक़्सद नरमी और त़-लबे सवाब हो उस के लिये जाइज़ है कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर हुस्ने ज़न रखते हुए क़र्ज़ ले ले लेकिन बादशाहों और ज़ालिमों पर भरोसा करते हुए ऐसा न करे। फिर अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ह़लाल रिज़्क़ से नवाज़े तो वोह उस को अदा कर दे और अगर अदाएगी से क़ब्ल दारे फ़ानी से कूच कर गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की त़रफ़ से क़र्ज़ अदा फ़रमा कर उस के क़र्ज़ ख़्वाहों को राज़ी फ़रमा देगा। लेकिन इस में शर्त़ येह है कि क़र्ज़ ख़्वाह के नज़्दीक उस की ह़ालत वाज़ेह़ हो या'नी न तो वोह क़र्ज़ ख़्वाह को धोका दे और न ही वा'दों के फ़रेब में मुब्तला करे बल्कि क़र्ज़ देते वक़्त क़र्ज़ ख़्वाह को इस की ह़ालत वाज़ेह़ त़ौर पर मा'लूम होना शर्त़ है ताकि वोह सूझबूझ से क़र्ज़ दे। हर क़िस्म के क़र्ज़ की अदाएगी बैतुल माल और माले ज़कात से करना वाजिब है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़-करिय्या यह़्या बिन शरफ़ न-ववी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی के क़ौल का मफ़्हूम येह है कि इसराफ़ न करे इस लिये कि इसराफ़ ह़राम है और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इस्नवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی ने इस क़ौल पर ए'तिमाद करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि इसी क़ौल को समझ लीजिये। बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि येह वाज़ेह़ है और इस की हु़रमत पर दर्जे ज़ैल फ़रामीने बारी तआ़ला दलालत करते हैं:

وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْاۚ اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُسْرِفِیْنَ۠ ﴿۳۱﴾ (پ۸، الاعراف:۳۱) ﴾1﴿

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और खाओ और पियो और ह़द से न बढ़ो, बेशक ह़द से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं।

وَ لَا تُبَذِّرْ تَبْذِیْرًا ﴿۲۶﴾ اِنَّ الْمُبَذِّرِیْنَ كَانُوْۤا اِخْوَانَ الشَّیٰطِیْنِؕ (پ۱۵، بنی اسرائیل:۲۶،۲۷) ﴾2﴿

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और फ़ुज़ूल न उड़ा, बेशक उड़ाने वाले शैत़ानों के भाई हैं।

## आयाते मुबा-रका की तफ़्सीर

### तब्ज़ीर और इसराफ़ में फ़र्क़ :

**तब्ज़ीर** और **इसराफ़** का एक ही मा'ना है मगर बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का येह क़ौल इस के मुनाफ़ी है कि बेशक खाने पीने, लिबास और उ़म्दा सुवारियों में माल ख़र्च करना इसराफ़



www.dawateislami.net

नहीं। इन में मुत़ा–बक़त यूं होगी कि दूसरे क़ौल को इस पर मह़मूल किया जाएगा कि जब वोह अपने माल से ख़र्च करे और पहले क़ौल को इस सूरत पर मह़मूल किया जाएगा कि जब वोह क़र्ज़ ले कर ख़र्च करे और उसे पूरा करने की कोई ज़ाहिरी सूरत न हो।

## हुक़ूक़ुल इबाद से मुआ़फ़ी के बिग़ैर छुटकारा मुम्किन नहीं :

तौबा मुम्किना ह़द तक हुक़ूक़ुल इ़बाद की अदाएगी पर मौक़ूफ़ है, इस की दलील में दर्जे ज़ैल अह़ादीसे मुबा–रका मुला–ह़ज़ा फ़रमाइये :

﴾1﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : ''जिस के पास अपने भाई की कोई चीज़ या ज़ुल्मन छीना हुवा माल हो तो आज ही उस से मुआ़फ़ करा ले इस से पहले कि जब कोई दीनार होगा न दिरहम और अगर उस का कोई (नेक) अ़मल हुवा तो उस के ज़ुल्म के बराबर उस से ले लिया जाएगा वरना उस के भाई के गुनाह उस पर डाल दिये जाएंगे।''(1)

## ह़क़ीक़ी मुफ़्लिस कौन है ?

﴾2﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''क्या तुम जानते हो कि मुफ़्लिस कौन है ?'' सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''हम में मुफ़्लिस वोह है जिस के पास दिरहम और माल व अस्बाब न हो।'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरी उम्मत में मुफ़्लिस वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़े और ज़कात ले कर आएगा लेकिन उस ने किसी को गाली दी होगी, किसी पर तोहमत लगाई होगी, किसी का माल खाया होगा, किस का ख़ून बहाया होगा और किसी को मारा होगा। पस इसे भी उस की नेकियां दे दी जाएंगी और उसे भी उस की नेकियां दे दी जाएंगी और अगर हुक़ूक़ पूरे होने से पहले उस की नेकियां ख़त्म हो गईं तो उन के गुनाह उस पर डाल दिये जाएंगे फिर उसे जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।''(2)

﴾3﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस के पास अपने भाई का कोई छीना हुवा ह़क़ हो तो उसे चाहिये कि उस से मुआ़फ़ करा ले क्यूं कि वहां (क़ियामत में) दिरहमो दीनार न होंगे, इस से पहले कि इस के भाई के लिये इस की नेकियां ले ली जाएं

---

1 ......صحیح البخاری،کتاب المظالم، باب من کانت له مظلمة......الخ، الحدیث : ۲۴۴۹،ص۱۹۲۔

الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان،کتاب اخباره،باب اخباره......الخ، الحدیث : ۷۳۱۷،ج۹،ص۲۲۷۔

2 ......صحیح مسلم ،کتاب البر والصلة والادب ،باب تحریم الظلم ،الحدیث: ۶۵۷۹،ص۱۱۲۹۔



www.dawateislami.net

और अगर इस के पास नेकियां न हुईं तो इस के भाई के गुनाह ले कर इस पर डाल दिये जाएं।''(1)

﴾4﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे पर रह़्म फ़रमाए जिस के पास अपने भाई की कोई चीज़ या ज़ुल्मन छीना हुवा माल हो तो वोह उस के पास आ कर मुआ़फ़ करा ले।''(2)

## मक़्रूज़ की तौबा :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحِمَهُ اللّٰهُ السَّلَام ने गोया मज़्कूरा अह़ादीसे मुबा-रका से येह बात अख़्ज़ फ़रमाई कि जिसे इस ह़ाल में मौत आई कि उस पर कुछ क़र्ज़ था जिस के सबब उस ने क़र्ज़ ख़्वाह पर ज़ुल्मो ज़ियादती की थी तो उस के ज़ुल्म के बराबर उस की नेकियां ले ली जाएंगी और अगर उस की नेकियां ख़त्म हो गईं तो उस पर मज़्लूम के गुनाह डाल दिये जाएंगे, फिर उसे जहन्नम में डाल दिया जाएगा और अगर उस ने उस क़र्ज़ के सबब क़र्ज़ ख़्वाह पर ज़ुल्म या ज़ियादती न की थी तो आख़िरत में उस की नेकियां ले ली जाएंगी जैसा कि दुन्या में उस का माल ले लिया जाता है यहां तक कि उस के पास कुछ न रहेगा। अगर उस की तमाम नेकियां ख़त्म हो गईं तो मुस्तह़िक़ के गुनाह इस पर नहीं डाले जाएंगे क्यूं कि वोह ना फ़रमान नहीं।

**सुवाल :** जिस की नेकियां ख़त्म होने के बा'द भी उस पर क़र्ज़ बाक़ी रहे उस के मु-तअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

**जवाब :** येह मुआ़-मला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द है, अगर वोह चाहे तो अपने पास से क़र्ज़ ख़्वाह को इवज़ (या'नी बदला) दे दे और अगर चाहे तो न दे और येह सूरत इस के मु-तअ़ल्लिक़ वारिद ह़दीस के सह़ीह़ होने पर मौक़ूफ़ है। लेकिन इस से उस के वाजिब ईमान का सवाब नहीं लिया जाएगा जैसा कि दुन्या में उस के बदन का लिबास नहीं लिया जाता, अलबत्ता ! मुस्तह़ब ईमान का सवाब लेने के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र की ज़रूरत है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحِمَهُ اللّٰهُ السَّلَام का कलाम ख़त्म हुवा।

## आ़जिज़ मक़्रूज़ का क़र्ज़ अदा करने का हुक्म :

''**अल ख़ादिम**'' में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى की तह़क़ीक़ येह है और येही

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب القصاص یوم القیامة، الحدیث: ۲۵۳۴، ص۵۴۸۔

2 ......جامع الترمذی، ابواب صفة القیامة، باب ما جاء فی شأن الحساب والقصاص، الحدیث: ۲۴۱۹، ص۱۸۹۵۔



www.dawateislami.net

ह़लीम व करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के अह़काम के मुनासिब है कि वोह इन क़र्ज़ों में दुन्या के अह़काम की निस्बत फ़ैसला करे और जब मुबाह़ सबब से ह़ासिल कर्दा दैन के मु-तअ़ल्लिक़ शरीअ़ते मुत़ह्हरा का हुक्म है कि उसे ह़ाकिमे शर-अ़ के ज़ेरे क़ब्ज़ा बैतुल माल में माली ज़िम्मादारी क़बूल करने वालों के जम्अ़ शुदा ह़िस्से से अदा किया जाए बशर्ते कि मक़रूज़ अपना सारा क़र्ज़ अदा करने से आ़जिज़ हो तो अदाएगी से आ़जिज़ मक़रूज़ बिग़ैर गुनहगार हुए क्यूं न उम्मीद करे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने इन्आ़मो इक्राम के ख़ज़ानों से इस के क़र्ज़ ख़्वाहों को राज़ी कर के इस की त़रफ़ से क़र्ज़ अदा कर देगा जैसा कि इस ने अपने ख़ु-लफ़ा को हुक्म दिया है कि वोह बैतुल माल से ऐसे शख़्स का क़र्ज़ अदा करें।

**''अल ख़ादिम''** के मुसन्निफ़ मजीद फ़रमाते हैं कि जिस पर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने जज़्म किया है कि दुन्या में मक़रूज़ से क़र्ज़ का मुत़ा-लबा मुन्क़त़ेअ़ हो जाएगा वोह दुरुस्त नहीं क्यूं कि जब बैतुल माल में इतना माल मौजूद हो कि जिस से उस का क़र्ज़ अदा हो सकता हो तो उस से उस की अदाएगी वाजिब है। येह मस्अला उन पेचीदा फ़रोई मसाइल में से है कि जिन से उन आ़दिल अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام और क़ाज़ियों का आगाह होना ज़रूरी है जिन के ज़ेरे नगीन माले ज़कात होता है और इसी में माली ज़िम्मादारी क़बूल करने वालों का भी ह़िस्सा है।

## आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का करम :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अ़ब्दुल बर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **''अल इस्तिज़्कार''** में इस पर आगाह फ़रमाया। जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दैन (या'नी क़र्ज़) को बहुत बड़ा मुआ़-मला क़रार देने वाली अह़ादीसे मुबा-रका ज़िक्र कीं और येह कि शहीद का भी क़र्ज़ मुआ़फ़ नहीं होगा तो इस के बा'द फ़रमाया कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से मज़्कूरा हुक्म उस वक़्त था जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर फ़ुतूह़ात का दरवाज़ा न खोला था और रहा इस के बा'द तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने माल छोड़ा वोह वु-रसा के लिये है और जिस ने क़र्ज़ या औलाद छोड़ी तो उस की ज़िम्मेदारी मुझ पर है।''(1)

## शर्हे ह़दीस :

जो भी शख़्स जाइज़ काम के लिये लिया हुवा क़र्ज़ छोड़ कर मर गया और उसे अदा

(1) سنن ابن ماجه، ابواب الصدقات، باب من ترک دينا او ضياعا......الخ، الحديث: ٢٤١٦، ص٢٦٢١۔



www.dawateislami.net

न कर सका तो ह़ाकिम उस की त़रफ़ से माली ज़िम्मेदारी क़बूल करने वालों के ह़िस्से या ज़कात या माले फ़ई में से अदा करे। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में लफ़्ज़ ''فَعَلَیَّ'' का ज़ाहिर येह है कि माल छोड़ कर या छोड़े बिग़ैर मरने वाले में कोई फ़र्क़ नहीं और इस का मा'ना येह है कि जिस मरने वाले मुसल्मान के बैतुल माल में माले फ़ई वग़ैरा में से कुछ वाजिबुल अदा हुक़ूक़ हों जो उसे न मिले हों तो ह़ाकिम पर लाज़िम है कि उन से उस का क़र्ज़ अदा करे और उस का मतरूका माल वु-रसा के लिये छोड़ दे और अगर मक़रूज़ या सुल्त़ान ने ऐसा न किया तो आख़िरत में उन के माबैन क़िसास होगा, लेकिन ऐसे क़र्ज़ की वज्ह से उसे जन्नत से न रोका जाएगा कि जिस की मिस्ल बैतुल माल से सुल्त़ान पर देना लाज़िम हो या किसी ऐसे मक़रूज़ पर देना लाज़िम हो जो क़र्ज़ का इन्कार करता हो और येह बात मुह़ाल है कि किसी ऐसे शख़्स को जन्नत से रोक दिया जाए कि जिस का इस क़दर माल बादशाह या किसी दूसरे के ज़िम्मे वाजिबुल अदा हो कि जितने माल से उस का क़र्ज़ अदा हो सकता हो।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र-कशी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि येह उस शख़्स के मु-तअ़ल्लिक़ बेहतरीन क़ौल है जिस का लाज़िम आने वाले माल की मिस्ल माल बैतुल माल में मौजूद हो लेकिन हर एक का येह हुक्म नहीं।

दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की खु़सूसिय्यात में येह बात बयान हो चुकी है कि तंगदस्त मय्यित के दैन की अदाएगी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर वाजिब थी तो क्या बा'द वाले ह़ाकिमों पर भी रिफ़ाए़ आ़म्मा के माल में से उस का पूरा करना ज़रूरी है ? इस की दो सूरतें हो सकती हैं। **पहली सूरत :** अगर वोह ह़क़ क़िसास या ह़द्दे क़ज़फ़ का हो तो उस में गुज़श्ता तमाम शराइत़ के साथ साथ येह भी शर्त़ है कि वोह मुस्तह़िक़ को अपना पूरा ह़क़ लेने की कु़दरत दे दे इस त़रह़ कि अगर उसे उस के क़ातिल होने का इ़ल्म न हो तो उसे बताए और कहे : अगर तू चाहे तो क़िसास ले ले और चाहे तो मुआ़फ़ कर दे और अगर वोह इन दोनों में से हर एक का इन्कार कर दे तो तौबा सह़ीह़ है और अगर उस का मुस्तह़िक़ तक पहुंचना मुश्किल हो तो येह निय्यत करे कि जब भी उस तक पहुंच सका तो उस को खु़द पर कु़दरत दे दूंगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस्तिग़फ़ार करता रहे।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि उस की तौबा सह़ीह़ है अगर्चे वोह अपने नफ़्स को ह़वाले न करे लेकिन उस (या'नी गुनाह) की ह़क़्क़े इलाही की त़रफ़ निस्बत होने और सज़ा की कु़दरत न देने की वज्ह से येह एक अलग ना फ़रमानी होगी जो दूसरी

---

1 ......الاستذکار لابن عبد البر، کتاب الجهاد، باب الشهداء فی سبیل الله، تحت الحدیث: ۹۶۶، ج۴، ص۱۰۲ تا ۱۰۴۔



www.dawateislami.net

तौबा का तक़ाज़ा करती है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحِمَهُ اللّٰهُ السَّلَام ने इसी क़ौल की इत्तिबाअ़ की और "**अरौज़ा**" में इस पर सुकूत फ़रमाया। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى ने इस पर ए'तिराज़ वारिद किया है क्यूं कि इस से ह़ाकिम पर इस की मिस्ल माली अदाएगी लाज़िम आती है ह़ालां कि कोई भी इस का क़ाइल नहीं और "**अल ख़ादिम**" में येह फ़र्क़ बयान किया गया कि जिस माल को ग़स्ब करने पर गुनाह मिलता है उसे या उस के बदले दूसरा माल लौटाना मुम्किन है जब कि जो जान क़त्ल की वज्ह से ज़ाएअ़ हो गई उसे या उस के इ़वज़ दूसरी जान लौटाना मुश्किल है लिहाज़ा हम ने जानों को क़त्ल से बचाने के लिये मुआ़फ़ी की उम्मीद पर तौबा और छुप जाने को जाइज़ क़रार दिया।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बाक़िल्लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى से नक़्ल किया है कि क़ातिल के लिये जाइज़ है कि अपने आप को पेश करने के पुख़्ता अ़ज़्म के साथ कुछ दिन छुपा रहे यहां तक कि मक़्तूल के वली का ग़ुस्सा ठन्डा हो जाए और इस की अक्सर मुद्दत तीन दिन है। अलबत्ता ! अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का येह दा'वा दुरुस्त नहीं कि क़िसास के लिये अपने आप को ह़वाले न करने के बा वुजूद नदामत का पाया जाना मुह़ाल है।

## ह़द्दे क़ज़्फ़ से तौबा :

ह़द्दे क़ज़्फ़ में भी मुस्तह़िक़ को अपने गुनाह के मु-तअ़ल्लिक़ बताना और फिर उसे ख़ुद पर सज़ा की क़ुदरत देना वाजिब है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) फ़रमाते हैं : "अगर इशारों ही इशारों में बिल इरादा किसी पर तोहमत लगाई तो उसे इस की ख़बर देना ज़रूरी है इस लिये कि इस पर बात़िनी त़ौर पर ह़द वाजिब है और इस में एह़तिमाल है कि ख़बर देना वाजिब न हो क्यूं कि इस में ईज़ा है पस इसे वाजिब क़रार देना बई़द अज़ क़ियास है और छुपाना बेहतर है।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इ़बादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ब-ग़वी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى वग़ैरा का येह क़ौल इस की ताईद करता है कि इसे सरीह़ तोहमत की ख़ुफ़्या त़ौर पर ख़बर दे जैसा कि क़िसास के मु-तअ़ल्लिक़ है।

**दूसरी सूरत :** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) ने "**अत्तवस्सुत़**" में इर्शाद फ़रमाया कि जिस पर तोहमत लगाई गई है उस को तोहमत के बारे में बताना वाजिब ठहराने के मु-तअ़ल्लिक़ जो तफ़्सील मेरे दिल में है, वोह येह है कि अगर तोहमत लगाने वाले को तोहमत की ख़बर देने पर अपनी जान वग़ैरा की सलामती का यक़ीन



www.dawateislami.net

हो तो लाज़िमी तौर पर ख़बर देना ज़रूरी है और अगर सज़ा का अन्देशा हो और गुमान करे कि वोह इसे सज़ा देगा तो ख़बर देना ज़रूरी नहीं बल्कि अगर उस ने झूटी तोहमत लगाई है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इल्तिजा करे कि मेरी त़रफ़ से उसे राज़ी कर दे, हां ! अगर सज़ा से अम्न पाए तो उस के मरने के बा'द उस के वारिस को बताना ज़रूरी है और साथ साथ बारगाहे इलाही में गिड़गिड़ा कर येह सुवाल भी करता रहे कि मैं ने जिस मरने वाले पर तोहमत लगाई है आख़िरत में मेरी त़रफ़ से उसे राज़ी कर दे और उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करता रहे जैसा कि ग़ीबत के मु-तअ़ल्लिक़ हुक्म है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं : ह़क़ के क़रीब तरीन येह है कि जान या आ'ज़ा के क़िसास में भी येही तफ़्सील हो तो इस में भी इत्तिलाअ़ देना ज़रूरी नहीं मगर इस सूरत में कि जब इस बात का ग़ालिब गुमान हो कि वोह माल छीनने या जुर्म से ज़ाइद सज़ा देने के ज़रीए ज़ुल्म नहीं करेगा और अगर ग़ीबत की ख़बर उस को पहुंच जाए जिस की ग़ीबत की गई या हम इसे क़िसास या तोहमत की त़रह़ क़रार दें तो वोह ख़बर पहुंचने पर मौक़ूफ़ नहीं, पस इस में बेहतर त़रीक़ा येही है कि उस ने जिस की ग़ीबत की उस के पास जा कर मुआ़फ़ी त़लब करे और अगर उस के मर जाने या दूर दराज़ मक़ाम पर होने की वज्ह से मुआ़फ़ कराना मुश्किल हो तो बारगाहे इलाही में इस्तिग़्फ़ार करे।

## ग़ीबत से तौबा :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़न्नात़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى वग़ैरा ने वु-रसा के मुआ़फ़ करने के मो'तबर होने का ज़िक्र किया है और "**अरौंज़ा**" में इन के इस क़ौल को साबित रखते हुए कहा गया कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़न्नात़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى का फ़तवा है कि जिस की ग़ीबत की गई जब उसे मा'लूम न हो तो उस का नदामत और इस्तिग़्फ़ार करना ही काफ़ी है और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सब्बाग़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मु-तवफ़्फ़ा 477 हि.) ने इस पर यक़ीन का इज़्हार करते हुए फ़रमाया कि जिस की ग़ीबत की गई अगर उसे मा'लूम हो जाए तो उस से मुआ़फ़ी मांगना ज़रूरी है क्यूं कि उस ने उसे नुक़्सान और ग़म में मुब्तला किया मगर जब उसे मा'लूम न हो तो उसे बताने का कोई फ़ाएदा नहीं कि येह उसे अज़िय्यत पहुंचाने के मु-तरादिफ़ है। पस उसे चाहिये कि तौबा करे जब वोह तौबा कर लेगा तो येह तौबा उसे इस जुर्म से किफ़ायत कर जाएगी। हां ! अगर उस ने लोगों के सामने उस की ख़ामी बयान की तो उन के पास जाए और उन्हें बताए कि येह ह़क़ीक़त पर मब्नी नहीं है। कसीर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इस क़ौल में इन



www.dawateislami.net

की पैरवी की जिन में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى भी शामिल हैं और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सलाह़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने भी अपने फ़तावा में इसी क़ौल को पसन्द फ़रमाया। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र-कशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि येही क़ौल मुख़्तार है और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अ़ब्दुल बर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने भी इसे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से नक़्ल किया है और बिला शुबा आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 161 हि.) से इस पर बह़सो मुबा-ह़सा किया और जब उन्हों ने न माना तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : उसे दो बार तो अज़िय्यत न दो। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ग़ीबत का कफ़्फ़ारा येह है कि तू ने जिस की ग़ीबत की उस के लिये येह कहते हुए इस्तिग़्फ़ार करे कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी और उस की मग़्फ़िरत फ़रमा।''(1)

## ह़दीसे पाक की वज़ाह़त :

अगर्चे येह ह़दीस ज़ईफ़ है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू बक्र अह़मद बिन हुसैन बैहक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 458 हि.) ने फ़रमाया लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सलाह़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि अगर्चे इस की सनद मा'रूफ़ नहीं मगर इस का मफ़्हूम क़ुरआनो सुन्नत से साबित है। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ (پ۱۲، هود:۱۱۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं।

शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बुराई के बा'द भलाई करो कि वोह उसे मिटा देगी।''(2)

और ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी ह़दीसे पाक में है कि जब आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अपने घर वालों से अपनी ज़बान की तेज़ी की शिकायत की तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम इस्तिग़्फ़ार क्यूं नहीं करते ?''(3)

---

1 ......الدعوات الكبير للبيهقى، باب ما يقول إذا جرى على لسانه غيبة، الحديث : ۷۰۵، ج۲، ص۲۹۴۔

2 ......جامع الترمذى، ابواب البر والصلة، باب ما جاء فى معاشرة الناس، الحديث : ۱۹۸۷، ص۱۸۵۱۔

3 ......سنن ابن ماجه، ابواب الادب، باب الاِسْتِغْفَار، الحديث : ۳۸۱۷، ص۲۷۰۴۔



www.dawateislami.net

**पहला ए'तिराज़ :** सहीह़ अह़ादीसे मुबा-रका कुरआनो सुन्नत से साबित मज़्कूरा अम्र के ख़िलाफ़ हैं। चुनान्चे,

﴾1﴿...... जब उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने किसी औ़रत के मु-तअ़ल्लिक़ कुछ कहा तो हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक तुम ने उस की ग़ीबत की है, जाओ और उस से मुआ़फ़ी मांगो।"(1)

﴾2﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस के पास अपने भाई का ह़क़ हो तो उसे चाहिये कि आज (दुन्या में) ही उस से मुआ़फ़ करा ले।"(2)

**दूसरा ए'तिराज़ :** अगर यहां ग़ीबत की सूरत में सिर्फ़ इस्तिग़फ़ार ही काफ़ी है तो माल लेने के मुआ़-मले में भी येही काफ़ी होना चाहिये।

**जवाब :** अह़ादीसे मुबा-रका में वाक़ेअ़ इस तआ़रुज़ को इस त़रह़ दूर किया जा सकता है कि (ए'तिराज़ में ज़िक्र कर्दा अह़ादीसे मुबा-रका) को इस बात पर मह़मूल किया जाए कि येह अफ़्ज़लिय्यत का मुआ़-मला है या फिर ऐसा मुआ़-मला है कि जिस से फ़ौरन मुकम्मल त़ौर पर गुनाह का असर मिट जाता है ब ख़िलाफ़ (ग़ीबत के कफ़्फ़ारे के मु-तअ़ल्लिक़) पिछली ह़दीसे पाक के क्यूं कि वोह इस त़रह़ नहीं और ग़ीबत और माल लेने के दरमियान फ़र्क़ वाज़ेह़ है। इसी वज्ह से उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام ने ग़ीबत के मु-तअ़ल्लिक़ सख़्त वई़दें आने के बा वुजूद इसे गुनाहे सग़ीरा क़रार देने की येह तौजीह बयान फ़रमाई है कि लोगों का आ़म त़ौर पर इस में मुब्तला होना इस बात का तक़ाज़ा करता है कि उन पर नरमी करते हुए इसे सग़ीरा गुनाह क़रार दिया जाए ताकि सिवाए शाज़ो नादिर सूरत के तमाम लोगों का फ़ासिक़ होना लाज़िम न आए जो कि बहुत बड़ा ह़रज है। इसी वज्ह से इस में तख़्फ़ीफ़ की गई है, लिहाज़ा येह माल की त़रह़ नहीं यहां तक कि इसे मो'तरिज़ के ज़िक्र कर्दा कलाम पर क़ियास किया जाए और साह़िबे ह़क़ मुकल्लफ़ को बताना वाजिब है ही मगर इस के दीगर हुक़ूक़ भी वाजिबुल अदा रहेंगे अगर्चे वोह नरमी के साथ पेश आए।

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السيدة عائشة، الحديث: ۲۵۱۰۳، ج۹، ص۴۶۳۔

شعب الايمان للبيهقى، باب فى تحريم أعراض الناس، الحديث: ۶۷۶۷، ج۵، ص۳۱۳۔

2 ......صحيح البخارى، كتاب المظالم، باب من كانت له مظلمة......الخ، الحديث: ۲۴۴۹، ص۱۹۲۔

الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب اخباره، باب اخباره......الخ، الحديث: ۷۳۱۷، ج۹، ص۲۲۷۔



www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने कुशैरी عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی ने हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ाज़ी हुसैन رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से नक़्ल किया है कि अगर अपनी ज़बान से उ़ज़्र पेश किया यहां तक कि उस के मुख़ालिफ़ का दिल ख़ुश हो गया तो उसे येही काफ़ी है। हज़रते सय्यिदुना इमाम हाशिम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि अगर उस ने सिर्फ़ ज़बान से उ़ज़्र पेश किया और दिल से तौबा न की तो येह उसे काफ़ी नहीं। मज़ीद फ़रमाते हैं कि ह़क़ येह है कि अगर वोह इस में मुख़्लिस नहीं तो येह गुनाह उस के और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के माबैन होगा और ज़ियादा ज़ाहिर येह है कि आख़िरत में उस के मुख़ालिफ़ का मुत़ा-लबा बाक़ी रहेगा क्यूं कि अगर वोह उस की उ़ज़्र ख़्वाही में इस के मुख़्लिस होने को जान लेता तो उसे ईज़ा होती।

## मा'ज़िरत में इख़्लास का पाया जाना :

हज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़-रमैन رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस की तसरीह़ करते हुए फ़रमाते हैं : ''उस पर उ़ज़्र ख़्वाही में मुख़्लिस होना ज़रूरी है क्यूं कि हमारे शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام के नज़्दीक उस का येह क़ौल दिल से तअ़ल्लुक़ रखता है और उस के अल्फ़ाज़ मह़ज़ दिल की तरजुमानी करते हैं। पस अगर उस ने ख़ुलूस से उ़ज़्र पेश न किया तो येह गुनाह उस के और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरमियान होगा और येह एह़तिमाल भी है कि आख़िरत में उस का मुख़ालिफ़ उस से मुत़ा-लबा करे क्यूं कि अगर उसे मा'लूम हो जाता कि वोह अपना उ़ज़्र पेश करने में मुख़्लिस नहीं था तो उस से राज़ी न होता।''

## ह़सद से तौबा :

येह तमाम बह़्स ज़बान से ग़ीबत करने के मु-तअ़ल्लिक़ है, अलबत्ता ! ह़सद के मु-तअ़ल्लिक़ हज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی की तस्ह़ीह़ पर क़ियास करते हुए दिल की ग़ीबत के मु-तअ़ल्लिक़ बताना वाजिब नहीं जब कि इस में हज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) को ए'तिराज़ है।

हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ाज़ी हुसैन رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बा'ज़ क़दरिया के ह़वाले से नक़्ल किया कि जिस पर तोहमत लगाई गई उस से मा'ज़िरत करना वाजिब है, अगर गुमान हो कि उसे मा'लूम होने से उस का ग़म दूर हो जाएगा तो मा'ज़िरत करे वरना न करे क्यूं कि मा'ज़िरत से मक़्सूद ग़म को दूर करना है जब कि इस से तो उस का ग़म ताज़ा हो जाएगा।

(क़दरिया के मज़्कूरा क़ौल को नक़्ल करने के बा'द) हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ाज़ी हुसैन رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''येह क़ौल बात़िल है क्यूं कि गुनाह से मा'ज़िरत के वुजूब की इ़ल्लत इस का बुरा होना है न कि उस के ग़म का मूजिब होना, क्यूं कि अगर उस ने सुल्त़ान के माल



www.dawateislami.net

से एक दिरहम चुरा लिया तो उसे कोई ग़म न होगा लेकिन इसे गुनाह की वज्ह से मुआफ़ी मांगना वाजिब है जैसा कि फ़क़ीर से एक दिरहम छीनने की वज्ह से मुआफ़ी मांगना लाज़िम है जिस के मफ़्क़ूद होने से फ़क़ीर को बहुत अफ़्सोस होगा। हां ! येह वाज़ेह़ बात है कि बादशाह की निस्बत फ़क़ीर से मा'ज़िरत करना ब द-र-जए औला वाजिब है, इसी त़रह़ अगर माल चोरी कर के वापस रख दिया और उस के मालिक को मा'लूम न हुवा तब भी बुराई और ज़ुल्म की वज्ह से उस से मा'ज़िरत करना वाजिब है और अगर इसी त़रह़ हो जिस त़रह़ इस क़ाइल (या'नी क़दरी) ने दा'वा किया तो उस के नज़्दीक अहलो माल में किसी बहुत बड़ी बुराई पर भी मा'ज़िरत का वुजूब साक़ित़ हो जाएगा जब कि येह मा'लूम हो कि जिस से बुराई की गई, मा'ज़िरत करने पर वोह ग़म में मुब्तला हो जाएगा (ह़ालां कि ऐसा नहीं होता)।"

उन्हों ने जो कुछ चोरी के मु-तअ़ल्लिक़ ज़िक्र किया उस में चन्द उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने उन से इख़्तिलाफ़ किया और इर्शाद फ़रमाया कि जिस ने माल चोरी कर के वापस रख दिया तो उस पर मालिक को बताना वाजिब नहीं बल्कि इस का छुपाना बेहतर है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़न्नात़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی के ह़वाले से बयान हो चुका है कि वु-रसा के मुआफ़ करने का कोई ए'तिबार नहीं और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ाज़ी ह़ुसैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इन की मुवा-फ़क़त करते हुए अपनी **ता'लीक़** (या'नी अपने ह़ाशिये) में हर उस गुनाह को उस के साथ मुल्ह़िक़ किया जिस में ह़द न हो लेकिन अगर उस में ह़द हो म-सलन ह़द्दे क़ज़्फ़ तो इस में मुआफ़ी मांगने का ए'तिबार किया जाएगा। "**अरौज़ा**" में मज्हूल ग़ीबत से मुआफ़ी काफ़ी होने के मु-तअ़ल्लिक़ दो वुजूहात मज़्कूर हैं : "**अल अज़्कार**" में जिस वज्ह को तरजीह़ दी गई है वोह येह है कि ग़ीबत की (मुख़्तलिफ़ अक़्साम की अ़ला-ह़दा अ़ला-ह़दा) पहचान ज़रूरी है क्यूं कि इन्सान कभी किसी ग़ीबत से दर गुज़र कर देता है और किसी से नहीं करता और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़लीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی वग़ैरा का कलाम इस के यक़ीनी त़ौर पर सह़ीह़ होने का तक़ाज़ा करता है क्यूं कि जिस ने ग़ीबत के ज़ाहिर हुए बिग़ैर दर गुज़र कर दिया तो जब भी ग़ीबत होगी वोह अपने नफ़्स को इस पर आमादा कर लेगा और "**अरौज़ा**" में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی का कलाम भी इसी के मुवाफ़िक़ है।

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम में से कोई इस से आ़जिज़ है कि अबू ज़मज़म की त़रह़ हो जाए कि जब वोह अपने घर से निकलते हैं तो कहते हैं : "मैं ने अपनी इ़ज़्ज़त लोगों पर स-दक़ा कर दी।"(1)

---

(1)......سنن ابی داود، کتاب الادب،باب ما جاء فی الرجل یحل......الخ، الحدیث: ۴۸۸۶،ص۱۵۸۱، مفهوماً۔



www.dawateislami.net

## शर्हे ह़दीस :

इस का मा'ना येह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़मज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं दुन्या व आख़िरत में अपने ह़क़ का मुता़-लबा नहीं करूंगा और येह रिवायत उस ह़क़ के साक़ित़ करने का फ़ाएदा देती है जो बरी करने से पहले मौजूद था और जो बा'द में पैदा हो उस के लिये नई बराअत ज़रूरी है। इस इबारत में पहले से वाक़ेअ़ ना मा'लूम हुक़ूक़ के साक़ित़ होने की तसरीह़ है जो कलामे इमामे ह़लीमी के तक़ाज़े के मुता़बिक़ है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) "**एह़याउल उ़लूम**" में फ़रमाते हैं : "जिस ने ज़बान से किसी की इ़ज़्ज़त ख़राब की या अपने किसी अ़मल से उस को क़ल्बी अज़िय्यत पहुंचाई तो उस से मुआ़फ़ी मांगे और अगर वोह वहां मौजूद न हो या जहाने फ़ानी से कूच कर गया हो तो उस का मुआ़-मला फ़ौत हो गया और अब वोह उसे नेकियों की कसरत से ही पा सकता है ताकि क़ियामत में बतौ़रे इवज़ इन्हें लिया जा सके और इसे तफ़्सीली तौ़र पर बताना वाजिब है और अगर तफ़्सील नुक़्सान देह हो म-सलन पोशीदा ख़ामियों का ज़िक्र करना हो तो उस से मुब्हम तौ़र पर मुआ़फ़ी मांगे, फिर भी उस पर ह़क़ बाक़ी रहा तो उसे नेकियों के बदले पूरा करे जैसे मय्यित या ग़ाइब का ह़क़ पूरा किया जाता है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى ने ह़सद में ग़ीबत की त़रह़ ख़बर देना वाजिब क़रार दिया लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى ने इसे बईद अज़ क़ियास जाना और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़-करिय्या यह़्या बिन शरफ़ न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने इन के क़ौल को सह़ीह़ क़रार देते हुए इर्शाद फ़रमाया : "वाजिब तो दूर की बात है येह मुस्तह़ब भी नहीं।" मज़ीद फ़रमाया : "इसे मक्रूह भी कहा जा सकता है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : "बात वोही है जो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने इर्शाद फ़रमाई और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى ने इस बात पर जो नस्स क़ाइम फ़रमाई वोह इसी मफ़्हूम पर दलालत करती है और ह़क़ के ज़ियादा क़रीब इस का ह़राम होना है बशर्ते़ कि जब इस का ग़ालिब गुमान हो कि वोह मुआ़फ़ नहीं करेगा बल्कि इस से दुश्मनी और बुग़्ज़ो कीना पैदा होगा और ख़बर देने वाले को तक्लीफ़ पहुंचेगी और अगर इस बात का शक हो तो फिर भी येही हुक्म है क्यूं कि पाक नुफ़ूस बहुत कम पाए जाते हैं और अगर इसे ग़ालिब गुमान हो कि अगर उसे बताया तो वोह बिग़ैर नुक़्सान पहुंचाए मुआ़फ़ कर देगा तो बताना वाजिब है ताकि उस के ह़क़ से यक़ीनी तौ़र



www.dawateislami.net

पर बरी हो जाए।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र-कशी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی ने अपने शैख़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی का कलाम नक़्ल कर के उस पर जो ए'तिराज़ किया फिर उस का जो जवाब दिया, वोह येह है :

**ए'तिराज़ :** अह़ादीसे मुबा-रका ह़सद की मज़म्मत पर दलालत करती हैं ह़ालां कि येह भी दिल के आ'माल में से है, लिहाज़ा इस से तौबा वाजिब है और मुआ़फ़ी मांगने के इ़लावा तौबा का कोई त़रीक़ा नहीं तो इस से ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इ़बादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡكَافِی के क़ौल को तक़्वियत मिलती है ?

**जवाब :** सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी उम्मत के दिल में पैदा होने वाले ख़यालात को मुआ़फ़ फ़रमा दिया है जब तक वोह ज़बान पर न लाएं या उन पर अ़मल न करें।"(1)

मज़्कूरा ह़दीसे पाक का ज़ाहिर तक़ाज़ा करता है कि येह मरफ़ूअ़ है और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुहि़ब त़-बरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی ने इसे इख़्तियार करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि हम वुस्अ़ते रह़मते इलाही की बदौलत अह़ादीसे सह़ीह़ा पर अ़मल करते हुए ए'तिक़ाद रखते हैं कि दिल के ख़याल पर हर ह़ाल में मुआ-ख़ज़ा नहीं होगा ख़्वाह इस में इरादा हो या न हो बशर्ते कि ज़बान से कुछ न कहे या उस पर अ़मल न करे और मुआ-ख़ज़ा पर दलालत करने वाली अह़ादीसे मुबा-रका को अ़मल करने पर मह़मूल किया जाएगा और कुफ़्र के इ़लावा दिल के किसी ख़याल से वोह गुनहगार नहीं होगा क्यूं कि कुफ़्र के दिल का अ़मल होने पर इज्माअ़ है।

## मुआ-ख़ज़े का हुक्म :

ह़सद के मु-तअ़ल्लिक़ सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका वारिद हैं और हर बुरा अ़मल मज़्मूम है ख़्वाह उस का तअ़ल्लुक़ बात़िन से हो या ज़ाहिर से। ह़सद पर मुआ-ख़ज़ा के मु-तअ़ल्लिक़ हमें कोई सह़ीह़ ह़दीसे पाक नहीं मिली और अगर इस के मु-तअ़ल्लिक़ कोई सह़ीह़ ह़दीसे पाक मिल जाए तो उन में तत़्बीक़ करते हुए हम उसे ज़बान से इज़्हार करने या अ़मल करने पर मह़मूल करेंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इ़बादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡكَافِی के ह़वाले से ज़िक्र कर्दा क़ौल बईद अज़ क़ियास है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡكَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 623 हि.) ने फ़रमाया और ह़ासिद की मिसाल उस शख़्स की सी है जिस ने गुनाह का पुख़्ता इरादा किया

---

(1) ......صحیح البخاری، کتاب العتق، باب الخَطَأِ والنِّسیان......الخ، الحدیث : ۲۵۲۸، ص۱۹۹۔
سنن النسائی، کتاب الطلاق، باب من طلق فی نفسه، الحدیث : ۳۴۶۵، ص۲۳۱۳۔



www.dawateislami.net

लेकिन उस पर अ़मल न किया खुसूसन जब उस का नफ़्स अपनी फ़ित़रत की वज्ह से उस पर ग़ालिब हो जब कि वोह अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात को ना पसन्द करता हो और उस से राज़ी न हो और कुदरत के बा वुजूद क़ौलन या फ़े'लन उस पर अ़मल करने से रुक जाए। बल्कि मैं उम्मीद करता हूं कि इस (या'नी गुनाह का इरादा करने वाले) की जज़ा येह है कि उस के लिये एक नेकी लिख दी जाएगी क्यूं कि उस ने रिज़ाए इलाही के लिये गुनाह छोड़ा और अपने नफ़्स से जिहाद किया पस वोह इस क़ाबिल है कि उस की सिफ़त एह़सान के साथ बयान की जाए। इस के बा'द उन्हों ने इस से मु-तअ़ल्लिक़ तीन अह़ादीसे मुबा-रका ज़िक्र कीं और फिर इर्शाद फ़रमाया : जो ना फ़रमानी दिल के अ़मल से हो और उस का बैरूनी अ़मल से कोई तअ़ल्लुक़ न हो तो उस पर कोई मुआ-ख़ज़ा नहीं और ह़सद की जिस सूरत को नफ़्स से दूर करना मुम्किन हो लेकिन वोह दूर न करे तो इस में एह़तिमाल है कि इस का हुक्म मज़्कूरा ह़सद जैसा ही हो और येह भी हो सकता है कि दोनों में फ़र्क़ हो बल्कि क़ौले मुख़्तार के मुताबिक़ दोनों में फ़र्क़ ही है क्यूं कि येह दूसरे से उस की ने'मत के ज़ाइल होने की उम्मीद व ख़्वाहिश करता है और कभी कभार तो उस के ज़ाइल करने का सबब भी बन जाता है। पस मुआ-ख़ज़ा इस के मुम्किन मुसब्बब पर मौक़ूफ़ है ब ख़िलाफ़ बद गुमानी के, क्यूं कि इस का किसी ऐसे बैरूनी फ़े'ल से तअ़ल्लुक़ नहीं कि जिस के इस के साथ पाए जाने का तसव्वुर किया जाए, इस लिये कि जिस वस्फ़ के साथ सिफ़ात मज़्नूना मु-तअ़ल्लिक़ होती हैं येह उस का ग़ैर नहीं और इसे उन में कोई दख़्ल भी नहीं है। मज़ीद फ़रमाया कि शिर्क और इस से मुल्ह़क़ा गुनाहों के इ़लावा तमाम गुनाहों में बराबरी का क़ौल गुनाहों को एक दूसरे से मुल्ह़क़ करने के ए'तिबार से बहुत ही ख़ूब है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र-कशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی का कलाम ख़त्म हुवा।

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के इस मज़्मून को नक़्ल करने और इस के ज़ईफ़ और ख़िलाफ़े तह़क़ीक़ होने के बा वुजूद इस पर ए'तिमाद करने पर तअ़ज्जुब है ह़ालां कि मुह़क़्क़िक़ीन ने दिल में खटक्ने वाली बात, वस्वसे, दिल के ख़याल, इरादे और पुख़्ता अ़ज़्म में फ़र्क़ किया है और मैं ने येह सारा कलाम और इस से मु-तअ़ल्लिक़ लोगों का कलाम **"अर-बईने न-ववी"** की शर्ह़ के आख़िर में बयान कर दिया है उस की त़रफ़ रुजूअ़ कीजिये क्यूं कि येह बहुत अहम बह़्स है।

इस का ख़ुलासा कुछ ज़ियादती के साथ येह है कि दिल के अफ़्आ़ल पर मुआ-ख़ज़ा और अ़-दमे मुआ-ख़ज़ा के मु-तअ़ल्लिक़ अह़ादीसे मुबा-रका वारिद हुई हैं और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) ने तह़रीर फ़रमाया है कि "दिल में जो ख़याल आता है वोह या तो खटका होता है और


www.dawateislami.net

वोह दिल का ख़याल है। फिर इस खटके के बा'द मैलान पैदा होता है, इन दोनों पर कोई मुआ-ख़ज़ा नहीं, फिर इस के बा'द उस पर ए'तिक़ाद पैदा होता है जिस पर इख़्तियारी होने की सूरत में मुआ-ख़ज़ा है और इज़्तिरारी होने की सूरत में नहीं और इस के बा'द उस पर पुख़्ता अ़ज़्म कर लिया जाता है जिस पर क़त़ई त़ौर पर मुआ-ख़ज़ा है।''

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ''मज़्कूरा चारों का मज्मूआ़ वस्वसा कहलाता है जो दिल में गुनाह का ख़याल पैदा करता है और इस पर मुआ-ख़ज़ा न होना इज्माअ़ से साबित है क्यूं कि येह बन्दे का फ़े'ल नहीं होता बल्कि येह तो ख़ुद ब ख़ुद पैदा होता है जिसे दूर नहीं किया जा सकता।'' दीगर बा'ज़ ने ''اَلْخَاطِر'' की तफ़्सीर दिल में गुज़रने वाले ख़याल के साथ की और ह़दीसे नफ़्स (या'नी दिल के ख़याल) से मुराद तरद्दुद लिया या'नी किया वोह काम करे या न करे और इस ह़दीसे पाक की बिना पर मुह़क़्क़िक़ीन से पुख़्ता इरादे पर क़त़ई त़ौर पर मुआ-ख़ज़ा मरवी है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब दो मुसल्मान अपनी तलवारों के साथ मुक़ाबले में आमने सामने आते हैं तो क़ातिल व मक़्तूल दोनों जहन्नमी हैं।'' अ़र्ज़ की गई : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह तो क़ातिल है लेकिन मक़्तूल का क्या क़ुसूर है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''वोह भी अपने मद्दे मुक़ाबिल को क़त्ल करने का ह़रीस था।''(1)

एक क़ौल के मुत़ाबिक़ पुख़्ता अ़ज़्म पर भी मुआ-ख़ज़ा नहीं किया जाएगा और **''जम्उ़ल जवामेअ़''** में है कि दिल का ख़याल जब तक कि उसे ज़बान पर न लाया जाए या उस पर अ़मल न किया जाए और इरादा, दोनों क़ाबिले मुआफ़ी हैं। इस से मुराद येह है कि इन दोनों पर मुआ-ख़ज़े का न होना मुत़्लक़ नहीं बल्कि गुफ़्त-गू न करने और अ़मल न करने के साथ मश्रूत़ है यहां तक कि जब अ़मल करेगा तो इरादा और अ़मल दोनों चीज़ों पर मुआ-ख़ज़ा किया जाएगा और इन में से किसी एक को भी मुआ़फ़ नहीं किया जाएगा मगर येह कि इस के बा'द कोई अ़मल न करे येह ह़दीसे पाक का ज़ाहिर है और ''اَلْهَمّ'' से मुराद येह है कि जब तक वोह कलाम न करे या उस पर अ़मल न करे और उस में क़ैद लगाने की ज़रूरत नहीं क्यूं कि अगर इस के साथ **ह़दीसे नफ़्स** को मुक़य्यद किया तो इरादा ब द-र-जए औला मुक़य्यद होगा।

**सुवाल :** किसी ने मा'सियत का इरादा किया या दिल में इस का ख़याल आया लेकिन अ़मल इस के बर अ़क्स किया म-सलन किसी औ़रत से ज़िना का इरादा किया और उस की त़रफ़ गया लेकिन फिर रास्ते से पलट आया तो क्या इस इरादे और ख़याल पर मुआ-ख़ज़ा होगा ?

---

1 ......صحيح البخاری، کتاب الإيمان، باب(وان طآئفتان من المؤمنين......الخ)، الحديث: ٣١، ص٤-



www.dawateislami.net

**जवाब :** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल ह़सन तक़िय्युद्दीन अ़ली बिन अ़ब्दुल काफ़ी सुबकी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि हु़ज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुत़्लक़ अ़मल कहने से मुआ-ख़ज़ा होना ज़ाहिर होता है या'नी येह कि वोह न तो ज़बान से कहे और न ही अ़मल करे। मज़ीद फ़रमाते हैं कि पस उस से गुनाह की त़रफ़ चलने की हु़रमत की वज्ह से मुआ-ख़ज़ा किया जाएगा अगर्चे चलना बज़ाते ख़ुद मुबाह़ है लेकिन ह़राम के इरादे के मिलने से येह भी ह़राम हो गया। गुनाह की त़रफ़ जाने और इरादे में से हर एक इन्फ़िरादी त़ौर पर ह़राम नहीं लेकिन जब दोनों इकट्ठे हो जाएं तो ह़राम हो जाएंगे क्यूं कि इरादे के साथ अ़मल मिल गया जो क़स्द व इरादे के अस्बाब में से है। ''اَوْيَعْمَلُ'' का मुत़्लक़ क़ौल इस के मुआ-ख़ज़ा का तक़ाज़ा करता है। लिहाज़ा इस बात को सख़्ती से थाम लीजिये और इसे अस्ल बना लीजिये यक़ीनन इस से आप को बार बार फ़ाएदा होगा।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र-कशी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सुबकी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی का ह़दीसे नफ़्स (या'नी दिल के ख़याल) के मिलने की वज्ह से मुआ-ख़ज़ा का मज़्कूरा क़ौल ''اَوْيَعْمَلُ'' के इत़्लाक़ की वज्ह से मुस्तह़सन है जब कि किसी दूसरी ह़दीसे पाक पर ए'तिबार न किया जाए लेकिन बुख़ारी व मुस्लिम की रिवायत में ''اَوْيَعْمَلُ بِهٖ'' के अल्फ़ाज़ हैं और इस में एह़तिमाल है कि अगर वोह गुनाह की त़रफ़ बढ़ने के बा'द उस के इरतिकाब से पहले मह़ज़ रिज़ाए इलाही की ख़ात़िर लौट आया तो उस के फ़े'ल पर मुआ-ख़ज़ा नहीं किया जाएगा। चुनान्चे,

﴾1﴿...... ह़दीसे क़ुदसी है : ''अगर उस ने वोह बुराई तर्क कर दी तो उस के लिये एक नेकी लिख दो, बेशक उस ने वोह मेरी रिज़ा के लिये छोड़ी।''(1)

﴾2﴿...... एक रिवायत के अल्फ़ाज़ येह हैं : ''अगर उस ने वोह बुराई मेरे लिये छोड़ी तो उस के लिये एक नेकी लिख दो।''(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सुबकी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی एक दूसरी जगह फ़रमाते हैं : ''اَوْيَعْمَلُ'' के फ़रमान का कोई मफ़्हूम नहीं यहां तक कि येह कहा जाए कि जब उस ने गुफ़्त-गू की या उस पर अ़मल किया तो उस पर ह़दीसे नफ़्स या'नी दिल का ख़याल लिखा जाएगा क्यूं कि जब इरादा न हो तो नहीं लिखा जाता लिहाज़ा ह़दीसे नफ़्स ब द-र-जए औला नहीं लिखी जाएगी।

इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र-कशी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि येह ह़दीसे पाक

---

(1) ......صحیح مسلم، کتاب الإیمان، باب اذا هَمَّ العبدُ بحسنةٍ ......الخ، الحدیث : ۳۳۶،ص۷۰۰۔

(2) ......الاحسان بترتیب......، کتاب البر والاحسان، با ب ما جاء فی الطاعات وثوابها، الحدیث : ۳۸۳،ج۱،ص۳۰۰۔



www.dawateislami.net

के ज़ाहिरी मफ़्हूम और इन के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ताजुद्दीन सुबकी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی के क़ौल के ख़िलाफ़ है, बल्कि इन के बेटे ने इन से इख़्तिलाफ़ करते हुए फ़रमाया : ''दिल में जिस फे़'ल का इरादा किया जाए उस की त़रफ़ बढ़ने के साथ अ़मल के मिलने के बा वुजूद मुआ-ख़ज़े का न होना ब त़रीक़े औला लाज़िम आता है। मज़ीद फ़रमाया कि वालिदे मोह़तरम رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का येह क़ौल मम्नूअ़ है कि जब इरादा न हो तो नहीं लिखा जाता तो ह़दीसे नफ़्स ब द-र-जए औला नहीं लिखी जाएगी और हम तस्लीम नहीं करते कि इरादा मुत़्लक़न नहीं लिखा जाता बल्कि अ़मल के उस के साथ मिलने से वोह भी लिखा जाता है।''

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ाज़ी हुसैन رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की **ता'लीक़** या'नी ह़ाशिये में है : जिस त़रह़ फे़'ले ह़राम का इरतिकाब ह़राम है इसी त़रह़ इस में ग़ौरो फ़िक्र करना भी ह़राम है। जिस की वज्ह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आ़लीशान है :

وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍؕ (پ۵، النساء:۳۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और उस की आरज़ू न करो जिस से **अल्लाह** ने तुम में एक को दूसरे पर बड़ाई दी।

पस ना जाइज़ चीज़ की तमन्ना करना भी इसी त़रह़ मम्नूअ़ है जिस त़रह़ इस फ़रमाने बारी तआ़ला की वज्ह से उसे देखना मम्नूअ़ है :

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِیْنَ یَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ (پ۱۸، النور:۳۰)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** मुसल्मान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें।

अगर किसी ने निय्यत की, कि वोह कल काफ़िर हो जाएगा तो अस्ले मज़हब के मुत़ाबिक़ वोह फ़ौरन काफ़िर हो जाएगा क्यूं कि येह ख़त़रनाक इरादा है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इ़ज़्ज़ बिन अ़ब्दुस्सलाम رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि कभी एक चीज़ ज़ाहिरी त़ौर पर ना फ़रमानी होती है लेकिन कभी उस के साथ अच्छी निय्यत मिल कर उसे गुनाह से निकाल देती है और कभी वोह इ़बादत भी बन जाती है जैसा कि चुंगी व टेक्स पर गवाही के मु-तअ़ल्लिक़ बयान हो चुका है।

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़िब त़-बरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی का क़ौल नक़्ल करने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़र-कशी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''चुग़ली के मु-तअ़ल्लिक़ भी येही तफ़्सील होनी चाहिये और शदीद और कम अज़िय्यत देने वाली चुग़ली में फ़र्क़ का एह़तिमाल है, पस आ़म त़ौर पर जिस की चुग़ली खाई जाए, वोह कम तक्लीफ़ देह चुग़ली मुआ़फ़ कर देता है।'' मज़्कूरा क़ौल मह़ल्ले नज़र है बल्कि इस फ़र्क़ की कोई वज्ह नहीं क्यूं कि बिल इज्माअ़ ग़ीबत का गुनाह चुग़ली के गुनाह से बढ़ कर है इस के बा वुजूद जब उ़-लमाए किराम



www.dawateislami.net

رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इस में फ़र्क़ नहीं किया तो चुग़ली में तो ब द-र-जए औला फ़र्क़ नहीं करना चाहिये। मज़ीद फ़रमाते हैं : फिर मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) की किताब **"मिन्हाजुल आ़बिदीन"** में देखा कि "लोगों के दरमियान होने वाले गुनाह उ़मूमन 5 क़िस्म के होते हैं :

﴾1﴿...... वोह गुनाह या तो माल के मु-तअ़ल्लिक़ होते हैं, पस क़ुदरत के वक़्त उसे लौटाना वाजिब है, अगर ग़ुरबत की वज्ह से आ़जिज़ हो तो मुआ़फ़ कराए, अगर उस के कहीं चले जाने या जहाने फ़ानी से कूच कर जाने की वज्ह से मुआ़फ़ कराने से आ़जिज़ हो और उस की त़रफ़ से स-दक़ा करना मुम्किन हो तो स-दक़ा करे वरना ब कसरत नेकियां करे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रुजूअ़ करे और गिर्या व ज़ारी करे ताकि वोह शख़्स बरोज़े क़ियामत इस से राज़ी हो जाए।

﴾2﴿...... या जान के मु-तअ़ल्लिक़ होते हैं तो इसे चाहिये कि उसे या उस के वली को क़िसास की क़ुदरत दे, अगर ऐसा नहीं कर सकता तो बारगाहे इलाही में दुआ़ करे कि वोह क़ियामत के दिन उस से राज़ी हो जाए।

﴾3﴿...... या इ़ज़्ज़त के मुआ़-मले में होते हैं, अगर उस ने किसी की ग़ीबत की हो या किसी को गाली दी हो या किसी पर बोहतान लगाया हो तो उस पर ह़क़ है कि जिस के साथ ऐसा किया हो मुम्किना ह़द तक उस के सामने अपने आप को झुटलाए जब कि इज़्हार करने से उसे उस के ग़ज़ब की ज़ियादती या फ़ितना भड़क्ने का ख़ौफ़ न हो और अगर इस का ख़ौफ़ हो तो उस के भी राज़ी होने के मु-तअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ करे।

﴾4﴿...... या किसी के मह़ारिम (या'नी अहलो इयाल) के मु-तअ़ल्लिक़ होते हैं, अगर इस ने किसी के अहलो इयाल वग़ैरा के साथ कोई बुराई की तो मुआ़फ़ी मांगने और इज़्हार करने की कोई वज्ह नहीं क्यूं कि इस से फ़ितना व ग़ज़ब की आग भड़क उठेगी बल्कि उस के राज़ी होने के मु-तअ़ल्लिक़ बारगाहे इलाही में गिर्या व ज़ारी करे और उस के मुक़ाबले में उस के लिये भलाई करे, और अगर उसे फ़ितना या ग़ज़ब का ख़ौफ़ न हो ह़ालां कि ऐसा बहुत कम होता है तो उस से मुआ़फ़ी मांगे।

﴾5﴿...... या दीन के मु-तअ़ल्लिक़ होते हैं, अगर उसे काफ़िर या बिद्अ़ती या गुमराह कहा तो येह मुश्किल तरीन अम्र है। पस इसे उस के सामने अपने आप को झुटलाना ज़रूरी है और मुम्किना ह़द तक उस से मुआ़फ़ी मांगे वरना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बहुत ज़ियादा गिड़गिड़ाए और इस पर नादिम हो ताकि वोह राज़ी हो जाए।"[1]

---

1 ......منهاج العابدين للغزالى، الباب الثانى العقبة الثانية وهى عقبة التوبة،ص ٢٣۔



www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) का मज़्कूरा कलाम बहुत ज़ियादा क़ाबिले तह़सीन और तह़क़ीक़ पर मब्नी है।

## ज़िना व लिवात़त से तौबा :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) ने मह़ारिम के मु-तअ़ल्लिक़ जो ज़िक्र किया उस में बीवी और दीगर मह़ारिम भी शामिल हैं जैसा कि उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने तसरीह़ की है कि बेशक ज़िना व लिवात़त दोनों में बन्दे का ह़क़ है, लिहाज़ा जिन के साथ येह अफ़्आ़ल किये तो तौबा उन के क़रीबी रिश्तेदारों से मुआ़फ़ी मांगने पर मौक़ूफ़ होगी और जिस औ़रत के साथ ज़िना किया तो तौबा उस के शोहर से मुआ़फ़ी मांगने पर मौक़ूफ़ होगी जब कि फ़ितने का ख़ौफ़ न हो और अगर फ़ितने का ख़ौफ़ हो तो उन के राज़ी होने के मु-तअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिर्या व ज़ारी करे और इस की तौजीह पेश की जाती है कि इस में कोई शक नहीं कि ज़िना और लिवात़त में एक तो अक़ारिब ह़द द-रजा आ़र मह़सूस करते हैं और दूसरा येह कि (इस से किसी की) बीवी नजिस हो जाती है, लिहाज़ा अगर कोई उ़ज़्र न हो तो उन से मुआ़फ़ी मांगना वाजिब है।

**सुवाल :** जिन गुनाहों में आदमी के ह़क़ का कोई तअ़ल्लुक़ नहीं होता उन में से बा'ज़ को कुछ उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने सग़ीरा गुनाह क़रार दिया म-सलन अजनबी औ़रत से शर्मगाह के इ़लावा में वत़ी करना और बोसा लेना जब कि दीगर बा'ज़ को कबीरा गुनाह क़रार दिया म-सलन ज़िना करना और शराब पीना और आप की मज़्कूरा तक़रीर इस के ख़िलाफ़ है ?

**जवाब :** येह कलाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) के कलाम के पाए का नहीं ख़ुसूसन जिस के मु-तअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 783 हि.) फ़रमाते हैं कि येह इन्तिहाई उ़म्दा और तह़क़ीक़ शुदा कलाम है। पस जिस मफ़्हूम पर येह कलाम दलालत करता है उसी का ए'तिबार होगा न कि किसी दूसरे का। इ़लावा अज़ीं इन में तत़्बीक़ भी मुम्किन है वोह यूं कि पहली सूरत को उस औ़रत के साथ ज़िना करने पर मह़मूल किया जाए जिस का शोहर या क़रीबी मह़रम न हो, पस इस में उ़ज़्र की वज्ह से मुआ़फ़ करवाना साक़ित़ हो जाएगा और दूसरी सूरत को उस औ़रत पर मह़मूल किया जाए जिस का शोहर या कोई क़रीबी अ़ज़ीज़ हो और फ़ितने के ख़ौफ़ के बिग़ैर मुआ़फ़ करवाया जा सकता हो तो ऐसा करना वाजिब है और इस के बिग़ैर तौबा सह़ीह़ न होगी और



www.dawateislami.net

मज़्कूरा दोनों सूरतों में यूं भी तत्बीक़ दी जा सकती है कि ज़िना इस ए'तिबार से कि वोह ज़िना है, एक जिहत से तो इस का तअ़ल्लुक़ **हुक़ूक़ुल्लाह** से है इस लिये कि वोह किसी के जाइज़ करने से भी जाइज़ नहीं होता और दूसरी जिहत से इस का तअ़ल्लुक़ **हुक़ूक़ुल इबाद** से है। लिहाज़ा जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़क़ को पेशे नज़र रखा उस ने मुआ़फ़ करवाना वाजिब क़रार न दिया और न ही इस की त़रफ़ तवज्जोह दी। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی (मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) के इ़लावा दीगर उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام की इ़बारात इसी पर दलालत करती हैं और जिस ने बन्दों के ह़क़ को पेशे नज़र रखा उस ने मुआ़फ़ करवाना वाजिब क़रार दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का येह क़ौल भी इस की ताईद करता है कि जिस ने डाका डाल कर माल ह़ासिल किया तो क्या इस पर उसे बताना वाजिब है ? पस अगर हम इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ ग़ालिब क़रार दें तो उसे बताना वाजिब नहीं और अगर ह़द में बन्दे का ह़क़ ग़ालिब क़रार दें तो उसे आगाह करना वाजिब है ताकि वोह उस से अपना ह़क़ वुसूल कर ले या इसे छोड़ दे ताकि ह़ाकिम उस से पूरा कर ले।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने रिफ़्अ़ह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام के ह़वाले से अजनबी औ़रत को बोसा देना उस ना फ़रमानी की मिसाल ठहराया जिस में बन्दों का कोई ह़क़ नहीं और साथ ही इस से येह बात समझी जा सकती है कि उस से वत़ी करने में बन्दों का ह़क़ मु-तअ़ल्लिक़ है और इस सूरत में येह इमामे ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی के कलाम के मुत़ाबिक़ है और अगर उस ने ऐसी ज़र्ब लगाई जिस में क़िसास नहीं तो जिसे मारा गया उसे ख़ुश करने के लिये उस से मुआ़फ़ी मांगे अगर वोह मुआ़फ़ कर दे तो ठीक है वरना अपने नफ़्स पर उसे क़ुदरत दे दे ताकि वोह इस के साथ ऐसा ही करे जैसा इस ने किया क्यूं कि अब येह उस के दाइरए इख़्तियार में है और अगर मुआ़फ़ करने और उस से बदला लेने से रुक जाए तो भी उस की तौबा सह़ीह़ है। येह बात ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मावर्दी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने ज़िक्र फ़रमाई।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ाज़ी हुसैन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भी इसी त़रह़ ज़िक्र करते हुए फ़रमाया : "अगर साह़िबे ह़क़ मर गया तो उस के वारिस से मुआ़फ़ कराने की कोई ह़ाजत नहीं बल्कि मय्यित के लिये इस्तिग़फ़ार करे।" इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुल्क़ीनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ने इन का तआ़क़ुब करते हुए फ़रमाया : "वारिस को मुआ़फ़ी का ह़क़ मुन्तक़िल होता है लिहाज़ा उसे इस की ख़बर देना ज़रूरी है।" मगर येह बात मह़ल्ले नज़र है क्यूं कि येह तै़ है कि इस में कोई क़िसास नहीं और इस त़रह़ का ह़क़ वारिस को बिल्कुल मुन्तक़िल नहीं होता



www.dawateislami.net

मगर येह कि ऐसा ज़ख़्म जिस में क़ज़ाअन क़िसास हो तो इस ए'तिबार से कि वोह माल को ज़िम्न में लिये हुए है, वारिस को मुन्तक़िल होगा और इस सूरत में मुआफ़ करवाना वाजिब है और हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ाज़ी हुसैन رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की क़त्अन येह मुराद नहीं बल्कि इन की मुराद हाथ वग़ैरा से मारना है कि जिस में कोई क़िसास या माल लाज़िम नहीं आता और येह हक़ वारिस को मुन्तक़िल नहीं होता और अगर मुस्तहिक़ मौजूद हो मगर उस के किसी दूर दराज़ अ़लाक़े में होने की वज्ह से मुआफ़ कराना मुश्किल हो तो उस का गुनाह को छोड़ना और नादिम होना ही काफ़ी है जब कि येह पुख़्ता इरादा हो कि जब भी हो सका अपने नफ़्स पर उसे क़ुदरत दे दूंगा (ताकि वोह बदला ले ले) ।

हज़रते सय्यिदुना इमाम हलीमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : "जिस ने किसी मुसल्मान को उस की ला इल्मी में नुक़्सान पहुंचाया तो उस का इज़ाला करे फिर उस से मुआफ़ी मांगे और उस से अपने लिये इस्तिग़्फ़ार कराए, इस लिये कि हज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बेटे जब ताइब हो कर हाज़िर हुए तो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से अपने लिये इस्तिग़्फ़ार करने के लिये अ़र्ज़ की, येह इस पर दलालत करता है कि एहतियात इस में है कि मज़्लूम से मुआफ़ी भी मांगी जाए और उस से दुआए मग़्फ़िरत भी करवाई जाए ।"

## छीने हुए माल और हुक़ूक़ का हुक्म :

"**अल ख़ादिम**" में है कि ज़ुल्मन लिये हुए माल और दूसरों के हुक़ूक़ से सुबुक दोश होने के मु-तअ़ल्लिक़ तीन आराअ हैं :

## पहला मज़हब :

येह हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) का मौक़िफ़ है कि मुआफ़ न करना ज़ियादा बेहतर है क्यूं कि साहिबे हक़ क़ियामत के दिन उस की नेकियों से अपना हक़ पूरा कर लेगा और इस के गुनाह उस के पलड़े में डाल दिये जाएंगे जैसा कि हदीसे पाक ने इस की गवाही दी और क्या मुआफ़ करने पर इस का अज्र ज़ुल्मन लिये हुए माल के बदले हासिल होने वाली नेकियों के बराबर या ज़ियादा या कम होगा जब कि इसे उस वक़्त नेकियों में इज़ाफ़े और गुनाहों में कमी की ज़रूरत होगी ? (तो इस के मु-तअ़ल्लिक़ कुछ नहीं कहा जा सकता)

## दूसरा मज़हब :

मुआफ़ करना अफ़्ज़ल है क्यूं कि येह एहसाने अ़ज़ीम है और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से इस पर बदले का हक़दार है और वोह ज़ात इस से बुलन्दो बरतर है कि जिस ने उस


www.dawateislami.net

की ख़ातिर किसी पर एह्सान किया वोह उसे इस से भी कम बदला दे ह़ालां कि ख़ुद फ़रमाता है :

اِنۡ تُقۡرِضُوا اللّٰهَ قَرۡضًا حَسَنًا یُّضٰعِفۡهُ لَكُمۡ وَ یَغۡفِرۡ لَكُمۡ ؕ (پ۲۸،التغابن:۱۷) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** अगर तुम **अल्लाह** को अच्छा क़र्ज़ दोगे वोह तुम्हारे लिये उस के दूने कर देगा और तुम्हें बख़्श देगा।

"**अल ख़ादिम**" में इस क़ौल को राजेह़ क़रार दिया गया।

## तीसरा मज़्हब :

येह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه (मु-तवफ़्फ़ा 179 हि.) का मौक़िफ़ है कि ज़ुल्मन लिये हुए माल और हुक़ूक़ में फ़र्क़ किया जाए, पस हुक़ूक़ को मुआ़फ़ कर दे (मगर ज़ुल्मन लिये हुए माल को मुआ़फ़ न करे) क्यूं कि ज़ुल्म करने वाले के लिये ज़ुल्म पर सज़ा है जिस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने इब्रत निशान दलील है :

اِنَّمَا السَّبِیۡلُ عَلَی الَّذِیۡنَ یَظۡلِمُوۡنَ النَّاسَ (پ۲۵،الشوریٰ:۴۲) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** मुआ-ख़ज़ा तो उन्हीं पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं।

और दुन्या ही में ज़ालिम को मुआ़फ़ कर देना इस क़िसास लेने से अफ़्ज़ल है। "**अल ख़ादिम**" का कलाम ख़त्म हुवा।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْکَافِی (मु-तवफ़्फ़ा 204 हि.) और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه (मु-तवफ़्फ़ा 179 हि.) के मज़्कूरा मौक़िफ़ पर ए'तिराज़ है और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़मज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मु-तअ़ल्लिक़ साबिक़ा ह़दीसे पाक मुत़्लक़ त़ौर पर दलालत करती है कि मुआ़फ़ करना अफ़्ज़ल है और इसी पर "**अरौज़ा**" का गुज़श्ता क़ौल भी दलालत करता है जिस का मा'ना येह है कि मैं अपने ऊपर ज़ुल्म करने वाले से दुन्या व आख़िरत में बदला लेने का मुत़ा-लबा नहीं करता और रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़मज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के फ़े'ल पर उभारते हुए इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम में से कोई इस से आ़जिज़ है कि अबू ज़मज़म की त़रह़ हो जाए कि जब वोह अपने घर से निकलते हैं तो कहते हैं : मैं ने अपनी इ़ज़्ज़त लोगों पर स-दक़ा कर दी।"(1)

۞۞۞۞۞۞۞

(1) ......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب ما جاء فی الرجل......الخ، الحدیث:۴۸۸۶،ص۱۵۸۱،مفهوماً۔



www.dawateislami.net

## कबीरा नम्बर 464 : अन्सार से बुग़्ज़ रखना

## कबीरा नम्बर 465 : सह़ाबए किराम को गाली देना

## ईमान व निफ़ाक़ की अ़लामत :

﴾1﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अन्सार से मह़ब्बत ईमान की अ़लामत और इन से बुग़्ज़ निफ़ाक़ की अ़लामत है।''(1)

﴾2﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अन्सार के बारे में इर्शाद फ़रमाया : ''अन्सार से मह़ब्बत सिर्फ़ मोमिन ही करता है और इन से बुग़्ज़ मुनाफ़िक़ ही रखता है और जो इन से मह़ब्बत करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से मह़ब्बत फ़रमाएगा और जो इन से बुग़्ज़ रखे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ना पसन्द फ़रमाएगा।''(2)

﴾3﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और यौमे आख़िरत पर ईमान रखता है वोह अन्सार से बुग़्ज़ नहीं रखता।''(3)

## अन्सार कौन हैं ?

बा'ज़ ह़म्बली उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि अन्सार से मुराद वोह लोग हैं जिन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उस के दीन की मदद की और वोह लोग क़ियामत के दिन तक बाक़ी हैं और उन की दुश्मनी सब से बड़ा गुनाह है।

उन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इस दा'वे से येही मुराद लेना अगर किसी ख़ारिजी दलील की वज्ह से हो तो फिर वाज़ेह़ है और अगर येह अ़ह्द ज़ेह्नी के लिये हो तो उन अन्सार के इ़लावा किसी पर इस वस्फ़ का इ़त्लाक़ नहीं होगा जिन का तअ़ल्लुक़ ख़ज़रज और औस क़बीले से है।

---

(1)......صحيح البخارى، كتاب الإيمان، باب علامة الإيمان حب الأنصار، الحديث:١٧،ص٣، "علامة" بدله" آية"۔

(2)......صحيح مسلم، كتاب الإيمان، باب الدليل على أن حب الأنصار......الخ، الحديث:٢٣٧،ص٦٩٢۔

(3)......المرجع السابق، الحديث:٢٣٨۔



www.dawateislami.net

## सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان को सब्बो शत्म करने की मुमा-न-अ़त :

﴾4﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मेरे सह़ाबा को सब्बो शत्म न करो। उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर तुम में से कोई उह़ुद पहाड़ की मिस्ल सोना भी (राहे ख़ुदा में) ख़र्च करे तो फिर भी वोह उन में से किसी एक के मुद (या'नी मापने का आला) को न पहुंचेगा बल्कि उस के निस्फ़ को भी न पहुंचेगा।''(1)

﴾5﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मेरे सह़ाबा के मु-तअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरना, मेरे बा'द इन्हें त़ा'नो तश्नीअ़ का निशाना न बना लेना। जिस ने इन से मह़ब्बत की तो उस ने मुझ से मह़ब्बत की वज्ह से इन से मह़ब्बत की और जिस ने इन से बुग़्ज़ रखा तो उस ने मुझ से बुग़्ज़ रखने की वज्ह से इन से बुग़्ज़ रखा और जिस ने इन्हें अज़िय्यत दी उस ने मुझे अज़िय्यत दी और जिस ने मुझे अज़िय्यत दी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अज़िय्यत दी और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अज़िय्यत दी क़रीब है कि वोह उस की पकड़ फ़रमाए।''(2)

इस मौज़ूअ़ पर बहुत सी अह़ादीसे त़य्यिबा मरवी हैं और मैं ने इस से मु-तअ़ल्लिक़ तमाम अह़ादीसे मुबा-रका को एक जामेअ़ किताब में ज़िक्र कर दिया है और मेरे ख़याल में इस जैसी किताब नहीं लिखी गई, इसी वज्ह से मैं ने उस का नाम ''اَلصَّوَاعِقُ الْمُحَرِّقَةُ لِاِخْوَانِ الشَّيَاطِيْنِ اَهْلِ الْاِبْتِدَاعِ وَالضَّلَالِ وَالزَّنْدَقَة'' रखा है।

अगर आप सह़ाबए किराम व अहले बैते अत़्हार के औसाफ़े ह़मीदा, ख़ुसूसन शैख़ैने करीमैन या'नी अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُم की ख़ूबियां जानना चाहते हैं तो इस किताब का मुत़ा-लआ़ कीजिये। इस किताब में अहले तशय्युअ़ व रवाफ़िज़ के किज़्ब, मन घड़त बातों और सह़ाबए किराम رِضۡوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡهِمۡ اَجۡمَعِيۡن पर बोहतान त़राज़ियों को वाज़ेह़ त़ौर पर बयान किया गया है जिन से सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان मुनज़्ज़ा व मुबर्रा (या'नी पाक व बरी) हैं।

﴿बिरादरे आ'ला ह़ज़रत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن अपने ना'तिया दीवान ''**ज़ौक़े ना'त**'' में फ़रमाते हैं :

*लَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ दुश्मनाने अहले बैत* — *अहले बैते पाक से बे बाकियां गुस्ताख़ियां*
*यूं बयां करते हैं सुन्नी दास्ताने अहले बैत*﴾ — *बे अदब गुस्ताख़ फ़िर्क़े को सुना दे ऐ ह़सन*

1 ......سنن ابی داود، کتاب السنة، باب فی النهی عن سَبِّ أصحاب رسول الله، الحدیث:۴۶۵۸،ص۱۵۶۵۔

2 ......جامع الترمذی، ابواب المناقب، باب فی من سبّ أصحاب النبی، الحدیث:۳۸۶۲،ص۲۰۴۷۔



www.dawateislami.net

## तम्बीह : सहाबए किराम को सब्बो शत्म करना कबीरा गुनाह है :

मज़्कूरा दोनों गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार करने की कई उ़-लमाए किराम ने तसरीह़ की है और इस का कबीरा गुनाह होना वाज़ेह़ है, नीज़ शैख़ैन वग़ैरा ने इस की तसरीह़ की है कि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को गालियां देना कबीरा गुनाह है।

ह़ज़रते सय्यिदुना जलाल बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحمَةُاللهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं : ''सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को सब्बो शत्म करना जमाअ़त को छोड़ने के तह़त दाख़िल है और जमाअ़त को छोड़ना बिद्अ़त है जिस पर दलील तर्के सुन्नत है, पस जिस ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को गाली दी वोह बिला ख़िलाफ़ कबीरा गुनाह का मुर-तकिब हुवा।''

येह और दीगर कई दूसरी अह़ादीसे मुबा-रका ह़ज़रते सय्यिदुना जलाल बुल्क़ीनी عَلَيْهِ رَحمَةُاللهِ الْغَنِى के बयान कर्दा क़ौल की सरा-ह़तन ताईद करती है :

﴾6﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे मुन्तख़ब फ़रमाया और मेरे लिये सहाबा मुन्तख़ब फ़रमाए और उन में से मेरे लिये वज़ीर, अन्सार और रिश्तेदार बनाए, लिहाज़ा जिस ने इन को गाली दी उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, फ़िरिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस के न तो नफ़्ल क़बूल फ़रमाएगा और न ही फ़र्ज़।''(1)

﴾7﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे मुन्तख़ब फ़रमाया और मेरे लिये सहाबा मुन्तख़ब फ़रमाए और भाई, दोस्त और रिश्तेदार बनाए, अ़न्क़रीब इन के बा'द ऐसी क़ौम आएगी जो इन्हें ऐ़ब लगाएगी और इन से नफ़रत करेगी, लिहाज़ा तुम न उन के साथ खाना, न पीना, न उन के साथ इज़्दिवाजी रिश्ता क़ाइम करना, न उन के साथ नमाज़ पढ़ना और न ही उन के पीछे नमाज़ पढ़ना।''(2)

﴾8﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

---

(1)......المعجم الکبیر،الحدیث:۳۴۹،ج۱۷،ص۱۴۰۔
جمع الجوامع للسیوطی، قسم الاقوال، حرف الھمزۃ، الحدیث:۵۲۲۳،ج۲،ص۲۲۸۔

(2)......جمع الجوامع للسیوطی،قسم الاقوال،حرف الھمزۃ، الحدیث:۵۲۲۴ ج۲،ص۲۲۸۔
الجامع لاخلاق الراوی للخطیب، املاء فضائل الصحابۃ، الحدیث: ۱۳۵۳، ج۲،ص۱۱۸۔



www.dawateislami.net

"जब मेरे सहाबए किराम का ज़िक्र किया जाए तो (बुराई बयान करने से) रुको।"(1)

## शैख़ैने करीमैन को गाली देना कुफ़्र है :

अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से मन्क़ूल है कि जिस ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को गाली दी उस ने कुफ़्र किया और इन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इस के मु-तअ़ल्लिक़ सनद के साथ अह़ादीसे मुबा-रका बयान की हैं कि,

﴾9﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! जिस ने तुझे गाली दी उस ने कुफ़्र किया।"

﴾10﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : "जिस ने अपने भाई को कहा : "ऐ काफ़िर !" तो उन दोनों में से एक कुफ़्र में मुब्तला हो गया।"(2)

लिहाज़ा जिस ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और आप की औलाद को काफ़िर कहा तो वोह उसी वक़्त क़त़ई त़ौर पर काफ़िर हो गया। इसी त़रह़ इस बात पर नस्स क़ाइम है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कई आयाते मुबा-रका में येह बयान फ़रमाया है कि वोह सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن से राज़ी है। चुनान्चे फ़रमाने ख़ुदा वन्दी है :

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِیْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِیْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ (پ ۱۱،التوبة:۱۰۰)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और सब में अगले पहले मुहाजिर और अन्सार और जो भलाई के साथ इन के पैरव हुए, **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी।

## अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से जंग :

जिस ने तमाम सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان या इन में से किसी एक को भी गाली दी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से जंग का ए'लान किया और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ए'लाने जंग किया तो वोह उसे हलाक और ज़लीलो रुस्वा कर देगा।

---

(1)......المعجم الكبير، الحديث:۱۴۲۷،ج۲،ص۹۶۔

(2)......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد الله بن عمر بن الخطاب، الحديث:۵۹۲۱،ج۲،ص۴۴۸۔



www.dawateislami.net

येही वज्ह है कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि अगर सहा़बए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का बुराई से ज़िक्र किया जाए म-सलन उन की त़रफ़ किसी ऐ़ब की निस्बत की जाए तो उस में मुब्तला होने से रोकना न सिर्फ़ वाजिब है बल्कि तमाम बुराइयों की त़रह़ ह़स्बे इस्तित़ाअ़त पहले अपने हाथ, फिर ज़बान और फिर दिल से उस का इन्कार करना वाजिब है, बल्कि येह गुनाह सब से ज़ियादा बुरा और क़बीह़ गुनाह है।

इसी वज्ह से हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन अल्फ़ाज़ के साथ इस से बचने की ताकीद फ़रमाई : ''**अल्लाह अल्लाह** या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब और उस की सज़ा से डरो।'' यूंही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने भी इर्शाद फ़रमाया :

وَ يُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ (پ۳، آل عمران:۲۸) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** तुम्हें अपने ग़ज़ब से डराता है।

जैसा कि तुम किसी को बहुत ज़ियादा भड़क्ती हुई आग पर गिरने के क़रीब झुक कर झांकते हुए देखो तो कहते हो : ''आग आग'' या'नी आग से बच और दूर रह।

सहा़बए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के उन फ़ज़ाइल व मनाक़िब में ग़ौर करो जिन को सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बयान फ़रमाया और उन की मह़ब्बत को अपनी मह़ब्बत और उन के बुग़्ज़ को अपना बुग़्ज़ क़रार दिया, तेरे लिये उन की येही अ़-ज़-मतो बुज़ुर्गी काफ़ी है कि उन की मह़ब्बत आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत और उन से बुग़्ज़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बुग़्ज़ की अ़लामत है, इसी वज्ह से अन्सार की मह़ब्बत ईमान और उन से बुग़्ज़ रखना निफ़ाक़ है क्यूं कि वोह सब्क़त वाले और अपने जान व माल को आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत और इआ़नत में ख़र्च करने वाले हैं और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में सहा़बए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की आप के साथ गुज़री हुई ज़िन्दगी और विसाल शरीफ़ के बा'द उन के आसारे ह़मीदा में ग़ौरो फ़िक्र करने से उन के फ़ज़ाइल ह़क़ीक़ी मा'नों में मा'लूम हो सकते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें इस्लाम और मुसल्मानों की त़रफ़ से अच्छी, कामिल व अफ़्ज़ल जज़ा अ़त़ा फ़रमाए। बेशक उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में कोशिश का ह़क़ अदा किया यहां तक कि उन्हों ने दीन को फैलाया और इस्लामी उसूलों को ग़ालिब किया, अगर वोह ऐसा न करते तो हम तक क़ुरआनो सुन्नत न पहुंचते, न कोई अस्ल हु़क्म पहुंचता और न ही कोई फ़र्अ़।



www.dawateislami.net

## सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पर "ला'न ता'न" करने के सबब हलाकत व बरबादी :

जिस ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पर ला'न ता'न किया क़रीब है कि वोह मिल्लते इस्लामिया से अलग हो जाए क्यूं कि,

❁ ...... उन पर ला'न ता'न करना नूरे इस्लाम को बुझाने की त़रफ़ ले जाता है।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَيَأْبَى اللّٰهُ اِلَّاۤ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۳۲﴾ (پ۱۰، التوبة:۳۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** न मानेगा मगर अपने नूर का पूरा करना, पड़े बुरा मानें काफ़िर।

❁ ...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की जो ता'रीफ़ की है, ला'न ता'न करना उस में बे यक़ीनी और अक़ीदे की कमज़ोरी की त़रफ़ ले जाता है।

❁ ...... नीज़ उन पर ला'न ता'न करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बुरा भला कहने का सबब बनता है क्यूं कि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان हमारे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरमियान वसीला हैं और वसीले को ला'न ता'न करना अस्ल को बुरा भला कहने के मु-तरादिफ़ है, नीज़ नक़्ल करने वाले को ऐ़ब लगाना उसे ऐ़ब लगाने की त़रह़ है जिस से बात नक़्ल की गई।

लिहाज़ा जो शख़्स ग़ौरो फ़िक्र करेगा उस पर येह बात वाज़ेह़ हो जाएगी जब कि उस का अक़ीदा निफ़ाक़, धोका और बद मज़्हबी से मह़फ़ूज़ हो। पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत रखने वाले पर वाजिब है कि उन लोगों से मह़ब्बत करे जिन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़काम की बजा आ-वरी की और इन्हें वाज़ेह़ किया और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द उन की तब्लीग़ की और इस के तमाम हुक़ूक़ अदा किये और ह़ज़रते सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ही वोह मुक़द्दस नुफ़ूस हैं जो इन तमाम बातों को ह़क़ीक़ी मा'नों में सर अन्जाम देने वाले हैं।

## सय्यिदुना अय्यूब सिख़्तियानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی का फ़रमान :

अकाबिर अस्लाफ़ में से ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब सिख़्तियानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं कि जिस ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मह़ब्बत की उस ने दीन की निशानी क़ाइम की और जिस ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर



www.dawateislami.net

फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से महब्बत की उस ने दीन का रास्ता वाज़ेह़ किया और जिस ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से महब्बत की उस ने नूरे इलाही से रोशनी पाई और जिस ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم से महब्बत की उस ने **उ़र्वए वुस्क़ा** या'नी मज़्बूत़ रस्सी को थाम लिया और जिस ने कहा : ''हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में ख़ैर ही ख़ैर है।'' वोह निफ़ाक़ से बरी हो गया और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के फ़ज़ाइल व मनाक़िब बे शुमार हैं।

## अहले सुन्नत व जमाअ़त का इज्माअ़ :

अहले सुन्नत व जमाअ़त का इज्माअ़ है कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में अफ़्ज़ल वोह 10 हैं जिन्हें रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़ से एक ही सिल्सिलए कलाम में जन्नत की बिशारत दी गई और इन में सब से अफ़्ज़ल अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। अक्सर अहले सुन्नत के नज़्दीक इस के बा'द अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और फिर अमीरुल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم हैं। मुनाफ़िक़, ख़बीस और बिद्अ़ती ही इन में से किसी को बुरा भला कहेगा।

﴾11﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने इस फ़रमाने हिदायत निशान से इन चारों की हिदायत को थामे रखने की ता'लीम दी : ''तुम पर मेरी सुन्नत और मेरे बा'द मेरे हिदायत याफ़्ता ख़ु-लफ़ाए राशिदीन की सुन्नत लाज़िम है, इन (के त़रीके़) को मज़्बूती़ से थाम लो।''(1)

ख़ु-लफ़ाए राशिदीन से मुराद येही चारों सह़ाबए किराम (अबू बक्र व उ़मर व उ़स्मान व अ़ली) رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن हैं और इस पर क़ाबिले ए'तिमाद और मुस्तनद उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام का इज्माअ़ है।

## गुस्ताख़ाने सह़ाबा के चन्द इ़ब्रत नाक वाक़िआ़त

सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को सब्बो शत्म करने वालों को ऐसी बुरी ह़ालतों में मुब्तला

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب السنة، باب فی لزوم السنة، الحدیث:۴۶۰۷، ص ۱۵۶۱۔
مشکل الآثار للطحاوی، باب بیان مشکل......الخ، الحدیث: ۱۳۴۱، ج ۱، الجزء الثانی، ص ۴۹۔



www.dawateislami.net

पाया गया जो उन की अन्दरूनी ख़बासत और सज़ा की शिद्दत पर दलालत करती हैं।

## गुस्ताख़ इब्ने मुनीर का ह़ाल :

ह़ज़रते सय्यिदुना कमाल बिन क़दीम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **''तारीख़े ह़लब''** में ऐसे ही एक गुस्ताख़े सह़ाबा का वाक़िआ़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि जब गुस्ताख़ इब्ने मुनीर मर गया तो **ह़लब** के कुछ नौ जवान उस का अन्जाम देखने के लिये चल पड़े, वोह आपस में एक दूसरे से कहने लगे : हम ने सुना है कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को गालियां बकने वाला जब मरता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उसे क़ब्र में ख़िन्ज़ीर की त़रह़ कर देता है** और مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इब्ने मुनीर भी इन मुकर्रम व मुक़द्दस हस्तियों को सब्बो शत्म करता था। लिहाज़ा उस के अन्जामे बद की ख़बर लेने चलते हैं, इस इरादे के साथ सब ने उस की क़ब्र की त़रफ़ जाने पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया। चुनान्चे जब उन्हों ने जा कर उस गुस्ताख़े सह़ाबा की क़ब्र को खोदा(1) तो वाक़ेई़ ख़िन्ज़ीर की शक्ल में बदल चुका था और उस का चेहरा क़िब्ले से जानिबे शिमाल फिरा हुवा था, उन्हों ने उस बद मज़हब की लाश को क़ब्र से बाहर निकाल कर रख दिया ताकि दीगर लोग भी उस का अन्जामे बद देखें और बे अ-दबों व गुस्ताख़ों से ख़ुद भी बचें और दूसरों को भी बचाएं। जब सब देख चुके तो उस की लाश को आग लगा दी फिर क़ब्र में फेंक कर उस पर मिट्टी डाल दी और वापस पलट आए।

*﴾ मह़फ़ूज़ सदा रखना शहा बे अ-दबों से    और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अ-दबी हो ﴿*

## सह़ाबा का गुस्ताख़ बन्दर बन गया :

ह़ज़रते सय्यिदुना कमाल बिन क़दीम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नक़्ल फ़रमाते हैं कि मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल वाह़िद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते शैख़ सालेह़ उ़मर रुऐ़नी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَنِی के ह़वाले से बताया कि उन्हों ने फ़रमाया कि मैं आ़शूरा के दिन मदीने शरीफ़ زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا के क़रीब फ़क़ीर बन कर बैठा हुवा था। इसी दिन इमामिया (अहले तशय्युअ़ के एक फ़िर्क़े के लोग) क़ुब्बए अ़ब्बास में इकठ्ठे होते थे। जब वोह क़ुब्बे में इकठ्ठे हुए तो मैं ने दरवाज़े पर खड़े हो कर कहा : मुझे अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़

---

1 ...... बिला इजाज़ते शर-ई़ क़ब्र खोदना जाइज़ नहीं जैसा कि **आ'ला ह़ज़रत,** मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, इमामे अहले सुन्नत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** (मुख़र्रजा) जिल्द 9, सफ़ह़ा 406 पर फ़रमाते हैं : ''بعد از دفن کشودن حلال نیست या'नी दफ़्न के बा'द (क़ब्र) खोलना जाइज़ नहीं।''



www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की महब्बत में कुछ दीजिये।

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, मेरी बात सुन कर एक बूढ़े शख़्स ने मेरे पास आ कर कहा : ''बैठ जा यहां तक कि हम फ़ारिग़ हो कर तुझे कुछ दें।'' मैं बैठ गया यहां तक कि वोह फ़ारिग़ हो गए, फिर वोह शख़्स मेरी त़रफ़ आया और मेरा हाथ पकड़ कर मुझे अपने घर ले गया। घर में दाख़िल करने के बा'द उस ने दरवाज़ा बन्द कर दिया और दो ग़ुलामों को मुझ पर मुसल्लत़ कर दिया, उन्हों ने मेरे दोनों हाथों को कन्धों के पीछे रस्सी के साथ बांध कर बुरी त़रह़ मारा पीटा। फिर उस बूढ़े शख़्स ने उन ग़ुलामों को मेरी ज़बान काटने का हुक्म दिया तो उन्हों ने इसे काट दिया, इस के बा'द उस ने उन्हें मेरे कन्धे खोलने का हुक्म दे कर मुझ से कहा : ''तूने जिस की महब्बत में मांगा था अब उस के पास जा कि वोह तेरी ज़बान लौटा दे।''

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं वहां से शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुज्रए अक़्दस की त़रफ़ आया इस ह़ाल में कि तक्लीफ़ और दर्द की शिद्दत से मैं रो रहा था और दिल में अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप तो जानते हैं कि मुझे अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की महब्बत में येह तक्लीफ़ पहुंची है, अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दोस्त ह़क़ पर है तो मैं चाहता हूं कि मेरी ज़बान मेरी त़रफ़ लौट आए।'' मैं ने हुज्रए अक़्दस में दर्द की शिद्दत से बेचैनी के आ़लम में रात बसर की, आख़िर मुझे ऊंघ आ गई और मैं ने ख़्वाब में देखा कि मेरी ज़बान गुज़श्ता ह़ालत पर लौट आई है, मैं बेदार हुवा तो वाक़ेई इसे पहले की त़रह़ सह़ीह़ो सालिम पाया और कलाम भी कर सकता था, मैं ने कहा : ''सब ता'रीफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की है जिस ने मुझे मेरी ज़बान लौटाई।''

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मुझे अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से और ज़ियादा महब्बत हो गई, जब दूसरे साल आ़शूरा का दिन आया और वोही लोग अपनी आ़दत के मुत़ाबिक़ इकठ्ठे हुए तो मैं ने क़ुब्बे के दरवाज़े पर आ कर फिर कहा : ''मैं अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की महब्बत में कुछ दीनार चाहता हूं।'' तो ह़ाज़िरीन में से एक नौ जवान ने मेरे पास आ कर मुझ से कहा : बैठ जा यहां तक कि हम फ़ारिग़ हो जाएं। चुनान्चे मैं बैठ गया, जब वोह फ़ारिग़ हुए तो वोह नौ जवान मेरी त़रफ़ आया और मेरा हाथ पकड़ कर मुझे उसी घर की त़रफ़ ले गया और घर में दाख़िल कर के मेरे सामने खाना पेश किया, हम ने खाना खाया और जब हम फ़ारिग़



www.dawateislami.net

हो गए तो वोह नौ जवान खड़ा हो गया और घर के एक कमरे का दरवाज़ा खोल कर रोने लग गया, मैं येह देखने के लिये खड़ा हुवा कि इस के रोने का क्या सबब है ? तो मैं ने कमरे में **एक बन्दर बंधा हुवा देखा,** मैं ने उस का माजरा पूछा तो वोह और ज़ियादा रोने लगा। मैं ने उसे ख़ामोश कराया यहां तक कि वोह पुर सुकून हो गया तो मैं ने उस से दोबारा पूछा : ''तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा मुझे इस का ह़ाल बताओ ?'' उस ने बताया कि अगर मुझे क़सम दें कि अहले मदीना में से किसी को नहीं बताएंगे तो मैं बताता हूं।

मेरे ह़ल्फ़ देने पर उस ने बताया कि पिछले साल हमारे पास एक शख़्स आया और उस ने आ़शूरा के दिन अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मह़ब्बत में किसी चीज़ का सुवाल किया तो मेरे बाप ने इस का ज़िम्मा उठाया। वोह इमामिया और अहले तशय्युअ़ का सर-ग़ना था और उसे कहा : बैठ जा यहां तक कि हम फ़ारिग़ हो जाएं। जब वोह फ़ारिग़ हो गए तो उसे इस घर में ले आया और उस पर दो ग़ुलाम मुसल्लत़ कर दिये, जिन्हों ने उसे ख़ूब मारा और फिर उस की ज़बान काटने का हुक्म दिया तो उसे भी काट कर उस शख़्स को बाहर निकाल दिया, वोह अपने रास्ते पर चल दिया, हम उस के मु-तअ़ल्लिक़ कुछ नहीं जानते। जब रात का वक़्त हुवा और हम सो गए तो मेरे बाप ने एक बहुत सख़्त चीख़ मारी जिस की शिद्दत से हम बेदार हो गए और हम ने उसे इस ह़ाल में पाया कि वोह मस्ख़ हो कर बन्दर बन चुका था। हम इस से घबरा गए और उसे इस कमरे में दाख़िल कर के बांध दिया और लोगों पर उस की मौत ज़ाहिर की, अब मैं इस पर सुब्ह़ो शाम रोता रहता हूं।

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने उस से पूछा कि तेरे बाप ने जिस की ज़बान काटी थी क्या उसे देख कर पहचान लोगे ? उस ने कहा : ''ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! नहीं।'' तो मैं ने उसे बताया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ही वोह शख़्स हूं जिस की ज़बान तेरे बाप ने काट दी थी।'' और फिर मैं ने उसे सारा वाक़िआ़ सुना दिया। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि वोह मुझ पर अ़क़ीदत से औंधे मुंह गिर पड़ा और मेरे सर और हाथों को बोसा दिया। फिर मुझे कपड़े और दीनार दिये और मुझ से पूछा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप की ज़बान कैसे लौटाई तो मैं ने उसे बताया और अपनी राह ली।

## इस उम्मत के यहूदी :

अकाबिर ताबिईन में से ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शअ़बी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 103 हि.) फ़रमाते हैं कि राफ़िज़ी इस उम्मत के यहूदी हैं क्यूं कि येह उन्ही की त़रह़ इस्लाम से



www.dawateislami.net

बुग़्ज़ रखते हैं इस लिये कि वोह दाइरए इस्लाम में न तो महब्बत से दाख़िल हुए और न ख़ौफ़ से बल्कि अहले इस्लाम से नफ़रत और इन के ख़िलाफ़ बग़ावत की बिना पर इस में दाख़िल हुए, अगर वोह चौपाए होते तो गधे होते और अगर परिन्दे होते तो गिध (मुर्दार खाने वाला एक परिन्दा) होते।(1)

## राफ़िज़िय्यों और यहूदियों में मुमा-सलत :

राफ़िज़िय्यों की कोशिश यहूदियों की सी है, यहूदी कहते हैं : "बादशाह सिर्फ़ हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद से ही होगा और जिहाद नहीं होगा यहां तक कि हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तशरीफ़ ले आएं।" नीज़ वोह नमाज़े मग़रिब को सितारे गुडमुड होने तक मुअख़्ख़र करते हैं, तीन त़लाक़ को नहीं मानते, क़िब्ला से इन्हिराफ़ करते हैं, अपने इलावा लोगों का माल व अस्बाब अपने लिये ह़लाल समझते हैं और कहते हैं : "जहालत की बिना पर हम से कोई पूछगछ न होगी।" और तौरात में तब्दीली करते हैं और ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام से बुग़्ज़ रखते हैं और कहते हैं : "फ़रिश्तों में से वोह हमारा दुश्मन है कि उस ने मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की त़रफ़ वह़्य ला कर ग़-लती की।" और वोह ऊंट का गोश्त नहीं खाते।

इसी त़रह़ राफ़िज़ी भी इस त़रह़ की बातें कहते हैं जैसे इन का क़ौल है कि ख़लीफ़ा सिर्फ़ अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की औलाद से हो सकता है और जिहाद नहीं है यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम महदी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का ज़ुहूर हो जाए, येह भी नमाज़े मग़रिब को सितारे गुडमुड होने तक मुअख़्ख़र करते हैं, तीन त़लाक़ को नहीं मानते, क़िब्ला से इन्हिराफ़ करते हैं, मुसल्मानों का माल व अस्बाब ह़लाल समझते हैं और क़ुरआने पाक में तह़रीफ़ करते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام से बुग़्ज़ रखते हैं और कहते हैं : इस ने मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ वह़्य लाने में ग़-लती की ह़ालां कि इसे अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की त़रफ़ भेजा गया था।(2)

## रवाफ़िज़ की यहूदो नसारा से ज़ाइद दो ख़राबियां :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शअ़बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 103 हि.) फ़रमाते हैं कि राफ़िज़िय्यों में यहूदो नसारा से दो ख़राबियां ज़ियादा पाई जाती हैं :

---

1 ......العِقْد الفَرِيد لابن عبد ربه الأندلسى، كتاب الياقوتة فى العلم والادب، الرافضة والشعبى، ج ٢، ص ٢٤٩ ـ

2 ......العِقْد الفَرِيد لابن عبد ربه الأندلسى، كتاب الياقوتة فى العلم والادب، الرافضة والشعبى، ج ٢، ص ٢٤٩ ـ



www.dawateislami.net

## पहली ख़राबी :

पहली ख़राबी येह है कि जब यहूद से पूछा गया कि तुम्हारी क़ौम में सब से अच्छे लोग कौन से हैं ? तो उन्हों ने जवाब दिया : ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अस्ह़ाब और इसी त़रह़ नसारा ने भी येही जवाब दिया कि हमारी क़ौम में सब से बेहतर ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अस्ह़ाब हैं लेकिन जब राफ़िज़ियों से पूछा गया कि तुम्हारी क़ौम में सब से बुरे लोग कौन से हैं ? तो इन बद बख़्तों ने कहा : मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब ।

## दूसरी ख़राबी :

यहूदो नसारा अपने अगलों के लिये इस्तिग़फ़ार करते हैं और सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के लिये इस्तिग़फ़ार करने का हुक्म दिया गया तो राफ़िज़ियों ने उन्हें सब्बो शत्म किया और रोज़े क़ियामत तक इन पर येह तलवार लटकी रहेगी, न तो वोह कभी साबित क़दम होंगे, न ही उन के ह़क़ में कोई दलील क़ाइम होगी और न ही किसी बात पर मुत्तफ़िक़ होंगे, उन की दा'वत धुत्कारी हुई है, उन की दलील बात़िल है, उन का कलाम बात़िल है, उन की जम्इय्यत बिखरी हुई है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

كُلَّمَاۤ اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَ يَسْعَوْنَ فِی الْاَرْضِ فَسَادًا ؕ وَ اللّٰهُ لَا یُحِبُّ الْمُفْسِدِیْنَ ﴿۶۴﴾ (پ٦، المائدة:٦٤)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** जब कभी लड़ाई की आग भड़काते हैं **अल्लाह** उसे बुझा देता है और ज़मीन में फ़साद के लिये दौड़ते फिरते हैं और **अल्लाह** फ़सादियों को नहीं चाहता ।(1)

## यहूदी ग़ुलाम और राफ़िज़ी सरदार की तौबा :

सालिह़ीने उम्मत में से एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं एक क़ाफ़िले के साथ अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की क़ब्रे अक़्दस की ज़ियारत के लिये निकला तो हम ने मुअ़ज़्ज़ज़ अ़-लवी सरदारों में से एक सरदार के पास क़ियाम किया, उस का एक यहूदी ख़ादिम था जो उस की दाख़िली व ख़ारिजी ख़िदमत पर मा'मूर था, हमारे और उस सरदार के दरमियान तआ़रुफ़ कराने वाला मेरा एक हाशिमी दोस्त था । उस सरदार ने हमारी इ़ज़्ज़त व तक्रीम की और ख़ूब हुस्ने सुलूक से पेश आया । मेरे हाशिमी दोस्त ने उस

---

1 ......العِقْد الفَرِيد لابن عبد ربه الأندلسى، كتاب الياقوتة فى العلم والادب، الرافضة والشعبى، ج٢، ص٢٥٠۔



www.dawateislami.net

से कहा : "ऐ सरदार ! बेशक आप के तमाम मुआ-मलात बहुत अच्छे हैं, आप शराफ़त व मुरव्वत और करम की सिफ़ात के जामेअ़ हैं, मगर आप का इस यहूदी से ख़िदमत लेना हमें अच्छा नहीं लगा ह़ालां कि वोह आप के और आप के दादा के दीन का मुख़ालिफ़ है।" तो सरदार ने जवाब दिया : "मैं ने कसीर ग़ुलाम और लौंडियां ख़रीदीं लेकिन उन में से किसी को अपनी त़लब के मुत़ाबिक़ न पाया और न ही मैं ने उन में से किसी में इस यहूदी की मिस्ल अमानत और ख़ैर ख़्वाही की सिफ़त पाई जो मेरे तमाम ज़ाहिरी व बात़िनी उमूर सर अन्जाम देता है और इस में अमानत और क़नाअ़त की सिफ़त भी पाई जाती है।"

ह़ाज़िरीन में से किसी ने कहा : "ऐ सरदार ! जब येह इस सिफ़त से मुत्तसिफ़ है तो इसे इस्लाम की दा'वत पेश करें, शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप के ज़रीए इसे हिदायत अ़त़ा फ़रमा दे।" तो उस ने किसी को उसे बुलाने के लिये भेजा, उस ग़ुलाम ने आ कर अ़र्ज़ की : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं जानता हूं कि आप लोगों ने मुझे किस लिये बुलाया है।" तो एक शख़्स ने कहा : "ऐ यहूदी ! बेशक येह सरदार जिस के तुम ख़िदमत गुज़ार हो, इस के फ़ज़्ल, सरदारी और बुज़ुर्गी को तुम जानते हो और वोह तुम से मह़ब्बत करता है और तेरी अमानत और अच्छी ज़िम्मेदारी अदा करने की ता'रीफ़ करता है।" तो यहूदी ने जवाब दिया : "और मैं भी इन से मह़ब्बत करता हूं।" हम ने उस से कहा : "तो फिर तुम दीन में इस की पैरवी क्यूं नहीं कर लेते और इस्लाम क्यूं नहीं क़बूल कर लेते ?"

वोह यहूदी बोला : "ऐ गुरौहे सालिह़ीन ! मेरा अ़क़ीदा है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़ज़ैर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام एक करीम नबी हैं और इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी एक करीम नबी हैं, अगर मैं जानता कि यहूदी अपने नबी की बीवी पर तोहमत लगाते हैं और उस के बाप को गालियां देते हैं तो उन के दीन की पैरवी न करता, लिहाज़ा अगर मैं मुसल्मान हो जाऊं तो किस की पैरवी करूंगा ?"

हम ने उसे कहा : "इस सरदार की पैरवी करना जिस की ख़िदमत में हो।" येह सुन कर यहूदी ने कहा : "मैं अपने लिये येह पसन्द नहीं करता।" हम ने पूछा : "क्यूं ?" तो उस ने कहा : "इस लिये कि येह सरदार अपने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ौजए मोह़-त-रमा उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के मु-तअ़ल्लिक़ बुरा भला कहता है और उन के वालिदे माजिद अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते


www.dawateislami.net

सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को गालियां देता है, पस मैं अपने लिये येह पसन्द नहीं करता कि ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीन की पैरवी भी करूं और उन की ज़ौजए मोह़-त-रमा पर तोहमत भी लगाऊं और उन के सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को भी गालियां दूं, लिहाज़ा मैं ने अपने दीन को इस सरदार के दीन से बेहतर समझा।''

सरदार (येह सुन कर) एक लम्ह़े के लिये ग़ुस्से से ख़ामोश हो गया, फिर यहूदी की सच्ची बात को जान कर एक घड़ी के लिये अपना सर ज़मीन की त़रफ़ झुका लिया और फिर बोला : ''तू ने सच कहा, अपना हाथ बढ़ा, मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और रसूल हैं और मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उस से तौबा करता हूं जो मैं कहता था और जो अ़क़ीदा रखता था।'' फिर यहूदी ने भी कहा कि मैं भी गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और रसूल हैं और दीने इस्लाम के इ़लावा हर दीन बात़िल है।

उस यहूदी ने अच्छी त़रह़ इस्लाम क़बूल कर लिया और सरदार ने भी **बद मज़्हबिय्यत** से तौबा कर ली और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तौफ़ीक़ और हिदायत से उस की तौबा बड़ी ख़ूब थी।(1)

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी रिज़ा ह़ासिल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और अपने प्यारे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़दीसे पाक और सुन्नते मुबा-रका पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, बेशक वोह जव्वादो करीम और रऊफ़ो रह़ीम है।

मज़्कूरा सरदार भी मुसल्मान हो गया क्यूं कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को गालियां देना बिल इज्माअ़ कुफ़्र है, इस लिये कि इस में क़ुरआने करीम की उन आयाते मुक़द्दसा की तक्ज़ीब है जो मुनाफ़िक़ीन के आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर तोहमत लगाने की वज्ह से उन के रद में नाज़िल हुई थीं। इसी त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के वालिदे माजिद के सह़ाबी होने का इन्कार भी बिल इज्माअ़ कुफ़्र है क्यूं कि इस में भी क़ुरआने पाक की तक्ज़ीब है, चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

(1)......النهى عن سب الأصحاب وما فيه من الإثم والعقاب، الرقم ٥٧، ص ٤٠۔



www.dawateislami.net

اِذۡ یَقُوۡلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحۡزَنۡ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ (پ ۱۰، التوبہ:۴۰)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** जब अपने यार से फ़रमाते थे ग़म न खा बेशक **अल्लाह** हमारे साथ है।

## उम्मुल मुअमिनीन को सब्बो शत्म करने वाले का हुक्म :

बहुत से उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को गाली देने वाले को क़त्ल करने का फ़तवा दिया।

इसी वज्ह से ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** हमदानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं कि मैं एक दिन त़-बरिस्तान में ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन यज़ीद दाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی की ख़िदमत में ह़ाज़िर था, वोह सूफ़ का लिबास पहनते, नेकी का हुक्म देते और बुराई से मन्अ़ फ़रमाते थे और हर साल बग़दाद में 20 हज़ार दीनार भेजा करते जो वहां मौजूद मुख़्तलिफ़ सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की औलाद पर तक़्सीम करते, एक दफ़्आ़ उन के पास एक शख़्स ने आ कर उम्मुल मुअनिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का बुराई के साथ तज़्किरा किया तो ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन यज़ीद दाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی ने अपने ग़ुलाम से कहा : "ऐ ग़ुलाम ! उठ और इस की गरदन मार दे।" तो अ़-लवी उस की त़रफ़ दौड़ पड़े और कहा कि येह शख़्स हमारे शीओ़ं में से है। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "येह शख़्स दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर त़ा'न करता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اَلۡخَبِيۡثٰتُ لِلۡخَبِيۡثِيۡنَ وَالۡخَبِيۡثُوۡنَ لِلۡخَبِيۡثٰتِ ۚ وَ الطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيۡنَ وَالطَّيِّبُوۡنَ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوۡنَ مِمَّا يَقُوۡلُوۡنَ ؕ (پ۱۸، النور:۲۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** गन्दियां गन्दों के लिये और गन्दे गन्दियों के लिये और सुथरियां सुथरों के लिये और सुथरे सुथरियों के लिये वोह पाक हैं उन बातों से जो येह कह रहे हैं।

अगर (نَعُوْذُ بِاللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ) उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ख़बीस हों तो इन के शोहर भी ख़बीस क़रार पाएंगे ह़ालां कि ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता, बल्कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم न सिर्फ़ पाको साफ़ हैं बल्कि तमाम मख़्लूक़ से ज़ियादा पाकीज़ा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सब मख़्लूक़ से ज़ियादा मुकर्रम हैं और उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا भी त़य्यिबा, त़ाहिरा और ला'न त़ा'न से बरी हैं। (फिर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दोबारा अपने ग़ुलाम को हुक्म दिया) ऐ ग़ुलाम ! उठ और इस काफ़िर की



www.dawateislami.net

गरदन उड़ा दे।" चुनान्चे गुलाम ने उस शख़्स की गरदन उड़ा दी।(1)

## उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के फ़ज़ाइल :

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़द द-रजा ख़साइले ह़मीदा की वज्ह से मुमताज़ हैसिय्यत रखती हैं : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से शादी से पहले हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ाति़र ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सूरत अपनी हथेली में ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए।(2)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के इ़लावा किसी कुंवारी औ़रत से शादी न की।(3)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के इ़लावा किसी ऐसी औ़रत से शादी न की, कि जिस के मां बाप दोनों ने हिजरत की हो।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से मह़बूब ज़ौजा हैं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के वालिदे गिरामी बारगाहे मुस्त़फ़ा में सह़ाबए किराम में सब से मुअ़ज़्ज़ज़ व मुकर्रम और अफ़्ज़ल हैं।(4)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के लिह़ाफ़ के इ़लावा किसी ज़ौजए मोह़-त-रमा के पास वह़्य नहीं आई।(5)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर त़ा'न करने वालों के रद में आस्मान से आप की बराअत नाज़िल हुई।(6)

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपनी बारी का दिन

---

1 ......السيرة الحلبية للنور الدين الحلبي، غزوة بني المصطلق، ج۲،ص ۴۱۱۔

2 ......مسند ابی یعلی الموصلی، مسند عائشة، الحديث:۴۶۰۶،ج۴،ص۱۵۸ ۔

3 ......صحيح البخاری، کتاب النکاح، باب نکاح الأبکار، الحديث:۵۰۷۷،ص۴۳۹۔

4 ......المعجم الکبير،الحديث:۷۴،ج۲۳،ص۳۰۔

صحيح البخاری، کتاب المناقب،باب قول النبی لو کنت متخذاخليلا،الحديث:۳۶۶۲،ص۲۹۸۔

5 ......سنن النسائی، کتاب عشرة النساء، باب حب الرجل بعض نسائه أکثر من بعض، الحديث:۳۴۰۲،ص۲۳۰۸۔

6 ......صحيح البخاری، کتاب التفسير، سورة النور، الحديث:۴۷۵۰،ص۴۰۰، ۴۰۱، مفهوماً۔



www.dawateislami.net

और रात आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को हिबा कर दिया और बाक़ी उम्महातुल मुअमिनीन के सिवा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के लिये बारी के दो दिन और दो रातें होती थीं ।(1)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا नाराज़ हो जातीं तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप को राज़ी फ़रमाते ।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के सीनए अत़्हर के साथ लगे होने की ह़ालत में और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ही की बारी के दिन सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल हुवा । सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी दीगर अज़्वाजे मुत़ह्हरात से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर में बीमारी के अय्याम गुज़ारने की इजाज़त ले चुके थे लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल इन की बारी और ह़क़ के मुवाफ़िक़ दिन ही हुवा ।(2)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के (दुन्या से पर्दा फ़रमाने के) आख़िरी लम्ह़ात में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का लुआबे दहन इन के लुआब के साथ मिल गया था ।(3)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन ही के घर में दफ़्न हुए ।(4)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा किसी ज़ौजए मोह़-त-रमा ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से अह़ादीसे मुबा-रका रिवायत नहीं कीं ।

दीगर अज़्वाजे मुत़ह्हरात के उ़लूम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के इ़ल्म का एक क़त़रा भी नहीं हो सकते क्यूं की आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से 2200 अह़ादीसे मुबा-रका रिवायत कीं । (एक क़ौल के मुत़ाबिक़ : 2210 अह़ादीस)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पाकीज़ा ह़ालत में और पाकों के हां पैदा हुईं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मग़्फ़िरत और बेहतरीन रिज़्क़ का वा'दा किया गया ।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ''हम सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को किसी ह़दीसे पाक में इश्काल होता तो उस के मु-तअ़ल्लिक़ उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से दरयाफ़्त करते तो उन के पास

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الھبة، باب ھبة المرأة لغیر زوجھا......الخ، الحدیث:۲۵۹۳،ص ۲۰۴۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی ووفاتہ، الحدیث:۴۴۴۲،۴۴۵۰،ص ۳۶۵۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی ووفاتہ، الحدیث:۴۴۴۲،۴۴۵۰،ص ۳۶۵۔

4 ......المُوَطّأ للامام مالک ،کتاب الجنائز، باب ما جاء فی دفن المیت، الحدیث:۵۵۷،ج ۱،ص ۲۱۶۔



www.dawateislami.net

उस का इ़ल्म पाते।''(1)

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا कुशादा रू और बिला तकल्लुफ़ बहुत ज़ियादा करम करने वाली थीं।

एक दफ़्आ़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने मोह़ताजों में 70 हज़ार (दराहिम या दीनार) तक़्सीम फ़रमा दिये ह़ालां कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا की क़मीस पर पैवन्द लगे हुए थे।

आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इन से मह़ब्बत का शोहरा आ़म हुवा तो लोग इन की बारी के दिन अपने तह़ाइफ़ देने का इन्तिज़ार किया करते यहां तक कि दीगर अज़्वाजे मुत़ह्हरात में से चन्द एक को येह बात शाक़ गुज़री और उन्हों ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की साह़िब ज़ादी ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ाति़-मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا वग़ैरा की ज़बान से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه की साह़िब ज़ादी के ह़वाले से बराबरी का मुत़ा-लबा किया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस के इ़लावा कोई जवाब न दिया कि ''मुझे आ़इशा के मु-तअ़ल्लिक़ अज़िय्यत न दो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझ पर इस के इ़लावा तुम में से किसी के बिस्तर में वह्‌य नाज़िल न हुई।''(2)

इसी वज्ह से शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह भी इर्शाद फ़रमाया : ''औ़रतों पर आ़इशा की फ़ज़ीलत ऐसे ही है जैसे सरीद की तमाम खानों पर।''(3)

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا की आंखों से ह़िजाब उठाया गया तो उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام को देखा और ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की, कि ''इन्हें मेरा सलाम कह दीजिये।'' तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام हैं जो तुम्हें सलाम कह रहे हैं।''(4)

किसी शाइ़र का येह क़ौल कितना अच्छा है :

---

1 ......جامع الترمذی، ابواب المناقب، باب من فضل عائشة، الحدیث:۳۸۸۳،ص۲۰۴۹۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب فضل عائشة، الحدیث:۳۷۷۵،ص۳۰۷۔

سنن النسائی، کتاب عشرة النساء، باب حب الرجل......الخ، الحدیث:۳۳۹۸، ۳۴۰۲،ص۲۳۰۸۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب فضل عائشة، الحدیث:۳۷۷۰،ص۳۰۶۔

4 ......المستدرک، کتاب معرفة الصحابة، باب رؤیة عائشة جبریل، الحدیث:۶۷۸۲، ج۵،ص۹۔



www.dawateislami.net

وَلَوْ كَانَ النِّسَاءُ كَمَنْ ذَكَرْنَا        لَفُضِّلَتِ النِّسَاءُ عَلَى الرِّجَال

**तरजमा :** और अगर औरतें उस शख़्सिय्यत की त़रह़ होतीं जिस का हम ने तज़्किरा किया तो औरतों को मर्दों पर फ़ज़ीलत दी जाती।

فَمَا التَّانِيْثُ لِاِسْمِ الشَّمْسِ عَيْبٌ        وَلَا التَّذْكِيْرُ فَخْرٌ لِّلْهِلَال

**तरजमा :** कि सूरज के नाम का मुअन्नस होना इस के लिये कोई ऐब की बात नहीं और न ही मुज़क्कर होना चांद के लिये कोई क़ाबिले फ़ख़्र बात है।

# كتاب الدعاوى

## कबीरा नम्बर 466 : दूसरे की चीज़ पर नाह़क़ दा'वा करना

ह़दीसे पाक में है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने किसी ऐसी चीज़ का दा'वा किया जो उस की नहीं थी तो वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।''(1)

येह एक इन्तिहाई शदीद वई़द है और इस से वाज़ेह़ होता है कि येह कबीरा गुनाह है अगर्चे मैं ने किसी को इस की तसरीह़ करते हुए नहीं पाया।

# كتاب العتق

**( अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें जहन्नम से नजात अ़त़ा फ़रमा कर अपने पसन्दीदा और बरगुज़ीदा बन्दों में से बना दे। आमीन )**

## कबीरा नम्बर 467 : बिला जवाज़े शर-ई आज़ाद शुदा ग़ुलाम से ख़िदमत लेना

**किसी शर-ई जवाज़ के बिग़ैर आज़ाद शुदा ग़ुलाम से ख़िदमत लेना कबीरा गुनाह है इस त़रह़ कि इन्सान ह़क़ीक़तन उसे आज़ाद कर दे लेकिन लगातार उस से ख़िदमत लेता रहे**

इसे कबीरा गुनाह शुमार करना वाज़ेह़ है अगर्चे मैं ने किसी को इस की तसरीह़ करते हुए नहीं देखा और आज़ाद को ग़ुलाम बनाने के मु-तअ़ल्लिक़ गुज़श्ता शदीद वई़द इसे भी शामिल है।

❁❁❁❁❁❁❁

1 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان حال الایمان من......الخ، الحدیث:۱۱۲، ص۶۹۱۔



www.dawateislami.net

# خاتمہ

## किताब के आख़िर में येह ख़ातिमा चार अहम बातों के बयान में है

## ﴾1﴿...... तौबा का बयान :

## कुरआने पाक में तौबा के फ़ज़ाइल :

जान लीजिये ! तौबा के मु-तअ़ल्लिक़ बहुत सी आयात वारिद हैं जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

وَتُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ جَمِیْعًا اَیُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۳۱﴾

(پ۱۸، النور:۳۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** की त़रफ़ तौबा करो ऐ मुसल्मानो ! सब के सब इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह़ पाओ।

दूसरे मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया :

وَ الَّذِیْنَ لَا یَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَ لَا یَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِیْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَ لَا یَزْنُوْنَ ۚ وَ مَنْ یَّفْعَلْ ذٰلِكَ یَلْقَ اَثَامًا ﴿۶۸﴾ یُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وَ یَخْلُدْ فِیْهٖ مُهَانًا ﴿۶۹﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ وَ اٰمَنَ وَ عَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓىِٕكَ یُبَدِّلُ اللّٰهُ سَیِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا ﴿۷۰﴾ وَ مَنْ تَابَ وَ عَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ یَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ﴿۷۱﴾

(پ۱۹، الفرقان:۶۸تا۷۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जो **अल्लाह** के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पूजते और उस जान को जिस की **अल्लाह** ने हुरमत रखी नाह़क़ नहीं मारते और बदकारी नहीं करते और जो येह काम करे वोह सज़ा पाएगा बढ़ाया जाएगा उस पर अ़ज़ाब क़ियामत के दिन और हमेशा उस में ज़िल्लत से रहेगा मगर जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा काम करे तो ऐसों की बुराइयों को **अल्लाह** भलाइयों से बदल देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है और जो तौबा करे और अच्छा काम करे तो वोह **अल्लाह** की त़रफ़ रुजूअ़ लाया जैसी चाहिये थी।

## अह़ादीसे मुबा-रका में तौबा के फ़ज़ाइल :

तौबा के फ़ज़ाइल में कसीर ता'दाद में अह़ादीसे मुबा-रका भी मरवी हैं। चुनान्चे,

﴾1﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रात के वक़्त अपना दस्ते क़ुदरत फैलाए रखता है ताकि दिन को गुनाह करने वाला तौबा कर ले और दिन के वक़्त अपना दस्ते क़ुदरत फैलाए रखता है



www.dawateislami.net

ताकि रात को गुनाह करने वाला तौबा कर ले यहां तक कि सूरज मग़रिब से तुलूअ़ हो।''(1)

## तौबा का दरवाज़ा :

﴾2﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''मग़रिब की जानिब एक दरवाज़ा है जिस की चौड़ाई 40 या 70 साल की मसाफ़त है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे उस दिन से तौबा के लिये खोल रखा है जिस दिन से ज़मीन व आस्मान को पैदा फ़रमाया। वोह उसे बन्द नहीं फ़रमाएगा यहां तक कि उस त़रफ़ से सूरज तुलूअ़ हो।''(2)

﴾3﴿...... सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मग़रिब की जानिब तौबा के लिये एक दरवाज़ा बना रखा है कि जिस की चौड़ाई 70 साल की मसाफ़त है, वोह दरवाज़ा उस वक़्त तक बन्द न होगा जब तक कि सूरज उस की त़रफ़ से तुलूअ़ न हो और इस के मु-तअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

يَوْمَ يَاْتِیْ بَعْضُ اٰیٰتِ رَبِّكَ لَا یَنْفَعُ نَفْسًا اِیْمَانُهَا
(پ۸، الانعام:۱۵۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** जिस दिन तुम्हारे रब की वोह एक निशानी आएगी किसी जान को ईमान लाना काम न देगा।(3)

**ए'तिराज़ :** बा'ज़ ने कहा है कि साबिक़ा दोनों रिवायात के मरफ़ूअ़ होने की तसरीह़ नहीं, जैसा कि इमाम बैहक़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 458 हि.) ने इस की तसरीह़ बयान की है ?

**जवाब :** येह एक ऐसी बात है जो अपनी राय से नहीं कही जा सकती, लिहाज़ा येह मरफ़ूअ़ के हुक्म में है।

﴾4﴿...... रह़मते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जन्नत के 8 दरवाज़े हैं, 7 बन्द हैं और एक दरवाज़ा तौबा के लिये खुला हुवा है यहां तक कि सूरज उस की त़रफ़ से तुलूअ़ हो।''(4)

﴾5﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''अगर तुम इतने गुनाह करो कि वोह आस्मान तक पहुंच जाएं फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तौबा करो

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب التوبة، باب قَبُولِ التَّوْبَةِ مِنَ الذُّنُوبِ وَإِنْ تَكَرَّرَتِ الذُّنُوبُ وَالتَّوْبَةُ، الحدیث:۲۹۸۹، ص۱۱۵۲۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث صفوان بن عسال المرادی، الحدیث:۱۸۱۱۸، ج۶، ص۳۱۷۔

3 ......جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب ما جاء فی فضل التوبة......الخ، الحدیث:۳۵۳۶، ص۲۰۱۵۔

4 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۱۰۴۷۹، ج۱۰، ص۲۰۶۔



www.dawateislami.net

तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़रूर तुम्हारी तौबा क़बूल फ़रमाएगा।''(1)

﴾6﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''इन्सान के लिये सआ़दत है कि उस की उ़म्र त़वील हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे तौबा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।''(2)

﴾7﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तमाम बनी आदम ख़त़ाकार हैं और बेहतरीन ख़त़ाकार तौबा करने वाले हैं।''(3)

﴾8﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''एक बन्दे ने गुनाह किया फिर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : ''ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मैं गुनाह कर बैठा हूं पस मुझे बख़्श दे।'' तो उस के रब عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरा बन्दा जानता है कि इस का एक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ है जो गुनाहों को मुआ़फ़ करता और इन पर मुआ-ख़ज़ा भी फ़रमाता है, लिहाज़ा मैं ने अपने बन्दे को बख़्श दिया।'' फिर जब तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा वोह गुनाहों से रुका रहा, दोबारा गुनाह का इरतिकाब कर के अ़र्ज़ की : ''ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं दोबारा गुनाह कर बैठा हूं पस मुझे बख़्श दे।'' तो उस के रब عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरा बन्दा जानता है कि इस का एक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ है जो गुनाहों को बख़्शता और इन पर मुआ-ख़ज़ा भी फ़रमाता है, लिहाज़ा मैं ने अपने बन्दे को बख़्श दिया।'' इस के बा'द जब तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा वोह बन्दा गुनाहों से रुका रहा फिर उस से गुनाह सरज़द हुवा तो अ़र्ज़ की : ''ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं फिर गुनाह कर बैठा हूं पस मुझे बख़्श दे।'' तो उस के रब عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरा बन्दा जानता है कि इस का एक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ है जो गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमाता और इन पर पकड़ भी फ़रमाता है लिहाज़ा मैं ने अपने बन्दे को बख़्श दिया, पस जो चाहे करे।''(4)

## ह़दीसे पाक की वज़ाह़त :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़किय्युद्दीन अ़ब्दुल अ़ज़ीम मुन्ज़िरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि ''فَلْيَعْمَلْ مَا شَآءَ'' का मफ़्हूम येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जानता है कि जब भी उस से गुनाह का

---

(1)......سنن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب ذکر التوبة، الحديث:۴۲۴۸،ص۲۷۳۵۔

(2)......المستدرک،کتاب التوبة والإنابة، باب من سعادة المرء......الخ، الحديث:۷۶۷۶،ج۵،ص ۳۴۱۔

(3)......جامع الترمذی، ابواب صفة القيامة، باب فی استعظام المؤمن ذنوبه، الحديث:۲۴۹۹،ص۱۹۰۳۔

(4)......صحيح البخاری،کتاب التوحيد، بَاب قَوْلِ اللّٰهِ تَعَالٰی(يُرِيدُونَ اَنْ يُبَدِّلُوا......الخ)، الحديث:۷۵۰۷، ص۶۲۵۔
شعب الايمان للبيهقی، باب فی معالجة کل ذنب بالتوبة، الحديث:۷۰۸۷،ج۵،ص۴۰۵۔



www.dawateislami.net

इरतिकाब हुवा तो वोह इस्तिग़्फ़ार कर के उस से ताइब हो जाएगा और उस गुनाह की त़रफ़ दोबारा न पलटेगा। इस की दलील येह क़ौल है कि ''ثُمَّ اَصَابَ ذَنْباً آخَرَ'' या'नी फिर वोह किसी दूसरे गुनाह में मुब्तला हो गया, पस जब उस की आ़दत ही येह है तो जो चाहे करे क्यूं कि वोह जब भी गुनाह का मुर-तकिब होगा तो उस की तौबा और इस्तिग़्फ़ार उस के गुनाह का कफ़्फ़ारा बन जाएगा, पस वोह गुनाह उसे नुक़्सान नहीं देगा। इस का मत़लब येह नहीं कि गुनाह कर के उसे छोड़े बिग़ैर सिर्फ़ ज़बान से तौबा व इस्तिग़्फ़ार करता रहे और फिर उसी गुनाह का दोबारा इरतिकाब भी करे क्यूं कि येह तो झूटों की तौबा है।(1)

ह़दीसे पाक में है कि ''बेशक मोमिन जब गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक़्त़ा बन जाता है। अगर वोह तौबा कर ले और गुनाह छोड़ दे और मग़्फ़िरत चाहे तो उस सियाही को मिटा दिया जाता है और अगर वोह गुनाहों में ज़ियादती करे तो वोह सियाही भी बढ़ती जाती है यहां तक कि उस के दिल को ढांप लेती है, येही वोह رَان (या'नी ज़ंग) है जिस का ज़िक्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी किताब में यूं फ़रमाया :

كَلَّا بَلْ ٜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۴﴾
(پ۳۰، المطففين:۱۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** कोई नहीं बल्कि इन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है इन की कमाइयों ने।(2)

﴾9﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे की तौबा क़बूल फ़रमाता है, ग़र-ग़रे से पहले।''(3) (4)

---

1......الترغيب والترهيب، كتاب التوبة والزهد، باب الترغيب فى التوبة......الخ، تحت الحديث:۴۸۱۰، ج۴، ص۷۔

2......سنن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب ذكرالذنوب، الحديث:۴۲۴۴، ص۲۷۳۴۔

شعب الايمان للبيهقى، باب فى معالجة كل ذنب بالتوبة، الحديث:۷۲۰۳، ج۵، ص۴۴۰۔

3......جامع الترمذى، كتاب الدعوات، باب اِنَّ اللّٰهَ يَقْبَلُ تَوْبَةَ الْعَبْدِ مَا لَمْ يُغَرْغِرْ، الحديث:۳۵۳۷، ص۲۰۱۶۔

4...... मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 3, सफ़ह़ा 365 पर इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : ''नज़्अ़ की ह़ालत को जब मौत के फ़रिश्ते नज़र आ जाएं ग़र-ग़रा कहते हैं, उस वक़्त कुफ़्र से तौबा क़बूल नहीं क्यूं कि ईमान के लिये ईमान बिलग़ैब ज़रूरी है अब ग़ैब मुशा-हदा में आ गया, इसी लिये डूबते वक़्त फ़िरऔ़न की तौबा क़बूल न हुई, मगर गुनाहों से तौबा उस वक़्त भी क़बूल है, अगर तौबा का ख़याल आ जाए और अल्फ़ाज़े तौबा बन पड़ें। इसी लिये मिरक़ात ने यहां फ़रमाया कि अ़ब्द......



www.dawateislami.net

## हज़रते सय्यिदुना मुआज़ को वसिय्यत :

﴾10﴿...... हज़रते सय्यिदुना मुआज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा हाथ पकड़ा और मील भर पैदल चलते रहे। फिर इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ मुआज़ ! मैं तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने, सच्ची बात कहने, अ़हद पूरा करने, अमानत अदा करने, ख़ियानत छोड़ने, यतीम पर रह़म करने, पड़ोसी का ख़याल रखने, ग़ुस्सा पीने, नर्म गुफ़्त-गू करने, सलाम को आ़म करने, इमाम की इताअ़त करने, क़ुरआने करीम में ग़ौरो फ़िक्र करने, आख़िरत से मह़ब्बत करने, ह़िसाब से डरने, उम्मीदें कम करने और अच्छा अ़मल करने की वसिय्यत करता हूं और इस बात से मन्अ़ करता हूं कि तू किसी मुसल्मान को गाली दे या झूटे शख़्स की तस्दीक़ करे या सच्चे शख़्स को झुटलाए या आ़दिल इमाम की ना फ़रमानी करे और येह कि ज़मीन में फ़साद बरपा करे और ऐ मुआज़ ! हर शजर व ह़जर के पास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया करो और हर गुनाह से तौबा करो, पोशीदा गुनाह की पोशीदा और ए'लानिया की ए'लानिया।''(1)

## गुनाहों की मग़्फ़िरत :

﴾11﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जब बन्दा अपने गुनाहों से तौबा कर लेता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के मुहाफ़िज़ फ़रिश्तों और उस के आ'ज़ा को उस के गुनाह भुला देता है और ज़मीन पर से उस के गुनाहों के निशानात भी मिटा देता है यहां तक कि वोह क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उस पर उस के गुनाहों का कोई गवाह न होगा।''(2)

---

...... से मुराद बन्दा काफ़िर है कि ग़र-ग़रा के वक़्त उस की तौबा क़बूल नहीं, रब तआ़ला फ़रमाता है : حَتّٰۤی اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ اِنِّیْ تُبْتُ الْـٰٔنَ.. الـخ बा'ज़ उ़-लमा ने फ़रमाया कि म-लकुल मौत हर मरने वाले को नज़र आते हैं मोमिन हो या काफ़िर, ख़याल रहे कि क़ब्ज़े रूह़ पाउं की त़रफ़ से शुरूअ़ होता है ताकि बन्दे की इस ह़ालत में दिल व ज़बान चलते रहें गुनहगार तौबा कर लें कहा सुना मुआ़फ़ करा लें। कोई वसिय्यत करनी हो तो कर लें येह भी ख़याल रहे कि ग़र-ग़रा के वक़्त गुनाहों से तौबा के मा'ने हैं गुज़श्ता गुनाहों पर शरमिन्दा हो जाना, अब आयिन्दा गुनाह न करने का अ़हद बेकार है कि अब तो दुन्या से जा रहा है, गुनाह का वक़्त ही न पा सकेगा, मगर येह तौबा उस वक़्त की क़बूल है कि रब तआ़ला ग़फ़्फ़ार है।

1 ......الزهد الكبير للبيهقي، باب الورع والتقوى، الحديث: ٩٥٦، ص ٣٤٧ ـ

2 ......تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر، الرقم ١٤٩٢ الحسين بن احمد بن سلمة، الحديث: ٣٣٥٣، ج ١٤، ص ١٧ ـ



www.dawateislami.net

﴾12﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : "गुनाह पर नादिम होने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से रह़मत का इन्तिज़ार करता है और गुनाह पर इतराने (या'नी नादिम न होने) वाला नाराज़ी का इन्तिज़ार करता है और ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! याद रखो ! अ़न्क़रीब हर (अच्छा या बुरा) अ़मल करने वाला अपने अ़मल की बिना पर आगे बढ़ेगा और दुन्या से जाने से पहले अपने अच्छे और बुरे अ़मल का बदला देख लेगा **और आ'माल का दारो मदार ख़ातिमों पर है** और दिन और रात दो सुवारियां हैं लिहाज़ा इन के ज़रीए आख़िरत की त़रफ़ अच्छा सफ़र इख़्तियार करो और तौबा में ताख़ीर करने से बचो, क्यूं कि मौत अचानक आ जाती है और तुम में से कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़िल्म (या'नी बुर्द-बारी) से हरगिज़ धोके में न रहे, बेशक आग तुम में से हर एक के जूते के तस्मे से भी ज़ियादा क़रीब है।" फिर शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝ (پ ۳۰،الزلزال:۷،۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा।[1]

﴾13﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ या'नी गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे उस ने गुनाह किया ही नहीं।"[2]

﴾14﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "गुनाह पर क़ाइम रहते हुए उस गुनाह से इस्तिग़्फ़ार करने वाला अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मज़ाक़ करने वाले की त़रह़ है।"[3]

## गुनाहों पर नदामत का नाम तौबा है :

﴾15﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "اَلنَّدَمُ تَوْبَةٌ या'नी (गुनाह पर) नादिम होना ही तौबा है।"[4]

---

1 ......الترغيب والترهيب، كتاب التوبة والزهد، باب الترغيب فى التوبة، الحديث:٤٨١٦،ج٤،ص٩ـ

2 ......سنن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب ذكر التوبة، الحديث:٤٢٥٠،ص٢٧٣٥ـ

3 ......شعب الايمان للبيهقى، باب فى معالجة كل ذنب بالتوبة، الحديث:٧١٧٨،ج٥،ص٤٣٦ـ

4 ......سنن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب ذكر التوبة، الحديث:٤٢٥٢،ص٢٧٣٥ـ



www.dawateislami.net

## ह़दीसे पाक की वज़ाह़त :

या'नी शरमिन्दगी व नदामत तौबा के बड़े अरकान में से है जैसा कि एक ह़दीसे पाक में है कि "ह़ज वुकूफ़े अ़रफ़ा का नाम है।"(1) और नदामत में ज़रूरी है कि वोह ना फ़रमानी, उस की क़बाह़त और आख़िरत के ख़ौफ़ की वज्ह से हो और मह़ज़ बे इ़ज़्ज़ती या गुनाह में माल ज़ाएह़ होने की वज्ह से न हो।

﴾16﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे के गुनाह पर नादिम होने को मुला-ह़ज़ा फ़रमा कर उस के तौबा करने से पहले ही उसे मुआ़फ़ फ़रमा देता है।"(2)

﴾17﴿...... सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! अगर तुम गुनाह नहीं करोगे और मुआ़फ़ी त़लब न करोगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें ले जाएगा और तुम्हारी जगह ऐसे लोग ले आएगा जो गुनाह करेंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस्तिग़फ़ार करेंगे तो वोह उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा देगा।"(3)

﴾18﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ज़ियादा किसी को अपनी ता'रीफ़ पसन्द नहीं, इसी वज्ह से उस ने अपनी ता'रीफ़ बयान फ़रमाई और न ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ज़ियादा कोई ग़ैरत वाला है, इसी वज्ह से उस ने बे ह़याइयों को ह़राम फ़रमा दिया और न ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बढ़ कर कोई मा'ज़िरत क़बूल करने वाला है, इसी वज्ह से उस ने अपनी किताब नाज़िल फ़रमाई और रसूलों को भेजा।"(4)

## ज़ानी औ़रत की तौबा :

﴾19﴿...... जुहैना क़बीले की एक औ़रत सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में इस ह़ालत में ह़ाज़िर हुई कि वोह ज़िना की वज्ह से ह़ामिला थी, उस ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने ऐसा जुर्म किया है कि जिस पर ह़द है, लिहाज़ा मुझ पर ह़द क़ाइम फ़रमाएं।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

---

(1)......جامع الترمذی، ابواب الحج، باب ما جاء فی من أدرک..الخ، الحدیث:٨٨٩،ص١٧٣٥۔

(2)......المستدرک، کتاب التوبة والإنابة، باب ما علم اللّٰه من عبد ندامة علی..الخ،الحدیث:٧٧٢١،ج٥،ص٣٦٠۔

(3)......صحیح مسلم، کتاب التوبة، باب سقوط الذنوب..الخ،الحدیث:٢٩٦٥،ص١١٥۴، دون قوله:وتستغفروا،غیرکم۔

(4)......المرجع السابق،باب غیرة اللّٰه تعالٰی وتحریم الفواحش، الحدیث:٢٩٩۴،ص١١٥٦۔



www.dawateislami.net

ने उस के वली को बुलवा कर इर्शाद फ़रमाया : ''इस के साथ अच्छा सुलूक करो, जब वज़्ए ह़म्ल हो जाए तो इसे मेरे पास ले आना।'' पस ऐसा ही किया गया। हुक्म फ़रमाया तो उस के कपड़े बांध दिये गए फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म पर उसे रज्म किया गया, इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप इस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ रहे हैं ह़ालां कि इस ने ज़िना किया है ?'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इस ने ऐसी तौबा की है कि अगर अहले मदीना के 70 लोगों में तक़्सीम कर दी जाए तो सब को काफ़ी हो जाए और क्या तुम ने इस से अफ़्ज़ल किसी को पाया है कि जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये अपनी जान कुरबान कर दी।''(1)

## फ़ाजिर की तौबा :

﴾20﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को एक वाक़िआ़ बयान फ़रमाते सुना, अगर मैं ने एक दो दफ़्आ़ यहां तक कि 7 मर्तबा भी सुना होता (तो बयान न करता) लेकिन मैं ने इस से भी ज़ियादा मर्तबा सुना है, मैं ने हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : ''बनी इसराईल में किफ़्ल नामी एक शख़्स था जो किसी गुनाह से नहीं बचता था, उस के पास एक (मजबूर) औ़रत आई तो उस ने उसे 60 दीनार इस शर्त़ पर दिये कि वोह उस के साथ ज़िना करेगा, पस जब वोह उस से बदकारी करने के लिये बैठा तो वोह औ़रत कांपने और रोने लगी, उस ने पूछा : ''तुझे किस चीज़ ने रुलाया है ? क्या मैं ने तुझे मजबूर किया ?'' तो औ़रत ने जवाब दिया : ''ऐसी बात नहीं, लेकिन मैं ने ऐसा काम कभी नहीं किया बल्कि मुझे सिर्फ़ ह़ाजत ने इस पर मजबूर किया है।'' तो उस शख़्स ने कहा : ''तुझे येह काम करना पड़ रहा है ह़ालां कि तू ने पहले कभी ऐसा काम नहीं किया, चली जा और येह दीनार भी तेरे हैं।'' और उस ने क़सम उठाते हुए कहा : ''ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इस के बा'द कभी ना फ़रमानी नहीं करूंगा।'' पस वोह उसी रात मर गया और सुब्ह़ उस के दरवाज़े पर लिखा हुवा था : ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किफ़्ल को बख़्श दिया है।''(2)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الحدود، باب من اعترف علی نفسه بالزنٰی، الحدیث:۴۴۳۳،ص۹۷۸۔

2 ......جامع الترمذی، ابواب صفة القیامة، باب فیه أربعة أحادیث، الحدیث:۲۴۹۶،ص۱۹۰۳۔



www.dawateislami.net

## फ़रिश्ते व शैतान के माबैन झगड़ा :

﴾21﴿...... हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह** बिन मस्ऊद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि "दो बस्तियां थीं, एक नेक लोगों की और दूसरी बुरे लोगों की, बुरे लोगों की बस्ती में से एक शख़्स नेक लोगों की बस्ती में जाने के इरादे से निकला तो जहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा उसे मौत ने आ लिया, तो उस के मु-तअ़ल्लिक़ फ़िरिश्ता और शैतान झगड़ने लगे, शैतान ने दा'वा किया : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस ने कभी मेरी ना फ़रमानी नहीं की।" फ़रिश्ते ने कहा : "येह तौबा के इरादे से निकला था।" पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन दोनों के दरमियान फ़ैसला फ़रमाया कि देखा जाए कि येह दोनों में से किस बस्ती के ज़ियादा क़रीब है, लिहाज़ा उन्हों ने उस को एक बालिश्त नेक लोगों की बस्ती के क़रीब पाया तो उस की बख़्शिश कर दी गई।" हज़रते सय्यिदुना मा'मर رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने किसी को येह कहते हुए सुना कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नेक लोगों की बस्ती उस के क़रीब कर दी।"(1)

## 100 क़त्ल करने वाले शख़्स की तौबा :

﴾22﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : तुम से पहली उम्मतों में से एक शख़्स ने 99 क़त्ल किये, फिर उस ने ज़मीन वालों में से सब से बड़े आलिम के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा, उसे एक बड़े राहिब के मु-तअ़ल्लिक़ बताया गया तो वोह शख़्स उस राहिब के पास गया और उस से कहा कि "मैं ने 99 क़त्ल किये हैं, क्या मेरे लिये तौबा की गुन्जाइश है ?" तो राहिब ने कहा : "नहीं।" उस ने उसे भी क़त्ल कर दिया और 100 पूरे कर दिये, इस के बा'द फिर अहले ज़मीन के सब से बड़े आलिम के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा तो उस की रहनुमाई एक दूसरे आलिम की त़रफ़ की गई, जिस के पास जा कर उस ने कहा कि "मैं ने 100 क़त्ल किये हैं, क्या मेरी तौबा क़बूल हो सकती है ?" उस ने जवाब दिया : "हां, तेरे और तौबा के दरमियान क्या रुकावट है ? फ़ुलां अ़लाक़े की त़रफ़ चले जाओ वहां कुछ लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत कर रहे हैं, तुम भी उन के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करो और अपने अ़लाक़े की त़रफ़ वापस न जाना क्यूं कि वोह बुरी जगह है।" वोह शख़्स रवाना हुवा और जब आधे रास्ते पर पहुंचा तो उसे मौत आ गई। उस के मु-तअ़ल्लिक़ रह़मत और अ़ज़ाब के फ़रिश्तों में इख़्तिलाफ़ हो गया, रह़मत के फ़रिश्तों ने कहा : येह शख़्स दिल से तौबा करते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मु-तवज्जेह था। और अ़ज़ाब के

(1)......جامع لمعمرمع المصنف لعبد الرزاق،باب الرخص و الشدائد، الحدیث:۲۰۷۱۷،ج۱۰،ص۲۵۸،بتغیرٍ۔



www.dawateislami.net

फ़रिश्तों ने कहा कि इस ने कभी कोई नेक अ़मल नहीं किया, फिर उन के पास इन्सानी सूरत में एक फ़िरिश्ता आया और उन्हों ने उसे अपने दरमियान ह़कम (या'नी फ़ैसला करने वाला) बना लिया, उस ने कहा : "दोनों ज़मीनों की पैमाइश करो, येह जिस ज़मीन के ज़ियादा क़रीब होगा उसी के मुत़ाबिक़ इस का फ़ैसला होगा।" जब उन्हों ने ज़मीन की पैमाइश की तो वोह उस ज़मीन के ज़ियादा क़रीब था जहां जाने का उस ने इरादा किया था, फिर रह़मत के फ़रिश्तों ने उसे ले लिया।(1)

﴾23﴿...... एक रिवायत में है कि "वोह नेक लोगों की बस्ती के एक बालिश्त ज़ियादा क़रीब था तो उसे उन्ही में से कर दिया गया।"(2)

﴾24﴿...... एक रिवायत में है कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस ज़मीन से (जहां से जा रहा था) इर्शाद फ़रमाया कि दूर हो जा और उस ज़मीन से (जिस त़रफ़ जा रहा था) इर्शाद फ़रमाया कि क़रीब हो जा और इस के बा'द इर्शाद फ़रमाया : "दोनों के दरमियान पैमाइश करो, उन्हों ने उसे नेक लोगों की बस्ती के एक बालिश्त क़रीब पाया तो उसे बख़्श दिया गया।"(3)

﴾25﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की रिवायत में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "हमें बताया गया कि जब मौत का फ़िरिश्ता आया तो उस ने अपना सीना नेक लोगों की बस्ती की त़रफ़ फेर दिया।"(4)

﴾26﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "एक शख़्स ने बहुत ज़ियादा गुनाहों का इरतिकाब किया था फिर वोह एक शख़्स से मिला और कहा कि मैं ने 99 लोगों को ज़ुल्मन क़त्ल किया है, क्या मेरे लिये तौबा की कोई गुन्जाइश है ? उस ने कहा : नहीं। तो उस ने उसे भी क़त्ल कर दिया। फिर एक दूसरे शख़्स के पास जा कर उसे कहा मैं ने 100 आदमी ज़ुल्मन क़त्ल किये हैं, क्या मेरे लिये तौबा की कोई सूरत है ? तो उस ने कहा : "अगर मैं तुम्हें येह कहूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तौबा करने वाले की तौबा क़बूल नहीं फ़रमाता तो मैं तुम से झूट बोलूं, फ़ुलां जगह कुछ ऐसे बन्दे रहते हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करते हैं। तुम उन के पास चले जाओ और उन के साथ मिल कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करो।" वोह उन की त़रफ़ रवाना हुवा तो

---

1 ......صحيح مسلم، كتاب التوبة، باب قبول توبة القاتل وإن كثر قتله، الحديث:٧٠٠٨، ص١١٥٧-

2 ......المرجع السابق، الحديث:٧٠٠٩-

3 ......صحيح البخارى، كتاب احاديث الانبياء، باب ٥۴، الحديث:٣۴٧٠، ص٢٨٣-

4 ......صحيح مسلم، كتاب التوبة، باب قبول توبة القاتل وإن كثر قتله، تحت الحديث:٧٠٠٨، ص ١١٥٧-



www.dawateislami.net

उसी हालत पर उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई और रह़मत और अ़ज़ाब के फ़रिश्तों में इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया, पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की त़रफ़ एक फ़िरिश्ता भेजा जिस ने कहा दोनों त़रफ़ की ज़मीनों की पैमाइश करो, जिस ज़मीन के ज़ियादा क़रीब होगा येह शख़्स उन्ही में से होगा, पस उन्हों ने उसे उंगली के एक पोरे की मिक़्दार तौबा करने वालों की बस्ती के क़रीब पाया।(1)

﴾27﴿...... एक रिवायत में यूं है कि "फिर वोह दूसरे राहिब के पास आया और उसे कहा : "मैं ने 100 जानें क़त्ल की हैं क्या मेरी तौबा क़बूल हो सकती है ?" तो उस ने कहा : "तू ने ऐसा गुनाह किया है, जिस के मु-तअ़ल्लिक़ मैं नहीं जानता मगर फ़ुलां जगह दो बस्तियां हैं, एक को **नस्रह** और दूसरी को **क-फ़्रह** कहा जाता है, **अहले नस्रह** जन्नतियों के अ़मल करते हैं और उस बस्ती में उन के सिवा कोई और नहीं रहता और **अहले क-फ़्रह** जहन्नमियों जैसे अ़मल करते हैं और उस बस्ती में उन के सिवा कोई और नहीं रहता, पस तू **अहले नस्रह** की त़रफ़ चला जा, अगर तू उन में साबित क़दम रहा और उन के आ'माल की त़रह़ आ'माल सर अन्जाम दिये तो तेरी तौबा के क़बूल होने में कोई शक नहीं।" पस वोह उस बस्ती का इरादा करते हुए चल दिया यहां तक कि जब दोनों बस्तियों के दरमियान पहुंचा तो उसे मौत आ गई, फ़रिश्तों ने अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से उस के मु-तअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "देखो ! दोनों बस्तियों में से जिस बस्ती के ज़ियादा क़रीब है, इसे उस बस्ती वालों में लिख दो।" पस उन्हों ने उसे उंगली के एक पोरे की मिक़्दार **नस्रह** बस्ती के ज़ियादा क़रीब पाया तो उसे उसी बस्ती वालों में लिख दिया गया।"(2)

## रब عَزَّوَجَلَّ का बन्दे के गुमान के मुत़ाबिक़ होना :

﴾28﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "मैं अपने बन्दे के गुमान के मुत़ाबिक़ होता हूं जैसा वोह मेरे मु-तअ़ल्लिक़ रखता है और जहां वोह मुझे याद करता है मैं उस के साथ होता हूं।" ख़ुदा की क़सम ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अपने बन्दे की तौबा पर इस से ज़ियादा ख़ुशी होती है कि जब तुम में से किसी को जंगल में गुमशुदा चीज़ मिल जाए और (इर्शाद फ़रमाता है :) जो मुझ से एक बालिश्त क़रीब होता है तो मैं उस के एक गज़ नज़्दीक हो जाता हूं और जो मुझ से एक गज़ नज़्दीक होता है

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث:٨٦٧،ج١٩،ص٣٦٩۔

2 ......المعجم الكبير، الحديث:٧٦،ج١٣،١٤،ص٢٤۔



www.dawateislami.net

तो मैं उस से एक बाअ़[1] क़रीब हो जाता हूं और जो मेरे पास चल कर आता है मेरी रह़मत उस की त़रफ़ दौड़ कर आती है।''[2]

﴾29﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्‌मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''ऐ इब्ने आदम ! तू मेरी बारगाह में खड़ा हो मेरी रह़मत तेरी त़रफ़ चल कर आएगी और तू मेरी त़रफ़ चल कर आ मेरी रह़मत तेरी त़रफ़ दौड़ कर आएगी।''[3]

﴾30﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अपने किसी बन्दे की तौबा पर इस से ज़ियादा ख़ुशी होती है कि जितनी ख़ुशी तुम में से किसी शख़्स को अपना गुमशुदा ऊंट मिल जाने पर होती है जिसे उस ने किसी बयाबान ज़मीन में गुम कर दिया था।''[4]

﴾31﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब कोई बन्दा तौबा करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अपने बन्दे की तौबा पर इस से ज़ियादा ख़ुशी होती है कि जिस क़दर तुम में से उस शख़्स को होती है जो किसी बयाबान ज़मीन में अपनी सुवारी पर जाए और सुवारी उस के हाथ से निकल जाए और उस पर उस के खाने पीने की चीज़ें भी हों तो वोह उसे न पा कर किसी दरख़्त के पास चला जाए और अपनी सुवारी की वापसी से ना उम्मीद हो कर उस के साए में लैट जाए फिर अचानक वोह सुवारी उस के पास खड़ी हो वोह उस की मुहार पकड़ ले, फिर ख़ुशी की शिद्दत से कहे कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू मेरा बन्दा है और मैं तेरा रब हूं, या'नी शिद्दते मसर्रत की वज्ह से अल्फ़ाज़ उलट हो जाएं।''[5]

﴾5﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अपने मोमिन बन्दे की तौबा पर इस से ज़ियादा ख़ुशी होती है जो किसी ऐसे शख़्स

---

1...... मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 3, सफ़्ह़ा 307 पर मुफ़्ती साह़िब बाअ़ की ता'रीफ़ करते हुए फ़रमाते हैं : ''जब इन्सान दोनों हाथ सीधे कर के फैलाए तो दाहने हाथ की उंगली से बाएं हाथ की उंगली तक को बाअ़ कहते हैं।''

2......صحيح مسلم، كتاب التوبة، باب فی الحض على التوبة والفرح بها، الحديث:٢٩٥٢، ص١١٥٣ـ

3......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث رجل من أصحاب النبی، الحديث:١٥٩٢٥، ج٥، ص٣٩٤ـ

4......صحيح البخاری، كتاب الدعوات، باب التوبة، الحديث:٦٣٠٩، ص٥٣١ـ

5......صحيح مسلم، كتاب التوبة، باب فی الحض على التوبة والفرح بها، الحديث:٢٩٢٠، ص١١٥٤ـ



www.dawateislami.net

को होती है जो दौराने सफ़र किसी हलाकत ख़ैज़ सुनसान ज़मीन में पड़ाव डाले और उस के साथ उस की सुवारी भी हो कि जिस पर उस की खाने पीने की चीज़ें हों और वोह अपना सर ज़मीन पर रख कर सो जाए लेकिन जब बेदार हो तो सुवारी गुम हो चुकी हो, वोह उसे तलाश करता रहे यहां तक कि जब उस पर गरमी और प्यास की शिद्दत या जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे ह़ालत ग़ालिब आए तो वोह कहने लगे कि वापस उसी जगह जाता हूं जहां पहले था, वहां सो जाऊंगा यहां तक कि मर जाऊं, पस वोह अपनी कलाई पर सर रख कर लैट जाए ताकि मर जाए, लेकिन जब बेदार हो तो अचानक उस की सुवारी उस के पास मौजूद हो और उस पर उस की ख़ूराक और खाने पीने का सामान भी मौजूद हो, पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को बन्दए मोमिन की तौबा करने पर उस शख़्स की सुवारी और ज़ादे राह मिलने से भी ज़ियादा ख़ुशी होती है।''[(1)]

## माज़ी व मुस्तक़्बिल की ख़त़ाओं का मुआ-ख़ज़ा :

﴾33﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने अपनी बक़िय्या ज़िन्दगी में नेक आ'माल किये तो उस की उन ख़त़ाओं को बख़्श दिया जाएगा जो माज़ी में हो चुकीं और जिस ने अपनी बक़िय्या ज़िन्दगी में बुरे आ'माल किये तो उस की गुज़श्ता ख़त़ाओं और आयिन्दा ज़िन्दगी में होने वाली ख़त़ाओं पर भी मुआ-ख़ज़ा होगा।''[(2)]

﴾34﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो बुरे अ़मल करता है फिर अच्छे अ़मल करने लगता है उस की मिसाल उस शख़्स की त़रह़ है कि जिस के जिस्म पर एक तंग ज़िरह मौजूद हो जिस ने उस का गला घोंट दिया हो, फिर वोह अच्छा अ़मल करे तो उस का एक ह़ल्क़ा (या'नी कड़ा) खुल जाए, फिर दूसरा अच्छा अ़मल करे तो उस का दूसरा ह़ल्क़ा (या'नी कड़ा) खुल जाए यहां तक कि वोह ज़िरह ज़मीन पर गिर जाए।''[(3)]

﴾35﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक सफ़र का इरादा फ़रमाया तो अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे वसिय्यत फ़रमाएं।'' तो ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب التوبۃ، باب فی الحض علی التوبۃ والفرح بہا،الحدیث:۲۹۵۵،ص۱۱۵۴۔
صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب التوبۃ، الحدیث:۶۳۰۸،ص۵۳۱۔

2 ......المعجم الاوسط، الحدیث:۶۸۰۶،ج۵،ص۱۲۸۔

3 ......المسند للامام احمدبن حنبل،حدیث عقبۃ بن عامرالجھنی،الحدیث:۱۷۳۰۹،ج۶،ص۱۲۱۔



www.dawateislami.net

इबादत करो और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराओ।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मज़ीद कुछ नसीह़त फ़रमाइये।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब तुम से कोई बुराई सरज़द हो जाए तो उस के बा'द अच्छाई करो और अपने अख़्लाक़ को अच्छा कर लो।"(1)

﴾36﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तुम जहां भी रहो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते रहो और बुराई के बा'द भलाई करो वोह उसे मिटा देगी और लोगों से हु़स्ने अख़्लाक़ के साथ पेश आओ।"(2)

﴾37﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से दरयाफ़्त फ़रमाया : "6 दिन हैं, ऐ अबू ज़र ! इस के बा'द जो तुझ से कहा जाएगा उसे अच्छी त़रह़ ज़ेह्न नशीन कर लेना।" चुनान्चे जब सातवां दिन आया तो इर्शाद फ़रमाया : "मैं तुम्हें अ़लानिया और पोशीदा त़ौर पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने की वसिय्यत करता हूं और जब तुम से कोई बुराई सरज़द हो जाए तो अच्छाई कर लेना और किसी से किसी चीज़ का सुवाल न करना अगर्चे तुम्हारा कोड़ा ही गिर जाए और अमानत पर क़ब्ज़ा न करना।"(3)

## बारगाहे न-बवी में इक़रारे गुनाह और नुज़ूले क़ुरआन :

﴾38﴿...... एक शख़्स ने मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे नाज़ में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने मदीने शरीफ़ के नवाह़ में एक औ़रत का इलाज किया और सिवाए ज़िना के बक़िय्या गुनाह (या'नी बोस व कनार) कर बैठा, अब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हूं, मेरे मु-तअ़ल्लिक़ जो चाहें फ़ैसला फ़रमा दें।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने उस शख़्स से इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरा पर्दा रखा काश ! तू भी अपना पर्दा रखता।" (रावी कहते हैं कि) हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस को कोई जवाब न दिया तो वोह शख़्स चला गया, फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक आदमी भेज कर उसे बुलवाया और उस के सामने क़ुरआने पाक की येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث:٥٨،ج٢٠،ص٣٠ـ

2 ......جامع الترمذی، ابواب البر والصلة، باب ما جاء فی معاشرة الناس، الحديث:١٩٨٧،ص١٨٥١ـ

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث ابی ذر الغفاری، الحديث:٢١٦٢٩،ج٨،ص١٣٧، بتغيرٍقليلٍـ



www.dawateislami.net

وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَیِ النَّهَارِ وَ زُلَفًا مِّنَ الَّیْلِؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ یُذْهِبْنَ السَّیِّاٰتِؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِیْنَ (۱۱۴)
(پ ۱۲،هود:۱۱۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और नमाज़ क़ाइम रखो दिन के दोनों कनारों और कुछ रात के हिस्सों में, बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं, येह नसीहत है नसीहत मानने वालों को।

तो लोगों में से एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या येह आयते मुबा-रका सिर्फ़ इसी शख़्स के लिये है ?" तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बल्कि तमाम लोगों के लिये है।"(1)

﴾39﴿...... एक शख़्स शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अ़-ज़मत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का उस शख़्स के मु-तअ़ल्लिक़ क्या ख़याल है जिस ने तमाम गुनाह किये और कोई भी गुनाह न छोड़ा और उस ने इस दौरान न ह़ाजा(2) को छोड़ा और न ही दाजा(3) को तो क्या उस की तौबा क़बूल हो सकती है ?" आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तुम ने इस्लाम क़बूल कर लिया है ?" उस ने कहा : "मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं।" तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "नेकियां किया करो और बुराइयां छोड़ दो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन तमाम बुराइयों को नेकियों में तब्दील फ़रमा देगा।" उस ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी धोका बाज़ियां और फ़रेब कारियां (भी नेकियों में बदल जाएंगी) ?" तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हां।" तो उस ने कहा : "اَللّٰہُ اَکْبَر" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है।" इस के बा'द वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बड़ाई बयान करता रहा (या'नी तक्बीर कहता रहा) यहां तक कि नज़रों से ग़ाइब हो गया।(4)

❁❁❁❁❁❁❁

1 ......صحیح مسلم،کتاب التوبة، بَاب قَوْله تَعَالٰی ﴿اِنَّ الْحَسَنَاتِ یُذْهِبْنَ السَّیِّئَاتِ﴾، الحدیث:۷۰۰۴،ص۱۱۵۷۔

2 ...... या'नी वोह शख़्स जो ह़ाजियों पर डाका डालता है जब वोह ह़ज के इरादे से जा रहे हों।

3 ...... या'नी जो ह़ाजियों को ह़ज से वापसी पर लूटता है।

4 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۷۲۳۵،ج۷،ص۳۱۴۔



www.dawateislami.net

# تتمہ

## दुश्वार गुज़ार घाटी से नजात पाने वाले :

﴾40﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तुम्हारे सामने एक सख़्त और दुश्वार गुज़ार घाटी है उस से वोही नजात पाएगा जो हलके बोझ वाला होगा।"(1)

﴾41﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तुम्हारे पीछे एक सख़्त और दुश्वार गुज़ार घाटी है भारी बोझ वाले उसे उ़बूर न कर सकेंगे।"

इस ह़दीस के रावी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं येह पसन्द करता हूं कि उस सख़्त और दुश्वार गज़ार घाटी के लिये बोझ हलका कर लूं।"(2)

﴾42﴿...... एक दिन सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाथ पकड़े हुए तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अबू ज़र ! क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे सामने एक सख़्त और दुश्वार गुज़ार घाटी है, उस को सिर्फ़ हलके लोग ही उ़बूर कर सकेंगे ?" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या मैं हलके बोझ वाले लोगों में से हूं या भारी बोझ वालों में से ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तेरे पास आज का खाना है ?" उस ने अ़र्ज़ की : जी हां, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "कल का खाना है ?" उस ने अ़र्ज़ की : जी हां, तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "कल के बा'द का खाना है ?" उस ने अ़र्ज़ की : नहीं। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर तेरे पास तीन दिन का खाना होता तो तू भारी बोझ वालों में से होता।"(3)

## अ़क़्ल मन्द और आ़जिज़ कौन ?

﴾43﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अ़क़्ल मन्द वोह है जो अपने नफ़्स का मुह़ा-सबा करे और मौत के बा'द के लिये अ़मल करे और

---

(1) ......البحرالزخار المعروف بمسند البزار، مسند ابی الدرداء، الحدیث:۴۱۱۸، ج۱۰، ص۵۵۔

(2) ......مجمع الزوائد، کتاب الزکوۃ، باب ماجاء فی السوال، الحدیث: ۴۰۴۵، ج۳، ص۲۵۹۔

(3) ......المعجم الاوسط، الحدیث:۴۸۰۹، ج۳، ص۳۴۸۔



www.dawateislami.net

आ़जिज़ वोह है जो ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया की पैरवी करे फिर भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (की रह़मत) पर उम्मीद रखे।''(1)

## क़ुर्बे जन्नत और जहन्नम :

﴾44﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जन्नत तुम में से हर एक के जूते के तस्मे से भी ज़ियादा क़रीब है और इसी त़रह़ दोज़ख़ भी।''(2)

﴾45﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''क़ियामत क़रीब आ चुकी है और लोगों में दुन्या पर ह़िर्स और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूरी में इज़ाफ़ा ही होता जा रहा है।''(3)

﴾46﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ लोगो ! मरने से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर लो, मसरूफ़िय्यत से पहले नेक आ'माल में जल्दी कर लो, ज़िक्रे इलाही की कसरत कर के अपने और रब عَزَّوَجَلَّ के दरमियान तअ़ल्लुक़ पैदा करो और ज़ाहिरी व पोशीदा त़ौर पर कसरत से स-दक़ा करो, तुम्हें रिज़्क़ दिया जाएगा, तुम्हारी मदद की जाएगी और (तुम्हारे नुक़्सान की) तलाफ़ी की जाएगी।''(4)

## पांच को पांच से पहले ग़नीमत जानो :

﴾47﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''पांच चीज़ों को पांच से पहले ग़नीमत जानो : (1)...... जवानी को बुढ़ापे से पहले (2)...... तन्दुरुस्ती को बीमारी से पहले (3)...... तवंगरी को फ़क़्र से पहले (4)...... फ़राग़त को मश्ग़ूलिय्यत से पहले और (5)...... ज़िन्दगी को मौत से पहले।''(5)

## हर मरने वाला शर्मसार होता है :

﴾48﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने

1 ......جامع الترمذی، ابواب صفة القيامة، باب حديث الكيس ......الخ، الحديث:٢٤٥٩،ص١٨٩٩۔
2 ......صحيح البخاری، كتاب الرقاق، بَاب اَلْجَنَّةُ اَقْرَبُ اِلٰی......الخ، الحديث:٦٤٨٨،ص٥٤٤۔
3 ......المستدرک، كتاب الرقاق، باب من استحی من الله......الخ، الحديث:٧٩٨٧،ج٥،ص٤٦١۔
4 ......سنن ابن ماجه، ابواب اقامة الصلوات، بَاب فِی فَرْضِ الْجُمُعَةِ، الحديث:١٠٨١،ص٢٥٤٠۔
5 ......المستدرک، كتاب الرقاق، باب نعمتان مغبون فيهما كثير......الخ، الحديث:٧٩١٦،ج٥،ص٤٣٥۔



www.dawateislami.net

आलीशान है : ''हर मरने वाला शर्मसार होगा।'' सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! किस चीज़ पर शर्मसार होगा ?'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर नेक होगा तो नादिम होगा कि ज़ियादा नेकियां क्यूं न कीं और अगर गुनहगार होगा तो इस बात पर नादिम होगा कि गुनाह क्यूं न छोड़े।''(1)

## किसी का शह्द की त़रह़ मीठा होना :

﴾49﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे से मह़ब्बत करता है तो उसे शह्द की त़रह़ मीठा बना देता है।'' सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! शह्द की त़रह़ मीठा बनाने से क्या मुराद है ?'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''उसे मरने से पहले नेक अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा देता है यहां तक कि उस के पड़ोसी (या इर्शाद फ़रमाया कि) उस के गिर्दो पेश वाले लोग उस से ख़ुश हो जाते हैं।''(2)

## ह़दीसे पाक की वज़ाह़त :

''عَسَلُہٗ'' اَلْعَسَل से मुश्तक़ है, जिस का मा'ना है अच्छी ता'रीफ़ करना और बा'ज़ के नज़्दीक येह एक ज़र्बुल मसल है या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे नेक अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाता है यहां तक कि उस के गिर्दो पेश के लोग ख़ुश हो जाते हैं जिस त़रह़ कोई शख़्स अपने भाई को शह्द खिला कर ख़ुश करता है।

## सब से अच्छा और बुरा शख़्स :

﴾50﴿...... एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! लोगों में सब से अच्छा कौन है ?'' तो ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस की उ़म्र ज़ियादा और अ़मल अच्छा हो।'' फिर अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! लोगों में सब से बुरा कौन है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''जिस

(1)......جامع الترمذی، ابواب الزھد، باب یوم القیامۃ ونَدَامَۃ المُحْسِن والمُسِیء یومئذ، الحدیث:۲۴۰۳، ص۱۸۹۳۔

(2)......المستدرک، کتاب الجنائز، باب خیارکم اطولکم اعمارا واحسنکم عملا، الحدیث:۱۲۹۸، ج۱، ص۶۵۸۔



www.dawateislami.net

की उ़म्र लम्बी और अ़मल बुरा हो।''(1)

﴾51﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ बन्दे ऐसे हैं कि जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़त्ल (या'नी आफ़ात वग़ैरा) से मह़फ़ूज़ फ़रमाता है बल्कि अच्छे अ़मल में उन की उ़म्रें त़वील फ़रमाता, उन्हें अच्छा रिज़्क़ देता और उन्हें आ़फ़िय्यत में ज़िन्दा रखता है और बिस्तरों पर आ़फ़िय्यत में उन की रूहें क़ब्ज़ करता है और उन्हें शु-हदा के मरातिब अ़त़ा फ़रमाता है।''(2)

﴾52﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मौत की ख़्वाहिश न किया करो, इस लिये कि मौत के बा'द का ख़ौफ़ शदीद है और येह बन्दे के लिये सआ़दत है कि इस की उ़म्र लम्बी हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इसे तौबा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।''(3)

﴾53﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तुम में से कोई मौत की तमन्ना न करे या तो वोह नेक होगा तो हो सकता है कि उस की नेकियों में इज़ाफ़ा हो जाए या गुनहगार हो तो हो सकता है कि अपने गुनाहों से तौबा कर ले।''(4)

﴾54﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : ''सात क़िस्म के लोग ऐसे हैं कि जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस दिन अपने (अ़र्श के) साए में जगह अ़त़ा फ़रमाएगा जिस दिन उस (सायए अ़र्शे इलाही) के सिवा कोई साया न होगा।'' आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन को शुमार किया यहां तक कि इर्शाद फ़रमाया : ''और वोह शख़्स जिसे हुस्नो जमाल और मन्सब वाली औ़रत (बदकारी की) की दा'वत दे तो वोह कहे : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता हूं।''(5)

## ख़ौफ़े इलाही का इन्आ़म :

﴾55﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म

---

1 ......جامع الترمذی، ابواب الزهد، باب منه اَیُّ الناس خَیرٌ وَاَیُّهُم شَرٌّ، الحدیث:۲۳۳۰،ص۱۸۸۶۔

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۱۰۳۷۱،ج۱۰،ص۱۷۶۔

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند جابر بن عبد اللّٰه، الحدیث:۱۴۵۷۰،ج۵،ص۸۷۔

4 ......صحیح البخاری، کتاب التَّمَنِّی، بَاب مَا یُکْرَهُ مِنْ التَّمَنِّی، الحدیث:۷۲۳۵،ص۶۰۳، دون قوله "فی احسانه"۔

5 ......صحیح مسلم، کتاب الزکاة، باب فضل اِخفاء الصدقة، الحدیث:۲۳۸۰،ص۸۴۰۔



www.dawateislami.net

है : एक शख़्स अपने नफ़्स पर ज़ियादती किया करता था, जब उस की मौत का वक़्त क़रीब आया तो उस ने अपने बेटे से कहा : ''जब मैं मर जाऊं तो मुझे जला देना, फिर मेरी राख आटे की त़रह़ बारीक कर के हवा में बिखेर देना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी पकड़ फ़रमाई तो मुझे ऐसा अ़ज़ाब देगा जो अपनी मख़्लूक़ में से किसी को न दिया होगा।'' जब वोह मर गया तो उस के साथ ऐसा ही किया गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन हो हुक्म दिया : ''जो तेरे अन्दर है उसे जम्अ़ कर।'' लिहाज़ा ज़मीन ने ऐसा ही किया तो वोह सह़ीह़ो सालिम खड़ा हो गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पूछा : ''तुझे ऐसा करने पर किस चीज़ ने उभारा ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरी ख़शिय्यत ने या कहा तेरे ख़ौफ़ ने।'' पस उसे बख़्श दिया गया।[1]

﴾56﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''उसे जहन्नम से निकाल दो जिस ने मुझे एक दिन भी याद किया हो या किसी मक़ाम पर भी मुझ से डरा हो।''[2]

﴾57﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''जब मेरा बन्दा बुराई का इरादा करे तो उस के (नामए आ'माल में) बुराई न लिखो यहां तक कि वोह उस बुराई का इरतिकाब कर ले और अगर उस ने वोह अ़मल किया तो उस के लिये उस की मिस्ल गुनाह लिख दो और अगर उस ने मेरी वज्ह से छोड़ दिया तो उस के लिये एक नेकी लिख दो।''[3]

﴾58﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''मेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! मैं अपने बन्दे पर दो ख़ौफ़ और दो अम्न जम्अ़ न फ़रमाऊंगा, अगर वोह दुन्या में मुझ से डरा तो उसे बरोज़े क़ियामत अम्न अ़त़ा फ़रमाऊंगा और अगर दुन्या में मुझ से अम्न में रहा तो बरोज़े क़ियामत उसे ख़ौफ़ में मुब्तला करूंगा।''[4]

﴾59﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान

1 ......صحيح البخاری، كتاب احاديث الانبياء، باب ۵۴، الحديث: ۳۴۸۱، ص ۲۸۴ ـ

2 ......جامع الترمذی، ابواب صفة جهنم، باب ما جاء ان للنار نفسين......الخ، الحديث: ۲۵۹۴، ص ۱۹۱۳ ـ

3 ......صحيح البخاری، كتاب التوحيد، بَاب قَوْلِ اللّٰهِ تَعَالٰى ﴿يُرِيدُونَ اَنْ يُّبَدِّلُوا كَلَامَ اللّٰهِ﴾، الحديث: ۷۵۰۱، ص ۶۲۵ ـ

4 ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب الرقائق، باب حسن الظن بالله تعالٰى، الحديث: ۶۳۹، ج ۲، ص ۱۷ ـ



www.dawateislami.net

है : "अगर मोमिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब को जान लेता तो कोई भी जन्नत की तमन्ना न करता और अगर काफ़िर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत को जान लेता तो कोई काफ़िर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस न होता।"(1)

﴾60﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर येह आयते मुबा-रका नाज़िल फ़रमाई :

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِیْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ (پ۲۸، التحریم:۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं।

तो शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे अपने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के सामने तिलावत फ़रमाया तो एक नौ जवान ग़शी की वज्ह से गिर गया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के दिल पर अपना दस्ते मुबारक रखा तो वोह ह़-र-कत कर रहा था। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ नौ जवान لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहो।" उस ने कहा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे जन्नत की बिशारत दी, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या वोह हम में से नहीं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान नहीं सुना :

ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِیْ وَ خَافَ وَعِیْدِ ﴿۱۴﴾ (پ۱۳، ابراهیم:۱۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** येह उस के लिये है जो मेरे हुज़ूर खड़े होने से डरे और मैं ने जो अ़ज़ाब का हुक्म सुनाया है उस से ख़ौफ़ करे।(2)

❁❁❁❁❁❁❁

1 ......صحیح مسلم،کتاب التوبة،باب فی سعة رحمةالله تعالی......الخ، الحدیث:۲۹۷۹،ص۱۱۵۵۔
المسند للامام احمد بن حنبل،مسند ابی هریرة، الحدیث: ۹۱۷۵،ج۳،ص۳۵۷۔

2 ......المستدرک،کتاب التفسیر،باب وفاة فتی باستماع آیة:قوا انفسکم واهلیکم نارا، الحدیث:۳۳۹۰،ج۳،ص۹۳۔



www.dawateislami.net

# ﴾2﴿...... हश्र, हिसाब, शफ़ाअत, पुल सिरात और इस के मु-तअ़ल्लिक़ात

येह बहूस कई फ़स्लों पर मुश्तमिल है।

## पहली फ़स्ल : हश्र वग़ैरा का बयान

### मैदाने महशर में लोगों की हालत :

﴾1﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से नंगे पाउं, नंगे जिस्म और बे ख़तना मिलोगे।''(1)

﴾2﴿...... एक रिवायत में है कि उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इर्शाद फ़रमाती हैं : ''मैं ने अ़र्ज़ की, कि तमाम मर्द और औरतें एक दूसरे को देखेंगे ?'' तो हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''वोह मुआ-मला इतना सख़्त होगा कि वोह उस जानिब तवज्जोह भी न कर सकेंगे।''(2)

﴾3﴿...... एक दूसरी रिवायत में है : हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : ''हाए अफ़्सोस ! हम एक दूसरे को इस हालत में देख रहे होंगे।'' तो आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''लोग मश्गूल होंगे।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने दोबारा अ़र्ज़ की : ''कौन सी चीज़ उन्हें मश्गूल कर देगी ?'' तो आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''नामए आ'माल का खुलना उन्हें मश्गूल कर देगा कि जिस में उन के च्यूंटी और राई के बराबर आ'माल का वज़्न भी शामिल होगा।''(3)

﴾4﴿...... उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना सौदह बिन्ते ज़म्आ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : ''क्या हम में से बा'ज़ बा'ज़ की तरफ़ देखेंगे ?'' तो आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : लोग (अपने आप में) मश्गूल होंगे :

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب الحشر، الحدیث:۶۵۲۷،ص۵۴۷۔

2 ......المرجع السابق، الحدیث: ۶۵۲۷۔

3 ......المعجم الاوسط، الحدیث:۸۳۳،ج۱،ص۲۴۳۔



www.dawateislami.net

لِكُلِّ امْرِیٍٔ مِّنْهُمْ یَوْمَىٕذٍ شَاْنٌ یُّغْنِیْهِؕ (۳۷)
(پ۳۰، عبس: ۳۷)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** उन में से हर एक उस दिन एक फ़िक्र है कि वोह उसे बस है।(1)

﴾5﴿...... एक रिवायत में यूं है कि एक औरत ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम में से बा'ज़ बा'ज़ को कैसे देखेंगे ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "(ख़ौफ़े इलाही से) आंखें फटी की फटी रह जाएंगी।" और इस के साथ ही आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने निगाहें आस्मान की त़रफ़ बुलन्द फ़रमा दीं तो उस ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ फ़रमाएं कि वोह मेरा पर्दा रखे।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ की : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस का पर्दा रखना।"(2)

﴾6﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन लोगों को सफ़ेद और चटियल ज़मीन में जम्अ़ किया जाएगा जो सफ़ेद गोल रोटी की त़रह़ होगी कि जिस में किसी की कोई अ़लामत (या'नी पहचान) न होगी।"(3)

﴾7﴿...... एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

اَلَّذِیْنَ یُحْشَرُوْنَ عَلٰی وُجُوْهِهِمْ اِلٰی جَهَنَّمَۙ
(پ۱۹، الفرقان: ۳۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो जहन्नम की त़रफ़ हांके जाएंगे अपने मुंह के बल।

तो क्या काफ़िर को उस के चेहरे के बल हांक कर लाया जाएगा ?" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या वोह ज़ात जिस ने दुन्या में उसे पाउं के बल चलाया वोह उसे क़ियामत के दिन चेहरे के बल चलाने पर क़ादिर नहीं ?" जब येह बात ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه तक पहुंची तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : "हां ! हमारे रब عَزَّوَجَلَّ की इ़ज़्ज़त की क़सम ! (वोह ऐसा करने पर क़ादिर है)।"(4)

﴾8﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान

1......المعجم الكبير، الحديث: ۹۱، ج۲۴، ص۳۴۔ 2......المعجم الكبير، الحديث: ۲۷۵۵، ج۳، ص۹۰۔
3......صحيح البخاری، كتاب الرقاق، بَاب يَقْبِضُ اللّٰهُ الْاَرْضَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، الحديث: ۶۵۲۱، ص۵۴۷۔
4......صحيح البخاری، كتاب التفسير، بَابِ سورة الفرقان، الحديث: ۴۷۶۰، ص۴۰۳۔
جامع الاصول للجزری، كتاب القيامة، الباب الثانی: فی احوالها، الحديث: ۷۹۴۹، ج۱۰، ص۳۹۸۔



www.dawateislami.net

है : "बेशक तुम पैदल और सुवार इकठ्ठे किये जाओगे और चेहरों के बल चलाए जाओगे।"[1]

﴾9﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन लोग तीन त़रीक़ों पर जम्अ़ किये जाएंगे : रग़बत रखने वाले और डरने वाले, एक ऊंट पर दो दो, एक ऊंट पर तीन तीन, एक ऊंट पर चार चार और एक ऊंट पर दस दस[2], बाक़ी सब लोगों को आग जम्अ़ करेगी, जहां वोह दो पहर करेंगे वहीं आग भी दो पहर को मौजूद होगी जहां वोह रात बसर करेंगे वोह भी उन के साथ होगी, जहां वोह सुब्ह़ करेंगे वोह भी उन के साथ सुब्ह़ करेगी और जहां वोह शाम करेंगे वोह उन के साथ ही शाम करेगी।"[3]

## बरोज़े क़ियामत पसीने की कैफ़िय्यत :

﴾10﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन लोग पसीने में शराबोर होंगे यहां तक कि उन का पसीना ज़मीन पर 70 हाथ तक फैल जाएगा और वोह उस में डूब रहे होंगे यहां तक कि वोह उन के कानों तक पहुंच जाएगा।"[4]

﴾11﴿...... एक रिवायत में है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ﴿۶﴾
(پ۳۰،المطففین:۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** जिस दिन सब लोग रब्बुल आ़-लमीन के हुज़ूर खड़े होंगे।

और फिर इर्शाद फ़रमाया : "उन में से एक शख़्स अपने निस्फ़ कानों तक पसीने में डूबा हुवा होगा।"[5]

﴾12﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन सूरज मख़्लूक़ के इस क़दर क़रीब होगा कि एक मील की मिक़्दार रह

---

1 ......جامع الترمذی، ابواب تفسیر القرآن، باب ومن سورة بنی اسرائیل، الحدیث:۳۱۴۳،ص۱۹۷۰،بتغیرٍ۔

2 ...... या'नी जितनी नेकियां कम उतनी ऊंटों पर शिर्कत ज़ियादा होगी।

3 ......صحیح البخاری،کتاب الرقاق، باب الحَشْر، الحدیث:۶۵۲۲،ص۵۴۷۔

4 ......صحیح البخاری،کتاب الرقاق، بَاب قَوْلِ اللّٰهِ تَعَالٰی(اَلَا یَظُنُّ اُولٰٓئِکَ اَنَّھُمْ مَبْعُوْثُوْن......)،الحدیث:۶۵۳۲،ص۵۴۸۔

5 ......المرجع السابق، الحدیث:۶۵۳۱۔



www.dawateislami.net

जाएगा।'' हज़रते सय्यिदुना सुलैम बिन आमिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَافِر फ़रमाते हैं : ''खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं नहीं जानता कि **मील** से ज़मीन की मसाफ़त मुराद है या आंखों में सुरमा डालने वाली सलाई।'' और फिर इर्शाद फ़रमाया : ''लोग अपने आ'माल के मुताबिक़ अपने पसीने में डूबे होंगे, उन में से बा'ज़ के टख़्नों तक, बा'ज़ के घुटनों तक, बा'ज़ की कमर तक होगा और किसी के मुंह में पसीना लगाम दिये होगा।'' रावी फ़रमाते हैं : येह इर्शाद फ़रमाते हुए दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते अक़्दस से अपने दहने मुबारक की तरफ़ इशारा फ़रमाया।(1)

﴾13﴿...... एक रिवायत में है : ''पसीना बा'ज़ की निस्फ़ पिंडली तक पहुंचेगा, बा'ज़ के घुटनों तक, बा'ज़ की पीठ तक, बा'ज़ के कूल्हों तक, बा'ज़ के कन्धों तक, बा'ज़ की गरदन तक और बा'ज़ के मुंह तक पहुंचेगा।'' (रावी फ़रमाते हैं :) आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते अक़्दस से मुंह की तरफ़ इशारा किया कि उस के मुंह में लगाम डाले होगा और (फिर फ़रमाया :) ''किसी को उस का पसीना ढांप लेगा।''(2)

﴾14﴿...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि ''जब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इब्ने आदम को पैदा फ़रमाया उस ने अपने ऊपर मौत से ज़ियादा शदीद चीज़ कोई नहीं देखी, फिर यक़ीनन मौत अपने बा'द (की तक्लीफ़ों) से ज़ियादा आसान है, बेशक वोह क़ियामत के दिन को इस क़दर होलनाक पाएंगे कि पसीना उन्हें लगाम डाले होगा यहां तक कि अगर कश्तियां उस में चलाई जाएं तो चल पड़ें।''(3)

﴾15﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : क़ियामत के दिन पसीना इन्सान के मुंह को लगाम डाले होगा तो वोह अर्ज़ करेगा : ''ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अगर्चे जहन्नम में डाल दे मगर इस से राहत दे दे।''(4)

---

(1)......صحیح مسلم، کتاب الجنة، بَاب فِی صِفَةِ یَوْمِ الْقِیَامَةِ اَعَانَنَا اللّٰهُ عَلٰی اَهْوَالِهَا، الحدیث:۲۸۶۴، ص۱۱۷۴۔

(2)......المستدرک، کتاب الاهوال، باب تَدْنُو الشَّمْسُ مِنَ الْاَرْضِ فَیَعْرَقُ النَّاسُ......الخ، الحدیث:۸۷۴۴، ج۵، ص۷۸۹۔

(3)......المعجم الاوسط، الحدیث:۱۹۷۲، ج۱، ص۵۳۵۔

(4)......المعجم الکبیر، الحدیث:۱۰۰۸۳، ج۱۰، ص۱۰۰۔



www.dawateislami.net

## बरोजे़ क़ियामत मुअमिनीन की ह़ालत :

﴾16﴿...... हु़स्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

يَوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ۶ (پ۳۰،المطففين:۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** जिस दिन सब लोग रब्बुल आ़-लमीन के हु़ज़ूर खड़े होंगे।

50 हज़ार सालह दिन का निस्फ़ हि़स्सा मोमिन पर येह दिन इस क़दर आसान होगा जैसे सूरज ग़ुरूब होने के क़रीब हो यहां तक कि ग़ुरूब हो जाए।''(1)

﴾17﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! बेशक वोह दिन मोमिन पर इतना आसान कर दिया जाएगा यहां तक कि वोह उस पर फ़र्ज़ नमाज़ से भी कम हो जाएगा।''(2)

﴾18﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : क़ियामत के दिन तुम्हें जम्अ़ किया जाएगा और कहा जाएगा कि इस उम्मत के फ़ु-क़रा और मसाकीन कहां हैं ? वोह खड़े होंगे और उन से कहा जाएगा कि ''तुम ने क्या अ़मल किया ?'' तो वोह कहेंगे : ''ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! तू ने हमें मुसीबतों में मुब्तला किया तो हम ने सब्र किया और मालो अस्बाब और बादशाही हमारे इ़लावा दूसरों को अ़त़ा फ़रमाई।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''तुम ने सच कहा।'' आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''वोह दीगर लोगों से पहले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे जब कि अमीरों और हुक्मरानों पर ह़िसाब की शिद्दत बाक़ी रहेगी।'' लोगों ने अ़र्ज़ की : ''उस दिन ईमान वाले कहां होंगे ?'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''उन के लिये नूर की कुर्सियां बिछाई जाएंगी और उन पर बादल साया करेगा और वोह दिन मुअमिनीन पर दिन की एक घड़ी से भी हलका होगा।''(3)

﴾19﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

---

1 ......مسند ابی یعلی الموصلی، مسند ابی ھریرۃ، الحدیث:۵۹۹۹،ج۵،ص۳۰۸۔

2 ......الاحسان بترتیب......، کتاب اخبارہ،باب اخبارہ عن البعث......الخ، الحدیث:۷۲۹۰،ج۹،ص۲۱۶۔

3 ......المرجع السابق، باب وصف الجنۃ و اھلھا، الحدیث: ۷۳۷۶،ص۲۵۳۔



www.dawateislami.net

''बेशक फु-क़रा, अग़्निया से 500 साल पहले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।''(1)

## बरोज़े क़ियामत नूर का ब मुताबिक़ आ'माल होना :

﴾20﴿...... रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''लोगों को मैदाने हश्र में उन के आ'माल की मिस्ल नूर अता किया जाएगा, किसी को बहुत बड़े पहाड़ की मिस्ल नूर अता किया जाएगा जो उन के आगे दौड़ रहा होगा, किसी को इस से कम नूर अता किया जाएगा, किसी को हाथ पर खजूर के दरख़्त की मिस्ल नूर अता होगा जो उस के आगे दौड़ता होगा और किसी को इस से कम दिया जाएगा यहां तक कि उन में से आख़िरी शख़्स को पाउं के अंगूठे पर नूर अता किया जाएगा जो कभी रोशन होगा और कभी बुझेगा, जब वोह रोशन होगा तो वोह आगे बढ़ेगा और जब बुझेगा तो ठहर जाएगा।''(2)

## रोज़े महशर अदना मोमिन का मक़ाम :

﴾21﴿...... इसी रिवायत में येह भी है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : लोग पुल सिरात पर से अपने नूर के मुताबिक़ गुज़रेंगे, उन में से बा'ज़ पलक झपकने की देर में गुज़रेंगे तो बा'ज़ बिजली की तरह, बा'ज़ बादलों की तरह गुज़रेंगे तो बा'ज़ सितारे टूटने की तरह, बा'ज़ हवा की तरह गुज़रेंगे तो बा'ज़ घोड़े के दौड़ने की तरह, बा'ज़ कजावा बांधने की तरह गुज़रेंगे यहां तक कि जिसे उस के क़दमों के ज़ाहिर पर नूर अता किया जाएगा वोह चेहरे, हाथों और पाउं के बल चलेगा, एक हाथ खींचेगा तो दूसरा अटक जाएगा, एक पाउं खींचेगा तो दूसरा फंस जाएगा, उस के पहलूओं को आग पहुंच रही होगी, वोह छुटकारा पाने तक इसी कैफ़िय्यत में रहेगा, फिर जब आज़ाद हो जाएगा तो खड़ा हो जाएगा और कहेगा : ''तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने मुझे वोह कुछ अता किया जो किसी को अता नहीं किया कि मुझे अज़ाब के देखने के बा'द उस से नजात अता फ़रमाई।''

फिर वोह जन्नत के दरवाज़े पर एक तालाब की तरफ़ जाएगा और उस में ग़ुस्ल करेगा और उसे अहले जन्नत और उन के रंगों की ख़ुश्बू आएगी तो वोह दरवाज़े के सूराख़ों से जन्नत की ने'मतें

(1)......جامع الترمذی، ابواب الزهد، بَاب مَا جَاءَ اَنَّ فُقَرَاءَ الْمُهَاجِرِينَ......الخ، الحديث:۲۳۵۳،ص۱۸۸۸۔

(2)......المعجم الكبير، الحديث:۹۷۶۳،ج۹،ص۳۵۸، بتغيرٍقليلٍ۔



www.dawateislami.net

मुला–हज़ा कर के अ़र्ज़ करेगा : "ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे ।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "क्या तू जन्नत का सुवाल करता है ह़ालां कि मैं ने तुझे दोज़ख़ से नजात अ़ता फ़रमाई है ?" तो वोह कहेगा : "मेरे और उस के दरमियान पर्दा ह़ाइल कर दे यहां तक कि मैं उस की हलकी सी आवाज़ भी न सुन सकूं ।" पस वोह जन्नत में दाख़िल हो जाएगा और अपने सामने एक मह़ल देखेगा या उस के सामने खड़ा किया जाएगा गोया वोह मह़ल उस की निस्बत से एक ख़्वाब होगा तो वोह कहेगा : "ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मुझे येह मह़ल अ़ता फ़रमा दे ।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "अगर मैं तुझे येह अ़ता कर दूं तो हो सकता है तू कोई दूसरी चीज़ मांग ले ।" वोह अ़र्ज़ करेगा : "नहीं ! ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! मैं इस के इ़लावा कुछ नहीं मांगूंगा और इस से बेहतर भी कोई मह़ल हो सकता है ?" वोह उसे अ़ता कर दिया जाएगा तो वोह उस में जाएगा और अपने सामने एक और मह़ल देखेगा और उसी त़रह़ कहेगा जैसे पहले कहा था फिर वोह उस में भी दाख़िल हो जाएगा ।

इस के बा'द वोह ख़ामोश हो जाएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से दरयाफ़्त फ़रमाएगा : "तुझे क्या हुवा कि कुछ नहीं मांग रहा ?" तो वोह अ़र्ज़ करेगा : "ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से मांगता रहा यहां कि मुझे अब तुझ से शर्म आती है ।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "क्या तू इस बात पर राज़ी नहीं कि मैं तुझे इब्तिदाए दुन्या से फ़नाए दुन्या तक की मिस्ल और इस से 10 गुना ज़ियादा अ़ता फ़रमा दूं ?" तो वोह अ़र्ज़ करेगा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! क्या तू मुझ से इस्तिह्ज़ा फ़रमा रहा है ह़ालां कि तू रब्बुल इ़ज़्ज़त है ?" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "नहीं, बल्कि मैं इस पर क़ादिर हूं, लिहाज़ा मांग ।" तो वोह अ़र्ज़ करेगा : "मेरी मुलाक़ात लोगों के साथ करा दे ।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "जाओ, लोगों से मिलो ।" लिहाज़ा वोह चल देगा और जन्नत में लपक लपक कर चलेगा यहां तक कि जब वोह लोगों के क़रीब पहुंच जाएगा तो उस के सामने एक मोतियों का मह़ल खड़ा किया जाएगा तो वोह सज्दे में गिर जाएगा, उसे कहा जाएगा : "अपना सर उठा, तुझे क्या हुवा है ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "मैं ने अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की ज़ियारत की या मुझे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का दीदार कराया गया है ।" तो उसे कहा जाएगा : "येह तो तेरे ही मह़लों में से एक मह़ल है ।"



www.dawateislami.net

फिर वोह एक शख़्स से मिलेगा तो (शुक्र के) सज्दों के लिये तय्यार हो जाएगा उसे कहा जाएगा : "ठहर जा।" तो वोह अ़र्ज़ करेगा : "मेरे ख़याल में तुम यक़ीनन फ़रिश्ते हो।" वोह कहेगा : "मैं तो आप के ख़ज़ान्चियों में से एक ख़ज़ान्ची और ख़ुद्दाम में से एक ख़ादिम हूं, मेरे मा तह़्त मेरे जैसे ही एक हज़ार ख़ज़ान्ची हैं।" चुनान्चे, वोह उस के आगे आगे चलेगा यहां तक कि उस के लिये मह़ल का दरवाज़ा खोला जाएगा जो एक ही मोती का होगा और उस की छतें, दरवाज़े, ताले और चाबियां भी मोतियों से तराशीदा होंगे, उस के सामने का मह़ल सब्ज़ होगा जो अन्दर से सुर्ख़ होगा, उस के 70 दरवाज़े होंगे, हर दरवाज़ा अन्दर से सब्ज़ मह़ल की त़रफ़ खुलेगा, हर मह़ल दूसरे मह़ल की त़रफ़ खुलेगा कि जिस का रंग मुख़्तलिफ़ होगा, हर मह़ल में तख़्त, बीवियां और नौ उ़म्र ख़ादिमाएं होंगी जिन में सब से कम ह़सीन बड़ी बड़ी आंखों वाली हूर होगी, उस पर 70 हुल्ले होंगे, उस के हुल्लों के अन्दर से उस की पिंडली का गूदा नज़र आएगा, इस का सीना उस के लिये और उस का सीना इस के लिये आईना होगा, जब वोह उस में मुंह फेरेगा तो उस की आंखों के हुस्न में पहले से 70 गुना इज़ाफ़ा हो जाएगा, वोह उस से कहेगा : "ख़ुदा की क़सम ! तू मेरी आंखों में 70 गुना ज़ियादा हसीन नज़र आ रही है।" तो वोह जवाब देगी : "बेशक आप भी मेरी आंखों में 70 गुना ज़ियादा ह़सीन नज़र आ रहे हैं।" फिर उसे कहा जाएगा : "नीचे झांक।" वोह नीचे देखेगा, तो उसे कहा जाएगा : "तेरी सल्त़नत 100 की मसाफ़त तक है जहां तक तेरी निगाह पहुंचती है।"

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब येह ह़दीसे पाक ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से सुनी तो ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ! क्या आप नहीं सुन रहे कि उम्मे अ़ब्द के बेटे (ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) हमें अदना जन्नती के मु-तअ़ल्लिक़ क्या बता रहे हैं (जब अदना जन्नती का येह मक़ाम है) तो फिर आ'ला जन्नती का मक़ाम कितना बुलन्द होगा ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ! आ'ला जन्नती का मक़ाम वोह है जो न किसी आंख ने देखा और न किसी कान ने सुना।" और इस के बा'द उन्हों ने भी एक ह़दीसे पाक ज़िक्र की।[1]

❁❁❁❁❁❁❁

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث : ۹۷٦۳، ج ۹، ص ۳۵۸ تا ۳٦۰۔

المستدرك، كتاب الاهوال، باب تقسيم النور على قدر اعمالهم، الحديث : ۸۷۸۹، ج ۵، ص ۸۱۲۔



www.dawateislami.net

# दूसरी फ़स्ल : ह़िसाबो किताब वग़ैरा का बयान

## यौमे ह़िसाब के 4 सुवाल :

﴾1﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "बरोज़े क़ियामत बन्दे के क़दम उस वक़्त तक अपनी जगह से न हटेंगे जब तक कि उस से 4 चीज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल न कर लिया जाएगा : (1)...... उ़म्र के मु-तअ़ल्लिक़ कि किन कामों में गुज़ारी ? (2)...... इ़ल्म के मु-तअ़ल्लिक़ कि इस पर कितना अ़मल किया ? (3)...... माल के मु-तअ़ल्लिक़ कि कहां से कमाया और कहां ख़र्च किया ? और (4)...... जिस्म के मु-तअ़ल्लिक़ कि किस काम में पुराना किया ?"[(1)]

﴾2﴿...... एक रिवायत में है कि "और जवानी के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा कि किन कामों में गंवाई ।"[(2)]

﴾3﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस से पूछगछ की गई वोह हलाक हो गया ।"[(3)]

## बरोज़े क़ियामत नेकियों के पहाड़ की ह़ैसिय्यत :

﴾4﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर एक शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इता़अ़त में यौमे पैदाइश से बूढ़ा हो कर मरने के दिन तक चेहरे के बल गिरा रहे तो फिर भी उसे क़ियामत के दिन ह़क़ीर ही समझेगा और तमन्ना करेगा कि काश ! उसे दुन्या की त़रफ़ लौटा दिया जाता ताकि वोह ज़ियादा अज्रो सवाब ह़ासिल करता ।"[(4)]

## अदना दुन्यवी ने'मत की क़ीमत :

﴾5﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : क़ियामत के दिन इब्ने आदम के 3 रजिस्टर निकाले जाएंगे : एक में उस के अच्छे अ़मल लिखे होंगे और दूसरे में गुनाह लिखे होंगे और तीसरे में उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतें लिखी होंगी, **अल्लाह**

1 ......جامع الترمذی، ابواب صِفَة القِيامَة، باب فی القِيامَة، الحديث: ۲۴۱۷، ص۱۸۹۴۔
البحر الزخار المعروف بمسند البزار، مسند معاذ بن جبل، الحديث: ۲۶۴۰، ج۷، ص۸۸۔
2 ......جامع الترمذی، ابواب صِفَة القِيامَة، باب فی القِيامَة، الحديث: ۲۴۱۶، ص۱۸۹۴۔
3 ......صحيح مسلم، كتاب الجنة، بَاب اِثْبَاتِ الْحِسَابِ، الحديث: ۷۲۲۸، ص۱۱۷۶۔
4 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حَدِيثُ عُتْبَةَ بْنِ عَبْدٍ السُّلَمِيِّ اَبِی الْوَلِيْدِ، الحديث: ۱۷۶۶۶، ۱۷۶۶۷، ج۶، ص۲۰۳۔



www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ ने'मतों के रजिस्टर में मौजूद सब से छोटी ने'मत से फ़रमाएगा : ''इस के नेक आ'माल से अपनी क़ीमत वुसूल कर ले।'' वोह उस के सारे नेक आ'माल को घेर लेगी, फिर एक जानिब ठहर कर अ़र्ज़ करेगी : ''तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! मैं ने तो अभी अपनी पूरी क़ीमत भी वुसूल नहीं की।'' लिहाज़ा बाक़ी गुनाह और ने'मतें रह जाएंगी लेकिन नेक आ'माल ख़त्म हो जाएंगे। फिर जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे पर रह़्म करने का इरादा फ़रमाएगा, तो इर्शाद फ़रमाएगा : ''ऐ मेरे बन्दे ! मैं ने तेरी नेकियों को दो गुना कर दिया और तेरी ख़त़ाओं को मुआ़फ़ कर दिया।'' रावी कहते हैं कि मेरे ख़याल में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मैं ने तुझे अपनी ने'मतें अ़त़ा कर दीं।''(1)

## ह़बशी की क़िस्मत :

﴿6﴾...... मरवी है कि ह़बशा का एक शख़्स बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! रंग और नबुव्वत के ए'तिबार से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हम पर फ़ज़ीलत दी गई है, क्या ख़याल है कि अगर मैं भी इसी त़रह़ ईमान ले आऊं जिस त़रह़ दीगर लोग ईमान लाए और उसी त़रह़ अ़मल करूं जिस त़रह़ इन्हों ने अ़मल किया तो क्या मैं भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाऊंगा ?'' तो हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हां।'' फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने ''لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ'' कहा उस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां जन्नत का वा'दा है और जिस ने سُبْحٰنَ اللّٰه कहा उस के लिये एक लाख नेकियां लिखी जाएंगी।

उस शख़्स ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस के बा'द हम क्यूंकर हलाक होंगे ?'' तो शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है बेशक आदमी क़ियामत के दिन इतने आ'माल ले कर आएगा कि अगर उसे पहाड़ पर रख दिया जाए तो उस पर भारी हो, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों में से एक ने'मत आएगी कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत व फ़ज़्ल शामिले ह़ाल न हो तो क़रीब है कि वोह उस के तमाम आ'माल को ख़त्म कर दे।'' फिर येह आयाते मुबा-रका नाज़िल हुई :

(1)......الترغيب والترهيب، كتاب البعث واهوال يوم القيامة، فصل فى ذكر الحساب وغيره، الحديث: ۵۵۱۸، ج۴، ص۲۲۳۔



www.dawateislami.net

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِیْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ یَكُنْ شَیْـًٔا مَّذْكُوْرًا ﴿۱﴾ اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖۗ
نَّبْتَلِیْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِیْعًۢا بَصِیْرًا ﴿۲﴾ اِنَّا هَدَیْنٰهُ السَّبِیْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّ اِمَّا كَفُوْرًا ﴿۳﴾ اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِیْنَ سَلٰسِلَاۡ
وَ اَغْلٰلًا وَّ سَعِیْرًا ﴿۴﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ یَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ﴿۵﴾ عَیْنًا یَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ
یُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِیْرًا ﴿۶﴾ یُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَ یَخَافُوْنَ یَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِیْرًا ﴿۷﴾ وَ یُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ
مِسْكِیْنًا وَّ یَتِیْمًا وَّ اَسِیْرًا ﴿۸﴾ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِیْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّ لَا شُكُوْرًا ﴿۹﴾ اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا یَوْمًا
عَبُوْسًا قَمْطَرِیْرًا ﴿۱۰﴾ فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْیَوْمِ وَ لَقّٰىهُمْ نَضْرَةً وَّ سُرُوْرًا ﴿۱۱﴾ وَ جَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّ حَرِیْرًا ﴿۱۲﴾
مُّتَّكِـِٕیْنَ فِیْهَا عَلَى الْاَرَآىِٕكِ ۚ لَا یَرَوْنَ فِیْهَا شَمْسًا وَّ لَا زَمْهَرِیْرًا ﴿۱۳﴾ وَ دَانِیَةً عَلَیْهِمْ ظِلٰلُهَا وَ ذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا
تَذْلِیْلًا ﴿۱۴﴾ وَ یُطَافُ عَلَیْهِمْ بِاٰنِیَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّ اَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِیْرَاۡ ﴿۱۵﴾ قَوَارِیْرَاۡ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِیْرًا ﴿۱۶﴾
وَ یُسْقَوْنَ فِیْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِیْلًا ﴿۱۷﴾ عَیْنًا فِیْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِیْلًا ﴿۱۸﴾ وَ یَطُوْفُ عَلَیْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ
اِذَا رَاَیْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ﴿۱۹﴾ وَ اِذَا رَاَیْتَ ثَمَّ رَاَیْتَ نَعِیْمًا وَّ مُلْكًا كَبِیْرًا ﴿۲۰﴾ (پ۲۹، الدھر ا تا ۲۰)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक आदमी पर एक वक़्त वोह गुज़रा कि कहीं उस का नाम भी न था, बेशक हम ने आदमी को पैदा किया मिली हुई मनी से कि वोह उसे जांचें तो उसे सुनता देखता कर दिया, बेशक हम ने उसे राह बताई या ह़क़ मानता या ना शुक्री करता, बेशक हम ने काफ़िरों के लिये तय्यार कर रखी हैं ज़न्जीरें और त़ौक़ और भड़क्ती आग, बेशक नेक पियेंगे उस जाम में से जिस की मिलोनी काफ़ूर है, वोह काफ़ूर क्या ? एक चश्मा है, जिस में से **अल्लाह** के निहायत ख़ास बन्दे पियेंगे अपने मह़लों में उसे जहां चाहें बहा कर ले जाएंगे, अपनी मन्नतें पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिस की बुराई फैली हुई है और खाना खिलाते हैं उस की मह़ब्बत पर मिस्कीन और यतीम और असीर को, उन से कहते हैं हम तुम्हें ख़ास **अल्लाह** के लिये खाना देते हैं तुम से कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं मांगते, बेशक हमें अपने रब से एक ऐसे दिन का डर है जो बहुत तुर्श निहायत सख़्त है, तो उन्हें **अल्लाह** ने उस दिन के शर से बचा लिया और उन्हें ताज़गी और शादमानी दी और उन के सब्र पर उन्हें जन्नत और रेशमी कपड़े सिले में दिये, जन्नत में तख़्तों पर तक्या लगाए होंगे, न उस में धूप देखेंगे न ठटर (सख़्त सर्दी) और उस के साए उन पर झुके होंगे और उस के गुच्छे झुका कर नीचे कर दिये गए होंगे और उन पर चांदी के बरतनों और कूज़ों का दौर होगा जो शीशे के मिस्ल हो रहे होंगे, कैसे शीशे चांदी के साक़ियों ने उन्हें पूरे अन्दाज़े पर रखा होगा और उस में वोह जाम पिलाए जाएंगे



www.dawateislami.net

जिस की मिलोनी अदरक होगी, वोह अदरक क्या है ? जन्नत में एक चश्मा है जिसे सल–सबील कहते हैं और उन के आस पास ख़िदमत में फिरेंगे हमेशा रहने वाले लड़के जब तू उन्हें समझे कि मोती हैं बिखेरे हुए और जब तू उधर नज़र उठाए एक चैन देखे और बड़ी सल्तनत।

उस ह़बशी ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या मैं भी जन्नत में वोही चीजे़ं देखूंगा जो आप मुला–ह़ज़ा फ़रमाएंगे ?'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हां।'' (येह सुन कर) वोह ह़बशी रोने लग गया यहां तक कि उस की रूह़ परवाज़ कर गई, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : ''मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उसे क़ब्र में उतारते देखा।''(1)

## जन्नत में दाख़िला रह़मते इलाही से होगा :

﴾7﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : ''अचानक मेरे पास मेरे ख़लील जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام आए और कहा : ''ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ मब्ऊ़स फ़रमाया ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों में से एक बन्दे ने समुन्दर में एक पहाड़ की चोटी पर 500 साल तक उस की इ़बादत की, उस पहाड़ की चौड़ाई और लम्बाई 30, 30 हाथ थी और उसे समुन्दर ने हर त़रफ़ से 4 हज़ार फ़रसख़ (एक फ़रसख़ 3 मील का होता है) तक घेरा हुवा था, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये उंगली जितनी चौड़ी शीरीं नह्‌र निकालता जिस में आहिस्ता आहिस्ता मीठा पानी बहता और पहाड़ के नीचे जम्अ़ हो जाता और हर रात अनार के दरख़्त से एक अनार निकलता, वोह दिन के वक़्त इ़बादत करता और जब शाम होती तो उतरता, वुज़ू करता और वोह अनार ले कर खा लेता, फिर नमाज़ के लिये खड़ा हो जाता, उस ने ब वक़्ते विसाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुवाल किया कि वोह सज्दे की ह़ालत में उस की रूह़ क़ब्ज़ फ़रमाए, ज़मीन और किसी दूसरी चीज़ को उसे ख़त्म करने की क़ुदरत न दे यहां तक कि (बरोज़े क़ियामत) वोह सज्दे की ह़ालत में उठाया जाए।''

ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : उस के साथ ऐसा ही किया गया, जब हम नीचे उतरते या चढ़ते तो उस के पास से गुज़रते और हमारे इ़ल्म में है कि उसे क़ियामत के दिन उठाया जाएगा और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सामने खड़ा होगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के मु–तअ़ल्लिक़ इर्शाद

(1)......المعجم الاوسط، الحديث : ۱۵۸۱، ج۱، ص۴۳۱۔



www.dawateislami.net

फ़रमाएगा : ''मेरे बन्दे को मेरी रह़मत से जन्नत में दाख़िल कर दो।'' वोह अ़र्ज़ करेगा : ''ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! बल्कि मेरे अ़मल से।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''मेरे बन्दे को मेरी रह़मत से जन्नत में दाख़िल कर दो।'' वोह अ़र्ज़ करेगा : ''ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! बल्कि मेरे अ़मल से।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों से इर्शाद फ़रमाएगा : ''मेरे बन्दे के अ़मल का इसे दी गई मेरी ने'मतों से मुवा–ज़ना करो।'' तो आंख की ने'मत उस की 500 सालह इ़बादत को घेर लेगी और बाक़ी जिस्म की ने'मतें उस पर ज़ाइद होंगी।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''मेरे बन्दे को जहन्नम में दाख़िल कर दो।'' तो उसे जहन्नम की त़रफ़ खींचा जाएगा, वोह पुकारेगा : ''ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपनी रह़मत से जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''इसे वापस ले आओ।'' उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में खड़ा किया जाएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से पूछेगा : ''ऐ मेरे बन्दे ! तुझे किस ने ज़िन्दगी बख़्शी ह़ालां कि तू कुछ न था ?'' वोह अ़र्ज़ करेगा : ''ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! तू ने।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''किस ने तुझे 500 साल इ़बादत करने की क़ुव्वत दी ?'' वोह अ़र्ज़ करेगा : ''ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! तू ने।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''किस ने तुझे अ़ज़ीम समुन्दर के दरमियान पहाड़ पर ठहराया, तेरे लिये नमकीन पानी में से मीठा पानी निकाला और तेरे लिये हर रात एक अनार पैदा किया जब कि वोह साल में एक मर्तबा निकलता है ? और तू ने किस से अ़र्ज़ की, कि मेरी रूह़ सज्दे की ह़ालत में क़ब्ज़ करना तो ऐसा ही किया गया ?'' तो वोह बन्दा अ़र्ज़ करेगा : ''ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! येह सब कुछ करने वाला तू है।''

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''येह सब मेरी रह़मत से ही तो है और मैं अपनी रह़मत से ही तुझे जन्नत में भी दाख़िल करता हूं, मेरे बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर दो, ऐ मेरे बन्दे ! तू कितना अच्छा था।'' पस उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दाख़िले जन्नत फ़रमा देगा। ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ''ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! बेशक तमाम अश्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से ही हैं।''(1)

﴾8﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''सीधी राह पर चलो, मियाना रवी इख़्तियार करो और बिशारतें दो क्यूं कि किसी को उस का अ़मल जन्नत में दाख़िल न करेगा।'' सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भी नहीं।'' तो आप

(1)......المستدرک، کتاب التوبۃ والإنابۃ، باب حکایۃ عابدعبد اللّٰہ......الخ، الحدیث: ۷۷۱۲، ج۵، ص۳۵۵۔



www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "और न ही मुझे, मगर येह कि मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत से ढांप लेगा।"(1)

﴾9﴿...... एक रिवायत में है कि "और न ही मुझे, मगर येह कि मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत से ढांप लेगा।" रावी फ़रमाते हैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते अक़्दस अपने सरे अन्वर के ऊपर रख दिया।(2)

## बरोज़े क़ियामत ह़क़दार के ह़क़ की वुसूली :

﴾10﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "क़ियामत के दिन अहले हुक़ूक़ को उन के हुक़ूक़ दिये जाएंगे ह़त्ता कि सींग वाली बकरी से बिग़ैर सींग वाली बकरी का बदला लिया जाएगा।"(3)

﴾11﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "मख़्लूक़ से एक दूसरे का बदला लिया जाएगा यहां तक कि सींग वाली बकरी से बिग़ैर सींग वाली बकरी का बदला लिया जाएगा ह़त्ता कि एक च्यूंटी से दूसरी च्यूंटी का भी बदला लिया जाएगा।"(4)

﴾12﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "क़ियामत के दिन हर चीज़ (अपने हुक़ूक़ के लिये) झगड़ा करेगी यहां तक कि दो बकरियां जिन्हों ने एक दूसरी को सींग मारे होंगे।"(5)

﴾13﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी एक ख़िदमत गुज़ार कनीज़ या ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا को आवाज़ दी लेकिन उन्हों ने जवाब न दिया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नाराज़ हो गए, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक में मिस्वाक थी, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर मुझे बदला

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب صِفَاتِ الْمُنَافِقِیْنَ، باب لَنْ یَّدْخُلَ اَحَدٌ الْجَنَّةَ بِعَمَلِهٖ......الخ، الحدیث: ۷۱۲۲، ص۱۱۶۹۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل،مسند ابی سعید الخدری،الحدیث: ۱۱۴۸۶، ج۴، ص۱۰۵، بتغیرٍقلیلٍ۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب البر والصلة، باب تحریم الظلم، الحدیث: ۶۵۸۰، ص۱۱۲۹۔

4 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی هریرة، الحدیث: ۸۷۶۴، ج۳، ص۲۸۹۔

5 ......المرجع السابق، الحدیث: ۹۰۸۲، ص۳۴۳۔



www.dawateislami.net

लिये जाने का ख़ौफ़ न होता तो तुझे इस मिस्वाक से मारता।''(1)

﴾14﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन बन्दों को या लोगों को इकठ्ठा फ़रमाएगा नंगे पाउं, नंगे बदन, बे ख़तना और बिग़ैर किसी चीज़ के।'' राविये हदीस हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उनैस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : हम ने अ़र्ज़ की : ''بُهْمًا से क्या मुराद है ?'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''उन के पास कुछ न होगा, फिर उन्हें आवाज़ दी जाएगी जिसे दूर वाला भी इसी त़रह़ सुनेगा जिस त़रह़ क़रीब वाला सुनेगा : मैं **दय्यान** (या'नी फ़ैसला फ़रमाने वाला) हूं, मैं मालिक हूं, कोई जहन्नमी जहन्नम में दाख़िल न हो जब तक कि उस पर किसी जन्नती का ह़क़ हो यहां तक कि मैं उस से बदला ले लूं और किसी जन्नती को जन्नत में दाख़िल होने की इजाज़त नहीं जब तक कि उस पर किसी जहन्नमी का ह़क़ हो यहां तक कि मैं उस से इस का बदला ले लूं ह़त्ता कि एक त़मांचे का भी।'' रावी कहते हैं : हम ने अ़र्ज़ की : ''येह कैसे होगा जब कि लोग नंगे पाउं, नंगे बदन, बे ख़तना और बिग़ैर किसी चीज़ के होंगे ?'' तो हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''नेकियां और बुराइयां (बदला बनेंगी)।''(2)

## मुफ़्लिस उम्मती :

﴾15﴿...... शफ़ीउ़ल मुज्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''बेशक मेरी उम्मत में मुफ़्लिस वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़े और ज़कात ले कर आएगा लेकिन उस ने किसी को गाली दी होगी और किसी पर तोहमत लगाई होगी, किसी का माल खाया होगा, किसी का ख़ून बहाया होगा और किसी को मारा होगा, पस इसे भी उस की नेकियां दी जाएंगी और उसे भी उस की नेकियां दी जाएंगी और अगर हुक़ूक़ पूरे होने से पहले उस की नेकियां ख़त्म हो गईं तो उन के गुनाह उस पर डाल दिये जाएंगे, फिर उसे जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।''(3)

## बरोज़े क़ियामत वालिदैन और औलाद का आ़लम :

﴾16﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान

---

1 ......مسند ابی یعلی الموصلی، مسند امّ سلمة، الحدیث: ۶۹۰۸، ج۶، ص۹۴۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث عبد الله بن انیس، الحدیث: ۱۶۰۴۲، ج۵، ص۴۲۹۔

المستدرک، کتاب الأهوال، باب موت ابن وهب بسمع کتاب الأهوال، الحدیث: ۸۷۵۵، ج۵، ص۷۹۳۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب البر والصلة، باب تحریم الظلم، الحدیث: ۲۵۸۱، ص۱۱۲۹۔



www.dawateislami.net

है : "वालिदैन का अपनी औलाद पर कुछ दैन हो तो जब क़ियामत का दिन होगा तो वोह उस क़र्ज़ के साथ मुअ़ल्लक़ हो जाएंगे, बेटा कहेगा : "मैं तो तुम्हारा बेटा हूं (मुआफ़ कर दो)।" वालिदैन चाहेंगे या तमन्ना करेंगे कि काश येह क़र्ज़ इस से भी ज़ियादा होता।"(1)

## बरोज़े क़ियामत कुफ़्फ़ार व अहले किताब की कैफ़िय्यत :

﴾17﴿...... मुस्लिम शरीफ़ में है, रावी फ़रमाते हैं कि हम ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या हम क़ियामत के दिन अपने रब को देखेंगे ?" हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हां, क्या दो पहर के वक़्त जब कि धूप निकली हुई हो और आस्मान में बादल भी न हों तो तुम्हें सूरज को देखने में कोई तक्लीफ़ होती है ? और क्या चौदहवीं की रात में जब कि चांदनी छाई हुई हो और आस्मान में बादल भी न हों तो तुम्हें चांद देखने में कोई तक्लीफ़ होती है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "नहीं, **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इसी त़रह़ तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दीदार करने में कोई रुकावट या तक्लीफ़ नहीं होगी, क़ियामत के रोज़ एक पुकारने वाला पुकारेगा : तुम में से जो क़ौम जिस बुत या पथ्थर को पूजती थी आज उस के पीछे हो जाए। चुनान्चे, ऐसे तमाम लोग जहन्नम में फेंक दिये जाएंगे यहां तक कि वोही लोग रह जाएंगे जो ख़ुदाए वाहिद की इ़बादत किया करते थे, ख़्वाह वोह नेक हों या बद, उन में अहले किताब के कुछ लोग भी शामिल होंगे।

फिर यहूदी बुलाए जाएंगे और उन से पूछा जाएगा : "तुम किस की पूजा किया करते थे ?" वोह कहेंगे : "हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़ज़ैर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की इ़बादत किया करते थे।" उन से कहा जाएगा : "तुम झूटे हो क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कोई बीवी है न बेटा, अब तुम क्या चाहते हो ?" कहेंगे : "ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! हमें प्यास लगी है, लिहाज़ा हमें पानी पिला दे।" फिर उन्हें इशारे से कहा जाएगा : "तुम पानी की त़रफ़ क्यूं नहीं जाते ?" इस के बा'द उन्हें जहन्नम की त़रफ़ धकेला जाएगा, वोह जहन्नम गोया सराब होगी (या'नी दिखाई देगा कि वोह रैत और पानी है लेकिन होगी आग) कि उस का बा'ज़ बा'ज़ को खा रहा होगा फिर वोह जहन्नम में जा पड़ेंगे।

---

(1)......المعجم الكبير، الحديث: ١٠٥٢٦، ج١٠، ص٢١٩۔



www.dawateislami.net

फिर ईसाइयों को बुलाया जाएगा और उन से पूछा जाएगा : "तुम किस की इ़बादत किया करते थे ?" वोह कहेंगे : "हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना मसीह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की पूजा किया करते थे।" तो उन से कहा जाएगा : "तुम झूटे हो, क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कोई बीवी है न बेटा, अब तुम क्या चाहते हो ?" वोह भी कहेंगे : "ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! हमें प्यास लगी है, लिहाज़ा हमें पानी पिला दे।" फिर उन्हें भी इशारे से कहा जाएगा : तुम पानी की त़रफ़ क्यूं नहीं जाते, इस के बा'द उन्हें जहन्नम की त़रफ़ धकेला जाएगा गोया कि वोह सराब है, उस का बा'ज़ बा'ज़ को खा रहा होगा। चुनान्चे, वोह सब दोज़ख़ में जा पड़ेंगे यहां तक कि सिर्फ़ वोही लोग रह जाएंगे जो ख़ुदाए वाह़िद عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत किया करते थे ख़्वाह वोह नेक हों या बद।

फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बहुत क़रीब से एक ऐसी सूरत में जल्वा फ़रमाएगा कि जिस सूरत को वोह दुन्या में देख चुके होंगे, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पूछेगा कि "तुम किस का इन्तिज़ार कर रहे हो ? ह़ालां कि आज हर एक उस के साथ है जिस की वोह इ़बादत किया करता था।" तो वोह अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! हम ने तो उन लोगों को दुन्या ही में छोड़ दिया था ह़ालां कि उन की बड़ी ज़रूरत थी और हम ने उन लोगों का कभी साथ नहीं दिया।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "मैं ही तुम्हारा रब हूं।" वोह अ़र्ज़ करेंगे : "हम तेरी पनाह में आते हैं।" वोह 2 या 3 मर्तबा कहेंगे कि "हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराते।"

वोह ऐसा वक़्त होगा कि बा'ज़ मुसल्मानों के दिल डग-मगाने लगेंगे, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "क्या तुम्हारे इ़ल्म में कोई ऐसी निशानी है कि जिस से तुम अपने रब को पहचान सको ?" मुसल्मान कहेंगे : "हां।" फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (अपनी शान के लाइक़) पिंडली ज़ाहिर फ़रमाएगा, (इस मन्ज़र को देख कर) जो शख़्स भी दुन्या में मह़्ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ और उस की रिज़ा के लिये सज्दा करता था उस को सज्दे की इजाज़त मिल जाएगी और जो शख़्स दुन्यवी ख़ौफ़ या रियाकारी के लिये सज्दा करता था उसे सज्दे की इजाज़त नहीं मिलेगी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की पीठ एक तख़्ते की त़रह़ कर देगा कि जब भी वोह सज्दा करना चाहेगा गुद्दी के बल गिर जाएगा, फिर मुसल्मान अपना सर सज्दे से उठाएंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसी सूरत में होगा (जिस सूरत का तसव्वुर नहीं किया जा सकता और) जिस में उन्हों ने उसे पहले देखा था, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "मैं तुम्हारा रब हूं।" मुसल्मान कहेंगे : "तू ही हमारा परवर दगार عَزَّوَجَلَّ है।"



www.dawateislami.net

फिर जहन्नम के ऊपर पुल सिरात़ बिछा दिया जाएगा और शफ़ाअ़त की इजाज़त दी जाएगी, उस वक़्त सब कहेंगे : ''اَللّٰهُمَّ سَلِّمْ سَلِّمْ'' या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सलामत रख, सलामत रख।'' अ़र्ज़ की गई : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह पुल कैसा होगा ?'' आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''एक फिसलाहट वाली चीज़ होगी या'नी जिस पर क़दम न ठहर सकेंगे और उस में दन्दाने दार कांटे होंगे, वोह लोहे के कांटे सा'दान नामी झाड़ी की त़रह़ होंगे, बा'ज़ मुसल्मान उस पुल से पलक झपक्ने की देर में गुज़र जाएंगे, बा'ज़ बिजली की त़रह़, बा'ज़ हवा की त़रह़, बा'ज़ परिन्दों की त़रह़, बा'ज़ तेज़ रफ़्तार आ'ला नस्ल के घोड़ों की त़रह़ और बा'ज़ ऊंटों की त़रह़ गुज़रेंगे। येह सब सह़ीह़ सलामत गुज़र जाएंगे जब कि बा'ज़ मुसल्मान कांटों से उलझते हुए पार पहुंचेंगे और बा'ज़ कांटों से ज़ख़्मी हो कर जहन्नम में गिर जाएंगे यहां तक कि सब मुअमिनीन जहन्नम से नजात पा जाएंगे और क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! जो मोमिन नजात पा कर जन्नत में चले जाएंगे वोह अपने उन मुसल्मान भाइयों को जो जहन्नम में पड़े होंगे जहन्नम से छुड़ाने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ऐसा झगड़ा करेंगे जैसे कोई अपना ह़क़ ह़ासिल करने के लिये झगड़ा करता है।''[1]

## शफ़ाअ़त का बयान :

﴾18﴿...... बुख़ारी व मुस्लिम के अल्फ़ाज़ येह हैं कि ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : उस दिन तुम मुअमिनीन को देखोगे कि वोह (बत़ौरे नाज़) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपने भाइयों को छुड़ाने के लिये इस से भी सख़्त झगड़ा करेंगे जैसा तुम अपना ह़क़ ह़ासिल करने के लिये झगड़ा करते हो और अ़र्ज़ करेंगे : ''ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! वोह हमारे साथ रोज़ा रखते थे, नमाज़ पढ़ते थे और ह़ज करते थे।'' तो उन से कहा जाएगा : ''जिसे तुम जानते हो निकाल लाओ।'' पस उन की सूरतें जहन्नम पर ह़राम हो जाएंगी और कसीर मख़्लूक़ को बाहर निकालेंगे कि जिन्हें निस्फ़ पिंडलियों और घुटनों तक आग पहुंच चुकी होगी, वोह अ़र्ज़ करेंगे : ''ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! तू ने जिन का हमें हुक्म दिया था उन में से कोई भी बाक़ी न बचा।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''लौट जाओ और जिस के दिल में एक दीनार के बराबर नेकी पाओ उसे भी जहन्नम से निकाल दो।'' लिहाज़ा कसीर मख़्लूक़ को बाहर निकालेंगे और

1 ......صحیح مسلم،کتاب الإیمان، باب معرفة طریق الرؤیة،الحدیث: ۴۵۴،ص ۱۰۷ـ



www.dawateislami.net

अ़र्ज़ करेंगे : ''ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! जिन के निकालने का तू ने हमें हुक्म दिया था हम ने उन में से किसी को न छोड़ा।''

फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''लौट जाओ और जिस के दिल में निस्फ़ दीनार की मिस्ल नेकी पाओ उसे भी जहन्नम से निकाल लाओ।'' वोह कसीर मख़्लूक़ को बाहर निकालेंगे, फिर अ़र्ज़ करेंगे : ''ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! जिन के निकालने का तू ने हमें हुक्म दिया था हम ने उन में से किसी को न छोड़ा।'' फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''लौट जाओ और जिस के दिल में एक ज़र्रा बराबर भी नेकी पाओ उसे भी जहन्नम से निकाल लाओ।'' वोह कसीर मख़्लूक़ को बाहर निकालेंगे फिर अ़र्ज़ करेंगे : ''ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! हम ने जहन्नम में कोई ऐसा आदमी नहीं छोड़ा जिस में कुछ भी भलाई मौजूद थी।''

इस ह़दीस के रावी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : अगर तुम मेरी (बयान कर्दा) इस ह़दीसे पाक की तस्दीक़ नहीं करते तो अगर चाहो तो येह आयते मुबा-रका पढ़ लो :

اِنَّ اللّٰهَ لَا یَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍۚ وَ اِنْ تَكُ حَسَنَةً یُّضٰعِفْهَا وَ یُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِیْمًا (پ ۵،النساء:۴۰)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** एक ज़र्रा भर ज़ुल्म नहीं फ़रमाता और अगर कोई नेकी हो तो उसे दूनी करता और अपने पास से बड़ा सवाब देता है।

फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''फ़रिश्ते, अम्बिया और मुअमिनीन शफ़ाअ़त कर चुके अब (गुनाहगारों के लिये) सिवाए **अर-ह़मुर्राह़िमीन** के कोई बाक़ी न बचा।'' फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (अपनी शायाने शान) मुठ्ठी भर कर लोगों को जहन्नम से निकाल लेगा कि जिन्हों ने अस्लन कोई नेकी न की होगी और वोह लोग जल कर कोएला बन चुके होंगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन को जन्नत के दरवाज़े पर आबे ह़यात की नह्र में ग़ोत़ा देगा और वोह उस नह्र से तरो ताज़ा हो कर निकलेंगे जैसे सैलाब की मिट्टी में से दाना उग पड़ता है, क्या तुम नहीं देखते कि जो दाना पथ्थर या दरख़्त के पास आफ़्ताब के रुख़ पर होता है ज़र्द या सब्ज़ रंग का पौदा बन जाता है और जो दाना साए की जानिब होता है उस का पौदा सफ़ेद रंग का होता है? सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! (आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो ज़र-ई मुआ़-मलात ऐसे बयान फ़रमा रहे हैं) गोया कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जंगलों में जानवर चराते रहे हों।''



www.dawateislami.net

फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सिल्सिलए कलाम जारी रखते हुए इर्शाद फ़रमाया : वोह लोग उस नह्‌र से मोतियों की त़रह़ चमक्ते हुए निकलेंगे, उन की गरदनों में सोने के पट्टे होंगे जिन की वज्ह से अहले जन्नत उन्हें पहचान लेंगे और उन के मु-तअ़ल्लिक़ कहेंगे : "येह वोह लोग हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बिग़ैर किसी नेक अ़मल के जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया है।" फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन से इर्शाद फ़रमाएगा : "जन्नत में दाख़िल हो जाओ और जिस चीज़ को तुम देखोगे वोह तुम्हारी हो जाएगी।" वोह लोग कहेंगे : "ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! तू ने हमें वोह कुछ अ़त़ा फ़रमा दिया है जो जहां वालों में से किसी को अ़त़ा नहीं फ़रमाया।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "मेरे पास तुम्हारे लिये इस से भी अफ़्ज़ल चीज़ है।" वोह कहेंगे : "ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! कौन सी चीज़ इस से अफ़्ज़ल हो सकती है ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "मेरी रिज़ा अब मैं तुम से कभी नाराज़ न होउंगा।"(1)

## सरकार के तबस्सुम में ह़िक्मत :

﴾19﴿...... ख़ादिमे दरबारे रिसालत ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत फ़रमाते हैं कि हम सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर थे कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तबस्सुम फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो कि मैं किस वज्ह से मुस्कुराया हूं ?" हम ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही बेहतर जानते हैं।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दे के अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से कलाम करने की वज्ह से मुस्कुरा रहा हूं कि वोह कहेगा : "ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! क्या तू ने मुझे ज़ुल्म से पनाह नहीं दी ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "क्यूं नहीं।" वोह अ़र्ज़ करेगा : "आज के दिन मैं अपने ख़िलाफ़ अपने सिवा किसी और की गवाही क़बूल नहीं करूंगा।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "आज तू ख़ुद और किरामन कातिबीन तेरे ख़िलाफ़ बत़ौरे गवाही काफ़ी हैं।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि फिर उस के मुंह पर मोह्‌र लगा दी जाएगी और उस के आ'ज़ा से कहा जाएगा : "बोलो।" तो उस के आ'ज़ा उस के आ'माल के मु-तअ़ल्लिक़ बोलने लग जाएंगे, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के और उस के कलाम के दरमियान ख़ल्वत (या'नी तन्हाई) पैदा करेगा तो वोह अपने आ'ज़ा से कहेगा :

---

(1)......صحيح مسلم، كتاب الإيمان، باب معرفة طريق الرؤية، الحديث: ۴۵۴، ص ۱۱۷۔

صحیح الْبُخَارِی، كِتَاب التَّوْحِيد، بَاب قَوْلِ اللّٰهِ تَعَالٰى (وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَاضِرَةٌ) الحديث: ۷۴۳۹، ص ۶۲۰۔



www.dawateislami.net

"दूर हो जाओ, दफ़्अ़ हो जाओ, मैं तुम्हारी त़रफ़ से ही तो झगड़ा कर रहा था।"[1]

## ज़मीन की ख़बरें :

﴾20﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुक़द्दसा तिलावत फ़रमाई :

يَوْمَىٕذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا (پ٣٠،الزلزال:٤)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** उस दिन वोह अपनी ख़बरें बताएगी।

फिर इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो कि ज़मीन की ख़बरें क्या हैं ?" सहा़बए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इस की ख़बरें येह हैं कि वोह हर मर्द व औ़रत के आ'माल की गवाही देगी जो उन्हों ने इस की पीठ पर किये और कहेगी : इस ने फुलां फुलां दिन फुलां फुलां काम किया।"[2]

## बरोज़े क़ियामत इन्सानों की जसामत :

﴾21﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान :

يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۭ بِاِمَامِهِمْ (پ١٥،بنی اسرائیل:٧١)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** जिस दिन हर जमाअ़त को उस के इमाम के साथ बुलाएंगे।

की तफ़्सीर बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "उन में से एक आदमी को बुलाया जाएगा और उसे दाएं हाथ में नामए आ'माल दिया जाएगा, उस की जसामत 60 गज़ लम्बी कर दी जाएगी, उस का चेहरा सफ़ेद हो जाएगा और उस के सर पर चमकदार मोतियों वाला ताज रखा जाएगा।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि वोह अपने दोस्तों की त़रफ़ चल देगा, वोह उसे दूर से देखेंगे और अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें भी येह अ़त़ा फ़रमा और हमारे लिये भी इस में ब-र-कत डाल।" यहां तक कि वोह उन के पास पहुंच जाएगा और उन से कहेगा : "तुम्हें खुश ख़बरी हो ! बेशक तुम में से हर एक के लिये इसी की मिस्ल है।"

---

1 ......صحیح مسلم، کِتَاب الزُّهْدِ وَالرَّقَائِق، باب الدُّنْيَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ وَجَنَّةُ الْكَافِرِ، الحدیث : ٧٤٣٩، ص١١٩٣۔

2 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب اخباره، باب اخباره......الخ، الحدیث : ٧٣١٦، ج٩، ص٢٢٧۔



www.dawateislami.net

और काफ़िर को उस का नामए आ'माल बाएं हाथ में दिया जाएगा, उस का चेहरा सियाह होगा और इन्सानी सूरत में ही उस का जिस्म भी 60 गज़ लम्बा कर दिया जाएगा लेकिन उस के सर पर आग का ताज रखा जाएगा, उस के साथी उसे देखेंगे और कहेंगे : ''हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस के शर से पनाह मांगते हैं, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इसे हमारे पास न लाना।'' आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं फिर वोह उन के पास आएगा तो वोह कहेंगे : ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इसे ज़लीलो रुस्वा कर दे।'' तो वोह कहेगा : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें अपनी रह़मत से दूर करे ! तुम में से हर एक के लिये भी इसी की मिस्ल (अ़ज़ाब) है।''(1)

## फ़स्ल 3 : हौज़े कौसर, मीज़ान और पुल सिरात़ का बयान

### हौज़े कौसर :

﴾1﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है : ''मेरे हौज़ की लम्बाई एक महीने की मसाफ़त है, उस के सब कनारे बराबर हैं और उस का पानी चांदी से ज़ियादा सफ़ेद है।''(2)

﴾2﴿...... एक रिवायत में है : ''उस का पानी दूध से ज़ियादा सफ़ेद है।''(3)

﴾3﴿...... एक रिवायत में है : ''उस का पानी शह्द से ज़ियादा मीठा है।''(4)

﴾4﴿...... एक रिवायत में है : ''उस की ख़ुश्बू कस्तूरी से ज़ियादा पाकीज़ा है और उस के आबख़ोरे (या'नी पियाले) आस्मान के सितारों की त़रह़ हैं, जिस ने उस में से पी लिया वोह कभी प्यासा न होगा।''(5)

---

(1) ......جامع الترمذی، ابواب تفسیر القرآن، باب ومن سورة بنی اسرائیل، الحدیث:۳۱۳۶،ص۱۹۶۹۔

(2) ......صحیح مسلم،کتاب الفضائل، باب اِثبات حوض نَبِيِّنَا وَصِفَاتِهٖ، الحدیث:۵۹۷۱،ص۱۰۸۴۔

(3) ......المرجع السابق، الحدیث:۵۹۸۹،ص۱۰۸۵۔

(4) ......المرجع السابق، الحدیث:۵۹۸۹،ص۱۰۸۵۔

(5) ......المرجع السابق، الحدیث:۵۹۷۱،ص۱۰۸۴۔



www.dawateislami.net

﴾5﴿...... एक रिवायत में है कि "उस का चेहरा कभी सियाह न होगा।"(1)

## हौज़े कौसर से कौन, कब पियेगा ?

हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी इयाज़ मालिकी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि इस का ज़ाहिरी मा'ना येही है कि हौज़े कौसर से पानी का पीना हिसाबो किताब और पुल सिरात् से गुज़रने के बा'द होगा क्यूं कि इसे उ़बूर करने वाला ही प्यासा होने से मह़फ़ूज़ रहेगा। एक क़ौल येह है कि इसे वोही पियेगा जिस के मुक़द्दर में जहन्नम से नजात होगी। येह भी हो सकता है कि इस उम्मत में से जो इसे पियेगा और जहन्नम में दाख़िला उस के मुक़द्दर में हुवा तो उसे जहन्नम में बिग़ैर प्यास के अ़ज़ाब होगा क्यूं कि एक दूसरी ह़दीसे पाक का ज़ाहिरी मफ़्हूम येह है कि सिवाए मुरतद के तमाम उम्मत इसे पियेगी। एक क़ौल येह भी है कि नामए आ'माल दाएं हाथ में लेने वाले तमाम उम्मतों के मुअमिनीन इसे पियेंगे, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ना फ़रमान बन्दों में से जिसे चाहेगा अ़ज़ाब देगा।

उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللہُ السَّلَام का इस में इख़्तिलाफ़ है कि क्या हौज़े कौसर पुल सिरात् को उ़बूर करने से पहले मैदाने मह़शर में है या जन्नत की सर ज़मीन में है कि जिस तक पुल सिरात् उ़बूर करने के बा'द ही पहुंचा जा सकेगा ?

## हौज़े कौसर की वुस्अ़त :

﴾6﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है कि मेरी उम्मत के 70 हज़ार लोगों को बिग़ैर ह़िसाबो किताब के जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अख़्नस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह लोग तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत में से इस त़रह़ हैं जिस त़रह़ मख्खियों में भूरी मख्खियां होती हैं (या'नी बहुत कम)।" तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है कि उन 70 हज़ार (जन्नत में दाख़िल होने वालों) में से हर हज़ार के साथ 70 हज़ार अफ़राद जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मज़ीद 3 मुठ्ठियां (जिन की वुस्अ़त ख़ुदा व मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ و صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही बेहतर जानते हैं) भर कर बिला ह़िसाब जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।"

---

1......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی امامۃ الباھلی، الحدیث: ۲۲۲۱۸،ج۸،ص۲۷۳۔



www.dawateislami.net

किसी ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़ौज़ की वुस्अ़त कितनी है ?" इर्शाद फ़रमाया : "जितना अ़दन से ड़मान के दरमियान फ़ासिला है बल्कि इस से भी वसीअ़ ।" और अपने दस्ते अक़्दस से इशारा फ़रमा रहे थे कि उस में पानी बहने के दो रास्ते हैं ।(1)

﴾7﴿...... एक रिवायत में है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उस ह़ौज़ पर सब से पहले परागन्दा सर और मैले कुचैले कपड़ों वाले मुहाजिरीन फु–क़रा आएंगे, जो अमीर अ़ौरतों से निकाह़ न कर सके और न ही उन के लिये बादशाहों के दरवाज़े खोले जाते हैं ।"(2)

*﴾बिखरे बाल आज़ूर्दा सूरत, होते हैं कुछ अहले मह़ब्बत*

*बद्र मगर येह शान है उन की, बात न टाले रब्बुल इ़ज़्ज़त﴿*

﴾8﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मेरे ह़ौज़ की वुस्अ़त अ़दन और ड़मान के दरमियानी फ़ासिले जितनी है, जो बर्फ़ से ज़ियादा ठन्डा, शह्द से ज़ियादा मीठा और कस्तूरी से ज़ियादा ख़ुश्बूदार है, उस के पियाले आस्मान के सितारों जितने हैं, जिस ने उस से एक घूंट पी लिया वोह कभी प्यासा न होगा, उस पर सब से पहले मुहाजिरीन फु–क़रा आएंगे ।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन लोग हैं ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस के सर परागन्दा, चेहरे भूक से मुरझाए हुए और कपड़े मैले कुचैले होते हैं, जिन के लिये बादशाहों के दरवाज़े नहीं खोले जाते और न ही वोह हुस्न व दौलत वाली अ़ौरतों से निकाह़ कर सकते हैं, उन से तमाम ह़ुक़ूक़ तो लिये जाते हैं लेकिन उन के तमाम ह़ुक़ूक़ दिये नहीं जाते ।"(3)

﴾9﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़–ज़मत निशान है : "जन्नत से ह़ौज़ में दो परनाले बहते हैं उन में से एक सोने का और दूसरा चांदी का है ।"(4)

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث ابی امامة الباهلی، الحديث : ۲۲۲۱۸،ج۸،ص۲۷۲۔

2 ......المرجع السابق، حديث ثوبان، الحديث : ۲۲۴۳۰،ص۳۲۱۔

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد الله بن عمر بن الخطاب، الحديث : ۶۱۷۰،ج۲،ص۴۹۱۔

4 ......صحيح مسلم، كتاب الفضائل، باب اِثبات حوض نَبِيِّنَا وصفاته، الحديث : ۵۹۹۰،ص۱۰۸۵،بتغيرٍ۔



www.dawateislami.net

﴾10﴿...... एक रिवायत में है : "मैं अहले यमन के पीने की ख़ातिर अपने हौज़ के कनारे से लोगों को अ़सा के ज़रीए़ हटाऊंगा, यहां तक कि पानी उन के ऊपर से बहने लगेगा।"(1)

## हौज़े कौसर पर पियालों की ता'दाद :

﴾11﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "हौज़ पर आस्मान के सितारों की ता'दाद के बराबर सोने और चांदी के पियाले होंगे।"(2)

﴾12﴿...... एक रिवायत में है कि "या आस्मान के सितारों से भी ज़ियादा होंगे।"(3)

﴾13﴿...... एक सहीह़ रिवायत में मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "उस में सोने और चांदी के 2 मीज़ाब (परनाले) हैं जो जन्नत से बहते हैं।"(4)

## सरकार की करम नवाज़ी :

﴾14﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि (एक दफ़्आ़) मैं रो पड़ी तो शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुझे किस चीज़ ने रुलाया ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "जहन्नम को याद किया तो रोने लग गई, क्या आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ियामत के दिन अपने अहलो इयाल को याद रखेंगे ?" तो आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "3 जगहों पर (मेरे सिवा) कोई किसी को याद न रखेगा : (1)...... मीज़ान के पास यहां तक कि वोह जान ले कि उस की नेकियां हलकी हैं या भारी (2)...... आ'माल नामों के खुलने के वक़्त यहां तक कि वोह जान ले कि उसे नामए आ'माल दाएं हाथ में मिलेगा या बाएं में या पीठ के पीछे से और (3)...... पुल सिरात़ के पास जब वोह जहन्नम की

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الفضائل، باب اِثبات حوض نَبِیِّنَاوصفاته، الحدیث : ۵۹۹۰، ص۱۰۸۵ ـ

2 ......صحیح مسلم، کتاب الفضائل، باب اِثبات حوض نَبِیِّنَاوصفاته، الحدیث : ۶۰۰۰، ص۱۰۸۵ ـ

3 ......صحیح مسلم، کتاب الفضائل، باب اِثبات حوض نَبِیِّنَاوصفاته، الحدیث : ۶۰۰۱، ص۱۰۸۵ ـ

4 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی برزة الاسلمی، الحدیث : ۱۹۸۲۵، ج۷، ص۱۸۸ ـ



www.dawateislami.net

पुश्त पर बिछाया जाएगा यहां तक कि बन्दा जान ले कि वोह उसे उ़बूर कर लेगा या नहीं ।''(1)

﴾15﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बरोज़े क़ियामत अपनी शफ़ाअ़त का सुवाल किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मैं اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ शफ़ाअ़त करूंगा ।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कहां तलाश करूं ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''पहले मुझे पुल सिरात़ के पास तलाश करना ।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''अगर पुल सिरात़ के पास न पाऊं तो (फिर कहां तलाश करूं) ?'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मुझे मीज़ान के पास तलाश करना ।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''अगर मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मीज़ान के पास भी न पाऊं तो (फिर कहां तलाश करूं) ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''फिर मुझे ह़ौज़ के पास तलाश करना क्यूं कि मैं इन 3 जगहों में से एक पर ज़रूर मिल जाऊंगा ।''(2)

## मीज़ान की कैफ़िय्यत :

﴾16﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : क़ियामत के दिन (इतना बड़ा) मीज़ान रखा जाएगा कि अगर उस में आस्मान व ज़मीन का वज़्न किया जाए या रखे जाएं तो उस में समा जाएं, फ़रिश्ते अ़र्ज़ करेंगे : ''ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! इस के ज़रीए किस का वज़्न किया जाएगा ?'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''अपनी मख़्लूक़ में से जिस का चाहूंगा ।'' फ़रिश्ते अ़र्ज़ करेंगे : ''तेरे लिये पाकी है हम तेरी इ़बादत का ह़क़ अदा न कर सके ।'' फिर उस्तरे की त़रह़ तेज़ पुल सिरात़ को रखा जाएगा तो फ़रिश्ते अ़र्ज़ करेंगे : ''इसे कौन उ़बूर कर सकेगा ?'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''मेरी मख़्लूक़ में से जिसे मैं चाहूंगा ।'' फ़रिश्ते अ़र्ज़ करेंगे : ''तेरे लिये पाकी है हम तेरी इ़बादत का ह़क़ अदा न कर सके ।''(3)

---

(1)......سنن ابی داود، کتاب السنة، باب فی ذکرالمیزان، الحدیث : ۴۷۵۵،ص۱۵۷۳ ـ
المستدرک، کتاب الأھوال، باب ذکرعرض الأنبیاء......الخ الحدیث : ۸۷۶۲،ج۵،ص۷۹۸،"أیجوز"بدله"أینجو"ـ

(2)......جامع الترمذی، ابواب صفة القیامة، باب ما جاء فی شأن الصراط، الحدیث : ۲۴۳۳،ص۱۸۹۶ ـ
جامع الاصول للجزری،الکتاب التاسع،الفصل الرابع، الفرع الثالث، الحدیث : ۸۰۰۷،ج۱۰،ص۴۳۹ـ

(3)......المستدرک، کتاب الأھوال، باب ذکر وسعة المیزان، الحدیث : ۸۷۷۸،ج۵،ص۸۰۷، بتغیرٍقلیلٍـ



www.dawateislami.net

## पुल सिरात़ :

﴾17﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जहन्नम के ऊपर तेज़ धार तलवार की मिस्ल पुल सिरात़ बिछाया जाएगा जिस पर फिस्लन होगी, उस पर आग के उचक ले जाने वाले दन्दाने दार कांटे होंगे, उन से उलझ्ने वाले बा'ज़ जहन्नम में गिर पड़ेंगे और बा'ज़ ज़ख़्मी हो जाएंगे और कुछ बिजली की तेज़ी से गुज़र जाएंगे, नजात पाने वाले उन में न फंसेंगे और कुछ हवा की त़रह़ गुज़र जाएंगे और वोह भी न अटकेंगे, फिर कुछ घोड़े की रफ़्तार में गुज़रेंगे, फिर कुछ आदमी के दौड़ने की त़रह़, कुछ तेज़ चलने वाले की त़रह़ और कुछ आ़म रफ़्तार से पैदल चलने वाले की त़रह़ गुज़रेंगे, फिर उन में से आख़िरी इन्सान वोह होगा जिसे आग ने जला दिया होगा और वोह उस में काफ़ी अ़ज़ाब पा चुका होगा, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपने फ़ज़्लो करम और रह़मत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और उसे कहा जाएगा : ''अपनी ख़्वाहिश का इज़्हार कर और मांग।'' तो वोह अ़र्ज़ करेगा : ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क्या तू मुझ से इस्तिह्ज़ा फ़रमाता है ह़ालां कि तू रब्बुल इ़ज़्ज़त है ?'' उसे कहा जाएगा : ''अपनी ख़्वाहिश का इज़्हार कर और मांग।'' यहां तक कि जब उस की आरज़ूएं पूरी हो जाएंगी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''तेरे लिये वोह भी है जो तू ने मांगा और उस के साथ उस की मिस्ल भी है।''(1)

﴾18﴿...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे मुबश्शिर अन्सारिया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की मौजू-दगी में येह इर्शाद फ़रमाते सुना : ''अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो अस्ह़ाबे श-जरा में से कोई भी जहन्नम में दाख़िल न होगा, जिन्हों ने दरख़्त के नीचे बैअ़त की थी।'' उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्यूं दाख़िल न होंगे ?'' तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें डांट दिया तो उन्हों ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ (پ۱۶،مریم:۷۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक

---

(1)......المعجم الكبير، الحديث : ۸۹۹۲،ج۹،ص۲۰۳۔



www.dawateislami.net

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह भी तो इर्शाद फ़रमाया है :

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ﴿۷۲﴾ (پ۱۶،مریم:۷۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** फिर हम डर वालों को बचा लेंगे और ज़ालिमों को उस में छोड़ देंगे घुटनों के बल गिरे ।''(1)

﴾19﴿...... सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की एक जमाअ़त में पुल सिरात़ से गुज़रने के मुआ़-मले में इख़्तिलाफ़ पैदा हुवा तो बा'ज़ ने कहा कि मोमिन इस में दाख़िल नहीं होंगे और बा'ज़ ने कहा कि पहले उस में तमाम दाख़िल होंगे, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अहले तक़्वा को बचा लेगा, किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से इस के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : सब उस पर वारिद होंगे, फिर अपनी उंग्लियां अपने कानों की त़रफ़ बढ़ाते हुए इर्शाद फ़रमाया : मेरे दोनों कान बहरे हो जाएं अगर मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते न सुना हो कि गुज़रने से मुराद दाख़िल होना है, या'नी हर नेक व बद उस में दाख़िल होगा, फिर येह आग मुअमिनीन पर ठन्डी और सलामती वाली हो जाएगी जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर हुई यहां तक कि जहन्नम की आग उन की ठन्डक से ठन्डी हो जाएगी :

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ﴿۷۲﴾ (پ۱۶،مریم:۷۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** फिर हम डर वालों को बचा लेंगे और ज़ालिमों को उस में छोड़ देंगे घुटनों के बल गिरे ।(2)

﴾20﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''लोग जहन्नम पर आएंगे, फिर अपने आ'माल के मुत़ाबिक़ उसे पार करेंगे, उन में से बा'ज़ बिजली के चमकने की त़रह़, बा'ज़ हवा की त़रह़, बा'ज़ घोड़े के दौड़ने की त़रह़, बा'ज़ ऊंट सुवार की त़रह़, बा'ज़ आदमी के दौड़ने की त़रह़ और बा'ज़ पैदल चलने वाले की त़रह़ पुल सिरात़ से गुज़र जाएंगे ।''(3)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل اصحاب الشجرة، الحدیث: ۲۴۰۴، ص۱۱۱۷۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند جابربن عبد اللّٰه، الحدیث: ۱۴۵۲۷، ج۵، ص۸۰۔

3 ......جامع الترمذی، ابواب تفسیر القرآن، باب ومن سورة مریم، الحدیث: ۳۱۵۹، ص۱۹۷۲۔



www.dawateislami.net

## बाप और बेटे का वाक़िआ़ :

﴾21﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : क़ियामत के दिन एक शख़्स अपने वालिद से मिलेगा और कहेगा : "ऐ मेरे बाप ! मैं आप का कैसा बेटा था ?" वोह कहेगा : "तू अच्छा बेटा था।" वोह कहेगा : "क्या आज आप मेरे पीछे चलेंगे ?" उस का वालिद जवाब देगा : "हां !" तो वोह कहेगा : "आप मेरे कपड़े पकड़ लें।" वोह उस के कपड़े को पकड़ लेगा, फिर वोह चल देगा यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब (अपनी शान के मुत़ाबिक़) मख़्लूक़ के सामने जल्वा गर होगा और इर्शाद फ़रमाएगा : "ऐ मेरे बन्दे ! जिस दरवाज़े से चाहे जन्नत में दाख़िल हो जा।" वोह अ़र्ज़ करेगा : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मेरा बाप भी मेरे साथ है और तू ने मुझ से वा'दा किया है कि मुझे ग़मज़दा न करेगा।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के बाप की शक्ल मस्ख़ कर के उसे बिज्जू बना देगा और वोह जहन्नम की आग में गिर पड़ेगा, उस का बेटा बिज्जू की बू से नाक पकड़ लेगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से इर्शाद फ़रमाएगा : ऐ मेरे बन्दे ! तेरा बाप तो गिर गया। वोह कहेगा : नहीं, तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! (गिरने वाला मेरा बाप नहीं बल्कि बिज्जू था)।[1]

﴾22﴿...... बुख़ारी शरीफ़ में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने चचा आज़र से मुलाक़ात करेंगे और फिर इसी त़रह़ का वाक़िआ़ ज़िक्र किया।[2]

## फ़स्ल 4 : शफ़ाअ़त का इज़्ने आ़म और पुल सिरात़ का बिछाया जाना

## हर नबी के लिये एक मक़्बूल दुआ़ :

﴾23﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हर नबी ने एक सुवाल किया।" रावी फ़रमाते हैं, या येह इर्शाद फ़रमाया : "हर नबी के लिये एक मक़्बूल दुआ़ है जो उस ने अपनी उम्मत के लिये मांग ली है लेकिन मैं ने अपनी दुआ़ को बरोज़े क़ियामत अपनी उम्मत की शफ़ाअ़त के लिये मह़फ़ूज़ कर रखा है।"[3]

---

1 ......المستدرک، کتاب الأھوال، باب رجوع الناس للشفاعة إلی الأنبیاء علیھم السلام، الحدیث: ۸۷۸۸، ج۵، ص۸۱۱۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب أحادیث الأنبیاء، بَاب قَوْلِ اللّٰهِ تَعَالٰی(وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرَاھِیمَ خَلِیلًا)، الحدیث: ۳۳۵۰، ص۲۷۱۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب لکل نبی دعوة، الحدیث: ۶۳۰۵، ص۵۳۱۔
صحیح مسلم، کتاب الإیمان، بَاب اِخْتِبَاءِ النَّبِیِّ دَعْوَةَ الشَّفَاعَةِ لِأُمَّتِهٖ، الحدیث: ۴۹۴، ص۷۱۵۔



www.dawateislami.net

﴾24﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मैं ने देखा कि मेरी उम्मत मेरे बा'द जिस ह़ाल में भी होगी एक दूसरे का ख़ून बहाएगी तो मैं ग़मगीन हो गया कि येह बात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से तै़ थी जिस त़रह़ साबिक़ा उम्मतों में थी, लिहाज़ा मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुवाल किया कि वोह मुझे क़ियामत के रोज़ मक़ामे शफ़ाअ़त अ़ता फ़रमाए ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे वोह मक़ाम अ़ता फ़रमा दिया ।"(1)

﴾25﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुझे आज रात 5 ख़ुसूसिय्यात अ़ता की गईं कि जो मुझ से पहले किसी को अ़ता नहीं की गईं ।" यहां तक कि इर्शाद फ़रमाया : "पांचवीं येह कि मुझ से फ़रमाया गया : "सुवाल कर क्यूं कि हर नबी ने सुवाल किया ।" तो मैं ने अपना सुवाल क़ियामत के दिन के लिये मुअख़्ख़र कर दिया और वोह तुम्हारे और उस के लिये है जिस ने गवाही दी कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं ।"(2)

﴾26﴿...... अ़र्ज़ की गई : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सल्त़नत जैसी सल्त़नत का सुवाल नहीं किया ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कुरा दिये और फिर इर्शाद फ़रमाया : "शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक तुम्हारे दोस्त के लिये ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सल्त़नत से अफ़्ज़ल सल्त़नत हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो भी नबी भेजा उसे एक मक़्बूल दुआ़ अ़ता फ़रमाई, उन में से जिस ने दुन्या ही में वोह दुआ़ मांग ली उसे दुन्या ही में अ़ता फ़रमा दी गई और जिस ने अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ दुआ़ की जब उन्हों ने उस की ना फ़रमानी की तो उन्हें हलाक कर दिया गया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे भी दुआ़ अ़ता फ़रमाई तो मैं ने उसे क़ियामत के दिन अपनी उम्मत की शफ़ाअ़त के लिये मह़फ़ूज़ कर रखा है ।"(3)

## इख़्तियाराते मुस्त़फ़ा :

﴾27﴿...... ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि अभी अभी मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने किस चीज़ का इख़्तियार दिया ?"

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، ومن حديث ام حبيبة، الحديث : ۲۷۴۷۹، ج۱۰، ص۳۹۶۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللّٰه بن عمرو بن العاص، الحديث : ۷۰۸۹، ج۲، ص۶۸۷، ۶۸۸۔

3 ......المُصَنَّف لابن أبی شيبة، كِتاب الْفَضَائِلِ، باب مَا اَعْطَى اللّٰهُ مُحَمَّدًا صلى الله عليه وسلم، الحديث : ۱۰۲، ج۷، ص۴۳۲۔



www.dawateislami.net

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم !" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुझे तीन चौथाई उम्मत को बिग़ैर ह़िसाब व अ़ज़ाब जन्नत में दाख़िल करने और शफ़ाअ़त के दरमियान इख़्तियार दिया गया।" सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसे इख़्तियार किया ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "शफ़ाअ़त को।" सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने दरयाफ़्त किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या तमाम उम्मत की ? फिर तो हमें भी अपनी शफ़ाअ़त वालों में शामिल फ़रमा लें।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "اِنَّ شَفَاعَتِیْ لِكُلِّ مُسْلِمٍ" या'नी मेरी शफ़ाअ़त हर मुसल्मान के लिये है।"(1)

## मुस्तफ़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त :

﴿28﴾...... ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि क़ियामत के दिन सूरज को 10 साल की गरमी अ़ता की जाएगी, फिर उसे लोगों की खोपड़ियों के क़रीब कर दिया जाएगा। रावी फ़रमाते हैं, इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़दीसे पाक ज़िक्र की और फ़रमाया कि लोग ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये रह़मत के दरवाज़े खोल दिये और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सबब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अगलों पिछलों के गुनाह बख़्श दिये, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारी मुसीबत देख रहे हैं, लिहाज़ा अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से हमारी शफ़ाअ़त फ़रमाइये।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाएंगे : "मैं तुम्हारा दोस्त हूं।" फिर लोगों के दरमियान चलते हुए बाहर तशरीफ़ लाएंगे यहां तक कि जन्नत के दरवाज़े तक पहुंचेंगे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दरवाज़े के सोने के ह़ल्क़े को पकड़ कर दरवाज़ा खट-खटाएंगे, पूछा जाएगा : "कौन है ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाएंगे : "मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم)।" पस आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये दरवाज़ा खोला जाएगा यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में खड़े होंगे और सज्दा करेंगे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "अपना सरे अन्वर उठाइये और सुवाल कीजिये आप को अ़ता किया जाएगा और शफ़ाअ़त कीजिये आप की शफ़ाअ़त क़बूल

1......المعجم الكبير، الحديث : ١٠٧، ج١٨، ص٥٨۔



www.dawateislami.net

की जाएगी।'' और येही **मक़ामे महमूद** है।(1)

﴾29﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''मैं खड़ा हो कर अपनी उम्मत का इन्तिज़ार कर रहा होउंगा जो पुल सिरात् को उ़बूर कर रही होगी कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام तशरीफ़ लाएंगे और कहेंगे : ''ऐ मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास गुज़ारिश करने या आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास इकठ्ठे होने के लिये ह़ाज़िर हुए हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करते हैं कि तमाम उम्मतों में जुदाई कर दे क्यूं कि लोग बड़ी मुसीबत में मुब्तला और पसीने में मूंहों तक डूबे हुए हैं।'' मगर वोह पसीना मुअमिनीन पर ज़ुकाम की त़रह़ होगा और काफ़िर को मौत ढांप लेगी, मैं फ़रमाऊंगा : ''ऐ ईसा ! यहां खड़े रहिये ह़त्ता कि मैं आप के पास वापस आ जाऊं।''

रावी फ़रमाते हैं : ''सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले जाएंगे और अ़र्श के नीचे सज्दे में गिर जाएंगे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ऐसा मक़ाम व मर्तबा अ़त़ा किया जाएगा जो न तो किसी मुक़र्रब फ़रिश्ते को अ़त़ा हुवा और न ही किसी नबिय्ये मुरसल को, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلام को इर्शाद फ़रमाएगा : ''मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के पास जाओ और कहो : अपना सरे अन्वर उठा लीजिये, मांगिये ! आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को अ़त़ा किया जाएगा और शफ़ाअ़त कीजिये ! आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की शफ़ाअ़त क़बूल की जाएगी।''

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : मैं अपनी उम्मत की एक मर्तबा शफ़ाअ़त कर के हर 99 में से एक इन्सान को बाहर निकाल दूंगा, मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : मैं बार बार अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर होता रहूंगा और जब तक खड़ा रहूंगा शफ़ाअ़त करता रहूंगा यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ पर इनायत फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाएगा : मेरी मख़्लूक़ में से तुम्हारी उम्मत में से जिस ने एक दिन भी ख़ुलूसे दिल से येह गवाही दी और इसी पर उस की मौत वाक़ेअ़ हुई कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं उसे (जन्नत में) दाख़िल फ़रमा दीजिये।(2)

﴾30﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : अहले

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث : ۷۱۱۷، ج۲، ص۲۴۸۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالک، الحديث : ۱۲۷۲۴، ج۴، ص۳۵۵، بتغيرقليل۔



www.dawateislami.net

क़िब्ला में से बे शुमार लोग जहन्नम में दाख़िल किये जाएंगे जिन की ता'दाद को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही जानता है और इस वज्ह से कि उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की और फिर अपनी उस ना फ़रमानी पर डटे रहे और उस की इताअ़त की मुख़ा-लफ़त की, फिर मुझे शफ़ाअ़त की इजाज़त दी जाएगी और मैं सज्दा करते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इसी तरह़ ह़म्दो सना करूंगा जैसे ह़ालते क़ियाम में करता हूं तो मुझे कहा जाएगा : ''अपना सर उठा लीजिये, मांगिये आप (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को अ़ता किया जाएगा और शफ़ाअ़त कीजिये आप (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की शफ़ाअ़त क़बूल की जाएगी ।''(1)

## इज़्ने शफ़ाअ़त :

﴾31﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि एक दिन हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सुब्ह़ के वक़्त नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई, फिर उसी जगह तशरीफ़ फ़रमा हो गए यहां तक कि जब चाश्त का वक़्त हुवा तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कुरा दिये लेकिन अपनी जगह पर ही तशरीफ़ फ़रमा रहे यहां तक कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ज़ोहर और अ़स्र व मग़रिब की नमाज़ पढ़ी और इन तमाम अवक़ात में कोई बात न की यहां तक कि नमाज़े इशा अदा फ़रमा कर घर तशरीफ़ ले जाने लगे तो लोगों ने मुझ से कहा : ''हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त फ़रमाएं कि क्या वज्ह है कि आज आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऐसा काम किया जो पहले कभी न किया ।''

(अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं :) मेरे पूछने पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मुझ पर दुन्या व आख़िरत के आयिन्दा होने वाले उमूर पेश किये गए, एक ही मैदान में पहलों और पिछलों को इकठ्ठा किया जाएगा यहां तक कि वोह ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास ह़ाज़िर होंगे इस ह़ाल में कि पसीना उन्हें मुकम्मल तौर पर ढांपने लगेगा तो वोह अ़र्ज़ करेंगे : ''ऐ आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ! आप अबुल बशर हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को मुन्तख़ब फ़रमाया, अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हमारी शफ़ाअ़त फ़रमाइये ।'' तो वोह इर्शाद फ़रमाएंगे : आज तुम जिस आज़्माइश में मुब्तला हो मैं भी उसी में मुब्तला हूं, अपने मेरे बा'द वाले बाप ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास चले जाओ :

---

1......المعجم الصغير للطبرانی، الحديث: ١٠٣، ج١، ص٣٠۔



www.dawateislami.net

اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰۤى اٰدَمَ وَ نُوْحًا وَّ اٰلَ اِبْرٰهِیْمَ وَ اٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِیْنَۙ(۳۳) (پ۳، آل عمران: ۳۳)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** ने चुन लिया आदम और नूह़ और इब्राहीम की आल औलाद और इमरान की आल को सारे जहां से।

इस के बा'द वोह नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास ह़ाज़िर होंगे और अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ! आप अपने रब की बारगाह में हमारी शफ़ाअ़त कीजिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मुन्तख़ब फ़रमाया और आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ क़बूल फ़रमाई और ज़मीन पर काफ़िरों को न छोड़ा।" तो वोह इर्शाद फ़रमाएंगे : "तुम्हारे इस मस्अले का ह़ल मेरे पास नहीं, तुम ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास जाओ क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अपना ख़लील बनाया।"

वोह ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास ह़ाज़िर होंगे तो वोह इर्शाद फ़रमाएंगे : "तुम्हारे इस मस्अले का ह़ल मेरे पास नहीं, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास जाओ, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन से कलाम फ़रमाया।" वोह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास ह़ाज़िर होंगे तो वोह भी इर्शाद फ़रमाएंगे : तुम्हारे इस मस्अले का ह़ल मेरे पास नहीं, ह़ज़रते ईसा बिन मरयम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास जाओ, वोह कोढ़ी और बरस के मरीज़ों को शिफ़ा देते और मुर्दों को ज़िन्दा फ़रमाते थे, लेकिन वोह भी इर्शाद फ़रमाएंगे : तुम्हारे इस मस्अले का ह़ल मेरे पास नहीं, तुम औलादे आदम के सरदार ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास चले जाओ, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही वोह हस्ती हैं जिन के लिये क़ियामत के दिन सब से पहले ज़मीन (या'नी क़ब्र) शक़ होगी, पस ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में जाओ वोह तुम्हारी तुम्हारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे।

रावी फ़रमाते हैं कि लोग आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आएंगे तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये इज़्ने शफ़ाअ़त और बिशारते जन्नत के मु-तअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ करेंगे। रावी फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते आ़लीशान में येह ख़ुश ख़बरी ले कर ह़ाज़िर होंगे तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक हफ़्ते (या'नी 7 दिन) की मिक़्दार ह़ालते सज्दा में परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रहेंगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! अपना सर उठाइये, कहिये आप की बात सुनी जाएगी, शफ़ाअ़त कीजिये आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की शफ़ाअ़त



www.dawateislami.net

क़बूल की जाएगी ।'' आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सरे अन्वर उठाएंगे, फिर जब अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ देखेंगे तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक हफ़्ते (या'नी 7 दिन) की मिक़्दार सर ब-सुजूद रहेंगे, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''ऐ मुह़म्मद ! अपना सर उठाइये, कहिये आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बात सुनी जाएगी, शफ़ाअ़त कीजिये आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की शफ़ाअ़त क़बूल की जाएगी ।''

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फिर सज्दा करने के लिये आगे बढ़ेंगे तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कन्धों से थाम लेंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़ इतनी क़बूल फ़रमाएगा जितनी किसी इन्सान की क़बूल नहीं फ़रमाई, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अ़र्ज़ करेंगे : ''ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! तू ने मुझे औलादे आदम का सरदार बनाया, लेकिन मुझे इस पर फख़्र नहीं और क़ियामत के दिन ज़मीन सब से पहले मुझ पर खुली, मुझे इस पर भी फ़ख़्र नहीं यहां तक कि मेरे ह़ौज़ पर सन्आ़ व ऐला के दरमियान बसने वाले लोगों से ज़ियादा लोग वारिद हुए ।''

फिर कहा जाएगा : सिद्दीक़ों को बुलाओ, पस वोह शफ़ाअ़त करेंगे, फिर कहा जाएगा कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को बुलाओ, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : कोई नबी एक गुरौह को ले कर आएगा और कोई नबी 5 या 6 उम्मतियों को ले कर आएगा और किसी के साथ कोई न होगा । फिर कहा जाएगा शु-हदा को बुलाओ, वोह जिस की चाहेंगे शफ़ाअ़त करेंगे । जब शु-हदा शफ़ाअ़त कर लेंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''मैं **अर-ह़मुर्राह़िमीन** हूं जो मेरे साथ किसी को शरीक नहीं ठहराते थे जन्नत में दाख़िल हो जाओ ।''

पस वोह जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''जहन्नम में देखो ! क्या उस में कोई ऐसा शख़्स है जिस ने कभी कोई नेकी की हो ?'' फ़िरिश्ते जहन्नम में एक ऐसे शख़्स को पाएंगे तो उस से पूछा जाएगा : ''क्या तू ने कभी कोई अच्छा काम किया था ?'' वोह अ़र्ज़ करेगा : ''नहीं, सिवाए इस के कि मैं ख़रीदो फ़रोख़्त में लोगों से नरमी करता था ।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''मेरे बन्दे से इसी त़रह़ नरमी करो जिस त़रह़ येह मेरे बन्दों पर नरमी किया करता था ।''

फिर जहन्नम से एक और शख़्स को निकाला जाएगा और उस से पूछा जाएगा : क्या तू ने कभी कोई नेक काम किया था ? वोह अ़र्ज़ करेगा : ''नहीं ! सिवाए इस के कि मैं ने अपने बेटे को



www.dawateislami.net

हुक्म दिया था कि जब मैं मर जाऊं तो मुझे आग में जला देना, फिर मैं राख बन कर सुरमे की मिस्ल हो जाऊं तो मुझे समुन्दर की त़रफ़ ले जाना और हवा में बिखेर देना।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''तुम ने येह क्यूं किया ?'' वोह अ़र्ज़ करेगा : ''तेरे ख़ौफ़ से।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''इस बड़ी से बड़ी सल्त़नत को देखो, बेशक तुम्हारे लिये इस की मिस्ल और मज़ीद 10 गुना है।'' वोह अ़र्ज़ करेगा : ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे साथ क्यूं इस्तिहज़ा फ़रमाता है ह़ालां कि तू तो मालिक है।'' उस शख़्स की इस बात से मैं चाश्त के वक़्त मुस्कुरा दिया था।[1]

﴾32﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : (बरोज़े क़ियामत) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ लोगों को जम्अ़ फ़रमाएगा तो मुअमिनीन खड़े हो जाएंगे यहां तक कि जन्नत उन के क़रीब कर दी जाएगी, वोह ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास ह़ाज़िर होंगे और अ़र्ज़ करेंगे : ''ऐ हमारे बाप ! हमारे लिये जन्नत का दरवाज़ा खुलवाइये।'' वोह जवाब देंगे : ''तुम्हारे वालिद की ही ख़त़ा (इज्तिहादी) ने तुम्हें जन्नत से निकाला है, मेरा येह मक़ाम नहीं, पस मेरे बेटे ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास जाओ।'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام भी येही फ़रमाएंगे : ''मेरा येह मक़ाम नहीं, मैं तो दूर का दोस्त हूं, ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास जाओ कि जिन से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कलाम फ़रमाया।'' ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام भी येही फ़रमाएंगे : ''मेरा येह मक़ाम नहीं, ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास जाओ कि वोह **कलि-मतुल्लाह** और **रूहुल्लाह** हैं।'' लेकिन ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام भी इर्शाद फ़रमाएंगे : ''मेरा येह मक़ाम नहीं, ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास जाओ।''

चुनान्चे, लोग मेरे पास ह़ाज़िर होंगे, मैं बारगाहे इलाही में खड़ा होउंगा तो मुझे (शफ़ाअ़त की) इजाज़त दी जाएगी फिर अमानत और रिश्तेदारी लाई जाएंगी, वोह दोनों पुल सिरात़ के दाएं बाएं खड़ी हो जाएंगी और तुम में से पहला उचक्ने वाली बिजली की सी तेज़ी से गुज़र जाएगा। रावी फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कुरबान ! कौन सी चीज़ बिजली की त़रह़ होगी ?'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या तुम बिजली की त़रफ़ नहीं देखते कि कैसे पलक

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی بکر الصدیق، الحدیث : ۱۵،ج۱،ص۲۰ تا۲۲۔



www.dawateislami.net

झपक्ने की देर में आती और चली जाती है, फिर एक गुरौह तेज़ आंधी की त़रह़ पुल सिरात़ से गुज़र जाएगा, फिर परिन्दों की त़रह़ और आदमियों के दौड़ने की त़रह़। उन के आ'माल उन्हें पार करा देंगे और तुम्हारे नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पुल सिरात़ पर खड़े ''رَبِّ سَلِّمْ سَلِّمْ'' (या'नी ऐ मेरे रब! इन को सलामती से गुज़ार दे) की सदा लगा रहे होंगे, ह़त्ता कि लोगों के आ'माल आ़जिज़ हो जाएंगे, यहां तक कि एक शख़्स रेंगते हुए आएगा कि जो चलने की इस्तित़ाअ़त न रखता होगा, पुल सिरात़ के दोनों त़रफ़ हुक्म के पाबन्द लटक्ते हुए आंकड़े (या'नी टेढ़े मुंह वाले कांटे) होंगे जिस का उन्हें हुक्म दिया जाएगा उसे पकड़ लेंगे और बा'ज़ मुसल्मान कांटों से उलझ्ते हुए पार पहुंचेंगे और बा'ज़ कांटों से ज़ख़्मी हो कर जहन्नम में गिर जाएंगे और उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है! बेशक जहन्नम का पेंदा 70 साल की मसाफ़त है।''(1)

## दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام कब शफ़ाअ़त करेंगे ? :

﴾3﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हम हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक दा'वत में ह़ाज़िर थे, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ बाज़ू का गोश्त बढ़ाया गया जो कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बहुत मरग़ूब था, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस को दांतों से तनावुल फ़रमाने लगे, फिर इर्शाद फ़रमाया : मैं क़ियामत के दिन लोगों का सरदार होउंगा, क्या तुम जानते हो कि येह क्यूं होगा ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अव्वलीन व आख़िरीन को एक मैदान में जम्अ़ फ़रमाएगा और उन्हें देखने वाला देखेगा और बुलाने वाला सुनेगा और सूरज उन के क़रीब हो जाएगा और लोगों को ना क़ाबिले बरदाश्त घबराहट व परेशानी का सामना होगा और वोह एक दूसरे से कहेंगे : ''क्या तुम देख नहीं रहे कि किस मुसीबत में गिरिफ़्तार हो ? क्या तुम अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में किसी की शफ़ाअ़त का इन्तिज़ार कर रहे हो ?'' वोह एक दूसरे से कहेंगे : ''चलो ! ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास चलें।''

लिहाज़ा वोह उन के पास जाएंगे और अ़र्ज़ करेंगे : ''आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तमाम इन्सानों के बाप हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को अपने दस्ते क़ुदरत से पैदा फ़रमाया और अपनी त़रफ़ की रूह़ फूंकी और फ़रिश्तों को सज्दए (ता'ज़ीमी) करने का हुक्म दिया तो उन्हों ने आप को सज्दा किया और आप को जन्नत में रखा, क्या आप बारगाहे इलाही में हमारी शफ़ाअ़त नहीं फ़रमाएंगे ? क्या आप

(1)......صحیح مسلم، کتاب الإیمان، باب ادنی اهل الجنة منزلة فیها، الحدیث: ۴۸۲،ص۱۱۵۔



www.dawateislami.net

देखते नहीं कि हम किस मुसीबत और अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हैं ? या कहेंगे कि क्या आप नहीं देख रहे कि हम किस अ़ज़ाब में मुब्तला हो चुके हैं ?'' तो ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इर्शाद फ़रमाएंगे : ''बेशक मेरा परवर दगार عَزَّوَجَلَّ आज इस क़दर ग़-ज़बो जलाल में है कि इस से पहले कभी नहीं हुवा और न ही इस क़दर इस के बा'द कभी होगा, उस ने मुझे दरख़्त से मन्अ़ फ़रमाया था लेकिन मुझ से लग़्ज़िश हो गई, **نَفْسِیْ ,نَفْسِیْ ,نَفْسِیْ** (या'नी आज तो बस मुझे अपनी जान की फ़िक्र है), मेरे इलावा किसी और की त़रफ़ जाओ, ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो जाओ।''

पस वोह लोग ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास जाएंगे और अ़र्ज़ करेंगे : ''आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ज़मीन वालों की त़रफ़ सब से पहले रसूल हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को शुक्र गुज़ार बन्दा होने का ख़ित़ाब अ़त़ा फ़रमाया, क्या आप नहीं देख रहे कि हम किस मुसीबत में गिरिफ़्तार हैं ? क्या आप नहीं देख रहे कि हम किस क़दर अ़ज़ाब में मुब्तला हैं ? तो ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इर्शाद फ़रमाएंगे : ''बेशक मेरा परवर दगार عَزَّوَجَلَّ आज इस क़दर ग़-ज़बो जलाल में है कि जिस क़दर इस से पहले कभी नहीं हुवा और न ही इस के बा'द कभी होगा, मुझे एक दुआ़ का ही ह़क़ था जो मैं ने अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ कर दी थी, **نَفْسِیْ ,نَفْسِیْ ,نَفْسِیْ** (या'नी आज तो बस मुझे अपनी जान की फ़िक्र है), मेरे इलावा किसी और की त़रफ़ जाओ, ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ जाओ।''

पस वोह ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में ह़ाज़िर होंगे और अ़र्ज़ गुज़ार होंगे : ''ऐ इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ! आप ज़मीन वालों में से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी और ख़लील हैं, आप हमारी शफ़ाअ़त कीजिये, क्या आप मुला-ह़ज़ा नहीं फ़रमा रहे कि हम किस क़िस्म की मुसीबत से दो चार हैं ? क्या आप नहीं देख रहे कि हम किस अ़ज़ाब में मुब्तला हैं ?'' तो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इर्शाद फ़रमाएंगे : ''बेशक मेरा परवर दगार عَزَّوَجَلَّ आज इस क़दर ज़ियादा ग़ज़ब में है कि इस से पहले कभी नहीं हुवा और न ही इस के बा'द कभी होगा, मैं ने 3 मर्तबा ख़िलाफ़े वाक़िआ़ बातें कही थीं और फिर आप उन्हें ज़िक्र करेंगे (और कहेंगे) **نَفْسِیْ ,نَفْسِیْ ,نَفْسِیْ** (या'नी मुझे तो आज अपनी जान की फ़िक्र है) लिहाज़ा मेरे इलावा किसी और के पास जाओ, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास जाओ।''

पस वोह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास जाएंगे और अ़र्ज़ गुज़ार होंगे : ''ऐ मूसा ! आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल और कलीम हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को अपनी रिसालत



www.dawateislami.net

और कलाम के ज़रीए लोगों पर फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई, हमारे लिये अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में शफ़ाअ़त फ़रमाएं, क्या आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام नहीं देख रहे कि हम किस अ़ज़ाब में मुब्तला हैं ? और किस मुसीबत में गिरिफ़्तार हैं ?'' तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इर्शाद फ़रमाएंगे : ''बेशक मेरा परवर दगार عَزَّوَجَلَّ आज ज़बर दस्त ग़-ज़बो जलाल में है कि इस क़दर न तो पहले कभी हुवा और न ही इस के बा'द कभी होगा, एक शख़्स मेरे हाथ से मारा गया था जिसे क़त्ल करने का मुझे हुक्म नहीं दिया गया था, **نَفْسِىْ ,نَفْسِىْ ,نَفْسِىْ** (या'नी मुझे तो आज अपनी जान की फ़िक्र है) मेरे इलावा किसी और के पास जाओ, ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास जाओ ।''

पस वोह ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास जाएंगे और अ़र्ज़ गुज़ार होंगे : ''ऐ ईसा ! आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल और उस का कलिमा हैं, जो उस ने ह़ज़रते सय्यि-दतुना मरयम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की त़रफ़ इल्क़ा किया और आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **रूहुल्लाह** हैं, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने तो मां की गोद में लोगों से कलाम फ़रमाया, हमारे लिये अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में शफ़ाअ़त फ़रमा दीजिये, क्या आप नहीं देख रहे कि हम किस मुसीबत में गिरिफ़्तार हैं ? क्या आप मुला-ह़ज़ा नहीं फ़रमा रहे कि हम कैसी तकालीफ़ में मुब्तला हैं ?'' तो ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इर्शाद फ़रमाएंगे : बेशक मेरा परवर दगार عَزَّوَجَلَّ आज इन्तिहाई ग़-ज़बो जलाल में है कि इस से पहले न तो कभी हुवा और न ही इस क़दर इस के बा'द कभी होगा ।'' ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام किसी लग़्ज़िश का ज़िक्र नहीं करेंगे ताहम फ़रमाएंगे : ''**نَفْسِىْ ,نَفْسِىْ ,نَفْسِىْ**'' (आज तो मुझे ख़ुद अपनी फ़िक्र है) किसी और के पास जाओ, ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में चले जाओ ।''

पस वोह मेरे पास ह़ाज़िर होंगे और अ़र्ज़ करेंगे : ''ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल और आख़िरी नबी हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अगलों पिछलों के गुनाह बख़्श दिये हैं, अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हमारी शफ़ाअ़त तो फ़रमा दीजिये, क्या आप मुला-ह़ज़ा नहीं फ़रमा रहे कि हम किस मुसीबत में गिरिफ़्तार हैं ? क्या आप हमारे अ़ज़ाब में मुब्तला होने को मुला-ह़ज़ा नहीं फ़रमा रहे ?'' रावी फ़रमाते हैं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मैं अ़र्श के नीचे आऊंगा और



www.dawateislami.net

अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर सज्दे में गिर पडूंगा, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरा सीना खोल देगा और मेरे दिल में अपनी ह़म्दो सना के ऐसे कलिमात इल्क़ा फ़रमाएगा जो इस से पहले किसी के दिल में दाख़िल नहीं किये गए, फिर कहा जाएगा : ''ऐ मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ! अपना सर उठाइये, मांगिये, आप को दिया जाएगा। शफ़ाअ़त कीजिये, आप की शफ़ाअ़त क़बूल की जाएगी।''

पस मैं अपना सर उठाऊंगा और अ़र्ज़ करूंगा : ''ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मेरी उम्मत को बख़्श दे, ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मेरी उम्मत को बख़्श दे।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''ऐ मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ! अपनी उम्मत में से जिन पर कोई ह़िसाब नहीं, उन्हें जन्नत के दरवाज़ों में से दाएं दरवाज़े से दाख़िले जन्नत कर दीजिये ह़ालां कि वोह दूसरे दरवाज़ों से दाख़िल होने वालों के साथ भी शरीक होंगे।'' फिर इर्शाद फ़रमाया : ''उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! जन्नती दरवाज़ों के दो किवाड़ों के दरमियान इतना फ़ासिला है जितना मक्का और मक़ामे हजर के दरमियान या मक्का और बुसरा के दरमियान है।''(1)

## शफ़ाअ़त के ह़क़दार :

﴾34﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''شَفَاعَتِیْ لِاَھْلِ الْکَبَائِرِ مِنْ اُمَّتِیْ'' या'नी मेरी शफ़ाअ़त मेरी उम्मत के कबीरा गुनाह करने वालों के लिये है।''(2)

﴾35﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है : ''मुझे शफ़ाअ़त या अपनी निस्फ़ उम्मत को जन्नत में दाख़िल करने के दरमियान इख़्तियार दिया गया तो मैं ने शफ़ाअ़त को इख़्तियार किया क्यूं कि शफ़ाअ़त ज़ियादा आ़म और काफ़ी होगी और मेरी शफ़ाअ़त मुत्तक़ी मोमिनों के लिये नहीं बल्कि ख़त़ाकारों और गुनहगारों के लिये होगी।''(3)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب احادیث الانبیاء، بَاب قَوْلِ اللّٰہِ تَعَالٰی(اِنَّا اَرْسَلْنَا نُوحًا اِلٰی قَوْمِہٖ......)، الحدیث: ۳۳۴۰،ص۲۶۹۔
صحیح البخاری، کتاب التفسیر، سورۃ بنی اسرائیل، بَاب(ذُرِّیَّۃَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ......)، الحدیث: ۴۷۱۲،ص۳۹۳۔
صحیح مسلم، کتاب الإیمان ،باب ادنی اھل الجنۃ منزلۃ فیھا، الحدیث: ۴۸۰،ص۷۱۴،بتغیرٍ۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب السنۃ، باب فی الشفاعۃ، الحدیث: ۴۷۳۹،ص۱۵۷۱۔

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللّٰہ بن عمربن الخطاب، الحدیث: ۵۴۵۳،ج۲،ص۳۶۶۔
مجمع الزوائد، کتاب البعث،باب منہ فی الشفاعۃ،الحدیث: ۱۸۵۲۰،ج۱۰،ص۲۸۶،بتغیرٍ۔



www.dawateislami.net

# तीसरा बाब : जहन्नम और इस के मु-तअ़ल्लिक़ात

## ( अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपने फ़ज़्लो करम से इस से पनाह अ़ता फ़रमाए आमीन )

﴾36﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अक्सर येह दुआ़ फ़रमाया करते :

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾ (پ۲، البقرۃ:۲۰۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा ।(1)

﴾37﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुत़्बा देते हुए इर्शाद फ़रमाया : "2 बड़ी चीज़ों को न भूलो : जन्नत और जहन्नम ।" फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आबदीदा हो गए यहां तक कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रीश मुबारक की दोनों जानिब सैले अश्क रवां हो गया या वोह आंसूओं से तर हो गईं, फिर इर्शाद फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! आख़िरत के मु-तअ़ल्लिक़ जो मैं जानता हूं अगर तुम जानते तो ज़रूर पहाड़ों की त़रफ़ चल पड़ते और अपने सरों पर मिट्टी डालते ।"(2)

﴾38﴿...... मरवी है कि एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ख़िलाफ़े मा'मूल आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हुए तो हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खड़े हो गए और दरयाफ़्त फ़रमाया : "ऐ जिब्रील ! क्या हुवा कि मैं आप का रंग मु-तग़य्यर देख रहा हूं ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िर हुवा हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जहन्नम को भड़काने का हुक्म इर्शाद फ़रमा दिया है ।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ जिब्रील ! मेरे सामने आग या जहन्नम का पूरा पूरा ज़िक्र करो ।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से हज़ार साल जहन्नम की आग जलाई गई यहां तक कि वोह सफ़ेद हो गई, फिर हज़ार साल जलाई गई यहां तक कि वोह सुर्ख़ हो गई, फिर हज़ार साल जलाई गई यहां तक कि वोह सियाह हो गई, पस अब वोह तारीकी ही तारीकी है, उस की कोई चिंगारी रोशन नहीं और न ही कोई शो'ला बुझता है । उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ

---

(1) ......صحیح البخاری، کتاب الدعوات، بَاب قَوْلِ النَّبِیِّ ﷺ (رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً) الحدیث :۶۳۸۹،ص۵۳۷۔

(2) ......الترغیب والترھیب، کتاب صفة الجنة والنار، باب الترھیب من النار......الخ، الحدیث :۵۶۰۶،ج۴،ص۲۶۷۔



www.dawateislami.net

मब्ऊ़स फ़रमाया ! अगर जहन्नम को सूई के नाके के बराबर खोल दिया जाए तो उस की ह़रारत से तमाम अहले ज़मीन मर जाएं और उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ मब्ऊ़स फ़रमाया ! अगर जहन्नम के दारोग़ों में से एक दारोग़ा अहले दुन्या की त़रफ़ झांके तो उस के चेहरे की बद सूरती और बदबू की अज़िय्यत से तमाम अहले दुन्या मर जाएं और उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ भेजा ! जहन्नमियों की कड़ियों की जो सिफ़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी किताब में बयान फ़रमाई है, अगर उन में से एक कड़ी दुन्या के पहाड़ों पर रख दी जाए तो वोह बह पड़ें और (अपनी जगह) बर क़रार न रह सकें यहां तक कि वोह ज़मीन की निचली तह तक चले जाएं।''

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ जिब्राईल ! मुझे इतना ही काफ़ी है (कहीं ऐसा न हो कि) कि मेरा दिल फट जाए और मैं फ़ौत हो जाऊं।'' रावी फ़रमाते हैं कि फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام को रोते देख कर इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ जिब्रईल ! तुम रो रहे हो ? ह़ालां कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ख़ास मक़ाम पर फ़ाइज़ हो।'' तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''मैं क्यूं न रोऊं बल्कि मैं तो रोने का ज़ियादा ह़क़दार हूं, शायद मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़ल्म (खुफ़्या तदबीर) में मौजूद ह़ाल के इ़लावा होउं और मैं नहीं जानता कि शायद मैं भी ऐसे ही आज़्माया जाऊं जैसे इब्लीस आज़्माया गया ह़ालां कि वोह फ़रिश्तों में (होता) था और क्या मा'लूम कि मैं भी ऐसे ही आज़्माया जाऊं जैसे **हारूत** व **मारूत** को आज़्माया गया।''

रावी फ़रमाते हैं कि फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी रोने लग गए और ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام भी रोने लग गए, दोनों रोते रहे यहां तक कि दोनों को निदा दी गई : ''ऐ जिब्रील (عَلَيْهِ السَّلَام) और ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम दोनों को अपनी ना फ़रमानी से अमान अ़त़ा फ़रमाई है।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام आस्मानों पर चले गए और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वहां से बाहर तशरीफ़ ले गए और अन्सार के कुछ लोगों के पास से गुज़रे जो हंस खेल रहे थे तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या तुम हंस रहे हो ह़ालां कि तुम्हारे पीछे जहन्नम है ? अगर तुम वोह जानते जो मैं जानता हूं तो कम हंसते और ज़ियादा रोते, न तो पेट भर कर खाना खाते और न ही पानी पीते बल्कि चटियल मैदानों की त़रफ़ निकल जाते और



www.dawateislami.net

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में फ़रियाद करते रहते।'' आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को निदा दी गई : ''ऐ मुहम्मद ! मेरे बन्दों को मायूस न करें, मैं ने आप को बिशारतें देने वाला बना कर भेजा है तंगियों के लिये मब्ऊ़स नहीं फ़रमाया।'' फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''आ'माल में मियाना रवी इख़्तियार करो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब ह़ासिल करो।''(1)

## सय्यिदुना मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام के न मुस्कुराने का सबब :

﴾39﴿...... एक रिवायत में है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام से दरयाफ़्त फ़रमाया : ''क्या बात है कि मैं ने ह़ज़रते मीकाईल (عَلَيْهِ السَّلَام) को कभी मुस्कुराते नहीं देखा ?'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने जवाब दिया : ''जब से जहन्नम को पैदा किया गया है उस वक़्त से ह़ज़रते मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام मुस्कुराए नहीं।''(2)

## जहन्नम की शिद्दते तपिश :

﴾40﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''बेशक तुम्हारी येह (दुन्यावी) आग जहन्नम की आग का 70वां ह़िस्सा है और अगर इसे दो मर्तबा पानी से न बुझाया जाता तो तुम इस से नफ़्अ़ न उठा सकते और येह भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करती है कि इसे दोबारा जहन्नम में न डाले।''(3)

﴾41﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''बरोज़े क़ियामत जब जहन्नम को लाया जाएगा तो उस की 70 हज़ार लगामें होंगी और हर लगाम को 70 हज़ार फ़रिश्ते पकड़ कर खींच रहे होंगे।''(4)

﴾42﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''तुम्हारी येह आग जिसे बनी आदम जलाते हैं जहन्नम की आग का 70वां ह़िस्सा है।'' लोगों ने अ़र्ज़ की : ''ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येही काफ़ी थी।'' इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक जहन्नम की आग इस (दुन्या की आग) से 69 द-रजे ज़ियादा है, हर द-रजा इस की गरमी की मिस्ल है।''(5)

---

1 ......المعجم الاوسط، الحديث : ۲۵۸۳، ج۲، ص۷۸، "مبشرا" بدله "ميسرا"۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالک، الحديث : ۱۳۳۴۲، ج۴، ص۴۴۷۔

3 ......سنن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب صفة النار، الحديث : ۴۳۱۸، ص۲۷۴۰۔

4 ......صحيح مسلم، كتاب الجنة، باب جهنم اعاذنا الله منها، الحديث : ۷۱۶۴، ص۱۱۷۱، "يوم القيامة" بدله "يومئذ"۔

5 ......جامع الترمذى، ابواب صفة جهنم، باب مَا جَآءَ اَنَّ نَارَكُمْ هَذِهِ ......الخ، الحديث : ۲۵۸۹، ص۱۹۱۲۔



www.dawateislami.net

﴾43﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''इसे (या'नी दुन्यवी आग को) दो मर्तबा समुन्दर से ठन्डा किया गया और अगर येह न होता तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस में किसी के लिये मन्फ़अ़त न बनाता।''(1)

﴾44﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बेशक येह (या'नी दुन्यावी) आग जहन्नम का 100वां ह़िस्सा है।''(2)

﴾45﴿...... ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर इस मस्जिद में एक लाख या इस से ज़ियादा लोग हों और एक जहन्नमी शख़्स हो और वोह जहन्नमी सांस ले और उस का सांस उन सब को पहुंचे तो मस्जिद और इस में मौजूद सब कुछ जल जाए।''(3)

## सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام का जन्नत व जहन्नम को मुला-ह़ज़ा करना :

﴾46﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत और जहन्नम को पैदा फ़रमाया तो ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام को जन्नत में भेजा और इर्शाद फ़रमाया : ''उस का और जन्नतियों के लिये तय्यार की गई ने'मतों का नज़ारा करो।'' ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام गए, और जन्नत और जन्नतियों के लिये तय्यार की गई ने'मतों को देखा और वापस आ कर अ़र्ज़ की : ''तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! जो भी इस का ज़िक्र सुनेगा इस में ज़रूर दाख़िल होगा।'' फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से उसे मशक़्क़तों से ढांप दिया गया, इस के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : ''जाओ और अब देखो कि मैं ने अहले जन्नत के लिये क्या क्या तय्यार कर रखा है ?'' वोह गए और देखा कि उसे मशक़्क़तों से ढांप दिया गया है तो वापस आ कर अ़र्ज़ की : ''तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! मुझे डर है कि कोई भी इस में दाख़िल न हो सकेगा।''

फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : ''जहन्नम की त़रफ़ जाओ और उस का और जहन्नमियों के लिये तय्यार किये गए अ़ज़ाब का मुशा-हदा करो।'' ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام गए और उसे और जहन्नमियों के लिये तय्यार किये गए अ़ज़ाब को देखा कि जहन्नम के बा'ज़ ह़िस्से बा'ज़ पर चढ़ रहे हैं तो वापस आ कर अ़र्ज़ की : ''तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! जो इस के मु-तअ़ल्लिक़

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی هريرة، الحديث : ۷۳۳۱، ج۳، ص۳۹۔

2 ......المرجع السابق، الحديث : ۸۹۳۲، ص۳۱۹۔

3 ......مسند ابی يعلى الموصلی، مسند ابی هريرة، الحديث : ۲۶۴۰، ج۵، ص۵۱۳، دون قوله"ألف"۔



www.dawateislami.net

सुनेगा वोह इस में कभी दाख़िल न होगा।'' फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से उसे ख़्वाहिशात से ढांप दिया गया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : ''अब दोबारा जाओ।'' ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام गए और वापस आ कर अ़र्ज़ की : ''तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! मुझे डर है कि इस में दाख़िल होने से कोई न बच सकेगा।''(1)

﴾47﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस आयते मुबा-रका,

اِنَّهَا تَرْمِیْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿۳۲﴾ (پ۲۹،المرسلات:۳۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक दोज़ख़ चिंगारियां उड़ाती है जैसे ऊंचे मह़ल।

के मु-तअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाते हैं : मैं येह नहीं कहता कि (दोज़ख़ का चिंगारियां उड़ाना) दरख़्त की त़रह़ है बल्कि वोह तो क़ल्ओ़ं और शहरों की त़रह़ है।(2)

## जहन्नम की वादियां और घाटियां :

﴾48﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जहन्नम में **वैल** नामी एक वादी है जिस में काफ़िर उस के पेंदे तक पहुंचने से पहले 40 साल तक गिरता रहेगा।''(3)

﴾49﴿...... एक रिवायत में सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''दो पहाड़ों के दरमियान **वैल** नामी वादी है जिस में काफ़िर उस की तह में पहुंचने तक 70 साल तक गिरता रहेगा।''(4)

﴾50﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**जुब्बुल ह़ुज़्न** से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब किया करो।'' सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **जुब्बुल ह़ुज़्न** क्या है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''जहन्नम में एक वादी है जिस से जहन्नम हर रोज़ 400 मर्तबा पनाह मांगता है।'' अ़र्ज़ की गई : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इस में किसे डाला जाएगा ?'' तो आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''(वोह वादी) आ'माल के ज़रीए

---

1 ......جامع الترمذی، ابواب صفة الجنة، باب ما جآء حُفَّتُ الْجَنَّةُ......الخ، الحدیث: ۲۵۶۰،ص۱۹۰۹۔
سنن ابی داود، کتاب السنة،باب فی خلق الجنة والنار، الحدیث: ۴۷۴۴،ص۱۵۷۱۔

2 ......المعجم الاوسط، الحدیث: ۹۱۲،ج۱،ص۲۶۴، بتغیرٍقلیلٍ۔

3 ......جامع الترمذی، ابواب تفسیر القرآن، باب ومن سورة الانبیاء، الحدیث: ۳۱۶۴،ص۱۹۷۳۔

4 ......الترغیب والترہیب،کتاب صفة الجنة والنار، فصل فی أودیتها وجبالها، الحدیث: ۵۶۲۴،ج۴،ص۲۷۲۔



www.dawateislami.net

रियाकारी करने वाले क़ारियों के लिये तय्यार की गई है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से ना पसन्दीदा क़ारी वोह हैं जो ज़ालिम उ-मरा से मुलाक़ात करते हैं।"(1)

﴾51﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जहन्नम में एक वादी है जिस से जहन्नम हर रोज़ 400 मर्तबा पनाह त़लब करता है, वोह उम्मते मुह़म्मदिय्यह के रियाकार क़ारियों के लिये तय्यार की गई है।"(2)

﴾52﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जहन्नम में 70 हज़ार वादियां हैं, हर वादी में 70 हज़ार घाटियां हैं और हर घाटी में 70 हज़ार पथ्थर हैं, हर पथ्थर में एक सांप है जो जहन्नमियों के चेहरों को खाएगा।"(3)

﴾53﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जहन्नम में 70 हज़ार वादियां हैं, हर वादी में 70 हज़ार घाटियां हैं और हर घाटी में 70 हज़ार घर हैं, हर घर में 70 हज़ार मकान हैं, हर मकान में 70 हज़ार कूंएं हैं और हर कूंएं में 70 हज़ार अज़्दहे हैं, हर अज़्दहे के मुंह में 70 हज़ार बिच्छू हैं, काफ़िर या मुनाफ़िक़ अभी जहन्नम (की गहराई) तक भी न पहुंचेगा कि वोह सब उस पर टूट पड़ेंगे।"(4)

## जहन्नम की गहराई :

﴾54﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "एक बहुत बड़ा पथ्थर जहन्नम के कनारे से फेंका जाए और वोह उस में 70 साल तक गिरता रहे तब भी उस की तह तक न पहुंचेगा।"(5)

﴾55﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इर्शाद फ़रमाया करते : "जहन्नम को कसरत से याद किया करो, इस की गरमी शदीद, इस की तह बहुत गहरी और इस के हथोड़े लोहे के हैं।"(6)

---

1 ......سنن ابن ماجه، كتاب السنة، باب الانتفاع بالعلم والعمل به، الحديث : ٢٥٦، ص٢٤٩٣۔

2 ......المعجم الكبير، الحديث : ١٢٨٠٣، ج١٢، ص١٣٦۔

3 ......موسوعة الامام ابن ابى الدنيا ،كتاب صفة النار، الحديث : ٤٥، ج٦، ص٤٠٩۔

4 ......التاريخ الكبيرللبخارى، الحديث : ١١٧٧٥، ج ٨، ص٢١۔

5 ......جامع الترمذى، ابواب صفة جهنم، باب ماجاء فى صفة قعرجهنم، الحديث : ٢٥٨٥، ص١٩١١، بتغيرٍ۔

6 ......المرجع السابق۔



www.dawateislami.net

﴾56﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर एक पथ्थर जहन्नम में गिराया जाए तो वोह उस की तह तक पहुंचने से पहले 70 साल तक गिरता रहेगा।"(1)

﴾57﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि हम मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर थे कि हम ने एक गड़-गड़ाहट की आवाज़ सुनी तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो येह क्या था?" हम ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह पथ्थर है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जहन्नम में 70 साल पहले फेंका था लेकिन उस की गहराई तक अब पहुंचा है।"(2)

﴾58﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक होलनाक आवाज़ सुनी, ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ जिब्रील! येह आवाज़ कैसी थी?" तो उन्हों ने जवाब दिया : "येह एक पथ्थर है जो जहन्नम के कनारे से 70 साल पहले गिरा लेकिन अब उस की तह तक पहुंचा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पसन्द फ़रमाया कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उस की आवाज़ सुनाए।" (इस के बा'द) आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कभी हंसते नहीं देखा गया यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़ क़ब्ज़ फ़रमा ली।(3)

## जहन्नम की ज़न्जीरें :

﴾59﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खोपड़ी की त़रफ़ इशारा करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "अगर इस की मिस्ल सीसे का गोला आस्मान से ज़मीन की त़रफ़ गिराया जाए, जो कि 500 साल की मसाफ़त है, तो रात से पहले ज़मीन पर पहुंच जाए, लेकिन अगर जहन्नम के सिरे से एक ज़न्जीर लटका कर गिराई जाए तो 40 दिन रात में भी उस की तह तक न पहुंच सकेगा।"(4)

1 ......مسند ابی یعلی الموصلی، حدیث ابی موسی الاشعری، الحدیث : ۷۲۰۷، ج۶، ص۲۰۵۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الجنة، باب جهنم اعاذنا الله منها، الحدیث : ۷۱۶۷، ص۱۱۷۲، بتغیرٍقلیلٍ۔

3 ......المعجم الاوسط، الحدیث : ۸۱۵، ج۱، ص۲۳۸۔

4 ......جامع الترمذی، ابواب صفة جهنم، باب فی بعد قعر جهنم، الحدیث : ۲۵۸۸، ص۱۹۱۲۔



www.dawateislami.net

## जहन्नमी गुर्ज़ और हथोड़े :

﴿60﴾...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर जहन्नमी लोहे का गुर्ज़ (एक हथियार जो ऊपर से गोल, मोटा और नीचे से पतला होता है) ज़मीन पर रखा जाए तो जिन्नो इन्स भी जम्अ़ हो जाएं तो उसे ज़मीन से न उठा सकें।"(1)

﴿61﴾...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "अगर जहन्नमी लोहे का एक गुर्ज़ पहाड़ पर मारा जाए तो वोह रेज़ा रेज़ा हो कर राख बन जाए।"(2)

﴿62﴾...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर जहन्नम का एक पथ्थर दुन्या के पहाड़ों पर रख दिया जाए तो वोह सब उस से पिघल जाएं और (जहन्नम के) हर इन्सान के साथ ऐसा एक पथ्थर और एक शैत़ान होगा।"(3)

## 7 ज़मीनों के मु-तअ़ल्लिक़ दिलचस्प मा'लूमात :

﴿63﴾...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "7 ज़मीनों में से हर ज़मीन के दरमियान और जो उस के साथ मिली हुई है 500 साल की मसाफ़त है और (1)...... इन में सब से ऊपर वाली ज़मीन एक मछली की पीठ पर है जिस की दोनों जानिबें आस्मान से मिली हुई हैं, वोह मछली चट्टान पर है और चट्टान एक फ़रिश्ते के हाथ में है। और (2)...... दूसरी ज़मीन हवा का क़ैदख़ाना या जेल है, जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ौमे आ़द को हलाक करने का इरादा किया तो हवा के दारोग़े को हुक्म दिया : "इन पर ऐसी हवा चला दे जो इन्हें हलाक कर दे।" उस ने अ़र्ज़ की : "ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मैं इन पर बैल की नाक जितनी हवा भेजता हूं।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे इर्शाद फ़रमाया : "तब तो सब अहले ज़मीन हलाक हो जाएंगे बल्कि इन पर अंगूठी जितनी हवा भेज।" इसी के मु-तअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी किताबे अ़ज़ीज़, क़ुरआने मजीद में इर्शाद फ़रमाया :

مَا تَذَرُ مِنْ شَیْءٍ اَتَتْ عَلَیْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِیْمِ ﴿۴۲﴾ (پ۲۷، الذّٰریٰت: ۴۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** जिस चीज़ पर गुज़रती उसे गली हुई चीज़ की त़रह़ कर छोड़ती।

---

1......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی سعید الخدری، الحدیث : ۱۱۲۳۳، ج۴، ص۵۸، دون قوله:جهنم۔

2......المستدرک، کتاب الاهوال، باب السورالذی ذکره اللّٰه تعالٰی فی القرآن، الحدیث: ۸۸۱۳، ج۵، ص۸۲۵۔

3......الترغیب والترهیب، کتاب صفة الجنة والنار، فصل فی سلاسلها وغیرذلک، الحدیث : ۵۶۴۵، ج۴، ص۲۷۹۔



www.dawateislami.net

(3)...... तीसरी ज़मीन में जहन्नम के पथ्थर हैं। (4)...... चौथी में जहन्नम की गन्धक है।'' सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या जहन्नम की आग के लिये भी गन्धक है ?'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हां, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! जहन्नम में गन्धक की वादियां हैं, अगर उन में मज़बूत़ पहाड़ डाले जाएं तो वोह भी बह पड़ें। (5)...... पांचवीं में जहन्नम के सांप हैं, जिन के मुंह वादियों की त़रह़ हैं जो काफ़िर को एक मर्तबा डसेंगे तो उस के जिस्म पर गोश्त बाक़ी न रहेगा। (6)...... छटी ज़मीन में जहन्नम के बिच्छू हैं, उन में सब से छोटा पालान लगे हुए ख़च्चर की त़रह़ है जो काफ़िर को एक डंक मारेगा तो उसे जहन्नम की गरमी भूल जाएगी और (7)...... सातवीं ज़मीन में इब्लीस लोहे के साथ जकड़ा हुवा है, उस का एक हाथ आगे और दूसरा हाथ पीछे है, जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपने बन्दों में से जिस के लिये चाहे छोड़ने का इरादा करता है तो आज़ाद कर देता है।''(1)

## जहन्नमी सांप और बिच्छू :

﴾64﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बेशक जहन्नम में बुख़्ती ऊंटों की गरदनों की त़रह़ सांप हैं, जब उन में से कोई एक जहन्नमी को डसेगा तो वोह उस की गरमी 70 साल तक मह़सूस करेगा और जहन्नम में पालान लगे हुए ख़च्चरों की मिस्ल बिच्छू हैं उन में से कोई एक जहन्नमी को डंक मारेगा तो वोह उस की गरमी 40 साल तक मह़सूस करेगा।''(2)

## जहन्नमी मश्रूब :

﴾65﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान :

كَالْمُهْلِ (پ ۱۵، الکھف:۲۹)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** चर्ख़ दिये (खौलते हुए) धात की त़रह़ है।

के मु-तअ़ल्लिक़ मरवी है : ''वोह तेल की तिल्छट की त़रह़ होगा, जब वोह जहन्नमी के

---

1 ......المستدرک، کتاب الاهوال، باب کل أرض إلى التی تلیهاالخ، الحدیث : ۸۷۹۴،ج۵، ص۸۱۲، بتغیرٍقلیلٍ۔

2 ......المسندللامام احمدبن حنبل،حدیث عبد اللّٰہبن الحرث،الحدیث : ۱۷۷۲۹،ج۶،ص ۲۱۲،"حرهاسبعین خریفا" بدله"حموتهااربعین خریفا"۔



www.dawateislami.net

चेहरे के क़रीब होगा तो उस के चेहरे की खाल उस में गिर जाएगी।''(1)

﴾66﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''उन के सरों पर ''**ह़मीम**'' या'नी खौलता हुवा गर्म पानी उंडेला जाएगा और वोह खौलता हुवा गर्म पानी उस के जिस्म के अन्दर दाख़िल हो जाएगा यहां तक कि उस के पेट तक पहुंच जाएगा और उस के पेट में जो कुछ है उसे काट कर क़दमों से निकल जाएगा येही ''**सह्र**'' (या'नी सब कुछ कट कर निकल जाना) है। और फिर उस का पेट पहली ह़ालत पर लौटा दिया जाएगा।''(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़्ह़ाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : ''जब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीनो आस्मान पैदा फ़रमाए, **ह़मीम** उस वक़्त से ले कर उस दिन तक खौलता रहेगा जब जहन्नमी उसे पियेंगे और उन के सरों पर उंडेला जाएगा।''

एक क़ौल येह है कि **ह़मीम** से मुराद वोह ह़ौज़ है जिस में जहन्नमियों की आंखों के आंसू जम्अ़ होंगे और वोह उन्हें पियेंगे।

बा'ज़ का क़ौल इस के बर अ़क्स है और जिस का ज़िक्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान में भी है :

وَسُقُوْا مَآءً حَمِیْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ﴿۱۵﴾
(پ۲۶، محمد:۱۵)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और उन्हें खौलता हुवा पानी पिलाया जाएगा कि आंतों के टुकड़े टुकड़े कर दे।

﴾67﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान :

وَیُسْقٰی مِنْ مَّآءٍ صَدِیْدٍ ﴿۱۶﴾ یَّتَجَرَّعُهٗ
(پ۱۳، ابراهیم:۱۶،۱۷)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और उसे पीप का पानी पिलाया जाएगा ब मुश्किल उस का थोड़ा थोड़ा घूंट लेगा।

के मु-तअ़ल्लिक़ मरवी है : ''वोह पीप का पानी उस के मुंह के क़रीब किया जाएगा तो वोह उसे ना पसन्द करेगा और जब मज़ीद उस के क़रीब होगा तो उस का चेहरा जल जाएगा और सर की खाल उस में गिर जाएगी और जब उसे पियेगा तो उस की अंतड़ियां कट कर उस के पीछे के मक़ाम से निकल जाएंगी।'' चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

---

1 ......جامع الترمذی، ابواب صفة جهنم، باب ما جاء فی صفة شراب أهل النار، الحديث : ۲۵۸۱،ص۱۹۱۱۔

2 ......المرجع السابق، الحديث : ۲۵۸۲۔



www.dawateislami.net

وَسُقُوْامَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ﴿۱۵﴾ (پ۲۶، محمد: ۱۵)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और उन्हें खौलता पानी पिलाया जाएगा कि आंतों के टुकड़े टुकड़े कर दे।

और एक दूसरी जगह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया :

وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِى الْوُجُوْهَ ؕ بِئْسَ الشَّرَابُ ؕ (پ۱۵، الكهف: ۲۹)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर पानी के लिये फ़रियाद करें तो उन की फ़रियाद रसी होगी उस पानी से कि चर्ख़ दिये हुए (खौलते हुए) धात की त़रह़ है कि उन के मुंह भून देगा क्या ही बुरा पीना है।(1)

﴾68﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर (जहन्नमियों के) पीप का एक डोल दुन्या में बहा दिया जाए तो तमाम दुन्या वाले बदबूदार हो जाएं।"(2)

"غَسَّاق" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान में मज़्कूर है :

هٰذَا ۙ فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ ۙ﴿۵۷﴾ (پ۲۳، ص: ۵۷)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** इन को येह है तो इसे चखें खौलता पानी और पीप।

इस के मु-तअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह भी फ़रमाने आ़लीशान है :

اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا ۙ﴿۲۵﴾ (پ۳۰، النباء: ۲۵)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** मगर खौलता पानी और दोज़ख़ियों का जलता पीप।

## غَسَّاق में इख़्तिलाफ़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के नज़्दीक इस से मुराद वोह शै है जो काफ़िर की जिल्द से बहेगी।(3)

जब कि दूसरों के नज़्दीक इस से मुराद जहन्नमियों की पीप है।(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इर्शाद फ़रमाते हैं : "येह जहन्नम का एक चश्मा है जिस की त़रफ़ सांप, बिच्छू वग़ैरा हर डंक वाले जानवर का ज़ह्र बहेगा, वोह उस में जम्अ़ हो जाएगा, फिर आदमी को लाया जाएगा और वोह उस में एक ग़ोत़ा लगाएगा और उस से बाहर

1 ......جامع الترمذى، ابواب صفة جهنم، باب ما جاء فى صفة شراب أهل النار، الحديث: ۲۵۸۳،ص۱۹۱۱۔

2 ......المرجع السابق، الحديث: ۲۵۸۴،ص۱۹۱۲۔

3 ......الترغيب والترهيب، كتاب صفة الجنة والنار، فصل فى شراب اهل النار، تحت الحديث: ۵۶۵۴،ج۴،ص۲۸۳۔

4 ......المصنف لابن ابى شيبة، كتاب الزهد، كلام أبى رزين، الحديث: ۶،ج۸، ص ۲۱۸۔



www.dawateislami.net

इस ह़ाल में निकलेगा कि उस की जिल्द और गोश्त हड्डियों से गिर चुका होगा बल्कि उस की जिल्द और गोश्त उस की एड़ियों और टख़्नों के साथ लटक जाएगा और वोह अपने गोश्त को इस त़रह़ खींचेगा जैसे आदमी अपना कपड़ा खींचता है।''[1]

## जहन्नमियों का खाना :

﴾69﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

''اِتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ (پ۴، آل عمران:۱۰۲) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** से डरो जैसा उस से डरने का ह़क़ है और हरगिज़ न मरना मगर मुसल्मान।'' और इर्शाद फ़रमाया : ''अगर **ज़क़्क़ूम** (थूहड़ या'नी जहन्नमियों की ख़ूराक) का एक क़त़रा दुन्या में टपका दिया जाए तो तमाम अहले दुन्या की ज़िन्दगी को बद मज़ा कर दे, लिहाज़ा उन का क्या ह़ाल होगा जिन का खाना ही येह होगा।''[2]

﴾70﴿...... एक रिवायत में है : ''और उस का क्या ह़ाल होगा जिस का इस के इ़लावा कोई खाना न होगा।''[3]

﴾71﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने इ़ब्रत निशान : ''وَّ طَعَامًا ذَا غُصَّةٍ (پ۲۹، مزمل:۱۳) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और गले में फंसता खाना।'' के मु-तअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाते हैं कि वोह कांटा है जो गले में अटक जाएगा न अन्दर दाख़िल होगा और न बाहर निकलेगा।[4]

## जहन्नमियों के कन्धों का दरमियानी फ़ासिला :

﴾72﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''काफ़िर के दोनों कन्धों के दरमियान तेज़ रफ़्तार घोड़े पर सुवार की 3 दिन की मसाफ़त का फ़ासिला होगा।''[5]

---

1 ......تفسير الطبرى، صٓ، تحت الآية ۵۷،الحديث: ۲۹۹۹۶،ج۱۰، ص۵۹۸۔

2 ......جامع الترمذى، ابواب صفة جهنم، باب ماجاء فى صفة شراب أهل النار، الحديث: ۲۵۸۵،ص۱۹۱۲۔

3 ......سنن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب صفة النار، الحديث: ۴۳۲۵،ص۲۷۴۰۔

4 ......المستدرک، کتاب التفسير، تفسيرسورة المُزَّمِّل، الحديث: ۳۹۲۱،ج۳،ص۳۳۷۔

5 ......صحيح البخارى، کتاب الرقاق، باب صفة الجنة والنار، الحديث: ۶۵۵۱،ص۵۴۹۔



www.dawateislami.net

## काफ़िर की दाढ़ और खाल की मोटाई :

﴾73﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''काफ़िर की दाढ़ उहुद पहाड़ जितनी होगी और उस की रान बैज़ाअ पहाड़ जैसी होगी और उस की मक्अ़द (या'नी पीछे का मक़ाम) कुदैद और मक्का के दरमियानी फ़ासिले या'नी 3 दिन की मसाफ़त की राह जितनी होगी और उस की जिल्द की मोटाई जब्बार के गज़ों के ह़िसाब से 42 गज़ होगी।''(1)

## जब्बार की वज़ाह़त :

जब्बार एक य–मनी बादशाह का नाम है कि जिस का गज़ मा'रूफ़ मिक्दार का था। इब्ने ह़िब्बान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان का क़ौल इसी त़रह़ है जब कि एक क़ौल के मुत़ाबिक़ इस से मुराद एक अ़–जमी बादशाह है।(2)

﴾74﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''काफ़िर की दाढ़ या कहा कि उस का दांत उहुद पहाड़ जितना होगा और उस की खाल की मोटाई 3 दिन की मसाफ़त होगी।''(3)

## काफ़िर की रान और मक्अ़द :

﴾75﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क़ियामत के दिन काफ़िर की दाढ़ उहुद पहाड़ जितनी, रान बैज़ाअ पहाड़ जितनी और पीछे का मक़ाम र–बज़ा से 3 दिन (या'नी मदीना और र–बज़ा के दरमियान) की मसाफ़त जितना होगा।''(4)

﴾76﴿...... हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क़ियामत के दिन काफ़िर की दाढ़ उहुद पहाड़ की मिस्ल होगी और उस की जिल्द की मोटाई **70** गज़ होगी और उस के बाज़ू बैज़ाअ पहाड़ जितने होंगे और उस की रान वरिक़ान (मक्का व मदीना के दरमियान एक पहाड़) की मानिन्द होंगी और जहन्नम में उस का बैठने का मक़ाम मेरे और र–बज़ा के दरमियानी फ़ासिले जितना होगा।''(5)

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی هريرة، الحديث: ١٠٩٣١، ج٣، ص٢٤٠۔

2 ......الترغيب والترهيب، كتاب صفة الجنة والنار، فصل فی عظم أهل النار وقبحهم فيها، تحت الحديث: ٥٦٢٣، ج٤، ص٢٨٧۔

3 ......صحيح مسلم، كتاب الجنة، باب النار يدخلها الجبارون، الحديث: ٧١٨٥، ص١١٧٣۔

4 ......جامع الترمذی، ابواب صفة جهنم، باب ماجاء فی عظم اهل النار، الحديث: ٢٥٧٨، ص١٩١١، بتغيرٍ۔

5 ......المستدرک، كتاب الاهوال، باب ضرس الكافريوم القيامة مثل احد، الحديث: ٨٧٩٧، ج٥، ص٨١٨۔



www.dawateislami.net

﴾77﴿...... एक रिवायत में है कि "जहन्नम में उस के बैठने की जगह र-बज़ा की त़रह़ 3 दिन की मसाफ़त होगी।"(1)

## काफ़िर की ज़बान :

﴾78﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ज़्ल बिन यज़ीद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक काफ़िर अपनी ज़बान को एक दो फ़रसख़ तक घसीटेगा और लोग उस की ज़बान रौंदेंगे।"(2) (एक फ़रसख़ 3 मील का होता है)

﴾79﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ज्लान मुहारिबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को फ़रमाते सुना कि हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बरोज़े क़ियामत काफ़िर अपनी ज़बान को दो फ़रसख़ तक खींचेगा और लोग उसे रौंद रहे होंगे।"(3)

## कानों की लौ से गरदन का दरमियानी फ़ासिला :

﴾80﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जहन्नमियों के जिस्म बड़े हो जाएंगे यहां तक कि उन के कानों की लौ से कन्धे का दरमियानी फ़ासिला 700 साल की मसाफ़त होगा और उन की खाल की मोटाई 70 गज़ होगी और उन की दाढ़ उहुद पहाड़ की मिस्ल होगी।"(4)

﴾81﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने मुझ से दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तुम्हें मा'लूम है कि जहन्नम की वुस्अ़त कितनी है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "नहीं।" उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : "हां, ख़ुदा की क़सम ! तुम नहीं जानते किसी के कानों की लौ और उस के कन्धे का दरमियानी फ़ासिला 70 साल की मसाफ़त है, जिस में पीप और ख़ून की वादियां बहती हैं।" मैं ने दरयाफ़्त किया : "क्या वोह नहरें हैं ?" इर्शाद फ़रमाया : "नहीं, बल्कि वादियां हैं।"(5)

---

1 ......جامع الترمذی، ابواب صفة جهنم، باب ماجاء فی عظم اهل النار، الحديث : ۲۵۷۸، ص۱۹۱۱۔

2 ......المرجع السابق، الحديث : ۲۵۸۰۔

3 ......شعب الايمان للبيهقی، باب فی أن دارالمؤمنين الجنة، الحديث : ۳۹۴، ج۱، ص۳۵۳۔

4 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد الله بن عمر بن الخطاب، الحديث : ۴۸۰۰، ج۲، ص۲۵۶۔

5 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السيدة عائشة، الحديث : ۲۴۹۱۰، ج۹، ص۴۲۷۔



www.dawateislami.net

## जहन्नमियों के हैबत नाक होंट :

﴾82﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई : "وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ﴿۱۰۴﴾ (پ۱۸، المؤمنون:۱۰۴) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह उस में मुंह चड़ाए होंगे।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आग उसे भून देगी और उस का ऊपर का होंट सुकड़ कर सर के दरमियान तक पहुंच जाएगा और नीचे वाला लटक कर उस की नाफ़ तक पहुंच जाएगा।"(1)

﴾83﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "इस उम्मत के बा'ज़ लोगों के जिस्म भी (जहन्नम की) आग में इसी त़रह़ बड़े हो जाएंगे जैसे उस में काफ़िर का जिस्म बड़ा हो जाएगा।"(2)

﴾84﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मेरी उम्मत में क़बीलए रबीआ़ और मुज़र से ज़ियादा लोग मेरी शफ़ाअ़त से जन्नत में दाख़िल होंगे और मेरे बा'ज़ उम्मती (या'नी उन के जिस्म) जहन्नम में बड़े हो जाएंगे यहां तक कि वोह उस के एक किनारे जितने हो जाएंगे।"(3)

## अहले जहन्नम में सब से कम अ़ज़ाब :

﴾85﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सब से हलका अ़ज़ाब उस को होगा जिसे आग के जूते और तस्मे पहनाए जाएंगे जिन से उस का दिमाग़ ऐसे खौलेगा जैसे हंडिया खौलती है और वोह समझेगा कि इस से ज़ियादा सख़्त अ़ज़ाब किसी को नहीं ह़ालां कि उसे सब से कम अ़ज़ाब होगा।"(4)

﴾86﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जहन्नमियों में सब से कम अ़ज़ाब अबू त़ालिब को होगा, उन्हें दो जूते पहनाए जाएंगे जिस से उन का दिमाग़ खौलेगा।"(5)

---

1 ......جامع الترمذی، ابواب صفة جهنم، باب ماجاء فی صفة طعام اهل النار، الحديث : ۲۵۸۷،ص۱۹۱۲۔

2 ......الترغيب والترهيب، كتاب صفة الجنة والنار، فصل فی عظم اهل النار وقبحهم فيها،تحت الحديث : ۵۶۷۱،ج۴،ص۲۸۸۔

3 ......سنن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب صفة النار، الحديث : ۴۳۲۳،ص۲۷۴۰۔

المسند للامام احمد بن حنبل،حديث الحارث بن اُقَيش، الحديث : ۱۷۸۷۶،ج۶،ص۲۵۹۔

4 ......صحيح مسلم،كتاب الايمان، بَاب اَهْوَنِ اَهْلِ النَّارِ عَذَابًا، الحديث : ۵۱۷،ص۷۱۷،"الناس"بدله"اهل النار"۔

5 ......صحيح مسلم،كتاب الايمان، بَاب اَهْوَنِ اَهْلِ النَّارِ عَذَابًا،الحديث : ۵۱۵،ص۷۱۷۔



www.dawateislami.net

## अहले जहन्नम के अ़ज़ाब में त़-बक़ात :

﴾87﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बा'ज़ जहन्नमियों को टख़्नों तक आग पकड़ लेगी, बा'ज़ को घुटनों तक पकड़ लेगी, बा'ज़ को कमर तक पकड़ लेगी और बा'ज़ को हंसली की हड्डी तक पकड़ लेगी।"(1)

﴾88﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब जहन्नमियों को जहन्नम की आग की त़रफ़ हांका जाएगा तो वोह उन्हें यूं मिलेगी कि जला देगी और उन की हड्डियों पर कोई गोश्त न छोड़ेगी बल्कि उन के कूचों (या'नी एड़ी के ऊपर पाउं के पीछे मोटे और सख़्त पठ्ठे) तक पहुंच जाएगी।"(2)

## जहन्नमियों का जल कर बार बार पहली ह़ालत पर लौट आना :

﴾89﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَیْرَهَا لِیَذُوْقُوا الْعَذَابَ ؕ (پ۵، النساء:۵۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** जब कभी उन की खालें पक जाएंगी हम उन के सिवा और खालें उन्हें बदल देंगे कि अ़ज़ाब का मज़ा लें।

और इर्शाद फ़रमाया : "ऐ का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ! मुझे इस की तफ़्सीर बताइये, अगर आप ने सच कहा तो मैं तस्दीक़ करूंगा और अगर ग़लत़ बोले तो इन्कार कर दूंगा।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "इब्ने आदम की खाल जल जाएगी और एक साअ़त में दोबारा बन जाएगी या एक दिन में 6 हज़ार मर्तबा बनेगी।" तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : "आप ने सच कहा।"(3)

﴾90﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 110 हि.) ने इस आयते मुबा-रका के मु-तअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया : "हर रोज़ उन्हें 70 हज़ार मर्तबा आग खाएगी, जब भी वोह उन्हें खाएगी तो उन से कहा जाएगा (पहली ह़ालत पर) लौट आओ तो वोह पहली ह़ालत पर लौट आएंगे।"(4)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الجنة، باب جھنم أعاذنا اللّٰه منھا، الحدیث: ۷۱۷۰، ص۱۱۷۲۔

2 ......المعجم الاوسط، الحدیث: ۸۲۷، ج۱، ص۹۲۔

3 ......الترغیب والترھیب، کتاب صفة الجنة والنار، فصل فی تفاوتھم فی العذاب......الخ، الحدیث: ۵۶۸۱، ج۴، ص۲۹۱۔

4 ......الترغیب والترھیب، کتاب صفة الجنة والنار، فصل فی تفاوتھم فی العذاب......الخ، الحدیث: ۵۶۸۲، ج۴، ص۲۹۱۔



www.dawateislami.net

## जहन्नमी व जन्नती से एक सुवाल :

﴾91﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस शख़्स को दुन्या में सब से ज़ियादा ने'मतें मिली होंगी उसे क़ियामत के दिन लाया जाएगा और जहन्नम में एक ग़ोता़ दे कर पूछा जाएगा : "ऐ इब्ने आदम ! क्या तू ने कभी कोई भलाई देखी थी ? क्या तू ने कभी कोई ने'मत पाई थी ?" तो वोह कहेगा : "नहीं ! ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरी क़सम !" फिर अहले जन्नत में से एक शख़्स को लाया जाएगा जो दुन्या में सब से ज़ियादा तक्लीफ़ में रहा होगा और उसे जन्नत का एक चक्कर लगवा कर पूछा जाएगा : "ऐ इब्ने आदम ! क्या तुझे दुन्या में कोई तक्लीफ़ पहुंची ? क्या तू ने कभी कोई सख़्ती पाई ?" तो वोह कहेगा : "नहीं, ब ख़ुदा ! ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! न तो कभी मुझे कोई तक्लीफ़ पहुंची और न ही कभी कोई सख़्ती ।"[1]

## जहन्नमियों की गिर्या व ज़ारी :

﴾92﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जहन्नमियों पर आहो बुका तारी की जाएगी और वोह इस क़दर रोएंगे कि आंसू ख़त्म हो जाएंगे फिर वोह ख़ून के आंसू रोएंगे यहां तक कि उन के चेहरे पर गढ़े पड़ जाएंगे अगर उन में कश्तियां छोड़ दी जाएं तो चलने लगें ।"[2]

﴾93﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "ऐ लोगो ! रोया करो, अगर रो न सको तो रोने जैसी सूरत बना लिया करो, इस लिये कि जहन्नमी जहन्नम में रोएंगे यहां तक कि उन के आंसू रुख़्सारों पर बहने लग जाएंगे गोया कि वोह नहरें हों, आंसू ख़त्म हो जाएंगे तो (ख़ून के) आंसू बहने लगेंगे और आंखें ज़ख़्मी हो जाएंगी ।"[3]

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب صفات المنافقین، بَاب صَبْغِ اَنْعَمِ اَھْلِ الدُّنْیَا فِی النَّارِ، الحدیث : ۷۰۸۸، ص ۱۱۶۷۔

2 ......سنن ابن ماجه، ابواب الزھد، باب صفة النار، الحدیث : ۴۳۲۴، ص ۲۷۴۰۔

3 ......مسند ابی یعلی الموصلی، مسند انس بن مالک، الحدیث : ۴۱۲۰، ج۳، ص۴۰۶، "خُدُوْدِھِمْ" بدله "وُجُوْھِھِمْ"۔



www.dawateislami.net

# चौथा बाब : जन्नत और इस की ने'मतें

﴾1﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जन्नत की ख़ुश्बू हज़ार साल की मसाफ़त से मह़सूस की जाएगी लेकिन वालिदैन का ना फ़रमान और क़त़ए़ रेह़मी करने वाला उसे मह़सूस न कर सकेगा।''(1)

## जन्नती का इस्तिक़्बाल और उस की मेहमान नवाज़ी :

﴾2﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूले अन्वर, साह़िबे कौसर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस आयते मुबा-रका के मु-तअ़ल्लिक़ इस्तिफ़्सार किया :

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿۸۵﴾
(پ۱۶،مریم:۸۵)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** जिस दिन हम परहेज़गारों को रह़मान की त़रफ़ ले जाएंगे मेहमान बना कर।

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वफ़्द तो सुवारों के क़ाफ़िले को कहते हैं।'' तो शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! जब मुत्तक़ी लोग अपनी क़ब्रों से निकलेंगे तो उन्हें ऐसी सफ़ेद ऊंटनियां पेश की जाएंगी जिन के पर होंगे और उन पर सोने के कजावे होंगे, उन के जूतों के तस्मे नूर के होंगे जो चमक रहे होंगे, उन का हर क़दम ता ह़द्दे निगाह होगा, वोह जन्नत के दरवाज़े पर पहुंचेंगे वहां सोने की तख़्तियों पर सुर्ख़ याक़ूत का ह़ल्क़ा होगा, वहां जन्नत के दरवाज़े पर एक दरख़्त होगा जिस की जड़ से दो चश्मे फूट रहे होंगे, जब वोह एक चश्मे से पियेंगे तो उन के चेहरों पर ने'मतों की ताज़गी आ जाएगी और जब वोह दूसरे से वुज़ू करेंगे तो उन के बाल कभी परागन्दा न होंगे।

इस के बा'द वोह सोने के तख़्ते पर ह़ल्क़े को मारेंगे। ऐ अ़ली ! काश ! तुम उस ह़ल्क़े की आवाज़ सुनते। वोह आवाज़ हर हूर तक पहुंच जाएगी और उसे मा'लूम हो जाएगा कि उस का ख़ावन्द आ गया है लिहाज़ा वोह जल्दी करेगी और अपने ख़ादिम को भेजेगी, वोह उस के लिये दरवाज़ा खोलेगा, अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे अपनी पहचान न कराई होती तो वोह शख़्स नूर और

1 ......المعجم الاوسط، الحدیث : ۵۲۶۴،ج۴،ص۱۸۷۔



www.dawateislami.net

रौनक़ देख कर उस ख़ादिम के लिये सज्दे में गिर जाता।

ख़ादिम उस से अ़र्ज़ करेगा : ''मैं आप का ख़ादिम हूं, आप की ख़िदमत मेरे सिपुर्द की गई है।'' वोह मुत्तक़ी उस के पीछे पीछे चल देगा और अपनी ज़ौजा के पास जाएगा, वोह जल्दी करेगी और ख़ैमे से बाहर आ कर उस मुत्तक़ी से मुआ़-नक़ा करेगी, फिर अ़र्ज़ करेगी : ''आप मेरे मह़बूब हैं और मैं आप की मह़बूबा हूं, मैं आप से ख़ुश हूं और कभी नाराज़ न होउंगी, मैं नर्मो नाज़ुक हूं, कभी किसी परेशानी का बाइ़स न बनूंगी, मैं हमेशा रहने वाली हूं, मुझ पर कभी मौत न आएगी।''

फिर वोह मुत्तक़ी एक ऐसे मकान में दाख़िल होगा जिस के फ़र्श से छत तक की ऊंचाई एक लाख गज़ होगी, वोह मोतियों और याक़ूत के पथ्थरों से बनाया गया होगा, सुर्ख़, सब्ज़ और ज़र्द रास्ते होंगे लेकिन कोई रास्ता दूसरे के मुशाबेह न होगा, वोह मुज़य्यन तख़्त पर आएगा, जिस पर पलंग होंगे, हर पलंग पर 70 बिस्तर होंगे, हर बिस्तर पर 70 बीवियां और हर बीवी पर 70 लिबास होंगे, उन लिबासों के अन्दर से उस की पिंडली का गूदा नज़र आएगा, वोह एक रात की मिक़्दार तक उन से जिमाअ़ करेगा।

उन के नीचे नहरें जारी होंगी बा'ज़ पानी की होंगी जो साफ़ शफ़्फ़ाफ़ होंगी, उन में किसी क़िस्म का गदला पन न होगा, बा'ज़ दूध की होंगी कि जिन का ज़ाएक़ा कभी मु-तग़य्यर न होगा, नीज़ वोह दूध जानवरों की खीरियों (या'नी थनों के ऊपर के गोश्त) से नहीं निकाला गया होगा, बा'ज़ नहरें ख़ालिस शह्द की होंगी जो शह्द की मख्खियों के पेट से नहीं निकाला गया होगा, बा'ज़ नहरें पीने वालों की लज़्ज़त की ख़ातिर शराबे त़हूर की होंगी कि जिन्हें लोगों ने अपने क़दमों से निचोड़ कर नहीं बनाया होगा।

जब उन जन्नतियों को खाने की ख़्वाहिश होगी तो उन के पास सफ़ेद रंग के परिन्दे आएंगे, जो अपने पर ऊपर उठाएंगे तो वोह उन के पहलूओं से जिस क़िस्म का गोश्त चाहेंगे खाएंगे। फिर वोह परिन्दे उड़ कर चले जाएंगे, जन्नत में फल लटक रहे होंगे, जन्नती जब उन्हें खाना चाहेगा तो वोह टहनियां उस की त़रफ़ झुक जाएंगी और वोह जिस क़िस्म का फल खाना चाहेंगे खाएंगे, अगर चाहेंगे तो खड़े हो कर, अगर चाहेंगे तो बैठ कर और अगर चाहेंगे तो टेक लगा कर और येही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान है :



www.dawateislami.net

وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿۵۴﴾ (پ۲۷،الرحمن:۵۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और दोनों के मेवे इतने झुके हुए कि नीचे से चुन लो।

नीज़ उन के सामने ख़ादिम ऐसे होंगे जैसा कि मोती हों।''(1)

## दो दफ़्आ़ सूर फूंकने की दरमियानी मुद्दत :

﴾3﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गु़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''दो दफ़्आ़ सूर फूंकने का दरमियानी वक़्फ़ा 40 साल है, फिर आस्मान से बारिश नाज़िल होगी तो इन्सान इस त़रह़ निकल आएंगे जैसे सब्ज़ा उगता है, ह़ालां एक हड्डी के इ़लावा इन्सान के तमाम आ'ज़ा गल चुके होंगे और वोह ''**अ़ज्बुज़्ज़नब**(2) (या'नी एक नर्म हड्डी)'' है कि क़ियामत के दिन इसी पर इन्सान की तख़्लीक़ मुकम्मल की जाएगी।''(3)

﴾4﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मुर्दा उन्हीं कपड़ों में उठाया जाएगा जिन में वोह मरेगा।''(4)

---

1 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب صفة الجنة، الحدیث : ٧، ج٦، ص٣١٥۔
جمع الجوامع، مسند علی، الحدیث : ٢٠٥٦، ج١٣، ص١١٩۔

2 ...... मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 7, सफ़ह़ा 355 पर फ़रमाते हैं : ''अ़ज्बुज़्ज़नब के लफ़्ज़ी मा'ना हैं दुम गछ अ़ज्ब ब मा'ना अस्ल ज़नब। ब मा'ना दुम जानवर की दुम उस हड्डी के कनारे से शुरूअ़ होती है उस का नाम है रीढ़ की जो गरदन से शुरूअ़ होती है चूतड़ पर ख़त्म होती है इसी पर इन्सान बैठता है येह उस के लिये ऐसी है जैसे दीवार के लिये बुन्याद अगर यहां येह ही मुराद है तो ह़दीस के मा'ना येह हैं कि येह हड्डी जल्द फ़ना नहीं होती इसे ख़ाक सो बरस के बा'द गलाती है और अगर इस से मुराद हैं अज्ज़ाए अस्लिया जो इन्सान की जिस्म की अस्ल हैं तो वोह वाक़ेई कभी नहीं फ़ना होते येह ऐसे बारीक अज्ज़ा हैं जो ख़ुर्द-बीन से भी देखने में नहीं आते इन्हें अंग्रेज़ी में एटम कहते हैं। अ़-रबी में **اجزاءلایتجزی** इन्सान जल जावे इसे शेर खा जावे और पाख़ाना बन कर उस के पेट से निकल जावे वोह अज्ज़ा वैसे ही रहते हैं ह़त्ता कि ग़िज़ा ख़ून नुत़्फ़ा में येह अज्ज़ा होते हैं इन्हीं अज्ज़ा से इन्सान पहले भी बना था और आयिन्दा भी बनेगा इस लिये हम बुढ्ढे को कहते हैं कि येह वोही है जो पहले बालिश्त भर का बच्चा बल्कि नुत़्फ़ा था वोह ही कैसे कहा जाता है इन्हीं अस्ली अज्ज़ा को, येह ख़ूब याद रहे ज़ाइद अज्ज़ा में फ़र्क़ होता रहता है कि बीमारी में गल कर निकल जाते हैं आदमी दुबला हो जाता है। ऐ़श में और अज्ज़ा बढ़ जाते हैं मगर अस्ल अज्ज़ा उसी त़रह़ रहते हैं।''

3 ......صحیح مسلم، کتاب الفتن، باب ما بین النفختین، الحدیث : ٧٤١٤، ص١١٩٠، "لَا يَبْلَى" بدله "اِلَّا يَبْلَى"۔

4 ......سنن ابی داود، کتاب الجنائز، باب مَا يُسْتَحَبُّ مِنْ تَطْهِيرِ ثِيَابِ الْمَيِّتِ عِنْدَ الْمَوْتِ، الحدیث : ٣١١٤، ص١٤٥٨۔



www.dawateislami.net

## ह़दीसे पाक की वज़ाह़त :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ ज़किय्युद्दीन अ़ब्दुल अ़ज़ीम मुन्ज़िरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى इर्शाद फ़रमाते हैं : अहले लुग़त में से मो'तबर उ़-लमा का क़ौल है कि इस फ़रमान में कपड़ों से मुराद उस के आ'माल हैं। अ़ल्लामा हरवी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं : एक दूसरी ह़दीसे पाक में है : ''बन्दा उसी ह़ालत पर उठाया जाएगा जिस पर मरा।''(1) इस के मु-तअ़ल्लिक़ अ़ल्लामा हरवी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं : जिन लोगों का येह क़ौल है कि यहां कफ़न मुराद है तो उन के क़ौल की कोई हैसिय्यत नहीं इस लिये कि किसी के मरने के बा'द ही उसे कफ़न दिया जाता है। ह़दीसे पाक के रावी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का फ़े'ल इस ह़दीसे पाक को ज़ाहिरी मा'ना पर रखने पर दलालत करता है कि मय्यित को उन्हीं कपड़ों में उठाया जाएगा जिन में उस की मौत हुई। चुनान्चे एक रिवायत में येह भी मरवी है कि ''लोग बे लिबास उठाए जाएंगे।''(2)

और येह मा क़ब्ल ह़दीसे पाक का यहां पर तज़्किरा ख़िलाफ़े मौज़ूअ़ हो गया है बहर ह़ाल इन दो अह़ादीस में बहुत से फ़वाइद हैं।

﴾5﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''अपने रब عَزَّوَجَلَّ से डरने वाले लोगों को जन्नत की त़रफ़ एक गुरौह की शक्ल में ले जाया जाएगा यहां तक कि वोह जन्नत के एक दरवाज़े के पास पहुंचेंगे और उस के पास एक दरख़्त पाएंगे जिस के तने के नीचे दो चश्मे बह रहे होंगे, वोह उन में से एक की त़रफ़ झुक जाएंगे गोया उन्हें उस की त़रफ़ जाने का हुक्म दिया गया हो और वोह उस से पियेंगे तो उन के जिस्मों से गन्दगी वग़ैरा ख़त्म हो जाएगी, फिर वोह दूसरे चश्मे का क़स्द करेंगे और उस से वुज़ू वग़ैरा करेंगे तो उन पर ने'मतों की तरो ताज़गी आ जाएगी, इस के बा'द उन के बदन कभी मु-तग़य्यर न होंगे और न ही कभी उन के बाल परागन्दा होंगे गोया उन पर तेल लगाया गया हो। फिर वोह जन्नत के दरबान के पास पहुंचेंगे तो जन्नत का दरबान कहेगा :

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ﴿۷۳﴾
(پ۲۴،الزمر:۷۳)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** सलाम तुम पर तुम ख़ूब रहे तो जन्नत में जाओ हमेशा रहने।

---

1 ......صحيح مسلم،كتاب الجنة، بَاب الْاَمْرِ بِحُسْنِ الظَّنِّ بِاللّٰهِ تَعَالٰى عِنْدَ الْمَوْتِ، الحديث : ۷۲۳۲،ص۱۱۷٦ـ

2 ......المعجم الكبير،الحديث : ۹۱،ج۲۴،ص۳۴ـ

الترغيب والترهيب،كتاب البعث،فصل فى النفخ فى الصور،تحت الحديث : ۵۴۸٦،ج۴،ص۲۱۲ـ



www.dawateislami.net

फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : इस के बा'द उन की मुलाक़ात ऐसे ख़िदमत गुज़ार लड़कों से होगी जो इन के पास आएंगे जैसा कि दुन्या में लड़के अपने गहरे दोस्त के क़रीब आते हैं या'नी ऐसे क़रीब आते हैं जैसे वोह कि जो दूर से आया हो। वोह अ़र्ज़ करेंगे : "आप को उस इ़ज़्ज़तो करामत की ख़ुश ख़बरी हो जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के लिये तय्यार कर रखी है।"

मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : इस के बा'द उन लड़कों में से एक, **हूरे ईन** में से उस की किसी ज़ौजा की ख़िदमत में ह़ाज़िर होगा और अ़र्ज़ करेगा : "फ़ुलां साहि़ब जो दुन्या में फ़ुलां नाम से पुकारे जाते थे तशरीफ़ ला चुके हैं।" वोह पूछेगी : "क्या तुम ने उन्हें देखा है ?" वोह बताएगा : "हां मैं ने उन्हें देखा है और वोह मेरे पीछे पीछे आ रहे हैं।" चुनान्चे, उन में से एक ख़ुशी से उठेगी यहां तक कि अपने दरवाज़े की देहलीज़ पर खड़ी हो जाएगी, जब वोह अपने घर के दरवाज़े तक पहुंचेगा तो उस की बनावट में इस्ति'माल होने वाली हर चीज़ को देखेगा, वहां मोती होंगे, जिन के ऊपर रंग बिरंगे सब्ज़, ज़र्द और सुर्ख़ मह़ल होंगे, फिर उस की छत की त़रफ़ सर उठाएगा तो वोह बिजली की मिस्ल होगा कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस (या'नी देखने) की क़ुदरत न देता तो उस की निगाहें चली जातीं, फिर अपना सर नीचे करेगा और अपनी बीवियों को देखेगा।

وَّ اَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ﴿۱۴﴾ (پ۳۰،غاشیہ:۱۴) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और चुने हुए कूज़े।

## आयते मुबा-रका की तफ़्सीर :

येह كُوْب की जम्अ़ है और इस से मुराद ऐसा आबख़ोरा है जिस के साथ उसे उठाने वाला कुन्डा नहीं होता। बा'ज़ के नज़्दीक इस से मुराद ऐसा कूज़ा है जिस की टूंटी न हो और जिस की टूंटी हो उसे "اِبْرِيْق या'नी लोटा" कहते हैं।

وَّ نَمَارِقُ مَصْفُوْفَةٌ ﴿۱۵﴾ (پ۳۰،غاشیہ:۱۵) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और बराबर बराबर बिछे हुए क़ालीन।

## आयते मुबा-रका की तफ़्सीर :

نَمَارِق से मुराद बिस्तर हैं।

وَّ زَرَابِيُّ مَبْثُوْثَةٌ ﴿۱۶﴾ (پ۳۰،غاشیہ:۱۶) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और फैली हुई चांदनियां।



www.dawateislami.net

## आयते मुबा-रका की तफ़्सीर :

या'नी बेश क़ीमत चटाइयां और वोह उन ने'मतों को देखेंगे फिर टेक लगा कर बैठ जाएंगे।

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هَدٰىنَا لِهٰذَا ۫ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِیَ لَوْلَاۤ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ (پ۸،الاعراف:۴۳)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और कहेंगे सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जिस ने हमें उस की राह दिखाई और हम राह न पाते अगर **अल्लाह** हमें राह न दिखाता।

इस के बा'द एक निदा देने वाला निदा देगा : "तुम हमेशा ज़िन्दा रहोगे कभी मरोगे नहीं, तुम हमेशा रहोगे कभी कूच न करोगे और तुम हमेशा सिह्ह़त मन्द रहोगे कभी बीमार न होगे।"(1)

## जन्नत में दाख़िल होने वाला पहला गुरौह :

﴾6﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मेरी उम्मत में से 70 हज़ार या 7 लाख अफ़राद एक दूसरे का हाथ मज़्बूती से पकड़ कर जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे, उन में से पहला उस वक़्त तक दाख़िल न होगा जब तक कि आख़िरी भी दाख़िल न हो जाए, उन के चेहरे चौदहवीं रात के चांद की त़रह़ होंगे।"(2)

﴾7﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जन्नत में जो पहला गुरौह दाख़िल होगा उस की सूरत चौदहवीं रात के चांद की त़रह़ होगी और जो इन के बा'द जाएगा वोह आस्मान में बहुत ज़ियादा चमक्दार सितारे की त़रह़ होगा, वोह न तो पेशाब करेंगे, न पाख़ाना करेंगे, न नाक साफ़ करेंगे और न ही थूकेंगे, उन की कंघियां सोने की और पसीना मुश्क का होगा और उन की अंगेठियों में ऊ़द सुलगता होगा, उन की बीवियां बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें होंगी, उन सब के अख़्लाक़ एक ही जैसे होंगे, वोह अपने बाप ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सूरत पर होंगे और उन का क़द आस्मान में 60 गज़ के बराबर होगा।"(3)

﴾8﴿...... एक रिवायत में है : "हर जन्नती की दो ऐसी बीवियां होंगी कि जिन की पिंडली का गूदा गोश्त के अन्दर से नज़र आएगा, उन के दरमियान न तो कभी कोई इख़्तिलाफ़ होगा और न ही उन में बुग़्ज़

---

(1)......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب صفة الجنة، الحدیث : ۸، ج۶، ص۳۱۶۔

(2)......صحیح مسلم، کتاب الإیمان، بَاب الدَّلِیْلِ عَلٰی دُخُوْلِ طَوَائِف......الخ، الحدیث : ۵۲۶، ص۱۸۷۔

(3)......صحیح مسلم، کتاب الجنة، بَاب اَوَّلُ زُمْرَةٍ تَدْخُلُ الْجَنَّةَ عَلٰی......الخ، الحدیث : ۷۱۴۹، ص۱۱۷۰۔



www.dawateislami.net

पाया जाएगा, उन के दिल एक जैसे होंगे और वोह सुब्हो शाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ करेंगी।''(1)

## जन्नत में दाख़िल होते वक़्त जन्नतियों की उ़म्रें :

﴾9﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जन्नती जुर्द मुर्द (या'नी जिस्म पर बाल न होंगे और दाढ़ी भी न होगी), सफ़ेद रंगत वाले, घुंगर्याले बालों वाले और सुरमा डाले हुए **33** साल की उ़म्र के जन्नत में दाख़िल होंगे और वोह सब ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़िल्क़त पर होंगे, **9** गज़ चौड़े और **60** गज़ लम्बे।''(2)

﴾10﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ना मुकम्मल (या'नी जिस्मानी ख़द्दो ख़ाल के मुकम्मल होने से क़ब्ल पैदा होने वाले) बच्चे और बहुत बूढ़े और इस की दरमियानी उ़म्र में फ़ौत होने वाले सब लोगों को (बरोज़े क़ियामत) 33 साल का उठाया जाएगा और अगर वोह अहले जन्नत में से होंगे तो वोह ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की निशानी, ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सूरत और ह़ज़रते अय्यूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के क़ल्ब पर होंगे और अगर जहन्नमी होंगे तो पहाड़ों की त़रह़ बड़े बड़े और फैले हुए होंगे।''(3)

## अदना व आ'ला जन्नती का मक़ाम :

﴾11﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की, कि ''अहले जन्नत में सब से अदना मक़ाम किस का होगा ?'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह वोह शख़्स होगा जो दीगर तमाम जन्नतियों के जन्नत में दाख़िल होने के बा'द आएगा और उस से कहा जाएगा कि जन्नत में दाख़िल हो जा।'' वोह अ़र्ज़ करेगा : ''ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं कैसे दाख़िल हो जाऊं ह़ालां कि लोग तो पहले ही इस के मह़ल्लात और मनासिब व मरातिब पर फ़ाइज़ हो चुके हैं।'' उसे कहा जाएगा : ''क्या तू इस बात पर राज़ी नहीं कि तेरे लिये किसी दुन्यवी बादशाह की मम्लकत की मिस्ल सल्त़नत हो ?'' वोह अ़र्ज़ करेगा : ''ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं राज़ी हूं।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''तेरे लिये इस की मिस्ल है और इस की मिस्ल और इस की मिस्ल और इस की मिस्ल मज़ीद है।''

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب بَدْءِ الخَلْق ،باب مَا جَاءَ فِی صِفَةِ الْجَنَّةِ الخ، الحدیث : ۳۲۴۶/۳۲۴۵،ص۲۶۳۔

2 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الجنة، ما ذُکِرَ فِی صِفَةِ الْجَنَّةِ الخ، الحدیث : ۵۳،ج۸،ص۷۵،بتغیر۔

3 ......المعجم الکبیر، الحدیث : ۲۶۳،ج۲۰،ص۲۸۰۔



www.dawateislami.net

और पांचवीं मर्तबा पर वोह अ़र्ज़ करेगा : ''ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं राज़ी हूं।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''येह तेरे लिये है और इस की मिस्ल 10 गुना है, नीज़ तेरे लिये हर वोह शै है जो तेरे दिल को अच्छी लगे और जो तेरी आंखों को भाए।'' वोह अ़र्ज़ करेगा : ''ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं राज़ी हूं।''

फिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : ''और जिन लोगों का जन्नत में सब से बड़ा द-रजा होगा वोह कौन होंगे ?'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह वोह लोग हैं जिन पर इन्आ़मो इक्राम की नवाज़िशें मैं ने अपने दस्ते क़ुदरत से करना चाहीं और फिर उन पर मोह्‌र सब्त कर दी कि उन इन्आ़मात व नवाज़िशात को न तो किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न ही किसी इन्सान के दिल में उन का ख़याल गुज़रा।''(1)

﴾12﴿...... एक रिवायत में है कि अदना मर्तबे वाले के मु-तअ़ल्लिक़ मरवी है : ''जब उस की आरज़ूएं ख़त्म हो जाएंगी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''तेरे लिये वोह भी है और उस की मिस्ल मज़ीद 10 गुना।'' वोह अ़र्ज़ करेगा : ''मुझे वोह कुछ अ़त़ा किया गया है जो किसी को अ़त़ा नहीं किया गया।''(2)

﴾13﴿...... एक रिवायत में है : ''सिवाए एक शख़्स के जो दुन्या के 3 दिनों की मिक़्दार तक ख़्वाहिश का इज़्हार करता रहेगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे वोह चीज़ें अ़त़ा करेगा जिस का उसे इ़ल्म भी न होगा, पस वोह सुवाल और तमन्ना करता रहेगा और जब फ़ारिग़ हो जाएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''तेरे लिये वोह है जिस का तू ने सुवाल किया।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''और उस की मिस्ल उस के साथ है।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''उस के साथ उस की मिस्ल 10 गुना है।'' फिर दोनों में से एक ने दूसरे से कहा : ''आप वोह ह़दीसे पाक बयान करें जो आप ने सुनी और मैं वोह बयान करता हूं जो मैं ने सुनी है।''(3)

﴾14﴿...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : ''अदना जन्नती का मक़ाम वोह होगा कि उस की सल्त़नत हज़ार साल की मसाफ़त तक

1 ......صحیح مسلم، کتاب الإیمان، بَاب اَدْنَی اَھْلِ الْجَنَّةِ مَنْزِلَةً فِیھَا، الحدیث: ۴۶۵، ص۲ ۱ ۷۔

2 ......المرجع السابق، الحدیث: ۴۶۴۔

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی سعید الخدری، الحدیث: ۱۱۷۰۸، ج۴، ص۱۴۹۔



www.dawateislami.net

वसीअ़ होगी और अपनी सल्त़नत में मौजूद किसी दूर की शै को भी ऐसे ही देखेगा जैसे अपने क़रीब की शै को देखेगा जैसे वोह अपनी बीवी और ख़ादिमों को देख रहा हो।''(1)

﴾15﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''सब से अफ़्ज़ल मक़ाम वाला जन्नती हर रोज़ दो मर्तबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दीदार करेगा।''(2)

﴾16﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''सब से अदना जन्नती का मक़ाम येह है कि उस के 80 हज़ार ख़ुद्दाम होंगे और 72 बीवियां होंगी और उस के लिये मोतियों, ज़बर-जद और याक़ूत का इतना त़वील क़ुब्बा खड़ा किया जाएगा जितना जाबिया और सन्आ़अ का दरमियानी फ़ासिला है।''(3)

﴾17﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तमाम जन्नतियों में सब से कम द-रजे वाले जन्नती की ख़िदमत 10 हज़ार ख़ुद्दाम करेंगे और हर ख़ादिम के हाथ में दो प्लेटें होंगी, एक सोने की और दूसरी चांदी की, हर एक में दूसरे से मुख़्तलिफ़ रंग का खाना होगा, वोह दूसरी से भी ऐसे ही खाएगा जैसे पहली प्लेट से खाएगा और दूसरी से भी वैसी ही ख़ुश्बू और लज़्ज़त पाएगा जैसी पहली से पाएगा, फिर येह सब एक डकार होगा जैसा कि उ़म्दा कस्तूरी की ख़ुश्बू, वोह न तो पेशाब करेंगे, न पाख़ाना करेंगे और न ही नाक साफ़ करेंगे और भाइयों की त़रह़ एक दूसरे के सामने तख़्त पर बैठे होंगे।''(4)

## ख़ुद्दाम की ता'दाद में इख़्तिलाफ़

इमाम ह़ाफ़िज़ ज़किय्युद्दीन अ़ब्दुल अ़ज़ीम मुन्ज़िरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि इन अह़ादीसे मुबा-रका में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं : एक रिवायत में है कि ''जन्नती के 80 हज़ार ख़ुद्दाम होंगे।''(5) और दूसरी में है कि ''10 हज़ार ख़ुद्दाम उस की ख़िदमत

---

(1)......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللّٰہ بن عمر بن الخطاب، الحدیث: ۴۶۲۳، ج۲، ص ۲۲۷۔

(2)......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الجنة، ما ذُکِرَ فِی صِفَةِ الْجَنَّةِ وَمَا......الخ، الحدیث: ۴۷، ج۸، ص ۷۴۔

(3)......جامع الترمذی، ابواب صفة الجنة، بَاب مَاجَاءَ مَالِاَدْنٰی اَھْلِ الْجَنَّةِ مِنَ الْکَرَامَةِ، الحدیث: ۲۵۶۲، ص ۱۹۰۹۔

(4)......المعجم الاوسط، الحدیث: ۷۶۷۴، ج۵، ص ۳۸۰۔

الزھد لابن المبارک، باب فضل ذکراللّٰہ عزوجل، الحدیث: ۱۵۳۰، ص ۵۳۶۔

(5)......جامع الترمذی، ابواب صفة الجنة، بَاب مَاجَاءَ مَالِاَدْنٰی اَھْلِ الْجَنَّةِ مِنَ الْکَرَامَةِ، الحدیث: ۲۵۶۲، ص ۱۹۰۹۔



www.dawateislami.net

करेंगे।''[1] और एक ह़दीसे पाक में है कि ''हर रोज़ सुब्ह़ शाम उस के पास 15 हज़ार ख़ुद्दाम ह़ाज़िर होंगे।''[2] हो सकता है जन्नती के 80 हज़ार ख़ुद्दाम ही हों, उन में से 10 हज़ार उस के पास हर वक़्त ह़ाज़िर रहें और 15 हज़ार सुब्ह़ के वक़्त उस के पास ह़ाज़िर हों।[3]

मैं (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ह़जर मक्की हैतमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی) कहता हूं : ''इस में कोई मानेअ़ नहीं कि अदना जन्नतियों के मरातिब भी उन की मुना-सबत से हों या'नी उस का अदना द-रजे पर फ़ाइज़ होना उस की क़ौम या उम्मत के ए'तिबार से हो कि जो क़ौम या उम्मत किसी दूसरी उम्मत के औसाफ़ से मुख़्तलिफ़ औसाफ़ की ह़ामिल होगी (उसी ए'तिबार से अदना व आ'ला होने में मुख़्तलिफ़ होगी)। और शायद येही तौजीह ज़ियादा औला (या'नी बेहतर) है और अह़ादीसे मुबा-रका में वारिद ता'दाद के ज़ाहिरी इख़्तिलाफ़ को इसी तौजीह पर जम्अ़ किया जाए जैसा कि ग़ौरो फ़िक्र करने वाला जानता है।''

## जन्नत के बालाख़ाने :

﴾18﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''अहले जन्नत अपने ऊपर बालाख़ाने वालों को यूं देखेंगे जैसे तुम आस्मान के मशरिक़ी या मग़रिबी कनारे में दूर से चमक्ते हुए सितारे को देखते हो क्यूं कि बा'ज़ के द-रजात बा'ज़ से ज़ाइद होंगे।'' सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या वोह अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के द-रजात होंगे कि कोई दूसरा जिन का मालिक न होगा ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! येह वोह लोग हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाए और जिन्हों ने रसूलों की तस्दीक़ की।''[4]

﴾19﴿...... एक रिवायत में है : ''(अहले जन्नत अपने ऊपर बालाख़ाने वालों को यूं देखेंगे) जैसे तुम ग़ुरूब होने वाले सितारे को देखते हो।''[5]

1 ......المعجم الاوسط، الحديث : ۷۶۷۴،ج۵،ص۳۸۰۔

2 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنيا، کتاب صفة الجنة، الحديث : ۲۰۷،ج۶،ص۳۶۲۔

3 ......الترغيب والترهيب، كتاب صفة الجنة والنار، فصل فيما لأدنى أهل الجنة فيها،تحت الحديث : ۵۷۱۰،ج۴،ص۳۰۶۔

4 ......صحيح مسلم، كتاب الجنة، بَاب تَرَائِی اَهْلِ الْجَنَّةِ اَهْلَ الْغُرَفِ، الحديث : ۷۱۴۴،ص۱۱۷۰، بتغيرٍ۔

5 ......صحيح البخاری، كتاب الرقاق، باب صفة الجنة والنار، الحديث : ۶۵۵۶،ص۵۴۹۔



www.dawateislami.net

﴾20﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जन्नत में ऐसे बालाख़ाने हैं जिन का बाहर अन्दर से और अन्दर का बाहर से नज़र आता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें उन लोगों के लिये तय्यार फ़रमाया है जो खाना खिलाएं, सलाम को आ़म करें और रात को नमाज़ पढ़ें जब कि लोग सोए हुए हों।"(1)

## जन्नत के द-रजात में फ़ासिला :

﴾21﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जन्नत में 100 द-रजे हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी राह में जिहाद करने वालों के लिये तय्यार फ़रमाया है, हर दो द-रजों के दरमियान इतना फ़ासिला है जितना ज़मीन व आस्मान के दरमियान है।"(2)

﴾22﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जन्नत में 100 द-रजे हैं, हर दो द-रजों के दरमियान 100 साल की मसाफ़त जितना फ़ासिला है।"(3)

## जन्नत की बनावट :

﴾23﴿...... (सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن फ़रमाते हैं :) हम ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हमें जन्नत के बारे में बताइये कि इस की बनावट कैसी है ?" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उस की एक ईंट सोने की और दूसरी चांदी की है, उस का गारा मुश्क का है और कंकर मोती और याक़ूत के हैं, उस की मिट्टी ज़ा'फ़रान की है, जो उस में दाख़िल होगा ने'मतें पाएगा और रन्जीदा न होगा, वोह उस में हमेशा रहेगा कभी न मरेगा, उस के कपड़े मैले न होंगे और न ही कभी उस की जवानी ख़त्म होगी।"(4)

﴾24﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : "जन्नत की दीवारें सोने और चांदी की ईंटों से बनी हुई हैं और इस के द-रजे याक़ूत और मोतियों के हैं।"

---

1 ......الاحسان بترتيب......، كتاب البر والإحسان، باب إفشاء السلام وإطعام الطعام، الحديث: ٥٠٩، ج١، ص٣٦٣۔

2 ......صحيح البخارى، كتاب الجهاد، باب درجات المجاهدين فى سبيل الله، الحديث: ٢٧٩٠، ص٢٢٥۔

3 ......جامع الترمذى، ابواب صفة الجنة، باب ماجاء فى صفة درجات الجنة، الحديث: ٢٥٢٩، ص١٩٠٦۔

4 ......جامع الترمذى، ابواب صفة الجنة، باب ماجاء فى صفة الجنة ونعيمها، الحديث: ٢٥٢٦، ص١٩٠٥۔



www.dawateislami.net

मज़ीद इर्शाद फ़रमाते हैं : ''हम बयान करते थे कि जन्नत की नहरों की कंकरियां मोतियों की हैं और मिट्टी ज़ा'फ़रान की है।''(1)

﴾25﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जन्नत के मु-तअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया गया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो जन्नत में दाख़िल होगा वोह उस में ज़िन्दा रहेगा कभी न मरेगा, उस में ने'मतें पाएगा कभी ग़मगीन न होगा, उस के कपड़े कभी मैले न होंगे और न ही उस की जवानी फ़ना होगी।'' अ़र्ज़ की गई : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! उस की बनावट कैसी है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''उस की एक ईंट सोने की और दूसरी चांदी की है, उस का गारा कस्तूरी का और मिट्टी ज़ा'फ़रान की है और कंकर मोती और याक़ूत के हैं।''(2)

## जन्नते अ़दन :

﴾26﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नते अ़दन को अपने दस्ते क़ुदरत से बनाया, उस में फल लगाए और उस में वसीअ़ नहरें बनाईं, फिर उसे देख कर इर्शाद फ़रमाया : ''मुझ से बात कर।'' तो उस ने अ़र्ज़ की : ''बेशक मुअमिनीन काम्याब हो गए।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : ''मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! कोई बख़ील तेरे अन्दर मेरा क़ुर्ब ह़ासिल न कर सकेगा।''(3)

﴾27﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जन्नते अ़दन की ईंटें सफ़ेद मोती, सुर्ख़ याक़ूत और सब्ज़ ज़बर-जद की हैं, उस का गारा कस्तूरी का, घास ज़ा'फ़रान की, कंकर मोतियों के और मिट्टी अ़म्बर की है।''(4)

## जन्नत की ज़मीन और सह़न :

﴾28﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जन्नत की ज़मीन सफ़ेद है, उस का सह़न काफ़ूर की चट्टानों से बना हुवा है और कस्तूरी ने रैत

---

(1)......كتاب الجامع لمعمرمع المصنف لعبد الرزاق، باب الجنة وصفتها، الحديث : ۲۱۰۳۹، ج۱۰، ص۳۴۷۔

(2)......موسوعة الامام ابن ابی الدنيا، كتاب صفة الجنة، الحديث : ۱۲، ج۶، ص۳۱۸۔

(3)......المعجم الكبير، الحديث : ۱۲۷۲۳، ج۱۲، ص۱۱۴۔

(4)......موسوعة الامام ابن ابی الدنيا، كتاب صفة الجنة، الحديث : ۲۰، ج۶، ص۳۱۹۔



www.dawateislami.net

के टीलों की त़रह़ उसे घेरा हुवा है, उस में नहरें रवां हैं, वहां तमाम आ'ला व अदना जन्नती इकठ्ठे होंगे और एक दूसरे को तआ़रुफ़ कराएंगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रह़मत की हवा भेजेगा तो उन पर कस्तूरी से मुअ़त्त़र हवा चलेगी, फिर एक शख़्स अपनी बीवी के पास पलटेगा तो उस की ख़ूब सूरती और ख़ुश्बू में इज़ाफ़ा हो चुका होगा, वोह अ़र्ज़ करेगी : ''जब आप मेरे पास से गए थे मैं तब भी आप से मह़ब्बत करती थी और अब तो मैं आप से और ज़ियादा मह़ब्बत करने लगी हूं।''(1)

## जन्नत की चरागाहें :

﴾29﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जन्नत में लोटने पोटने की कस्तूरी की ऐसी जगहें हैं जैसी दुन्या में तुम्हारे जानवरों के लिये (मिट्टी की होती) हैं।''(2)

## जन्नती ख़ैमा :

﴾30﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : ''मोमिन के लिये जन्नत में खोकले मोती से बना हुवा एक ख़ैमा है कि जिस की लम्बाई आस्मान में 60 मील है, उस में मोमिन के घर वाले होंगे, जिन के पास वोह चक्कर लगाएगा, लेकिन उन में से बा'ज़ बा'ज़ को न देखेंगे।''(3) (या'नी दीगर जन्नती उन के अहले ख़ाना को न देखेंगे)

﴾31﴿...... एक रिवायत में है कि ''उस की चौड़ाई 60 मील है।''(4)

﴾32﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि ''वोह ख़ैमा खोकले मोती का होगा, जिस की लम्बाई चौड़ाई तीन मील है उस के 4 हज़ार सोने के (दरवाज़े के) पट हैं।''(5)

﴾33﴿...... एक रिवायत में है : ''उस के इर्द गिर्द क़नातें होंगी जिन की गोलाई 150 मील होगी,

---

(1)......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب صفة الجنة، الحدیث : ۲۸، ج۶، ص۳۲۱۔

(2)......المعجم الاوسط، الحدیث : ۱۷۶۱، ج۱، ص۴۷۷۔

(3)......صحیح مسلم، کتاب الجنة، بَاب فِی صِفَةِ خِیَامِ الْجَنَّة، الحدیث : ۷۱۵۸، ۷۱۶۰، ص۱۱۷۱۔

(4)......المرجع السابق، الحدیث : ۷۱۵۹۔

(5)......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب صفة الجنة، الحدیث : ۳۲۱، ج۶، ص۳۸۵۔



www.dawateislami.net

उस के पास हर दरवाज़े से एक फ़िरिश्ता **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से तोह़फ़ा ले कर आएगा।''(1)

﴾34﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जन्नत में ऐसे बालाख़ाने हैं जिन का बाहर अन्दर से और अन्दर बाहर से दिखाई देता है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मालिक अश्अ़री رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह किन के लिये हैं।'' तो इर्शाद फ़रमाया : ''जो अच्छी बात कहे, खाना खिलाए और रात इ़बादत में गुज़ारे जब कि लोग सोए हुए हों।''(2)

## जन्नती सफ़ेद मोतियों का मह़ल :

﴾35﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान के मु-तअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया गया :

وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ (پ١٠، التوبة:٧٢) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और पाकीज़ा मकानों का बसने के बाग़ों में।

तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जन्नत में सफ़ेद मोतियों का एक मह़ल है जिस में सुर्ख़ याक़ूत के 70 घर हैं, हर घर में सब्ज़ ज़ुमुर्रुद के 70 कमरे हैं, हर कमरे में 70 पलंग हैं, हर पलंग पर हर रंग के 70 बिस्तर हैं, हर बिस्तर पर एक औ़रत है, नीज़ हर कमरे में 70 दस्तर ख़्वान भी हैं, हर दस्तर ख़्वान पर 70 रंग के खाने हैं और हर कमरे में 70 ग़ुलाम और ख़ादिमाएं हैं, मोमिन को इतनी क़ुव्वत अ़त़ा की जाएगी कि वोह सुब्ह़ के एक ही वक़्त में उन सब के पास आएगा।''(3)

## जन्नती नहरें :

﴾36﴿...... ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''जन्नत में कौसर नामी एक नह्र है जिस के दोनों कनारे सोने के हैं और वोह मोतियों और याक़ूत पर बहती है, उस की मिट्टी कस्तूरी से ज़ियादा पाकीज़ा है, उस का पानी शह्द से ज़ियादा मीठा और बर्फ़ से ज़ियादा सफ़ेद है।''(4)

1 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب صفة الجنة، الحدیث : ٣٢٥، ج٦، ص٣٨٥۔

2 ......المستدرک، کتاب صلاة التطوع، باب صلاة الحاجة، الحدیث : ١٢٤٠، ج١، ص٦٣١۔

3 ......المعجم الکبیر، الحدیث : ٣٥٣، ج١٨، ص١٦١، دون قوله "بیضاء"۔

4 ......جامع الترمذی، ابواب تفسیر القرآن، باب ومن سورة الکوثر، الحدیث : ٣٣٦١، ص١٩٩٧۔



www.dawateislami.net

﴾37﴿...... एक रिवायत में इतना ज़ाइद है : "उस में परिन्दे हैं जिन की गरदनें ऊंट की गरदनों जैसी हैं।" अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "वोह तो बड़ी ने'मत में हैं।" तो हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उन को खाने वाले उन से ज़ियादा ने'मत में होंगे।"(1)

﴾38﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जन्नत की नहरें एक टीले या कस्तूरी के पहाड़ के नीचे से निकलती हैं।"(2)

﴾39﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि "जन्नत की ज़मीन चांदी से बने हुए सफ़ेद संगे मरमर की है गोया कि वोह आईना हो और उस की रोशनी ऐसी है जैसे सूरज तुलूअ़ होने से पहले होती है और उस की नहरें एक तसल्सुल से बहती हैं, उन के बहने की नालियां मख़्सूस नहीं फिर भी वोह इधर उधर नहीं बहतीं और जन्नत के हु़ल्ले एक ऐसे फलदार दरख़्त पर होंगे गोया वोह अनार हों, जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दोस्त हु़ल्ला पहनने का इरादा करेगा तो वोह फल अपनी टहनी से टूट कर उस के पास आ कर फट जाएगा, उस में 70 रंग के मुख़्तलिफ़ हु़ल्ले होंगे, (जन्नती अपनी मरज़ी का हु़ल्ला पहन लेगा) फिर बन्द हो कर वापस अपनी जगह लौट जाएगा।"(3)

﴾40﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जन्नत में एक दरिया पानी का है, एक शह्द का और एक शराब का, फिर उन से नहरें निकलती हैं।"(4)

﴾41﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि शायद तुम येह गुमान करते हो कि जन्नती नहरें ज़मीन खोद कर बनाई गई हैं, नहीं, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह ज़मीन की सत़्ह़ पर बहती हैं, उन का एक कनारा मोती का और दूसरा याक़ूत का है और उन की मिट्टी महक्ने वाली कस्तूरी की है जिस में कोई मिलावट नहीं।(5)

---

1 ......جامع الترمذی، ابواب صفة الجنة، بَاب مَاجَاءَ فِی صِفَةِ طَیْرِ الْجَنَّةِ، الحدیث : ۲۵۴۲،ص۱۹۰۷۔

2 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان،کتاب اخباره، باب وصف الجنة واھلھا، الحدیث : ۷۳۶۵،ج۹،ص۲۴۹ ۔

3 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا،کتاب صفة الجنة، الحدیث :۱۴۴،ج۶،ص۳۴۹، بتغیرٍقلیلٍ۔

4 ......جامع الترمذی، ابواب صفة الجنة، باب ماجاء فی صفة انھار الجنة، الحدیث : ۲۵۷۱،ص۱۹۱۰۔

5 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا،کتاب صفة الجنة، الحدیث : ۲۸،ج۶،ص۳۳۴۔



www.dawateislami.net

## जन्नती दरख़्त :

﴾42﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जन्नत में एक दरख़्त है जिस के साए में एक सुवार 100 साल भी चलता रहे तो साया तै़ न कर सकेगा, अगर तुम चाहो तो येह आयते मुबा-रका पढ़ो :

وَّ ظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ﴿۳۰﴾ وَّ مَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ﴿۳۱﴾
(پ۲۷،الواقعہ:۳۰،۳۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और हमेशा के साए में और हमेशा जारी पानी में।[1]

## وَّ ظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ की तफ़्सीर :

﴾43﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जन्नत में एक दरख़्त है जिस के साए में तेज़ रफ़्तार सधाए हुए घोड़े पर सुवार 100 साल तक भी चलता रहे तो साया तै़ न कर सकेगा।''[2]

﴾44﴿...... एक रिवायत में इतना ज़ाइद है, ''وَّ ظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ'' से येही मुराद है।''[3]

﴾45﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : ''اَلظِّلُّ الْمَمْدُوْد'' जन्नत में एक ऐसा तनावर दरख़्त है जिस के साए तले तेज़ रफ़्तार सुवार उस के कु़र्बो जवार में 100 साल तक चलता रहे। बालाख़ानों वाले और दीगर अहले जन्नत उस के साए में बैठ कर गुफ़्त-गू करेंगे और बा'ज़ ख़्वाहिशात का इज़्हार करेंगे, बा'ज़ दुन्यावी **लह्वो लअ़ब** याद करेंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जन्नत से एक हवा भेजेगा जो तमाम दुन्यवी खेलकूद के साथ उस दरख़्त को ह़-र-कत देगी (ताकि वोह दुन्यवी खेलकूद के ने'मल बदल से लज़्ज़त पाएं)।''[4]

## श-जरे तूबा :

﴾46﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तू़बा दरख़्त की जड़ें अख़रोट के दरख़्त की जड़ की त़रह़ हैं, उस का एक ही तना उगता है, फिर ऊपर से फैल जाता है, उस की जड़ की मोटाई इतनी ज़ियादा है कि अगर 5 साल का ऊंट उस पर सफ़र शुरूअ़ कर दे तो उसे तै़ न कर सके ह़त्ता कि बुढ़ापे से उस की गरदन टूट जाए और उस के अंगूरों

---

1 ......صحیح البخاری،کتاب التفسیر،باب سورة الواقعة، الحدیث: ۴۸۸۱،ص۴۱۸۔

2 ......صحیح البخاری،کتاب الرقاق، باب صفة الجنة والنار، الحدیث: ۶۵۵۳،ص۵۴۹۔

3 ......جامع الترمذی، ابواب صفة الجنة، باب ماجاء فی صفة شجر الجنة، الحدیث: ۲۵۲۴،ص۱۹۰۵۔

4 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا،کتاب صفة الجنة، الحدیث: ۴۵،ج۶،ص۳۲۸۔



www.dawateislami.net

का बड़ा ख़ोशा सफ़ेद दाग़ों वाले ऐसे सियाह (या'नी चित्क़ब्रे) कव्वे की एक माह की मुसल्सल मसाफ़त जितना है कि जो न तो थक कर गिरे, न इधर उधर भटके, न रफ़्तार में सुस्ती का मुज़ा-हरा करे और उस का दाना बड़े डोल जितना है।"(1)

## जन्नती फल :

﴾47﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़रमाने आ़लीशान :

وَ ذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِیْلًا ﴿۱۴﴾ (پ۲۹، الدھر:۱۴) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और उस के गुच्छे झुका कर नीचे कर दिये गए होंगे।

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "इस से मुराद येह है कि जन्नती जन्नत के फल खड़े हो कर, बैठे हुए और पहलूओं पर टेक लगा कर खाएंगे।"(2)

## जन्नती खजूर :

﴾48﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि जन्नती खजूर के दरख़्तों की टहनियां सब्ज़ ज़ुमुर्रुद की और शाख़ों के जोड़ सुर्ख़ सोने के हैं, उस की शाख़ें जन्नतियों का लिबास हैं और उन का फल मटकों और डोलों के बराबर है जो दूध से ज़ियादा सफ़ेद, शह्द से ज़ियादा मीठे और मक्खन से ज़ियादा नर्म व मुलायम हैं, उन में कोई गुठली नहीं।(3)

## जन्नती खाने :

﴾49﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अहले जन्नत जन्नत में खाएंगे पियेंगे लेकिन न नाक साफ़ करेंगे और न ही बौलो बराज़ करेंगे, उन का खाना कस्तूरी की त़रह़ ख़ुश्बूदार डकार की सूरत में (ज़ाइल) होगा, वोह इस त़रह़ मुसल्सल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ व तक्बीर करेंगे जैसे सांस लेते हैं।"(4)

﴾50﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान

---

(1)......المعجم الاوسط، الحدیث : ۴۰۲، ج ۱، ص ۱۲۶ ـ المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۴۰۰۰، ج ۱۷، ص ۲۶، ملخصاً ـ

(2)......الترغیب والترھیب، کتاب صفة الجنة، فصل فی شجرالجنةوثمارھا، الحدیث: ۵۷۴۸، ج ۴، ص ۳۱۹ ـ

(3)......المستدرک، کتاب التفسیر، تفسیرسورة الرحمٰن، أوصاف نخیل الجنة، الحدیث : ۳۸۲۸، ج ۳، ص ۲۸۶، بتغیرٍقلیلٍ ـ

(4)......صحیح مسلم، کتاب الجنة، باب فِی صِفَاتِ الْجَنَّةِ وَاَھْلِھَا......الخ، الحدیث : ۷۱۵۴، ۷۱۵۵، ص ۱۱۷۱، بتغیرٍ ـ



www.dawateislami.net

है : "एक जन्नती को खाने पीने और जिमाअ़ में 100 आदमियों की कुव्वत अ़ता की जाएगी और उन की (क़ज़ाए) ह़ाजत उन के जिस्मों से बहने वाला पसीना ऐसा होगा जैसे कस्तूरी का हो, पस वोह उस के पेट को हलका कर देगा।"(1)

﴾51﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तमाम जन्नतियों में सब से कम द-रजे वाला वोह होगा जिस की ख़िदमत 10 हज़ार ख़ादिम करेंगे और हर ख़ादिम के पास दो प्लेटें होंगी, एक सोने की और दूसरी चांदी की, हर एक में दूसरे से मुख़्तलिफ़ रंग का खाना होगा और वोह दूसरी प्लेट से भी ऐसे ही खाएगा जैसे पहली प्लेट से खाएगा और दूसरी से भी वैसी ही खुश्बू और लज़्ज़त पाएगा जो पहली से पाएगा, फिर येह सब एक डकार होगा जैसा कि उ़म्दा कस्तूरी की खुश्बू, वोह न तो पेशाब करेंगे, न क़ज़ाए ह़ाजत करेंगे और न ही नाक साफ़ करेंगे।"(2)

## फ़ज़ीलते सिद्दीक़े अक्बर :

﴾52﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जन्नती परिन्दे बुख़्ती ऊंटों की त़रह़ हैं जो जन्नत के दरख़्तों में चरते हैं।" अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! बेशक वोह परिन्दे तो बड़ी ने'मत हैं।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उन का खाना उस से भी ज़ियादा ने'मतों वाला होगा।" येह बात 3 बार इर्शाद फ़रमाई (फिर इर्शाद फ़रमाया :) मैं उम्मीद करता हूं कि तुम उन्ही में से हो जो उन्हें खाएंगे।"(3)

﴾53﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जन्नती शख़्स किसी जन्नती परिन्दे (के खाने) की ख़्वाहिश करेगा तो वोह परिन्दा भुना हुवा टुकड़ों की सूरत में उस के सामने आ जाएगा।"(4)

﴾54﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान

---

(1)......المسند للامام احمد بن حنبل،حديث زيد بن ارقم، الحديث: ١٩٢٨٩ ،ج٧،ص٧٦، بتغيرقليلٍ۔

(2)......موسوعة الامام ابن ابی الدنيا،كتاب صفة الجنة، الحديث: ١٠٧، ج ٦،ص٣٤٣۔
المعجم الاوسط، الحديث: ٧٦٧٤،ج٥،ص٣٨٠۔

(3)......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالک، الحديث: ١٣٣١٠ ،ج٤،ص٤٤١۔

(4)......الترغيب والترهيب،كتاب صفة الجنة، فصل فی أكل أهل الجنة الخ، الحديث: ٥٧٦١،ج٤،ص٣٢٢۔



www.dawateislami.net

है : ''जन्नत में इन्सान किसी जन्नती परिन्दे की ख़्वाहिश करेगा तो बुख़्ती ऊंट जैसा परिन्दा उस के पास आ जाएगा यहां तक कि उस के दस्तर ख़्वान पर गिर जाएगा, जिसे न तो धुवां पहुंचा होगा और न ही आग ने उसे छुवा होगा, वोह उसे खाएगा यहां तक कि सैर हो जाएगा, फिर वोह परिन्दा उड़ जाएगा।''(1)

﴾55﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जन्नत में एक परिन्दा है जिस के 70 हज़ार पर हैं, वोह जन्नती की प्लेट पर गिर कर फड़-फड़ाएगा तो हर पर से ऐसे रंग का खाना निकलेगा जो बर्फ़ से ज़ियादा सफ़ेद, मक्खन से ज़ियाद नर्म व मुलायम और शहद से ज़ियादा मीठा होगा, किसी पर का खाना दूसरे के मुशाबेह न होगा, फिर वोह उड़ जाएगा।''(2)

﴾56﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक आ'राबी से इर्शाद फ़रमाया जिस का ख़याल था कि सिद्र का दरख़्त कांटेदार होने की वज्ह से तक्लीफ़ देह है : क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आलीशान नहीं है ?

فِیۡ سِدۡرٍ مَّخۡضُوۡدٍ ﴿۲۸﴾ (پ۲۷، الواقعة:۲۸) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बे कांटों की बेरियों में।

तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के कांटे ख़त्म कर देगा और हर कांटे की जगह फल उगा देगा और वोह फल बढ़ेगा तो उस से 72 रंग के खाने निकलेंगे जिन में से कोई भी दूसरे के मुशाबेह न होगा।''(3)

## जन्नती हूरें :

﴾57﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जन्नती हूर के सर की ओढ़नी दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है) से बेहतर है।''(4)

﴾58﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''हर जन्नती की बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरों में से दो बीवियां होंगी, हर बीवी के 70 हुल्ले होंगे और उन की पिंडलियों का गूदा उन के गोश्त और हुल्लों से इस तरह नज़र आएगा, जैसे सफ़ेद शीशे

---

(1)......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب صفة الجنة، الحدیث: ۱۲۳، ج۶، ص۳۴۶۔

(2)......المرجع السابق، الحدیث: ۱۰۶، ص۳۴۳۔ (3)......المرجع السابق، الحدیث: ۱۰۸۔

(4)......صحیح البخاری، کتاب الجهاد، بَاب الْحُورِ الْعِینِ وَصِفَتِهِنَّ، الحدیث: ۲۷۹۶، ص۲۲۵۔



www.dawateislami.net

के बरतन से सुर्ख़ शराब नज़र आती है।''(1)

﴾59﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अदना जन्नती के पास दुन्या की बीवियों के इलावा 72 हूरें होंगी और उन में से एक की ज़मीन पर बैठने की जगह एक मील की मिक्दार होगी।''(2)

﴾60﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जन्नती शख़्स 500 हूरों, 4 हज़ार बाकिरा (या'नी कुंवारियों) और 8 हज़ार सय्यिबा (या'नी शादी शुदा) औरतों से निकाह करेगा, वोह उन में से हर एक से दुन्यवी उम्र की मिक्दार मुआ-नक़ा करेगा।''(3)

﴾61﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''हर जन्नती की दो बीवियां होंगी जिन की पिंडलियों का गूदा गोश्त के अन्दर से नज़र आएगा और जन्नत में बिग़ैर बीवी के कोई न होगा।''(4)

﴾62﴿...... शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''क़सम है उस ज़ात की जिस ने मुझे हक़ के साथ मब्ऊस फ़रमाया ! तुम दुन्या में अपनी बीवियों और घरों को इस से ज़ियादा नहीं जानते जितना अहले जन्नत अपनी बीवियों और घरों के मु-तअल्लिक़ जानते होंगे, एक जन्नती मर्द अपनी 72 बीवियों के पास जाएगा जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पैदा फ़रमाएगा और दो औलादे आदम से होंगी जो दुन्या में की जाने वाली इबादत की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पैदा की हुई उन हूरों पर फ़ज़ीलत रखती होंगी, वोह दोनों में से पहली के पास याकूत के बालाख़ाने में जाएगा, वहां मोतियों से जड़े हुए सोने के पलंग पर 70 बीवियां होंगी जो सुन्दुस और इस्तब्रक़ के लिबास में मल्बूस होंगी फिर वोह उस के कन्धों के दरमियान अपना हाथ रखेगा तो उस के सीने की तरफ़ से कपड़ों, जिल्द और गोश्त के पीछे से अपना हाथ देख लेगा और उस की पिंडली का गूदा इस तरह देखेगा जैसे तुम में से कोई याकूत के सूराख़ में धागा देखता है,

---

1 ......صحیح البخاری، کِتَاب بَدْءِ الْخَلْقِ، بَاب مَاجَاءَ فِی صِفَةِ الْجَنَّة، الحدیث : ۳۲۴۵، ص۲۶۳۔
المعجم الکبیر، الحدیث : ۱۰۳۲۱، ج۱۰، ص۱۶۱۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی هريرة، الحدیث : ۱۰۹۳۲، ج۳، ص۶۴۰۔

3 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب صفة الجنة، الحدیث : ۲۷۲، ج۶، ص۳۷۶۔

4 ......صحیح مسلم، کتاب الجنة، باب اول زمرة تدخل الجنة علی......الخ، الحدیث : ۷۱۴۷، ص۱۱۷۰۔



www.dawateislami.net

इस का सीना उस के लिये और उस का सीना इस के लिये आईना होगा, वोह उस के पास ही रहेगा न येह उस से उक्ताएगा और न वोह इस से उक्ताएगी, जब भी जिमाअ़ की ख़ातिर उस के पास आएगा तो उसे कुंवारी ही पाएगा, इस मेल मिलाप में दोनों को कोई कमज़ोरी भी न आएगी, वोह इसी ह़ालत में होगा कि उसे आवाज़ आएगी : ''हम जानते थे कि न तो तुम उक्ताओगे न वोह उक्ताएगी मगर येह कि यहां मर्द व औ़रत की मनी नहीं, हां ! इस के इ़लावा भी तुम्हारी बीवियां हैं।'' फिर वोह निकलेगा और यके बा'द दीगरे एक दूसरी के पास जाएगा, जब भी वोह किसी एक के पास जाएगा तो वोह अ़र्ज़ करेगी : ''ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जन्नत में तुझ से ज़ियादा ह़सीनो जमील कोई चीज़ नहीं या मुझे जन्नत में तुम से ज़ियादा मह़बूब कोई चीज़ नहीं।''(1)

﴾63﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जन्नत में हर शख़्स का 4 हज़ार बाकिरा (या'नी कुंवारियों) 8 हज़ार सय्यिबा (या'नी शादी शुदा) औ़रतों और 100 हूरों से निकाह़ किया जाएगा और वोह सब हर 7 दिन में जम्अ़ हुवा करेंगे और वोह हूरें इतनी अच्छी आवाज़ में नग़मे गाएंगी कि जिस की मिस्ल मख़्लूक़ ने कोई आवाज़ न सुनी होगी (वोह कहेंगी) हम हमेशा रहने वालियां हैं कभी हलाक न होंगी, हम ने'मत वालियां हैं कभी तक्लीफ़ नहीं उठाएंगी, हम राज़ी रहने वालियां हैं कभी नाराज़ नहीं होंगी, हम क़ियाम करने वालियां हैं कभी कूच न करेंगी, उन के लिये मुबारक हो जो हमारे लिये और जिन के लिये हम हैं।''(2)

## दोनों अह़ादीसे मुबा-रका में तत़्बीक़ :

मुन-द-र-जए बाला अह़ादीसे मुबा-रका में जो (ज़ाहिरी) तज़ाद है उस में इस त़रह़ मुत़ा-बक़त क़ाइम की जा सकती है कि येह बात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही बेहतर जानता है कि मज़्कूरा दो अह़ादीसे मुबा-रका में जो सिफ़ात ज़िक्र की गई हैं बाक़ियों में वोह सिफ़ात बयान नहीं की गईं या हो सकता है कि पहले आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कम के मु-तअ़ल्लिक़ बताया गया हो तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस की ख़बर दी हो फिर कसीर की ख़बर दी गई हो तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के मु-तअ़ल्लिक़ भी आगाह फ़रमा दिया हो। इस की मिसाल

---

1 ......الترغیب و الترھیب، کتاب صفة الجنة، فصل فی وصف نساء اھل الجنة، الحدیث :۵۷۸۳، ج۴، ص۳۲۹۔

2 ......کتاب العظمة لابی الشیخ، ذکر الجنات وصفتھا، الحدیث : ۲۰۵، ص۲۱۴۔

الترغیب و الترھیب، کتاب صفة الجنة، فصل فی غناء الحورالعین، الحدیث :۷۹۴، ج۴، ص۳۳۳۔



www.dawateislami.net

येह ह़दीसे पाक है कि "बा जमाअ़त नमाज़ तन्हा नमाज़ से 25 द-रजे अफ़्ज़ल है।"(1)

﴾64﴿...... और एक रिवायत में है कि "27 द-रजे अफ़्ज़ल है।"(2)

﴾65﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान : "وَفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ (پ۲۷، الواقعة:۳۴) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और बुलन्द बिछोनों में।" के मु-तअ़ल्लिक़ हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उस की बुलन्दी इतनी है जितनी कि ज़मीन व आस्मान के दरमियान 500 साल की मसाफ़त है।"(3)

## दुन्यावी औ़रतों की हूरों पर फ़ज़ीलत :

﴾66﴿...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान के मु-तअ़ल्लिक़ बताइये :

وَحُوْرٌ عِيْنٌ (پ۲۷،الواقعہ:۲۲) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और बड़ी आंख वालियां हूरें।"

तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह गोरे रंग की बड़ी बड़ी आंखों वाली होंगी, उन की पलकें इतनी घनी होंगी जैसे गिध के पर होते हैं।" मैं ने फिर अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान की तफ़्सीर बताइये :

كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ (پ۲۷،الرحمٰن:۵۸) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** गोया वोह ला'ल और याकूत और मूंगा हैं।"

तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह उस मोती की त़रह़ लत़ीफ़ होंगी जो ऐसे सीप में हो जिसे हाथों ने न छुवा हो।" मैं ने फिर अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान की तफ़्सीर बताइये :

فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ (پ۲۷،الرحمٰن:۷۰) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** उन में औ़रतें हैं आ़दत की नेक, सूरत की अच्छी।"

तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उन में अख़्लाक़े ह़मीदा और ख़ूब

---

(1) ......المعجم الاوسط، الحديث : ۳۵۲، ج۱، ص۱۱۴۔

(2) ......صحيح مسلم، كتاب المساجد، باب فضل صلاة الجماعة......الخ، الحديث : ۱۴۷۷، ص۷۷۹۔

(3) ......جامع الترمذى، ابواب تفسير القرآن، باب ومن سورة الواقعة، الحديث :۳۲۹۴، ص۱۹۸۸۔



www.dawateislami.net

सूरत चेहरों वाली हूरें होंगी।'' मैं ने फिर अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान की तफ़्सीर बताइये :

كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿۴۹﴾ (پ۲۳، الصّٰفّٰت:۴۹)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** गोया वोह अन्डे हैं पोशीदा रखे हुए।''

तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''उन की नरमी उस झिल्ली की त़रह़ होगी जो अन्डे के अन्दर छिलके से मिली होती है।'' मैं ने मज़ीद अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान की तफ़्सीर बताइये :

عُرُبًا اَتْرَابًا ﴿۳۷﴾ (پ۲۷، الواقعه:۳۷)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** उन्हें प्यार दिलातियां एक उ़म्र वालियां।''

तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो औ़रतें दुन्या में बूढ़ी हो कर फ़ौत हुईं, उन की आंखें रत़ूबत से अटी हुईं और बाल सफ़ेद हो चुके थे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें बुढ़ापे के बा'द दोबारा दोशीज़ाएं बना कर पैदा फ़रमाएगा। और **''عُرُبًا''** से मुराद अपने शोहरों से बहुत ज़ियादा इ़श्क़ो मह़ब्बत करने वाली औ़रतें हैं और **''اَتْرَابًا''** से मुराद येह है कि सब एक ही उ़म्र की या'नी जवां साल होंगी।'' मैं ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! दुन्या की औ़रतें अफ़्ज़ल हैं या बड़ी आंखों वाली जन्नती हूरें ?'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''दुन्या की औ़रतें बड़ी आंखों वाली जन्नती हूरों से अफ़्ज़ल हैं, जैसे ज़ाहिर बात़िन से अफ़्ज़ल है।'' मैं ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! किस वज्ह से ?'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह उन के नमाज़, रोज़े और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करने की वज्ह से है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के चेहरों को नूर अ़त़ा करने के साथ साथ रेशम के लिबास भी पहनाएगा, उन का रंग सफ़ेद, कपड़े सब्ज़ और ज़ेवर ज़र्द रंग का होगा, अंगेठियां मोतियों की और कंघियां सोने की होंगी, वोह कहेंगी : ''जान लो ! हम हमेशा रहने वालियां हैं कभी न कूच करेंगी, हम नर्मो नाज़ुक हैं कभी सख़्त न होंगी, हम हमेशा ज़िन्दा रहने वालियां हैं हमें कभी मौत न आएगी, हम राज़ी रहने वालियां हैं कभी नाराज़ न होंगी, उस के लिये ख़ुश ख़बरी है जो हमारे लिये है और जिस के लिये हम हैं।'' मैं ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! कोई औ़रत दुन्या में एक दो, तीन या चार की ज़ौजिय्यत में रही हो, फिर मर जाए और जन्नत में दाख़िल हो जाए, उस के तमाम शोहर भी जन्नत में दाखिल हो जाएं तो जन्नत में वोह किस की ज़ौजिय्यत में होगी ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ उम्मे स-लमा ! उसे इख़्तियार दिया जाएगा, पस वोह उन में से



www.dawateislami.net

ख़ुश अख़्लाक़ को इख़्तियार करेगी और कहेगी : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! येह मेरे साथ दुन्या में हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आता था, लिहाज़ा इस के साथ मेरा निकाह़ फ़रमा दे।" (फिर फ़रमाया :) ऐ उम्मे स-लमा ! अच्छे अख़्लाक़ वाले दुन्या व आख़िरत की भलाई ले गए।"(1)

## ह़दीसे पाक की वज़ाह़त :

ह़दीसे पाक में जो औ़रत के इख़्तियार का तज़्किरा हुवा है उस की ह़क़ीक़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही बेहतर जानता है, अलबत्ता बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का जो येह क़ौल मन्क़ूल है कि "वोह औ़रत सब से आख़िरी मर्द की होगी" तो उन के इस क़ौल और ह़दीसे पाक में कोई तज़ाद नहीं। इस लिये कि ह़दीसे पाक में जिस इख़्तियार का तज़्किरा हुवा उस का मह़ल वोह औ़रत है जिसे मौत इस ह़ाल में आए कि मरने के वक़्त वोह किसी की इ़स्मत में न हो (या'नी ब वक़्ते विसाल वोह किसी की बीवी न हो) जब कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के क़ौल का मह़ल वोह औ़रत है जो किसी की इ़स्मत में मरे तो वोह सिर्फ़ उसी शख़्स की बीवी होगी न कि किसी दूसरे की, ब ख़िलाफ़ उस मरने वाली औ़रत के जो मरते वक़्त किसी की इ़स्मत में तो न हो लेकिन ज़िन्दगी में उस के कई शोहर रहे हों तो अब उन में से ज़ियादा ह़क़दार कोई नहीं होगा, लिहाज़ा उसे इख़्तियार दिया जाएगा।

## जन्नती हूरों के नग़मे :

﴾67﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अहले जन्नत की बीवियां ऐसी अच्छी आवाज़ में गुन-गुनाएंगी जो किसी ने कभी न सुनी होगी और जो नग़मे गाएंगी उन में से एक येह है : نَحْنُ الْخَيْرَاتُ الْحِسَانُ हम अच्छे अख़्लाक़ और ख़ूब सूरत चेहरे वालियां हैं, اَزْوَاجُ قَوْمٍ كِرَامٍ يَنْظُرُوْنَ بِقُرَّةِ أَعْيَانٍ हम मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों की बीवियां हैं, वोह हमें देख कर अपनी आंखें ठन्डी करते हैं। वोह येह भी गाएंगी : نَحْنُ الْخَالِدَاتُ فَلَا نَمُتْنَهْ हम हमेशा रहने वालियां हैं कभी मरेंगी नहीं, وَنَحْنُ الْاٰمِنَاتُ فَلَا نَخَفْنَهْ हम अम्न वालियां हैं कभी ख़ौफ़ज़दा न होंगी, وَنَحْنُ الْمُقِيْمَاتُ فَلَا نَظْعَنَهْ हम हमेशा रहने वालियां हैं कभी कूच न करेंगी।"(2)

---

(1) ......المعجم الكبير،الحديث : ١٩٨٢٢، ج٢٣،ص٣٦٧۔

المعجم الاوسط، الحديث : ٣١٤١،ج٢،ص٢٤١۔

(2) ......المعجم الاوسط، الحديث : ٤٩١٧،ج٣،ص٣٩١۔



www.dawateislami.net

## जन्नती बाज़ार :

﴾68﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है : जन्नत में एक बाज़ार है जिस में जन्नती हर जुमुआ को आएंगे, फिर शुमाल की हवा चलेगी जो उन के चेहरों और कपड़ों से गुज़रेगी जिस से उन का हुस्नो जमाल मज़ीद बढ़ जाएगा, वोह अपने घर वालों की त़रफ़ इस ह़ाल में लौटेंगे कि हुस्नो जमाल में बढ़ चुके होंगे तो उन की बीवियां कहेंगी : "ब ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ! हमारे पास से जाने के बा'द तुम्हारी ख़ूब सूरती में इज़ाफ़ा हो गया है।" तो वोह कहेंगे : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हमारे बा'द तुम्हारा हुस्नो जमाल भी ज़ियादा हो गया है।"(1)

﴾69﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इर्शाद फ़रमाया : "मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करता हूं कि हम दोनों को जन्नत के बाज़ार में इकठ्ठा फ़रमाए" ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस्तिफ़्सार किया : "क्या जन्नत में भी बाज़ार होंगे ?" तो उन्हों ने जवाब दिया : "हां, मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़बर दी कि जन्नती जब बाज़ारों में दाख़िल होंगे तो अपने आ'माल की फ़ज़ीलत के मुत़ाबिक़ उस में उतरेंगे, फिर अय्यामे दुन्या के मुत़ाबिक़ जुमुआ़ के दिन उन्हें आवाज़ दी जाएगी तो वोह अपने रब عَزَّوَجَلَّ का दीदार करेंगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़र्श लोगों के लिये ज़ाहिर होगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जन्नत के बाग़ात में से किसी बाग़ में तजल्ली फ़रमाएगा, जन्नतियों के लिये मिम्बर बिछाए जाएंगे जो नूर, मोती, याक़ूत, ज़बर-जद, सोने और चांदी के होंगे, उन में से अदना जन्नती मुश्क औ काफ़ूर के टीले पर बैठेंगे और वहां कोई अदना न होगा और वोह कुर्सियों पर बैठने वालों को अपने से अफ़्ज़ल नहीं समझेंगे।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या हम रब عَزَّوَجَلَّ का दीदार करेंगे ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हां ! क्या तुम सूरज और चौदहवीं रात के चांद को देखने में शक करते हो ?" हम ने अ़र्ज़ की : "नहीं।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : इसी त़रह़ तुम अपने रब عَزَّوَجَلَّ को देखने में भी शको शुबा नहीं करोगे, उस मजलिस में कोई शख़्स नहीं होगा मगर येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के पास बिला ह़िजाब जल्वा फ़रमा होगा यहां तक कि एक से इर्शाद फ़रमाएगा :

(1)......صحيح مسلم، كتاب الجنة، بَاب فِي سُوقِ الْجَنَّةِ وَمَا......الخ، الحديث : ٧١٤٦، ص١١٧٠ـ



www.dawateislami.net

"ऐ फ़ुलां ! क्या तुझे वोह दिन याद है जिस में तू ने ऐसे ऐसे किया था ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे दुन्या में किये हुए बा'ज़ गुनाह याद दिलाएगा तो बन्दा अ़र्ज़ करेगा : "ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! क्या तू ने मुझे मुआफ़ नहीं फ़रमा दिया ।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "हां, क्यूं नहीं और मेरी वसीअ़ बख़्शिश ही की वज्ह से तू इस मक़ाम पर पहुंचा ।" लोग इसी ह़ालत में होंगे कि उन पर एक बादल छा जाएगा जो उन पर ऐसी ख़ुश्बू बरसाएगा जैसी इस से पहले उन्हों ने कभी भी न सूंघी होगी, फिर हमारा रब عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "उस इन्आ़मो इक्राम के लिये उठो जो हम ने तुम्हारे लिये तय्यार किया है, जिस की तुम्हें ख़्वाहिश हो ले लो ।"

फिर हम बाज़ार में आएंगे जिस को फ़रिश्तों ने घेर रखा होगा ऐसा बाज़ार न तो किसी आंख ने देखा न किसी कान ने सुना और न ही किसी दिल में उस का ख़याल गुज़रा होगा, जिस चीज़ की हमें ख़्वाहिश होगी मिल जाएगी, उस में ख़रीदो फ़रोख़्त न होगी और उसी बाज़ार में जन्नती एक दूसरे से मुलाक़ात करेंगे, बुलन्द द-रजे वाला आगे बढ़ कर अदना द-रजे वाले से मिलेगा ह़ालां कि उन में कोई अदना न होगा, वोह उस का लिबास देख कर ह़ैरान व मु-तअ़ज्जिब होगा, अभी उन की गुफ़्त-गू ख़त्म भी न होगी कि उस अदना द-रजे वाले जन्नती पर उस से भी ज़ियादा ख़ूब सूरत लिबास आ जाएगा और येह इस लिये है ताकि वहां किसी को कोई रन्जो ग़म न हो, फिर हम अपने अपने ठिकाने में आएंगे, हमारी बीवियां हम से मिलेंगी और ख़ुश आ-मदीद कहते हुए कहेंगी : "जिस वक़्त आप हम से रुख़्सत हुए थे उस के मुक़ाबले में अब आप के ह़ुस्नो जमाल में मज़ीद निखार आ गया है ।" तो वोह कहेगा : "आज हम अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हुए थे, लिहाज़ा हमें ऐसे ही पलटना चाहिये था ।"(1)

﴾70﴿...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जन्नत में एक बाज़ार है जिस में कोई ख़रीदो फ़रोख़्त न होगी, बल्कि वहां सिवाए तस्वीरों के कुछ न होगा, पस (वहां) जन्नती मर्द या औ़रत जो तस्वीर पसन्द करेगा वोह उस में दाख़िल हो जाएगा ।"(2)

## जन्नतियों का सैरो सियाह़त और एक दूसरे की ज़ियारत करना :

﴾71﴿...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान

---

1 ......جامع الترمذی، ابواب صفة الجنة، باب مَاجَاءَ فِی سُوقِ الْجَنَّةِ، الحدیث: ۲۵۴۹،ص۱۹۰۸۔

2 ......المعجم الاوسط، الحدیث: ۵۶۶۴،ج۴،ص۱۸۷۔



www.dawateislami.net

है : ''जन्नत की ने'मतों में से एक येह है कि जन्नती उ़म्दा सुवारियों और आ'ला नसब के जानवरों पर एक दूसरे की ज़ियारत किया करेंगे, वोह जन्नत में ज़ीन और लगाम लगे हुए ऐसे तेज़ रफ़्तार घोड़े पर आएंगे जो न ही लीद करेंगे और न ही पेशाब, वोह उन पर सुवार होंगे यहां तक कि जहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहेगा जाएंगे और उन के पास बादल की मिस्ल ऐसी चीज़ आएगी जिसे न किसी आंख ने देखा और न किसी कान ने सुना, वोह उस से कहेंगे : ''हम पर बारिश बरसा।'' तो बारिश होती रहेगी यहां तक कि उन की तमन्ना व ख़्वाहिश पर ही ख़त्म होगी।

फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसी हवा भेजेगा जो तक्लीफ़ देह न होगी वोह उन के दाएं बाएं मुश्क के टीले उड़ाएगी तो वोह अपने घोड़ों की पेशानियों, गरदनों के बालों और अपने सरों में वोह कस्तूरी लगा लेंगे, हर जन्नती शख़्स के सर पर उस की चाहत के मुत़ाबिक़ ज़ुल्फ़ें होंगी, पस वोह मुश्क उन की ज़ुल्फ़ों, कपड़ों और घोड़ों वग़ैरा पर लग जाएगी, फिर वोह आगे बढ़ेंगे यहां तक कि जहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहेगा जाएंगे, फिर एक औ़रत उन में से किसी एक को **या अ़ब्दल्लाह** कह कर पुकारेगी कि ''क्या तुम्हें हमारी ज़रूरत है ?'' वोह पूछेगा : ''तुम कौन हो ?'' वोह जवाब देगी : ''मैं आप की बीवी और मह़बूबा हूं।'' वोह कहेगा : ''मुझे तेरा मक़ाम मा'लूम नहीं।'' वोह कहेगी : ''क्या आप नहीं जानते कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया है : '' فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۷﴾ (پ۲۱، السجدہ:۱۷)
**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन के कामों का।'' वोह कहेगा : ''क्यूं नहीं, येह मेरे रब عَزَّوَجَلَّ का ही फ़रमान है।'' फिर उस जगह के बा'द वोह उस से 40 साल की मसाफ़त तक ग़ाफ़िल रहेगा न उस की त़रफ़ मु-तवज्जेह होगा और न ही वापस पलटेगा, उसे अपनी बीवी से ग़ाफ़िल रखने वाली अश्या मह़ज़ जन्नत की ने'मतें और करामतें होंगी।''(1)

﴾72﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे एक दूसरे से मिलने की रग़बत करेंगे तो एक का तख़्त दूसरे के तख़्त की त़रफ़ और दूसरे का पहले के तख़्त की त़रफ़ चला जाएगा यहां तक कि दोनों एक साथ जम्अ़ हो जाएंगे फिर एक दूसरे के तख़्त पर टेक लगाए मह़्वे गुफ़्त-गू होंगे। एक अपने साह़िब से कहेगा : ''तुम जानते हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कब तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाई।'' तो दूसरा कहेगा : ''जी

(1)......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب صفة الجنة، الحدیث: ۲۴۰، ج۶، ص۳۶۸، بتغیرٍ۔


www.dawateislami.net

हां ! उस दिन कि हम फुलां फुलां जगह पर थे हम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ की थी तो उस ने हमें मुआफ़ फ़रमा दिया था।''(1)

﴾73﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जन्नत में एक दरख़्त है कि उस के ऊपर और नीचे से सोने की ज़ीन और मोती व याक़ूत की लगाम वाला घोड़ा निकलेगा, वोह न लीद करेगा न पेशाब, उस के पर होंगे और उस का क़दम ह़द्दे निगाह तक पड़ता होगा, जन्नती उस पर सुवार होंगे जहां वोह चाहेंगे वोह उन को ले कर उड़ेगा, उन से कम द-रजे वाले लोग अ़र्ज़ करेंगे : ''ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! किस चीज़ के सबब तेरे बन्दे इन तमाम इन्आ़मात तक पहुंचे।'' आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''उन्हें बताया जाएगा कि वोह रात को नमाज़ पढ़ते और तुम सोते थे, वोह रोज़े रखते और तुम खाते थे, वोह राहे ख़ुदा में ख़र्च करते और तुम बुख़्ल करते थे, वोह जिहाद करते और तुम इस से पहलू तही इख़्तियार करते थे।''(2)

## जन्नतियों का रूयते बारी तआ़ला से मुशर्रफ़ होना :

﴾74﴿...... अमीरुल मुअमिनीन मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है कि जब जन्नती जन्नत में रिहाइश पज़ीर हो जाएंगे तो उन के पास एक फ़िरिश्ता आएगा और कहेगा : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हुक्म फ़रमाता है कि उस की ज़ियारत करो।'' तो लोग जम्अ़ हो जाएंगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को हुक्म इर्शाद फ़रमाएगा तो वोह बुलन्द आवाज़ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ व तह्लील कहेंगे, फिर जन्नतियों के लिये दस्तर ख़्वान बिछाया जाएगा।'' सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जन्नत का दस्तर ख़्वान क्या है ?'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : उस का एक कोना मशरिक़ व मग़रिब के दरमियानी फ़ासिले से भी ज़ियादा वसीअ़ है, जन्नती खाएं पियेंगे और लिबास पहनेंगे, फिर अ़र्ज़ करेंगे : ''अपने रब عَزَّوَجَلَّ के दीदार के सिवा हमारी कोई ख़्वाहिश बाक़ी नहीं।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के लिये तजल्ली फ़रमाएगा, वोह सज्दे में गिर पड़ेंगे उन से कहा जाएगा : ''तुम दारे अ़मल (या'नी दुन्या) में नहीं बल्कि दारे जज़ा में हो।''(3)

---

(1) ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب صفة الجنة، الحدیث : ۲۳۹،ج٦،ص٣٦٨۔

(2) ......المرجع السابق، الحدیث : ٢۴٣،ص ٣٧٠۔

(3) ......الترغیب والترهیب،کتاب صفة الجنة، فصل فی زیارة اهل الجنة، الحدیث : ٥٨٠٨،ج۴،ص٣٣٩۔



www.dawateislami.net

《75》...... हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब जन्नती जन्नत में दाखि़ल हो जाएंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "क्या (जन्नत मिलने के बा'द) तुम्हारी कोई और ख़्वाहिश है जिस को मैं पूरा करूं ?" तो वोह अ़र्ज़ करेंगे : "क्या तू ने हमारे चेहरे रोशन नहीं किये ? और क्या हमें जहन्नम से बचा कर जन्नत में दाखि़ल नहीं किया ?" फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (उन के और अपनी ज़ात के दरमियान से) हि़जाब उठा देगा, (और जन्नती दीदारे बारी तआ़ला कर लेंगे) पस उन्हें जो ने'मतें अ़ता की गईं वोह उन के नज़्दीक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीदार से ज़ियादा मह़बूब न होंगी । फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ (پ ١١، يونس: ٢٦)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** भलाई वालों के लिये भलाई है और इस से भी ज़ाइद ।[1]

## रूयते बारी तआ़ला का मख़्सूस दिन :

《76》...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहि़बे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : मेरे पास जिब्राईल عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام आए, उन के हाथ में सफे़द आईना था जिस में एक सियाह नुक़्ता था, मैं ने दरयाफ़्त किया : "ऐ जिब्राईल ! येह क्या है ?" उन्हों ने बताया : "येह जुमुआ़ है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अ़ता फ़रमाया है ताकि येह आप और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत के लिये ईद क़रार पाए ।"

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर दरयाफ़्त फ़रमाया : "इस में हमारे लिये क्या अज्र है ?" उन्हों ने जवाब दिया कि इस में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये ब-र-कत है, इस में एक ऐसी साअ़त है कि जिस ने उस साअ़त में अपने रब عَزَّوَجَلَّ से भलाई की दुआ़ की अगर उस के नसीब में हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अ़ता फ़रमा देगा और अगर नसीब में न हो तो उस के बदले उस के लिये बड़ी भलाई मह़फ़ूज़ कर ली जाएगी या अपने रब عَزَّوَجَلَّ से किसी शर से पनाह त़लब की जो उस के लिये लिखा हो तो वोह उसे उस से बड़ी मुसीबत से पनाह अ़ता फ़रमा देगा ।

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "मैं ने पूछा कि इस में येह सियाह नुक़्ता कैसा है ?" बोले : "येह क़ियामत है जो जुमुआ़ के दिन क़ाइम होगी

1 ......صحيح مسلم، كتاب الإيمان، باب إِثْبَاتِ رُؤْيَةِ الْمُؤْمِنِينَ......الخ، الحديث : ٤٤٩، ٤٥٠، ص٧٠٩۔



www.dawateislami.net

और येह हमारे नज़्दीक तमाम दिनों का सरदार है और आख़िरत में हम इसे **यौमे मज़ीद** के नाम से याद करेंगे।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : मैं ने पूछा : "इसे यौमे मज़ीद कहने की वज्ह क्या है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "बेशक आप के रब عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत में एक सफ़ेद कस्तूरी की वादी बनाई है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जुमुआ़ के दिन जन्नतियों के लिये उस में तजल्ली फ़रमाएगा और अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام नूर के मिम्बरों पर जल्वा फ़रमा होंगे, सिद्दीक़ीन और शु-हदा के लिये सोने की कुर्सियां बिछाई जाएंगी और बाक़ी जन्नती टीलों पर बैठेंगे, वोह सब दीदारे बारी तआ़ला कर रहे होंगे तो रब्बे क़ुद्दूस उन से फ़रमाएगा : "मैं ने तुम से अपना वा'दा सच्चा किया और तुम पर अपनी ने'मतें तमाम कीं, येह मेरी ने'मतों का मह़ल है पस मुझ से सुवाल करो।" लिहाज़ा वोह उस की रिज़ा मांगेंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "मेरी रिज़ा ही ने तुम्हें जन्नत में दाख़िल किया और तुम्हें इ़ज़्ज़त दी, लिहाज़ा तुम और सुवाल करो।" तो वोह सुवाल करते रहेंगे यहां तक कि उन की ख़्वाहिशात ख़त्म हो जाएंगी। उस वक़्त उन के लिये जुमुआ़ के दिन की मिक़्दार तक एक ऐसी ने'मत ज़ाहिर की जाएगी जो न किसी आंख ने देखी, न किसी कान ने सुनी और न ही किसी इन्सान के दिल में उस का ख़याल गुज़रा।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जुमुआ़ के दिन उन्हें इस से ज़ियादा किसी चीज़ की ज़रूरत न होगी कि वोह इस में ज़ियादा लुत्फ़ो करम पाएं और ज़ियादा से ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जल्वों का दीदार करें, इस लिये इसे **यौमे मज़ीद** कहा जाता है।"(1)

﴾77﴿...... मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जन्नत में दिन रात न होंगे मगर येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही उन की मिक़्दार और घड़ियां जानता है, जब जुमुआ़ के दिन वोह वक़्त आएगा जिस में जुमुआ़ पढ़ने वाले जुमुआ़ के लिये निकला करते थे तो एक मुनादी निदा करेगा : "ऐ अहले जन्नत ! **दारे मज़ीद** की त़रफ़ चलो।" उस की वुस्अ़त, चौड़ाई और लम्बाई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता, लिहाज़ा वोह मुश्क के टीलों की त़रफ़ निकलेंगे।

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "जन्नती तुम्हारे इस (दुन्या के) आटे से ज़ियादा सफ़ेद होंगे, पहले अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ख़ुद्दाम उन के लिये नूर के

---

(1)......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا،کتاب صفة الجنة، الحدیث : ۹۰،ج۶،ص۳۳۹۔

المعجم الاوسط، الحدیث : ۲۰۸۴،ج۱،ص۵۶۶۔

المصنف لابن ابی شیبة،کتاب الجمعة،باب فی فضل الجمعة ویومها، الحدیث : ۱۰،ج۲،ص۵۸۔



www.dawateislami.net

मिम्बर बिछाएंगे और मुअमिनीन के ख़ुद्दाम याकूत की कुर्सियां लगाएंगे, जब उन की निशस्तें लग जाएंगी तो वोह उस पर बैठ जाएंगे, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन पर मुसीरा नामी हवा भेजेगा जो उन पर सफ़ेद मुश्क बिखेरेगी और मुश्क को उन के कपड़ों के अन्दर तक दाख़िल कर देगी जिस के अ-सरात उन के चेहरों और उन के बालों से ज़ाहिर होंगे। येह हवा मुश्क को इस्ति'माल करना तुम्हारी उस औ़रत से भी ज़ियादा जानती होगी जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इज़्न से रूए ज़मीन की तमाम ख़ुश्बूएं दी गई हों।"

इस के बा'द शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़र्श उठाने पर मा'मूर फ़रिश्तों को हुक्म इर्शाद फ़रमाएगा कि अ़र्श को जन्नत के दरमियान रख दो, (उसे इस त़रह़ रखा जाएगा कि) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और जन्नतियों के दरमियान एक ह़िजाब होगा और सब से पहली आवाज़ जो जन्नती सुनेंगे वोह येह होगी कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "मेरे वोह बन्दे कहां हैं जिन्हों ने बिन देखे मेरी इत़ाअ़त की, मेरे रसूलों की तस्दीक़ की और मेरा हुक्म बजा लाए ? मुझ से मांगें कि येह **यौमे मज़ीद** है।" लिहाज़ा वोह सब ब-यक ज़बान अ़र्ज़ गुज़ार होंगे : "ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! हम तुझ से राज़ी हैं, तू भी हम से राज़ी हो जा।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "अगर मैं तुम से राज़ी न होता तो अपनी जन्नत में न ठहराता, लिहाज़ा मुझ से मांगो येह **यौमे मज़ीद** है।"

वोह फिर ब-यक ज़बान अ़र्ज़ गुज़ार होंगे : "ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! हमें अपना जल्वा दिखा कि हम तेरा दीदार करें।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़िजाब उठा देगा और उन्हें जल्वा दिखाएगा तो उस का नूर हर शै को ढांप लेगा अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे जलाने का हुक्म दिया होता तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नूर की ताब न लाने की वज्ह से यक़ीनन जल कर राख हो जाते, फिर उन से कहा जाएगा : "अपने घरों की त़रफ़ लौट जाओ।" तो वोह अपने घरों की त़रफ़ लौट जाएंगे, इस ह़ाल में कि वोह ख़ुद पर छाए हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नूर की वज्ह से अपनी बीवियों से पोशीदा हो चुके होंगे और उन की बीवियां उन से पोशीदा हो चुकी होंगी। जब वोह अपने घरों की त़रफ़ लौटेंगे तो उन का नूर भी लौट जाएगा फिर ठहर जाएगा, फिर लौटेगा और फिर ठहर जाएगा यहां तक कि वोह अपनी पहली सूरतों पर लौट आएंगे, उन की बीवियां उन से अ़र्ज़ करेंगी : "तुम हमारे पास से एक सूरत पर गए और दूसरी सूरत पर वापस पलटे।" तो वोह बताएंगे कि येह इस वज्ह से है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हम पर तजल्ली फ़रमाई और हमें अपने दीदार की ने'मत से नवाज़ा यहां तक कि हम तुम से छुप गए। फिर उन के लिये हर 7 दिन में पहले से दो गुनी ने'मतें होंगी और इस के मु-तअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का



www.dawateislami.net

फ़रमाने आलीशान :

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۷﴾ (پ۲۱،السجدہ:۱۷)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन के कामों का।[1]

﴾78﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अदना द-रजे का जन्नती अपने बाग़ात, बीवियों, ख़ादिमों और तख़्तों को हज़ार बरस की मसाफ़त तक देखता रहेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक उन में से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह होगा जो सुब्ह़ शाम दीदारे इलाही के शरफ़ से मुशर्रफ़ होगा।" इस के बा'द आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

وُجُوْهٌ یَّوْمَىٕذٍ نَّاضِرَةٌۙ﴿۲۲﴾ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌۚ﴿۲۳﴾ (پ۲۹،القیامۃ:۲۲،۲۳)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** कुछ मुंह उस दिन तरो ताज़ा होंगे अपने रब को देखते।[2]

﴾79﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मर्तबे के ए'तिबार से अफ़्ज़ल जन्नती का मक़ाम येह होगा कि वोह दिन में दो मर्तबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दीदार करेगा।"[3]

﴾80﴿...... सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जन्नतियों से इर्शाद फ़रमाएगा : "ऐ अहले जन्नत !" तो वोह अ़र्ज़ करेंगे : "**लब्बैक !** हम इताअ़त के लिये ह़ाज़िर हैं और सब भलाई तेरे ही दस्ते क़ुदरत में है।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "क्या तुम राज़ी हो ?" वोह अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! हमें क्या है कि हम राज़ी न हों ? तू ने हमें वोह कुछ अ़त़ा फ़रमाया है जो अपनी मख़्लूक़ में से किसी को नहीं दिया।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "क्या मैं तुम को इस से अफ़्ज़ल ने'मत न अ़त़ा फ़रमाऊं ?" वोह अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! इस से अफ़्ज़ल क्या चीज़ होगी ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद

---

1 ......البحرالزخارالمعروف بمسند البزار، مسند حذیفة بن الیمان، الحدیث : ۲۸۸۱،ج۷،ص۲۸۹۔
موسوعة الامام ابن ابی الدنیا،کتاب صفة الجنة، الحدیث : ۳۳۰،ج۶،ص ۳۸۶تا۳۸۸۔

2 ......جامع الترمذی، ابواب صفة الجنة، باب منه تفسیر قوله:وُجُوهٌ یَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ، الحدیث :۲۵۵۳،ص ۱۹۰۸۔

3 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا،کتاب صفة الجنة، الحدیث : ۹۲،ج۶،ص ۳۴۱۔



www.dawateislami.net

फ़रमाएगा : "मैं ने अपनी रिज़ा मन्दी तुम्हारे लिये ह़लाल की, लिहाज़ा इस के बा'द कभी तुम से नाराज़ न होउंगा ।"(1)

﴾81﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है कि "मैं ने अपने बन्दों के लिये वोह ने'मतें तय्यार कर रखी हैं जो न तो किसी आंख ने देखीं, न किसी कान ने सुनीं और न ही किसी इन्सान के दिल पर उन का ख़याल गुज़रा ।" अगर तुम चाहो तो येह आयते मुबा-रका पढ़ लो :

فَلَا تَعۡلَمُ نَفۡسٌ مَّاۤ اُخۡفِیَ لَہُمۡ مِّنۡ قُرَّۃِ اَعۡیُنٍ

(پ ٢١، السجدہ: ١٧)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन के कामों का ।(2)

## जन्नती और दुन्यवी अश्या में फ़र्क़ :

﴾82﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम में से किसी एक जन्नती के कोड़ा (या'नी चाबुक, डन्डा) रखने की मिक़्दार के बराबर जगह दुन्या और इस की मिस्ल से बेहतर है और तुम में से किसी एक जन्नती की कमान भर जगह दुन्या और इस की मिस्ल से बेहतर है और जन्नती औ़रत की ओढ़नी दुन्या और इस की मिस्ल से बेहतर है ।"(3)

﴾83﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا इर्शाद फ़रमाते हैं : "जन्नत में दुन्या की कोई चीज़ न होगी सिर्फ़ नाम होंगे ।"(4)

﴾84﴿...... सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे तो एक मुनादी निदा करेगा : "तुम्हारे लिये येह मुक़र्रर हो गया है कि तुम तन्दुरुस्त रहोगे कभी बीमार न होगे, तुम ज़िन्दा रहोगे कभी न मरोगे, तुम हमेशा जवान रहोगे कभी बूढ़े न होगे और तुम हमेशा ने'मतों में रहोगे कभी तक्लीफ़ में मुब्तला न होगे । इस की ताईद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान में है :

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب التوحید، بَاب کَلَامِ الرَّبِّ مَعَ اَھۡلِ الۡجَنَّۃِ، الحدیث : ٧٥١٨، ص٦٢٧۔

2 ......صحیح البخاری، کِتَاب بَدۡءِ الۡخَلۡقِ، بَاب مَا جَاءَ فِی صِفَۃِ الۡجَنَّۃِ وَاَنَّھَا مَخۡلُوقَۃٌ، الحدیث : ٣٢٤٤، ص٢٦٣۔

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی ھریرۃ، الحدیث : ١٠٢٧٤، ج٣، ص٥٣٢، "قَدۡر" بدلہ "قَیۡد"۔

4 ......الزھد لھناد بن السری، الحدیث : ٣، ج١، ص٤٩۔



www.dawateislami.net

وَنُوْدُوْۤا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ﴿۴۳﴾ (پ۸،الاعراف:۴۳)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और निदा हुई कि येह जन्नत तुम्हें मीरास मिली सिला तुम्हारे आ'माल का।(1)

## मौत की मौत :

﴾85﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मौत को सुरमई मेंढे की शक्ल में लाया जाएगा तो एक मुनादी निदा देगा : ''ऐ अहले जन्नत !'' वोह गरदनें उठाएंगे (या'नी देखने के लिये अपनी गरदनें आगे बढ़ाएंगे) और देखेंगे, तो वोह कहेगा : ''क्या तुम इस को पहचानते हो ?'' वोह कहेंगे : ''हां ! येह तो मौत है और वोह सब उसे देख चुके होंगे।'' फिर मुनादी निदा करेगा : ''ऐ दोज़ख़ियो !'' तो वोह भी गरदनें बढ़ाएंगे और देखेंगे तो वोह कहेगा : ''क्या तुम इसे पहचानते हो ?'' वोह भी कहेंगे : ''हां ! येह मौत है और वोह सब उसे देख चुके होंगे।'' इस के बा'द उस मेंढे को जन्नत और दोज़ख़ के दरमियान ज़ब्ह कर दिया जाएगा, फिर निदा देने वाला कहेगा : ''ऐ अहले जन्नत ! तुम इस में हमेशा रहोगे और अहले जहन्नम ! तुम इस में हमेशा रहोगे अब किसी को मौत नहीं आएगी।'' रावी फ़रमाते हैं : फिर आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ الْاَمْرُ ۘ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ﴿۳۹﴾ (پ۱۶،مریم:۳۹)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और उन्हें डर सुनाओ पछतावे के दिन का जब काम हो चुकेगा और वोह ग़फ़्लत में हैं और वोह नहीं मानते।

और अपने दस्ते अक़्दस से दुन्या की त़रफ़ इशारा फ़रमाया।(2)

﴾86﴿...... दूसरी रिवायत में है कि ''फिर उन के दरमियान एक ए'लान करने वाला खड़ा होगा और कहेगा : ''ऐ अहले जन्नत ! अब मौत नहीं और ऐ अहले दोज़ख़ ! अब मौत नहीं, जो शख़्स जहां है वहीं हमेशा रहेगा।''(3)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الجنة،باب فی دوام نعیم......الخ، الحدیث : ۷۱۵۷،ص۱۱۷۱۔
الزھد لھناد،باب دخول الجنة، الحدیث : ۱۷۵،ج۱،ص۱۳۴۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب التفسیر، بَاب قَوْلِہٖ:وَاَنْذِرْھُمْ یَوْمَ الْحَسْرَةِ،الحدیث : ۴۷۳۰،ص ۳۹۷۔
صحیح مسلم،کتاب الجنة ،باب النار یدخلھا الجبارون، الحدیث : ۷۱۸۱،ص۱۱۷۲۔
جامع الترمذی، ابواب صفة الجنة،بَاب مَاجَاءِ فِی خُلُود اَھْلِ الْجَنَّةِ، الحدیث : ۲۵۵۷،ص۱۹۰۹۔

3 ......صحیح مسلم ،کتاب الجنة ،باب النار یدخلھا الجبارون والجنة یدخلھا الضعفاء، الحدیث : ۷۱۸۳،ص۱۱۷۳۔



www.dawateislami.net

# इख़्तिताम

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अहले जन्नत से करे कि जिन पर उस ने अपनी रिज़ा उतारी और उन्हें हमेशा के लिये अपना फ़ज़्लो करम और एह्सान अ़ता फ़रमाया और हमें दोनों जहां में तमाम आज़्माइशों और मुसीबतों से मह़फ़ूज़ो मामून फ़रमाए, बेशक वोह सब कुछ कर सकता है और बहुत जल्द दुआ़ क़बूल फ़रमाने वाला है। आमीन ! आमीन आमीन ! मैं ने जिस किताब के लिखने का इरादा किया था आज वोह अपने इख़्तिताम को पहुंच चुकी है और सब ख़ूबियां उस ज़ाते बा ब-रकात के लिये हैं जिस ने हमें इस काम की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई और अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें हिदायत अ़ता न फ़रमाता तो हम हिदायत पाने वाले न थे और अव्वलो आख़िर और ज़ाहिरो बातिन में उसी की ता'रीफ़ है। **ऐ हमें परवान चढ़ा कर द-र-जए कमाल तक पहुंचाने वाले !** जो ता'रीफ़ तेरी अ़-ज़्-मतो जलालत के शायाने शान है तू उसी का सज़ावार है, हम उस त़रह़ तेरी ता'रीफ़ नहीं कर सकते जैसे तू ने अपनी शान ख़ुद बयान फ़रमाई है। तेरे लिये हमेशा ऐसी ता'रीफ़ है जो तेरी ने'मतों, तेरे एह़सानात, तेरी मख़्लूक़, तेरी रिज़ा, तेरे अ़र्श के वज़्न और तेरे कलिमात की ता'दाद के बराबर है। **ऐ हमारे रब** عَزَّوَجَلَّ **!** अशरफ़ुल ख़ल्क़ और रसूले बरह़क़ तेरे बन्दे, हमारे आक़ा व मौला ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, उन के आल व अस्ह़ाब, अज़्वाजे मुत़ह्हरात رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن और तमाम पाकीज़ा व त़ाहिर औलाद पर अफ़्ज़ल और पाकीज़ा दुरूदो सलाम और अ़ज़ीम ब-र-कतें नाज़िल फ़रमा कि जिन के सच्चा होने की ताईद तमाम जहानों के रब की त़रफ़ से की गई है, जैसा कि तू ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम और आले इब्राहीम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर दुरूदो सलाम और ब-र-कतें नाज़िल फ़रमाईं। बेशक तेरी मख़्लूक़ की ता'दाद, तेरी रिज़ा, तेरे अ़र्श के वज़्न और तेरे कलिमात की ता'दाद के बराबर तेरी ह़म्दो सना और बुज़ुर्गी है, जब भी तेरा ज़िक्र किया जाए और ज़िक्र करने वाले तेरा ज़िक्र करते रहें और जब भी तेरे ज़िक्र से ग़फ़्लत बरती जाए और ग़ाफ़िल तेरा ज़िक्र करें।

دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَ اٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰﴾ (پ۱۱، یونس:۱۰)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** उन की दुआ़ उस में येह होगी कि **अल्लाह** तुझे पाकी है, उन के मिलते वक़्त ख़ुशी का पहला बोल सलाम है और उन की दुआ़ का ख़ातिमा येह है कि सब ख़ूबियों सराहा **अल्लाह** जो रब है सारे जहान का।



www.dawateislami.net

# तफ़्सीली फ़ेहरिस्त



| मज़ामीन | सफ़हा | मज़ामीन | सफ़हा |
|---|---|---|---|
| इस किताब को पढ़ने निय्यतें | 14 | ज़न की अक़्साम | 38 |
| अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या | | ग़ीबत का बयान | 40 |
| (अज़ अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی) | 15 | ग़ीबत ह़राम होने की ह़िक्मत | 40 |
| पहले इसे पढ़ लीजिये ! | 17 | अह़ादीसे मुबा–रका में ग़ीबत की मज़म्मत | 43 |
| अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या और اَلزَّوَاجِر | 21 | दो क़ब्रों में होने वाले अ़ज़ाब के अस्बाब | 51 |
| **كِتَابُ النِّكَاح** | 23 | मुफ़्लिस कौन ? | 54 |
| कबीरा नम्बर **241 :** शादी न करना | 23 | ग़ीबत की मज़म्मत में बुज़ुर्गाने दीन के फ़रामीन | 56 |
| कबीरा नम्बर **242 :** अज्नबी औ़रत को | | **तम्बीहात** | 58 |
| शह्वत से देखना | 24 | अ़ल्लामा बुल्क़ीनी عَلَيْهِ الرَّحْمَه के | |
| कबीरा नम्बर **243 :** अज्नबी औ़रत को | | ए'तिराज़ात और उन के जवाबात | 65 |
| शह्वत से छूना | 24 | ग़ैर मुकल्लफ़ की ग़ीबत का हुक्म | 66 |
| कबीरा नम्बर **244 :** अज्नबी औ़रत के साथ | | ग़ीबत की जाइज़ सूरतें | 67 |
| तन्हाई इख़्तियार करना | 24 | ग़ीबत की मिसालें | 70 |
| कबीरा नम्बर **245 :** अम्रद को देखना | | ज़िम्मी काफ़िर की ग़ीबत का हुक्म | 75 |
| (जब कि शह्वत और फ़ितने का ख़ौफ़ हो) | 29 | ग़ीबत की अक़्साम | 76 |
| कबीरा नम्बर **246 :** अम्रद को छूना | | ग़ीबत के अस्बाब | 79 |
| (जब कि शह्वत और फ़ितने का ख़ौफ़ हो) | 29 | ग़ीबत का इ़लाज | 81 |
| कबीरा नम्बर **247 :** अम्रद के साथ | | बद गुमानी | 85 |
| तन्हाई इख़्तियार करना | 29 | बद गुमानी की ह़ुरमत का सबब | 85 |
| मुराहिक़, ज़िम्मिया और ज़ानिया फ़ासिक़ा से | | ह़क़ीक़ी बद गुमानी की अ़लामत | 86 |
| पर्दे का हुक्म | 31 | कबीरा नम्बर **250 :** बुरे नामों से पुकारना | 89 |
| कबीरा नम्बर **248 :** ग़ीबत करना | 34 | कबीरा नम्बर **251 :** मुसल्मान का मज़ाक़ उड़ाना | 90 |
| कबीरा नम्बर **249 :** इस पर ख़ामोश | | कबीरा नम्बर **252 :** चुग़ल ख़ोरी करना | 90 |
| और रिज़ा मन्द रहना | 34 | सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़ज़ाबे क़ब्र | |
| आयाते मुक़द्दसा की मुख़्तसर वज़ाह़त | 34 | मुला–ह़ज़ा फ़रमा लिया | 93 |
| बद गुमानी की ता'रीफ़ | 37 | चुग़ल ख़ोर ग़ुलाम | 98 |





www.dawateislami.net

| | | | |
|---|---|---|---|
| तम्बीहात | 99 | 1. باب الصداق | 122 |
| चुग़ली की ता'रीफ़ | 100 | कबीरा नम्बर **267 :** मह्र अदा न करने की निय्यत से निकाह़ करना | 122 |
| चुग़ली पर बर अंगेख़्ता करने वाली चीज़ें | 101 | | |
| कबीरा नम्बर **253 :** दो रुख़ा होना | 104 | 2. باب الوليمة | 124 |
| दो रुख़े पन की मज़म्मत पर अह़ादीसे मुबा-रका | 104 | कबीरा नम्बर **268 :** ज़ी रूह़ की तस्वीर बनाना | 124 |
| कबीरा नम्बर **254 :** बोहतान तराशी करना | 108 | ह़दीस में मज़्कूर अल्फ़ाज़ की वज़ाह़त | 131 |
| कबीरा नम्बर **255 :** वली का जब्रन निकाह़ से रोकना | 109 | कबीरा नम्बर **269 :** तुफ़ैली बनना | 134 |
| | | कबीरा नम्बर **270 :** मेहमान का मेज़बान की रिज़ा जाने बिग़ैर बिस्यार ख़ोरी करना | 134 |
| कबीरा नम्बर **256 :** पैग़ामे निकाह़ पर निकाह़ का पैग़ाम देना | 110 | | |
| कबीरा नम्बर **257 :** बीवी को शोहर के ख़िलाफ़ भड़काना | 110 | कबीरा नम्बर **271 :** इन्सान का अपने माल में से कसरत से खाना जब कि वोह जानता हो कि येह उसे वाज़ेह़ नुक़्सान देगा | 134 |
| कबीरा नम्बर **258 :** शोहर को बीवी के ख़िलाफ़ भड़काना | 110 | कबीरा नम्बर **272 :** तकब्बुर व दिखावा करते हुए खाने पीने में वुस्अ़त करना | 134 |
| कबीरा नम्बर **259 :** मह़रम से निकाह़ करना | 112 | **ख़ातिमा** | 141 |
| कबीरा नम्बर **260 :** त़लाक़ देने वाले का ह़लाला पर रिज़ा मन्द होना | 112 | शैत़ान को क़ै आ गई | 143 |
| | | गुनाह मुआ़फ़ कराने का नुस्ख़ए कीमिया | 144 |
| कबीरा नम्बर **261 :** त़लाक़ याफ़्ता औ़रत का इस पर रिज़ा मन्द होना | 112 | खाने से पहले और बा'द वुज़ू करना | 144 |
| | | 3. باب عشرة النساء | 149 |
| कबीरा नम्बर **262 :** ह़लाला कराने वाले का रिज़ा मन्द होना | 112 | कबीरा नम्बर **273 :** ज़ुल्मन एक बीवी पर दूसरी को तरजीह़ देना | 149 |
| कबीरा नम्बर **263 :** बीवी की छुपी बातों को ज़ाहिर करना | 116 | कबीरा नम्बर **274 :** बीवी के ह़ुक़ूक़ अदा न करना जैसे मह्र, न-फ़क़ा वग़ैरा | 150 |
| कबीरा नम्बर **264 :** शोहर की पोशीदा बातों को ज़ाहिर करना | 116 | कबीरा नम्बर **275 :** ह़ुक़ूक़े शोहर अदा न करना म-सलन बिला उ़ज़्रे शर-ई जिमाअ़ से रोकना | 150 |
| कबीरा नम्बर **265 :** बीवी या लौंडी के पिछले मक़ाम में वत़ी करना | 118 | मर्द की अफ़्ज़लिय्यत की वुजूहात | 151 |
| | | पहली वज्ह / दूसरी वज्ह | 152 |
| कबीरा नम्बर **266 :** अजनबी (मर्द या औ़रत) के सामने बीवी से वत़ी करना | 121 | शोहर के ह़ुक़ूक़ के मु-तअ़ल्लिक़ अह़ादीसे मुबा-रका | 156 |




www.dawateislami.net

| | |
|---|---|
| सरकश ऊंट कैसे मुतीअ़ हुवा ? | 158 |
| कबीरा नम्बर **276 :** क़त्ए़ त़ल्लुक़ी करना | 164 |
| कबीरा नम्बर **277 :** रू गर्दानी करना | 164 |
| कबीरा नम्बर **278 :** एक दूसरे से बुग़्ज़ रखना | 164 |
| क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ी की मज़म्मत पर अह़ादीसे मुबा-रका | 164 |
| उम्मते मुह़म्मदी पर रह़मते ख़ुदा वन्दी | 168 |
| कबीरा नम्बर **279 :** औ़रत का ख़ुश्बू लगा कर घर से निकलना | 174 |
| कबीरा नम्बर **280 :** औ़रत का ना फ़रमान होना | 175 |
| आयाते मुबा-रका की वज़ाहत | 175 |
| मर्दों की अफ़्ज़लिय्यत का सबब | 176 |
| पहली आयते मुबा-रका का शाने नुज़ूल | 176 |
| औ़रत को कितनी ज़र्बें लगाई जाएं | 180 |
| ख़लीफ़ए सानी का बेहतरीन जवाब | 191 |
| बीवी की बद सुलूकी बरदाश्त करने पर इन्आ़म | 191 |
| 4. **باب الطلاق** | 194 |
| कबीरा नम्बर **281 :** बिला उ़ज़्रे शर-ई शोहर से त़लाक़ मांगना | 194 |
| कबीरा नम्बर **282 :** औ़रतों और मर्दों की दलाली करना | 195 |
| कबीरा नम्बर **283 :** मर्दों और अम्रदों की दलाली करना | 195 |
| 5. **باب الرجعة** | 199 |
| कबीरा नम्बर **284 :** रुजूअ़ से क़ब्ल ह़राम जानते हुए त़लाक़े रज्ई वाली औ़रत से जिमाअ़ करना | 199 |
| 6. **باب الايلاء** | 200 |
| कबीरा नम्बर **285 :** बीवी से ईला करना | 200 |
| 7. **باب الظهار** | 201 |
| कबीरा नम्बर **286 :** ज़िहार का बयान | 201 |
| आयते मुबा-रका की मुख़्तसर वज़ाहत | 202 |
| 8. **باب اللعان** | 203 |
| कबीरा नम्बर **287 :** पाक दामन (मर्द या औ़रत) पर ज़िना या लिवात़त की तोहमत लगाना | 203 |
| कबीरा नम्बर **288 :** तोहमत सुन कर इस पर ख़ामोश रहना | 203 |
| क़ुरआने पाक में लिआ़न की मज़म्मत | 203 |
| आयाते मुबा-रका की मुख़्तसर वज़ाहत | 203 |
| मोह़सिन होने की शर्त़ | 204 |
| ह़द्दे क़ज़्फ़ की शराइत़ | 204 |
| ज़िना की गवाही में शर्त़ | 205 |
| क्या तोहमते ज़िना लगाने वाले की गवाही मक़्बूल है ? | 208 |
| आयाते मुबा-रका की मुख़्तसर वज़ाहत | 210 |
| अह़ादीसे मुबा-रका में तोहमत लगाने की मज़म्मत | 212 |
| ज़बान की ह़िफ़ाज़त का ह़ुक्म | 216 |
| कबीरा नम्बर **289 :** मुसल्मान को गाली देना और उस की बे इ़ज़्ज़ती करना | 218 |
| कबीरा नम्बर **290 :** वालिदैन को बुरा भला कहना अगर्चे गालियां न दे | 218 |
| कबीरा नम्बर **291 :** किसी को मुसल्मान होने की वज्ह से ला'न त़ा'न करना | 218 |
| मुर्ग़ को गाली देना मन्अ़ है | 223 |
| पिस्सू ने नमाज़ के लिये जगाया | 224 |
| सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم और पिस्सू | 224 |
| हवा को ला'नत करने की मुमा-न-अ़त | 224 |
| ख़ास जानवर और मुअ़य्यन ज़िम्मी को ला'नत करने का ह़ुक्म | 226 |




www.dawateislami.net

| | | | |
|---|---|---|---|
| यज़ीद पर ला'नत का हुक्म | 226 | कबीरा नम्बर 302 : वालिदैन या इन में से एक की ना फ़रमानी करना | 249 |
| कबीरा नम्बर 292 : इन्सान का अपने नसब या अपने वालिद से दस्त बरदार होना | 235 | बा'ज़ अल्फ़ाज़े क़ुरआनी की तौज़ीह | 249 |
| कबीरा नम्बर 293 : अपना झूटा होना मा'लूम होने के बा वुजूद ख़ुद को बाप के इलावा की त़रफ़ मन्सूब करना | 235 | मां की शान | 251 |
| | | वालिदैन की ख़िदमत भी जिहाद है | 253 |
| | | मां के ना फ़रमान शराबी का अन्जाम | 265 |
| कबीरा नम्बर 294 : शर-ई त़ौर पर साबित नसब में त़ा'न करना | 238 | ना फ़रमानी के मु-तअ़ल्लिक़ क़ाइदए कुल्लिय्या | 272 |
| | | मुन-द-र-जए बाला पांच निकात की वज़ाहत | 273 |
| कबीरा नम्बर 295 : औ़रत का ज़िना या शुबा की वत़ी के साथ बच्चे को ऐसी क़ौम में दाख़िल करना जिस में से वोह न हो | 238 | उ़म्र में इज़ाफ़े का नुस्ख़ए कीमिया | 280 |
| | | मुश्रिक वालिदैन से सिलए रेह़मी का हुक्म | 283 |
| | | रिज़ाए इलाही वालिदैन की रिज़ा में है | 283 |
| كتاب العدد | 239 | ख़ाला से ह़ुस्ने सुलूक का हुक्म | 284 |
| कबीरा नम्बर 296 : इ़द्दत पूरी करने में ख़ियानत करना | 239 | बा'दे विसाल वालिदैन से ह़ुस्ने सुलूक का त़रीक़ा | 284 |
| | | बाप के रिश्तेदारों से सिलए रेह़मी का हुक्म | 285 |
| कबीरा नम्बर 297 : इ़द्दत वाली का बिला उ़ज़्रे शर-ई उस घर से बाहर निकलना जिस में इ़द्दत ख़त्म होने तक उस का ठहरना लाज़िम हो | 239 | नेक आ'माल दुआ़ की क़बूलिय्यत का ज़रीआ़ हैं | 286 |
| | | कबीरा नम्बर 303 : क़त़ए रेह़मी करना | 288 |
| | | क़त़ए रेह़मी की मज़म्मत में आयाते क़ुरआनिया | 288 |
| कबीरा नम्बर 298 : शोहर फ़ौत होने पर सोग न करना | 239 | क़त़ए रेह़मी की मज़म्मत में अह़ादीसे मुबा-रका | 288 |
| | | बरहूत नामी कूंवां जहन्नम के मुंह पर है | 300 |
| कबीरा नम्बर 299 : इस्तिब्रा से पहले लौंडी से जिमाअ़ करना | 240 | फ़ाएदा | 300 |
| كتاب النفقات على الزوجات...... | 241 | सब से ज़ियादा पसन्दीदा और ना पसन्दीदा आ'माल | 302 |
| कबीरा नम्बर 300 : बिला उ़ज़्रे शर-ई बीवी का ख़र्च रोकना | 241 | कबीरा नम्बर 304 : ख़ुद को आक़ा के इलावा की त़रफ़ मन्सूब करना | 308 |
| कबीरा नम्बर 301 : अहलो इ़याल म-सलन ना बालिग़ बच्चों को ज़ाएअ़ करना | 241 | किस की इ़बादत क़बूल नहीं होती ? | 308 |
| अहलो इ़याल पर ख़र्च करने की फ़ज़ीलत | 242 | कबीरा नम्बर 305 : ग़ुलाम को आक़ा के ख़िलाफ़ भड़काना | 308 |
| ह़ुसूले रिज़्क़ के लिये निकलने वाला मुजाहिद है | 244 | कबीरा नम्बर 306 : ग़ुलाम का भाग जाना | 309 |
| कौन सी चीज़ जहन्नम से आड़ है ? | 245 | किस ग़ुलाम की नमाज़ मक़्बूल नहीं ? | 309 |




www.dawateislami.net

| | |
|---|---|
| किस औ़रत की इबादत क़बूल नहीं ? | 309 |
| कबीरा नम्बर 307 : आज़ाद इन्सान को ग़ुलाम बना कर ख़िदमत लेना | 311 |
| किस इमाम की नमाज़ मक़्बूल नहीं ? | 311 |
| कबीरा नम्बर 308 : ग़ुलाम का आक़ा की लाज़िम ख़िदमत न करना | 312 |
| कबीरा नम्बर 309 : आक़ा का ग़ुलाम की ज़रूरिय्यात पूरी न करना और त़ाक़त से ज़ियादा काम लेना | 312 |
| कबीरा नम्बर 310 : उसे हमेशा ज़दो कोब करना | 312 |
| कबीरा नम्बर 311 : उसे ख़सी कर के तक्लीफ़ देना ख़्वाह वोह ना बालिग़ हो, नीज़ बिला सबबे शर-ई ग़ुलाम या चौपाए को कोई और अ़ज़ाब देना | 312 |
| कबीरा नम्बर 312 : जानवरों को आपस में लड़ाना | 312 |
| कमज़ोर, ग़ुलाम, लौंडी, बीवी और जानवरों की बे हुरमती करना | 322 |
| बा'ज़ अल्फ़ाज़े क़ुरआनिया की वज़ाह़त | 322 |
| जानवरों का ह़िसाबो किताब | 324 |
| जानवरों को मारना कैसा ? | 325 |
| गधे की नसीह़त | 325 |
| हैवानात को जलाना कैसा ? | 326 |
| **كتاب الجنايات** | 327 |
| कबीरा नम्बर 313 : अ़मद या शि-बहे अ़मद से मुसल्मान या ज़िम्मी को क़त्ल करना | 327 |
| अल्फ़ाज़े क़ुरआनिया की वज़ाह़त | 328 |
| مِنْ اَجْلِ का मफ़्हूम | 328 |
| क़िसास की फ़र्ज़िय्यत और क़िस्सए क़ाबील व हाबील में वज्हे मुना-सबत | 328 |
| क़िस्सए क़ाबील व हाबील बयान करने का सबब | 329 |
| अफ़्आ़ले इलाही के मुअ़ल्लल न होने में इख़्तिलाफ़ | 329 |

| | |
|---|---|
| اَوْ فَسَادٍ की वज़ाह़त | 330 |
| एक इन्सान का क़त्ल पूरी इन्सानिय्यत का क़त्ल है | 330 |
| क़त्ले इन्सान के मु-तअ़ल्लिक़ अक़्वाले सालिह़ीन | 331 |
| आयते मुबा-रका की वज़ाह़त | 332 |
| शाने नुज़ूल | 332 |
| क़त्ल के मु-तअ़ल्लिक़ अह़काम | 333 |
| क़त्ल की अक़्साम | 333 |
| आयते मुबा-रका का हुक्म | 334 |
| अहले सुन्नत व जमाअ़त का मौक़िफ़ | 335 |
| बरोज़े क़ियामत सब से पहला ह़िसाब | 345 |
| ह़दीस की वज़ाह़त | 345 |
| मक़्तूल का क्या क़ुसूर | 350 |
| ह़दीसे पाक की वज़ाह़त | 350 |
| कबीरा नम्बर 314 : ख़ुदकुशी करना | 351 |
| ख़ुदकुशी ह़राम है | 351 |
| आयते मुबा-रका की वज़ाह़त | 351 |
| उ़दवान और ज़ुल्म का मफ़्हूम | 353 |
| अह़ादीसे मुबा-रका में ख़ुदकुशी की मज़म्मत | 354 |
| सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इ़ल्मे ग़ैब | 356 |
| कबीरा नम्बर 315 : क़त्ले ह़राम या उस के मुक़द्दमात पर मदद करना | 358 |
| कबीरा नम्बर 316 : मौजूद होते हुए बा वुजूदे क़ुदरत क़त्ल से न रोकना | 358 |
| रह़मते इलाही से मायूस | 358 |
| क़त्ले नाह़क़ की नह़ूसत | 358 |
| कबीरा नम्बर 317 : बिला वज्ह शर-ई किसी मुसल्मान या ज़िम्मी को मारना | 360 |
| किसी को नाह़क़ तक्लीफ़ देने की सज़ा | 360 |
| जैसी करनी वैसी भरनी | 360 |




www.dawateislami.net

| | | | |
|---|---|---|---|
| कबीरा नम्बर **318 :** मुसल्मान को डराना | 363 | जादू करने वाले के मु–तअ़ल्लिक़ हुक्मे शर–ई | 382 |
| कबीरा नम्बर **319 :** इस की त़रफ़ अस्लह़ा वग़ैरा के साथ इशारा करना | 363 | जादूगर की तौबा का हुक्म | 383 |
| | | अह़नाफ़ के दलाइल का जवाब | 385 |
| किसी को डराना ज़ुल्मे अ़ज़ीम है | 363 | जादू के तोड़ का हुक्म | 385 |
| क़ातिल व मक़्तूल दोनों जहन्नम में | 364 | जादू के तोड़ का एक अ़मल | 385 |
| कबीरा नम्बर **320 :** ऐसा जादू करना जिस में कुफ़्र न हो | 365 | शह्र बाबिल की वज्हे तस्मिया और मह़ल्ले वुक़ूअ़ | 387 |
| | | हारूत और मारूत के मु–तअ़ल्लिक़ तह़क़ीक़ | 388 |
| कबीरा नम्बर **321 :** जादू सीखना | 365 | हारूत और मारूत फ़िरिश्ते हैं या नहीं ? | 389 |
| कबीरा नम्बर **322 :** जादू सिखाना | 365 | हारूत व मारूत का मुख़्तसर क़िस्सा | 390 |
| कबीरा नम्बर **323 :** जादू पर अ़मल करना | 365 | मज़्कूरा वाक़िए़ पर ए'तिराज़ात और उन के जवाबात | 391 |
| आयते मुबा–रका की वज़ाह़त | 366 | नुज़ूले हारूत व मारूत की ह़िक्मतें | 392 |
| सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के मु–तअ़ल्लिक़ यहूद का बात़िल अ़क़ीदा | 367 | नुज़ूले हारूत व मारूत का ज़माना | 393 |
| | | जादू की मज़म्मत में अह़ादीसे मुबा–रका | 396 |
| सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ जादू मन्सूब करने की वज्ह | 368 | कबीरा नम्बर **324 :** काहिन बनना | 399 |
| | | कबीरा नम्बर **325 :** सितारा शनास बनना | 399 |
| सेह़र का लुग़वी मा'ना | 369 | कबीरा नम्बर **326 :** फ़ाल निकालना | 399 |
| सेह़र का शर–ई मा'ना | 369 | कबीरा नम्बर **327 :** परिन्दों को उड़ा कर शुगून लेना | 399 |
| ह़दीसे पाक की तशरीह़ | 370 | | |
| सब से ना पसन्दीदा कौन ? | 370 | कबीरा नम्बर **328 :** इ़ल्मे नुजूम सीखना | 399 |
| ह़क़ीक़ते सेह़र | 371 | कबीरा नम्बर **329 :** ख़त़ खींच कर शुगून लेना | 399 |
| जादू की अक़्साम | 372 | कबीरा नम्बर **330 :** काहिन के पास जाना | 399 |
| जादू के मु–तअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ आराअ | 375 | कबीरा नम्बर **331 :** सितारा शनास के पास जाना | 399 |
| जादू के मु–तअ़ल्लिक़ मो'तज़िला का न–ज़रिय्या | 376 | कबीरा नम्बर **332 :** पेशिन गोई करने वाले के पास आना | 399 |
| अहले सुन्नत व जमाअ़त का न–ज़रिय्या | 376 | | |
| जादू बरबादिये ईमान का सबब है | 378 | कबीरा नम्बर **333 :** नुजूमी के पास जाना | 399 |
| जादू और मो'जिज़े में फ़र्क़ | 379 | कबीरा नम्बर **334 :** फ़ाल निकलवाने के लिये फ़ाल निकालने वाले के पास जाना | 399 |
| जादू सीखने का हुक्म | 379 | | |
| मज़्कूरा इबारात पर मुसन्निफ़ का तब्सिरा | 380 | कबीरा नम्बर **335 :** ख़त़ खिंचवाने के लिये ख़त़ खींचने वाले के पास जाना | 399 |
| एक ए'तिराज़ और उस का जवाब | 381 | | |




www.dawateislami.net

| | | | |
|---|---|---|---|
| अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का इल्मे ग़ैब | 400 | कबीरा नम्बर **341 :** ज़ालिम या फ़ासिक़ को मुसल्मानों के मुआ-मलात का वाली बनाना | 416 |
| काहिन की ता'रीफ़ | 402 | | |
| अर्राफ़ की ता'रीफ़ | 402 | अक़्रिबा को हुकूमती ओहदों से नवाज़ने पर वईद | 416 |
| तर्क़ की ता'रीफ़ | 403 | ना अह्ल लोगों को नवाज़ने वाले का हुक्म | 417 |
| इल्मे नुजूम | 403 | कबीरा नम्बर **342 :** अह्ल को मा'ज़ूल कर के ना अह्ल को अमीर बनाना | 417 |
| ह़दीसे पाक की वज़ाह़त | 404 | | |
| **بَابُ الْبُغَاة - 1** | 405 | कबीरा नम्बर **343 :** ह़ाकिम या उस के नाइब का लोगों पर ज़ुल्म करना | 418 |
| कबीरा नम्बर **336 :** बग़ावत करना | 405 | | |
| क़ुरआने मजीद में सरकशी की मज़म्मत | 406 | कबीरा नम्बर **344 :** अमीर या उस के नाइब का रआ़या से धोका करना | 418 |
| अह़ादीसे मुबा-रका में सरकशी की मज़म्मत | 405 | | |
| कबीरा नम्बर **337 :** दुन्यवी मक़्सद पूरा न होने पर इमाम की बैअ़त तोड़ देना | 405 | कबीरा नम्बर **345 :** ह़ाकिम या नाइब का अ़वाम की ज़रूरिय्यात पूरी न करना | 418 |
| अह़ादीसे मुबा-रका में बैअ़त तोड़ने की मज़म्मत | 405 | ज़ालिम हुक्मरानों का अन्जाम | 418 |
| **بَابُ الْاِمَامَةِ الْعُظْمٰی - 2** | 410 | सब से ना पसन्दीदा लोग | 418 |
| कबीरा नम्बर **338 :** अपनी ख़ियानत जानने के बा वुजूद इमाम या ह़ाकिम बनना | 410 | ज़ालिम ह़ाकिम की नमाज़ मक़्बूल नहीं | 418 |
| | | तौह़ीद की गवाही किस की क़बूल नहीं ? | 419 |
| कबीरा नम्बर **339 :** इस का पुख़्ता इरादा करना और इस का मुता-लबा करना | 410 | ह़ाकिमे इस्लाम ज़मीन पर ज़िल्ले इलाही होता है | 419 |
| | | पांच बुराइयों का नतीजा | 419 |
| कबीरा नम्बर **340 :** मज़्कूरा इल्म और अ़ज़्म के साथ साथ इस के लिये माल व दौलत ख़र्च करना | 410 | क़ुरैश की अ़ज़मते शान | 420 |
| | | घड़ी भर ज़ुल्म का गुनाह | 421 |
| अह़ादीसे मुबा-रका में इमारत व हुकूमत की मज़म्मत | 410 | एक दिन के अ़द्ल की फ़ज़ीलत | 421 |
| अच्छी ज़िन्दगी और बुरी मौत | 411 | सब से पसन्दीदा और ना पसन्दीदा लोग | 421 |
| आस्मान से लटकना हुक्मरानी से बेहतर है | 411 | ज़ालिम क़ाज़ी, शैतान का साथी | 422 |
| इमारत व हुकूमत का सुवाल न करो | 412 | ज़ालिम क़ाज़ी, जहन्नम के निचले द-रजे में | 422 |
| सय्यिदुना अमीर ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नसीह़त | 412 | ज़ालिमों का ठिकाना | 423 |
| हुक्मरानी का वबाल | 413 | बरोज़े क़ियामत अ़द्ल काम आएगा | 423 |
| सह़ाबिये रसूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़ौफ़े आख़िरत | 413 | ज़ालिम हुक्मरानों के ख़िलाफ़ आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ | 425 |
| आ़मिल के हदिय्या लेने का हुक्म | 415 | | |
| क़ब्र में आग का कुरता | 415 | ख़ुश्बूए जन्नत से मह़रूम कौन ? | 425 |




www.dawateislami.net

| | | | |
|---|---|---|---|
| ख़ाइन हुक्मरान जहन्नमी है | 425 | अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मज़्लूम का रफ़ीक़ है | 448 |
| कबीरा नम्बर **346** : बादशाह, क़ाज़ी वग़ैरा का मुसल्मान या ज़िम्मी पर ज़ुल्म करना म-सलन उन का माल खाना, उन्हें मारना या गाली देना वग़ैरा | 429 | जाबिर बादशाह का महल तबाह हो गया | 449 |
| | | अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मज़्लूम की बद-दुआ से बे ख़बर नहीं | 449 |
| | | जहन्नम में ज़ालिमों का ठिकाना | 450 |
| कबीरा नम्बर **347** : मज़्लूम को ज़लील करना | 429 | क़ियामत का होलनाक मन्ज़र | 450 |
| कबीरा नम्बर **348** : ज़ालिमों के पास जाना | 429 | अनोखा सबक़ | 451 |
| कबीरा नम्बर **349** : ज़ुल्म पर उन की मदद करना | 429 | बहाना बाज़ी करना ज़ुल्म है | 451 |
| कबीरा नम्बर **350** : बादशाह वग़ैरा को ना जाइज़ शिकायत करना | 429 | शर्हे हदीस | 452 |
| | | क़ियामत का इम्तिहान | 452 |
| बरोज़े क़ियामत ज़ुल्म की हालत | 430 | हक़ीक़ी मुफ़्लिस | 453 |
| ज़ुल्म हराम है | 430 | मज़दूर की उजरत न देना ज़ुल्म है | 453 |
| ज़ुल्म क़हत़-साली का सबब है | 431 | काफ़िर का माल ज़बर दस्ती लेना ज़ुल्म है | 453 |
| शफ़ाअ़त से महरूम लोग | 431 | मा'मूली हक़ दबाने की सज़ा | 454 |
| जुदाई का सबब | 431 | मज़्लूम से दुन्या में मुआफ़ी का हुक्म | 454 |
| मुफ़्लिस कौन ? | 433 | हाथ पाउं की गवाही | 455 |
| मज़्लूम की बद-दुआ | 433 | कोड़े मारने की सज़ा | 456 |
| तीन क़िस्म के मक़्बूल बन्दे | 433 | जहन्नमी कुत्ते | 457 |
| सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सहीफ़े | 435 | ज़ालिम मल्ऊन है | 457 |
| सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सहीफ़े | 436 | ज़ालिमों के लिये इब्रत ही इब्रत | 458 |
| आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नसीहतें | 436 | कबीरा नम्बर **351** : बिदअ़तियों को पनाह देना | 460 |
| जैसी करनी वैसी भरनी | 437 | **كِتَابُ الرِّدَّة** | 461 |
| मज़्लूम की मदद न करने की सज़ा | 438 | कबीरा नम्बर **352** : किसी मुसल्मान को कहना : ऐ काफ़िर ! | 461 |
| ज़ालिम की मदद करने का त़रीक़ा | 438 | | |
| जामे कौसर से महरूमी का एक सबब | 439 | कबीरा नम्बर **353** : किसी मुसल्मान को कहना : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन ! | 461 |
| ख़ारदार दरख़्त से फूल हाथ नहीं आते | 442 | | |
| गुफ़्त-गू के गहरे अ-सरात | 443 | मुसल्मान को काफ़िर कहने वाला काफ़िर है | 461 |
| बालिश्त भर ज़ुल्म का अ़ज़ाब | 447 | **كِتَابُ الْحُدُود** | 462 |
| ज़ालिम की सज़ा | 447 | कबीरा नम्बर **354** : किसी हद में सिफ़ारिश करना | 462 |
| पांच जहन्नमी | 448 | झूटा ख़्वाब बयान करने की सज़ा | 465 |




www.dawateislami.net

| | | | |
|---|---|---|---|
| कबीरा नम्बर **355 :** मुसल्मान की बे इज़्ज़ती करना, उस की ख़ामियां ढूंडना, उसे रुस्वा करना और लोगों में ज़लील करना | 464 | शाने नुज़ूल | 485 |
| | | पड़ोसी की बीवी से ज़िना की मज़म्मत | 485 |
| | | ज़िना की दुन्यवी सज़ा | 486 |
| ऐ़ब पोशी का फ़ाएदा | 464 | आयते मुबा-रका की ज़रूरी वज़ाह़त | 486 |
| ऐ़ब जोई की सज़ा | 464 | ज़िना के 6 नुक़्सानात | 486 |
| सय्यिदुना माइज़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ की तौबा | 466 | ह़द लगाने का त़रीक़ा | 487 |
| कबीरा नम्बर **356 :** लोगों के सामने नेक बनना और तन्हाई में ना जाइज़ काम करना ख़्वाह सग़ाइर के ज़रीए | 469 | محصن का मफ़्हूम | 488 |
| | | रह़मते इलाही से मह़रूम लोग | 490 |
| | | जन्नत से मह़रूम लोग | 490 |
| जब आ'माल गु़बार की त़रह़ उड़ेंगे | 469 | ईमान कब बाक़ी नहीं रहता ? | 491 |
| अ़र्श की मोह्र | 469 | ग़ैबी निदा | 492 |
| 5 चीज़ों पर अ़मल की ज़मानत | 470 | तंगदस्ती का सबब | 492 |
| अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ग़यूर है | 471 | भड़क्ते तन्नूर का अ़ज़ाब | 493 |
| कबीरा नम्बर **357 :** ह़ुदूद क़ाइम करने में सुस्ती करना | 472 | अ़ज़ाब की मुख़्तलिफ़ सूरतें | 493 |
| | | ईमान का निकल जाना और लौट आना | 495 |
| ह़द नाफ़िज़ करने की ब-रकात | 472 | दो रोटियों के बदले जन्नत | 496 |
| इमामे आ़दिल के एक दिन की फ़ज़ीलत | 473 | जन्नत की ख़ुश्बू से मह़रूम लोग | 497 |
| ह़ुदूद में सिफ़ारिश जाइज़ नहीं | 473 | ज़ानियों की बदबू | 497 |
| ह़ुदूद क़ाइम करने और तोड़ने वालों की मिसाल | 473 | नुज़ूले अ़ज़ाब के अस्बाब | 498 |
| कबीरा नम्बर **358 :** ज़िना | 474 | नसब का इन्कार करने पर वई़द | 499 |
| क़ुरआने ह़कीम में ज़िना की मज़म्मत | 474 | 10 ज़िनाओं से बढ़ कर ज़िना | 499 |
| बा'ज़ अल्फ़ाज़े क़ुरआनिया की वज़ाह़त | 475 | शैत़ान का ख़ास साथी | 503 |
| बुराई के द-रजात | 475 | वादिये जुब्बुल ह़ुज़्न की मख़्लूक़ | 503 |
| ग़ौरो फ़िक्र करने की क़ुव्वतें | 478 | दय्यूस पर जन्नत ह़राम है | 504 |
| ज़ानिया को घर में बन्द रखने की ह़िक्मत | 481 | आ'ज़ा की गवाही | 504 |
| क्या कोड़े रज्म में दाख़िल हैं ? | 482 | ज़िना के नताइज | 505 |
| ज़ानी को जला वत़न करने का ह़ुक्म | 482 | जैसी करनी वैसी भरनी | 505 |
| ज़ानिया को घर में क़ैद रखने में इख़्तिलाफ़ | 483 | ज़िना के द-रजात | 506 |
| चन्द अल्फ़ाज़े क़ुरआनिया की वज़ाह़त | 484 | ख़ातिमा : शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त | 506 |




www.dawateislami.net

| | | | |
|---|---|---|---|
| सायए अ़र्श पाने वाला ख़ुश नसीब | 506 | कबीरा नम्बर 396 : चोरी करना | 528 |
| किफ़्ल की बख़्शिश | 506 | फ़ाइदए जलीला | 530 |
| तर्के ज़िना पर दुन्या में इन्आ़म | 507 | कबीरा नम्बर 370 : चोरी के इरादे से रास्ता रोकना | 532 |
| जन्नत की नवीदे मसर्रत | 508 | आयाते बय्यिनात की तफ़्सीर | 532 |
| तर्के गुनाह के नसीहत आमोज़ वाक़िआ़त | 509 | शाने नुज़ूल | 533 |
| जलते चराग़ पर उंगली रख दी | 509 | मुस्ला की मुमा-न-अ़त | 534 |
| कबीरा नम्बर 359 : लिवातत | 510 | क़त्ल और फांसी की कैफ़िय्यत | 536 |
| कबीरा नम्बर 360 : चौपाए से बदकारी करना | 510 | जला व-तनी के मु-तअ़ल्लिक़ इख़्तिलाफ़ | 537 |
| कबीरा नम्बर 361 : औ़रत की दुबुर में वती करना | 510 | कबीरा नम्बर 371 : शराब पीना | 539 |
| लिवातत की मज़म्मत में अहादीसे मुबा-रका | 510 | कबीरा नम्बर 372 : दीगर नशा आवर अश्या पीना अगर्चे शाफ़ेई एक क़तरा पिये | 539 |
| मज़्कूरा आयात की तफ़्सीर | 515 | | |
| कबूतर बाज़ों के लिये दर्से इब्रत | 517 | कबीरा नम्बर 373 : शराब या नशा आवर चीज़ में से किसी एक को बनाना और आने वाली क़ैद के साथ उसे बनवाना | 539 |
| क़ौमे लूत पर अ़ज़ाब की कैफ़िय्यत | 517 | | |
| अम्रद के मु-तअ़ल्लिक़ सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ الرَّحْمَه का फ़रमान | 520 | कबीरा नम्बर 374 : शराब उठाना | 539 |
| अम्रद के मु-तअ़ल्लिक़ सय्यिदुना इमाम अहमद عَلَيْهِ الرَّحْمَه का फ़रमान | 520 | कबीरा नम्बर 375 : शराब पीने के लिये उठवाना | 539 |
| | | कबीरा नम्बर 376 : शराब पिलाना | 539 |
| अहादीस में वारिद मुख़्तलिफ़ सज़ाओं में तत्बीक़ | 522 | कबीरा नम्बर 377 : शराब पिलाने का कहना | 539 |
| कबीरा नम्बर 362 : औ़रतों का आपस में बद फ़े'ली करना | 525 | कबीरा नम्बर 378 : शराब बेचना | 539 |
| | | कबीरा नम्बर 379 : शराब ख़रीदना | 539 |
| कबीरा नम्बर 363 : मुश-त-रका लौंडी से शरीक का वती करना | 526 | कबीरा नम्बर 380 : शराब बेचने या ख़रीदने का कहना | 539 |
| कबीरा नम्बर 364 : मुर्दा बीवी से सोहबत करना | 526 | कबीरा नम्बर 381 : इस की क़ीमत खाना | 539 |
| कबीरा नम्बर 365 : वली और गवाहों के बिग़ैर होने वाले निकाह में वती करना | 526 | कबीरा नम्बर 382 : आने वाली क़ैद के साथ शराब या इस की क़ीमत का अपने पास रोकना | 539 |
| कबीरा नम्बर 366 : निकाहे मुत्आ़ में जिमाअ़ करना | 526 | आयते मुबा-रका की तफ़्सीर | 539 |
| कबीरा नम्बर 367 : उजरत पर ले कर वती करना | 526 | ख़म्र किसे कहते हैं ? | 540 |
| कबीरा नम्बर 368 : किसी औ़रत को रोकना ताकि ज़ानी उस से ज़िना करे | 526 | ख़म्र कहने का सबब | 540 |
| | | ख़म्र को 5 अश्या के साथ ख़ास करने का सबब | 541 |




www.dawateislami.net

| | | | |
|---|---|---|---|
| हर नशा आवर चीज़ ह़राम है | 542 | सब से बड़ा गुनाह | 573 |
| शर्ह़े ह़दीस | 542 | ह़ासिले कलाम | 578 |
| जूए का बयान | 549 | ख़ातिमा | 579 |
| शराब के नुक़्सानात | 552 | शराबियों से दूर रहने का हुक्म | 581 |
| अ़क़्ल की वज्हे तस्मिया | 552 | शराब को बत़ौरे दवा इस्ति'माल करना कैसा ? | 581 |
| पेशाब से वुज़ू करने वाला शराबी | 552 | शराब के मु-तअ़ल्लिक़ मु-तफ़र्रिक़ अह़ादीस | 582 |
| शराबी की ह़िर्स बढ़ती ही रहती है | 553 | बरोज़े क़ियामत शराबी का मद्दे मुक़ाबिल कौन होगा ? | 582 |
| शराब की हुरमत पर अह़ादीसे मुबा-रका | 554 | | |
| शराबी शराब पीते वक़्त मोमिन नहीं होता | 554 | नशा करने वालों की सोह़बत इख़्तियार करने का अन्जाम | 582 |
| शराबी और इस के मददगार मल्ऊ़न हैं | 554 | | |
| शराब पीना ख़िन्ज़ीर खाने के मु-तरादिफ़ है | 555 | आख़िरत में शराबियों का मश्रूब | 583 |
| ह़दीसे पाक की तशरीह़ | 555 | शराब के मु-तअ़ल्लिक़ अक़्वाले अस्लाफ़ | 583 |
| ना फ़रमान क़ौम पर अ़ज़ाब की सूरतें | 556 | शराब पीने वाला ईमान से मह़रूम हो गया | 584 |
| ज़वाले उम्मत के अस्बाब | 556 | शराबी का मुंह क़िब्ले से फिर गया | 584 |
| ज़ानी व शराबी का ईमान कैसे निकलता है ? | 557 | ह़शीश का हुक्म | 585 |
| शराबी, जन्नती शराब से मह़रूम होगा | 557 | ह़शीश के हुक्म में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल | 586 |
| शराबी दुख़ूले जन्नत से मह़रूम है | 558 | कफ़न चोर के इन्किशाफ़ात | 587 |
| बिग़ैर तौबा किये मरने वाले शराबी का अन्जाम | 559 | **بَابُ الصِّيَال** | 589 |
| शराब हर बुराई की जड़ है | 562 | कबीरा नम्बर **383 :** क़त्ल के इरादे से बे क़ुसूर आदमी पर ह़म्ला करना | 589 |
| ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رضی اللہ تعالٰی عنہ को वसिय्यत | 562 | | |
| शराब की तबाह कारियां | 562 | कबीरा नम्बर **384 :** माल छीनने के लिये ह़म्ला करना | 589 |
| बनी इसराईल का एक शराबी | 562 | | |
| शराब ने क्या गुल खिलाए | 563 | कबीरा नम्बर **385 :** बे इ़ज़्ज़ती के इरादे से ह़म्ला करना | 589 |
| हारूत व मारूत की आज़्माइश | 564 | | |
| शराबी पर ग़-ज़बे जब्बार | 566 | कबीरा नम्बर **386 :** डराने, धम्काने के लिये ह़म्ला करना | 589 |
| शराबी को क़त्ल करने का हुक्म | 568 | | |
| शराबी की इ़बादत राएगां जाती है | 569 | तेज़ धार आले से किसी को डराना बाइ़से ला'नत है | 589 |
| जहन्नम में शराबी का खाना पीना | 572 | मक़्तूल जहन्नम में क्यूं ? | 589 |
| एक क़त़रा शराब पीने का हुक्म | 573 | मज़ाक़ में भी किसी को डराना जाइज़ नहीं | 590 |




www.dawateislami.net

| | | | |
|---|---|---|---|
| डाकू को क़त्ल करने का हुक्म | 591 | اَمْرٌبِالْمَعْرُوْف وَنَهْىٌ عَنِ الْمُنْكَر के मु-तअ़ल्लिक़ आयाते मुबा-रका | 605 |
| कबीरा नम्बर **387 :** दूसरों के घरों में तांक झांक करना | 593 | बुराई से मन्अ़ करने के तीन त़रीक़े | 606 |
| अह़ादीसे मुबा-रका में तांकने झांकने की मज़म्मत | 593 | बनी इसराईल क्यूं मल्ऊ़न हुए ? | 607 |
| 3 ना जाइज़ काम | 594 | सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ुरआन फ़हमी | 609 |
| कबीरा नम्बर **388 :** चोरी छुपे लोगों की बातें सुनना जिन पर वोह किसी के आगाह होने को ना पसन्द करते हों | 596 | नेकी की दा'वत छोड़ने का वबाल | 609 |
| झूटा ख़्वाब बयान करने की सज़ा | 596 | कलिमए त़य्यिबा के ह़क़ को हलका जानने का मफ़्हूम | 610 |
| ह़ासिले कलाम | 597 | ह़दीसे पाक की वज़ाह़त | 610 |
| कबीरा नम्बर **389 :** बुलूग़त के बा'द मर्द या औ़रत का ख़तना न करना | 598 | इस्लाम क्या है ? | 611 |
| **كتاب الجهاد** | 599 | नेकी की दा'वत की अहम्मिय्यत | 611 |
| कबीरा नम्बर **390 :** फ़र्ज़े ऐ़न जिहाद न करना | 599 | बुराई से न रोकने वाले का अन्जाम | 612 |
| कबीरा नम्बर **391 :** बिल्कुल जिहाद छोड़ देना | 599 | रास्ते के ह़ुक़ूक़ | 612 |
| कबीरा नम्बर **392 :** सरह़दों को तक़्वियत न देना | 599 | बे अ़मल मुबल्लिग़ीन का अन्जाम | 613 |
| जिहाद छोड़ने की मज़म्मत में आयाते क़ुरआनिया | 599 | वाइज़ीन व मुबल्लिग़ीन से भी सुवाल होगा | 614 |
| आयते मुबा-रका की तफ़्सीर | 599 | बे अ़मल मुबल्लिग़ की मिसाल | 615 |
| इन्कार करने वालों की पहली दलील | 600 | क़ौल व फ़े'ल में मुवा-फ़क़त का हुक्म | 615 |
| पहली दलील का जवाब | 601 | सब से बुरी बिद्अ़त | 616 |
| दूसरी दलील | 601 | मज़्कूरा आयते मुबा-रका की तफ़्सीर | 616 |
| दूसरी दलील का जवाब | 601 | एक इश्काल | 616 |
| तर्के जिहाद की तबाहकारी | 603 | उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام की आराअ | 618 |
| सि-फ़ते मुना-फ़क़त पर मौत | 603 | वाजिबात व फ़राइज़ का हुक्म न देना | 619 |
| कबीरा नम्बर **393 :** क़ुदरत के बा वुजूद اَمْرٌبِالْمَعْرُوْف तर्क कर देना | 605 | मुस्तह़ब्बात का हुक्म न देना | 619 |
| | | ह़ज़रते मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का तब्सिरा | 619 |
| कबीरा नम्बर **394 :** क़ुदरत के बा वुजूद نَهْىٌ عَنِ الْمُنْكَر तर्क कर देना | 605 | हुक्मरान व मोह़्तसिब की ज़िम्मादारियां | 620 |
| | | सग़ीरा गुनाह से मन्अ़ करना भी वाजिब है | 622 |
| कबीरा नम्बर **395 :** क़ौल का फ़े'ल के मुख़ालिफ़ होना | 605 | नेकी की दा'वत किस पर लाज़िम है ? | 622 |
| | | اَمْرٌبِالْمَعْرُوْف وَنَهْىٌ عَنِ الْمُنْكَر के 12 म-दनी फूल | 623 |




www.dawateislami.net

| | | | |
|---|---|---|---|
| तजस्सुस का मफ़्हूम | 624 | कबीरा नम्बर **400 :** माले ग़नीमत में धोका देना | 648 |
| नेकी की दा'वत देना फ़र्ज़े किफ़ाया है | 625 | कबीरा नम्बर **401 :** माले ग़नीमत छुपाना | 648 |
| हाथ और ज़बान से बुराई को रोकने के अह़काम | 625 | ''ग़नीमत में धोके'' की मज़म्मत में आयाते क़ुरआनिया | 648 |
| दिल में बुरा जानने का हुक्म | 625 | | |
| कबीरा नम्बर **396 :** सलाम का जवाब न देना | 628 | ''ग़नीमत में धोके'' की मज़म्मत में अह़ादीसे मुबा-रका | 648 |
| कबीरा नम्बर **397 :** इन्सान का अपनी ता'ज़ीम के लिये खड़ा होना पसन्द करना | 628 | दुश्मन अमानत दार के सामने नहीं ठहर सकता | 649 |
| किसी की ख़ातिर खड़े होने का मफ़्हूम | 629 | बरोज़े क़ियामत ख़ाइन की ह़ालत | 650 |
| किस किस के लिये ता'ज़ीमन खड़ा होना जाइज़ है | 629 | क़ब्र में आग का कुरता | 652 |
| कबीरा नम्बर **398 :** जंग से फ़िरार होना | 630 | **باب الامان** | 655 |
| क़ुरआने पाक में जंग से भागने की मज़म्मत | 630 | कबीरा नम्बर **402 :** अमान, ज़िम्मा या अ़हद वाले को क़त्ल करना | 655 |
| अह़ादीसे मुबा-रका में जंग से भागने की मज़म्मत | 630 | | |
| 5 गुनाहों का कोई कफ़्फ़ारा नहीं | 632 | कबीरा नम्बर **403 :** उसे धोका देना | 655 |
| औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ الله की पहचान | 633 | कबीरा नम्बर **404 :** उस पर ज़ुल्म करना | 655 |
| कबीरा नम्बर **399 :** ताऊ़न से भागना | 634 | आयते मुबा-रका की तफ़्सीर | 655 |
| आयते मुबा-रका की तफ़्सीर | 634 | बरोज़े क़ियामत धोकेबाज़ की निशानी | 656 |
| सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का वबाई अ़लाक़े से वापस पलटना | 636 | मुसल्मान को धोका देना | 656 |
| | | क़त्लो ग़ारत और मौत का मुसल्लत़ होना | 656 |
| فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا की तफ़्सीर | 637 | कबीरा नम्बर **405 :** मुसल्मानों का राज़ फ़ाश करना | 659 |
| ताऊ़न का मा'ना | 638 | | |
| उम्मत का ख़ातिमा दो चीज़ों से होगा | 638 | **باب المسابقة والمناضلة** | 660 |
| ताऊ़न मोमिन पर रह़मत और काफ़िर के लिये अ़ज़ाब है | 639 | कबीरा नम्बर **406 :** बत़ौरे तकब्बुर, मुक़ाबला बाज़ी या जूआ खेलने के लिये घोड़े वग़ैरा रखना | 660 |
| ताऊ़न बाइसे शहादत है | 639 | कबीरा नम्बर **407 :** बाज़ी या जूए के लिये तीर अन्दाज़ी का मुक़ाबला करना | 660 |
| ताऊ़न से भागना जंग से भागना है | 640 | | |
| ताऊ़न एक अ़ज़ाब है | 641 | कबीरा नम्बर **408 :** सीखने के बा'द बे रग़्बती से तीर अन्दाज़ी छोड़ देना | 660 |
| एह़तियात़ी तदाबीर का हुक्म | 641 | | |
| शहादत की मुख़्तलिफ़ सूरतें | 642 | ह़दीसे पाक की शर्ह़ | 660 |
| ताऊ़न से मरने वालों की फ़ज़ीलत | 646 | रोज़े मह़शर की काम्याबी या ख़सारे का बयान | 661 |




www.dawateislami.net

| | | | |
|---|---|---|---|
| तीर अन्दाज़ी सीखने की तरग़ीब | 662 | **باب النذر** | 681 |
| तीर अन्दाज़ी सीख कर तर्क करने की मज़म्मत | 662 | कबीरा नम्बर **416 :** नज़्र पूरी न करना | 681 |
| एक तीर की वज्ह से जन्नत में जाने वाले | 662 | **باب القضا** | 682 |
| जाइज़ व मुबाह़ खेल | 663 | कबीरा नम्बर **417 :** क़ाज़ी बनाना | 682 |
| राहे ख़ुदा में तीर चलाने का सवाब | 663 | कबीरा नम्बर **418 :** क़ाज़ी बनना | 682 |
| **كِتَابُ الاَيمان** | 665 | कबीरा नम्बर **419 :** अपनी ख़ियानत व ज़ुल्म को जानते हुए ओ़ह्दए क़ज़ा का सुवाल करना | 682 |
| कबीरा नम्बर **409 :** यमीने ग़मूस | 665 | | |
| कबीरा नम्बर **410 :** यमीने काज़िबा अगर्चे ग़मूस न हो | 665 | कबीरा नम्बर **420 :** जाहिल को क़ाज़ी बनाना | 682 |
| | | कबीरा नम्बर **421 :** ज़ालिम को क़ाज़ी बनाना | 682 |
| कबीरा नम्बर **411 :** क़समों की कसरत अगर्चे वोह सच्चा हो | 665 | क़ाज़ी बनना गोया बिग़ैर छुरी के ज़ब्ह़ होना है | 682 |
| | | शर्हे ह़दीस | 683 |
| आयते मुबा-रका की तफ़्सीर | 665 | क़ाज़ी तीन त़रह़ के हैं | 683 |
| नाह़क़ किसी का माल लेना | 666 | सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का ओ़ह्दए क़ज़ा क़बूल न करना | 684 |
| ह़दीसे पाक की लुग़वी तशरीह़ | 668 | | |
| झूटी क़सम खाना दिल पर दाग़ का बाइ़स है | 669 | बरोज़े क़ियामत क़ाज़ी की तमन्ना | 685 |
| माल के वबाल का सबब | 670 | ह़दीसे पाक की वज़ाह़त | 685 |
| झूटी क़सम खाने वाले पर जहन्नम वाजिब है | 672 | रोज़े मह़शर ह़ुक्मरानों की ह़ालत | 685 |
| यमीने ग़मूस का मफ़्हूम | 673 | अ़दालते फ़ारूक़ी | 687 |
| ह़दीसे पाक की वज़ाह़त | 675 | रआ़या का ख़याल न रखने वाला जहन्नमी है | 688 |
| ह़ासिले कलाम | 675 | ओ़ह्दए क़ज़ा के मु-तअ़ल्लिक़ अस्लाफ़ के फ़रामीन | 689 |
| कबीरा नम्बर **412 :** अमानत की क़सम उठाना | 676 | | |
| कबीरा नम्बर **413 :** बुत की क़सम उठाना | 676 | ख़ुलासए कलाम | 690 |
| कबीरा नम्बर **414 :** क़सम को कुफ़्र से मशरूत़ करना | 676 | कबीरा नम्बर **422 :** ह़क़ को बात़िल करने वाले की मदद करना | 691 |
| ह़दीसे पाक की लुग़वी तशरीह़ | 676 | | |
| ग़ैरुल्लाह की क़सम खाने पर कलिमए त़य्यिबा पढ़ने का ह़ुक्म | 678 | बात़िल की मदद ग़-ज़बे इलाही का मूजिब है | 691 |
| | | शर्हे ह़दीस | 691 |
| शर्हे ह़दीस | 678 | ग़-ज़बे इलाही के मुस्तह़िक़ लोग | 692 |
| कबीरा नम्बर **415 :** इस्लाम के इलावा किसी मज़हब की झूटी क़सम खाना | 681 | कबीरा नम्बर **423 :** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी मोल ले कर क़ाज़ी वग़ैरा का लोगों को राज़ी करना | 693 |




www.dawateislami.net

| | | | |
|---|---|---|---|
| कबीरा नम्बर **424 :** रिश्वत लेना ख़्वाह देने वाला ह़क़ पर हो | 695 | कबीरा नम्बर **431 :** त़-लबे ह़क़ के लिये झगड़ना जब कि मद्दे मुक़ाबिल को तक्लीफ़ देने और उस पर ग़-लबा पाने के लिये इन्तिहाई दुश्मनी और झूट से काम लिया जाए | 704 |
| कबीरा नम्बर **425 :** बात़िल के लिये रिश्वत देना | 695 | | |
| कबीरा नम्बर **426 :** रिश्वत देने और लेने वाले के दरमियान वासित़ा बनना | 695 | कबीरा नम्बर **432 :** मह़्ज़ दुश्मनी की वज्ह से मुख़ालिफ़ पर सख़्ती के इरादे से झगड़ा करना | 704 |
| कबीरा नम्बर **427 :** ओ़हदए क़ज़ा देने पर रिश्वत लेना | 695 | कबीरा नम्बर **433 :** बिला वज्ह झगड़ा करना | 704 |
| कबीरा नम्बर **428 :** ओ़हदए क़ज़ा के लिये रिश्वत देना जब कि उस पर लाज़िम न हुवा हो और न ही उस पर माल ख़र्च करना लाज़िम हो | 695 | कबीरा नम्बर **434 :** मज़्मूम झगड़ा करना | 704 |
| | | झगड़े की मज़्मूम और जाइज़ सूरतें | 706 |
| | | ख़ुसूमत, मिराअ और जिदाल की ता'रीफ़ें | 707 |
| क़ुरआने पाक में रिश्वत की मज़म्मत | 695 | फ़ाएदा | 708 |
| आयते मुबा-रका की तफ़्सीर | 695 | **باب القسمة** | 710 |
| रिश्वत को اِدْلَاء से तश्बीह देने की वज्ह | 696 | कबीरा नम्बर **435 :** तक़्सीम करने में ज़ुल्म करना | 710 |
| बात़िल त़रीक़े से माल खाने से मुराद | 696 | | |
| मज़्कूरा आयए मुबा-रका का शाने नुज़ूल | 697 | कबीरा नम्बर **436 :** क़ीमत लगाने में ज़ुल्म करना | 710 |
| अह़ादीसे मुबा-रका में रिश्वत की मज़म्मत | 697 | क़ुरैश की फ़ज़ीलत | 710 |
| सूद और रिश्वत की तबाह कारियां | 698 | **كِتَابُ الشَّهَادات** | 711 |
| लोगों की मरज़ी के मुत़ाबिक़ फ़ैसला करने वाले का अन्जाम | 699 | कबीरा नम्बर **437 :** झूटी गवाही देना | 711 |
| | | कबीरा नम्बर **438 :** झूटी गवाही क़बूल करना | 711 |
| रिश्वत की कमाई ख़बीस है | 699 | अह़ादीसे मुबा-रका में झूटी गवाही की मज़म्मत | 711 |
| ज़रूरतन रिश्वत देना जाइज़ मगर लेना ह़राम है | 700 | झूटी गवाही देना शिर्क के बराबर है | 712 |
| कम या ज़ियादा रिश्वत का हुक्म | 700 | झूटा गवाह जहन्नमी है | 712 |
| रिश्वत के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रामीने अस्लाफ़ | 701 | गवाही छुपाना गोया झूटी गवाही देना है | 712 |
| कबीरा नम्बर **429 :** सिफ़ारिश के सबब तह़ाइफ़ क़बूल करना | 703 | झूटी गवाही की ता'रीफ़ | 714 |
| | | कबीरा नम्बर **439 :** बिला उ़ज़्र गवाही छुपाना | 715 |
| सिफ़ारिश में हदिय्या देने की मज़म्मत | 703 | क़ुरआने मजीद में गवाही छुपाने की मज़म्मत | 715 |
| कबीरा नम्बर **430 :** नाह़क़ झगड़ा करना या ला इ़ल्मी में झगड़ा करना म-सलन क़ाज़ी के वु-कला का आपस में झगड़ना | 704 | ह़दीसे पाक में गवाही छुपाने की मज़म्मत | 715 |
| | | कबीरा नम्बर **440 :** ऐसा झूट जिस में ह़द या ज़रर हो | 716 |




www.dawateislami.net

| | | | |
|---|---|---|---|
| अहादीसे मुबा-रका में झूट की मज़म्मत | 716 | चौसर के मु-तअ़ल्लिक़ उ़-लमाए इस्लाम की आराअ | 734 |
| झूट की इशाअ़त करने की सज़ा | 717 | | |
| मुनाफ़िक़ की अ़लामत | 717 | चौसर खेलने वाले की गवाही मरदूद है | 734 |
| कामिल मोमिन की अ़लामत | 718 | चौसर खेलने में 4 मुख़्तलिफ़ मौक़िफ़ | 736 |
| झूट से फ़िरिश्तों की नफ़रत | 720 | नर्द (या'नी चौसर) की वज्हे तस्मिया | 738 |
| सब से बुरी आ़दत | 720 | कबीरा नम्बर **445 :** शत्‌रंज खेलना | 739 |
| झूट झूट ही है ख़्वाह छोटा हो या बड़ा | 721 | 360 बार नज़रे रह़मत | 739 |
| झूट की ता'रीफ़ | 723 | खेलकूद में मश्ग़ूल रहने वालों की मिसाल | 739 |
| झूट की जवाज़ी सूरतों का बयान | 724 | शत्‌रंज के मु-तअ़ल्लिक़ अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ الله के फ़रामीन | 740 |
| कलामे ग़ज़ाली पर मुसन्निफ़ का तब्सिरा | 725 | | |
| तोरिया का बयान | 726 | सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का शत्‌रंज जला देना | 741 |
| तोरिया का हुक्म | 727 | | |
| कबीरा नम्बर **441 :** शराबियों और दीगर फ़ासिक़ों का दिल बहलाने के लिये उन के साथ बैठना | 728 | ख़ातिमा बिलख़ैर न होना | 742 |
| | | ह़दीसे पाक की वज़ाह़त | 742 |
| मुमा-न-अ़त का सबब | 728 | जैसी ज़िन्दगी वैसी मौत | 743 |
| कबीरा नम्बर **442 :** फ़ासिक़ क़ुर्रा और फ़ासिक़ अहले इ़ल्म के साथ बैठना | 728 | चन्द सुवालात व जवाबात | 744 |
| | | ग़फ़्लत की सूरत में कोताही का सुबूत | 745 |
| फ़ासिक़ों की हम-नशीनी में ख़त्‌रा | 728 | जहालत की सूरत में कोताही का सुबूत | 745 |
| कबीरा नम्बर **443 :** जूआ खेलना | 730 | चौसर और शत्‌रंज में फ़र्क़ | 745 |
| क़ुरआने ह़कीम में जूआ की मज़म्मत | 730 | हुज़्ज़ह और क़िर्क़ में फ़र्क़ | 745 |
| आयते मुबा-रका की तफ़्सीर | 730 | हुज़्ज़ह की ता'रीफ़ | 745 |
| जूआ की मज़म्मत में अहादीसे मुबा-रका | 731 | क़िर्क़ की ता'रीफ़ | 746 |
| दूसरों के माल में नाहक़ दख़्ल देने की सज़ा | 731 | कबीरा नम्बर **446 :** गाने बजाने के आलात बजाना | 748 |
| जूआ की दा'वत देने का कफ़्फ़ारा | 731 | कबीरा नम्बर **447 :** गाने बजाने के आलात सुनना | 748 |
| कबीरा नम्बर **444 :** चौसर खेलना | 732 | कबीरा नम्बर **448 :** बांसरी बजाना | 748 |
| चौसर खेलने का हुक्म | 732 | कबीरा नम्बर **449 :** बांसरी सुनना | 748 |
| चौसर खेलना ख़िन्ज़ीर के ख़ून से हाथ रंगना है | 732 | कबीरा नम्बर **450 :** त़बला या डुगडुगी बजाना | 748 |
| लग़्विय्यात में मश्ग़ूल लोगों को सलाम करने का हुक्म | 733 | कबीरा नम्बर **451 :** त़बला या डुगडुगी सुनना | 748 |
| | | आयते मुबा-रका की तफ़्सीर | 748 |




www.dawateislami.net

| | | | |
|---|---|---|---|
| आयते मुबा–रका की तफ़्सीर | 749 | चौथा क़ौल और इस का रद्दे बलीग़ | 771 |
| गाने बाजे का हुक्म | 749 | आलाते मूसीक़ी के ह़राम होने का क़ाइदा | 771 |
| मि'ज़फ़ह का मा'ना | 750 | इमामुल ह़–रमैन के क़ौल की तरदीद | 772 |
| आलाते मूसीक़ी से मुमा–न–अ़त की वुजूहात | 753 | كُوْبَة के मफ़्हूम में इख़्तिलाफ़ | 774 |
| आलाते मूसीक़ी के जवाज़ पर चन्द बातिल अक़्वाल और उन की तरदीद | 753 | ह़ासिले कलाम | 775 |
| पहला क़ौल और उस का रद्दे बलीग़ | 753 | कबीरा नम्बर **452 :** ग़ैर मुअ़य्यन लड़के के मु–तअ़ल्लिक़ इ़श्क़िया अश्आ़र कहना और उस से इज़्हारे इ़श्क़ करना | 776 |
| गुमराह इब्ने त़ाहिर का रद्दे बलीग़ | 755 | | |
| दूसरा क़ौल और इस का रद्दे बलीग़ | 756 | कबीरा नम्बर **453 :** अजनबी मख़्सूस औ़रत के मु–तअ़ल्लिक़ इ़श्क़िया अश्आ़र कहना अगर्चे बुरे अन्दाज़ में न कहे | 776 |
| आलाते मूसीक़ी की अक़्साम मअ़ अह़काम | 758 | | |
| मज़ामीर की अक़्साम | 759 | | |
| तब्ला बजाने का हुक्म | 759 | कबीरा नम्बर **454 :** ग़ैर मुअ़य्यन औ़रत के मु–तअ़ल्लिक़ फ़ोह़्श अन्दाज़ में इ़श्क़िया अश्आ़र कहना | 776 |
| मर्दों का तालियां बजाना कैसा ? | 759 | | |
| तीसरा क़ौल और उस का रद्दे बलीग़ | 760 | | |
| आलाते मूसीक़ी की वज्हे हुरमत | 761 | कबीरा नम्बर **455 :** मज़्कूरा इ़श्क़िया अश्आ़र को तरन्नुम से पढ़ना | 776 |
| बांसरी के जवाज़ में इख़्तिलाफ़ | 764 | | |
| क़ाइलीने जवाज़ के दलाइल | 764 | बीवी या कनीज़ की तश्बीब का हुक्म | 778 |
| क़ाइलीने जवाज़ की तरदीद | 764 | कबीरा नम्बर **456 :** मुसल्मान की हज्व वाले अश्आ़र पढ़ना अगर्चे सच हो | 781 |
| सय्यिदुना इमाम जलाल बुल्क़ीनी عَلَيْهِ الرَّحْمَه के क़ौल की तरदीद | 765 | | |
| | | कबीरा नम्बर **457 :** फ़ोह़्श कलाम पर मुश्तमिल अश्आ़र पढ़ना | 781 |
| यराअ़ से क्या मुराद है ? | 766 | | |
| समाअ़ का बयान व तह़क़ीक़ | 767 | कबीरा नम्बर **458 :** वाज़ेह़ झूट पर मुश्तमिल अश्आ़र पढ़ना | 781 |
| समाअ़ की चन्द सूरतें | 768 | | |
| रक़्स और अश्आ़र का हुक्म | 769 | कबीरा नम्बर **459 :** हज्विया अश्आ़र तर्ज़ से पढ़ना और उन की तश्हीर करना | 781 |
| सुनने और सुनाने वालों के ए'तिबार से समाअ़ की अक़्साम | 769 | | |
| | | कौन सा शाइ़र मरदूदुश्शहादत है ? | 781 |
| समाअ़ की शराइत़ | 770 | नेकियों और गुनाहों के ग़–लबे के दरमियान फ़र्क़ की पहचान | 782 |
| अहले ह़क़ीक़त के नज़्दीक समाअ़ की शर्त़ | 771 | | |
| डुगडुगी की हुरमत का बयान | 771 | नज़्म और नस्र में मज़म्मत का फ़र्क़ | 783 |




www.dawateislami.net

| | | | |
|---|---|---|---|
| ता'रीज़न मज़म्मत करने का हुक्म | 785 | पहली शर्त़ : गुज़श्ता गुनाह पर नादिम होना | 805 |
| मज़म्मत करने और इसे बयान करने वाले का हुक्म | 786 | भूले हुए गुनाह से तौबा | 805 |
| काफ़िर की मज़म्मत का हुक्म | 786 | गुनाह के इल्म या अ़-दमे इल्म पर तौबा की सूरत | 806 |
| बिद्अ़ती की मज़म्मत का हुक्म | 788 | दूसरी शर्त़ : दोबारा न करने का अ़ज़्म करना | 807 |
| मुरतद की मज़म्मत का हुक्म | 788 | चन्द गुनाहों से तौबा का हुक्म | 807 |
| फ़ासिके़ मो'लिन की मज़म्मत का हुक्म | 788 | तीसरी शर्त़ : ह़ालते गुनाह में ही उसे तर्क कर देना | 809 |
| कबीरा नम्बर **460** : शे'रगोई में आ़दत से ज़ियादा मुबा-लग़ा आमेज़ ता'रीफ़ करना | 789 | चौथी शर्त़ : ज़बान से इस्तिग़्फ़ार करना | 810 |
| कबीरा नम्बर **461** : शे'रगोई के ज़रीए़ दौलत कमाना | 789 | पांचवीं शर्त़ : तौबा का वक़्ते मो'तबर में ही वाके़अ़ होना | 811 |
| मद्ह़ सराई को पेशा बनाने का हुक्म | 790 | छटी शर्त़ : ज़ुहूरे अ़लामाते क़ियामत से पहले तौबा करना | 811 |
| क्या शे'र में मुबा-लग़ा करना बेहतर है ? | 790 | | |
| कबीरा नम्बर **462** : सग़ीरा गुनाहों पर इसरार करना | 793 | सातवीं शर्त़ : मक़ामे गुनाह से जुदा हो जाना | 812 |
| सग़ीरा गुनाह पर इसरार करने का हुक्म | 793 | आठवीं शर्त़ : बार बार तौबा करना | 812 |
| ह़ासिले कलाम | 793 | नवीं शर्त़ : तौबा को बर क़रार रखना | 813 |
| गवाही में आ़दिल या ग़ैरे आ़दिल होना | 794 | दसवीं शर्त़ : ह़द क़ाइम करने पर क़ुदरत देना | 814 |
| मूजिबे फ़िस्क़ ऐ़ब की ता'रीफ़ | 794 | ग्यारहवीं शर्त़ : तर्के इ़बादत के गुनाह का तदारुक करना | 815 |
| मुरव्वत की ता'रीफ़ | 795 | | |
| क़बूलिय्यते शहादत का मे'यार | 796 | क़ज़ा नमाज़ों की ता'दाद मा'लूम करने का त़रीक़ा | 815 |
| आयते मुबा-रका की तफ़्सीर | 797 | आयते मुबा-रका की तफ़्सीर | 815 |
| कबीरा नम्बर **463** : कबीरा गुनाह से तौबा न करना | 798 | तौबा की दूसरी क़िस्म | 816 |
| आयते मुबा-रका की तफ़्सीर | 798 | मुख़्तलिफ़ लोगों पर ख़र्च करने का त़रीक़ा | 818 |
| कबीरा गुनाहों से फ़ौरन तौबा करना | 798 | वारिस के वारिस का मुस्तह़िक़ होना | 818 |
| सग़ीरा गुनाहों से फ़ौरन तौबा करना | 798 | आयाते मुबा-रका की तफ़्सीर | 821 |
| तक्फ़ीर से मुराद | 799 | हु़क़ूक़ुल इ़बाद से मुआ़फ़ी के बिग़ैर छुटकारा मुम्किन नहीं | 822 |
| क़बूलिय्यते तौबा क़त़्ई है या ज़न्नी ? | 801 | | |
| तौबा की अक़्साम | 804 | ह़क़ीक़ी मुफ़्लिस कौन है ? | 822 |
| नदामत का बयान | 804 | मक़रूज़ की तौबा | 823 |
| नदामत की शराइत़ | 805 | आ़जिज़ मक़रूज़ का क़र्ज़ अदा करने का हुक्म | 823 |




www.dawateislami.net

| | | | |
|---|---|---|---|
| आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का करम | 824 | गुस्ताख़ इब्ने मुनीर का ह़ाल | 850 |
| शर्हे ह़दीस | 824 | सह़ाबा का गुस्ताख़ बन्दर बन गया | 850 |
| ह़द्दे क़ज़फ़ से तौबा | 826 | इस उम्मत के यहूदी | 852 |
| ग़ीबत से तौबा | 827 | राफ़िज़िय्यों और यहूदियों में मुमा–सलत | 853 |
| ह़दीसे पाक की वज़ाह़त | 828 | रवाफ़िज़ की यहूदो नसारा से ज़ाइद दो ख़राबियां | 853 |
| मा'ज़िरत में इख़्लास का पाया जाना | 830 | पहली ख़राबी | 854 |
| ह़सद से तौबा | 830 | दूसरी ख़राबी | 854 |
| शर्हे ह़दीस | 832 | यहूदी ग़ुलाम और राफ़िज़ी सरदार की तौबा | 854 |
| मुआ–ख़ज़े का हुक्म | 833 | उम्मुल मुअमिनीन को सब्बो शत्म करने वाले का हुक्म | 857 |
| ज़िना व लिवात़त से तौबा | 839 | | |
| छीने हुए माल और हुक़ूक़ का हुक्म | 841 | सय्यि–दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के फ़ज़ाइल | 858 |
| पहला मज़हब | 841 | | |
| दूसरा मज़हब | 841 | كتاب الدعاوى | 861 |
| तीसरा मज़हब | 842 | कबीरा नम्बर **466** : दूसरे की चीज़ पर नाह़क़ दा'वा करना | 861 |
| कबीरा नम्बर **464** : अन्सार से बुग़्ज़ रखना | 843 | | |
| कबीरा नम्बर **465** : सह़ाबए किराम को गाली देना | 843 | كتاب العتق | 861 |
| ईमान व निफ़ाक़ की अ़लामत | 843 | कबीरा नम्बर **467** : बिला जवाज़े शर–ई आज़ाद शुदा ग़ुलाम से ख़िदमत लेना | 861 |
| अन्सार कौन हैं ? | 843 | | |
| सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को सब्बो शत्म करने की मुमा–न–अ़त | 844 | ख़ातिमा | 862 |
| | | ﴾1﴿...... तौबा का बयान : | 862 |
| सह़ाबए किराम को सब्बो शत्म करना कबीरा गुनाह है | 845 | क़ुरआने पाक में तौबा के फ़ज़ाइल | 862 |
| | | अह़ादीसे मुबा–रका में तौबा के फ़ज़ाइल | 862 |
| शैख़ैने करीमैन को गाली देना कुफ़्र है | 846 | तौबा का दरवाज़ा | 863 |
| अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से जंग | 846 | ह़दीसे पाक की वज़ाह़त | 864 |
| सह़ाबए किराम पर "ला'न त़ा'न" करने के सबब हलाकत व बरबादी | 848 | ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ को वसिय्यत | 866 |
| | | गुनाहों की मग़्फ़िरत | 866 |
| सय्यिदुना अय्यूब सिख़्तियानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی का फ़रमान | 848 | गुनाहों पर नदामत का नाम तौबा है | 867 |
| अहले सुन्नत व जमाअ़त का इज्माअ़ | 849 | ह़दीसे पाक की वज़ाह़त | 868 |
| गुस्ताख़ाने सह़ाबा के चन्द इब्रत नाक वाक़िआत | 849 | ज़ानी औरत की तौबा | 868 |




www.dawateislami.net

| | | | |
|---|---|---|---|
| फ़ाजिर की तौबा | 869 | जन्नत में दाखि़ला रह़मते इलाही से होगा | 894 |
| फ़रिश्ते व शैत़ान के माबैन झगड़ा | 870 | बरोज़े क़ियामत ह़क़दार के ह़क़ की वुसूली | 896 |
| 100 क़त्ल करने वाले शख़्स की तौबा | 870 | मुफ़्लिस उम्मती | 897 |
| रब عَزَّوَجَلَّ का बन्दे के गुमान के मुत़ाबिक़ होना | 872 | बरोज़े क़ियामत वालिदैन और औलाद का आ़लम | 897 |
| माज़ी व मुस्तक़्बिल की ख़त़ाओं का मुआ-ख़ज़ा | 874 | बरोज़े क़ियामत कुफ़्फ़ार व | |
| बारगाहे न-बवी में इक़रारे गुनाह और नुज़ूले क़ुरआन | 875 | अहले किताब की कैफ़िय्यत | 898 |
| **ततिम्मा** | 877 | शफ़ाअ़त का बयान | 900 |
| दुश्वार गुज़ार घाटी से नजात पाने वाले | 877 | सरकार के तबस्सुम में ह़िक्मत | 902 |
| अ़क़्ल मन्द और आ़जिज़ कौन ? | 877 | ज़मीन की ख़बरें | 903 |
| क़ुर्बे जन्नत और जहन्नम | 878 | बरोज़े क़ियामत इन्सानों की जसामत | 903 |
| पांच को पांच से पहले ग़नीमत जानो | 878 | फ़स्ल **3 :** ह़ौज़े कौसर, मीज़ान और | |
| हर मरने वाला शर्मसार होता है | 878 | पुल सिरात़ का बयान | 904 |
| किसी का शह्द की त़रह़ मीठा होना | 879 | ह़ौज़े कौसर | 904 |
| ह़दीसे पाक की वज़ाह़त | 879 | ह़ौज़े कौसर से कौन, कब पियेगा ? | 905 |
| सब से अच्छा और बुरा शख़्स | 879 | ह़ौज़े कौसर की वुस्अ़त | 905 |
| ख़ौफ़े इलाही का इन्आ़म | 880 | ह़ौज़े कौसर पर पियालों की ता'दाद | 907 |
| **﴾2﴿...... ह़श्र, ह़िसाब, शफ़ाअ़त, पुल** | | सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की करम नवाज़ी | 907 |
| **सिरात़ और इस के मु-तअ़ल्लिक़ात** | 883 | मीज़ान की कैफ़िय्यत | 908 |
| पहली फ़स्ल **:** ह़श्र वग़ैरा का बयान | 883 | पुल सिरात़ | 909 |
| मैदाने मह़शर में लोगों की ह़ालत | 883 | बाप और बेटे का वाक़िआ़ | 911 |
| बरोज़े क़ियामत पसीने की कैफ़िय्यत | 885 | फ़स्ल **4 :** शफ़ाअ़त का इज़्ने आ़म और | |
| बरोज़े क़ियामत मुअमिनीन की ह़ालत | 887 | पुल सिरात़ का बिछाया जाना | 911 |
| बरोज़े क़ियामत नूर का ब मुत़ाबिक़ आ'माल होना | 888 | हर नबी के लिये एक मक़्बूल दुआ़ | 911 |
| रोज़े मह़शर अदना मोमिन का मक़ाम | 888 | इख़्तियाराते मुस्त़फ़ा | 912 |
| दूसरी फ़स्ल **:** ह़िसाबो किताब वग़ैरा का बयान | 891 | मुस्त़फ़ा करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त | 913 |
| यौमे ह़िसाब के चार सुवाल | 891 | इज़्ने शफ़ाअ़त | 915 |
| बरोज़े क़ियामत नेकियों के पहाड़ की हैसिय्यत | 891 | दीगर अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام | |
| अदना दुन्यवी ने'मत की क़ीमत | 891 | कब शफ़ाअ़त करेंगे ? | 919 |
| ह़बशी की क़िस्मत | 892 | शफ़ाअ़त के ह़क़दार | 922 |




www.dawateislami.net

| | | | |
|---|---|---|---|
| ﴾3﴿...... जहन्नम और इस के मु-तअ़ल्लिक़ात | 923 | जन्नती का इस्तिक़्बाल और उस की मेहमान नवाज़ी | 940 |
| सय्यिदुना मीकाईल عَلَیْہِ السَّلَام के | | दो दफ़्अ़ा सूर फूंकने की दरमियानी मुद्दत | 942 |
| न मुस्कुराने का सबब | 925 | ह़दीसे पाक की वज़ाह़त | 943 |
| जहन्नम की शिद्दते तपिश | 925 | आयते मुबा-रका की तफ़्सीर | 944 |
| सय्यिदुना जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام का | | जन्नत में दाख़िल होने वाला पहला गुरौह | 945 |
| जन्नत व जहन्नम को मुला-ह़ज़ा करना | 926 | जन्नत में दाख़िल होते वक़्त जन्नतियों की उ़म्रें | 946 |
| जहन्नम की वादियां और घाटियां | 927 | अदना व आ'ला जन्नती का मक़ाम | 946 |
| जहन्नम की गहराई | 928 | ख़ुद्दाम की ता'दाद में इख़्तिलाफ़ | 948 |
| जहन्नम की ज़न्जीरें | 929 | जन्नत के बालाख़ाने | 949 |
| जहन्नमी गुर्ज़ और हथोड़े | 930 | जन्नत के द-रजात में फ़ासिला | 950 |
| 7 ज़मीनों के मु-तअ़ल्लिक़ दिलचस्प मा'लूमात | 930 | जन्नत की बनावट | 950 |
| जहन्नमी सांप और बिच्छू | 931 | जन्नते अ़दन | 951 |
| जहन्नमी मश्रूब | 931 | जन्नत की ज़मीन और सह़्न | 951 |
| غَسَّاق में इख़्तिलाफ़ | 933 | जन्नत की चरागाहें | 952 |
| जहन्नमियों का खाना | 934 | जन्नती ख़ैमा | 952 |
| जहन्नमियों के कन्धों का दरमियानी फ़ासिला | 934 | जन्नती सफ़ेद मोतियों का मह़ल | 953 |
| काफ़िर की दाढ़ और खाल की मोटाई | 935 | जन्नती नहरें | 953 |
| ''जब्बार'' की वज़ाह़त | 935 | जन्नती दरख़्त | 955 |
| काफ़िर की रान और मक़्अ़द | 935 | وَظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ की तफ़्सीर | 955 |
| काफ़िर की ज़बान | 936 | श-जरे तूबा | 955 |
| कानों की लौ से गरदन का दरमियानी फ़ासिला | 936 | जन्नती फल | 956 |
| जहन्नमियों के हैबत नाक होंट | 937 | जन्नती खजूर | 956 |
| अहले जहन्नम में सब से कम अ़ज़ाब | 937 | जन्नती खाने | 956 |
| अहले जहन्नम के अ़ज़ाब में त़-बक़ात | 938 | फ़ज़ीलते सिद्दीक़े अक्बर | 957 |
| जहन्नमियों का जल कर बार बार | | जन्नती हूरें | 958 |
| पहली ह़ालत पर लौट आना | 938 | दोनों अह़ादीसे मुबा-रका में तत़्बीक़ | 960 |
| जहन्नमी व जन्नती से एक सुवाल | 939 | दुन्यावी औ़रतों की हूरों पर फ़ज़ीलत | 961 |
| जहन्नमियों की गिर्या व ज़ारी | 939 | ह़दीसे पाक की वज़ाह़त | 963 |
| ﴾4﴿...... जन्नत और इस की ने'मतें | 940 | जन्नती हूरों के नग़मे | 963 |




www.dawateislami.net

| | | | |
|---|---|---|---|
| जन्नती बाज़ार | 964 | मौत की मौत | 973 |
| जन्नतियों का सैरो सियाहत और एक दूसरे की ज़ियारत करना | 965 | **इख़्तिताम** | 974 |
| | | मआख़िज़ो मराजेअ़ | 997 |
| जन्नतियों का रूयते बारी तआला से मुशर्रफ़ होना | 967 | मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की कुतुब का तआरुफ़ | 1001 |
| रूयते बारी तआला का मख़्सूस दिन | 968 | | |
| जन्नती और दुन्यवी अश्या में फ़र्क़ | 972 | | |


## ......हदीसे क़ुदसी......

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **इर्शाद फ़रमाता है :**

**ऐ इब्ने आदम !** तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो मौत पर यक़ीन रखता है फिर भी ख़ुश होता है।

❁...... तअ़ज्जुब है उस पर जो हिसाबो किताब पर यक़ीन रखता है फिर भी माल जम्अ़ करने में मसरूफ़ है।

❁...... तअ़ज्जुब है उस पर जो क़ब्र पर यक़ीन रखने के बा वुजूद हंसता है।

❁...... तअ़ज्जुब है उस पर जिसे आख़िरत पर यक़ीन है फिर भी पुर सुकून है।

❁...... तअ़ज्जुब है उस पर जो दुन्या (की हक़ीक़त को जानता) और इस के ज़वाल पर यक़ीन रखता है फिर भी इस पर मुत्मइन है।

❁...... तअ़ज्जुब है उस पर जो गुफ़्त-गू तो आ़लिमों जैसी करता है लेकिन उस का दिल जाहिलों जैसा है।

❁...... तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो पानी के ज़रीए पाकी तो हासिल करता है मगर उस का दिल आलूदा है।

❁...... तअ़ज्जुब है उस पर जो लोगों के उ़यूब तलाश करने में तो मसरूफ़ रहता है लेकिन अपने उ़यूब से ग़ाफ़िल है।

❁...... तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो जानता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे हर अ़मल से बा ख़बर है फिर भी उस की ना फ़रमानी करता है।

❁...... तअ़ज्जुब है उस पर जो जानता है कि उसे अकेले मरना, अकेले क़ब्र में दाख़िल होना और अकेले ही हिसाब देना है फिर भी लोगों से उन्सिय्यत रखता है।

(**ऐ इब्ने आदम !** सुन) मैं ही मा'बूदे हक़ीक़ी हूं और मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मेरे ख़ास बन्दे और रसूल हैं। (مجموعة رسائل الامام الغزالی،المواعظ فی الاحادیث القدسیة،ص۵۲۵)



www.dawateislami.net

# مأخذ و مراجع

| مطبوعہ | مصنف/مؤلف | نام کتاب |
|---|---|---|
| ضیاء القرآن پبلشر | کلام باری تعالی | قرآن پاک |
| ضیاء القرآن پبلشر | اعلی حضرت امام احمد رضا خان رحمۃاللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ | کنزالایمان فی ترجمۃ القرآن |
| دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۰ھ | امام ابو جعفر محمدبن جریر طبری رحمۃاللہ علیہ متوفّٰی ۳۱۰ھ | تفسیرالطبری |
| دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۷ھ | امام ابو محمد حسین بن مسعود بغوی رحمۃاللہ علیہ متوفّٰی ۵۱۶ھ | تفسیرالبغوی |
| دارالفکر بیروت ۱۴۰۳ھ | امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی شافعی رحمۃاللہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ | تفسیرالدرالمنثور |
| داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۰ھ | امام فخر الدین محمدبن عمر رازی رحمۃاللہ علیہ متوفّٰی ۶۰۶ھ | التفسیرالکبیر |
| مکتبۃ الاعلام الاسلامی ۱۴۱۲ھ | جاراللہ محمود بن عمر زمخشری متوفّٰی ۵۲۸ھ | تفسیرالکشاف |
| دارالفکر بیروت ۱۴۲۰ھ | ابوعبداللہ محمدبن احمد انصاری قرطبی رحمۃاللہ علیہ متوفّٰی ۶۷۱ھ | الجامع لاحکام القران |
| دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ | ابو حفص عمر بن علی ابن عادل دمشقی حنبلی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۸۰ھ | اللباب فی علوم الکتاب |
| دار احیاء التراث العربی | شہاب الدین سید محمود آلوسی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۲۷۰ھ | روح المعانی |
| دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ | امام محمدبن اسماعیل بخاری رحمۃاللہ علیہ متوفّٰی ۲۵۶ھ | صحیح البخاری |
| دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ | امام مسلم بن حجاج قشیری نیشاپوری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۶۱ھ | صحیح المسلم |
| دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ | امام ابوداود سلیمان بن اشعث سجستانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۷۵ھ | سنن ابی داود |
| دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ | امام محمد بن عیسٰی ترمذی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۷۹ھ | جامع الترمذی |
| دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ | امام احمد بن شعیب نسائی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۰۳ھ | سنن النسائی |
| دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ | امام محمد بن یزید القزوینی الشہیر بابن ماجہ رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۷۳ھ | سنن ابن ماجہ |
| دارالمعرفۃ ۱۴۲۰ھ | امام دارالہجرہ امام مالک بن انس اصبحی حمیری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۷۹ھ | الموطأ |
| ملتان پاکستان | امام محمدبن اسماعیل بخاری رحمۃاللہ علیہ متوفّٰی ۲۵۶ھ | الادب المفرد |
| افغانستان | امام ابوداود سلیمان بن اشعث سجستانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۷۵ھ | مراسیل ابی داود |
| دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۱ھ | امام احمد بن شعیب نسائی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۰۳ھ | السنن الکبری |
| دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۴ھ | امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ | السنن الکبری |
| دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۱ھ | امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ | شعب الایمان |



www.dawateislami.net

| | | |
|---|---|---|
| الزھدالکبیر | امام ابوبکر احمد بن حسین بیھقی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھـ | موسوُالکتب الثقافیہ ۱۴۱۷ھـ |
| المعجم الکبیر | حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھـ | داراحیاء التراث ۱۴۲۲ھـ |
| المعجم الاوسط | حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھـ | دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۰ھـ |
| المعجم الصغیر | حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھـ | دارالکتب العلمیہ ۱۴۰۳ھـ |
| المصنف | امام حافظ ابوبکرعبدالرزاق بن ھمام رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۱۱ھـ | دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۱ھـ |
| المصنف | حافظ عبداللّٰہ محمدبن ابی شیبہ عبسی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۳۵ھـ | دارالفکربیروت ۱۴۱۴ھـ |
| المسند | امام ابوعبداللّٰہ احمد بن محمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۴۱ھـ | دارالفکربیروت ۱۴۱۴ھـ |
| الموسوعہ | حافظ ابوبکرعبداللّٰہ بن محمدبن عبیدابن ابی الدنیا رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۸۱ھـ | المکتبة العصریہ ۱۴۲۶ھـ |
| مسندابی یعلی | امام ابویعلی احمدبن علی موصلی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۰۷ھـ | دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۸ھـ |
| سنن الدارمی | امام عبد اللّٰہ بن عبدالرحمن رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۵۵ھـ | دارالکتب العربی ۱۴۰۷ھـ |
| سنن الدارقطنی | امام علی بن عمردارقطنی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۸۵ھـ | ملتان پاکستان |
| المستدرک | امام ابوعبداللّٰہ محمدبن عبداللّٰہ حاکم رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۰۵ھـ | دارالمعرفہ ۱۴۱۸ھـ |
| صحیح ابن حبان | امام حافظ محمد بن حبان رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۵۴ھـ | دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۷ھـ |
| مشکاۃ المصابیح | علامہ ولی الدین تبریزی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۷۴۲ھـ | دارالفکربیروت ۱۴۲۱ھـ |
| شرح السنہ | امام أبومحمدحسین بن مسعودبغوی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۱۶ھـ | دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۴ھـ |
| البحرالزخاربمسندالبزار | امام ابوبکراحمدبن عمرو بزار رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۹۲ھـ | مکتبة العلوم والحکم ۱۴۲۴ھـ |
| الفردوس الاخبار | حافظ شیرویہ بن شھرداربن شیرویہ دیلمی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۰۹ھـ | دارالکتب العلمیہ ۱۴۰۶ھـ |
| الترغیب والترھیب | امام زکی الدین عبدالعظیم منذری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۶۵۶ھـ | دارالفکربیروت ۱۴۱۸ھـ |
| التاریخ الکبیر | امام محمدبن اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۵۶ھـ | دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۲ھـ |
| جامع الاحادیث | امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھـ | دارالفکربیروت ۱۴۱۴ھـ |
| مسند الحارث | حارث بن محمد بن ابی اسامہ تمیمی متوفّٰی ۲۸۲ھـ | المدینة المنورہ ۱۴۱۳ھـ |
| مجمع الزوائد | حافظ نورالدین علی بن ابی بکر ھیثمی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۰۷ھـ | دارالفکربیروت ۱۴۲۰ھـ |
| صحیح ابن خزیمہ | امام ابوبکر محمد بن اسحاق بن خزیمہ نیشاپوری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۱۱ھـ | المکتب الاسلامی ۱۴۱۲ھـ |
| جمع الجوامع | امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھـ | دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۱ھـ |
| مشکل الآثار | امام ابو جعفر احمد بن محمدطحاوی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۲۱ھـ | دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۵ھـ |



www.dawateislami.net

| | | |
|---|---|---|
| مسندالامام الشافعی | امام ابو عبد اللّٰہ محمد بن ادریس شافعی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۰۴ھ | دارالکتب العلمیہ بیروت |
| التوبیخ والتنبیہ | ابو الشیخ عبد اللّٰہ بن محمد بن جعفر اصبہانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۶۹ھ | المکتبۃ الشاملہ |
| الکامل فی ضعفاء الرجال | امام ابو احمد عبد اللّٰہ بن عدی جرجانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۶۵ھ | دارالکتب العلمیہ بیروت |
| کتاب الکبائر | امام محمد بن احمد بن عثمان ذہبی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۷۴۸ھ | پشاور پاکستان |
| الخصائص الکبری | امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی شافعی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ | دارالکتب العلمیہ بیروت |
| تاریخ مدینۃ دمشق | امام ابن عساکر رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۵۷۱ھ | دارالفکر بیروت ۱۴۱۵ھ |
| مکارم الاخلاق | حافظ ابوبکر عبداللّٰہ بن محمد بن عبید ابن ابی الدنیا رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۸۱ھ | دارالکتب العلمیہ بیروت |
| مسند ابی داود الطیالسی | امام ابو داود طیالسی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۰۴ھ | مکتبہ حسینیہ گوجرانوالہ |
| روضۃ الطالبین وعمدۃ المفتین | حافظ محیی الدین ابوزکریا یحیی بن شرف نووی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۶۷۶ھ | المکتبۃ الشاملہ |
| المغنی | ابو محمد موفق الدین عبد اللّٰہ بن احمد مقدسی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۶۲۰ھ | ہجر القاہرہ |
| السنہ | محدث احمد بن محمد بن ہارون الخلال حنبلی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۱۱ھ | دارالرایہ |
| کتاب الجامع فی آخر المصنف | امام حافظ معمر بن راشد ازدی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۵۳ھ | دارالکتب العلمیہ بیروت |
| الزہد | امام ابوعبداللّٰہ احمد بن محمد بن حنبل رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۴۱ھ | دارالغد الجدید ۱۴۲۶ھ |
| تاریخ بغداد | امام ابوبکر احمد بن علی الخطیب بغدادی رحمۃ اللّٰہ تعالی علیہ متوفّٰی ۴۶۳ھ | دارالکتب العلمیہ بیروت |
| المجموع شرح المہذب | حافظ محیی الدین ابوزکریا یحیی بن شرف نووی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۶۷۶ھ | دارالفکر بیروت |
| المجالسۃ وجواہر العلم | امام ابو بکر احمد بن مروان الدینوری مالکی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۳۳ھ | دارالکتب العلمیہ بیروت |
| الجامع الصغیر | امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی شافعی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ | دارالکتب العلمیہ بیروت |
| الحاوی الکبیر | امام ابو الحسن علی بن محمد ماوردی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۵۰ھ | دارالفکر بیروت |
| الورع | امام ابوعبداللّٰہ احمد بن محمد بن حنبل رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۴۱ھ | دارالکتب العلمیہ بیروت |
| الاستذکار | امام یوسف بن عبد اللّٰہ محمد بن عبد البر رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۶۳ھ | داراحیاء التراث العربی |
| الدعوات الکبیر | امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ | المکتبۃ الشاملہ |
| الزہد لہناد | ہناد بن السری کوفی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۴۳ھ | المکتبۃ الافیہ |
| شرح صحیح مسلم | حافظ محیی الدین ابوزکریا یحیی بن شرف نووی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۶۷۶ھ | دارالکتب العلمیہ |
| فیض القدیر | امام محمد عبد الرء ُوف مناوی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۰۳۱ھ | دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۲ھ |
| التمہید | امام یوسف بن عبد اللّٰہ محمد بن عبد البر رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۶۳ھ | دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ |



www.dawateislami.net

| | | |
|---|---|---|
| المجروحين | امام حافظ محمد بن حبان رحمة الله عليه متوفّٰى ۳۵۴ھ | دارالصميعى ۱۴۲۰ھ |
| الأم | امام ابوعبدمحمدبن ادريس شافعى رحمة الله عليه متوفّٰى ۲۰۴ھ | دارالفكربيروت ۱۴۱۰ھ |
| الطبقات الكبرى | محمدبن سعدبن منيع هاشمى بصرى رحمة الله عليه متوفّٰى ۲۳۰ھ | دارالكتب العلميه ۱۴۱۸ھ |
| حلية الاولياء | امام حافظ ابونعيم اصفهانى رحمة الله عليه متوفّٰى ۴۳۰ھ | دارالكتب العلميه ۱۴۱۸ھ |
| الاذكارالمنتخبه | حافظ محيى الدين ابوذكريايحيى بن شرف نووى رحمة الله عليه متوفّٰى ۶۷۶ھ | دارالكتب العلميه ۱۴۲۰ھ |
| دلائل النبوه | امام ابوبكر احمد بن حسين بيهقى رحمة الله عليه متوفّٰى ۴۵۸ھ | دارالكتب العلميه ۱۴۲۳ھ |
| الزهد | امام عبدالله بن المبارك مرزوى رحمة الله عليه متوفّٰى ۱۸۱ھ | دارالكتب العلميه بيروت |
| احياء علوم الدين | ابوحامد امام محمدبن محمد غزالى رحمة الله عليه متوفّٰى ۵۰۵ھ | دارالصادر ۲۰۰۰ء |
| الرسالة القشيريه | امام ابوالقاسم عبدالكريم هوازن قشيرى رحمة الله عليه متوفّٰى ۴۶۵ھ | دارالكتب العلميه ۱۴۱۸ھ |
| جامع الاصول | امام مجد الدين ابوالسعادات مبارك بن محمد شيبانى المعروف بابن الاثير جزرى رحمة الله عليه متوفّٰى ۶۰۶ھ | دارالكتب العلميه ۱۴۱۸ھ |

## ......नेकियों का ज़ख़ीरा......

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !**

**अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी के हुसूल और बा किरदार मुसल्मान बनने के लिये **''दा'वते इस्लामी''** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** से **''म-दनी इन्आ़मात''** नामी रिसाला ह़ासिल कर के उस के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश कीजिये और अपने अपने शहरों में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की बहारें लूटिये। **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के लिये बे शुमार **म-दनी क़ाफ़िले** शह्र ब शह्र, गाउं ब गाउं सफ़र करते रहते हैं, आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये **''नेकियों का ज़ख़ीरा''** इकठ्ठा करें।

اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप अपनी ज़िन्दगी में हैरत अंगेज़ त़ौर पर **''म-दनी इन्क़िलाब''** बरपा होता देखेंगे।



www.dawateislami.net

# मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा कुतुबो रसाइल मअ़ अ़न्क़रीब आने वाली कुतुबो रसाइल

## शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه

### उर्दू कुतुब

(1) राहे खु़दा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (رَادُّ الْقَحْطِ وَالْوَبَاء بِدَعْوَةِ الْجِيْرَان وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاء)

(2) करन्सी नोट के मसाइल (كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم فِيْ اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِم)

(3) दुआ़ के फ़ज़ाइल (اَحْسَنُ الْوِعَاء لِآدَابِ الدُّعَاء مَعَهٗ ذَيْلُ الْمُدَّعَاء لِاَحْسَنِ الْوِعَاء)

(4) ई़दैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيْدفِيْ تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيْد)

(5) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (اَلْحُقُوق لِطَرْحِ الْعُقُوْق)

(6) अल मल्फ़ूज़ अल मा'रूफ़ बिह मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (मुकम्मल चार हि़स्से)

(7) शरीअ़त व त़रीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاء بِاِعْزَازِ شَرْعٍ وَّعُلَمَاء)

(8) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़)

(9) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (हा़शिया व तशरीह़ तदबीरे इस्लाह़ व नजात व इस्लाह़)

(10) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (اِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِي)

(11) हुक़ूक़ुल इबाद कैसे मुआ़फ़ हों (اَعْجَبُ الْاِمْدَاد)

(12) सुबूते हिलाल के त़रीक़े (طُرُقُ اِثْبَاتِ هِلَال)

(13) औलाद के हुक़ूक़ (مَشْعَلَةُ الْاِرْشَاد)

(14) ईमान की पहचान (हा़शिया तम्हीदे ईमान)

(15) अल वज़ी-फ़तुल करीमा

(16) कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान

(17) ह़दाइक़े बख़्शिश

### अ़-रबी कुतुब

22,21,20,19,18......جَدُّ الْمُمْتَار عَلٰی رَدِّ الْمُحْتَار (المجلد الاول والثانی والثالث والرابع والخامس)
(کل صفحا570،672،713،650،483) 23......اَلتَّعْلِيْقُ الرَّضَوِی عَلٰی صَحِيْحِ الْبُخَارِی (کل صفحات:458)

24......كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم (کل صفحات:74) 25......اَلْاِجَازَاتُ الْمَتِيْنَة (کل صفحات:62)

26......اَلزَّمْزَمَةُ الْقَمَرِيَّة (کل صفحات:93) 27......اَلْفَضْلُ الْمَوْهَبِی (کل صفحات:46)

28......تَمْهِيْدُ الْاِيْمَان (کل صفحات:77) 29......اَجْلَی الْاِعْلَام (کل صفحات:70)

30......اِقَامَةُ الْقِيَامَة (کل صفحات:60)



www.dawateislami.net

## शो'बए तराजिमे कुतुब

(1) अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) पहली जिल्द
(2) नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल (اَلْاَمْرُ بِالْمَعْرُوْف وَالنَّهْیُ عَنِ الْمُنْكَر)
(3) म-दनी आक़ा के रोशन फ़ैसले (اَلْبَاهِر فِیْ حُكْمِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم بِالْبَاطِنِ وَالظَّاهِر)
(4) सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा ? (تَمْهِيْدُ الْفَرْش فِی الْخِصَالِ الْمُوْجِبَةِ لِظِلِّ الْعَرْش)
(5) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (قُرَّةُ الْعُيُوْن وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن)
(6) नसीह़तों के म-दनी फूल ब वसीलए अह़ादीसे रसूल (اَلْمَوَاعِظ فِی الْاَحَادِيْثِ الْقُدْسِيَّة)
(7) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِح فِیْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِح)
(8) इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की वसिय्यतें (وَصَايَا اِمَامِ اَعْظَم عَلَيْهِ الرَّحْمَة)
(9) जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द अव्वल) (اَلزَّوَاجِرعَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر)
(10) जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द दुवुम) (اَلزَّوَاجِرعَنِ اقْتِرَافِ الْكَبَائِر)
(11) फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया (كَشْفُ النُّوْر عَنْ اَصْحَابِ الْقُبُوْر)
(12) दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी (اَلزُّهْد وَقَصْرُ الْاَمَل)
(13) राहे इ़ल्म (تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّم طَرِيْقَ التَّعَلُّم)
(14) उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम, ह़िस्सए अव्वल)
(15) उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम, ह़िस्सए दुवुम)
(16) एहयाउल उ़लूम का ख़ुलासा (لُبَابُ الْاِحْيَاء)
(17) ह़िकायतें और नसीह़तें (اَلرَّوْضُ الْفَائِق)
(18) अच्छे बुरे अ़मल (رِسَالَةُ الْمُذَاكَرَة)
(19) शुक्र के फ़ज़ाइल (اَلشُّكْرُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ)
(20) हुस्ने अख़्लाक़ (مَكَارِمُ الْاَخْلَاق)
(21) आंसूओं का दरिया (بَحْرُ الدُّمُوْع)
(22) आदाबे दीन (اَلْاَدَبُ فِی الدِّيْن)
(23) शाहराहे औलिया (مِنْهَاجُ الْعَارِفِيْن)
(24) बेटे को नसीह़त (اَيُّهَا الْوَلَد)
(25) اَلدَّعْوَة اِلَی الْفِكْر
(26) इस्लाहे़ आ'माल (اَلْحَدِيْقَةُ النَّدِيَّة شَرْحُ طَرِيْقَةِ الْمُحَمَّدِيَّة)
(27) आ़शिक़ाने ह़दीस की ह़िकायात (اَلرِّحْلَة فِیْ طَلَبِ الْحَدِيْث)
(28) एहयाउल उ़लूम मुतर्जम (जिल्द अव्वल) (احياء علوم الدين)
(29) क़ूतुल क़ुलूब मुतर्जम (जिल्द अव्वल)



www.dawateislami.net

## शो'बए दर्सी कुतुब

01......مراح الارواح مع حاشية ضياء الاصباح(كل صفحات:241)
02......الاربعين النووية فى الأحاديث النبوية(كل صفحات:155)
03......اتقان الفراسة شرح ديوان الحماسه(كل صفحات:325)
04......اصول الشاشى مع احسن الحواشى(كل صفحات:299)
05......نورالايضاح مع حاشيةالنوروالضياء(كل صفحات:392)
06......شرح العقائدمع حاشيةجمع الفرائد(كل صفحات:384)
07......الفرح الكامل على شرح مئة عامل(كل صفحات:158)
08 ......عناية النحو فى شرح هداية النحو(كل صفحات:280)
09......صرف بهائى مع حاشية صرف بنائى(كل صفحات:55)
10......دروس البلاغة مع شموس البراعة(كل صفحات:241)
11......مقدمةالشيخ مع التحفة المرضية(كل صفحات:119)
12......نزهة النظر شرح نخبة الفكر(كل صفحات:175)
13......نحو ميرمع حاشية نحو منير(كل صفحات:203)
14......تلخيص اصول الشاشى(كل صفحات:144)
15......نصاب النحو(كل صفحات:288)
16......نصاب اصولِ حديث(كل صفحات:95)
17......نصاب التجويد(كل صفحات:79)
18......المحادثة العربية(كل صفحات:101)
19......تعريفاتِ نحوية(كل صفحات:45)
20......خاصيات ابواب(كل صفحات:141)
21......شرح مئة عامل(كل صفحات:44)
22......نصاب الصرف(كل صفحات:343)
23......نصاب المنطق(كل صفحات:168)
24......انوارالحديث(كل صفحات:466)
25......نصاب الادب(كل صفحات:184)
26......تفسير الجلالين مع حاشية انوار الحرمين(كل صفحات:364)
27......خلفائے راشدین(کل صفحات:341)
28......قصیدہ بردہ مع شرح خر پوتی(کل صفحات:317)
29......فیض الادب(مکمل حصہ اوّل،دوم)(کل صفحات:228)

## शो'बए तख़्रीज

(1) सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن का इश्क़े रसूल
(2) बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (हि़स्सए अव्वल ता शशुम)
(3) बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (हि़स्सा 7 ता 13)
(4) उम्महातुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ
(5) अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन
(6) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल
(7) बहारे शरीअ़त (सोलहवां हि़स्सा)


www.dawateislami.net

(08) तह्क़ीक़ात
(09) अच्छे माह़ोल की ब-र-कतें
(10) जन्नती ज़ेवर
(11) इल्मुल क़ुरआन
(12) सवानेहे़ करबला
(13) अर-बईने ह़-नफ़िय्या
(14) किताबुल अ़क़ाइद
(15) मुन्तख़ब ह़दीसें
(16) इस्लामी ज़िन्दगी
(17) आईनए क़ियामत
(18 ता 24) फ़तावा अहले सुन्नत (सात हिस्से)
(25) ह़क़ व बाति़ल का फ़र्क़
(26) बिहिश्त की कुन्जियां
(27) जहन्नम के ख़त़रात
(28) करामाते सह़ाबा
(29) अख़्लाक़े सालिह़ीन
(30) सीरते मुस्त़फ़ा
(31) आईनए इ़ब्रत
(32) बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम
(33) जन्नत के त़लबगारों के लिये म-दनी गुलदस्ता
(34) फ़ैज़ाने नमाज़
(35) 19 दुरूदो सलाम
(36) फ़तावा अहले सुन्नत (आठवां ह़िस्सा)
(37) फ़ैज़ाने यासीन शरीफ़ मअ़ दुआ़ए निस्फ़े शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म

✿===✿===✿===✿

## शो'बए फ़ैज़ाने सह़ाबा

(01) ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुललाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ
(02) ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ
(03) ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ
(04) ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ
(05) ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ
(06) फ़ैज़ाने सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ
(07) फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

✿===✿===✿===✿

## शो'बए फ़ैज़ाने सह़ाबिय्यात

(01) शाने ख़ा़तूने जन्नत
(02) फ़ैज़ाने आ़इशा सिद्दीक़ा

✿===✿===✿===✿



www.dawateislami.net

## शो'बए इस्लाही कुतुब

(01) ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़ालात
(02) तकब्बुर
(03) 40 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم
(04) बद गुमानी
(05) क़ब्र में आने वाला दोस्त
(06) नूर का खिलोना
(07) आ'ला ह़ज़रत की इन्फ़िरादी कोशिशें
(08) फ़िक्रे मदीना
(09) इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ?
(10) रियाकारी
(11) क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत
(12) उ़श्र के अह़काम
(13) तौबा की रिवायात व ह़िकायात
(14) फ़ैज़ाने ज़कात
(15) अह़ादीसे मुबा-रका के अन्वार
(16) तरबियते औलाद
(17) काम्याब त़ालिबे इ़ल्म कौन ?
(18) टीवी और मूवी
(19) त़लाक़ के आसान मसाइल
(20) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी
(21) फ़ैज़ाने चेहल अह़ादीस
(22) शर्हे़ श-ज-रए क़ादिरिय्या
(23) नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल
(24) ख़ौफ़े ख़ुदा
(25) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत
(26) इन्फ़िरादी कोशिश
(27) आयाते क़ुरआनी के अन्वार
(28) नेक बनने और बनाने के त़रीक़े
(29) फ़ैज़ाने एह़याउल उ़लूम
(30) ज़ियाए स-दक़ात
(31) जन्नत की दो चाबियां
(32) काम्याब उस्ताज़ कौन ?
(33) तंगदस्ती के अस्बाब
(34) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की 425 ह़िकायात
(35) ह़ज व उ़म्रह का मुख़्तसर त़रीक़ा
(36) जल्द बाज़ी के नुक़्सानात
(37) क़सीदए बुर्दा से रूह़ानी इ़लाज

## शो'बए अमीरे अहले सुन्नत

(01) सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अ़त्तार के नाम
(02) मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब
(03) इस्लाह़ का राज़ (म-दनी चेनल की बहारें ह़िस्सए दुवुम)
(04) 25 क्रिस्चेन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम
(05) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात
(06) वुज़ू के बारे में वस्वसे और उन का इ़लाज
(07) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (1)
(08) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (2)
(09) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (3) (सुन्नते निकाह़)
(10) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (4)


www.dawateislami.net

(11) मुर्दा बोल उठा
(12) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से)
(13) बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हिक्मत
(14) क़ब्र खुल गई
(15) पानी के बारे में अहम मा'लूमात
(16) गूंगा मुबल्लिग़
(17) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें
(18) गुमशुदा दूल्हा
(19) मैं ने म-दनी बुरक़अ़ क्यूं पहना ?
(20) जिन्नों की दुन्या
(21) ग़ाफ़िल दरज़ी
(22) कफ़न की सलामती
(23) चल मदीना की सआ़दत मिल गई
(24) बद नसीब दूल्हा
(25) मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ?
(26) बे क़ुसूर की मदद
(27) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित
(28) हेरोइन्ची की तौबा
(29) नौ मुस्लिम की दर्द भरी दास्तान
(30) मदीने का मुसाफ़िर
(31) ख़ौफ़नाक दांतों वाला बच्चा
(32) फ़िल्मी अदाकार की तौबा
(33) सास बहू में सुल्ह़ का राज़
(34) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल
(35) फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुनत
(36) हैरत अंगेज़ ह़ादिसा
(37) मॉडर्न नौ जवान की तौबा
(38) मुख़ा-लफ़त मह़ब्बत में कैसे बदली ?
(39) मैं ह़यादार कैसे बनी ?
(40) क्रिस्चेन का क़बूले इस्लाम
(41) सलातो सलाम की आ़शिक़ा
(42) क्रिस्चेन मुसल्मान हो गया
(43) म्यूज़ीकल शो का मतवाला
(44) नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग
(45) आंखों का तारा
(46) वली से निस्बत की ब-र-कत
(47) बा ब-र-कत रोटी
(48) इग़वा शुदा बच्चों की वापसी
(49) मैं नेक कैसे बना ?
(50) शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ?
(51) बद किरदार की तौबा
(52) ख़ुश नसीबी की किरनें
(53) नाकाम आ़शिक़
(54) मैं ने वीडियो सेन्टर क्यूं बन्द किया ?
(55) चमक्ती आंखों वाले बुज़ुर्ग
(56) इ़ल्मो ह़िक्मत के 125 म-दनी फूल
(तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ 6)
(57) हुक़ूक़ुल इ़बाद की एह़तियातें
(तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ 6)
(58) नादान आ़शिक़
(59) सिनेमा घर का शैदाई
(60) गूंगे बहरों के बारे में सुवाल जवाब, क़िस्त़ (5)
(61) डान्सर ना'त ख़्वान बन गया
(62) गुलूकार कैसे सुधरा ?
(63) नशेबाज़ की इस्लाह़ का राज़
(64) काले बिच्छू का ख़ौफ़
(65) ब्रेक डान्सर कैसे सुधरा ?
(66) अ़जीबुल ख़िल्क़त बच्ची



www.dawateislami.net

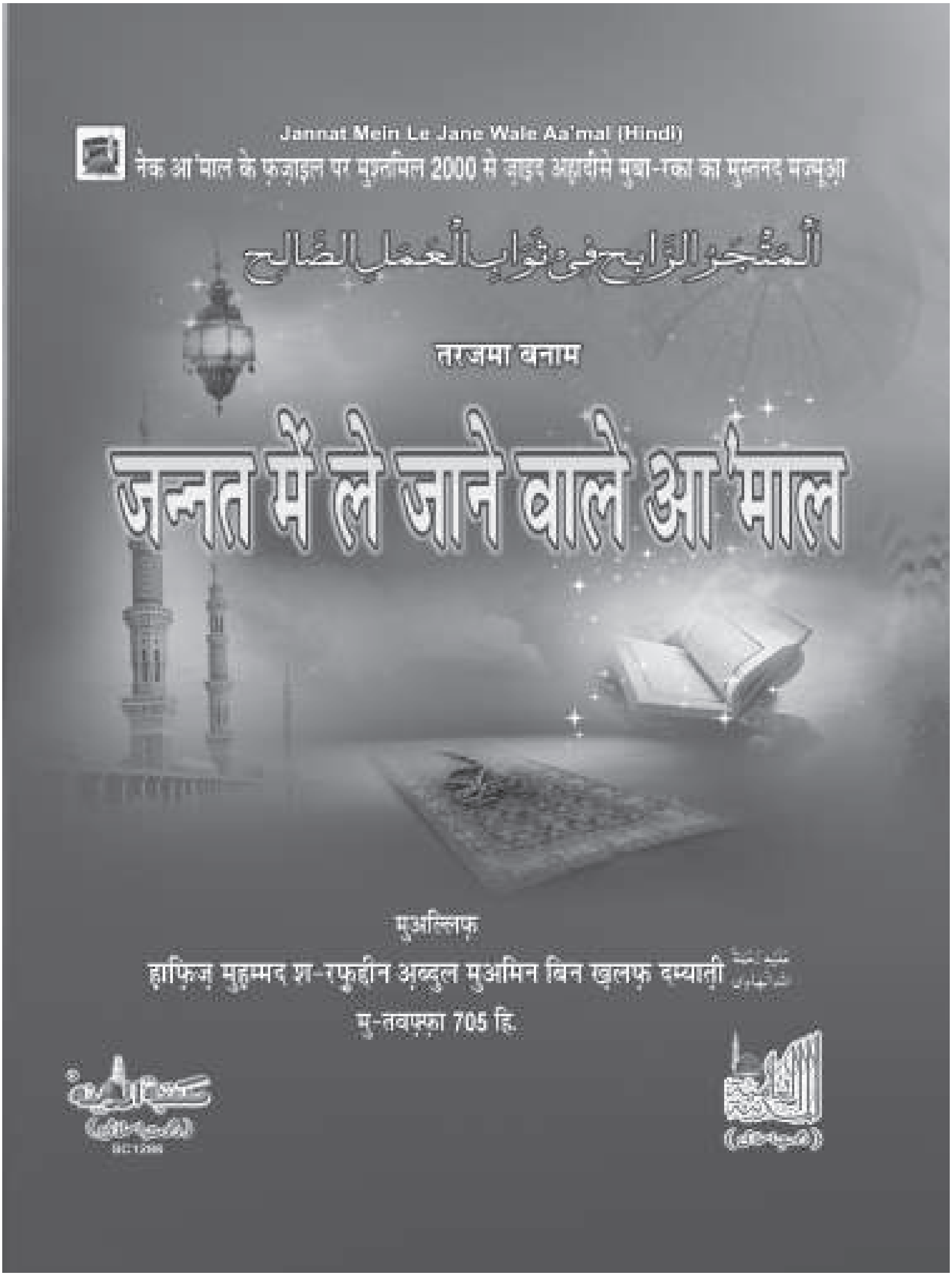




www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

## सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुम्अ़रात इ़शा की नमाज़ के बा'द आप के शह्‌र में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़्रत करने और **ईमान की हि़फ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ


## मक-त-बतुल मदीना की शाखें

**मुम्बई :** 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

**नागपूर :** ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 9326310099

**अजमेर शरीफ़ :** 19/216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

**है़दरआबाद :** पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, है़दरआबाद फ़ोन : 040-24572786

**हुब्ली :** A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®

(दा'वते इस्लामी)

**421, उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-6 Ph. (011) 23284560**

**Web : www.dawateislami.net / E-mail : maktabadelhi@gmail.com**